राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश

द्वितीय खण्ड

सम्पादक
आ. बदरी प्रसाद साकरिया
प्रो. भूपतिराम साकरिया

राजस्थानी-हिन्दी शब्द कोश

[द्वितीय खंड]

[प से ह]

सम्पादक :
म्रा० बदरीप्रसाद साकरिया
प्रो० भूपतिराम साकरिया

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन,
फिल्म कॉलोनी, जयपुर–302003

मूल्य : छः सौ रुपये (दो खंडों में)

संस्करण : 1993

मुद्रक : शीतल प्रिन्टर्स,
फिल्म कॉलोनी, जयपुर–302003

RAJASTHANI–HINDI SHABD–KOSH

Edited by : Acharya Badri Prasad Sakaria
Prof. Bhupati Ram Sakaria

Price : Rs. 600.00 (Two Volumes)

प

प—राजस्थानी वर्णमाला का २१वाँ और प-वर्ग का पहला औष्ठ्य व्यंजन वर्ण।

प—*(न०)* १. संगीत में पंचम स्वर की संज्ञा। २. विशेषण पर से भाववाचक संज्ञा बनाने वाला एक प्रत्यय। जैसे ऊणप, नैनप।

पइ—*(न०)* १. शत्रु। विरोधी। २. पैर। *(अव्य०)* १. पास। समीप। २. ओर। तरफ।

पइड़ो—*(न०)* गाड़ी का पहिया।

पइतरो—*(न०)* १. ठाकुरजी को पहिनाई जाने वाली रेशम की माला। पवित्रा। २. छोटे फूलों की माला। ३. फूलों की एक लड़ी, छोटी माला। ४. एक लड़ी की मोती माला।

पइसैदार—*(वि०)* धनवान। मालदार।

पइसो—*(न०)* १. ब्रिटिशकाल में एक आने का चौथे (रुपये का चौसठवाँ) भाग का सिक्का। २. वर्तमान में रुपये के सौवें भाग का राष्ट्रीय सिक्का। पैसा। ३. धन। दौलत।

पइसोटको—*(न०)* १. मालमता। पूंजी। धन। २. रोकड़। नकद।

पइंडो—दे० पणींढो।

पई—*(ना०)* १. पेटी। २. पहिया। ३. पथिक।

पईडो—*(न०)* पहिया।

पई-रा-मगरा—*(न०)* मेवाड़ की एक पर्वत श्रेणी का नाम।

पउम—*(न०)* पद्म। कमल।

पउम चरिउ—*(न०)* एक जैन रामायण ग्रंथ। पद्मचरित्र।

पकड़—*(ना०)* १. पकड़ने की क्रिया। ग्रहण। २. पकड़ने का ढंग। ३. भूल आदि ढूंढ निकालने की क्रिया या भाव। ४. पकड़ने का एक औजार। **जंबूरी**। संडासी।

पकड़णो—*(क्रि०)* १. पकड़ना। ग्रहना। **झालणो**। २. धारण करना। ३. भागते हुए को रोकना। ४. जाँच करके पता लगाना। जैसे भूल पकड़णी। चोर पकड़णो। ५. बुद्धि लड़ाना। आकलन करना। जैसे अर्थ पकड़णो।

पकड़ाणो—*(क्रि०)* १. पकड़ा जाना। २. पकड़वाना। ३. किसी को कोई वस्तु हाथ में देना।

पकड़ापकड़ी—*(ना०)* १. धरपकड़। गिरफ्तारी। २. बच्चों का एक खेल।

पकड़ावणो—दे० पकड़ाणो।

पकणो—*(क्रि०)* १. कच्चा न रहना। पकना। २. रंधना। सीझना। ३. फोड़े में मवाद पड़ना।

पकवान—*(न०)* १. पक्वान्न। २. मिठाई। ३. व्यंजन। पका हुआ भोजन।

पकाई—*(न०)* १. दृढ़ता। २. निपुणता। ३. सतर्कता। ४. पकाने की क्रिया या भाव। ५. पकाने की मजदूरी।

पकाणो—दे० पकावणो।

पकायत—*(अव्य०)* निःसंदेह। अवश्य।

पकार—*(न०)* 'प' अक्षर।

पकाव—*(न०)* १. पकने का भाव। २. मवाद।

पकावणो—*(क्रि०)* १. पकाना। २. रांधना। ३. सिझाना।

पकोड़ी—*(ना०)* बेसन या पीठी की तली हुई बड़ी।

पक्कळियो—*(न०)* १. पक्वरस। शराब। २. शराब-मांस।

पक्काई—*(ना०)* होशियारी। दे० पकाई।

पक्की रसोई—*(ना०)* घी में तली हुई भोजन-सामग्री। **पकवान**।

पक्को—*(वि०)* १. होशियार। चतुर। निपुण। २. अनुभवी। ३. दृढ़। ४. निश्चित। ५. प्रामाणिक। टकसाली। ६. पका हुआ। परिपुष्ट। ७. पत्थर-चूने आदि से बनाया हुआ। ८. जो रंगने या लगने के बाद छूट न सके।

पक्ष—*(न०)* १. तरफदारी। पक्षपात। २. विभाग। ३. संगठन। ४. पन्द्रह दिन का समय। ५. पाँख। ६. झगड़ा या विवाद करने वाले दलों में से एक। ७. सेना। दल।

पक्षपात—*(न०)* तरफदारी।

पक्षपाती—*(वि०)* जो किसी पक्ष का समर्थन करे।

पक्षापक्षी—*(ना०)* १. भेदभाव की वृत्ति। २. तरफदारी। पक्षपात।

पक्षी—*(न०)* चिड़िया। **पंखी**। **पखेरू**। **पंखेरू**।

पख—*(न०)* १. पक्ष। पार्टी। २. पक्ष। तरफदारी। पक्षपात। ३. मास का एक पक्ष। पखवाड़ा। ४. पाँख। ५. पंखा। ६. छेद। सुराख। ७. कुल। वंश।

पखपात—दे० पक्षपात।

पखर—दे० पाखर।

पखराण—दे० पाखर।

पखराळ—*(न०)* १. घोड़ा। २. पाखर।

पखरेत—*(वि०)* कवचधारी। *(न०)* १. कवचधारी घोड़ा या हाथी। २. कवचधारी योद्धा।

पखवाड़ियो—दे० पखवाड़ो।

पखवाड़ो—*(न०)* पक्ष। १५ दिन का समय।

पखवाळ—*(वि०)* १. पक्षवाला। किसी एक दल या पार्टी का हिमायती। २. जिसको किसी दल की सहायता प्राप्त हो। ३. पक्षपाती।

पखाड़ो—दे० पखवाड़ो।

पखाण—*(न०)* पाषाण। पत्थर।

पखाणो—*(न०)* १. कहावत। **ओखाणो**। **उखाणो**। २. पाखाना। मल।

पखापखी—दे० पक्षापक्षी।

पखायत—*(वि०)* पक्षपाती।

पखायती—दे० पखायत।

पखाल—*(ना०)* भैंस की दो पूरी खालों को सीकर बनाया हुआ एक थैला, जिससे ऊँट आदि पर रखकर पानी ढोया जाता है।

पखाळ—*(न०)* १. जुलाब। रेचन। २. जल से की जाने वाली सफाई। प्रक्षालन। धोना। ३. प्रक्षालन करने की क्रिया। ४. वह पानी जिससे देवमूर्ति का प्रक्षालन किया गया हो।

पखालची—दे० पखाली।

पखालण—*(ना०)* पखाली की स्त्री।

पखाळणो—*(क्रि०)* १. धोना। प्रक्षालन करना। २. भिगोना। ३. वस्त्र आदि को पानी में भिगोना।

पखालियो—दे० पखाली।

पखाली—*(न०)* पखालवाला। पखालची। भिश्ती। सक्का।

पखावज—*(न०)* मृदंग जैसा एक वाद्य।

पखी—*(वि०)* पक्ष करने वाला।

पखेरू—*(न०)* पक्षी। चिड़िया। **पंखेरू**।

पखै—*(अव्य०)* १. अतिरिक्त। सिवाय। २. बिना। बगैर। रहित। ३. अनुसार। मुआफिक।

पखै-पार—*(वि०)* अपार। असीम। **अछेह**।

पखो—*(न०)* १. पक्ष। तरफदारी। २. सहारा। मदद।

पख्ख—दे० पख ।
पख्खर—दे० पाखर ।
पख्खरणो—दे० पाखरणो ।
पग—*(न०)* १. पद । पाँव । २. टाँग । ३. डग । पेंड । ४. पैर का निशान । खोज । ५. वंशक्रम ।
पग आसरो—*(न०)* घर । मकान । पदाश्रय ।
पगचंपी—*(ना०)* थकावट दूर करने के लिए मुट्ठियों से की जाने वाली पग दबाई । **मूंठीदेणी ।**
पग-जमाव—*(न०)* स्थिरता ।
पगडंडी—दे० पगडाँडी ।
पगडाँडी—*(ना०)* जंगल का वह मार्ग जो लोगों के चलने से बन जाता है । **पगदंडी । पगरस्तो । डाँडी ।**
पगड़ी—*(ना०)* १. सिर पर बाँधने का एक लंबा कपड़ा । **पाघड़ी । पाघ ।** २. मकान किराया देने का एक रिवाज जिसमें किराये के अतिरिक्त एक मुश्त पेशगी रकम ली जाती है । **पाघड़ी ।**
पगड़ो—*(न०)* १. पगरा । सवेरा । २. प्रकाश । ३. एक औजार ।
पगतळी—*(ना०)* पगतली ।
पगतुड़ाई—*(ना०)* इधर-उधर व्यर्थ घूमने की क्रिया ।
पगतोड़णा—*(मुहा०)* व्यर्थ चक्कर मारना । **फालतू आँटा खाणा ।**
पगतोड़ो—*(न०)* व्यर्थ का चक्कर मारने की क्रिया ।
पगथियो—*(न०)* सोपान । सीढ़ी । **पावटियो । पागोथियो ।**
पगदाझणी—दे० पगेबळण ।
पगदौड़—*(ना०)* १. बराबर आना-जाना । भाग-दौड़ । २. बार-बार आने-जाने पर भी सफलता नहीं मिलना ।
पगपछाड़णा—*(मुहा०)* गुस्से होना । क्रोध करना ।
पगपान—*(न०)* स्त्रियों के पाँव का एक गहना ।
पग-पाळो—*(वि०)* १. बिना सवारी के आने-जाने की क्रिया । पैदल ।
पगपावटी—*(ना०)* पाँवों से चलाया जाने वाला रहँट ।
पगपावड़ी—*(ना०)* खड़ाऊँ ।
पग-पाँवड़ा—*(न०)* गुरु आदि पूज्यवर्ग के चलने के समय उनके पाँवों के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा ।
पगपीटणो—*(मुहा०)* १. अथक प्रयत्न करना । २. गुस्से होना ।
पगपीटो—*(न०)* १. प्रयत्न । कोशिश । २. अथक प्रयत्न । ३. असफल प्रयत्न ।
पगफेरो—*(न०)* १. आगमन । २. प्रथम पदार्पण ।
पगबळणी—दे० पगेबळण ।
पगमंडणा—दे० पगमाँडणा ।
पगमाँडणा—*(न०)* १. गुरू की शोभायात्रा के साथ घर पर लाकर सेवा-पूजा और भेंट करने के लिए किया जाने वाला स्वागत । **पधरामणी ।** २. अवाई । आगमन । ३. पद-चिह्न ।
पगमाँडणो—*(मुहा०)* १. दृढ़ता के साथ खड़े रहना । २. आगे बढ़ना । ३. किसी काम या धंधे की शुरुआत करना ।
पगर—*(न०)* प्रकर । राशि । ढेर । **ढिगलो ।**
पगरखी—*(ना०)* जूती ।
पगरखो—*(न०)* जूता । **खासड़ो । खाहड़ो ।**
पगरण—दे० पगरव । *(न०)* आरंभ । शुरू ।
पगरव—*(ना०)* १. चलने का शब्द । २. आना-जाना । **आव-जाव ।**
पगरस—*(न०)* चरणामृत ।
पगरस्तो—*(न०)* १. पैदल चलने से बना हुआ मार्ग । २. पैदल आने-जाने का रास्ता । **पगडाँडी ।**
पगलिया—*(न०)* १. किसी संत महात्मा के पूजा के लिए स्थापित किये हुए चरण-चिह्न । २. छोटे बच्चे के पैर ।
पगली—*(वि०)* पागल (स्त्री) ।

पगलो—*(वि०)* पागल (पुरुष)। *(न०)* पाँव।

पगवट—*(न०)* १. स्थलमार्ग। २. पैदल चलने का मार्ग।

पगवंदण—*(न०)* चरणों में पड़कर किया जाने वाला नमस्कार। चरणवंदन।

पगवंदणा—*(ना०)* १. पालागन। २. साधु, महात्मा तथा गुरुजनों के सम्मान-स्वागत की एक विधि या क्रिया।

पगवाट—दे० पगवट।

पगवास—*(न०)* चरणशरण।

पगा—*(अव्य०)* १. आधार से। भरोसे पर। २. लिए। ३. कारण।

पगाणो—*(क्रि०)* १. मिठाई पर चाशनी चढ़ाना। २. प्रेम में फँसाना।

पगार—*(न०)* १. वेतन। २. परकोटा। प्राकार। ३. किला। ४. मार्ग।

पगांथियो—*(न०)* चारपाई का वह भाग जिधर पाँव रहते हैं। **पाँयता**। पैताना। पायतन। 'सरांथियो' का उलटा।

पगे करणो—*(मुहा०)* पाँवों के (पंजों के) ऊपर बच्चे को हगने के लिए बिठाना।

पगे पड़णो—*(मुहा०)* १. शरण में जाना। २. पराजय स्वीकार करना। हार मानना। ३. प्रणाम करना। **पगे लागणो**।

पगेबळण—*(ना०)* १. पाँव जल जायँ ऐसा प्रखर ग्रीष्म का सूर्य-ताप। २. पाँव जल जायँ ऐसा प्रखर ग्रीष्म ऋतु के सूर्य-ताप का समय। ३. ताप से पाँवों का जलना।

पगेबळणी—दे० पगेबळण।

पगेरण—*(ना०)* १. पदरज। २. शोध। खोज। तलाश।

पगेरो—*(न०)* चोर के पाँवों को देखने की या देखकर की जाने वाली खोज।

पगे लागणा—*(अव्य०)* १. चरणवंदन। चरणस्पर्श। २. प्रणाम। नमस्कार।

पगे लागणो—*(मुहा०)* १. चरणों में पड़कर प्रणाम करना। २. माफी माँगना।

पगोठो—दे० पगोथियो।

पगोथियो—*(न०)* १. पैड़ी। ज़ीना।

पघड़ी—दे० पगड़ी।

पचकड़ो—*(न०)* दे० पचोकड़ो।

पचकण—*(वि०)* १. डरपोक। पोचा।

पचकूटो—*(न०)* १. पाँच वस्तुओं का समूह। २. कैर, कूमटिया, हेलारिया, सांगरियाँ और अमचूर—इन पाँच सूखी सब्जियों से बनी एक भाजी।

पचखाण—*(न०)* कुछ त्यागने का व्रत या प्रतिज्ञा। (जैन)

पचड़ो—*(न०)* १. बखेड़ा। झंझट। २. बखेड़े का काम। पचड़ा।

पचड़ोतरसो—*(न०)* पहाड़े में एक सौ पाँच के लिए कहा जाने वाला शब्द।

पचणो—*(क्रि०)* १. पचना। हजम होना। २. खपना। ३. जी तोड़ मेहनत करना। ४. लगे रहना। लीन होना।

पचधारी—*(ना०)* एक मिष्टान्न।

पचपन—दे० पचावन।

पचमण्यो—दे० पचमिणियो।

पचमिणियो—*(न०)* गले का एक आभूषण।

पचरकी—*(ना०)* १. पिचकारी। २. पानी की पतली धार।

पचरंग—*(वि०)* १. पाँच रंगों का। २. पाँच रंगों से रंगा हुआ।

पचरंगी—*(ना०)* एक प्रकार की चुनरी।

पचरंगो—*(वि०)* १. पाँच रंगों का। २. अनेक रंगों का। रंग-बिरंगा।

पचलड़ी—दे० पंचलड़ी।

पचाणूं—*(वि०)* नब्बे और पाँच। **पंचाणूं**। *(न०)* पिचानवे की संख्या। '९५'

पचाणो—दे० पचावणो।

पचारणो—*(क्रि०)* हैरान करना।

पचावणो—*(क्रि०)* १. हजम करना। पचाना। २. पकाना। ३. पराये माल को अनुचित रूप से अपने अधिकार में कर लेना।

पचावन—*(वि०)* पचास और पाँच। *(न०)* पचपन की संख्या। '५५'

पचावो—*(न०)* १. कड़बी, खारिया आदि को चिनकर बनाया हुआ ढेर। २. आँगन की लिपाई।

पचास—*(वि०)* चालीस और दस। *(न०)* पचास की संख्या। '५०'

पचियो—*(न०)* व्रण। फोड़ा। छाळो।

पचीस—*(वि०)* बीस और पाँच। *(न०)* पचीस की संख्या। '२५'

पचीसी—*(ना०)* १. एक ही प्रकार की पचीस वस्तुओं का समूह। २. आयु के आरंभ के पचीस वर्ष।

पचोकड़ो—*(न०)* पाँच का समाहार।

पच्चीकारी—*(ना०)* गहनों में रत्न जड़ाई का काम।

पच्छिम—*(ना०)* पश्चिम दिशा। *(वि०)* पीछे का।

पछ—*(अव्य०)* पीछे। पश्चात। अनंतर।

पछटणो—*(क्रि०)* १. प्रहार करना। २. जोर से पटकना। पछाड़ना। ३. हराना। ४. गिराना। ५. मारना।

पछड़ाणो—*(क्रि०)* टकराना।

पछड़ावणो—दे० पछड़ाणो।

पछताणो—*(क्रि०)* पछताना। पश्चाताप करना।

पछतावणो—दे० पछताणो।

पछतावो—*(न०)* पश्चाताप। पछतावा। अनुताप।

पछलो—*(वि०)* पीछे का। बाद का।

पछवाई—दे० पिछवाई।

पछवाड़ियो—*(न०)* १. गाँव के बाहर बाड़ से घेरा हुआ जनाना शौच स्थान। २. गाँव के फलसे के विरुद्ध का—पीछे वाला भाग। ३. गाँव के बाहर का या अंत का भाग।

पछवाड़ी—*(वि०)* पीछे का। *(अव्य०)* पीछे की ओर। *(न०)* १. पीछे का भाग। २. घर का पिछला भाग।

पछवाड़ै—*(अव्य०)* १. अंत में। छेड़ै। २. पीछे। ३. पीछे की ओर।

पछवाड़ो—*(अव्य०)* पीछे की ओर। *(न०)* १. पीछे का भाग। २. घर का पिछला भाग।

पछवाहणो—*(क्रि०)* पीछे की ओर से हमला करना।

पछाड़—*(ना०)* १. हार। पराजय। २. पतन। ३. पिछड़न। ४. झटका। ५. मूर्च्छित होकर के गिर पड़ना।

पछाड़णो—*(क्रि०)* १. हराना। परास्त करना। २. धोते समय कपड़े को पछाड़ना। ३. पटकना। गिराना।

पछाड़ी—*(ना०)* घोड़े के पिछले पाँव बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी। *(अव्य०)* पीछे की ओर। *(ना०)* पीछे का भाग।

पछाड़ो—दे० पछाड़।

पछात—*(वि०)* पीछे रहा हुआ।

पछात वर्ग—*(न०)* संस्कारों में पीछे रहा हुआ लोक समूह।

पछि—*(वि०)* पश्चिम दिशा का।

पछिम—*(ना०)* पश्चिम दिशा।

पछीत—*(ना०)* १. घर की पिछली भींत। २. सामान आदि रखने को भींत में बनी हुई लम्बी टाँड़। टांड़। ताक।

पछेड़ी—*(ना०)* १. एक सूती मोटा वस्त्र। २. उत्तरीय। दुपट्टा। ३. चद्दर। एक अधोवस्त्र। ४. ओढ़ने की मोटी चद्दर।

पछेत—दे० पाछतरी।

पछेती—दे० पाछतरी।

पछेरी—*(ना०)* १. पाँच सेर का तोल। २. पाँख। ३. चिड़िया। *(वि०)* पाँखों वाली।

पछेवड़ी—दे० पछेड़ी।

पछेवड़ो—*(न०)* ओढ़ने या कमर को लपेटने का एक मोटा वस्त्र।

पछै—*(क्रि० वि०)* पीछे। बाद में।

पछोकड़ो—*(न०)* पीछे का भाग।

पजणो—*(क्रि०)* १. फँस जाना। फँसना। २. किसी वस्तु का यथास्थान फिट बैठ जाना। यथास्थान लग जाना। ३. हैरान

होना। दुखी होना। ४. वश में होना। ५. पराजित होना। ६. पराजित करना।

पजवणी—*(ना०)* हैरानी। परेशानी।

पजवणो—दे० पजावणो।

पजाणो—दे० पजावणो।

पजामो—दे० पायजामो।

पजावणो—*(क्रि०)* १. हैरान करना। सताना। दुख देना। २. किसी एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु को यथाविधि ठोक-कर बिठाना। ३. फँसाना। ४. सर करना। वश में करना। ५. हराना।

पजावो—*(न०)* कुम्हार की भट्टी। आवाँ। **कजावो। निमाड़ो।**

पज्जूसण—*(न०)* एक जैन पर्व। महावीर जयंती का उत्सव। पर्यूषण पर्व।

पज्झटिका—*(ना०)* एक मात्रिक छंद। पद्धटिका।

पट—*(न०)* १. वस्त्र। २. परदा। **पड़दो।** ३. कपाट। किंवाड़। ४. नदी की चौड़ाई। ५. विस्तार। ६. किसी वस्तु के गिरने का शब्द। ७. चित का उलटा। औंधा।

पटक—दे० पछाड़।

पटकड़ी—*(ना०)* काठ की लम्बी पतली और छोटी पटरी। लकड़ी की लम्बी छोटी पटिया। फट्टी।

पटकणो—*(क्रि०)* १. पटकना। गिराना। २. पछाड़ना।

पटकाणो—*(क्रि०)* गिरवाना। पटका-वना।

पटकावणो—दे० पटकाणो।

पटकी—*(ना०)* १. मृत्यु। मौत। २. आक-स्मिक मृत्यु। पुटकी। ३. अकाल मौत। ४. किसी बहुत प्रिय की मृत्यु। ५. ऐसी मृत्यु के कारण मचा हुआ महाशोक और क्रंदन। रोना-धोना। **धाउकार।** ६. पछाड़। पटक।

पटकी पड़णो—*(मुहा०)* प्रिय या स्वजन की आकस्मिक तथा अकाल मृत्यु होना।

पटकी पड़ियो—दे० धाउकार पड़ियो।

पटकूळ—*(न०)* रेशमी वस्त्र। पट्टकूल।

पटको—*(न०)* कमर में बाँधने का कपड़ा। कमरबन्द।

पटभर—*(न०)* हाथी।

पटभरण—*(न०)* हाथी।

पटण—*(न०)* शहर। पट्टन। पत्तन। **पट्टण। पाटण।**

पटणो—*(क्रि०)* १. मेल खाना। २. बनना। ३. तै होना। ४. अनुकूल बनना। मान जाना। ५. निभना। ६. मन मिलना। ७. फुसला जाना। ८. राजी होना। ९. हुंडी का सिकर जाना। १०. उधार पैसों की प्राप्ति हो जाना। ऋण का भुगतान हो जाना। वसूल होना। ११. खड्डे को भरने से सतह का बराबर होना।

पटतर—*(न०)* १. समता। बराबरी। २. उपमा। ३. उदाहरण। *(वि०)* समान। बराबर।

पटबींजणो—*(न०)* जुगनूं। **आगियो।**

पटराणी—*(ना०)* मुख्य रानी। पट्ट-महिषी।

पटळ—*(न०)* १. समूह। **टोळो।** २. आव-रण। पर्दा। ३. घूंघट। **गूंघटो।** ४. ढक्कन। ५. परत।

पटलाणी—दे० पटेलण।

पटली—*(ना०)* १. धोती के आगे के छोर में डाली जाने वाली सिकुड़नें जो लंगोट की तरह आगे-पीछे खोसी जाती हैं। सिकु-ड़नें डाली हुई लाँग। २. पहने हुए धोती, ओढ़ना या साड़ी में आगे के भाग में खोसा जाने वाला सँकड़ी परतों वाला भाग।

पटवारी—*(न०)* गाँव की जमीन या माल-गुजारी का हिसाब-किताब रखने वाला सरकारी कर्मचारी। २. एक अल्ल।

पटवो—*(न०)* रेशम या सूत के धागों में गहने गूँथने का काम करने वाला व्यक्ति। पटहरा। पटवा।

पटहथ—*(न०)* १. हाथी। २. सिंह। *(वि०)* १. शस्त्रधारी। २. वीर। ३. सिंह के समान बली।

पटहर—दे० पटभर।

पटंतर—*(न०)* १. उदाहरण। २. तुलना। पटतर। समानता। ३. अंतरपट। परदा। ४. जुदाई। ५. अंतर। फर्क। ६. भेद। रहस्य। *(अव्य०)* परदे के पीछे।

पटंबर—*(न०)* रेशमी वस्त्र।

पटा—*(न०)* १. सिर के लंबे केश। २. सिर सँवारे हुए केश। *(ना०)* १. तलवार। खड्ग। २. लोहे या लकड़ी की एक छड़ी या पट्टी, जिससे तलवार के वार से बचाव करना सीखा जाता है।

पटाको—*(न०)* एक आतिशबाजी।

पटाभर—*(न०)* हाथी।

पटाभरण—*(न०)* हाथी।

पटाणो—दे० पटावणो।

पटाधर—*(वि०)* बहादुर। वीर। *(न०)* १. सिंह। २. हाथी।

पटापट—*(क्रि० वि०)* १. निरंतर पटपट शब्द करते हुए। २. शीघ्र।

पटाबाज—*(वि०)* पटा खेलने वाला। पटैबाज।

पटायत—*(न०)* १. गाँव-जमीन आदि का पट्टा-प्राप्त। जमींदार। जागीरदार। २. शस्त्रधारी। ३. योद्धा।

पटारी—*(ना०)* पेटी।

पटारो—*(न०)* बड़ी पेटी।

पटाळ—दे० पटाळी।

पटाळो—*(न०)* १. सिंह। २. हाथी। ३. पट्टोंवाला। केशवाला।

पटाव—*(न०)* १. युक्ति। २. निपटारा। ३. दरवाजे के ऊपर का वह पत्थर जिस पर दीवार उठाई जाती है।

पटावणो—*(क्रि०)* १. तै करना। २. मेल बिठाना। ३. फुसलाना। ४. अनुकूल करना। मना लेना। ५. उघाई वसूल करना। ६. हुंडी का सिकारना।

पटासी—*(ना०)* बढ़ई का एक औजार। पठाही।

पटिया—*(न० ब० व०)* सँवारे हुए पटे।

पटियां—*(ना० ब० व०)* कंघी करके सँवारे हुए स्त्री के सिर के पटे।

पटियो—*(न०)* १. गले का एक आभूषण। तिमणियो। २. कुत्ते आदि पालतू जानवर के गले में बाँधने का चमड़े का पट्टा।

पटींदड़ी—*(न०)* मसाले डाले हुए छाछ और बेसन के घोल को उकालकर बनाया हुआ एक पाचक पदार्थ। पितोर।

पटू—*(न०)* १. प्रतिभू। जामिन। २. ओढ़ने का एक ऊनी वस्त्र। खेस। *(वि०)* १. चतुर। चालाक। पटु। २. धूर्त।

पटूड़ो—*(न०)* ओढ़ने का ऊनी वस्त्र। खेस।

पटेत—*(न०)* १. सिंह। २. पटेबाज। *(वि०)* वीर।

पटेल—*(न०)* १. एक कृषक जाति। पाटीदार। २. गाँव का मुखिया।

पटेलण—*(ना०)* पटेल की स्त्री। पटलाणी।

पटैबाज—दे० पटाबाज।

पटोळियो—*(न०)* बाजरी के आटे को पानी में पकाकर बनाया हुआ एक गरम पेय। रेसमियो।

पटोळी—*(ना०)* १. साधु महात्माओं के स्वागतोत्सव में उनके चलने के लिये मार्ग में बिछाया जाने वाला (पटोला) वस्त्र। २. इस प्रकार किया जाने वाला स्वागतोत्सव। पगमंडणा।

पटोळो—*(न०)* एक रेशमी वस्त्र। पटोला। मिसरू।

पट्टण—दे० पटण।

पट्टा—दे० पटा।

पट्टाभिषेक—*(न०)* राज्याभिषेक।

पट्टावली—*(ना०)* १. जैन साधुओं की शिष्य-परम्परा का वृत्त। २. इस परंपरा की वृत्त पत्रिका। ३. श्रीपूजों की पट्ट-परंपरा का विवरण।

पट्टी—*(ना०)* १. घाव पर बाँधने की कपड़े की लंबी धज्जी। **लीरी**। २. पलंग की पाटी। **सिवार**। ३. धातु, कागज या लकड़ी का लंबा और पतला टुकड़ा। ४. जमीन का लंबा टुकड़ा। ५. छत को पाटने की लंबी शिला। पत्थर की पटिया। **चीण**। ६. कपड़े की किनारी। **कोर**। ७. फोड़े-फुन्सी पर लगाई जाने वाली मरहम की थिगली। चाती। ८. लिखने की पाटी। ९. स्लेट। १०. स्त्रियों के बालगुंथाई का एक प्रकार। केशविन्यास का एक प्रकार। ११. पाठ। सबक।

पट्टी-पहाड़ा—*(न०)* पाठ और पहाड़े। **पाटी-गुढिया**।

पट्टू—दे० पटूडो।

पट्टेदार—*(न०)* जिसके पास पट्टा (सनद) हो। २. चपरासी। *(वि०)* पट्टियों वाला।

पट्टो—*(न०)* १. किसी स्थावर संपत्ति या स्वामित्व का अधिकार-पत्र। पट्टा। सनद। २. चपरास। कमरबंध। ४. किसी पालतू कुत्ते, बिल्ली आदि के गले में डाली जाने वाली पट्टी। **पटियो**।

पठाण—*(न०)* १. एक मुसलमान जाति। २. इस जाति का आदमी। पठान।

पठाणी लोद—दे० पठाणी लोदर।

पठाणी लोदर—*(ना०)* एक वानस्पतिक औषधि। लोध्र। पठानी लोध।

पठाणी ब्याज—*(न०)* पठानों के द्वारा लिया जाने वाला अत्यंत ऊँचा ब्याज।

पठाणो—*(क्रि०)* भेजना।

पठार—*(न०)* चौरस, समतल और ऊँची पथरीली जमीन जो दूर तक फैली हुई हो।

पठाळ—*(ना०)* १. घर में पृष्ठभाग की शाल। तिबारी। २. घर के चौक में आजू-बाजू का बरंडा। ३. घर के चौके में सामने की दीवार के सहारे बना हुआ एक ओर ढलुवाँ छपरा।

पठावणो—दे० पठाणो।

पठाहीं—दे० पटासी।

पठियाळ—*(ना०)* घर के चौक में का खुला कमरा। भीतर का बरंडा। साळ।

पठ्ठी—*(ना०)* १. यौवन प्राप्त स्त्री। २. जवान और तगड़ी स्त्री। पठिया। ३. नरिअरी की बनी हुई बंगड़ी (चूड़ी) जिस पर सोने या चाँदी की पत्ती चढ़ाई जाती है।

पठ्ठो—*(वि०)* १. पुष्ट। दृढ़। बलिष्ट। पट्ठा। २. जवान। युवा। ३. पहलवान। ४. अलमस्त। *(न०)* नवयुवक।

पड़—*(ना०)* १. कपड़े आदि को मोड़ने पर बनने वाला मोड़ और स्तर। परत। २. किसी लोक देवता या अद्वितीय जूझार पुरुष की चमत्कारिक और शौर्यपूर्ण घटनाओं का क्रमवार बड़ा रंगीन चित्रपट। ३. वस्त्र। पट। ४. आच्छादन। ५. *(उप०)* एक उपसर्ग जो संबंध बताने वाले शब्दों के पहले लगकर उसके ठीक पहले या ठीक बाद वाली पीढ़ी का तथा बदले में या विरुद्ध सूचक होता है जैसे—पड़दादो, पड़पोतो, पड़पैठ, पड़ गौरव, पड़साद।

पड़कथा—*(ना०)* १. कहानी के अंदर कहानी। २. बात के अंदर बात। ३. परिकथा।

पड़कमणो—*(न०)* प्रायश्चित रूप में की जाने वाली जैनों की एक प्रार्थना। प्रतिक्रमण।

पड़कूंची—*(ना०)* एक चाबी लगाने के बाद की वह उलटी फिरने वाली चाबी, जिसके लगाने से ताला खुलता है।

पड़कोटो—दे० परकोटो।

पड़खै—*(अव्य०)* १. पक्ष में। २. मदद में। ३. पास में।

पड़खो—*(न०)* पार्श्व। पहलू। बगल। पासा।

पड़गनो—दे० परगनो।

पड़गरणो—*(क्रि०)* १. नाश करना। २. लेना। ३. पाणिग्रहण करना।

पड़गह—*(न०)* परिग्रह।

पड़गाहणो—*(क्रि०)* १. रक्षा करना। २. ललकारना। ३. बदला लेना। ४. नाश करना। ५. उत्साहित करना।

पड़गौरव—*(न०)* १. गौरव की ज्योनार के बदले में दी जाने वाली वर पक्ष वालों की ज्योनार। २. वधू पक्ष की ओर से दी जाने वाली ज्योनार। (कहीं-कहीं)।

पड़गी—दे० पिड़घी।

पड़चियो—*(न०)* एक पत्तर की बनी हुई कड़ाही। लोहे की वह कड़ाही जिसमें कोई जोड़ न हो।

पड़चो—दे० पड़चियो।

पड़छियो—दे० पड़छी।

पड़छी—*(ना०)* १. जमाया हुआ ऊनी कपड़ा। नमदा। २. घोड़े या ऊँट पर रखने की गद्दी। ३. घोड़े की पीठ से पुट्ठे तक का भाग। ४. झोला।

पड़छीती—*(ना०)* सामान रखने के लिए दीवाल से सटाकर बनाई हुई पाटन। पर-छत्ती। टाँड।

पड़जान—*(ना०)* १. बारात का स्वागत समारोह। २. विवाह का एक विशेष भोज।

पड़जानी—*(न० ब० व०)* १. बारात का स्वागत करने वाले व्यक्तियों का समूह। २. कन्यापक्ष की ओर के व्यक्ति। **मांडिया।**

पड़णो—*(क्रि०)* १. पड़ना। गिरना। २. भ्रष्ट होना। पतित होना। ३. दुख, कष्ट आदि आना। ४. लेटना। ५. बीमार होना। ६. मरना। ७. हार जाना। ८. माल का पड़ता खाना। ९. आमदनी लाभ आदि का पड़ता खाना। १०. स्थित होना। ११. होना। घटित होना। १२. प्रतीत होना। १३. अनुभव होना।

पड़त—*(वि०)* १. बिना खड़ा हुआ। जिसमें हल नहीं चलाया गया हो (खेत)। काम में नहीं लाया हुआ। *(न०)* १. शरह। दर। पड़ता। २. किसी वस्तु के खरीद के दाम। ३. ग्रंथ की नकल। प्रति।

पड़तर—*(वि०)* १. जिसमें लंबे समय से हल चलाकर बोवाई नहीं की गई हो (खेत) बिना खड़ा हुआ (खेत)। २. मुनाफा नहीं चढ़ाया हुआ (माल)। ३. बेचे बिना पड़ा रहा हुआ (माल)। ४. काम में नहीं लिया हुआ। *(न०)* खरीद कीमत। माल की लागत कीमत। लागत।

पड़तल—*(वि०)* १. जो यों ही पड़ी हुई है। जो काम में नहीं आ रही हो। २. बिना काम की। ३. जो लंबे समय से खेती के काम में नहीं ली हुई हो (खेत की जमीन)। *(न०)* १. ऊँट, घोड़े पर काठी आदि कसा जाने वाला सामान। २. किसी वस्तु के खरीद और लागत-खर्चा आदि (बिना नफा) के दाम। पड़ता। लागत। ३. बाहर से मंगवाई हुई वस्तु का निरख, भाड़ा आदि खर्चा मिलाकर बिना नफे के पड़ता खाता हुआ भाव। ४. अवनत।

पड़तळी—*(ना०)* १. गड़ाकू रखने की चमड़े की एक थैली।

पड़तळो—*(न०)* कंधे पर रखने का तलवार का पट्टा।

पड़ता—*(अव्य०)* किसी वस्तु के खरीद के दाम।

पड़ता दिन—*(न०)* १. उतरती स्थिति। २. अवदशा। पतन। अवनति। ३. वृद्धा-वस्था। बुढ़ापा।

पड़ताळ—*(ना०)* १. जाँच। देखभाल।

पड़ताळणो—*(क्रि०)* जाँच करना। निरी-क्षण करना।

पड़ती—*(ना०)* अवनति। अवदशा। पतन।

पड़ती दशा—दे० पड़ती।

पड़थार—*(ना०)* १. एक प्रकार का पड़वा। २. पड़वे का एक भाग। ३. घर का खुला भाग। ४. खुला पड़वा। **ओसरी।** ५. छप्पर वाली चबूतरी। **ओटली।** दे० पठाळ।

पड़दळ—*(न०)* तलवार या कटारी का कोष। खड्ग कोष। म्यान।

पड़दळी—*(ना०)* कटारी आदि छोटे शस्त्रों का म्यान।

पड़दादी—*(ना०)* दादी की सास। पिता की दादी। प्रपितामही।

पड़दादो—*(न०)* पिता का दादा। दादा का पिता। प्रपितामह।

पड़दानसीन—*(वि०)* परदे में रहने वाली। परदानशीन (स्त्री)।

पड़दायत—*(ना०)* राजा की वह रखैल जिसे रानी के समान परदे में रहने का सम्मान मिला हो। पत्नी के रूप में परदे में रहने वाली रखैल। उपपत्नी। परदायत।

पड़दार—*(न०)* १. सेवक। २. द्वार पर खड़ा रहने वाला सेवक। द्वारपाल। ३. चौबदार।

पड़दावेगण—*(ना०)* अंत:पुर का पहरा देने वाली स्त्री। खड़दावैंगण।

पड़दी—*(ना०)* १. छोटा परदा। २. पतली दीवाल। एक ईंट की दीवाल। ३. म्यान। शस्त्रकोष। ४. चमड़े का एक बटुआ।

पड़दो—*(न०)* १. आड़ करने के लिए लटकाया हुआ कपड़ा। परदा। २. आड़। ओट। ३. छिपाव। ४. अंतर। ५. अविश्वास। ६. स्त्रियों के घर में रहने का रिवाज। ७. कान की झिल्ली। ८. अंगरखे का परदा।

पड़नाळ—*(ना०)* वह नाली जिसमें होकर छत का पानी नीचे गिरता है। परनाळ।

पड़नाळणो—*(क्रि०)* पेट का चीरना। २. गर्भवती का पेट चीर करके भ्रूण को बाहर निकालना।

पड़पड़ो—*(न०)* बहुत बारीक मिट्टी।

पड़पण—दे० पड़पणी।

पड़पणी—*(ना०)* १. वश। अधिकार। अधीन। २. हैसियत। सामर्थ्य। कर सकना।

पड़पणो—*(क्रि०)* १. जीतना। २. वश में करना। ३. बातचीत या वाद में जीतना।

पड़पंच—दे० प्रपंच।

पड़पंची—दे० प्रपंची।

पड़पैठ—दे० परपैठ।

पड़पोतरो—*(न०)* प्रपौत्र।

पड़पोतो—दे० पड़पोतरो।

पड़पोत्र—दे० पड़पोतरो।

पडळ—*(न०)* १. आँख पर जमने वाली पपड़ी जिससे धुँधला दिखने लगता है। छारी। २. मोतियाबिंद। ३. आवरण। परदा। पटल। ४. घूँघट। ५. समूह। ढेर।

पड़लो—*(न०)* १. विवाह की एक रीति जिसमें वरपक्ष वाले वधू के लिए कपड़े, जेवर, मेवा, मेंहदी आदि मांगलिक वस्तुएँ लेकर उसके घर जाते हैं। २. पड़ले की वस्तुएँ। ३. पड़ले संबंधी कुंकुम आदि मांगलिक वस्तुओं की कागज की बनी संपुटिका।

पड़वज—*(न०)* १. आदर-सम्मान। २. सभ्य व्यवहार। ३. एक वैवाहिक भोज।

पड़वा—दे० पड़वो सं० ६।

पड़वो—*(न०)* १. खपरेलों से छाया हुआ घर। २. रनिवास। अंत:पुर। ३. मकान। ४. शयनागार। ५. ओसारा। बारजा। ओसरी। ६. प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा। पड़वा।

पड़साद—*(न०)* प्रतिशब्द। प्रतिध्वनि। गूँज।

पड़साळ—*(ना०)* १. घर का अगला भाग। २. दरवाजे के अंदर की ओसरी या शाला। ३. पड़वे की दो ओर की ढलुआँ छाजन में से प्रत्येक। ४. ऊपर की मंजिल में बना हुआ खपरेलों का एक ओर ढलुआँ छपरा। अटारी।

पड़सूंदी—दे० पड़ूंदी।

पड़हाणो—*(क्रि०)* १. मर्दन करना। २. नाश करना।

पड़ाऊ—*(वि०)* १. युद्ध में जीता हुआ (सामान)। २. लूटा हुआ। ३. पड़ा हुआ।

पड़ाक—*(अव्य०)* एक दम। *(न०)* किसी वस्तु के गिरने, थप्पड़ आदि लगने की आवाज।

पड़ादो—दे० पड़साद।

पड़ापड़—*(अव्य०)* एक के ऊपर एक का गिरना।—*(न०)* पड़पड़ शब्द।

पड़ापड़ी—*(ना०)* १. भीड़ में ऊपरा-ऊपरी पड़ने का भाव। २. अधिक भीड़।

पडार—*(न०)* १. विस्तार। २. महत्व। ३. प्रत्याहार। इंद्रियनिग्रह। ४. आरंभ। *(वि०)* महत्वशाली।

पडारणो—*(क्रि०)* १. वस्तुओं को अव्यवस्थित रूप से फैलाकर रखना। सामान को इधर-उधर फैलाना। २. आरंभ किये हुए काम का फैलावा होना। ३. प्रारंभ करना। काम हाथ में लेना। ४. फैलाना।

पडारो—*(न०)* १. वस्तुओं का अव्यवस्थित फैलावा। बिखेरा। २. आरंभ किये हुए काम का फैलावा। ३. अनेक भाग और टुकड़ों के संकलन अथवा जोड़ाई से होने वाले काम की वस्तुओं का फैलावा। ४. सामान। ५. अव्यवस्था। ६. आडम्बर। दिखावा।—दे० पडार।

पडाळ—*(न०)* १. छप्पर (पड़वा) के दो बाजू की ढलवाँ छत में की एक बाजू। २. एक ओर ढालू छत का पड़वा। **अगढाळ**।

पडाळी—दे० पडाळ।

पड़ाव—*(न०)* १. यात्रा करते समय रास्ते में कुछ समय के लिए किया जाने वाला मुकाम। **ढाणो**। टिकान। २. ठहरने की जगह।

पड़िआगळ—दे० पड़ियालग।

पड़िकमणो—दे० पड़कमणो।

पड़िगरणो—दे० पडिगरियणो।

पड़िगरियणो—*(क्रि०)* १. दान लेना। २. नाश करना। ३. पकड़ना।

पड़िगाह—*(न०)* १. बंधन। २. शरण। ३. नाश।

पड़िगाहण—*(न०)* १. शरणदाता। २. शरण। ३. बंधन। ४. नाश करने वाला।

पड़िगाहणो—*(क्रि०)* १. उत्साहित करना। जोश बँधाना। २. शरण देना। ३. बदला लेना। ४. ललकारना। **वकारणो**। ५. नाश करना। ६. बंधन में डालना।

पड़ियालग—*(ना०)* १. तलवार। खड्ग। २. तलवार का म्यान।

पड़ियो-पाथरियो—*(वि०)* १. किसी के यहाँ अधिक आने-जाने या निश्चिंत होकर ठहरने वाला। हरदम किसी एक जगह बैठे या ठहरने वाला। २. धामा डालकर पड़ा हुआ। ३. निकम्माई से किसी एक जगह जाकर पड़ा रहने वाला।

पड़िहाणो—*(क्रि०)* प्रत्याघात करना।

पड़िहाव—*(न०)* १. आघात। २. प्रत्याघात। ३. बैर का बदला।

पड़ीकी—दे० पुड़ीकी।

पड़ीको—दे० पुड़ीको।

पड़ी पाथरी—*(अव्य०)* ज्यों का त्यों। यथातथ्य। यथापूर्व। *(वि०)* 'पड़ियो-पाथरियो' का नारी रूप। *(ना०)* पड़ाव।

पड़ी मात्रा—*(ना०)* 'अे' की मात्रा अक्षर के ऊपर नहीं लिखकर अक्षर के पहिले खड़ी पाई के रूप में (प्राकृत या अपभ्रंश में) लिखने की पद्धति। जैसे—ाकाठा = कोठो।

पड़ूड़—*(न०)* १. शस्त्रविशेष। २. वीर पुरुष। ३. एक वाद्य। *(वि०)* १. अधिक। बहुत। २. वीर।

पड़ूतर—*(न०)* १. प्रत्युत्तर। जबाब का जवाब। २. जवाब।

पड़ूदी—*(ना०)* १. मैदे से बनाया जाने वाला एक भोज्य-पदार्थ। **पड़सूंवी**। **पसूंदी**। **पड़ोवी**।

पड़ूर—दे० पड़ूड़।

पड़ोतो—*(न०)* पड़पोता। प्रपौत्र।

पड़ोदी—दे० पड़ूदी।
पड़ोस—दे० पाडोस।
पड़ोसी—(दे०) पाडोसी।
पड़ोहियो—(न०) दला जोईये का भतीजा हांसू के घोड़े का नाम।
पढणो—(क्रि०) १. पुस्तक, लेख आदि की लिखावट या विषय को इस प्रकार देखना कि उसका ज्ञान हो जाय। **वाचणो**। २. अध्ययन करना। **भणणो**। ३. रटना। **रटणो**।
पढम—(वि०) प्रथम।
पढाई—(ना०) १. विद्याभ्यास। अध्ययन। पठन। **भणतर**। २. पढ़ने के बदले दिया जाने वाला शुल्क। ३. अध्यापन शैली।
पढाणो—(क्रि०) १. पढ़ाना। शिक्षा देना। सिखाना। २. समझाना।
पढावणो—दे० पढाणो।
पण—(अव्य०) १. परंतु। किन्तु। २. तो। ३. भी। ४. उपरान्त।—(न०) १. प्रतिज्ञा। टेक। **नेम**। २. शर्त। होड। ३. एक प्राचीन सिक्का। ४. करार।
पणघट—(न०) कुआं, तालाब आदि स्थान जहाँ पर पीने के लिए पानी भरा जाता है। जलाशय पर पानी भरने का घाट। पनघट।
पणच—(ना०) प्रत्यंचा। धनुष की डोरी।
पणछ—(ना०) दीवार से बाहर निकली हुई ओसरी के टिकाव के लिए दीवार में लगाया जाने वाला लकड़ी का एक उपकरण।
पणझल—(वि०) प्रणवीर।
पणधर—(वि०) प्रतिज्ञा पालक। प्रणवीर।
पणपणो—दे० पनपणो।
पणव—(न०) १. ढोल। २. नगाड़ा।
पणवंत—(वि०) प्रणवाला।
पणियारियाँ—(ना० ब० व०) बहते हुए बुलबुले जो वर्षा की बड़ी-बड़ी बूंदों के पानी पर पड़ने से बनते हैं।
पणियारी—(ना०) १. पनिहारिन। २. वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक सुविख्यात लोकगीत। ३. एक रागिनी।
पणियारो—दे० पणींढो।
पणिहार—(ना०) तालाब, कुएँ आदि से पानी भर कर लाने वाली पनिहारिन। **पणियारी**।
पणिहारी—दे० पणिहार।
पणींढो—(न०) वह स्थान जहाँ पीने के पानी के घड़े रखे रहते हैं।
पणो—(न०) १. छिलके रहित आम, खरबूजे आदि फलों के छोटे-छोटे टुकड़ों में चीनी, इलायची आदि डालकर बनाया हुआ खाद्य। पना। **पाणो**। २. आम के रस में मसाला डालकर बनाया जाने वाला एक पेय। पानक। ३. आम, इमली आदि का शर्बत। (अव्य०) संज्ञा या विशेषण शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने वाला एक प्रत्यय। जैसे—बालपणो, रातापणो। मूरखपणो।
पत—(ना०) १. साख। प्रतिष्ठा। आबरू। २. विश्वास। भरोसा। (न०) १. प्रतिज्ञा। २. लाज। ३. पत्र। पत्ता। ४. पात्र। ५. खप्पर। ६. पति।
पतगरणो—(क्रि०) १. प्रशंसा करना। २. दाद देना। ३. विश्वास करना।
पतझड़—(ना०) वृक्षों पर से पत्ते झड़ने की ऋतु। **पानखर**।
पतड़ो—(न०) पंचांग। तिथिपत्र।
पतणो—(क्रि०) १. निपटणो। निर्णीत होना। २. पूरा होना। ३. समाप्त होना।
पतन—(न०) १. अवनति। अधोगति। **पड़ती**। २. नाश। मृत्यु। ३. हार। पराजय। ४. भ्रष्टता। ५. पाप। ६. जातिच्युत।
पतनी—दे० पत्नी।
पत-पतियारो—(न०) १. प्रतिष्ठा और विश्वास। २. मान-तान।
पतपाळक—दे० पतपालण।
पतपालण—(वि०) १. प्रतिज्ञा पालक। २. प्रतिष्ठा रक्षक।

पतमाळ—दे० प्रतमाळ।

पतर—*(न०)* १. भिखारी का पात्र। भिक्षा पात्र। २. पत्तर। पतरा।

पतरावळ—*(ना०)* पत्तल। **पातळ।**

पतरी—*(ना०)* धातु का छोटा पतला टुकड़ा।

पतरो—*(न०)* पत्तर। धातु की चद्दर।

पतळो—*(वि०)* १. धनहीन। गरीब। २. अविश्वसनीय। बेएतबार। ३. बुरा। खोटा। ४. निकम्मा। ५. अशक्त। निर्बल। ६. हीन। नीच। ७. अधिक तरल। जिसमें जलांश अधिक हो। पतला। ८. बारीक। झीना। जो गाढ़ा न हो। ९. तीक्ष्ण। तीखा। १०. जो मोटा न हो। पतला। कृश।

पतवाणणो—*(क्रि०)* १. अजमाना। परखना। जाँचना। २. विश्वास करना।

पतवाळो—*(वि०)* १. प्रतिष्ठा वाला। प्रतिष्ठित। आबरूदार। २. विश्वास-पात्र। ३. प्रतिज्ञा वाला।

पतसाह—*(न०)* बादशाह।

पतसाही—*(ना०)* १. बादशाहत। २. बादशाही।

पतहीणो—*(वि०)* १. प्रतिष्ठाहीन। अप्रतिष्ठित। २. अविश्वासी। ३. निर्लज्ज।

पतंग—*(न०)* १. फतिंगा। **पतंगियो।** २. एक वृक्ष जिसकी लकड़ी से लाल रंग तैयार होता है। ३. कनकौवा। गुड्डी। **किनको।** ४. सूर्य। ५. चिनगारी। ६. पक्षी।

पतंगियो—*(न०)* १. दहकता हुआ कोयला। अग्नि कण। २. फतिंगा। ३. उड़ने वाला कोई कीड़ा-मकोड़ा।

पतंजलि—*(न०)* योगदर्शन के प्रवर्तक और महाभाष्य के लेखक ऋषि।

पताई-रावळ—*(न०)* पावागढ़ के इतिहास प्रसिद्ध वीर रावळ (प्रतापसिंह) यशवंतसिंह का उपनाम।

पताकणी—*(ना०)* सेना। पताकिनी।

पताका—*(ना०)* धजा। झंडा।

पताळ—*(न०)* पाताल।

पताळ कुओ—*(न०)* जमीन की गहराई में पत्थर तोड़ करके जिसमें पानी निकाला गया हो वह गहरा कुआँ। बहुत गहरा कुआँ।

पताळियो—*(वि०)* १. उद्दंड। २. बहुत गहरा। ३. पाताल का।

पतावट—*(ना०)* १. निर्णय। निकाल। २. समझौता। ३. निबटारा।

पतावणो—*(क्रि०)* १. निबटाना। २. समझौता करना। ३. निर्णय करना।

पतासियो—*(न०)* कड़ाही में से भोजन निकालने का एक बरतन। २. छिछली कड़ाही।

पतासो—*(न०)* चीनी की बनी हुई एक मिठाई। बतासा। चीनी की चाशनी का चकता।

पति—*(न०)* १. स्त्री का पति। कंथ। २. स्वामी। मालिक। ३. अध्यक्ष। ४. ईश्वर।

पतित—*(वि०)* गिरा हुआ। २. आचार, नीति व धर्म से गिरा हुआ। ३. जातिच्युत। ४. अधम। नीच। ५. पापी।

पतित-उधारण—*(वि०)* पतित का उद्धार करने वाला।—*(न०)* ईश्वर।

पतितपावन—*(वि०)* पतित को पवित्र करने वाला। *(न०)* ईश्वर।

पतियाणो—*(क्रि०)* विश्वास करना।

पतियारे—*(न०)* १. विश्वास। भरोसा। २. प्रतिष्ठा। **आबरू।**

पतिव्रता—*(ना०)* १. पति में अनन्य श्रद्धा और अनुराग रखने वाली स्त्री। २. सती।

पतिसाह—*(न०)* बादशाह।

पतीज—दे० पतीजो।

पतीजणो—*(क्रि०)* १. विश्वास होना। २. विश्वास करना। **पतियाणो।**

पतीजो—*(न०)* १. विश्वास। भरोसा। २. मान। **आबरू।**

पतेती—*(ना०)* पारसियों के नव-वर्ष का उत्सव।

पतो—*(न०)* पत्रादि पर लिखा जाने वाला पाने वाले का नाम, गाँव और रहने की जगह। सरनामो। २. पता। ठिकाना। ३. जानकारी। ४. खोज। खबर। ५. भेद। रहस्य। ६. महाराणा प्रताप की काव्योक्त संज्ञा।

पत्तळ—दे० पातळ १. २.।

पत्ती—*(ना०)* १. छोटा पत्ता। २. फूल की पंखड़ी। ३. चूड़ी पर चढ़ाई जाने वाली सोने या चाँदी की लम्बी पत्री।

पत्तो—*(न०)* १. पत्ता। पत्र। २. ताश का पत्ता। ३. कान का एक गहना।

पत्थ—*(न०)* १. पार्थ। अर्जुन। २. पंथ। मार्ग। ३. पथ्य।

पत्थर—*(न०)* पाषाण। शिला। **भाटो**।

पत्नी—*(ना०)* विधिपूर्वक विवाहित स्त्री। पाणिगृहीता। भार्या। सहधर्मिणी। बहू।

पत्र—*(न०)* १. पत्ता। पान। २. चिट्ठी। पत्री। ३. पात्र। बरतन। ४. खप्पर। ५. कागज।

पत्रतूल—*(वि०)* १. हलका। २. ओछा। नीच। *(न०)* नाश।

पत्र-पुष्प—*(न०)* १. पत्र और पुष्प। २. पूजा की सामग्री। ३. भेंट की साधारण वस्तु। ४. भेंट।

पत्रवाह—*(न०)* १. तीर। बाण। २. पत्र ले जाने वाला। डाकिया। पत्रवाहक।

पत्रातूळ—*(न०)* १. नाश। २. गायब।

पत्री—*(ना०)* १. तीर। बाण। २. चिट्ठी। पत्र। ३. कुंकुमपत्री। ४. वृक्ष। पेड़। ५. पक्षी।

पथ—*(न०)* १. पथ्य। **किरी**। २. मार्ग। रास्ता। ३. आचरण, व्यवहार आदि की रीति। ४. आचरण। व्यवहार।

पथक—दे० पथग।

पथग—*(न०)* १. प्रांत। २. प्रदेश। परगना। ३. मार्ग जानने वाला। ४. मार्ग बताने वाला। मार्गदर्शक।

पथर—दे० पत्थर।

पथरणो—*(न०)* खाट पर बिछाने का रुई-दार मोटा गद्दा। बिस्तर। बिछौना।

पथराळ—*(वि०)* पत्थर वाला (प्रदेश। भूमि) **डूंगराळ**।

पथरी—*(ना०)* १. उस्तरे आदि की धार तेज करने का पत्थर का टुकड़ा। सिल्ली। २. मूत्र-मार्ग का एक रोग, जिसमें वृक्क में पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं। अश्मरी। ३. कंकर। कंकड़ी। ४. चकमक।

पथरीली—*(वि०)* १. पत्थर से युक्त (भूमि)। पत्थर वाली। २. कड़ी। कठोर।

पथरो—*(न०)* पत्थर। **भाटो**।

पथारी—*(ना०)* १. सोने या बैठने के लिए बिछाई हुई सामग्री। २. बिछौना।

पथारो—*(न०)* विस्तार। फैलाव।

पथिक—*(न०)* राहगीर। यात्री।

पथी—*(न०)* पथिक। राहगीर। **मुसाफिर**।

पथ्थर—दे० पत्थर।

पथ्य—*(वि०)* हितकर। अनुकूल। गुण-कारी।—*(न०)* १. जल्दी पचने वाला। हलका भोजन। २. रोगी के लिए उपयुक्त आहार। पथ्य खुराक। ३. परहेज। **करी**। **किरी**।

पद—*(न०)* १. पैर। २. कविता की एक पंक्ति। ३. श्लोक पाद। ४. वह गायन (गीत) जिसमें ईश्वर के गुणों का कीर्तन हो। ईश्वरभक्ति सम्बन्धी गीत। भजन। ५. प्रत्ययसहित शब्द *(व्या०)*। ६. अर्थ-वाला शब्द *(व्या०)*। ७. विभक्ति *(व्या०)*। ८. ओहदा। ९. उपाधि। १०. मोक्ष। निर्वाण।

पदक—*(न०)* तमगा। मैडल।

पदकड़ी—*(ना०)* एक कंठाभूषण।

पदग—*(न०)* पैदल सिपाही। प्यादा।

पदच्छेद—*(न०)* संधि तथा समासयुक्त पदों को व्याकरण के नियमानुसार अलग-अलग करने की क्रिया। पद का व्याकरण। पद-विग्रह।

पदज—*(न०)* १. शूद्र। २. पैर की अंगुली।

पदण—*(न०)* १. ऊंट। *(वि०)* १. बहुत पादने वाला। २. भागने वाला।

पदणियो—*(वि०)* १. बहुत पादने वाला। **पादणियो**। २. तेज भागने वाला।

पदबंध—*(न०)* १. काव्य। २. काव्यरचना। पद्य-रचना। ३. पद्यबंध। ४. एक प्रकार का गद्य।

पदम—दे० पद्म।

पदमण—*(वि०)* पद्मिनी।

पदमणी—*(ना०)* १. पद्मिनी स्त्री। स्त्री की चार जातियों में सर्वोत्तम जाति की स्त्री। २. सुन्दर स्त्री।

पदमराग—*(न०)* पद्मराग। माणिक्य। लाल रत्न। **लाल**।

पदमसिला—*(ना०)* १. एक तीर्थस्थान। २. कुएँ पर रखा रहने वाला एक लम्बा पत्थर।

पदमा—*(ना०)* १. लक्ष्मी। पद्मा। २. मनसादेवी का एक नाम। **मंछादेवी**।

पदमालया—*(ना०)* लक्ष्मी। पद्मालया। कमला।

पदमासण—दे० पद्मासन।

पदमो तेली—*(न०)* 'रुकमणी मंगल' का रचयिता तेली जाति का एक प्रसिद्ध भक्त।

पदरज—*(ना०)* पगों की धूलि। चरण-रज।

पदलालित्य—*(न०)* कविता में पद या शब्दों का माधुर्य।

पदविचार—*(न०)* पदरचना का विचार सिंटैक्स *(व्या०)*।

पदविन्यास—*(न०)* वाक्यों में पदों की रचना *(व्या०)*।

पदवी—*(ना०)* १. उपाधि। २. दर्जा। ओहदा। पद।

पदव्याख्या—*(ना०)* वाक्य के शब्दों की व्याख्या। पार्जिग। *(व्या०)*।

पदाणो—*(वि०)* १. बार-बार आवाज के साथ पादने वाला। अधिक पादने वाला। पादू। २. कायर। *(क्रि०)* १. ललचाना। पिदाना। ३. हैरान करना।

पदाति—*(ना०)* १. पैदल सेना। *(न०)* २. पैदल सैनिक। ३. पैदल चलने वाला।

पदारथ—दे० पदार्थ।

पदार्थ—*(न०)* १. पदार्थ। वस्तु। २. द्रव्य। ३. सार। तत्व। ४. शब्दार्थ। ५. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—ये चारों अथवा इनमें से कोई।

पदावणो—दे० पदाणो।

पदावली—*(ना०)* १. वाक्यों की श्रेणी। २. भजनों का संग्रह।

पदै—दे० पेटे।

पद्धति—*(ना०)* १. रीति। रिवाज। २. शास्त्रानुमोदित रीति। ३. ढंग। ४. मार्ग।

पद्म—*(न०)* १. कमल। २. विष्णु के चार आयुधों में से एक। ३. पाँव की एक भाग्य-सूचक रेखा। ५. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ६. एक आसन। ७. गणित में सोलहवें स्थान की संख्या। हजार अरब। ८. एक नाग। ९. हाथी।

पद्मनाभ—*(न०)* १. प्रसिद्ध ऐतिहासिक काव्यग्रंथ 'कान्हड़देप्रबंध' का रचयिता पंद्रहवीं शती का एक प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता और कवि। पद्मनाभ, जालोर के अधिपति वीर अखैराज सोनगरे का आश्रित था, जिसने अखैराज के पूर्वज महाबली वीर कान्हड़दे का अलाउद्दीन खिलजी के साथ जालोर में हुए युद्ध का वर्णन प्राचीन मारवाड़ी (जूनी गुजराती) में बड़ी ही ओजस्वी भाषा में किया है। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु।

पद्मा—*(ना०)* १. लक्ष्मी। २. रुक्मिणी।

पद्मालया—*(ना०)* लक्ष्मी। कमला।

पद्मासन—*(न०)* १. पद्म के आकार का एक आसन। २. योग के चौरासी आसनों में से एक। योगासन।

पद्य—*(न०)* १. कविता। २. छंदबद्ध शब्द-रचना।

पद्यानुवाद—*(न०)* किसी रचना का पद्य में किया गया अनुवाद।

पधराणो—दे० पधरावणो।

पधरामणी—*(ना०)* १. पधारने की क्रिया। आदरपूर्वक आगमन। २. गुरु आचार्य आदि के आगमन पर अगवानी और उत्सव करके उनको अपने यहाँ लाने की क्रिया। ३. पधरामणी में दी जाने वाली भेंट।

पधरावणो—*(क्रि०)* १. स्थापित करना। २. आदर के साथ लिवा लाना। ३. बिठाना।

पधारणो—*(क्रि०)* १. आना। २. जाना। (आदरसूचक)

पधारो—*(न०)* १. भूतप्रेतादि का आवेश। २. किसी बड़े आदमी से संबंध अथवा मेल का जोश।

पनग—*(न०)* सर्प। पन्नग।

पनगसंघार—*(न०)* मोर।

पनगाण—*(न० ब० व०)* पन्नग समूह।

पनगारि—*(न०)* गरुड़।

पनड़ी—*(ना०)* १. रहँट के चक्कर में लगी रहने वाली धातु की पत्तियाँ जो रहँट चलने के समय खनक-खनक की आवाज करती हैं। २. एक सुगंधीदार घास की पत्तियाँ, जो सुगंधी के लिए कपड़ों में रखी जाती हैं। ३. स्त्रियों का एक आभूषण।

पनड़ोतरसो—दे० पनरोतरसो।

पनणो—*(क्रि०)* भीख माँगना।

पनोड़तरो—दे० पनरोतरो।

पनपणो—*(क्रि०)* १. पनपना। सशक्त होना। २. पल्लवित होना। ३. उन्नति करना। ४. फलना-फूलना। ५. विकसित होना।

पनपाणो—दे० पनपावणो।

पनपावणो—*(क्रि०)* ऐसा कार्य करना जिससे कोई वस्तु पनपे। पनपाना।

पनरह—दे० पनरै।

पनराड़ी—*(ना०)* १. पक्ष। पखवाड़ा। पंद्रह दिन। *(अव्य०)* पंद्रह दिन का समय।

पनरै—*(वि०)* १. दस और पाँच। *(न०)* १५ की संख्या।

पनरै-वीसी—*(वि०)* तीन-सौ।

पनरोतरसो—*(न०)* पहाड़े में बोला जाने-वाला एक सौ पन्द्रह (११५) का अंक।

पनरोतरो—*(न०)* पंद्रहवाँ वर्ष। पंद्रहवाँ सम्वत्।

पनवाड़ी—*(न०)* १. पान बेचने वाला। तमोली। २. नागरबेल के पानों की बाड़ी।

पनसूर—दे० पनूर।

पनंग—*(न०)* सर्प।

पनंगेस—*(न०)* शेषनाग। पन्नगेश।

पनातळ—दे० पतरावल।

पनामारू—*(न०)* १. एक लोकगीत। २. लोकगीतों का एक नायक। ३. 'पति' अर्थसूचक लोकगीतों का नायक।

पनाळ—*(ना०)* छत से पानी गिरने की नाली। **परनाळ**।

पनाह—*(ना०)* शरण। रक्षा।

पनांग—*(न०)* *पिनाक। शिवधनुष।*

पनियाँ—*(ना० ब० व०)* जूतियाँ। पनहीं।

पनूर—*(न०)* कड़बी के सूखे पत्ते। जुआर, बाजरी के पत्ते। पनसूर।

पनो—*(न०)* १. वस्त्र की चौड़ाई। पनहा। २. किसी वस्तु की चौड़ाई। ३. मर्म। भेद। ४. तात्पर्य। ५. शक्ति। ६. बुद्धि या शक्ति का अनुमान। ७. एक रत्न।

पनोती—*(ना०)* १. शनिग्रह की अनिष्ट-कारी स्थिति। साढसती। पड़ती दशा। २. शनि की दशा। ३. शनिग्रह का शुभा-शुभ फलप्रद स्थितिकाल। ४. भाग्यशाली स्त्री। ५. पनोता करने वाली स्त्री। ६. जिसका एक भी बालक मरा न हो वह स्त्री।

पनोतो—*(वि०)* १. अनिष्ट से बचानेवाला। २. मंगलकारी। शुभ। ३. कुल में श्रेष्ठ काम करने वाला। ४. सुखी। ५. भाग्यशाली। पुण्यवान। ६. वंश विस्तार वाला। ७. सफल जीवन।

पन्नग—दे० पनग।

पन्नामारू—*(न०)* लोकगीतों का एक नायक।

पन्नी—*(ना)* कागज के समान रांगे या पीतल का पतला पत्तर। **माळीपन्नो।**

पन्नो—*(न०)* एक रत्न। पन्ना। मरकतमणि।

पन्हो—दे० पनो।

पपड़ी—*(ना०)* १. सूख कर चिटकी हुई किसी वस्तु की पतली परत। २. मवाद सूख जाने पर घाव के ऊपर जमी हुई परत। **खुरंट।**

पपैयो—*(न०)* १. एक फल। पपैया। पपीता। **इरंड काकड़ी।** २. पपैया का वृक्ष। ३. एक पक्षी। पपीहा। चातक।

पप्पो—*(न०)* 'प' वर्ण। पकार।

पबलिक—*(ना०)* सर्वसाधारण प्रजा। आम जनता।

पबै—*(न०)* पर्वत।

पबाँवै—*(न०)* १. हिमालय। पर्वतपति। २. आबू।

पबोड़ी—*(ना०)* १. कमलनाल।

पब्बय—दे० पब्बै।

पब्बासाई—*(वि०)* १. असत्य। झूंठी। २. अवास्तविक। ३. अनघड़।

पब्बै—*(न०)* पर्वत।

पभणो—*(क्रि०)* कहना। **प्रभणो।**

पमण—*(न०)* १. प्रमाण। २. प्राप्ति।

पमंग—*(न०)* घोड़ा।

पमंगी—*(ना०)* घोड़ी।

पमाड़ियो—दे० पंवाड़ियो।

पमावणो—प्राप्त कराना। दिलवाना। दे० पोमावणो।

पमूकणो—*(क्रि०)* छोड़ना। प्रमुक्त करना।

पय—*(न०)* १. दूध। २. पानी। ३. पद। ४. पदपंक्ति। ५. पाँव। ६. समुद्र।

पयहारी—*(न०)* केवल दूध का भोजन करने वाला। दूधाहारी।

पयंपणो—*(क्रि०)* कहना।

पयाण—दे० प्रयाण।

पयाणै-लांबै—*(न०)* मृत्यु। *(अव्य०)* लंबे प्रयाण को।

पयाणो—*(न०)* १. प्रस्थान। प्रयाण। यात्रा। २. मृत्यु।

पयाळ—*(न०)* १. पाताल। २. भूसा।

पयेण—*(न०)* पाँव। *(अव्य०)* पाँवों से।

पयोद—*(न०)* बादल।

पयोधर—दे० पयोहर।

पयोनिधि—*(न०)* समुद्र।

पयोहर—*(न०)* १. कुच। पयोधर। स्तन। २. बादल। ३. समुद्र। ४. गाय का अयन। **उवाड़ो।**

पर—*(अव्य०)* १. परन्तु। किन्तु। लेकिन। २. तो भी। फिर भी। ३. उपरान्त। ४. तत्पर। ५. पश्चात्। पीछे। ६. ऊपर। ७. समान। भाँति। *(वि०)* १. दूसरा। अन्य। और। २. अपरिचित। ३. पराया। दूसरे का। ४. अतिरिक्त। उपरांत। अलावा। ५. तटस्थ। दूर। ६. परम। श्रेष्ठ। *(न०)* १. शत्रु। दुश्मन। २. पंख। पक्ष। पाँख। ३. प्रकार। तरह। **परि।** ४. प्रतिज्ञा।

परईख—*(न०)* चाकर।

परउ—*(क्रि० वि०)* दूर। अलग। उस तरफ। **उठीनै।**

पर उपकार—दे० परोपकार।

परकती—दे० प्रकृति।

परकमणा—दे० परकम्मा।

परकमा—*(ना०)* परिक्रमा। **फेरी। भनती।**

परकम्मा—*(ना०)* १. प्रदक्षिणा। २. परिक्रमण। ३. प्रतिक्रमण।

परकर—*(न०)* १. परिकर। कमरबंद। पटका। २. करधनी। कंदोरा। ३. भीड़। समूह। ४. राशि। ढेर। ५. पलंग। ६. आरम्भ। ७. सहचर। सेवक।

परकरती—दे० प्रकृति।

परकरमण—*(न०)* चाकर।

परकरमा—*(ना०)* प्रदक्षिणा। परिक्रमा। **परकमा। फेरी।**

परकाज—*(न०)* १. दूसरे का कार्य। २. परोपकार। *(अव्य०)* दूसरे के लिये।

परकार—*(न०)* वर्तुल बनाने का एक औजार। कंपास। **आभाळो।**

परकाळ—दे० परकार।

परकास—दे० प्रकाश।

परकासणो—*(क्रि०)* १. प्रकाशित करना। २. प्रगट करना। ३. कहना। *(व्यंग्य में)*।

परकीया—*(ना०)* १. दूसरे की स्त्री। २. अपने पति को छोड़कर परपुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री। ३. दूसरे प्रकार की नायिका।

परकोटो—*(न०)* मकान, गढ़ आदि के चारों ओर की दीवाल।

परख—*(ना०)* १. परीक्षा। २. पहचान।

परखणो—*(क्रि०)* १. परीक्षा करना। परखना। जाँचना। २. पहचान करना। पहचानना।

परखनळी—*(ना०)* परीक्षण के काम में आने वाली काँच की एक नलिका।

परखंड—*(न०)* परदेश। अन्य देश।

परखा—*(ना०)* परीक्षा।

परखाई—*(ना०)* परखने का काम या मजदूरी।

परखाणो—दे० परखावणो।

परखामणी—*(ना०)* १. परखने का काम। २. परखने की उजरत।

परखावणो—*(क्रि०)* १. परीक्षा करवाना। २. परखना। जाँच करना। ३. खरी-खरी सुनाना।

परखी—*(ना०)* लोहे की पतली, छोटी तथा लंबी नोकदार एक नली जो बंद बोरे में से नमूने के लिए नाज निकालने के काम आती है।

परग—*(न०)* १. रिश्ता। संबंध। २. पाँव। कदम।

परगट—दे० प्रगट।

परगटणो—*(क्रि०)* १. प्रगट होना। खुलना। २. प्रगट करना। खोलना।

परगनो—*(न०)* जिले से छोटा भू-भाग। ताल्लुका। परगना।

परगरणो—*(क्रि०)* १. मिलना। २. ग्रहण करना।—*(न०)* परिग्रहण।

परगरो—दे० परिग्रह।

परगळ—*(वि०)* १. अत्यन्त। बहुत। २. दृढ़। मजबूत। ३. अपरिमाण।

परगळणो—दे० परघळणो।

परगळो—*(वि०)* बहुत। अधिक।

परगह—*(ना०)* १. परिग्रह। परिजन। परिवार। कुटुंबीजन। २. मित्र-मंडली। ३. सेना। ४. राजा के पास रहने वाला मरजीदानों का समूह। आश्रित जन।

परगाम—*(न०)* दूसरा गाँव।

परगाळ—*(न०)* प्रातःकाल। सवेरा।

परगास—दे० प्रकाश।

परगासणो—*(क्रि०)* १. कहना। २. प्रकाशित होना। ३. प्रकाशित करना।

परगी—दे० परखी।

परघ—*(न०)* भाला। शूल। २. वज्र। ३. गदा। मुगदर। परिघ। ४. गंडासा। ५. तीर। ६. लोहा जड़ी लाठी। **कड़ियाळी डांग।** ७. अर्गला। ब्योंडा। **आगळ।** ८. घोड़ा। ९. कलश। घड़ा।

परघर—*(न०)* दूसरे का घर।

परघळ—दे० परगळ।

परघळणो—*(क्रि०)* पिघलना।

परघळावणो—*(क्रि०)* पिघलाना।

परचई—दे० परची।

परचणो—*(क्रि०)* १. हिलना-मिलना। २. मिलना-जुलना। ३. बोलना। कहना। ४. परिचित होना। ५. परिचय देना।

परचंड—दे० प्रचंड।

परचाधारी—*(न०)* १. चमत्कार दिखाने-वाला। २. भक्ति के बल से चमत्कार के काम दिखाने वाला। ३. सिद्ध पुरुष।

परचार—दे० प्रचार।

परचारणो—*(क्रि०)* प्रचार करना। प्रचारना।

परचावणी—*(ना०)* मृतक के घर वालों को सान्त्वना देने को जाने की क्रिया।

परची—*(ना०)* १. भक्त, साधु आदि का जीवन-चरित्र। परिचय ग्रंथ। २. कागज का टुकड़ा। चिट। ३. चिट्ठी। पत्री।

परचूटण—दे० परचूण।

परचूण—*(वि०)* १. प्रकीर्ण। फुटकर। थोड़ा-थोड़ा। जुदा-जुदा। *(न०)* १. फुटकर वस्तुएँ। खुदरा। २. फुटकर बेची जाने वाली चीजें। आटा, दाल, मसाले आदि बनिये के यहाँ मिलने वाला फुटकर सामान। ३. इकन्नी, दुअन्नी पैसा आदि छोटे सिक्के। रेजगारी।

परचूणियो—*(न०)* आटा, दाल आदि फुटकर सामान बेचने वाला। परचूनिया।

परचूणी—*(वि०)* १. परचून से संबंधित। २. फुटकर। परचून।

परचूरण—दे० परचूण।

परचै—दे० परिचय।

परचो—*(न०)* १. परिचय। २. भूत, प्रेत आदि का आवेश। ३. आवेश के समय भूत-प्रेतादि की ओर से (आवेशी के द्वारा) दिया जाने वाला अपना परिचय। ४. चमत्कार करामात। ५. कागज का टुकड़ा। चिट। पर्चा। ६. पत्र। खत।

परछाई—*(ना०)* १. छाया। २. प्रतिबिंब।

परज—*(ना०)* १. प्रजा। २. जाति। ३. एक रागिनी। ४. कोयल। ५. तलवार की मूठ का एक भाग। ६. ढाल पकड़ने की मूठ। *(वि०)* दूसरे से उत्पन्न।

परजण—*(ना०)* एक भाजी। तरकारी। *(न०)* अन्य लोग।

परजन—*(न०)* १. आश्रित लोग। परिजन। २. सेवक। ३. परिवार। ४. परजन्य। बादल।

परजळणो—*(क्रि०)* १. प्रज्वलित होना। जलना। **बळणो**। २. चेतन होना। चेतना। ३. गुस्से होना। ४. दुखी होना।

परजंक—*(ना०)* १. पालकी। २. पलंग। **पर्यंक**।

परजंत—*(अव्य०)* १. तक। लौं। पर्यंत। **तांई**। २. अतिरिक्त। ३. इत्यादि। *(न०)* १. परिधि। घेरा। २. हद। सीमा। ३. अंत। अवसान। ४. अंत। किनारा। **छेड़ो**।

परजा—*(ना०)* १. प्रजा। रैयत। २. आसामी।

परजाऊ—*(वि०)* १. सार्वजनिक। सर्वसाधारण से संबंधित। २. मिश्रित भात और रसों वाला प्रजा संबंधी (काव्य)। ३. पर्यायवाची नामों से संबंधित (काव्य)। *(अव्य०)* प्रसंगवश। चलते में। यों ही।

परजाऊ दूहा—*(न० ब० व०)* वीररस का वह दूहा साहित्य जो किसी एक वीर व्यक्ति की प्रशंसा के संबंध का न होकर सभी प्रकार के वीरों के विविध गुणों को प्रकाशित करने वाला हो। २. वीर विरुदायक दूहा-साहित्य।

परजात—*(ना०)* १. दूसरी जाति। परजाति। २. दूसरी जाति का मनुष्य। *(वि०)* दूसरे से उत्पन्न।

परजातरो—*(वि०)* १. दूसरे से उत्पन्न। २. दूसरी जाति से उत्पन्न। वर्णसंकर। ३. दूसरी जाति का। *(ना०)* एक गाली।

परजात-रो-मूत—*(न०)* १. वर्णसंकर। २. एक गाली।

परजाति—*(ना०)* दूसरी जाति।

परजापत—*(न०)* १. कुम्हार। २. ब्रह्मा। प्रजापति।

परजाळणो—*(क्रि०)* जलाना। प्रजालना। प्रज्वलित करना।

परजीत—*(न०)* १. चाकर। २. शत्रु की विजय।

परठ—*(ना०)* १. सजावट। २. स्थापन। प्रतिष्ठा। ३. हकीकत। ४. शर्त। ५. सजावट।

परठण—*(ना०)* १. व्यवस्था। प्रबंध। २. विवाह की एक रीति। ३. अस्थापन।

परठणो—*(क्रि०)* १. प्रतिष्ठित करना। स्थापन करना। २. धारण करना। ३. रखना। ४. बाँधना। ५. तीर चलाना। ६. ऊंट या घोड़े पर जीन कसना। ७. रकाब में पैर रखना। ८. मारना। ९. चलना। १० जाँच करना। ११. रचना। १२. देना। १३. कहना। १४. भेजना।

परठीजणो—*(क्रि०)* १. स्थापित किया जाना। २. रखा जाना।

परठो—*(न०)* १. (बड़े भोज में) भोजन करने वालों की पंक्ति। भोजन करते हुए व्यक्तियों की पंक्ति। २. भोजन-मंडप। ३. भोजन-मंडप का द्वार जहाँ निमंत्रितों का स्वागत करने के लिए विशेष व्यक्तियों (पंचों, मुखियाओं) की बैठक होती है।

परड़—*(ना०)* एक जाति का छोटा साँप। सपोलिया।

परड़की—दे० परड़।

परड़ै—*(न०)* प्रलय।

परड़ो—*(न०)* प्रलय।

परड़ोटियो—दे० परड़।

परणकुटी—*(ना०)* पर्णकुटि। झोंपड़ी। कुटिया।

परणणो—*(क्रि०)* ब्याहना। विवाह करना। **परणीजणो**।

परणाई—दे० परणामणी।

परणामणी—*(ना०)* १. विवाह करने की क्रिया। विवाह-कर्म। २. विवाह कराने का महनताना या नेग। ब्राह्मण को दी जाने वाली विवाह की दक्षिणा।

परणावणी—दे० परणामणी।

परणावणो—*(क्रि०)* १. विवाह करने को प्रेरित करना। २. विवाह करना। ३. पुरोहित (गाँव गुरू) के द्वारा धर्मशास्त्रानुसार विवाह विधि का संपादन करना।

परणियो—दे० परण्यो।

परणी—*(ना०)* विवाहिता स्त्री। पत्नी। परिणीता। **धण**।

परणीजणो—*(क्रि०)* विवाह करना। परिणय करना। शादी करना।

परणेत—*(वि०)* विवाहित।

परणेतर—*(न०)* पति। वर। *(ना०)* पत्नी। स्त्री।

परणेता—*(ना०)* विवाहिता स्त्री। पत्नी।

परण्यो—*(न०)* जिसके साथ विवाह किया है वह पुरुष। पति। **धणी**।

परत—*(अव्य०)* १. हरगिज। कभी। कदापि। २. किसी भी दशा में। कभी भी। ३. भूल कर भी। ४. वापिस। ५. परस्पर। *(ना०)* १. शर्त। दाँव। २. सूची। ३. प्रति। नकल। Manuscript. ४. सतह। स्तर। ५. कपड़े को समेटने पर बनने वाला उसका प्रत्येक भाग। तह। ६. मुकाबला।

परतक—*(अव्य०)* प्रत्यक्ष। आँखों के सामने। सामने।

परतख—दे० परतक।

परतच्छ—दे० परतक।

परत-री-बेढ—*(ना०)* १. शर्त की लड़ाई। हारजीत पर किसी निर्णय की लड़ाई।

परतल—दे० पड़तल।

परतळो—दे० पड़तलो।

परतंग्या—*(ना०)* प्रतिज्ञा। **परतिग्या**।

परतंत्र—*(वि०)* पराधीन। पराश्रित। परवश।

परतंत्रता—*(ना०)* पराधीनता ।
परताप—दे० प्रताप ।
परतापी—दे० प्रतापी ।
परताळ—दे० पड़ताळ ।
परताळणो—दे० पड़ताळणो ।
परतावणो—*(क्रि०)* दूसरों को कष्ट देना ।
परतिग्या—दे० प्रतिज्ञा ।
परतीत—*(ना०)* १. प्रतीति । विश्वास । निश्चित धारणा । २. प्रतिष्ठा । ३. **खातरी** । तसल्ली ।
परत्त—*(अव्य०)* १. और जगह । परत्र । २. परलोक में । ३. भविष्य में । ४ प्रत्यक्ष । *(न०)* प्रण । प्रतिज्ञा ।
परत्री—*(ना०)* परस्त्री । दूसरे की औरत ।
परथम—दे० प्रथम ।
परदछणा—*(ना०)* प्रदक्षिणा ।
परदड़ी—दे० पड़तलो ।
परदत्तां—*(अव्य०)* दान में दिये जाने वाले गाँव, भूमि आदि के ताम्रपत्र और राजाज्ञा-पत्रों (पट्टे-परवानों) का एक पारिभाषिक दानपत्र-पद जिसका उल्लेख 'स्वदत्तां' या 'अपदत्तां' के साथ में होता है । दानपत्रों का एक पारिभाषिक शब्द । *(वि०)* १. किसी की ओर से दान में दिया हुआ । २. दूसरे राजा या राज्य की ओर से दान में प्राप्त । ३. प्रदत्त । दिया हुआ ।
परदळ—*(न०)* शत्रुसेना ।
परदळी—दे० परदड़ी ।
परदादो—दे० पड़दादो ।
परदारा—*(ना०)* दूसरे की स्त्री । **पारकी लुगाई** ।
परदुख—*(न०)* दूसरे का दुख । **पारको दुख** ।
परदेश—*(न०)* १. दूसरा देश । २. विदेश । **पारको देश** ।
परदेशी—*(वि०)* १. पर देश का । दूसरे देश का । प्रवासी । परदेशवासी ।
परदेस—दे० परदेश ।
परदेसण—*(ना०)* परदेशी स्त्री । *(वि०)* परदेश में रहने वाली ।
परदेसी—दे० परदेशी ।
परदो—दे० पड़दो ।
परदोस—*(न०)* परदोष । दूसरे का अवगुण । —दे० प्रदोष ।
परधन—*(न०)* दूसरे का धन । **पारको धन** ।
परधर्म—*(न०)* १. दूसरे का धर्म । २. दूसरा धर्म । भिन्न धर्म ।
परधान—दे० प्रधान ।
परधानगी—दे० परधानी ।
परधानी—*(ना०)* १. प्रधान का पद । २. प्रधान का काम ।
परधाम—*(न०)* १. परमधाम । वैकुंठ । स्वर्ग । २. परलोक ।
परनारी—*(ना०)* परस्त्री । **पारकी लुगाई । दूजेरी बैर** ।
परनाळ—दे० पड़नाळ ।
परनाळणो—दे० पड़नाळणो ।
परनाळो—*(न०)* बड़ी परनाळ । **मोखो** ।
परन्यात—*(ना०)* दूसरी न्याति । पर-जाति ।
परपधत—*(न०)* चाकर ।
परपंच—दे० प्रपंच ।
परपीड़त—*(न०)* चाकर । *(वि०)* दूसरे के द्वारा सताया जानेवाला । परपीड़ित ।
परपुरुष—*(न०)* १. पति के सिवाय दूसरा पुरुष । २. अन्य पुरुष । ३. अपरिचित मनुष्य । ४. परब्रह्म ।
परपूठ—*(अव्य०)* १. अनुपस्थिति में । गैर-हाजिरी में । २. अप्रत्यक्ष । पीठ पीछे । ३. दूसरे के जरिये । अन्य द्वारा ।
परपैठ—*(ना०)* हुंडी और उसकी पैठ दोनों के खो जाने से तीसरी बार लिखी जाने वाली हुंडी । हुंडी की तीसरी नकल ।
परपोटो—*(न०)* परपोटा । बुदबुदा । **बुड़-बुड़ियो** ।

परब—*(न०)* १. पर्व। उत्सव। २. सूर्य या चन्द्र-ग्रहण। ३. संक्रांति। ४. पुण्यकाल। ५. अवसर। ६. गाँठ। जोड़। ७. पुस्तक का भाग। ८. किसी रत्न का छोटा टुकड़ा। ९. एक प्रकार का हीरा। १०. प्याऊ।

परबत—*(न०)* पर्वत। पहाड़। डूंगर। भाखर।

परबळ—दे० प्रबल।

परबस—दे० परवश।

परबंध—दे० प्रबंध।

परबारी—'परबारो' का नारी रूप।

परबारो—*(अव्य०)* १. सीधा। ठीक सामने। बिना रुके-मुड़े। २. बिना किसी की मारफत या मध्यस्थ के। ३. बिना किसी की सिफारिश के। ४. कहे बिना। पूछे बिना। ५. उपरांत। ६. अपने-आप। ७. परोक्ष में।

परबी—*(ना०)* १. पर्वतादि में जलस्रोत का विवर या छोटा गड्ढा जिसमें निरंतर पानी भरा रहता है। पर्वी। २. प्याऊ। ३. पर्व दिन।

परबीती—दे० परवीती।

परबोध—दे० प्रबोध।

परबोधणो—*(क्रि०)* १. ज्ञानोपदेश करना। २. सावधान करना। जगाना। ३. सांत्वना देना।

परब्रह्म—*(न०)* निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म जो जगत से परे है। परमतत्त्व। परमात्मा।

परभव—*(न०)* १. दूसरा जन्म। जन्मान्तर। २. दूसरा लोक।

परभा—दे० प्रभा।

परभात—*(न०)* प्रभात। प्रातःकाल। सवेरा। सबार।

परभातियो तारो—दे० प्रभातियो तारो।

परभाती—*(ना०)* प्रभात में गाई जाने वाली राग। प्रभाती।

परभारी—दे० परबारी।

परभाव—*(न०)* १. विरोधी भाव। २. प्रभाव। असर। गुण। दे० प्रभाव।

परभाषा—*(ना०)* १. दूसरे की भाषा या बोली। २. दूसरे देश की भाषा।

परभु—दे० प्रभु।

परभोम—*(ना०)* १. परदेश। २. दूसरे की जमीन।

परम—*(वि०)* १. जिससे अधिक और कुछ न हो। २. सर्वश्रेष्ठ। उत्कृष्ट।—*(न०)* १. परमेश्वर। शिव। २. विष्णु।

परमगति—*(ना०)* १. उत्तम गति। २. परलोक वास। ३. मोक्ष।

परमज्ञान—*(न०)* ईश्वर संबंधी ज्ञान।

परमज्योति—*(न०)* परमात्मा।

परमतत्त्व—*(न०)* १. ब्रह्म। २. सनातन तत्त्व। मूलतत्त्व।

परमदयाळ—*(न०)* परम दयालु। ईश्वर।

परमधाम—*(न०)* १. उत्तम लोक। २. स्वर्ग। ३. मोक्ष।

परमपद—*(न०)* मोक्ष।

परमपिता—*(न०)* परमात्मा।

परमपुरुष—*(न०)* परमात्मा।

परमपूज—*(वि०)* १. सर्वश्रेष्ठ पूज्य। सबसे अधिक पूज्य। परमपूज्य। २. गुरुजनों को पत्र में लिखी जानेवाली उपमा।

परमळ—*(ना०)* सुगंधि। परिमल। २. भुना हुआ नाज।

परमहंस—*(न०)* संन्यासियों के चार प्रकारों में सबसे श्रेष्ठ प्रकार। २. वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को प्राप्त कर चुका हो। ३. परमात्मा।

परमाण—दे० प्रमाण। दे० परिमाण।

परमाणणो—*(क्रि०)* १. प्रमाण मानना। २. स्वीकार करना। ३. अनुमान करना।

परमाणंद—*(न०)* परमानंद। ब्रह्मानंद। ब्रह्म के अनुभव का सुख। दे० परमानंद।

परमाणु—*(न०)* पृथ्वी, जल, वायु, तेज—इन चार भूतों का छोटे से छोटा भाग, जिसका और विभाग नहीं हो सकता। अत्यन्त सूक्ष्म अणु। एटम।

परमाणे—दे० प्रमाणे ।
परमाणो—दे० परवाणो ।
परमात्मा—*(न०)* परमेश्वर । परब्रह्म ।
परमानंद—*(न०)* १. परम तत्त्व को जान लेने का आनंद । २. परब्रह्म । ३. परम आनंद । ४. ब्रह्म के अनुभव का आनंद ।
परमार—*(न०)* १. राजपूतों की एक जाति । पँवार । २. शत्रुओं का नाश करने वाला ।
परमारथ—दे० परमार्थ ।
परमार्थ—*(न०)* १. परोपकार । २. आत्म-ज्ञान । ३. जीव और ब्रह्म संबंधी ज्ञान । ४. सर्वोत्कृष्ट सत्य । ५. मोक्ष । ६. परम-तत्त्व । ७. उत्तम पुरुषार्थ । ८. उत्तम भाव ।
परमिट—*(न०)* आज्ञापत्र ।
परमियो—*(न०)* १. मूत्रेन्द्रिय का एक रोग । सुजाक । २. प्रमेह ।
परमेश—*(न०)* परमेश्वर ।
परमेश्वर—*(न०)* १. परमात्मा । २. महा देव । शिव ।
परमेश्वरी—*(ना०)* १. ईश्वरी । दुर्गा । २. सरस्वती ।
परमेष्ठी—*(न०)* १. शिव । २. विष्णु । ३. ब्रह्मा । ४. अरिहंत । अर्हत । जिन ।
परमेस—दे० परमेश ।
परमेसर—दे० परमेश्वर ।
परमेसरी—दे० परमेश्वरी ।
परमेसुरजी—*(न०)* परमेश्वर ।
परमैं—*(न०)* विगत कल के पहले का और आनेवाले कल के बाद का दिन । परसों ।
परमोख—*(न०)* चोर । परिमोषक ।
परमोद—*(न०)* १. प्रमोद । हर्ष । २. सुख ।
परमोदणो—*(क्रि०)* खुश करना । राजी करना ।
परमोध—*(न०)* १. पूर्ण बोध । यथार्थ ज्ञान । प्रबोध । २. उपदेश । ३. जागृति । ४. ढाढ़स । तसल्ली । ५. चेतावनी ।
परमोधणो—*(क्रि०)* १. बोध कराना । २. उपदेश देना । ३. सिखाना । ४. ढाढ़स देना । सान्त्वना देना ।
परयंत—दे० परजंत ।
परळउ—दे० परलो ।
परलय—दे० प्रलय ।
परलाई—*(ना०)* १. विस्तार । २. उछल-कूद । ३. शीघ्रता । *(क्रि० वि०)* पंख लगाकर ।
परली कानी—दे० परलै कानी ।
परली तरफ—दे० परलै कानी ।
परली पार—दे० परलै पार ।
परलै—*(न०)* प्रलय । *(अव्य०)* १. दूर । २. उस ओर ।
परलै कानी—*(अव्य०)* उस ओर । दूसरी तरफ ।
परलै दिन—दे० परसूं ।
परलै पार—*(अव्य०)* उस ओर । *(वि०)* १. उस ओर का । २. सामने का । ३. नदी के सामने के किनारे का ।
परळो—*(न०)* प्रलय ।
परलो—*(वि०)* १. दूर का । २. आगे का । *(सर्व०)* वह ।
परलोक—*(न०)* १. मृत्यु के बाद प्राप्त स्वर्ग आदि लोक । वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है । २. दूसरा लोक ।
परव—दे० परब ।
परवड़णो—*(क्रि०)* पोसाना । पड़ता खाना ।
परवणी—*(ना०)* पर्वणी । पूर्णिमा । पूनम ।
परवत—*(न०)* पर्वत । पहाड़ ।
परवर—दे० प्रवर ।
परवरणो—*(क्रि०)* सर्वत्र फैल जाना । विस्तृत होना ।
परवर दिगार—*(न०)* १. ईश्वर । २. पालन करने वाला ।
परवरिश—*(ना०)* १. पालन-पोषण । २. मेहरबानी ।
परवळ—*(न०)* एक शाक ।

परवश—*(वि०)* पराश्रित । पराधीन ।

परवस्ती—दे० परवसि । दूसरी बस्ती । दूसरा गाँव ।

परवा—*(ना०)* १. परवाह । दरकार । गरज । २. चाह । इच्छा । अभिलाषा । ३. चिंता । सोच । ४. परिवाह । दान । ५. इनाम । *(वि०)* पूर्व दिशा का । **परवाई** ।

परवाई—*(वि०)* पूर्व की ओर का (पवन) । पुरवइया ।

परवाड़ो—दे० प्रवाड़ो या पवाड़ो ।

परवाड़ो लेणो—*(मुहा०)* १. वीरता का विरद धारण करना । २. वीरता दिखाना । ३. वीरता, परोपकार आदि सत्कार्यों द्वारा कीर्ति प्राप्त करना ।

परवाण—दे० प्रमाण ।

परवाणगी—*(ना०)* १. इजाजत । परवानगी । आज्ञा । २. स्वीकृति । अनुमति ।

परवाणणो—*(क्रि०)* १. मान्य करना । २. ठीक समझना ।

परवाणे—दे० प्रमाणे ।

परवाणो—*(न०)* १. परवाना । आज्ञा-पत्र । २. सनद । ३. माप । परिमाण ।

परवाद—*(न०)* १. कपट । २. प्रवाद । ३. अफवाह । ४. आपत्ति ।

परवानगी—दे० परवाणगी ।

परवार—*(न०)* कुटुंब । परिजन । परिवार ।

परवारणो—*(क्रि०)* १. नष्ट होना । २. दिवाला निकालना । ३. असफल होना । ४. पूरा करना । निपटना । ५. फारिग होना । **निवरो होणो** । ६. काम को पूरा करना ।

परवाल—दे० प्रवाल ।

परवाळ—*(न०)* आँख में खटकने वाला बाल । पलक में भीतर की ओर निकला हुआ बाल । बिरौनी ।

परवाळा—*(परवाळ का ब० व०)*

परवास—*(न०)* १. दूसरे के यहाँ रहना । २. दूसरे का घर । ३. विदेश । ४. प्रवास । यात्रा ।

परवाह—*(न०)* १. दान । त्याग । २. इनाम-इकराम । ३. चिंता । फिक्र । ४. इच्छा । अभिलाषा । चाह । ५. गरज । दरकार । ६. प्रवाह ।

परवी—दे० परबी ।

परवीण—दे० प्रवीण ।

परवीती—*(ना०)* किसी अन्य के सुख-दुख की बात । 'घरवीती' का उलटा । अपनी नहीं करके दूसरे की चर्चा करना ।

परवेस—*(न०)* १. लगाव । संबंध । २. जानकारी । जान-पहचान । दे० प्रवेश ।

परशु—*(न०)* परशुराम जी का शस्त्र । २. फरसा ।

परशुराम—*(न०)* यमदग्नि ऋषि के पुत्र और ईश्वर के छठे अवतार ।

परस—*(न०)* १. स्पर्श । २. स्पर्शमणि । पारस ।

परसकंद—*(न०)* चाकर । सेवक ।

परसणो—*(क्रि०)* १. स्पर्श करना । छूना । २. देवमूर्ति के चरण-स्पर्श करना । ३. तीर्थयात्रा करना । ४. दर्शन करना ।

परसन—*(वि०)* प्रसन्न । खुश ।

परसपखाण—*(न०)* पारस पत्थर ।

परसपर—दे० परस्पर ।

परसराम—दे० परशुराम ।

परसर्ग—*(न०)* संज्ञा शब्द के साथ लगने वाली विभक्तियाँ, जैसे—रा, री, रै, रो, सूं, से, में, का, की, के, को इत्यादि । *(व्या०)*

परसवर्ण—*(न०)* उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण । *(व्या०)*

परसंग—दे० प्रसंग ।

परसंगत—*(ना०)* १. दूसरे की संगति । २. बुरी संगति ।

परसंगी—दे० प्रसंगी ।

परसंसा—दे० प्रशंसा ।

परसाद—*(न०)* देवमूर्त्ति को अर्पण किया गया नैवेद्य । प्रसाद ।

परसादी—*(ना०)* १. गुरुजनों द्वारा प्रसन्न होकर दी हुई वस्तु। २. वह वस्तु जो पूज्य और गुरुजनों के काम में लेने के बाद भक्त और शिष्यों के लिए शेष रही हो। ३. देवार्पित वस्तु या मिष्टान्नादि भोजन-सामग्री। ४. भक्तजनों में बाँटी जाने वाली देवार्पित वस्तु। प्रसाद। ५. तीर्थयात्रा करने के बाद गंगाजल बाँटकर किया जाने वाला भोज। प्रसादी।

परसाल—*(अव्य०)* गतवर्ष। पिछले साल।

परसावणो—*(क्रि०)* १. थन में दूध छोड़ देना। २. गाय, भैंस आदि के थन में दूध का उभरा जाना। प्रस्रवण होना। ३. थन में से दूध निकालने की हाजत होना। ४. ढोर के थन में दूध का भराव हो जाना।

परसिद्ध—दे० प्रसिद्ध।

परसिध—दे० प्रसिद्ध।

परसुधर—*(ना०)* १. परशुराम। २. गजानन।

परसुराम—दे० परशुराम।

परसूं—*(अव्य०)* १. बीते हुए कल से पहला दिन। परसों। २. आने वाले कल के बाद का दिन। परसों।

परसेवो—*(ना०)* पसीना। प्रस्वेद।

परसोतम—दे० पुरुषोत्तम।

परस्त्री—*(ना०)* दूसरे की स्त्री। परनारी। पराये की औरत।

परस्त्रीगमन—*(ना०)* व्यभिचार।

परस्त्रीगामी—*(वि०)* व्यभिचारी।

परस्पर—*(क्रि० वि०)* आपस में। एक-दूसरे के साथ।

परहद—*(ना०)* १. पराई हद। २. दूसरे राज्य की सीमा।

परहरणो—*(क्रि०)* १. छोड़ना। त्यागना। २. हरण करना।

परहावणो—दे० परसावणो।

परहित—*(ना०)* दूसरे की भलाई। परोपकार।

परहेज—दे० परेज।

परहो—*(क्रि० वि०)* दूर।

परं—*(अव्य०)* परंतु। वरन्। २. किंवा। अथवा।

परंच—*(अव्य०)* १. अपरंच। तदुपरांत। २. परंतु। तथापि। **पण।**

परंडो—दे० पणींढो।

परंत—दे० परंतु।

परंतु—*(अव्य०)* लेकिन। किन्तु। **पण।**

परंद—दे० परंदो।

परंदो—*(ना०)* पक्षी। परिंदा।

परंपरा—*(ना०)* १. बहुत समय से चलती आयी हुई रूढ़ि या रिवाज। २. अविच्छिन्न क्रम। अटूट सिलसिला। **धारो।** ३. पंक्ति। श्रेणी। **हार।**

परा—*(ना०)* १. श्रेष्ठ गति। २. वाणी के चार रूपों में से प्रथम रूप। ३. गायत्री देवी। ४. ब्रह्म विद्या। उपनिषद् विद्या। ५. परा शक्ति। *(वि०)* श्रेष्ठ। उत्तम। *(अव्य०)* १. उलटा। विरुद्ध। २. दूर। **छेटे। आधो।** ३. एक उपसर्ग।

पराई—*(वि०)* १. दूसरे की। २. दूसरी। **पारकी।**

पराईयो—*(ना०)* पसीना।

पराकम—दे० पराक्रम।

पराकमी—दे० पराक्रमी।

पराक्रम—*(ना०)* १. सामर्थ्य। बल। २. शौर्य ३. उत्साह। ४. ओजस। प्रतिभा।

पराक्रमहीन—*(वि०)* १. अशक्त। २. वीर्यहीन। **मुड़दल।**

पराक्रमी—*(वि०)* १. शूरवीर। बहादुर। २. बलवान। ३. उत्साही। ४. उद्यमी। ५. तेजस्वी।

पराग—*(ना०)* १. फूलों के केसरों पर जमी रहने वाली रज। पुष्परज। २. चंदन। ३. कर्पूर रज। ४. सुवास। सुगंध। ५. स्त्री का रज।

परागकेसर—*(ना०)* फूलों के बीच के तंतु जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।

पराचित—(न०) चाकर। सेवक। दे० प्रायश्चित।

पराछित—दे० प्रायश्चित।

पराजय—(ना०) हार। पराभव। शिकस्त।

पराजित—(वि०) हारा हुआ। पराभूत। परास्त। **हारियोड़ो।**

पराण—दे० प्राण।

पराणी—(ना०) गाड़ी में जुते हुए बैलों को हाँकने की कील वाली छोटी लकड़ी। २. प्राणी। जीवधारी।

पराणै—(अव्य०) बिना इच्छा। जबर्दस्ती। **माँडाणो।**

पराणो—दे० प्राहणो सं० १.

परात—(ना०) १. ताँबे या पीतल का एक छिछला पात्र। ताँबे या पीतल की कठौती। थाली के जैसा ऊँचे किनारों का एक बड़ा बरतन। २. खड़े किनारे की एक बड़ी थाली। तबक।

परात्मा—(न०) परमात्मा।

पराधीन—(वि०) परतंत्र। परवश। दूसरे के आधीन।

परापरी—(ना०) १. परंपरा। अविछिन्न धारा। २. परिपाटी। नियम।

पराभव—(न०) १. पराजय। हार। २. तिरस्कार। दुतकार। ३. दुख। पीड़ा। ४. विनाश। ५. उत्खनन। उखाड़ना।

पराभूत—दे० पराजित।

परामर्श—(न०) १. सलाह। मंत्रणा। २. विचार। ३. निर्णय। ४. युक्ति। ५. विवेचना। ६. स्पर्श। ७. खींचना।

परामुख—(वि०) १. पराङ्मुख। विमुख। २. विरुद्ध।

परायण—(वि०) १. लगा हुआ। लीन। एकाग्र। निरत। २. निष्ठायुक्त। ३. किया हुआ। (न०) आश्रय।

परायो—(वि०) १. दूसरे का। २. दूसरा। ३. जो आत्मीय न हो। गैर। **पारको।**

परार—(अव्य०) परारि। गतवर्ष से पहिले का वर्ष। पूर्वतर वर्ष। व्यतीत तीसरा वर्ष।

पराळ—(न०) १. झंझट। झमेला। २. गेहूँ, जौ, चावल आदि का भूसा। **खाखलो।**

पराळी—(वि०) बखेड़ाबाज। **झंझटियो।**

परालब्ध—(न०) भाग्य। प्रारब्ध।

परालब्धी—(वि०) भाग्यशाली। प्रारब्धी।

परावणो—दे० परसावणो।

परावत—दे० पारावत।

परावर—(वि०) १. सर्वश्रेष्ठ। २. पहले और पीछे का। ३. निकट और दूर का।

परावलंब—(न०) १. दूसरे पर अवलंबित रहना। २. परतंत्रता।

पराशर—(न०) महर्षि वेदव्यास (कृष्ण द्वैपायन) के पिता।

पराविद्या—(ना०) ब्रह्मज्ञान प्राप्त कराने वाली विद्या। ब्रह्म विद्या।

पराश्रय—(न०) परावलंबन। दूसरे का आश्रय।

पराश्रित—(वि०) दूसरे पर आश्रित। (न०) चाकर।

परासकंदी—(न०) चोर। तस्कर।

परासणो—दे० प्रासणो।

परास्त—(वि०) हारा हुआ। पराजित।

पराहणो—दे० प्रासणो।

पराँठो—दे० परावठो।

परावठो—(न०) तवे पर तली हुई मोयन-वाली रोटी। पराँठा। **तळमी रोटी। फोणारोटी।**

परि—(अव्य०) १. से। द्वारा। २. प्रकार। तरह। ३. जैसे। ४. ज्यों। मानो। ५. किन्तु। ६. ऊपर। पर। (उप०) अच्छी तरह, अतिशय, परिवर्द्धन, सर्वतोभाव, चारों ओर आदि वृद्धि सूचक अर्थों का एक उपसर्ग। जैसे—परिक्रमा, परिग्रह आदि।

परि इणि—(अव्य०) १. इससे। २. इस प्रकार।

परिकथा—*(ना०)* कहानी के अंदर उसी से संबंधित दूसरी कहानी।

परिकमा—दे० परिक्रमा।

परिकर—*(न०)* १. कमरबंद। २. सहचर। परिजन। ३. समूह। वृंद। भीड़। ४. सामान। ५. मूर्ति। ६. सेना। ७. कुटुंब। ८. लवाजमा ९. वैभव।

परिकरमा—दे० परिक्रमा।

परिक्रमा—*(ना०)* १. पूज्य या भक्तिभाव से उपास्य के चारों ओर चक्कर लगाना। प्रदक्षिणा। **फेरी। भमती।** २. देवमंदिर में चारों ओर घूमने का मार्ग।

परिखद—*(ना०)* सभा। परिषद्।

परिखा—*(ना०)* किले के चारों ओर बनी हुई खाई। *(वि०)* बहुत।

परिख्यात—*(वि०)* प्रख्यात। विख्यात।

परिगह—*(न०)* १. साथी-संगी। २. आश्रितजन। सेवक। ३. कुटुंबी।

परिग्रह—*(न०)* १. धन, माल मत्तादि का संग्रह। २. परिवार। परिजन। ३. स्वीकार। अंगीकार। ४. पत्नी। ५. विवाह। ६. सेना। फौज।

परिघ—*(न०)* १. एक आयुध। २. मुद्गर। ३. अर्गला। **आगळ।** ४. वर्तुल। घेराव। ५. घोड़ा। ६. घड़ा। कलश। ७. फाटक।

परिघळ—दे० प्रघळ।

परिचय—*(न०)* १. जानकारी। पहचान। २. जान-पहिचान। **ओळखाण।**

परिचर—*(न०)* १. सेवक। नौकर। २. युद्ध में शत्रु के प्रहार से रथ की रक्षा करने वाला। ३. दंडनायक। ४. सहायक।

परिचर्या—*(ना०)* सेवा। शुश्रूषा।

परिचित—*(वि०)* जाना-पहिचाना। **ओळखियोड़ो। ओळखीतो।**

परिच्छद—*(न०)* १. देश, वसन, भूषण आदि। २. आच्छादन। ३. परिधान। पोशाक। ४. परिवार। ५. हाथी, घोड़े आदि पर डालने का कपड़ा।

परिच्छेद—*(न०)* ग्रंथ भाग। प्रकरण। अध्याय।

परिजन—*(न०)* १. आश्रित लोग। २. सेवक। ३. परिवार।

परिजळणो—दे० प्रजळणो।

परिजाऊ दूहा—दे० परजाऊ दूहा।

परिजाळणो—*(क्रि०)* जलाना। प्रज्वलित करना। **सिळगावणो।**

परिजिणि—*(अव्य०)* १. जिससे। जिसके द्वारा। २. जिसके कारण। ३. जिस प्रकार।

परिणमणो—*(क्रि०)* १. फलित होना। परिणाम को प्राप्त होना। २. समाप्ति होना। अंत होना। ३. बदलना। ४. बदल जाना।

परिणय—*(न०)* विवाह। शादी। दार-परिग्रह। **वीवा।**

परिणाम—*(न०)* १. फल। नतीजा। निष्कर्ष। २. रूपान्तर। ३. विकार। ४. प्रभाव। ५. परिपक्वता। ६. अवस्थान्तर प्राप्ति। ७. उत्तरकाल। ८. शेष।

परिताप—*(न०)* १. अत्यन्त जलन। २. दुख। क्लेश। ३. संताप। ४. पछतावा। पश्चाताप।

परितोख—दे० परितोष।

परितोष—*(न०)* १. इच्छापूर्ति का मानसिक सुख। संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। हर्ष।

परित्याग—*(न०)* १. त्यागने का भाव। छोड़ देना। २. संबंध त्याग। ३. पुनःसंग्रह नहीं करने के लिए किया हुआ संपूर्ण त्याग। वर्जन। विसर्जन।

परित्राण—*(न०)* १. संरक्षण। २. रक्षा। उद्धार।

परिदक्षिण—दे० प्रदक्षिणा।

परिध—*(न०)* दुर्ग। किला।

परिधान—*(न०)* १. वस्त्र। **कपड़ा।** पोशाक। २. अधोवस्त्र।

परिधि—(न०) १. सूर्य चंद्र के चारों ओर का प्रभामंडल। **कुंडाळो**। २. वृत्त के चारों ओर खींची जाने वाली रेखा (गोल पदार्थ के चारों ओर की रेखा)। ३. घेरा। वाड़।

परिपक्व—(वि०) १. पूर्णतया पका हुआ, पचा हुआ या विकसित। २. अनुभवी। ३. दक्ष। निपुण।

परिपाटी—(ना०) १. क्रम। सिलसिला। २. रीति। प्रणाली। शैली। प्रथा। ३. नियम। पद्धति। **धारो**।

परिपाळण—(क्रि०) परिपालन। पालन। रक्षण।

परिपुष्ट—(वि०) पूर्ण पुष्ट।

परिपूर्ण—(वि०) १. भली भाँति भरा हुआ। भरपूर। २. समाप्त। ३. समस्त। सकल। ४. यथेष्ट। प्रचुर।

परिबोध—(न०) १. ज्ञान। २. यथार्थ ज्ञान। ३. दिलासा। ४. चेतावनी।

परिभव—(न०) १. पराजय। हार। २. अनादर। तिरस्कार। अपमान।

परिभाषा—(ना०) १. विशिष्ट अर्थ एवं आशय इत्यादि के लिए प्रयुक्त वैज्ञानिक या शास्त्रीय शब्द। वह शब्द जो किसी शास्त्र या विज्ञान में तत्संबंधी कार्य या भाव का सूचक मान लिया गया हो। टैक्निकल टर्म। २. किसी शब्द का अर्थ या भाव प्रगट करने वाला स्पष्ट और विस्तृत कथन। व्याख्या।

परिभ्रमण—(न०) १. विचरण। पर्यटन। २. चक्कर।

परिमळ—(न०) १. सुगंध। खुशबू। २. पुष्प की फैलने वाली सुवास। **परमळ**।

परिमाण—(न०) १. माप। मिकदार। २. मात्रा। ३. वजन। तोल। **जोख**। ४. अनुमान। **अटकळ। आसरो**।

परिमोख—(ना०) चोरी।

परिमोखण—दे० परिमोख।

परिमोखणो—(क्रि०) चोरी करना।

परिमोखी—(न०) चोर।

परियण—(न०) परिजन।

परियंत—दे० पर्यंत।

परिया—(अव्य०) परे। दूर। **अळगो**। (न०) १. भविष्य में होने वाली संतान और उसकी संतान। भावि संतति। २. पुरखा। पूर्वज। **बडेरा**।

परियाण—(न०) १. प्रयाण। प्रस्थान। २. परिभ्रमण। पर्यटन। ३. मरण। मृत्यु। ४. विलंब। ढील। ५. वंश। ६. वंशज। ७. १६ दिशाओं में की पूर्व और आग्नेय दिशा के बीच की दिशा। ८. एक शकुन दिशा। ९. पूर्वज। १०. श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। ११. पूर्वजन्म के पुण्य कर्म। १२. पुण्य। १३. प्रारंभ। शुरुआत। १४. प्रतिष्ठा। **माजनो**। (अव्य०) निश्चय ही।

परियावट—(ना०) १. बाप दादा की इज्जत। कुल मर्यादा। बडेरों की आबरू। २. पूर्वजन्म। (वि०) पूर्वजन्म संबंधी।

परियावळी—(ना०) वंशावली।

परियाँ—(ना०) १. पूर्वज। २. शत्रुदल। (अव्य०) १. दूर। परे। २. उधर। उस तरफ। ३. परसों (बीता हुआ या आने वाला) (वि०) श्रेष्ठ।

परिरंभण—(न०) १. आलिंगन। २. संभोग। ३. मौज।

परिरंभणो—(क्रि०) १. आलिंगन करना। २. संभोग करना। रमण करना। ३. मौज करना।

परिवर्तन—(न०) १. स्थिति में फेरफार। २. आकार की विकृति। रूपान्तर। तबदीली। ३. युग की समाप्ति। ४. अदलाबदली। विनिमय। **फेरफार**। ५. **घुमाव**।

परिवह—(न०) १. राजा के छत्र, चमर, छड़ी इत्यादि। २. अग्नि की एक जीभ। ३. पवन।

परिवाद—(न०) १. दावा। मुकदमा। २. बदनामी। निंदा।

परिवार—(न०) १. कुटुंब। २. बाल-बच्चे।

परिवाह—*(न०)* १. तालाब के इजाफा पानी के बाहर निकलने का मार्ग। **ओटो।** २. इजाफा पानी का बाहर निकलना। ३. दान। त्याग।

परिवेश—*(न०)* १. घेरा। परिधि। २. प्राचीर। **परकोटो।**

परिव्राजक—*(न०)* १. संन्यासी। परिभ्रमण करते रहने की तपश्चर्या करने वाला संन्यासी। २. परमहंस।

परिशिष्ट—*(न०)* १. ग्रंथ में कहे हुए विषय के संबंध में कुछ और कहना शेष रह गया हो, उसको कहने वाला प्रकरण। २. अवशिष्ट। ३. अवशिष्ट ग्रंथ भाग। ४. विशिष्ट ग्रंथ भाग।

परिशीलन—*(न०)* १. ध्यानपूर्वक चिन्तन, मनन या अध्ययन।

परिशोधन—*(न०)* १. पूर्णतया शुद्ध करना। २. ऋण चुकाना।

परिश्रम—*(न०)* १. मेहनत। श्रम। २. उद्योग। ३. चेष्टा। ४. थकावट।

परिश्रमी—*(वि०)* १. परिश्रम करने वाला। उद्यमी। मेहनती। २. उद्योगी।

परिषद—*(ना०)* १. सभा। २. सभासद। पार्षद।

परिसरण—*(ना०)* १. महान शरण। परिशरण। भगवान की शरण। २. मृत्यु। ३. पर्यटन। ४. हार। पराभव। *(अव्य०)* ५. स्पर्श करते ही। छूते ही।

परिस्थिति—*(ना०)* १. किसी घटना आदि की वास्तविक दशा। २. आसपास की स्थिति।

परिहंस—*(ना०)* १. हार। पराजय। २. गह।

परिहार—*(न०)* १. त्याग। परित्याग। २. खंडन। ३. तिरस्कार। ४. अग्निकुलोत्पन्न एक राजपूत जाति।

परिहास—*(न०)* १. हँसी। मजाक। ठट्ठा। २. खेल क्रीड़ा। कौतुक।

परि हाँ—*(अव्य०)* चंद्रायणा छंद की चौथी पंक्ति के पूर्व प्रायः प्रयुक्त होने वाला एक अव्यय पद, जिसका अर्थ 'लेकिन हाँ' अथवा 'उदाहरण' होता है। चौथी पंक्ति प्रायः उदाहरण रूप होती है। जहाँ उदाहरण रूप नहीं होती है वहाँ यह पद अर्थहीन होकर उच्चरित होता है। इसका प्रयोग चंद्रायणा की श्रुति-मधुरता के लिए होता है। छंद की मात्राओं में इसका समावेश नहीं होता। कई चंद्रायणों में इसका प्रयोग नहीं भी होता है। दे० परियाँ सं० १.

परिंदो—*(न०)* परिंदा। पक्षी।

परी—*(ना०)* १. पाँखों वाली कल्पित सुंदर स्त्री। २. परमसुंदर स्त्री। ३. एक अव्यय।

परीक्षक—*(न०)* परीक्षा करने वाला।

परीक्षा—*(ना०)* १. किसी की योग्यता, गुण और सामर्थ्य जाँचने की क्रिया। इम्तिहान। २. भले-बुरे को जाँचने की क्रिया। ३. खोटे-खरे को परखने का काम। ४. जाँच-पड़ताल। तपास।

परीक्षित—*(न०)* अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के पुत्र का नाम। *(वि०)* परीक्षा किया हुआ।

परीख—*(ना०)* १. इच्छा। अभिलाषा। २. परीक्षा।

परीखत—दे० परीक्षित *(न०)*।

परीछत—दे० परीक्षित *(न०)*।

परीतो—*(न०)* रंहट का एक उपकरण।

परीसारो—*(न०)* परोसने का काम। **पुरसीगारो।**

परींडो—*(न०)*—दे० पणींडो।

परु—*(ना०)* १. गाँठ। जोड़। २. खुरंड। **खुरंट।**

परुसगारी—दे० पुरसगारी।

परुसगारो—दे० परीसारो।

परुसणो—दे० परोसणो।

परुसारो—दे० परुसगारो।

परे—*(अव्य०)* १. दूर। अलग। **छेटे।** २. उस स्थान पर। ३. ऊपर। **पर।** ४. प्रकार। तरह। भाँति।

परेख—*(ना०)* मेख। कील। दे० परख।

परेखणो—*(क्रि०)* परीक्षा करना। **परखणो।**

परेखा—*(ना०)* जाँच। परीक्षा। **पारख।**

परेच—*(न०)* १. परदा। २. कनात।

परेज—*(न०)* परहेज। पथ्य। **किरी।**

परेड—*(ना०)* सैनिक शिक्षा। कवायद।

परेत—*(न०)* प्रेत। *(वि०)* मरा हुआ।

परेम—दे० प्रेम।

परेरउ—*(वि०)* दूसरे का। पराया।

परेवो—दे० पारेवो।

परेसान—*(वि०)* परेशान। हैरान। व्याकुल। व्यग्र।

परेसानी—*(ना०)* हैरानी। परेशानी। व्याकुलता। व्यग्रता।

परै—*(न०)* तरह। प्रकार।—दे० परे। *(क्रि० वि०)* दूर। परे।

परो—*(अव्य०)* क्रिया शब्द के साथ प्रयुक्त होने वाला दूरस्थ-निश्चयसूचक एक अव्यय, जिसका अर्थ 'वहाँ, परे, उधर, उस तरफ' होता है। इसका नारी जाति रूप 'परी' और बहुवचन 'परा' है। उदाहरण—'वो गयो परो। वा गई परी। वे गया परा।' 'अरो', 'उरो' इसके विरुद्धार्थ अव्यय हैं।

परोक्ष—*(वि०)* १. छिपा हुआ। २. अनुपस्थित। *(क्रि० वि०)* १. किसी और के जरिये। २. अप्रत्यक्ष। ३. पीठ पीछे।

परोख—दे० परोक्ष।

परोजन—*(न०)* १. प्रयोजन। अभिप्राय। २. उद्देश्य। ३. काम। ४. अर्थ। मतलब। ५. मृतक भोज। ६. परिवार में कोई *उत्सव।*

परोजी—दे० पितरजी।

परोटणो—*(क्रि०)* १. निभाना। २. किसी स्थिति या संबंध आदि की रक्षा करना। हिफाजत करना। ३. काम में लाना। उपभोग करना। ४. सँवारना।

परोपकार—*(न०)* दूसरे की भलाई। **परउपगार। परोपगार।**

परोपकारी—*(वि०)* दूसरों की भलाई करने वाला। **परउपगारी।**

परोपगार—दे० परोपकार।

परोपगारी—दे० परोपकारी।

परोवणो—*(क्रि०)* पिरोना। **पिरोवणो।** २. जोड़ना। लगाना।

परोसणो—*(क्रि०)* भोजन करने वालों के लिए थाली में भोजन-सामग्री रखना। परोसना। **पुरसणो।**

परोसो—*(न०)* एक व्यक्ति के लिए थाली में परोसा हुआ भोजन, जो भोजन में नहीं आ सकने वाले के यहाँ भेजा जाता है। परिवेषण। **परोसो।**

पर्बत—दे० पर्वत।

पर्यंत—*(अव्य०)* सीमा या विस्तार तक। तक। लौं। **ताँई।**

पर्याय—*(न०)* १. समानार्थक शब्द। २. क्रम। सिलसिला। ३. मार्ग। युक्ति। ४. प्रकार। ढंग। ५. एक अर्थालंकार।

पर्यूषण—दे० पजूसण।

पर्व—*(न०)* १. ग्रंथ का भाग। कांड। २. विभाग। ३. माँठ। ग्रंथि। जोड़। ४. पुण्यतिथि। ५. पूर्णिमा। ६. अमावस्या। ७. संक्रांति। ८. सूर्य या चन्द्रग्रहण। ९. उत्सव। त्योहार। परब। १०. वीरगति। ११. पुत्रजन्म। १२. विवाह।

पर्वणी—*(ना०)* १. पूर्णिमा। २. उत्सव।

पर्वत—*(न०)* पहाड़। **भाखर। डूंगर।**

पर्वतराज—*(न०)* १. हिमालय। २. अर्बुदाचल। आबू पर्वत।

पळ—*(ना०)* १. घड़ी का साठवाँ भाग। २४ सेकंड। २. क्षण। पल। ३. समय। ४. शक्ति। ५. साहस। **हिम्मत।** *(न०)* **मांस।** आमिष।

पल—*(ना०)* ढोल की थापी अथवा ताल। दे० पलक।

पलक—*(ना०)* १. आँख का ढक्कन। आँख के ऊपर का पर्दा। *पल। २. क्षण। पळ।*

पळकणो—*(क्रि०)* १. चमकना। २. रह-रह कर चमकना। **झबकणो**। ३. आँख मींचना और खोलना।

पलक दरियाव—*(न०)* १. एक पलक में स्थल की जगह जल और जल की जगह स्थल बन जाय ऐसी आश्चर्यजनक रचना। २. पल में व्यर्थ हो जाय ऐसी घटना। ३. ऐसी अद्भुत-अघटित रचनाओं का कर्ता। परमेश्वर। ४. अल्प समय में होने वाली अति वृष्टि। पृथ्वी को समुद्र के समान बना देने वाली भारी वर्षा। ५. महादानी।

पलक-पलक—*(अव्य०)* बार-बार। उपरा-उपरि। वारंवार। **घड़ी-घड़ी में**।

पळकाणो—*(क्रि०)* १. चमकाना। २. झबकाना। **झबकावणो**।

पलकारणो—*(क्रि०)* १. आँख झबकाना। २. टमकाना।

पलकारै में—*(मुहा०)* आँख पलकारी जाय उतने समय में। बहुत कम समय में। अति-शीघ्र। तुरंत।

पलकारो—*(न०)* १. पलक मारने में लगने वाला समय। क्षण। निमिष। २. आँख मींचकर खोलने की क्रिया। आँख का पलकारना। ३. चमक। **झबकारो**।

पळकावणो—दे० पळकाणो।

पळको—*(न०)* १. चमक। प्रकाश। बिजली आदि का अस्थिर प्रकाश। **झबकारो**।

पळखूट—*(वि०)* १. साहस-समाप्त। पश्त-हिम्मत। बेहिम्मत।

पळखूटो—दे० पळखूट।

पलगोड़—*(वि०)* निकम्मा।

पळचर—*(न०)* १. मांस-भक्षी पक्षी। २. मांस-भक्षी।

पळचारी—दे० पळचर।

पलट—*(ना०)* १. धोती की अंटी। खुंटी। २. धोती को घुटने से ऊपर पलटकर (चढ़ाकर) बनाया हुआ झोला।

पळटण—*(ना०)* १. पलटन। सेना। *(वि०)* पलटने वाला। बदलने वाला। *(अव्य०)* पलटने के लिये।

पलटणियो—*(न०)* सैनिक।

पलटणो—*(क्रि०)* १. बदलना। २. उलटना। ३. मुड़ना-लौटना। ४. दशा या अवस्था का बदलना। ५. कहकर नट जाना। ६. विरुद्ध होना।

पलटाणो—*(क्रि०)* १. पलटाना। २. फिरा देना। ३. उलटाना।

पलटाव—*(न०)* १. अदल-बदल। २. रूपान्तर। ३. परिवर्तन। बदलाव।

पलटावणो—*(क्रि०)* १. उलटवा देना। २. बदलवा देना। ३. फिरा देना।

पलटी—*(ना०)* बदली। तबादला। स्थानान्तर। **बदळी**।

पलटो—*(न०)* १. पलटने का भाव या क्रिया। उथला। २. बदला। ३. परिवर्तन। ४. गाते समय ऊंचे स्वर को लय के साथ नीचे लाना। पलटा। ५. लोहे का खुरचना। **खुरपो**।

पलड़ो—*(न०)* १. तराजू का पल्ला। २. पक्ष। **तड़**।

पलणो—*(क्रि०)* १. रुकना। २. रोका जाना। ३. पलायन होना। *(न०)* पलना। पालना। झूला। **पालणो**।

पळणो—*(क्रि०)* पाला-पोसा जाना।

पळपळाट—*(वि०)* चमकीला। *(न०)* १. शोर। २. उत्पात। ३. चंचलता। नटखटपना। **ऊधम**।

पळपळाटियो—*(वि०)* चंचल। नटखट। **ऊधमी**।

पळभखी—*(वि०)* मांसाहारी। मांसभक्षी।

पलमो—*(न०)* १. छिपाव। दुराव। २. प्रतिष्ठा। इज्जत। ३. भेद। रहस्य।

पलळ—*(न०)* मांस। आमिष। **पळ**।

पलळणो—*(क्रि०)* १. भीगना। २. मन का नरम होना। दयार्द्र होना।

पळवट—*(न०)* १. लपेटन। २. कमर बाँधने का कपड़ा। कमरबंध। ३. कमर।

पलवंग—*(न०)* १. घोड़ा। २. हरिण। ३. बंदर। प्लवंग।

पलंग—*(न०)* निवार से बुनी हुई बड़ी और बढ़िया खाट। पर्यंक। पल्यंक।

पलंगपोस—*(न०)* पलंग के बिस्तर पर बिछाने की चादर। तल्लिच्छक।

पळा—*(ना०)* १. पालन-पोषण करने का कष्ट। २. सम्हालने की तकलीफ। आफत। **पाळा।**

पलाऊ—*(वि०)* १. वर्ज्य। निषिद्ध। त्याज्य। २. अशुभ। ३. रोकने वाला (शकुन)।

पलाऊ सुकन—*(न०)* अशुभ शकुन। वर्ज्य शकुन।

पळाको—दे० पळको।

पलाण—*(न०)* १. ऊंट की पीठ पर कसी जाने वाली काठी। **कूंची।** पलान। २. घोड़े की जीन। पर्याण।

पलाणणो—*(क्रि०)* १. ऊंट के ऊपर पलान कसना। २. ऊंट घोड़े आदि की सवारी पर प्रस्थान करना ३. सवारी करना।

पळापळ—*(न०)* चमकने की क्रिया। चमाचम।

पलायन—*(न०)* भागने की क्रिया या भाव। फरार।

पळायो—दे० पळासियो।

पलाल—*(न०)* भूसा। चावल, गेहूं आदि का भूसा। **खाखलो। पराल।**

पलाळणो—*(क्रि०)* १. भिगोना। २. मन पर असर पहुंचाना। प्रभाव डालना।

पळावण—*(न०)* गाय, भैंस के थनों को धोने का पानी (दोहते समय)।

पळावणो—*(क्रि०)* वृक्ष से काटी हुई गीली लकड़ी के टेढ़ापन को सीधा अथवा सीधापन को टेढ़ा करने के लिए आँच में गर्म करना। **पळोवणो।** २. सीधा करना। ३. पीटना। मारना। ४. पालन करवाना। ५. मनवाना।

पळास—*(न०)* १. पलाश वृक्ष। ढाक। **खाखरो।** २. मांस-भक्षण। *(वि०)* मांस-भक्षी। मांसाहारी।

पळासणो—*(क्रि०)* मांसाहार करना।

पळासन—*(न०)* मांसाहार।

पळासियो—*(न०)* वह अकर्मण्य ल्हासिया जो खेत में काम नहीं करके ल्हास का भोजन करने को सामिल हो जाता है। दे० पाळसियो।

पळाहियो—दे० पळासियो।

पलांठी—*(ना०)* बैठने का एक ढंग। पलथी। **पालोकी।**

पलांडु—*(न०)* प्याज। **कांदो।**

पलियो—*(न०)* १. बिछाने का मोटा कपड़ा। टाट। २. काटे हुए बालों को इकट्ठा करने का नाई का कपड़ा।

पळियो—*(न०)* तेल, घी आदि निकालने का एक उपकरण। टीपरा।

पळी—*(ना०)* १. दाढ़ी के काले बालों में निकला हुआ सफेद बाल। पलित। २. घी, तेल आदि निकालने की लोहे की कलछी। **टीपरी।**

पळीछणो—*(न०)* रहँट का एक उपकरण।

पलीत—*(न०)* १. भूत-प्रेत। २. असुर। *(वि०)* १. गंदा। २. धूर्त्त। दुष्ट। ३. निकम्मा।

पलीतो—*(न०)* १. अग्नि ज्वाला। २. तोप या बंदूक की रंजक में आग लगाने की एक मोटी बत्ती। **जामगी।** ३. अचानक आई हुई आफत। ४. प्रेतग्रस्त को दी जानेवाली यंत्र लिखे कागज की धूनी।

पलीद—*(वि०)* १. अपवित्र। २. दुष्ट। नीच। ३. भूत-प्रेत।

पलीवाळ—दे० पालीवाळ।

पळींडो—दे० पणींढो।

पळींढो—दे० पणींढो।

पळेटणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु के ऊपर वस्त्र को लपेटना। वस्त्र से ढकना। २. लपेटना। **लपेटणो।** 'लपेटणो' का विपर्यय।

पळेथण—*(न०)* १. रोटी बनाते समय लोई के लगाया जाने वाला सूखा आटा। पलेथन। २. हानि के उपरान्त उसके संबंध में होने वाला खोटा खर्च। ३. मामूली खर्च।

पलेदार—*(न०)* मजदूर।

पळेव—*(ना०)* छाछ में बाजरी का आटा और मैदा मिलाकर पकाया हुआ गरमी के मौसम का एक शीतल पेय।

पलेवण—*(न०)* जैन साधुओं का जीव-जंतुओं के रक्षणार्थ वस्त्र, रजोयण आदि को फैलाकर झटकने की एक रीति अथवा क्रिया।

पलो—*(न०)* १. आंचल। पल्ला। वस्त्र का किनारा। २. सिर पर डाला हुआ शोक-सूचक वस्त्र। ३. अन्न बांधने का कपड़ा। ४. किवाड़ का पल्ला। **फड़को**। ५. जामा, घाघरा आदि के कपड़े के सीने के पहले दरजी द्वारा काटे जाने वाले गावदुम टुकड़ों में का एक टुकड़ा। पल्लो। *(अव्य०)* संग। साथ।

पळो—*(न०) तेल, घी आदि नापने-निकालने का एक उपकरण।*

पळोट—*(ना०)* १. छलांग। २. लपेटन।

पळोटणो—*(क्रि०)* १. सोते-सोते इधर-उधर होना। २. पहले-पहल काम में लगाना। धंधे में लगाना। काम सिखाना शुरू करना। ३. सिखाकर तैयार करना। ४. छलाँग मारना। ५. लपेटना। ६. फैलाना। ७. बिखेरना।

पळोथण—दे० पळेथण।

पलो भेटणो—*(मुहा०)* १. पल्ला छू जाना। २. खोटी संगति करना। ३. किसी कदाचारी या अनिच्छनीय व्यक्ति से किसी काम का वास्ता डालना।

पळोवणो—*(क्रि०)* १. फैलाना। २. देखना। ३. संग्रह करना। ४. भ्रमित करना। भरमाना। पथभ्रष्ट करना। दे० पळावणो।

पल्लर—दे० पालर।

पल्लव—*(न०)* १. नया पत्ता। कोंपल। २. पत्ता। दे० पल्लो।

पल्लवणो—*(क्रि०)* पल्लवित होना। पत्ते निकलना।

पल्लवित—*(वि०)* पत्तों से हरा-भरा। पल्लवयुक्त।

पल्लो—दे० पलो। दे० पार सं० ४, ५.

पवन—*(न०)* १. हवा। वायु। २. प्राण-वायु। ३. श्वास। साँस। ४. मानव समाज का विभाग विशेष। ३६ जातियों के समूहों में से कोई जाति। ५. जाति।

पवनकुमार—*(न०)* १. हनुमान। २. भीम।

पवनजात—*(न० ब० व०)* ३६ जातियों का समूह। ३६ जातियाँ। **पूणजात**।

पवनपंथ—*(न०)* आकाश। व्योम।

पवन पावड़ी—*(ना०)* जिसके पहनने से आकाश में उड़ा जा सके ऐसी जादुई पादुका।

पवनवेग—*(न०)* १. घोड़ा। २. पवन के समान जोशपूर्ण गति। *(वि०)* पवन के समान वेग वाला।

पवनसुत—*(न०)* हनुमान।

पवनासण—*(न०)* सर्प। पवनाशन। **साप**।

पवनासी—*(न०)* सर्प। पवनाशी।

पवमाण—*(न०)* पवन। वायु। पवमान। **वायरो**।

प-वर्ग—*(न०)* 'प' वर्ण से 'म' तक के पाँच वर्णों का वर्ग।

पवंग—*(न०)* घोड़ा। प्रवंग।

पवंगाण—*(न०)* १. घोड़ा। अश्व। २. घोड़े।

पवाड़ो—*(न०)* १. वीर का प्रशस्ति काव्य। **परवाड़ो**। २. वीर कार्य। ३. कीर्ति कार्य। ४. संग्राम। युद्ध। ५. यश। ६. विजय। ७. परोपकार का काम। ८. चमत्कार का काम। ९. झंझट। १० लंबा-चौड़ा वर्णन।

पवासणो—*(क्रि०)* १. प्रकाशित होना। प्रकाशना। २. दुहते समय गाय, भैंस के थनों को ढीला करना। ३. गाय, भैंस का थनों में दूध उतारना। **पराहणो**। **प्रासणो**।

पवितरो—दे० पइतरो ।

पवित्त—दे० पवित्र ।

पवित्र—*(वि०)* १. शुद्ध । पावन । २. पाप रहित । ३. शुभ । *(न०)* १. यज्ञोपवीत । जनेऊ । २. दर्भ । डाभ । ३. मधु । शहद । ४. वेदमंत्र । ५. तुलसी ।

पवित्रता—दे० पवित्राई ।

पवित्रा—*(ना०)* १. कुशा । डाभ । २. तुलसी ।

पवित्राई—*(ना०)* १. शुद्धता । पवित्रता । २. स्वच्छता ।

पवित्रासन—*(न०)* दर्भासन ।

पवित्री—*(ना०)* १. संध्यावंदन के समय पहिनी जाने वाली कुशा की अंगूठी । २. चंद्रादि ग्रहों के दोष निवारणार्थ पहनी जाने वाली सोना, चाँदी, ताँबा—तीनों की अमुक परिमाण में मिलाकर बनाई हुई अंगूठी ।

पवित्रो—दे० पइतरो ।

पव्वय—*(न०)* पर्वत ।

पशम—*(न०)* १. बाल । केश । २. उपस्थ के बाल । झाँट । ३. हिमालय के एक बकरे के लंबे और बहुत मुलायम बाल जिनका पशमीना बनता है । पश्म । ४. घोड़े के बाल । ५. काश्मीर की भेड़ के बाल । पश्म ।

पशमीना—*(न०)* पश्म का बना ऊनी वस्त्र । पशमीना ।

पशु—*(न०)* १. जानवर । २. चौपाया । ३. मूर्ख व्यक्ति ।

पशुपति—*(न०)* महादेव ।

पश्चाताप—*(न०)* पछतावा । अनुताप ।

पश्चिम—*(ना०)* जिस ओर सूर्य अस्त होता है वह दिशा । पश्चिम । प्रतीची । आयूणी दिशा । *(वि०)* पश्चिम का । आथमणी ।

पस—*(न०)* मवाद । रसी ।

पसकण—दे० फसकण ।

पसम—*(न०)* १. जानवरों के शरीर पर के मुलायम बाल । २. रोयाँ । लोम । पशम् । ३. बढ़िया और मुलायम बाल जिनके दुशाले और पशमीने बनते हैं । ४. उपस्थ के बाल । झाँट ।

पसर—*(ना०)* १. विस्तार । फैलाव । २. आक्रमण । हमला । ३. रवानगी । ४. टक्कर ।

पसरणो—*(क्रि०)* १. फैलना । २. लंबाना । ३. अंगों को फैलाकर सोना ।

पसली—दे० पासळी ।

पसवाड़ै—*(अव्य०)* १. पीछे की ओर । २. बाजू में । बगल में । ३. पास में । ४. एक ओर ।

पसवाड़ो—*(न०)* १. करवट । पार्श्व । २. पड़ौस । ३. दूसरी बाजू । ४. पीछे का भाग । पीछा ।

पसंगो—दे० पासंगो ।

पसंद—*(न०)* १. अभिरुचि । २. स्वीकृति । *(वि०)* १. मन को अच्छा लगने वाला । रुचि अनुकूल । २. स्वीकृत ।

पसाउ—दे० पसाय ।

पसाय—*(न०)* १. प्रसाद । कृपा । २. इनाम । बख्शीश । ३. प्रताप । ४. प्रभाव । ५. प्रसाद (इनाम) रूप में प्राप्त पोशाक ।

पसायत—*(न०)* इनाम में मिली हुई भूमि । चौकीदारी के बदले में मिली हुई भूमि या खेत ।

पसायत-बाब—*(ना०)* पसायत से लिया जाने वाला कर ।

पसायतो—*(न०)* गाँव का वह व्यक्ति या चौकीदार, जिसको नौकरी या चौकीदारी के लिए भूमि इनाम में दी जाती है । पसायत-प्राप्त चौकीदार ।

पसार—दे० पसर ।

पसारटो—*(न०)* १. पंसारी का काम । २. फैलावा । ३. पंसारी की दुकान पर बिकने वाली वस्तुएँ । पंसारट ।

पसारणो—*(क्रि०)* १. फैलाना । २. बढ़ाना । *(न०)* फैलावा । पसारा ।

पसारी—दे० पंसारी ।

पसारो—*(न०)* १. फैलाव । फैलावा । विस्तार । २. सृष्टि रचना । पसारा ।

पसाव—*(न०)* १. भाप से सीझने की क्रिया । २. चावल का माँड़ । दे० पसाय ।

पसावण—*(न०)* उबाली हुई वस्तु का पानी। माँड़।
पसिद्ध—*(वि०)* प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।
पसीजणो—*(क्रि०)* १. पसीना होना। पसीने से तर होना। २. दया उत्पन्न होना। द्रवित होना। ३. किसी घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रिस-रिसकर बहना।
पसीनो—दे० परसेवो।
पसु—दे० पशु।
पसोपेस—*(न०)* असमंजस। दुविधा।
पस्ताणो—*(क्रि०)* पछताना।
पस्ताव—*(न०)* पश्चाताप। पछताना।
पस्तावणो—*(क्रि०)* पछतावा।
पस्तावो—*(न०)* पछतावा। पश्चाताप।
पह—*(न०)* १. प्रभु। स्वामी। २. राजा। ३. योद्धा। ४. पथ। मार्ग। ५. प्रभात। ६. पृथ्वी। भूमि। *(अव्य०)* १. परंतु। २. पुनः। फिर। *(वि०)* प्रथम।
पहचाण—*(ना०)* १. पहिचान। आकृति, रंग, रूप आदि का परिचय। **ओळखाण।** २. परख। ३. गुण-दोषों की जाँच।
पहचाणणो—*(क्रि०)* १. किसी की आकृति, रंग, रूप आदि से परिचित होना। **ओळखणो।** २. किसी वस्तु के गुण-दोष जानना। **परखणो।**
पहट—*(न०)* १. नाश। २. इनकार। ३. पराजय। हार। ४. प्रहार। ५. टक्कर।
पहटणो—*(क्रि०)* १. नाश होना। २. नाश करना। ३. सीधा करना। अनुकूल बनाना। ४. हट जाना। ५. मुकर जाना। ६. हार जाना। ७. नामुकर होना।
पहड़णो—*(क्रि०)* १. विचलित होना। डिग जाना। २. अपने आचरण और व्यवहार को तिलांजलि देना।
पहणो—*(क्रि०)* अंदर घुसना। पैठना। प्रवेश करना।
पहनावो—*(न०)* १. पहनने का ढंग। २. पोशाक।
पहनो—*(न०)* कपड़े इत्यादि की चौड़ाई। पनहा। अरज।
पहपट—*(न०)* १. नाश। ध्वंश। २. छल। कपट। ३ निंदा। बुराई।
पहपणो—*(क्रि०)* १. प्रफुल्लित होना। खुश होना। २. खिलना। कली की पंखुड़ियों का खुलना। फूल बनना। फूलना।
पहपति—*(न०)* राजा। पृथ्वीपति।
पहपाळक—*(न०)* पृथ्वी का पालन करने वाला। राजा।
पहम—*(वि०)* प्रथम। पहला। *(न०)* पृथ्वी।
पहर—*(ना०)* रात-दिन का आठवाँ भाग। तीन घंटे का समय। प्रहर।
पहरण—*(न०)* १. एक पहनावा। २. कुरता। ३. पोशाक। *(अव्य०)* पहनने को।
पहरणो—*(क्रि०)* पहनना। धारण करना।
पहर वेस—*(न०)* १. पोशाक। पहनने के वस्त्र। २. पहनने का ढंग। पहनावा।
पहराणो—दे० पहरावणो।
पहरामणी—*(ना०)* १. कन्या के पिता की ओर से वर तथा वरपक्ष (बारात) को वस्त्राभूषणादि की दी जाने वाली भेंट। २. दहेज। **दात। दायजो।** (विवाह-प्रथा)।
पहरायत—दे० पहोरायत।
पहरावणी—दे० पहरामणी।
पहरावणो—*(क्रि०)* पहनाना। धारण कराना।
पहरेदार—*(न०)* प्रहरी। **चौकीदार।**
पहरो—*(न०)* निगहबानी रखने का काम। चौकी। रखवाली।
पहल—*(न०)* १. रुई या ऊन का टुकड़ा। फाहा। २. (पहल के समान दिखने वाला) बादल। ३. परत। तह। ४. पहलू। पार्श्व। ५. किसी कार्य का अपनी ओर से किया जाने वाला आरंभ। ६. आगेवानी। अग्रता। ७. क्रम में प्रथम आने की क्रिया। *(वि०)* पहला।
पहलउ—दे० पहलो।

पहलकउ—*(वि०)* दे० पहलको।
पहलकै—*(अव्य०)* १. पिछली बार। २. पहले जब।
पहलको—*(वि०)* पहले का। पहले वाला।
पहलड़उ—दे० पहलो।
पहलड़ो—दे० पहलो।
पहलवान—*(न०)* १. हृष्टपुष्ट व्यक्ति। २. कुश्ती या कसरतबाज। मल्ल। ३. बहादुर।
पहलवेतर—*(वि०)* पहला गर्भ धारण की हुई (गाय, भैंस)। पहले गर्भ वाली। *(न०)* पहला गर्भ।
पहलवेतरी—*(वि०)* पहली बार ब्यायी हुई (गाय, भैंस)। **पहल बेतर री।**
पहळाद—*(न०)* प्रसिद्ध भक्त प्रह्लाद।
पहलियाण—*(ना०)* १. पहली पत्नी। २. दे० पहलियांत।
पहलियांत—दे० पहलवेतरी।
पहलूणी—*(वि०)* पहले की।
पहलूणो—*(वि०)* पहले का।
पहलेपहल—*(अव्य०)* सबसे पहले।
पहलै—*(वि०)* पहले।
पहलो—*(वि०)* १. प्रथम। पहला। २. मुख्य। ३. अग्रणी।
पहळो—*(वि०)* चौड़ा। प्रशस्त।
पहलोट—दे० पहलियांत।
पहलोटो—*(वि०)* किसी स्त्री का पहला जना हुआ (बच्चा) पहलौठा। **पहलड़ो।**
पहव—*(न०)* राजा। नृप।
पहवी—*(ना०)* पृथिवी। भूमि।
पहाड़—*(न०)* पर्वत। **भाखर। डूंगर। मगरो।**
पहाड़ी—*(वि०)* १. पहाड़ पर रहने वाला। २. पहाड़ी देश में रहने वाला। ३. पहाड़ से संबंधित। पहाड़ का। *(ना०)* छोटा पहाड़। **भाखरी। डूंगरी। मगरी।**
पहाड़ो—*(न०)* किसी अंक की एक से दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सारिणी। अंक प्रस्तार। प्रस्तार। **घड़ियो। गुढियो।**
पहाण—*(न०)* पाषाण। पत्थर। **पाहण। भाटो।**
पहारणो—*(क्रि०)* प्रहार करना।
पहि—*(न०)* १. पथिक। २. पर्वत। ३. मार्ग। *(अव्य०)* परंतु। किन्तु।
पहिचाण—दे० पहचाण।
पहिचाणणो—दे० पहचाणणो।
पहियड़—*(न०)* पथिक।
पहियड़ो—दे० पहियड़।
पहियो—*(न०)* पहिया।
पही—*(न०)* १. पंथी। पथिक। यात्री। **मारगू।** २. अतिथि। मेहमान। **पाहुणो।** ३. मार्ग। पंथ। ४. पर्वत।
पहु—*(न०)* १. प्रभु। स्वामी। ईश्वर। २. राजा।
पहुप—*(न०)* पुष्प। फूल। **पुहप।**
पहुपांजळी—दे० पुष्पांजलि।
पहुमी—*(ना०)* पृथिवी। धरती।
पहुमीनाह—*(न०)* पृथ्वीनाथ। राजा।
पहुवी—दे० पहुमी।
पहुवीनाह—दे० पहुमीनाह।
पहुँच—दे० पहोंच।
पहुँचणो—दे० पहोंचणो।
पहुँचाणो—दे० पहोंचाणो।
पहुँचियोड़ो—दे० पहोंचियोड़ो।
पहुँचो—दे० पुणचो।
पहुँतणो—*(क्रि०)* पहुँचना।
पहेली—*(ना०)* १. घुमाव-फिराव की बात। २. समस्या। ३. किसी वस्तु का ऐसा गूढ़ वर्णन जिसके आधार पर उस वस्तु का नाम बताने के लिये सोचना पड़े। बुझौवल। **कोइड़ो।**
पहो—*(न०)* १. प्रभु। स्वामी। २. प्रभात। **सवार। सवारणा।**
पहोतणो—दे० पहुँतणो।
पहोर—*(न०)* १. पहर। तीन घंटे का समय। २. समय। काल।
पहोराणो—*(क्रि०)* १. प्रतीक्षा करना। इन्तजार करना। २. ठहरना। ३. विश्राम करना। **विसामो खाणो।** ४. ठहराना।

पहोरादार—दे० पहोरायत ।

पहोरायत—(न०) पहरा देने वाला । **पहरा-इत** ।

पहोरावणो—दे० पहोराणो ।

पहोरो—(न०) १. पहरा । चौकी । निगरानी । २. हिरासत । ३. समय । जमाना । **वेळा** । ४. विश्राम ।

पहोळाई—(ना०) १. चौड़ाई । २. विस्तार । ३. कुशादगी । खुला स्थान या वातावरण । **मोकळास** ।

पहोळो—(वि०) १. चौड़ा । २. खुला । कुशादा । **मोकळो** ।

पहोंच—(ना०) १. शक्ति । ताकत । २. प्राप्ति-सूचना । रसीद । **पावती** । ३. समीप तक गति । प्रवेश । ४. गूढ़ विषय या आशय समझने की शक्ति । ५. पहुँच ।

पहोंचणो—(क्रि०) पहुँचना ।

पहोंचवान—(वि०) १. समर्थ । २. शक्तिशाली । ३. सिद्धिप्राप्त ।

पहोंचाणो—(क्रि०) पहुँचाना ।

पहोंचियोड़ो—(वि०) १. जो ठगा न जा सके । २. धूर्त । चालाक । ३. होशियार । ४. अनुभवी । ५. सिद्ध । (न०) सिद्ध पुरुष । योगी । त्यागी ।

पंक—(न०) १. कीचड़ । कादव । **कादो । गारो** । २. पाप ।

पंकज—(न०) कमल । अंबुज । सरसिज ।

पंकजासण—(न०) १. ब्रह्म । २. कमलासन । पंकजासन ।

पंकणी—दे० पंखणी सं० ४, ५. (ना०) कमलिनी ।

पंकरुह—दे० पंकज ।

पंकित—(ना०) पँक्ति । **हार** ।

पँक्ति—(ना०) १. श्रेणी । कक्षा । २. रेखा । लकीर । **लीटी** । ३. कतार । **हार । पंगत** । ४. पुस्तक की एक लकीर की लिखावट । **ओळी** ।

पँक्तिपावन—दे० पंगतपावन ।

पंख—(न०) १. पाँख । २. डैना । पक्ष । ३. पंखा । ४. घोड़ा । ५. पक्षी ।

पंखड़ी—दे० पाँखड़ी ।

पंखण—(ना०) १. गीधनी । पंखिनी । २. मादा पक्षी । पक्षिणी । ३. पक्षी । ४. बाण ।

पंखणी—(ना०) १. पंखिनी । गिद्धनी । २. चील । ३. चक्रेश्वरी देवी । **नागणेची** । ४. प्रत्यंचा । ५. बाण । शर ।

पंखपति—(न०) पक्षीपति । गरुड़ ।

पंखराज—१. गरुड़ । २. हंस ।

पंखराव—(न०) गरुड़पक्षी ।

पंखाण—(न०ब०व) १. पक्षी समूह । २. गिद्ध । ३. बाण ।

पंखाबरदार—(न०) पंखे से हवा डालने की मजदूरी या नौकरी करने वाला ।

पंखायण—दे० पंखणी ।

पंखारव—(न०) १. पक्षी के उड़ते समय होने वाली पाँखों की ध्वनि । २. बाण के छूटने का शब्द ।

पंखाळ—(न०) १. बाण । तीर । २. गरुड़ । ३. साँप । ४. घोड़ा । ५. पक्षी । ६. मांसाहारी पक्षी । (वि०) पाँखोंवाला । जिसके पंख हों ।

पंखाळी—(ना०) गिद्धनी ।

पंखाळो—(न०) १. गिद्ध । २. बाण । ३. गरुड़ । (वि०) पँखोंवाला ।

पंखासाळ—(ना०) घर के चौक में बनी हुई बाजू की साळ । पार्श्व वरंडक । पार्श्वशाला । पक्षशाला ।

पंखी—(न०) १. तीर । बाण । २. पक्षी । ३. छोटा पंखा । **वींजणी** ।

पंखीपत—(न०) गरुड़ । पक्षीपति ।

पंखीस—(न०) गरुड़ ।

पंखेरू—(न०) पक्षी ।

पंखो—(न०) १. पंखा । व्यजन । **वींजणो** । २. एक प्रकार की जरी-गोटे की पट्टी जो स्त्रियों की साड़ी अथवा ओढ़ने के किनारों पर लगाई जाती है ।

पंग—दे० पंगु ।

पंगत—*(ना०)* १. पँक्ति । **हार** । २. भोजन करने को बैठे हुओं की पँक्ति । पंगति । **पाँत** ।

पंगतटाळ—*(वि०)* पँक्ति च्युत । पंगत बाहर ।

पंगतपावन—*(ना०)* १. माननीय पुरुष । २. पूजनीय महात्मा । ३. पँक्ति को पवित्र करने वाला । ४. यज्ञ में अग्रभोज । यज्ञ में भोजनार्थ निमंत्रित ब्राह्मण । **पँक्तिपावन** ।

पंगत बाहर—*(वि०)* जाति बहिष्कृत । पँक्ति बहिष्कृत । **न्याति बाहर** । **पंगत-टाळ** ।

पंगतभेद—*(ना०)* १. पँक्ति में बिठाकर भोजन नहीं कराये जाने का आचार । पँक्ति भेद । **आभड़छेट** । २. परोसने में वस्तु का तथा न्यूनाधिक अंतर । **भाणाभेद** ।

पंगती—दे० पंगत ।

पंगरण—दे० पंगुरण ।

पंगी—*(ना०)* १. कीर्त्ति । यश । २. बहुत पानी वाला भंग का पेय । भंग का वह शरबत जिसमें पानी अधिक हो । *(वि०)* वह जिसमें पानी अधिक हो (राब आदि पेय पदार्थ) ।

पंगु—*(वि०)* १. लँगड़ा । २. गतिहीन । ३. निर्बल । *(ना०)* शनिग्रह ।

पंगुनृप—दे० दळ-पाँगळो ।

पंगुरण—*(ना०)* १. वस्त्र । ओढ़ने का वस्त्र । २. धोती । ३. चोली ।

पंगुळो—दे० पांगळो ।

पंगो—*(ना०)* १. आवश्यकता से अधिक पानी पेय भोज्य पदार्थ । २. भंग का पतला पेय ।

पंच—*(ना०)* १. किसी विवाद को निपटाने के लिए नियत किये हुए एक या एक से अधिक मनुष्यों में से एक । पंचायत का सदस्य । २. किसी बात या विवाद के निर्णय करने के लिये चुने गये पाँच या इससे अधिक मनुष्यों की समिति या मंडल । ३. गाँव का मुखिया । ४. पाँच की संख्या । ५. कागज टिकट आदि में छेद करने का एक औजार । *(वि०)* पाँच ।

पंचक—*(ना०)* १. पाँच नक्षत्र जो अशुभ माने जाते हैं । २. शकुन शास्त्र । ३. पाँच का समूह ।

पंचकल्याण—*(ना०)* चारों पाँव और सिर—ये पाँचों अंग जिसके सफेद हों ऐसा लाल या काले रंग का शुभ घोड़ा ।

पंचकल्याणी—*(वि०)* १. चारों पाँव और कपाल जिसके सफेद हों, ऐसा शुभ चिह्नों वाला (पशु) । २. सार्वजनिक । ३. आचार के अभाव वाला । (खान-पान) ।

पंचकेशी—*(ना०)* सिर, दाढ़ी, मूंछ, बगल और अधोभाग—इन पाँचों जगहों से केश नहीं उतरवाने का व्रत ।

पंचकोश—*(ना०)* अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय—शरीर को सुगठित करने वाले ये पाँच कोश ।

पंचगव्य—*(ना०)* १. गाय का दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर—ये पाँच पवित्र वस्तुएँ । २. औषधि या प्रायश्चित रूप में पिलाया जाने वाला इन पाँचों का मिश्रण ।

पंचगौड़—*(ना०)* गौड़, कान्यकुब्ज, मैथिल, सारस्वत और उत्कल—इन पाँच जातियों के उत्तर भारतीय ब्राह्मणों का समूह ।

पंचतत्त्व—*(ना०)* पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश—इन पाँच तत्त्वों का समूह । पंचभूत ।

पंचतंत्र—*(ना०)* १. मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन और विद्वेषण—ये पाँच प्रकार के तंत्र । २. एक पुस्तक का नाम ।

पंचतीर्थी—*(ना०)* १. पाँच कोशों के घेरे में आये तीर्थस्थान । २. निकट-निकट आये हुए पाँच तीर्थ । ३. पाँच तीर्थों की यात्रा ।

पंचत्व—*(ना०)* १. मृत्यु । २. मोक्ष ।

पंचदेव—*(ना०)* पाँच देवता—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणपति तथा देवी ।

पंचद्रविड़—*(न०)* महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़—ये पाँच दाक्षिणात्य ब्राह्मण। अन्य मत से—औदिच्य, गिर नारा, भट्टमेवाड़ा, सांचिहर (साचोरा) श्रीमाली और ब्राह्मण स्वर्णकार।

पंचध्वनि—*(ना०)* १. पाँच मांगलिक ध्वनियाँ—वेदध्वनि, शंखध्वनि, जयध्वनि, वाद्यध्वनि और वंदीध्वनि। २. पाँच वाद्यों की ध्वनि। पंचशब्द।

पंचनद—*(न०)* १. पंजाब देश। २. सतलज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम—ये पाँच नदियाँ।

पंचपात्र—*(न०)* १. संध्या तथा पूजा का एक जलपात्र। २. दूध, दही, घृत, मधु और शर्करा—पूजा तथा भोग (देवार्पण) की इन पाँच वस्तुओं को रखने का पात्र।

पंचपाप—*(न०)* पाँच महापाप—ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरुतल्पगामी, चोरी और गोहत्या।

पंचप्राण—*(न०)* प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान—ये शरीर के पाँच प्राण।

पंचबाण—*(न०)* १. कामदेव के पाँच प्रकार के बाण—सम्मोहन, उन्माद, स्तंभन, शोषण और तापन। २. कामदेव के पाँच पुष्पबाण—अरविंद, अशोक, नवमालिका, नीलोत्पल व आम्रमंजरी। ३. कामदेव।

पंचभूत—*(न०ब०व०)* आकाश, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि—ये विश्व के मूल घटक तत्त्व। पंचमहाभूत।

पंचम—*(वि०)* पाँचवाँ। *(ना०)* पाँच स्वरों वाली रागिनी। *(न०)* पंचम स्वर।

पंचमकार—*(न०)* मकार से प्रारंभ होने वाले। मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन—वाम मार्ग के इन पाँच पदार्थों का समुदाय।

पंचमकारी—*(न०)* १. मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन—इन पाँच वस्तुओं को विहित मानने वाला एक वाममार्ग २. इस मार्ग का अनुयायी।

पंचमगति—दे० पंचमीगत।

पंचमहायज्ञ—*(न०)* ब्रह्मयज्ञ (अध्यापन), पितृयज्ञ (पितृ तर्पण), देवयज्ञ (हवन), भूतयज्ञ (बलि वैश्वदेव) और नृयज्ञ (अतिथि पूजन)।

पंचमहाव्रत—*(न०)* अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—इनका पालन तथा ग्रहण।

पंचमाथ—*(न०)* महादेव। शिव।

पंचमी—*(ना०)* १. पाँचवीं तिथि। **पाँचम**। २. पाँचवीं विभक्ति। अपादानकारक (व्या०)

पंचमीगत—*(ना०)* १. पंचम गति। स्वर्ग। २. मोक्ष। ३. वीर लोक। **गत-पंचमी**।

पंचमुख—*(न०)* १. महादेव। २. सिंह। पंचानन। ३. नरशार्दूल।

पंचमेळ—*(वि०)* १. जिसमें पाँच प्रकार की वस्तुएँ मिली हों। २. जिसमें सब प्रकार की वस्तुएँ हों। ३. साधारण।

पंचमेवा—*(न०)* बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, काजू, और किशमिश।

पंचराशिक—*(न०)* चार ज्ञात राशियों से पाँचवीं अज्ञात राशि ढूँढ निकालने की पद्धति (गणित)।

पंचलड़ी—*(ना०)* पाँच लड़ों वाली माला। हार।

पंचलूण—*(न०)* १. पाँच प्रकार के लवण। २. पाँचों नमक।

पंचवटी—*(न०)* गोदावरी के किनारे दंडकारण्य में वह स्थान जहाँ वनवास के समय पर्णकुटी बनाकर भगवान राम रहे थे।

पंचविध—*(वि०)* पाँच प्रकार का। *(क्रि० वि०)* पाँच प्रकार से।

पंचशस्त्र—*(न०)* पाँच प्रकार के शस्त्र।

पंचसदी—*(न०)* पाँच सौ ऊँट और ऊँट सवारों की सेना का अधिकारी या स्वामी।

पंचसद्द—*(न०)* पाँच प्रकार के मंगलसूचक वाद्य। पंचशब्द।

पंचसर—*(न०)* १. कामदेव। २. कामदेव के पाँच बाण।

पंचसरधारी—*(न०)* कामदेव।

पंचससत्र—दे० पंचशस्त्र।

पंचसाख—*(न०)* हाथ। कर। पंचशाख।

पंचहजारी—*(न०)* १. पाँच हजार सैनिकों का सेनापति। २. मुगलशासन काल में दी जाने वाली एक पदवी।

पंचाइत—दे० पंचायत।

पंचाऊ—*(वि०)* १. पंचों का। २. पंच संबंधी। ३. न्याति का। 'न्याति संबंधी। समाज का।

पंचाक्षर—*(न०)* '**ॐ नमः शिवाय**' इन पाँच अक्षरों का मन्त्र।

पंचाक्षरी मंत्र—दे० पंचाक्षर।

पंचाण—*(न०)* १. पंचानन। सिंह। २. महादेव।

पंचाणण—दे० पंचानन।

पंचाणुओ—*(न०)* सदी का पंचानवा वर्ष।

पंचाणू—*(न०)* '९५' की संख्या। *(वि०)* पाँच कम सौ। पंचानवे।

पंचात—दे० पंचायत।

पंचाधकूण—*(ना०)* उत्तर और वायव्य दिशाओं के बीच की दिशा।

पंचाधी—*(न०)* १. तीतर। २. उत्तर और वायव्य दिशाओं के बीच की दिशा।

पंचाध्यायी—*(ना०)* श्रीमद्भागवत में वर्णित रासलीला (रास मंडल) के पाँच अध्यायों का समूह। रासपंचाध्यायी। *(वि०)* पाँच अध्यायों वाला।

पंचानन—*(न०)* १. शिव। २. सिंह। **पंचायण।**

पंचामृत—*(न०)* १. देवताओं के स्नानार्थ दूध, दही, घी, मधु और शर्करा का बनाया हुआ मिश्रण, जिसे भक्तजन प्रसाद रूप में प्राप्त करते हैं। २. इस मिश्रण का देवार्पित प्रसाद।

पंचायण—*(न०)* १. सिंह। पंचानन। २. महादेव।

पंचायत—*(ना०)* १ पंचों की मण्डली। २. पंचों द्वारा किसी विवाद के संबंध में किया गया विचार या निर्णय।

पंचायतन—*(न०)* गणपति, देवी, सूर्य, विष्णु और शिव—इन पाँच देवों का समूह।

पंचायती—दे० पंचायत। *(वि०)* १. पंचायत का किया हुआ। २. पंचायत का।

पंचाळ—*(न०)* १. पांचाल देश। २. एक शिल्पी जाति। ३. शिल्पी। ४. महादेव। शिव।

पंचाळी—*(ना०)* द्रौपदी।

पंचावन—दे० **पचावन।**

पंचावनो—*(न०)* पचपनवाँ वर्ष। ५५वाँ सम्वत्। **पचावनो।**

पंचास—दे० पचास।

पंचांग—*(वि०)* पाँच अंगों वाला। *(न०)* १. तिथि, वार, नक्षत्रादि देखने का पत्रा। पतड़ा। कैलेंडर। **टीपणो।** २. पाँच अंगों वाली वस्तु।

पंचियो—*(न०)* छोटी धोती। **पंछियो।**

पंचीकरण—*(न०)* १. वेदान्त का एक ग्रंथ। २. सृष्टि की उत्पत्ति के लिए पंचमहाभूतों का विशिष्ट मिश्रण। ३. पंचमहाभूतों द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति की सत्यता का वृत्तांत।

पंचो—दे० पुणचो।

पंचोतर—दे० पिचंतर।

पंचोतरो—दे० पिचंतर।

पंचोळ—*(न०)* मौज। आनंद। दे० पंचोळी।

पंचोलण—*(ना०)* १. कायस्थ जाति की स्त्री। २. पंचोली *(कायस्थ)* की स्त्री। **कायथण। कायथाणी।** ३. पंचोली ब्राह्मण की स्त्री।

पंचोळी—*(न०)* १. माथुर कायस्थों की एक उपाधि। २. कायस्थ जाति। ३. कायस्थ जाति का पुरुष। ४. ब्राह्मण, वैश्य, बढ़ई और अहीर इन जातियों का एक गोत्र। ५. पंचम श्रेणी।

पंछियो—दे० पंचियो।

पंछी—*(न०)* १. पक्षी। **पंखेरू**। २. जीव।

पंजणो—*(क्रि०)* नाश करना। *(वि०)* नाश करने वाला।

पंजर—*(न०)* १. शरीर। देह। २. अस्थि-पंजर। ३. पसली। ४. छाती।

पंजाब—*(न०)* १. भारत का उत्तर-पश्चिम का एक प्रदेश, जिसमें रावी, सतलज, झेलम, चिनाब और व्यास नदियाँ बहती हैं।

पंजाबण—*(ना०)* पंजाब की स्त्री।

पंजाबी—*(वि०)* १. पंजाब का। पंजाब से संबंधित। २. पंजाब का रहने वाला। पंजाब निवासी। *(ना०)* पंजाबी भाषा। गुरुमुखी।

पंजाळी—*(ना०)* १. कृषि संबंधी एक औजार। २. बैलगाड़ी का एक उपकरण। ३. चौकठ। ४. बैलों की गरदन पर पहनाया जाने वाला चड़स खींचते समय का जूआ।

पंजाळो—*(वि०)* पंजों वाला (हिंसक-जानवर)।

पंजाहर—*(न०)* १. यवन। २. सेना। फौज।

पंजीरी—*(ना०)* १. धनिया, अजवाइन, घी और चीनी आदि मिलाकर बनायी हुई चूर्ण जैसी एक फलाहार वस्तु। २. इन वस्तुओं का बना एक नैवेद्य। ३. रामनवमी तथा कृष्णजन्माष्टमी को भगवान को अर्पित किया जाने वाला नैवेद्य।

पंजेटो—*(न०)* एक जैसी या एक जाति की पाँच वस्तुओं का समाहार।

पंजो—*(न०)* १. पाँचों अंगुलियों सहित हथेली या पैर का अगला भाग। २. जूते का वह भाग जो पंजे को ढका रखता है। ३. हिंस्र पशु का नखों वाला अवयव। पंजा। ४. पाँच का समूह। ५. हाथ के पंजे के निशान का मुसलमानों का झंडा। ६. बादशाही फरमानों पर बादशाह के हाथ का निशान।

पंड—*(न०)* पांडव। दे० पिंड।

पंडर—*(न०)* १. मुसलमान। २. बुलबुला। *(वि०)* सफेद।

पंडरखो—*(वि०)* शरीर को कष्ट न हो इस प्रकार काम करने वाला।

पंडरी—*(वि०)* १. श्वेत। सफेद।

पंडव—दे० पांडव।

पंडवेस—*(न०)* पांडुराजा। २. मुसलमान। यवन।

पंडाळ—*(न०)* अधिवेशन आदि के लिए बनाया हुआ बड़ा मंडप।

पंडाँ—दे० पिंडाँ।

पंडित—*(न०)* १. शास्त्रवेत्ता विद्वान। २. साक्षर। विद्वान। ३. बुद्धिमान। ४. निपुण। ५. ब्राह्मण।

पंडिताणी—*(ना०)* १. पंडित की पत्नी। पंडिताइन। २. ब्राह्मणी।

पंडीस—*(ना०)* तलवार। **पांडीस**।

पंडुक—*(ना०)* फाख्ता नामक पक्षी। **हुड़-कली। होला।**

पंडुव—*(न०)* मुसलमान। *(वि०)* मट-मैला।

पंडे—दे० पिंडाँ।

पंडो—*(न०)* १. तीर्थ गुरु। **धाटियो**। २. तीर्थ का पुजारी। पंडा। ३. पुजारी।

पंडोपंड—*(अव्य०)* १. स्वयं ही। २. अकेला ही। ३. अकेला।

पंत—दे० पंति।

पंतरणो—दे० पांतरणो।

पंति—*(ना०)* पँक्ति। **पंगत**।

पंती—*(ना०)* १. पँक्ति। २. भाग। **पांती**।

पंथ—*(न०)* १. मार्ग । रास्ता । २. सम्प्रदाय । धर्ममार्ग । मत । ३. आचार व्यवहार का ढंग । रीति । ४. सिद्धान्त-प्रणाली । ५. मत-प्रणाली पर आधारित गुट । ६. वाममार्ग ।

पंथकी—*(न०)* पथिक । मुसाफिर । **बटाऊ** ।

पंथवाड़ी—*(ना०)* १. तीर्थयात्रा से यात्री के सकुशल लौट आने की प्रतीक्षा में उसकी कामना के लिये मनाया जाने वाला जवारों को सींचने-पूजने का उत्सव । २. तीर्थयात्रियों के सुरक्षित लौट आने की मंगल कामना के लिए किसी जगह या पात्र में बोये हुए गेहूँ या जौ ।

पंथाई—*(वि०)* १. पंथ का अनुयायी । मतावलंबी । २. वाममार्गी ।

पंथाण—*(न०)* मार्ग । रास्ता ।

पंथाळ—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

पंथिक—दे० पथिक ।

पंथियो—*(न०)* १. पथिक । पंथी । २. पंथ का अनुयायी । पंथाई ।

पंथी—*(न०)* १. पथिक । यात्री । २. किसी पंथ का अनुयायी । यथा दादूपंथी, कबीरपंथी इत्यादि ।

पंद्रह—*(वि०)* दस और पाँच । *(न०)* पंद्रह का अंक, '१५' **पनरै** ।

पंधारी—दे० पचधारी ।

पंप—*(न०)* १. पानी को नीचे से ऊपर खींचकर लाने वाला यंत्र । २. रबर के पहिये में हवा भरने का यंत्र ।

पंपाळ—*(न०)* १. झंझट । झमेला । २. असत्य ।

पंपाळणो—*(क्रि०)* १. इधर-उधर खोजना । इधर-उधर देखभाल करना । २. किसी वस्तु या अंग पर धीरे-धीरे हाथ फिराना । सहलाना । ३. मन की थाह लेना । **पंपोळणो** । ४. व्यर्थ प्रयत्न करना ।

पंपाळियो—*(वि०)* बखेड़ाबाज ।

पंपाळी—दे० पंपाळियो ।

पंपोळणो—दे० पंपाळणो ।

पंभी—*(ना०)* बहुत बारीक रज । **रज** ।

पँवाड़ियो—*(न०)* एक वनस्पति ।

पंस—*(ना०)* रेत । पांशु । **पाँह** ।

पंसारट—दे० पसारटो ।

पंसारी—*(न०)* साधारण उपयोग में आने वाले मसाले या औषधियाँ बेचने वाला बनिया ।

पंसेरी—*(ना०)* पाँच सेर का बटखरा । पाँच सेर का बाट ।

पा—*(न०)* १. पैर । पाँव । २. रंग का पाश । चेप । **पाह** । ३. चौथा भाग । ४. एक के चौथे भाग का पहाड़ा । **पावो** ।

पाइक—*(न०)* १. सिपाही । २. पैदल सैनिक । ३. हर समय पास रहने वाला विश्वासपात्र सेवक । सच्चा सेवक । **पायक** ।

पाइगा—दे० पायगा ।

पाइचो—दे० पायचो ।

पाइदळ—*(न०)* पदाति सेना । पैदल फौज ।

पाई—*(ना०)* १. पैसे की तीसरे भाग का तांबे का एक छोटा सिक्का । (अंग्रेजी काल) २. एक का चौथा भाग बताने वाली सीधी खड़ी रेखा, जैसे १। सवा, २। सवा दो इत्यादि । ३. वाक्य की समाप्ति के पूर्णविराम की खड़ी रेखा । ४. आ-कार की मात्रा, जैसे 'क' के आगे क+ा=का । ५. घिसा हुआ टाइप (मुद्रण) ।

पाउडर—*(न०)* १. चूर्ण । **बूको** । २. दंतमंजन । ३. सौंदर्य प्रसाधन की सफेद सुगंधित बुकनी ।

पाउंड—*(न०)* १. बीस शिलिंग का सोने का एक अंग्रेजी सिक्का । २. आधे सेर के लगभग का एक तौल ।

पाऊ—दे० पाहू ।

पाओड़—दे० पायड़ सं० १. पायल सं० २.

पाक—*(न०)* १. खेती की निपज । २. भोजन बनाने की क्रिया । ३. भोजन । ४. पकवान । ५. पौष्टिक पदार्थ और औषधियों से बनाया हुआ मिष्ट पदार्थ । *(वि०)* पवित्र ।

पाकट—*(वि०)* १. पका हुआ। २. होशियार। चालाक। ३. अनुभवी।

पाकणो—*(क्रि०)* १. पकना। २. उत्पन्न होना। निपजना। ३. वृद्ध होना। ४. वृद्धावस्था के कारण बालों का सफेद होना। ५. व्रण में खून का मवाद हो जाना। ६. नाज, फल आदि का पुष्ट होकर खाने योग्य बन जाना। परिपक्व होना। कच्चा नहीं रहना।

पाकती मिती—*(ना०)* हुंडी को सिकारने या हुंडी के रुपये भरने की हुंडी में लिखी हुई मिती।

पाक परवरदिगार—*(न०)* खुदा। ईश्वर।

पाकिस्तान—*(न०)* सन् १९४७ में भारत के टुकड़े करके बनाया हुआ एक नया राज्य। धाट, सिंध, ब्लुचिस्तान आदि।

पाकेट—*(न०)* १. जेब की भाँति पैसे रखने की एक बनावट। २. बटुवा। ३. जेब। खीसा। ४. कपड़े रखने का चमड़े का बना थैला।

पाकेटमार—*(न०)* जेब काटने वाला। गिरहकट। **खीसाकातरू**।

पाकेठ—जवान ऊँट।

पाको—*(वि०)* १. पका हुआ। परिपक्व। २. होशियार। चतुर। ३. जो न ठगा जाय। पहुँचा हुआ। ४. दृढ़। मजबूत। ५. अनुभवी। ६. टिका रहने वाला। जो उड़े नहीं, जैसे कपड़े का रंग।

पाकोपान—*(न०)* १. वृद्ध पुरुष। २. वृक्ष का पका हुआ पीला पत्ता।

पाख—*(न०)* १. पार्श्व। २. कुल। वंश। कुळ। ३. छेद। सुराख। **बगारो**। **ठींडो**। ४. पक्ष। पखवाड़ा। ५. ओर। तरफ।

पाखइ—दे० पाखै।

पाखड़ा—*(न० ब० व०)* १. ऊंट पर कसे जाने वाले पलान का एक उपकरण। २. **पलान की दोनों ओर की दो लकड़ियाँ**।

पाखड़ो—*(न०)* भैंस का अगला पाँव खूंटे से बाँधने की एक प्रकार की साँकल। **नोळ**। **पंखड़ो**।

पाखणो—*(क्रि०)* छेद करना।

पाखती—*(अव्य०)* १. निकट। पास। **कनैं**। **पागती**। २. चारों ओर। ३. पास में।

पाखर—*(न०)* १. घोड़े या हाथी का कवच। २. घोड़े या हाथी की झूळ। ३. रक्षक। ४. धारण करना। ग्रहण करना। ५. सजावट। मंडन।

पाखरणो—*(क्रि०)* १. हाथी या घोड़े पर कवच कसना। २. घोड़े पर जीन कसना। ३. सजावट करना। ४. धारण करना।

पाखरित—*(वि०)* १. पाखर धारण किया हुआ। २. सजा हुआ। सुसज्जित। मंडित।

पाखरेत—दे० पखरेत अथवा पाखरित।

पाखळणो—*(क्रि०)* घोड़े या ऊँट के पाँव को बाँधना।

पाखळियो-पलाण—*(न०)* माल लादने का पलान। ऊँट आदि की पीठ पर कसा जाने वाला भारवाही पलान। पत्थर लादने का पलान।

पाखळी—*(ना०)* १. चड़स का एक उपकरण। २. आसपास। आजूबाजू। ३. निकट। पास। ४. पार्श्व। कक्षक। *(वि०)* निकट का।

पाखंड—*(न०)* १. दंभ। ढोंग। २. धर्म विरुद्ध मत या पंथ। ३. धर्म विरुद्ध आचरण। ४. कपट।

पाखंडी—*(न०)* १. ढोंगी। दंभी। २. नास्तिक। ३. कपटी।

पाखाण—*(न०)* पत्थर। पाषाण। **भाटो**।

पाखातळ—*(न०)* १. गहरा और बड़ा कुँआ। २. वह कुँआ जिसका पानी सिंचाई से नहीं टूटे। बहुत अधिक पानी वाला बड़ा **कुँआ**। **भँवर कुँआ**। **भमळियो**।

पाखा देवळी—*(ना०)* १. राजा का परिजन या परिग्रह। २. अन्तःपुर के सेवक-जन। ३. राज्य के स्त्री-पुरुष सेवक-जन। ४. छोटी देवली।

पाखानो—*(न०)* १. शौचालय। मल त्यागने की कोठरी। **संडास। तारत।** २. विष्टा। मैला। **भिस्टो। गू।**

पाखी—*(न०)* पक्षी। पंखेरू।

पाखेट—दे० पाकेठ।

पाखै—*(अव्य०)* १. बिना। रहित। २. इस ओर। ३. सिवाय। अतिरिक्त। ४. लिये। ५. पास में। ६. पक्ष में।

पाखो—*(न०)* १. पार्श्व। बाजू। २. पक्ष। ३. सुराख। **पाख।** ४. पड़ौस।

पाग—*(न०)* पग। पाँव। दे० पाघ।

पागड़ी—दे० पाघ।

पागड़ो—*(न०)* १. रकाब। २. ढलाई करने का साँचा। विविध आकारों का कोई साँचा जिसमें गली हुई धातु को ढालकर कोई आकार दिया जाता है। ३. पाँव का एक गहना।

पागणो—*(क्रि०)* पकाए हुए या तले हुए किसी खाद्य पदार्थ (पक्वान्न) को खांड की चाशनी या रस में डुबोना।

पागती—दे० पाखती।

पागल—*(वि०)* १. उन्मत्त। विक्षिप्त। सिड़ी। **गहलो।** २. नासमझ। मूर्ख।

पागी—*(न०)* वह विशेषज्ञ जो धूल में अंकित पाँवों को देखकर चोरों का पता लगाता है। खोजी।

पागो—*(न०)* खाट, तिपाई, मेज आदि का पाया। **पायो।**

पागोटियो—दे० पगथियो।

पागोटी—*(ना०)* बैठने का एक प्रकार। पलथी। **पालोथी। पळांठी।**

पागोडो—*(न०)* पैड़ी। **पगथियो।**

पागोथियो—दे० पगथियो।

पाघ—*(ना०)* पघड़ी। पगड़ी। **पाग।**

पाघड़—*(न०)* **बड़ी पघड़ी।**

पाघड़ी—*(ना०)* १. पघड़ी। २. मकान भाड़े लेने के लिये खानगी में अग्रिम दी जाने वाली एकमुश्त रकम।

पाघड़ीपनो—*(न०)* १. पघड़ी के समान विस्तार। २. लंबाई के परिमाण में बहुत कम चौड़ाई। अति सूक्ष्म चौड़ाई। ३. लंबाई।

पाघड़ी बराड़—*(न०)* मनुष्य पर लिया जाने वाला कर (जागीरी प्रथा)।

पाघड़ी बंध—*(वि०)* १. पघड़ी बाँधा हुआ। *(अव्य०)* पुरुषों तक ही सीमित। पुरुषों को ही (निमंत्रण)।

पाच—*(न०)* व्रण में से निकलने वाला मवाद। **रसी।**

पाचक—*(वि०)* १. पाचन-क्रिया में सहायक। पचाने वाला। हजम करने वाला। २. पचने वाला। हजम होने वाला।

पाचन—*(न०)* पकाने अथवा पचाने की क्रिया। २. अजीर्ण को नाश करने वाली औषधि।

पाचनी—*(ना०)* हर्रे। **हीमज। हरड़े।**

पाचर—दे० फाचर।

पाचरो—*(न०)* बैलगाड़ी के पहियों में लगने वाली लकड़ी की मेख। **फाचर। पाचर।**

पाच्छा—दे० पाछा।

पाछ—*(ना०)* १. पीछे हटने का भाव। २. **कमी।** न्यूनता।

पाछटणो—दे० पछटणो।

पाछणो—*(न०)* उस्तुरा। **सजायो। पासणो।**

पाछतरी—*(वि०)* वह बोआई जो समय या मौसम से कुछ बाद में की गई हो। २. मौसम के पिछले भाग की। **पाछली।** *(ना०)* मौसम के पिछले भाग में बोई गई फसल।

पाछतरो—*(वि०)* मौसम के पिछले भाग का (मेह)।

पाछमनी—*(ना०)* १. सेना का पिछला भाग। **चंदौल। चंबावळ।** २. उदास।

पाछमनो—*(वि०)* १. अप्रसन्न । २. हताश ।

पाछळ—*(ना०)* पीठ । *(वि०)* पिछला ।

पाछली—*(ना०)* १. पिछली । बाद की । २. पीछे रहने वाली । ३. शेष । ४. बीती हुई । ५. पहले की ।

पाछली अवस्था—*(ना०)* वृद्धावस्था । **बुढापो** ।

पाछली रात—*(ना०)* १. मध्यरात्रि के पीछे का समय । २. रात्रि का अंतिम भाग । **ढळती रात** ।

पाछलो—*(वि०)* १. पीछे का । बाद का । २. पीछे रहने वाला । ३. शेष । ४. बीता हुआ । ५. पहले का ।

पाछलो पहोर—*(न०)* १. दुपहर के बाद का समय । तीसरा पहर । **तीजो पहोर** । २. उत्तरावस्था । वृद्धावस्था । **बुढापो** ।

पाछेपो—*(न०)* १. वृद्धावस्था । २. पश्चाद क्रम । *(वि०)* पीछे का ।

पाछो—*(अव्य०)* १. पुनः । फिर, जैसे 'पाछो आय गयो' । २. लौटकर, जैसे 'पाछो आव ।' ३. एक बाजू । दूर । जैसे 'पाछो सिरक ।'

पाछो होणो—*(मुहा०)* मरना ।

पाछ्छा—*(न०)* पादशाह । बादशाह । पातसाह ।

पाज—*(ना०)* १. किनारा । अंतिम सिरा । २. तट । **तीर** । ३. पुल । सेतु । ४. मर्यादा । ५. बंधन । ६. रोक । ७. बाँध । **पाळ** ।

पाजामो—दे० पायजामो ।

पाजी—*(वि०)* १. दुष्ट । २. शरारती । ३. लुच्चा । ४. अधम । नीच ।

पाजेब—*(ना०)* स्त्री के पाँव का एक गहना । पायजेब ।

पाट—*(न०)* १. फैलाव । विस्तार । २. चौड़ाई (नदी आदि की) । ३. राजगद्दी । सिंहासन । ४. रेशम । रेशम का धागा । ५. रेशमी वस्त्र । ६. पटसन । ७. कई आदमियों के बैठने का ऊँचे चार पायों वाला तख्ता । ८. पट्टा । तख्ता । लकड़ी की चौकी । पटरा । ९. छत का मोटा और लंबा लट्ठा । शहतीर । बल्ला । धरना । १०. वह बाजोट जिस पर लड़के या लड़की को बिठाकर उनके विवाह के कार्य के प्रथम दिन का मंगल मुहूर्त्त सम्पादन किया जाता है । ११. खेत । १२. कोल्हू पर घाँची के बैठने की जगह । १३. अमुक वजन (लगभग २८०० से ३००० तोले भर) की चाँदी का ईंट के समान पासा । चाँदी का चक्का । १४. चक्की के दो भागों में से एक । १५. भग । योनि । १६. वाममार्ग की एक धार्मिक क्रिया । १७. कपड़े का थान । १८. भग और नाभि के बीच का भाग । स्त्री का पेडू । भग के ऊपर की चौड़ाई ।

पाट ऊधोर—दे० पाटोधर ।

पाटक—*(वि०)* १. निकम्मा । अयोग्य । २. बेकार भटकने वाला ।

पाटकड़ी—दे० पटकड़ी ।

पाटकाई—*(ना०)* पाटकपना । निकम्मापन ।

पाटघाव—*(न०)* राजा की हिंसा ।

पाटचर—*(न०)* चोर ।

पाटछोरू—*(न०)* १. सिंहासनाधिकारी का पुत्र । राजकुमार । २. पट्टशिष्य ।

पाटड़ागोह—दे० पाटलागोह ।

पाटड़ी—*(ना०)* १. रहँट का एक उपकरण । २. छोटा पट्टा ।

पाटण—*(न०)* १. उत्तर गुजरात का सरस्वती (कुमारिका) के तट पर एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर, जहाँ के विख्यात राजा सिद्धराज जयसिंह ने अतिप्रसिद्ध 'सहस्रलिंग सरोवर' और सिद्धपुर में १२ मंजिल का 'रुद्र महालय' (रुद्रमाळो) बनवाया था । यहाँ के रेशमी पटोळे (मिसरू) भारत भर में प्रसिद्ध हैं । निर्माण काल का इसका (पुराना) नाम 'अणहिलवाड़ा-पाटण' था । २. राजस्थान के एक नगर का नाम ।

पाटणो—*(क्रि०)* १. किसी नीचे धरातल को समतल बनाना। २. छत बनाना। ३. भर देना। ढक देना। छा देना।

पाटथंभ—*(न०)* राजा।

पाटथान—*(न०)* पाटनगर। राजधानी।

पाटधणी—*(न०)* १. राजा। २. राजा का उत्तराधिकारी। पाटवी।

पाटनगर—*(न०)* राजधानी।

पाटप—*(न०)* पाटपति। सिंहासनाधीश। राजा।

पाटपति—*(न०)* १. राजा। २. धर्माचार्य। ३. महंत। ४. श्रीपूज (जैन)।

पाटपूजा—*(ना०)* १. वाममार्गियों अथवा खोजाओं की एक धार्मिक क्रिया। २. भग-पूजा। ३. संभोग। मैथुन।

पाट-रो-थंभ—दे० पाटथंभ।

पाटल—*(न०)* १. गुलाब का पौधा या फूल २. केशर। ३. केसू का वृक्ष या फूल। ४. तलवार।

पाटलागोह—*(ना०)* एक प्रकार की बड़ी गोह। पाटड़ा-गोह।

पाटलिपुत्र—*(न०)* बिहार प्रदेश की राज-धानी पटना का प्राचीन नाम।

पाटली—*(ना०)* १. लकड़ी का छोटा पट्टा।

पाटलो—*(न०)* १. बैठने का पट्टा। २. एक गहना। ३. सोने की लगड़ी।

पाटव—*(न०)* १. उपाय। युक्ति। २. इलाज। ३. साधन। दे० पाटप।

पाटवी—*(न०)* १. राज्यगद्दी का अधि-कारी। पट्टाधिकारी। राजकुमार। २. सबसे बड़ा कुँवर। *(वि०)* पट्टाधिकारी। गद्दी का वारिस।

पाटवी राग—*(ना०)* एक युद्ध राग।

पाटापीड़—*(न०)* घाव या व्रण के ऊपर की जाने वाली मरहमपट्टी।

पाटाबंध—*(न०)* १. वीर। २. घायल। ३. घावों पर पट्टी बँधा हुआ। *(न०)* चीर-फाड़ करने वाला चिकित्सक। शल्य-चिकित्सक।

पाटियो—*(न०)* १. तख्ता। पटरा। २. बाजोट।

पाटी—*(ना०)* १. लिखने की पाटी। २. लिखना सीखने की लकड़ी की एक लंबी पटिया। ३. छोटे बालकों को लिखना-पढ़ना सिखाने का एक पट्टा, जिस पर खड़िया-मिट्टी पोतकर और ऊपर जीखा (ईंट का चूर्ण) डालकर बरतने से लिखा जाता था। ४. स्त्रियों के सिर के बालों की गुंथाई का एक प्रकार। माँग के दोनों ओर कंघी से जमायी गई बालों की तह। ५. पाठ। सबक। ६. खाट की पाटी। **निवार**। ७. घाव आदि पर बाँधने की कपड़े की लंबी पट्टी। ८. खेतों की पँक्ति। ९. एक व्यक्ति के पँक्तिबंध खेत। १०. गाँव के एक से अधिक जागीरदारों में से एक के हिस्से में आया हुआ गाँव या जमीन का भाग। ११. परंपरा। रीति। १२. स्लेट पट्टी।

पाटी-पावड़ा—दे० पट्टी-पहाड़ा।

पाटू—*(ना०)* पाद-प्रहार। लात।

पाटो—*(न०)* १. घाव पर बाँधने का कपड़े का लंबा चीरा। पट्टी। २. पाट। पट्टा। ३. बाजोट। ४. बच्चों के लिखना-पढ़ना सीखने का खड़िया-मिट्टी से पोता हुआ पट्टा। दे० पाटी सं० ३.

पाटोधर—*(न०)* राजा। *(वि०)* सिंहा-सनाधिकारी। राज्याधिकारी। पाटवी।

पाठ—*(ना०)* १. बिना ब्याई बकरी। २. छोटी बकरी। ३. बकरी। *(न०)* १. जो कुछ नियमित रूप से पढ़ाया जाय। अभ्यास। २. पाठ्यपुस्तक का वह अंश जो किसी एक विषय पर लिखा हुआ हो और एक दिन में पढ़ा जाय उतना अंश। सबक। ३. धार्मिक ग्रंथ या स्तोत्र आदि का नित्य का वाचन। ४. बोध। उपदेश। सीख। ५. पढ़ने की क्रिया। ६. पाठान्तर।

पाठक—*(न०)* १. अध्यापक। २. वाचक। ३. ब्राह्मण जाति की एक अल्ल।

पाठकरणो—*(मुहा०)* किसी धर्मग्रंथ को नियमित पढ़ना ।

पाठड़ी—*(ना०)* बिना ब्याई बकरी ।

पाठड़ो—*(न०)* सूअर का बच्चा ।

पाठदोष—*(न०)* १. पढ़ने-लिखने में रहने वाली खामी । २. अशुद्ध लेखन ।

पाठपूजा—*(ना०)* पाठ-पूजा आदि नित्य-कर्म । गीता, रामायण आदि का पठन और भगवान की पूजा ।

पाठफेर—*(न०)* ग्रंथ की दूसरी प्रति में मिलने वाला भिन्न लेखन । एक ग्रंथ की दो प्रतियों के पाठों का अन्तर । पाठभेद । पाठान्तर ।

पाठभेद—दे० पाठफेर ।

पाठमाळा—*(ना०)* ज्ञानवर्धक भिन्न-भिन्न विषयों के पाठों की पुस्तक । पाठमाला ।

पाठवणो—*(क्रि०)* भेजना । पठाना ।

पाठशाळा—*(ना०)* विद्यालय । पाठशाला । **पोसाळ** ।

पाठ संशोधन—*(न०)* १. लिखते समय रही हुई भूलों को दूर करने का काम । २. पाठ की अपूर्णता तथा विकृति को दूर करने की क्रिया ।

पाठाफेर—*(वि०)* १. साधारण फर्क वाला । २. असल की तुलना में थोड़ा फर्क वाला । ३. उन्हीं शब्दों के हेरफेर से एक ही बात को इस प्रकार कहना कि जिससे उसके भावार्थ में अंतर आ जाय । ४. किसी के विचारों में परिवर्तन करके प्रगट करने की क्रिया ।

पाठांतर—*(न०)* मूल प्रति से भिन्न पाठ । ग्रंथ की भिन्न-भिन्न प्रतियों में मिलने वाला भिन्न लेख या पाठ । पाठ-भिन्नता ।

पाठो—*(न०)* १. कागज का पूरा तख्ता । पूरा पन्ना । २. गत्ता । दफ्ती । ३. क्वार-पाठो । ४. मोटा-ताजा हरिण । *(वि०)* मोटा-ताजा । पट्ठा ।

पाठो माँडणो—*(मुहा०)* वृहत् ज्ञाति-भोज या औसर-मौसर के समय निमंत्रित किये जाने वालों की लिस्ट तैयार करना ।

पाड़—*(न०)* १. उपकार । अहसान । २. ऋण । ३. वश । अधिकार । ४. एक रागिनी ।

पाडकी—*(ना०)* भैंस की बछिया । **पाडी** ।

पाडको—*(न०)* भैंस का बछड़ा । **पाडो** । *(वि०)* भैंस के बछड़े जैसा । मोटा, काला कुरूप ।

पाड़णो—*(क्रि०)* १. गिराना । पटकना । **पटकणो** । २. मारना । ३. हटाना । ४. हराना । ५. बनाना, जैसे भाँत पाड़णी । सिक्को पाड़णो । ६. लूटना । ७. उखाड़ना ।

पाडल—*(ना०)* एक वनस्पति । एक औषधि । दे० पाटल ।

पाडाखुरो—*(न०)* सूअर । शूकर ।

पाडागोह—दे० पाटलागोह ।

पाडाजीभी—*(ना०)* कटार । कटारी ।

पाड़िगत—*(न०)* १. मनुष्य, पशु-पक्षी आदि की बोलियों की नकल का एक राजस्थानी काव्य-प्रकार । २. बोलियों को व्यंजित करने का बीकानेर के पं० सूरदास का एक काव्य । ३. एक डिंगल गीत-छंद ।

पाडियो—दे० पाडो सं० १.

पाडी—*(ना०)* भैंस की बछिया । **पाडकी** ।

पाड़ै—*(अव्य०)* १. पास । निकट । **कनै** । **पाहड़ै** । २. ओर । तरफ । **कानी** ।

पाडो—*(न०)* १. भैंस का बछड़ा । २. भैंस का नर । भैंसा । **भैंसो** ।

पाड़ो—*(न०)* महल्ला । पाड़ा ।

पाडोस—*(न०)* पास का निवास या घर । पड़ोस । *(वि०)* निकट का । **गोडलो** । **नैड़लो** ।

पाडोसण—*(ना०)* पड़ोसिन ।

पाडोसी—*(न०)* घर के पास में रहने वाला । पड़ोसी ।

पाढो—*(न०)* रिश्ता । संबंध ।

पाढो ढूकणो—*(न०)* काम बनना ।

पाण—*(न०)* १. हाथ। पाणि। २. शक्ति। बल। ३. संपूर्ण खेत (जाव) में सिंचाई का एक फेरा। सिंचाई। ४. खेत में फसल को पानी देने की क्रिया। ५. कपड़े में दी जाने वाली मांड़। मांड़ी। ६. एक-चौथाई भाग, जैसे।) पावली, ५।) सवापांच। ७. चौथा भाग। ८. चौथे भाग की सूचक खड़ी पाई '।'। ९. वाक्य के अन्त में दी जाने वाली खड़ी पाई। पूर्णविराम। फुलस्टॉप। १०. शस्त्र को दिया जाने वाला पानी। ११. शस्त्रादि लोहे की बनी वस्तु को उसकी उत्तमता प्रगट करने के लिए उसको ताप देकर पानी में बुझाने की क्रिया। १२. प्रण। १३. तेज। प्रताप। १४. प्रतिष्ठा। १५. कारण। १६. आब। चमक। *(अव्य०)* १. एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय, स्वीकृति आदि सूचित करने या किसी बात पर जोर देने के लिये होता है। ही। साथ ही। के साथ ही; जैसे सुणता पाण (सुनते ही) २. लिये। वास्ते। जैसे पकड़ो थोर पाण लायो है। ३. द्वारा। से। ४. हेतु।

पाणकोर—*(वि०)* वह जिसमें पाण लगी हो। मांड़वाला (कपड़ा)।

पाणकोरो—दे० पाणकोर।

पाणगो—*(न०)* मद्यगोष्ठी। पानगोष्ठी।

पाणत—*(ना०)* खेत (जाव) में क्यारों में पानी पिलाने का काम। **पाण।**

पाणतियो—*(न०)* क्यारों में पानी देने का काम करने वाला व्यक्ति। **पाणती।**

पाणती—दे० पाणेती। पाणतियो।

पाणधर—*(वि०)* बलवान। शक्तिशाली।

पाणप—*(ना०)* १. कांति। दीप्ति। २. बल। शक्ति। ३. मान। प्रतिष्ठा।

पाणही—*(ना०)* जूती। पनही। **पगरखी।**

पाणा-पाथ—*(न०)* अर्जुन के समान बाहुबली योद्धा।

पाणि—*(न०)* हाथ। कर। *(अव्य०)* द्वारा। जरिये। साधन से। से।

पाणिग्रहण—*(न०)* १. विवाह। शादी। २. धर्मपत्नी बनाने के लिये वर के द्वारा कन्या का हाथ ग्रहण करने की शास्त्र-विधि। हस्तमिलाप। **हथळेवो।**

पाणिनि—*(न०)* एक महान वैयाकरणी ऋषि। आठ अध्यायों में अष्टाध्यायी के नाम से ३९९६ सूत्रों का रचा हुआ इनका संस्कृत का व्याकरण जो मानव बुद्धि की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचारधारा का एक अद्वितीय और सर्वोत्तम ग्रंथ माना गया है। शिक्षासूत्र, गणपाठ, धातुपाठ और लिंगानुशासन इनके और भी प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

पाणियारो—दे० परींडो।

पाणी—*(न०)* १. पानी। जल। **जळ। नीर।** २. रस। ३. आब। चमक। कांति। ४. प्रतिष्ठा। मान-मर्यादा। ५. शौर्य। तेज। ६. सोने-चांदी आदि का मुलम्मा। **झोळ।** ७. शस्त्र का ओप। जौहर। ८. वीर्य। ९. आंसू।

पाणीजरो—*(न०)* एक मियादी ज्वर। **पाणीझरो।**

पाणीढाळ—*(न०)* पानी बह सके उतना ढाल। साधारण ढाल।

पाणीदार—*(वि०)* १. आबदार। चमकदार। २. शूरवीर। बहादुर। ३. तेजस्वी।

पाणी पचियो—*(न०)* एक प्रकार का व्रण।

पाणीपंथो—*(न०)* १. तेज चलने वाले श्रेष्ठ घोड़े की एक जाति। २. तेज चलने वाला घोड़ा। *(वि०)* पानी के समान गति वाला। त्वरित।

पाणी मरणो—*(मुहा०)* १. भ्रष्टाचारी होना। २. रिश्वत, घूंस आदि से कलंकित होना ३. कुमार्गी होना। दुराचारी होना। ४. जोश उतर जाना। ५. बहते पानी की धारा टूटकर अंदर उतर जाना।

पाणी लागणो—*(मुहा०)* जलवायु का स्वास्थ्य ऊपर बुरा प्रभाव पड़ना।

पाणी वदळो—(न०) स्वास्थ्य सुधारने के लिये पानी बदलने की दृष्टि से किया जाने वाला स्थानान्तर।

पाणीवाड़ो—(न०) मृतक के दाहकर्म कराने को श्मशान जाने अथवा स्नान-शुद्धि आदि करने का लोकाचार।

पाणीवाळो—(न०) पानी भरने तथा पिलाने वाला नौकर। (वि०) १. पानी से भरा हुआ। २. शूरवीर। ३. तेजस्वी।

पाणीहंड—(न०) १. मोती। २. बुदबुदा। **बुड़बुड़ियो।**

पाणींड—दे० पाणीहंड।

पाणेची—(ना०) १. शक्ति। ताकत। २. बाहुबल। ३. वीरता। बहादुरी। ४. दे० पणींढो। (वि०) १. अधिकार की। २. हाथ की।

पाणेचीधरा—(ना०) १. अपने अधिकार की भूमि। कब्जे की जागीरी। २. पूर्वजों की भूमि।

पाणेड़ो—दे० पणींढो।

पाणेती—(न०) पाणत करने वाला। खेत के क्यारों में पानी घेरने वाला। **पाणती।**

पाणो—(क्रि०) १. प्राप्त करना। २. पिलाना। ३. भोजन करना। (न०) पक्ष। दल। दे० पणो सं० १, २.

पात—(न०) १. दान दिये जाने के पात्र—चारण, भाट आदि। २. चारण। ३. पल्लव। पत्ता। पत्र। ४. पतन। ५. नाश। ध्वंश। ६. आघात। ७. धातु की चद्दर। ८. पात्र। ९. कवि। १०. माँगने वाला। याचक। ११. हाथी-दाँत की चूड़ी पर चढ़ाई जाने वाली सोने या चाँदी की पत्ती। **पाती।**

पातक—(न०) १. पाप। अधर्म। २. दोष।

पातकी—(वि०) १. पापी। अधर्मी। २. कुकर्मी। दुष्ट।

पातग—दे० पातक।

पातड़ा—(न० ब० व०) बबूल की फलियें। **हेलारिया।**

पातर—(ना०) १. वेश्या। २. गायिका। ३. भिक्षापात्र। ४. पात्र।

पातर वाड़ो—(न०) वेश्याओं का मुहल्ला। **पातरियाँ रो वास।**

पातरो—(न०) जैन साधुओं का काष्ठ-पात्र। भिक्षा तथा आहार का पात्र। पात्र।

पातळ—(ना०) १. पत्तल। २. पत्तल पर परोसा हुआ भोजन। ३. महाराणा प्रताप का काव्य वर्णित नाम।

पातळियो—(न०) १. सुगठित शरीर और पतली कमर का रूपवान युवक। २. सुडौल और पतले शरीर का रूपवान। ३. पतला किंतु निरोगी और सुंदर पुरुष। ४. दूल्हा। ५. दूल्हे का विशेषण। ६. चार प्रकार के नायकों में से (मारवाड़ी लोक-गीतों में वर्णित) धीर ललित नायक। ७. नायक। ८. एक लोक-गीत। (वि०) १. कृश। पतला। २. इकहरी हड्डी के शरीर वाला। ३. बारीक। झीना। **झीणो।**

पातळी—(वि०) १. पतली। कृश। २. पतली कमर वाली। कृशांगी।

पातळो—दे० पतळो।

पातव—(न०) चारण।

पातसा—(न०) बादशाह।

पातसाही—दे० पादशाही।

पातंजल महाभाष्य—(न०) पाणिनि के सूत्रों पर महर्षि पतंजलि द्वारा किया हुआ भाष्य।

पातंजल योगदर्शन—(न०) पतंजलि ऋषि का रचा हुआ योगदर्शन।

पाताळ—दे० पताळ।

पातिग—दे० पातक।

पाती—(ना०) १. चूड़ी के ऊपर लगाई जाने वाली सोने या चाँदी की पत्ती। **चींप।** २. पत्र। चिट्ठी। ३. तलवार। ४. कपड़े, कागज आदि की गाँठों को कसने वाली लोहे की लंबी पत्ती।

पातो—(न०) १. एक स्त्री-कंठाभूषण। **तेड़ियो। तेवटियो। तेवटो।** २. पत्ता।

पात्छा—*(न०)* बादशाह । **पातसा** ।

पात्र—*(वि०)* योग्य । लायक (समासान्त) जैसे विश्वासपात्र, दानपात्र, दयापात्र, *(न०)* १. बरतन । **बासण** । २. नाटक में अभिनय करने वाला । अभिनेता । ३. यज्ञ या संध्या के स्रुवा, पंचपात्रादि उपकरण । ४. कथा या वार्ता का व्यक्ति । ५. अधिकारी व्यक्ति । ६. भोग्यपात्र । वेश्या । **पातर** ।

पाथ—*(न०)* १. पार्थ । अर्जुन । २. घी और गुड़ को गरम करने से बनने वाला एक शीरा । घी-गुड़ की चाशनी । **पैथ** । ३. पानी । ४. पंथ । धर्मपंथ । मत । संप्रदाय । ५. पत्थर । पाषाण । ६. रास्ता । मार्ग । **रस्तो** ।

पाथनाथ—*(न०)* समुद्र ।

पाथनिधि—*(न०)* समुद्र ।

पाथर—*(न०)* पत्थर । **भाटो** ।

पाथरणो—*(क्रि०)* १. फैलाना । २. बिछाना । *(न०)* बिछौना । बिस्तर । **पथरणो** ।

पाथरो—*(न०)* १. कटे हुए अनाज के पौधों का ढेर । २. किसी ढेर का अव्यवस्थित फैलाव । ३. पत्थर ।

पाथू—*(न०)* पथिक । दे० पाँथू ।

पाथेय—*(न०)* रास्ते में (यात्रा में) काम आने वाला (साथ में लिया हुआ) भोजन । **भातो** ।

पाथोद—*(न०)* १. बादल । मेघ । २. समुद्र ।

पाथोनिधि—*(न०)* समुद्र । पाथनिधि ।

पाद—*(न०)* १. पग । पाँव । २. कविता की कड़ी । चरण । ३. ग्रंथ का विभाग । प्रकरण । ४. चौथा भाग । ५. अधोवायु । **वाछूट** । अपानवायु ।

पादणियो—*(वि०)* १. पादने वाला । २. डरपोक । ३. झूठ बोलने वाला ।

पादणो—*(क्रि०)* पादना । अपानवायु का छोड़ना । **वाछूट करणो** ।

पादत्राण—*(न०)* जूता । **पगरखी** ।

पादपूर्त्ति—*(ना०)* अधूरे छंद को प्रसंगानुसार पूरा करने की क्रिया ।

पादपोस—*(न०)* जूता ।

पादर—दे० पाधर ।

पादरी—*(न०)* ईसाइयों का पुरोहित । ख्रिस्ती धर्मोपदेशक ।

पादवंदण—*(न०)* (पिता-माता आदि गुरुजनों के) चरणों में या चरण छूकर प्रणाम करना । **पाँवाँधोक** । **पगे लागणो** ।

पादशाह—*(न०)* बादशाह ।

पादशाही—*(ना०)* १. बादशाह का राज्य । २. मुसलमानी राज्य । *(वि०)* बादशाह संबंधी ।

पादारविंद—*(न०)* पदकमल । चरणकमल ।

पादुका—*(ना०)* खड़ाऊँ । **चाखड़ी** । **पावड़ी** ।

पादो—*(न०)* अधिक पादने वाला ।

पाधर—*(न०)* १. समतल भूमि । २. गाँव के बाहर का मैदान । ३. बीकानेर प्रान्त । जांगलू देश । ४. तलवार । *(वि०)* १. बस्ती या वनस्पति रहित । उज्जड । उजाड़ । २. (खुला) मैदान । ३. अनुकूल ।

पाधर रो पातशाह—*(न०)* नरूका कछवाहों का एक विरुद ।

पाधर सल्लो—*(वि०)* १. सीधा-सादा । सरल स्वभाव का । २. सरल ।

पाधरियो—*(वि०)* सीधा-सादा ।

पाधरो—*(वि०)* १. सीधा । टेढ़ा नहीं । २. सरल । आसान । ३. लक्ष्य की ओर । ४. अनुकूल । ५. सीधे मार्ग चलने वाला । ६. बिना किसी के द्वारा । **परबारो** । ७. सुशील । ८. सुबोध ।

पाधारणो—*(क्रि०)* १. आना । २. जाना । ३. सीधा करना । ४. मार मारना ।

पाधो—*(न०)* १. उपाध्याय । २. ब्राह्मण ।

पाधोर—*(न०)* १. दंड । सजा । २. मार-पीट ।

पाधोरणो—*(क्रि०)* १. बैल, घोड़े आदि की चाल सुधारने व सवारी में चलने योग्य बनाने के लिये अभ्यास करवाना। सवारी करने के लिये घोड़े आदि को साधना। २. अक्खड़पन को मिटाना। सीधा करना। ३. सजा देना। मारना। पीटना।

पान—*(न०)* १. वृक्ष का पत्ता। २. नागर बेल का पत्ता। तांबूल। ३. तम्बाकू। ४. जोड़े में बुने हुए वस्त्र में का एक। जैसे धोती जोड़े रो पान। ५. पत्ते के आकार की कोई वस्तु। ६. पीने की वस्तु। पेय। ७. मदिरा। ८. जाति। ९. साँप। १०. सर्पदंश। ११. सर्पविष। १२. विष।

पानक—*(न०)* १. पीने की वस्तु। २. मदिरा।

पानखर—*(ना०)* पतझड़ ऋतु।

पानड़ी—*(ना०)* १. रहँट का एक उपकरण। २. मूंग, मोठ आदि के पत्तों का घास। ३. चंदा इकट्ठा करने की सूची। टीपणी। दे० पनड़ी।

पानड़ो—*(न०)* १. पतली चपाती। २. पत्ता।

पानदान—*(ना०)* नागरबेल के पान, कत्था, चूना व सुपारी आदि रखने की पेटी।

पानफूल—*(न०)* १. सामान्य भेंट। २. देव पूजार्थ पत्रपुष्प।

पान-बीड़ी—*(ना०)* १. पान की बीड़ी। गिलौरी। २. पान और बीड़ी-सिगरेट।

पान मेथी—*(ना०)* मेथी के पत्ते। मेथी की सब्जी।

पानवेकरियो—*(न०)* एक घास।

पान-सोपारी—*(ना०)* १. पान तथा सुपारी। २. किसी के मान में किया जाने वाला सत्कार समारंभ। ३. रिश्वत। ४. सिपाही आदि को दिया जाने वाला इनाम।

पानही—*(ना०)* जूती। पगरखी।

पान होणो—*(मुहा०)* सर्प का काटना।

पानै पड़णो—*(मुहा०)* १. प्राप्त होना। मिलना। २. वास्ता पड़ना। संबंध होना। काम पड़ना।

पानो—*(न०)* १. कागज का तख्ता। शीट। ताव। कागज। २. पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना। वरक। ३. धातु को पीटकर पतला किया हुआ चिपटा टुकड़ा। पत्तर। ४. पत्ता। पत्र। ५. ताश का पत्ता। ६. संपर्क। संबंध। वास्ता। लगाव। ७. नाता। रिश्ता। जिंदगी भर का संबंध। ८. खेत। ९. खेत का टुकड़ा। खेत का एक भाग। १०. किसी औजार की तेज धार। शस्त्र की धार। ११. मशीन का नट घुमाने का एक औजार। १२. वात्सल्य से माता की छाती में दूध का उमड़ आना। प्रेमावेश से होने वाला कुचों में दूध का भराव। पहन। १३. बँटवारे की जमीन के अलग-अलग भागों में से एक। १४. नगाड़ा।

पानो आवणो—*(मुहा०)* १. छाती में दूध का भराव होना। २. स्तनपान कराने की इच्छा होना। ३. प्रेमवश छाती में दूध भर जाना।

पानो पड़णो—*(मुहा०)* १. विवशतावश किसी के साथ काम-काज या बातचीत करने की स्थिति में आना। इच्छा के विरुद्ध किसी के सहवास में आना। २. संबंध होना। मेल होना।

पाप—*(न०)* १. धर्म या नीति विरुद्ध कृत्य। पातक। २. वह काम जिसके करने से शंका, लज्जा और भय उत्पन्न हो। ३. अपराध। गुनाह। ४. हत्या। वध। ५. कपट। ६. आपदा।

पापकर्म—*(न०)* बुरा काम। कुकर्म।

पापकर्मी—*(वि०)* पापी।

पापड़—*(न०)* उड़द, मूंग, मोठ आदि के बेसन को सब्जी के पानी से गूंथकर बनाया हुआ मसालेदार चपाती रूप व्यंजन, जो सेककर या तलकर खाया जाता है।

पापड़खार—*(न०)* १. पापड़ में डाला जाने वाला एक क्षार। २. सज्जीखार।

पापड़ियोखारो—दे० पापड़खार।

पापड़ी—*(ना०)* १. पपड़ी। २. एक खाद्य। ३. बबूल की फली। हेलारियाँ।

पापड़ो—*(न०)* १. पसली की पिछली बाजू का अंग। पीठ में कंधे के नीचे का भाग। कंधे का मूल। स्कंध मूल। २. कंधे की पीठ में निकलने वाली हड्डी।

पापण—दे० पापणी।

पापणी—*(ना०)* पापिनी। पापी स्त्री।

पाप-पुण्य—*(न०)* १. पाप और पुण्य। २. कुकर्म और सुकर्म।

पाप-पुन्न—दे० पाप-पुण्य।

पाप रो धूप—*(न०)* टिकाऊ नहीं हो ऐसी कमजोर वस्तु। *(वि०)* घटिया।

पापल—*(वि०)* १. घटिया। २. कमजोर।

पापल-पोपल—दे० पाप रो धूप। पोपल-पापल।

पापहारी—*(वि०)* पापों का नाश करने वाला।

पापा—*(न०)* बाप। पिता।

पापाचार—*(न०)* दुराचार। अनाचार। पापकर्म।

पापाचारी—*(वि०)* दुराचारी। अनाचारी।

पापात्मा—*(न०)* पापी। दुष्टात्मा।

पापियो—दे० पापी।

पापिष्ट—*(क्रि०)* पापी।

पापी—*(वि०)* पापकर्म करने वाला। पातकी। पापिष्ट।

पापीड़ो—दे० पापियो।

पापोघ—*(न०)* पापसमूह।

पापोड़ो—*(न०)* पापकर्म।

पाबंद—*(वि०)* १. बँधा हुआ। बद्ध। २. नियम का पालन करने वाला। ३. नियमाबद्ध। *(ना०)* घोड़े की पिछाड़ी।

पाबंदी—*(ना०)* १. पाबंद रहने का भाव। २. नियमित रूप से किसी बात का किया जाने वाला अनुसरण। ३. प्रतिबंध। रोक। निषेध। ४. विवशता। लाचारी।

पाबासर—*(न०)* मानसरोवर।

पाबूजी राठोड़—*(न०)* एक लोक देवता, जिन्होंने विवाह वेदी में से सोढ़ी का हस्तमिलाप छोड़ करके एक चारणी की गायों की रक्षार्थ अपने प्राणों का बलिदान किया था। पाबूजी कोळूमढ के धांधलजी के पुत्र थे। बूड़ोजी इनके विमात भाई थे।

पाबूजी रा परवाड़ा—*(न०)* १. पाबूजी का सोढ़ी के साथ पाणिग्रहण, गायों के रक्षार्थ बलिदान हो जाने इत्यादि उनके शौर्यपूर्ण और कर्त्तव्यनिष्ठा के जीवन चरित्र का एक प्रसिद्ध लोक काव्य। २. कोई लंबी कथा या बात।

पाबूजी री पड़—*(ना०)* १. पाबूजी के जीवन चरित्र का चित्रपट। २. लंबी बात।

पाम—*(ना०)* एक चर्म रोग। पामा।

पामणाचारी—*(ना०)* खातिरदारी।

पामणो—*(न०)* पाहुना। महमान। *(क्रि०)* प्राप्त करना। पाना।

पामर—*(वि०)* १. तुच्छ। हीन। २. दुष्ट। कमीना। ३. वैभव से मोह रखने वाला। ४. विषयासक्त। कामासक्त।

पामरी—*(ना०)* १. लाल रंग की एक ओढ़नी, जिस पर सोने या चाँदी के रंग के फूल छपे हुए रहते हैं। विवाह में दुलहिन को ओढाई जाने वाली मांगलिक चुनरी। **पांवरी। पुंहरी।** ३. एक कीमती दुपट्टा। जरीवाला शाल।

पाय—*(न०)* १. पाँव। चरण। पैर। **पग।** २. पाया। **पागो।**

पायक—*(न०)* १. पैदल सिपाही। २. दूत। ३. सेवक।

पायका—*(ना०)* दासी।

पायखानो—*(न०)* शौचालय। संडास। जाजरू। पाखाना।

पायगा—*(ना०)* घुड़शाला। अस्तबल। **तबेलो।**

पायचो—*(न०)* १. धोती का वह भाग, जो घुटनों से नीचे रहता है। **खोळो।** २. पजामे की एक टाँग। ३. सूथन या पजामे का वह भाग जो घुटनों के नीचे रहता है।

पायजादो—*(न०)* १. प्राप्त करने वाला। २. सेवक।

पायजामो—*(न०)* पायजामा। सूथन। पजामा। **सूथण।**

पायजेब—*(ना०)* नूपुर। **झाँझर।** स्त्री के पाँव का एक गहना।

पायड़—*(ना०)* १. नाचने के समय पाँवों में बाँधी जाने वाली घुंघरुओं की एक पट्टी। २. रथ के पहिये का वह भाग जिसमें ताल लगे रहते हैं। ३. पहिये के ताल (झाँझ)। ४. पायल। **झाँझर। रमझोळ।**

पायतखत—*(न०)* राजधानी। पाटनगर।

पायतो—दे० पसायतो।

पायदळ—*(न०)* पैदल सेना।

पायनमण—*(न०)* १. पालागन। नमस्कार। २. किसी को अपने पैरों पर झुकाने या नमन कराने की क्रिया। ३. विवश। मजबूर।

पायनाम—*(न०)* १. पाँवों में झुकाने की क्रिया। २. विवश। मजबूर।

पायनाम करणो—*(मुहा०)* १. पाँवों में झुकाना। २. विवश करना। ३. अधिकार में करना।

पायनामी—*(वि०)* १. पाँवों में झुकने वाला। २. पाँवों में झुकाने वाला। पाँवों में झुकने को विवश करने वाला। ३. शरणागत। ४. अधीन। ५. पराजित होकर विजित के पाँवों में पड़ने वाला।

पायपोस—*(न०)* पाँव पोंछने का कपड़ा। पाँवपोश।

पायपोस बरदार—*(न०)* १. पाँव पोंछने का कपड़ा पेश करने वाला तथा पाँव पोंछने वाला। २. जूता पहनाने वाला और खोलने वाला। ३. पालकी आदि सवारी के साथ जूता उठाकर चलने वाला नौकर।

पायमाल—*(वि०)* १. तबाह। बरबाद। नाश। २. पैरोंतले कुचला हुआ।

पायमाली—*(ना०)* १. बरबादी। खराबी। तबाही। २. दुर्दशा।

पायल—*(ना०)* १. स्त्रियों के पाँवों का एक गहना। **झाँझर।** २. नाचने के समय पाँवों में बाँधने की घूंघरूदार एक चमड़े की पट्टी। **पायड़।**

पायलड़ी—दे० पायल सं० १.

पाय लागणो—*(क्रि०)* गुरुजनों को वंदन-नमस्कार करना। चरणस्पर्श करना।

पायली—*(ना०)* १. अनाज मापने का एक माप। २. रुपये का चौथा भाग। *(वि०)* पास वाली। निकट की।

पायलो—*(वि०)* १. पास का। निकट का। *(न०)* १. नाज को मापने की पायली के चतुर्थांश का एक माप। २. अमुक परिमाण में अफीम भरने का टोकरा। ३. सुनारों का एक औजार। **पासो।**

पायस—*(न०)* १. दूध। २. **खीर।**

पायसो—दे० पायचो।

पायादार—*(वि०)* १. दृढ़। मजबूत। २. विश्वास योग्य। विश्वसनीय। ३. आधार-युक्त। ४. जिसके पाये लगे हुए हों।

पाया बिगर-रो—*(वि०)* १. बिना पाये का। पाया रहित। २. अविश्वसनीय।

पाया बिना-रो—दे० पाया बिगर-रो।

पायाळ—*(न०)* पाताळ।

पाये खाख—*(ना०)* पाँवों की धूल। पदरज।

पायेदार—दे० पायादार।

पायो—*(न०)* १. खाट मेज आदि का पाँव। पाया। **पागो।** २. पावा। टेक। नींव। बुनियाद। **रांग।** ३. टेका। सहारा। आधार। **टेको।** ४. नक्षत्र या पनोती की समय स्थिति। जैसे सोना रो पायो, चाँदी रो पायो। ५. पूरी, पकौड़ी आदि पकवान-सामग्री (जिसकी जितनी मात्रा एक बार में तली जा सके) को तलकर कढ़ाई में से निकालने की एक आवृति। ६. उतनी सामग्री जो एक बार में तली गई हो। ७. पक्ष। ८. वश। अधिकार।

पायो जमावणो—*(मुहा०)* अधिकार करना।

पायो माँडणो—(मुहा०) नींव डालना।
पायोरिया—(न०) दाँत का एक रोग।
पायो रोपणो—दे० पायो माँडणो।
पार—(न०) १. किनारा। २. अंत। ३. मृत्यु। ४. मृत्युगीत। ५. वृद्ध मृतक के पीछे (समधिन) स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला व्याजव्यंग्य का शोक-गीत। **सापो। छाजिया। पल्लो।** ६. कुआँ। ७. गाँव। ८. हद। सीमा। ९. प्रांत भाग। १०. मनोभाव। ११. भेद। १२. शत्रु। १३. तालाब। (अव्य०) १. दूर। परे। २. सामने किनारे।
पार-अपार—(न०) परमेश्वर।
पारकर—(न०) घाट प्रदेश। **सोढ़ाण।**
पारकापणो—(न०) 'दूसरे का है' ऐसा ख्याल। **बुभाँत। दूजागारी।**
पारकी—(वि०) १. पराई। दूसरे की। २. दूसरी।
पारको—(वि०) १. अन्य। पराया। दूसरा। २. दूसरे का। पराया। (न०) शत्रु।
पारको धन—(न०) १. पुत्री। २. दूसरे की धन-संपत्ति।
पारक्कड़ो—(न०) शत्रु। (वि०) १. सामने वाला। २. पराया।
पारख—(ना०) १. परीक्षा। २. जान-पहचान। **ओळख।** (न०) १. शराफ। २. एक उपगोत्र।
पारखणो—(क्रि०) परखना। परीक्षा करना। गुण-दोष जानना।
पारखद—(न०) १. देवताओं का सेवक या पौलिया। पार्षद। २. पास रहने वाला। सेवक। ३. सभासद।
पारखा—(ना०) १. परीक्षा। **पारख।** २. पहचान। **ओळखाण।** ३. जाँच।
पारखियो—दे० पारखू। (तुच्छकार में)।
पारखी—(वि०) परीक्षा करने वाला।
पारखू—दे० पारखी।
पारग—(वि०) १. पार करने वाला। २. पार जाने या होने वाला।
पारचो—(न०) १. जरी वाला वस्त्र। २. कपड़ा। ३. पोशाक।
पारणो—(न०) उपवास के बाद में किया जाने वाल प्रथम भोजन। उपवास समाप्त्यर्थ किया जाने वाला भोजन। पारण।
पारथ—(न०) अर्जुन। पार्थ।
पारथणो—(क्रि०) प्रार्थना करना। निवेदन करना।
पारथी—(वि०) १. प्रार्थी। २. वीर। ३. कवि। ४. अर्जुन।
पारथी जोधार—(न०) अर्जुनपुत्र अभिमन्यु।
पारद—(न०) पारा। (वि०) पार करने वाला।
पारदर्शक—(वि०) जिसमें से दूसरी ओर की चीजें देखी जा सकें। प्रकाश किरणों द्वारा भेद्य।
पारधी—(न०) १. शिकारी। २. भील। थोरी। (वि०) निशानाबाज।
पारपखै—(वि०) १. समस्त। २. अपार। ३. अत्यधिक। बहुत।
पार पड़णो—(मुहा०) बनना। सिद्ध होना। पार जाना।
पारबती—दे० पार्वती।
पार-बाहिरो—(वि०) अपार।
पारब्रह्म—दे० परब्रह्म।
पारलौकिक—(वि०) परलोक संबंधी।
पारवताँ—दे० पार्वती।
पारवताँजी—दे० पार्वती।
पारवती—दे० पार्वती।
पारब्रहम—दे० परब्रह्म।
पारस—(न०) १. एक कल्पित पत्थर जिसके संबंध में कहा जाता है कि उसके छूने मात्र से लोहा सोना हो जाता है। स्पर्शमणि। २. ईरान देश। फारस। ३. पार्श्व। पास। सामीप्य।
पारसद—दे० पारखद।

पारसनाथ—*(न०)* जैनों के तेईसवें तीर्थंकर। पार्श्वनाथ।

पारसपीपळी—*(ना०)* पीपल की जाति का एक वृक्ष।

पारसमणि—*(ना०)* एक कल्पित मणि जिसके स्पर्श से लोहे का सोना हो जाना माना जाता है। स्पर्शमणि।

पारसल—*(ना०)* रेलवे या पोस्ट के द्वारा दूसरी जगह भेजा जाने वाला बंडल, गठरी या पेटी आदि।

पारसात—*(अव्य०)* पास से। (खत-दस्तावेज में दस्तावेज लिखने वाले (ऋणदाता) के नाम के साथ लिखा जाने वाला एक पारिभाषिक शब्द)।

पारसी—*(न०)* १. जरथोस्ती धर्म को मानने वाली जाति का मनुष्य। २. सांकेतिक बोली। फारसी। ३. पारसी भाषा। फारसी।

पारसो—१. दे० पारस। २. दे० पोरसो। *(वि०)* पवित्र।

पारंगत—*(वि०)* १. संपूर्ण जानकार। २. जिसने किसी विषय को आदि से अंत तक पूरा कर लिया हो। ३. पारगत। पार गया हुआ।

पारंभ—*(वि०)* अपार। *(क्रि० वि०)* प्रारंभ में। *(न०)* प्रारंभ।

पारंभगुरु—*(न०)* १. महान कार्य को प्रारंभ करके उसे पूर्ण करने का भार उठाने वाला। २. गुरुतर से गुरुतर कार्य को आरंभ करने वाला। महान कार्य करने वाला।

पारातीरथ—*(न०)* १. कायरता। २. वेश्यागमन। 'धारा तीर्थ' का उल्टा।

पाराथ—*(न०)* १. अर्जुन। पार्थ। २. प्रार्थना।

पाराथणो—*(क्रि०)* प्रार्थना करना।

पाराध—*(न०)* शिकारी। पारधी।

पारायण—*(न०)* १. किसी धार्मिक ग्रंथ का नियमित रूप से किया जाने वाला आदि से अंत तक पाठ। ग्रंथ का आद्यांतपाठ। २. नियत समय में किया जाने वाला धार्मिक ग्रंथ का पाठ। ३. पूरे ग्रंथ का वाचन। ४. पूरा करने की क्रिया। ५. कामशास्त्र के लिखने वाले एक ग्रंथकार का नाम।

पारायणी—*(न०)* १. पारायण करने वाला। २. देवी। ३. सरस्वती।

पारावत—*(न०)* कबूतर।

पारावार—*(वि०)* अपार। खूब। *(न०)* समुद्र।

पाराशर—*(न०)* १. वेदव्यास २. पराशर ऋषि के वंशज। ३. ब्राह्मणों की एक जाति या गोत्र।

पारां—दे० पार सं० ४, ५.

पारिजात—*(न०)* १. एक देव वृक्ष। २. इस वृक्ष का पुष्प।

पारितोषिक—*(न०)* इनाम। पुरस्कार।

पारिभाषिक—*(वि०)* १. जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के रूप में किया जाय। (शब्द)। २. जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाय। ३. परिभाषा संबंधी।

पारियो—*(न०)* मिट्टी की छोटी पारी। **पारोटियो**। दे० पारेसो।

पारिहो—दे० पारेसो।

पारी—*(ना०)* १. देगची जैसा मिट्टी का एक पात्र। २. अंतर से आने वाला अवसर। बारी। मौका। **बारी**।

पारीक—*(न०)* एक ब्राह्मण जाति। छन्यातियों में से एक न्याति।

पारीसो—दे० पारेसो।

पारू—*(वि०)* १. पार करने वाला। २. तेरू।

पारेछो—*(न०)* १. रहँट की घड़ियों में से पानी गिरने की पत्थर की लंबी कूंडी। २. वह थाला या कूंडी जिसके अंदर चड़स का पानी खाली किया जाता है।

पारेवड़ी—दे० पारेवी।

पारेवड़ो—दे० पारेवो।

पारेवी—*(ना०)* १. मादा कबूतर। कबूतरी। २. पंडुकी।

पारेवो—*(न०)* १. कबूतर। पारापत। २. पंडुक। ३. मेवाड़ में प्राप्त हरे रंग का एक पत्थर।

पारैसो—*(न०)* निमंत्रित व्यक्ति के भोजन करने को नहीं आ सकने के कारण उसके घर को भेजी जाने वाली भोज्य सामग्री। एक व्यक्ति के लिए परोसा हुआ भोजन। परोसा। छाँदा। **पारियो। पारिहो।**

पारो—*(न०)* १. श्वेत चमकीली खनिज प्रवाही धातु। पारद। पारा। २. स्वामीनारायण सम्प्रदाय का एक प्रकार का सेवक या साधु। ३. मनका। दाना। **मणको। मणियो।**

पारोकियो—*(न०)* शत्रु। दुश्मन। *(वि०)* दे० पारको।

पारोकी—*(वि०)* १. दूसरे की। २. दूर की।

पारोटियो—*(न०)* छाछ, दही आदि रखने का देगची जैसा मिट्टी का एक पात्र। **पारियो।**

पारोपार—*(अव्य०)* आरपार। एक किनारे से दूसरे तक।

पार्थ—*(न०)* १. पृथा का पुत्र। अर्जुन। २. पृथा (कुंती) पुत्र युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन।

पार्थसारथि—*(ना०)* श्रीकृष्ण।

पार्थिव—*(न०)* १. मिट्टी से बना शिवलिंग। २. शरीर। ३. मिट्टी का पात्र। ४. पृथ्वी संबंधी। ५. प्राकृतिक। भौतिक।

पार्थिवेश्वर—*(न०)* १. मिट्टी से बनाये गये महादेव अथवा शिवलिंग।

पार्वण—*(न०)* पर्व में किया जाने वाला (श्राद्ध)।

पार्वती—*(ना०)* १. हिमालय की पुत्री। गिरिजा। महादेव की अर्द्धांगिनी। २. दुर्गा। शक्ति।

पार्वतीनाथ—*(न०)* महादेव। शंकर।

पार्वतीपति—*(न०)* महादेव। शंकर।

पार्श्वनाथ—दे० पारसनाथ।

पार्षद—दे० पारसद।

पाल—*(न०)* १. धूप आदि से बचाव के लिए चंदोवे की भाँति बाँधा जाने वाला मोटा कपड़ा या टाट। २. पालकी, गाड़ी आदि को ढकने का परदा। ३. तंबू। ४. कनात। ५. पाबू का एक लोक-साहित्य नाम।

पाळ—*(ना०)* १. तालाब आदि का ऊँचा किनारा। बाँध। २. जल आदि की धारा या प्रवाह को रोकने के लिए बनाई जाने वाली मिट्टी की आड़। ३. मर्यादा। नियम। ४. उपाय। ५. किनारा। *(वि०)* समास के अंत में 'पालन करने वाला' के अर्थ में, जैसे जगपाळ, गोपाळ।

पालक—*(न०)* पत्तों वाला एक साग। एक सब्जी *(वि०)* १. पालन करने वाला। २. रक्षक।

पालको—*(न०)* पालक नाम की सब्जी।

पालकी—दे० पालखी।

पालकी-सिरोपाव—*(न०)* एक प्रकार का सिरोपाव।

पालखी—*(ना०)* १. बैठने का एक ढंग। पलथी। पद्मासन। २. एक सवारी जिसे कहार उठाकर चलते हैं। सुखपाल। पीनस। शिविका।

पाळखेट—*(ना०)* पालन-पोषण।

पाळग—*(वि०)* पालन करने वाला। *(न०)* बादल।

पाळगर—दे० पाळग।

पाळगोटी—*(ना०)* पलथी। **पालोखी।**

पालट—दे० पालटो।

पालटणो—*(क्रि०)* १. पलटना। बदलना। २ पलटाना। बदलाना। ३. राज्य में परिवर्तन होना। ४. राज्य का बदलना।

पालटी—*(ना०)* सभा। पार्टी। **संभा।**

पालटो—*(न०)* पलटाव। परिवर्त्तन। बदलाव।
पालठी—दे० पालथी।
पालड़ी—दे० पालटी।
पालण—*(न०)* १. पालन करने का भाव। पालन। २. वर्जन। मना। मनाही। ३. पथ्य। परहेज। **परेज। करी। किरी।**
पाळण—*(न०)* १. पालन-पोषण। २. रक्षण। ३. पथ्य।
पाळणपोषण—*(न०)* पालन-पोषण। गुजरान। निर्वाह।
पाळणहार—*(न०)* पालन करने वाला।
पालणो—*(क्रि०)* १. वर्जन करना। बरजना। मना करना। २. रोकना।
पाळणो—*(क्रि०)* १. पालन करना। निभाना। २. रक्षा करना। ३. उल्लंघन न करना। *(न०)* १. पलना। झूला। **घोड़ियो।**
पाळतू—*(वि०)* पाला हुआ।
पालथी—*(ना०)* पलथी। पद्मासन।
पाळ-दुज-गाय—*(न०)* राजा।
पालमचिड़ी—*(ना०)* एक शकुन चिड़िया।
पालर—*(न०)* १. वर्षा का पानी। मेघ जल। **पालरियो। वरखाजळ।** २. तालाब का पानी।
पालरपाणी—दे० पालर।
पालव—*(न०)* १. वस्त्र। २. वस्त्र का पल्ला। ३. पघड़ी का जरीदार पल्ला। ४. पत्ता। ५. कोंपल। ६. आश्रय। शरण।
पालवणो—*(क्रि०)* १. मना करना। २. माल को बेचने में खर्चा, नफा आदि मिलना। खर्चे और नफे सहित कीमत मिलना। पोसाना। ३. पल्लवित होना। ४. अनुकूल होना।
पालवी—*(न०)* १. भील। २. भीलों का मुखिया।
पाळसियो—*(न०)* १. वृक्ष आदि में पक्षियों के पानी पीने के लिए टाँगा जाने वाला पात्र। २. पौधे लगाने का पात्र। गमला। **कूंडो।** ३. पिशाब करने का पात्र। **पाळो।**
पाळा—दे० पळा।
पाळियो—*(न०)* १. मरे हुए विशिष्ट व्यक्ति का स्तंभ-स्मारक। २. बाँध। **पाळ।**
पाळी—*(ना०)* १. पाळ। आड़। रोक। २. पैदल। ३. पहेली। **आडी।** ४. कान के किनारे का ऊपरी भाग।
पाली—*(ना०)* १. एक प्राचीन भाषा, जिसमें बौद्ध ग्रंथ लिखे हुए हैं। २. मारवाड़ का एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर जो राजाओं की तासळी (भोजन खर्च) का और पालीवाल ब्राह्मणों के निष्कासन का स्थान है।
पालीवाळ—*(वि०)* १. 'पाली' नगर का। २. इस शाखा वाला (जाति)। *(न०)* १. गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा। २. एक ब्राह्मण जाति।
पाळै आणो—*(मुहा०)* भैंस, ऊँटनी आदि की गर्भ धारण करने की इच्छा होना।
पाळो—*(वि०)* पैदल। *(न०)* १. पिशाब करने का पात्र। **पाळसियो।** २. बरफ। ३. सरदी। ठंड। ४. ठंड से जमा हुआ पानी। ५. तुषार। ६. वृक्ष आदि में टाँगा जाने वाली पक्षियों के पानी पीने का पात्र।
पालो—*(न०)* १. झड़बेरी के सूखे पत्ते जिसे बकरी, ऊँट आदि चरते हैं। २. वास्ता। संबंध। लगाव। ३. मित्रता।
पाळोकड़—दे० पालतू।
पालोखी—*(ना०)* पलथी। **पळांठी।**
पाल्हवणो—दे० पांगरणो।
पाव—*(न०)* १. चतुर्थांश। चौथा भाग। २. पावसेर। सेर का चौथा भाग। ३. पावसेर का तोल। ४. पाँव। पैर।
पावआनो—*(न०)* १. एक आने का चौथा भाग। २. एक पैसा (गत आना-पद्धति)।
पावक—*(न०)* अग्नि। *(वि०)* पावन करने वाला।

पावग—दे० पावक ।

पावजलंद्री—(न०) जालंद्रपाद । जलंधरनाथ ।

पावट—(न०) एक प्रदेश का नाम ।

पावटियो—(न०) १. पाँवों से रहँट को चलाने वाला पुरुष । २. **पगथिया** । जीना । **पागोथियो । पावड़ियो ।**

पावटी—(ना०) पाँव से चलाया जाने वाला रहँट ।

पावटो—(न०) १. जलाशय का तट । घाट । २. तारकशों का एक उपकरण, जिससे सोने-चाँदी आदि के तारों को जंती में से निकालकर पतला और लंबा बनाया जाता है ।

पावड़ियो—(न०) सीढ़ी । जीना । **पगोथियो । पावटियो ।**

पावड़ी—(ना०) १. पादुका । खड़ाऊँ । **चाखड़ी** । २. छोटा फावड़ा । ३. फावड़ी । घास गोबर आदि हटाने की लकड़ी की फावड़ी ।

पावड़ो—(न०) फावड़ा ।

पावणो—(क्रि०) १. पिलाना । २. प्राप्त करना । पाना । मिलना । ३. भोजन करना ।

पावती—(ना०) रसीद । पहुँच । **पहोंच । पूग ।**

पावदान—(न०) सवारी गाड़ी के बाहर लगाया हुआ तख्ता जिस पर पाँव रखकर उसमें चढ़ते हैं । पाँवदान ।

पावन—(वि०) शुद्ध । पवित्र । **चोखो ।**

पावनी—(ना०) १. गंगानदी । २. गाय । ३. तुलसी । ४. हरीतकी । (वि०) पावन करने वाली ।

पावपंथी—(वि०) नाथ पंथ का अनुयायी ।

पावर—(ना०) १. विद्युत्शक्ति । २. सत्ता । ३. गर्व । अभिमान । ४. दम । ताकत ।

पावरी—(ना०) चमड़े की बनी थैली ।

पावरो—(न०) १. घोड़े को चने की दाल या दाना खिलाने के लिये उसके मुँह पर लटकाया जाने वाला दाल या दानों से भरा हुआ चमड़े का थैला । **तोबड़ा** । २. थैला ।

पावली—(ना०) चौअन्नी का सिक्का । **चौअन्नी । चारानी ।**

पावलो—(न०) १. चार आने । २. पायली के चौथे हिस्से का माप पात्र ।

पावस—(न०) १. वर्षा ऋतु । **चौमासो** । २. वर्षा । **मेह** ।

पावसणो—(क्रि०) १. दुहते समय गाय, भैंस का थनों को शिथिल करके उनमें दूध आने देना । २. बरसना ।

पावागढ—(न०) गुजरात का प्रसिद्ध ऐतिहासिक पहाड़ी तीर्थ स्थान और खंडहर रूप किला ।

पावानियो—(न०) एक पैसे वाला पोस्टकार्ड ।

पावानो—(न०) १. एक पैसा (प्राचीन) । २. पुराने एक पैसे का सिक्का । **कावडियो** ।

पावियो—(न०) १. चौथा हिस्सा । २. पूरे पात्र के चौथे हिस्से का पात्र । ३. प्रारंभ काल का रेलवे का छोटा एंजिन । माप में चौथे भाग का कोई बरतन, वस्तु आदि ।

पावैयो—(न०) हिजड़ा । नपुंसक ।

पावो—दे० पायो सं० ५, ६. और पावियो सं० २, ४.

पाश—(न०) १. फाँसी । २. यम का फाँसा । यमपाश । ३. वरुण का आयुध । वरुणपाश । ४. सरकने वाली गाँठ । **सरकीपासो** । ५. केशपाश ।

पाशुपत—(न०) १. एक प्राचीन शैव सम्प्रदाय । २. पाशुपत सम्प्रदाय का अनुयायी । ३. शंकर का एक दिव्यास्त्र ।

पाश्चात्य—(वि०) १. पश्चिम का । २. पश्चिम से संबंधित । ३. पश्चिम में रहने वाला । ४. पीछे का । (न०) पीछे का भाग ।

पाषाण—(न०) पत्थर । पाहन । **भाटो । पाहण** ।

पाषाणभेद—*(न०)* एक वनस्पति। पत्थर चट।

पाषाणयुग—*(न०)* वह युग जब लोग पत्थर के औजार और शस्त्रों से काम लेते थे। प्रस्तरयुग।

पास—*(न०)* १. किसी गीली वस्तु का पास में पड़ी हुई वस्तु पर पड़ने वाली आर्द्रता का प्रभाव। **पाह**। पाश। २. स्पर्श-दोष। ३. संग का प्रभाव। ४. स्पर्श से रंग चढ़ना। पुट। ५. सफल। पास। ६. किसी वस्तु या बात की स्वीकृति, प्राप्ति या कहीं प्रवेश करने का आज्ञापत्र। मंजूरी की चिट्ठी। परवाना। ७. स्वीकृत। मंजूर। ८. पसंद। रुचि के अनुकूल। ९. आजूबाजू। बाजू। पार्श्व। निकट। १०. पाश। ११. बंधन। १२. लट। केशपाश। *(वि०)* उत्तीर्ण। *(अव्य०)* पास। निकट। **चंड़ों**।

पासणो—दे० पाछणो

पासता—*(न०)* बादशाह। (पातशाह का अपभ्रंश रूप)।

पासरण—*(न०)* १. युद्धाभ्यास। २. प्रसरण। फैलाव।

पासरणो—*(न०)* फैलाव। विस्तार। *(क्रि०)* फैलाना।

पासरो—*(न०)* १. उपाश्रय। उपासरा। **उपासरो**। २. पाठशाला।

पासळी—*(ना०)* पसली।

पासलो—*(न०)* १. धातु आदि का पासे के आकार का आयताकार टुकड़ा। २. स्वर्णकार का एक औजार। पासा। **पाहलो**। *(वि०)* पास वाला। नजदीक का। निकट का।

पासवान—*(ना०)* १. राजा की रखेल स्त्री। २. रखेल का दर्जा। *(न०)* राजा का एक खास सेवक। **हजूरियो**। **मरजीदान**।

पासवानी—*(ना०)* १. पासवान का काम। २. सेवा। **चाकरी**।

पासवो—*(न०)* पार्श्वोपधान। बाजू का तकिया।

पासंग—*(न०)* १. तुलना। मुकाबला। २. तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर करने के लिये, उठे हुए पलड़ में बाँधा जाने वाला वजन। **पासंगो**। **पाहेंगो**।

पासंगो—*(न०)* १. प्रसंग। २. संबंध। ३. मित्रता। ४. मेल-मिलाप। ५. दे० पासंग सं० २.

पासा खेल—*(न०)* चौपड़ या शतरंज का खेल।

पासादार—*(वि०)* जिसमें पासे पड़े हुए हों। पासोंवाला। पहलूदार।

पासा रम्मत—दे० पासा खेल।

पासी—दे० फाँसी। *(न०)* ओर। तरफ। *(अव्य०)* पास में।

पासींगो—दे० पासंगो।

पासेर—*(न०)* १. सेर का चौथा भाग। २. पाव सेर का तोल।

पासेरियो—*(न०)* १. पाव सेर का वजन। चौथाई सेर का तोल। २. पाव सेर का माप।

पासेरो—*(न०)* १. जिसमें पाव सेर समाता हो ऐसा बरतन। २. पाव सेर का माप। ३. पाव सेर का तोल।

पासै—*(अव्य०)* १. पास में। २. निकट में। ३. अधिकार में। कब्जे में। ४. पास। निकट।

पासो—*(न०)* १. हाथी दाँत या लकड़ी का बना हुआ चौसर के खेल का लंबोतरा चौरस पासा जिस पर बिंदियों से अंक चिह्नित किये हुए होते हैं। गोटी। सारी। २. काँसे का बना एक चौरस औजार (उपकरण) जिसमें चारों ओर छोटे मोटे कई गुल्म बने होते हैं। **पाहलो**। ३. हीरा को घिसकर बनाया हुआ पहलू। ४. पहलू। ५. भाग्य। तकदीर। ६. संबंध। रिश्ता। ७. सरोकार। काम। ८. फंदा। फाँसा। ९. सोने की (अमुक तोल की) **लंब-चौरस गुल्ली**।

पाह—दे० पास १ से ४.
पाहटो—दे० पावटो।
पाहड़ो—*(न०)* १. पसली। २. किसी अंक की एक से लेकर दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सूची। **गुढियो।**
पाहण—*(न०)* पत्थर। पाषाण। **भाटो।**
पाहन—दे० पाहण।
पाहलो—दे० पासलो।
पाहिमाम्—*(अव्य०)* 'मेरा रक्षण करिये' ऐसी प्रार्थना या पुकार।
पाही—*(ना०)* झड़बेरी के काँटों का उतना समूह जो बाड़ बनाने के लिये बेई से उठाया जा सके। दे० पासी।
पाहुणो—*(न०)* १. पाहुना। मेहमान। २. दामाद।
पाहुरो—दे० पाहोरो।
पाहू—*(न०)* १. एक प्रकार की लोहे की बड़ी कील। २. भाटी वंश की एक शाखा।
पाहेंगो—दे० पासंगो।
पाहै—दे० पासै।
पाहो—दे० पाहलो।
पाहोरो—*(न०)* तोबड़ा।
पाँ—*(ना०)* १. बारीक धूल। रेती। पांशु। **पांह। बेळू।** २. एक चर्मरोग। पामा। ३. पाँव।
पाँकणो—*(क्रि०)* १. विचलित होना। डिगना। २. निंदा करना। ३. छोड़ना।
पाँख—*(ना०)* १. पंख। पर। २. डैना। ३. पार्श्व। बाजू। ४. पक्ष। पार्टी। ५. आश्रय। ६. किसी वस्तु का ऐसा भाग जो दोनों ओर समान रूप से बाहर निकला हुआ रहता है।
पाँखड़ी—*(ना०)* १. फूल की पत्ती। पुष्प-दल। पाँखुरी। २. पाँख।
पाँखणो—दे० पूंखणो।
पाँखळो—*(न०)* १. बैलगाड़ी का एक उपकरण। २. चड़स का एक उपकरण।
पाँखाळी—*(वि०)* पाँखों वाली। *(ना०)* **घोड़ी की एक जाति।**
पाँखाळो—*(वि०)* पंख वाला। वह जिसके पंख लगे हों।
पाँखियो—*(न०)* १. ताले के अंदर की एक कल। २. पक्षी।
पाँखी—*(ना०)* १. पक्ष। दल। समूह। २. सहायता। ३. बल। *(वि०)* कम। थोड़ा।
पाँखी पीधोड़ो—*(वि०)* १. निकम्मा। २. निर्बल। ३. नासमझ। ४. निर्धन।
पाँगरणो—*(क्रि०)* १. अंकुर फूटना। २. वृक्ष, लता आदि का बढ़ना तथा फलना-फूलना। ३. फैलना। विस्तृत होना। ४. मोटा होना। ५. आना (व्यंग्य में)। ६. दिखाई देना (ताना)।
पाँगळ—*(न०)* जवान ऊँट।
पाँगळियो—*(न०)* ऊंट का बच्चा। *(वि०)* पाँवों से अपंग। लंगड़ा।
पाँगळी—*(ना०)* कीर्ति। **पंगी।** *(वि०)* लंगड़ी। लूली।
पाँगळो—*(वि०)* १. जो पैर से चलने में असमर्थ हो। लंगड़ा। पंगु। **खोड़ो।** *(न०)* राठौड़ जयचंद की उपाधि। वळ-. **पाँगळो।**
पाँगी—*(ना०)* कीर्ति। यश। **पंगी।** *(वि०)* पंगुली। **खोड़ी।**
पाँगो—*(वि०)* लंगड़ा। **खोड़ा।**
पाँघरणो—*(क्रि०)* दे० पाँगरणो।
पाँच—*(न०)* पाँच की संख्या। '५'। *(वि०)* चार और एक।
पांचजन्य—*(न०)* श्रीकृष्ण का शंख जो पंचजन राक्षस की हड्डी से बना था।
पांचणा—*(न०)* बलि दिये हुए बकरे का सिर और चारों पाँवों के समूह का नाम।
पाँचपसाव—*(न०)* चारण, भाट आदि को दिया जाने वाला पाँच वस्तुओं का इनाम, यथा—भूमि, घोड़ा, वस्त्र, आभूषण और नकद।
पाँचम—*(ना०)* पक्ष का पाँचवाँ दिन। **पंचमी तिथि। पाँचै।**

पाँचमो—*(वि०)* क्रम में चौथे के बाद आने वाला।

पाँचमो आरो—*(न०)* पंचम काळ। कलियुग। (जैन)

पाँच-बीसी—*(वि०)* एक सौ। '५×२०=१००'

पाँच-सात—*(वि०)* पाँच और सात के आसपास। थोड़े से।

पाँचा—*(न०)* १. बीसा से आधी या उतरती हुई 'दसा' और दसा से आधी या उतरती हुई 'पाँचा'—इस क्रम से उतरती बनियों की एक जाति। २. पाँच का पहाड़ा।

पांचाळी—*(ना०)* द्रौपदी।

पाँचाळो—*(वि०)* बलवान। शक्तिवान। **पाँचबाळो**।

पाँचूंसाख—*(न०)* हाथ।

पाँचै—दे० पाँचम।

पाँचो—*(न०)* १. पाँच का अंक, '५'। २. सौ वर्ष के सम्वत् की गणना में पाँचवाँ वर्ष। सदी का पाँचवाँ वर्ष।

पाँचोबाणियो—*(न०)* बनिये की एक जाति। पाँचा। दे० पाँचा १.

पाँजर—*(न०)* चड़स की लाव में लगाया जाने वाला और बैलों की गरदन पर रहने वाला लकड़ी का एक उपकरण (पंजाबी)।

पाँजरापोळ—दे० पींजरापोळ।

पाँजरो—दे० पींजरो।

पाँड—*(ना०)* १. गठरी। २. छाबड़ी। **ओडी**।

पाँडव—*(न०)* १. राजा पांडु के युद्धिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव नाम के पाँच पुत्र। २. पांडु का पुत्र। ३. घोड़ों का सईस।

पाँडियो—*(न०)* ब्राह्मणों की एक शाखा या उपाधि।

पांडीस—*(ना०)* १. तलवार। २. मुसलमान। ३. बादशाह। खड्गधारी।

पांडु—*(न०)* १. पांडवों का पिता। पांडु राजा। २. पीलिया रोग। ३. श्वेत रंग। ४. खड़िया मिट्टी।

पांडुरोग—*(न०)* एक रुधिर रोग। पीलिया।

पांडुलिपि—*(ना०)* १. किसी ग्रंथ की हस्तलिपि। **खरड़ो**। २. हस्तलिखित ग्रंथ। ३. हाथ से लिखकर संपादन किया गया ग्रंथ या निबंध। ४. मसविदा। ५. छपने के पहले हाथ से लिखा हुआ लेख या ग्रंथ।

पाँत—*(ना०)* १. भोजन करने वालों की पँक्ति। २. पँक्ति। **हार। पंगत।** *(अव्य०)* १. द्वारा। से। २. अपेक्षाकृत। बनिस्बत।

पाँतर—*(अव्य०)* से। बनिस्बत। अपेक्षाकृत। तुलना में।

पाँतरणो—*(क्रि०)* १. याद न रहना। भूलना। भूल जाना। २. याद न रखना। ३. गलती करना या होना। ४. धोखे में आना। ५. खो देना। ६. मूर्खता करना। ७. सठिया जाना। ८. विश्वास करना।

पाँतरियोड़ो—*(न०)* १. भूला हुआ। भटका हुआ।

पाँतरो—*(न०)* भूलने का भाव। विस्मरण। भूल।

पाँतियो—*(न०)* भोजन करने वालों की पँक्ति के लिए बिछायी जाने वाली लंबी रेजी। पँक्ति के लिए पूरी रेजी (खादी) का लंबा आसन।

पाँती—*(ना०)* १. भाग। हिस्सा। २. भागीदारी। ३. पक्ष। बाजू।

पाँतीदार—*(न०)* भागीदार। हिस्सेदार।

पाँतीवार—*(वि०)* हिस्सेवार।

पाँतो—दे० पाँतियो।

पाँतोटो—दे० पाँतियो।

पाँत्यो—दे० पाँतियो।

पाँथू—*(न०)* १. आश्रित। २. चारण। ३. मंगत।

पाँदड़ो—*(न०)* पत्ता। पान।

पाँपण—*(ना०)* आँख की पलक।

पाँपणी—दे० पाँपण।

पाँपळा—*(न० व० व०)* १. जान-बूझकर की जाने वाली टालमटोल। आनाकानी। बहाने। हीले। २. दुर्बल प्रयत्न। ३. सुस्ती। ४. अकर्मण्यता।

पाँपळो—*(वि०)* पाँपळा करने वाला।

पाँभड़ी—*(ना०)* जूता। **पगरखी।**

पाँभरी—दे० पामरी।

पाँव—*(न०)* पैर।

पाँवड़ो—*(न०)* कदम। डग।

पाँवणासारी—*(ना०)* आतिथ्य। अतिथि सत्कार। पहुनाई। खातिरदारी।

पाँवणो—*(न०)* १. पाहुना। अतिथि। २. दामाद। **जमाई।**

पाँवणो-पही—*(न०)* १. मेहमान। पाहुना। अतिथि। २. पथिक-अतिथि।

पाँवपोस—*(न०)* दे० पायपोस।

पाँवरी—दे० पामरी।

पाँवाँधोक—*(ना०)* चरणस्पर्श। **पगे-लागणो।**

पाँस—*(न०)* १. धूरा। **उकरड़ो।** २. खात। खाद। **खातर।** ३. रेती। धूल। **वेकळू।** ४. फाँस। ५. खमीर।

पाँसू—दे० पाँह।

पाँह—*(ना०)* धूलि। रज। रेती। पांशु। **वेळू। वेकळू।**

पिआई—*(न०)* पशुओं को जलाशय से पानी निकालकर पिलाने का काम अथवा उसका पारिश्रमिक।

पिउ—*(न०)* पति। *(वि०)* प्रिय।

पिक—*(ना०)* कोयल।

पिककंठी—*(वि०)* कोयल के समान मधुर कंठ वाली।

पिकरो—*(न०)* जाटनियों और गवारनियों के पहिनने का कलीदार घाघरा। (जैसल०)

पिकवयणी—*(वि०)* कोयल के समान मधुर बोलने वाली।

पिकवल्लभ—*(न०)* आम का वृक्ष।

पिकसर—*(न०)* १. कोयल के समान मधुर स्वर। पिकसुर। पिकस्वर। २. कोयल का शब्द। *(वि०)* कोयल के समान मधुर कंठ वाली। कोकिल-कंठ। पिकवयणी।

पिघळणो—*(क्रि०)* १. गरमी से किसी ठोस वस्तु का गलकर पानी होना। पिघलना। ताप से द्रवीभूत होना। २. दया से आर्द्र होना।

पिघळाणो—दे० पिघळावणो।

पिघळावणो—*(क्रि०)* १. पिघलाना। ताप से द्रवीभूत करना। २. दया से आर्द्र करना। ३. तारीफ, खुशामद या चापलूसी करके किसी को वश में करना।

पिचक—*(अव्य०)* पीक थूकने का शब्द।

पिचकणो—*(क्रि०)* पिचकना।

पिचकारी—*(ना०)* पानी की धार छोड़ने का नली के आकार का एक साधन।

पिचड़ोतरसौ—*(न०)* पहाड़ो में बोली जाने वाली '१०५' की संख्या।

पिचरकी—दे० पिचकारी।

पिचंड—*(न०)* पेट। जठर।

पिचंतर—*(वि०)* सत्तर और पाँच। *(न०)* '७५' की संख्या।

पिचंतर सौ—*(न०)* पहाड़ों से बोली जाने वाली '१७५' की संख्या।

पिचंतरो—*(न०)* संवत् का पचहत्तरवाँ वर्ष।

पिचियासियो—*(न०)* संवत् का ८५वाँ वर्ष।

पिचियासी—*(वि०)* अस्सी और पाँच। *(न०)* '८५' की संख्या।

पिचु—*(न०)* १. करील का। २. करील का पका हुआ फल। **ढालू। ढेलू।**

पिचुळ—*(न०)* झाऊ का वृक्ष।

पिच्छु—दे० पिछयुं।

पिछम—*(ना०)* पश्चिम।

पिछमाण—*(ना०)* १. पश्चिम दिशा। २. पश्चिम देश।

पिछमाद—दे० पिछमाण।

पिछलग्गू—*(वि०)* १. पीछे चलने वाला। २. पीछे लगा हुआ।

पिछलो—दे० पाछलो।

पिछवाई—*(ना०)* १. ठाकुरजी की मूर्ति के पीछे लगाया जाने वाला परदा। २. सेना के पिछले भाग का रक्षा करने का काम। **पछवाई।**

पिछाड़ी—*(ना०)* १. घोड़े के पिछले पाँव में बाँधी जाने वाली लंबी रस्सी। २. पिछला भाग। *(वि०)* पीछे की ओर का। **पछाड़ी।**

पिछाण—*(ना०)* पहिचान। परिचय। **ओळखाण।**

पिछाणणो—*(क्रि०)* पहचानना। परिचय होना। **ओळखणो।**

पिछियुं—दे० पिछ्युं।

पिछोकणो—*(न०)* पछवाड़ा। पीछे का भाग।

पिछोड़ी—दे० पछेड़ी।

पिछोवड़ी—दे० पछेड़ी।

पिछ्युं—*(ना०)* १. व्यंजन के ऊपर मुड़कर पीछे की ओर जाने वाली 'इ' की मात्रा 'ि'। ह्रस्व 'इ' की मात्रा। २. बाराखड़ी (बारह-अक्षरी) सिखाते समय ह्रस्व 'इ' की मात्रा का कराया जाने वाला उच्चारण।

पिटणो—*(क्रि०)* पिटना। पीटा जाना।

पिटल—*(न०)* १. एक कृषक जाति। २. पटेल।

पिटाई—*(ना०)* मारपीट।

पिटारी—*(ना०)* छबड़ी।

पिटारो—*(न०)* छबड़ा।

पिट्ठू—*(न०)* १. सहायक। पिट्ठू। हिमायती। २. खुशामदी।

पिड़—*(न०)* १. युद्ध। २. रणक्षेत्र।

पिड़घी—*(ना०)* बरतन के तल में लगी हुई गोलाकार चूड़ी जिसके सहारे बरतन टिका रहता है।

पिड़ि—*(अव्य०)* १. मानो। गोया। २. युद्ध में। ३. युद्ध का। *(ना०)* पेड़ी। *(न०)* पेड़ का तना।

पिण—दे० पण १, २, ३, ४. *(अव्य०)*

पिणघट—दे० पणघट।

पिणियारी—*(ना०)* १. पनिहारिन। २. वर्षा ऋतु का एक लोकगीत। ३. झींगुर। **तिंबरी।**

पित्त—*(न०)* १. शरीर के अन्दर की तीन धातुओं (वात, पित्त और कफ) में से एक। २. यकृत (जिगर) में बनने वाला और आहार को पचाने वाला एक रस। पित्त। ३. क्रोध। ४. पिता।

पितकाळी—*(ना०)* मिर्च।

पितपापड़ो—*(न०)* पलाश वृक्ष की फली। **पलाशपापड़ो। खाखरा री फळी।**

पितर—*(न०)* १. पितृ। २. मृत पूर्वज। ३. स्वर्गस्थ पितृदेवता। **पितरजी।** ४. पितृ-पितामह। दादा-परदादा। पूर्वज।

पितरजी—*(न०)* पितृदेवता।

पितर पख—*(न०)* आश्विन मास का कृष्ण-पक्ष। पितृपक्ष। श्राद्ध-पक्ष।

पितरपति—*(न०)* यमराज।

पितराई—*(न०)* बाप या दादा के वंशज। *(वि०)* पितृ संबंधी। बाप संबंधी।

पितराणी—*(ना०)* स्वर्गस्थ मातृका।

पितरीमेळो—*(न०)* पितृत्व प्राप्त करने का सपिंडी श्राद्ध।

पितरेसर—दे० पित्रेसर।

पितवाण—*(ना०)* १. परीक्षा। **जाँच। पारख।** २. भरोसा।

पितवाणो—*(क्रि०)* १. परीक्षा करवाना। २. भरोसा करना।

पितवाणणो—*(क्रि०)* परीक्षा करना। जाँचना।

पिता—*(न०)* १. जनक। **बाप।** २. परमेश्वर।

पिताजी—*(न०)* बाप (मानार्थ) **बापजी।**

पितामह—*(न०)* १. दादा। **दादो**। २. भीष्म पितामह। ३. शिव। ४. ब्रह्मा।

पितामही—*(ना०)* पिता की माता। **दादी**।

पिताश्री—*(न०)* बाप (मानार्थ)।

पितृ—*(न०)* १. समस्त जीवों के आदि पूर्वज। पितृ देवता। २. मृत पूर्वज। **पितर**। ३. **बाप**। पिता। ४. माता-पिता। **मा-बाप**।

पितृ तर्पण—*(न०)* पितरों को दी जाने वाली जलांजलि। पितृयज्ञ।

पितृतीर्थ—*(न०)* गया तीर्थ, जहाँ पितरों को पिंडदान किया जाता है।

पितृपक्ष—*(न०)* १. श्राद्धपक्ष। आश्विन कृष्णपक्ष। २. कुटुम्बी।

पितोर—*(न०)* १. तरकारी। २. बेसन से बनने वाला एक व्यंजन। **पटींदड़ी**।

पित्त—दे० पित सं० १, २, ३.

पित्ती—*(ना०)* एक चर्मरोग।

पित्री—*(न०)* मृत्युप्राप्त पूर्वज। **पितर**।

पित्रेसर—*(न०)* परलोकवासी पूर्वज।

पिथ—*(न०)* पृथ्वीराज राठौड़ का संक्षिप्त नाम।

पिथक—दे० पृथक।

पिथि—*(ना०)* पृथ्वी।

पिथोरो—*(न०)* १. अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान का साहित्यिक नाम। पिथौरा। २. सम्राट पृथ्वीराज के कुछ वंशजों की उपाधि।

पिदणो—*(क्रि०)* हैरान होना।

पिदर—*(न०)* पिता। बाप। पितृ।

पिदाणो—दे० पिदावणो।

पिदावणो—*(क्रि०)* १. पिदाना। ललचाना। २. हैरान करना। दिक करना। ३. कांख में हाथ डालकर दूसरे हाथ को ऊपर नीचे कर, ध्वनि पैदा करना। ४. थकाना।

पिद्दो—*(ना०)* एक छोटी चिड़िया।

पिधान—*(ना०)* म्यान। तलवार का कोश।

पिन—*(ना०)* आलपीन।

पिनक—*(ना०)* अफीम के नशे का झोंका।

पिनकी—*(वि०)* अफीमची।

पिनाक—*(न०)* शिवधनुष।

पिनाकी—*(न०)* महादेव।

पिनारो—दे० पींजारो।

पिन्नस—*(ना०)* पालकी।

पिपासु—*(वि०)* १. पीने का इच्छुक। २. प्यासा। तृषित। ३. लालची।

पिय—*(न०)* १. पति। स्वामी। २. प्रियतम। *(वि०)* १. प्रिय। २. प्रियतम।

पियर—दे० पीहर।

पिया—*(न०)* पति। कान्त। *(ना०)* प्रियतमा। पत्नी। *(वि०)* प्रिय। प्रीतम। प्रियतम।

पियाज—दे० प्याज।

पियादो—दे० प्यादो।

पियार—दे० प्यार।

पियारी—दे० प्यारी।

पियारो—दे० प्यारो।

पियाळ—*(न०)* पाताल।

पियालो—दे० प्यालो।

पियास—दे० प्यास।

पियासो—दे० प्यासो।

पियु—*(न०)* १. पति। २. चातक के बोलने की ध्वनि।

पियेण—*(अव्य०)* १. पति के लिए। २ पीने के लिये।

पियोड़ो—*(भू० कृ०)* पिया हुआ।

पिरगी—दे० परगी।

पिरजापत—*(न०)* १. कुम्हार। २. ब्रह्मा। प्रजापति।

पिरथी—*(ना०)* पृथ्वी। धरा। भूमि।

पिरथी-परळो—*(न०)* पृथ्वीप्रलय। प्रलय।

पिरसूं—दे० परसूं।

पिराग—दे० प्रयाग।

पिरोजसाही—*(न०)* १. फिरोजशाही रुपया। २. फिरोजशाही शासन। *(वि०)* फिरोजशाह का। फिरोजशाह संबंधी।

पिरोजी—*(वि०)* १. पिरोजी रंग का। २. पिरोजा संबंधी। *(न०)* फिरोजशाही सिक्का। फिरोजी रुपया।

पिरोजी नाणो—*(न०)* १. फिरोजशाही सिक्का। २. फिरोजशाही रुपया या स्वर्ण-मुद्रा।

पिरोजो—*(न०)* एक रत्न। पीरोजा।

पिरोणो—*(क्रि०)* पिरोने का काम। *(वि०)* पिरोना। **पोवणो।**

पिरोयत—दे० पुरोहित।

पिरोळ—दे० पोळ।

पिलंग—*(न०)* १. पलंग। **ढोलियो।** २. शिकारी कुत्ता।

पिलंड—*(न०)* साँप।

पिलपिलो—*(वि०)* १. नरम। २. गीला।

पिलाण—दे० पलाण।

पिलाणणो—दे० पलाणणो।

पिलाणो—*(क्रि०)* पिलाना।

पिव—दे० पिउ।

पिशाच—*(न०)* १. भूत। प्रेत। २. दुष्ट मनुष्य। ३. पैशाची भाषा।

पिशाचिनी—*(ना०)* १. भूतनी। २. दुष्टा।

पिसण—*(न०)* शत्रु। *(वि०)* १. पिशुन। चुगलखोर। २. नीच।

पिसणखोर—*(वि०)* १. चुगलखोर। २. शत्रुसंहारक।

पिसणो—*(क्रि०)* १. पीसा जाना। २. सताया जाना।

पिसताणो—*(क्रि०)* पछताना।

पिसताळी—*(वि०)* चालीस और पाँच। पैंतालीसा। *(न०)* पैंतालीस की संख्या। '४५'।

पिसताळो—*(न०)* सदी का पैंतालीसवाँ वर्ष।

पिसतोल—दे० पिस्तोल।

पिसर—*(न०)* पुत्र। **बेटो।**

पिसवाणो—*(क्रि०)* पीसने का काम करवाना। **पिसवाना।**

पिसाई—*(ना०)* १. पीसने की क्रिया। २. पीसने की मजदूरी। ३. पीसने का व्यवसाय।

पिसाच—दे० पिशाच।

पिसाचणी—दे० पिशाचिनी।

पिसाणो—दे० पिसवाणो।

पिसाब—*(न०)* पेशाब। मूत्र। **मूत।**

पिसारी—*(वि०)* पीसने का काम करने वाली। पीसनेवाली। **पीसणारी।**

पिसारो—*(वि०)* पीसने का काम करने वाला। पीसनेवाला।

पिसावणो—*(क्रि०)* दे० पिसवाणो।

पिसित—*(न०)* मांस। आमिष।

पिस्ताळी—दे० पिस्ताळीस।

पिस्ताळीस—*(वि०)* चालीस और पाँच। *(न०)* '४५' की संख्या।

पिस्तावणो—*(क्रि०)* पश्चाताप करना। पछताना। **पछतावणो।**

पिस्तावो—*(न०)* पश्चाताप। पछतावा। **पछतावो।**

पिस्तो—*(न०)* एक मेवा। पिस्ता।

पिस्तोल—*(ना०)* छोटी बंदूक। तमंचा।

पिस्सू—*(न०)* एक प्रकार का मच्छर।

पिंगळ—*(न०)* १. पिंगल। छंदशास्त्र। २. अत्यन्त विस्तार। ३. राजस्थानी और व्रज मिश्रित भाषा। ४. पीतल। ५. बंदर। ६. नेवला। ७. पिंगल मुनि। ८. उल्लू पक्षी। ९. बादल। १०. सूर्य। ११. शनि। *(वि०)* पीला।

पिंगळा—*(ना०)* १. हठयोग में मानी हुई (इडा, पिंगळा और सुषुम्ना) तीन प्रधान नाड़ियों में से एक। २. लक्ष्मी। ३. एक पीले रंग की चिड़िया। ४. भर्तृहरि की रानी। ५. एक वेश्या का नाम।

पिंजड़ो—दे० पींजरो।

पिंजर—*(न०)* १. शरीर। २. पिंजरा। ३. अस्थिपिंजर। **पंजर।**

पिंजस—*(ना०)* एक प्रकार की पालकी।

पिंजारण—दे० पींजारण।

पिंजारी—दे० पींजारी।

पिंजारो—दे० पींजारो ।

पिंजूस—*(न०)* कान । कर्ण ।

पिंड—*(न०)* १. शरीर। देह। २. श्राद्धादि प्रेत क्रिया में पितृवर्ग को अर्पण किया जाने वाला आटे का लौंदा। ३. मांस का लौंदा। ४. ढेला । ५. ढेर। ६. ठोस गोला। ७. मंडल । ८. पीछा । **लारो ।**

पिंड खजूर—*(ना०)* एक प्रकार की बढ़िया खजूर ।

पिंडज—*(न०)* पुत्र । **बेटो ।**

पिंडत—दे० पंडित ।

पिंडताणी—दे० पंडिताणी ।

पिंडदान—*(न०)* पितरों को पिंड देने का काम। श्राद्धादि मृतक कर्म जिसमें पितरों को पिण्ड दिया जाता है ।

पिंडपाळ—*(वि०)* १. अपने शरीर की रक्षा करने वाला। २. स्वार्थी ।

पिंडबळी—*(वि०)* बलवान ।

पिंडर—*(वि०)* १. सफेद । २. फीका। ३. पीला ।

पिंडरू—*(न०)* (अमुक समय तक पालन किया जाने वाला) प्रसूति अशौच । प्रसव अशौच । २. सगोत्री को लगने वाला प्रसव सूतक ।

पिंडरोग—*(न०)* १. शरीर में घर किया हुआ रोग । २. पांडु रोग ।

पिंडली—*(ना०)* घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग । **पींडी । पिंडरी । फिल्ली ।**

पिंडवड़ियो—*(न०)* पिंडवड़ी करने वाला ।

पिंडवड़ी—*(ना०)* १. स्वयं के द्वारा किया हुआ परिश्रम । खुद की की हुई मजदूरी । **जात महनत ।** २. परिश्रम द्वारा दी जाने वाली पारस्परिक सहायता । परस्पर की शारीरिक मदद ।

पिंडाण—*(अव्य०)* १. शरीर के अलग-अलग भाग । २. अंग प्रतिअंग । *(न०)* शरीर ।

पिंडार—*(न०)* १. ग्वाला । २. ग्वालबाल । ३. साधु । ४. भिखारी । ५. लुटेरा ।

पिंडारण—*(ना०)* १. ग्वालिन । २. भिखारिन । ३. पिंडार की पत्नी ।

पिंडारियो—*(ना०)* १. ग्वाला । अहीर । २. लुटेरा । ३. चोर । ४. कंडों को चुनकर लगाया हुआ ढेर । **पींढारो ।** ५. पिंडारी जाति का व्यक्ति ।

पिंडारी—*(ना०)* दक्षिण की एक मुसलमान लुटेरी जाति ।

पिंडारो—दे० पिंडार ।

पिंडाळो—दे० पींढारो ।

पिंडां—*(अव्य०)* आप, तुम और वे के स्थान पर किया जाने वाला आदरसूचक प्रयोग । आप । श्रीमान ।

पिंडी—*(ना०)* १. शिवलिंग । २. पिंडली । फिल्ली । **पींडो ।**

पिंडे—*(सर्व०)* स्वयं । खुद । *(अव्य०)* १. आपने । २. खुद ने ।

पिंडोपिंड—दे० पंडोपंड ।

पी—*(ना०)* सीटी । **पीपी ।** *(न०)* १. सोना । २. लोहा । ३. प्रीतम । पति ।

पीअणजहर—*(न०)* महादेव ।

पीक—*(ना०)* १. गरज । प्रयोजन । २. इच्छा । ३. थूक । राल । ४. थूक में मिला पान का रस । ५. पान की थूक । ६. आवश्यकता ।

पीकणी—*(ना०)* १. पीकदान । २. बार-बार थूकने का रोग । **थूकणी ।** ३. इच्छा ।

पीकणो—*(क्रि०)* १. थूकना । २. इच्छा करना ।

पीकदान—दे० पीकदानी ।

पीकदानो—*(ना०)* पीक थूकने का पात्र । **ओगाळदान । थूकदाणी ।**

पीघळणो—*(क्रि०)* १. पिघलना । द्रवीभूत होना । २. दयार्द्र होना ।

पीच—*(न०)* १. पीचके पर पशुओं को पानी पिलाने का धंधा । **पेजाई ।** २. पशुओं को पानी पिलाने का एवजाना । ३. पीचके पर लगी पानी पीने वाले पशुओं की भीड़ ।

पीचको—दे० पेजको ।

पीचू—*(न०)* कैर का पका हुआ लाल रंग का फल। **ढालू। ढेलू।**

पीचो—*(न०)* एक चिड़िया। बुलबुल।

पीचोलो—*(न०)* उदयपुर का एक सुंदर और इतिहासप्रसिद्ध बड़ा सरोवर।

पीछ—*(न०)* १. पर्दा। २. पूंछ।

पीछी—*(ना०)* रंग भरने की कूंची। चित्र बनाने की कलम।

पीछे—*(अव्य०)* १. पीठ की ओर। २. अनंतर। ३. अंत में। ४. मर जाने पर। ५. किसी की अनुपस्थिति में। ६. कारण। ७. वास्ते। लिये।

पीछेहट—*(ना०)* १. पीछे हटने का भाव। २. हार।

पीछो—*(न०)* १. पीछा करने की क्रिया। २. पीछे लगे रहना। **पिछलगी। केड़ो।** ३. किसी मकान के पीछे का विस्तार। ४. पीछे का भाग। **पूठ।**

पीछोलो—दे० पीचोलो।

पीट—*(ना०)* प्रहार, चोट।

पीटणी—*(ना०)* १. मृतक के पीछे स्त्रियों द्वारा रोते हुए छाती पीटने की क्रिया या भाव। २. मार। मारपीट।

पीटणीपड़ियो—*(मुहा०)* १. जिसके लिये पीटणी (मर जाने से रोना-छाती कूटना) पड़ गई हो (तिरस्कार में)। २. जीवित ही मरे समान। **मूंओ।** (स्त्रियों की एक गाली)।

पीटणो—*(क्रि०)* १. मारना। पीटना। २. चोट मारना। ठोंकना।

पीटोकड़—*(वि०)* १. मुफ्तिया। मुफ्तखोर। २. अव्वल कंजूस। ३. ढीठ। ४. निर्लज्ज।

पीठ—*(ना०)* १. किसी प्राणी का गरदन से लेकर कमर तक का पीछे का भाग। पृष्ठ। २. किसी वस्तु के पीछे का भाग। ३. नगर विशेष की वह स्थिति जहाँ व्यापार और आवश्यकता की सभी वस्तुओं की अत्यधिक आयात होकर खूब क्रय-विक्रय होती हो। ४. दुकान पर होने वाली ग्राहकों की भीड़। ५. मदद। सहायता। ६. आधार। सहारा। ७. पीढ़ा। ८. आसन। ९. वेदी। १०. देव, आचार्यादिक का स्थानक या आसन। ११. जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित शारदापीठ, गोवर्धनपीठ, आदि चारों दिशाओं में के चार मठ। १२. शक्तिपीठ। १३. व्रतधारियों का आसन। १४. विद्यापीठ। १५. कपड़े की मजबूती।

पीठ ठोकणी—*(मुहा०)* १. शाबासी देना। २. प्रोत्साहित करना। ३. अभिनंदन देना।

पीठड़—*(न०)* भाला राजपूत या इस वंश की शाखा।

पीठड़ी—*(ना०)* आँख की एक दवा।

पीठ देणो—*(मुहा०)* भाग जाना।

पीठबळ—*(न०)* पीछे रहकर सहायता करने वालों की शक्ति।

पीठ राखणो—*(मुहा०)* मदद करना।

पीठाण—*(ना०)* १. युद्धभूमि। २. युद्ध।

पीठिका—*(ना०)* १. मंदिर में स्थापित मूर्ति की बैठक या चौकी। २. खंभे का आधार। ३. आसन। **बाजोट।** ४. वंशावली। ५. पुस्तक की भूमिका। ६. पुस्तक का अध्याय। खंड। प्रकरण।

पीठी—*(ना०)* १. विवाह के समय वर-कन्या को किया जाने वाला एक सुगंधित उबटन। २. उबटन। ३. पीठी संबंधी लोक-गीत।

पीठो—*(न०)* १. शराब की दुकान। २. लकड़ी की दुकान। **लाटी।**

पीड़—*(ना०)* १. दर्द। वेदना। २. दुख। कष्ट।

पीड़णो—*(क्रि०)* दुख देना। पीड़ा पहुँचाना।

पीड़ा—*(ना०)* १. दर्द। वेदना। २. दुख। ३. बीमारी।

पीड़ाकारी—*(वि०)* दुखदायक। **पीड़क।**

पीढ—*(ना०)* छत पाटने की वह छोटी लकड़ी (बल्ली) जो भारी-मिहाळ (बीच का मोटा और दृढ़ पाट) और भींतिये पाट के बीच में रखी जाती है। (एक के पास दूसरी सटी हुई। ये संख्या में अनेक होती हैं)। **वळी**। **वळी**। *(वि०)* १. मुख्य। बड़ा। समझदार। **डाढोक**।

पीढियावळी—*(ना०)* १. वंशावली। २. पीढ़ियों का ग्रन्थ। **पीठीनामो**।

पीढियो—*(न०)* बैलगाड़ी का एक उपकरण।

पीढी—*(ना०)* १. विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ दिये हुए वंशानुक्रम की पुस्तक। **पीढियावळी**। २. वंशानुक्रम। वंश परंपरा। ३. बैठने की चौकी।

पीढो—*(न०)* निवार या मूंज आदि से बुनी हुई बैठने की कम ऊँची चौकी।

पीणो—*(क्रि०)* १. पीना। पान करना। २. (धूम्रपान) करना। ३. (बात या गाली को) सहन करना। ४. उपेक्षा करना। *(न०)* १. पेय। २. मरुभूमि का एक सांप जो रात के समय नींद में सोते हुए मनुष्य की छाती पर बैठकर उसका स्वास अपने में खींचता है और अपना विषैला स्वास मनुष्य में भर देता है, जिससे मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

पीत—*(ना०)* १. प्रीति। प्रेम। २. सिंचाई (खेत की)। ३. सिंचाई द्वारा उत्पन्न फसल। *(वि०)* १. पीले रंग का। **पीळो**। २. वह (बाड़ी) जिसमें सिंचाई होती हो। ३. पान किया हुआ।

पीतपट—*(न०)* पीतांबर।

पीतम—*(वि०)* प्रियतम। सबसे अधिक प्रिय। प्रीतम। *(न०)* स्वामी। पति। कांत।

पीतरंग—*(न०)* १. सोना। स्वर्ण। २. अमार। बाड़म। ३. पीला रंग। ४. क्रीड़ा।

पीतळ—*(न०)* तांबा और जसद के मिश्रण से बनी हुई एक मिश्र धातु। पीतल। *(वि०)* हलके स्वभाव का। ओछे स्वभाव वाला।

पीतळियो—*(न०)* पीतल का टोकना या हांडा। *(वि०)* पीतल का। पीतल का बना।

पीतवान—*(न०)* हाथी की दोनों आखों के बीच का स्थल।

पीता—*(ना०)* हलदी। **हळदर**।

पीतांबर—*(न०)* १. पूजा-पाठ के समय पहिना जाने वाला रेशमी अधोवस्त्र। २. पीला वस्त्र। ३. विष्णु।

पीतांबरधारी—*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु।

पीथ—*(न०)* १. सूर्य। २. जल। ३. अग्नि।

पीथड़—*(न०)* राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पीथळ—*(न०)* 'क्रिसन रुकमणी री वेलि' के कर्त्ता पृथ्वीराज राठौड़ का साहित्यिक नाम।

पीथळियो—*(न०)* पंवार वंश की शाखा का व्यक्ति।

पीथि—*(न०)* घोड़ा। अश्व।

पीधी—'पीधो' भूतकाल क्रिया का नारी रूप।

पीधेलो—*(वि०)* १. शराब पिया हुआ। शराब के नशे वाला। २. पिया हुआ।

पीधो—*(भू० क्रि०)* पान किया। पी लिया। (**पीणो या पीवणो** का भूतकाल रूप)

पीधोड़ो—दे० पीधेलो।

पीन—*(वि०)* १. स्थूल। २. पुष्ट।

पीनणो—दे० पींजणो।

पीनस—*(न०)* १. जुखाम। सर्दी। २. नाक का एक रोग।

पीप—*(ना०)* मवाद। पीब। रसी। *(न०)* १. लकड़ी या धातु का पानी आदि भरने का एक बरतन। २. ढोल के समान लंब गोलाकार, प्रवाही या धान भरने की कोठी।

पीपर—*(ना०)* एक लता की कली। एक तीक्ष्ण और पाचक औषधि।

पीपरामूळ—*(न०)* एक प्रसिद्ध औषधि। पीपर की जड़। **गंठोड़ा**।

पीपळ—*(न०)* पीपल नामक वृक्ष। अश्वत्थ। **पीपळी**।

पीपळपत्तो—*(न०)* १. स्त्रियों के कान का एक गहना। २. पीपल वृक्ष का पत्ता।

पीपळी—*(ना०)* १. पीपल का छोटा वृक्ष। २. छोटी जाति का एक पीपल वृक्ष। ३. एक राजस्थानी लोक-गीत।

पीपळो—*(न०)* तलवार का वह भाग जहाँ से वह मुड़ती है।

पीपाड़ो—*(न०)* गहलोत वंश की पीपाड़ा शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पीपावंशी—*(वि०)* भक्त पीपाजी के वंश का। *(न०)* १. पीपाजी का वंशज। २. दरजियों की एक जाति। ३. घरबारी साधुओं की एक जाति जो दरजी का काम करती है।

पीपी—*(ना०)* १. फूंक से बजाने की छोटी नली। २. सीटी। ह्विसल। ३. पीपल का फल। **पीपळियो**। ४. छोटा टिन।

पीपूड़ी—दे० पीपी सं० १. *(न०)* एक प्रकार का सर्प।

पीपो—*(न०)* १. डिब्बा। २. एक भक्त का नाम। पीपाजी।

पीय—*(न०)* १. पति। स्वामी। *(वि०)* प्रिय।

पीयत—*(वि०)* १. सिंचाई द्वार उत्पन्न (फसल)। **पीवल**। २. सिंचाई वाला (खेत)। ३. सिंचाई से संबंधित।

पीयर—दे० पीहर।

पीर—*(न०)* १. मुसलमानों का धर्मगुरु। २. फकीर। ३. रामदेवजी लोक देवता। रामसा पीर। ४. सिद्ध पुरुष। ५. पीड़। दर्द। ६. पीहर। मैका। ७. वृद्ध। बूढ़ा। ८. चालाक। ९. होशियार।

पीराण—*(न०)* १. प्राण। २. पीरों की जमात। पीर लोग।

पीरोजो—दे० पिरोजो।

पील—*(न०)* हाथी। *(ना०)* १. पीयत की भूमि। २. सहायता।

पीलखानो—*(न०)* हाथीखाना। हस्ती-शाला।

पीलजोत—*(ना०)* एक प्रकार की अनेक दीपकों वाली दीवट। **पीलसोज**।

पीलणो—*(क्रि०)* १. दो भारी पाटों के बीच में किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस या तेल निकल आये। २. कोल्हू में डालकर रस या तेल निकालना। पेरना। ३. कष्ट देना। सताना। ४. संहार करना। मारना।

पीलपायो—*(न०)* चारपाई के पाये के नीचे लकड़ी-पत्थर आदि का लगाया जाने वाला आधार।

पीलवण—दे० पीलवाण सं० १, २.

पीलवाण—*(ना०)* १. एक लता। २. जाल (पीलू) के वृक्षों का जंगल। पीलू अरण्य। ३. महावत। फीलवान।

पीलवान—*(न०)* महावत।

पीलसोज—दे० पीलजोत।

पीलसोत—दे० पीलजोत।

पीळा चावळ—*(न० व० व०)* केशर में रंगे हुए चावल जो विवाह के समय निमंत्रण रूप में भेजे जाते हैं।

पीळाणी—*(क्रि० भू० का०)* पीली हो गई।

पीळास—*(न०)* पीलापन।

पीळियो—*(न०)* एक रोग। पांडु रोग।

पीळी—*(ना०)* १. पीली मिट्टी। २. पीले रंग की गाय या घोड़ी। *(वि०)* पीले रंग की।

पीलू—*(न०)* १. जाल नामक वृक्ष का फल। **जाळिया**। २. जाल वृक्ष। ३. एक राग। ४. हाथी। ५. तीर। **बांण**।

पीळो—*(वि०)* १. हलदी के जैसे रंग वाला। पीला। पीत। २. कांतिहीन। *(न०)* १. पीला ओढ़ना। २. बच्चा (लड़का) प्रसव करने वाली जच्चा का एक लोक-गीत। ३. पीले रंग का बैल या घोड़ा।

पीव—*(न०)* पति । कान्त ।

पीवणियो—*(वि०)* १. पीने वाला २. शराबी ।

पीवणो—दे० पीणो ।

पीवर—*(न०)* स्त्री के माता-पिता का घर । पीहर । मायका । *(वि०)* बड़ा ।

पीवरियो—दे० पीवर ।

पीवल—दे० पीयल ।

पोस—*(ना०)* ताश के खेल में हारने वाले के जिम्मे पत्तों को फेंटने का काम । **पीसणो । दीप ।**

पीसणबाळी—दे०पीसणारी ।

पीसणारी—*(वि०)* पीसनेवाली ।

पीसणारो—दे० पीसणियो ।

पीसणियो—*(वि०)* पीसनेवाला ।

पीसणी—(ना०) ताश के पत्ते पीसकर बाँटने की बारी या क्रिया । दे० पीसणो ।

पीसणो—*(क्रि०)* १. पीसना । चूर्ण या शफूफ बनाना २. शोषण करना । *(न०)* १. पीसने का काम । २. नाज आदि पीसने की वस्तु । ३. ताश के पत्तों को पीसना और बाँटना । ४. किसी वस्तु को सिलबट्टे से रगड़ना ।

पीसाणो—दे० पीसावणो ।

पीसारी—*(वि०)* १. पीसनेवाली । २. दुखकारी ।

पीसारो—*(वि०)* १. पीसनेवाला । २. दीनदुखी । **दुखियारो ।**

पीसावणो—*(क्रि०)* १. पिसवाना । २.बहुत परिश्रम करवाना । ३. शोषण करवाना ।

पीसो—दे० पइसो ।

पीहर—*(न०)* पितृगृह । स्त्री के माता-पिता का घर । **पोहरियो ।**

पींखणो—*(क्रि०)* १. बिखेरना । २. टुकड़े कर-कर इधर-उधर डालना । ३. तोड़-तोड़कर टुकड़े करना । ४. हैरान करना । सताना ।

पींचणो—*(क्रि०)* १. दबाना २. हैरान करना ।

पींचो—दे० पीचो ।

पींजड़ो—*(न०)* पिंजरा ।

पींजण—*(न०)* १. पींजने का साधन । २. रूई, ऊन आदि पींजने की वस्तु । ३. पींजने का काम । ४. व्यर्थ की बातें । बकवाद ।

पींजणियो—*(वि०)* पींजने वाला ।

पींजणी—*(ना०)* १. रथ या बैलगाड़ी के पहिये का एक उपकरण । २. पींजने का काम । ३. पेंजनी ।

पींजणो—*(क्रि०)* १. रूई धुनना । पींजना । २. एक ही बात की बार-बार चर्चा करना । ३. बात को लंबी करना ।

पींजर—दे० पंजर ।

पींजरापोळ—*(ना०)* अशक्त, वृद्ध पशुओं को रखने का धर्मादास्थान । पशुशाला ।

पींजरो—*(न०)* पिंजरा ।

पींजस—*(ना०)* एक पालकी ।

पींजाई—दे० पींजामण ।

पींजाणो—*(क्रि०)* रूई को धुनवाना ।

पींजामण—*(ना०)* १. पींजने की मजदूरी । २. पींजने का काम ।

पींजारण—*(ना०)* १. पींजारे की स्त्री । २. पींजनेवाली ।

पींजारी—दे० पींजारण ।

पींजारो—*(न०)* रूई पींजनेवाला व्यक्ति । रूई धुनने का काम करने वाला । **पिनारो ।**

पींजावणो—दे० पींजाणो ।

पींडर झाँप—*(ना०)* दे० भैरू झाँप ।

पींडाढाळ—*(न०)* ऊँट ।

पींडार—*(न०)* ग्वाला ।

पींडारको—दे० पींडार । दे० पींढारो ।

पींडारो—दे० पींडार । दे० पींढारो ।

पींडी—*(ना०)* पिंडली । फिल्ली । **पिंडी ।**

पींडो—*(न०)* १. पशुओं के पिछले पैर के ऊपर का मांसल भाग । २. लौंदा । **लोथो ।**

पींढारो—*(न०)* थेपे हुए उपलों को चुनकर लगाया हुआ ढेर । थेपड़ियों का व्यवस्थित ढेर ।

पींदो—*(न०)* १. पेंदा । तला । **तळो** ।
पुकार—*(न०)* १. आवाज । २. फरियाद । नालिश । ३. प्रार्थना ।
पुकारणो—*(क्रि०)* १. आवाज देना । पुकारना । २. फरियाद करना । ३. प्रार्थना करना । ४. शिकायत करना ।
पुकारू—*(वि०)* १. प्रार्थी । २. फरियादी ।
पुख—दे० पुष्य ।
पुखतापो—*(न०)* १. वृद्धावस्था । २. दृढ़ता ।
पुखती—*(वि०)* वृद्धा । बुड्ढी । **पुगती** । *(ना०)* १. दृढ़ता । मजबूती । २. सशक्तता । ३. सहारा । **टेको** ।
पुखतेत—*(न०)* वृद्धावस्था । बुढ़ापा । *(वि०)* १. वृद्ध । २. बलवान । ३. बुद्धिमान । ४. विवेकी । ५. दृढ़ । मजबूत । ६. वीर ।
पुखतो—*(वि०)* १. वृद्ध । बुड्ढा । **पुगतो** । २. दृढ़ । मजबूत । **पुगतो** ।
पुख नखतर—*(न०)* पुष्य नक्षत्र । सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवाँ नक्षत्र ।
पुखराज—*(न०)* एक रत्न । पीतमणि ।
पुगतापण—*(न०)* वृद्धावस्था । **बुढ़ापो** ।
पुगतापणो—दे० पुगतापण ।
पुगतापो—*(न०)* वृद्धावस्था । बुढ़ापा । **बुढ़ापो** ।
पुगती—दे० पुखती ।
पुगतो—दे० पुखतो ।
पुगाणो—*(क्रि०)* १. पहुँचाना । २. भिजवाना । ३. पकड़वाना ।
पुगावणो—दे० पुगाणो ।
पुचकार—*(ना०)* १. चूमने का शब्द । २. आश्वासन ।
पुचकारणो—*(क्रि०)* १. होठों से मृदु ध्वनि करना । चुमकारना । **बुचकारणो** । २. प्रेम करना । चुमकार द्वारा प्रेम जताना । ३. आश्वासन देना । शांत करना ।
पुचकारो—*(न०)* १. चुमकारा । **बुचकारो** । पोतने का काम । **पोचारो** ।
पुछाणो—*(क्रि०)* १. मालूम करवाना । २. खोज खबर लिवाना । ३. तलाश करवाना । ४. जवाब मँगवाना ।
पुछावणो—दे० पुछाणो ।
पुजवाणो—*(क्रि०)* १. पूजा करवाना । २. पूजा का काम किसी दूसरे से करवाना । ३. अपना सम्मान करवाना ।
पुजाणो—*(क्रि०)* १. अपना सम्मान करवाना । २. पूजा करवाना ।
पुजापो—*(न०)* देवपूजा की सामग्री । पुजापा ।
पुजारण—*(ना०)* पूजा करने वाली । २. उपासिका ।
पुजारी—*(न०)* १. मंदिर में देवपूजा करने के लिये नियुक्त व्यक्ति । २. पूजा करने वाला । २. आराधक । उपासक ।
पुजावणो—दे० पुजाणो ।
पुट—*(न०)* १. कुल्हड़ में धातु या औषधि रखकर कपड़मिट्टी द्वारा बंध करने की प्रक्रिया । २. औषधि को सिद्ध करने (पकाने) के लिये दी जाने वाली आँच प्रक्रिया । ३. औषधि को भट्टी में देकर दी जाने वाली आँच । ४. किसी दवाई में जल या रस डालकर घोटने और सुखाने की क्रिया या भावना । ५. दोना । ६. आच्छादन । ढक्कन । ७. गिलाफ । ८. नगर । शहर । *(वि०)* उल्टा । औंधा । **ऊँधो** ।
पुटाळ—*(न०)* तलवार की मूठ का दोनों ओर का कोई ढलवाँ भाग ।
पुटियो—*(न०)* ऊपर पाँव करके सोने वाली एक चिड़िया ।
पुट्ठो—दे० पूठो ।
पुड़—*(न०)* १. सतह । पट । २. स्तर । परत । ३. मोड़ । तह । ४. नगारे या ढोल पर मढा जाने वाला चमड़ा । ५. चक्की के पाटों में से कोई एक पाट ।
पुड़छी—दे० पड़छी ।

पुड़दड़ी—दे० पड़दळी ।

पुड़ियो—*(न०)* १. छोटी चक्की (घटोलियो) के ऊपर का पाट । २. ढोल, नगाड़ा आदि चर्मवाद्यों पर मढ़ा हुआ चमड़ा ।

पुड़ी—*(ना०)* १. घी में तली हुई रोटी । पूरी । लुचुई । सोहारी । २. चक्की के ऊपर का पाट । ३. कागज को मोड़कर बनाया हुआ एक संपुट, जिसमें कोई वस्तु रखी गई हो । ४. कागज में बँधी हुई दवा की मात्रा । ५. ढोलक, ढोल, मृदंग आदि पर मढ़ा जाने वाला चमड़ा । ६. पिसा हुआ आटा गिरने का चक्की के चारों ओर का घेरा । **वाटी** ।

पुड़ीकी—*(ना०)* पुड़िया ।

पुड़ीको—*(न०)* १. कागज को मोड़कर बनाया गया वह संपुट, जिसमें कोई वस्तु रखी गई हो । पुड़ा । २. लग्न-पुड़ा । **पुड़ो** ।

पुड़ो—*(न०)* १. मालपुआ । पूआ । २. बड़ी पुड़िया । ३. हथेली में उठने वाला एक व्रण । ४. कुंकुम से भरी कागज की एक कोथली (पुड़ा) । कागज की कोथली में भरा कुंकुम (रोली) जो विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर काम में लाया जाता है । ५. चूतड़ ।

पुण—*(न०)* पुण्य । दे० पुनि ।

पुणग—दे० पुणंग ।

पुणच—दे० पणच । दे० पणछ ।

पुणचाळो—*(वि०)* बलवान । वीर । **पांचाळो**

पुणचियो—*(न०)* हाथ का एक गहना ।

पुणची—*(ना०)* हाथ का एक गहना । पोंहची ।

पुणचो—*(न०)* १. पोंहचा । कलाई के कुछ ऊपर का भाग । कोहनी के नीचे का भाग । २. कलाई ।

पुणछ—दे० पणछ ।

पुणणो—*(क्रि०)* १. कहना । २. बोलना । ३. जतलाना । ४. आज्ञा करना । ५. वर्णन करना । कथन करना ।

पुणयोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बोला हुआ । २. रचा हुआ । बनाया हुआ ।

पुणंग—*(ना०)* १. छोटी बूंद । २. वर्षा की बूंद । **छांट** । ३. जलकण । बूंद । **टीपो** ।

पुणि—*(अव्य०)* फिर । पुनः । पुनि ।

पुण्य—*(वि०)* १. पवित्र । शुद्ध । २. मंगलात्मक । *(न०)* १. सत्कर्म । २. धर्मकार्य । ३. दान । ४. परोपकार । ५. पुण्य काम का फल ।

पुण्यकर्म—*(न०)* वह कर्म जिसके करने से पुण्य होता है ।

पुण्यकाल—*(न०)* १. ग्रहण, संक्रांति आदि पर्वों में स्नान दानादि पुण्य काम करने का समय । पर्वकाल । २. पवित्र समय । ३. ब्राह्ममुहूर्त

पुण्यक्षेत्र—*(न०)* १. भारतवर्ष । आर्यावर्त । २. उत्तर भारत । ३. तीर्थस्थान ।

पुण्यजन—*(न०)* १. राक्षस । असुर । २. यक्ष । ३. पुण्यात्मा । पुण्यपुरुष ।

पुण्यतिथि—*(ना०)* १. एकादशी, अमावस्या तथा पूर्णमासी आदि कोई व्रत उपवास का दिन । २. पवित्र तिथि । शुभदिवस । ३. मृत्यु तिथि । मृत्यु की वार्षिक तिथि ।

पुण्यतोया—*(ना०)* गंगा । भागीरथी ।

पुण्यपुरुष—*(न०)* धर्मात्मा या पुण्यात्मा मनुष्य ।

पुण्यप्रताप—*(न०)* १. पुण्य का प्रताप और उसकी शक्ति । २. पुण्य का प्रभाव । ३. पुण्यशाली होने का परिणाम ।

पुण्यभूमि—*(न०)* १. आर्यावर्त । भारत देश । २. तीर्थ स्थान । ३. पवित्र स्थान ।

पुण्ययोग—दे० पुनजोग ।

पुण्यराशि—*(ना०)* १. महाराणा प्रताप का एक बिरुद । २. पुण्य का संचय । पुण्य का ढेर । *(वि०)* पुण्यवान ।

पुण्यवंत—*(वि०)* सुकृती । पुण्यवान ।

पुण्यवान—*(वि०)* १. पूर्वजन्म के सुकृत वाला। पुण्यशाली। २. भाग्यशाली। ३. दान-पुण्य वाला। धर्मिष्ठ। ४. उदार। दानी। ५. सद्गुणी।

पुण्यशाली—*(वि०)* १. श्रेष्ठ कर्मों वाला। २. पूर्वजन्म के सुकृत वाला। ३. पुण्यवान।

पुण्यश्लोक—*(वि०)* १. जिसके नामस्मरण से पुण्य की प्राप्ति हो। २. पवित्र चरित्र वाला। ३. पवित्र कीर्ति वाला। *(न०)* १. जनार्दन। विष्णु। २. युधिष्ठिर। ३. अर्जुन। ४. पवित्र पुरुष।

पुण्याई—*(ना०)* १. पुण्य कमाई। सुकृत। पुण्य कर्म। २. पुण्यकर्मों का फल। ३. पुण्य संचय। ४. पुण्य दशा। ५. धनसंपत्ति और परिवार।

पुण्यात्मा—*(न०)* १. पवित्र मन वाला। २. धर्मात्मा। ३. महात्मा। ४. अत्यन्त पुण्यवान। ५. पवित्र आत्मावाला। *(वि०)* १. पवित्र। शुद्ध। २. नेक। ३. पुण्यकर्मी। ४. पुण्य करने वाला।

पुण्यार्थ—*(वि०)* शुभ फल की भावना से किया जाने वाला। *(न०)* दान।

पुतर—दे० पुत्र।

पुतरी—दे० पुत्री।

पुतळी—दे० पूतळी।

पुताई—दे० पोताई।

पुत्त—*(न०)* पुत्र। पूत।

पुत्तिका—*(ना०)* १. तितली। २. मधुमक्खी। **मदमाखी**। ३. दीमक। **उदई**। ४. पुत्री।

पुत्र—*(न०)* बेटा। लड़का। **दीकरो। डीकरो।**

पुत्रकलत्र—*(न०)* पुत्र और पत्नी।

पुत्रवधू—*(ना०)* पुत्र की पत्नी। बहू। वहु।

पुत्री—*(ना०)* लड़की। बेटी। **दीकरी। डीकरी।**

पुत्रेष्टि यज्ञ—*(न०)* पुत्र प्राप्ति के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

पुदगळ—*(न०)* १. परमाणु। २. शरीर। पुद्गल। ३. आत्मा।

पुन—*(अव्य०)* फिर। पुनः। अनंतर। दे० पुण्य।

पुन अवतार—*(वि०)* १. पुण्यवान। पुण्यशाली। पुण्यात्मा। २. पुण्य के रूप में अवतरित। *(न०)* १. पुण्यात्मा पुरुष। २. महाराणा प्रताप का एक विरुद। पुण्य अवतार।

पुन जोग—*(न०)* पुण्यकर्मों के फल मिलने का समय। शुभ अवसर या योग।

पुन परवारणो—*(मुहा०)* १. पुण्यकर्मों का नाश होना। अशुभ कर्मों का उदय होना। २. कुटुम्ब को कलंकित करने वाली संतान का उत्पन्न होना।

पुन पोरसो—*(न०)* पुण्य पुंज।

पुन प्रताप—दे० पुण्य प्रताप।

पुनरपि—*(अव्य०)* फिर। फिर भी।

पुनरभव—दे० पुनर्भव।

पुनरासी—दे० पुण्यराशि।

पुनर्जन्म—*(न०)* मर करके फिर उत्पन्न होना।

पुनर्भव—*(न०)* १. नख। नाखून। २. पुनर्जन्म। दूसरा अवतार।

पुनर्लग्न—*(न०)* १. पुनर्विवाह। २. विधवा-विवाह। **नातरो। नातो।**

पुनर्विवाह—दे० पुनर्लग्न।

पुनवती—*(न०)* १. ध्वजा। २. पुण्यवती। **पुनवंती।**

पुनवंत—दे० पुण्यवान।

पुनवान—दे० पुण्यवान।

पुनवानी—दे० पुण्याई।

पुनह्-पुनह—*(अव्य०)* पुनः-पुनः। बार-बार।

पुनाँ जोग—*(न०)* पुण्यकर्मों के फलप्राप्ति का योग।

पुनि—*(अव्य०)* १. फिर। पुनः। २. दूसरी बार। ३. अनंतर।

पुनित—*(न०)* १. सूर्य। २. युधिष्ठिर। ३. धर्म। पुण्य। *(वि०)* जो पवित्र हो।

पुनियाई—दे० पुण्याई।
पुनीत—(वि०) पवित्र। शुद्ध। उत्तम।
पुन्न—दे० पुण्य।
पुन्न रेहा—(ना०) १. पुण्यरेखा। स्वर्ग। २. वीरगति। ३. पुण्य काम। ४. पुण्य का मार्ग।
पुन्य—दे० पुण्य।
पुन्यवंत—दे० पुण्यवंत।
पुन्यवान—दे० पुण्यवान।
पुन्याई—दे० पुण्याई।
पुन्यारथ—(न०) १. पुण्य का काम। पुण्यार्थ। २. दान।
पून्यु—(ना०) पूर्णमासी। पूनम।
पुफ—दे० पुष्प।
पुमाणो—दे० पोमावणो।
पुमाल—(न०) मनुष्य। पुरुष।
पुमावणो—दे० पोमावणो।
पुय—(न०) १. वरुण। २. जीवात्मा।
पुर—(न०) १. नगर। २. चरसा। मोट। पुरबट। **चड़स। कोस।** ३. लोक। भुवन। ४. किला। ५. देह। शरीर।
पुर अमर—(न०) स्वर्ग। **अमरापुर।**
पुरख—(न०) १. पुरुष। मनुष्य। २. पति। वर।
पुरखपुराण—दे० पुराणपुरुष।
पुरखोत्तम—दे० पुरुषोत्तम।
पुरजण—(न०) १. नगर वासी। २. गेहूँ के पौधे के साथ उग आने वाला पौधा। ३. एक सब्जी।
पुरजियो—(न०) १. कागज का टुकड़ा। २. चिट्ठी।
पुरजो—(न०) १. टुकड़ा। २. कागज का टुकड़ा। ३. मशीन का कोई भाग। ४. अवयव। अंश।
पुरजो-पुरजो—(अव्य०) १. टुकड़ा-टुकड़ा। छिन्न-भिन्न। २. अलग-अलग।
पुरजोर—(वि०) जोरदार। (अव्य०) पूरे जोर से।
पुरट—(न०) सोना। स्वर्ण।
पुरटपुरी—(ना०) लंकापुरी।
पुरण—(न०) १. ऊँट, घोड़ा आदि सवारी का पशु। परोहन। २. समुद्र। ३. गदहा। **गधो।**
पुरणाहुति—(ना०) १. यज्ञ की समाप्ति पर दी जाने वाली आहुति। २. काम की समाप्ति।
पुरणियो—(न०) गधा।
पुरत्राण—(न०) परकोटा।
पुरनारी—(न०) वेश्या।
पुरपाळ—(न०) नगर रक्षक।
पुरबिया—(न०) भारत के पूर्वभाग में रहने वाला व्यक्ति। पुरबिया। भैया। (न०) १. पूर्व देश में उत्पन्न। २. पूर्व से संबंधित।
पुरबीकम—(न०) बीकानेर नगर (बिकमपुर)।
पुर राउ—(न०) १. नगरपति। २. राजा।
पुरवाई—(वि०) पूर्व का। (न०) पूर्व दिशा की ओर का पवन। **परवाई।**
पुरवासी—(न०) पुरजन। शहर में रहने वाला मनुष्य। (वि०) शहर में रहने वाला। शहरी।
पुरश्चरण—(न०) १. अमुक मंत्र का सकाम जप। २. जितने अक्षरों का मंत्र हो उतने लाख जप करने की क्रिया व विधान। मंत्र-जप का एक विधान।
पुरस—(न०) १. एक नाप, जो खड़े होकर हाथ ऊँचे उठाने या दायें-बायें हाथ फैलाने के बराबर होता है। १२० अंगुल या साढ़े चार हाथ का नाप। २. पुरुष। ३. पति।
पुरसगारी—(ना०) परोसने का काम।
पुरसगारो—दे० परीसारो।
पुरसणियो—(वि०) परोसने वाला।
पुरसणो—(क्रि०) परोसना।
पुरसात—दे० पुरसातन।
पुरसातन—(न०) १. पुरुषार्थ। २. पुरुषत्व। ३. पराक्रम। शौर्य। ४. परिश्रम।
पुरसाथी—दे० पुरुषार्थी।

पुरसारथ—दे० पुरुषार्थ ।
पुरसारो—दे० पारेसो ।
पुरसीगारो—*(न०)* भोज्य सामग्री को परोसने का काम ।
पुरसोतम—दे० पुरुषोत्तम ।
पुरस्कार—*(न०)* १. मान । सम्मान । २. पारितोषिक । इनाम । ३. पारिश्रमिक ।
पुरंद—*(न०)* १. इन्द्र । पुरंदर । २. देवता । ३. नगर । ४. शिव । महादेव । ५. जेष्ठा नक्षत्र ।
पुरंदर—दे० पुरंद ।
पुरंदरा—*(ना०)* गंगा ।
पुरंध्री—*(ना०)* पति, पुत्र और कन्या वाली स्त्री ।
पुरा—*(अव्य०)* पूर्वकाल में । प्राचीन समय में । *(वि०)* पुराना । प्राचीन । *(ना०)* १. गंगा । २. पूर्व दिशा ।
पुराण—*(न०)* १. महर्षि वेदव्यास प्रणीत धर्म और इतिहास के (देवता और मनुष्यों के तत्संबंधी) अठारह महाग्रंथ अथवा इनमें से कोई एक । २. वेदव्यास प्रणीत अठारह धार्मिक आख्यान ग्रंथ । ३. अठारह की संख्या । ४. पुरुष की बहत्तर कलाओं में से एक । *(वि०)* प्राचीन ।
पुराण पुरुष—*(न०)* १. ईश्वर । २. श्रीकृष्ण ।
पुराणी—*(न०)* १. पुराणों की कथाएँ पढ़कर सुनाने वाला । २. पुराण रचने वाला व्यक्ति । *(वि०)* प्राचीन । **जूनी** ।
पुराणीक—*(वि०)* १. पुराणों का जानने वाला । २. पुराण संबंधी ।
पुराणो—*(वि०)* १. जो पहले हो गया, किंतु अभी नहीं हो । बीता हुआ । अतीत । २. सड़ा हुआ । ३. घिसा हुआ । ४. बहुत समय का होने से जो विकृत हो गया हो । जीर्ण । ५. खूब काम में लिया हुआ । ६. निकम्मा । ७. बहुत समय का । प्राचीन । **जूनो** । *(क्रि०)* १. पूरा करना । २. भराना ।
पुरातत्व—*(न०)* वह विद्या जिससे प्राचीन काल, विशेषतः पूर्व-इतिहास काल की वस्तुओं के आधार पर अज्ञात इतिहास की खोज की जाती है । आर्कियोलॉजी ।
पुरातन—*(वि०)* प्राचीन । **जूनो** । **पुरातम** । *(न०)* १. विष्णु । २. शिव । ३. पुरानी बात । **जूनी बात** ।
पुरातम—दे० पुरातन ।
पुरारि—*(न०)* शिव । महादेव । त्रिपुरारि ।
पुरावणो—*(क्रि०)* १. पूरा करना । २. भराना । **पुराणो** ।
पुरी—*(ना०)* १. नगरी । छोटा नगर । २. जगन्नाथपुरी । ३. संन्यासियों की एक उपाधि या शाखा । ४. इस नाम का दशनामी संन्यासी । ५. चंद्रमा ।
पुरीष—*(न०)* १. विष्टा । २. लीद । ३. गोबर । ४. नरक । ५. कचरा ।
पुरु—*(न०)* १. एक प्राचीन राजा जो नहुष के पौत्र थे । २. सिकंदर से लड़ने वाला पंजाब का राजा । ३. शरीर ।
पुरुष—*(न०)* १. नर । मनुष्य । **मिनख** । २. पति । **बर** । ३. आत्मा । ४. ईश्वर । ५. परब्रह्म । ६. एक नाप । **पुरस** । ७. सूर्य । ८. शिव ।
पुरुषार्थ—*(न०)* १. पुरुष के प्रयत्न का कार्य । २. पराक्रम । पौरुष । ३. उद्योग । परिश्रम । ४. पुंसत्व । ५. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये सभी अथवा इनमें से प्रत्येक । ६. पुरुष जन्म में साध्य करने योग्य अर्थ ।
पुरुषार्थी—*(वि०)* १. उद्योगी । परिश्रमी । २. सामर्थ्यवान । पराक्रमी ।
पुरुषोत्तम—*(न०)* १. पुरुषों में उत्तम । उत्तम पुरुष । २. विष्णु भगवान । ३. जगन्नाथपुरी का मंदिर । जगन्नाथ की मूर्ति । ४. रामचंद्र ।
पुरुषोत्तममास—*(न०)* अधिक मास । मल मास ।

पुरो—*(न०)* १. बस्ती। २. मोहल्ला। **वास।**

पुरोगति—*(न०)* १. कुत्ता। २. अग्रगामिता। *(वि०)* अग्रगामी।

पुरोडाश—*(न०)* १. यज्ञ के लिये बनाई जाने वाली जौ और चावलों की मोटी रोटी। २. यज्ञ से बची सामग्री। ३. हवि। ४. सोमरस।

पुरोहित—*(न०)* १. धार्मिक कृत्य कराने वाला ब्राह्मण। २. एक ब्राह्मण जाति। ३. ब्राह्मण जाति की एक अल्ल।

पुरोहिताई—*(ना०)* पुरोहित का काम।

पुरोहिताणी—*(ना०)* १. पुरोहित की पत्नी। २. पुरोहित जाति की स्त्री।

पुळ—*(न०)* पुल। सेतु।

पुळक—*(न०)* १. प्रेम, भय या हर्ष के कारण होने वाला रोमांच। २. हाथी का रातिब। ३. याकूत। चुन्नी।

पुळकणो—*(क्रि०)* १. पुलकित होना। हँसना।

पुलग—*(न०)* घोड़ा।

पुलटिस—*(न०)* फोड़ा-फुंसी को पकाने के लिये अलसी, आटे आदि की बनी हुई गरम लुगदी। **पोटिस।**

पुळणो—*(क्रि०)* १. भागना। दौड़ना। २. प्रस्थान करना। जाना। ३. नष्ट होना। ४. व्यतीत होना। गुजर जाना।

पुळपुळ—*(अव्य०)* पल-पल। बार-बार। *(न०)* १. शैतानी। २. शोर।

पुलंदो—*(न०)* १. कागज, कपड़े आदि से लपेटा हुआ मुट्ठा। पुलिंदा। २. पूला।

पुलाक—*(न०)* १. भात। २. पुलाव। ३. चावल का मांड। ४. धान की भूसी।

पुलाव—*(न०)* मांस के साथ बनाया हुआ चावलों का एक खाद्य। मांसोदन।

पुळावणो—*(क्रि०)* १. भगाना। दौड़ाना। २. कूच कराना। ३. नाश करना। मिटाना। ४. हटाना। हिलाना।

पुलित—*(न०)* १. घोड़ की एक चाल। २. छलांग। ३. उछलते हुए चलना। ४. स्वर का एक भेद जिसके उच्चारण में दीर्घ स्वर से अधिक समय लगता है और जिसकी तीन मात्राएँ होती हैं। प्लुत।

पुलिन—*(न०)* नदी तट। नदी का किनारा।

पुळियार—*(वि०)* भागने वाला। दौड़ने वाला। *(ना०)* भगदड़।

पुळियो—*(न०)* छोटा पुल।

पुलिस—*(ना०)* १. जनता के जानमाल की रक्षार्थ और शांति स्थापन के लिये सरकारी कर्मचारियों का एक वर्ग। २. इस वर्ग का एक व्यक्ति।

पुळो—*(न०)* घोड़े की एक चाल। **पोई।**

पुल्लिंग—*(न०)* १. पुरुष का चिह्न या लिंग। २. पुरुष जाति वाचक शब्द। नर जाति शब्द। ३. नर जाति।

पुव्व—*(न०)* १. पूर्व दिशा। **ऊगमण।** २. पूर्व।

पुश्त—*(ना०)* १. पृष्ठ भाग। पीठ। २. वंश परंपरा में कोई एक स्थान। **पीढी।**

पुष्कर—*(न०)* १. अजमेर के निकट एक बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध तीर्थ स्थान। यहाँ इसी नाम का एक बहुत सुंदर तालाब है, जिस पर अनेक घाट व मंदिर बने हुए हैं। सावित्री और ब्रह्माजी के मंदिर पर्वत-शिखर पर हैं। पुष्कर तीर्थों का गुरु कहलाता है। **पोकरजी।** २. हाथी की सूंड की नोक। ३. सरोवर। ४. जल। ५. नील कमल। ६. एक सर्प। ७. आकाश। ८. वायुमंडल। ९. तलवार की धार। १०. तीर। ११. एक द्वीप। १२. सूर्य। १३. युद्ध।

पुष्करणो—*(न०)* १. एक ब्राह्मण जाति। २. पुष्करणा जाति का व्यक्ति। **पोकरणो।**

पुष्करणी—*(ना०)* १. नदी। २. पुष्करणा जाति की स्त्री। ३. हस्थिनी। **हथणी।**

पुष्करनाभ—*(न०)* विष्णु।

पुष्करिणी—*(ना०)* १. हाथी की मादा। हथिनी। २. छोटा तालाब।

पुष्करी—*(न०)* १. हाथी। २. कमल सरोवर। ३. हथिनी।

पुष्कल—*(वि०)* बहुत। खूब। **घणो। पुसकळ।**

पुष्कलक—*(न०)* कस्तूरी मृग।

पुष्ट—*(वि०)* १. पोषण किया हुआ। २. मोटा-ताजा। बलिष्ठ। ३. दृढ़। मजबूत। **सेंठो।**

पुष्टि—*(ना०)* १. पोषण। २. बात का समर्थन। ३. उत्तेजन। प्रोत्साहन।

पुष्टिमार्ग—*(न०)* श्री वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव भक्ति मार्ग। वल्लभ सम्प्रदाय।

पुष्प—*(न०)* १. फूल। कुसुम। २. ग्रंथ का एक भाग। प्रकरण। ३. ऋतुमती स्त्री का रज। ४. गुह्येन्द्रिय का वह स्थान जहाँ से रज निकलता है। ५. गर्भांकुर। ६. आँख का फूला नामक रोग।

पुष्पक—*(न०)* कुबेर का विमान, जो रावण ने उससे छीन लिया था।

पुष्पकाळ—*(न०)* वसंत ऋतु।

पुष्पकीट—*(न०)* भौंरा।

पुष्पकेतु—*(न०)* कामदेव।

पुष्पचाप—*(न०)* १. कामदेव। २. कामदेव का धनुष।

पुष्परस—*(न०)* १. पराग। २. शहद।

पुष्पहार—*(न०)* फूलों की माला। पुष्पमाला।

पुष्पांजलि—*(ना०)* देवता अथवा पूज्य-पुरुष को अंजलि भरकर के दिया जाने वाला पुष्पार्घ्य।

पुष्पिका—*(ना०)* पुस्तक अथवा अध्याय के वे अंतिम शब्द जिनमें पुस्तक, लेखक, लिपिकार आदि के नामों के साथ विषय, संवत, मिती आदि का वर्णन किया हुआ रहता है।

पुष्य—*(न०)* १. आठवाँ नक्षत्र। २. पौष मास।

पुसकरजी—*(न०)* दे० पुष्कर।

पुसकरणो—दे० पुष्करणो।

पुसकरी—*(न०)* हाथी। पुष्करिन।

पुसकळ—दे० पुष्कल।

पुसप—*(न०)* पुष्प। फूल।

पुसब्ब—दे० पुसप।

पुसी—*(ना०)* हाथ की अंजलि। **चुचको।**

पुस्ट—दे० पुष्ट।

पुस्टाई—*(ना०)* १. पुष्टता। बलिष्ठता। तगड़ापन। २. बल। शक्ति। ताकत। ३. बल-वीर्य वर्द्धक या पुष्ट करने वाली औषधि। *(वि०)* पौष्टिक। पुष्टिकारक।

पुस्त—दे० पुश्त।

पुस्तक—*(ना०)* १. पोथी। ग्रंथ। २. घोड़े द्वारा पिछले दोनों पैरों से किया जाने वाला आघात।

पुस्तकालय—*(न०)* १. ग्रंथालय। ग्रंथ-भंडार।

पुस्तंग—*(न०)* १. घोड़े की जीन का पीछे वाला तंग। पुश्त तंग। २. घोड़े के पिछले पैरों का ऊपरी भाग। ३. घोड़े के पिछले पैरों में होने वाला रोग।

पुस्ती—*(न०)* १. नींव की मजबूती या पानी के रोक के लिये दीवार के सहारे की हुई चुनाई। पुश्ता। **पुस्तो।** २. मजबूती। ३. सहारा। पुश्ती। ४. पालन-पोषण।

पुस्तेनी—*(वि०)* १. वंशपरंपरा का। परंपरागत। २. पीढ़ियों तक चलने वाला।

पुस्तो—*(वि०)* १. मजबूत। दृढ़। पुश्ता। दे० पुस्ती। २. पुस्तक की जिल्द पर लगा चमड़ा या कपड़ा।

पुस्प—दे० पुष्प।

पुस्पदंत—*(न०)* १. वायुकोण का दिग्गज। २. एक प्रकार का नगरद्वार। ३. महिम्न-स्तोत्र का रचयिता भक्त कवि पुष्पदंत।

पुस्पपुर—(न०) पटना या पाटिलपुत्र का प्राचीन नाम पुष्पपुर।

पुह—(ना०) पृथ्वी।

पुहकर—(न०) १. आकाश। २. पुष्कर। ३. तालाब।

पुहगाळ—(न०) प्रातःकाल।

पुहड़णो—(क्रि०) १. असत्य होना। झूठा होना। २. कुलाचार के विरुद्ध बरतना। ३. विरुद्धाचरण करना।

पुहतणो—(क्रि०) पहुँचना।

पुहतो—(क्रि० भू० का०) पहुँच गया। पहुँचा।

पुहप—(न०) पुष्प। सुमन। कुसुम। **फूल**।

पुहपवती—(वि०) १. पुष्पवती। २. रजस्वला

पुहपंजळी—(ना०) पुष्पांजलि।

पुहमी—(ना०) पृथ्वी। **जमी**। **धरती**।

पुहवी—(ना०) पृथ्वी। **पिरथी**। **जमी**।

पुहवीधर—(न०) राजा।

पुहवीनाथ—(न०) राजा।

पुहवीस—(न०) राजा।

पुहुप—दे० पुहप।

पुहुमी—(ना०) पृथ्वी।

पुहुवी—(ना०) पृथ्वी। भूमि।

पुंख—(ना०) १. तीर का वह भाग जिसमें पंख लगे रहते हैं। २. दे० पूंख।

पुंगरण—(न०) १. वस्त्र। २. वस्त्राभूषण। ३. ओढ़ने का वस्त्र। ओढ़नी। ४. चोली।

पुंगव—(वि०) श्रेष्ठ। उत्तम। (न०) १. साँड़। २ बैल।

पुंगी—दे० पूंगी।

पुंगीफळ—(न०) सुपारी। पूगीफल। पूग।

पुंचिका—(न०) पोंहचे में पहिनने का एक आभूषण। पोंहची। **पुणची**।

पुंचियो—दे० पुणची।

पुंची—दे० पुणची।

पुंछ—दे० पूंछ।

पुंज—(न०) १. ढेर। राशि। **ढिग**। **ढिगली**। २. कचरा।

पुंजणी—(ना०) सोहनी। **बुहारी**। **सारमणी**।

पुंजणो—(क्रि०) कचरा निकालना। बुहारना। **बुहारणो**।

पुंजारो—(न०) मंदिर, महल आदि में झाड़ू लगाने वाला। बुहारने वाला।

पुंड—(न०) १. तिलक। २. सफेद कमल।

पुंडग—दे० पुणग।

पुंडरी—दे० पंडरी।

पुंडरीक—(न०) १. कमल। २. बाण। ३. अग्नि। ४. आकाश। ५. सफेद हाथी। ६. जलसर्प। पानी का साँप। ७. श्वेत सर्प। ८. सिंह। ९. श्वेत कुष्ट। १० भवन। ११. बादशाह। १२. एक परम भागवत राजा का नाम। १३. तिलक।

पुंडरीकाक्ष—(वि०) जिसके कमल के समान नेत्र हों। (न०) १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

पुंडरीकाख—दे० पुंडरीकाक्ष।

पुंतार—(न०) हाथी।

पुंलिग—दे० पुल्लिग।

पुंश्चली—(ना०) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

पुंसरस—(न०) दूध।

पुंसळी—दे० पुंश्चली।

पुंसवन—(न०) १. पुत्र, प्रजा उत्पन्न करने के लिये गर्भाधान से चौथे मास में किया जाने वाला संस्कार। सोलह संस्कारों में से एक संस्कार।

पुँहरी—(ना०) दुलहिन व सौभाग्यवती स्त्रियों के ओढ़ने की ओढ़नी। **पाँवरी**। **पामरी**।

पूग—(ना०) १. प्राप्तिसूचना। पहुँच। **पावती**। रसीद। २. किसी काम या बात को समझने या सलटाने की शक्ति। ३. समीप की गति। प्रवेश। ४. जानकारी का विस्तार। दौड़। ५. सुपारी।

पूगणो—*(क्रि०)* १. नियत समय जा पहुँचना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर उपस्थित होना। पहुँचना। ३. किसी वस्तु का एक सीमा तक विस्तृत होना। ४. घुसना। प्रवेश करना। ५. भेजी हुई वस्तु प्राप्त होना। ६. मर्म या भेद की बात को समझ सकना। ७. अनुभव में आना। ८. किसी विषय में किसी के बराबर जा पहुँचना।

पूगरण—दे० पुंगरण।

पूगळ—*(न०)* राजस्थान का वह मरुप्रदेश जहाँ पद्मिनियाँ उत्पन्न होती हैं। मारवणी की जन्मभूमि। २. पूगळ गाँव।

पूगळ पदमणी—*(ना०)* राजस्थान के विख्यात पूगळ नगर (या पूगळ प्रदेश) की पद्मिनी स्त्री।

पूछ—*(ना०)* १. पूछे जाने की क्रिया या भाव। २. मान-सम्मान। आदर। ३. समाज या कुटुंब में चलने वाला स्वअनुशासन। ४. खोज। तलाश। ५. हस्ती। सामर्थ्य। ६. आवश्यकता।

पूछगाछ—*(ना०)* १. किसी विषय की जानकारी के लिये इधर-उधर पूछने का काम। पूछताछ। २. पूछने की क्रिया।

पूछणो—*(क्रि०)* १. किसी बात को जानने के लिये सवाल करना। उत्तर माँगना। २. जिज्ञासा करना। ३. किसी की खोज-खबर लेना। ४. अनुसंधान करना। तपास करना। ५. सलाह लेना। ६. कदर करना। आदर करना।

पूछताछ—दे० पूछगाछ।

पूछापूछी—*(ना०)* बार-बार या उपरा-उपरी पूछने की क्रिया।

पूछावणो—*(क्रि०)* पुछवाना।

पूछियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. पूछा हुआ। २. ध्यान दिया हुआ। ३. आदर किया हुआ।

पूज—*(वि०)* पूज्य। पूजनीय। *(ना०)* १. विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर देवताओं को चढ़ाई जाने वाली भेंट। २. किसी कार्यसिद्धि के निमित्त किसी देवता को बोली हुई भेंट जो कार्य हो जाने पर उस देवता को अर्पित की जाती है। ३. पूजा। ४. नैवेद्य। ५. ढेर। पुंज। ६. बिंदी। अनुस्वार। **मींडी। सुन।** ७. झुंड। ८. देवता।

पूजक—*(वि०)* पूजा करने वाला।

पूज चढावणी—*(मुहा०)* किसी काम की सफलता के निमित्त संकल्प की हुई वस्तु (नैवेद्य आदि) को देवार्पण करना (भोग धरना)।

पूजणो—*(क्रि०)* १. ईश्वर, गुरु व माता-पिता की अर्चना-आराधना करना। २. सत्कार करना। आवभगत करना। पूजा करना। ३. पहुँचना। ४. प्राप्त करना।

पूजतो—*(वि०)* जितना चाहिये उतने परिमाण का। आवश्यकता-अनुसार माप या तोल का। जरूरत जितना। बराबर।

पूजन—*(न०)* देवी-देवता आदि की पूजा।

पूजनीक—*(वि०)* पूजने योग्य। पूज्य।

पूजनीय—*(वि०)* दे० पूजनीक।

पूज बोलणी—*(मुहा०)* किसी काम के सफलतापूर्वक हो जाने पर अपने इष्ट देवता को अमुक वस्तु (नैवेद्यादि) भेंट धरने का संकल्प करना।

पूजा—*(ना०)* १. पूजन। २. आराधना। ३. सत्कार। ४. पूजा की साधन-सामग्री। ५. मार। पिटाई। (व्यंग्य में)

पूजाणो—*(क्रि०)* १. सम्मान कराना। २. इच्छा पूर्ण करवाना। ३. पूजा जाना। आदर पाना।

पूजापाठ—*(न०)* देवपूजा और धर्मग्रंथ का पाठ। पूजाअर्चा। नित्यकर्म।

पूजापो—*(न०)* पूजा का सामान। पूजा की साधन-सामग्री। पूजोपस्कर।

पूजारण—*(ना०)* १. पूजा करने वाली स्त्री। २. पुजारी की पत्नी।

पूजारी—*(न०)* १. पूजा करने वाला पुरुष। २. मंदिर में पूजा करने को नियत पुरुष।

पूजावणो—*(क्रि०)* पूजा या सत्कार प्राप्त करना।

पूज्य—*(वि०)* १. पूजने योग्य। २. पूजनीय। मानवीय। *(न०)* माता-पिता, गुरु आदि पूज्य पुरुष। गुरुजन। **वडील।**

पूठ—*(ना०)* १. शरीर का पिछला भाग। पीठ। २. मकान-दुकान आदि के पीछे का भाग। ३. सहायता। *(अव्य०)* पीछे। बाद में।

पूठलो—*(वि०)* १. पीछे का। पिछला। २. पीछे से जन्मा हुआ। सबसे छोटा। ३. बाकी का। शेष।

पूठवाड़ो—*(न०)* मकान का पिछला भाग।

पूठाकड़ो—दे० पूठाड़ो।

पूठाड़ो—*(न०)* गड्ढ़। गठरी।

पूठाथी—*(क्रि० वि०)* १. पीछे से। अनुपस्थिति में। २. अंत में। पहले के बाद या सबसे पीछे।

पूठावणो—*(क्रि०)* पहिये में पूठी लगवाना।

पूठियो—*(न०)* १. लद्दू बैल। **पोठियो।** २. अंगरखा। ३. पीछे का भाग। ४. कुलाबा। ५. गाड़ी के पहिये की पूठी।

पूठी—*(ना०)* टुकड़ों में बने बैलगाड़ी के पहिये के घेरे का एक टुकड़ा। *(अव्य०)* पीछे। बाद में।

पूठीवाड़ो—दे० पूठवाड़ो।

पूठै—*(अव्य०)* पीछे। अनन्तर। बाद में।

पूठो—*(न०)* १. गत्ता। दफ्ती। २. लौटने की क्रिया। लौट। ३. पुट्ठा। चूतड़। ४. पुस्तक का आवरण भाग। ५. पीछे का भाग। पीछा। पीठ। *(अव्य०)* लौटकर। पीछा। वापिस।

पूठोतरो—*(वि०)* सबसे पीछे जनमा हुआ। सबसे छोटा।

पूड़लो—*(न०)* एक मिष्टान्न। मालपूआ। पूआ।

पूण—*(वि०)* तीन चौथाई। पूर्ण से चतुर्थांश कम। पौन।

पूण आनो—*(न०)* १. स्वराज्य के पहले रुपये के सोलह आनों (चौंसठ पैसों) के हिसाब से तीन पैसे। तीन पैसों की संज्ञा। ')।।।' २. तीन पैसों का चिह्न। ')।।।'

पूण करोड़—*(वि०)* एक करोड़ का पौन। पचहत्तर लाख। *(न०)* पूण करोड़ की संख्या। '७५०००००'

पूण जात—*(ना०)* समस्त जाति समुदाय। दे० **पवन जात।**

पूणणो—*(क्रि०)* १. बिता देना। खतम करना (धन का)। २. व्यर्थ खर्च करना। ३. नाश करना।

पूण रुपियो—*(न०)* (६४ पैसों के रुपये के हिसाब से) अड़तालीस पैसे। एक अठन्नी और एक चौअन्नी। २. पौन रुपये का चिह्न '।।।)' जो वर्तमान दशमलव प्रणाली के अनुसार पचहत्तर पैसों का होता है।

पूण लाख—*(वि०)* एक लाख का पौन। पचहत्तर हजार। *(न०)* पूण लाख की संख्या। '७५०००'

पूण सौ—*(वि०)* सौ का पौना। पचहत्तर।

पूण हजार—*(वि०)* हजार का पौन। सात सौ पचास। *(न०)* पूण हजार की संख्या। '७५०'

पूणा आठसौ—*(वि०)* पौने आठ सौ। सात सौ पचहत्तर। '७५७'

पूणा छः सौ—*(वि०)* पौने छः सौ। पाँच सौ पचहत्तर। '५७५'

पूणा तीन सौ—*(वि०)* पौने तीन सौ। दो सौ पचहत्तर। '२७५'

पूणा दस सौ—*(वि०)* पौने दस सौ। नौ सौ पचहत्तर। '९७५'

पूणा दोय सो—*(वि०)* पौने दो सौ। एक सौ पचहत्तर। '१७५'

पूणा नव सौ—*(वि०)* पौने नौ सौ। आठसौ पचहत्तर। '८७५'

पूणा पाँच सौ—*(वि०)* पौने पाँच सौ। चार सौ पचहत्तर। '४७५'

पूणा सात सौ—*(वि०)* पौने सात सौ। छः सौ पचहत्तर। '६७५'

पूणा सौ—*(वि०)* १. सौ में एक चौथाई कम। निनानबे और पौन। निनानबे और बारह आने। '९९।।।' (९९.७५) दे० पूण सौ।

पूणियो—*(वि०)* १. नामर्द। डरपोक। २. रंडुआ। *(न०)* छंद विशेष।

पूणी—*(ना०)* सूत कातने के लिये धुनी हुई रूई की बनाई हुई मोटी बत्ती। पूनी। *(वि०)* पौन। चौथाई।

पणी आठ आना—*(न० ब० व०)* पौने आठ आने। स्वराज्य पहले के ब्रिटिश चलन के ३१ पैसे। '।≡)।।।'

पणी इग्यारै आना—*(न० ब० व०)* पौने ग्यारह आने। ब्रिटिश समय के ४३ पैसे। '।।=)।।।'

पूणी ग्यारै आना—दे० पूणी इग्यारै आना।

पूणी चार आना—*(न० ब० व०)* पौने चार आने। पुराने पन्द्रह पैसे। '≡)।।।'

पूणी छः आना—*(न० ब० व०)* पौने छः आने। '।–)।।।' पुराने २३ पैसे।

पूणी तीन आना—*(न० ब० व०)* पौने तीन आने। '=)।।।' पुराने ग्यारह पैसे।

पूणी दस आना—*(न० ब० व०)* पौने दस आने। '।।–)।।।' पुराने ३९ पैसे।

पूणी दो आना—*(न० ब० व०)* पौने दो आने। '–)।।।' पुराने सात पैसे।

पूणी नव आना—*(न० ब० व०)* पौने नौ आने। '।।)।।।' पुराने ३५ पैसे।

पूणी पाँच आना—*(न० ब० व०)* पौने पाँच आने। '।)।।।' पुराने १९ पैसे।

पूणी बारह आना—*(न० ब० व०)* पौने बारह आने। '।।≡)।।।' पुराने ४७ पैसे।

पूणी सात आना—*(न० ब० व०)* पौने सात आने। '।=)।।।' पुराने २७ पैसे।

पूणो—दे० पूण। *(न०)* पौन का पहाड़ा।

पूणोतरी—*(ना०)* एक पुराना कर।

पूत—*(न०)* १. पुत्र। बेटा। २. सत्यता। ३. सत्य। *(वि०)* पवित्र। शुद्ध।

पूतना—*(न०)* एक राक्षसी जिसका वध कृष्ण ने किया था।

पूतळ—*(ना०)* १. मूर्ति। प्रतिकृति। २. गुड़िया। **ढूली**।

पूतळछोकरी—*(ना०)* दासी।

पूतळछोरी—*(ना०)* दासी।

पूतळविधान—*(न०)* शव नहीं मिलने अथवा भ्रष्ट हो जाने की स्थिति में मृतक की सद्गति के लिए आटे का पुतला बनाकर किया जाने वाला विधिपूर्वक अग्निसंस्कार।

पूतळी—*(ना०)* पत्थर, लकड़ी आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति। पुतली। २. मूर्ति। ३. गुड़िया। **ढूली**। सती या वीरांगना का स्मारक। ५. आँख के बीच का काला भाग। **कीकी**। ६. मूर्ति लेख आदि अंकित स्मारक पत्थर। **पाळियो**। **खांभी**।

पूतळो—*(न०)* धातु, पत्थर, लकड़ी, मिट्टी आदि की बनाई हुई मनुष्य की आकृति। पुतला।

पूतातमा—*(न०)* १. पवित्र आत्मा। पूतात्मा। २. गरुड़।

पून—*(न०)* १. पवन। २. पुण्य। दे० पूंद।

पूनम—*(ना०)* शुक्ल पक्ष का वह पन्द्रहवाँ दिन, जिस दिन पूर्ण चंद्रोदय होता है। पूर्णिमा।

पूनागिरी—*(ना०)* पाली के पास की पूर्णा देवी की एक प्रसिद्ध पहाड़ी।

पून्यूं—दे० पूनम।

पूफ—*(न०)* पुष्प। फूल।

पूम—*(ना०)* १. रूई पींजते समय उड़ने वाले बारीक तंतु। रुआँटी। २. वस्त्र के ऊपर की रुआँटी।

पूमो—दे० फूंबो।

पूर—*(न०)* १. नदी में आई हुई बाढ़। २. अधिक वर्षा के कारण नदी, तालाब में पानी बढ़कर तट के बाहर फैल जाना। जल प्लावन। सैलाब। ३. फटा-पुराना चिथड़ा। *(वि०)* १. पूरा। २. पूर्णतया।

पूरक—*(वि०)* किसी अभाव को पूर्ण करने वाला। *(ना०)* प्राणायाम की एक विधि।

पूरण—दे० पूर्ण।

पूरणता—*(ना०)* किसी भी प्रकार की क्षति न होने की दशा। पूर्णता।

पूरणमासी—*(ना०)* पूनम। पूर्णिमा।

पूरणी—*(ना०)* खड्डे आदि को भरने की वस्तु। धूल, ईंट, मिट्टी आदि।

पूरणो—*(क्रि०)* १. पूरा करना। कमी को पूरा करना। २. भर देना। ३. मिलाना। बढ़ाना। ४. बंध करना। कैद करना। ५. सफल करना।

पूरती—दे० पूर्ति।

पूरतो—*(वि०)* चाहिए जितना। यथेष्ट। पर्याप्त।

पूर पाट—*(वि०)* पूरा भरा हुआ। भरपूर। *(अव्य०)* अत्यन्त वेग से।

पूरपाण—*(क्रि० वि०)* पूरे बल से। भर शक्ति से। पूरी शक्ति के साथ।

पूरब—*(ना०)* पूर्व दिशा। **ऊगमण**। *(वि०)* पहले का।

पूरबक—दे० पूरवक।

पूरबलो—*(वि०)* १. पूर्व का। पहले का। २. पूर्व जन्म का।

पूरबियो—दे० पुरबियो।

पूरबी—*(वि०)* १. पूर्व दिशा की। २. पूर्व दिशा संबंधी। *(ना०)* भारत के पूर्व भाग की भाषा।

पूरवअध—दे० पूर्वार्ध।

पूरवक—*(न०)* पूर्वक। पूर्वज। पूर्वपुरुष। पुरखा। *(अव्य०)* साथ। सहित।

पूरवणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु को बेचने में नफे सहित मूल्य प्राप्त होना। पोसाना। पड़ता खाना। २. पैसे आदि से किसी की सहायता करना। खर्चा देना। ३. पूरा करना। ४. भर देना। ५. कमी को पूरी करना। ६. पूरा होना।

पूरवी—*(ना०)* एक राग। *(वि०)* पूर्व दिशा संबंधी।

पूरा दिन—*(न०)* स्त्री को प्रसूति आने का समय।

पूरा दिनाँ—*(वि०)* पूरे नौ मास की गर्भवती (स्त्री)।

पूरित—*(वि०)* १. संतुष्ट। परितृप्त। २. पूरा भरा हुआ। ३. एक प्रत्यय।

पूरियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. भरा हुआ। २. पूरा किया हुआ। ३. आशा पूर्ण किया हुआ। ४. बीता हुआ। ५. रंगादि से मंडित (साथिये आदि)। ६. जेल आदि में बंध किया हुआ।

पूरै पाठै—*(वि०)* परिपक्व अवस्था का (गर्भ)।

पूरो—*(वि०)* १. पूरा। समाप्त। २. परिपूर्ण। ३. यथेष्ट। पर्याप्त। ४. अखंडित। ५. बराबर। ६. समस्त। सकल। ७. भरा हुआ। भरपूर। ८. सर्वांगीण। ९ परिपक्व। १०. दृढ़।

पूर्ण—*(वि०)* १. पूर्ण करने वाला। २. पूरा भरने वाला। ३. भरा हुआ। ४. खंडित, अधूरा या कम नहीं। सर्वांगपूर्ण। ५. पर्याप्त। यथेष्ट। ६. तृप्त। ७. समस्त। समग्र। ८. सफल। ९. सर्वव्यापी। १०. समाप्त। ११. असीम। *(न०)* १. परब्रह्म। परमात्मा। २. विष्णु। ३. समुद्र। ४. सेतु। ५. गुणन। ६. शून्य। **सुन। मींडो। '०'**। ७. धन, पुत्र, पौत्रादि की बहुतायत।

पूर्णमासी—*(ना०)* **पूनम। पूर्णिमा। पूनो।**

पूर्णविराम—*(न०)* वाक्य पूरा हो जाने का स्थान बताने वाला '।' चिह्न। खड़ी पाई। गुजरती अंगरेजी आदि में खड़ी पाई के स्थान पर बिन्दु (.) का प्रयोग किया जाता है। फुलस्टॉप।

पूर्णाहुति—*(ना०)* १. यज्ञ की अंतिम आहुति। २. किसी भी काम की समाप्ति की क्रिया। ३. समाप्ति।

पूर्णिमा—*(ना०)* पूनम।

पूर्ति—*(ना०)* १. किसी त्रुटि को पूरा करने का भाव या क्रिया। २. पूर्णता। ३. और मिलाना। ४. समाप्ति।

पूर्व—*(ना०)* पूर्व दिशा। *(वि०)* १. पहले का। २. प्राचीन। ३. पूर्व दिशा का। **ऊगमणो।**

पूर्वक—दे० पूरवक।

पूर्वज—*(न०)* १. पूर्वपुरुष। पुरखा। २. अग्रज। बड़ा भाई। ३. चंद्रलोक में रहने वाले दिव्य पितृगण।

पूर्वजन्म—*(न०)* इस जन्म से पहले का जन्म। पिछला जन्म।

पूर्वपरिचय—*(न०)* पहिले की जान-पहिचान। **जूनी ओळखाण।**

पूर्वभव—*(न०)* पहले का जन्म। पिछला जन्म।

पूर्वमीमांसा—*(ना०)* जैमिनी मुनि का कर्मकांड प्रधान दर्शनशास्त्र।

पूर्ववत्—*(अव्य०)* पहले जैसा। पहले की तरह। जैसे पहिले था वैसे ही।

पूर्वादो—*(वि०)* १. पूर्व दिशा का। **ऊगमणो।** २. पूर्व दिशा की ओर मुंह वाला (मकान)।

पूर्वापर—*(वि०)* १. आगे पीछे का। २. पहिला और दूसरा। ३. पहिला और अन्तिम। ४. अगले और पिछले दोनों के बीच में बराबर जमावट बनी रहे वह (बात या वस्तु)।

पूर्वार्ध—*(न०)* १. पहला आधा भाग। २. ग्रंथ के आरंभ का आधा भाग।

पूळा-फेंक—*(क्रि० वि०)* क्रोध में बहुत तेज गति से।

पूळा लाग—*(ना०)* १. घास या घास के पुराल रूप में लिया जाने वाला एक कर। २. नेगियों को दिया जाने वाला घास का लाग।

पूळी—*(ना०)* छोटा पूला।

पूळो—*(न०)* तृण, कड़ब आदि का बँधा हुआ मुट्ठा। पूला। गट्ठा। पुराल।

पूळो धरणो—*(मुहा०)* १. जलते हुए को अधिक प्रज्वलित करना। २. जलाना। सुलगाना। ३. विवाद या झगड़े को बढ़ाने का काम करना। ४. किसी के यहाँ झगड़ा लगाना।

पूसण—*(न०)* १. सूर्य। २. पालन-पोषण करने वाला।

पूहप—*(न०)* पुष्प। फूल।

पूं—*(न०)* अधोवायु के निकलते समय होने वाला शब्द।

पूंख—*(न०)* १. बाजरी और ज्वार की बाली। सिट्टा। **पोंख।** २. खेत की सीमा या मेढ़।

पूंखणो—*(क्रि०)* १. पूजा करना। २. स्वागत करना। ३. विवाह की एक रस्म जिसमें पाणिग्रहण के पूर्व स्त्रियों द्वारा तोरण द्वार पर दूल्हे की आरती, पूजा व स्वागत किया जाता है। ४. पाणिग्रहण के पूर्व वर का हल (अथवा जुआड़ा) मूसल, मथानी, पूंख (नवान्न की बाली) आदि वार करके सम्मान करना। **प्रांखणो। पाँखणो।**

पूंखियो—*(न०)* घास विशेष।

पूंखीजणो—*(क्रि०)* १. पूजा जाना। २. स्वागत-तिलक होना। ३. तोरण पर दूल्हे की आरती होना।

पूंगड़ी—*(ना०)* १. पुत्री। बेटी। २. शाहजादी।

पूंगड़ो—*(न०)* १. पुत्र। बेटा। २. शाहजादा।

पूंगी—*(ना०)* मुँह से फूंक कर बजाने का सपेरे का एक वाद्य।

पूंगीधर—*(न०)* पूंगी रखने वाला। **काळबेलियो।**

पूंगीफळ—*(न०)* सुपारी।

पूंचणा—दे० पांचणा।

पूंचाळ—दे० प्रांचाळ।

पूंचियो—दे० पुणचियो।

पूंची—*(ना०)* १. पोंहचे में पहनने का एक गहना। २. बैलगाड़ी का एक उपकरण। ३. चोरी का पता लगाकर माल वापिस लाने वाले को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।

पूंचो—*(न०)* १. पोंहचे में पहनने का गहना। २. पोंहचा। कलाई। **पुणचो।**

पूंछ—*(ना०)* पुच्छ। दुम।

पूंछ झालणी—*(मुहा०)* १. हठ करना। २. रूढ़िवादी होना।

पूंछड़—*(न०)* १. पूंछ। २. बड़ी पूंछ।

पूंछड़तंग—*(न०)* ऊँट या बैल का पूंछ के नीचे लगने वाला तंग।

पूंछड़ी—दे० पूंछ।

पूंछडीलो—*(न०)* एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

पूंछड़ै—*(अव्य०)* १. लिए। वास्ते। २. पूंछ पर। ३. पीछे। ४. पीछे बँधा हुआ।

पूंछड़ो—*(न०)* १. पूंछ। २. पीछा।

पूंछणो—*(क्रि०)* किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु को कपड़े से साफ करना। पोंछना।

पूंछ फटकारणी—*(मुहा०)* क्रोधित होना।

पूंछरेळ—दे० पूंछाळ *(वि०)* सं० १. २.

पूंछळतारो—*(न०)* पुच्छल तारा। धूमकेतु।

पूंछाळ—*(न०)* १. काल। मृत्यु। २. काली नाग। ३. सिंह। ४. जानवर। ५. बड़ी पूंछ। घोड़ा। *(वि०)* १. पूंछवाला। **पूंछरेळ।** २. बड़ी पूंछवाला। ३. शक्तिवान।

पूंछी—*(ना०)* चौपायों (पूंछ वाले जानवरों) पर लिया जाने वाला एक कर। **पूंछी लाग।**

पूंछी लाग—दे० पूंछी।

पूंछेटो—*(न०)* १. बैलगाड़ी का एक उपकरण। २. पूंछ का झपट्टा। ३. घने बालों वाली मोटी पूंछ। ४. पूंछ वाले पशुओं पर लिया जाने वाला कर। **पूंछी।**

पूंज—*(न०)* १. झाड़ू। २. कचरे का ढेर। ३. घास का ढेर। ४. ढेर। पुंज।

पूंजणी—*(ना०)* १. झाड़ू। बुहारी। २. २. जैन साधुओं का सूती झाड़ू। रजोहरण। **ओघो।**

पूंजणो—*(क्रि०)* बुहारना। झाड़ना।

पूंजारी—*(न०)* १. झाड़ू देने वाला। बुहारने वाला। २. सफाई करने वाला। ३. बुहारने वाली।

पूंजारो—दे० पूंजारी।

पूंजी—*(ना०)* १. द्रव्य। रुपया-पैसा। दौलत। २. किसी व्यवसाय में लगाया हुआ धन। मूलधन। ३. महान् व्यक्ति। महिमावंत पुरुष। गौरव-पुरुष। ४. देश और धर्म का रक्षक।

पूंजीपति—*(न०)* मालदार। धनिक।

पूंजीवाद—*(न०)* वह व्यवस्था जिसमें उत्पादन और वितरण पर पूंजीपतियों का अधिकार हो।

पूंजो—*(न०)* १. कचरा। **वासींदो।** २. ढेर। **ढिगलो।**

पूंतारणो—*(क्रि०)* १. पुचकारना। २. प्रोत्साहित करना। ३. प्यार करना।

पूंद—*(ना०)* १. गुदा। २. नितंब। चूतड़।

पूंदी—*(ना०)* भग। योनि। **फुद्दी।** *(वि०)* डरपोक।

पूंभ—*(ना०)* रूई पींजते समय उड़ने वाली रज तथा रोंएँ। फूंब।

पूंभणो—दे० पूंभो।

पूंभी—*(ना०)* बाजरी की बाली में दाना आने के पूर्व बाली पर उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का पूंभ समूह।

पूंभो—*(न०)* रूई का छोटा भाग। फाया। **फूंबो।**

पृथक—*(अव्य०)* अलग। जुदा। भिन्न।

पृथा—*(ना०)* १. पांडवों की माता कुंती का दूसरा नाम।

पृथिवी—*(ना०)* १. पृथ्वी। भूमि। २. पृथ्वी ग्रह। ३. एक पंच महाभूत। पृथ्वी।

पृथी—*(ना०)* पृथ्वी।

पृथ्वी—*(ना०)* १. भूमि। धरती। जमीन। २. एक की संख्यासूचक सांकेतिक शब्द। ३. राज्य। ४. खेत। ५. पंचभूतों में से एक।

पृथ्वीतल—*(न०)* धरातल।

पृथ्वीनाथ—*(न०)* राजा।

पृथ्वीराज—*(न०)* १. भारत का अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान, जिसने मोहम्मद गौरी के अनेक आक्रमणों को विफल कर अपनी शक्ति, गर्व और उदारता की राजनैतिक भूलें की थीं। २. बीकानेर के प्रसिद्ध भक्त कवि पृथ्वीराज राठौड़, जिन्होंने 'क्रिसन रुकमणी री वेलि' की रचना की थी।

पृथ्वीराज रासो—*(न०)* पृथ्वीराज चौहान के पराक्रम का वर्णन करने वाला महाकवि चंदवरदाई का रचा हुआ एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक (डिंगल-पिंगल) काव्यग्रंथ।

पृश्निगर्भ—*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु।

पृष्ठ—*(न०)* १. पुस्तक का पन्ना। पुस्तक के पन्ने की एक बाजू। २. पीठ। **बांसो।** ३. पिछला भाग। ४. ऊपरी भाग। **सपाटी।**

पे—*(ना०)* १. छोटी पेटी। २. पानी। पय। ३. अंडा। *(अव्य०)* ऊपर। पर।

पेइसादार—दे० पइसादार।

पेइसो—दे० पइसो।

पेई—*(ना०)* पेटी। संदूक।

पेकार—*(न०)* धंधाकीय गायक।

पेख—*(ना०)* नजर।

पेखण—*(न०)* १. दृश्य। देखाव। २. दृष्टि। नजर। ३. तमाशा।

पेखणो—*(क्रि०)* देखना। **जोवणो। देखणो।**

पेखाण—दे० पेखण।

पेच—*(न०)* १. लपेट। चक्कर। २. झमेला। ३. दाँव। ४. फंदा। जाल। ५. पकड़। ६. चाल। धोखा। ७. युक्ति। उपाय। ८. सिरपेच। ९. पगड़ी का आँटा। १०. एक कील जिसमें चूड़ियाँ बनी रहती हैं। आँटों वाली मेख। स्क्रू। ११. दो पतंगों की डोर का परस्पर उलझना। १२. चक्कर।

पेचकस—*(न०)* १. बोतल के बुच को निकालने का स्क्रू। पेचकश। २. पेच वाली कील को कसने का एक औजार।

पेचको—दे० पीचको।

पेचदार—*(वि०)* १. पेचवाला। आँटेदार। २. कठिन। मुश्किल। ३. उलझा हुआ।

पेचिस—*(ना०)* १. आँव होने के कारण पेट में होने वाला मरोड़ा। पेचिश। २. मरोड़ा की दस्तें।

पेचीदो—*(वि०)* १. पेचदार। २. मुश्किल। कठिन।

पेचूटी—*(ना०)* १. नाभि के नीचे की एक आँत। २. नाभि के नीचे की आँतों की एक गाँठ। ३. पेट की एक आँत।

पेचो—*(न०)* सिर पर बाँधी जाने वाली पगड़ी। **पाघ।**

पेछू—*(वि०)* दुर्व्यसनी।

पेज—*(न०)* १. पुस्तक के पन्ने का एक बाजू। पृष्ठ। **पानो।** २. प्रतिज्ञा। प्रण। **पैंज। पैंद।** दे० पेजाई।

पेजको—*(न०)* चौपायों के लिए पानी पीने का कुँआ और उस पर बना कुंड और खेली। चौपायों के पानी पीने का स्थान। **पीचको।**

पेजाई—*(ना०)* १. चौपायों को पेजके पर पानी पिलाने का शुल्क। २. पेजका चलाकर पशुओं को पानी पिलाने का धंधा।

पेजूटी—दे० पेचूटी।

पेट—*(न०)* १. उदर। जठर। २. आमाशय। ३. गर्भ। हमल। ४. संतान। ५. पुत्र। ६. आजीविका। ७. किसी वस्तु के अंदर का भाग। **पोलाण।** ८. अंतरमन। *(क्रि० वि०)* अन्दर।

पेट आडी देणी—*(मुहा०)* किसी की रोजी छुड़ाना या खोसना।

पेट ऊपर लात मारणी—*(मुहा०)* किसी की रोजी छुड़ाना।

पेट ओळणो—*(मुहा०)* पेट ऊपर लात मारना।

पेट कापणो—*(मुहा०)* १. भूखों मरना। २. बचत करने के लिए पूरा नहीं खाना। ३. भूखों मारना।

पेट कूटणो—*(मुहा०)* ईर्ष्या करना।

पेट कूटो—*(न०)* ईर्ष्या।

पेटखाई—*(ना०)* १. खुराक खर्च। २. गुजरान।

पेटगुजारो—*(न०)* भरणपोषण। गुजरान।

पेटघिसाळी—*(ना०)* मजदूरी।

पेट छूटणो—*(मुहा०)* दस्तें लगना।

पेट जमणो—*(मुहा०)* गर्भ रहना। गर्भवती होना।

पेट ठरणो—*(मुहा०)* १. संतोष होना। २. संकट टलना। ३. पुत्र उत्पन्न होना।

पेट ठारणो—*(मुहा०)* १. संतोष करना। २. संकट मिटाना।

पेट दूखणो—*(मुहा०)* १. पेट में दर्द होना। २. किसी की उन्नति देखकर जलना।

पेट पाळ—*(वि०)* स्वार्थी। पेटार्थी।

पेट पाळणो—*(मुहा०)* १. गुजारा करना। २. मजदूरी करना।

पेट पाळो—*(न०)* १. मजदूरी। २. गुजारा।

पेटपूजा—*(न०)* भोजन।

पेटपूर—*(वि०)* १. पेट भर जाये जितना। जितना खाया जा सके। २. चाहिए जितना। यथावश्यक। ३. तृप्तिपूर्ण। *(न०)* तृप्ति।

पेट बळणो—*(मुहा०)* १. अमंगल की आशंका से संताप होना। २. ईर्ष्या होना।

पेट बळियो—*(न०)* १. माता की ओर से पुत्र को दी जाने वाली एक गाली। २. कपूत।

पेटबळो—दे० पेटबाळो।

पेट बळ्यो—दे० पेट बळियो।

पेट बाळणो—*(मुहा०)* १. किसी का अमंगल करना। २. सताना।

पेटबाळो—*(न०)* १. ईर्ष्या। डाह। जलन। २. आंतरिक दुःख। मनस्ताप। ३. चिंता। ४. दूसरे की सम्पत्ति तथा उन्नति देखकर जलना।

पेटभर—दे० पेटपूर।

पेट भरणो—*(मुहा०)* १. भोजन करना। २. मजदूरी करना। काम करना। ३. गुजारा करना। निर्वाह करना। आजीविका चलाना।

पेटभराई—*(ना०)* १. पेट की भूख बुझाने के लिए किया हुआ धंधा। २. काम। मजदूरी। ३. निर्वाह। गुजारा। गुजरान।

पेट मँडणो—*(मुहा०)* गर्भ रहना।

पेट मोटो करणो—*(मुहा०)* उदार होना।

पेट मोटो राखणो—*(मुहा०)* उदार होना।

पेट रहणो—*(मुहा०)* गर्भ रहना।

पेट री बात—*(मुहा०)* १. किसी के मन की बात। २. खास बात। ३. छिपी बात।

पेट री वेठ—*(मुहा०)* मजदूरी।

पेट-रो—*(न०)* १. पुत्र। २. वंशज। *(वि०)* १. अपना। २. अपना उत्पन्न। स्वोत्पन्न।

पेट लिवाड़ी—दे० पेटभराई।

पेट-वड़ी—*(ना०)* पेट के लिये मजदूरी। मजदूरी। **मजूरी। बड़ी।**

पेटवाळी—*(वि०)* सगर्भा। गर्भवती।

पेटवेचू—*(वि०)* कन्या विक्रय करने वाला।

पेट-वेठ—दे० पेट-वड़ी।

पेट-वैपार—*(न०)* कन्या विक्रय।

पेटा कलम—*(ना०)* मुख्य कलम (लिखावट) के अंदर लिखी जाने वाली विभाग वार कलम। सब-एन्ट्री। आइटम वार सब-एन्ट्री। मद वार सब-एन्ट्री।

पेटा खातो—*(न०)* बड़े खाते के विभाग रूप का छोटा खाता।

पेटा चाटो—*(न०)* १. जैसे-तैसे किया जाने वाला गुजरान। २. पूर्णरूप से गुजरान नहीं होने की स्थिति।

पेटा जाति—*(ना०)* किसी बड़ी जाति की शाखा-जाति। उपजाति।

पेटा धंधो—*(न०)* मुख्य धंधे के साथ कोई दूसरा छोटा धंधा।

पेटा नियम—*(न०)* उपनियम।

पेटा रकम—दे० पेटा कलम।

पेटार्थी—*(वि०)* १. अपना ही पेट भरने वाला। २. स्वार्थी।

पेटाळिये व्हेणो—*(मुहा०)* पेट के बल सोना। औंधा सोना।

पेटाळिये सूणो—दे० पेटाळिये व्हेणो।

पेटाळिये सूवणो—दे० पेटाळिये व्हेणो।

पेटाळिये होणो—दे० पेटाळिये व्हेणो।

पेटाळियो—*(वि०)* पेट के बल सोने वाला। औंधा सोने वाला।

पेटियो—*(न०)* १. वेतन के रूप में दी जाने वाली दैनिक सूखी भोजन-सामग्री। अन्न-वेतन। **सीधो**। २. पेट खर्च। ३. मजदूरी के रूप में दिया जाने वाला अन्न। ४. मृत्यु के समय दिया जाने वाला आटा-दान। ५. बंदूक या तोप में भरी जाने वाली बारूद की मात्रा।

पेटी—*(ना०)* १. संदूक। छोटा संदूक। मंजूषा। **मंजूस**। २. कमर या पेट का बंधन। ३. पेटी बाजा। हारमोनियम। ४. सैनिकों का कमरपट्टा। ५. नापित की औजार रखने की थैली। **राछानी**। ६. मिल में कते हुए सूत की बीस अंटियों (फाळकों) का बँधा हुआ चौरस गट्ठर। ७. छाती और पेड़ू के बीच का भाग।

पेटू—*(वि०)* बहुत खाने वाला। भुक्खड़। **भूखियो**।

पेटे—*(अव्य०)* १. विषय में। बारे में। २. बदले में। एवज में। ३. मूलधन (रकम) के अंतर्गत या उसके हिस्से में।

पेटो—*(न०)* १. भेद। रहस्य। २. मन की बात। ३. अंश। भाग। ४. किसी वस्तु का भीतरी भाग। ५. किसी वस्तु के बीच का पोला तथा उभरा हुआ भाग। ६. बही-खाते में मूल रकम (कलम = एण्ट्री) के भीतर विवरण अथवा विभाग-रूप में लिखी जाने वाली कलम। ७. मूल कलम के अंदर उसकी तफसील के लिए अलग-अलग लिखी जाने वाली कलमें। मूल रकम का पेटा विवरण। पेटा कलम। आइटम। ८. मुख्य काम के अंतर्गत होने वाला काम। ९. किसी भी वस्तु के बीच का उभरा हुआ पोला भाग।

पेठ—*(ना०)* १. प्रवेश। २. पहुँच।

पेठो—*(न०)* १. मावे की एक मिठाई। २. सफेद कुम्हड़ा। ३. पेठे की मिठाई। पेठे का पाक।

पेड़—*(न०)* १. वृक्ष। दरख्त। **रूँख**। **झाड़**। २. मूल कारण। ३. तना। **गोढ**।

पेड़ू—*(न०)* १. नाभि के नीचे का भाग। नाभि और मूत्रेन्द्रिय के बीच का भाग। २. गर्भाशय।

पेडी—दे० पेढी।

पेढी—*(ना०)* १. आढत, लेन-देन आदि का व्यापार करने वाली बड़ी दुकान। २. लेन-देन, सर्राफा आदि का बड़ा व्यापार करने वाली प्रतिष्ठित दुकान। ३. दुकान। ४. चबूतरी। ५. सोपान। **पगथियो**। ६. देहली। **डेली**।

पेढी उतार—*(न०)* बेचे गये माल को वापिस नहीं लेने का नियम या शर्त। खरीदी गई वस्तु की नापसंदगी की स्थिति में दुकानदार द्वारा उसे वापिस नहीं लेने का भाव।

पेढो—*(न०)* दाँत की जड़ को पकड़े या ढके रहने वाला भाग। मसूड़ा।

पेतावो—दे० पैंताळो सं० १.

पेपर—*(न०)* १. समाचारपत्र। **छापो**। २. परीक्षा का प्रश्नपत्र। ३. कागज। पत्र। **कागद**।

पेम—दे० प्रेम।

पेमजी बोर—दे० पेमली बोर।

पेमरस—*(न०)* प्रेम का आनंद। प्रेमानंद।
पेमली बोर—*(न०)* एक प्रकार का बड़ा बेर फल।
पेरवो—*(न०)* १. अंगुली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह मुड़ती है। २. अंगुली की दो गाँठों के बीच का भाग। पोर। बिस्वा। ३. बाँस या गन्ने की दो गाँठों के बीच का भाग।
पेरुओ—दे० पेरवो।
पेरोजो—दे० पिरोजो।
पेल—*(ना०)* अधिकता। बहुतायत। *(वि०)* नष्ट।
पेलणो—*(क्रि०)* १. नष्ट करना। २. चुगदना। ३. पीसना। ४. पेरना। ५. हराना। ६. भेजना। ७. तिलहन को कोलू में पीसना।
पेलो—*(वि०)* सामने वाला।
पेवटी—दे० पेटी।
पेवड़ी—*(न०)* पीली रज। **रामरज।**
पेश—*(अव्य०)* सन्मुख। सामने। आगे। *(वि०)* १. पार पड़ा हुआ। बर आया हुआ। सफल। पूर्ण। २. हाजिर। उपस्थित। *(न०)* १. वरुण। २. कर। लाग। ३. भेंट।
पेशकब्ज—*(ना०)* एक प्रकार की कटारी।
पेशकशी—*(ना०)* १. नजर। भेंट। २. नजराना। ३. खंडनी। सालियाना।
पेशकार—*(न०)* १. वह कर्मचारी जो न्यायालय में न्यायाधीश के आगे पेशी वगैरह के कागज-पत्र पेश करता है। शिरस्तेदार। २. सेवक। **हजूरियो।**
पेशगी—*(ना०)* वह धन जो किसी को किसी काम के करने के लिये पहले दिया जाय। एडवान्स।
पेशवाई—*(ना०)* १. अगवानी। २. पेशवाओं का शासन।
पेशवाज—*(न०)* नर्तकी के पहनने का घाघरा।
पेशानी—*(ना०)* १. किसी वस्तु का अगला और उपरि भाग। २. ललाट।
पेशाब—*(न०)* पिशाब। मूत्र। **मूत। मूतर।**
पेशी—*(ना०)* १. मुकदमे की सुनवाई। २. मुकदमे की सुनवाई का दिन।
पेशो—*(न०)* पेशा। धंधा।
पेस—दे० पेश।
पेसकब्ज—दे० पेशकब्ज।
पेसगार—दे० पेशकार।
पेसगी—दे० पेशगी।
पेसळ—*(वि०)* १. सुंदर। मनोहर। पेशल। **फूदरो।** २. कोमल। सुकुमार। ३. चतुर।
पेसाब—दे० पेशाब।
पेसी—दे० पेशी।
पेसो—दे० पेशो।
पेंजार—दे० पेंजार।
पेंटर—*(न०)* चित्रकार।
पेंडो—दे० पेंडो।
पेंसन—*(ना०)* सेवानिवृत्ति के बाद आजीविका के रूप में दी जाने वाली मासिक वृत्ति।
पेंसिल—*(ना०)* सुरमे, सीसे आदि की एक प्रकार की कलम। **सीसापैण।**
पै—*(न०)* १. पाँव। २. पर्वत। ३. दूध। ४. पानी। ५. प्रतिष्ठा। ६. प्रतिज्ञा। ७. औहदा। पद। ८. श्रद्धा। ९. कमल। *(अव्य०)* १. परंतु। पर। २. अनन्तर। पीछे। ३. ओर। तरफ। *(वि०)* सुंदर।
पैक—*(वि०)* होशियार। चतुर। *(न०)* पुड़िया।
पैकळो—*(न०)* बड़ी जूं। **टोकळो।**
पैकाम—*(न०)* तीर का अगला नोकदार भाग। फल।
पैगंबर—*(न०)* वह जो खुदा का पैगाम लेकर मनुष्य को सुनाता है। नबी।
पैगाम—*(न०)* संदेश।
पैज—*(ना०)* १. शर्त। होड़। **पैद।** २. प्रतिज्ञा। प्रण। **पण।** ३. मान-मर्यादा। ४. नियम। ५. मर्यादा।

पैंजणी—(ना०) पाँव में पहनने का एक गहना। पैंजनी। **जांझर**।

पैंजार—(न०) जूता। **पगरखो**।

पैठ—(ना०) १. प्रतिष्ठा। **आबरू**। २. हुंडी खो जाने से दूसरी बार लिखी जाने वाली हुंडी। ३. प्रवेश। **घुसण**। ४. गति। ५. पहुँच। **पूग**। ६. भरोसा।

पैठणो—(क्रि०) प्रवेश करना। घुसना। **पैसणो। घुसणो।**

पैठवान—(वि०) विश्वसनीय। (न०) रेलवे लाइनों को बदलने वाला व्यक्ति। पाइंटमैन।

पैठाणो—दे० पैठावणो।

पैठावणो—(क्रि०) प्रवेश करवाना। घुसाना।

पैड़ी—(ना०) १. **पगथिया**। सीढ़ी। २. एक प्रकार का डिंगल छंद। ३. घाट।

पैड़ो—(ना०) १. मावे की एक मिठाई। २. बैलगाड़ी का पहिया। पहिया।

पैण—(ना०) स्लेट पर लिखने की खड़िया की कलम। **भाटापैण**।

पैणगो—(न०) शराबगोष्ठी। **पाणगो**।

पैणसल—(ना०) पेंसिल। **सीसापैण**।

पैणो—दे० पीणो साँप।

पैणो साँप—दे० पीणो साँप।

पैताळो—(न०) १. जूती के अंदर रखा जाने वाला जूती के आकार का पतले चमड़े का टुकड़ा। २. सदी का पैंतालीसवाँ वर्ष।

पैतृक—(वि०) १. पिता संबंधी। २. परंपरागत। मौरूसी।

पैथ—(ना०) घी में बनाई जाने वाली गुड़ की चाशनी। **पाथ**।

पैद—(ना०) पैज। शर्त। **होड़**।

पैदमात—(ना०) शतरंज के खेल में प्यादे से होने वाली मात।

पैदल—(वि०) पाँव-पाँव चलने वाला। **पाळो**। (न०) १. पदाति। सिपाही। २. शतरंज का एक मोहरा। प्यादा। (अव्य०) पाँव-पाँव। पैरों से।

पैदा—(ना०) १. आय। आमदनी। २. जन्म। उत्पत्ति। (वि०) १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। २. कमाया हुआ। प्राप्त। ३. घटित। उपस्थित। प्रगट।

पैदाइश—(ना०) १. जन्म। उत्पत्ति। २. आमदनी। आय। **कमाणी**।

पैदावार—(ना०) १. खेत में उपजा अन्नादि। उपज। फसल। २. आमदनी। आय। **कमाई**।

पैदावारी—दे० पैदावार।

पैदास—दे० पैदाइश।

पैन—(ना०) फाउन्टेन पैन। कलम।

पैनाग—(न०) १. हाथी। २. सर्प।

पैनो—(वि०) तीक्ष्ण। तेज धार वाला।

पैबंद—(न०) १. किसी पेड़-पौधे की डाली को काटकर उसी अथवा अन्य जाति के पेड़ में उसकी उत्तमता को बढ़ाने के लिये लगाना। कलम। २. थिगली। पैवंद। **कारी**।

पैमद—(न०) पैबंद। थिगली। **कारी**।

पैमाइश—(ना०) जमीन की नपाई।

पैमानो—(न०) १. मापने का साधन। मानदंड। २. किसी वस्तु के उपयोग की सीमा। ३. नियम व मर्यादा की सीमा।

पैमाल—(न०) पामाल। पायमाल। बरबाद। नाश।

पैमाली—(ना०) **बरबादी**। पायमाली।

पैमास—दे० पैमाइश।

पैर—(न०) १. पाँव। **पग**। २. प्रहर। ३. पैर का निशान।

पै-रज—(ना०) पदरज। चरण रज।

पैरण—(न०) एक वस्त्र। चोला। कुर्ता।

पैरवाई—(ना०) १. तैयारी। पैरवी। २. प्रयत्न। कोशिश। ३. युक्ति। तजवीज।

पैरवास—(न०) परिधान। वेशभूषा।

पैरवी—(ना०) १. मुकदमे की जीत या सफलता के लिये किया जाने वाला प्रयत्न। २. तजवीज। युक्ति। ३. प्रयत्न। कोशिश।

पैराकी—*(वि०)* चतुर। होशियार।
पैरामणी—दे० पहरावणी।
पैरोकार—*(न०)* पैरवी करने वाला। **पैरवीकार।**
पैरोकारी—*(ना०)* पैरवी।
पैल—*(ना०)* १. अत्यधिकता। पुष्कलता। २. परिपूर्णता। ३. कीचड़। ४. धूल। पांशु। *(वि०)* अत्यधिक। दे० पहल।
पैलकै—*(अव्य०)* पहिले।
पैलड़ी—*(वि०)* पहले की।
पैलड़ो—*(वि०)* पहले का।
पैलांतर—*(न०)* पूर्वजन्म।
पैलू—*(न०)* पहलू।
पैलूणी—*(वि०)* प्रथम।
पैलूणो—*(वि०)* प्रथम।
पैलै—*(सर्व०)* उस। *(वि०)* दूसरा।
पैलै दिन—दे० परसूं।
पैलैपार—*(अव्य०)* उस पार। सामने के किनारे।
पैलै भव—*(अव्य०)* अगले जन्म में।
पैलो—*(वि०)* १. दूसरा। पराया। दूसरे कक्ष का। २. शत्रु। दे० पहलो।
पैलोटो—दे० पहलोटो।
पैलो भव—*(अव्य०)* अगला जन्म।
पैलोड़ो—*(वि०)* १. उस ओर का। उधर का। २. पहले का।
पैशाची—*(ना०)* १. पैशाची भाषा। २. पिशाच संबंधी।
पैस—*(न०)* प्रवेश। दाखिल।
पैसणो—*(क्रि०)* १. घुसना। २. दाखिल होना। प्रवेश करना।
पैसाच—*(ना०)* दे० पैशाची।
पैसादार—दे० पइसैंदार।
पैसार—*(न०)* १. प्रवेश। २. अंदर आने का मार्ग। ३. प्रवेशद्वार। ४. बाहिर से माल का आना। माल की आवक। ५. आने वाले माल पर लगने वाला कर।
पैसारो—*(न०)* १. प्रवेश। २. प्रवेशद्वार। ३. विवाह के बाद दूल्हे का दुलहिन के साथ अपने घर में प्रवेश करने की एक विधि।
पैसियोड़ो—*(भू० कृ०)* प्रवेश किया हुआ। घुसा हुआ।
पैसो—दे० पइसो।
पैहड़णो—*(क्रि०)* १. छोड़ना। २. दिल छोटा करना।
पैंखड़ो—दे० पाखड़ो।
पैंजणी—*(ना०)* स्त्रियों के पाँवों में पहनने का एक गहना, जो चलने पर झनझनाता है। पैंजनी। **रमझोळ।**
पैंजार—*(न०)* जूता। **पगरखी।** पैंतरी। पैंजार।
पैंठ—दे० पैठ।
पैंड—*(न०)* १. कदम। डग। २. पाँव। पैर।
पैंडायत—*(न०)* १. लुटेरा। बटमार। २. पैदल यात्रा करने वाला।
पैंडो—*(न०)* १. (पाँवों से) चल कर की जाने वाली मुसाफिरी। पदयात्रा। पैदल मुसाफिरी। पैदल चलना। २. मार्ग। ३. डग। कदम। ४. प्रथा।
पैंतरो—*(न०)* १. दाँव। युक्ति। २. प्रपंच। ३. कुश्ती का एक दाँव। पैंतरा।
पैंताळी—दे० पैंताळीस।
पैंताळीस—*(वि०)* चालीस और पाँच। *(न०)* पैंतालीस की संख्या। '४५'
पैंताळीसो—*(वि०)* सदी का पैंतालीसवाँ वर्ष।
पैंताळो—*(न०)* सदी का पैंतालीसवाँ वर्ष। दे० पैंताळो सं० २.
पैंती—दे० पैंतीस।
पैंतीस—*(वि०)* तीस और पाँच। *(न०)* पैंतीस की संख्या। '३५'
पैंतीसमो—*(वि०)* पैंतीसवाँ।
पैंतीसो—*(न०)* सदी का पैंतीसवाँ वर्ष।
पैंतो—*(न०)* १. थाह। २. भेद। रहस्य।

पैंदो—दे० पींदो ।

पैंसठ—*(वि०)* साठ और पाँच । *(न०)* पैंसठ की संख्या । '६५'

पैंसठो—*(न०)* सदी का पैंसटवाँ वर्ष ।

पैंसिल—*(न०)* सीसापैंन । लीडपैंन । पेंसिल ।

पैंहठो—दे० पैंसठो ।

पो—*(ना०)* १. प्रभात । ब्राह्ममुहूर्त्त । **सवार** । २. चौपड़ (चौसर) के खेल में कौड़ियों के दाँव १०, २५ या ३० आ जावें तो एक घरअधिकचलने का या एक और सारी बिठाने का हक । ३. चौपड़ का पहला घर या खाना । ४. **प्याऊ** । प्रपा । पौसला । ५. मयाद । समय । ६. छूट । ७. विश्राम । **पिसामो । पोहरो** । ८. अंधेरा । **अंधारो** । ९. रात्रि । *(अव्य०)* पुल्लिंग (नर जाति) बनाने वाला एक प्रत्यय । जैसे—राजीपो । बूढापो । रंडापो ।

पोइठो—दे० पोयठो ।

पोइण—*(न०)* कमल ।

पोइणी—*(ना०)* कमलिनी । पद्मिनी । **कमल का छोट पौधा** ।

पोइलो—*(न०)* **गाय, बैल और भैंस का मल । पोठो । पोइठो ।**

पोइस—*(अव्य०)* १. 'मार्ग से दूर हटो' इस अर्थ को व्यक्त करने वाला एक उद्गार । २. उच्चवर्ग से स्पर्श न हो जाय तथा दूर या एक ओर हो जाय, इसलिये महतरों द्वारा किया जाने वाला ऐसा उद्गार ।

पोकर—*(न०)* १. छोटा तालाब । २. कुँआ । ३. पुष्कर तीर्थ ।

पोकरजी—*(न०)* पुष्कर तीर्थ ।

पोकरणो—*(न०)* १. पुष्करणा ब्राह्मण । २. राठौड़ क्षत्रियों की एक शाखा । *(वि०)* इस शाखा वाला ।

पोकरमूळ—*(न०)* औषधोपयोगी एक वनस्पति । पुष्करमूल ।

पोकळ—*(न०)* १. पोल । मिथ्या दिखावा । २. दंभ । ढोंग । *(वि०)* खोटा ।

पोख—*(न०)* १. पोषण । २. बालकों को स्नेह से हृदय लगाना । ३. उत्तेजन । ४. मदद । दे० पूंख ।

पोखण—दे० पोषण ।

पोखणो—*(क्रि०)* १. पोषण करना । २. तुष्ट करना । ३. मदद करना ।

पोखता—*(ना०)* १. पति के विदेशगमन से दुखी नायिका । प्रोषित-पतिका । २. पोषण करने वाली । ३. एक प्रेतनी जो धनधान्य और स्वास्थ्य प्रदान करने वाली मानी जाती है ।

पोखर—दे० पोकर ।

पोखाळो—*(न०)* १. नाश । विनाश । २. तोड़फोड़ । बिगाड़ । ३. नुकसान ।

पोखीजणो—*(क्रि०)* पोषा जाना ।

पोगर—*(ना०)* १. हाथी की सूँड । २. पुद्गल । ३. परमाणु ।

पोगराळ—*(न०)* हाथी ।

पोच—*(वि०)* १. कायर । डरपोक । २. ढीला । पोच । ४. क्षीण । अशक्त । ४. क्षुद्र । तुच्छ । ५. कम । न्यून । ६. नीच । *(न०)* ढीलापन ।

पोचापणो—*(ना०)* १. कायरता । २. ढीलापन । ३. अशक्ति । ४. अपमान । ५. हलकाई । हलकापन ।

पोचारो—*(न०)* १. पुताई । हल्की पुताई । २. पानी का पोता फिराने की क्रिया । पुचारा ।

पोचो—*(वि०)* १. डरपोक । भीरु । कायर । २. निर्बल । अशक्त । ३. खोखला । थोथा । ४. निकम्मा । ५. शिथिल । ढीला । ६. नरम । ७. अविश्वसनीय ।

पोछड़ी—*(वि०)* स्त्री की प्रौढ़ावस्था की अंतिम (संतान) । **लारली** ।

पोट—*(ना०)* १. गठरी । २. ढेर ।

पोटकी—*(ना०)* गठरी ।

पोटको—*(न०)* सामान का बँधा हुआ गट्ठड़ । बड़ी गठरी ।

पोटलियो—*(न०)* १. कंधे पर सामान लादकर व गली-गली में फिरकर माल बेचने वाला व्यक्ति । २. नमक, मिर्च आदि सामान की गठड़ी सिर पर रखकर फिरता-फिरता बेचने वाला बनिया ।

पोटली—दे० पोटकी ।

पोटलो—दे० पोटको ।

पोटस—दे० पोटिस ।

पोटाणो—दे० पोटावणो ।

पोटावणो—*(क्रि०)* १. प्रलोभन देना । झूठा आश्वासन देना । २. फुसलाना ।

पोटास—*(न०)* एक क्षार विशेष ।

पोटिस—*(न०)* हलवे की तरह पकाई हुई अलसी, आटे आदि की गरम लूपरी, जो फोड़े आदि को पकाने के लिये उसके ऊपर बाँधी जाती है । पुलटिस । **लूपरी । पोटस ।**

पोटीजणो—*(क्रि०)* बहकावे में आना ।

पोठ—*(न०)* १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल भर करके ले जाने वाला बैलों का काफिला । **बाळध । टांडो ।** २. बैल की पीठ पर डाली जाने वाली दोहरी गोनी । **गूण ।**

पोठवै—*(न०)* पोठ का मालिक । बनजारा । **बिणजारो ।**

पोठियो—*(न०)* १. पोठ का बैल । २. शिवजी का नांदिया । नंदी । **नांदियो ।** ३. पोठ का मालिक । बनजारा ।

पोठी—दे० पोठियो ।

पोठो—*(न०)* गाय, बैल, भैंस का मल । **पोइलो । गोबर ।**

पोढ—*(वि०)* प्रौढ़ ।

पोढण—*(न०)* १. शयन । २. सोने के साधन—पलंग, बिछौना आदि । *(अव्य०)* शयन करने के लिये ।

पोढणो—*(क्रि०)* १. सोना । शयन करना । लेटना । **सोवणो ।** २. धराशायी होना । मरना ।

पोढम—*(वि०)* १. प्रौढ़ । २. वीर । *(न०)* १. प्रौढ़ता । २. दृढ़ता ।

पोढाड़णो—*(क्रि०)* १. सुलाना । २. धराशायी करना । मारना ।

पोढाणो—*(क्रि०)* १. सुलाना । २. मरणान्त धरती पर सुलाना ।

पोढावणो—दे० पोढाणो ।

पोढी—*(न०)* मारवाड़ के पोकरण नगर का एक नाम ।

पोढीनाथ—*(न०)* १. पोकरण का स्वामी । २. तुँवर रामदेव जो सिद्ध और पीर रूप में प्रसिद्ध लोक-देवता हैं ।

पोढीनेर—*(न०)* पोकरण नगर ।

पोढीमणो—*(वि०)* १. वीर । २. प्रौढ़त्वशाली । ३. पुष्ट और मनस्वी ।

पोढो—*(वि०)* प्रौढ़ ।

पोणो—दे० पोवणो ।

पोत—*(न०)* १. कपड़ा । २. कपड़े की बुनावट । ३. बुनावट का उत्तम प्रकार । ठोस बुनावट । ४. भेद । रहस्य । ५. अपने गुण कर्म का प्रकाशन । अपना खरा रूप । अंतरस्वरूप । **आपो ।** ६. धोती । **धोतियो ।** ७. नौका । ८. परदा । ९. काँच का छोटा मनका । गुरिया । **चोड ।** १०. बालक । बच्चा । ११. गले में पहनने का काला डोरा । १२. पोतने का काम । १३. पुताई । १४. चिह्न । १५. आभा । कांति ।

पोतड़ियो—दे० पोतड़ो ।

पोतड़ी—*(ना०)* १. धोती । २. छोटी धोती ।

पोतड़ो—*(न०)* मलमूत्र से बिछावन नहीं बिगड़ने देने के लिये बच्चे के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा । पोतड़ा ।

पोतणो—*(क्रि०)* १. पोतना । २. लीपना । *(न०)* वह कपड़ा, जिससे पोता किया जाता है । **पोतो ।**

पोतदार—*(न०)* १. खजांची । २. अफीम का पोता रखने वाला ।

पोतधारी—*(न०)* १. धोती पहिनने वाला। धोतीधारी। २. साधु।
पोतराई—*(न०)* पौत्र का परिवार।
पोतरी—*(ना०)* पौत्री। **पोती।**
पोतरो—*(न०)* पौत्र। प्रपुत्र। **पोतो। हरो। समोभ्रम।**
पोतवाळ—*(न०)* अंडकोश।
पोतवाळिया—दे० पोतवाळ।
पोताई—*(ना०)* १. पोतने का काम। २. पोतने की मजदूरी। पुतवाई।
पोता चेलो—*(न०)* चेले का चेला। पौत्रशिष्य।
पोतारो—*(सर्व०)* अपना। निज का। *(न०)* १. आत्मीय। स्वजन। २. पोताई करने वाला।
पोतिया बदळ भाई—*(न०)* पगड़ी बदल भाई।
पोतियो—*(न०)* १. साफा। **फेंटा।** २. लहसुन की कुली। लहसुन का बीजकोष। ३. धोती। **धोतियो।**
पोती—*(ना०)* १. बेटे की पुत्री। पौत्री। **पोतरी।** २. पोतने का काम। ३. रोटी को तवे पर की जाने वाली घी की पुताई। ४. हंडिया के पीदे पर चढ़ाया जाने वाला मिट्टी का लेप। ५. लहसुन का बीजकोष।
पोती देणो—*(मुहा०)* तवे पर रोटी को सेकते समय घी की पुताई करना।
पोते—*(अव्य०)* बचत। शेष। पोते में। *(सर्व०)* स्वयं। खुद।
पोतेदार—*(न०)* खजांची।
पोतेबाकी—*(ना०)* जमा-खर्च के रोकड़ हिसाब की शेष। जमा-खर्च निकालने के बाद बाकी रही हुई रकम। बचत। सिलक। बैलेंस।
पोतेबाकी काढणी—*(मुहा०)* १. खर्च को बाद करने के पश्चात् रोकड़ रकम का परिणाम व परिमाण निकालना। २. जमा-खर्च के बाद पोते में रही रोकड़ रकम को बही में अंकित करना।
पोतेबाकी मेळणी—*(मुहा०)* १. हाथ में (पास में) रही हुई रोकड़ रकम (कैश) हिसाब के अनुसार है या नहीं—इसकी जाँच करना। २. हाथ में रही हुई रोकड़ रकम और रोकड़ बही की शेष (बैलेंस) का मिलान करना।
पोतो—*(न०)* १. बेटे का पुत्र। पौत्र। २. पोतने का गीला कपड़ा। ३. पोतने के लिये तैयार की गई मिट्टी, खड़िया आदि। ४. शराब अथवा अफीम लेने के बाद खाया जाने वाला सूखा मेवा। **खारभंजणा।** ५. खारभंजणा, अफीम आदि रखने की खलेची। ६. जमापूंजी। ७. विवाहादि अवसरों पर (बंदोला-बंदोली में दूल्हे की ओर से) बाँटा जाने वाला सूखा मेवा। ८. अफीम रखने का बटुआ।
पोतो करणो—*(मुहा०)* पोता फिरा कर फर्श आदि को साफ करना।
पोतो देणो—*(मुहा०)* १. पोता फिरा कर आँगन आदि को साफ करना। २. अफीम आदि को लेने के बाद खारभंजणा बाँटना।
पोथकी—*(ना०)* आँखों की पलकों का एक रोग।
पोथी—*(ना०)* १. पुस्तक। ग्रंथ। २. लहसुन की गाँठ। ३. पोषण। पुष्टि।
पोथीखानो—*(न०)* पुस्तकालय।
पोथो—*(न०)* बड़ा ग्रंथ।
पोदकी—*(ना०)* एक शकुन चिड़िया।
पोदीनो—*(न०)* सुगंधित पत्तियों वाली एक वनस्पति, जिसके पत्तों की चटनी बनती है।
पोद्दार—*(न०)* १. अग्रवाल वैश्यों की एक अल्ल। २. पोतेदार का अपभ्रंश शब्द।
पोध—*(ना०)* एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाया जाने वाला छोटा पौधा।
पोधो—*(न०)* छोटा पेड़। पौधा।
पोप—*(न०)* ईसाई धर्म का मुख्य आचार्य।
पोपट—*(न०)* १. तोता। सुआ। २. योनि। भग।

पोपल—*(वि०)* १. अशक्त। कमजोर। २. घटिया। हलका। ३. खोखला।

पोपल-पापल—*(वि०)* १. घटिया या दोषयुक्त। २. जो बहुत हलका और घटिया हो। ३. कम कीमत का। हलका और जल्दी टूटने वाला। **पापल-पोपल।**

पोपलीन—*(ना०)* एक प्रकार का कपड़ा।

पोपलीला—*(ना०)* १. धर्म का आडम्बर। २. साधारण लोगों को जाल में फँसाने का काम। ढोंग। ठगविद्या।

पोपलो—*(वि०)* १. अशक्त। कमजोर। २. ढीला। सुस्त। ३. बिना दाँतों का। ४. खाली। ५. पोला।

पोपाँबाई—*(ना०)* १. पूर्व समय में अंधेर और अव्यवस्था का राज्य चलाने वाली एक अयोग्य शासक स्त्री। (कहा जाता है कि यह जालोर की शासिका थी। ऐसी ही एक स्त्री खंडेल में भी हुई थी जो पोपाँबाई कहलाई)। अंधेर व अव्यवस्था का एक उदाहरण।

पोपो—*(न०)* १. निबोली का पूरा छिलका। २. कलम की नली। फाउंटेन पैन का ढक्कन।

पो फाटणो—*(मुहा०)* अंधेरा मिटना। रात बीतना। सूर्योदय होना। प्रभात होना।

पोबारा—*(न०)* १. जीत। विजय। २. चौपड़ के खेल में अमुक दाने पड़ने का दाँव। ३. प्रयत्न में होने वाली संपूर्ण सफलता। पासे सीधे पड़ना। ४. भाग जाने की क्रिया। ५. खूब लाभ।

पोबारा पड़णो—*(मुहा०)* १. संपूर्ण सफलता मिलना। २. खूब लाभ होना। ३. अनुकूल दाँव पड़ना।

पोमचो—*(न०)* सौभाग्यवती स्त्रियों की एक ओढ़नी।

पोमाई—*(ना०)* १. आत्मप्रशंसा। २. गर्वोक्ति।

पोमाणो—दे० पोमावणो।

पोमावणो—*(क्रि०)* १. आत्मप्रशंसा करना। २. गर्व की बातें करना। ३. डींग मारना। ४. हर्षित होना। हरखाना। ५. फूल जाना।

पोमावती—*(ना०)* एक छंद।

पोमास—दे० पोमाई।

पोमी—*(ना०)* १. पृथ्वी। २. भग। योनि। ३. गुदा। **गाँड़।**

पोयठो—दे० पोठो।

पोयण—*(न०)* कमल।

पोयणनाभ—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. विष्णु।

पोयणफूल—*(न०)* कमल पुष्प।

पोयणी—*(ना०)* कमलिनी।

पोर—*(अव्य०)* १. गतवर्ष। २. प्रहर।

पोरको—*(वि०)* गतवर्ष का। गतवर्ष संबंधी।

पोरचो—*(न०)* वह कूंडी जिसमें रहँट का पानी गिरता है।

पोरवाळ—*(न०)* १. मारवाड़ी जैनों की एक जाति। एक वणिक जाति। २. इस जाति का व्यक्ति।

पोरवालण—*(ना०)* १. पोरवाल की स्त्री। २. पोरवाल जाति की स्त्री।

पोरवाळी—दे० पोरवालण।

पोरस—*(न०)* १. पौरुष। पराक्रम। २. पुरुषत्व। ३. शूरवीरता। शौर्य। ४. गर्व। ५. सिकंदर का एक सेनापति।

पोरस गरूर—*(वि०)* १. पौरुषाभिमानी। २. साहसी।

पोरसवान—*(वि०)* पराक्रमी। शक्तिवान।

पोरसी—*(ना०)* १. तीन घंटे का समय। पहर। २. पहर दिन चढ़े तब तक का जैनों का चौविहार व्रत।

पोरसो—*(न०)* १. वरदान में प्राप्त स्वर्ण निर्मित एक कल्पित पुरुष-पुतला, जिसके संबंध में कहा जाता है कि उसके मस्तक और हृदय के अतिरिक्त अंगों को काटकर सुपात्रों को दान करते रहने से उसके वे

उपांग पूर्ववत बन जाते हैं। २. एक कल्पित वरद स्वर्णपुरुष, जिसके किसी अंग को काटकर दान करने से पुनःसांग हो जाता है। *(वि०)* १. महादानी। २. क्षमाशील। ३. परम उपकारी। ४. भाग्यशाली।

पोरी—*(ना०)* गुदा।

पोरूंको—दे० पोरको।

पोरो—दे० पोहरो।

पोल—*(ना०)* १. जो अंदर से भरा हुआ नहीं हो। खोखलापना। २. खाली जगह। शून्य स्थान। आकाश। ३. अंधाधूंधी। गोटाला। अव्यवस्था। ४. मिथ्या देखाव।

पोळ—*(ना०)* १. प्रतोली। पोल। **पिरोळ**। २. प्रवेशद्वार।

पोलकी—*(ना०)* हीरे का छोटा चपटा टुकड़ा।

पोलको—*(न०)* स्त्रियों के पहिनने का एक वस्त्र। **कब्जो**।

पो लगावणी—*(मुहा०)* राहगीरों को पानी पिलाने के लिये प्याऊ स्थापित करना।

पोळछ—*(ना०)* १. खेत को बोने लायक बनाने के लिये हल चलाने की क्रिया। २. खेत को खड़ने से उत्पन्न होने वाली उर्वरा शक्ति।

पोळपात—*(न०)* चारण। **प्रोळबारठ**। **बारहठ**।

पोलमपोल—*(अव्य०)* १. पोल ही पोल। बिलकुल पोल। २. अंधेर। ३. अव्यवस्था। ४. अनियंत्रित। ५. बिलकुल पोला।

पोलरी—*(ना०)* १. स्त्रियों की पर की अंगुली का एक गहना। २. दरजी की अंगुली में पहिनने की टोपीनुमा धातु की एक अंगूठी।

पोलाण—*(ना०)* १. पोलापन। २. पोला भाग।

पोलाद—दे० फौलाद।

पोलारियो—*(न०)* सुनारों, ठठरों का एक औजार।

पोळियो—*(न०)* पोल का पहरेदार। दरबान। पौलिया। द्वारपाल।

पोळी—*(ना०)* रोटी के ऊपर की पतली परत। पोलिका।

पोली—*(वि०)* खोखली।

पोलीसी—*(ना०)* नीति।

पोलीसीबाज—*(न०)* चालबाज।

पो लेणो—*(मुहा०)* विश्राम करना। **पोहरो खाणो**।

पोलो—*(वि०)* पोला। खोखला। *(न०)* १. घोड़ों पर सवार होकर सोलठ व लकड़ी के गेंद से खेला जाने वाला एक खेल। २. छड़ी की नोक पर मँढ़ा जाने वाला टोपा या छल्ला।

पोलो हाथ—*(न०)* उदारता।

पोवट-मावट—*(न०)* पौष और माघ महीने में होने वाली वर्षा।

पोवटो—दे० पोवठो।

पोवठो—*(न०)* पौष मास में होने वाली वर्षा।

पोवणियो—*(न०)* १. चमड़े को चमड़े की डोरी से सीने का सूया। २. चमड़े को काट कर बनाई हुई पतली डोरी। *(वि०)* १. पिरोने वाला। २. पिरोने का या पटवागिरी का काम करने वाला। ३. रोटी बनाने वाला।

पोवणो—*(क्रि०)* १. रोटी बनाना। २. पोवाई का काम करना। *(न०)* पोवाई का काम। पोवाई।

पोशाक—*(ना०)* १. पहरवेश। पहिनावा। परिधान। २. पहिनने के वस्त्र। पोशाक।

पोषण—*(न०)* १. पुष्टि। २. पालन। ३. गुजरान। ४. गिजा। ५. खुराक। ६. निभाव।

पोस—*(ना०)* १. चमड़ी। २. पौष महीना। ३. कृपा। ४. कवचधारी योद्धा।

पोसक—दे० पोसणियो।

पोसण—दे० पोषण।

पोसणियो—*(वि०)* पोषण करने वाला। **पोषक**।

पोसणो—*(क्रि०)* १. पोषण करना। २. मदद करना। ३. पोसाना। **पालवणो।** दे० पोसाणो।

पोसत—दे० पोस्त।

पोसती—दे० पोस्ती।

पोसाक—दे० पोशाक।

पोसाण—*(न०)* १. किसी वस्तु को बेचने में होने वाला लाभ। बेचने में हानि नहीं होकर लाभ होने की स्थिति। **पालवणो।** २. अनुकूलता।

पोसाणो—*(क्रि०)* १. माल को बेचने में खर्चे और नफे सहित कीमत प्राप्त होना। २. पोषण होना। गुजर चलना।

पोसाळ—*(न०)* १. पाठशाला। २. पौषधशाला।

पोसाळियो—*(न०)* १. पोसाळ का अध्यापक। २. पोसाळ का छात्र।

पोसावणो—दे० पोसाणो।

पोसो—*(न०)* जैन श्रावकों का एक व्रत। पौषध।

पोस्ट—*(न०)* १. स्थान। २. पद। ओहदा। ३. डाक। **टपाल।** ४. खंभा। थंभा। **थंभो।**

पोस्टआॅफिस—*(न०)* डाकघर। **डाकखानो।**

पोस्टकार्ड—*(न०)* डाकपत्र। **कारड।**

पोस्टमास्टर—*(न०)* डाकघर का बड़ा अधिकारी।

पोस्टमैन—*(न०)* पत्रवाहक। डाकिया। चिट्ठीरसाँ।

पोस्टेज—*(न०)* पोस्ट द्वारा कोई वस्तु भेजने का महसूल। डाकखर्च।

पोस्त—*(न०)* १. अफीम का डोडा। २. अफीम।

पोस्ती—*(वि०)* १. अफीमची। **बंधाणी।** २. सुस्त। काहिल। ३. कामचोर।

पोह—*(न०)* १. प्रभु। स्वामी। २. राजा। ३. पौष का महीना। ४. अरुणोदय। ५. सामर्थ्य। ६. चमड़ी। *(अव्य०)* ढोर को पानी पिलाते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द।

पोहकर—*(न०)* १. पुष्कर तीर्थ। २. सरोवर। ३. हाथी की सूंड की नोक। ४. कमल।

पोहकरनाभ—*(न०)* विष्णु। पुष्करनाभ।

पोहकरी—*(न०)* १. हाथी। पुष्करी। २. कमलिनी।

पोहड़—*(न०)* भाटी क्षत्रियों की एक शाखा।

पोहड़णो—दे० पुहड़णो।

पोहणो—*(क्रि०)* पोषण करना।

पोहतो—*(क्रि० भू० का०)* पहुँचा। पहुँच गया।

पोहप—*(न०)* पुष्प। फूल।

पोहम—*(न०)* पृथ्वी।

पोहमी—*(ना०)* पृथ्वी। भूमि। **जमी।**

पोहमीईस—*(न०)* राजा।

पोहर—*(न०)* १. प्रहर। पहर। २. समय। काल।

पोहराणो—*(क्रि०)* १. विश्राम करना। २. ठहरना। ३. प्रतीक्षा करना। राह देखना। ४. ठहराना।

पोहरादार—*(न०)* पहरेदार।

पोहरायत—*(न०)* पहरेदार।

पोहरावणो—दे० पोहराणो।

पोहरो—*(न०)* १. समय। काल। २. पहरा। चौकीदारी। ३. विश्राम। ४. हिरासत। हवालात।

पोहरो खाणो—*(मुहा०)* विश्राम करना। **विसामो लेणो।**

पोहळाई—दे० पहोळाई।

पोहळो—दे० पहोळो।

पोहवी—*(ना०)* पृथ्वी। धरती। भूमि। **पुहवी। जमी।**

पोहाळ—दे० पोसाळ।

पोहे—*(अव्य०)* ढोर को पानी पिलाते समय किया जाने वाला उद्‌गार।

पोंख—दे० पूंख।

पौंच—दे० पहौंच ।
पौंचणो—दे० पहौंचणो ।
पौंहच—दे० पहौंच ।
पौंहचाळ—*(वि०)* १. पहुँचा हुआ । सिद्ध । २. शूरवीर ।
पौओ—*(न०)* १. किसी पूरे पात्र के चौथाई भाग का पात्र । **पावियो** । २. चौथा भाग ।
पौक—*(न०)* पशुओं के बैठने का हवादार स्थान ।
पौगंड—*(न०)* किशोरावस्था ।
पौचाळो—*(वि०)* शक्तिशाली ।
पौड़—*(न०)* १. घोड़े का पाँव । २. घोड़े के पाँवों की आवाज । ३. घोड़े का सुम ।
पौड़ी—*(ना०)* ऊँट के अगले पैरों में बाँधी जाने वाली रस्सी ।
पौत्र—*(न०)* पुत्र का पुत्र । **पोतो** । **पोतरो** ।
पौत्री—दे० पोती ।
पौष—*(न०)* विक्रम संवत् का दसवाँ महीना ।
पौषध—*(न०)* एक अहोरात्र के लिये चारों आहार और पापपूर्ण प्रवृत्तियों का त्याग । **पोसो** । (जैन)
पौष्टिक—*(वि०)* बल और वीर्य वर्धक । पुष्टिकारक ।
प्याऊ—*(ना०)* प्रपा । **पौसला** ।
प्याज—*(न०)* पलांडु । **कांदो** ।
प्याड—*(न०)* सरदारों के पहिनने का एक स्वर्ण आभूषण ।
प्याद—*(वि०)* पैदल ।
प्याद मात—*(ना०)* शतरंज के खेल में प्यादे से होने वाली शिकस्त ।
प्यादो—*(न०)* १. शतरंज में पैदल सिपाही का मोहरा । प्यादा । २. पैदल । पादाति । ३. पैदल सिपाही ।
प्यार—*(न०)* १. प्रेम । स्नेह । **लाड़** । २. चुम्बन ।
प्यारी—*(वि०)* १. प्रिया । प्रियतमा । २. प्रिय । अच्छी लगने वाली । *(ना०)* पत्नी ।
प्यारो—*(वि०)* १. प्रियतम । २. प्यारा । स्नेही । ३. अच्छा लगने वाला । *(न०)* पति ।
प्याली—*(ना०)* कटोरी ।
प्यालो—*(न०)* प्याला । कटोरा ।
प्यालो पीणो—*(मुहा०)* शराब पीना ।
प्यालो भरणो—*(मुहा०)* हद हो जाना ।
प्यास—*(ना०)* १. प्यास । तृषा । **तिरस** । २. प्रबल इच्छा । कामना । ३. शौक । चस्क । ४. मजा । आनंद ।
प्यासो—*(वि०)* १. प्यासा । तृषित । **तिरसो** । २. इच्छुक ।
प्रईख—*(न०)* चाकर । सेवक ।
प्रउढा—*(ना०)* १. प्रौढ़ा । २. प्रौढ़ा नायिका ।
प्रक—*(न०)* मोर ।
प्रकट—*(वि०)* १. उत्पन्न । आविर्भूत । २. प्रसिद्ध । जाहिर । **प्रगट** । ३. प्रत्यक्ष । ४. स्पष्ट । साफ । खुला । ५. दातार । *(अव्य०)* जाहिर में । सबके सामने । प्रत्यक्ष रूप में ।
प्रकटणो—दे० प्रगटणो ।
प्रकत्त—दे० प्रकृत ।
प्रकर—*(न०)* समूह । ढेर ।
प्रकरण—*(न०)* १. अध्याय । परिच्छेद । २. वर्णन । रचना । ३. प्रधान विषय । बाबत । मामला ४. बनाव । प्रसंग । ५. वाद-विवाद । ६. प्रारंभ । शुरूआत ।
प्रकवाहण—*(न०)* कार्तिकेय ।
प्रकाम—*(न०)* १. आठ सिद्धियों में से एक । २. कामना । ३. इच्छा । *(वि०)* काफी । यथेष्ट ।
प्रकार—*(न०)* १. वर्ग । भेद । किस्म । २. विधि । भाँति । तरह । ३. ढंग । व्यवहार । ४. सादृश्य । समानता । ५. परकोटा । प्राकार ।
प्रकाश—*(न०)* १. उजाला । रोशनी । आलोक । ज्योति । **चानणो** । २. ख्याति । प्रसिद्धि । ३. ग्रंथ का परिच्छेद । ४. धूप ।

आतप । तावड़ो । ५. स्पष्ट । साफ । ६. कान्ति । ७. ज्ञानोदय । ८. सूर्य । ९. आकाश । आभो ।

प्रकाशक—(न०) १. पुस्तक छपवाने वाला व्यक्ति । २. सूर्य । ३. व्याख्याकार । ४. उज्ज्वल । (वि०) प्रकाश करने वाला ।

प्रकाशन—(न०) १. प्रकाशित ग्रंथ । प्रकाशित किया हुआ ग्रंथ । २. प्रकाश में लाने का काम । ३. विष्णु । ४. सूर्य ।

प्रकाशमान—दे० प्रकाशवान ।

प्रकाशवान—(वि०) १. चमकीला । २. ओजस्वी । द्युतिमान् । ३. प्रसिद्ध ।

प्रकास—दे० प्रकाश ।

प्रकासणो—(क्रि०) १. प्रकाशित होना या करना । २. प्रसिद्ध करना या होना । ३. चमकना या चमकाना । ४. बोलना । कहना (व्यंग्य अथवा मान में) । ५. वर्णन करना । ६. स्त्री-पुरुष में आवेशित भूत-प्रेतादि का अपना परिचय देना ।

प्रकांड—(वि०) १. सर्वश्रेष्ठ । २. बहुत बड़ा । ३. विस्तृत । (न०) १. वृक्ष का तना । २. स्कंध । धड़ ।

प्रकीर्ण—(वि०) १. फुटकर । २. बिखरा हुआ । ३. अनेक प्रकार का । (न०) १. प्रकरण । अध्याय । २. फुटकर कविता ।

प्रकीर्णक—दे० प्रकीर्ण ।

प्रकीर्तन—(न०) ऊँचे स्वर से किया जाने वाला कीर्तन ।

प्रकृत—(वि०) १. जिसमें कोई त्रुटि या विकार न हो । २. वास्तविक । असली । ३. जो अपने असली रूप में हो । स्वाभाविक ।

प्रकृति—(ना०) १. किसी वस्तु या व्यक्ति का मूल गुण । स्वभाव । २. वह मूल शक्ति जिसने अनेक रूपात्मक जगत का विकास किया है और जिसका रूप असंख्य दृश्यों में दृष्टिगोचर होता है । कुदरत । ३. पुरुष से भिन्न जगत का मूल उत्पादन । जगत का उत्पादन कारण । ४. वह मूल शब्द जिसमें प्रत्यय लगाये जाते हैं (व्या०) । ५. प्रजा । ६. स्त्री । ७. माता । ८. आमात्य वर्ग । ९. '२५' की संख्या । १०. योनि । ११. लिंग । १२. माया । १३. आद्यशक्ति ।

प्रकोप—(न०) १. अत्यधिक कोप । २. रोग का बढ़ने वाला जोर । ३. वात, पित्त, कफ के विकार से होने वाला रोग । ४. क्षोभ । व्याकुलता ।

प्रक्रत—दे० प्रकृत ।

प्रक्रम—(न०) १. ढंग । तरीका । २. प्रारम्भ । ३. पद्धति ।

प्रक्रमा—(ना०) दे० परिक्रमा ।

प्रक्रिया—(ना०) १. कोई कार्य करने की रीति । कार्य-प्रणाली । पद्धति । २. वह क्रिया जिससे किसी वस्तु का निर्माण होता हो । ३. काम । क्रिया । अनुष्ठान । ४. ब्रह्म, आत्मा, जीव और माया—इनको पहचानने का उपाय । ५. शब्दों को जोड़ने अथवा बनाने की रीति (व्या०) । ६. शब्द प्रयोग की साधन अवस्था (व्या०) । ७. किसी काम के पूरे होने के संबंध में आदि से अंत तक की कार्यवाही । ८. छत्र, चँवर आदि राज्य-चिह्न धारण करना ।

प्रक्षालन—(न०) धोना । पखाळ ।

प्रक्षिप्त—(न०) मूल पुस्तक या लेख में किसी अन्य के द्वारा बढ़ोतरी किया हुआ भाग । क्षेपक । प्रक्षिप्त अंश । (वि०) १. नया बनाकर मिलाया हुआ । २. पीछे से मिलाया । ३. फेंका हुआ । ४. विस्तृत । बढ़ाया हुआ ।

प्रखत—(न०) १. हरिण । मृग । २. मोर । ३. मोती । ४. धन ।

प्रखर—(वि०) १. तीक्ष्ण । पैना । धारदार । २. तीव्र । उग्र । ३. बहुत । अधिक । (न०) १. घोड़े या हाथी का कवच । पाखर । २. खच्चर । ३. कुत्ता ।

प्रखाळ—दे० प्रक्षालन ।

प्रखाळणो—(क्रि०) प्रक्षालन करना । धोना । पखाळणो ।

प्रख्यात—(वि०) १. प्रसिद्ध । विख्यात । २. प्रशंसित ।

प्रख्याति—*(न०)* १. प्रसिद्धि । २. प्रशंसा ।
प्रगट—दे० प्रकट ।
प्रगटणो—*(क्रि०)* १. जाहिर होना । प्रसिद्ध होना । २. प्रकट होना या करना । ३. जन्मना । उत्पन्न होना । ४. निपजना । ५. प्रकाश में आना ।
प्रगड—*(न०)* गरुड़ ।
प्रगति—*(ना०)* आगे बढ़ने का भाव । उन्नति ।
प्रगना—*(ना०)* बुद्धि । प्रज्ञा ।
प्रगळ—दे० प्रबळ ।
प्रगळणो—दे० प्रबळणो ।
प्रगळभ—दे० प्रगल्भ ।
प्रगल्भ—*(वि०)* १. चतुर । २. प्रतिभाशाली । ३. साहसी । ४. उत्साही । ५. निर्भय । ६. प्रत्युत्पन्नमति ।
प्रगाढ—*(वि०)* १. कठोर । २. समर्थ । ३. मजबूत । ४. बहुत ।
प्रगाळ—दे० परगाळ ।
प्रगास—दे० प्रकाश ।
प्रगासणो—दे० प्रकासणो ।
प्रग्या—दे० प्रज्ञा ।
प्रग्याचख—दे० प्रज्ञाचक्षु ।
प्रघळ—*(वि०)* १. अधिक । बहुत । २. पूर्ण । *(अव्य०)* भलीभाँति । अच्छी प्रकार ।
प्रघळणो—दे० परघळणो ।
प्रघळो—दे० प्रबळ ।
प्रघस—*(न०)* राक्षस ।
प्रघात—*(न०)* १. युद्ध । २. हत्या । ३. प्रहार ।
प्रचर—*(न०)* रास्ता । मार्ग ।
प्रचलण—*(न०)* १. किसी वस्तु का बराबर व्यवहार में आते रहना । २. प्रथा । रिवाज । ३. प्रचार ।
प्रचलन—दे० प्रचलण ।
प्रचलित—*(वि०)* १. जो इस समय चल रहा हो । चालू । २. जिसका चलन हो ।
प्रचंड—*(वि०)* १. भयंकर । भयानक । २. बलवान । ३. मोटा । कद्दावर । ४. दृढ़ । ५. बहुत बड़ा । ६. साहसी । वीर । ७. कठिन । *(न०)* १. हाथी । २. ऊँट । ३. एक क्षेत्रपाल ।
प्रचंडता—*(ना०)* प्रचंड होने का भाव ।
प्रचंडा—*(ना०)* शक्ति । दुर्गा ।
प्रचार—*(न०)* १. किसी वस्तु का व्यापक व्यवहार । २. किसी वस्तु को प्रसिद्ध करने व फैलाने का काम । ३. प्रसार । विस्तार । ४. उपयोग । व्यवहार ।
प्रचारक—*(न०)* प्रचार करने वाला ।
प्रचारणो—*(क्रि०)* प्रचार करना ।
प्रचुर—*(वि०)* बहुत । अधिक ।
प्रच्छा—*(ना०)* प्रश्न । सवाल ।
प्रछन्न—*(वि०)* १. गुप्त । २. ढका हुआ । प्रच्छन्न । ३. बनावटी । कृत्रिम ।
प्रछिन—दे० प्रछन्न ।
प्रज—*(ना०)* १. प्रजा । २. समूह । ३. संतान ।
प्रजण—*(न०)* १. संतान । बाल-बच्चे । २. प्रजा । ३. जन्म ।
प्रजणण—*(न०)* १. संतान उत्पन्न करने का काम । २. जनने का काम । ३. जन्म । ४. भग । योनि ।
प्रजळण—*(ना०)* १. जलन । २. अग्नि । प्रज्वलन ।
प्रजळणो—*(क्रि०)* प्रज्वलित होना । जलना । **बळणो । सिळगणो ।**
प्रजळत—*(न०)* अग्नि । आग । **वासदे ।**
प्रजलोग—*(न०)* सर्वसाधारण लोग । प्रजावर्ग ।
प्रजवै—*(न०)* १. प्रजापति । ब्रह्मा । २. राजा ।
प्रजंक—*(न०)* पलंग । पर्यंक । **ढोलियो ।**
प्रजंत—*(अव्य०)* १. तक । लौं । पर्यंत । २. आदि । इत्यादि । **परजंत ।** वगैरह ।
प्रजा—*(न०)* १. जनता । लोक-समूह । २. संतति । औलाद ।

प्रजागर—*(न०)* १. ब्रह्मा । २. विष्णु । ३. कुम्हार ।

प्रजातंत्र—*(न०)* प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलाई जाने वाली शासन व्यवस्था ।

प्रजानाथ—*(न०)* राजा ।

प्रजापत—दे० प्रजापति ।

प्रजापति—*(न०)* १. ब्रह्मा । २. कुम्हार । ३. राजा । ४. सूर्य । ५. पिता । ६. दक्ष प्रजापति । ७. मनु प्रजापति ।

प्रजापालक—*(न०)* राजा ।

प्रजाळणो—*(क्रि०)* प्रज्वलित करना । जलाना । **बाळणो । सिळगावणो ।**

प्रजुळ—*(न०)* क्रोध ।

प्रजेस—*(न०)* राजा ।

प्रजोध—*(वि०)* योद्धा । वीर ।

प्रझाळ—*(ना०)* अग्नि की लपट । ज्वाला ।

प्रज्ञा—*(ना०)* १. सरस्वती । २. ज्ञान । बुद्धि ।

प्रज्ञाचक्षु—*(वि०)* १. नेत्र-विहीन । २. बुद्धि ही जिसकी आँखें हैं । **प्रग्याचख ।**

प्रज्ञावान—*(वि०)* बुद्धिमान ।

प्रण—*(न०)* प्रतिज्ञा । दृढ़ निश्चय । *(वि०)* प्राचीन । पुराना ।

प्रणत—*(वि०)* १. प्रणाम करता हुआ । २. नम्र । दीन । ३. शरणागत । ४. चतुर । *(न०)* १. भक्त । २. सेवक । दास ।

प्रणतपाळ—*(न०)* शरणागत की रक्षा करने वाला ।

प्रणति—*(ना०)* १. प्रणाम । २. विनती ।

प्रणपति—*(न०)* प्रणाम ।

प्रणमणो—*(क्रि०)* नमस्कार करना । प्रणाम करना ।

प्रणम्य—*(वि०)* वंदनीय ।

प्रणय—*(न०)* १. स्त्री-पुरुष का प्रेम । २. प्रेमपूर्वक प्रार्थना । ३. विश्वास । ४. विवाह ।

प्रणव—*(न०)* १. ॐकार । २. बीजमंत्र । ३. परमेश्वर ।

प्रणवणो—दे० प्रणमणो ।

प्रणवमंत्र—*(न०)* ॐकार मंत्र ।

प्रणाम—*(न०)* नमस्कार । प्रणिपात ।

प्रणामी सम्प्रदाय—दे० प्राणनाथ संप्रदाय ।

प्रणाळका—*(ना०)* १. परंपरा । प्रणाली ।

प्रणाळी—*(ना०)* १. परम्परा । पद्धति । प्रणाली । २. प्रथा । परिपाटी । चाल । ३. पानी की नाली । ४. छत पर से पानी गिरने की नाली । परनाळ । ५. मार्ग । ६. नियम ।

प्रणिधान—*(न०)* १. समाधि । २. ध्यान । ३. भक्ति । उपासना । ४. चित्त की एकाग्रता ।

प्रणीत—*(वि०)* १. रचा हुआ । बनाया हुआ । २. लाया हुआ । ३. मंत्रों से संस्कार किया हुआ ।

प्रणेता—*(वि०)* रचने वाला । प्रणयन करने वाला । रचयिता ।

प्रत—*(ना०)* १. किसी ग्रंथ का मूल लेखन । प्रति । २. ग्रंथ की प्रतिलिपि । ३. ग्रंथ । ४. शरह । दर । पड़ता । ५. अदद । नग । संख्या । ६. प्रण । *(अव्य०)* भाव से । भाव पर । दर से । कीमत से । *(वि०)* हरेक । प्रत्येक । प्रति ।

प्रतख—दे० प्रत्यक्ष ।

प्रतग्या—दे० प्रतिज्ञा ।

प्रतच्छ—दे० प्रत्यक्ष ।

प्रतना—*(ना०)* १. सेना । २. हाथी, घोड़ों सहित सेना की निश्चित संख्या । सेना की एक टुकड़ी । ३. युद्ध ।

प्रतपणो—*(क्रि०)* १. राज्य करना । शासन करना । २. खूब तपना । ३. बहुत समय तक राज्य करना । ४. यश प्राप्त करना । यश फैलना । ५. प्रताप बढ़ना ।

प्रतपाळ—*(ना०)* रक्षा ।

प्रतपाळक—दे० प्रतपाळण ।

प्रतपाळण—*(वि०)* १. प्रतिज्ञापालक । २. रक्षक ।

प्रतपाळणो— *(क्रि०)* रक्षा करना।

प्रतमा—*(ना०)* प्रतिमा। मूर्ति।

प्रतमाळ—*(ना०)* कटारी।

प्रतमाळी—दे० प्रतमाळ।

प्रतंग्या—दे० प्रतिज्ञा।

प्रतंचा—*(ना०)* धनुष की डोरी। **पणछ।** प्रत्यंचा।

प्रताप—*(न०)* १. तेज। कांति। २. पौरुष। वीरता। ३. प्रभाव। रोब। आतंक। ४. विख्यात वीरशिरोमणि मेवाड़ के महाराणा प्रताप।

प्रतापवान—*(वि०)* १. प्रतापवाला। प्रतापी। २. पराक्रमी। बलवान। ३. यशस्वी।

प्रतापी—दे० प्रतापवान।

प्रतापीक—दे० प्रतापी।

प्रति—*(ना०)* १. ग्रंथ की नकल। २. ग्रंथ का मूल लेखन। ३. अदद। नग। *(वि०)* प्रत्येक। हरेक। *(अव्य०)* १. ओर। तरफ। २. संबंध में। ३. एक उपसर्ग। जैसे—प्रतिकार। प्रतिबोध आदि। ४. की अपेक्षा। से। मुकाबले में। ५. बराबर का। समान। ६. विरुद्ध। ७. को। प्रति। ८. उलटा। ९. समान।

प्रतिकार—*(न०)* १. विरोध। सामना। २. प्रतिशोध। बदला। ३. उपाय। इलाज।

प्रतिकूळ—*(वि०)* उलटा। विपरीत। विरुद्ध।

प्रतिक्रम—*(न०)* क्रम से उलटा।

प्रतिक्रमण—*(न०)* जैनों की आलोचना विधि। दे० पड़िक्कमणो।

प्रतिक्रिया—*(ना०)* १. विरोधी क्रिया। २. विरुद्ध गति। ३. प्रतिकार। ४. प्रतिशोध। ५. उपाय।

प्रतिक्षण—*(अव्य०)* १. क्षण-क्षण में। पल-पल में। २. निरंतर।

प्रतिगामी—*(वि०)* रूढ़ियों का समर्थक। सुधार का विरोधी। विरोधी।

प्रतिग्या—दे० प्रतिज्ञा।

प्रतिज्ञा—*(ना०)* १. प्रण। वादा। वचन। **पण।** २. सौगंध। शपथ।

प्रतिज्ञा-पत्र—*(न०)* वह पत्र जिसमें प्रतिज्ञा लिखी हो।

प्रतिज्ञापाळ—दे० प्रतिज्ञापालक।

प्रतिज्ञापालक—*(वि०)* प्रतिज्ञा पालन करने वाला।

प्रतिज्ञा भंग—*(न०)* प्रण को तोड़ने का भाव। प्रतिज्ञा भंग कर देना।

प्रतिदिन—*(अव्य०)* हर रोज। नित्य।

प्रतिदुंदी—*(वि०)* प्रतिद्वन्द्वी। शत्रु। मुकाबिलेवाला।

प्रतिधुनि—*(ना०)* प्रतिध्वनि। गूंज।

प्रतिध्वनि—दे० प्रतिधुनि।

प्रतिनिधि—*(न०)* वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के बदले में काम करने को नियुक्त किया जाय। मुखत्यार। २. जनता द्वारा चुना हुआ लोकसभा या विधानसभा का सदस्य। ३. प्रतिमा।

प्रतिपक्ष—*(न०)* १. दूसरा पक्ष। विरोधी पक्ष। २. विरोधी। मुद्दई। प्रतिवादी। ३. शत्रु। *(वि०)* दूसरे पक्ष का।

प्रतिपक्षी—*(वि०)* १. प्रतिपक्ष का व्यक्ति। २. शत्रु। ३. विरोधी।

प्रतिपति—*(न०)* यमराज।

प्रतिपदा—*(ना०)* पक्ष का पहिला दिन। **एकम। पड़वो।**

प्रतिपादन—*(न०)* १. किसी बात का प्रमाणयुक्त कथन। २. प्रमाण।

प्रतिफळ—*(न०)* १. बदले में मिली हुई वस्तु (लाभ)। प्रतिफल। २. बदला। ३. परिणाम।

प्रतिबंध—*(न०)* १. रोक। रुकावट। मनाई। २. विघ्न। **बाधा। बांधो।**

प्रतिबिंब—*(न०)* १. परछाईं। छायाकृति। प्रतिच्छाया। २ दर्पण। शीशा। ३. प्रतिमा। मूर्ति। ४. चित्र।

प्रतिबोध—*(न०)* १. ज्ञान। समझ। २. उपदेश। बोध। ३. जागृति।

प्रतिबोधणो—*(क्रि०)* १. समझाना। २. उपदेशना।

प्रतिभट—*(वि०)* १. वीर। योद्धा। २. मुकाबला करने वाला।

प्रतिभा—*(ना०)* १. असाधारण बुद्धिशक्ति। २. बुद्धि। समझ। ३. सर्जन शक्ति। ४. वीरता। ५. प्रकाश।

प्रतिभाळो—*(वि०)* प्रतिभावाला। प्रतिभावान। बुद्धिशाली।

प्रतिभावान—*(वि०)* प्रतिभावाला। प्रतिभाशाली। तेजस्वी।

प्रतिभाशाली—दे० प्रतिभावान।

प्रतिभू—*(न०)* जामिन।

प्रतिमा—*(ना०)* १. मूर्ति। अनुकृति। २. चित्र। ३. एक अलंकार। (साहित्य)

प्रतिमापूजा—*(ना०)* मूर्तिपूजा।

प्रतिमाळ—दे० प्रतिमाळी।

प्रतिमाळी—*(न०)* कटार। कटारी।

प्रतियोगिता—*(ना०)* १. स्पर्धा। होड़। २. शत्रुता।

प्रतिरूप—*(न०)* १. हूबहू दूसरा रूप। २. अनुरूप आकृति। ३. प्रतिमा।

प्रतिरोध—*(न०)* १. रुकावट। २. विरोध। ३. बाधा। ४. तिरस्कार। ५. मुकाबला।

प्रतिलिपि—*(ना०)* प्रतिलेख। नकल। किसी लेख आदि की हूबहू नकल।

प्रतिलेखन—*(न०)* निर्धारित समय पर वस्त्र पात्र आदि का निरीक्षण (जैन साधु द्वारा)

प्रतिलोम—*(वि०)* १. विपरीत। २. उलटे क्रम वाला। *(न०)* १. उलटा क्रम। २. नीच व्यक्ति।

प्रतिवच—दे० प्रतिवाच।

प्रतिवचन—*(न०)* १. उत्तर। २. प्रत्युत्तर। ३. प्रतिध्वनि।

प्रतिवाच—*(न०)* १. प्रत्युत्तर। २. उत्तर।

प्रतिवाद—*(न०)* १. वाद का उत्तर। २. खंडन। ३. विरोध। ४. उत्तर। जवाब।

प्रतिवादी—*(न०)* १. जिस पर दीवानी दावा किया गया हो। वादी के दावे का प्रतिवाद करने वाला व्यक्ति। मुद्दालेह। मुदायला। २. खंडन करने वाला।

प्रतिशत—*(अव्य०)* फीसदी। प्रत्येक सौ पर।

प्रतिशोध—*(न०)* बदला। प्रतिकार।

प्रतिश्याय—*(न०)* जुकाम। श्लेष्म।

प्रतिष्ठा—*(ना०)* १. इज्जत। आबरू। २. गौरव। मान-मर्यादा। ३. ख्याति। प्रसिद्धि। ४. विधिपूर्वक की जाने वाली देव प्रतिमा की स्थापना। ५. पृथ्वी। ६. आधार। ७. विश्राम।

प्रतिष्ठान—*(न०)* १. अवस्थान। स्थान। जगह। २. साहित्य के रक्षण और उसकी उन्नति के लिये स्थापित संस्था। ३. देव-मूर्ति की स्थापना। ४. पदवी। ५. मूल। जड़। ६. व्रत का उद्यापन। ७. ख्याति। प्रसिद्धि। ८. प्रतिष्ठा। आबरू। ९. कीर्ति। १०. बड़ी-बड़ी औद्योगिक इकाइयाँ।

प्रतिष्ठित—*(वि०)* १. प्रतिष्ठावाला। इज्जतदार। २. जिसकी प्रतिष्ठा (स्थापना) की गई हो। स्थापित।

प्रतिस्पर्धा—*(ना०)* होड़। मुकाबला।

प्रतिहार—*(न०)* १. द्वारपाल। दरबान। २. परिहार क्षत्री। **पड़िहार**। ३. कई जातियों की एक उपशाखा। ४. सामवेद का एक विभाग। ५. सामवेद को गाने वाला। सामवेदी। ६. सामवेद गान का एक अंग। ७. छड़ीदार। ८. पहरेदार।

प्रतिहारी—*(ना०)* स्त्री द्वारपाल। द्वार रक्षिका। २. दासी। प्रतिहारिका। *(न०)* संदेशवाहक पुरुष।

प्रतिहिंसा—*(ना०)* १. बैर चुकाने के लिये की जाने वाली हिंसा। २. बैर का बदला।

प्रतीक—*(न०)* १. अंश। २. अंग। अवयव। ३. आकृति। मूर्तिस्वरूप। ४. बाह्यचिह्न ५. प्रतिमा। मूर्ति। ६. चिह्न। ७. उप-

लक्षण। ८. अपूर्ण वाक्य या पद के घटते शब्दों का पता लगाकर पूरा करना। ९. मुख। *(वि०)* १. सूचक। ज्ञापक। २. प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. विलोम। उलटा।

प्रतीक्षा—*(ना०)* १. इन्तजार। राह। बाट। २. आशा। ३. अपेक्षा।

प्रतीचि—*(ना०)* पश्चिम दिशा। **आथुण**।

प्रतीत—*(ना०)* १. प्रतीति। विश्वास। भरोसा। २. वचन की प्रामाणिकता। ३. आभास। देखाव। ४. विदित। जाना हुआ। ५. विख्यात।

प्रतीतणो—*(क्रि०)* विश्वास करना। भरोसा करना।

प्रतीति—दे० प्रतीत।

प्रतीप—*(वि०)* १. विरुद्ध। प्रतिकूल। २. हठी। *(न०)* एक अर्थालंकार।

प्रतीर—*(न०)* तट। किनारा।

प्रतोख—*(न०)* प्रसन्नता।

प्रतोखणो—*(क्रि०)* १. प्रसन्न होना। खुश होना। २. खुश करना।

प्रतोद—*(ना०)* बैलों को हाँकने की छड़ी। **आर**।

प्रतोळी—*(न०)* १. पौली। प्रतोळिका। पिरोळ। २. गली। ३. दुर्गद्वार।

प्रत्यक्ष—*(वि०)* १. आँखों के सामने वाला। चक्षुर्ग्राह्य। २. जिसका ज्ञान इंद्रियों के द्वारा हो। इंद्रियग्राह्य। ३. स्पष्ट। खुला। *(न०)* चार प्रकार के प्रमाणों में से एक, जिसका आधार देखी या जानी हुई बातों पर होता है। *(अव्य०)* आँखों के सामने। सामने।

प्रत्यय—*(न०)* १. वे शब्द अथवा शब्दांश जो किसी मूल धातु, संज्ञा या सर्वनाम के अंत में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन करने या अर्थ में विशेषता उत्पन्न करने के लिये लगाये जायँ *(व्या०)*। २. विश्वास। प्रतीति। ३. ज्ञान। ४. विचार। ५. कारण। हेतु। ६. लक्षण। चिह्न। ७. आवश्यकता। ८. राजस्थानी भाषा का 'णो' प्रत्यय, जो धातु में लगकर राजस्थानी का 'साधारण क्रिया' का रूप बनाता है। यथा—कर + णो = करणो।

प्रत्यंचा—दे० पणछ।

प्रत्याक्रमण—*(न०)* जवाबी हमला।

प्रत्यालोचना—*(ना०)* १. आलोचना की आलोचना। आलोचना का उत्तर। २. विरुद्ध टीका।

प्रत्युत्तर—दे० पड़ूतर।

प्रत्यूष—*(न०)* १. सूर्य। २. प्रभात।

प्रत्येक—*(वि०)* १. हरेक। २. अलग-अलग। ३. एक बार में एक।

प्रथक—दे० पृथक।

प्रथम—*(वि०)* १. पहला। २. मुख्य। प्रधान। २. सर्वश्रेष्ठ। *(अव्य०)* १. प्रारंभ में। शुरू में। २. पहले से।

प्रथम कारक—*(न०)* कर्त्ता कारक *(व्या०)*।

प्रथम पुरुष—*(न०)* बोलने वाले पुरुष का बोध कराने वाला सर्वनाम। उत्तम पुरुष *(व्या०)*। (राजस्थानी भाषा में प्रथम पुरुष के बोधक ये शब्द हैं—**मैं, म्हूं, हूं, हों**—ये प्रथम पुरुष 'मैं' अर्थ के सूचक एकवचन रूप हैं। **अमां, हमां, म्हे, म्हां**—ये प्रथम पुरुष के 'हम' अर्थ के सूचक बहुवचन रूप हैं।)

प्रथमा—*(ना०)* १. पहली विभक्ति। २. कर्त्ता कारक *(व्या०)*।

प्रथमाण—*(ना०)* १. सृष्टि। संसार। २. पृथ्वी। *(अव्य०)* १. पहले-पहल। २. आदि में।

प्रथमाद—दे० प्रथमाण।

प्रथमादि—दे० प्रथमाण।

प्रथमी—*(ना०)* पृथ्वी।

प्रथमेण—*(अव्य०)* १. पहले ही। २. पहले-पहल। ३. पृथ्वी पर। *(ना०)* पृथ्वी।

प्रथळ—दे० प्रथुळ।

प्रथवी—दे० प्रथमी।

प्रथा—*(ना०)* १. रीति । २. रिवाज । प्रणाली । **धारो ।**

प्रथित—*(वि०)* प्रसिद्ध । विख्यात ।

प्रथी—*(ना०)* पृथ्वी । **जमी । धरती ।**

प्रथीनाथ—*(न०)* पृथ्वीनाथ । राजा ।

प्रथीप—*(न०)* राजा ।

प्रथु—*(न०)* १. विष्णु । २. सूर्य । दे० पृथुळ ।

प्रथुळ—*(वि०)* १. बड़ा । विस्तृत । पृथुल । २. स्थूल । **जाडो ।** ३. अधिक । खूब ।

प्रद—*(वि०)* देने वाला । दायक ।

प्रदक्षिणा—*(ना०)* किसी पूज्य व्यक्ति या देवमूर्ति के सम्मानार्थ उसे दाहिनी ओर रख कर के उसके चारों ओर फिरना । परिक्रमा । **फेरी । भमती ।**

प्रदखणा—दे० प्रदक्षिणा ।

प्रदत्त—*(वि०)* दिया हुआ ।

प्रदर—*(न०)* १. एक स्त्री रोग । योनि रोग । २. दरार । ३. बाण । तीर ।

प्रदर्शक—*(न०)* १. प्रदर्शन करने वाला । २. मार्गदर्शक । गुरु ।

प्रदर्शन—*(न०)* १. दिखलाने का कार्य । २. प्रदर्शनी ।

प्रदर्शनी—*(ना०)* अनेक प्रकार की वस्तुओं को दिखाने या बेचने के लिए एक स्थान पर की जाने वाली सजावट । नुमाइश ।

प्रदाक—*(न०)* १. साँप । बिच्छु । **अहरू ।**

प्रदान—*(न०)* १. सहायता आदि के लिए स्वीकृत धन । अनुदान । २. दान । ३. विवाह ।

प्रदायक—*(वि०)* देने वाला ।

प्रदीप—*(न०)* दीपक । **दीवो ।**

प्रदुमन—*(न०)* १. श्रीकृष्ण का बड़ा पुत्र । प्रद्युम्न । २. कामदेव ।

प्रदेश—*(न०)* १. देश का एक भाग । प्रान्त । २. स्थान । जगह । ३. देश । मुल्क । ४. अंग ।

प्रदोष—*(न०)* १. सायंकाल । संध्या । गोधूलि वेला । २. भारी दोष । बड़ा अपराध । ३. पक्ष के अंत में (प्रायः त्रयोदशी को) किया जाने वाला एक शिव-व्रत, जिसमें शिव-पूजन करके संध्या समय भोजन किया जाता है ।

प्रद्योत—*(ना०)* १. किरण । २. चमक । दीप्ति ।

प्रद्योतन—*(न०)* सूर्य । सूरज ।

प्रधान—*(न०)* १. राज्य का मुख्य पदाधिकारी । प्रधान मंत्री । २. सर्वोच्च अधिकारी । ३. मुखिया । पंच । ४. नेता । ५. किसी संस्था का मुख्य अधिकारी । ६. संसार का उपादान कारण । ७. ईश्वर । ८. सेनापति । *(वि०)* १. सर्वोच्च । २. मुख्य । ३. श्रेष्ठ ।

प्रधानगी—*(ना०)* प्रधान का पद ।

प्रधाव—*(न०)* आक्रमण ।

प्रपंच—*(न०)* १. जगत । दुनिया । २. दुनिया का जंजाल । भवजाल । ३. माया । ४. माया का विस्तार । ५. छल, धोखा । ६. झमेला । **बखेड़ा । कावतरो ।** ७. आडम्बर । ढोंग । **फितूर ।** ८. उपाय । ९. विस्तार ।

प्रपंचक—दे० प्रपंची ।

प्रपंची—*(वि०)* १. प्रपंच करने वाला । २. ढोंगी । ३. कपटी । छली ।

प्रपा—*(न०)* प्याऊ । पौसला ।

प्रपात—*(न०)* १. झरना । २. पतन । अवनति ।

प्रपिता—*(न०)* दादा । पिता का पिता ।

प्रपितामह—*(न०)* परदादा । **पड़दादा ।**

प्रपौत्र—*(न०)* १. पुत्र का पोता । परपोता । **पड़पोतो ।**

प्रपौत्री—*(ना०)* १. पुत्र की पोती । परपोती । **पड़पोती ।**

प्रफुल—*(वि०)* १. खिला हुआ । प्रफुल्ल । विकसित । २. प्रसन्न ।

प्रफूलणो—*(क्रि०)* १. प्रफुल्लित होना । २. खिलना ।

प्रब—दे० पर्व ।

प्रबळ—*(वि०)* १. महा बलवान । प्रबल । २. महान । ३. घोर ।

प्रबंध—*(न०)* १. इंतजाम । बंदोबस्त । २. व्यवस्था । ३. आयोजन । ४. बँधा हुआ सिलसिला । ५. इतिहास और दंतकथा मिश्रित लेख या ग्रंथ । ६. गद्य संबद्ध पद्य-ग्रंथ । ७. काव्य-भेद । ८. अध्याय । ९. प्रण ।

प्रबुद्ध—*(वि०)* १. बुद्धिमान । चतुर । २. ज्ञानी । ३. जाग्रत । जगा हुआ ।

प्रबुध—*(वि०)* १. जानकार । दे० प्रबुद्ध ।

प्रबोध—*(न०)* १. ज्ञान । २. तत्त्वज्ञान । ३. उपदेश । ४. जागृति । ५. **सावचेती** । सावसानी । ६. चेतावनी । ७. सांत्वना । दिलासा ।

प्रबोधक—*(वि०)* १. उपदेश करने वाला । २. ज्ञान देने वाला । ३. चेतावनी देने वाला । सावधान करने वाला । ४. आश्वासन देने वाला ।

प्रबोधणो—*(क्रि०)* १. उपदेश करना । २. पाठ पढ़ाना । सिखाना । ३. सांत्वना देना । ४. जगाना । ५. सावधान करना । चेतावनी देना ।

प्रबोधन—दे० प्रबोध ।

प्रबोधनी ग्यारस—*(ना०)* कार्तिक शुक्ला एकादशी । **देव ऊठणी ग्यारस । देवठणी ।**

प्रभ—*(न०)* १. प्रभु । ईश्वर । २. पति । स्वामी । ३. प्रभा । *(वि०)* प्रभाववाला । कांतिवाला । तेजस्वी ।

प्रभण—*(न०)* कथन । कहना ।

प्रभणो—*(क्रि०)* १. कहना । २. बोलना । ३. वर्णन करना । ४. उपदेश करना ।

प्रभत—*(न०)* १. यश । कीर्त्ति । २. प्रभुता ।

प्रभति—*(अव्य०)* १. इत्यादि । २. सर्वथा । *(ना०)* प्रभुता ।

प्रभव—*(न०)* १. जन्म । उत्पत्ति । २. उत्पत्ति स्थान । उद्गम स्थल । निकास । ३. नदी का उद्गम स्थान । ४. शक्ति । पराक्रम । ५. उपादान कारण । ६. सृष्टि का मूल कारण । ७. विष्णु । ८. शिव । ९. सृष्टि । १०. एक संवत्सर का नाम ।

प्रभवण—*(न०)* १. उत्पत्ति । २. जन्म । ३. होना ।

प्रभवणो—*(क्रि०)* १. होना । २. उत्पन्न होना । जन्मना ।

प्रभवति—*(वि०)* होने वाला ।

प्रभव-भाण—*(वि०)* सूर्यवंशी ।

प्रभंग—*(न०)* नाश । संहार

प्रभंजन—*(न०)* १. शिव । महादेव । २. पवन । वायु । ३. वातचक्र । **भूतेळो । भूळियो** । ४. नाश । भांगफोड़ । **तोड़-फोड़** ।

प्रभंजनपूत—*(न०)* हनुमान ।

प्रभंजनसुत—*(न०)* हनुमान ।

प्रभा—*(ना०)* १. कांति । तेज । आभा । २. सूर्यबिम्ब । ३. सूर्य की पत्नी । ४. दुर्गा । ५. कुबेर की नगरी । ६. प्रभुता । ७. कीर्ति । यश । ८. लक्ष्मी । ९. आभूषण ।

प्रभाउ—दे० प्रभाव ।

प्रभाकर—*(न०)* १. सूर्य । २. चंद्र । ३. अग्नि । ४. समुद्र । ५. शिव ।

प्रभात—*(न०)* प्रातःकाल । सवेरा । **सवार** ।

प्रभातकाळ—*(न०)* १. सूर्योदय होने का समय । २. सूर्योदय ।

प्रभातनाम—*(न०)* जिसका नाम प्रभात समय लिया जाय । पुण्यनाम । पुण्यपुरुष का नाम ।

प्रभातफेरी—*(ना०)* १. सूर्योदय के पूर्व साधु, ब्राह्मण इत्यादि के द्वारा लगाई जाने वाली, भिक्षा की फेरी । २. सूर्योदय के पूर्व हरि संकीर्तन करने वालों की फेरी । ३. सूर्योदय के पूर्व किसी उद्देश्य विशेष के प्रचारार्थ लोगों को नारे आदि लगाकर लगाई जाने वाली फेरी ।

प्रभातवेळा—दे० प्रभातकाळ ।

प्रभातियो—*(न०)* प्रभात संबंधी । प्रभात का ।

प्रभातियो तारो—*(न०)* प्रभात में उगने वाला शुक्र का तारा।

प्रभाती—दे० परभाती।

प्रभानाथ—*(न०)* सूर्य। दिनकर। **सूरज।**

प्रभामंडळ—*(न०)* १. देवमूर्ति के चारों ओर का दीप्तिमंडल। २. तेजस्वी पुरुषों के चारों ओर दिखाई देने वाला प्रकाश का घेरा। ३. पूज्य महात्माओं, महन्तों तथा राजाओं की सवारी के साथ रहने वाला रोप्य या स्वर्णमंडित सूर्य-चंद्र की आकृति का एक उपकरण। **भामंडळ। किरणियो।**

प्रभाव—*(न०)* १. तेज। प्रताप। २. शक्ति। ३. महिमा। ४. गुण। असर। ५. दबाव। ६. रोब। ७. विस्तार। ८. फल। ९. प्रादुर्भाव।

प्रभावती—*(न०)* १. एक राग। २. एक छंद।

प्रभावना—*(ना०)* १. किसी विशेष प्रसंग पर बतासे आदि बाँटने की एक धार्मिक प्रथा (जैन)। २. प्रभाव। ३. प्रादुर्भाव। ४. भावना। इच्छा।

प्रभावशाळी—*(वि०)* १. प्रभाव वाला। रोब वाला। तेजस्वी। २. गुणकारण। असर करने वाला।

प्रभावंक—*(न०)* तलवार। खड्ग। **खांडो।**

प्रभास—*(वि०)* चमकीला। *(ना०)* चमक। ज्योति। *(न०)* सौराष्ट्र का एक तीर्थ।

प्रभासक्षेत्र—*(न०)* प्रभास पाटन के आस-पास का काठियावाड़ का प्रदेश।

प्रभासखंड—दे० प्रभासक्षेत्र।

प्रभासणो—*(क्रि०)* १. दिखाई देना। २. प्रकाशित होना।

प्रभासतीर्थ—*(न०)* सौराष्ट्र का एक प्राचीन प्रसिद्ध तीर्थ स्थान। सोमतीर्थ। सोमनाथ पाटन।

प्रभास पाटण—*(न०)* सौराष्ट्र में समुद्र के किनारे पर आया हुआ सोमनाथ महादेव का अति प्राचीन और प्रख्यात तीर्थ स्थान। सोमनाथ पट्टन। **देवपट्टन। सोमयो।**

प्रभिन्न—*(न०)* मतवाला हाथी। *(वि०)* अलग किया हुआ।

प्रभु—*(न०)* १. परमेश्वर। भगवान। २. स्वामी। मालिक। ३. राजा। ४. सूर्य।

प्रभुता—*(ना०)* १. अधिकार। आधिपत्य। प्रभुत्व। २. हुकूमत। शासनाधिकार। ३. महत्त्व। गौरव। ४. वैभव। ऐश्वर्य। ५. मालिकी। **धणीपणो। धणियापणो।** ६. ईश्वरता। ७. यश। कीर्ति।

प्रभुताई—दे० प्रभुता।

प्रभूत—*(वि०)* १. उत्पन्न। उद्भूत। २. प्रचुर।

प्रभृति—*(अव्य०)* इत्यादि। वगैरह।

प्रभेद—*(न०)* १. विशेष भेद। २. **पेटाभेद।** ३. भेद। भिन्नता। ४. हाथी की कनपटियों से मद चूना।

प्रम—दे० परम। *(वि०)* पूर्ण। *(न०)* १. परमेश्वर। परब्रह्म। २. आदि। ३. पूर्ण। ४. शून्य।

प्रमगुरु—*(न०)* परमगुरु।

प्रमजोत—*(ना०)* परम ज्योति।

प्रमत्त—*(वि०)* १. बहुत अधिक मतवाला। २. उन्मत्त। पागल। ३. असावधान। लापरवाह।

प्रमथ—*(न०)* १. शिवजी का एक गण। २. घोड़ा। ३. हत्या। वध।

प्रमथनाथ—*(न०)* शिव। महादेव।

प्रमदा—*(ना०)* १. तरुण सुन्दर स्त्री। २. पत्नी। ३. युवती। ४. रात्रि। **रात।**

प्रममंडप—*(न०)* देवमंदिर। देवालय।

प्रमळ—दे० परमळ।

प्रमा—*(ना०)* १. लक्ष्मी का एक नाम। २. यथार्थज्ञान। भ्रांतिरहित ज्ञान। ३. माप। ४. श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी।

प्रमाण—*(न०)* १. यथार्थ ज्ञान का साधन। **पुरावो। सबूत।** २. निश्चय। ३. सत्यता। ४. वह बात जो दूसरी बात को सिद्ध करती हो। ५. सीमा। अवधि। ६. माप। ७.

मात्रा । ८. भरोसा । ठिकाना । ९. आदेश । १०. उदाहरण । दृष्टांत । ११. स्वीकार । मान्य । १२. प्रकाश । भाँति । १३. सरोवर । १४. एक अलंकार । *(वि०)* १. मान्य करने योग्य । सत्य । २. नक्की । ३. दृढ़ । *(अव्य०)* १. अवधि या सीमासूचक शब्द । तक । पर्यंत । २. अनुसार ।

प्रमाण करणो—*(मुहा०)* १. स्वीकार करना । अंगीकार करना । २. सही मानना ।

प्रमाण चढणो—*(मुहा०)* १. पूरा होना । पार जाना । २. स्वीकार होना । ३. आज्ञा मानना । आज्ञा का पालन । ४. वचन पालन करना ।

प्रमाणणो—*(क्रि०)* १. सत्य मानना । २. प्रमाण के रूप में मानना । ३. सिद्ध करना । ४. स्वीकार करना ।

प्रमाणपत्र—*(न०)* लिखा हुआ वह पत्र या लेख जो किसी बात का प्रमाण हो । पद, योग्यता आदि का किसी अधिकारी द्वारा दिया गया सबूत पत्र । सर्टिफिकेट ।

प्रमाणसर—*(अव्य०)* १. **मापसर** । परिमाण के अनुसार । २. यथाप्रमाण ।

प्रमाणिक—*(वि०)* १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो । २. मानने योग्य । ३. सत्य । ४. ईमानदार । ५. प्रतिष्ठित । आबरू वाला । **आबरूदार** ।

प्रमाणिकता—*(ना०)* १. सच्चाई । २. नेकी । ईमानदारी । ३. सद्वृत्ति ।

प्रमाणै—*(अव्य०)* १. परिमाण में । २. मुआफिक । ३. माप के अनुसार । माप के बराबर । ४. प्रकार । ढंग से । विधि से ।

प्रमाद—*(न०)* १. भ्रम । भ्रांति । २. गफलत । ३. आलस । ४. मन की दुर्बलता । ५. नशा । उन्माद । ६. अविवेक । ७. गर्व । ८. भूलचूक ।

प्रमादी—*(वि०)* १. आलसी । २. पागल । उन्मादी । ३. भ्रांत । ४. अविवेकी । ५. बेपरवाह । ६. कर्त्तव्यभ्रष्ट । ७. अभिमानी ।

प्रमाळ—दे० प्रतमाळ ।

प्रमाली—दे० प्रतमाळ ।

प्रमीस—*(न०)* १. परम ईश । परमात्मा । २. विष्णु ।

प्रमुख—*(वि०)* १. प्रधान । मुख्य । खास । २. प्रथम । ३. श्रेष्ठ । *(न०)* १. अध्यक्ष । २. सभापति ।

प्रमुद—दे० प्रमुदित ।

प्रमुदित—*(वि०)* प्रसन्न । हर्षित ।

प्रमूकणो—*(क्रि०)* १. छोड़ना । २. भेजना । ३. रखना । ४. प्रमुक्त करना ।

प्रमेय—*(न०)* १. जिसका ज्ञान प्रमाण द्वारा किया जा सके । २. जो नापा जा सके । ३. प्रमाणों द्वारा जानने योग्य वस्तु । ४. प्रमाण उपस्थित कर सिद्ध की जाने वाली वस्तु । *(वि०)* जो प्रमाण का विषय हो ।

प्रमेसर—*(न०)* परमेश्वर ।

प्रमेह—*(न०)* वीर्य तथा शरीर की अन्य धातुओं का मूत्रमार्ग द्वारा निकलने का एक रोग । **परमियो** ।

प्रमोद—*(न०)* १. आनंद । हर्ष । २. सुख ।

प्रमोदणो—*(क्रि०)* १. आनंद देना । २. हर्षित करना । हरखाना ।

प्रमोहन—*(न०)* मोहित करने की क्रिया ।

प्रयत्न—*(न०)* १. प्रयास । कोशिश । २. तजवीज । ३. परिश्रम ।

प्रयाग—*(न०)* एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो इलाहाबाद में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम स्थान पर आया हुआ है । त्रिवेणी संगम का तीर्थस्थान । तीर्थराज ।

प्रयागवड़—*(न०)* प्रयाग का प्रसिद्ध वटवृक्ष । अक्षयवट ।

प्रयाण—*(न०)* १. प्रस्थान । २. जाना । मरण । ३. युद्ध यात्रा ।

प्रयाणकाळ—*(न०)* मरण समय ।

प्रयाणो—दे० प्रयाण ।

प्रयास—*(न०)* १. मेहनत । श्रम । २. प्रयत्न । ३. प्रकाश ।

प्रयोग—(न०) १. उपयोग। व्यवहार। २. तांत्रिक उपचार। ३. साधना। अनुष्ठान। ४. अभिनय। ५. चमत्कार। ६. रोग का उपचार।

प्रयोगशाला—(ना०) वैज्ञानिक प्रयोग करने का विशिष्ट स्थान। लेबोरेटरी।

प्रयोजन—(न०) १. विचार। इरादा। २. आवश्यकता। ३. उद्देश्य। ४. अभिप्राय। ५. उपयोग। ६. काम। कार्य। ७. मतलब। अर्थ। ८. मृतक-भोज। ९. भोज।

प्ररूपणो—(क्रि०) व्याख्या करना। समझाना।

प्रळय—(न०) १. विनाश। २. कल्प के अंत में जगत का होने वाला लय। सृष्टि विनाश। ३. साहित्य में एक सात्विक अनुभाव।

प्रळयकार—(न०) भयंकर विनाश।

प्रळयकारी—(वि०) १. नाश करने वाला। २. प्रलय के समान।

प्रळयकाळ—(न०) १. सृष्टि के नाश होने का समय। २. बहुत भयंकर आफत का समय।

प्रलयमेघ—(न०) १. प्रलयकाल की घोर वर्षा। २. प्रलय करने वाला मेघ।

प्रलयंकर—(वि०) १. भयंकर। २. प्रलय करने वाला। (न०) रुद्र। शिव।

प्रलयंकरी—(ना०) दुर्गा। चंडी।

प्रलंब—(वि०) १. लंबा। २. लटकता हुआ। ३. टँगा हुआ। ४. शिथिल। (न०) १. गले में पड़ी हुई पुष्प माला। २. कुच। स्तन। ३. एक दैत्य।

प्रलाप—(न०) १. शीत ज्वर में रोगी की बड़बड़ाहट। २. आवेश में असंबद्ध बोलना। ३. व्यर्थ भाषण। बकवाद। ४. विलाप।

प्रळै—दे० प्रळय।

प्रळैकार—दे० प्रळयकार।

प्रळैकाळ—दे० प्रळयकाल।

प्रळैझळ—(ना०) प्रलयाग्नि। प्रलयज्वाला।

प्रळैदातार—(न०) महादानी।

प्रलोक—(न०) परलोक।

प्रलोप—(न०) १. लोप। २. अदृश्य।

प्रलोभ—(न०) अत्यधिक लोभ।

प्रलोभन—(न०) १. आकर्षण। मोह। २. अतिशय लोभ। ३. रिश्वत। घूस।

प्रलोयणो—(क्रि०) १. जानना। २. जाना जाना। ३. पुनः आलोचना करना। ४. प्रलोच।।

प्रवक्ता—(न०) प्रवचन करने वाला। भाषणकर्ता।

प्रवचन—(न०) १. उत्तम वचन। २. उपदेश। प्रबोधन। ३. धर्मोपदेश। ४. भाषण। व्याख्यान। ५. विवेचन।

प्रवदणो—(क्रि०) १. जोर से बोलना। २. घोषणा करना। ३. शर्त लगाना। ४. बोलना। **वदणो। कहणो।**

प्रवर—(वि०) १. श्रेष्ठ। २. मुख्य। (न०) १. विशेषज्ञ। २. गोत्र। ३. गोत्र प्रवर्तक ऋषि। ४. अंगुली का पोर। ५. गोत्र में उत्पन्न श्रेष्ठ पुरुष। ६. वंशज। ७. वंश। कुल। ८. सेनापति। ९. उम्र और योग्यता में बड़ा।

प्रवरतणो—(क्रि०) १. होना। २. आरंभ होना। ३. प्रचलित होना। ४. प्रचार होना। फैलना। ५. प्रचलित करना।

प्रवर्त्त—(न०) आरंभ।

प्रवर्त्तक—(वि०) १. प्रारंभ करने वाला। २. प्रारंभ कराने वाला। ३. किसी सम्प्रदाय को चलाने वाला। ४. उत्साह देने वाला। ५. आविष्कारक। ६. संस्थापक।

प्रवर्तन—(न०) १. कार्यारंभ। २. प्रचलित करना। ३. नये सिरे से चलाना।

प्रवंग—(न०) घोड़ा। अश्व।

प्रवंचक—(वि०) ठग। धूर्त। धोखेबाज।

प्रवंचना—(ना०) १. छल। कपट। २. ठगाई। लुच्चाई। ३. धोखेबाजी।

प्रवंची—दे० प्रवंचक।

प्रवाड़मल—*(न०)* १. अद्भुत कर्म वीर। २. विजयी वीर। ३. यशस्वी वीर। ४. यशस्वी वीरों में अग्रणी।

प्रवाड़ो—दे० पवाड़ो।

प्रवाणैं—दे० प्रमाणैं।

प्रवाद—*(न०)* १. जनश्रुति। अफवाह। २. बातचीत। ३. अपवाद। ४. बदनामी। ५. कहावत। ६. वाद-विवाद।

प्रवाळ—*(न०)* मूंगा। प्रवाल। **मूंगियो।**

प्रवाळी—*(न०)* नवीन पत्ता। कोंपल। **कूंपळ।** *(वि०)* प्रवाल के समान लाल रंग का।

प्रवास—*(न०)* १. मुसाफरी। यात्रा। २. देशाटन। ३. स्वदेश छोड़कर परदेश में जा बसना। परदेशवास। ४. देश निकाला।

प्रवासी—*(वि०)* १. परदेश में रहने वाला। २. यात्री। मुसाफिर।

प्रवाह—*(न०)* १. विच्छेदाभाव। २. क्रम। चलता क्रम। ३. बहता हुआ पानी। ४. कार्य का जारी रहना। कार्य की गति मानता। ५. गति। ६. दान। ७. नेग। ८. इनाम। **परवाह।** ९. नदी।

प्रवाहणो—*(क्रि०)* बहाना।

प्रवाही—*(ना०)* १. प्रवाहशील पदार्थ। रस। २. तरल द्रव्य। *(वि०)* बहने वाला।

प्रवित—दे० पवित्र।

प्रविता—*(ना०)* १. सरस्वती। २. त्रिपुरा देवी।

प्रविदारण—*(न०)* १. युद्ध। २. मारना।

प्रवीण—*(वि०)* १. कुशल। निपुण। २. बुद्धिमान। ३. सुंदर। ४. गायक।

प्रवीत—दे० पवित्र।

प्रवीर—*(न०)* महान योद्धा। वीर पुरुष। वीर वर।

प्रवृत—*(वि०)* १. किसी बात की ओर झुका हुआ। २. काम में गुंथा हुआ। ३. काम में रुका हुआ। ४. प्रस्तुत। तैयार। तत्पर। ५. शुरू किया हुआ।

प्रवृत्ति—*(ना०)* १. लोक-व्यवहार। २. धंधा। व्यवसाय। ३. संसार के धंधों में लीन होना। ४. सांसारिक विषयों में लगा रहना। ५. निवृत्ति से उलटा व्यवसाय। आत्मा की बहिर्मुख वृत्ति। ६. मन, वचन और काया का व्यापार। ७. प्रवाह।

प्रवेश—*(न०)* १. भीतर जाना। घुसना। २. पहुँच। गति। ३. किसी विषय का जानकारी। ४. स्कूल, कॉलेज आदि में नियमित रूप से जाने की शुरुआत। भरती। एडमिशन। ५. द्वार। ६. आगमन। ७. उपस्थिति।

प्रवेशक—*(वि०)* प्रवेश करने वाला।

प्रवेश द्वार—*(न०)* भीतर जाने का दरवाजा। **डोढी।**

प्रवेस—दे० प्रवेश।

प्रवेसणो—*(क्रि०)* १. प्रवेश करना। भीतर जाना। घुसना। **पैसणो।** २. घुसाना। **पैसाड़णो।**

प्रव्रज्या—*(ना०)* १. घर-गृहस्थी छोड़कर संन्यासी बनने की दीक्षा। संन्यस्त दीक्षा। २. दीक्षा। ३. चतुर्थाश्रम। संन्यासाश्रम। ४. विदेश गमन।

प्रशस्त—*(वि०)* १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. भव्य। ३. लंबा-चौड़ा।

प्रशस्त वक्ष—*(वि०)* १. साहसी। वीर। २. चौड़ी छाती वाला।

प्रशस्ति—*(ना०)* १. किसी को पत्र लिखते समय शुरुआत में लिखा जाने वाला प्रशंसा सूचक वाक्य। **ओपमा।** २. ग्रंथ के आदि या अंत में (अथवा उसके अध्यायों के अंत में) किया जाने वाला कर्ता का नाम, विषय और काल आदि का उल्लेख। ३. प्राचीन समय के वे आज्ञापत्र, जो चट्टान या ताम्रपत्र पर खुदे हुए होते थे। ४. प्रस्तर लेख। ५. प्रशंसा। स्तुति। **वखाण।** ६. श्रेष्ठता ७. प्रशंसा काव्य।

प्रशंसा—*(ना०)* गुण-वर्णन। तारीफ। **वखाण।**

प्रशासन—*(न०)* राज्य के परिचालन का संबंध। राज्य चलाने की व्यवस्था।

प्रश्न—*(न०)* सवाल। पूछने की बात। पृच्छा।

प्रश्नपत्र—*(न०)* वह पत्र जिस पर परीक्षा के लिये विद्यार्थियों से किये जाने वाले प्रश्न लिखे रहते हैं। क्वेश्चन पेपर।

प्रश्नपत्री—*(ना०)* जन्म-लग्न के अभाव में प्रश्न के मुहूर्त्त पर तैयारी की जाने वाली जन्मपत्री। प्रश्न के द्वारा भविष्य कथन संबंधी पुस्तक। प्रश्नोत्तरी।

प्रश्नोत्तर—*(न०)* प्रश्न और उसका उत्तर। सवाल-जवाब।

प्रश्नोत्तरी—दे० प्रश्नपत्री। एक काव्य प्रकार।

प्रसण—*(न०)* १. पिशुन। शत्रु। २. प्रश्न। *(वि०)* प्रसन्न।

प्रसणाण—*(न०)* शत्रुगण।

प्रसत—*(वि०)* प्रशस्त। *(ना०)* बूंद।

प्रसन—*(न०)* प्रश्न। सवाल। *(वि०)* प्रसन्न। खुश।

प्रसनीग्रभ—दे० पृश्निगर्भ।

प्रसन्न—*(वि०)* १. खुश। आह्लादित। २. संतुष्ट। ३. अनुकूल। ४. स्वच्छ। निर्मल।

प्रसन्नता—*(ना०)* १. खुशी। हर्ष। २. संतोष। तुष्टि। ३. स्वच्छता। निर्मलता। ४. कृपा।

प्रसर—*(न०)* १. फैलाव। २. राशि। समूह। *(क्रि० वि०)* शीघ्र। जल्दी।

प्रसरणो—दे० पसरणो।

प्रसव—*(न०)* १. बच्चा जनने की क्रिया। प्रसूति। २. जन्म। उत्पत्ति। ३. बच्चा। संतान।

प्रसवणो—*(क्रि०)* १. जनना। जन्म देना। २. जन्म होना।

प्रसवती—*(ना०)* प्रसवित्री। माता। *(वि०)* प्रसव करती हुई।

प्रसंग—*(न०)* १. योग। अवसर। २. उपयुक्त संयोग। ३. सहवास। संग। ४. संबंध। सगापन। ५. मेल। ६. प्रकरण। ७. कारण। ८. घटना। बनाव। ९. संभोग। १०. निमित्त। कारण। ११. संदर्भ। १२. प्रकरण। विषय।

प्रसंगी—*(न०)* १. संबंधी। समधी। रिश्तेदार। २. मित्र। *(वि०)* प्रसंग वाला। प्रासंगिक।

प्रसंसणो—*(क्रि०)* प्रशंसा करना।

प्रसंसा—दे० प्रशंसा।

प्रसाद—*(न०)* १. कृपा। मेहरबानी। २. प्रसन्नता। ३. देवता को अर्पण किया गया नैवेद्य। **परसाद**। ४. देव, गुरु, पति इत्यादि द्वारा भोगे हुए पदार्थ में से शेष रहा हुआ पदार्थ। ५. देवता, गुरु आदि को अर्पण की जाने वाली वस्तु। ६. देवता को निवेदित वस्तु जो भक्तों में बाँटी जाती है। ७. काव्य का एक गुण।

प्रसादी—दे० परसादी।

प्रसाधन—*(न०)* १. शृंगार। २. सजावट। ३. संपादन। ४. शृंगार की सामग्री। ५. कंघी।

प्रसार—*(न०)* फैलाव। विस्तार। प्रसरण।

प्रसारणो—*(क्रि०)* फैलाना। बढ़ाना। पसारना। **पसारणो**।

प्रसिद्ध—*(वि०)* १. प्रगट। २. विख्यात। मशहूर।

प्रसिद्धि—*(ना०)* १. ख्याति। शोहरत। २. कीर्ति। ३. प्रतिष्ठा।

प्रसिध—दे० प्रसिद्ध।

प्रसू—*(ना०)* माता।

प्रसूत—*(वि०)* उत्पन्न। पैदा।

प्रसूता—*(ना०)* जच्चा। जन्म देने वाली। माता।

प्रसून—*(न०)* १. पुष्प। फूल। २. कली।

प्रसेद—*(न०)* प्रस्वेद। पसीना। **परसेवो**।

प्रस्तर—*(न०)* १. पत्थर। २. फूल और पत्तों की शय्या। ३. समतल। सपाट।

प्रस्ताव—*(न०)* १. किसी सभा में विचारार्थ या स्वीकृति के लिये उपस्थित की जाने वाली बात। ठहराव। २. प्रस्तुत प्रसंग। ३. प्रसंग। चर्चा। ४. रहस्य की बात। ५. अध्याय। ६. भूमिका। प्रस्तावना। ७. अवसर। ८. आरंभ।

प्रस्तावक—*(वि०)* प्रस्ताव रखने वाला।

प्रस्तावना—*(ना०)* किसी विषय, कथा या ग्रंथ के आरंभ करने से पूर्व का वक्तव्य। भूमिका। उपोद्घात। आमुख।

प्रस्तुत—*(वि०)* १. उद्यत। तैयार। २. जो कहा गया हो। कथित। ३. उपस्थित। ४. उपयुक्त। *(न०)* १. जिसके ऊपर चर्चा चल रही हो वह विषय। २. जो समीप या सामने हो। मौजूदा।

प्रस्थान—*(न०)* १. गमन। प्रयाण। २. मार्ग। ३. यात्रा। ४. शुभ दिन या शुभ मुहूर्त्त में मुसाफिरी करने वाला, उस समय यदि मुसाफिरी नहीं कर सके तो अपना थोड़ा सामान रास्ते के किसी स्थान पर रखकर पालन की जाने वाली मुहूर्त्त विधि। **प्रस्थानो।**

प्रस्थान त्रयी—*(ना०)* वेद धर्म के आधार रूप उपनिषद, ब्रह्मसूत्र व गीता।

प्रस्थानो—दे० प्रस्थान सं० ४.

प्रस्वेद—*(न०)* पसीना। **परसेवो।**

प्रह—*(न०)* भोर। प्रभात। **सवार।**

प्रहर—*(ना०)* दिन-रात का आठवाँ भाग। तीन घंटे का समय। पहर।

प्रहरणो—*(क्रि०)* १. प्रहार करना। २. मारना। नाश करना।

प्रहलाद—*(न०)* प्रसिद्ध विष्णुभक्त हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद।

प्रहसन—*(न०)* १. व्यंग्य। कटाक्ष। २. उपहास। हाँसी। ३. एक प्रकार का छोटा हास्यरस-प्रधान नाटक। हास्य-प्रधान रूपक।

प्रहार—*(न०)* चोट। आघात। घाव।

प्रहारणो—*(क्रि०)* प्रहार करना।

प्रहेलिका—*(ना०)* समस्या। पहेली। **आडी। कोयड़ो।**

प्रह्लाद—दे० प्रहलाद।

प्राइवेट—*(वि०)* व्यक्तिगत। निजी।

प्राक्रम—दे० पराक्रम।

प्राकार—*(न०)* परकोटा। **वाड़।**

प्राकृत—*(वि०)* १. प्रकृति से उत्पन्न। २. स्वाभाविक। ३. साधारण। मामूली। ४. लौकिक। ५. नीच। ६. अशिष्ट। संस्काररहित। *(ना०)* १. संस्कृत से उत्पन्न एक प्राचीन अपभ्रष्ट लोकभाषा। २. बोलचाल की भाषा।

प्राकृतिक—*(वि०)* १. कुदरती। २. स्वाभाविक। स्वभावसिद्ध। ३. प्रकृति संबंधी। ४. पंचभूतात्मक। भौतिक। पार्थिव। ५. लोक-संबंधी। लौकिक। ६. साधारण। मामूली। ७. अधम।

प्राक्कथन—*(न०)* १. उपोद्घात। पूर्वकथन। २. भूमिका। ३. प्रस्तावना।

प्राक्रम—दे० पराक्रम।

प्राक्रमी—दे० पराक्रमी।

प्रागड़—*(न०)* प्रभात। प्रातःकाल। **पो। सवार।**

प्रागवड़—*(न०)* १. प्रयाग का अक्षय वट। २. अक्षय कीर्ति वाला वीर।

प्राचत—*(न०)* १. पाप। २. प्रायश्चित।

प्राची—*(ना०)* पूर्व दिशा। उगण।

प्राचीन—*(वि०)* १. पुराना। जूना। **जूनो।** २. पूर्व कथित। पिछला।

प्राचीनता—*(ना०)* प्राचीन होने का भाव। पुरानापन। **जूनापणो।**

प्राचीन साहित्य—*(न०)* १. प्राचीन समय का गद्य-पद्य लेखन। २. नौवीं शताब्दी से मध्यकाल तक का मरुभाषा (राजस्थानी) का साहित्य।

प्राचीप—*(न०)* इंद्र।

प्राचीर—*(न०)* शहरपनाह। परकोटा।

प्राच्य—*(वि०)* १. पूर्व दिशा का। २. पूर्व का। ३. प्राचीन।

प्राच्यविद्या—(ना०) १. प्राचीन विद्या। २. प्राचीन समय का हस्तलिखित गद्य-पद्य साहित्य। ३. पूर्व की विद्या।

प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—(न०) प्राचीन हस्तलिखित गद्य-पद्य साहित्य का रक्षण और उसकी उन्नति के लिए स्थापित संग्रह-स्थान।

प्राछ—(न०) १. प्रश्न। सवाल। २. घाव। प्रहार।

प्राछणो—(क्रि०) १. प्रश्न करना। पूछना। २. प्रहार करना।

प्राछित—(न०) १. पाप। २. प्रायश्चित। ३. दंड।

प्राजळ—(ना०) अग्नि। प्रज्वलन।

प्राजळणो—(क्रि०) १. प्रज्वलित होना। जलना। २. प्रज्वलित करना। जलाना।

प्राजळतो—(वि०) प्रज्वलित। जलता हुआ।

प्राजाळ—(वि०) जलाने वाला।

प्राजै—(ना०) १. पराजय। हार। २. नाश।

प्राज्ञ—(वि०) १. बुद्धिमान। २. कुशल। चतुर। ३. पंडित। ४. मूर्ख (व्यंग्य)।

प्राभ्मा—(वि०) १. अधिक। बहुत। २. बड़ा। ३. ऊंचा। ४. प्रसिद्ध।

प्राभ्मी—(वि०) १. बहुत। २. श्रेष्ठ। ३. ऊँची। ४. बड़ी। (ना०) तलवार।

प्राभ्मो—(वि०) १. रक्षा करने वाला। २. पालन करने वाला। ३. अटल। ४. प्रकाशमान। ५. वीर। बलवान। ६. बहुत। ७. ऊँचा। ८. श्रेष्ठ। ९. बड़ा। (न०) सहारा। **आजो।**

प्राण—(न०) १. शरीरस्थ जीवनाधार वायु। २. श्वास। ३. बल। ४. जीव। ५. जीवन। ६. जीवन-शक्ति। (वि०) प्रिय।

प्राणघात—(न०) हत्या। वध।

प्राणघातक—(वि०) हत्यारा।

प्राणजीवन—(न०) १. प्राण का जीवन रूप। प्राणाधार। २. पति। प्रीतम। ३. विष्णु। ४. अत्यन्त प्रिय पुरुष। परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणत्याग—(न०) १. मृत्यु। २. आत्महत्या।

प्राणदंड—(न०) मृत्युदंड। मौत की सजा।

प्राणदा—(ना०) हर्रे। **हरड़े।**

प्राणदाता—(वि०) संकट में पड़े हुए के प्राणों की रक्षा करने वाला।

प्राणदान—(न०) १. संकटग्रस्त के प्राणों की रक्षा। २. किसी को मरने से बचाना। ३. बलिदान। कुरबानी।

प्राणधन—(न०) १. अत्यधिक प्रिय व्यक्ति। २. प्राणरूपी धन। ३. पति। खाविंद। **धणी।**

प्राणधार—(न०) १. जीव। प्राणी। २. मनुष्य।

प्राणधारी—(वि०) १. प्राण धारण करने वाला। २. जीवित। ३. चेतन। (न०) दे० प्राणधार।

प्राणनाथ—(न०) १. पति। स्वामी। २. प्रियतम। प्यारा। ३. एक प्रसिद्ध संत। ४. परमेश्वर।

प्राणनाथ संप्रदाय—(न०) प्राणनाथ द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव सम्प्रदाय। प्रणामी सम्प्रदाय।

प्राणनाम—(न०) हंस।

प्राणपण—(न०) प्राण देने की होड़। जान की बाजी।

प्राणपति—(न०) १. आत्मा। २. परमेश्वर। ३. हृदय। ४. प्रिय व्यक्ति। ५. पति। स्वामी।

प्राणपूर—(वि०) अधिक। शक्तिशाली।

प्राणप्यारी—(ना०) पत्नी। भार्या। प्रिया।

प्राणप्यारो—(वि०) प्राण समान प्यारा। प्राणप्यारा। (न०) १. प्राण समान प्यारा व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राणप्रतिष्ठा—*(न०)* देवमूर्ति की स्थापना करने से पहले वेद-मंत्रों के द्वारा उसमें की जाने वाली प्राणरोपण विधि। २. प्राण-धारण करना।

प्राणप्रिय—*(वि०)* प्राणों के समान प्रिय। *(न०)* पति।

प्राणप्रिया—*(ना०)* प्राण समान प्रिय स्त्री। पत्नी।

प्राणमय कोश—*(न०)* वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा कोश जो प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान—इन पाँच प्राणों से बना हुआ होता है।

प्राणवल्लभ—*(न०)* परमप्रिय वल्लभ पति। पति।

प्राणवल्लभा—*(ना०)* परमप्रिय पत्नी।

प्राणवायु—*(ना०)* १. प्राण। २. जीव।

प्राणसम—*(न०)* स्वामी। पति। *(वि०)* १. प्राण के समान। २. प्राण के समान प्रिय।

प्राणसमा—*(ना०)* प्राण समान प्रिय पत्नी। *(वि०)* प्राण के समान प्रिय (पत्नी)।

प्राणहर—*(वि०)* १. प्राण लेने वाला। घातक। २. शक्तिनाशक। *(न०)* १. विष। जहर। **विख**। २. यम। **जम**।

प्राणहरण—*(न०)* यमराज।

प्राणहीन—*(वि०)* १. निर्जीव। २. मरा हुआ। **मरियोड़ो**। ३. अशक्त।

प्राणाचार्य—*(न०)* वैद्य। भिषग्वर।

प्राणाधार—*(वि०)* प्राण का आधार रूप। *(न०)* पति। स्वामी।

प्राणायाम—*(न०)* श्वास और प्रश्वास की वायुओं को नियंत्रित रूप से खींचने और बाहर निकालने की क्रिया। योग के आठ अंगों में से एक।

प्राणांत—*(न०)* मृत्यु। **मौत**।

प्राणियो—*(न०)* १. प्राणी। जीव। २. प्राण। ३. मनुष्य।

प्राणी—*(वि०)* १. वह जिसमें प्राण हों। प्राणवान। २. जीव-जंतु। ३. मनुष्य।

प्राणेश—*(न०)* १. परमेश्वर। २. पति। स्वामी। प्राणपति।

प्राणेश्वर—दे० प्राणेश।

प्राणेश्वरी—*(ना०)* पत्नी। प्राणप्रिया।

प्राणेसर—दे० प्राणेश्वर।

प्राणेसरी—दे० प्राणेश्वरी।

प्रात—*(न०)* प्रभात। सवेरा। *(अव्य०)* प्रभात समय में। सवेरे। भोर में। **सवारणा**।

प्रातकाळ—*(न०)* प्रातःकाल। सवेरा। प्रभात। **सवार**।

प्रातक्रित—*(न०)* प्रातःकृत्य।

प्रातनाथ—*(न०)* सूर्य। रवि।

प्रातः—दे० प्रात।

प्रातःकाल—दे० प्रातकाळ।

प्रातःकृत्य—*(न०)* प्रातःकाल में करने योग्य काम। स्नान, संध्या, पूजन-वंदन आदि।

प्रातःसंध्या—*(ना०)* प्रातःकाल में किया जाने वाला प्राणायाम, गायत्री जप, तर्पण, वेदाध्ययन आदि नित्य का धार्मिक कर्म।

प्रातःस्नान—*(न०)* प्रातःसंध्या के पूर्व किया जाने वाला स्नान। सुबह का स्नान।

प्रातःस्मरण—*(न०)* प्रातःकाल के समय किया जाने वाला प्रभुस्मरण। *(वि०)* प्रातःस्मरणीय।

प्रातःस्मरणीय—*(वि०)* १. प्रातःकाल में स्मरण करने योग्य। २. पूज्य। पूजनीय। ३. माननीय।

प्राथमिक—*(वि०)* आरंभिक। पहले का।

प्रादुर्भाव—*(न०)* १. अस्तित्व में आना। प्रगट होना। २. उत्पत्ति। ३. आविर्भाव। ४. विकास।

प्रादेशिक—*(वि०)* १. प्रदेश का। २. प्रदेश सम्बन्धी।

प्रादेशिक भाषा—*(ना०)* १. अमुक प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा। २. प्रदेश की भाषा।

प्राध्यापक—*(न०)* विशिष्ट अध्यापक । प्रोफेसर ।

प्रापक—*(ना०)* पवन । हवा । *(वि०)* प्राप्त करने वाला ।

प्रापणो—*(क्रि०)* प्राप्त करना । मिलना ।

प्रापति—*(ना०)* प्राप्ति । सिद्धि ।

प्रापित—*(वि०)* १. प्राप्त किया हुआ । २. पहुँचाया हुआ ।

प्राप्त—*(वि०)* १. मिला हुआ । पाया हुआ । २. सामने आया हुआ । ३. उत्पन्न । *(न०)* १. आमद । २. लाभ ।

प्राप्ति—*(ना०)* १. आय । आमदनी । २. **कमाई । पैदास** । ३. उपलब्धि । ४. रसीद । पहुँच । **पावती** । ५. भाग्य । ६. वृद्धि । ७. लाभ । **फायदो** ।

प्रामणाचार—*(न०)* मेहमान का भोजन आदि से किया जाने वाला आदर-सत्कार । अतिथि सत्कार । आतिथ्य ।

प्रामणाचारी—दे० प्रामणाचार ।

प्रामणी—*(ना०)* स्त्री अतिथि । पाहुनी ।

प्रामणो—*(क्रि०)* प्राप्त करना । *(न०)* पाहुना । मेहमान ।

प्रामाणिक—दे० प्रमाणिक ।

प्रामाणिकता—दे० प्रमाणिकता ।

प्राय—*(अव्य०)* बहुधा । प्रायः । लगभग । **घणो करनै** ।

प्रायछित—दे० प्रायश्चित ।

प्रायश्चित—*(न०)* १. पाप निवारणार्थ किया जाने वाला व्रत । २. पाप का पश्चाताप । ३. दंड ।

प्रारथण—*(ना०)* १. प्रार्थना । २. विनती ।

प्रारथणो—*(क्रि०)* १. प्रार्थना करना । २. याचना करना ।

प्रारथियो—*(वि०)* प्रार्थना करने वाला । **अरजदार** । *(क्रि० भू० का०)* प्रार्थना की ।

प्रारब्ध—*(न०)* भाग्य । **नसीब** ।

प्रारब्धी—*(वि०)* भाग्यशाली । **नसीबधारी** ।

प्रारंभ—*(न०)* आरंभ । शुरूआत ।

प्रारंभणो—*(क्रि०)* प्रारंभ करना । शुरू करना ।

प्रार्थना—*(ना०)* १. ईश्वर स्तुति । २. नम्र निवेदन । **अरज** । ३. याचना । ४. अभियोग ।

प्रार्थनापत्र—*(न०)* निवेदन पत्र । आवेदन पत्र । **अरजी** ।

प्रार्थी—*(वि०)* १. प्रार्थना करने वाला । २. याचक । ३. विनीत । निवेदक ।

प्रालबध—दे० प्रारब्ध ।

प्रालब्ध—दे० प्रारब्ध ।

प्रालब्धी—दे० प्रारब्धी ।

प्राळेय—*(न०)* हिम । बर्फ । **पालो** ।

प्रावृट—*(न०)* १. वर्षा । २. वर्षा ऋतु ।

प्रावृति—*(न०)* हाथी का मद ।

प्रास—*(न०)* १. भाला । २. फेंककर प्रहार किया जाने वाला छोटा भाला । ३. भोजन । प्राश । ४. अनुप्रास ।

प्रासणो—*(क्रि०)* १. खाना । भक्षण करना । २. भाले से प्रहार करना । ३. गाय-भैंस को दोहते समय थनों में दूध उतारना । **पहारणो** ।

प्रासाद—*(न०)* १. महल । २. देवालय । मंदिर । पन्हाना । प्राहणो ।

प्राहणो—*(क्रि०)* १. गाय, भैंस का दुहते समय थनों में से दूध को छूटने देना । **पावसणो** । थनस्थल (उवाड़ो) में दूध का भराव होना । थनों में दूध उतारना । पन्हाना । २. स्त्री को तीव्र मैथुनेच्छा होना । ३. खाना ।

प्राहुणी—*(ना०)* स्त्री मेहमान । पाहुनी ।

प्राहुणो—*(न०)* पाहुना । अतिथि । मेहमान । **प्रामणो** ।

प्रांखणो—दे० पूंखणो ।

प्रांगण—*(न०)* १. आँगन । सहन । २. रंग-मंडप ।

प्राँचाळो—*(वि०)* भुजाओं में जोर वाला । भुजबली । बलवान । शक्तिमान । **पाँचाळो । पाँच वाळो** ।

प्राँची—(ना०) हाथ का एक गहना। पोंहची। पुणची।

प्राँचो—(न०) पोंहचा। पुणचो।

प्रांजळ—(वि०) १. सीधा। सरल। २. शुद्ध (भाषा)। ३. सच्चा। ४. विशाल। ५. विस्तृत।

प्रांजळता—(ना०) शब्द के अर्थ की सफलता। २. परिमार्जित। (साहित्य)

प्रांत—(न०) १. देश का विभाग। प्रदेश। खंड। २. सीमा। किनारा। छोर। ३. दिशा।

प्रांतर—(न०) वन। जंगल। उजाड़ प्रदेश।

प्रांतीय—(न०) प्रांत संबंधी।

प्रांतीय भाषा—(ना०) १. प्रांत विशेष में बोली व लिखी जाने वाली भाषा। प्रान्त की भाषा।

प्रिथमी—(ना०) पृथ्वी। धरती।

प्रिथवी—(ना०) पृथ्वी।

प्रिथवीनाथ—(न०) राजा।

प्रिथवीपाळ—(न०) राजा।

प्रिथी—(ना०) पृथ्वी।

प्रिथु—(न०) वेलि ग्रंथ के रचयिता राठोड़ पृथ्वीराज का काव्य तथा स्नेह नाम।

प्रिय—(वि०) १. प्यारा। २. प्रेमी। ३. हितकर। ४. सुंदर। मनोहर। (न०) १. स्वामी। पति। २. हित। कल्याण। ३. हितकर वस्तु या बात।

प्रियतम—(वि०) अत्यन्त प्रिय। (न०) १. पति। स्वामी। २. प्रेमी। ३. मित्र। ४. ईश्वर।

प्रियतमा—(ना०) १. प्रिय स्त्री। २. पत्नी। (वि०) अधिक प्यारी।

प्रियदर्शी—(न०) अशोक का अति प्रसिद्ध विरुद। (वि०) १. सबको प्रिय दिखने वाला। २. सबको प्रिय समझने वाला। ३. जो देखने में सुंदर लगे।

प्रियभद्र—(न०) श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम।

प्रियमरु—(न०) ऊँट।

प्रियवर—(वि०) श्रेष्ठ प्रिय। अतिप्रिय।

प्रिया—(ना०) १. पत्नी। भार्या। २. इलायची। ३. चमेली। ४. मदिरा।

प्रियाग—(न०) प्रयाग तीर्थ।

प्रिसण—(न०) १. शत्रु। दुश्मन। २. पिशुन। चुगलखोर। ३. दुर्जन।

प्रिसणाण—(न०) शत्रुवर्ग। शत्रुदल।

प्री—(न०) १. प्रियतम। २. पति। (वि०) प्यारा।

प्रीऊ—दे० प्री।

प्रीछणो—(क्रि०) १. पूछना। २. प्रश्न करना।

प्रीत—(ना०) प्रेम। प्रीति।

प्रीतड़ली—दे० प्रीत।

प्रीतड़ी—दे० प्रीत।

प्रीतम—(न०) १. पति। २. प्रभु। (वि०) प्यारा। प्रियतम।

प्रीति—(ना०) १. प्रेम। २. आनंद। हर्ष। ३. कृपा।

प्रीतिभोज—(न०) १. दावत. २. मित्र और संबंधी वर्ग की भोजन गोष्ठी।

प्रीती—दे० प्रीति।

प्रीमळ—(ना०) परिमल। सुगंधि।

प्रीस्रम—(न०) १. परिश्रम २. तकलीफ।

प्रूफ—(न०) १. किसी छापे जाने वाले लेख-पुस्तकादि का वह नमूना जो उसके छपने से पहले रह गई गलतियों को ठीक करने के लिये छापा जाता है। २. प्रमाण। सबूत। ३. किसी वस्तु के प्रभाव से रक्षित रहना, जैसे—वाटरप्रूफ।

प्रूफरीडर—(न०) प्रूफ की भूलों को सुधारने वाला।

प्रेक्षक—(न०) दर्शक।

प्रेख—(ना०) १. आज्ञा। २. कील। मेख। परेख।

प्रेत—*(न०)* १. भूत। २. अवगति प्राप्त जीव। ३. पिशाचयोनि। ४. वह मृतात्मा जो और्ध्व देहिक कृत्य किये जाने के बाद रहती है। ५. मृत मनुष्य। ६. शव।

प्रेतअन्न—*(न०)* वह अन्न जो पितरों को अर्पित किया जाता है। पितृ-बलि। प्रेत-बलि।

प्रेतईश—*(न०)* १. यमराज। २. महादेव। शिव।

प्रेतक्रिया—*(ना०)* मृतक की उत्तर क्रिया।

प्रेतजोनी—दे० प्रेतयोनि।

प्रेतणी—*(ना०)* भूतनी।

प्रेतनदी—*(ना०)* वैतरणी नदी।

प्रेतपक्ष—*(न०)* श्राद्धपक्ष। आश्विन कृष्ण पक्ष।

प्रेतभोजन—*(न०)* १. मृत्यु के बाद बारहवें दिन किया जाने वाला भोज। २. मृतक के पीछे किया जाने वाला ज्याति भोज। मौसर। **बारियो**।

प्रेतयोनि—*(ना०)* भूतयोनि।

प्रेतलोक—*(न०)* यमलोक।

प्रेतावळ—*(न०)* प्रेत समूह। भूत समुदाय। **भूतावळ**।

प्रेम—*(न०)* १. प्यार। अनुराग। २. हेत। प्रीति। ३. चाह। रुचि। ४. आनंद। ५. कृपा।

प्रेमभक्ति—*(ना०)* प्रेमलक्षणा भक्ति।

प्रेमरस—*(न०)* १. प्रेमानंद। २. विषय-भोग।

प्रेमल—*(ना०)* मीराँ का जन्मनाम।

प्रेमलक्षणा भक्ति—*(ना०)* भक्ति का एक प्रकार। श्रेष्ठ भक्ति।

प्रेमाळ—*(वि०)* प्रेमी।

प्रेमाश्रु—*(न०)* प्रेम के कारण आँखों में से निकलने वाले आँसू।

प्रेमी—*(वि०)* १. प्रेम करने वाला। अनुरागी। २. हितु। ३. चाहक। ४. आनंदी।

प्रेय—*(न०)* १. सांसारिक सुख। २. एक अलंकार। *(वि०)* प्रिय।

प्रेयसी—*(ना०)* प्रियतमा। पत्नी।

प्रेरणा—*(ना०)* १. किसी को किसी कार्य में प्रवृत्त करने की क्रिया २. दबाव। ३. अंत:करण में स्वत: जाग्रत होने वाली भावना। मनोभाव। सूझ। ४. प्रोत्साहन। उत्तेजना।

प्रेरणार्थक क्रिया—*(ना०)* किसी से 'प्रेरित' का अर्थ सूचन करने वाली क्रिया। *(व्या०)*

प्रेरणो—*(क्रि०)* १. प्रेरणा करना। २. तैयार करना। ३. भेजना। ४. गति देना। चलाना।

प्रेषक—*(वि०)* भेजने वाला।

प्रेस—*(न०)* छापाखाना। मुद्रणालय।

प्रेसकॉपी—*(ना०)* प्रेस को छापने के लिये तैयार करके दी जाने वाली ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति। छापे जाने वाले ग्रंथ की टाइप की हुई या हस्तलिखित प्रति। पांडुलिपि।

प्रेसिडेंट—*(न०)* १. राष्ट्रपति। २. अध्यक्ष। ३. सभाध्यक्ष।

प्रैज—दे० पैज।

प्रोग्राम—*(न०)* कार्यक्रम। **पुरोग्राम**।

प्रोढ—*(वि०)* १. तीस से पचपन वर्ष की आयु वाला। प्रौढ़। २. पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। ३. जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ४. निपुण। चतुर।

प्रोढा—*(वि०)* तीस से पचपन वर्ष की आयु वाली। प्रौढ़ा। *(ना०)* १. जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो वह स्त्री। २. काम कला में प्रवीण नायिका। ३. एक छंद।

प्रोढियो—*(न०)* प्रभात। **सवारणा**।

प्रोण—*(न०)* ऊँट, घोड़ा इत्यादिसवारी का पशु। परोहन। **पुरन**। **पुरण**।

प्रोत्साह—*(न०)* १. अंतर का उत्साह। २. अतिशय उत्साह। उमंग।

प्रोथ—*(न०)* १. घोड़े या सूअर का नथूना। २. नितंब। ३. कमर। कटि-प्रदेश।

प्रोथी—*(न०)* घोड़ा। अश्व।

प्रोफेसर—(न०) कॉलेज का अध्यापक। प्राध्यापक।
प्रोळ—दे० प्रोळि।
प्रोळपात—दे० प्रोळबारहठ।
प्रोळबारहठ—(न०) विवाह करके आने पर वर-वधू से पोल पर नेग लेने वाला चारण। द्वार पर हठ करके नेग लेने वाला चारण। बारहठ। चारण।
प्रोळि—(ना०) द्वार। पोल।
प्रोळियो—दे० पोळियो।
प्रोळी—दे० प्रोळि।
प्रोवणो—(क्रि०) १. पिरोना। २. गूंथना। ३. सूई के नाके (सुराख) में धागा डालना। **पोवणो।**
प्रोह—(न०) हाथी का पैर।
प्रोहित—(न०) पुरोहित।
प्रोंचणो—(क्रि०) १. बाँधना। २. पहुँचना।
प्रोंचाळ—दे० प्रोंचाळो।
प्रोंचाळो—(वि०) १. दृढ़ हाथों वाला। २. शक्तिशाली। **जोरावर।**
प्रोंची—(ना०) पहुँचे का एक आभूषण। पोंहची। **पुणची।**
प्रोंचो—(न०) पोंहचा। कलाई।
प्रौढ—दे० प्रौढ।
प्रौढा—दे० प्रौढा।
प्रौढावस्था—(ना०) परिपक्व अवस्था। प्रौढ़ता।
प्लवंग—(न०) १. बंदर। वानर। २. हरिण। **हिरण।**
प्लवंगेस—(न०) हनुमान।
प्लीहा—(ना०) १. पेट की तिल्ली। २. तिल्ली बढ़ जाने का रोग।
प्लुत—(न०) उच्चारण में तिगुना लंबा स्वर। ह्रस्व स्वर से तिगुनी मात्रा का स्वर (व्या०)।
प्लेग—(न०) १. भीषण संक्रामक रोग। ताऊन। २. महामारी।
प्लेटफार्म—(न०) १. रेलवे स्टेशन पर लाइन के सहारे बना लंबा चबूतरा, जहाँ रेलगाड़ी आकर खड़ी होती है। २. प्लेट-फार्म-टिकट। ३. सभा का मंच। ४. खड़े रहकर भोजन बनाने की आधुनिक रसोई-घर की लंबी चबूतरी।
प्लोट—(न०) १. जमीन का छोटा टुकड़ा। प्लॉट। **थाळो। तळियो।** २. नाटक की वस्तु अथवा कार्य। कथानक। ३. षड्यंत्र। **कावतरो।**
प्हाड़—दे० पहाड़।

फ

फ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के प-वर्ग का दूसरा व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
फईड़—(न०) १. चोट। २. थप्पड़ या जूतों की मार। २. हानि। **फटीड़।**
फईड़ो—दे० फईड़।
फक—(वि०) १. फीका। निस्तेज। विवर्ण। २. सफेद। ३. साफ। ४. जोर से हवा निकलने का शब्द।
फकत—(अव्य०) १. केवल। मात्र। सिर्फ। फकत। २. पर्याप्त। ३. बस। बस इतना ही।
फकदंड—(वि०) १. बेपरवाह। २. बेशर्म। निर्लज्ज। ३. उड़ाऊ। खर्चीला। ४ ढोंगी।
फकर—(वि०) १. गरीब। दीन। २. मस्त। ३. निर्लोभी। (न०) अभिमान। फ़ख्र।
फकार—(न०) 'फ' अक्षर। **फफो।**
फकारी—(न०) साँप। सर्प।

फकावणो—*(क्रि०)* चूर्ण को मुँह में फिकवाना। फँकवाना।

फकीर—*(न०)* १. मुसलमान साधु। २. साधु। ३. भिखारी। ४ निर्धन। ५. एक मुसलमान जाति।

फकीरण—*(ना०)* १. फकीरनी। भिखारिन। २. फकीर की स्त्री।

फकीरणी—दे० फकीरण।

फकीरी—*(ना०)* १. फकीरपना। सर्वस्व त्याग की वृत्ति। २. भिक्षावृत्ति। ३. निर्धनता। ४. संन्यास।

फक्कड़—*(न०)* १. फकीर। २. मस्त रहने वाला व्यक्ति। ३ गैर जिम्मेदार व्यक्ति। ४. विधुर। **बांडो**। ५. साधु। *(वि०)* १. मस्त। २. स्वच्छंद। लोकलाज से रहित। उड़ाऊ। ४. छैल।

फक्कड़पणो—*(न०)* १. फकीरी। २. मस्ती। ३. गैर जिम्मेदारी।

फक्कंफक्का—*(न०)* १. फाके मारना। २. गरीबी। निर्धनता। ३. खाली खम।

फक्त—दे० फकत।

फगडंड—दे० फकदंड।

फगड़ो—*(न०)* १. झगड़ा। टंटा। बखेड़ा। २. ढोंग।

फगत—दे० फकत।

फगर—*(वि०)* १. खिला हुआ। २. फूला हुआ। *(न०)* ढेर (पुष्पों का)।

फगवा—*(न०)* १. होलिकोत्सव। २. होली का हुड़दंग। ३. होलिकोत्सव पर गायी जाने वाली रागिनी।

फगाणो—दे० फगावणो।

फगावणो—*(क्रि०)* फेंकना। २. उथला देना। उलटाना। ३. स्वीकार नहीं करना। ४. नामुकर्रर होना। ५. भुला देना।

फचर—दे० फाचर।

फचाक—*(अव्य०)* कीचड़, पानी में या पानी वाली पोची जगह में किसी वस्तु के गिरने से होने वाला शब्द।

फजर—*(न०)* सुबह। प्रातःकाल।

फजल—*(ना०)* १. कृपा। मेहरबानी। २. वृद्धि। ३. लाभ। ४. सुख। आनंद।

फजीत—*(ना०)* १. फजीहत। अपमान। २. बदनामी। निंदा। ३. दुर्दशा। ४. आफत।

फजीतवाड़ो—दे० फजीत।

फजीती—दे० फजीत।

फजीतो—*(न०)* १. झगड़ा-टंटा। २. झंझट। झमेला। ३. बदनामी। अप्रतिष्ठा। ४. आम की गुठली और छिलकों के धोवन से बनाई हुई कढ़ी। फजीता।

फजीहत—दे० फजीत।

फजूल—*(वि०)* व्यर्थ। निरर्थक।

फजूल खर्च—*(न०)* १. बुरे कामों में होने वाला खर्च। २. अपव्यय।

फजूलखर्ची—*(ना०)* १. व्यर्थ खर्च करने की आदत। २. व्यर्थ खर्च करने का काम। ३. व्यर्थ या आवश्यकता से बहुत अधिक खर्च।

फजेत—दे० फजीत।

फजेती—दे० फजीती।

फजेतो—दे० फजीतो।

फट—*(न०)* १. फटन। फटने का चिह्न। २. धिक्कार। ३. किसी वस्तु के गिरने का शब्द। ४. स्फोट का हल्का शब्द। *(वि०)* साफ। स्वच्छ। *(अव्य०)* जल्दी। एकदम।

फटक—*(न०)* छाज से फटकने की क्रिया। फटकारा।

फटकड़ी—*(ना०)* फिटकड़ी।

फटकड़ो—*(न०)* एक वस्त्र।

फटकण—*(न०)* सूप से फटकने पर अनाज आदि में से निकलने वाला कचरा।

फटकणो—*(क्रि०)* १. छाज में डालकर अनाज साफ करना। २. झपटना। ३. आना। उपस्थित होना (व्यंग्य या क्रोध में)। ४. झटकना।

फटकमिण—*(ना०)* स्फटिक मणि।

फटकाणो—दे० फटकणो।

फटकार—*(न०)* १. झपट। २. पछाड़। ३. धिक्कार। ४. शाप। **फिटकार**। ५. उपालंभ। ६. डाँट। ७. प्रहार। ८. प्रभाव।

फटकारणो—*(क्रि०)* १. डाँटना। धमकाना। २. छाज से फटकारकर अन्न आदि साफ करना। ३. झटकना। ४. धिक्कारना। **फिटकारणो**।

फटकारियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. अभिशापित। २. पछाड़ा हुआ। ३. डाँटा हुआ। ४. प्रहार किया हुआ। ५. त्यागा हुआ।

फटकारै—*(अव्य०)* तुरंत। शीघ्रता से।

फटकारो—*(न०)* १. उपालंभ। उलाहना। २. धिक्कार। **फटकार**। ३. डाँट-डपट। ४. छाज से की जाने वाली झटकाई। ५. झपट। पछाड़। ६. कपड़े की झटकाई।

फटको—*(न०)* १. अनाज को छाज में डाल कर साफ करने की क्रिया। २. चाबुक या कपड़े आदि का झटका। ३. उपालंभ। ४. आघात। ५. डर। ६. धक्का। ७. हानि। ८. हानि का धक्का। ९. धिक्कार।

फटणो—*(क्रि०)* १. दो फाँक होना। २. दरार पड़ना। फटना। ३. दूध या किसी द्रव पदार्थ का (विकार पैदा होने से व ग्रीष्म की गरमी से) छिछड़ा या विघटित हो जाना। ४. बादलों का मिट जाना। ५. विदीर्ण होना (हृदय का)। ६. कपड़े या कागज का चिरना।

फटफटियो—*(न०)* मोटर साईकल। *(वि०)* बकवादी।

फटाक—*(अव्य०)* एकदम। तुरंत *(न०)* १. किसी वस्तु को झपटने की आवाज। २. चाबुक का फटाका।

फटाकड़ो—दे० फटाकियो।

फटाकियो—*(न०)* पटाखा। एक आतिशबाजी। **फटाको**। **भटाकियो**।

फटाको—*(न०)* १. 'फट' आवाज। २. बारूद से भरा हुआ पटाका। ३. नखरैल स्त्री। **नखराळी**। **पटाको**।

फटाफट—*(अव्य०)* झपाटाबंध। जल्दी।

फटिक—*(न०)* १. स्फटिक। २. संगमरमर। **मकराणो**।

फटीड़—*(न०)* १. हानि। नुकसान। २. प्रहार। चोट। ३. प्रहार का शब्द। **फईड़**।

फटीड़ो—दे० फटीड़।

फटोफट—दे० फटाफट।

फटोळ—*(वि०)* १. बिना काम इधर-उधर भटकने वाला। २. निकम्मा। ३. आवारा। ४. अविश्वसनीय। ५. अयोग्य। **फिटोळ**।

फड़—*(ना०)* १. अनाज की दुकान। २. अनाज की मंडी। ३. पक्ष। दल। ४. ढेर। ५. बैल की मूत्रेन्द्रिय।

फड़क—*(ना०)* १. कुरते का आगे का पल्ला। २. कुरते का आगे या पीछे का कोई पल्ला। ३. कुरते, अंगरखे आदि का नीचे का भाग। ४. किवाड़ जोड़ी का एक पल्ला। ४. धड़कन। हृदय की धड़कन। ५. डर। भय। *(अव्य०)* एकदम। तुरंत।

फड़कण—*(ना०)* धड़कन। फड़कन। *(वि०)* डरपोक।

फड़कणो—*(क्रि०)* १. स्फुरण होना। २. फड़कना। ३. हृदय का धब-धब करना।

फड़काणो—*(क्रि०)* फड़कने के लिये प्रेरित करना।

फड़को—*(न०)* १. किवाड के दो भुजों में से एक। किवाड का एक पल्ला। २. ओढ़ने का खोसा हुआ पल्ला। **छेड़ो**। ३. कुरते, अंगरखे आदि का आगे या पीछे का कोई पल्ला। ४. इन वस्त्रों के नीचे का भाग। **फड़क**। ५. एक कर। ६. कुम्हार, नाई इत्यादि नेगियों को खलिहान में से दिया जाने वाला अनाज। ७. पतंगा। ८. कंचुकी के बाजू का वस्त्र-खंड।

फड़चो—*(न०)* टुकड़ा।

फड़द—*(ना०)* १. सूची। लिस्ट। फर्द। फहरिस्त। २. जोड़े वाली (धोती, लहँगे की छींट आदि) वस्तु का एक भाग। ३. धोती का एक पान। ४. हाथछपाई छींट का एक पल्ला। ५. रजाई का एक पल्ला। ६. चादर। शाल।

फड़दा-फड़दा—*(अव्य०)* १. टुकड़े-टुकड़े। २. किसी वस्तु के बने हुए या चीर-फाड़कर बनाये हुए छोटे-मोटे अनेक टुकड़े।

फड़दी—*(ना०)* धोती जोड़े का एक पान। एक धोती।

फड़दो—*(न०)* १. वस्त्र का टुकड़ा। चिथड़ा। २. फटन।

फड़नबीस—*(न०)* मराठी शासन का एक पद।

फड़फड़णो—*(क्रि०)* १. अधिक ताप या भय से घबराहट होना। २. तड़फना। ३. धूजना। काँपना।

फड़फड़ाट—*(न०)* १. पंक्षी या कागज आदि के उड़ने का शब्द। २. फड़फड़ाहट। ३. घबराहट। ३. कंपन। धूजन।

फड़फड़ाणो—दे० फड़फड़ावणो।

फड़फड़ावणो—*(क्रि०)* १. फड़फड़ाना। घबराना। २. तड़फड़ाना।

फड़फड़ियो—*(वि०)* उतावला।

फड़फड़ी—*(ना०)* झुंझलाहट।

फड़दो—*(वि०)* तेजी से काम करने वाला। चुस्त। फुरतीला।

फड़ाक—*(अव्य०)* त्वरा से। एकदम।

फड़ाफड़—*(अव्य०)* १. ऊपराऊपरी। २. एकदम। झपाटाबंध। ३. सभी दरवाजों के किवाड़ों को एक साथ या जल्दी-जल्दी बंद करने की आवाज। ४. बेंत से ऊपरा-ऊपरी मारने का शब्द। ५. जल्दी से।

फड़ियो—*(न०)* १. अनाज का व्यापार करने वाला व्यक्ति। अनाज का व्यापारी। २. फुटकर अनाज बेचने वाला।

फण—*(ना०)* साँप की फन।

फणकर—*(न०)* सर्प। साँप।

फणकार—दे० फणकारो।

फणकारी—दे० फणकारो।

फणकारो—*(न०)* १. संकेत। इशारा। २. सिसकारा। ३. सर्प की फुंकार। ४. जोर का साँस।

फणगर—दे० फणकर।

फणगारो—दे० फणकारो।

फणगो—*(न०)* १. वृक्ष, पौधे आदि में से नई फूटी हुई डंठली। कोंपल। अंकुर। २. शाखा। ३. विवाद में से उत्पन्न होने वाला नया विवाद। बात में से पैदा होने वाली बात। ४. पतंगा। फतिंगा। ५. दीपक की बाती का गुल।

फणगो फूटणो—*(मुहा०)* १. अंकुर निकलना। २. बात में से नई बात पैदा होना। ३. झगड़ा होना।

फणधर—*(न०)* १. सर्प। २. महादेव। शिव।

फणस—*(न०)* पनस का वृक्ष अथवा उसका फल। कटहल।

फण सहस—*(न०)* सहस्र नाग।

फणंग—*(न०)* १. शेषनाग। २. सर्प। **साप।**

फणाळी—*(न०)* सर्प। साँप।

फणिक—*(न०)* सर्प। नाग। साँप। **साप।**

फणिजकुमारि—*(ना०)* नागकन्या।

फणिधण—*(ना०)* सर्पिणी। **सापणी।**

फणिफीण—दे० फणिफेन।

फणिफेन—*(न०)* १. सर्प-फेन। २. अफीम।

फणिभुज—*(न०)* गरुड़।

फणिंद—*(न०)* १. फणीन्द्र। शेषनाग। २. बड़ा सर्प।

फणी—*(ना०)* १. सर्प की फन। २. फन वाला सर्प। ३. सर्प। साँप।

फणीदारा—*(ना०)* सर्पिणी। नागिन। **नागण।**

फणीधर—*(न०)* १. फन वाला बड़ा सर्प। २. महादेव।

फणीराज—*(न०)* १. बहुत बड़ा सर्प। २. नागराज। ३. शेषनाग।

फणीश—*(न०)* बड़ा सर्प। **मोटो साप।**

फणीश्वर—*(न०)* १. शेषनाग। २. वासुकि नाग।

फणीस—दे० फणीश।

फणीसर—दे० फणीश्वर।

फणींद्र—*(न०)* शेषनाग। **फणीराज।**

फतवी—*(ना०)* बिना बाँह की कुर्ती। फतुही। सदरी।

फतवो—*(न०)* १. मुसलमानी धर्मशास्त्र का हुक्म। २. मौलवी का हुक्म। ३. हुक्म।

फतह—दे० फतै।

फतह चाँद—*(न०)* एक शिरोभूषण।

फतह पेच—*(न०)* एक शिरोभूषण।

फतूर—दे० फितूर।

फतूरियो—दे० फितूरियो।

फतूह—*(ना०)* १. ध्वजा। धजा। पताका। २. जीत। ३. समूह।

फतूही—दे० फतवी।

फतै—*(ना०)* १. विजय। जीत। २. सफलता।

फदकण—*(ना०)* उछलन। कुदान। *(वि०)* कह कर नट जाने वाला। *(न०)* वह डंडा अथवा प्रस्तर-खंड जो अहाते के मुख्य द्वार के खड्डे पर रखा जाता है।

फदकणो—*(क्रि०)* १. उछलना। कूदना। २. प्रसन्न होना।

फदकूड़ो—*(वि०)* फुदकने वाला।

फदके—*(क्रि० वि०)* जल्दी से।

फदको—*(न०)* १. फुदकने वाला एक कीड़ा। २. आकाश में छितरे हुए बादल।

फदड़क फदड़क—*(अव्य०)* तेज दौड़ते हुए घोड़े की आवाज। *(ना०)* छलाँग मारते हुए दौड़ने की क्रिया।

फदड़को—दे० फिदड़को।

फदफद—*(ना०)* १. बोलने-चालने में आतुरता का भाव। बकवाद। २. इधर-उधर दौड़ादौड़ करने का भाव। ३. फदफद शब्द। ४. उछल-कूद। ५. खिचड़ी आदि के पकते समय होने वाला शब्द।

फदफदाट—दे० फदफद।

फदाक—*(ना०)* १. कुदान। छलाँग। गिरने या कूदने की आवाज।

फदाको—दे० फदाक।

फदाफद—दे० फदफद।

फदाळ—*(न०)* फदालियों द्वारा बजाया जाने वाला वाद्य।

फदाळी—*(न०)* गाने-बजाने वाली एक मुसलमान जाति।

फदियो—*(न०)* १. ताँबे का एक पुराना छोटा सिक्का। २. विवाह में चुकाये जाने वाले नेग का विनिमय नाम। ३. फदिये (नेग) के रूप में दिये जाने वाले दो पैसे (कहीं चार पैसे)। ४. पैसा। ५. दृष्टिदोष निवारणार्थ बच्चे की ललाट, हाथ आदि में दी जाने वाली काजल की बिंदी। ६. हथेली में दी जाने वाली मेंहदी की बिंदी। ७. जैसलमेर का एक सिक्का जो दो आने की कीमत का होता था और प्रायः पश्चिमी राजस्थान में प्रचलित था।

फन—*(न०)* १. तमाशा। २. धंधा। ३. कला। विद्या। हुनर। ४. साँप की फन।

फनफन—*(ना०)* उछल-कूद।

फना—*(न०)* नाश। बरबादी।

फनाफन—दे० फनफन।

फफवो—*(न०)* एक जहरीला कीड़ा।

फफूंद—*(ना०)* फफूंदी। **फूलण।**

फफूंदियो—*(न०)* पतंगा। फतिंगा। *(वि०)* उतावला। जलदबाज।

फफूंदी—*(ना०)* रोटी, फल अचार आदि पर उत्पन्न होने वाली सफेद-भूरी काई। **फफूंद। फूलण।**

फफोळो—*(न०)* १. जलने से चमड़ी का उपसा हुआ भाग। फफोला। २. बुदबुदा। फुस्का। **परपोटो।** ३. फाला। छाळो। **गूमड़ो।**

फफ्फो—*(न०)* 'फ' अक्षर। फकार।

फब—*(ना०)* सुंदरता।

फबण—दे० फब।

फबणो—*(क्रि०)* १. सुंदर लगना। २. उचित लगना। ३. शोभा देना। शोभा पाना। ४. निभना। ५. बात बनी रहना। ६. लड़ना। झगड़ना। ७. बदनाम होना।

फबती—*(ना०)* १. मजाक। मसखरी। २. व्यंग्य। *(वि०)* १. शोभा पाने वाली। फबने वाली। २. अच्छी। ३. उचित। ठीक।

फबतो—*(वि०)* १. फबने वाला। शोभा पाने वाला। २. उचित स्थान पर स्थित। ठीक जगह पर जमा हुआ। यथास्थानीय। ३. सुंदर। ४. अच्छा। ५. उचित। ६. यथा मर्यादा।

फबीली—*(वि०)* सुंदरी। सुंदर स्त्री।

फबीलो—दे० फबतो।

फर—*(ना०)* १. ढाल। फलक। २. भाले की नोक। ३. बाण का अग्रभाग, नोक। ४. आना-जाना। पर्यटन। ५. पैर। ६. पीठ। ७. पंख। ८. तलहटी। ९. चिड़िया के उड़ने की ध्वनि।

फरक—*(ना०)* १. लौ। दीपशिखा। यथा—फर्क नहीं दीपक फरक। २. ढाल। **फर**। *(न०)* १. फर्क। अंतर। २. असमानता। **फेर**। ३. परायापन। ४. दुराव। ५. कमी। ६. परिवर्तन। ७. ध्वजा। ८. बड़ी रकम में से छोटी रकम के घटाने से प्राप्त शेषांश।

फरकड़ी—*(ना०)* १. एक खिलौना। २. कातने की फिरकी।

फरकण—*(वि०)* अपनी बात या वचन से पलट जाने वाला। **फिरकल**।

फरकणो—*(क्रि०)* १. आँख या अंग के किसी भाग की चमड़ी का रुक-रुक स्पन्दित होना। २. ध्वजा आदि का हवा में इधर-उधर डोलना। हवा में लहराना। ३. दिखाई देना। लंबे समय के बाद में आना। ४. बहुत दिनों के बाद मिलना (तिरस्कार में)।

फरक-फार—*(न०)* १. तोल, माप, हिसाब आदि में आने वाला फर्क। २. कमीबेशी।

फरकल—दे० फिरकल।

फरकसार—*(न०)* १. एक समान वस्तुओं के रूप, तौल, भावादि का फर्क। २. अत्यन्त अंतर। ३. बहुत कमी। ४. पूर्ण संदेह। ५. कमीबेशी।

फरकाणो—*(क्रि०)* लहराना। फहराना।

फरकाळो—*(न०)* वर्षा का बंद होकर धूप निकलना।

फरकावणो—दे० फरकाणो।

फरको—*(वि०)* १. जो गरिष्ट न हो। २. जो मीठा न हो। ३. पाच्य। जल्दी पचने वाला (हलका) भोजन। ४. सादा (भोजन)। ५. जिसमें रसा न हो। ६. नमकीन (सेव, भुजिया आदि)। *(न०)* नाच का एक चक्कर।

फरको जीमण—*(न०)* १. दाल, रोटी आदि सादा भोजन। २. स्वास्थ्य के लिए पथ्य व रुचिकर भोजन। ३. जल्दी पचने वाला भोजन।

फरको भोजन—दे० फरको जीमण।

फरगट—*(न०)* १. कटाक्ष। २. बालिकाओं का एक नृत्य। **फूंदी**।

फरगड़—*(ना०)* एक शस्त्र।

फरज—*(ना०)* १. फर्ज। कर्त्तव्य। २. धर्म। ३. अहसान।

फरजन—*(न०)* १. बेटा। पुत्र। २. संतान। पुत्र पौत्रादि।

फरजंद—दे० फरजन।

फरजियात—*(वि०)* १. फर्ज समझकर किया जाने वाला। जो फर्ज के रूप में करना पड़े। २. कर्त्तव्य रूप। लाजमी। ३. अनिवार्य।

फरजी—*(न०)* शतरंज के खेल में वजीर के मोहरे का नाम। *(वि०)* १. नकली। बनावटी। २. झूठा।

फरड़को—*(न०)* १. दौड़ते समय का घोड़े का उच्छ्वास। २. कपड़े के फटने की आवाज। ३. चक्कर मारना। ४. उलहना।

फरड़णो—दे० फुरळणो।

फरड़ाटो—दे० फरड़को।

फरड़ो—*(न०)* ऊँट की लात। **तापड़**।

फरणाट—*(अव्य०)* तेज गति से।

फरणी—दे० फुरणी।

फरणो—दे० फिरणो।

फरतल—*(वि०)* १. वचन देकर नटने वाला। **फरकण**। २. फिरता रहने वाला।
फरताराम—दे० फिरताराम।
फरती—*(ना०)* १. दुःशीला स्त्री। भटकती फिरने वाली स्त्री। २. वेश्या। *(वि०)* १. दुःशीला। २. फिरती हुई।
फरतो-हरतो—*(वि०)* १. जो आ-जा सके तथा काम कर सके।
फरद—दे० फड़द।
फरफराट—दे० फड़फड़ाट।
फरफराणो—*(क्रि०)* कागज आदि के उड़ने से शब्द होना।
फरफरो—*(वि०)* १. नमकीन। २. नमकीन स्वाद वाला। ३. रुचिकर। ४. कम नमकीन और तीखा।
फरफूंदियो—*(न०)* पतंगा। *(वि०)* १. बहुत फिरने वाला। २. चंचल। चपल।
फरमाइस—दे० फरमास।
फरमाण—*(न०)* १. हुक्म। आज्ञा। २. आज्ञापत्र। फरमान।
फरमाणो—*(क्रि०)* १. आज्ञा करना। २. कहना। फरमाना।
फरमान—दे० फरमाण।
फरमाबरदार—*(न०)* आज्ञानुयायी। ताबेदार।
फरमावणो—दे० फरमाणो।
फरमास—*(ना०)* १. फरमाइश। आदेश। २. अभिलाषा। इच्छा (बड़ों की)।
फरमो—*(न०)* १. कलबूत। **काळबूत**। २. जिसमें कोई वस्तु ढाली जाय ऐसा संचा। ३. डौल। ढाँचा। ४. छापने के लिये पृष्ठ वा टाइपों को कंपोज करके तैयार किया हुआ चौखटा। फरमा। ५. फार्म (कागज का वह पूरा पन्ना जो एक बार में मशीन पर छपता है)
फरर—*(ना०)* ध्वजा फरकने की क्रिया।
फरराट—*(ना०)* किसी वस्तु के उड़ने या फड़फड़ाने से पैदा होने वाली ध्वनि। **फर्राटो**।
फर्राटो—दे० फरराट।
फररी—*(ना०)* छोटी झंडी
फररो—*(न०)* साफे, पगड़ी आदि का फुनगा। छोगो।
फरलांग—*(न०)* मील का आठवाँ भाग। २२० गज का फासला।
फरवरी—*(ना०)* ईसवी सन् का दूसरा महीना। फेब्रुआरी।
फरवास—दे० फरास सं० २.
फरस—*(न०)* १. आँगन। फर्श। २. स्पर्श। ३. कुल्हाड़ी।
फरसराम—दे० परशुराम।
फरसी—*(ना०)* १. एक शस्त्र। छोटा परशु। २. कुट्टी करने का औजार। ३. घास काटने की कुठारी। खुरपी। ४. बढ़ई का एक औजार।
फरसीधर—*(न०)* परशुराम।
फरसो—*(न०)* बड़ी फरसी।
फरहरणो—*(क्रि०)* फहरना। हवा में लहराना। उड़ना। हवा का बहना।
फराक—*(न०)* १. लड़कियों के पहनने का एक वस्त्र। फ्रॉक। २. तलाश। खोज।
फराकत—दे० फरागत।
फराकी—*(ना०)* १. विशालता। २. घोड़े के जीन पर बाँधा जाने वाला तंग।
फरागत—*(न०)* १. छुटकारा। छुट्टी। २. फ़ुरसत। **नवरास**। दे० फरागती।
फरागती—*(न०)* मल त्याग। शौच निवृत्ति। पाखाने जाना। फरागत।
फरागती जाणो—*(मुहा०)* पाखाना फिरने जाना। टट्टी जाना। मल त्याग करने को जाना। **दिसा जाणो**।
फराटी—*(ना०)* खूब भोजन करने से होने वाली अरुचि।
फराड़ो—*(न०)* १. झटका। २. नाचते समय जामे या घाघरे का बनने वाला चक्र। ३. नाचने का चक्कर। ४. बादलों का छिन्न-भिन्न होकर आकाश का स्वच्छ होना। वर्षा की झड़ी बंद होकर धूप निकलना। **फरकाळो**।

फरामोस—*(वि०)* भूला हुआ।

फरार—*(वि०)* १. भागा हुआ। २. पलायन।

फरार होणो—*(मुहा०)* भाग जाना।

फरारी—*(वि०)* भागने वाला।

फराळ—*(न०)* १. फलाहार। २. नाश्ता। कलेवा।

फरास—*(न०)* १. वह नौकर जो बिछायत, सफाई आदि करता है। फर्राश। २. झाऊ वृक्ष। **झाउड़ो। फरांस।**

फरासखानो—*(न०)* १. दरी, बिछौना, तकिया, तंबू वगैरा रखने का एक सरकारी विभाग या गोदाम।

फरासी—*(ना०)* १. दरी। सतरंजी। **सेतरंजी।** २. फर्राश।

फरासी कत्ती—*(ना०)* एक शस्त्र।

फराँस—दे० फरास सं० २.

फरियाद—*(ना०)* १. अन्याय के विरुद्ध पुकार। २. दावा। मुकदमा। ३. प्रार्थना। अर्जी। ४. शिकायत। फर्याद।

फरियादी—*(न०)* १. फरियाद करने वाला। फर्यादी। २. फरियाद संबंधी।

फरिस्तो—*(न०)* खुदा का दूत। फरिश्ता।

फरी—*(ना०)* १. फरसी। २. छोटी ध्वजा। **फररी।** ३. झंडी। ४. चमड़े की छोटी ढाल।

फरीक—*(न०)* १. दावा में एक पक्ष। २. विपक्षी। प्रतिद्वन्द्वी। ३. मुद्दई-मुद्दायला। वादी और प्रतिवादी।

फरीकेन—*(न०)* १. दावा में दोनों पक्षकार। वादी और प्रतिवादी। 'फरीक' का बहुवचन रूप।

फरीधर—दे० फरसीधर।

फरूकणो—*(क्रि०)* १. ध्वजा का लहराना। २. फरकना। ३. किसी अंग का फरकना। ४. दिखाई देना। ५. मंद दिखना। ६. किसी वस्तु का अस्पष्ट दिखाई देना, दूरी पर अस्पष्ट दिखाई देना। ७. लौटना।

फरेड़ी—*(ना०)* १. घिरनी। चरखी। **गरेड़ी।** २. चक्कर। ३. अरुचि। **फराटी।**

फरेब—*(न०)* छल। कपट। धोखा।

फरेबियो—*(वि०)* धोखेबाज। चालबाज।

फरेबी—*(ना०)* धोखेबाजी। *(वि०)* धोखेबाज।

फरेस्तो—दे० फरिस्तो।

फरोखत—*(न०)* बेचान। विक्रय। फरोख्त।

फरोळ—*(ना०)* १. जाँच। तपास। २. ढूंढना। ३. इधर-उधर फैलाना। *(न०)* उपद्रव।

फरोळणो—दे० फुरळणो।

फरोही—*(ना०)* पशुपालकों से लिया जाने वाला कर।

फर्क—*(न०)* १. अंतर। दूरी। २. असमानता। ३. दुराव। छिपाव। ४. कमी। ५. परायापन। ६. परिवर्तन।

फर्ज—दे० फरज।

फर्श—दे० फरस।

फर्शी सलाम—*(न०)* फर्श तक झुककर किया जाने वाला सलाम।

फळ—*(न०)* १. फल। परिणाम। नतीजा। २. वनस्पति का गूदेदार खाने योग्य भाग। फल। ३. तीर। बाण। शर। ४. शस्त्र का धारवाला भाग। ५. प्रयोजन। ६. बरछी आदि का अग्रभाग। ७. लाभ। ८. प्रभाव। ९. प्रतिकार। बदला। १०. उद्देश्य। ११. प्रभाव। १२. नारियल। १३. जायफल। १४. चार की संख्या। १५. गौरी पूजन के निमित्त बनाये जाने वाले हल्दी मिश्रित आटे के सुपारी-फल।

फलक—*(न०)* १. ढाल। २. आकाश। ३. स्वर्ग। ४. चादर। ५. पत्र। ६. हथेली। ७. चौकी। ८. नितंब। ९. परत। पट। १०. पट्टा।

फलककार—*(न०)* ढाल बनाने वाला।

फलकू—*(न०)* बालू। रेत।

फलको—दे० फुलको।

फळगट—दे० फळगटी।

फळगटी—*(ना०)* मूंग, मोठ और ग्वार आदि की बीज रहित फलियों का चारा। भूसा।

फळग्राही—*(न०)* वृक्ष। रूंख।

फळचर—*(न०)* बंदर। **वांदरो।**

फळणो—*(क्रि०)* १. फल लगना। २. फल की प्राप्ति होना। सफल होना। ३. फलदायी होना। ४. लाभ होना। ५. संतान होना। ६. वंशवृद्धि होना। ७. सगर्भा होना। ८. बढ़ना।

फळणो-फूलणो—*(क्रि०)* १. फल और फूलवाला होना। २. बाल-बच्चों वाला होना। ३. सुखी-संपन्न होना।

फळद—दे० फळप्रद।

फळदाई—दे० फळप्रद।

फळदात—*(न०)* वृक्ष। रूंख।

फळदायक—*(वि०)* फल देने वाला।

फळदार—*(वि०)* १. फल वाला वृक्ष। २. तीक्ष्ण धार वाला।

फळपत—*(ना०)* १. फल प्राप्ति। २. सफलता। ३. लाभ। ४. उन्नति। *(वि०)* लाभदायक।

फलप्रद—*(वि०)* १. लाभदायक। २. फल देने वाला।

फळ-फळियारी—*(ना०)* १. अनेक प्रकार के फल और फलियाँ। २. विविध प्रकार के फल।

फळ-फळेरी—दे० फळ-फळियारी।

फळफूल—*(न०)* १. फल और फूल। २. फलादि। ३. भेंट।

फळफोफळ—*(न०)* १. विवाह की एक मांगलिक वस्तु और प्रथा। २. फल और सुपारी। ३. नारियल और सुपारी।

फळसा उघाड़—*(वि०)* जिसमें किसी को भी रोक-टोक न हो ऐसा (बृहद भोज)।

फळसो—*(न०)* १. द्वार, दरवाजा। २. गाँव में प्रवेश करने का मुख्य मार्ग। ३. पशुओं के प्रवेश को बंद करने का फाटक। ४. ग्राम-सीमा।

फळा उघाड़—दे० फळसा उघाड़।

फळाऊ—*(वि०)* जिसके फल लगता हो। फल वाला।

फळाऊ झाड़—*(न०)* फल वाला वृक्ष।

फलाणचंद—*(न०)* अमुक पुरुष। फलाँ आदमी। कोई व्यक्ति।

फलाणसिंघ—*(न०)* अमुक व्यक्ति। (जोरावर व्यक्ति के लिये व्यंग्य में)।

फलाणसिंघ-ढींकड़सिंघ—*(न०)* किसी बड़े आदमी के लिये 'फलाणो' का अपमानजनक पर्याय।

फलाणियो—*(वि०)* फलाँ। अमुक। (तुच्छकार में)

फलाणी—*(वि०)* अमुक (स्त्री या वस्तु)।

फलाणो—*(वि०)* अमुक (व्यक्ति)। **फलाँ।**

फलाणो-ढीकड़ो—*(वि०)* अमुक। यह और वह। *(न०)* कोई व्यक्ति। अमुक व्यक्ति।

फलाणो-ढींकणों—दे० फलाणो-ढीकड़ो।

फळादेस—*(न०)* ग्रहों के प्रभाव से बताई जाने वाली बातें (ज्यो०)।

फळाफल—*(न०)* शुभाशुभ फल।

फळामणी—दे० फळावट।

फळायोड़ो—*(न०)* गुणा किया हुआ।

फळार—*(न०)* उपवास के दिन किया जाने वाला फल, दूध, मेवा आदि भोजन। फलाहार। **फराळ। सैंगार।**

फळारी—*(वि०)* १. फलाहार करने वाला। फलाहारी। **फराळी।** २. फलाहार के काम में आने वाली (भोज्य सामग्री)। ३. फलाहार का।

फलालेण—*(न०)* एक प्रकार का वस्त्र।

फळावट—*(ना०)* ब्याज करने या फलाने की विधि। ब्याज फलाने की प्रक्रिया।

फळावणो—*(क्रि०)* १. ब्याज लगाना या जोड़ना। २. गुणनफल निकालना। ३. फलयुक्त करना। फलद्रुप करना या कराना। ४. गर्भ धारण कराना।

फळासव—*(न०)* फलों का आसव।

फळाहार—दे० फळार।

फळाहारी—*(वि०)* १. केवल फलों का आहार करने वाला। फलाहारी। २. फलाहार का। फलाहार संबंधी।

फलां—दे० फलाणो।

फलाँग—*(ना०)* कुदान। छलांग।

फलाँगणो—*(क्रि०)* कूदना। छलांग मारना।

फलितज्योतिष—*(न०)* प्राणियों पर ग्रहों का शुभाशुभ फल बताने वाला ज्योतिष सिद्धान्त।

फळियळ—*(वि०)* फलयुक्त।

फळियो—दे० फळसो।

फळियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. फलयुक्त। २. फला हुआ।

फळियोफूलियो—*(वि०)* १. धनधान्य तथा पुत्रपौत्रादि से युक्त। २. फल-फूलों से युक्त।

फळी—*(ना०)* १. शिम्बी। शिंबिका। फली। २. वंश की शाखा। परिवार की उपशाखा। ३. गली। मोहल्ला। ४. कंबल आदि के छोर के धागों की बटी हुई फली। ५. वृक्ष।

फळीजणो—*(क्रि०)* १. फलवती होना। २. फल लगना। ३. बकरी या ऊंटनी को कामेच्छा होना। ४. बकरी या ऊंटनी का गर्भ धारण करना।

फळीभूत—*(वि०)* १. सफल। २. सार्थक।

फळू—*(न०)* १. अंकुर। अँखुआ। २. बात में से दूसरी बात। ३. झगड़े में से उत्पन्न दूसार झगड़ा।

फळेरी—*(ना०)* १. विविध प्रकार की फलियाँ। फली वर्ग। २. फली।

फळो—दे० फळसो।

फल्गु—*(ना०)* १. गया तीर्थ के पास बहने वाली नदी जिसमें पितृ-पिंड दिये जाते हैं। २. वसंतकाल। *(वि०)* सारहीन। निरर्थक।

फसकण—*(वि०)* १. डरपोक। भीरू। २. फिसकनेवाला। कायर। ३. भागनेवाला। भगोड़ा।

फसकणो—*(क्रि०)* १. नाहिम्मत होना। २. विचार बदल देना या छोड़ देना। ३. भाग जाना। दे० फसकण।

फसणो—*(क्रि०)* १. फँसना। २. किसी की खोटी सलाह से मुसीबत में पड़ जाना। ३. जाल में आ जाना।

फसद—*(न०)* नस में से दूषित खून निकालने की क्रिया। फस्द।

फसल—*(ना०)* १. खेती की पैदावार। २. खेती। ३. नाज पकने का समय। ४. मौसम। ऋतु।

फसळणो—दे० फिसळणो।

फसळी—*(ना०)* फसल या मौसम से संबंधित।

फसळी बुखार—*(न०)* मलेरिया ज्वर।

फसाणो—दे० फसावणो।

फसाद—दे० फिसाद।

फसादी—दे० फिसादी।

फसावणो—*(क्रि०)* १. फँसाना। उरझाना। २. बहकाना। भुलावा देना। ३. धोखा देना। छलना। ४. जाल में डालना।

फहम—दे० फैम।

फहरणो—*(क्रि०)* हवा में लहराना। फहरना।

फहराणो—दे० फहरावणो।

फहरावणो—*(क्रि०)* फहराना।

फहरिस्त—दे० फैरिस्त।

फहळणो—*(क्रि०)* १. चलना। २. फैलना।

फंक—*(ना०)* १. मदारी का वस्तु गायब करने के समय (तीन बार) उच्चारण किया जाने वाला शब्द। मदारी भाषा में फूंक का पर्याय। २. फाँक। चीरी। ३. फंकी। **फाकी**।

फंकणो—१. फूंक से उड़ाना। २. फूंकना। दे० फांकणो।

फंकी—दे० फाकी।

फंगड़ियो—*(न०)* रहँट चलाने वाले के बैठने की जगह का डंडा।

फंट—*(न०)* १. मतभेद। २. जुदाई। अलगाव। ३. झगड़ा। ४. विरोध।

फंटणो—*(क्रि०)* १. जुदा होना। अलग होना। २. शाखा निकलना। ३. मार्ग में से दूसरा मार्ग निकलना। ४. विरुद्ध होना।

फंटवाड़—दे० फंट।

फँटाई—*(ना०)* १. सुथार का एक औजार। २. पृथकता। **छँटाई**।

फंटाऊ—*(वि०)* १. अलग पड़ा हुआ। जुदा। २. विरुद्ध। प्रतिकूल। ३. अप्रसन्न। नाराज। ४. विरोधी। विरुद्ध पक्ष का।

फंटाणो—दे० फंटावणो।

फँटायो—*(न०)* सुथार का एक औजार।

फंटावणो—*(क्रि०)* १. अलग करना। जुदा करना। २. किसी को विरुद्ध पक्ष में से अपने पक्ष में कर लेना। ३. पक्ष बदलवाना। ४. दिशा या मार्ग बदलवाना। ५. शाखा निकालना। ६. बदलवाना।

फंटीजणो—*(क्रि०)* १. अलग होने के लिये विवश होना। २. जुदा होना। दे० फंटणो।

फंड—*(न०)* १. उपद्रव। ऊधम। **अफंड**। २. किसी धार्मिक या सामाजिक काम के लिये अलग-अलग व्यक्तियों से पैसा एकत्रित करने का काम। चंदा। **उघराणी। टीपणी**। ३. इस प्रकार एकत्रित की हुई जमा पूंजी। चंदे से इकट्ठा किया हुआ रुपया-पैसा।

फंद—*(न०)* १. फंदा। बंधन। २. जाल। ३. कपट। ४. क्लेश। ५. मायाजाल। ६. आडम्बर। ढोंग।

फंदणो—*(क्रि०)* १. फंदे में आना। फँसना। २. बंधन में पड़ना।

फंदाणो—*(क्रि०)* १. फंदे में डालना। फँसाना। २. फँसना।

फंदायोड़ो—*(भू० कृ०)* फंदे में पड़ा हुआ।

फंदावणो—दे० फंदाणो।

फंदीजणो—दे० फंदणो।

फंदो—*(न०)* १. फंदा। २. रस्सी में लगी हुई गाँठ। ३. फाँसी की रस्सी। दे० फंद। ४. दुख। कष्ट। ५. झगड़ा।

फंफणो—*(क्रि०)* व्यर्थ प्रयत्न करना। **फांफा मारणो**।

फंफेड़णो—*(क्रि०)* १. अलग-अलग करना। बिखेरना। २. छेड़ना। छेड़खानी करना। ३. पकड़कर जोर से हिलाना। झकझोरना। ४. हिंसक जानवर द्वारा किसी जानवर को पकड़कर नाखून और दाँतों द्वारा फाड़ना। ५. पटक-पटक कर मारना।

फंफोळणो—*(क्रि०)* १. ढूंढ़ना। सोधना। खोजना। २. बिखेरना।

फंभ—*(न०)* फाहा। फोहा। **फायो। फूंबो**।

फँवारो—दे० फुंआरो।

फंस—*(ना०)* १. रुकावट। २. फाँस। महीन काँटा। **फाँ**।

फँसणो—दे० फसणो।

फँसाणो—दे० फसाणो।

फँसावणो—दे० फसावणो।

फा—*(न०)* १. तीर्थ। २. जहर। ३. गुदा।

फाइन—*(वि०)* १. महीन। झीना। २. अच्छा। *(न०)* जुर्माना। अर्थ-दंड।

फाइनल—*(वि०)* १. अंतिम। २. निर्णायक।

फाइल—*(ना०)* १. कागज-पत्र नियमसर तथा क्रमवार रखने का साधन। तार या ऐसा ही कोई उपकरण जिसमें क्रम से कागज-पत्र नत्थी किये जाते हैं। परिसंख्या पत्र। २. रेती। कानस। **अरगती।**

फाउ—दे० फाऊ।

फाउड़ो—*(वि०)* मुफ्तखोर। **मुफतियो।**

फाउंटेन पैन—*(न०)* वह कलम जिसके अंदर स्याही भर करके लिखा जाता है। धारा लेखनी।

फाऊ—दे० फासू।

फाकणो—*(क्रि०)* फाँकना। **फाको मारणो।**

फाकाकस—*(वि०)* १. गरीब। निर्धन। २. भूखा।

फाकाकसी—*(ना०)* १. निर्धनता। कंगाली। २. मुखमरी।

फाकी—*(ना०)* १. फाँकने की वस्तु। फाँकी। २. फाँकने की क्रिया।

फाकी में आणो—*(मुहा०)* चंगुल में आना। धोखे में आना।

फाको—*(न०)* १. उतनी वस्तु जो एक बार में फाँकी जा सके। फाँका। २. फाँका मारने की क्रिया। ३. भूखा रहना। अनशन। ४. टिड्डी के बच्चों की वह अवस्था जबकि उनके पंख आने लगते हैं और फुदकने लगते हैं।

फाखता—*(ना०)* पंडुकी। **हुड़कली।**

फाग—*(न०)* १. फागुन में गाया जाने वाला गीत। २. फागुन में होने वाला राग-रंग। ३. होली पर गाये जाने वाले वीभत्स गीत। ४. फागुन मास। ५. वसंत। ६. वसंतोत्सव।

फागण—*(न०)* फाल्गुन मास। विक्रम संवत का अंतिम महीना।

फागणियो—*(न०)* १. गुलाबी रंग का ओढ़ना। २. सोफियाना रंग की वासंतिक ओढ़नी। *(वि०)* १. फाल्गुन मास से संबंधित। २. गुलाबी रंग से रंगा हुआ।

फागीजणो—*(क्रि०)* १. वसंतोत्सव में उल्लसित होना। होलिकोत्सव के राग-रंग को मनाना। होलिकोत्सव में गा बजा कर के उत्सव मनाना। २. फाग के रंगोत्सवी वातावरण में रंग जाना।

फागोटा—*(न०ब०व०)* फागुन मास में गाये जाने या बोले जाने वाले अश्लील शब्द।

फाचर—*(ना०)* १. लकड़ी के दो जोड़ों की ढिलाई को तंग करने के लिये बीच में दी जाने वाली चीप। २. कुल्हाड़ी वगैरह के ढीले पड़े हुए डंड को तंग (टाइट) करने के लिये ठोंककर बिठाने जैसा लकड़ी का टुकड़ा। ३. विघ्न। बाधा। आपत्ति। अड़चन। ४. संकट। ५. कुल्हाड़ी आदि से कटा हुआ लकड़ी का छोटा टुकड़ा।

फाचर मारणो—*(मुहा०)* विघ्न उपस्थित करना। २. अड़चन खड़ी करना।

फाचरो—*(न०)* १. लकड़ी के फाड़ने या चीरने से निकला या बचा हुआ टुकड़ा। २. फाचर। ३. रोक। अड़चन।

फाजल—*(वि०)* १. फालतू। निकम्मा। फाजिल। २. बचा हुआ। शेष। ३. विद्वान। ४. समझदार। ५. वृद्धि। बढ़ती (धन और रुपये-पैसे की)। ६. ब्याज, नफा आदि।

फाजल बाकी—*(ना०)* जमा-उधार का टोटल लगाने से निकलने वाली लेनी या देनी रकम। हिसाब से निकलने वाला लेना या देना।

फाट—*(ना०)* १. फट जाने का निशान। फटन। २. किसी वस्तु का फटा हुआ भाग। ३. कुसंप। फूट। ४. अंतर। दूरी।

फाटक—*(ना०)* १. बड़ा द्वार। पौल। २. रेलवे लाइन पर बना वह मार्ग जहाँ दूसरा मार्ग पार होता है। **भाँपो।** ३. लावारिश और अवारा ढोरों को पकड़कर बंद करने का सरकारी तथा नगरपालिका का स्थान। **कांजी हौस।**

फाटकड़ी—दे० पटकड़ी।

फाटकाबाज—*(वि०)* सट्टाबाज । सटोरिया । सटोड़ियो ।

फाटको—*(न०)* १. सट्टा । आगे का सौदा । २. जुआ । द्यूत । **जुओ** । ३. प्रहार ।

फाटणो—*(क्रि०)* १. विरुद्ध होना । २. दरार पड़ना । ३. बिगड़ जाना (दूध का)। ४. बहुत अधिक दर्द होना । ५. मर्यादा बाहर होना । ६. अभिमान करना । ७. गर्व में फूलना । ८. जवानी का जोश चढ़ना । ९. मस्ती में आना । १०. फटना । चिरना ।

फाटपड़ी—दे० फाटकड़ी ।

फाटफूट—*(ना०)* १. अनबन । २. कुसंप । ३. मतभेद । ४. अनबनाव से होने वाली जुदाई । ५. लकड़ी आदि के फाड़ने से निकला हुआ कचरा ।

फाटीगाळ—*(ना०)* अश्लील गाली । **गाळ** ।

फाटो—*(वि०)* १. फटा हुआ । २. अश्लील । ३. कुत्सित । ४. असभ्य । *(न०)* अश्लील शब्द । अश्लील गाली । **गाळ** ।

फाटो-टूटो—*(वि०)* १. पुराना । २. फटा-टूटा और पुराना । जीर्ण ।

फाटोड़ो—*(वि०)* १. फटा हुआ । २. धन, यौवन आदि का हद से ज्यादा अभिमान करने वाला ।

फाटो बोलणो—*(मुहा०)* अश्लील बोलना । अश्लील गाली देना ।

फाड—*(ना०)* १. किसी वस्तु का काटा हुआ या चीरा हुआ भाग । टुकड़ा । २. चीरी । फाँक । ३. डर । भय । ४. आतंक । दे० फाचर, १, २.

फाड़णो—*(क्रि०)* १. फाड़ना । चीरना । २. मुँह खोलना । ३. छिन्न-भिन्न करना । ४. भेद डालना । ५. दूध में खटाई डालकर पानी अलग करना ।

फाडियो—*(वि०)* १. बखेड़ाबाज । २. दे० फाडो । दे० फाड ।

फाडी—*(ना०)* १. लकड़ी का छोटा फाडा । २. झालन या टाँके का छोटा टुकड़ा । ३. अवरोध । रुकावट । अड़चन ।

फाडी देणी—*(मुहा०)* अवरोध उत्पन्न करना ।

फाडी मारणी—*(मुहा०)* अड़चन डालना ।

फाडो—*(न०)* १. कुल्हाड़े से लकड़ी फाड़ने से जो छोटे-छोटे टुकड़े बनते हैं, उनमें से एक । **छोडो** । २. सोने या चाँदी आदि की झालन के टाँके का टुकड़ा । ३. सुपारी का आधा टुकड़ा । आधी सुपारी । ४. लंबा डग । *(वि०)* १. फैला हुआ । २. चौड़े पाँवों या सींगों वाला ।

फातड़ो—*(न०)* हिजड़ा । नपुंसक । *(वि०)* कायर । डरपोक ।

फातिया—*(न०)* मुसलमानों द्वारा मृतक व्यक्ति के लिये की गई प्रार्थना । फातिहा ।

फाथीजणो—*(क्रि०)* १. गर्व करना । २. अपने को बड़ा समझना । ३. फूलना । ४. फैलना । ५. अनुमान से अधिक बढ़ जाना । ६. गड़बड़ा जाना । **फैतीजणो** ।

फाथो—*(वि०)* १. फैला हुआ । २. चौड़ा । ३. समझ और धन के अभिमान में फूला हुआ ।

फानण—*(न०)* १. अंग्रेजी आठ के जैसी कड़ी । दोहरी कड़ी । २. बंधन ।

फानणो—*(क्रि०)* १. जोड़ना । २. कड़ी में कड़ी को पिरोना । ३. बंधन में डालना । फँसाना ।

फानस—*(न०)* एक प्रकार का दीपक । फानूस । कंदील । **लालटण** ।

फाफरियो—दे० फाफरो ।

फाफरी—दे० फाफरो ।

फाफरो—*(न०)* चपाती । **फुलका । रोटी** ।

फाबणो—*(क्रि०)* १. शोभा देना । फबना । २. ठीक लगना । ३. उचित स्थान पर रखना । ४. शोभा के साथ जमना । ५. लड़ना । ६. संबंध टूटना । ७. परस्पर अपमानित करना । ८. गाली-गलौंच करना ।

फाबतो—*(वि०)* १. उचित स्थान पर जमा हुआ । २. फबने वाला । फबीला । शोभा देने वाला । **फबतो** । ३. सुंदर । ४. उचित । ठीक । ५. अच्छा दिखने वाला । ६. अच्छा ।

फाम—दे० फैम ।

फायदाकारक—*(वि०)* लाभदायक ।

फायदेमंद—*(वि०)* लाभदायक ।

फायदो—*(न०)* १. लाभ । नफा । २. **कमाई** । प्राप्ति । ३. मतलब । प्रयोजन । ४. रोगनिवृत्ति । ५. फल । नतीजा । ६. हित । भलाई ।

फायो—*(न०)* १. रुई का छोटा टुकड़ा । **फूंबो** । २. फाले के ऊपर लगाने का मलहम या तेल में तर किया हुआ कपड़े या रुई का टुकड़ा । ३. अतर में तर किया हुआ पुंबा । अतर का फाहा ।

फारक—*(वि०)* १. जो कम वजन का हो । हलका । **फोरो** । २. काम से छुटकारा । निवृत्त । फारिग । ३. घटिया । ४. फुर्तीला । ५. वीर । *(न०)* १. युद्ध में पीछे की पंक्ति में रहने वाला सैनिक । २. शत्रु ।

फारग—दे० फारक ।

फारगती—*(ना०)* १. लेनदेन की सफाई का एक दस्तावेज । २. चुकारे का दस्तावेज । **फारखती** । निर्दावा चिट्ठी । ३. छुटकारा । निवृत्ति । ४. तलाक । **छूटाछेड़ा** ।

फारफेर—*(न०)* बढ़घट । कमीबेशी । २. फर्क । अंतर । ३. भाव, तोल, माप वगैरा में किया जाने वाला फेरफार ।

फारस—*(न०)* १. ईरान देश । २. हँसी-मजाक का नाटक । हास्य प्रधान रूपक । प्रहसन ।

फारसी—*(ना०)* १. फारस देश की भाषा । पर्शियन । २. फारस देश का निवासी । ईरानी । ३. संकेत की भाषा । *(वि०)* फारस देश का । ईरान संबंधी ।

फाल—*(ना०)* हल में लगा हुआ लोहे का नुकीला भाग जिससे जमीन में रेखाएँ (**ओळें**) बनती हैं । *(न०)* १. फसल या वृक्ष आदि का पुष्पित होना । २. वृक्ष में ऋतु पर आने वाला मौर । फल का (मौर के रूप में) पूर्व रूप । ३. वृक्ष में पत्ते, फल, फूल आने की स्थिति । ४. पशु-पक्षियों का संभोग समय । ५. शस्त्र का पैना भाग । ६. एक प्रकार का वस्त्र ।

फाळ—*(ना०)* १. अवसर । मौका । २. कुदान । फलांग । छलांग । ३. पैंड । कदम । ४. तेज दौड़ ।

फालक—*(न०)* एक वृक्ष ।

फाळकियो—*(न०)* सूत को लपेट कर अंटी बनाने का उपकरण । अटेरन । **अटेरणो** । दे० फाळको ।

फाळकी—*(ना०)* अटेरन पर लपेटी हुई सूत या ऊन की छोटी अंटी ।

फालको—*(न०)* फाला । फोड़ा ।

फाळको—*(न०)* अटेरन पर लपेट कर बनाई सूत की अंटी । **गूंछळो** ।

फाळगुण—*(न०)* १. पांडु पुत्र अर्जुन । २. फाल्गुन मास ।

फाळणो—*(क्रि०)* १. एक या एक से अधिक रकमों का ब्याज जोड़ना । २. बँटवारा करना । ३. हिस्से करना । विभाजन करना । ४. कूदना । फाँदना ।

फालणो—*(क्रि०)* फल युक्त होना । फल लगना । फलना ।

फालतू—*(वि०)* १. अतिरिक्त । अवशिष्ट । २. आवश्यकता से अधिक । ३. बेकार । निकम्मा । निरुपयोगी ।

फालरियो—*(न०)* बकरी का छोटा बच्चा । **मींमियो** ।

फाळवणी—*(ना०)* विभाजन । बँटवारा ।

फाळवणो—*(क्रि०)* दे० फळावणो ।

फालसो—*(न०)* एक वृक्ष और उसका फल । फालसा ।

फालिज—*(न०)* पक्षाघात । पेरेलिसिस । **लकवो** ।

फाळियो—*(न०)* १. साफा की भाँति बाँधने का छोटा कपड़ा । २. साफा । **पोतियो** । **फेंटो** । ३. छोटी धोती । अंगोछी । **पंचियो** ।

फालो—*(न०)* १. फफोला । २. छाला । **छाळो** ।

फाळो—(न०) १. चंदा। **उघराणी। टीप।** २. हिस्सा।

फाल्गुन—(न०) १. फाल्गुन मास। २. अर्जुन का नाम।

फावड़ी—दे० पावड़ी।

फावड़ो—दे० पावड़ो।

फास—(वि०) १. अश्लील। २. अशिष्ट। (ना०) अशिष्ट भाषा। फाहिश। फाहिश जबान।

फासलो—(न०) १. दूरी। **छेटो।** २. अंतर।

फासू—(वि०) १. मुफ्त। **फाहू। फाउ।** २. निरर्थक। ३. फालतू।

फासू जळ—(न०) जैन साधु को गोचरी के समय विहराया जाने वाला धोवन। धोवन का पानी। फालतू पानी। **धोवण।**

फाहु पाणी—दे० फासू जळ।

फाहू—दे० फासू।

फाहो—दे० फायो।

फाँ—दे० फाँस।

फाँक—(ना०) १. फलादि का लंबाई में काटा हुआ टुकड़ा। **चोरी।** २. रेखा।

फाँकड़ी—(ना०) १. छोटी फाँक। २. अक्षर के आगे लगाई जाने वाली पाई। ३. रुपयों और आनों में लगाई जाने वाली खड़ी चंद्राकार पाई। **त्यावली।** ४. रेखा। लकीर। (वि०) १. छैली। रंगीली। नखरे वाली। २. खुशमिजाज। ३. **मिजाजण।**

फाँकड़ो—(वि०) १. छैल। रंगीला। रसिक। २. खुशमिजाज। ३. सुंदर। मनोहर। ४. हृष्ट-पुष्ट।

फाँकणो—दे० फाकणो।

फाँट—(न०) १. किसी औषधि को भिगोकर उसका रस निकालकर बनाया हुआ पेय। २. विरोध। **फंट।** ३. जुदाई। ४. रेखा। लकीर। (वि०) १. बच्चा नहीं देने वाली (गाय या बकरी)। २. जिसके बच्चा नहीं हुआ हो वह (गाय या बकरी)।

फाँट गाय—(ना०) १. टोले में से टली हुई गाय। २. टोले में नहीं रहने वाली गाय। **रुलेट गाय।** ३. बच्चा नहीं देने वाली गाय।

फाँटणो—(क्रि०) १. किसी औषधि को अमुक समय तक पानी में भिगोकर उसका रस निकाला। २. जुदा करना। अलग करना। ३. मार्ग बदलकर दूसरे मार्ग पर जाना। ४. विरोधी बनाना।

फाँटियो—(न०) १. हस्तलिखित ग्रंथों के कागज पर बिना स्याही की रेखाएँ उभारने के लिये बनी हुई एक ऐसी काष्ठ-पट्टी जिसके लंबाई के दोनों सिरों पर समानांतर में आमने-सामने बीस-पच्चीस छेद किये हुए होते हैं, जिनमें लंबाई की ओर मोटे धागों को ग्रथित करके गोंद-सरेस आदि से चिपका दिया जाता है। लिखे जाने वाले कागज को उस पट्टी पर रख कर अंगुली के दबाव से रेखाएँ उभरा दी जाती हैं। फाँटिये पाड़ने की काष्ठ-पट्टी। **ओळियो।** २. रेखा।

फाँटी—(ना०) १. रेखा। पंक्ति। लकीर। लाइन। २. शाखा। ३. अलगाव। दूरी।

फाँटी पड़णो—(मुहा०) १. मनमुटाव होना। जुदा होना।

फाँटी पाड़णो—(मुहा०) १. रेखा खींचना। २. मनमुटाव करना। ३. जुदा करना।

फाँटो—(न०) १. वंश की शाखा। २. शाखा। ३. मार्ग की शाखा। ४. भेद। ५. अलगाव। जुदाई। ६. द्वेष। ७. रोग में से पैदा हुआ दूसरा रोग। ८. भूत-प्रेत आदि का आवेश।

फाँडाळो—(वि०) सुराख वाला।

फाँडो—(न०) १. सुराख। छेद। **बेज। ठींडो।** २. चोरी करने के लिए लगाई जाने वाली सेंध।

फाँतरको—(न०) छिलका। **फोतरो।**

फाँतरो—दे० फाँतरको।

फाँती—दे० फाँतरको।

फाँद—*(ना०)* १. पेट का आगे बढ़ा हुआ भाग। २. बड़ा पेट। ३. फंदा। ४. छलाँग।

फाँदणो—*(क्रि०)* १. कूदना। छलाँग मारना। २. कड़ी में कड़ी जोड़ना। ३. फंदे में फाँसना।

फाँदळ—*(वि०)* बड़े पेट या तोंद वाला।

फाँफ—*(ना०)* १. व्यर्थ प्रयत्न। २. विघ्न।

फाँफा—*(न० ब० व०)* १. बेपते की बात। २. बेपते की तलाश। ३. मिथ्या प्रयत्न। व्यर्थ प्रयत्न। ४. व्यर्थ धक्के खाना। ५. इधर-उधर तलाश करके निष्फल होने का भाव।

फाँफा मारणो—*(मुहा०)* १. बेपते की बातें या काम करना। २. व्यर्थ प्रयत्न करना।

फाँस—*(ना०)* १. काँटे की तरह चमड़ी में चुभ जाने वाली बाँस आदि की बारीक सीक। नाट। फाँ। २. तीली। सीक। ३. रुकावट। अड़चन। ४. उलझन। ५. चुभने वाली बात।

फाँसणो—*(क्रि०)* १. छल, कपट से किसी को अपने वश में करना। फँसाना। २. छलना। ३. बंधन में डालना। ४. नुकसान में डालना।

फांसियो—*(वि०)* फँसाने वाला।

फाँसी—*(ना०)* १. मृत्यु दंड। २. गले में फाँसा डालकर मार दिये जाने की मौत की सजा। ३. असह्य दुख। ४. संकट। ५. बंधन।

फाँसू—*(वि०)* मुफ्त। फाऊ।

फाँसो—*(न०)* १. फंदा। जाल। फाँसा। २. रस्सी में सिरकने वाली लगाई गाँठ। सिरकी पासो। ३. फाँसी। टूँपो।

फाह—दे० फाँस।

फिकन—*(वि०)* १. शत्रु। २. दुष्ट।

फिकर—*(न०)* १. फिक्र। चिन्ता। २. परवाह। ३. सम्हाल। ४. विचार। ५. खटपट।

फिकरो—*(न०)* १. वाक्य। फिकरा। २. पैरा। दे० पिकरो।

फिकास—*(ना०)* १. निस्तेजता। २. विवर्णता। ३. स्वादहीनता। ४. फीकापन। नीरसता। ५. नमक या मिठास का अभाव।

फिचळणो—*(क्रि०)* १. घृणा करना। २. कायर होना।

फिजूल—*(वि०)* व्यर्थ। निकम्मा। फजूल।

फिजूल खरच—दे० फजूल खर्च।

फिजूल खरची—दे० फजूल खर्ची।

फिट—*(न०)* धिक्कार। फिटकार। *(वि०)* १. बराबर बैठता या जमता हुआ। २. योग्य। लायक।

फिटक—*(ना०)* १. लज्जा। २. कपट। ३. जाल।

फिटकड़ी—*(ना०)* एक स्फटिक, श्वेत तथा खट्टा खनिज द्रव्य।

फिटक में आणो—*(मुहा०)* जाल में फँसना।

फिटकार—*(न०)* धिक्कार। लानत। फटकार।

फिटकारणो—*(क्रि०)* धिक्कारना। फटकारणो।

फिटकारो—*(न०)* धिक्कार।

फिटन—*(ना०)* एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

फिटळो—दे० फिटोळ।

फिटो—*(न०)* १. त्याग। २. चुप। ३. खत्म।

फिटो करणो—*(क्रि०)* १. छोड़ना। त्यागना। २. किसी स्थान से हटना। ३. क्षमा करना। ४. पद, कार्य अथवा कर्त्तव्य से अलग करना। ५. विवाद या झंझट को खतम करना। किसी की चर्चा बंद करना। ६. काम को अधूरा छोड़ना। ७. किसी बात या काम की चर्चा को बंद करना। ८. चुप रहना। शांत रहना।

फिटो पाड़णो—*(मुहा०)* १. लज्जित करना। २. अपमानित करना।

फिटोफिट—*(वि०)* यंत्र, वस्त्रादि का माप के अनुसार होना।

फिटोळ—*(वि०)* १. बेकार इधर-उधर घूमने वाला। २. निकम्मा। ३. आवारा। ४. अविश्वसनीय। ५. नालायक। अयोग्य। **फटोळ**।

फिटोळियो—दे० फिटोळ।

फिड़को—*(न०)* दे० फड़को।

फितूर—*(न०)* १. ढोंग। आडंबर। २. दंगा। रोला। ३. झगड़ा-टंटा। बखेड़ा। उपद्रव।

फितूराळो—दे० फितूरी।

फितूरियो—दे० फितूरी।

फितूरी—*(वि०)* १. छली। कपटी। २. ढोंगी। ३. तोफानी। ४. उच्छृंखल। ५. विघ्नकर्ता। ६. बदमाश। ७. झगड़ालू।

फिदड़को—*(न०)* १. बाधा। विघ्न। २. पतला दही। ३. धागे में रहा हुआ रुई का रेशा। ४. एक कीट। ५. घब्बा।

फिदवी—*(वि०)* १. आज्ञाकारी। २. सेवक।

फिदा—*(वि०)* १. आसक्त। अनुरक्त। २. मोहित। ३. निछावर।

फियो—*(न०)* प्लीहा। तिल्ली।

फिर—*(क्रि० वि०)* १. एक बार और। आगे। दूसरी बार। पुनः। २. भविष्य में किसी समय। ३. उपरांत। अलावा। ४. पीछे। जिसके बाद।

फिरकड़ी—दे० फरकड़ी।

फिरकल—*(वि०)* १. प्रतिज्ञा करके बदल जाने वाला। अपनी बात या वचन से पलट जाने वाला। **फरकण**। २. पक्ष बदलू।

फिरकी—*(ना०)* १. चरखे के तकले में लगने वाला गोल टुकड़ा। २. धागा लपेटने की रील। ३. कुश्ती का एक पेच। ४. एक प्रकार का व्यायाम। ५. बच्चों का एक खेल। ६. चिरनी।

फिरको—*(न०)* १. सम्प्रदाय। पंथ। २. जाति। कौम। ३. छोटा समुदाय। ४. जत्था। टोळो।

फिर जाणो—*(क्रि०)* १. पलट जाना। बदल जाना। २. अपनी बात पर दृढ़ न रहना। ३. लौट जाना। वापस होना। मुड़ना। ४. विपरीत होना। ५. झुक जाना।

फिरड़—*(ना०)* १. छोटी अवस्था की टिड्डी। टिड्डी की एक अवस्था। २. टिड्डी।

फिरड़को—दे० फिरड़।

फिरड़ी—*(ना०)* बाँझ ऊंटनी। *(वि०)* बाँझ। बाँझणी।

फिरणी—*(ना०)* १. फिरकी। चिरनी। **गराड़ी। गड़गड़ी**। २. भ्रमण। चक्कर। ३. परिक्रमा। **भमती**। ४. गति। चाल।

फिरणो—*(क्रि०)* १. फिरना। गतिमान होना। २. विरुद्ध होना। विपरीत होना। ३. पलटना। बदलना। ४. सैर करना। टहलना। घूमना। ५. लौट आना। वापिस होना। मुड़ना। ६. अपनी बात पर कायम न रहना। ७. भटकना। ८. विरुद्ध होना। ९. देशाटन करना। १०. किसी वस्तु का अपने अक्ष का चक्कर लगाना।

फिरतल—*(वि०)* १. फिरने वाला। २. कहकर नट जाने वाला। मुकर जाने वाला। ३. पक्ष पलटने वाला।

फिरताराम—*(न०)* १. साधु। २. एक स्थान पर नहीं रहने वाला मनुष्य।

फिरंग—*(न०)* १. यूरोप देश। २. गरमी या उपदंश का रोग।

फिरंगण—*(ना०)* फिरंगी की स्त्री।

फिरंगवाय—*(न०)* एक वायु रोग और आतशक।

फिरंगाण—*(न०)* १. फिरंगी लोग। २. फिरंगियों का देश।

फिरंगी—*(न०)* १. गोरा। यूरोपियन। २. फिरंग रोग से पीड़ित।

फिरंट—*(वि०)* १. विरुद्ध। विपरीत। २. फिरा हुआ। ३. नाराज।

फिरंड—*(वि०)* विरोधी।

फिराऊ—*(वि०)* विरुद्ध।

फिराक—*(न०)* १. खोज । तलाश । २. चिंता । दे० फराक ।

फिराणो—*(क्रि०)* १. चलाना । २. घुमाना । ३. मोड़ना । ४. पलटना । ५. लौटाना । ६. विरुद्ध करना ।

फिराव—*(न०)* १. चक्कर । गोल फिरना । २. घेरा । ३. लौटना । ४. चाल । गति ।

फिरियो—'फिरणो' क्रिया का भूतकाल रूप । फिरा । फिर गया । **घूमियो** ।

फिरियोड़ो—*(भू० कृ०)* फिरा हुआ । घूमा हुआ । लौटा हुआ । **घूमियोड़ो** ।

फिरोजशाही—दे० पिरोजसाही ।

फिरोजी—दे० पिरोजी ।

फिरोजो—दे० पिरोजो ।

फिरोळणो—दे० फुरळणो ।

फिळसो—दे० फळसो ।

फिलहाल—*(क्रि० वि०)* १. अभी । इस समय । २. इस समय के लिये ।

फिळा उघाड़—दे० फळसा-उघाड़ ।

फिळो—दे० फळो ।

फिस—*(वि०)* असफल । *(अव्य०)* कुछ नहीं ।

फिसकण—*(वि०)* १. कायर । २. काम हाथ में लेकर पूरा नहीं कर सकने वाला । ३. ढीला । मंद । ४. पोच ।

फिसकणियो—दे० फिसकण ।

फिसकणो—दे० फिसकण । *(क्रि०)* १. काम को अधूरा छोड़ देना । २. मुकर जाना ।

फिसड्डी—*(वि०)* १. सबसे पीछे रहने वाला । २. अकर्मण्य । ३. कमजोर ।

फिसळण—*(ना०)* फिसलने की क्रिया । रपटन ।

फिसळणो—*(क्रि०)* १. रपटना । चिकनाहट के कारण खिसक जाना । २. गिर जाना । ३. नट जाना । मना करना । ४. बदल जाना । ५. लोभ में फँसना । ६. पथभ्रष्ट होना ।

फिसाद—*(न०)* १. झगड़ा । टंटा । फसाद । २. **ऊधम** । तोफान । उत्पात । फसाद । ३. दंगा । हुल्लड़ ।

फिसादी—*(वि०)* १. झगड़ाखोर । फिसाद करने वाला । फसादी । २. उत्पाती । उपद्रवी । **ऊधमी** । ३. प्रपंची ।

फिहो—दे० फियो ।

फिंगरणो—दे० फींगरणो ।

फी—*(ना०)* १. अंतर । फर्क । २. दोष । त्रुटि । ३. शुल्क । फीस । ४. दस्तूरी । ५. वेतन । ६. मेहनताना । ७. पवन । ८. हाथी । ९. देवता । *(वि०)* प्रत्येक । हरेक ।

फीओ—दे० फियो ।

फीक—*(ना०)* फीकापन । निःस्वादिता । **मोळास** ।

फीकरियो—*(वि०)* १. फिक्र वाला । चिंताशील । २. निर्लज्ज । ३. नीरस । ४. रुक्ष ।

फीकाई—दे० फिकास ।

फीकास—दे० फिकास ।

फीको—*(वि०)* १. प्रकाशहीन । कांतिहीन । २. स्वादहीन । बेमजा । **मोळो** । ३. हलका रंग जो चटकीला न हो । ४. चहलपहल रहित । ५. उदास । दिलगीर । ६. लज्जित । ७. हीन । ८. अलोना । **अलूणो** । ९. अप्रिय । १०. नीरस । ११. अनादृत । १२. असफल । १३. असुहावना ।

फीको पड़णो—*(मुहा०)* १. लज्जित होना । २. अपमानित होना । ३. पीला पड़ना (शरीर का) । ४. रंग का उड़ जाना ।

फीकोफस—*(वि०)* बिल्कुल फीका ।

फीको लागणो—*(मुहा०)* १. आनंद व उत्साह का अभाव होना । २. भद्दा लगना । ३. स्वादिष्ट नहीं लगना ।

फीच—दे० फींच ।

फीट—*(न०)* १. फुट का बहुवचन । दे० फीटो ।

फीटणो—*(क्रि०)* मिटना । नाश होना । खत्म होना ।

फीटो—*(वि०)* १. लज्जित। शर्मिंदा। २. अश्लील। **फाटो**। ३. असभ्य। ४. घृणित। वीभत्स। ५. निर्लज्ज। ६. धीठ। ७. झूठा। **कूड़ो**।

फीटो पड़णो—*(मुहा०)* लज्जित होना।

फीटो बोलणो—*(मुहा०)* १. अश्लील बोलना। बात करते समय अश्लील शब्दों का उच्चारण करना। २. अश्लील गाली देना।

फीडी—*(वि०)* १. फैली हुई। पसरी हुई। २. निर्लज्जा। ३. मोटी-ताजी।

फीडी पगरखी—*(ना०)* १. स्त्रियों के पाँवों की खुली एड़ी की जूती। २. दूल्हे की खुली एड़ी की जूती। **विदोळी**।

फीडो—*(वि०)* १. चौड़ा। २. फैला हुआ। विस्तृत। ३. मोटे शरीर वाला। ४. पसर कर बैठने वाला। ५. निर्लज्ज। ६. खोखला।

फीण—*(न०)* १. **झाग**। फेन। २. अफीम। **अमल**।

फीण नाँखतो—*(न०)* १. ऊँट। २. साँप।

फीण-नाग-रो—*(न०)* अफीम। **अमल**।

फीणा बाटी—दे० फीणा रोटी।

फीणा रोटी—*(ना०)* घी का मोयन और सूखा आटा मिलाकर फेनी की भाँति फेंट-कर बनाई हुई लोई की तवे पर तली हुई खस्ता पूरी। **तळयीं रोटी**। **तळमी बाटी**। **तवापुड़ी**।

फीणी—*(ना०)* १. स्त्रियों के नाक का एक गहना। २. घी में सान कर तला और चाशनी में पगाया हुआ मैदे का एक लच्छा। सूत के लच्छों के समान एक मिठाई। फेनी।

फीणो—*(न०)* रँहट का एक उपकरण।

फीत—*(ना०)* १. ओढ़ना, साड़ी आदि पर लगाई जाने वाली किनारा किनारी। २. गूंथी हुई कोर। ३. सैनिक के कोट पर लगाया जाने वाला कपड़े की पट्टी का एक चिह्न विशेष।

फीतो—*(न०)* १. नापने की लोहे या कपड़े की लम्बी पट्टी। फीता। २. पतली धज्जी। ३. साड़ियों के किनारे पर लगाया जाने वाला सुंदर बोर्डर। फीता। ४. गोटा किनारी।

फीदो—दे० फीडो।

फीफर—दे० फेंफड़ो।

फीफरो—दे० फेंफड़ो।

फीम—*(न०)* अफीम। **अमल**। **अफीण**।

फील—*(न०)* १. हाथी। २. बाण।

फीलखानो—*(न०)* हाथियों को बाँधने की जगह। पीलखाना।

फीलचराई—*(ना०)* हाथी को चराने का कर।

फीलनाळ—*(ना०)* हाथी के ऊपर कसी जाने वाली तोप।

फीलवान—*(न०)* महावत।

फीस—*(ना०)* १. शुल्क। फी। २. नियम तथा परिपाटी के अनुसार कोर्ट में किये जाने वाले दावे पर या स्कूल आदि संस्थाओं में प्रवेश, भरती आदि का अनिवार्य रूप से लिया जाने वाला शुल्क। ३. पारिश्रमिक।

फी सदी—*(अव्य०)* सौ पर। सैकड़े। सैकड़े पर। प्रतिशत।

फीहो—दे० फिहो।

फींगरणो—*(क्रि०)* दे० फेंगरणो।

फींगो—*(वि०)* निर्लज्ज।

फींच—*(ना०)* १. टाँग। २. पिंडली। ३. जाँघ के नीचे का भाग।

फींडो—*(वि०)* चपटी और छोटी नाक वाला।

फींफड़ो—दे० फेंफड़ो।

फींफर—दे० फेंफड़ो।

फु—*(न०)* १. गुण। २. देरी। ३. कार्तिक मास। ४. **फुकार**।

फुअड़—*(वि०)* १. सुघड़ता रहित। निपु-णता का अभाव वाला। २. अविवेकी। ३. गंदा। ४. असभ्य। ५. ओछा।

फुअड़पणो—*(न०)* १. सुघड़ता तथा निपुणता का अभाव। ३. गंदापना। ४. असभ्यता। ५. ओछापन। **ओछाई।**

फुआरो—*(न०)* फुहारा।

फुई—*(ना०)* पिता की बहन। बुआ। **फुआ। भुआ।**

फुओ—*(न०)* पिता की बहन का पति। पिता का बहनोई। **फूफो। भुआड़ो।**

फुगतरो—दे० फोतरो।

फुट—*(न०)* १. बारह इंच का एक नाप। २. इस माप की पट्टी। फुट पट्टी।

फुटकर—*(वि०)* १. प्रकीर्ण। परचूरण। खुर्दा। २. थोड़ा-थोड़ा। थोकबंध नहीं। खरीज। ३. अलग-अलग। भिन्न-भिन्न। ४. छूटक।

फुटकरियो—*(न०)* फुटकर माल बेचने वाला। फुटकर व्यापारी। **परचूणियो।**

फुटनोट—*(न०)* लेख की टिप्पणी।

फुटपट्टी—*(ना०)* फुट (१२ इंच) के नाप की लकड़ी की पट्टी।

फुटबाल—*(ना०)* पैरों से खेली जाने वाली गेंद।

फुटरापो—दे० फूटरापो।

फुड—*(न०)* १. मुसलमान। २. उपस्थ।

फुडियो—*(न०)* मुसलमान।

फुण—पवन। दे० फण।

फुणकारो—दे० फणकारो।

फुणगली—दे० फुणगी।

फुणगी—*(ना०)* फुंसी।

फुणगो—दे० फणगो।

फुणधर—दे० फुणंधर।

फुणली—*(ना०)* सर्पिनी।

फुणसी—दे० फुंसी।

फुणंधर—*(न०)* सर्प। नाग।

फुणाळ—*(न०)* सर्प।

फुणाळी—*(ना०)* सर्पिणी।

फुणिंद—दे० फणिंद।

फुणी—दे० फणी।

फुणीभाट—*(न०)* १. शेषनाग। २. सर्प।

फुणीधर—*(न०)* सर्प। नाग। **साप।**

फुतरको—दे० फोतरो।

फुदकड़ी—*(ना०)* एक सुंदर छोटी चिड़िया।

फुदकणो—*(क्रि०)* १. उछलना। कूदना। २. प्रसन्न होना।

फुदी—*(ना०)* स्त्री की गुह्येन्द्री। योनि। **फुद्दी।**

फुद्दी—दे० फुदी।

फुफदी—*(ना०)* १. एक गहना। २. फफूंदी। ३. एक वस्त्र।

फुफकणारो—*(वि०)* फुफकारा करने वाला। *(न०)* सर्प। साँप। नाग।

फुर—*(न०)* १. पक्षी के उड़ते समय होनेवाला परों का शब्द। स्फुर। *(वि०)* १. स्फुर। स्फुरित। व्यक्त। २. सत्य। ३. अस्थिर।

फुरकणो—*(क्रि०)* १. आना (व्यंग्य या क्रोध में)। २. दिखाई देना। ३. हिलना। फरकना। ४. देखना। ५. स्फुरना। ६. स्पंदन होना। किसी अंग में फड़कन या कंपन होना।

फुरकारो—*(न०)* इशारा। **सनकारी।**

फुरजो—*(न०)* अवसर। मौका। *(ना०)* घोड़ी की जननेन्द्री।

फुरण—*(न०)* स्फुरण। अंगों की फड़कन।

फुरणा—*(ना०)* १. स्फुरण। फड़कन। २. इच्छा। अभिलाषा। ३. याद। स्मरण। ४. नई उक्ति। सूझ।

फुरणी—*(ना०)* नथुनी। नाक का छेद।

फुरणो—*(क्रि०)* १. स्फुरण होना। स्फुरना। २. व्यक्त होना। ३. याद होना। स्मरण होना। ४. मुँह से शब्द निकलना। प्रकाशित होना। ५. सत्य होना। ६. सफल होना। ७. फड़कना। ८. काँपना। ९. इच्छा होना।

फुरती—*(ना०)* १. शीघ्रता। २. चंचलता। स्फूर्ति।

फुरतीलो—*(वि०)* फुरतीवाला। फुरती से काम करने वाला।

फुरमाण—दे० फरमाण ।
फुरमाणो—दे० फरमाणो ।
फुरमावणो—दे० फरमाणो ।
फुरमास—एक लगान । दे० फरमास ।
फुरळणो—*(क्रि०)* १. कणों का हाथ से इधर-उधर फैलाना या बिखेरना । २. किसी वस्तु को ढूंढने के लिये अन्य वस्तुओं या सामान को इधर-उधर करना । ३. तितर-बितर करना । ४. टटोलना । **टंटोळणो** । ५. चीरना । फाड़ना ।
फुरसत—*(ना०)* १. खाली वक्त। अवकाश। २. छुट्टी । बेकारी । ३. काम कर लेने के बाद का समय । निवृत्ति । **निरांत** ।
फुरेरी—*(ना०)* सींक के सिरे पर दवा आदि लगाई हुई रुई ।
फुरो वाचा—*(अव्य०)* 'वचन सत्य हो' इस आशय का उद्‌गार ।
फुळ—*(ना०)* आग । अग्नि ।
फुलको—*(न०)* उपसी (फूली) हुई बहुत पतली, छोटी और नरम रोटी । चपाती । **फाफरियो । फाफरो** ।
फुलगर—*(न०)* सर्दियों में पहनने के ओवर-कोट के समान घुटनों से नीचे तक का फूलों वाली छींट का रुईदार कोट या अंगरखा ।
फुलगारणो—*(क्रि०)* आलू, बैंगन आदि के भुरते में या कच्ची सब्जी में मसाले आदि डालकर घी का धुआं देना । **धूंगारणो** ।
फुलगारियोड़ो—*(भू० कृ०)* फुलगारा हुआ। **धूंगारियोड़ो** ।
फुलड़ी—दे० फूलड़ी ।
फुलण—दे० फूलण ।
फुलरी—*(ना०)* १. छोटी बकरी (जैस०) । २. बकरी । ३. सफेद बकरी ।
फुलवाड़ी—*(ना०)* पुष्पवाटिका । बगीचा ।
फुलवाद—*(ना०)* पुष्पों के पौधे ।
फुलवारी—दे० फुलवाद ।
फुलाणो—दे० फलाणो । दे० फुलावणो ।
फुलाद—दे० फुलवाद ।
फुलाळो—*(वि०)* १. फूलों वाला । २. मजाकी ।
फुलाव—*(न०)* १. फूलने की क्रिया या भाव । २. सूजन ।
फुलावणो—*(क्रि०)* १. फुलाना । **उपसाणो । उपसावणो** । २. झूठी प्रशंसा से फूल जाना । ३. अभिमानी होना । ४. झूठी प्रशंसा से किसी को बड़ा बनाना । ५. गर्व करना ।
फुलिसकेप—*(न०)* कागज का एक माप ।
फुलिंग—*(न०)* स्फुलिंग । अग्निकण ।
फुलेल—*(न०)* १. अत्तर । पुष्प सार । २. सुगंधि वाले फूलों से बनाया हुआ तेल । ३. सुगंधित तेल ।
फुलेली—*(ना०)* १. फूलों को रखने या सजाने का पात्र । फूलदान । २. अतरदान । ३. हैदराबाद (सिंध) का सिंधु नदी के किनारे का एक प्रसिद्ध रमणीय स्थान ।
फुलेवर—*(ना०)* १. काले फूल वाला ताश का पत्ता । फुल्ली । चिड़िया । चिड़ी । २. फूल गोभी । गोभी ।
फुवारो—दे० फुहारो ।
फुसकी—*(ना०)* बिना आवाज का अपान वायु ।
फुसलाणो—दे० फुसलावणो ।
फुसलायोड़ो—*(भू० कृ०)* बहकाया हुआ ।
फुसलावणो—*(क्रि०)* मीठी बातों से बहलाना । भुलावा देना । बहकाना । फुसलाना ।
फुहड़—दे० फुभड़ । **फूड़** ।
फुहार—*(ना०)* पानी का बहुत छोटा बिन्दु । जलकण ।
फुहारो—*(न०)* फुहार छोड़ने वाला उपकरण । फुहारा ।
फुंआरो—दे० फुहारो ।
फुंकारो—दे० फूंकारो ।
फुंतरको—दे० फोतरको ।

फुंदणो—*(न०)* १. डोरी या झालर के सिरे पर बनाया हुआ सूत या रेशम का फूल जैसा गुच्छा। फुंदना। **फुंदो**। २. तराजू की डंडी के बीच की (तोलने के समय पकड़ने का फुंदने जैसा) रस्सी या कपड़े का गुच्छा।

फुंदाळो—दे० फूंदाळो।

फुंबी—दे० फूंबी।

फुंवारो—दे० फुहारो।

फुंसी—*(ना०)* छोटा फोड़ा। **गूमड़ी। फुणगली।**

फुंहार—दे० फुहार।

फुंहारो—दे० फुहारो।

फू—*(न०)* १. फूस। कचरा। २. मुंह से फूंक मारने का शब्द। फूंफाड़े का शब्द। ३. **फूंफाड़ो**। फुफकार। ४. ऋण। ५. घास। ६. तृण। ७. कुश।

फूट—*(ना०)* १. बिगाड़। २. विरोध। मतभेद। ३. फूटने की क्रिया।

फूटण—*(ना०)* १. संधि स्थानों में होने वाला दर्द। २. पीड़ा।

फूटणो—*(क्रि०)* १. खंडित होना। टुकड़े होना। फूटना। २. गुप्त बात का प्रगट होना। रहस्य खुल जाना। ३. बदल जाना। दगा देना। ४. विरुद्ध होना। ५. अंकुर रूप से बाहर निकलना। ६. फोड़े में से प्रथम बार मवाद निकलना। ७. किसी वस्तु का जोर की आवाज से फटना। ८. दरारपड़ना। फटना। ९. बांध का टूटना। १०. रहस्य का खुलना। ११. विस्फोट होना।

फूटरमल—*(न०)* १. सुंदर पुरुष। २. लोकगीतों का एक नायक। ३. नायक के सुंदर और वीर पुरुष होने की उपाधि या विरुद। ४. पति। *(वि०)* शौकीन। छैला।

फूटरापो—*(न०)* १. कीर्त्ति। प्रशंसा। २. सुंदरता।

फूटरियो—दे० फूटरो। कुत्ते का छोटा बच्चा। **कूकरियो।**

फूटरी—*(वि०)* १. रूपवती। सुंदरी। **रूपकड़ी**। २. अच्छी।

फूटरो—*(वि०)* १. सुंदर। रूपवान। **रूपकड़ो**। २. अच्छा। ३. निर्मल। स्वच्छ।

फूटरो-फररो—*(वि०)* १. स्वच्छ और अच्छा। साफ और सुंदर। २. शौकीन। छैला।

फूटाफूट—*(ना०)* १. कलह। कुसंप। २. झगड़ा। ३. ऊपराऊपरी फूटना।

फूटोड़ो—*(वि०)* १. फूटा हुआ। २. टूटा हुआ। ३. विरुद्ध।

फूठरो—दे० फूटरो।

फूड़—दे० फूहड़।

फूड़ियो—*(न०)* कुत्ते या बिल्ली की विष्ठा।

फूतकार—*(ना०)* लोमड़ी आदि पशुओं के बोलने की एक प्रकार की ध्वनि।

फूतरो—दे० फोतरो।

फूनी—*(ना०)* १. तितली। २. बच्चों की लिंगेंद्रिय।

फूफस—*(ना०)* १. पति या पत्नी की बुआ। २. बूआ। **भूआ**।

फूफसरो—*(न०)* पति या पत्नी की बुआ का पति। **भुआड़ो**।

फूफी—*(ना०)* बूआ। **भूआ**।

फूफो—*(न०)* बाप का बहनोई। पिता की बहन का पति। फूफा। **भुआड़ो**।

फूमदो—दे० फूंदो।

फूल—*(न०)* १. पुष्प। २. सोना-चांदी के पत्तर पर बनी हुई (सांचे में उठाई हुई या चित्रित) पितरजी या इष्ट देवता की मूर्ति जिसे गले में पहना जाता है। थाळो ३. दाह के बाद की शव अस्थियां। ४. चिनगारी। ५. लालटेन का वह उपकरण जिसमें बत्ती रहती है। ६. तलवार। ७. दीपक की बत्ती का गुल। ८. गर्भाशय का उभरा हुआ मुंह। ९. प्रथम रजस्राव। १०. मथानी के आगे का भाग जिससे विलोड़न होता है। ११. बुलबुला। १२. स्त्रियों के

नाक या कान का एक गहना। १३. एक प्रकार की शराब। १४. पुष्प के आकार की कोई वस्तु। १५. वजन में हलकी वस्तु। १६. ताँबा और कलई से बनने वाली एक धातु। काँसा। काँसी। १७. शस्त्र की धार। १८. घोड़ी की योनि। *(वि०)* १. कम वजन का। हलका। २. थोड़ा असर करने वाला।

फूल गुलाबी—*(वि०)* हलके गुलाबी रंग का। *(न०)* हलका गुलाबी रंग।

फूलगोभी—*(ना०)* साग-तरकारी बनाने की एक वनस्पति। गोभी। **फुलेवर**।

फूल घालणा—*(मुहा०)* हरद्वार में सपिंडी श्राद्ध करके मृतक की अस्थियों को गंगाजी में प्रवाहित करना।

फूल चढ़ावणा—*(मुहा०)* १. देवताओं को पुष्प अर्पित करना। २. पुष्पांजलि अर्पित करना।

फूल चुगणा—*(मुहा०)* अन्त्येष्टि संस्कार के बाद अमुक समय पश्चात (बारह दिनों के भीतर) मसान में से मृतक की अस्थियों को लाना (गंगाजी में प्रवाहित करने के लिए)।

फूल झड़णा—*(मुहा०)* खुश होना।

फूल झड़णो—*(मुहा०)* मित्रों में परस्पर विवाद होना। लड़ाई-झगड़ा होना।

फूलझड़ी—*(ना०)* एक आतिशबाजी।

फूलझूमको—*(न०)* स्त्रियों का एक आभूषण।

फूलड़ी—*(ना०)* १. नाक का एक गहना। २. गले का एक गहना। ३. छोटे फूल के आकार की कोई वस्तु या गहना। ४. वजन में बहुत हलकी, कामदार, सुंदर और कीमती जूती जोड़ी। ५. जूती।

फूलडोळ—*(न०)* १. चैत्रमास में श्रीकृष्ण आदि के मंदिरों में मनाया जाने वाला एक वासंतिक उत्सव। २. फूलों के झूले में श्रीकृष्ण पर केशर, चंदन, गुलाल-अबीर आदि उड़ाकर तथा भजन मंडलियों के गा-बजाकर एवं परस्पर रंग उड़ाकर मनाया जाने वाला उत्सव। ३. फूलों का हिंडोला। पुष्पदोल।

फूलण—*(ना०)* १. फलों पर या रींधी हुई किसी वस्तु के कई दिन पड़े रहने से उन पर जमने वाली फुल्ली। सफेद काई। फफूंदी। २. सेन्द्रिय द्रव्यों पर नमी के कारण उत्पन्न होने वाला एक विकार। ३. शरीर पर उघड़ने वाला पसीने के क्षार का सफेद मैल।

फूलणो—*(क्रि०)* १. प्रफुल्लित होना। खिलना। २. फूल लगना। पुष्पित होना। ३. प्रसन्न होना। प्रफुल्लित होना। ४. हवा भरने से मोटा होना। ५. अंग सूजना। ६. मोटा और पुष्ट होना। ७. तारीफ करने से बहक जाना। ८. गर्व होना। ९. गर्व से इतरा जाना। १०. वर्षाऋतु में सूर्यास्त के समय आकाश में रक्तिम आभा का छा जाना।

फूलणो-फळणो—*(क्रि०)* १. खिलना और बढ़ना। २. ऐश्वर्य के साथ वंशवृद्धि होना।

फूलद—*(न०)* वृक्ष, बेल आदि।

फूलदान—*(न०)* फूल रखने का पात्र। **फुलेली**।

फूलदार—*(वि०)* १. जिसमें फूल, बेल-बूटे बने हों। २. फूलों वाला।

फूलदारू—*(ना०)* १. हलके नशे वाली शराब। २. बढ़िया शराब।

फूलधार—*(ना०)* १. तलवार। २. तलवार की धार।

फूलधारा—*(ना०)* १. शस्त्र की अति तीक्ष्ण धार। २. शस्त्रों के प्रहार। ३. युद्ध। ४. शस्त्रधारा रूपी तीर्थ। ५. रणभूमि। ६. तलवार।

फूल नशो—*(न०)* हलका नशा।

फूलपगर—दे० फूलफगर।

फूलपधरावणा—*(मुहा०)* दे० फूल घालणा।

फूलफगर—*(वि०)* १. शौकीन। २. प्रफुल्लित। ३. पुष्प के समान हलका। ४. घेरदार। घेरवाला। *(न०)* १. पुष्प मंजरी। पुष्पों से पूर्ण टहनी। २. पुष्पप्रकर। पुष्पों का ढेर। ३. पुष्पों की टोकरी। पुष्पछाब। ४. एक वस्त्र।

फूलमखाणा—*(न०)* ताल मखाना।

फूलमद—*(न०)* १. हलका नशा। २. हलके नशे की शराब।

फूलमहल—*(न०)* चित्रकारी वाला महल। रंगमहल।

फूलमंडळी—*(ना०)* देवमंदिरों में फूलों से की जाने वाली शृंगार-सजावट।

फूलमाळा—*(ना०)* पुष्पों की माला।

फूलमाळी—*(न०)* बगीचे का माली।

फूलरज—*(न०)* पुष्परज। पराग।

फूलरियो—*(न०)* १. कुत्ते का छोटा बच्चा। **कूकरियो। गूलरियो।** २. बकरी का बच्चा। **मींमियो।**

फूलरी—*(ना०)* छोटी बकरी। दे० फूलड़ी।

फूल-बिसक—*(न०)* १. पुष्प बाण। पुष्प विशिख। २. कामबाण।

फूल सांकळी—*(ना०)* १. कान में पहनने की सोने की पतली सांकली। २. फूलों वाली सोने की सांकली।

फूल सूंघणो—*(मुहा०)* बहुत कम खाने वाला। *(क्रि०)* फूल को सूंघना।

फूल सज्या *(ना०)* पुष्प शय्या।

फूलहत्थी—*(ना०)* तलवार।

फूलहार—*(न०)* फूलों की माला।

फूलहिंडोळो—*(न०)* पुष्पों से सजाया हुआ झूला। पुष्पदोल।

फूलाणी—*(क्रि० भू०)* १. पुष्प युक्त हो गई। २. पुष्पों से शोभित हो गई। ३. सुंदर रंगबिरंगी हो गई (सूर्यास्त के समय संध्या)। रक्ताभ हो गई (सांझ)। ४. फूल गई। ५. बढ़ गई। ६. फूलण उत्पन्न होकर विकृत हो गई। *(न०)* कच्छ का राव लाखा। रा (राउ) फूल का पुत्र।

फूलाणो—दे० फुलावणो।

फूलाद—दे० फुलवाद।

फूलाळो—*(वि०)* १. फूलों वाला। २. सुंदर। ३. सुगंधित।

फूलावणो—दे० फुलावणो।

फूलाँ छाई—*(वि०)* १. सुखी। आनंद में। २. पुष्प मंडित।

फूलाँ-रो-भारो—*(न०)* १. उदार व्यक्ति। २. भाग्यशाली। ३. बड़े कुटुंब वाला। ४. नाजुक व्यक्ति।

फूलियोड़ो—*(क्रि०)* १. गर्वित। २. फूला हुआ। ३. आनंदित। ४. फूलों से भरा हुआ।

फूली—*(ना०)* १. मक्का, ज्वार आदि की खील। २. नाक का एक आभूषण। ३. आँख का एक रोग। ४. आक के फूल का मध्य भाग।

फूलेल—दे० फुलेल।

फूलो—*(न०)* १. आँख का एक रोग। आँख की फूली। २. गोंद का तला हुआ टुकड़ा। ३. तला या सेका हुआ किसी वस्तु का टुकड़ा। ४. मक्की की खील।

फूलो-फळियो—*(वि०)* १. संपन्न। २. सुखी। ३. वैभवशाली। ४. धन, पुत्र, पौत्रादि से संपन्न। ५. उन्नत।

फूवड़—दे० फूहड़।

फूवो—दे० फूंबो।

फूस—*(न०)* कचरा। कूड़ा-करकट। *(वि०)* १. तुच्छ। हलका। २. रद्दी।

फूसफास—*(न०)* कचरा, धूल वगैरा।

फू-सहस—*(न०)* सहस नाग।

फूहड़—*(वि०)* १. आलसी और गंदा। २. भद्दे ढंग से काम करने वाला। ३. जिसे बात करने का शऊर न हो। ४. भद्दा। गंदा। ५. बेशऊर। **कुढंगो।** ६. गँवार। ७. अकुशल।

फूं—*(न०)* १. सर्प का फूंफाड़ा। २. सूंघने का शब्द।

फूंक—*(ना०)* १. होठों को दबाकर मध्य भाग से जोर के साथ निकाली हुई हवा। मुँह से छोड़ी गई हवा। २. प्राण। ३. स्वास। दम।

फूंकणी—*(ना०)* फूंक मारने की नली। २. भाथी। **धमण।**

फूंकणो—*(क्रि०)* १. फूंकना। फूंक मारना। २. व्यर्थ खर्च करना। उड़ा देना। ३. दिवाला निकालना। ४. कान भरना। उकसाना। ५. जला देना। ६. भस्म बनाना (धातु की)। ७. नाश करना। ८. सताना।

फूंक मारणी—*(मुहा०)* १. झगड़ा करवाना। २. बहकाना। ३. फूंक देना। ४. दीपक बुझाना।

फूंकाणो—*(क्रि०)* १. फूंक दिलवाना। २. टोना करवाना। ३. जलवाना।

फूंकार—*(न०)* १. फूत्कार। २. श्वास।

फूंकारो—*(न०)* १. विश्राम। आराम। २. स्वास मारना।

फूंकारो करणो—*(मुहा०)* १. डांटना। २. जोर से श्वास लेना।

फूंकारो खाणो—*(मुहा०)* विश्राम लेना। आराम करना।

फूंकावणो—दे० फूंकाणो।

फूंतरो—दे० फोतरो।

फूंद-फूंदाळो—*(वि०)* अनेक फूंदों वाला। अनेक फुंदनों या गुच्छों वाला।

फूंदाळो—*(वि०)* १. फुंदने वाला। गुच्छे वाला। २. सजाधजा। **सजियोड़ो**।

फूंदी—*(ना०)* १. कन्याओं का एक खेल। २. कन्याओं का सामूहिक नाच। ३. इस प्रकार मुड़ना या चक्कर खाना जिससे लहंगे या घाघरे का चक्र बने। ५. छोटा फतिंगा। पतंगा। **पतंगियो**। ६. गोल चक्कर लगाना। ७. एक लोकगीत।

फूंदो—*(न०)* झालर, डोरी आदि के सिरे पर लटकाया जाने वाला रंगबिरंगे सूत या रेशम के धागों से बना फुलरा। फुंदना। फुलोरा। **फुंदणो**। ३. रक्षाबंधन के दिन बाँधने की चपटे फुंदने के जैसी बड़ी राखी।

फूंद्याळी—*(वि०)* फूंदी वाली।

फूंद्याळो—दे० फूंदाळो।

फूंफाड़ियो—*(वि०)* १. फूंफाड़ा करने वाला। २. उतावला।

फूंफाड़ो—*(न०)* १. श्वास का शब्द। २. साँप का जोर से श्वास छोड़ने के साथ किया जाने वाला फन का प्रहार। ३. क्रोध। ४. दंभ। **ढूंग**।

फूंफाड़ो करणो—*(मुहा०)* १. क्रोध करना। २. डाँटना।

फूंफी—*(ना०)* पिता की बहिन। बुआ। **भुआ**।

फूंफो—*(न०)* पिता का बहनोई। बुआ का पति। फूफा। **भुआड़ो**।

फूंबी—*(ना०)* १. रेशम के समान कोमल तंतुओं वाली एक फली। २. वर्षा ऋतु की एक वनस्पति जो सफेद रंग की छत्रीनुमा होती है। **खुमी**। ढिंगरी। कुकुरमुत्ता। **खूंभी**।

फंबो—*(न०)* फाया। फाहा।

फूंभी—*(ना०)* बाजरी के बाल पर दाना पड़ने का सूचक फूसनुमा पदार्थ। दे०फूंबी।

फेकरी—*(ना०)* स्यालिनी। **गादड़ी**।

फेकळ—*(न०)* अपक्व पीलू-फल।

फेट—*(ना०)* १. टक्कर। धक्का। २. झपट। ३. मिलन। ४. चोट। ५. नजर आना। ६. भूतप्रेतादि का प्रभाव।

फेटणो—*(क्रि०)* १. मिलना। २. टक्कर खाना। धक्का खाना। ३. धक्का लगना। **भटकीजणो**। ४. नजर में आना।

फेटियो—*(न०)* घाघरा के ऊपर बाँयी बाजू बाँधा जाने वाला स्त्रियों का घाघरा से भिन्न रंग का एक विशेष वस्त्र या पल्ला।

फेटो—*(न०)* १. टक्कर। २. आना-जाना। आने-जाने का संबंध। संपर्क। ३. जान-पहिचान। परिचय। ४. सहयोग। ५. मिलन।

फेड़णो—*(क्रि०)* १. नाश करना। २. मंथन करना। मथना। ३. दूर हटाना। ४. छिन्न-भिन्न करना।

फेण—*(न०)* फेन। झाग।

फेणी—दे० फीणी।

फेदड़—*(ना०)* १. दूध में खटाई के गिरने से बना विकृत रूप। २. आकाश में छितराये हुए छोटे-छोटे बादल।

फेदड़को—*(न०)* १. फटा हुआ दूध। २. दूध का विकृत रूप।

फेदरड़ो—*(न०)* दही का थक्के के रूप में नहीं जमने की स्थिति। पतला और फटा हुआ दही।

फेन—दे० फेण।

फेफड़ी—*(ना०)* खुश्की से होटों पर जमने वाली पपड़ी।

फेफड़ो—*(न०)* साँस लेने का अवयव। फुप्फुस। फेफड़ा।

फेफ-रा-फूल—*(न०)* एक काल्पनिक लता के फूल जो बहुत सुंदर और प्रकाशमान माने जाते हैं और जिनकी कल्पना पद्मिनी स्त्री के हँसने से उसके दाँतों का प्रकाश मुख से बाहर आते रहने के कारण इन फूलों के झड़ने से की जाती है।

फेर—*(न०)* १. फिरने का भाव। २. अंगरखी, कुरता आदि के वस्त्रों के नीचे का भाग। फड़क। फड़को। ३. वस्त्र का घेरा (जामा आदि का)। ४. स्वास्थ्य लाभ करने की स्थिति। अस्वस्थता में कमी। अंशरूप से स्वास्थ्य लाभ। ५. बीमारी में कमी होने के लक्षण। ६. संशय। भ्रम। ७. धोखा। ८. क्षेत्र का घेरा। ९. फर्क। अंतर। १०. कमी। ११. परिवर्तन। १२. चक्कर। १३. झंझट। बखेड़ा। १४. दूरी। १५. भाग्य का चक्कर। *(क्रि० वि०)* १. एक बार और। २. पुनः। फिर। ३. वापिस। ४. तदनन्तर। *(अव्य०)* १. १. अलावा। २. उपरान्त। ३. लेकिन।

फेरणो—*(क्रि०)* १. आगे-पीछे चलाना। फिराना। २. उलटाना। उथलाना। ३. अदल-बदल करना। ४. गति देना। ५. सुराख में चक्कर देना। ६. अपने पक्ष में करना। ७. चक्कर देना। घुमाना। ८. वापस करना। ९. प्रचारित करना। १०. घोड़ा, बैल आदि पशुओं की चाल सुधारना।

फेरफार—*(न०)* १. अदला-बदली। २. अंतर। फर्क। ३. रूपान्तर। ४. नवीनता। ५. सुधारा। ६. उलट-पुलट।

फेरवणो—दे० फेरणो।

फेरवाज—*(ना०)* लहँगे, जामे आदि के नीचे अंदर की ओर लगाई जाने वाली लंबी पट्टी।

फेरंड—*(न०)* शृगाल। **सियाळियो।**

फेरा—*(न०)* १. पाणिग्रहण के समय यज्ञकुंड की अग्नि की की जाने वाली परिक्रमा। भाँवर। २. विवाह। ३. आवागमन। जन्म-मरण। ४. चक्कर।

फेरा खाणा—*(मुहा०)* १. वर-वधू का विवाहवेदी की यज्ञाग्नि की परिक्रमा देना। २. विवाह होना।

फेराणो—*(क्रि०)* फिराना।

फेराफेरी—*(ना०)* १. उलट-पुलट या इधर-उधर करने की क्रिया। २. आवागमन।

फेरा-सारूँ—*(न०)* शौचनिवृत्ति। मल-मूत्र त्याग।

फेरा-सारी—*(ना०)* उलटफेर।

फेरियो—*(न०)* फिर-फिर कर माल बेचने वाला। बिसाती। **पोटलियो।**

फेरियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. फिराया हुआ। २. ऊँट, घोड़े आदि को चाल सिखाया हुआ।

फेरी—*(ना०)* १. परिक्रमा। २. चक्कर। ३. भिक्षा के लिये दिया जाने वाला चक्कर। ४. भजन गाते हुए या कीर्तन करते हुए लगाया जाने वाला चक्कर। ५. माल बेचने के लिये लगाया जाने वाला चक्कर।

फेरीवाळो—*(न०)* १. फिर-फिर कर माल बेचने वाला। २. नियत समय पर फेरी देकर भीख माँगने वाला।

फेरू—*(न०)* शृगाल। सियार।

फेरूं—*(क्रि० वि०)* पुनः। फिर।

फेरो—*(न०)* १. विवाहवेदी की परिक्रमा। विवाह के समय वरवधू की अग्नि के चारों ओर की जाने वाली परिक्रमा। भाँवर। फेरा। २. जाने-आने का चक्कर। धक्का। **आंटो**। ३. कोल्हू के बैल के चलने की जगह। ४. दफा। **बार**। ५. बारी। पारी। **वारी**। ६. समय। ७. जन्म-मरण।

फेल—*(वि०)* असफल। निष्फल। *(न०)* १. ढोंग। २. बुरा चालचलन। **फैल**।

फेशन—*(ना०)* १. रीति। चाल। २. शृंगार।

फेंक—*(ना०)* १. गप्प। झूठी खबर। २. झूठी बात। ३. झूठी बड़ाई। **फेंक**। **गप**। ४. उछाल। कुदान।

फेंकणो—*(क्रि०)* १. उछालना। फेंकना। २. ऐसी गति देना कि दूर जा पड़े। ३. जमीन पर गिराना। पटकना। ४. बखेरना। ५. दूर ले जाकर डालना।

फेंक मारणी—*(मुहा०)* गप हाँकना। गप मारना।

फेंक हाँकणी—दे० फेंक मारणी।

फेंकाफेंकी—*(ना०)* १. आमने-सामने फेंकने का काम। एक-दूसरे के सामने फेंकने की क्रिया।

फेंकियोड़ी—*(भू० कृ०)* फेंकी हुई। उछाली हुई।

फेंकियोड़ो—*(भू० कृ०)* 'फेंकियोड़ी' का नरजाति रूप। फेंका हुआ। उछाला हुआ।

फेंगरणो—*(क्रि०)* १. इतराना। २. घमंड करना।

फेंगरियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. इतरा हुआ। **ईतरियोड़ो**। २. घमंडी।

फेंगळ—*(न०)* फेन। **झाग**।

फेंट—*(ना०)* १. कमर। २. धोती का कमर पर लपेटा हुआ भाग। ३. कमर बाँधने का कपड़ा। ४. झपट। झपाटा। ५. मैदे आदि को पानी या दूध में हाथ से मथ कर बनाया हुआ गाढ़ा घोल। **गाळ**। ६. कुश्ती का एक दाँव।

फेंटणो—*(क्रि०)* १. जलेबी, मालपूआ आदि के फेंट (गाळ) को हाथ से मथ कर एकरस और लसदार बनाना। २. लपेटना।

फेंटो—*(न०)* १. साफा। २. मुंड़ासा। **मूंडासो**। **पोतियो**।

फेंदणो—*(क्रि०)* १. उथलना। ऊपर-नीचे करना। २. कुचलना। मसलना। **चूंथना**। **चूंथणो**।

फेंदाफेंदी—*(ना०)* बार-बार फेंदने की क्रिया।

फेंफड़ो—*(न०)* फुफ्फुस। फेफड़ा।

फैकरणो—*(क्रि०)* अजस्र बोलना। बोलते जाना। व्यर्थ बकवाद करना। बे सिर-पैर की बातें करना।

फैज—*(न०)* १. लाभ। **फायदो**। २. दानशीलता।

फैण—*(न०)* फेन।

फैतकार—*(ना०)* १. लोमड़ी की जाति का एक पशु। रात्रि में जिसके बोलने से अग्नि जैसी स्वास निकलती दिखाई देती है। २. शृगाल।

फैतीजणो—*(क्रि०)* १. अनुमान से अधिक हो जाना या बढ़ जाना। **फाथीजणो**। २. अधिक फैल जाना। ३. गड़बड़ा जाना। ४. अपने को बड़ा समझना। ५. गर्व करना। ६. फूलना

फैफ—*(न०)* मृत व्यक्ति या मृतप्राय व्यक्ति के मुंह से निकलने वाला फेन।

फैफड़ो—दे० फेंफड़ो।

फैम—*(ना०)* १. शऊर। फहम। विवेक। २. बुद्धि। ३. ढंग से काम करने की योग्यता। सुघड़ाई। ४. विचार। ध्यान। ५. सावधानी। ६. स्मरण। याद।

फैयाज—*(वि०)* १. उदार। २. परोपकारी।

फैर—*(न०)* बंदूक का दगना। फायर।

फैरिस्त—*(ना०)* सूची। फेहरिस्त।

फैल—*(न०)* १. ढोंग। २. ऊधम। ३. झगड़ा। ४. मक्कारी। ५. उत्पात। ६. अव्यवस्था।

फैल करणो—*(मुहा०)* १. उत्पात करना। ऊधम करना। २. शोर मचाना।
फैलणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत होना। फैलना। पसरना। २. मोटा होना। ३. बिखरना। ४. छा जाना। व्यापक होना। ५. प्रसिद्ध होना। ६. प्रकट होना।
फैल-फतूर—*(न०)* १. उत्पात। २. उपद्रव। ३. झगड़ा-टंटा।
फैलाणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत करना। फैलाना। २. बखेरना। ३. छा देना। ४. प्रकट करना या कराना।
फैलाव—*(न०)* १. विस्तार। २. प्रचार।
फैलावणो—दे० फैलाणो।
फैलावो—दे० फैलाव।
फैशन—*(न०)* १. रीति। ढंग। २. बनाव-शृंगार का ढंग।
फैसलो—*(न०)* १. निर्णय। निबटारा। २. अन्त। **निकाळ**।
फैंक—दे० फेंक।
फैंकणो—दे० फेंकणो।
फैंकाफैंकी—दे० फेंकाफेंकी।
फैंकियोड़ो—दे० फेंकियोड़ो।
फैंगरणो—दे० फेंगरणो।
फैंगरियोड़ो—दे० फेंगरियोड़ो।
फैंट—दे० फेंट।
फैंटो—दे० फेंटो।
फैंड—*(न०)* १. नखरा। २. ढोंग। **अफंड**।
फैंदणो—*(क्रि०)* १. बार-बार उथल-पुथल करना। २. बिखेरना।
फैंफड़ो—दे० फेंफड़ो।
फो—दे० फोह।
फोई—*(ना०)* १. हाथी की लीद। २. गधे की लीद। ३. ज्वार। दे० फैंतकार।
फोकट—*(वि०)* १. मुफ्त। २. फालतू। व्यर्थ। ३. निस्सार।
फोकटियो—दे० फोगटियो।
फोग—*(न०)* एक जंगली क्षुप। **फोगड़ो**।
फोगट—दे० फोकट।
फोगटियो—*(वि०)* मुफतिया।
फोगड़ो—दे० फोग।
फोगरणो—*(क्रि०)* फूलना।
फोगलो—*(न०)* फोग के फूल। फोग-मंजरी।
फोगीजणो—*(क्रि०)* १. पानी में अधिक समय तक रहने से चमड़ी का फूल जाना। २. प्रशंसा से फूल जाना। ३. आत्मप्रशंसा करना।
फोट—*(ना०)* १. धिक्कार। लानत। २. फटकार। ३. विस्फोट।
फोटू—*(न०)* कैमरा से लिया हुआ छाया-चित्र। फोटो।
फोड़णारो—दे० फोड़णियो।
फोड़णियो—*(वि०)* १. फोड़ने वाला। २. भेद डालने वाला। ३. पीटने वाला।
फोड़णो—*(क्रि०)* १. फोड़ना। तोड़ना। २. पीटना। ३. भेद डालना। ४. पछाड़ना। ५. विस्फोट करना। ६. विरोध डालना। ७. रहस्योद्घाटन करना।
फोड़ो—*(न०)* १. कष्ट। तकलीफ। २. असुविधा। ३. व्रण। ४. बड़ी फुंसी। फोड़ा।
फोतरको—दे० फोतरो।
फोतरो—*(न०)* १. छिलका। २. हलका पदार्थ। ३. खूब पतले पत्तर की बनी हुई हलकी वस्तु। फूंतरो।
फोता—*(न०)* अंडकोश। **पोतवाळिया**।
फोती—दे० फोतरो।
फोदो—*(न०)* १. स्याही का धब्बा। २. सूत के ऊपर लगी हुई रूई। *(वि०)* मोटा।
फोन—*(न०)* टेलिफोन।
फोनोग्राम—*(न०)* चूड़ीबाजा। ग्रामोफोन।
फोफळ—*(न०)* १. सुपारी। पुंगीफल। २. नारियल। **नाळेर**।
फोफळियो—*(न०)* १. चने का पौधा। २. फोफा सहित चने का हरा दाना। **गेधरो**। ३. बड़े माथे की लोहे की एक कील। ४. जलने से उठा हुआ फाला। फफोला। ५. सुपारी का व्यापारी।

फोफाणंद—*(न०)* झूठा ठाट-बाट रखने वाला।

फोफो—*(न०)* हरा चना, निबोली आदि का कोश। बीज आदि का आवरण। खाना। घर।

फोर—*(न०)* परिवर्तन। बदलाव।

फोर खाणो—*(मुहा०)* बदल जाना। मुकर जाना।

फोरणो—*(क्रि०)* १. संचालित करना। २. इधर-उधर करना। ३. बदलना। ४. उलटना।

फोरा-फेरो—*(न०)* उलट-पलट।

फोरो—*(वि०)* १. जो वजन में हलका हो। २. जो पचने में हलका हो। ३. आसान। सहज। ४. नीच।

फोरो-फूल—*(वि०)* बिल्कुल हलका। वजन में कम।

फोल—*(न०)* छिलका। **छोती। फोती।**

फोलणो—*(क्रि०)* १. फल तथा फली आदि का छिलका उतारना। २. हैरान करना। सताना।

फोलरणो—*(क्रि०)* १. कुरेदना। २. बिल बनाना (चूहों का)। **दर खोदणो।**

फोलाई—*(ना०)* फोलाने की क्रिया अथवा महनताना।

फोलावणो—*(क्रि०)* दे० फुसलावणो। छिलका उतरवाना।

फोह—*(न०)* अहसान। उपकार।

फोही—दे० फैतकार। दे० फोई।

फौज—*(ना०)* १. सेना। फौज। २. समूह।

फौज आभरण—*(न०)* १. सेनापति। २. वीर। ३. हाथी।

फौज-गहणो—*(न०)* हाथी।

फौजगाहण—*(न०)* योद्धा।

फौजथंभ—*(न०)* योद्धा। फौज को आगे नहीं बढ़ने देने वाला। **सेनथंभ।**

फौजदार—*(न०)* १. सेना का अधिकारी। सेनापति। २. फौजदारी कोर्ट का न्यायाधीश।

फौजदारी—*(ना०)* १. मारपीट। २. दंड न्यायालय। ३. फौजदार का काम।

फौज बक्षी—*(न०)* सेना का एक अधिकारी।

फौज बळ—*(न०)* १. जागीरदारों से लिया जाने वाला एक कर। २. सैन्य शक्ति।

फौज बाब—*(न०)* एक फौजी कर।

फौज मुसायब—*(न०)* एक फौजी अफसर। फौज मुसाहिब।

फौज लाडो—*(वि०)* १. सेनाग्रणी। २. युद्धाग्रणी। ३. महावीर।

फौज सिणगार—*(न०)* १. हाथी। २. वीर। योद्धा।

फौजां अग्रेसर—*(न०)* हाथी।

फौजां-रो-लाडो—*(न०)* सेनाओं का दुलहा। सेनानायक। **फौज लाडो।**

फौजी—*(ना०)* १. फौज का। फौज से संबंधित।

फौत—*(वि०)* मृत। मरा हुआ। *(न०)* मरण। मृत्यु।

फौत होणो—*(मुहा०)* मरना।

फौरन—*(क्रि० वि०)* १. जल्दी। २. तत्क्षण। झटपट।

फौलाद—*(न०)* इस्पात।

फौलादी—*(वि०)* १. दृढ़। २. मजबूत। ३. फौलाद का।

फ्राक—दे० फराक।

फ्री—*(वि०)* मुफ्त।

फ्रूट—*(न०)* फल।

फ्रेम—*(न०)* १. तसवीर आदि की चौखट। २. द्वार की चौखट।

फ्रेंच—*(वि०)* १. फ्रांस देश का। २. फ्रांस की भाषा।

ब

ब—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के पवर्ग का तीसरा व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। यह २३वाँ व्यंजन वर्ण है।

ब—*(उप०)* १. सहित, साथ में आदि अर्थ देने वाला एक उपसर्ग। २. प्रकाशमान। ३. रहित (क्वचित)।

बा।—*(अव्य०)* 'बकलम' शब्द का संक्षिप्त रूप, जैसे—दः। नेमीचंद बा। खुद। दे० बकलम।

बइया—दे० बया।

बईमान—*(वि०)* १. बेईमान। धर्म रहित। २. बुरी नीयत का। ३. कपटी। ४. धूर्त। ५. वंचक।

बईमानी—*(क्रि०)* १. बुरी नीयत। २. बुरी नीयत का काम। ३. कुटिलता। ४. वंचकता। ५. अधर्म।

बउ—*(न०)* एक जंगली क्षुप जिसमें रोआँ के छोटे-छोटे गुच्छक लगे रहते हैं।

बउड़ो—दे० बउ।

बक—*(न०)* १. बगुला। २. बकासुर नामक राक्षस। ३. मुँह। **बाको**। ४. एक फूल।

बकझक—*(ना०)* १. कहा-सुनी। २. बकना। बकवाद।

बकडाळ—*(वि०)* १. वीर। २. विकराल। ३. भयंकर।

बकड़ियो—*(न०)* हलवा, लापसी आदि परोसने का पीतल का एक पात्र जिसमें (दोनों हाथों से उठाने के लिए) दो कड़े लगे होते हैं। **बिकड़ियो। दुकड़ियो।**

बकणो—*(क्रि०)* १. व्यर्थ बोलना। बकवास करना। २. बोलना। ३. शोर करना। ४. जोर से बोलना। ५. गुस्से में बोलना। ६. ऊटपटाँग बोलना। अनर्गल बातें कहना। बकना।

बकध्यानी—*(वि०)* कपटी। छली। बगुले के समान ध्यान करने वाला।

बकबक—*(न०)* १. बकवाद। व्यर्थ बोलना। २. व्यर्थ का अधिक बोलना। ३. बोलना चालू रखना। ४. बकने की क्रिया या भाव।

बकमारण—*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. भीम।

बकर—*(न०)* बकरा।

बकराईद—*(ना०)* मुसलमानों का एक त्यौहार।

बकरियो—*(न०)* बकरा। **छाग। टाटो।**

बकरी—*(ना०)* अजा। **छागी। छाळी।**

बकरो—*(न०)* बकरा। **छाग। बकरियो।**

बकलम—*(अव्य०)* १. जिसने प्रतिनिधि के रूप में या अपने खुद के हस्ताक्षर किये हों। २. की कलम से। ३. हस्ताक्षर उसी ने किये हैं ऐसा प्रमाण-संकेत। बा कलम। जैसे—(१) दसकत नेमीचंद बकलम ताराचंद (प्रतिनिधि के रूप में)। (२) दसकत नेमीचंद बकलम खुद (निजी हस्ताक्षर के रूप में)।

बकवाज—*(ना०)* १. बेकार बात। निरर्थक बात। ऊटपटाँग बात। **बकवाद**। २. विवाद।

बकवाद—दे० बकवाज।

बकवादी—*(वि०)* बकवाद करने वाला।

बकवास—दे० बकवाज।

बकस—*(ना०)* पेटी। संदूक। **बगस**।

बकसणो—दे० बगसणो।

बकसावणो—दे० बगसावणो।

बकसी—दे० बगसी।

बकसीस—दे० बगसीस।

बकसीसणो—*(क्रि०)* बकसीस करना।

बकाई—*(न०)* हकलाने का रोग। दे० बगोई।

बकानी—*(ना०)* दाढ़ी के केशों को ऊपर की ओर जमाये रखने के लिये दाढ़ी पर बाँधी जानेवाली एक वस्त्र-पट्टी। ढट्टी। **बुकानी**।

बकायत—*(वि०)* १. उबरा हुआ। बचा हुआ। २. शेष। बाकी। ३. फालतू। *(अव्य०)* अंत में। शेष में।

बकाया—*(वि०)* १. बचा हुआ। शेष। २. जो किसी से लेना रह गया है।

बकार—*(न०)* 'ब' वर्ण। बब्बो।

बकारणो—*(क्रि०)* १. ललकारना। बकारणो। २. युद्धार्थ आह्वान करना। ३. सूचित करना। चेताना। ४. तकाजा करना। ५. पुकारना।

बकाल—*(वि०)* १. बेशऊर। विवेकहीन। २. बेवकूफ। मूर्ख। ३. असभ्य। ४. बकवादी। ५. विक्षिप्त। पागल। *(न०)* १. बनिया। बक्काल। २. फुटकरिया। परचुनिया। ३. साग सब्जी बेचने वाला। कुंजड़ा।

बकेल—दे० बगेल।

बकोट—*(न०)* १. बगुला। २. कौआ। कागलो।

बकोर—*(न०)* १. पक्षियों का कलरव। २. बकवाद।

बक्ष—दे० बकस।

बक्षी—दे० बकसी।

बख—*(न०)* १. वश। अधिकार। काबू। २. पहुँच। पकड़। ३. समीप तक गति। ४. मौका। अवसर। ५. अभ्यास। आदत। ६. सुविधा। ७. अनुकूल परिस्थिति। ८. पेंच। चाल। ९. अभ्यास। १०. बार। दफा। *(वि०)* अधीन। वशवर्ती।

बखड़ी—*(ना०)* १. पकड़। पहुँच। २. वश। काबू। ३. साहस। हिम्मत।

बखड़ी खाणो—*(मुहा०)* १. अत्यधिक परिश्रम करना। २. भिड़ना। टक्कर लेना। ३. क्रोध करना।

बखड़ी में आणो—*(मुहा०)* १. पकड़ में आना। २. वश में आना। ३. बाहुपाश में पकड़ा जाना।

बखड़ी में झलणो—दे० बखड़ी में आणो।

बखड़ी में लेणो—*(मुहा०)* १. वश में करना। २. बाहुपाश में लेना।

बखणी—दे० बखड़ी। बखणो।

बखणो—*(क्रि०)* फेंकी हुई वस्तु को हाथों में लेना या पकड़ना।

बखत—*(न०)* १. समय। वक्त। वेळा। टैम। २. भाग्य। ३. संयोग। ४. अवसर। मौका। टाणो।

बखतधारी—*(वि०)* भाग्यशाली।

बखतबडाळ—*(वि०)* भाग्यशाली।

बखतबळी—*(वि०)* भाग्यशाली।

बखत बायरो—*(वि०)* भाग्यहीन।

बखत बिळंद—*(वि०)* भाग्यशाली।

बखतर—*(न०)* कवच। बख्तर।

बखतरियो—*(न०)* १. बख्तर। २. अंगरखा। ३. बख्तरधारी।

बखतावर—*(वि०)* १. धनवान। २. भाग्यशाली।

बखतेत—*(वि०)* १. नामवर। नामी। प्रसिद्ध। २. भाग्यशाली।

बखसणो—दे० बगसणो।

बखसीस—*(ना०)* १. बख्शीश। इनाम। २. दान।

बखाण—दे० वखाण।

बखाणणो—दे० वखाणणो।

बखार—दे० भखार।

बखाळ—*(न०)* शोर। बकबक। दे० बकाल।

बखाळा—*(न०ब०व०)* १. जोर से बोलना। २. हाहू। शोर। ३. बकवाज।

बखाळियो—*(वि०)* १. शोरगुल मचाने वाला। जोर से बोलने वाला। २. व्यर्थ बकवाज करने वाला।

बखियो—*(न०)* दुहरे टाँके की सिलाई।

बखूबी—*(अव्य०)* १. भली-भाँति। २. पूर्ण रूप से।

बखेड़ाबाज—*(वि०)* १. झगड़ालू। झंझटिया। २. खटपटिया।

बखेड़ियो—दे० बखेड़ाबाज।

बखेड़ो—*(न०)* १. झगड़ा। विवाद। झंझट। २. अनबन। खटपट। ३. प्रपंच। माया। ४. विशाल आयोजन। **मंडाण**। ६. आडम्बर।

बखेरणो—दे० बिखेरणो।

बखेरो—दे० बिखेरो।

बग—*(न०)* १. कुत्ते, घोड़े आदि जानवरों पर बैठने वाली एक मक्खी। **बुग**। २. पैंड। कदम। ३. बगुला पक्षी।

बगड़—*(न०)* १. जंगल। वन। **बगड़ो**। २. मैदान। **पाधर**। ३. घर के आगे का या मोहल्ले का बड़ा चौक। ४. बड़ा बाड़ा। **बाखळ**। ५. एक काल्पनिक राक्षस या डरावना पशु। **बागड़**। ६. एक प्रदेश।

बगड़णो—दे० बिगड़णो।

बगड़ो—दे० बगड़ो।

बगणो—*(क्रि०)* १. चलना। २. बहना। ३. पकड़ना। थामना। ४. बजना। ५. भागना। ६. फेंकी हुई वस्तु को ऊपर से ही हाथों में ले लेना। ७. रह जाना।

बगत—दे० बखत।

बगतड़ी—*(ना०)* कंधे में टंगा रहने वाला चपटा मिट्टी का बना जलपात्र। **बुगतड़ी**। **बुगती**।

बगतर—*(न०)* बख्तर। कवच।

बगतरपोस—*(वि०)* कवचधारी।

बगतावर—दे० बखतावर।

बगती—दे० बगतड़ी।

बगदो—*(न०)* १. कचरा। २. अनावश्यक वस्तु। ३. ठंड उड़ाने के लिये जलाने का पतली सूखी टहनियों का ढेर। **बुगदो**।

बगनी—*(ना०)* यवनोपयोगी टोंटी वाला लोटा। बगनो। *(वि०)* १. आश्चर्यचकिता। २. चित्तभ्रमा। ३. मूर्खा।

बगनो—*(वि०)* १. आश्चर्यचकित। २. घबराया हुआ। ३. चित्तभ्रम। ४. मूर्ख। *(न०)* टोंटी वाला एक ऐसा लोटा जिसे प्रायः मुसलमान ही काम में लाते हैं।

बगरू—*(न०)* कानों के पास घने बालों वाला ऊँट। दे० बघरू।

बगरो—*(न०)* एक घास।

बगल—*(ना०)* १. कांख। २. पार्श्व। पहलू। ३. पास का स्थान। ४. कपड़े का वह टुकड़ा जो अंगरखे, कुरते आदि में बगल के नीचे लगाया जाता है। *(क्रि० वि०)* १. ओर। तरफ। २. निकट। पास।

बगलगीर—*(वि०)* पास में रहना।

बगलगीरी—*(ना०)* आलिंगन।

बगल तकियो—*(न०)* सोते समय बाजू में रखा जाने वाला तकिया।

बगलबंदी—*(ना०)* एक प्रकार की डबल सीने की अंगरखी, जिसकी कसें दोनों बगलों के नीचे होती हैं।

बगलाभगत—*(वि०)* साधुपने का ढोंग कर दुनिया को ठगने वाला। पाखंडी। ठग-भक्त। **बकध्यानी**।

बगलाभगती—*(ना०)* १. बगुला के समान एक टाँग ऊँची करके ध्यान लगाने का अनुकरण। २. पाखंड। ढोंग। ३. ठगाई।

बगलामुखी—*(ना०)* एक देवी।

बगलाँ झाँकणो—*(मुहा०)* इधर-उधर देखना।

बगली—*(वि०)* बगल संबंधी। बगल का। *(ना०)* १. बगुले की मादा। २. कुश्ती का एक दाँव।

बगलो—*(न०)* एक पक्षी जो मछलियों का शिकार करता है। बक। बगुला।

बगस—दे० बकस।

बगसण—*(न०)* दान। *(वि०)* दानी।

बगसणो—*(क्रि०)* १. प्रदान करना। इनायत करना। बख्शना। बख्शीश करना। २. माफ करना। क्षमा करना। ३. छोड़ देना।

बगसर—*(न०)* १. बगुला। २. शत्रु। ३. यवन। *(वि०)* १. ढोंगी। पाखंडी। २. धोखेबाज। ३. छिप करके आक्रमण करने वाला।

बगसाणो—*(क्रि०)* १. इनायत कराना। २. छुड़ाना। ३. माफ करना। दे० बगसणो।

बगसावणो—दे० बगसाणो।

बगसी—*(न०)* १. बादशाही समय का एक पदाधिकारी। व्यवस्थापक। २. सेना का एक अधिकारी। ३. वेतन बाँटने वाला अधिकारी। ४. खजांची। कोषाध्यक्ष।

बगसीस—दे० बखसीस।

बगाई—*(ना०)* **उबासी**। जमुहाई।

बगाड़णो—दे० बिगाड़णो।

बगाणो—*(क्रि०)* फेंकना। उछालना। **उछाळणो। वाहणो।**

बगारो—*(न०)* १. टूटने-फूटने से या तोड़ने-फोड़ने से बना हुआ छेद। २. बड़ा छेद। विवर। **ठींडो।**

बगावणो—दे० बगाणो।

बगावत—*(न०)* विद्रोह।

बगीची—*(ना०)* १. छोटा बगीचा। बगिया। २. निरंजनी साधुओं के रहने का स्थान जहाँ सम्प्रदाय प्रवर्तक हरिपुरुषजी के चरणचिह्न अथवा चित्र की पूजा होती है।

बगीचो—*(न०)* बाग। उपवन।

बगूलो—*(न०)* वातचक्र। **भतूळियो।**

बगेची—दे० बगीची।

बगेचो—दे० बगीचो।

बगेल—*(वि०)* जवान। युवा।

बगो—*(न०)* १. सदी का दूसरा वर्ष। २. दूसरी सदी। द्वितीय शतक।

बगो बाईसो—*(न०)* संवत् दो सौ बाईस।

बग्ग—*(न०)* १. वर्ग। समूह। २. बगुला। **बगारो।** ३. बड़ा छेद।

बग्गी—*(ना०)* दो घोड़ों वाली चार पहियों की सवारी गाड़ी।

बग्गीखानो—*(न०)* बग्गियाँ रखने का स्थान।

बघ—*(न०)* १. बाघ। २. सुराख। **बघारो।**

बघकेस—*(न०)* बाघ की मूँछ का बाल।

बघरू—*(वि०)* १. नासमझ। २. मूर्ख।

बघवाणी—*(ना०)* १. बाघवाहिनी देवी। बाघेश्वरी। दुर्गा। २. सरस्वती। वागीश्वरी।

बघवाव—*(ना०)* बाघ के शरीर की (दुर्गंध) वायु। बाघ की गंध।

बघार—*(न०)* छौंक। तड़का। **छमको।**

बघारणी—*(ना०)* १. हींग। २. बघारने का काम। ३. **बघार**। छौंक।

बघारणो—*(क्रि०)* १. बघारना। छौंक देना। छमकना। २. योग्यता दिखाने के लिये अधिक बोलना। ३. अपनी प्रशंसा करना।

बघारो—*(न०)* बड़ा सुराख। **बगारो। ठींडो।**

बघूळियो—*(न०)* वातचक्र। **बगूलो। भतूळियो। भूतेळो।**

बघूळो—*(न०)* वातचक्र। मरुतचक्र। **भूतेळो।**

बघेरो—*(न०)* सिंह से मिलता-जुलता एक हिंसक पशु।

बघेलखंड—*(न०)* एक प्रदेश।

बद्धू—*(वि०)* मूर्ख। जंगली। **बरधू।**

बचको—*(न०)* १. घास आदि उतना सामान जो काँख के नीचे उठाया या दबाया जा सके। २. हथेली में समा सके उतनी वस्तु। ३. हथेली का वह संपुट जिसमें कोई वस्तु भरी या ली जा सके। ४. दाँत से काटने का निशान। दंतक्षत। **डाचो।** ५. दाँत से काटने का भाव।

बचको भरणो—*(क्रि०)* दाँतों से काटना। **डाचो भरणो।**

बचणो—*(क्रि०)* १. बचना। सुरक्षित रहना। २. शेष रहना। उबरना। बचत होना। ३. अलग रहना। ४. परहेज करना। ५. आश्रय पाना।

बचत—*(ना०)* १. मुनाफा। लाभ। २. खर्च हो जाने के बाद बची हुई राशि (पैसा या वस्तु)। ३. बचाव। रक्षा।

बचन—दे० वचन।

बचनिका—दे० वचनिका।

बचपण—*(न०)* बाल्यावस्था। **बाळपणो।**

बचाणो—*(क्रि०)* १. बचाना। रक्षा करना। उद्धार करना। २. शेष रखना। बचत करना। उबारना। ३. खर्च न होने देना। ४. खर्च में कमी करना। ५. आश्रय देना। ६. कुकर्म से दूर रखना। ७. छिपाना। ८. अलग रखना।

बचाव—*(न०)* १. रक्षा। २. आत्मरक्षा। ३. संरक्षण। ४. छुटकारा।

बचावणो—दे० बचाणो।

बचियो—*(न०)* बच्चा।

बचियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बचा हुआ। २. रक्षित। ३. शेष।

बच्चादानी—*(ना०)* गर्भाशय।

बच्चो—*(न०)* बच्चा। **बचियो।**

बच्छ—दे० बछ।

बछ—*(न०)* १. वत्स। बच्चा। २. बछड़ा।

बछड़ी—*(ना०)* गाय की बछिया। **टोगड़ी।**

बछड़ो—*(न०)* १. गाय का बच्चा। **टोगड़ो।** २. पशु का बच्चा।

बछबारस—दे० वछबारस।

बछेरी—*(ना०)* १. छोटी घोड़ी। २. घोड़ी की बछिया।

बछेरो—*(न०)* १. छोटा घोड़ा। २. घोड़ी का बच्चा।

बजट्टी—*(ना०)* १. स्त्रियों के गले में पहिनने की एक कंठी। **बजरटीक।** २. एक शिरोभूषण।

बजणो—*(क्रि०)* १. बाजे का बजना। २. आघात द्वारा शब्द होना। ३. घड़ी के द्वारा समय की जानकारी होना। ४. झगड़ना। लड़ना।

बजर—*(न०)* १. वज्र। २. लोहा। ३. बिजली। *(वि०)* १. मूर्ख। २. दृढ़। मजबूत।

बजर किमाड़—दे० बजर किंवाड़।

बजर किंवाड़—*(न०)* लोहे का किंवाड़। बहुत मजबूत किंवाड़। वज्र कपाट।

बजरटो—दे० बजट्टी।

बजरटीक—दे० बजट्टी।

बजरठोठ—*(वि०)* १. महामूर्ख। २. कुछ भी नहीं लिखा-पढ़ा।

बजरबट—*(वि०)* १. कठोर व्यवहार करने वाला। २. दृढ़। ३. गँवार। मूर्ख।

बजरंग—*(न०)* हनुमान। वज्रांग। *(वि०)* जिसका अंग वज्र के समान हो। वज्रांग।

बजरंगबली—*(न०)* वज्र के समान दृढ़ अंगों वाला बली। हनुमान। महावीर।

बजरंगी—दे० बजरंग।

बजराक—दे० बजराग।

बजराग—*(न०)* १. वज्राग्नि। २. बिजली। ३. बहुत बड़ी आफत। ४. बला। दैवी आफत।

बजरी—*(ना०)* बाजरे के समान दानेदार रेती।

बजरोळी—*(ना०)* हठयोग की एक मुद्रा। वज्रोली।

बजंत्री—*(न०)* वाद्य बजाने वाला। **बजंतरी।**

बजा—*(वि०)* १. उचित। ठीक।

बजाज—*(न०)* १. कपड़े का व्यापारी। कापड़िया।

बजाजी—*(न०)* १. बजाज। २. कपड़े का व्यवसाय।

बजाणो—*(क्रि०)* १. नगाड़ा, ढोल आदि बजाना। २. आघात द्वारा शब्द उत्पन्न करना। ३. न्यायालय के नोटिस की प्राप्ति के हस्ताक्षर करवाना।

बजाय—*(अव्य०)* १. बदले में। २. तुलना में। ३. अतिरिक्त।

बजायोड़ो—*(भू० कृ०)* बजाया हुआ।

बजार—*(न०)* बाजार।

बजारू—*(वि०)* १. बजार का। बजार संबंधी। २. साधारण। ३. अशिष्ट।

बजावणो—*(क्रि०)* दे० बजाणो।

बजो—*(न०)* १. दोषारोपण। २. खोटा इलजाम। असत्य आरोप। ३. कलंक। लांछन।

बज्रपात—दे० वज्रपात।

बज्जाग—दे० बजराग।

बट—दे० वट।

बटकणो—*(क्रि०)* १. टूटना। **बड़कणो।** २. काटना। ३. चिल्लाना।

बटकी—*(ना०)* कटोरी। **वाटकी।**

बटको—*(न०)* १. दाँतों से काटने की क्रिया। २. रोटी का टुकड़ा। ३. वस्त्र का टुकड़ा। ४. टुकड़ा। खंड। ५. कटोरा। **वाटको।**

बटको भरणो—*(मुहा०)* दाँतों से काटना। **डाचो भरणो।**

बटण—*(न०)* सीप, सींग, चाँदी, सोने आदि की बनी गोल घुंडी जो कोट, कुरते आदि के खुले भाग को बंद करने के लिये लगाई जाती है। बटन। २. बिजली चालू या बंद करने का खटका। स्विच।

बटणो—*(क्रि०)* १. रोटी आदि को बेलना। २. वश चलाना। ३. भाना। रुचिकर होना। ४. बटना। बल देना। ऐंठना। ५. बिकरी होना। बिकरी से पैसा हाथ लगना। ६. बिकरी से लाभ होना। *(न०)* वट देने का उपकरण। **ढेरो।**

बटत—*(ना०)* १. बिक्री। विक्रय। २. विक्रय से प्राप्त रकम।

बटन—दे० बटण।

बटपाड़ो—*(न०)* यात्रियों को लूटने वाला लुटेरा। **बटमार।**

बटमार—*(न०)* यात्रियों को लूटने वाला। **लुटेरा। बटपाड़ो।**

बटलोई—*(ना०)* देगची। पतीली। **तपेली।**

बटवो—*(न०)* १. बटुआ। २. एक लोक-गीत।

बटाई—*(ना०)* १. रोटी, पापड़ आदि बेलने की क्रिया। २. रस्सी आदि में बल देने की क्रिया। ३. बेलने या बट देने की मजदूरी। ४. बिक्री।

बटाउड़ो—दे० बटाऊ।

बटाऊ—*(न०)* यात्री। पथिक। पंथी। **वाटबहणियो। बटाऊ।**

बटाणो—*(क्रि०)* १. रोटी, पापड़ आदि बेलवाना। २. रस्सी बटवाना। ३. आमदनी करवाना।

बटाव—दे० वटाव।

बटावणो—दे० बटाणो।

बटियो—*(न०)* १. रोटी का टुकड़ा। २. मोयन डालकर बनायी हुई मोटी रोटी। ३. छोटी रोटी। ४. अंगारों पर सेकी हुई छोटी रोटी। **बाटियो।**

बटी—दे० बट्टी।

बटीड़—दे० बटीड़ो।

बटीड़ो—*(न०)* १. जोर की चोट। २. लकड़ी, हड्डी आदि के टूटने का शब्द। ३. चिंता, शोकादि से एकदम उठने वाला सिर दर्द। ४. बिच्छू आदि विषैले जंतु के काटने की क्रिया। ५. विषैले जंतु के काटने से एकाएक होने वाली तीक्ष्ण पीड़ा। ६. हानि। ७. प्रहार।

बटुओ—*(न०)* १. कई खानों या परतों वाली छोटी थैली। बटुवा। २. एक लोक-गीत।

बटूकणो—*(क्रि०)* १. पशुओं का घासपात खाना। २. खाना। ३. निगलना। ४. खाना या रुचिकर होना (व्यंग्य या क्रोध में प्रयुक्त)।

बटेर—*(न०)* एक पक्षी।

बटोड़ो—*(न०)* कंडों का चुना हुआ व्यवस्थित ढेर। **छाणेरो।**

बटोरणो—*(क्रि०)* १. संग्रह करना। २. बिखरी हुई वस्तुओं का एकत्रित करना। ३. उठाना। ले लेना।

बट्टाखातो—*(न०)* १. नफे-नुकसान का खाता। २. नफा-नुकसान। ३. खर्च और आमदनी। ४. नुकसान व खर्च का हिसाब। ५. आमदनी व लाभ का हिसाब।

बट्टी—*(ना०)* टिकिया। वटी।

बट्टो—*(न०)* १. कलंक। लांछन। २. नोट, हुंडी आदि भुनाने की दस्तूरी। ३. सोने-चाँदी में मिली हुई खोट। ४. नुक्स होने के कारण वस्तु की कीमत में होने वाली कमी। ५. आमदनी। ६. हानि।

बठ्ठ—*(ना०)* १. घमंड। २. मरोड़। ३. बैलगाड़ी के चलने से होने वाला शब्द। **बड्ड।**

बठीनैं—*(क्रि० वि०)* उधर। उस ओर। **उठीनैं।**

बठै—*(क्रि० वि०)* वहाँ। **उठै।**

बठोबठ—*(न०)* (सिले हुए नये वस्त्र का) अंग के अनुरूप बैठने का भाव। *(वि०)* १. न ढीला न तंग। २. तंग। चुस्त। संकीर्ण। ३. पास। निकट। *(क्रि० वि०)* अड़ करके। सट करके।

बड—*(वि०)* बड़ा।

बड़—*(न०)* वटवृक्ष। **बड़। बड़लो।** *(वि०)* बड़ा।

बड़क—*(ना०)* १. खांड की चाशनी को फैलाकर बनाई हुई पतली परत। **चपड़ी बिड़क।** २. टूट जाने का चिह्न। ३. टूट जाने का शब्द।

बड़कणो—*(क्रि०)* १. टूटना। २. फाड़ना। ३. दरार पड़ना।

बड़काउ—दे० बडेरो।

बड़काणो—*(क्रि०)* १. तोड़ना। २. फाड़ना। दरार बनाना। ३. लकड़ी या बेंत से मार मारना। ठोंकना। पीटना। **ठोकणो। मारणो।**

बड़का-तड़का—*(न० ब० व०)* १. क्रोध में की जानी वाली अंडबंड बड़बड़ाहट। २. अनगर्ल बकवाद। ३. पटका-झटका।

बड़का बोली—*(वि०)* १. कठोर शब्द बोलने वाली। २. खरी बोलने वाली। ३. कटु बोलने वाली। कटुभाषिणी। ४. झगड़ालू।

बड़का बोलो—*(वि०)* १. खरे शब्दों में बात कहने वाला। बिना नमक-मिर्च लगाये बात करने वाला। २. कठोरभाषी। ३. कटुभाषी। ४. मुंहफट।

बड़कावणो—दे० बड़काणो।

बड़कियोड़ो—*(वि०)* १. टूटा हुआ। २. फटा हुआ। दरार पड़ा हुआ।

बड़को—*(न०)* १. बडेरा। **बडील।** २. लकड़ी आदि किसी वस्तु के टूटने का शब्द ३. प्रहार की आवाज।

बडकोळो—*(न०)* वटवृक्ष का फल। **बडकोळो। बडकोल्यो।**

बड़गड़-बड़गड़—*(अव्य०)* १. दौड़ने की आवाज। २. घोड़े के दौड़ने की आवाज।

बड़गड़णो—*(क्रि०)* तेज दौड़ना।

बड़गड़ी—*(ना०)* तेज दौड़।

बड़गड़ो—*(न०)* तेज दौड़।

बड़गूंदो—*(न०)* १. बड़ा लिसोड़ा। २. बड़े लिसोड़े का वृक्ष। **गूंदो।** वडगूंदो।

बडगोतण—*(वि०)* उच्च कुल की। **बड-गोतण।**

बड़णो—*(क्रि०)* घुसना। प्रवेश करना। **पैठणो। पैसणो।**

बड़नामी—*(वि०)* १. विख्यात। प्रसिद्ध। **छावो।** २. बड़े नाम वाला। यशस्वी।

बडनाळ—*(ना०)* तोप।

बडपण—*(वि०)* १. बड़ाई। २. श्रेष्ठता। महत्ता। ३. गर्व। **घमंड।**

बडफर—दे० वडफर।

बड़बड़—दे० बड़बड़ाट।

बड़बड़ाट—*(ना०)* १. बकबक। अंट-संट बोलना। २. प्रलाप।

बड़बड़ाणो—*(क्रि०)* १. बकबक करना। व्यर्थ बोलना। २. प्रलापना।

बड़बड़ियो—*(वि०)* १. बड़बड़ करने वाला।

बड़बड़ी—*(ना०)* आवेश। रोष।

बड़बड़ो—दे० बुड़बुड़ियो।

बड़बेड़ो—दे० वडबेड़ो।

बडबोर—*(न०)* एक प्रकार का बड़ा बेर।

बडबोरड़ी—*(ना०)* बड़े बेरों वाला बेरी-वृक्ष।

बड़भागण—*(वि०)* बड़े भाग्य वाली। सौभाग्यशालिनी।

बड़भागी—*(वि०)* बड़े भाग्य वाला। प्रारब्धी।

बडम—*(वि०)* १. बड़ा। २. श्रेष्ठ। **चोखो।**

बड़लो—*(न०)* वटवृक्ष। **वड़।**

बड़वा—*(ना०)* १. घोड़ी। हयी। २. अश्विनी नक्षत्र। ३. वंशावली पढ़ने वाली एक जाति। ४. दासी। ५. वेश्या।

बड़वागि—*(ना०)* बडवाग्नि। समुद्र की अग्नि।

बड़वाग्नि—दे० वडवाग्नि।

बड़वानल—दे० वडवानळ।

बडवार—*(ना०)* १. जीवन का श्रेष्ठ समय। २. मांगलिक अवसर। ३. बड़ा उत्सव। ४. पुत्र जन्म। *(वि०)* १. बड़ी कीर्त्ति वाला। २. दानी। ३. भाग्यशाली।

बड़वो—*(न०)* वंशावली पढ़ने वाली बड़वा जाति का व्यक्ति।

बड़ंग—*(न०)* १. घोड़ा। **विडंग।** २. कवच। ३. भाला।

बड़ंगी अरोहा—*(न०)* अश्वारोही। **घुड़सवार।**

बड़ाई—*(ना०)* १. बड़प्पन। २. श्रेष्ठता। महत्ता। ३. प्रशंसा। तारीफ। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत। ५. गर्व। **घमंड।**

बड़ाको—*(न०)* किसी कड़ी वस्तु के काटने या टूटने का शब्द।

बड़ाणो—*(क्रि०)* १. प्रवेश करवाना। घुसवाना। **पैठावणो।**

बडार—दे० वडार।

बडारण—दे० वडारण।

बडाळ—*(वि०)* बड़ा।

बड़िया—दे० बडियाजी। दे० वडिया।

बड़ियाजी—*(ना०)* १. कुल की पूजनीया और बड़ी स्त्री। २. बड़ी माता। ३. वृद्धा स्त्री।

बड़ियो—*(न०)* १. वटवृक्ष का फल। **बडकोळो।** २. मजदूर।

बड़ियोड़ो—*(भू० कृ०)* प्रवेश किया हुआ। घुसा हुआ।

बड़ी—*(ना०)* १. मुंगौरी। बरी। २. मांसपेशी। बोटी। ३. मूंज, खींप आदि की रस्सी। ४. दो पत्नियों वाले की पहली वाली पत्नी। अध्यूढ़ा। ५. अध्यूढ़ा की आदरसूचक संज्ञा। ६. मजदूरी। *(वि०)* पद, कुल, उम्र, ऊँचाई आदि में अधिक।

बड़ीजान—*(ना०)* १. इष्टमित्रों सहित बारात को दी जाने वाली विशेष ज्योनार। २. इस ज्योनार की संज्ञा। ३. दो बहनों के एक साथ विवाह में बड़ी के साथ पाणिग्रहण करने वाले दुलहे की बारात।

बड़ी तीज—दे० वडी तीज।

बड़ी दाख—*(ना०)* मुनक्का दाख।

बड़ीबलाय—*(ना०)* १. दानव। दैत्य। २. महान संकट। बड़ी विपत्ति। ३. भूतप्रेत की बाधा। ४. दैवी आफत। ५. पाप। *(वि०)* १. जबरदस्त। २. भयंकर।

बड़ी मा—*(ना०)* माता की जेठानी। ताई।

बड़ी माता—*(ना०)* १. बड़ी चेचक। चेचक की भयंकरता। २. ताई।

बड़ूजा—*(न०)* इन्द्र। बिड़ौजा। **बिडोजा।**

बडेर—दे० वडेर।

बडेरी—दे० वडेरी।

बडेरो—दे० वडेरो।

बड़ो—*(न०)* १. बड़ा। पकोड़ा। २. पूर्वज। *(वि०)* १. जो विद्या, पद, आयु, परिमाण, शक्ति और विस्तारादि में अधिक हो। **वडो।** २. महत्वपूर्ण। ३. बहुत। ४. श्रेष्ठ। ५. विशाल।

बड़ो करणो—दे० वडो करणो।

बडोड़ो—*(वि०)* बड़ा। बड़ा वाला। **मोटोड़ो। बडोड़ो।**

बड़ो दिन—*(न०)* १. होली, दीवाली आदि के पर्व दिन। २. ईसाइयों का पर्व दिन। २५ दिसम्बर।

बड़ो बाप—*(न०)* पिता का बड़ा भाई। ताऊ।

बड़ो वेस—*(न०)* वर पक्ष की ओर से (विवाह में) कन्या के लिए ले जाये जाने वाले कपड़े, गहने आदि। **पड़लो।**

बड़ो हुकम—*(अव्य०)* बड़ों की बात का स्वीकृति रूप एक संपुट। (जी हजूर, जो हुकम, हाँ साहिब इत्यादि का अर्थसूचक)।
बढ़—दे० बढ़।
बढई—*(न०)* खाती।
बढणो—*(क्रि०)* १. कटना। २. नष्ट होना। **वढणो**। ३. आगे बढ़ना। ४. बढ़ना। **वधणो**।
बढ़ती—*(ना०)* १. तरक्की। उन्नति। २. वृद्धि।
बढाणो—*(क्रि०)* १. कटवाना। चिरवाना। २. मरवा देना। दे० बधाणो।
बढाबढी—*(ना०)* प्रतिस्पर्धा। होड़। **वधाबधी**।
बढार—दे० बढार।
बढाव—*(न०)* बढ़ने का भाव या क्रिया।
बढावणो—दे० बढाणो।
बढावो—*(न०)* प्रोत्साहन।
बढिया—*(वि०)* १. उत्तम। २. सुंदर। ३. स्वादिष्ट। ४. मूल्यवान।
बढियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बढ़ा हुआ। २. कटा हुआ। ३. चीरा हुआ।
बढोतरी—*(ना०)* १. उन्नति। तरक्की। २. वेतनवृद्धि। ३. लाभ। **वधोतरी**।
बण—दे० वण।
बणकर—दे० वणकर।
बणज—*(न०)* १. वाणिज्य। **विणज**। २. एक भोज्य पदार्थ। **विणज**।
बणजणो—*(क्रि०)* १. ग्राहक को पटाना। गाहक को सौदा देना। २. व्यापार करना। **विणजणो**।
बणजार—दे० विणजार।
बणजारण—दे० विणजारण।
बणजारो—दे० वणजारो।
बणठण—दे० बनठन।
बणणाटी—*(ना०)* चक्कर।
बणणाटो—दे० बणणाटी।
बणणेटी—*(ना०)* चक्कर। सिर घूमना। **बणेटी**। **बणनेटी**।
बणणो—*(क्रि०)* १. रचा जाना। तैयार होना। २. काम आने के योग्य होना। ३. किसी वस्तु का एक रूप बदलकर दूसरे रूप में होना। ४. उन्नत दशा को प्राप्त होना। ५. सुअवसर मिलना। ६. आविष्कार होना। ७. लक्ष्य सिद्ध होना। ८. मरम्मत होना। ९. निभना। पटना। १०. सजना। ११. प्राप्त होना। वसूल होना। १२. युक्ति का पार लगना। १३. संबंध स्थापित होना। १४. मूर्ख या उपहासास्पद सिद्ध होना। १५. संभव होना। १६. शोभा पाना। १७. अस्तित्व में आना।
बणत—*(न०)* १. स्नेह। प्यार। २. मेल। ३. बनावट। ४. बुनावट।
बणनेटी—दे० बणणेटी।
बणराइ—दे० वणराइ।
बणाई—*(ना०)* किसी वस्तु को बनाने का काम और उसका पारिश्रमिक।
बणाक—*(न०)* १. खाती। बढ़ई। **वणाक**। २. बारात प्रस्थान के पूर्व की जाने वाली विनायक पूजा और उसके लिए नैवेद्य रूप में की जाने वाली गुड़ की मांगलिक ज्योनार। विनायक। ३. एक पक्षी। खाती चिड़ा।
बणाक-पूजा—दे० वणाक सं० २।
बणाणो—*(क्रि०)* १. तैयार करना। रचना बनाना। २. किसी वस्तु को दूसरे रूप में बदलना। ३. किसी को उन्नत दशा में पहुँचाना। ४. किसी को पद, मान, अधिकार देना। ५. उपार्जित करना। ६. आविष्कार करना। ७. लक्ष्य सिद्ध करना। ८. मरम्मत करना। ९. निभाना। पटाना। १०. युक्ति बिठाना। ११. संबंध स्थापित करना। १२. किसी को व्यंग्यपूर्वक मूर्ख ठहराना। १३. इकट्ठा करना। जोड़ना। १४. सजाना।
बणायोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बनाया हुआ। निर्मित। २. बहकाया हुआ।
बणारस—दे० बनारस।

बणारसी—दे० बनारसी।

बणाव—*(न०)* १. बनाव। रचना। बनावट। २. सजावट। ३. शृंगार। ४. रूप। ५. घटना। ६. प्रसंग। ७. युक्ति। ८. स्वाँग। ९. ढोंग। ढूँग। १०. आडम्बर। ११. ऊपरी दिखावा।

बणावट—*(ना०)* १. बनाने की क्रिया। २. रचना। गठन। बनावट। ३. बनाने का ढंग। ४. रूपरेखा। ढाँचा। ५. आकृति। रूप। ६. आडम्बर।

बणावटी—*(वि०)* १. नकली। कृत्रिम। २. दिखाऊ।

बणावणो—दे० बणाणो।

बणास—दे० बनास। दे० बाणास। दे० विनाश।

बणिक—दे० वणिक।

बणियाणी—दे० विणियाणी।

बणियो—*(न०)* बनिया। वणिक। **वाणियो।**

बणियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बना हुआ। २. आविष्कृत। ३. बहकाये में आया हुआ। ४. वश किया हुआ। ५. स्थिर।

बणेई—दे० वहणोई।

बणेटी—*(ना०)* १. सिर घूमना। चक्कर। २. दोनों सिरों पर फुंदनों वाली पट्टेबाजों की एक लकड़ी। बनेठी।

बणेसुर—*(न०)* १. सिंह। २. हाथी।

बणोखड़ी—दे० वणोखड़ी।

बण्णेटी—दे० बणणेटी। बणेटी।

बत—*(ना०)* १. बात। २. बतख। **बतक।**

बतक—*(ना०)* कंधे पर टाँगा जाने वाला यात्रा में साथ रखने का मिट्टी का एक जलपात्र। *(न०)* एक जलपक्षी। बतख।

बतकड़ी—दे० बतक *(ना०)*।

बतकाव—*(ना०)* १. बातचीत। २. प्रसंग। ३. वृतान्त। ४. वर्णन। ५. बात।

बतरणो—*(न०)* १. खड़िया मिट्टी से पुती और जीखा (ईंट का बारीक चूर्ण) डाली हुई पाटी के ऊपर लिखने की एक लेखनी। २. स्लेट के ऊपर लिखने की खड़िया की बत्ती। स्लेट पैन। दे० वतरणो।

बतलाणो—*(क्रि०)* १. संबोधन करना। आवाज देना। बतलाना। २. बातचीत करना। ३. जताना। ४. पूछना।

बतळावण—*(ना०)* १. बातचीत। बोल-चाल। २. बात। ३. विवाद। ४. पूछताछ। ५. बोलने-चालने का ही संबंध। बातचीत करने मात्र का संबंध। ६. होड़। ७. समझौता।

बतळावणी—दे० बतळावण।

बतळावणो—दे० बतलाणो।

बतंगड़—*(न०)* १. विवाद। झगड़ा। २. बात को लंबाना। लंबी बात। *(वि०)* बातें बनाने वाला। **बातूनी।**

बताणो—*(क्रि०)* १. निर्देश करना। बताना। दिखलाना। २. समझाना। ३. सूचित करना। ४. कहना। वर्णन करना। ५. सुझाव देना। ६. संकेत करना। इशारा करना। ७. तलाश करवाना। ८. स्पष्ट करना। ९. मजा चखाना *(व्यंग्य)*। १०. भुगताना।

बतानो—*(न०)* १. पगड़ी को बड़ी बनाने के लिये उसको सिर पर बाँधने के पहिले लपेटा जाने वाला कपड़ा। २. पगड़ी के अंदर की छोटी पगड़ी।

बतायोड़ो—*(भू० कृ०)* बताया हुआ।

बतावणो—दे० बताणो।

बतास—*(ना०)* हवा। पवन।

बतासी—*(न०)* तलवार की मूठ का एक भाग।

बतीस—दे० बत्तीस।

बतीसका—*(ना०)* बत्तीस छंदों का काव्य। बत्तीसी। बतीसिका।

बतीसियो—दे० बत्तीसियो।

बतीसी—दे० बत्तीसी।

बतीसौ—*(न०)* सदी का बत्तीसवाँ वर्ष।

बतूळियो—*(न०)* वातचक्र। **बतूळो। भूतेळो।**

बतूळो—*(न०)* वातचक्र । भूतेळो । **भंभूळियो ।**

बत्ती—*(ना०)* १. रुई आदि को बटकर बनाई हुई वर्तिका जिसे तेल भरे दिये में डालकर जलाते हैं । २. घाव में भरने की कपड़े की पतली धज्जी । ३. दिया । दीपक । ४. बंदूक तोपादि को छोड़ने का पलीता । दे० बत्तीस । दे० बत्तीसी सं० २, ३ ।

बत्तीस—*(वि०)* तीस और दो । *(न०)* बत्तीसी की संख्या '३२' ।

बत्तीस लक्षण (लखण)—*(न०)* सर्वगुण सम्पन्नता के बत्तीस लक्षण । सभी सद्गुण ।

बत्तीस लखणी—*(वि०)* सभी सद्गुणों वाली । '३२' शुभ लक्षणों वाली ।

बत्तीस लखणो—*(वि०)* जिसमें मनुष्यता के सभी लक्षण हों । सभी सद्गुणों वाला ।

बत्तीसियो—*(वि०)* १. जिसके मुँह में पूरे बत्तीस दाँत हों । २. बत्तीस शुभ लक्षणों वाला । ३. बत्तीस की संख्या या वस्तु संबंधी ।

बत्तीसी—*(ना०)* १. मानव-मुँह के ऊपर-नीचे की दोनों दंत-पंक्तियों के बत्तीस दाँतों का नाम । २. विवाह में दूल्हे-दुलहिन के ननिहाल वालों को माहेरा (भात) भरने को आने के लिये भेजी जाने वाली कुंकुम-पत्रिका । (माहेरा की इस विशिष्ट कुंकुम-पत्रिका के साथ हलदी से रंगी हुई एक कोथली जिसमें नारियल, सुपारी, फल फोफळ, रौप्य मुद्रा इत्यादि बत्तीस मांगलिक वस्तुएँ भरी रहती हैं ।) ३. बत्तीस छंदों का काव्य ग्रन्थ । जैसे—वर्ण बत्तीसी । बत्तीसिका । **बत्तीसका** । ४. बत्तीस गाँवों की जागीरी का नाम । ५. बत्तीस वस्तुओं का समाहार । ६. जोरावरी । बहादुरी । *(वि०)* बत्तीस से संबंधित ।

बत्तीसो—*(न०)* १. बत्तीसवाँ सम्वत् । २. बत्तीस सौ की संख्या । बत्तीस सौ । *(वि०)* १. बत्तीस वस्तुओं से संबंधित । २. बत्तीस वस्तुओं के योग से बना । ३. तीन हजार दो सौ । बत्तीस सौ । ४. शक्तिशाली । ५. विद्वान ।

बत्तीसो कसूंबो—*(न०)* केशर, कस्तूरी आदि सुगंधित, पौष्टिक तथा अन्य मादक वस्तुओं के योग से तैयार किया जाने वाला अहिफेन द्रव ।

बत्तीसो धूप—*(न०)* बत्तीस सुगंधित द्रव्यों द्वारा बनाया हुआ धूप । अग्नि के संयोग में सुगंधित धुआं देने वाला बत्तीस सुगंधित पदार्थों को मिलाकर बनाया हुआ एक मिश्रण ।

बत्तेरो—दे० बत्तेरो ।

बत्तो—दे० बत्तो ।

बत्थ—दे० बथ ।

बत्थंबत्था—दे० बाथोबाथ ।

बत्री—दे० बत्तीसी सं० २ । दे० बत्तीस ।

बत्रीस—दे० बत्तीस ।

बत्रीसी—दे० बत्तीसी सं० २ ।

बथ—दे० बाथ ।

बथकड़—*(ना०)* कुश्ती । **बाथोबाथ** ।

बथणो—*(क्रि०)* १. लड़ना । बथंबाथ होना । २. बाहुपाश में लेकर मिलना ।

बथवो—दे० बथुओ ।

बथारणो—*(क्रि०)* १. लड़ना । भिड़ना । २. फैलाना ।

बथुओ—*(न०)* एक छोटा पौधा जिसके पत्तों का शाक बनाया जाता है । एक भाजी । **बथवो** ।

बथूळियो—*(न०)* वातचक्र । बवंडर **भूतेळो** ।

बथ्थ—दे० बथ ।

बथ्थंबथ्था—दे० बाथोबाथ ।

बद—*(ना०)* निंदा । बुराई । भद । *(वि०)* १. बुरा । खराब । २. दुष्ट । पाजी । ३. दुराचारी । ४. उपद्रवी । उत्पाती । ५. अशुभ । *(ना०)* बदगाँठ ।

बदइंतजाम—*(न०)* कुप्रबंध ।

बदकार—*(वि०)* १. दुराचारी। दुष्कर्मी। **कुकर्मी।** २. अहितकारी।

बदकारी—*(ना०)* १. दुराचार। कुकर्म। २. व्यभिचार।

बदकिस्मत—*(वि०)* अभागा। बदनसीब। **अभागी।**

बदकिस्मती—*(ना०)* दुर्भाग्य। **अभाग।**

बदगाँठ—*(ना०)* जाँघ की जोड़ में उठने वाली एक गाँठ। पेड़ू और जंघा की संधि में होने वाली गिलटी। **बद।**

बदचलण—*(वि०)* बुरे चालचलन वाला। कुमार्गी। दुश्चरित्र। **बदचलन।**

बदचलणी—*(ना०)* बुरा चालचलन। दुराचरण। दुश्चरित्रता। **बदचलनी।** वेश्यागमन।

बदजात—*(वि०)* १. दुष्टाचारी। २. नीच। **कमीनो। कुजात।**

बदणो—दे० बदणो।

बदतमीज—*(वि०)* असभ्य। अशिष्ट। **फूहड़। गँवार।**

बदतमीजी—*(ना०)* १. असभ्यता। २. अशोभनीय आचरण। **फूहड़पणो। गँवारपणो।**

बदतर—*(वि०)* १. खराब। २. नीच।

बददुआ—*(ना०)* दुराशीश।

बदन—*(न०)* १. देह। शरीर। २. मुख। **चेहरो।** ३. भग। **योनि।**

बदन टूटणो—*(मुहा०)* शरीर में पीड़ा होना।

बदनसीब—*(वि०)* अभागा। दुर्भागी।

बदनसीबी—*(ना०)* कम भाग्य।

बदनाम—*(वि०)* कुख्यात। बुरी शोहरत वाला।

बदनामी—*(ना०)* १. अपकीर्ति। **कुजस।** २. लोकनिंदा। निंदा।

बदनीती—*(ना०)* १. बेईमानी। बदनीयती। बुरी नीयत। २. दगाबाजी। ३. लालच।

बदनीयती—दे० बदनीती।

बदनो—*(न०)* मुसलमानों का मिट्टी का एक जलपात्र।

बदपरहेज—*(क्रि०)* कुपथ्य करने वाला।

बदपरहेजी—*(ना०)* कुपथ्य।

बदफेल—*(वि०)* कुकर्मी।

बदफेली—*(ना०)* १. कुकर्म। २. व्यभिचार।

बदबू—*(ना०)* दुर्गंध। बुरी गंध।

बदबूदार—*(वि०)* दुर्गंध वाला।

बदबोई—*(ना०)* १. अपकीर्ति। निंदा। कुख्याति। २. बदबू। दुर्गंध।

बदमाश—दे० बदमास।

बदमास—*(वि०)* १. नीच प्रकृति का। २. दुराचारी। लुच्चा। **गुंडो।** ३. झगड़ालू। ४. बेईमान। ५. दुष्ट आचरण वाला। ६. उठाईगीरा। ७. शरारती।

बदमासी—*(ना०)* १. बदचलनी। २. दुष्टता। ३. खोटाई। ४. लुच्चापन। लुच्चाई। ५. बेईमानी। ६. गुंडापन। **गुंडाई।** ७. शरारत। ८. उठाईगीरी।

बदरंग—*(वि०)* १. जिसका रंग बिगड़ गया हो। २. अशुभ रंग का। ३. फीके रंग का। ४. विवर्ण। ५. निस्तेज। ६. असंगत। ७. बिगड़े मिजाज का। *(न०)* ताश के खेल में खेला जाने वाला दूसरे रंग का पत्ता।

बदरा—*(ना०)* सम्पत्ति। धनमाल। **मता।**

बदराह—*(ना०)* कुमार्ग। *(वि०)* कुमार्गगामी।

बदरी—*(न०)* १. बेर का पेड़। **बोरड़ी।** दे० बदरीनाथ।

बदरीकाश्रम—दे० बदरीनाथ।

बदरीनाथ—*(न०)* १. हिमालय पर्वत के १०२९४ फीट ऊँचे शिखर अलकनंदा के तट पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थधाम। चारों दिशाओं में स्थित चार धामों में से उत्तर दिशा का धाम। २. इस तीर्थ के देवता बदरीनारायण।

बदरीनारायण—(न०) बदरिकाश्रम-मंदिर की श्री नरनारायण की मूर्ति। दे० बदरीनाथ।

बदरी फल—(न०) बेर के पेड़ का फल। बेर। **बोर**।

बदळ—(न०) हेर-फेर। परिवर्तन। अदला-बदली।

बदळणो—(क्रि०) १. एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाना या होना। २. रंग-रूप दूसरा हो जाना या कर देना। ३. एक की जगह दूसरा हो जाना। ४. दूसरी जगह भेजा जाना। तबादला होना। ५. एक वस्तु हटाकर उसकी जगह दूसरी वस्तु रखना। ६. परिवर्तन होना। ७. विरुद्ध होना। ८. मुकरना। ९. विषयांतर करना।

बदलाणो—(क्रि०) १. परिवर्तन कराना। २. रंग-रूप दूसरा करा देना। ३. एक की जगह दूसरे को लिवा लाना। ४. एक वस्तु हटवाकर उसकी जगह दूसरी वस्तु रखवा देना। ५. बदलने का काम दूसरे से करवाना। ६. तबादला करवाना। ७. विषयांतर करवाना।

बदळा-बदळी—दे० अदला-बदली।

बदळायत—(वि०) १. बदला लेने वाला। २. शत्रु। **वैरी**।

बदळायोड़ो—(भू० कृ०) बदला हुआ।

बदळावणो—दे० बदळाणो।

बदळियोड़ो—(भू० कृ०) परिवर्तित।

बदळी—(ना०) १. तबादला। स्थानांतरण। २. परिवर्तन।

बदळै—(अव्य०) परिवर्तन में। एवज में। बदले में।

बदळो—(न०) १. मुआवजा। २. प्रतिकार। ३. प्रतिफल। ४. एवज। ५. परिणाम। नतीजा। दे० वदळो।

बदवा—(ना०) दुराशिष। बददुआ।

बदसूरत—(वि०) १. कुरूप। बेडौल। २. भद्दी सूरत-शक्ल का। भौंडा।

बदस्तूर—(क्रि० वि०) १. यथावत। २. रिवाज के अनुसार। यथाविधि।

बदहजमी—(ना०) १. अपच। **अपचो**। २. अजीर्ण।

बदाबदी—(ना०) १. होड़। स्पर्धा। २. विवाद। **झोड़**।

बदाम—(ना०) एक प्रसिद्ध मेवा। बादाम। **बिदाम**। दे० बिदाम।

बदामण—(ना०) खाट की बुनावट को कसे रखने के लिये पैताने की ओर लगाई जाने वाली रस्सी। **बदामण**। **बदाण**।

बदामी—(ना०) १. बादाम के रंग का। २. बादाम का। ३. बादाम जैसा।

बदी—(ना०) १. निंदा। बुराई। २. अपकार। ३. जामे के ऊपर पहनने का एक गहना। लंबी कंठी। बद्धी। दे० वदी। कृष्णपक्ष। **वदपक्ष**।

बदीतो—दे० वदीतो।

बदौलत—(अव्य०) १. कारण से। २. कृपा से।

बद्ध—(वि०) १. बँधा हुआ। २. रुका हुआ। ३. रचित। बनाया हुआ।

बद्धी—दे० १. बदी सं० ३। २. रस्सी। ३. गंडा। तावीज।

बध—दे० वध।

बधको—दे० वधको।

बधणो—(क्रि०) १. बढ़ना। २. फैलना। ३. उन्नति होना। ४. नाप, तोल आदि में अधिक होना। ५. किसी स्थान से आगे चलना। ६. आगे बढ़ना। ७. लाभ होना। ८. दुकान बंद करना या होना। ९. दीपक का बुझना।

बधतो—दे० वधतो।

बधरणो—दे० वधरणो।

बधाई—दे० वधाई।

बधाईदार—दे० वधाईदार।

बधाउड़ो—दे० वधाउड़ो।

बधाणो—दे० वधावणो।

बधापो—दे० वाधेपो।

बधामण— दे० बधामण ।
बधामणा—दे० बधामणा ।
बधारणो—दे० बधारणो ।
बधारो—दे० बधारो ।
बधावो—*(न०)* १. मंगलगीत । २. स्वागत-गीत । ३. बधाईगीत । ४. आनंदोत्सव । दे० बधावो ।
बधिक—दे० बधिक ।
बधियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बढ़ा हुआ । २. उन्नत । ३. प्रबल । तीव्र । **बधियोड़ो** ।
बधिर—*(वि०)* बहरा । **बोळो** ।
बधु—दे० बधू ।
बधेपो—दे० बाधेपो ।
बन—*(न०)* बन । जंगल ।
बनखंड—दे० बनखंड ।
बनखंडी—दे० बनखंडी ।
बनठन—*(न०)* १. सज्जित होने की क्रिया या भाव ।
बनड़ी—दे० बनड़ी ।
बनड़ो—दे० बनड़ो ।
बनणो—दे० बँधणो ।
बनपसा—*(ना०)* एक औषध । बनस्पति ।
बनमाळी—दे० बनमाळी ।
बनवारी—*(न०)* श्रीकृष्ण ।
बनवास—दे० बनवास ।
बनवासी—*(वि०)* १. बन में रहने वाला । २. जंगली ।
बनस्थली—दे० बनस्थली ।
बनस्पति—दे० बनस्पति ।
बना—दे० बना ।
बनात—*(ना०)* १. ओढ़ने की एक प्रकार की ऊनी चादर । २. एक ऊनी या रेशमी वस्त्र । **बनात** ।
बनाम—*(अव्य०)* १. नाम पर । नाम से । अमुक के नाम । नामादेश । २. के प्रति । अमुक के प्रति । ३. के विरुद्ध ।
बनारणो—*(क्रि०)* साग-भाजी सँवारना-छीलना । **बनारणो** ।
बनारस—*(न०)* हिन्दुओं का प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थस्थान । काशी । वाराणसी ।
बनारसी—*(वि०)* १. बनारस का । २. बनारस संबंधी । ३. बनारस का बना हुआ । *(न०)* बनारस का निवासी ।
बनाव—दे० बणाव ।
बनावट—दे० बणावट ।
बनावटी—दे० बणावटी ।
बनास—*(ना०)* राजस्थान की एक नदी ।
बनासपती—दे० बनासपती ।
बनिता—दे० बनिता ।
बनियान—*(न०)* कमीज या कुरते के नीचे पहनने का एक सिला हुआ वस्त्र । गंजी । **बरियाण** ।
बनिस्वत—*(अव्य०)* मुकाबले में । तुलना में । **करतां** ।
बनी—*(ना०)* १. दुलहन । **बनड़ी** । **बनो** । २. नववधू ।
बनीठनीजी—*(ना०)* किसनगढ़ नरेश भक्त सांवंतसिंह उपनाम नागरीदास की रानी एक कृष्णभक्त कवयित्री । रसिक बिहारी बनीठनीजी ।
बनीत—*(न०)* गरुड़ । वैनतेय ।
बनेई—*(न०)* बहनोई । बहन का पति ।
बनेठी—*(ना०)* पट्टेबाजी की एक छड़ी जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं ।
बनो—दे० बनो ।
बनोळी—दे० बंदोळी ।
बनोळो—दे० बंदोळो ।
बन्ने—*(वि०)* दोनों । **दोही** ।
बप—*(न०)* १. शरीर । वपु । २. बाप । पिता ।
बपटो—*(न०)* वह उपकरण जिसमें एक साथ खेत में दो रेखायें (ओळें) निकालने के लिये दो हल लगे हुए हों । **बेबटो हळ** । **बेबटो** । **बबटो** । साथ में लगे हुए दो हल ।
बपता—*(न०)* बाप । पिता । बपता । **जामो** ।
बपराणो—दे० बपराणो ।
बपरास—दे० बपरास ।

बपीहो—(न०) पपीहा। चातक। **पपीहो। पपईयो।**

बपोती—दे० बापोती।

बप्प—(न०) बाप। पिता।

बप्पड़ो—दे० बापड़ो।

बफारो—(न०) १. भाप। २. गरमी। ३. किसी रोग या दर्द पर दिया जाने वाला भाप का सेंक।

बफीजणो—(क्रि०) १. गरमी से बेचैनी होनी। २. उबलना। ३. बफारा लगना। ४. सेक होना या किया जाना।

बबड़णो—(क्रि०) बड़बड़ाना।

बबर—(न०) बब्बर शेर। (वि०) वीर। बहादुर।

बबरणो—(क्रि०) गर्व से गुर्राना।

बबरसिंघ—(न०) एक जाति का सिंह।

बबरेल—(वि०) १. वीर। बहादुर। २. भयंकर।

बब्बरसीह—दे० बबरसिंघ।

बब्बो—(न०) 'ब' अक्षर। बकार।

बभीखण—(न०) रावण का छोटा भाई। विभीषण।

बभूत—(ना०) १. यज्ञ-भस्म। **भभूत।** २. शिव के अंग में लगाने की भस्मी, विभूति।

बभ्रु—(न०) १. शिव। २. विष्णु। ३. अग्नि। (वि०) १. भूरा। २. श्वेत।

बम—दे० बंब।

बमणेटो—(वि०) द्विगुण। दुगुना। **दूणो।**

बमणो—(वि०) दुगुना। **दूणो। ववणो। बमणो।**

बमुजब—(अव्य०) के अनुसार। के मुआफिक।

बयण—दे० वयन।

बयनामो—(न०) बेचान खत। मकान, जमीन आदि बेचने का दस्तावेज।

बयळ—(न०) सूर्य। (वि०) वीर। (ना०) कांति। तेज।

बया—(ना०) एक चिड़िया जो अपना घोंसला बहुत कलापूर्ण बनाती है। **सुघरी। सुगरी।**

बयान—(न०) १. वर्णन। २. बातचीत। ३. वादी या प्रतिवादी द्वारा न्यायालय में मुकदमे संबंधी दिया जाने वाला वक्तव्य। ४. वृतान्त।

बयार—(न०) हवा। पवन।

बर—(न०) ततैया। **भमरी। टांटियो।**

बरक—(न०) १. सोने, चांदी आदि का बरक। वर्क। २. बिजली।

बरकत—(ना०) १. लाभ। फायदा। २. वृद्धि। पुष्कलता। ३. सिद्धि। ४. समृद्धि। ५. प्रारंभ। ६. एक की संख्या (शुभ प्रारंभ)। **बरगत।** ७. क्षमता। गुंजाइश। सामर्थ्य। ८. निर्वाह। ९. कृपा। (वि०) प्रथम।

बरकरार—(वि०) स्थिर। कायम। **मौजूद।**

बरकस—(वि०) विपरीत। विरुद्ध। (न०) शत्रु।

बरकसी—(ना०) १. द्वेष। २. झगड़ा। ३. शत्रुता। **वैर।** ४. मोरचा। ५. मुकाबला। भिड़ंत। ६. विरोध। **बरकसी।**

बरकंदाज—(न०) १. बंदूकधारी सिपाही। २. तोपची। ३. घुड़सवार। **बरकमदाज।**

बरकी—(ना०) रुई या ऊन का भरा हुआ लंबा और बड़ा बोरा। रुई से भरा हुआ थैला।

बरको—दे० झटको सं० ३।

बरख—दे० वर्ष। **बरस।**

बरखणो—(क्रि०) बरसना। **बरसणो।**

बरखा—(ना०) वर्षा। **मेह।**

बरखास—दे० बरखास्त।

बरखास्त—(वि०) १. नौकरी से अलग किया हुआ। २. विसर्जित। ३. हटाया हुआ।

बरखिलाफ—(वि०) प्रतिकूल। विरुद्ध। **खिलाफ। उलटो।**

बरग—दे० वरग।

बरगड़णो—(क्रि०) १. भागना। दौड़ना। २. बहुत तेज दौड़ना।

बरगड़ै—(क्रि० वि०) तेजी से। शीघ्रता से। उतावली से (दौड़ना)।

बरगड़ो—(न०) १. दौड़ादौड़। भागदौड़। २. **कजियो**। कलह। ३. **ऊधम**। उत्पात। ४. चीता। ५. भेड़िया। **बेगरड़ो**। **बेगड़ो**।

बरगत—दे० बरकत। (ना०) १. भरी हुई स्थिति। पूर्णता। **भरगत**। २. बचत। ३. शुभ।

बरगद—(न०) वटवृक्ष। **बड़लो**।

बरगळ—(न०) बड़ा छेद।

बरगूंडा—(न०) एक अछूत जाति।

बरघू—(वि०) मूर्ख। बेवकूफ। (न०) तुरही जैसा एक बाजा। **बांकियो**।

बरछी—(ना०) छोटा भाला।

बरजणो—दे० वरजणो।

बरजोरी—(क्रि० वि०) जबरदस्ती से। बलपूर्वक।

बरठ—(वि०) १. कड़ा। कठोर (धातु)। २. असली नहीं। मिलावट वाली (धातु)।

बरड़ा—(न०) एक जनजाति।

बरड़ाटो—(न०) चिल्लाहट।

बरड़ी—(ना०) १. एक ऊनी वस्त्र। २. पहाड़ी। **भाखरी**। ३. पथरीली जमीन। **रिड़ो**।

बरड़ो—(न०) १. बूंदी प्रदेश का दक्षिणी भाग। २. सौराष्ट्र का सुदामापुरी (पोरबंदर) के पास का प्रदेश। ३. पोरबंदर के पास का एक पर्वत। ४. पथरीला प्रदेश। ५. दे० न्यारो।

बरण—दे० वरण।

बरणन—(न०) वर्णन।

बरणी—(न०) एक वृक्ष। दे० भरणी। दे० वरणी।

बरत—दे० व्रत। दे० वरत।

बरतण—दे० वरतन।

बरतणो—(क्रि०) १. उपयोग करना। इस्तेमाल करना। काम में लाना। २. व्यवहार करना। ३. पहिचान करना। ४. वितरण करना। दे० बरतनो तथा बतरणो। दे० वरतणो।

बरतन—(न०) १. पात्र। **बासण**। भांडा। २. व्यवहार। बरताव।

बरतनो—दे० वतरणो।

बरताणो—(क्रि०) १. उपयोग कराना। काम में लिवाना। २. व्यवहार में लिवाना। ३. व्यतीत करवाना। ४. वितरण करवाना। ५. काम में लाना। दे० वरतणो।

बरतारो—दे० वरतारो।

बरताव—(न०) व्यवहार। सलूक।

बरतावणो—दे० बरताणो।

बरतियो—दे० वरतियो।

बरतेसरी—दे० व्रतेसरी।

बरतो—दे० वतरणो।

बरदाणो—दे० बिरदाणो या विरदाणो।

बरदार—(वि०) धारण करने वाला। उ०—झारी बरदार। छड़ी बरदार।

बरदावणो—दे० विरदाणो।

बरदाश्त—दे० बरदास।

बरदास—(ना०) सहन करने का भाव या क्रिया। बरदाश्त। सहन।

बरदासणो—(क्रि०) सहन करना।

बरफ—(न०) अत्यधिक ठंड से जमा हुआ पानी। बर्फ। हिम।

बरफाणी—(वि०) १. बर्फ से युक्त। २. बर्फ से आच्छादित। **हिमानी**।

बरफी—(ना०) एक मिठाई।

बरबर—(वि०) १. जंगली। असभ्य। २. हिंसक। (न०) एक प्राचीन जाति। (क्रि० वि०) बार-बार। (वि०) बराबर।

बरबस—(अव्य०) विवश होकर। लाचारी से।

बरबाद—(वि०) १. तबाह। नष्ट। २. पतित।

बरबादी—(ना०) १. तबाही। विनाश। २. पतन।

बरम—(न०) कवच। वर्म।

बरमा—(न०) एक देश। ब्रह्मदेश।

बरमो—(न०) लकड़ी या लोहे में छेद करने का एक औजार। बरमा। **सींग्रार**।

बरळाटो—(न०) जोर से रोने की आवाज। चिल्लाहट।
बरळावणो—(क्रि०) १. जोर से रोना। चिल्लाना। २. जोर से पुकारना।
बरलिन—(न०) जर्मनी का एक प्रसिद्ध नगर।
बरवड़ी—दे० वरवड़ी।
बरवै—(न०) एक छंद।
बरस—(न०) वर्ष। साल।
बरसगाँठ—दे० वरसगाँठ।
बरसणो—दे० वरसणो।
बरसरथ—(न०) सूर्य।
बरसा—(ना०) वर्षा। मेह। विरखा।
बरसाऊ—दे० वरसाऊ।
बरसाणो—(क्रि०) वर्षा कराना। बरसाना।
बरसात—(ना०) वर्षा। मेह। वरसात। विरखा।
बरसाती—दे० वरसाती।
बरसाद—दे० वरसाद।
बरसाळ—दे० वरसाळो।
बरसाळी—(ना०) मकान के द्वार के पास का पहिला आश्रय। द्वार में घुसते ही आने वाला पहला आसराम। द्वारशालिका। बारसाळी।
बरसाळू—दे० वरसाळू।
बरसाळो—दे० वरसाळो।
बरसावणो—दे० बरसाणो।
बरसी—दे० वरसी।
बरसो-बरस—दे० वरसो-वरस।
बरहास—(न०) घोड़ा। अश्व।
बरही—(न०) १. अग्नि। वाहदे। वासदे। २. मोर। मोरियो। ३. प्रकाश।
बरहीमुख—(न०) १. अग्नि। २. देवता। ३. ब्राह्मण।
बरंग—(न०) १. टुकड़ा। २. कवच। ३. सिर। माथो।
बरंगोळ—(न०) कवच।
बराक—(न०) शत्रु। (वि०) नीच। वराक।
बराचक—दे० वराचक।
बराड़—(न०) १. कर। महसूल। २. चंदा। टीप। उगाही। ३. खड्डा। खाडो। ४. बड़ा छेद। दरार। ५. बड़ा घाव। ६. भारत का बरार प्रदेश। ७. चिल्लाहट।
बराड़ो—(न०) चिल्लाहट। चिल्लाना।
बराणुओ—(न०) सदी का बानवाँ वर्ष।
बराणू—(वि०) नब्बे और दो। बानवे। (न०) नब्बे और दो की संख्या '९२'।
बरात—(ना०) बारात। जनेत। जान।
बराती—(न०) बारात में जाने वाला। जानी। जानियो।
बरापुर—(वि०) १. ओजस्वी। २. वीर।
बराबट—दे० बराबर।
बराबर—(वि०) १. समान। सदृश। तुल्य। बरोबर। २. एकसा। समतल। ३. ठीक। वाजिब। उचित। ४. समान पद वाला। (अव्य०) १. एक साथ। एक पंक्ति में। २. सर्वदा। हमेशा। ३. लगातार। निरंतर। ४. साथ में।
बराबरियो—(वि०) १. समवयस्क। बरोबरियो। २. समान स्थिति का। ३. प्रतिस्पर्धी।
बराबरी—(ना०) १. समानता। २. प्रतिस्पर्धा। ३. मुकाबला।
बरारो—(वि०) १. वीर। २. जोशीला। ३. जबरदस्त।
बरारोकोट—(वि०) वीर। बहादुर।
बराळ—दे० वराळ।
बरास—(न०) भीमसेनी कपूर।
बराह—दे० वराह।
बरियाण—(ना०) बनियान। गंजी। कमीज, कुरते के नीचे पहनने का वस्त्र।
बरियाम—दे० वरियाम।
बरी—(वि०) १. सिर पर आये हुए अपराध में न्यायालय से निर्दोष छूटना। आरोप से मुक्त। २. निर्दोष। ३. मुक्त। छूटा हुआ। (न०) १. भेड़िया। २. फसल का एक कीड़ा। (ना०) एक प्रकार की घास। दे० वरी।

बरु—(न०) एक घास।
बरुओ—दे० बरुओ।
बरुणी—(न०) आँख की पलक के बाल। बरौनी।
बरूथ—(न०) १. झुंड। समूह। २. सेना। वरूथ।
बरूथणी—दे० वरूथणी।
बरो—दे० वरो।
बरोटी—दे० वरोटी।
बरोबट—दे० बराबर।
बरोबर—दे० बराबर।
बरोबरियो—दे० बराबरियो।
बरोबरी—दे० बराबरी।
बरोळ—(न०) सेना का एक भाग।
बळ—(न०) १. शक्ति। ताकत। बल। २. शौर्य। पराक्रम। ३. जोश। ४. भरोसा। ५. सहारा। ६. प्रताप। तेज। ७. सेना। ८. बल। ऐंठन। मरोड़। बट। ९. टेढ़ापन। १०. झुकाव। लचक। ११. बाजू। ओर। तरफ। १२. पहलू। पार्श्व। १३. बलि। १४. वीर्य। १५. धीरज। धैर्य। १६. नौका।
बळकार—(न०) बैल।
बळकारक—(वि०) बल बढ़ाने वाला।
बलख—(न०) अफगानिस्तान का एक शहर तथा प्रदेश।
बलखी—(न०) घोड़ा। अश्व। (वि०) बलख का। २. बलख संबंधी।
बळगम—(न०) बलगम। श्लेष्म। कफ।
बलज—(वि०) बल देने वाला। (न०) १. खेत। खेतर। २. नगर का द्वार। ३. सेना। ४. युद्ध।
बळट्ठ—(वि०) बलिष्ठ। शक्तिशाली।
बळण—(ना०) १. जलन। दाह। २. अग्नि। ३. ईर्ष्या।
बळणो—(क्रि०) १. जलना। २. झुलसना। ३. गरम होना। ४. सुलगना। दहकना। ५. ईर्ष्या होना। ६. अत्यधिक दुखी होना।
बळत—दे० बळतर।
बळतण—(न०) ईंधन (कोयला, लकड़ी, तेल, गैस, धूप आदि)।
बळतर—(ना०) १. जलन। दाह। २. अंतर्दाह। मानसिक पीड़ा। दे० बळतरा।
बळतरा—(ना०) १. जलने से होने वाली पीड़ा। २. जलन। दाह। ३. संताप। अंतर्दाह। मानसिक कष्ट। ४. ईर्ष्या। ५. अंतर्द्वन्द्व।
बळती—(ना०) गर्म हवा। लू।
बळतो—दे० बळती।
बळद—(न०) बैल।
बळदियो—(न०) बैल। (वि०) मूर्ख।
बळबळतो—(वि०) १. खूब गरम। २. जलता हुआ। प्रज्वलित।
बळबंड—(वि०) १. शक्तिशाली। पराक्रमी। जोरावर। २. दृढ़। मजबूत।
बळ-बाकळ—दे० बळ-बाकळा।
बळ-बाकळा—(न०) देवी-देवता तथा भूत-प्रेतादि को भेंट दी जाने वाली पशुबलि और बाकळे।
बळबुध—(न०) १. बल और बुद्धि। २. बुद्धि-बल। ३. समझ। (वि०) बलवान।
बलभी—दे० वलभी।
बळभुज—(न०) १. राजा। २. ईश्वर। (वि०) भुजाओं में बल वाला।
बळराम—(न०) श्रीकृष्ण के बड़े भाई।
बळवत्तर—(वि०) १. तुलना में अधिक बल वाला। २. बलवान।
बळवंत—(वि०) बलवान।
बळवीर—(न०) बलराम (वि०) बलशाली।
बलवो—(न०) विद्रोह। बगावत। २. उपद्रव। ३. आक्रमण।
बळ हठ बंका—(न०) १. देवड़े क्षत्रियों का विरुद। २. वीर। योद्धा। ३. शक्ति और हठ में पराक्रमी।
बळ हठ बंका देवड़ा—(न०) सिरोही राज्य (के देवड़ा चौहानों) का मुद्रालेख।
बळहीण—(वि०) शक्तिहीन। कमजोर।

बला—*(ना०)* १. कष्ट। २. प्रेतबाधा। ३. रोग। व्याधि। ४. आफत। संकट। ५. कष्ट देने वाला व्यक्ति। ६. एक क्षुप।

बळाई—*(न०)* १. चमार। एक अछूत जाति। २. इस जाति का व्यक्ति।

बलाक्रम—*(न०)* १. शक्ति। बल। ताकत। २. साहस।

बलाट—*(न०)* हरित द्विदलाल मूंग। **हरियां**।

बलात—*(क्रि०वि०)* जबरदस्ती से। हठात।

बलात्कार—*(न०)* १. जबरदस्ती किया जाने वाला स्त्री-संभोग। २. जबरदस्ती।

बळापो—*(न०)* १. जलन। २. मनस्ताप। ३. ईर्ष्या। ४. कुढ़न।

बलाय—दे० बला सं० १ से ५.

बलारो—*(न०)* बढ़ई का एक औजार।

बळाहक—*(न०)* १. श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम। बलाहक। २. बादल। ३. बक। बगुला।

बळि—*(न०)* १. किसी देवता को चढ़ाया जाने वाला खाद्य पदार्थ। २. वह पशु जो किसी देवता के चढ़ाने के उद्देश्य से मारा गया हो। बलि। ३. भक्त प्रह्लाद के पौत्र और विरोचन के पुत्र एक दानी और भक्त दैत्य। बलिराजा। ४. बलिहारी।

बळिउद्धार—*(न०)* १. बलिदैत्य का उद्धार करने वाला। २. बलि का उद्धार।

बळिदान—*(न०)* १. किसी देवी-देवता को भेंट करने के उद्देश्य से किया जाने वाला किसी प्राणी का वध। बकरे आदि पशु को काटकर किसी देवता को चढ़ाना। २. किसी सत्कार्य या उपकार के लिए अपने प्राणों की बलि देना।

बळिबंध—*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु। दे० बलिबंधण।

बळिबंधण—*(न०)* बलि को वचनबंधन में डालने वाला वामन अवतार। श्री विष्णु।

बलिभद्र—दे० बळराम।

बलियो—*(न०)* स्त्रियों के पौंहचे की चूड़ी। **बिलियो**।

बळियो—*(वि०)* १. वीर। जोरावर। २. जला हुआ। *(न०)* एक गाली।

बळियोड़ो—*(वि०)* १. जला हुआ। २. दुख, विरह या क्रोध से तप्त।

बलियो मूंडो—*(अव्य०)* एक गाली।

बलिवर्द—*(न०)* बैल। **बळद**।

बलिष्ठ—*(वि०)* अत्यन्त बलशाली। *(न०)* ऊँट।

बलिहारी—*(ना०)* १. कुर्बान। न्यौछावर। **निछावर**। २. धन्यवाद।

बळी—*(ना०)* १. तुरंत ब्याही हुई गाय का गरम करने से जमा हुआ दूध। २. प्रथम बार दुहा हुआ दूध। ३. देवार्पण किया हुआ प्रथम बार का दूध। दुग्धबलि। *(न०)* १. भीम। २. बैल। ३. छोटा भाई। ४. भैंसा। ५. सूअर। ६. ऊँट। *(वि०)* १. बलशाली। बली। २. वीर। बहादुर।

बळीठ—दे० बलिष्ठ।

बळीतो—*(न०)* १. जलाने की लकड़ी। **ईंधणी**। २. चूल्हे में जलाने के लिए काम में आनेवाली लकड़ी, कंडे आदि। ३. जंगल में से लकड़ी काटने का एक जागीरी लाग। ४. अनुपयोगी सामान।

बळींड—दे० बळींड।

बळींडो—दे० बळींड।

बळेरण—दे० बळेरण।

बळो—*(न०)* १. जलन। दाह। २. खोटा लोभ। असत्यलिप्सा। ३. पाने की तीव्र इच्छा। ४. पाने का तीव्र प्रयत्न। दे० बळो।

बलोच—*(वि०)* ब्लूचिस्तान का निवासी। *(न०)* एक मुसलमान जाति।

बलोचिस्तान—*(न०)* पाकिस्तान का एक प्रदेश।

बलोची—*(वि०)* बलोचिस्तान संबंधी। *(ना०)* बलोचिस्तान की भाषा।

बल्लभ—दे० वल्लभ।

बल्लम—*(न०)* १. भाला। २. एक सुनहला डंडा।

बल्लहो—दे० वल्लहो ।
बव—(न०) एक कर । महसूल ।
बवटो—(न०) १. जुड़े हुए दो हल । दे० बपटो । २. दुगुना । **बवणोटो** ।
बवणेटो—(वि०) १. द्विगुण । दुगुना । २. दुगुना करके दिया हुआ । ३. द्विगुण किया हुआ ।
बवणो—(वि०) दुगुना । दुगणो ।
बवणोटो—दे० बवणेटो ।
बवंडर—(न०) १. आँधी । तूफान । २. वातचक्र । बतूळियो । ३. उपद्रव । **रोळो** ।
बवासीर—(न०) मस्सा । अर्श ।
बस—(न०) १. वश । अधिकार । काबू । २. शक्ति । ३. समाप्ति । ४. सवारियों के बैठने की मोटरगाड़ी । (वि०) १. यथेष्ट । पर्याप्त । अलम् । काफी । २. बहुत । ३. समाप्त । (अव्य०) १. बस करो । २. ठहरो । रुको । ३. मात्र । इतना । ४. पर्याप्त है कि । ५. सिर्फ । केवल ।
बसकाँ फाटणी—(मुहा०) सिसक-सिसक कर रोना ।
बसण—(न०) १. निवास । २. वस्त्र । वसन ।
बसणो—(क्रि०) १. बसना । रहना । २. किसी गाँव का निर्माण होना । (न०) १. किसी वस्तु को बाँधकर रखने का कपड़ा । वेष्टन । बस्ता । २. थैली । ३. निवास । आवास ।
बसत—दे० वसत ।
बसती—दे० वस्ती ।
बसतो—दे० वस्तो ।
बसर—(ना०) जीवन-निर्वाह । गुजारा ।
बसंत—दे० वसंत ।
बसंतपंचमी—दे० वसंतपंचमी ।
बसंतपांचम—दे० वसंतपंचमी ।
बसंतरितु—दे० वसंतऋतु ।
बसाणो—(क्रि०) बसाना । निवास कराना । गाँव का निर्माण कराना ।
बसायोड़ो—(भू० कृ०) बसाया हुआ ।
बसावणो—दे० बसाणो ।
बसियोड़ो—(भू० कृ०) बसा हुआ । रहा हुआ ।
बसी—दे० वसी ।
बसीभूत—दे० वसीभूत ।
बसीलो—दे० वसीलो ।
बसीवान—दे० वसीवान ।
बसु—दे० वसु ।
बसुधा—दे० वसुधा ।
बसेरो—(न०) १. बसेरा । विश्राम । २. रात्रि विश्राम । ३. घोंसला । **माळो** ।
बसोद—(न०) एक अछूत जाति ।
बसोलो—दे० वसूलो ।
बस्ती—दे० वस्ती ।
बस्तो—दे० वस्तो ।
बह—(वि०) बहुत ।
बहक—(ना०) १. पागलपन । २. बहकने की अवस्था ।
बहकणो—(क्रि०) १. पागल हो जाना । २. आपे में नहीं रहना । ३. बड़बड़ाना । ४. पथभ्रष्ट होना । **भटक जाणो** । भ्रमित होना । ५. भुलावे में आना । ६. बहलना ।
बहकाणो—(क्रि०) १. पथभ्रष्ट करना । २. भुलाना । भ्रमित करना । बहकाना ।
बहकायोड़ो—(वि०) १. पथभ्रष्ट किया हुआ । २. भुलावे में डाला हुआ । बहकाया हुआ ।
बहकियोड़ो—(वि०) १. पथभ्रष्ट । २. भ्रमित । ३. पागल ।
बहण—(ना०) बहन । (न०) १. बहाव । प्रवाह । **वहण** । २. मार्ग ।
बहणी—(ना०) १. बहन । २. नदी ।
बहणो—(क्रि०) १. बहना । प्रवाहित होना । २. वायु का संचारित होना । ३. चलना । ४. आचरण करना । ५. प्रहार होना । (न०) बढ़ई का एक औजार ।
बहणोई—(न०) बहन का पति । बहनोई ।
बहतां-बहतां—(मुहा०) १. चलते-चलते । २. बहते-बहते ।

बहदा-बहदी—(ना०) १. प्रतिस्पर्द्धा। होड़। २. विवाद। झगड़ा। ३. टंटा। फिसाद। ४. भ्रम।

बहदो—(न०) १. लड़ाई। झगड़ा। ३. टंटा। फिसाद। ३. भ्रम। ४. परस्पर की चर्चा, इकरार या हिसाब आदि में आने वाला फर्क। ५. लेनदेन में हिसाब का फर्क। ६. अंतर। फर्क।

बहन—(ना०) बहन। भगिनी।

बहनड़—दे० बहन।

बहनड़ली—दे० बहन।

बहनामी—(न०) अनेक नामों वाला। ईश्वर।

बहनेवी—(न०) बहनोई।

बहनोई—(न०) बहन का पति। बणेई। बहणोई।

बहम—दे० वहम।

बहमी—दे० वहमी।

बहरक—(ना०) १. भाले के फल में बँधी रहने वाली सफेद घज्जी। २. छोटी धजा। झंडी।

बहरखो—(न०) १. भुजबंध। २. छोटी जपमाला। बैरखो।

बहरणो—दे० वहरणो।

बहरंग—(वि०) १. बहुत रंगों वाला। रंग-रंगीला। २. विविध प्रकार का। ३. बाहर आया हुआ। बाहर का। बहिरंग। ४. अलग। जुदा। (न०) गहरा रंग।

बहराणो—(क्रि०) १. दुगुना करना। २. दुगुना करके वापिस देना। ३. भिक्षा देना (जैन)। ४. चिरवाना। फड़वाना।

बहरी जोगण—(ना०) युद्ध की योगिनी।

बहरूपियो—दे० बहुरूपियो।

बहरो—(वि०) बधिर। बोळो।

बहळ—(वि०) १. बहुत अधिक। २. मोटा। जाडो।

बहलणो—(क्रि०) १. प्रसन्न होना। २. मन लगना। ३. नींद में बड़बड़ाना। ४. बहकना।

बहलाणो—(क्रि०) १. मन लगाना। २. प्रसन्न करना। ३. बहकाना।

बहलियो—(न०) १. नाटा बैल। २. बहली में जोता जाने वाला बैल।

बहली—(ना०) १. वह रथ जिसमें बैल जुतते हों। २. सवारी की बैलगाड़ी।

बहळो—(वि०) १. बहुत। अधिक। बोहळो। २. बड़ा। ३. प्रधान।

बहळोधणी—(न०) १. बहुत प्रजा या बड़े देश का स्वामी। २. बड़े परिवार का धनी। ३. धनी पुरुष। बड़ी संपत्ति वाला।

बहस—(ना०) १. वाद। वाद-विवाद। २. तर्क। दलील। हुज्जत। ३. झगड़ा। विवाद। ४. होड़। शर्त। ५. जिरह।

बहसणो—(क्रि०) १. भिड़ना। २. लड़ना। ३. बहस करना। विवाद करना। ४. होड़ लगाना। शर्त लगाना। ५. शोभा देना।

बहादुर—(वि०) १. वीर। शूरवीर। २. बलवान। ३. साहसी।

बहादुरी—(ना०) १. पराक्रम। वीरता। २. साहस।

बहानो—(न०) १. मिस। बहाना। २. निमित्त। कारण।

बहार—(ना०) १. वसंतऋतु। २. तारुण्य का प्रस्फुटन। यौवन का विकास। ३. सौंदर्य। शोभा। ४. विकास। ५. आनंद। मौज। ६. कौतुक। ७. वसंत नामक रागिनी। ८. आनंद का वातावरण। मौज-मजा।

बहाल—(वि०) १. ज्यों का त्यों। बर-करार। कायम। २. पुनर्नियुक्त। ३. स्वस्थ। भलाचंगा। ४. प्रसन्न। खुश। (अव्य०) पहले के ज्योंही। पूर्ववत।

बहाली—(ना०) १. पुनर्नियुक्ति। २. बर-करारी। ३. स्वस्थता। प्रसन्नता।

बहाव—(न०) १. प्रवाह। धारा। २. स्रोत। सोता। ३. बहने की क्रिया या भाव।

बहावड़णो—दे० बाहवड़णो।

बहावणो—दे० वहावणो। दे० वहाणो।

बहिण—दे० बहन।

बहिरंग—*(वि०)* बाहर का।

बहिलायत—*(न०)* १. दास। गोला। २. आश्रित लोग। ३. कृपा-पात्र।

बहिष्कार—*(न०)* १. अनादर। २. बाहर निकालने की क्रिया या भाव। ३. संबंध विच्छेद। त्याग। ४. जातिच्युत। **न्यात बारै**।

बही—दे० वही।

बहीखातो—दे० खातावही।

बहीभाट—*(न०)* वह भाट जाति जो अपनी बहियों में अपने यजमानों की पीढ़ियों का वृतान्त रखते हैं।

बहीर—दे० वहीर।

बहीवंचोभाट—*(न०)* वह भाट (जाति) जो अपनी बहियों में लिखी हुई पीढ़ियों को यजमानों के यहाँ पढ़ते हैं और उनसे नेग, दक्षिणा प्राप्त करते हैं।

बहु—*(ना०)* १. बहु। वधू। २. पत्नी। ३. पुत्रवधू। *(वि०)* बहुत।

बहुअड़—दे० बहुअड़।

बहुआरी—*(ना०)* १. बहू। वधू। २. पुत्र-वधू। ३. पौत्रवधू।

बहुकम—*(अव्य०)* आज्ञानुसार। हुक्म के मुआफिक।

बहुकामी—*(वि०)* १. काम वासना में लिप्त। २. काम धन्धे में लगा हुआ। *(न०)* ईश्वर।

बहुगुणी—*(वि०)* बहुत से हुनर जानने वाला। कलाविद।

बहुगुणो—*(वि०)* बहुत गुणो वाला। दे० बोगणो सं० १.

बहुचक्र—*(ना०)* १. जलेबी या इमरती नामक मिठाई। २. फेनी। **फीणी**।

बहुजाण—दे० बोहजाण।

बहुज्ञ—*(वि०)* अनेक बातों का जानने वाला। **बोहजाण**।

बहुत—*(वि०)* १. गिनती में अधिक। अनेक। २. मात्रा व परिमाण में अधिक। पर्याप्त। ३. यथेष्ट। **घणो**।

बहुतेरो—दे० बहोतेरो।

बहुनामी—*(वि०)* बहुत नामों वाला। **घणनामी**। *(न०)* १. ईश्वर। २. विष्णु। ३. शिव। **बोहनामी**।

बहुप्रज—*(न०)* शूकर। सूअर। *(वि०)* बहुत संतान वाला।

बहुफळी—*(ना०)* बहुत फलियों वाली चामकस नाम की एक औषधिक वनस्पति। चामकस का छाता। **चामको। चामकस**।

बहुबकी—*(वि०)* बहुत बोलने वाला। बकवादी।

बहुव्रीहि—*(न०)* एक समास (व्या०)।

बहुबोलो—दे० बहुबकी।

बहुभखी—दे० बहुबकी।

बहुभाषी—*(वि०)* १. बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला। २. बहुत बोलने वाला। ३. अनेक भाषाओं का (प्रदेश)।

बहुभुजा—*(ना०)* दुर्गा। शक्ति।

बहुमत—*(न०)* १. आधे से अधिक लोगों या सदस्यों का मत। २. किसी बात के पक्ष में बहुसंख्यक लोगों के होने की स्थिति।

बहुमान—*(न०)* १. अभिमान। **घमंड**। २. अधिक मान।

बहुमानी—*(वि०)* १. अभिमानी। **घमंडी**। २. प्रतिष्ठित।

बहुमूत्र—*(न०)* बार-बार पेशाब करने का रोग।

बहुमूल्य—दे० बहुमोलो।

बहुमोलो—*(वि०)* कीमती। बहुमूल्य। **घणमोलो**।

बहुरंगी—दे० बहोरंगी।

बहुराणी—*(ना०)* १. बेटे की बहू। २. सौभाग्यवती स्त्री का सम्माननीय संबोधन।

बहुरूप—*(न०)* १. विष्णु। २. शिव। ३. कामदेव।

बहुरूपा—(ना०) दुर्गा।

बहुरूपियो—(न०) अनेक प्रकार का रूप बनाकर अपनी आजीविका चलाने वाला व्यक्ति।

बहुल—(वि०) १. अधिक। ज्यादा। २. काला। (न०) १. शिव। २. अग्नि।

बहुला—(ना०) १. गाय। गौ। २. एक योगिनी। ३. इलायची। दे० बहोळो।

बहुळी—(क्रि० वि०) १. बार-बार। बहुरि। इसके उपरान्त। अनंतर। (वि०) बहुत। विपुल। (ना०) एक योगिनी। बहुला।

बहुवचन—(न०) शब्द का वह रूप जिससे एक से अधिक का बोध होता है (व्या०)।

बहुवड़—दे० बहुअड़।

बहुवारी—(ना०) १. बहू। वधू। २. पुत्र-वधू।

बहुवैं—(क्रि० वि०) पुनः। फिर। फेर। (वि०) दोनों।

बहुश्रुत—(क्रि० वि०) १. अनेक शास्त्रों के रहस्यों का ज्ञाता। २. अनेक विषयों का जानकार। ३. अनुभवी। ४. पंडित।

बहुंतर—(वि०) सत्तर और दो। बहत्तर। (न०) बहत्तर की संख्या '७२'।

बहू—(ना०) बहु। वधू। दुलहिन। २. पत्नी। ३. पुत्रवधू।

बहूजी—(ना०) १. नववधू के लिये आदर-सूचक शब्द।

बहेटो—(न०) ऊँट।

बहेलियो—(न०) शिकारी। व्याध। आहेड़ी।

बहो—(वि०) बहुत। बहु। घणो।

बहोजाण—दे० बोहजाण।

बहोड़णो—(क्रि०) १. लौटना। २. प्राप्त करना। बावड़णो।

बहोत—दे० बहुत।

बहोत्तर—दे० बहुंतर।

बहोतेरो—(क्रि० वि०) बहुत सा। घणो सो। घणोसारो।

बहोनामी—दे० बहुनामी।

बहोरंग—(न०) १. अनेक धन्यवाद। २. बहुत से रंग। (वि०) बहुत रंगों वाला। दे० बोहरंग।

बहोरंग-चूनड़ी—दे० बोहरंग-चूनड़ी।

बहोरंगी—दे० बोहरंगी।

बहोरिणियो—दे० बोहरिणियो।

बहोळो—(वि०) १. बहुत। बहुल। अधिक। २. विपुल। ३. विस्तार वाला।

बंक—(वि०) बाँका। टेढ़ा। वक्र। (ना०) १. बाँकापन। टेढ़ापन। २. तलवार।

बंकट—(न०) हनुमान। (वि०) १. वीर। बहादुर। २. वक्र। टेढ़ा।

बंकड़ो—(वि०) १. टेढ़ा। बाँका। २. शूर-वीर। (न०) हनुमान।

बंकनाळ—(ना०) १. दीपक द्वारा तपाने की सोनी लोगों की टेढ़े मुँह की छोटी नाल। २. योगक्रिया की एक नाड़ी।

बंकाई—(ना०) १. टेढ़ापन। २. उद्दण्डता।

बंको—(वि०) १. बाँका। वक्र। टेढ़ा। २. वीर। बहादुर।

बंग—(न०) १. ढंग। २. रहस्य। ३. बंगाल प्रदेश। ४. रांगा धातु। ५. रांगा की भस्म। ६. मुसलमान।

बंगड़—(न०) १. लोहे, पीतल आदि का एक प्रकार का कड़ा जो किसी लंबी गोल वस्तु (प्रायः लकड़ी की) के मुँह पर उसकी सुरक्षा और सुंदरता के लिए लगाया जाता है। २. तंबू की चोब के दो भागों को खड़ा करते समय उन दोनों के बीच में बिठाया जाने वाला फुट दो फुट का लोहे का एक नलाकार उपकरण। ३. लोहे की मोटी छड़। ४. तोक। ५. कड़ा। कंकण।

बँगड़ी—(ना०) १. चूड़ी। २. स्त्रियों की कलाई में पहनने का आभूषण।

बंगला—(न०) १. एक ताम्बूल। बंगला-पान। २. बंगाली भाषा। ३. बंगाल।

बंगळी—(न०) घोड़ा। अश्व।

बँगळो—(न०) बँगला। मकान।

बंगस—(न०) यवन। मुसलमान।

बंगाळ—(न०) १. भारत का एक प्रांत। बंगाल। २. मुसलमान। ३. राक्षस।
बंगालण—(ना०) १. बंगाली स्त्री। (वि०) मूर्ख।
बंगाळी—(वि०) १. बंगाल का। २. बंगाल से संबंधित। ३. भ्रमित। चित्त-भ्रम। ४. उन्मत्त। ५. जबरदस्त। ६. बड़ा। (ना०) १. बंगाली भाषा। बंगाल। २. बंगाल का निवासी। ३. मुसलमान।
बंगाळो—(न०) १. बंगाल प्रांत। २. मुसलमान (बांग देने वाला)। (वि०) १. चित्त-भ्रम। भ्रमित। २. जबरदस्त। ३. बड़ा।
बंगू—(वि०) १. मूर्ख। २. भ्रमित। (न०) एक जाति की मछली। (न०) लट्टू।
बंगूड़ो—(न०) डोरी लपेटकर जमीन पर नचाया जाने वाला एक खिलौना। लट्टू।
बंचणो—(क्रि०) १. पढ़ना। २. पढ़ा जाना। ३. स्वीकार करना।
बंचावणो—(क्रि०) १. पढ़ाया जाना। २. स्वीकार किया जाना।
बंचावसी—(क्रि० भू०) १. पढ़ियेगा। बाँचियेगा। २. स्वीकार कीजियेगा। (पत्र का परिभाषिक शब्द)
बंजर—(वि०) अनउपजाऊ (भूमि)।
बंझ—दे० बाँझड़ी।
बंट—दे० वंट।
बंटणो—(क्रि०) १. हिस्सा होना। २. अलग-अलग होना। ३. पीसा जाना।
बंटवाड़—दे० बंटवाड़ो।
बंटवाड़ो—(न०) हिस्साकसी। बँटवारा।
बंटवाणो—दे० बंटाणो।
बंटाणो—(क्रि०) १. पिसवाना। बँटवाना। २. हिस्से कराना। ३. वितरण कराना।
बंटायत—(न०) भागीदार। साझादार।
बंटारो—(वि०) बाँटने वाला।
बंटावणो—दे० बंटाणो।
बंटियोड़ो—(भू० कृ०) बँटा हुआ। वितरित।
बंटी—(ना०) एक वन धान्य।
बंठी—(ना०) एक घास। (वि०) १. खराब। २. भ्रष्ट।
बंठो—दे० वंठो।
बंड—(वि०) १. निर्लज्ज। २. उच्छृंखल। निरंकुश। ३. उद्दण्ड। अक्खड़। (न०) १. बलवा। दंगा। हुल्लड़। २. युद्ध।
बंडळ—(न०) १. पुलिन्दा। २. गठरी। ३. उड़ती बात। गप।
बंडळ हाँकणो—(मुहा०) गप मारना।
बंडी—(ना०) बिना बाँहों का अथवा आधी बाँहों का एक चुस्त पहनावा। फतुही। सदरी।
बंडो—(न०) १. आधी बाँहों का कमीज। २. बनियान। (वि०) कटी हुई या बिना पूंछ का। बाँडो।
बंतळ—दे० वंतळ।
बंद—(वि०) १. जो खुला न हो। २. अवरुद्ध। रोका हुआ। ३. स्थगित। मुलतवी। ४. ढका हुआ। ५. ठहरा हुआ। रुका हुआ। (न०) १. बंधन। २. समाप्त। ३. उपाय। ४. दीवाल की मजबूती के लिए थोड़ी-थोड़ी ऊँचाई से पत्थर की पट्टियाँ जमाने की क्रिया। ५. लहरदार रंगाई के लिये धागे से बाँधे जाने वाले बंध।
बंदगी—(ना०) १. नमस्कार। सलाम। २. नौकरी। सेवा। दासत्व। ३. ईश्वरस्तुति। इबादत।
बंदगोभी—(ना०) पत्तागोभी। करम-कल्लो।
बंदण—दे० वंदण।
बंदणियो—(वि०) आराधक। वंदन करने वाला।
बंदणो—दे० वंदणो।
बंदर—(न०) १. मर्कट। वानर। कपि। २. समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज आते-जाते और ठहरते हैं। बंदरगाह। ३. बंदूक का खटका जिससे बंदूक दागी जाती है। घोड़ो।

बंदरगाह—*(न०)* जहाजों के आने-जाने और ठहरने के लिये समुद्र के किनारे का स्थान। पोर्ट।

बंदरी—*(ना०)* बंदर की मादा। मर्कटी। **बाँदरी।**

बंदाणो—दे० बंधाणो।

बंदावणो—दे० बंधाणो।

बंदी—*(न०)* १. बंदीजन। चारण। भाट। २. बाँदी। दासी। ३. कैदी। ४. नित्य के लिये बंधा हुआ काम या मजदूरी। ५. शर्त पर या पेशगी देकर लिया जाने वाला नियमित काम। ६. रोक। रुकावट। ७. मनाई। पाबंदी।

बंदीखानो—*(न०)* कैदखाना। कारागृह।

बंदीजण—*(न०)* १. भाट। २. याचक।

बंदीवान—*(न०)* कैदी।

बंदूक—*(ना०)* गोली चलाने का अस्त्र।

बंदूकची—*(न०)* १. बंदूक चलाने वाला। २. बंदूक की मरम्मत करने वाला।

बंदेज—दे० बंधेज।

बंदो—*(न०)* १. दास। बंदा। सेवक। २. भक्त। दे० बंधो।

बंदोकड़ी—*(ना०)* १. बंधन। २. अनुरोध। रुकावट। ३. वचनबद्धता।

बंदोळी—दे० बंदोळी।

बंदोळो—दे० बंदोळो।

बंदोवस्त—*(न०)* १. प्रबंध। व्यवस्था। तजवीज। २. एक सरकारी विभाग।

बंध—*(न०)* १. बंधन। २. गाँठ। ३. रोक। ४. मर्यादा। ५. भरोसा। ६. नदी, जलाशय आदि के पानी को रोकने के लिए मिट्टी आदि का बनाया गया पुस्ता। **पाळ। पट्ठो। बाँध।** ७. बाँधने का साधन। ८. बंधन। कैद। ९. रचना। १०. संज्ञा शब्दों के अन्त में सहित, प्रकार, क्रम, वाला इत्यादि अर्थों का सूचक शब्द। जैसे थोकबंध, नगाराबंध, झपाटाबंध, ताळाबंध, हथियारबंध इत्यादि। ११. अटकल। १२. शरीर का गठन। १३. प्रबंधकाव्य।

बंधक—*(न०)* १. बंधन। कैद। २. थाती। रेहन। *(वि०)* बाँधने वाला।

बंधकी—*(ना०)* १. वेश्या। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

बंधणी—*(ना०)* १. बंधन। २. रस्सी। डोरी। ३. वचनबद्धता। *(वि०)* वचनबद्ध।

बंधणो—*(न०)* बंधन। रस्सा। *(क्रि०)* १. बँध जाना। बंधन में आना। २. बाँधा जाना। ३. लपेटा जाना। ४. उलझना। फँसना। ५. वश होना। ६. वचनबद्ध होना। ७. रचा जाना। निर्मित होना। ८. जुड़ना। संलग्न होना।

बंधन—*(न०)* १. रुकावट। प्रतिबंध। २. बाँधने की वस्तु। रस्सी। ३. कैद। रोक। ४. लोभ, मोह, रूप आदि का आकर्षण।

बंध-बैठतो—*(वि०)* १. काम में आने योग्य। २. अनुकूल।

बंध-बैसतो—दे० बंध-बैठतो।

बंधव—*(न०)* भाई। बंधु।

बंधाण—*(न०)* १. बंधन। २. नियम। ३. अभ्यास। आदत। मुहावरा। ४. व्यसन। लत (नशे की)। ५. गठन। ६. रुकावट।

बंधाणी—*(वि०)* १. व्यसनी। २. नशेबाज। ३. नित्यनिश्चित समय पर बंधी हुई मात्रा में अफीम का नशा करने का अभ्यासी। अफीमची। **अमलदार।** ४. लाचार। विवश।

बंधाणो—*(क्रि०)* १. बंधवाना। २. निर्माण करवाना। ३. वचनबद्ध होना। ४. वचन में बँध जाना। *(भू० कृ०)* बंध गया।

बंधायोड़ो—*(भू० कृ०)* बँधाया हुआ।

बंधारो—*(न०)* वस्त्र में बाँधनी का काम करने और उसे रंगने वाली एक जाति या उस जाति का व्यक्ति।

बंधावणो—*(क्रि०)* १. बंधवाना। २. निर्माण करवाना। बनवाना। ३. वचन में बँधवाना।

बंधित—*(वि०)* बँधा हुआ।

बंधियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बँधा हुआ। बंधन में आया हुआ। २. वचनबद्ध। ३. फँसा हुआ।

बंधियो-बंधायो—दे० बंध्यो-बंधायो।

बंधी—*(ना०)* १. पथ्य। परहेज। **किरी।** बाजार (बंद रहने) की आम छुट्टी। ३. वचन। **कौल।** ४. नियम। ५. सिलसिला। परिपाटी।

बंधु—*(न०)* १. भाई। २. कुटुंबीजन। **भाई-बंध।** ३. मित्र।

बंधेज—*(न०)* १. व्यवस्था। प्रबंध। २. नियम। ३. वीर्य-स्तम्भन। ४. रुकावट। रोक। ५. अस्खलन ६. काव्यरचना। ७. पगड़ी, साफा बाँधने का पेच या तरीका।

बंधो—*(न०)* १. नदी, तालाब आदि जलाशयों पर पानी को रोकने के लिये बाँधा जाने वाला पुस्ता। **बाँध। पाज।** २. बाँध बाँधकर बनाया हुआ जलाशय। बंधा। **बाँध।** ३. नियम। ४. बंधन।

बंधोकड़ी—दे० बंदोकड़ी।

बंध्या—*(वि०)* बाँझ। **बांझड़ी।**

बंध्यो-बंधायो—*(वि०)* १. बँधा हुआ। २. निश्चित।

बंब—*(न०)* १. नगाड़ा। २. युद्ध का ढोल या नगाड़ा। युद्ध-वाद्य। ३. रणनाद। ४. घोर ध्वनि। ५. (ढोल या नगाड़े की) युद्ध-ध्वनि। युद्ध-वाद्य का शब्द। ६. क्रोध। **रीस।** ७. लाल। रक्त वर्ण। ८. बम। **गोळो।**

बंबराळ—*(वि०)* १. क्रोधी। **रीसटियो।** २. भयंकर।

बंबळी—*(ना०)* एक युद्ध-वाद्य।

बंबधर—*(वि०)* १. नगाड़े-निशान वाला। २. नगाड़ा-बंध।

बंबहर—दे० बंबधर।

बंबार—*(अव्य०)* आरपार। एक सिरे से दूसरे सिरे तक। *(न०)* १. भाले या गोली के आरपार होने का भाव। २. भाले या गोली से होने वाला आरपार छेद। गहरा घाव।

बंबाळ—*(न०)* १. रुधिरासिक्त मस्तक। २. कटा हुआ सिर। ३. ढोल। युद्ध-वाद्य। ४. झगड़ा। बखेड़ा। ५. खिजा हुआ ऊँट। ६. बब्बरसिंह। ७. युद्ध। ८. उन्माद। ९. सूर्य। १०. पाखंड। ११. उत्तरदायित्व। १२. समुद्र। *(वि०)* १. रक्तासिक्त। २. रक्ताभ। ३. तेजस्वी।

बंबाळियो—*(वि०)* १. बहुत बोलने वाला। २. प्रपंची। ३. बखेड़ाबाज। ४. उन्मादी। ५. रक्तासिक्त। ६. रक्ताभ। दे० बंबाळ। *(न०)* सं० ३, ५.

बंबाळी—दे० बंबाळियो।

बंबी—*(न०)* १. एक फूँक वाद्य। २. साँप का बिल। ३. युद्ध का ढोल या नगाड़ा। ४. नगाड़ा बजाने वाला। ५. सर्प।

बंबी डंड—*(न०)* नगाड़ा बजाने का डंडा। डंडा। **डंको। डाको। डांडो।**

बंबो—*(न०)* १. पानी निकालने का यंत्र। २. आग बुझाने के लिये पानी फेंकने वाला यंत्र। ३. पानी गरम करने का एक बरतन। ४. पानी का बड़ा नल। ५. पानी का सोता। ६. पानी बहने का बड़ा नाला।

बंभ—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. ब्राह्मण। **बामण। बिरामण।**

बंभचेरू—*(न०)* १. ब्रह्मचर्य। २. ब्रह्मचारी।

बंभण—*(न०)* ब्राह्मण। **बामण।**

बंभणी—*(ना०)* ब्राह्मणी।

बंभणवाड़—*(न०)* १. मध्यकाल में सिंध-काठियावाड़ के एक प्रदेश का नाम। २. ब्राह्मणों की बस्ती।

बंभदेव—*(न०)* ब्रह्मदेव। ब्रह्मा।

बंभाण—*(न०)* १. ब्राह्मण लोग। **ब्रह्माण।** २. ब्रह्मा।

बंभूळियो—*(न०)* वातचक्र। **बथूळियो।** भूतेळो।

बंभेसर—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. ईश्वर।

बंवळी—*(ना०)* १. भोज बगड़ावत की घोड़ी का नाम। २. छोटी जाति का एक प्रकार का बबूल का पेड़। **बावळी।**

बंस—*(न०)* १. बाँस। २. बंसी। बंसुरी। ३. वंश। कुटुम्ब।
बंसरी—*(ना०)* वंशी। **मुरली**।
बंसवृक्ष—दे० वंसवृक्ष।
बंसी—*(ना०)* १. बाँसुरी। **मुरली**। २. मछली फँसाने का काँटा।
बंसीधर—*(न०)* श्रीकृष्ण। वंशीधर।
बंसीवट—*(न०)* वृन्दावन का वह वटवृक्ष जहाँ कृष्ण वंशी बजाया करते थे।
बंसीवाळो—*(न०)* श्रीकृष्ण।
बंसीधर—दे० वंशीधर।
बा—*(न०)* १. दादा। पितामह। २. बाप। पिता। ३. बाप का बड़ा भाई। ४. वृद्धजनों के लिये आदरसूचक संबोधन। ५. बच्चों के लिये प्यार का शब्द। ६. बड़ी-बूढ़ी या सम्मानीय स्त्रियों के लिये संबोधन का शब्द। ७. माता। माँ। *(वि०)* प्यारा। *(अव्य०)* 'सहित' अर्थ बताने वाला एक उपसर्ग।
बा अदब—*(अव्य०)* १. अदब के साथ। शिष्टाचार से। *(वि०)* विनीत। शिष्ट।
बाई—*(ना०)* १. पुत्री। २. बहन। ३. स्त्री। नारी। ४. स्त्री के नाम के अन्त में लगने वाला मानसूचक शब्द। ५. स्त्री संबोधन। ६. कन्या। लड़की। ७. बाईस की संख्या '२२'।
बाईखाऊ—दे० बाईमंगो।
बाईगट्टो—दे० बाईबंगो।
बाईजी—*(ना०)* १. बड़ी बहन। जीजी। २. पति की बहन। ननद। ३. पिता की बहन। बूआ। **भूआ**।
बाईजीराज—दे० बाईजीलाल।
बाईजीलाल—*(ना०)* १. बड़े घर की लड़की। राजकुमारी। **बाईजीराज**। २. बड़ी बहन। जीजी।
बाईबराड़—*(न०)* १. पुत्री के विवाह का कर। २. राजा या जागीरदार की पुत्री के विवाह पर प्रजा से लिया जाने वाला टैक्स।
बाईबल—*(न०)* ईसाइयों का धर्मग्रन्थ।
बाईबंगो—*(वि०)* १. औरतों के से लक्षणों वाला। **बाईगट्टो**। **बैरियो**। स्त्रैण। २. भीरू। कायर। **डरपोक**। दे० बाईमंगो।
बाईमंगो—*(वि०)* १. बहन-बेटी के धन को हड़प करने वाला। २. बहन या पुत्री के बदले धन लेकर उसको विवाहने वाला। दे० **बाईबंगो**।
बाई-माई—*(ना०)* स्त्रीवर्ग (साधु-भिखारियों द्वारा उच्चरित)।
बाईमुखो—*(वि०)* १. स्त्र्याधीन। स्त्रीवश। स्त्रैण। २. भीरू। कायर। डरपोक। ३. स्त्रियों जैसे लक्षणों वाला। ४. बिना दाढ़ी-मूंछ का। **निमूँछियो**।
बाईस—*(वि०)* बीस और दो। *(न०)* बीस और दो की संख्या '२२'।
बाईसटोळो—*(न०)* एक श्वेतांबर जैन सम्प्रदाय।
बाईस सौ—*(न०)* दो हजार दो सौ की संख्या '२२००'।
बाईसी—*(ना०)* १. बाईस खान-उमरावों या सेनापतियों से युक्त शाही सेना। २. बाईस सूबों से युक्त शाही सेना। ३. बाईस सूबों की शाही सेना। ४. बाईस प्रान्तों की सेना। ५. मारवाड़ के बाईस परगनों की सेना। ६. बहुत बड़ी सेना। ७. सहायता रूप में बुलाई गई सेना। ८. किसी से लड़ने-झगड़ने के लिये ली जाने वाली सहायता। शक्ति-सहायता (उदा० ले आव थारी बाईसी, देख लूं ला।) ९. बाईस पद्यों का काव्य।
बाईसो—*(न०)* सदी का बाईसवाँ वर्ष। बाईसवाँ सम्वत्।
बाउळो—दे० बावळो।
बाऊ—*(न०)* १. लड्डू। २. मिठाई (बालभाषा।)
बाक—*(न०)* मुँह। **मूंढो**।
बाकर—*(न०)* बकरा। **बकरो**।
बाकरी—*(ना०)* बकरी। **छाली**।

बाकरो—दे० बाकर ।

बाकळा—*(न० ब० व०)* उबालकर पकाया हुआ (बिना पिसा) आखा अनाज ।

बाका-फाड़—*(वि०)* १. वह (खाता) जिसका देन-लेन साफ न हुआ हो । २. वह (खाता) जिसमें रोकड़ आदि बहियों से खतौनी होकर संबंधित रकमें नहीं ली गयी हों । ३. अपूर्ण । अधूरा । ४. मूर्ख । *(न०)* १. अपूर्ण खाता । २. अपूर्ण काम । ३. खुला-मुंह ।

बाका-फाड़-खातो—दे० बाका-फाड़ सं० १ और २.

बाकारणो—दे० बकारणो ।

बाकी—*(वि०)* १. अवशिष्ट, बचा हुआ । २. अन्य । दूसरा । **बूजो** । *(न०)* १. एक संख्या से दूसरी को घटाने का गणित । २. कमी । न्यूनता । *(अव्य०)* लेकिन । परन्तु ।

बाको—*(न०)* मुंह । मुख । **मूंढो** ।

बाख—दे० बाखटी ।

बाखटी—*(ना०)* बाहुपाश । **बाथ** ।

बाखटी-जुध—*(न०)* १. बाहुयुद्ध । २. मल्ल-युद्ध । कुश्ती । **बाथंबाथ** ।

बाखड़ी—*(वि०)* जिसको बियाये बहुत समय होने पर भी दूध दे रही हो । जो गर्भ धारण करने पर भी दूध दे रही हो । (गाय या भैंस) । *(ना०)* दूध देने की समय-मर्यादा के उपरान्त भी दूध देती रहने वाली गाय या भैंस ।

बाखड़ो—*(वि०)* बाखड़ी गाय का (दूध) ।

बाखर—*(न०)* १. धनमाल । २. सामान । ३. पेट के अन्दर का भाग—नल, नसें आदि । उदरस्थ आंत्र समूह ।

बाखळ—*(ना०)* १. बारसाली । २. घर के आगे चौक । ३. मोहल्ले का चौक । **बगड़** । **बाड़ो** ।

बाखाभौड़—*(ना०)* १. विवाद । २. झगड़ा-फिसाद ।

बाखाण—दे० वखाण ।

बाखार—*(न०)* कोठार । **बखार** । **भखार** ।

बाखो—*(न०)* १. सुराख । २. मोटा सुराख । ३. मुंह (क्रोध और व्यंग्य में) ।

बाखोट—*(न०)* हरिण का बच्चा । **बाखोटियो** ।

बाखोटियो—दे० बाखोट ।

बाखोळी—*(ना०)* दो व्यक्तियों के चारों हाथों से बना हुआ एक ऐसा बनाव जिस पर किसी को बिठाकर उठाया जाता है ।

बाग—*(न०)* १. बगीचा । उपवन । २. लगाम । **मोहरी** ।

बागड़—*(ना०)* १. बच्चों को डराने का एक डरावना काल्पनिक पशु । **हाऊ** । २. डूंगरपुर और उसके आसपास का प्रदेश । **वागड़** । ३. बनबिलाव । *(वि०)* १. मूर्ख । बेसमझ । २. डरपोक ।

बागड़ी—*(ना०)* डूंगरपुर, बाँसवाड़ा प्रदेश की बोली । **वागड़ी** । *(वि०)* उक्त प्रदेश का निवासी ।

बागडोर—*(ना०)* १. लगाम । २. नियंत्रण । **वागडोर** ।

बागणो—दे० बागणो ।

बाग-बाग—*(वि०)* बहुत खुश । खूब प्रसन्न ।

बागर—दे० वागर ।

बागरी—दे० वागरी ।

बागळ—दे० वागळ ।

बागळी—*(ना०)* १. पानी का एक छोटा पात्र । २. कंधे में लटकाई जाने वाली झोली ।

बागळो—*(न०)* यात्रा में साथ रखने का जल-पात्र । **बादळो** ।

बागवान—*(न०)* १. बाग लगाने व देख-रेख करने वाला व्यक्ति । २. माली ।

बागायत—*(न०)* १. बाग, बगीचा । २. बाग-बगीचे की जमीन । *(वि०)* बगीचा संबंधी ।

बागारो—दे० बगारो ।

बागी—*(वि०)* १. विद्रोही । २. उपद्रवी ।

बागो—*(न०)* जामा । बागा । **आंगी** । **वागो** । पोशाक ।

बागोळणो—दे० वागोळणो ।
बागोळो—दे० वागोळो ।
बाघ—*(न०)* १. व्याघ्र । शेर । **वाघ** । २. एक प्रकार का दोहा छंद ।
बाघड़—*(ना०)* बच्चों को डराने का कल्पित जानवर । हाउ । *(वि०)* १. डरपोक । २. मूर्ख । ३. नासमझ ।
बाघनखो—*(न०)* १. अंगुलियों में पहनने का बाघ के नखों जैसा एक शस्त्र । २. बच्चे के गले में बाँधा जाने वाला बाघ का नाखून । ३. एक वनस्पति । ४. एक कंद ।
बाघमार—दे० वाघमार ।
बाघमुखी—*(ना०)* एक प्रकार की तोप ।
बाघमूत—*(न०)* १. मानवमूत्र । २. बाघ का मूत्र ।
बाघवाहणी—*(ना०)* सिंहवाहिनी । देवी । दुर्गा ।
बाघंबर—दे० वाघंबर ।
बाघो—*(न०)* १. बड़ा छेद । २. छेद ।
बाच—दे० वाच ।
बाछड़—*(न०)* १. बछड़ा । २. घर में उड़कर आने वाली वर्षा की बूंदें । **वाछांट** ।
बाछड़की—*(ना०)* गाय की बछड़ी । **वाछड़ी । टोगड़ी । केरड़ी ।**
बाछड़वायो—*(वि०)* बहुत अधिक वर्षा के वातावरण से तथा वायुवेग की वर्षा की बूंदों से प्रवेश की हुई नमी वाला (वस्त्रादिक) । आर्द्र ।
बाछड़ियो—*(न०)* बछड़ा । गाय का बछड़ा । **वाछड़ो । टोगड़ो । केरड़ो ।**
बाछड़ी—*(ना०)* गाय की बछड़ी । **वाछड़की । टोगड़की । केरड़ी ।**
बाछड़ो—*(न०)* बछड़ा । **वाछड़ो । टोगड़ियो ।**
बाज—*(न०)* १. घोड़ा । वाजि । २. बाजा । वाद्य । ३. एक शिकारी पक्षी । श्येन । ४. कर । टैक्स । *(अव्य०)* व्यसनी, शौकीन आदि अर्थसूचक एक प्रत्यय, जैसे—नशेबाज, पतंगबाज, चालबाज इत्यादि । *(वि०)* १. वंचित । रहित । २. कोई-कोई । कुछ । ३. चालाक ।
बाज आणो—*(मुहा०)* १. हानिकारक समझकर छोड़ना । २. हेय समझना । ३. दूर रहना ।
बाजगर—*(न०)* एक अछूत जाति ।
बाजट—दे० बाजोट ।
बाजणो—*(क्रि०)* १. बाजे का बजना । २. प्रसिद्ध होना । ३. टंटा करना । ४. युद्ध करना । ५. प्रहार होना । *(वि०)* १. बजने वाला । २. नामी । प्रसिद्ध ।
बाजदार—*(न०)* १. सईस । २. घुड़सवार । ३. शाही जमाने का कर वसूल करने वाला अधिकारी । **करोड़ी** ।
बाजर—दे० बाजरी ।
बाजर-हंदो-बाट—*(न०)* बाजरी की मोटी रोटी । **सोगरो** ।
बाजराज—*(न०)* घोड़ा । वाजिराज ।
बाजरियो—*(न०)* १. कन्या के काका-बाबा आदि कुटुंबीजनों की ओर से बारात को दी जाने वाली एक विशेष ज्योनार । २. बाजरी का खीचड़ा । ३. बाजरी और मांस को पकाकर बनाया हुआ खाद्य ।
बाजरी—*(ना०)* एक अनाज । बाजरा ।
बाजरो—दे० बाजरी ।
बाजवट—दे० बाजोट ।
बाजसाला—*(ना०)* घुड़शाला ।
बाजंत्र—दे० वाजित्र ।
बाजाब्ता—*(क्रि० वि०)* १. कानून के अनुसार । २. नियम के अनुसार ।
बाजार—दे० बजार ।
बाजारी—*(वि०)* बाजार का । दे० बजारी ।
बाजारू—*(वि०)* १. बाजार का । २. रखड़ेल । ३. घटिया ।
बाजिद—*(न०)* १. घोड़ा । वाजीन्द्र । २. एक मुसलमान भक्त-कवि का नाम ।
बाजिदो—*(वि०)* १. विख्यात । प्रसिद्ध । २. कुख्यात ।

बाजी—*(ना०)* १. खेल । तमाशा । २. चौपड़, शतरंज आदि का खेल । ३. शर्त । बदान । ४. दाँव । ५. प्रतिष्ठा । इज्जत । ६. सृष्टि । संसारचक्र । ७. वृद्ध पुरुष । ८. वृद्ध पुरुष के लिए सम्मानसूचक सम्बोधन । ९. घोड़ा । वाजि । अश्व । १०. बाण ।

बाजीगर—*(न०)* १. तमासा दिखाने वाला । तमासगीर । २. मदारी । ३. जादूगर ।

बाजी सा—*(न०)* वृद्ध पुरुष के लिये कहा जाने वाला आदरसूचक पद । **बाजी । बासा ।**

बाजू—*(न०)* १. बाहु । बाँह । २. बाजूबंध । ३. पार्श्व । बगल । ४. ओर । तरफ । ५. पक्षी का डैना । पक्ष । ६. आस-पास ।

बाजूबंध—*(न०)* बाँह का एक गहना । भुजा में बाँधने का एक आभूषण ।

बाजे—*(क्रि० वि०)* कभी-कभी । *(वि०)* कोई-कोई ।

बाजो—*(न०)* वाद्ययंत्र । बाजा ।

बाजोट—*(न०)* १. चार पायों की लकड़ी की एक चौरस चौकी । २. वह काष्ठ-चौकी जिस पर भोजनपात्र (थाली) रखकर भोजन किया जाता है ।

बाजोटियो—दे० बाजोट ।

बाझ—*(ना०)* लड़ाई । झगड़ा । **कजियो ।**

बाझणो—*(क्रि०)* १. बाँधना । २. बाँधा जाना । ३. लड़ना । **कजियो करणो ।** ४. गठित होना । बनना । ५. बढ़ना । **वधणो ।**

बाझियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बँधा हुआ । २. बना हुआ । ३. बढ़ा हुआ । ४. लड़ा हुआ ।

बाझो—*(न०)* चड़स के कोठे और उसकी सूंड की (सिलाई की) संधि ।

बाट—*(न)* १. गेंहूँ का दलिया जिससे लापसी बनाई जाती है । सूखा दलिया । दलन । २. बटखरा । तौल । ३. दीपक की बत्ती । ४. मार्ग । रास्ता । ५. प्रतीक्षा । इंतजार । ६. घोड़े का मूत्र । ७. जालवृक्ष की मंजरी । बौर । ८. कैर के फूल । **बाटो ।**

बाटकी—*(ना०)* कटोरी । **वाटकी ।**

बाटको—*(न०)* कटोरा । बड़ी कटोरी । **वाटको ।**

बाट जोणी या जोवणी—दे० वाट जोवणी ।

बाटड़ली—*(ना०)* १. प्रतीक्षा । **वाट ।** २. मार्ग । **वाटड़ली ।** ३. पगडंडी । **डाँडी ।**

बाटणो—*(क्रि०)* १. माल बेचकर कीमत प्राप्त करना । २. सिल पर पीसना ।

बाट देखणी—दे० वाट जोवणी ।

बाट निहाळणी—दे० वाट जोवणी ।

बाटमों—*(वि०)* १. अखरने वाला । २. अनुचित । ३. कटु । ४. अशोभनीय । ५. अशिष्ट । *(न०)* कटु वचन ।

बाटली—*(ना०)* बोतल । **सीसो ।**

बाटिका—दे० वाटिका । उपवन । **बगीचो ।**

बाटियो—*(न०)* १. मोटी रोटी । टिक्कड़ । २. मोटे नाज की रोटी ।

बाटी—*(ना०)* १. रोटी । चपाती । २. कंडों की आँच से सेकी जाने वाली नारंगी जैसी गोल रोटी । **रोटो ।** ३. चक्की के चारों ओर की गोलाकार वर्त्मा जिसमें आटा गिरता है । **वाटो ।**

बाटी-चूरमो—*(न०)* घी और गुड़ अथवा खाँड मिलाकर बनाया हुआ बाटी का चूरमा ।

बाटी वेळा—दे० रोटी वेळा ।

बाटो—*(न०)* १. करील के गुलाबी फूल । २. करील के फूलों का साग । ३. मोटी रोटी ।

बाठ—*(न०)* १. चरस (मोट) का एक उपकरण । दे० वासठ ।

बाठी—*(वि०)* उलटी । औंधी ।

बाठी मारणी—*(मुहा०)* १. उलट देना । २. स्वीकार नहीं करना । ३. बनी-बनाई बात को बिगाड़ देना ।

बाठो—*(वि०)* उलटा । औंधा ।

बाठो पड़णो—*(मुहा०)* १. उलटा होना । २. काम बिगड़ना । ३. मंजूर नहीं होना ।

बाठो मारणो—*(मुहा०)* १. उलट देना। २. बने-बनाये काम को बिगाड़ देना। ३. किये हुए काम को मंजूर नहीं करना।

बाड़—दे० वाड़।

बाड़णो—*(क्रि०)* १. धँसाना। घुसाना। २. प्रवेश कराना। **वाड़णो।**

बाड़ली—दे० वाड़ली।

बाड़लो—दे० वाड़लो।

बाड़व—*(ना०)* १. समुद्र की अग्नि। २. ब्राह्मण। ३. घोड़ों का समूह।

बाड़ियो—दे० बाड़ियो।

बाडियो—दे० बाडो।

बाडी—*(वि०)* तिरछा देखने वाली।

बाड़ी—दे० वाड़ी।

बाड़ू—*(वि०)* १. अड़ियल। २. खुरदरा तथा कच्चा (पत्थर)।

बाड़ो—*(वि०)* १. कड़ुआ और कसैले स्वाद वाला। २. कटु। ३. कटुभाषी। ४. अप्रिय। ५. बाड़ से घेरा हुआ भूभाग। बाड़ा।

बाडो—*(वि०)* तिरछा देखने वाला। ऐंचाताना।

बाड़ोतरसो—दे० बारोतरसो।

बाड़ोतरो—*(न०)* बारह का पहाड़ा।

बाढ—*(ना०)* १. अधिक वर्षा के कारण नदी, तालाब आदि के पानी का सीमा तोड़कर बह जाना। **पूर।** २. शस्त्र की धार। ३. किसी वस्तु या काम का निरंतर होते रहना। ४. पेचिस रोग के कारण पेट में होने वाली पीड़ा। ५. घाव। ६. वृद्धि।

बाढकढ—*(ना०)* तलवार।

बाढणो—*(क्रि०)* १. काटना। २. मारना। ३. बढ़ाना।

बाढाळी—दे० वाढाळी।

बाढाळो—दे० वाढाळो।

बाढियोड़ो—दे० वाढियोड़ो।

बाढी—*(वि०)* १. कटी हुई। २. काटी हुई। *(क्रि० भू०)* काट दी।

बाढेत—*(न०)* वह व्यक्ति जो सेवा या नौकरी के बदले कर रहित जमीन का अधिकार (परवाना) प्राप्त किया हुआ हो। **वाधेत। पसायत।**

बाढोतर—*(वि०)* सवागुना। सवाया। *(न०)* वृद्धयान्तर। **बधोतर।**

बाण—*(न०)* १. तीर। शर। २. तीर का वह भाग जिस पर पंख लगे होते हैं। ३. तीर का नुकीला भाग। ४. निशाना। लक्ष्य। ५. स्वर्ग। ६. बल। ७. शिव। महादेव। ८. आदत। **हेवा।** ९. वाणी। १०. खाट बुनने की मूंज। **मूंजोड़ी।** ११. हर्षचरित और कादंबरी के रचयिता एक प्रसिद्ध कवि। १२. वह अरघा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया हुआ रहता है। जलहरी। १३. भाग। १४. पाँच की संख्या '५'।

बाणक—दे० वाणक।

बाणगंगा—*(ना०)* १. मारवाड़ में बिलाड़े के पास की एक नदी। २. हिमालय से निकलने वाली एक नदी।

बाणपति—*(न०)* महादेव। शंकर।

बाणप्रस्थ—दे० वानप्रस्थ।

बाणभट्ट—*(न०)* संस्कृत का प्रसिद्ध कवि। दे० बाण सं० ११.

बाणविद्या—*(ना०)* बाण चलाने की विद्या।

बाणाध—*(न०)* सूर्य। **सूरजी।**

बाणावळी—*(वि०)* १. धनुर्विद्या में प्रवीण। २. धनुर्धारी। *(न०)* १. श्रीराम। २. अर्जुन। *(ना०)* बाणों की पंक्ति।

बाणास—*(ना०)* तलवार।

बाणासुर—*(न०)* श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध की पत्नी उषा के पिता का नाम। (बाणासुर को कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन और हैहय भी कहते हैं।)

बाणियो—*(न०)* बनिया। वणिक।

बाणी—दे० वाणी।

बाणं—दे० बराणूं।

बात—(ना०) १. वह जो कहा गया। २. कहा हुआ सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वचन। ३. चर्चा। प्रसंग। ४. जानी जाने वाली या जताई जाने वाली स्थिति। ५. संदेश। खबर। ६. वार्तालाप। संभाषण। ७. बहाना। ८. कौल। प्रतिज्ञा। ९. तात्पर्य। आशय। १०. रहस्य। भेद। ११. खूबी। गुण। १२. इच्छा। १३. समस्या। १४. कर्त्तव्य। १५. वार्ता। कहानी। १६. वृतान्त। हकीकत। १७. अफवाह। उड़ती खबर। १८. विषय। १९. बिसात। २०. व्यवहार। वर्तन। २१. वर्णन। गुणगान। २२. योजना। २३. विचार-विमर्श। २४. घटना। वाकिया। २५. टेक। निश्चय। २६. आबरू। इज्जत।

बातकार—दे० वातकार।

बातगर—दे० वातगर।

बातचीत—(ना०) दो या दो से अधिक व्यक्तियों में होने वाला वार्तालाप। संभाषण। विचार-विमर्श।

बातड़ली—(ना०) बात।

बातपोस—(वि०) बात करने में चतुर। (न०) कहानी-वार्ता कहने वाला व्यक्ति।

बातल—(वि०) १. निकम्मा। निरर्थक। २. रद्द। ३. खराब। ४. बातूनी।

बात विगत—(ना०) १. हालचाल। समाचार। २. बातचीत।

बातियो—(न०) १. घोड़े की मूत्रेन्द्रिय। २. घोड़ी की जननेन्द्रिय। योनि।

बाती—(ना०) १. रुई की बनी हुई लच्छी जिससे दीया जलता है। बत्ती। वाट। २. घाव में भरा जाने वाला औषधियुक्त कपड़े की छोटी चीरी। बत्ती।

बातूनी—(वि०) अधिक बातें करने वाला। वाचाल।

बातेरण—दे० वातेरण।

बात्यो—दे० बातियो।

बाथ—(ना०) १. बाहु। भुजा। २. किसी को अंक में लिये जाने पर बननेवाला दोनों हाथों का घेरा। अंक। बाहुपाश। बाखटो। ३. युद्ध। ४. मल्लयुद्ध। ५. द्वन्द्वयुद्ध।

बाथणो—(क्रि०) १. लड़ना। भिड़ना। २. बाथंबाथ होना।

बाथ भरणो—(मुहा०) १. साहस करना। २. बाहुपाश में लेना। अंक भरना।

बाथमबाथ—(ना०) १. आलिंगन करते समय दोनों की बाहुओं की मुद्रा। बाहुपाश। २. मारामारी। थापा-मुक्की। ३. लड़ाई-झगड़ा। ४. भिड़न्त। गुत्थमगुत्था। तकरार। ५. बाहुयुद्ध। बाथोबाथ।

बाथंबाथ—दे० बाथमबाथ।

बाथां आणो—(मुहा०) १. लड़ना। भिड़ना। २. हाथापाई करना।

बाथियाँ—(ना०) १. लड़ाई। कुश्ती। २. गुत्थमगुत्था। भिड़ंत। ३. बाहुपाश।

बाथियाँ आणो—दे० बाथां आणो।

बाथे आणो—(मुहा०) लड़ना। गुत्थमगुत्था होना।

बाथेड़ो—(न०) झगड़ा।

बाथोकड़—(वि०) झगड़ालू। (न०) १. कुश्ती। २. झगड़ा। हाथापाई।

बाथोकड़ो—दे० बाथोकड़।

बाथोट—(ना०) बाथ।

बाथोटणो—(क्रि०) १. झगड़ा करना। २. बाथमबाथ आना। ३. परिश्रम करना।

बाथोड़ियो—(वि०) झगड़ा-टंटा करने वाला।

बाथोड़ो—(न०) १. झगड़ा। टंटा। २. मारपीट। ठोकापींजी। ३. कठोर परिश्रम।

बाथोबाथ—(न०) १. गुत्थमगुत्था। भिड़न्त। २. कुश्ती। बाहुयुद्ध। बाथमबाथ।

बाद—(ना०) १. कमी। न्यूनता। २. कमीशन। छूट। (वि०) १. कम। न्यून। ओछो। २. शेष। (क्रि० वि०) १. पीछे। अनंतर। २. अतिरिक्त। सिवा। ३. बिना मतलब के। व्यर्थ।

बादगीर—*(वि०)* १. लड़ाई-झगड़ा करने वाला। २. वाद-विवाद करने वाला।

बादर—*(वि०)* १. बहादुर। २. कपास संबंधी। *(न०)* १. रूई। रू। २. कपास। ३. कपड़ा। ४. बेर। **बोर**।

बादरढाढी—*(न०)* 'वीरमायण' नामक डींगळ के एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ का रचयिता १५वीं शती का ढाढ़ी जाति का एक कवि।

बादरायण—*(न०)* वेदव्यास का एक अन्य नाम।

बादरी—*(ना०)* १. बहादुरी। २. चमड़े का तस्मा। **बाधरी**।

बादळ महल—*(न०)* साज-सज्जा से पूर्ण ऊंचा महल।

बादळ वरणी—*(वि०)* बादल के रंग जैसी।

बादळांवाळो—*(न०)* बच्चों को होने वाला निमोनिया।

बादळी—*(ना०)* बदली। छोटा बादल।

बादळो—*(न०)* १. बादल। मेघ। २. यात्रा में साथ रखने का जसद का बना बुतमड़ी के आकार का एक जलपात्र। ३. चपटे और चमकीले सोने या चाँदी के बारीक तार जिन्हें रेशम के धागे पर लपेट कर कपड़ा, फूल-पत्ती बुनी जाती है। जरी। बादला। **बादळो**।

बादशाह—*(न०)* १. बड़ा राजा। सम्राट। २. बादशाह की छाप वाला ताश का पत्ता। ३. शतरंज का एक मोहरा। ४. मन-मौजी।

बादशाही—*(वि०)* १. बादशाह से संबंधित। २. बादशाह का। ३. बादशाह के जैसा।

बादसा—दे० बादशाह।

बादाम—दे० बदाम या बिदाम।

बादामी—*(वि०)* १. बादाम के रंग का। २. बादाम जैसा। *(ना०)* एक चिड़िया।

बादी—*(ना०)* १. वायुरोग। २. एक नट जाति। दे० वादी।

बादीगर—दे० वादीगर।

बादीलो—*(वि०)* १. जिद्दी। २. गर्वीला। ३. स्थूल शरीर वाला।

बादेलो—*(न०)* मोटा और बड़ा तकिया।

बाध—*(वि०)* १. अधिक। बहुत। २. पूरा। समस्त। **बाधो**। *(ना०)* बंधन। रोक। बाधा।

बाधक—*(वि०)* १. रोकने वाला। २. रुकावट डालने वाला। ३. विघ्नकर्ता। ४. कष्टदायक।

बाधर—दे० वाधरी।

बाधरी—दे० वाधरी।

बाधा—*(ना०)* १. रुकावट। अड़चन। २. विघ्न। ३. आपत्ति। एतराज। ४. बंधन। ५. कठिनाई। दिक्कत। ६. प्रण। प्रतिज्ञा। ७. कष्ट। दुख। ८. समस्या। ९. हानि। १०. भय।

बाधापो—दे० वाधेपो।

बाधी—*(ना०)* १. चमड़े की लंबी पट्टी। **लाव**। २. चमड़े की रस्सी। **बाधरी**। दे० वाधी। *(वि०)* १. पूरी। सबकी सब। २. बँधी हुई।

बाधू—दे० वाधू।

बाधेपो—दे० वाधेपो।

बाधो—*(वि०)* १. समस्त। सब। २. बंधा हुआ। *(न०)* १. बढ़ती। वृद्धि।

बाधोड़ो—*(वि०)* बँधा हुआ।

बाध्य—*(वि०)* विवश। लाचार।

बान—दे० बाण।

बानक—दे० वाणक।

बानगी—*(ना०)* १. माल का वह थोड़ा अंश जो ग्राहक को दिखाया जाता है। नमूना। २. व्यंजन (खाद्यपदार्थ)।

बानर—*(न०)* बानर। **बांदरो**। दे० वन्दर।

बानरी—*(ना०)* वानरी। **बांदरी**।

बानाबंध—*(वि०)* १. विरुदधारी। २. वीर। ३. भेषधारी। ४. पूजनीय।

बानै—दे० वानै।

बानो—*(न०)* बयाना। पेशगी। **साई**। दे० वानो।

बानोळी—दे० वंदोळी।

बानोळो—दे० वंदोळो ।

बाप—*(न०)* पिता । जनक । **बापू । जामी ।**

बाप-कमाई—*(ना०)* बाप की कमाई हुई संपत्ति ।

बापकर्मी—*(वि०)* (विवाह आदि के संबंध में) बाप के ऊपर आधार रखने वाला । 'आपकर्मी' का उलटा ।

बापकर्मो—*(वि०)* बाप की कमाई के ऊपर जीने वाला । अयोग्य ।

बापची—*(ना०)* एक सुगंधित क्षुप और उसके बीज ।

बाप जमारे—*(अव्य०)* १. नाकाम । २. जिन्दगी भर में । कभी भी । **कबेही ।**

बापजी—*(न०)* १. गुरुजनों के प्रति एक आदरसूचक संबोधन । २. गुरुजनों के प्रति बातचीत करते समय प्रायः काम में लिया जाने वाला एक संपुट । ३. ईश्वर । परमात्मा । ४. **बाप ।** पिताश्री । पिताजी । **बापूजी ।** ५. गुरु । ६. संत । महात्मा । ७. राजा । ८. पुत्रवधू के द्वारा ससुर के लिये प्रयोग किया जाने वाला आदरसूचक शब्द । बापजीराज । *(सर्व०)* 'आप', 'तुम' और 'वे' के स्थान पर गुरुजनों के प्रति किया जाने वाला आदरसूचक प्रयोग ।

बापजीराज—दे० बापजी सं० ८.

बापड़ियो—दे० बापड़ो ।

बापड़ी—*(वि०)* १. बिचारी । २. गरीब । ३. सीधी-साधी । ४. असहाय ।

बापड़ेल—*(वि०)* १. जबरदस्त । २. बड़ा । ३. गरीब । ४. असहाय ।

बापड़ो—*(वि०)* १. अनाथ । बिचारा । २. तुच्छ । गरीब । ३. सीधा-सादा । **भोळो ।** ४. मूर्ख । *(न०)* १. एक तुच्छकार शब्द । २. एक अपशब्द ।

बाप-दादा—*(न० ब० व०)* १. पूर्वज । पूर्वपुरुष । २. बाप और दादा ।

बापनामी—*(वि०)* १. अपने पिता के गुणों को प्रसिद्ध करने व चमकाने वाला । २. बाप के नाम से प्रसिद्धि पाने वाला । ३. बाप के जैसे गुणों वाला ।

बापरणो—दे० वापरणो ।

बाप रे—*(अव्य०)* भय, आश्चर्य तथा संकट के समय का उद्‌गार ।

बापलियो—*(न०)* १. आत्मीयता और भक्ति भावना से प्रेरित (ईश्वर, गुरु और पिता आदि गुरुजनों के लिये) 'बाप' शब्द का महत्ववाची शब्दरूप । २. बाप के लिये हीनतासूचक शब्द ।

बापी—*(वि०)* बाप-दादा के समय से अधिकार में चली आ रही (जमीन) । अपनी मालिकी की । *(ना०)* पुश्तैनी जमीन-जायदाद ।

बापीकी—*(वि०)* उत्तराधिकार में प्राप्त पैतृक । मौरूसी । बाप-दादा की । **बापी ।**

बापू—*(न०)* १. पिता । २. वृद्ध पुरुष । ३. गांधीजी का आदरसूचक नाम । *(अव्य०)* १. एक आदरसूचक शब्द । २. राजा, जागीरदार, पिता आदि के लिये संबोधन शब्द ।

बापूकार—*(अव्य०)* १. वाह । शाबाश । धन्य । २. **बापो हो बापो ।** *(न०)* १. धन्यवाद । शाबाशी । २. प्रशंसार्थक व उत्साहवर्धक ध्वनि । ३. 'बापो' उच्चारण करके दिया जाने वाला मान या उत्साह । ४. प्रशंसा तथा आदरसूचक एक शब्द । ५. एक उत्साहवर्धक शब्द ।

बापूकारणो—*(क्रि०)* १. उत्साहित करना । प्रेरित करना । २. उत्तेजित करना । ३. प्रशंसा करना । ४. धन्यवाद देना ।

बापूकारी—दे० बापूकार ।

बापूजी—*(न०)* पिता । पिताजी ।

बापो—*(न०)* १. पिता । २. वाह-वाह । धन्य । ३. प्रशंसार्थक व उत्साहवर्धक ध्वनि । ४. उत्साह बढ़ाने के लिये कहा जाने वाला शब्द । ५. इतिहास प्रसिद्ध चितौड़ के अधिपति बप्पा रावळ का नाम ।

बापोती—*(वि०)* वंश परम्परा की । *(ना०)* पूर्वजों के समय से अधिकार में चली आ रही सम्पत्ति । बपौती ।

बाफ—*(ना०)* १. भाप। वाष्प। २. एक जरीदार कपड़ा। **बाफतो**। ३. मनोवेग।

बाफणो—*(क्रि०)* १. भाप से पकाना। २. पानी में उकालकर पकाना। उबालना। **उबाळणो**। ३. भाप द्वारा गरमी पहुँचाना। ४. शेखी मारना। डींग मारना। **डींग हांकणी**।

बाफतो—*(न०)* १. कलाबत्तू के काम वाला एक रेशमी कपड़ा। २. घोड़े की एक जाति।

बाफला—*(न० ब० व०)* गेहूँ की लोइयों को बाफ कर अग्नि में सेकी हुई बाटी। **बाफियोड़ा रोटा**।

बाफियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. उबाला हुआ। २. भाप द्वारा गरम किया हुआ। ३. सेंका हुआ।

बाब—*(ना०)* १. कर। महसूल। लगान। **लाग**। २. परिच्छेद। अध्याय। ३. सामान। सामग्री। ४. प्रजा। ५. ऋण। कर्जा। ६. मतलब। आशय। ७. मुकदमा।

बाबत—*(ना०)* १. विषय। २. संबंध। जरिया। *(अव्य०)* विषय में। संबंध में।

बाबर—*(न०)* १. भारत का एक मुगल शासक। अकबर का दादा। २. मुसलमान। ३. नाई। हजाम। ४. मरहमपट्टी करने वाला चिकित्सक। ५. बिखरे हुए बाल। ६. सिर। माथा। ७. एक अनार्य जाति। ८. ढेढ़ चमार आदि की हजामत करने वाला नाई।

बाबरकोट—*(न०)* कटे हुए सिरों का ढेर। बबरकोट।

बाबरियाळ—दे० बाबरियो।

बाबरियो—*(वि०)* १. छोटी जटावाला। २. उरझी हुई जटावाला। बिखरी हुई जटावाला। *(न०)* मुसलमान।

बाबरी—*(ना०)* १. जटा। २. छोटी जटा। ३. बिखरी हुई जटा। *(ना०)* मुसलमान।

बाबल—*(न०)* पिता। बाबुळ। **बाप**।

बाबलियो—*(न०)* बाप के लिये ऊनार्थक शब्द।

बाबहियो—*(न०)* पपीहा। **बाबैयो**। **पपैयो**।

बाबा—*(न०)* १. स्नेहसूचक संबोधन का एक संपुट। २. माँगने वाले साधुओं के लिये प्रयुक्त संबोधन शब्द।

बाबाई—*(वि०)* १. बाबा का। २. बाबा संबंधी।

बाबाजी—*(न०)* साधु। संन्यासी।

बाबी—*(ना०)* १. बाबा की पत्नी। २. संन्यासिनी। साध्वी। ३. छोटा हुक्का।

बाबुळ—दे० बाबल।

बाबू—*(न०)* १. रेलवे या पोस्ट ऑफिस का कर्मचारी। २. क्लर्क। अहलकार। सरकारी कर्मचारी। ३. बच्चे के लिये प्रयुक्त शब्द। ४. बालक।

बाबूजी—*(न०)* १. पिता के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला मानसूचक शब्द। पिता। २. बाबू। सरकारी कर्मचारी।

बाबेली—*(ना०)* सहेली।

बाबैयो—*(न०)* पपीहा। चातक।

बाबो—*(न०)* १. साधु। २. संन्यासी। ३. पिता। ४. पिता का बड़ा भाई। ताऊ। ५. लोक देवता रामदेव का विशेषण। ६. मेवाड़ के सामंतों को महाराणा की ओर से दिया जाने वाला सम्मानसूचक पद।

बाबोजी—दे० बाबोसा। *(न०)* साधु। महात्मा।

बाबोसा—*(न०)* १. दादा, ताऊ, पिता आदि वृद्ध पुरुषों के लिये प्रयुक्त होने वाला मानसूचक शब्द। २. पिता।

बाम—*(ना०)* १. वाम। स्त्री। २. मालिश करके दर्द को मिटाने के लिए वैसलीन से बना हुआ मलहम। *(वि०)* बायाँ। **डावो**।

बामच—*(न०)* किसी चौखट का टेढ़ापन। २. चारपाई का टेढ़ापन। **कनेब**।

बामचा—*(न०)* एक जनजाति।

बामण—*(न०)* ब्राह्मण। **बिरामण**। **बामण**।

बामण सुनार—दे० ब्राह्मण जाति का सोनी।

बामणी—*(ना०)* ब्राह्मण-स्त्री। ब्राह्मणी। **बिरामणी। ब्रामणी।**

बामस—दे० बामच।

बामीबंध—दे० वामीबंध।

बामो—दे० वामो।

बाय—*(ना०)* १. वायु। पवन। हवा। २. वायुरोग।

बायड़—*(ना०)* १. अभिलाषा। इच्छा। २. नशीले पदार्थ को (सेवन करने की टेव पड़ जाने पर उसे) प्राप्त करके खाने की उत्पन्न हुई तीव्र इच्छा। व्यसन पोषण की उत्कट इच्छा।

बायड़ियो—*(वि०)* १. अफीम का व्यसनी। २. व्यसनी। ३. स्त्री स्वभाव वाला। ४. स्त्री का वशवर्ती। स्त्रैण। **मावड़ियो।**

बायड़ी—*(ना०)* १. स्त्री। **बैर।** २. पत्नी।

बायर—*(ना०)* १. स्त्री। नारी। २. पत्नी। **बायड़ी। बैर।** *(क्रि० वि०)* बाहर।

बायरो—*(वि०)* १. बहिष्कृत। २. रहित। बिना। **बाहिरो।** दे० वायरो।

बायली—*(ना०)* बच्ची। लड़की।

बायलो—*(न०)* १. बच्चा। २. स्त्री का गुलाम। स्त्रैण। **मावड़ियो।** *(वि०)* डरपोक। भीरू। ३. स्त्री के जैसे स्वभाव वाला।

बाया—*(ना०)* १. बच्ची। २. बच्ची के लिये प्रयुक्त प्रेम तथा मानसूचक संज्ञा। ३. बहन। ४. बहन, पुत्री आदि कोई सुहासिनी।

बायाँजी—दे० बायाँसा।

बायाँसा—*(ना०)* सात लोक देवियों का समूह, जिनके प्रकोप से बालकों में एक प्रकार का वातरोग होना माना जाता है। मैलड़ियाँ, मावड़ियाँ, ऊपरलियाँ इत्यादि इनके अन्य नाम हैं।

बार—*(न०)* १. द्वार। २. घर। ३. देर। विलंब। ४. समय। दफा। मरतबा। ५. अवसर। मौका।

बारक—*(वि०)* एक बार। एक दफा।

बारखड़ी—दे० बाराखड़ी।

बारगह—*(न०)* तम्बू। दे० बारिगाह।

बारगी—दे० वारगी। *(न०)* घोड़ा।

बारछुड़ाई—*(ना०)* विवाह की एक प्रथा।

बारठ—*(न०)* चारण। बारहठ।

बारठो—*(न०)* चारण को दी जाने वाली बारहठ की उपाधि। **बारहठो।**

बारण—दे० बारण।

बारणी—*(ना०)* एक माँगने वाली जाति।

बारणूं—दे० बारणो।

बारणै—*(अव्य०)* १. घर से बाहर। अन्य स्थान पर। २. दरवाजे के बाहर *(क्रि० वि०)* बाहर।

बारणो—*(न०)* १. द्वार। दरवाजा। २. किमाड़। दे० बारणो।

बारतू—*(वि०)* १. जो अपने गाँव का न हो। बाहर का रहने वाला। ग्रामीण। २. बाहर का। *(न०)* १. अन्य गाँव का अपरिचित व्यक्ति। २. गाँव का अपढ़ व्यक्ति। ३. सौदा खरीदने बेचने को शहर में आया हुआ ग्रामीण।

बारदान—*(न०)* पटसन का खाली थैला, कपड़ा, टाट आदि।

बारदानो—दे० बारदान।

बारपगो—*(वि०)* व्यभिचारी। **बाहरपगो।**

बार बार—*(अव्य०)* पुनः पुनः। **बारंबार।**

बारमासियो—दे० बारहमासियो।

बारमों—*(वि०)* बारहवाँ। *(न०)* १. मृतक के बारहवें दिन का कृत्य। २. मृतक के पीछे बारहवें दिन किया जाने वाला मृतक भोज।

बार रोकाई—*(ना०)* विवाह करके घर आने पर बहन तथा नेगियों द्वारा दूल्हे का द्वार रोकने पर बहन तथा नेगियों को दिया जाने वाला नेग।

बारलो—दे० बाहरलो।

बारवती—*(ना०)* द्वारावती। द्वारिका।

बारवीं—दे० बारमों।

बारस—*(ना०)* पक्ष का बारहवाँ दिन। द्वादशी।

बारसाळी—दे० बरसाळी।

बारसोत—*(न०)* चार लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले जड़े रहते हैं। चौखट। **बारोक। बारोत।**

बारह—*(वि०)* जो संख्या में दस और दो हो। *(न०)* बारह की संख्या '१२'। **बारै।**

बारहखरी—दे० बाराखड़ी।

बारहठ—*(न०)* द्वार पर दूल्हे से नेग लेने वाला चारण। **बारठ।**

बारहठो—*(न०)* १. चारण को दिया जाने वाला बारहठ का पद। २. दूल्हे को द्वार पर रोक कर नेग लेने का चारण का काम। बारहठ का काम। **बारठो।**

बारहदरी—*(ना०)* बारह दरवाजों वाला बड़ा कमरा।

बारहपंथ—*(न०)* नाथ सम्प्रदाय के संन्यासियों के बारह भेद।

बारहमासियो—*(न०)* १. वह पद या गीत जिसमें बारह महीने का वर्णन हो। २. रेलवे लाइन पर काम करने वाला बारहमासी मजदूर। ३. बारहमास के बाद पैदा होने वाला बच्चा। *(वि०)* बारह मास संबंधी।

बारहमासी—*(ना०)* एक पौधा जिस पर बारह मास फूल आते रहते हैं।

बारहमासो—*(न०)* वह भजन या गीत जिसमें बारह महीनों का वर्णन हो।

बारहवाट—*(वि०)* १. नष्ट। बरबाद। २. छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

बारहवाणी—*(वि०)* शुद्ध। निर्मल। **चोखो।**

बारहसींगो—*(न०)* बारहसिंगा। **सांभर।**

बारहो—*(न०)* सदी का बारहवाँ वर्ष।

बाराखड़ी—*(ना०)* राजस्थानी वर्णमाला के व्यंजनों के बारह स्वरों से युक्त रूप। **बारहअक्षरी।**

बाराणी—*(ना०)* वह जमीन जिसमें केवल बरसात के पानी से फसल होती है। बारानी। **बारू।**

बारादरी—*(ना०)* बारह द्वार वाला खुला मकान।

बाराबाट—दे० बारहवाट।

बाराळी—दे० बारसाळी।

बारिगर—*(न०)* सिकलीघर।

बारिगाह—*(न०)* १. तम्बू। खेमा। २. पानीघर। **पणीढो।** ३. प्याऊ। ४. पानी की टंकी।

बारियो—*(न०)* १. कुएँ में से बैलों द्वारा खींचकर लाने वाले रामैयो (बिना सूंड के चड़स) को थामकर (पकड़कर) थाले में खाली करने वाला व्यक्ति। २. मृतक का बारहवाँ दिन। मृतक के बारहवें दिन किया जाने वाला अशौच क्रिया तथा ज्ञातिभोज आदि। **बारमों।**

बारिस—दे० बारिस।

बारी—*(न०)* दोना-पत्तल बनाने वाली एक जाति (मेवाड़)। *(ना०)* १. छोटी खिड़की। २. गवाक्ष। झरोखा। ३. उपाय। मार्ग। ४. सुराख। बड़ा छेद। ५. बारी। पारी। **बारी।** ६. मौका। अवसर। ७. समय। **वेळा।**

बारीक—*(वि०)* १. सूक्ष्म। २. पतला। **झीणो।** ३. गूढ़। जटिल। ४. अपेक्षाकृत छोटा।

बारीकी—*(ना०)* १. सूक्ष्मता। २. पतलापन। ३. गूढ़ता। जटिलता।

बारी-बारी—*(क्रि० वि०)* १. क्रमशः। २. एक के बाद एक।

बारू—दे० बाराणी।

बारूद—*(न०)* गंधक, शोरे और पिसे हुए कोयले का विस्फोटक चूर्ण। दारू। **सोर।**

बारूदखानो—*(न०)* विस्फोटक पदार्थ रखने का कोठार। **सोरखानो।**

बारै—*(अव्य०)* १. संबंध। संबंध में। २. बाहर। ३. दूर। *(वि०)* बारह (दस और दो)। *(न०)* बारह की संख्या '१२'।

बारै बारै—दे० बारोबार।

बारो—*(न०)* १. मृतक के बारहवें दिन का भोजन। **बारियो**। २. द्वार। ३. बारहवाँ वर्ष। ४. रिवाज। ५. मार्ग। ६. तार खींचने की जंती का सुराख। ७. सुराख छेद। **तीणो**। **ठींडो**। ८. दरार। दरज। संधि। **सांध**। ९. माल के मँगवाने-भेजने का प्रदेश। १०. बारी। पारी। ११. अवसर। मौका। **टैम**। १२. दिशा।

बारोक—दे० बारसोत।

बारोटियो—*(न०)* १. डाकू। २. विद्रोही। ३. उपद्रवी। ४. विरोधी।

बारोठ—दे० बारहठ।

बारोत—दे० बारसोत।

बारोतरसो—*(न०)* पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ बारह (११२) की संख्या।

बारोतरो—*(न०)* सदी का बारहवाँ वर्ष।

बारोबार—*(अव्य०)* १. अंदर नहीं आकर बाहिर ही बाहिर से। २. बाहर खड़े रहकर। ३. सीधा। **परबारो**। ४. बिना रुके। ५. बिना पूछे। **बारै बारै**।

बाल—*(न०)* १. केश। २. रोम। रोयें। *(वि०)* १. थोड़ा। २. सूक्ष्म।

बाळ—*(न०)* बालक। बच्चा। **टाबर**। *(वि०)* १. जो युवा न हो। २. मूर्ख। अनजान। नासमझ। ३. नादान। ४. बच्चा हाथी।

बाळक—*(न०)* बच्चा। शिशु। **टाबर**। *(वि०)* १. जो वयस्क न हो। २. नासमझ। ३. चंचल।

बाळकति—*(ना०)* बालक्रीड़ा। बालकेलि। बच्चे का खेल-कूद।

बाळकाळ—*(न०)* १. बचपन। **बालपणो**। २. बालमृत्यु।

बालकांड—*(न०)* १. श्रीराम की बाललीला के वर्णन का रामायण का पहला कांड।

बाळकी—*(ना०)* १. बालिका। बच्ची। **डावड़ी**। २. शिष्या। **चेली**। ३. कान में पहनने की बाली। **वाळकी**।

बाळकंची—दे० वाळकूंची।

बालकृष्ण—*(न०)* १. बालक श्रीकृष्ण। २. श्रीकृष्ण की बालक मूर्ति।

बाळकिसन—*(न०)* बालकृष्ण।

बाळको—*(न०)* १. बालक। बच्चा। २. शिष्य। **चेलो**।

बाळगोठियो—*(न०)* बचपन का मित्र। बालपने का साथी। बालसखा। **लंगोटियो**।

बाळगोपाळ—*(न०)* १. बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण। बालकृष्ण। २. बाल-बच्चे।

बालगोविंद—*(न०)* श्रीबालकृष्ण।

बाळछड़—*(ना०)* एक सुगंधित जड़। जटामासी।

बाळछो—*(न०)* १. घोड़े की पूंछ। २. घोड़े की पूंछ के बाल।

बाळजती—*(न०)* १. हनुमान। २. लक्ष्मण। ३. बाल ब्रह्मचारी। बालयति।

बालटी—*(ना०)* नहाने, धोने आदि के लिये पानी रखने का डोल।

बालड़ो—*(न०)* १. भूसा। **तुस**। २. जालवृक्ष की मंजरी।

बाळण—*(ना०)* ईंधन। दे० बाळण जोगो।

बाळण जोगो—*(अव्य०)* एक गाली। *(वि०)* जलाने योग्य।

बाळणो—*(क्रि०)* १. जलाना। भस्म करना। **सुळगाणो**। २. झुलसाना। ३. दुख देना। तंग करना। ४. ईर्ष्या उत्पन्न करना। ५. खिजाना।

बाळतोड़—*(न०)* बाल के टूटने से होने वाला व्रण। **रूंतोड़**।

बाळद—*(ना०)* बनजारे के माल ढोने के बैलों का समूह। बनजारे का वह बैल समूह जिसकी पीठ पर माल लादकर किसी दूसरे स्थान को बेचने के लिये ले जाया जाता है। सार्थ। **टांडो**। **पोठ**। कारवाँ।

बाळदियो—(न०) १. बैलों की पीठ पर माल लादकर देश-परदेश में ले जाकर क्रय-विक्रय करने वाला व्यापारी। बनजारा। २. बालद का मालिक। **वणजारो। बिणजारो।** ३. बैलों को चराने वाला नौकर। ४. बैलों वाला। ५. कृषक। किसान।

बाळदी—दे० बाळदियो।

बाळदो—(न०) १. बैलों का झुंड। २. बैल। ३. अव्यवस्था। ४. मूर्ख। (अव्य०) १. बैल जैसा। २. बैल से संबंधित। (वि०) १. मूर्ख। २. अव्यवस्थित।

बाळ-धमळ—(न०) १. श्रेष्ठ कीर्तिमान। वीर बालक। २. छोटा उत्सव। ३. एक रागिनी।

बालधि—(ना०) पूंछ। दुम। **पूंछड़ी।**

बाळपण—(न०) बचपन। **टाबरपणो।**

बाळपणो—(न०) बचपन। बालपन। **छोकरबुध। टाबरपणो।**

बाळपोठियो—(न०) छोटा लद्दू बैल।

बाळबगेल—(वि०) १. किशोर। २. भरजवान। युवा। **मोटियार।**

बालबराबर—(वि०) १. जरा-सा। किंचित। २. बहुत पतला। ३. सूक्ष्म।

बाळबुद्धि—(ना०) बालक के समान समझ। नासमझी। २. अल्पज्ञान।

बाळबेवा—(ना०) बालविधवा। **बाळरांड।**

बाळबोध—(ना०) १. देवनागरी लिपि। २. बालकों की पढ़ाई की प्रथम पुस्तक।

बालब्रह्मचारी—(न०) बचपन से ही ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला।

बालभर—(वि०) १. बहुत हलका। २. बहुत थोड़ा। जरा-सा।

बाळभोग—(न०) प्रातःकाल की पूजा के बाद ठाकुरजी को अर्पण किया जाने वाला *नैवेद्य।*

बालम—(न०) १. पति। स्वामी। खाविंद। २. प्रिय व्यक्ति। (वि०) वल्लभ। प्रिय।

बालम काकड़ी—(ना०) एक प्रकार की ककड़ी। बालमखीरा। **बालारणकाकड़ी।**

बालमंदिर—(न०) १. छोटे बच्चों की प्राथमिकशाला। शिशुशाला। २. गृहस्थ के घर बालकृष्ण की सेवा-पूजा का छोटा मंदिर। मंदरियो।

बालमीक—(न०) रामायण के रचयिता संस्कृत के आदिकवि वाल्मीकि ऋषि।

बालमुकुंद—(न०) बालकृष्ण।

बालमो—दे० बालम।

बाळरांड—दे० बाळविधवा।

बाळरोग—(न०) बच्चों को होने वाले रोग।

बाळ लग्न—(न०) छोटे बच्चे का विवाह। बालविवाह। **बाळबीवा।**

बाळलियो—दे० बाळलो।

बाळलीला—(ना०) १. बालकों की खेल-क्रीड़ा। २. श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की अद्भुत खेल-क्रीड़ाओं की कथा।

बाळलो—दे० बाळलो।

बाळविधवा—(ना०) बचपन में विधवा हुई स्त्री। **बालरांड। बाळबेवा।**

बाळविधु—(न०) कृष्ण पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।

बाळविनोद—(न०) बच्चों का मनोरंजन।

बाळविवाह—(न०) बालविवाह। **बालबीवा।**

बाळबीवा—दे० बाळविवाह।

बाळस—(वि०) मूर्ख। नादान।

बाळसखा—दे० बाळसंगाथी।

बाळसंगाथी—(वि०) बचपन का दोस्त। **बाळसखा।**

बाळसाद—(न०) बच्चे के जन्मने के समय का रुदन।

बाळसूरज—(न०) उगता हुआ सूर्य। बाल *सूर्य।*

बाळहठ—(ना०) बच्चों का हठ।

बाळहत्या—(ना०) १. बालक की हत्या। २. बालक की हत्या का पाप।

बाळा—*(ना०)* १. बालिका। २. युवती। ३. स्त्री। ४. दुर्गा। ५. ब्रह्माणी। ६. एक महाविद्या। बाला।

बाळाई—*(ना०)* १. मलाई। **थरकण**। २. पगड़ी। ३. बालाबंदी।

बालाजी—*(न०)* १. हनुमानजी। २. श्रीकृष्ण की बालकृष्ण (बाल-गोपाल) की मूर्त्ति। ३. दक्षिण का एक प्रख्यात तीर्थ-स्थान। तिरूपती बालाजी।

बाळापण—दे० बाळपण।

बालाबंदी—*(ना०)* १. जरीदार पगड़ी। २. टूंचदार पगड़ी के ऊपर बाँधी जाने वाली छोटी भिन्न रंग की पगड़ी।

बालारण—दे० बालारण काकड़ी।

बालावबोध टीका—*(ना०)* १. कवि लाखा चारण कृत 'रुसमणी री वेली' की टीका का नाम। २. टीका का एक संज्ञा-प्रकार। ३. टीका।

बालिका—*(ना०)* १. कन्या। बच्ची। २. पुत्री।

बालिग—*(वि०)* वयस्क। युवावस्था प्राप्त।

बाळियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. जलाया हुआ २. खाक किया हुआ।

बालिश्त—*(ना०)* फैली हुई अँगुलियों की कनिष्ठिका और अँगूठे की नोक तक की लंबाई। बिस्ता। **वैत**।

बाळी—*(ना०)* १. कान में पहिनने का एक आभूषण। **बाळकी**। २. नाक में पहिनने की नथ। **नथड़ी**। **बाळी**।

बाली—*(न०)* सुग्रीव का भाई एक प्रसिद्ध वानर।

बाळीवेस—*(ना०)* बाल्यावस्था। बचपन।

बालीस धरा—*(ना०)* १. मारवाड़ का बाली परगना। गोढ़वाड़ के बाली नगर के आसपास का प्रदेश। २. बालीसा चौहानों के अधिकार का प्रदेश।

बाळू—*(ना०)* बालू रेत। **वेळू**। **वेकळू**। **रेत**।

बाळूड़ी कीड़ी—*(ना०)* लाल रंग की छोटी चींटी। **राती कीड़ी**।

बाळूड़ो—*(न०)* बालक। दे० बाळूंडो।

बालूसाही—*(ना०)* एक मिठाई।

बाळूंडो—*(न०)* पीहर की ओर से कन्या के प्रथम शिशु के लिये दिये जाने वाले वस्त्राभूषण। २. दे० बाळछो।

बाले-बाले—*(क्रि० वि०)* १. बाला-बाला। परभारा। २. बाहर-बाहर। ३. ऊपर-ऊपर। ४. बिना कहे या बिना मिले। ५. दूर से। दूर-दूर।

बाळो—*(न०)* १. शिशु। २. लोह का पतला तार। **वाळो**। ३. नारू रोग। **वाळो**।

बाल्यावस्था—*(ना०)* बचपन।

बाल्हो—दे० वाल्हो।

बाव—*(न०)* १. वायु। पवन। **वायरो**। २. वापी। बावली। **बावड़ी**।

बावकरण—*(न०)* पंखा। **बावकरण**।

बावजी—दे० वापजी।

बावड़—दे० वावड़।

बावड़णो—*(क्रि०)* १. लौट आना। २. खोई हुई वस्तु का प्राप्त हो जाना। ३. देरी से समझ में आना। ४. समझ लेना। ५. पुनः संचार होना। ६. युद्ध करना। ७. इच्छा होना। ८. चला जाना।

बावड़ी—*(ना०)* बापी। बावली।

बावण-विसन—*(न०)* १. विष्णु भगवान का वामन अवतार। २. महाराणा कुंभा का विरुद।

बावन—*(वि०)* पचास और दो। *(न०)* बावन की संख्या '५२'।

बावन कचेड़ियाँ—*(न० ब० व०)* राज्य की सभी अदालतें और महकमे।

बावनजी—*(न०)* वामन अवतार।

बावनबीर—*(वि०)* १. साहसी। २. उपद्रवी। ३. चालाक। *(न०)* वीरभद्र के बावन शिष्य।

बावन-विसन—दे० बावण-विसन।

बावनियो—दे० बावनो। *(न०)* ताश के खेल में सभी सर बनाने से दूसरे पक्ष को मिलने वाली पराजय।

बावनी—*(ना०)* बावन पद्यों का काव्य।

बावनो—*(वि०)* बौना। वामन। *(न०)* बावनवाँ वर्ष।

बावनो चंदण—*(न०)* १. उत्तम जाति का चंदन। (तमिल और तेलुगु में 'बावना' शब्द चंदन का पर्यायवाची होने और वहाँ से निर्यात होने के कारण 'चंदन' का विशेषण बन गया प्रतीत होता है।)

बावरणो—दे० बावरणो।

बावरी—*(न०)* एक जनजाति।

बावरो—दे० बावळो।

बावळ—*(न०)* बबूल। **बावळियो**। दे० बावळ।

बावळियो—*(न०)* बबूल। **बावळ**।

बावळियो गूंद—*(न०)* बबूल से प्राप्त होने वाला गोंद।

बावळी—*(ना०)* एक प्रकार का छोटा बबूल। *(वि०)* १. पगली। मूर्खा। २. बातुला। दे० बावळी।

बावळो—बबूल वृक्ष। **बावळ**। दे० बावळो।

बावीस—*(वि०)* बीस और दो। *(न०)* बाईस की संख्या '२२'।

बावीसी—दे० बाईसी।

बावीसो—दे० बाईसो।

बावो—दे० बाबो।

बास—दे० वास।

बासक—दे० वासक।

बास-ग्वाड़—दे० वास-ग्वाड़।

बासठ—*(वि०)* साठ और दो। *(न०)* बासठ की संख्या '६२'।

बासठो—*(न०)* सदी का बासठवाँ वर्ष।

बासण—दे० वासण।

बासण-कूसण—दे० वासण-कूसण।

बासणो—दे० वासणो।

बासती—*(ना०)* लाल रंग का एक मोटा देशी कपड़ा।

बासतो—दे० वासती।

बासदे—दे० वासदे।

बासना—दे० वासना।

बासर—दे० वासर।

बासरकर—*(न०)* दिनकर। सूर्य। रवि। **रिव**।

बासव—दे० वासव।

बासवी—दे० वासवी।

बा सा—*(न०)* वृद्ध तथा पूजनीय के लिये प्रयुक्त सम्मानसूचक संबोधन।

बासिंदो—*(वि०)* निवासी। रहने वाला। बासिंदा। *(न०)* कूड़ा-कचरा। फूसफास।

बासी—*(वि०)* १. निवासी। रहने वाला। २. कुछ समय से रखा हुआ (साग, सब्जी, फलादि)। ३. कुछ समय पहिले पका हुआ (भोजन)। **वासी**। दे० बासेड़ो।

बासी काम—*(न०)* फूस निकालना, चूल्हा पोतना, चौका करना, बरतन-बासन धोना या माँजना, ताजा पानी भरना इत्यादि प्रात:कालीन घर की शुद्धि-सफाई का स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला नित्य काम।

बासी मूंडो—*(न०)* बिना दाँतुन कुल्ली किया हुआ मुँह (प्रात: नींद में से उठने के समय)।

बासींदी—*(ना०)* बुहारी। सोहनी। झाड़ू। **भारी**।

बासींदो—*(न०)* १. कचरा। फूस। २. बुहारन। झाड़न। ३. बासींदी से झाड़फूस कर की गयी सफाई। *(वि०)* निवासी। वासिंदो।

बासुकि—दे० वासुकि।

बासू—*(न०)* घोड़ा। अश्व। **बाछ**।

बासेड़ो—*(न०)* शीतला-सप्तमी को खाया जाने वाला बासी भोजन।

बासो—दे० वासो।

बाह—*(न०)* १. घोड़ा। २. प्रहार। **बाह**। ३. भुजा। बाहु।

बाहट—दे० बासठ।

बाहटो—दे० बासठो।

बाहड़गिर—*(न०)* मारवाड़ के बाड़मेर नगर का काव्य-नाम। बाहड़गिरि। बाहड़मेरु।
बाहड़णो—दे० बावड़णो।
बाहड़मेरु—दे० बाहड़गिर।
बाहण—दे० वाहण।
बाहणअरी—*(न०)* १. भैंसा। २. ऊँट।
बाहणो—दे० वाहणो।
बाहभाण—*(न०)* १. सूर्य के रथ का घोड़ा। २. घोड़ा। अश्व।
बाहर—*(अव्य०)* १. किसी पात्र, घेरी हुई जगह या निश्चित सीमा से अलग। २. भीतर नहीं। ३. दूर। परे। ४. अन्यत्र। दूसरी जगह। ५. भीतर का उलटा। ६. सिवा। बगैर। ७. बहिष्कार। दे० बाहर। *(वि०)* बहिष्कृत। परित्यक्त।
बाहरलो—*(वि०)* १. बाहर का। २. दूसरे स्थान का। परदेशी। ३. पराया। ४. मल-मूत्र का (पात्र)। ५. मल-मूत्र से संबंधित। ६. अपवित्र। नापाक। **वंठो**। ७. विरोधी। ८. अलग। भिन्न।
बाहरी—*(वि०)* १. बाहर का। जो भीतर नहीं। २. बाहर से संबंधित। ३. पराया। दूसरा। ४. अजनबी। *(क्रि० वि०)* रहित। बगैर।
बाहरू—दे० वाहरू।
बाहरो—दे० बाहिरो।
बाहळो—दे० वाहळो।
बाहित्र—दे० वाहित्र।
बाहिर—दे० बाहर।
बाहिरो—*(अव्य०)* १. बिना। बगैर। रहित। छोड़कर। २. दूर। अलग। ३. बहिष्कार। ४. जाति-च्युत। *(वि०)* १. बाहर का। २. बहिष्कृत। परित्यक्त।
बाहु—*(न०)* १. बाँह। भुजा। हाथ। २. भाई। सहोदर।
बाहुज—*(न०)* क्षत्री। राजन्य। राजपूत। **रजपूत**। *(वि०)* १. बाहु से उत्पन्न। २. बाहुबल वाला।
बाहुजुद्ध—*(न०)* मल्लयुद्ध। कुश्ती। बाहु-युद्ध। **बाथोबाथ**।
बाहुड़णो—दे० बावड़णो।
बाहुडंड—*(न०)* लंबी भुजा। भुजदंड। भुजा। बाहु। **बाहुड़ो**।
बाहुड़ी—*(ना०)* १. वीर स्त्री। वीरांगना। २. सधवा स्त्री। ३. स्त्री। नारी। ४. क्षत्राणी।
बाहुड़ो—*(न०)* १. कंधे और कुहनी के बीच के हाथ का भाग। २. बाहु। भुजा। ३. भाई। ४. भाई का विरुद। ५. वीर। ६. क्षत्रिय।
बाहुत्राण—*(न०)* भुजा-कवच।
बाहुबळ—*(न०)* १. भुजबल। पराक्रम। **बाँहबळ**। २. भाई।
बाहुबळी—*(वि०)* पराक्रमी। जिसकी भुजाओं में बहुत बल हो। **बाँहबळी**।
बाहुयुद्ध—*(ना०)* कुश्ती। **बाथंबाथ**।
बाहेरो—दे० बाहिरो।
बाह्य—*(वि०)* १. बाहर का। २. भीतर का उलटा। *(न०)* हाथी।
बाँ—*(सर्व०)* १. उन। **उण**। २. उन्होंने। दे० बाँह। *(न०)* गाय के रंभाने का शब्द।
बाँइटो—दे० बाँइटो।
बाँक—दे० बाँक।
बांकड़—दे० बांको।
बाँकड़मल—*(वि०)* वीर। योद्धा।
बाँकड़ली—*(वि०)* मरोड़ी हुई। टेढ़ी। ऐंठन वाली।
बाँकड़ी—*(ना०)* १. हुक्के का एक भाग। २. लाठी। **डांग**। *(वि०)* १. टेढ़ी। २. रंगीली। दे० बांकड़ली।
बाँकड़ो—*(वि०)* १. मुड़ा हुआ। बाँका। टेढ़ा। २. वीर। ३. जबरदस्त। जोरावर। ४. कुटिल। ५. कठिन। *(न०)* हनुमान।
बाँकम—*(न०)* १. गर्व। स्वाभिमान। २. टेढ़ापन। ३. अड़ियलपना। *(वि०)* १. वीर। २. पराक्रमी।

बाँकल—*(ना०)* तलवार । खड्ग । **खांडो । तरवार ।**

बाँकलमाता—*(ना०)* एक लोकदेवी ।

बाँकली—दे० बांकल ।

बाँकाई—दे० बाँकापणो ।

बांकापण—दे० बाँकापणो ।

बाँकापणो—*(न०)* १. टेढ़ापन । टेढ़ाई । २. वीरता ।

बाँकियो—*(न०)* फूंककर बजाया जाने वाला एक बाजा । **बरधू । बांकियो ।**

बाँकियोवाव—*(न०)* धनुर्वात का रोग ।

बाँकी—दे० बाँको ।

बाँकुरो—दे० बाँको ।

बाँको—*(वि०)* १. बाँका । टेढ़ा । **बांको ।** २. पराक्रमी । ३. स्वाभिमानी । ४. विरुद्ध । ५. कठिन । ६. जबरदस्त । **जोराबरी ।** ७. दुर्गम । ८. कुटिल । ९. दृढ़ । १०. दीर्घ । बड़ा । *(सर्व०)* उनका । **उणारो ।**

बाँग—*(न०)* १. नमाज पढ़ने को आने के लिये मस्जिद में दी जाने वाली मुल्ला की अजान । २. मुर्गे की आवाज । ३. जोर से पुकारने की आवाज । ४. किसी के मर जाने पर जोर से रोने की आवाज ।

बाँगड़—दे० बाँगड़ो ।

बाँगड़ो—*(न०)* १. बैलगाली, हल, रँहट आदि का एक उपकरण । २. मोटा डंडा । लक्कड़ । ३. लोहे का मोटा छड़ । *(वि०)* १. मूर्ख । गँवार । उजड्ड । २. अविवेकी ।

बाँगणो—*(क्रि०)* १. बाँग देना । २. चिल्लाना । ३. मुर्गे का बोलना । ४. मुल्ला का अजान देना ।

बाँग देणो—*(क्रि०)* १. किसी के मर जाने पर जोर से चिल्लाकर रोना । २. मुर्गे का बोलना । ३. मुल्ला का मस्जिद में बाँग देना ।

बांगला देश—*(न०)* पूर्वी बंगाल, जो स्वतंत्र होकर इस नाम से पुकारा जाता है । इसकी राजधानी ढाका है । (बंगाल का पूर्वी भाग)

बांगळो—*(वि०)* १. ललकारने वाला । उच्च स्वर से युद्ध के लिये ललकारने वाला । २. युद्ध करने को बढ़ावा देने वाला । ३. युद्धवीर । ४. जबरदस्त । *(न०)* भूखा सिंह । **डाँखियो ।**

बाँगाळ—*(वि०)* बाँग देने वाला । *(न०)* मुसलमान ।

बाँगाळो—दे० बाँगाळ ।

बाँगो—*(वि०)* १. बुद्धिहीन । २. भ्रमित । चित्त भ्रम । **बगनो ।** ३. अर्द्ध विक्षिप्त । **अधगहलो ।**

बाँघळो—दे० बाँगळो ।

बाँचजो—दे० बंचावसी । पढ़िये । स्वीकार करिये (पत्र का पारिभाषिक शब्द) ।

बाँचणो—दे० वाचणो ।

बाँछणो—दे० वांछणो ।

बांछा—दे० वांछा ।

बाँझ—दे० बाँझड़ी ।

बाँझड़ी—*(ना०)* १. वंध्या स्त्री । **बांझड़ी ।** २. नारी जाति का कोई भी प्राणी जो गर्भ धारण नहीं कर सकता हो । *(वि०)* वंध्या । **बाँझ ।**

बाँझड़ो—दे० बाँझियो ।

बाँझणी—दे० बाँझड़ी ।

बाँझपणो—*(न०)* वंध्यत्व । बाँझपना ।

बाँझियो—दे० बांझियो ।

बाँट—*(न०)* भाग । हिस्सा । बंट ।

बाँटणियो—*(वि०)* १. हिस्से करने वाला । २. पीसने वाला ।

बाँटणो—*(क्रि०)* १. सिल पर पीसना । २. बारीक चूर्ण करना । ३. बाँटना । अपने-अपने हिस्से का दे देना । वितरण करना । ४. भाग करना । हिस्से लगाना ।

बाँटियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. बाँटा हुआ । २. भाग किया हुआ । ३. सिल-लोढ़ी से पीसा हुआ ।

बाँटो—*(न०)* १. गाय, भैंस को राँधकर खिलाई जाने वाली चारे की कुट्टी, गुआर, बाजरी आदि का मिश्रण। सानी। **बाँटो**। २. राजा या जागीरदार को दिया जानेवाला उपज का कुछ भाग। ३. भाग। हिस्सा।

बाँठ—*(ना०)* १. द्वेष। ईर्ष्या। २. गर्व। ३. अकड़। ४. बाँझ बकरी। दे० बाँठको।

बाँठको—*(न०)* १. क्षुप। झाड़ी। २. तिनका। ३. लकड़ी का टुकड़ा। ४. कँटीले वृक्ष की कटी हुई डाली।

बाँठीजणो—*(क्रि०)* १. नाराज होना। २. अकड़ना।

बाँठो—*(न०)* क्षुप। *(वि०)* १. प्रतिकूल। उलटा। २. टेढ़ा। ३. विरुद्ध। ४. अकड़ा हुआ। ५. नाराज।

बाँठो-बूझो—*(न०)* १. क्षुप-पौधा आदि। २. झाड़। ३. कँटीली छोटी झाड़ी। ४. क्षुप।

बाँडाभंडो—दे० बाँडो-झरड़ो।

बाँडियो—*(न०)* १. आधी बाँह का अंगरखा। बंडी। *(वि०)* १. बिना पूँछ का। पूँछ रहित। **बाँडो**। २. झगड़ालू।

बांडी—*(ना०)* १. एक प्रकार का छोटा साँप। **परड़**। २. मारवाड़ की एक नदी। *(वि०)* १. कटी हुई पूँछ वाली (कुतिया)। २. झगड़ालू।

बांडो—*(वि०)* १. बिना पूँछ का। २. कटी हुई पूँछ का। ३. झगड़ालू। ४. कटी हुई सूंडवाला (हाथी)।

बांडोजी—दे० झरड़ोजी।

बाँडो-झरड़ो—दे० झरड़ोजी।

बांढो—दे० बांढो।

बाँदरो—दे० बाँदरो।

बाँदी—*(ना०)* १. दासी। २. नौकरानी। **नौकराणी**।

बाँदोळी—दे० बंदोळी।

बाँदोळो—दे० बंदोळो।

बाँध—*(न०)* १. नदी या तालाब का पानी रोकने के लिये बाँधी जाने वाली पत्थर आदि की मोटी पाल। पुश्ता। २. इस बाँध के बनाने से बना हुआ जलाशय। ३. बंधन।

बांधणी—*(ना०)* बाँधने का काम। बँधाई।

बांधणू—*(वि०)* अलग-अलग रंगों की बुंदिया बनाने के लिये धागों से बंधन देकर रंगा हुआ (वस्त्र)।

बांधणो—*(क्रि०)* १. रस्सी, कपड़े आदि में लपेट कर गाँठ लगाना। २. कैद करना। ३. लटकाना। ४. प्रेम में आकर्षित कर लेना। मोह लेना। ५. किसी वस्तु, मकान लेख इत्यादि का निर्माण करना। ६. धारण करना। ७. विचार गढ़ना। ८. लपेटना। ९. नियमित करना।

बांधव—*(न०)* १. भाई। २. कुटुम्बीजन।

बाँधो—दे० बाँधो।

बाँबराड़—*(वि०)* १. शूरवीर। २. जबरदस्त।

बाँबाड़ो—*(न०)* १. जोर की आवाज। २. जोर का रुदन।

बाँबी—*(ना०)* सर्प का बिल। **बंबी**।

बाँभण—*(न०)* ब्राह्मण। **बामण**।

बाँभी—दे० भांभी।

बाँभीस—*(नं०)* १. युद्ध। २. तलवार।

बांयटो—दे० बांयटो।

बांयो—दे० डावो।

बांरी—*(सर्व०)* उनकी। **उणांरी**। **बांरी**।

बांरै—*(सर्व०)* उनके। **बणांरै**। **बाँरै**।

बांरो—*(सर्व०)* उनका। **उणांरो**। **बाँरो**।

बांवटियो—*(न०)* हाथ। बाहु। भुजा। **बाहुड़ो**।

बांवटो—दे० बांवटियो।

बांवो—*(वि०)* बाँया।

बाँस—*(न०)* १. गन्ने के जैसी लम्बी, ऊँची गाँठदार, अंदर से पोली एक तृण-वनस्पति। वेणु। २. इसका लंबा डंडा। ३. सवा तीन गज का एक नाप।

बाँस फोड़—*(ना०)* एक अनुसूचित जाति।

बाँसरी—दे० बंसरी।

बाँसलो—दे० बाँसोलो।

बाँसवाड़ो—*(न०)* १. भूतपूर्व एक रियासत। २. राजस्थान का एक नगर। ३. राजस्थान का एक जिला।

बाँसुरी—दे० बंसरी।

बाँसै—*(क्रि० वि०)* पीछे।

बाँसो—*(न०)* पीठ। कमर। **मगर।**

बाँसोलो—*(न०)* बढ़ई का एक औजार।

बाँह—*(ना०)* १. हाथ। भुजा। बाँह। २. आस्तीन। कपड़े की बाँह। ३. सहायता। ४. सहारा। आश्रय। ५. भरोसा। ६. वचन। कौल। ७. शक्ति। बल। ८. भाई। ९. छोटा भाई। *(वि०)* सहायक।

बाँहपसाव—*(न०)* १. राजाओं या प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा आगंतुक के कंधे पर हाथ रखकर या हाथ से हाथ मिलाकर सम्मान देने का रिवाज या क्रिया। २. एक प्रकार की ताजीम। स्वागत-सत्कार।

बाँहबळ—*(न०)* १. भुजबल। पराक्रम। २. सहोदर। भाई। **सगोभाई।**

बाँहबळी—दे० बाहुबळी।

बाँहबेलि—*(वि०)* १. सहायता करने वाला। २. रक्षक।

बाँहबोल—*(न०)* १. सहायता देने का वचन। २. वचन। ३. प्रतिज्ञा। **पण।**

बि—*(वि०)* दो। एक और एक। बे। *(न०)* दो का अंक '२'।

बिअखरी—*(न०)* एक छंद।

बिअणो—दे० बीहणो।

बिआणूं—*(वि०)* १. वह, जिसने (पहली पत्नी के मर जाने के कारण) दूसरा विवाह किया हो। दूसरी बार परिणीत। २. दूसरी बार बछड़ा दी हुई (गाय, भैंस आदि)। दूसरी बार ब्याई हुई।

बिआणो—*(क्रि०)* बच्चा देना। बिआना। ब्याना (पशु का)।

बिआवणो—*(क्रि०)* १. डराना। भय दिखाना। **बिहावणो।** २. बिआना। ब्याना। बच्चा देना (पशु का)।

बिओ—*(वि०)* १. दूसरा। **बीजो।** २. दो। बे। *(न०)* दो की संख्या '२'।

बिकड़ियो—*(न०)* बड़ी ज्योनार में लापसी, हलुवा आदि भोजन सामग्री परोसने का (दोनों हाथों से पकड़ने के लिये) दो कड़ों वाला एक पात्र। **बकड़ियो। बुकड़ियो।**

बिकट—दे० विकट।

बिकणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु का कीमत लेकर बेचा जाना। बिक्री होना। बिकना। २. किसी के अधीन होना।

बिकरम—दे० विक्रम।

बिकरंद—*(वि०)* बुरा। खराब। *(ना०)* बदबू। दुर्गंध।

बिकराळ—दे० विकराळ।

बिकरी—दे० विकरी।

बिकरो—दे० विकरो।

बिकळ—दे० विकळ।

बिकवाणो—*(क्रि०)* बिकवाना।

बिकसणो—दे० विकसणो।

बिकसाणो—दे० विकसाणो।

बिकाऊ—*(वि०)* १. जो बेचने के लिये हो। विक्रेय। २. बेचने योग्य।

बिकाणो—दे० बिकावणो।

बिकार—दे० विकार।

बिकारी—दे० विकारी।

बिकावणो—*(क्रि०)* बिकाना। बिकवाना।

बिकियोड़ो—*(वि०)* बिका हुआ।

बिक्रमाजीत—दे० विक्रमादित्य।

बिख—दे० विष।

बिखम—दे० विषम।

बिखमी—दे० विखमी।

बिखरणो—*(क्रि०)* १. तितर-बितर होना। छितराना। बिखराना। २. अव्यवस्थित होना। ३. विसर्जन होना।

बिखराणो—*(क्रि०)* १. तितर-बितर करवाना। २. अव्यवस्थित करवाना। ३. विसर्जन करवाना।

बिखरावणो—दे० बिखराणो।
बिखहर—दे० विखहर।
बिखाद—दे० विखाद।
बिखायत—दे० विखायत।
बिखेरणो—*(क्रि०)* १. फैलाना। विस्तृत करना। २. तितर-बितर करना। छितराना। ३. सभा को विसर्जित करना। ४. भीड़ को हटाना। ५. नाश करना।
बिखेरो—*(न०)* १. अनबनाव। २. जुदाई। अलगाव। ३. तितर-बितर। छिन्न-भिन्न। अस्त-व्यस्त। ४. फैलावा। विस्तार। ५. बिखरा हुआ सामान।
बिखो—दे० विखो।
बिखोरणो—दे० बिखेरणो।
बिगड़णो—*(क्रि०)* १. बिगड़ना। विकृत होना। २. दूषित होना। ३. नाराज होना। ४. मनमुटाव होना। ५. विरुद्ध होना। ६. पतन होना। ७. नष्ट होना।
बिगड़ायल—*(वि०)* १. बिगड़ा हुआ। २. बदचलन। **बिगड़ेल**। ३. वर्णसंकर।
बिगड़ियोड़ो—*(भू० कृ०)* बिगड़ा हुआ।
बिगड़ी—*(ना०)* १. अवदशा। कुदशा। २. दुख। संकट। ३. 'बिगड़णो' की भूतकालीन क्रिया।
बिगड़ेल—*(वि०)* बिगड़ा हुआ। बदचलन।
बिगत—दे० विगत।
बिगतवार—दे० विगतवार।
बिगन—दे० विगन।
बिगर—दे० विगर।
बिगल—*(न०)* एक बाजा। तुरही। बिगुल।
बिगसणो—*(क्रि०)* १. विकसित होना। बिकसना। प्रफुल्लित होना। २. प्रसन्न होना।
बिगसाणो—*(क्रि०)* १. विकसित करवाना। २. प्रफुल्लित करवाना।
बिगाड़—*(न०)* १. बिगड़ने का भाव या क्रिया। २. खराबी। विकृति। ३. अनबन। झगड़ा। ४. हानि। नुकसान। ५. शत्रुता। ६. अहित। ७. नाश।
बिगाड़णो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप में विकार उत्पन्न करना। २. बनाने के समय वास्तविक रूप नहीं देना। त्रुटि रखना। ३. बुरी दशा में लाना। ४. कुमार्ग में लाना। बहकाना। बिगाड़ना। ५. अव्यवस्था फैलाना। अत्यधिक लाड़ करना। ७. तोड़ना। ८. द्वेष उत्पन्न करना। ९. नष्ट करना।
बिगाड़ो—दे० बिगाड़।
बिगास—दे० विकास।
बिगुण—*(वि०)* दुगुना।
बिगोवणो—*(क्रि०)* अपकीर्ति करना। बदनाम करना।
बिघड़ियो—*(न०)* १. घड़े के ऊपर रखा जाने वाला छोटा घड़ा। २. सिर पर उठाये हुए पानी के दो घड़े। **बेहड़ियो**। **बेड़ियो**। ३. **घड़ियो**। वार गणना से निकाला जाने वाला मुहूर्त्त।
बिघनहरण—दे० विघनहरण।
बिच—दे० बीच।
बिचकणो—*(क्रि०)* १. डरना। २. चौंकना। ३. हिचकिचाना। **भिचकणो**।
बिचकारो—*(न०)* घूंघट या परदा रखने वाली स्त्रियों के द्वारा 'हाँ' या स्वीकृति-सूचक मुँह से किया जाने वाला अव्यक्त शब्द। **टिचकारो** का उलटा।
बिचरणो—दे० विचरणो।
बिचळणो—दे० वीछलणो।
बिचली—*(वि०)* बीच की।
बिचलो—*(वि०)* बीच का। मध्य का।
बिचलो बासो—*(न०)* श्मशान ले जाते हुए शव की रथी को (गाँव के बाहर) कराया जाने वाला विश्राम।
बिचार—दे० विचार।
बिचारणा—दे० विचार।
बिचारणीय—दे० विचारणीय।
बिचारणो—दे० विचारणो।
बिचारो—*(वि०)* १. जिसका कोई साथी या सहारा न हो। २. दीन। गरीब। बेचारा।

बिचाळै—*(क्रि० वि०)* १. बीच में। २. तुलना में। *(ना०)* अपेक्षा। तुलना। बनिस्बत।

बिचित्र—दे० विचित्र।

बिचियो—*(न०)* १. बच्चा। २. बछड़ा।

बिचेटियो—दे० विचेटियो।

बिचै—दे० बिचाळै।

बिच्छू—*(न०)* विषैले डंक वाला एक जंतु। वृश्चिक। **बीछू**।

बिछड़णो—*(क्रि०)* १. साथ रहने वाले से अलग पड़ जाना। अकेला पड़ जाना। साथ छूट जाना। बिछुड़ना।

बिछणो—*(क्रि०)* बिछ जाना। फैल जाना।

बिछाणो—*(न०)* बिछौना। बिस्तर। *(क्रि०)* १. दरी, जाजम, बिस्तर आदि को सोने-बैठने के लिये फैलाना। बिछाना। २. सोने या बैठने के लिये पलंग या खाट का लगाना या सीधा करना।

बिछात—दे० बिछायत।

बिछायत—*(ना०)* १. दरी, जाजम आदि बिछाने का काम। २. बिछौना। ३. कपड़े पर फैलाकर रखा हुआ बिसाती का परचूनी सामान। बिसात। **बिछात**।

बिछायती—*(न०)* बिछायती का माल बेचने वाला व्यक्ति। बिसाती। **बिसायती**। **मिणियारो**।

बिछावणो—दे० बिछाणो।

बिछिया—*(न० ब० व०)* स्त्रियों के पाँव की अंगुलियों में पहनने का एक गहना। **बिछूड़ियाँ**।

बिछुड़णो—दे० बिछड़णो।

बिछूटणो—*(क्रि०)* १. समाप्त होना। मिटना। २. टूटना। ३. कटकर दूर होना। ४. गिरना। दे० बिछुड़णो।

बिछूटो—*(वि०)* १. अलग। जुदा। **बिखूटो**। २. छूटा हुआ। मुक्त।

बिछूंदरी—*(ना०)* छिपकली। बिसतुइया। **बिसूंदरी**।

बिछोड़ो—दे० बिछोवो।

बिछोव—दे० बिछोवो।

बिछोवो—*(न०)* १. वियोग। **बिजोग**। २. जुदाई। ३. अनबन। ४. शत्रुता। **दुसमणी**।

बिछोह—दे० बिछोवो।

बिजड़—*(ना०)* १. तलवार। २. कटारी। **बिजड़**।

बिजड़हथो—*(वि०)* तलवारधारी। खड्गहथो।

बिजड़ी—दे० बिजड़।

बिजन—दे० विजन।

बिजया—दे० विजया।

बिजयादसमी—दे० विजयादशमी।

बिजळी—*(ना०)* १. विद्युत। दामिनी। **खिवण**। २. एक भौतिक शक्ति जो रासायनिक प्रक्रिया से उत्पन्न की जाती है जिससे यंत्र चलाये जाते हैं और प्रकाश उत्पन्न किया जाता है।

बिजै—दे० विजय।

बिजैसाई—दे० विजयशाही।

बिजोग—*(क्रि० वि०)* १. कारण। निमित्त। २. लिये। दे० विजोग।

बिजोगण—दे० विजोगण।

बिजोरो—*(न०)* एक अत्यन्त खट्टा फल।

बिज्जू—*(न०)* कबर खोदकर मुर्दे खानेवाला एक जंगली पशु। **घोरखोदो**।

बिटड़्याँ—*(न० ब० व०)* बिटनियाँ। कुचाग्रद्वय।

बिटणी—*(ना०)* कुचाग्र। बिटणी। **बीटणी**।

बिटप—दे० विटप।

बिटळ—दे० विटळ।

बिटळणो—दे० विटळणो।

बिटूक—*(न०)* दो टुकड़े। *(वि०)* १. स्पष्ट। खुलासा। *(अव्य०)* बिन-लिहाज। दोटूक।

बिठाणो—दे० बैठाणो।

बिड़क—दे० बड़क।

बिड़कणो—दे० बड़कणो।

बिड़द—*(ना०)* विवाह आदि मांगलिक कार्य। दे० विरुद।

बिड़दड़ी—दे० बिड़द ।
बिड़द वड़ी—दे० वरद वड़ी ।
बिड़दाणो—दे० विरदावणो । बड़दावणो ।
बिड़दावणो—दे० विरदावणो ।
बिड़दावळी—दे० विरुदावळी ।
बिड़लो—*(न०)* १. पेड़ । २. पौधा । ३. क्षुप । बूजो । ४. बीड़ा । पानबीड़ा । ५. पुड़िया ।
बिड़ंग—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।
बिड़ाल—दे० विडाल ।
बिड़ो—*(न०)* क्षुप । पौधा । बूजो । बिड़लो ।
बिड़ोजा—दे० विडोजा ।
बिण—दे० बिना ।
बिणज—दे० विणज ।
बिणजणो दे० विणजणो ।
बिणजार—दे० विनजार ।
बिणजारो—दे० विणजारो ।
बिणठणो—*(क्रि०)* नष्ट होना । नाश होना ।
बिणसणो—दे० विणसणो ।
बिणास—दे० विनाश ।
बिणासणो—दे० विणासणो ।
बिणियाणी—*(ना०)* १. बनिये की स्त्री । २. बनिया जाति की स्त्री । बनियाइन । बणियाणी ।
बिणोकणी—दे० विणोकड़ी ।
बित—दे० वित ।
बितरण—दे० वितरण ।
बितंड—*(न०)* हाथी ।
बिताणो—*(क्रि०)* १. बिताना । व्यतीत करना (समय) । २. समाप्त करना । खतम करना ।
बितावणो—दे० बिताणो ।
बितुंड—दे० बितंड ।
बिथरणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत होना । २. अलग होना ।
बिथार—*(न०)* लम्बाई-चौड़ाई । फैलाव । विस्तार ।
बिथारणो—*(क्रि०)* विस्तार करना । फैलाना ।
बिथुंभियो—*(वि०)* दो कूबड़ (थुई) वाला (ऊँट) ।
बिदकणो—*(क्रि०)* १. चौंकना । २. डरना । ३. फटना । चिरना । *(वि०)* डरपोक ।
बिदर—*(न०)* १. वर्णसंकर । २. काँसा ।
बिदरी—दे० विदरी ।
बिदाई—दे० विदाई ।
बिदाकिया—*(न०)* एक अनुसूचित जाति ।
बिदाम—*(ना०)* १. बादाम । २. हिसाब की फलावट में काम में लिया जाने वाला एक पुराना छोटा चलन । *(वि०)* तुच्छ । छोटा । २. थोड़ा ।
बिदामी—*(वि०)* १. बादाम के रंग का । २. बादाम का ।
बिदारक—दे० विदारक ।
बिदारणो—दे० विदारणो ।
बिध—दे० विध ।
बिधवा *(ना०)* विधवा । बेवा ।
बिधूंसणो—दे० विधूंसणो ।
बिन—दे० बिना ।
बिनठणो—दे० विनठणो ।
बिनती—*(ना०)* विनती । प्रार्थना ।
बिनवणो—दे० विनवणो ।
बिनसणो—दे० विनसणो ।
बिनहै—*(वि०)* १. दो । २. दोनों । बिनै । बिन्है । बो ।
बिना—*(अव्य०)* १. बगैर । रहित । २. छोड़कर । ३. अतिरिक्त । सिवाय ।
बिनाई—दे० बिनाही ।
बिनायक दे० विनायक ।

बिनाही—*(ना०)* नेत्र ज्योति । दृष्टि । **नजर ।**
बिनै—*(वि०)* दोनों । (सर्व.) उसको ।
बिनोटियाँ—दे० बींदोळी ।
बिन्नै—*(क्रि० वि०)* उधर । वहाँ । उस स्थान पर । **उठै । ओठै । वठै ।**
बिन्हे—*(वि०)* १. दोनों । २. दो । वे ।
बिपरणक—दे० विपणक ।
बिप्र—दे० विप्र ।
बि-बि—*(वि०)* १. दो । २, दूसरा । **बीजो । दूजो ।** ३. दो-दो । **बे-बे ।**
बि-बिजीह—*(न०)* द्विजिह्वा । सर्प । सांप ।
बिभव—दे० विभव ।
बिभा—दे० विभा ।
बिभावरी—दे० विभावरी ।
बिभीषण—दे० विभीषण ।
बिभूति—दे० विभूति ।
बिमनो—दे० विमनो ।
बिमाणियो—*(न०)* नाज का एक माप जो दो माणो (८ पायली) का होता है ।
बिमाणो—दे० बिमाणियो ।
बिमुहो—*(वि०)* १. दो मुँह वाला । २. कपटी । छली । *(दे०)* विमुहो ।
बिमोह—दे० विमोह ।
बिय—*(वि०)* १. दो । २. द्वितीय । दूसरा । **दूजो । ३.** जोड़ा । युगल । **जोड़ो ।** ४. दोनों ।
बियाणू—*(वि०)* १. दूसरी बार विवाह किया हुआ । २. दूसरी बार ब्याई हुई (गाय, भैंस) ।
बियाँ हूंत—*(अव्य०)* १. दूसरों से । **दूजां सूं ।** २. दोनों से । **दोयाँ सूं ।**
बियो—*(वि०)* १. दूसरा । **दूजो । बीजो ।** २. दोय । *(न०)* दो का अंक '२' ।
बिरखा—*(ना०)* वर्षा । मेह । **बरखा ।**
बिरखारुत—*(ना०)* वर्षा ऋतु ।
बिरगराणो—*(क्रि०)* गिड़गिड़ाना ।
बिरछ—*(न०)* वृक्ष । पेड़ । **रूंख । झाड़ ।**
बिरत—दे० विरत ।
बिरत-बाड़ी—*(ना०)* दे० विरतवाड़ी या व्रतवाड़ी ।
बिरती—दे० विरत ।
बिरतु—*(ना०)* १. नीयत । आशय । २. इरादा ।
बिरतेसरी—दे० विरतेसरी या व्रतेसरी ।
बिरतो—*(न०)* १. हैसियत । बिसात । औकात । सामर्थ्य । २. समानता । ३. योग्यता । *(वि०)* क्रोधपूर्ण ।
बिरथा—*(वि०)* वृथा । फजूल । *(अव्य०)* बिना मतलब के ।
बिरद—दे० विरुद ।
बिरदाणो—दे० विरदाणो ।
बिरदावणो—दे० विरदाणो ।
बिरदावळी—दे० विरुदावळी ।
बिरमा—*(न०)* ब्रह्मा । प्रजापति । विधाता ।
बिरमांड—*(न०)* ब्रह्माण्ड ।
बिरलो—दे० विरलो ।
बिरवो—*(न०)* १. वृक्ष । २. पौधा ।
बिरसन—*(न०)* विष । जहर ।
बिरह—दे० विरह ।
बिरही—दे० विरही ।
बिरंग—*(वि०)* १. बदरंग । २. बिना रंग का । ३. दो रंग का ।
बिरंगो—दे० बिरंग ।
बिराग—दे० वैराग ।
बिराजणो—दे० विराजणो ।
बिराजमान—दे० विराजमान ।
बिरादरी—*(ना०)* १. एक ही जाति का समूह । २. भाई चारा । ३. न्यात । न्याति भोज । ४. न्याति । जाति ।
बिरामण—*(न०)* ब्राह्मण ।

बिरावणो -(क्रि०) १. डराना । २. धमकाना ।

बिरिया—(ना०) १. समय । बेला । वेळा । २. बार । दफा । फेरा । ३. देर । जेभ । ४. एक प्रकार का पकाया हुआ मांस ।

बिरियाळी—दे० विरियाळी ।

बिरुद—दे० विरुद ।

बिरुदपत—विरुदपत ।

बिरुदाणो दे० विरुदाणो ।

बिरुदाळ—दे० विरुदाळ ।

बिरुदावळी—दे० विरुदावळी ।

बिरुदेत - दे० विरुदेत ।

बिल (ना०) १. जमीन खोदकर बनाया हुआ संकरा, लंबा खड्डा जिसमें चूहे आदि जीवजंतु रहते हैं । बिवर । दर । २. पावने का वह हिसाब जिससे बेची हुई वस्तु के मूल्य अथवा पारिश्रमिक का ब्योरा होता है । बेचे हुए माल की कीमत सहित यादी का पुरजा । ३. किसी कानून का वह मसौदा जो विधान सभा में पेश किया जाय । विधेयक । ४ प्रस्ताव । ५. छेद । ६ गुफा ।

बिलकुल—(अव्य०) १. कुछ भी । थोड़ा भी । २. पूरा-पूरा । सब । सब का सब । सम्पूर्ण । २. नितांत । सर्वथा ।

बिळकुळणो—दे० विळकुळणो ।

बिलखणो—दे० विलखणो ।

बिलखो दे० विलखो ।

बिलग—दे० विलग ।

बिलगणो—दे० विलगणो ।

बिलटी—दे० बिल्टी ।

बिलफेल—(अ०) इसी समय । अभी । वर्तमान समय में ।

बिलविलाट—दे० वळवलाट ।

बिलमणो—दे० विलमणो ।

बिलमाणो—दे० विलमाणो ।

बिलमावणो—दे० विलमावणो ।

बिळळो—(वि०) १. पतित । भ्रष्ट । २. मूर्ख । ३. बेहूदा । ४. बावला । बावळो । ५. अवांछनीय । ६. खराब । भद्दा ।

बिलसणो—दे० विलसणो ।

बिलंग—(ना०) १. टाँड । पछीत । हांस । २. अरगनी । अळगणी । तवी ।

बिलंगड़ी—दे० विलंगणी ।

बिलंगणी—दे० विलंगणी ।

बिलंद—(वि०) १. बड़ा । २. ऊंचा । बुलंद । ३. प्रतिष्ठित । ४. जबरदस्त । ५. श्रेष्ठ । ६. निडर ।

बिलंब—दे० विलंब ।

बिलंबणो—दे० विलंबणो ।

बिलाई—(ना०) १. बिल्ली । २. अनेक अंकोड़े और कांटों वाला एक यंत्र जिससे कुएँ में गिरी हुई डोल आदि वस्तुओं को निकाला जाता है । ३. कांख में होने वाला व्रण । काँख बिलाई । खाखबिलाई । खाखोळाई ।

बिलाटी दे० बेलीटी ।

बिलाव—(ना०) बिल्ली । मार्जार । मिन्नी ।

बिलावळ—(ना०) एक राग ।

बिलास—दे० विलास ।

बिलासणो—दे० विलासणो ।

बिलासी—दे० विलासी ।

बिळिया—दे० विळिया ।

बिलियो—(न०) १. सधवा स्त्रियों के पहुँचे में पहने जाने वाले हाथी दाँत की चूड़ियों के सैट (मूठियें) की चूड़ी । २. मूठिये की वह चूड़ी जिसमें तोड़ (जोड़) लगी हो । ३. चूड़ी । ४. चांदी

या यशद की एक प्रकार की चूड़ी। वलय।

बिलोच—दे० विलोच।

बिलोरणो—दे० विलोवणो।

बिलोवणो—दे० विलोवणो।

बिल्टी—*(ना०)* रेलवे द्वारा किसी स्थान पर भेजे जाने वाले माल की रसीद जिसको गंतव्य स्टेशन पर दे देने से पाने वाले को वह माल मिलता है।

बिल्ली—*(ना०)* बिलाव। मार्जार। मिन्नी। मिनकी।

बिल्लो—*(न०)* कपड़े, धातु इत्यादि का बना काम, पद आदि का प्रतीक। बिल्ला।

बिल्लौर—*(न०)* स्फटिक।

बिवइ—*(वि०)* दोनों। दोही।

बिवरो—दे० विवरो।

बिवाई—दे० ब्याऊ।

बिसख—*(न०)* बाण। विशिख।

बिसटाळू—दे० विसटाळू।

बिसटाळो—दे० विसटाळो।

बिसन—दे० विसन। दे० विष्णु

बिसनी—दे० विसनी।

बिसनोई—दे० विसनोई।

बिसर—दे० विसर।

बिसरणो—*क्रि०)* १. याद न रहना। भूलना। २. निंदा करना। ३. अपशब्द कहना। बिसुरना।

बिसराणो—दे० विसरावणो।

बिसराम—दे० विसराम।

बिसरामणो—दे० विसरामणो।

बिसरावणो—*(क्रि०)* भुलाना। बिसराना। *विस्मृत करना। निंदा करना। विसर सुनाना।*

बिसवा—*(न०)* विश्वास। भरोसा। बिसास। दे० विसवो।

बिसवाबीस—दे० बीसबिसवा।

बिसवास—दे० विश्वास।

बिसवासघात—दे० विश्वासघात।

बिसवो—*(न०)* १. एक बीघे का बीसवाँ भाग या नाप। बिस्वा। २. हाथ की अंगुली का पोर। पेरुओ। ३. प्रतिष्ठा। वचन। कौल।

बिसंभर—*(न०)* विश्वंभर।

बिसात—*(ना०)* १. सामर्थ्य। शक्ति। २. हैसियत। गुंजाइश। ३. महत्ता। मूल्य। ४. गिनती में लिया जा सके ऐसी प्रतिष्ठा वाला व्यक्तित्व। ५. गिनती। गणना। प्रतिष्ठा। ६. पूंजी। ७. चौपड़ या शतरंज खेलने का कपड़ा।

बिसतियो—दे० विसायती।

बिसामो—दे० विश्राम।

बिसायती—*(न०)* चूड़ी, मनिका, खिलौने आदि मनिहारी सामान बेचने वाला। कपड़ा फैलाकर उस पर मनिहारी आदि की फुटकर वस्तुएं रख कर बेचने वाला। बिसाती।

बिसारणो—दे० विसारणो।

बिसावणो—*(क्रि०)* १. खरीदना। २. बेचने के लिये दूकान में सामान लाकर रखना। ३. सामान का व्यवस्थित रूप में (बेचने के लिये) फैलाव करना। ४. अस्तित्व में लाना। घटित करना। पैदा करना। जैसे—वैर बिसावणो। ५. इच्छा करना। चाहना। *(न०)* शोक। सोग।

बिसास—दे० विसास।

बिसासणो—दे० विसासणो।

बिसांई—*(ना०)* १. *विश्रांति। विश्राम।* आराम। २. थकावट दूर करना।

बिसी—*(वि०)* वैसी।

बिसीज—*(वि०)* वैसी ही।

बिसूकणो—दे० विसूकणो ।
बिसेख—दे० विशेष ।
बिसूंद—दे० वीसूंद ।
बिसो—*(वि०)* वैसा । **वैड़ो** ।
बिस्तर—दे० बिस्तरो ।
बिस्तरणो—*(क्रि०)* फैलाना । विस्तृत होना ।
बिस्तरो—*(न०)* बिछौना ।
बिस्तार—दे० विस्तार ।
बिस्मिल्लाह—*(अव्य०)* खुदा का नाम लेकर । *(न०)* प्रारंभ ।
बिस्वा—*(न०)* १. एक बीघे का बीसवाँ भाग या नाप । २. अंगुली का पोर । **पैरवो** । **पेरुओ** ।
बिहड़णो—दे० विहंडणो ।
बिहणो—दे० बीहणो ।
बिहद—दे० बेहद । दे० विहद ।
बिहरणो—दे० वैहरणो ।
बिहंग—दे० विहंग ।
बिहंगड़ो—*(न०)* एक रागिनी ।
बिहंगम—दे० विहंग ।
बिहंड—दे० विहंड ।
बिहंडणो—दे० विहंडणो ।
बिहंस—दे० विहंस ।
बिहंसणो—दे० विहंसणो ।
बिहाग—*(ना०)* एक राग ।
बिहाण—दे० विहाण ।
बिहामणो—*(वि०)* डरावना । भयावना । **डरावणो** ।
बिहार—दे० विहार । *(न०)* भारतवर्ष का एक प्रान्त ।
बिहारी—दे० विहारी । *(वि०)* १. बिहार का । बिहारी सम्बन्धी ।
बिहावणो—*(क्रि०)* १. डराना । भय दिखाना । २. धमकाना । ३. नाश करना । *(वि०)* डरावना । भयावना । **बिहामणो** ।
बिहाँ *(वि०)* दोनों । **दोनूँ** । **बो ही** ।
बिहुँ—*(वि०)* दोनों । उभय । **दोनूं** ।
बिहुँआँ—*(वि०)* दोनों । *(अव्य०)* दोनों में ।
बिहुँपख—*(न०)* १. मातृ-पितृ और ससुर पक्ष (स्त्री के) । २. चांद्र मास के कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्ष । ३. परस्पर विरोधी दल । ४. दोनों ओर । दोनों बाजू । ५. दोनों पक्ष । ६. पक्षी के दोनों डेने ।
बिहुँ राह—*(ना०)* जाति, धर्म, संप्रदाय तथा गुण आदि से परस्पर विरोधी तथा अनैक्य भावनाओं को साथ-साथ व्यक्त करने वाला राजस्थानी साहित्य का एक विशिष्ट योगरूढ़ शब्द । १. हिन्दू-मुसलमान । २. निवृत्ति । प्रवृत्ति । ३. आस्तिक-नास्तिक । ४. अमीरी-गरीबी । ५. दोनों ओर । ६. दोनों मार्ग । ७. सुर-असुर । ८. आर्य-अनार्य । ९. सत्य-असत्य इत्यादि भावार्थ सूचक पद ।
बिहुंवाँ—दे० बिहुंआं ।
बिहुंवै—*(वि०)* १. दोनों । २. दोनों तरफ ।
बिहूणो—*(वि०)* विहीन । रहित । बिना ।
बिट—*(न०)* द्वीप । टापू । २. फलफूल आदि के लगा वह डींटा जो इनको वृक्ष, बेल आदि से जोड़े रहता है । **बींटको** ।
बिंडी—*(ना०)* छत के ऊपर चारों ओर बनाई गई छोटी दीवाल । **वंडी** ।
बिताक—*(न०)* बेंगन । वृन्ताक । **रींगणो** ।
बिंद—दे० बिंदु ।
बिंदली—*(ना०)* १. स्त्रियों के सिर का एक आभूषण । २. बिंदी ।
बिंदी—*(ना०)* १. अनुस्वार का चिन्ह (०) । २. शून्य । सिफर । मींडी । ३. ललाट

में लगाया जाने वाला गोल टीका। टीकी। ४. सिर पर धारण करने का स्त्रियों का एक गहना। बिंदली।

बिंदु - *(ना०)* १. बूंद। टपको। टीपो। २. शून्य। सिफर। मींडो।

बिंदोली —दे० वींदोळी।

बिंधणो—*(क्रि०)* १. छिदना। २. फंसना। उलझना।

बिंधाणो—*(क्रि०)* बिंधवाना। छिदवाना।

बिंब—*(न०)* १. प्रतिबिंब। अक्स। २ प्रतिमूर्ति। ३. मूर्ति। ४. छाया। परछांई। ५. सूर्यचंद्र का मंडल। ६. सूर्य। ७. एक छंद। ८. लक्षणा से निकलने वाला अर्थ। बिंबार्थ। ९. दर्पण।

बिंबफल—*(न०)* एक प्रकार का लाल फल।

बिंया दे० विवाह।

बियाळी—*(न०)* बयालीस की संख्या। *(वि०)* चालीस और दो।

बियाळीस—दे० बियाळी।

बियाळीसो—*(न०)* सदी का बयालीसवाँ वर्ष।

बियाळो—दे० बियाळीसो।

बियासियो - *(न०)* सदी का बयासीवाँ वर्ष।

बियासी—*(न०)* बयासी की संख्या। *(वि०)* अस्सी और दो।

बियाँ —*(वि०)* वैसा। *(क्रि०वि०)* वैसे।

बियाँकळो—*(वि०)* १. उस प्रकार का। वैसा। २. उतना।

बियो दे० वियो।

बी—*(वि०)* १. दो। २. दोनों। ३. दूसरा। *(न०)* भय। डर। बीह।

बीक—*(न०)* १. डर। भय। २. विक्रमादित्य।

बीकण—*(वि०)* डरपोक।

बीकपुर—*(न०)* बीकानेर।

बीकपुरो—*(वि०)* बीकानेर का निवासी। बीकानेर का।

बीकम—दे० विक्रम।

बीकाण *(न०)* बीकानेर।

बीकाणो—*(न०)* बीकानेर का एक नाम।

बीकानेर- *(न०)* राव बीका के द्वारा सं० १५४२ में बसाये हुए भूतपूर्व बीकानेर राज्य की राजधानी का नगर।

बीख—दे० वीख।

बीखड़ियां- दे० वीखड़ियां।

बीघो—*(न०)* बीस बिस्वे का खेत का एक नाप। २. खेत की एक बीघा जमीन।

बीघोड़ी - *(ना०)* बीघे के हिसाब से लिया जाने वाला एक कृषि कर। खेत का एक लगान।

बीच- *(न०)* १. भीतर। मध्य। २. किसी पदार्थ का मध्य भाग। ३. अन्तर। भेद। ४. दूरी। फासला। ५. अवकाश। ६. अवसर। *(वि०)* मध्यस्थ।

बीचकणो—*(क्रि०)* १. चौंकना। बिचकना। २. डरना। भयभीत होना। ३. हड़बड़ाना।

बीछू—*(न०)* बिच्छू।

बीछूड़ी—दे० बीछूड़ो।

बीज—*(न०)* १. फूल, फल या अनाज का वह दाना या गुठली जिसको बोने से वैसा ही नया पौधा उत्पन्न हो जाये। २. वीर्य। ३. वंश। औलाद। ४. मूल कारण। ५. हेतु। ६. मंत्र का प्रधान अंग। *(ना०)* १. बिजली। कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष का दूसरा दिन। द्वितीया। दूज।

बीजक—*(न०)* १. बेची हुई (और रवाना की हुई) वस्तुओं की संख्या उनका

भाव (दर) और मूल्य बताने वाली सूची जो खरीददार को (भेजी) दी जाती है। वह सूची जिसमें बेचे हुए माल का ब्यौरा लिखा होता है। २. एक काव्य रूप। (कबीर का बीजक) ३. संतों की वाणी, पद या सबद साहित्य। ४. लेख। ५. भूमि, खेत, गांव के दान का शिलालेख। ६. शिलालेख। ७. बीज

बीजगणित *(ना०)* गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर अज्ञात संख्याएं मालूम की जाती हैं। (एलजबरा Algebra)

बीजड़—*(ना०)* १. तलवार। २. कटार।

बीजड़हथो—*(वि०)* खड्गधारी। तलवारधारी।

बीजणी—*(ना०)* हल के पास बंधी हुई बाँस की एक लम्बी नलिका जिसमें हल चलाते समय बोने के लिये बीज डाला जाता है। *(ना०)* पंखी। वीजणी। **बीझणी**।

बीजणो—*(क्रि०)* बोना। बीज बोना। बीजारोपण होना। *(न०)* पंखा। **बीझणो**।

बीजमंत्र—*(न०)* देवी-देवता का मूल मंत्र। २. कारगर तरीका। ३. गायत्री। ४. चित शक्ति। ५. सरस्वती। ६. गायत्रीमंत्र।

बीजळ—*(ना०)* १. तलवार। २. कटारी। ३. बिजली। ४. एक प्रकार का लोहा। **बीजळसार**। *(वि०)* दूसरा।

बीजळसार—*(न०)* १. एक प्रकार का उत्तम लोह। २. तलवार। खड्ग।

बीजळहथो—*(वि०)* खड्गधारी।

बीजळी—दे० विजली।

बीजवर—दे० दूजवर।

बीजाक्षर—*(न०)* बीज मंत्र का प्रथम अक्षर। **बीजाखर**।

बीजारोपण—*(न०)* १. बीज बोना। बुवाई। २. गर्भ धारण करना। ३. किसी नये काम या बात का प्रारम्भ होना।

बीजावरगी—*(न०)* एक बनिया जाति।

बीजियाण—दे० दूजियाण।

बीजियाँत—दे० दूजियाण।

बीजी—*(वि०)* १. दूसरी। अन्य। **दूजी**। २. अतिरिक्त। **सिवाय**।

बीजू—दे० बिज्जू।

बीजूभळ—*(ना०)* १. तलवार। खड्ग। २. विद्युत ज्वाला।

बीजूं—दे० बीजो।

बीजेसाही—दे० विजैसाही।

बीजो—*(वि०)* १. दूसरा अन्य। **वियो**। दूजो। २. अतिरिक्त। सिवाय।

बीजोड़ी—*(वि०)* दूसरी। **दूजी**।

बीजोड़ो—*(वि०)* दूसरा। **दूजो**।

बीजोरो—दे० बिजोरो।

बीजोळियो—*(न०)* बुवाई करते समय किसान की कमर पर बांधा जाने वाला कपड़ा, जिसमें बीज भरे रहते हैं।

बीझासण—*(ना०)* एक लोक देवी। **बीझासणी**। विंध्यवासिनी।

बीट—दे० बींट।

बीटणी—दे० बींटणी।

बीटली—*(न०)* वीटली।

बीठोळिया—*(न०)* एक जनजाति।

बीड़—*(न०)* १. जंगल। २. घना जंगल। **बीहड़**। ३. गोचरभूमि। ४. एक प्रकार का लोहा। ५. तलवार की मूंठ से बांधी जाने वाली म्यान की डोरी। तलवार की म्यान से बंधी रहने वाली डोरी।

बीड़णो—*(क्रि०)* १. ढक्कनदार वस्तु को उसके ढक्कन से ढक देना। बंद करना। ढक्कन लगाना। २. एक वस्तु को दूसरी में बिठाना। जड़ना। जैसे—नग बीड़णो। ३. सटाना। जड़ना। लगाना। जैसे—ताळो बीड़णो।

बीड़मो—*(न०)* कटोरदान।

बीडतरसौ—*(न०)* पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ दोय (१०२) की संख्या।

बीड़ी—*(ना०)* टीमरू के पानमें जरदा डाल कर बनाई हुई सिगरेट। पत्ते में लपेटा हुआ जरदे (तम्बाकू) का चूरा जिसे सिगरेट के समान सुलगा कर पिया जाता है।

बीड़ो—*(न०)* १. पान की गिलौरी। २. बिना जुता हुआ खेत। पड़तल। ३. वन। जंगल।

बीड़ो उठाणो—दे० बीडो झेलणो।

बीड़ो झेलणो—*(मुहा०)* (बीड़ा उठाकर) किसी कठिन कार्य को करने का उत्तरदायित्व लेना।

बीड़ो फेरणो—*(मुहा०)* किसी कठिन व महद् कार्य के संपादन व उसके करने के भार को उठा देने की शक्ति रखने वाले पुरुष का सभा में बीड़ा फिरा कर (उसके उठा लेने वाला का) आह्वान करना।

बीण—दे० वीणा।

बीणणो—*(क्रि०)* १. चुगना। चुनना। बीनना। २. छांटना। अलग करना।

बीणती—दे० वीणती।

बीणा—दे० वीणा।

बीणी दे० वीणी।

बीतणो—दे० वीतणो।

बीतियोड़ो—*(भू०कृ०)* बीता हुआ।

बीथरणो—*(क्रि०)* विस्तृत होना। बिस्तरना।

बीदग—दे० वीदग।

बीन—*(न०)* दुल्हा। वर। बींद। *(ना०)* वीणा।

बीनणी—दे० बींदणी।

बीनणो—दे० वीनणो।

बीनती—दे० वीनती।

बीनराजा—*(न०)* दुल्हा। बींद।

बीनै—दे० बींनै।

बीनोळी—दे० वींदोळी।

बीफरणो—दे० वीफरणो।

बीफरेल—दे० वीफरेल।

बीबी—*(ना०)* १. पत्नी। २. मुसलमान स्त्री। ३. बेगम। ४. स्त्री।

बीबो—*(न०)* १. मुसलमान। २. मिट्टी आदि गीली वस्तु को आकार के रूप में ढालने का उपकरण। सांचा। सांचो।

बीमार *(वि०)* रोगग्रस्त। रुग्ण। मांदो।

बीमारी—*(ना०)* १. रोग। व्याधि। मांदगी। २. परेशानी।

बीमाह—दे० वीमाह।

बीमो—*(न०)* १. किसी प्रकार की हानि होने की अवस्था में अमुक रकम देने का उत्तरदायित्व, जो निश्चित धन लेकर उसके बदले में लिया जाता है। लाइफ इंस्योरेंस। जीवन बीमा। २. डाक के द्वारा भेजी जाने वाली वस्तु के टूटने-फूटने या खो जाने की डाक विभाग द्वारा ली गई जिम्मेवारी, जिसके लिये कुछ निश्चित शुल्क देना पड़ता है। ३. पोस्ट इन्स्योरेंस। ओखम। आगोप।

बीय—*(वि०)* दो।

बीयो—*(वि०)* दूसरा। *(न०)* दो की संख्या '२'।

बीर—दे० वीर।

बीरज—दे० वीरज ।

बीरबल—*(न०)* अकबरी दरबार के नौ रत्नों में से एक विख्यात हाजर जवाबी और बुद्धिमान दरबारी ।

बीरो—दे० वीरो ।

बीलपत्र—*(न०)* बिल्व वृक्ष के पत्र । (जो शिवजी को चढ़ाये जाते हैं ।)

बीलो—*(न०)* १. बिल्व वृक्ष । २. बिल्व का फल ।

बीस—*(वि०)* गिनती में दस और दस **वीस** । *(न०)* बीस की संख्या । '२०'

बीस बिस्वा—*(अव्य०)* निश्चयपूर्वक । निश्चय ही । **बीस विस्वा** ।

बीसबीसी—*(वि०)* चार सौ ।

बीसमो—*(वि०)* १. गिनती या क्रम में बीसवें स्थान पर आने वाला । *(न०)* प्रसूता का बीसवां दिन ।

बीसमो धोणो—प्रसूता का बीसवें दिन स्नान करना । और जनना शौच की अंतिम शुद्धि करना ।

बीसरणो—दे० वीसरणो ।

बीसहथी—*(ना०)* बीस हाथों वाली देवी ।

बीसंत—*(न०)* ऊंट ।

बीसा—*(न०)* १. वह जाति भेद जिससे दसा, पांचा उपभेद बन गये हों । जातियों का एक भेद । यथा—बीसा श्रीमाली । बीसा ओसवाल इत्यादि ।

बीसी—*(ना०)* १. बीस वस्तुओं का समूह । २. बीसबीस की गिनती । ३. बीस वर्ष का समय । ४. बीस तक की गिनती । ५. मूल्य देकर भोजन करने की दुकान । ६. समय । काल ।

बीसो—दे० वीसो ।

बीसोतर—दे० वीसोतर ।

बीसोतर साख—दे० वीसोतर साख ।

बीह—*(न०)* डर । भय । भौ ।

बीहड़—*(न०)* ऊबड़-खाबड़, दुर्गम, सघन जंगल । बीड़ । *(वि०)* ऊबड़-खाबड़ । ऊंचा-नीचा । २. विकट । ३. सघन ।

बीहणो—*(क्रि०)* डरना । भय खाना ।

बीहंडणो—दे० वीहंडणो ।

बीहाड़णो—*(क्रि०)* डराना । भय दिखाना ।

बीहामणो—*(वि०)* डरावना । भयावना । भयंकर । **डरावणो** ।

बीहावणो—*(दे०)* बीहामणो ।

बीं—*(सर्व०)* १. उस । **उण** । **विण** । २. उसने । **उणे** । **विण** । **उण** ।

बींकी—*(सर्व०)* उसकी ।

बींके—*(सर्व०)* १. उसके । **उणरै** । **विणरै** ।

बींको—*(सर्व०)* उसका ।

बींखणो—दे० वींखणो ।

बींजणी—*(ना०)* पंखी । **बीजणी** ।

बींजणो—*(न०)* १. पंखा । व्यंजन । **पंखो** । २. बढ़ई का एक औजार । **बीझणो** । *(क्रि०)* बीज रोपना ।

बींझ—*(न०)* विंध्याचल ।

बींझणो—दे० बींजणो ।

बींझासण—दे० बींझासणी ।

बींझासणी—*(ना०)* १. विंध्याचल वासिनी । विंध्यवासिनी देवी । २. मैलड़ी लोक देवी ।

बींट—*(ना०)* पक्षियों का विष्टा । बीट । **बींट** । दे० बिंट संख्या २.

बींटको—दे० बिंट सं० २.

बींटणी—*(ना०)* कुचाग्र । चूचुक । भिटनी ।

बींटणो—*(क्रि०)* लपेटना । परिवेष्टित करना । *(न०)* लपेटन । वेष्टन ।

बींटळी—दे० वींटळी ।

बींटाकड़ो—दे० वींटाकड़ो ।

बींटी—दे० वींटी ।

बींटो—*(न०)* यात्रा में साथ लिये जाने वाले दरी, बिस्तर, कपड़ों आदि का गोल लपेटन । **बींटो । वींटोकड़ो ।**

बींटोकड़ो—दे० वींटोकड़ो ।

बींटोरो—दे० वींटोड़ो ।

बींद—*(न०)* १. दूल्हा । २. पति । खाविंद । **धणी ।**

बींदड़ी—*(ना०)* स्नेही, संबंधियों को सौगात रूप में भेजी जाने वाली किन्हीं वस्तुओं की छोटी पोटली ।

बींदणी—*(ना०)* १. दुलहिन । २. वधु । बहू । ३. पुत्रवधु । ४. पत्नी । ५. बच्चे की मूत्रेंद्रिय ।

बींदोटो—दे० वींदोटो ।

बींदोला—दे० बींदोली ।

बींदोली—दे० वींदोली ।

बींधणो - दे० वींधणो ।

बींधाणो—दे० वींधाणो ।

बींनै—*(सर्व०)* उसको । *(क्रि०वि०)* उस ओर । वहाँ । उधर । **उठीनै ।**

बींयो – दे० वींयो ।

बींरी—*(सर्व०)* उसकी । **उणरी । वणरी ।**

बींरो—*(सर्व०)* उसका । **उणरो । विणरो ।**

बींसूं—*(सर्व०)* उससे । **उणसूं । वणसूं ।**

बींस्यूं—दे० बींसूं ।

बुई—दे० 'बउ' या 'बूही' ।

बुक—*(ना०)* १. पुस्तक । किताब । २. रेल अथवा मोटर-ट्रांसपोर्ट से माल भेजने की (संज्ञा), क्रिया या भाव ।

बुकचियो—दे० बुगचियो ।

बुकची—दे० बुगची ।

बुकचो—दे० बुगचो ।

बुकनी—*(ना०)* चूर्ण । महीन चूर्ण । **पाउडर ।**

बुक बाइंडर—*(न०)* किताबों की जिल्द बाँधने वाला । जिल्द साज ।

बुकसैलर—*(न०)* किताबें बेचने वाला । पुस्तक विक्रेता ।

बुकानी दे० बकानी ।

बुकिंग आफिस—*(न०)* रेलवे, नाटक, सिनेमा आदि का वह दफ्तर जहां किराया या फीस लेकर रेलगाड़ी में यात्रा करने तथा दृश्य देखने की टिकट दी जाती है । टिकट घर ।

बुखार—*(न०)* ज्वर । ताव ।

बुखारी—*(वि०)* बुखारे का । *(न०)* मुसलमान ।

बुग—*(न०)* गाय, कुत्तों, आदि के चमड़े से चिमटने वाला एक कीड़ा । किलनी ।

बुगचियो—दे० बुगचो ।

बुगची—*(ना०)* १. खलेची । २. गठरी ।

बुगचो—*(न०)* स्त्रियों के कपड़े रखने का कपड़े का एक थैला । २. खलेचा । ३. गठरी । बुगचा । ४. बस्ता । बसना ।

बुगतड़ी – दे० बुगती ।

बुगती—*(ना०)* यात्रा में साथ रखने का मिट्टी का बना हुआ एक जलपात्र ।

बुगदी—*(न०)* लद्दू ऊंट । **भार ऊंट ।**

बुगदो—*(न०)* एक शस्त्र । दे० बगदो ।

बुगर—*(न०)* दो थुई वाला ऊंट ।

बुगलाभगत—दे० बगलाभगत ।

बुगलाभगती—दे० बगलाभगती ।

बुगलो—दे० बगलो ।

बुगसो—दे० बुगचो ।

बुगाळ—*(न०)* कौर । ग्रास ।

बुगाळणो—*(क्रि०)* जुगाली करने वाले चौपायों का जल्दी-जल्दी घास चर के निगलना ।

बुचकारणो—*(क्रि०)* १. सांत्वना देना । ढाढ़स देना । चूमने का शब्द निकाल कर प्यार जताना । पुचकारना । **चुमकारना ।**

बुचकारी—दे० पुचकार ।

बुज—*(ना०)* बकरी । छाळी । *(वि०)* १. असभ्य । गँवार । २. मूर्ख । अबूझ ।

बुजकंठो—*(न०)* जैसलमेर जिले का एक प्रदेश ।

बुजदिल—*(वि०)* कायर । डरपोक ।

बुजरग—*(वि०)* बुर्जुग । वृद्ध । *(न०)* पूर्वज । पुरखा ।

बुर्जुग—दे० बुजरग ।

बुज्जी—*(ना०)* बकरी ।

बुज्जो—*(न०)* बकरा ।

बुज्झ *(न०)* १. बुद्ध । २. बुद्धि । *(वि०)* बुद्धिमान् ।

बुझणो—*(क्रि०)* १. अग्नि का ठंडा होना । २. मिटना (प्यास का) । ३. दीपक गुल होना । ४. शांत होना (क्रोध का) । ५. जलती हुई या तपी हुई वस्तु का पानी से ठंडा होना । ६. किसी व्यक्ति के प्रभाव का मिट जाना ।

बुझाकड़—*(वि०)* अति बुद्धिमान (व्यंग्य में) ।

बुझाणो *(क्रि०)* १. अग्नि को शांत करना । २. तपी हुई या जलती हुई वस्तु को पानी में डालकर ठंडा करना । ३. (पानी पीकर) प्यास मिटाना । ४. दीपक को गुल करना । ५. पुछवाना । दर्याफ्त करवाना ।

बुझावणो—दे० बुझाणो ।

बुड़द—*(न०)* १. धन । माल । २. एक साथ धन की प्राप्ति । ३. कोई लाभकारी काम । ४. ऊपरी लाभ । नफा । ५. शतरंज के खेल में केवल बादशाह का रह जाना । ६. शर्त । होड़ । *(वि०)* नष्ट ।

बुड़बुड़ियो—*(न०)* बुदबुदा । परपोटा ।

बुड़बुस—*(न०)* नाश । संहार ।

बुड़बुसणो—*(क्रि०)* १ .दांतों से काटना । दांतों से फाड़ना या चीरना । २. नाश करना ।

बुड़ियो—*(न०)* एक प्रकार का छोटा तीतर ।

बुड़ी—*(ना०)* एक छोटा भाला ।

बुढापो—*(वि०)* बुढापा । वृद्धावस्था ।

बुड्ढो—*(वि०)* वृद्ध ।

बुणकर—दे० वणकर ।

बुणणो—*(क्रि०)* १. करघे पर तागों से कपड़ा तैयार करना । २. सलाई से मौजा, बनियान, स्वेटर आदि तैयार करना । ३. बान तथा निवार के द्वारा खाट, चटाई आदि बुन कर तैयार करना । बुनना । बुनाई करना ।

बुणाई—*(ना०)* १. बुनने का काम या ढंग । २. बुनने का पारिश्रमिक ।

बुणाणो—*(क्रि०)* बुनवाना ।

बुणावट—*(वि०)* बुणाई ।

बुत—*(ना०)* मूर्ति । प्रतिमा ।

बुतपरस्त—*(वि०)* मूर्ति पूजक । प्रतिमा की पूजा करने वाला ।

बुतपरस्ती—*(ना०)* १. मूर्ति पूजने का काम । २. मूर्ति पूजने का रिवाज ।

बुत्तेबाज—*(वि०)* धोखेबाज । चकमा देने वाला ।

बुत्तो—*(ना०)* १. झाँसा । चकमा । २. धोखा । बुत्ता । झूठा आश्वासन ।

बुदबुदी—*(ना०)* इच्छा *(व्यंग्य में)* ।

बुदबुदो—दे० बुड़बुड़ियो ।

बुद्ध—*(न०)* १. बौद्ध धर्म के प्रवर्तक एक महात्मा । बुद्ध भगवान । सिद्धार्थ । गौतम बुद्ध । २. बुद्धिमान पुरुष । *(वि०)* १. विद्वान । पंडित ।

२. ज्ञानवान । ३. ज्ञेय । जानने योग्य ।

बुद्धवंत—*(वि०)* बुद्धिमान ।

बुद्धि—*(वा०)* १. सोचने समझने की शक्ति । अक्ल । समझ । २. विवेक शक्ति । मनीषा । प्रज्ञा । ३. चतुराई । ४. चेतना । ५. युक्ति ।

बुद्धिजीवी—*(वि०)* १. बुद्धि के बल से आजीविका चलाने वाला । २. लिखने-पढ़ने का काम करने वाला ।

बुद्धिबळ—*(न०)* बुद्धि का बल । ज्ञान बल ।

बुद्धिमता—दे० बुद्धिमानी ।

बुद्धिमान—*(वि०)* १. समझदार । अक्लमंद । २. चतुर । विवेकशील । **बुधवान** ।

बुद्धिमानी—*(ना०)* समझदारी । अक्लमंदी । बुद्धिमता ।

बुद्धिवंत—दे० बुद्धिमान ।

बुद्धिशाली—*(वि०)* बुद्धिमान । समझदार । **बुधवंत** ।

बुद्धिसदन—*(न०)* गणेश । गजानन ।

बुद्धिसागर—दे० बुद्धिमान ।

बुद्धिहीण—*(वि०)* बुद्धिरहित । मूर्ख । बुद्धिहीन ।

बुद्धिहीन—दे० बुद्धिहीण ।

बुध—*(ना०)* १. बुद्धि । समझ । अक्ल । २. बुद्धिमानी । ३. सौर-मंडल का एक ग्रह । ४. मंगल और गुरुवार के बीच का दिन । बुधवार । ५. देवता । ६. बिष्णु के चौबीस अवतारों में से एक । *(वि०)* १. पंडित । विद्वान । २. ज्ञेय ।

बुध बाहरो—दे० बुधहीणो ।

बुधवंत—*(वि०)* बुद्धिमान । **बुधवान** ।

बुधवान—*(वि०)* बुद्धिमान । **बुधवंत** ।

बुधवार—*(न०)* सात वारों में से एक वार । मंगल और बृहस्पति वारों के बीच का दिन ।

बुधवारी—*(वि०)* बुधवार का ।

बुधसागर—*(वि०)* बुद्धिसागर । बुद्धिमान ।

बुधहा—*(ना०)* मदिरा । दारू ।

बुधहीण—*(वि०)* बुद्धिहीन । मूर्ख ।

बुधहीणो—*(वि०)* बुद्धिहीन । मूर्ख । अज्ञानी ।

बुधी—*(ना०)* बुद्धि । अक्ल । समझ । मेधा । मति ।

बुध्धी—दे० बुद्धि ।

बुनियाद—*(ना०)* १. नींव । आधार । रांग । २. मूल । जड़ । ३. सामर्थ्य । शक्ति । ४. वास्तविकता । ५. अस्तित्व । ६. शुरुवाद ।

बुनियादी—*(वि०)* १. असली । २. प्रारंभिक ।

बुभुक्षा—*(ना०)* १. भूख । क्षुधा । २. चाह । तीव्र इच्छा ।

बुरकला—दे० भरगोळा ।

बुरको—दे० बरकी ।

बुरको—*(न०)* मुसलमान स्त्रियों का एक पहनावा जिसमें सिर से पैर तक सब अंग ढक जाते हैं । नकाब ।

बुरछ—*(ना०)* बर्छी ।

बुरज—*(न०)* १. किले के परकोटे में बना वह स्थान जहाँ से शत्रु के आने का पता लगाया जाता है । बुर्ज । गरगज । भुरज । २. परकोटे का वह स्थान जहाँ से बंदूक व तोप छोड़ी जाती है ।

बुरजळ—दे० भुरजाळ ।

बुरड़—*(न०)* एक जाति ।

बुरड़णो—*(क्रि०)* १. तोड़ना । २. मरोड़ना ।

बुरणो—*(क्रि०)* मिट्टी आदि से पट जाना ।

बुरद—दे० बुड़द ।

बुरस—दे० ब्रश ।

बुराई—*(ना०)* १. निंदा । अपकीर्त्ति । २. त्रुटि । खराबी । ३. दोष । ऐब । ४. दुष्टता । नीचता । ५. शत्रुता । दुश्मनी । ६. शिकायत । ७. झगड़ा ।

बुराणो—दे० बुरावणो ।

बुरादो—*(न०)* १. चूरा । चूर्ण । २. लकड़ी चीरने पर निकलने वाला चूरा । बुरादा ।

बुरापणो—*(न०)* निंदा । बुराई ।

बुरावणो—*(क्रि०)* १. खड्डे को मिट्टी डालकर समतल करना । बुरवाना । २. गड़वाना । दफन करवाना ।

बुरी—*(ना०)* १. बुराई । निंदा । २. चुगली । ३. शिकायत । *(वि०)* खराब ।

बुरीगार—*(वि०)* १. बुरा करने वाला । २. दुष्ट । नीच । *(न०)* एक गाली ।

बुरीगारो—*(वि०)* १. बुरा । खोटा । २. बुरा करने वाला ।

बुरो—*(वि०)* १. खराब । निकृष्ट । नीच । २. अशुभ । ३. खोटा । अनुचित । ४. कुरूप । ५. विकृत । ६. हानिकारक । ७. गंदा । ८. अप्रिय । ९. अयोग्य ।

बुर्ज—दे० बुरज ।

बुलंद—दे० बिलंद ।

बुलंदी—*(ना०)* १. बुलंद होने का भाव । २. बल । शक्ति । ३. भारीपन । ४. श्रेष्ठता ।

बुलबुल—*(ना०)* एक चिड़िया । **पीचो** ।

बुलबुलो—दे० बुड़बुड़ियो । *(वि०)* क्षणभंगुर । नाशवान ।

बुलाक—*(ना०)* १. नाक में पहिनने का एक गहना । २. नथ में का लंबोतरा मोती ।

बुलाणो—*(क्रि०)* १. बुलाना । पुकारना । आवाज देना । २. किसी को अपने पास आने के लिये कहना । ३. किसी के द्वारा आने के लिये कहलवाना । ४. निमंत्रण देना । **तेड़णो** ।

बुलावणो - दे० बुलाणो ।

बुलावो—*(न०)* १. बुलाने की क्रिया या भाव । २. निमंत्रण । **तेड़ो** । ३. आदेश ।

बुलि—दे० बूली ।

बुवारणो—दे० बुहारणो ।

बुवारी—दे० बुहारी ।

बुहाणो—*(क्रि०)* बहाना ।

बुहार—दे० व्यवहार ।

बुहारणो—*(क्रि०)* १. झाड़ू देना । बुहारी से साफ करना । २. बटोरना ।

बुहारी—*(ना०)* झाड़ू । सोहनी । बढ़नी । **सारमणी** । **सावरणी** ।

बुहारी काढणो—*(मुहा०)* झाड़ू से कचरा निकालना । झाड़ू लगाना ।

बुहारो—*(न०)* १. कचरा । फूस । घर का कूड़ा-कचरा । २. झाड़ू । ३. बुहारी । झाड़ू । ४. बुहारने का काम । ५. झाड़ू देकर की जाने वाली सफाई ।

बुहारो काढणो—दे० बुहारी काढणो ।

बुहावणो—*(क्रि०)* बोना । **बोवणो** ।

बुही—दे० बउ ।

बुंद—दे० बूंद ।

बू—*(ना०)* १. गंध । २. बदबू । दुर्गंध । ३. बच्चों द्वारा प्रयुक्त माता का संबोधन ।

बूई—दे० बूही ।

बूक—*(न०)* १. हाथ की अंजली जिसे मुंह से लगाकर पानी पिया जाता है । **बोक** । २. बाहु । **बूकियो** । ३. एक वाद्य । ४. नगारा ।

बूकणो—*(क्रि०)* फाँकना । फाँकी लगाना ।

बूक माँडणी—*(मुहा०)* पानी पीने के लिये हाथ की अंजलि बनाना ।

बूकिया कुळणो—*(मुहा०)* लड़ाई की इच्छा करना ।

बूकियो—*(न०)* १. बाहु । बाहुदंड । कुहनी और कंधे के बीच का भाग । **बाहुड़ो** । २. चूर्ण आदि की वह मात्रा जो एक बार में फांकी जावे ।

बूको—*(न०)* १. अंजली में समा सके उतना नाज आदि । २. मुंह में फाँक कर एक बार में खाई जाने वाली वस्तु अथवा खाई जा सके उतनी वस्तु । ३. फाँकी । **फाको** । ४. चूर्ण । ५. अंजली में समावे या फाँकी जाय उतनी सूखी हुई लापसी की संज्ञा जो विवाह के बाद आडोस–पाडोस में बाँटी जाती है । विवाह के जीमनवारों की बची हुई सीरा-लापसी आदि वह मिष्ठान्न सामग्री जिसे पुनः सुखाकर या सेक कर (अंजली में समाये जितनी) सौगात के रूप में जान-पहचान वालों के यहाँ बाँटी जाती है ।

बूको फेरणो—*(मुहा०)* विवाह में बनाई हुई सूखी हुई लापसी को बूके की मात्रा में विवाह वाले घर की किसी स्त्री द्वारा आडोस–पाडोस के घरों में देना ।

बूग—*(न०)* भाले की नोक ।

बूच—*(न०)* बोतल का ढक । कॉर्क ।

बूचकी—*(ना०)* १. छोटे कानों वाली बकरी । २. कटे कानों की बकरी या गाय ।

बूचड़—*(न०)* कसाई ।

बूचड़खानो—*(न०)* १. वह स्थान जहाँ पशु वध किया जाता है । २. माँस बेचने की दुकान ।

बूचो—*(वि०)* जिसके कान कटे हुये हों ।

बूज—*(ना०)* १. मर्म स्थान पर चोट लगने से आने वाली बेहोशी । २. संज्ञा शून्य अवस्था । **बूंज** ।

बूजा चणा—*(न०)* बिना रसे का उबाले हुए चनों का मसालेदार एक व्यंजन ।

बूजी—*(ना०)* १. ग्वारफली आदि फलियों का बिना रसे का साग । २ माता । ३. सासू । **भूजी** ।

बूजो—*(न०)* १. बैलों के मुंह पर बाँधी जाने वाली एक जाली । २. **बुझो** । **बिड़लो** । क्षुप ।

बूझ—*(ना०)* १. समझ । बुद्धि । २. ज्ञान । ३. मान-सम्मान । ४. कुटुम्ब या समाज में चलने वाला स्वानुशासन । पूछ । ५. तलाश । खोज ।

बूझणियो—*(वि०)* पूछने वाला ।

बूझणो—*(क्रि०)* १. पूछना । २. मालूम करना । तलाश करना । ३. समझना ।

बूझ-बुझाकड़—*(वि०)* १. बुद्धिमान । २. पंडित । ३. ज्ञानी । ४. कर्ता-धर्त्ता (सभी अर्थ व्यंग्य और आक्रोश में) । ५. अपने को बुद्धिमान समझने वाला मूर्ख । ६. समझ का अभिमानी । ७. वाचाल । ८. समझदार । ९. सलाह-कार ।

बूझा—*(न०)* खेत में उगे हुए वे पौधे-क्षुप आदि जो खेत जोतने के पहले काट दिये जाते हैं ।

बूझाकड़—दे० बूझ-बूझाकड़ ।

बूझार—*(वि०)* पूछने वाला । **पूछणियो** । **बूझणियो** ।

बूझो—*(न०)* १. पौधा । २. क्षुप । **बोझड़** ।

बूट—*(न०)* १. जूता । बूट । २. एक गीदड़ जाति । सियार । एक चारणी देवी । ४. पौधा । क्षुप ।

बूटी—दे० बूंटी ।

बूटो—दे० बूंटो ।

बूठणो—दे० वूठणो ।

बूड—*(न०)* डूबने की क्रिया या भाव ।

बूडण—*(अव्य०)* तुच्छता का एक संपुट (प्रायः विधवा स्त्रियों के बातचीत में ।)

बूडणो—*(क्रि०)* १. पति के मर जाने से स्त्री का असहाय होना । २. 'डूबणो' का विपर्याय । दे० डबणो ।

बूड़णो—*(क्रि०)* १. डूबना । २. छत्रहीन होना । ३. माता-पिता या पति आदि गुरुजनों के मर जाने के कारण दुखावस्था को प्राप्त होना । ४. विधवा होना । ५. भारी विपत्ति में पड़ना । ६. हानि उठाना । बरबाद होना ।

बूड़ी—*(ना०)* १. एक छोटा भाला । २. भाले की नोक । ३. बरछी का डंडा या लकड़ी ।

बूडो—*(वि०)* १. डूबा हुआ । २. विपत्ति में पड़ा हुआ । विपन्न ।

बूढण—*(ना०)* वृद्धा स्त्री ।

बूढली—*(वि०)* बुढ़िया । वृद्धा । **डोकरी** ।

बूढलो—*(वि०)* बूढ़ा । वृद्ध । **डोकरो** । **डैण** ।

बूढापणो—*(न०)* वृद्धावस्था । बुढ़ापा । जरावस्था ।

बूढापो—*(न०)* वृद्धावस्था । बुढ़ापा । जरावस्था ।

बूढ़ावारो—*(ना०)* वृद्धावस्था । बुढ़ापा । **बूढापो** ।

बूढ़ी—*(वि०)* वृद्धा । बुढ़िया । **डोकरी** ।

बूढेरो—*(वि०)* १. वृद्धावस्था का । २ वृद्ध । बूढ़ा । *(न०)* वृद्ध पुरुष । दाना ।

बूढेवारै—*(अव्य०)* वृद्धावस्था में । **बुढापे** में ।

बूढ़ो—*(वि०)* १. वृद्ध । बूढ़ा । **डोकरो** । २. अनुभवी ।

बूढ़ो-ठाडो—*(वि०)* वृद्ध और अशक्त । वृद्ध ।

बूढो-डैण—*(वि०)* अतिवृद्ध । *(अव्य०)* वृद्ध के लिये हेय शब्द ।

बूढो पोकर—*(न०)* पुष्कर के निकट एक तीर्थ स्थान । वृद्ध पुष्कर ।

बूतो—*(न०)* १. सामर्थ्य । हैसियत । २. शक्ति । बल । ३. योग्यता ।

बूथ—*(ना०)* माँस का टुकड़ा । **बोटी** ।

बूथो—*(न०)* १. सौष्ठव । २. शरीर की बनावट । ३. शक्ति । हैसियत । **बूतो** ।

बूनै—*(सर्व०)* उसको । *(क्रि०वि०)* उधर ।

बूम—*(ना०)* १. आवाज । पुकार । २. चिल्लाहट ।

बूमड़ा—*(न०ब०व०)* अनाज के दानों के ऊपर का छिलका । (प्रायः ज्वार के दानों के ऊपर का आवरण, टोपी या छिलका) ।

बूमनो—*(न०)* साधु । फकीर ।

बूमराड़—दे० बूंबराड़ ।

बूर—*(न०)* १. रेती (अरगती) से घिसने पर उतरा हुआ धातु (प्रायः सोना चाँदी) का बारीक चूर्ण । २. रेती । धूल । पांशु । ३. प्रहार । ४. टुकड़ा । ५ एक घास ।

बूरणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु को खड्डा खोदकर गाडना । दफनाना । २. रेती से घिस कर बूरा उतारना । ३. मिट्टी से खड्डे आदि को भरना ।

बूरो—*(न०)* १. चूर्ण । बुरादा । ३. चासनी द्वारा मैल निकाल कर बनाई हुई साफ चीनी । ३. खाँड । मिसरी । बूरा । **चीनी खाँड** ।

बूला—*(न०)* १. वर्षा की झीनी बूंदें। २. रैगर या भांभी जाति।

बूली—*(ना०)* बच्चे की मूत्रेन्द्री। (सं० बुलि=१. योनि। २. गुदा।) २. भांभी की स्त्री। भांभण।

बूलू—*(न०)* मुंह (संकेत शब्द)।

बूलो—*(न०)* १. भांभी जाति का मनुष्य। २. रैगर।

बूसट—*(न०)* मुंह पर हथेली रख कर बोलना बंद करने की क्रिया।

बूसी—*(न०)* १. लाठी। **डांग**। २. एक प्रकार का कपड़ा। **बूसी**। ३. एक क्षुप। **बूई**।

बूही—*(ना०)* एक क्षुप। **बूई**।

बूहो—*()भू० कि०)* १. चला। प्रस्थान किया। २. बहा। प्रवाहित हुआ। ३. हट गया। ४. मर गया।

बूंग—*(न०)* १. टुकड़ा। २. चिनगारी। ३. चिल्लाहट। दे० बूंगो।

बूंगरड़—*(न०)* १. तोप छूटने की ध्वनि। २. बरसात होने की ध्वनि। ३. चिल्लाहट।

बूंगरी—दे० बुहारी।

बूंगी—दे० बूंबी।

बूंगो—*(न०)* १ जुए की लकड़ी का सिरा। २. लकड़ी आदि किसी लंबी वस्तु का का सिरा या नोक। ३. दीवाल या समतल वस्तु में कील या लकड़ी की बाहर निकली हुई नोक।

बूंज—दे० बूज।

बूंट—*(न०)* १. पौधा। २. जड़। मूल। ३. जूता। बूट। ४. वंश।

बूंटियो—*(वि०)* १. कटे हुये कान वाला। २. क्षुप। पौधा। ३. छोटी बुहारी।

बूंटी—*(ना०)* १. भंग। विजया। २ जड़ी। वनस्पति। ३. औषधि। ४. कपड़े पर बनी हुई छोटी फूल-पत्ती। ५. कान का नीचे का भाग। लोल। ६. कान का एक आभूषण। लोंग। *(वि०)* कटे हुये कान वाली। **बूची**।

बूंटो—*(न०)* १. कपड़े आदि पर बनी हुई फूल-पत्ती। २. छोटा पौधा। *(वि०)* बिना कान का। जिसका कान कट फट गया हो। **बूचो**।

बूंठो—*(वि०)* शाखाएँ काटा हुआ (वृक्ष)।

बूंद—*(ना०)* १. तरल पदार्थ का बिन्दु। २. जल बिंदु। कतरा। **टीपो**। **छांट**। ३. वीर्य।

बूंदी—*(ना०)* १. राजस्थान का एक भूतपूर्व राज्य। २. इस राज्य की राजधानी के नगर का नाम। ३. बेसन की बनी मीठी बुंदिया। **नुकती**। **नुगती**।

बूंदो—*(न०)* १. कान का एक गहना। २. झूमका। **झूमरो**। *(वि०)* बूंद जितना।

बूंब—*(ना०)* १. पुकार। चिल्लाहट। **बूम**। २. घुटन। घबराहट। ३. रणभेरी।

बूंबरण—*(ना०)* १. चिल्लाहट। २. पुकार।

बूंबळा—दे० बूमड़ा।

बूंबाड़णो—*(क्रि०)* १. चिल्लाना। रोना। २. शोर मचाना।

बूंबाड़ो—दे० बूंब।

बूंबाबूंब—*(न०)* १. रोला। २. शोर। कोलाहल।

बूंबारोळ—दे० बूंबरण।

बूंबी—*(ना०)* १. बीमारी आदि के कारण चेतना होते हुए भी बोला नहीं जा सकने की स्थिति। २. उपालंभ, डांट, लज्जा आदि के कारण बोल नहीं सकना। ३. घुटन। ४. पुकार। ५. चिल्लाहट। ६. जोश।

बूंबीजणो—*(क्रि०)* घुटन होना। दम घुटना। घुटीजणो। गोटीजणो।

बूंळियो—*(ना०)* बबूल वृक्ष। बावळियो।

बूंळी—*(ना०)* मोज बगड़ावत की घोड़ी का नाम।

बे—*(वि०)* १. दो। २. दोनों। *(अव्य०)* एक उपसर्ग जिसके शब्द के पहिले लगने से उस शब्द का अर्थ विपरीत हो जाता है। जैसे—बेआबरू, बेइज्जत इत्यादि। २. बिना। रहित। ३. तुच्छ आदमी के लिये किया जाने वाला सबोधन। अबे।

बेअकल—*(वि०)* बुद्धिहीन। नासमझ।

बेअकली—*(ना०)* नासमझी। बेवकूफी। मूर्खता।

बेअखरी *(ना०)* डिंगल का एक छंद प्रकार।

बेअदब—*(वि०)* १. अशिष्ट। २. उद्दंड। ३. अविवेकी। ४. असभ्य। ५ धृष्ट।

बेअदबी—*(ना०)* १. अशिष्टता। २. उद्दंडता। ३. अविवेक। ४. असभ्यता। ५. धृष्टता। ६. बेइज्जत।

बेअंत—*(वि०)* जिसका कोई अंत न हो। २. अपार। अनंत।

बेअरथ—*(ना०)* व्यर्थ। फजूल।

बेआदर—*(वि०)* बिना आदर। सम्मान रहित।

बेआभ—*(वि)* १. कांतिरहित। २. जलरहित। ३. चमक रहित।

बेआबरू—*(वि०)* १. बेइज्जत। प्रतिष्ठाहीन। २. अपमानित। तिरस्कृत।

बेइज्जत—*(वि०)* १. प्रतिष्ठाहीन। बेआबरू। २. अपमानित।

बेइज्जती—*(ना०)* अपमान। तिरस्कार।

बेइतबार *(ना०)* अविश्वास।

बेइल्म—*(वि०)* १. अनपढ़। २. मूर्ख। ३. अनजान।

बेइंसाफ—*(वि०)* १ गैर कायदे। अन्याय। बेनिसाफ।

बेइंसाफी—*(ना०)* १. अन्याय। २. अनुचित। अनीति।

बेई—*(ना०)* घास, कंटक-समूह, कंटकटहनियाँ आदि उठाने का लंबे डंडे में दो नोकें लगी रहने वाला कृषकों का एक उपकरण। जेळी। *(वि०)* दोनों।

बेईमान—*(वि०)* १. अधर्मी। २. अविश्वसनीय २. छली। कपटी। ४. अन्यायी। ५. विश्वासघाती। ६. कृतघ्न। ७. बुरी नियत का।

बेईमानी *(ना०)* १. बेईमान होने का भाव। जालसाजी। ३. बुरी नियत। ४. बुरी नियत का काम। ५. अधर्म।

बेउ—*(वि०)* दोनों।

बेऐब—*(वि०)* १. बिना ऐब का। २. खोटरहित। ३. निर्दोष।

बेओलाद *(क्रि०)* निस्संतान। नाऔलाद।

बेकदर—*(वि०)* १. अप्रतिष्ठित। २. अनादृत। बेकद्र।

बेकदरी *(ना०)* १. बेकद्र होने का भाव। २. अपमान।

बेकदरो—*(वि०)* जिसका कोई पद या प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। बिना इज्जत का।

बेकरार—*(वि०)* १. अशान्त। बेचैन। २. अशक्त।

बेकरारी—*(ना०)* १. अशांति। बेचैनी। २. असुख। ३. अशक्ति। निर्बलता।

बेकळू—दे० बेकळू।

बेकस—*(वि०)* १. असहाय। २. गरीब।

बेकसूर—*(वि०)* १. निरपराध। २. निर्दोष।

बेकाबू—*(वि०)* १. काबू से बाहर। निरंकुश। २. लाचार। विवश।

बेकाज—दे० बेकाम।

बेकानूनी—*(वि०)* गैर कायदा। नियम विरुद्ध।

बेकाम—*(अव्य०)* १. व्यर्थ। व्यर्थ ही। २. योंही। *(वि०)* १. जिसके पास कोई काम न हो। निकम्मा। बेकार। २. निष्प्रयोजन।

बेकायदा—*(वि०)* नियम विरुद्ध। कायदे के खिलाफ।

बेकायदे—*(अव्य०)* गैर कायदे।

बेकार—*(वि०)* १. जिसके पास काम न हो। निकम्मा। निखरो। नखरो। २. व्यर्थ।

बेकारी—*(ना०)* १. बेकार होने का भाव। निकम्मापना। २. काम धंधे का अभाव।

बेकी—*(ना०)* १. दो वस्तुओं की जोड़ी। २. दो से भाज्य होने वाली संख्या। समसंख्या। ३. टट्टी जाने के लिये आज्ञा प्राप्ति के लिये दो अंगुलियां उठाने का एक संकेत। बोकी। ४. दो की बूटी वाला ताश का पत्ता। ५. शौच-निवृत्ति।

बेकी जाणो—*(क्रि०)* १. मल त्याग करना। २. मल त्याग करने को जाना। बोकी जाणो। ४. टट्टी जाना। झाड़े जाणो।

बेकीमती—*(न०)* १. अमूल्य। बहुमूल्य। २. बिना कीमत का।

बेकूब—दे० बेकूब।

बेकूबी—दे० बेकूबी।

बेखटके—*(क्रि०वि०)* १. बिना रोक-टोक। २. बिना संकोच। निःसंकोच।

बेखता—*(वि०)* निरपराध।

बेखबर—*(वि०)* १. असावधान। २. अज्ञान। ३. बेभान।

बेखबरी—*(ना०)* १. अज्ञानता। २. बेहोशी। ३. गफलत।

बेखरच—*(वि०)* जिसकी आर्थिक दशा सोचनीय हो।

बेखा—दे० बेखा।

बेखातर—*(वि०)* १. बिना देख-रेख। बेखबर। २. बिना परवाह। लापरवाह। ३. तिरस्कृत। अनादृत। ४. अप्रसन्न। ५. निर्भय। निरापद (विरुद्धार्थ)।

बेखौफ—*(वि०)* निडर। अभय।

बेग—दे० वेग।

बेगड़—दे० बेगड़ी सं. २

बेगड़ी—*(न०)* १. नगीने बनाने व तराशने का काम करने वाला। २. सुन्दर रूप, रंग और नस्ल वाली गाय।

बेगड़ो—*(न०)* १. श्रेष्ठ नस्ल का बैल। २. सिंह या चीते से उत्पन्न संकर जाति का एक हिंसक पशु। ३. गुजरात के बादशाह मोहम्मद का उपनाम। तत्कालीन मोहम्मद बेगड़ा। ४. भेड़िया।

बेगम—*(ना०)* १. नवाब या बादशाह की पत्नी। २. बड़े दर्जे की मुसलमान स्त्री। ३. बेगम के चित्र वाला ताश का पत्ता। *(वि०)* १. चिंता रहित। २. अज्ञान।

बेगमी—*(ना०)* बेफिक्री। *(वि०)* बेफिक्र। निश्चिंत।

बेगरज—*(वि०)* १. नाखुशामद। मानरज। २. निस्वार्थ। ३. बेपरवाह। ४. आवश्यकता रहित।

बेगरजी—*(वि०)* १. जिसको किसी की गरज न हो। जिसको किसी से मतलब न हो। निस्वार्थी। बेगरज। २. घमंडी। ३. धन, विद्या आदि के मद के कारण किसी से प्रयोजन न रखने वाला। *(ना०)* १. बेगरज होने का भाव। २. निस्वार्थता। बेमतलबी।

बेगळ—*(न०)* भूखासिंह। डोकियो।

बेगसर—*(न०)* खच्चर।

बेगार—(न०) १. राज्य द्वारा बिना पारिश्रमिक दिये कराया जाने वाला काम। २. फजियात किया जाने या कराये जाने वाला काम। ३. जबरन कराया जाने वाला काम। विष्टि। बेठ। ४. अरुचिकर काम। ५. उपाधि। झमेला। भार।

बेगारी—(न०) बेगार का काम करने वाला। बेठियो।

बेगुनाह—(वि०) १. निरपराध। २. निष्कलंक।

बेगो—दे० वेगो।

बेघर—(वि०) १. गृहहीन। बिना घर वाला। २. खानाबदोश।

बेघाट—(वि०) कुरूप। बदशक्ल।

बेचणो—(क्रि०) बेचना। विक्रय करना। वेचणो।

बेचवाळ—(वि०) बेचने वाला। बेचू। बेचणियो। बेचवाळ।

बेचवाळी—दे० बेचवाळी।

बेचाक—(वि०) १. अस्वस्थ। रोगी। २. उदास।

बेचाणा—(न०) बेचने की क्रिया। बेचान। बेचाळ।

बेचाणो—दे० बेचाणो।

बेचारो—(वि०) १. जिसका कोई साथी या सहारा न हो। २. दीन। गरीब। बिचारा।

बेचावणो—दे० बेचावणो।

बेचू—दे० बेचू।

बेचेतै—(वि०) चेतना रहित। अचेत।

बेचैन—(वि०) १. अशान्त। २. उदास। ३. दुखी। ४. अस्थिर-चित्त। व्याकुल।

बेचैनी—(न०) १. व्याकुलता। विकलता। २. उदासी। ३. दुख। ४. अशांति।

बेछाहु—(न०) १. शत्रु। २. जड़। ३. कुटिल। विछिन्न। ४. आततायी। ५. वीर। बहादुर। ६. जबरदस्त। बलवान।

बेछाड़णो—दे० वेछाड़णो।

बेज—दे० बेझ।

बेजको—दे० बेझको।

बेजड़—(न०) १. दो अनाजों का मिश्रण। २. गेहूं, चने का मिश्रण। ३. जौ, चने का मिश्रण।

(वि०) १. बिना जड़ का। मूल रहित। २. बेबुनियाद।

बेजबान—(वि०) १. गूंगा। मूक। २. दीन।

बेजर—दे० बेजड़।

बेजा—(वि०) अनुचित। बुरा। खराब।

बेजान—(वि०) १. निष्प्राण। मुर्दा। २. निर्बल। कमजोर।

बेजाब्ता—(वि०) १. नियम विरुद्ध बेकानून। २. अनुचित।

बेजाब्ताई—दे० बेजाब्ता।

बेजारो—(न०) वस्त्र बुनने वाला। बुनकर। वणकर।

बे जीवाती—(वि०) धर्मवती। बुजीवी। बे जीवी। वो जीवी।

बे जीवी—दे० बेजीवाती।

बेजो—(न०) कपड़ा बुनने का यंत्र। वेजो।

बेजोड़—(वि०) १. बिना जोड़ का। संधि रहित। अखंड। २. निरुपम। अनुपम। अद्वितीय।

बेझ—(न०) सुराख। बेझ। छींडो।

बेझको—दे० बेझ।

बेझड़—(न०) चना, जौ आदि मिला हुआ अन्न।

बेट—(न०) द्वीप। टापू।

बेट द्वारका—(न०) द्वारिका के पास एक टापू पर आया हुआ प्रसिद्ध तीर्थ स्थान। श्रीकृष्ण का निवास स्थान।

बेटा-पोता—*(न०ब०व०)* पुत्र पौत्र आदि।

बेटा-बेटी—*(न०ब०व०)* १. पुत्र-पुत्री। २. संतान।

बेटी—*(ना०)* पुत्री। कन्या।

बेटीवाळो—*(न०)* कन्या का पिता।

बेटी व्यवहार—*(न०)* विवाह-सम्बन्ध।

बेटो—*(न०)* पुत्र। सुत। पूत।

बेठ—दे० वेठ।

बेठिकाणै—*(वि०)* १. जो अपनी ठीक जगह पर न हो। २. पते बिना का।

बेठियो—दे० वेठियो।

बेड़की—*(ना०)* मिट्टी का छोटा जलपात्र। छोटा घड़ा।

बेड़णो—*(क्रि०)* ज्वार, बाजरी आदि पौधों की बालें तोड़ना। दे० वेड़णो।

बेड़लियो—दे० बेड़ो सं० १।

बेड़लो—दे० बेड़ो सं० १। दे० वेड़लो।

बेड़ा रोटी—*(ना०)* १. तवे पर तली हुई एक मसालेदार परतवाली रोटी। २. पिट्ठी भर कर बनाई मसालेदार तलुई रोटी। बेढ़ई।

बेड़िया—*(न०)* एक अछूत जाति।

बेड़ियो—दे० बेड़ो सं० १।

बेड़ी—*(ना०)* १. पांवों का एक गहना। बेड़ी। २. बंधन। ३. जंजाळ। ४. कैदी के पांवों में डाला जाने वाला एक लोह बंधन। ५. नाव।

बेड़ी-पागड़ो—*(न०)* मनुष्य के एक पांव में पहना जाने वाला चांदी का मोगरेदार चित्रित कड़ा और उसके नीचे पहना जाने वाला पागड़ा।

बेढूंको—*(न०)* १. वृक्ष के थड़ या शाखा का वह भाग जहां से दूसरी शाखा निकली हो। शाखा का संधि स्थल। २. अंगुली के पोर का उपरि संधि भाग।

बेढूंबो—*(न०)* १. वह मतीरा या ककड़ी जिसमें कीड़े पड़ गये हों। २. सड़ा हुआ मतीरा। ३. छोटा मतीरा। *(वि०)* १. मूर्ख। २. भद्दा।

बेड़ो—*(न०)* १. एक बड़ा और उसके ऊपर रखा जाने वाला छोटा घड़ा। ऐसे दो घड़ों की जोड़ी। बेहड़ो। २. नौका समूह। ३. तापा। (दे० तापो सं० १) ४. त्रिफला के मिश्रण का एक फूल। बेहड़ा। ५. सेना।

बेडोळ—*(वि०)* कुरूप। भद्दा। बेघाट।

बेढ—दे० वेढ।

बेढब—*(वि०)* १. बिना ढब का। बेढंगा। २. भद्दा। *(अव्य०)* अनुचित रूप से। बेतरह।

बेढंगो—*(वि०)* बिना ढंग का। बिना शऊर का। बेढंगा।

बेढाळ—दे० बेढंगो।

बेढाळो—दे० बेढंगो।

बेढो—*(न०)* १. जंगल। वन। २. टेढा। दे० वेढो।

बेणी—दे० वेणी।

बेणु—दे० वेणु।

बेत—*(न०)* १. संतान। २. पशु। चौपाया। ३. मौका। अवसर। ४. छड़ी।

बेतमीज—*(वि०)* अभद्र। फूहड़। बेअदब।

बेतरतीब—*(वि०)* १. क्रम रहित। २. अव्यवस्थित।

बेतरह—*(अव्य०)* अनुचित रूप से। बेढब। *(वि०)* बहुत।

बेतरीके—*(अव्य०)* बिना तरीके के।

बेतलब—*(वि०)* १. कर मुक्त। २. जिसको बुलाया न गया हो।

बेतंगी—*(वि०)* १. जिस घोड़ी के दो तंग कसे हुए हों। २. बिना तंग वाली। ३. जिसके तंग नहीं कसा हुआ हो। ४. जो अभावावस्था से मुक्त हो गया हो।

५. जिस घोड़ी पर जीन, काठी आदि कसी हुई न हो।

बेताब—*(वि०)* १. आतुर। अधीर। २. बेचैन। २. जिसको आंच नहीं दी गई हो। बेताप। ४. ताप रहित।

बेतार—*(न०)* १. रेडियो। २. बिना तार का। वायरलेस।

बेताळ—*(वि०)* ताल रहित। *(न०)* बेंताल। भाट। बंदी।

बेतुकी—*(वि०)* असंगत।

बेतुको—*(वि०)* जिसमें कोई तुक न हो। असंगत। २. बेढंगा। बेतुका।

बेथाग—*दे०* अथाघ।

बेदखल—*(वि०)* जिसका अधिकार हटा दिया गया हो। अधिकार च्युत।

बेदखली—*(ना०)* १. संपत्ति पर से अधिकार का हटाया जाना। २. बेदखल होने का भाव।

बेदबी—*(ना०)* बड़ों का सम्मान न करने की भावना। बेअदबी। उद्दण्डता।

बेदम—*(वि०)* १. अशक्त। २. मुर्दा।

बेदाग—*(वि०)* १. निष्कलंक। २. निरपराध। बेकसूर। ३. जिस पर कोई धब्बा या दाग न हो। निर्मल।

बेदाम—*(वि०)* मुफ्त।

बेदिल—*(वि०)* उदास। खिन्नचित्त। अप्रसन्न।

बेदी—*दे०* वेदी।

बेदुरुस्त—*(वि०)* १. अनुचित। २. अशुद्ध। ३. अस्वस्थ। ४. खंडित।

बेध—*दे०* वेध।

बेधड़क—*(वि०)* निःसंकोच। निधड़क। *(अव्य०)* १. बिना संकोच के। २. निडर हो करके।

बेधाक—*(क्रि०वि०)* बिना संकोच के। निडर होकर। *(वि०)* निडर। निर्भय। २. निःसंकोच।

बेधो—*(न०)* १. झगड़ा। टंटा। २. रुकावट। ३. अन्तर। भेद। फर्क। ४. गैर समझ।

बेनसीब—*(वि०)* प्रारब्धहीन। कमनसीब।

बेनागा—*(क्रि०वि०)* १. बिना रुकावट के। २. बिना गैर हाजिर रहे। रोज।

बेनाम—*(वि०)* गुमनाम।

बेनिसाफ—*दे०* बेइंसाफ।

बेनिसाफी—*दे०* बेइंसाफी।

बेनोई—*दे०* बहनोई।

बेपख—*(न०)* १. दोनों पक्ष। २. स्त्री के पीहर और ससुराल के दोनों कुल। ३. किसी चांद्र मास के सुदि और वदि दोनों पक्ष।

बेपत—*(वि०)* १. बिना भरोसे का। २. बेइज्जत।

बेपता—*(वि०)* बिना ठिकाने का।

बेपरवाह—*(वि०)* १. जिसे कोई फिक्र न हो। बेफिक्र। निश्चिंत। निश्चिंत। २. निर्भय। ३. कंजूस। ४. उदार।

बेपरवाही—*(ना०)* १. बेफिक्री। निश्चिन्तता। निश्चिंताई। २. उदारता। ३. कंजूसी।

बेपहोर—*(न०)* दपहर। मध्यान्ह।

बेपार—*(वि०)* अपार। *(न०)* दुपहर का समय।

बेपारो—*(न०)* दुपहर में किया जानें वाला जलपान। बुपारो।

बेपींदो—*(वि०)* १. बिना पैंदे का। २. अविश्वसनीय।

बेपुड़ी—*(वि०)* १. दोहरी। दो परत की। २. दोनों पक्षों में मिलने की या उनको खुश रखने की (युक्ति या बातचीत)। ३. दोनों पक्षों को भिड़ाने की (बात)। ४. दोनों प्रकार की।

बेपैठ—दे० बेपैठ ।

बेफाम—दे० बेफाम ।

बेफ़हम—(वि०) १. ख्याल रहित । २. ध्यान रहित । बेसमझ ।

बेफायदा—(वि०) १. जिसमें कोई लाभ न हो । व्यर्थ ।

बेफार—(ना०) दुपहर ।

बेफारखा—(न०) दुपहर का समय ।

बेफारो—दे० बेपारो ।

बेफिकर—(वि०) निश्चित । बेफिक्र ।

बेफिकरी—(ना०) १. निश्चितता । बेफिक्री । २. निर्भयता ।

बेफिकरो—(वि०) १. निश्चित रहने वाला । २. लापरवाह । ३. निडर ।

बेब—(न०) १. भाग्य । किस्मत । २. वीर्यस्व ।

बेबस—(वि०) १. विवश । लाचार । २. पराधीन । ३. परवश ।

बेबसी—(ना०) विवशता ।

बेबाक—(वि०) चुकता किया हुआ ।

बेबाह—(वि०) १. सुन्दर । २. बलवान । (न०) सेना ।

बेबुनियाद—(वि०) १. निराधार । बगैर बुनियाद । २. काल्पनिक । ३. निर्मूल ।

बेभान—(वि०) अचेत । बेहोश ।

बेभाव—(वि०) १. अत्यधिक । २. बिना भाव का ।

बेम—दे० वेम ।

बेमन—(अव्य०) १. बिना मन के । बिना उत्साह के । २. मन के उपरांत । इच्छा के विरुद्ध । (वि०) खिन्नचित्त ।

बेमरम्मत—(वि०) बिना मरम्मत का ।

बेमालूम—दे० बेमालुम ।

बेमेदा—(वि०) १. असीम । अमर्यादित । २. अपार । अत्यंत ।

बेमेळ—(वि०) १. बेजोड़ । २. बिना मिलावट का । शुद्ध । (न०) १. शत्रुता । २. प्रीति रहित । अप्रीति ।

बेमोके—(अव्य०) बिना मौके पर ।

बेमौत—(अव्य०) बिना मौत आये (मरना) ।

बेमौसम—(क्रि०वि०) बिना मौसम के । (न०) अनुपयुक्त समय । असमय ।

बेय—(वि०) १. दोनों । २. दो । बोय । बे ।

बेर—(ना०) १. देर । विलंब । २. समय । वेला । ३. अवसर । मौका । (न०) बदरीफल । बेर । बोर ।

बेरक—(न०) हाथी । गज ।

बेरजो—(न०) चीड़ वृक्ष का गोंद ।

बेरस—(वि०) १. नीरस । २. बेस्वाद । ३. नाराज । (न०) शत्रुता ।

बेरहम—(वि०) निर्दयी । निर्दय । निष्ठुर ।

बेरहमी—(ना०) १. निर्दयता । २. क्रूरता ।

बेराजी—दे० बेराजी ।

बेराह—(वि०) पथभ्रष्ट । (न०) १. कुमार्ग । २. हिन्दू धर्म और मुसलमान धर्म ।

बेरी—(ना०) १. छोटा कुआं । बेरी । २. बेर का वृक्ष । बोरड़ी ।

बेरुख—दे० बेरुख ।

बेरुखो—(वि०) १. जो अवसर पर काम नहीं आता हो । २. स्वार्थी । ३. उपेक्षा वाला । ४. अरुचिवाला ।

बेरूप—दे० बेरूप ।

बेरो—(न०) १. पता । जानकारी । २. खबर । ३. सूचना । ४. अनुभव । ५. पहचान । ६. भेद । रहस्य । ७. कुआं । कूप । बेरो ।

बेरोक—(क्रि०वि०) बिना रुकावट के ।

बेरोक टोक—(अव्य०) १. बिना किसी खटके के । २. बिना रोक-टोक के ।

बेरोजगार—*(वि०)* जिसके पास कोई रोजगार न हो। बेकार। २. बिना पारिश्रमिक।

बेरोजगारी—*(ना०)* १. बेकारी। २. बिना पारिश्रमिक का काम। ३. बेगार। बेठ।

बेरौनक—*(वि०)* शोभाहीन

बेल—*(ना०)* १. सहायता। मदद। २. लता। बेल। ३. वंश। कुल। ४. तरफ। ओर। ५. दो। युग्म। ६. एक आभूषण। बेल। ७. एक वृक्ष। ८. कपड़े आदि पर बनी हुई फूल पत्तियों की पंक्ति। ९. बिलाड़े की आईमाता के नाम का बांधा जाने वाला डोरा।

बेलख—*(ना०)* १. बाण। २. बाण के पीछे का परों वाला सिरा। शरपुंख।

बेलगाम—*(वि०)* १. मुंह जोर। सरकश। २. लगाम रहित।

बेलच—*(ना०)* सहायता। मदद।

बेलचो—*(ना०)* १. कुदाली। २. ऊंट की दोहरी नकेल और उसकी दोहरी रस्सी।

बेलड़ी—*(ना०)* बेल। वल्ली। लता। *(वि०)* दो लड़ों वाली। दोलड़ी।

बेलज—*(ना०)* मिर्च। *(वि०)* निर्लज्ज।

बेलण—*(ना०)* रोटी बेलने का एक उपकरण। बेलन। बेलण। *(ना०)* बेली का नारी रूप। सहेली। साथण।

बेलणियो—दे० बेलणियी।

बेलणी—दे० बेलणी।

बेलणो—*(क्रि०)* लोई को चकलोटे पर रख कर (रोटी, पूरी बनाने के लिये) बेलन से पतला बनाना। बेलना। बेलणो। बटणो।

बेलदार—*(ना०)* मिट्टी, पत्थर आदि खोदने-तोड़ने का काम करने वाली एक जाति व व्यक्ति। *(वि०)* जिस पर बेल बूंटी बनी हो।

बेलदारी—*(ना०)* १. बेलदार जाति की स्त्री। २. बेलदार का काम। ३. बेल बूंटी का काम।

बेळस—*(वि०)* दो। *(क्रि०वि०)* दूसरी बार। *(ना०)* १. मदद। सहायता। २. ऊंट की नकेल में बांधी जाने वाली दोहरी रस्सी। बोवड़ी मुंहरी। ३. ऊंट पर दो जनों की सवारी। बेळास।

बेलगो—दे० वेलगो।

बेळा—*(ना०)* १. समय। बेला। बेळा। २. अवसर। मौका। ३. ऊंट, घोड़े आदि पर दो जनों की सवारी। ३. दो सवारी की संज्ञा। ४. देर। विलंब। ५. फुरसत।

बेला—*(वि०)* दो। दे० वेला। *(ना०)* १. एक पुष्प। २. बेसन की मसाला युक्त लंबी लोइया।

बेळा-कुबेळा—दे० वेळा-कुवेळा।

बेलाग—*(वि०)* १. पक्षपात रहित। २. कर मुक्त। दे० वेलाग। ३. स्पष्ट। ४. जिसके कोई सहारा न हो। निराधार (वस्तु)।

बेळा-पुळ—दे० वेळा-पुळ।

बेलाभ—दे० वेलाभ।

बेळायो—*(वि०)* वह जिस पर दो जनें बैठे हों (ऊंट या घोड़ा)।

बेळास—दे० वेळा सं० ३।

बेळासर—दे० वेळासर।

बेलिहाज—*(वि०)* १. बेमुरव्वत। २. निर्लज्ज।

बेली—*(ना०)* १. साथी। संगी। २. मित्र। ३. लोग। व्यक्ति। ४. सैनिक। *(अव्य०)* आत्मीयता सूचक एक शब्द या संबोधन। *(वि०)* सहायक।

बेलीटी—*(ना०)* १. वर्णमाला सिखाने के पूर्व लिखाई और सिखाई जाने वाली एक मंगलाकृति। २. बालकों के सिखाने

की प्रथम पट्टी। इसे बिलटी, बिलाटी, बेलंटी, बेलींटी, भळै, भौळै भी कहा जाता है। इसकी बनावट से सभी वर्ण लिखने आ जाते हैं। स्वरों के पहिले लिखे जाने वाले 'ा ए ं ा' इस मांगलिक आकृति के ऊपर यह नाम करण किया गया कहा जाता है। दोनों खड़ी रेखाओं के बीच में जो वक्राकार आकृति है उसे 'भळै' 'वळ है' कहा जाता है, (रेखा में बंकना है) इन दो शब्दों की अपभ्रंश संज्ञा है। इस 'भळै' के बीच में 'मींडो' (शून्य) नाम की जो वर्तुलाकृति लिखी जाती है वह पूर्ण ब्रह्मस्वरूपिनी सरस्वती तथा तेजोरूप व्याहृति का 'ॐ' स्वरूप माना जाता है। २. वर्णमाला का पहला दंगलाक्षर। ३. बाल शिक्षण की प्रथम पट्टी के आदि की दो खड़ी पाई रूपी मंगलाकृति। ४. भारतीय भाषाओं में लेखन-प्रारंभ के पूर्व दो खड़ी रेखाओं के रूप में प्राचीन काल से लिखने में आता रहा हुआ एक मंगल प्रतीक। ५. पद्य तथा प्राचीन गद्य की पंक्ति तथा वाक्य के अन्त में दिया जाने वाला (इति सूचक) दो खड़ी रेखाओं का पूर्ण विराम-चिह्न।

बेलीड़ो—*(न०)* साथी। मित्र।

बेलीपो—*(न०)* १. भाईचारा। २. मित्रता।

बेळू—*दे०* वेळू।

बेळो—*(न०)* एक साथ जन्मे हुये दो बालक।

बेलो—*(न०)* १. दो दिन का उपवास। २. उपवास का दूसरा दिन। ३. एक वार।

बेवकूफ—*(वि०)* नासमझ। निर्बुद्धि। मूर्ख।

बेवक्त—*(क्रि०वि०)* १. असमय। २. कुसमय। बेवखत।

बेवटो—*दे०* बपटो।

बेवटो हळ—*दे०* बपटो।

बेवड़—*दे०* दोवड़।

बेवड़ियो—*दे०* दोवड़।

बेवड़ी—*(वि०)* दोहरी। *दे०* दोवड़।

बेवड़ो—*(वि०)* १. दुहरा। दो परत का। २. दुगुना। ३. झुका हुआ। *दे०* बेहड़ो।

बेवणी—*दे०* वेवणी।

बेवतन—*(वि०)* १. जिसका घर और देश न हो। २. बेघरबार।

बेवफा—*(वि०)* १. अविश्वसनीय। २. कृतघ्न।

बेवळ—*(अव्य०)* १. दोनों ओर। २. दोनों ओर से। ३. दोनों ओर का। ४. आराम से। सुखपूर्वक।

बेवलो—*दे०* बेई।

बे वळो—*दे०* बेवळ।

बेवा—*(ना०)* विधवा।

बेवाई—*दे०* वेवाई।

बे-वीसी—*(वि०)* चालीस। दो बार बीस। बो बीसी।

बेवै—*(वि०)* दोनों।

बेशऊर—*दे०* बेसऊर।

बेशक—*(क्रि०वि०)* निस्सन्देह।

बेश कीमती—*(वि०)* मूल्यवान।

बेशर्म—*(वि०)* निर्लज्ज।

बेशर्मी—*(ना०)* निर्लज्जता।

बेशुमार—*(वि०)* असंख्य। अगणित।

बेस—*दे०* बेस।

बेसऊर—*(वि०)* १. मूर्ख। २. असभ्य। फूहड़। ३. गंवार। ४. अयोग्य।

बेसक—*दे०* बेशक।

बेसण—*दे०* बेसण।

बेसबब—*(अव्य०)* अकारण। बिना कारण।

बेसबर—*(वि०)* १. बेसब्र। अधीर। २. असंतोषी।

बेसबरी—*(ना०)* अधीरता।
बेसमझ—*(वि०)* नासमझ। मूर्ख।
बेसमझी—*(ना०)* मूर्खता। नासमझी।
बेसमझू—*दे०* बेसमझ।
बेसर—*दे०* बेसर।
बेसरम—*दे०* बेशर्म।
बेसरमी*(ना०)* निर्लज्जता। बेशर्मी।
बेसवार—*दे०* बेसवार।
बेसंदर—*दे०* बेसन्नर।
बेसाज—*(वि०)* १. बिना साज समान के। २. बिना वाद्य-यंत्रों के।
बेसी—*(वि०)* १. विशेष। अधिक। २. आधिक्य।
बेसुध—*(वि०)* अचेत। बेहोश। बेभान।
बेसुधी—*(ना०)* अचेतनता। बेहोशी।
बेसुमार—*दे०* बेशुमार।
बेसुरो—*(वि०)* १. जो ताल, स्वर से नहीं गाता हो। २. जो नियमित स्वर में न हो।
बेसूद—*(वि०)* बिना ब्याज।
बेसोटो—*(न०)* आसन।
बेस्वाद—*(वि०)* १. स्वाद रहित। २. खराब स्वाद का।
बेस्वादो—*दे०* बेस्वाद।
बेहक—*(वि०)* १. जो हक का न हो। २. नाहक। फजूल। ३. अनुचित।
बेहड़ो—*(न०)* १. सिर पर उठाये जाने वाले पानी के घड़े के ऊपर रखा जाने वाला पानी का छोटा घड़ा। २. घड़ा और उसके ऊपर छोटा घड़ा। ३. बहेड़ा।
बेहद—*(वि०)* १. असीम। अपरिमित। २. बहुत अधिक। ३. अमर्यादित। ४. असंख्य।
बेहया—*(वि०)* लज्जाहीन। निसरमो।
बेहरी—*(न०)* १. घोड़ा। २. पृथ्वी। *(वि०)* १. दूसरी बार। २. दुहरा।
बहरो—*(क्रि०वि०)* १. दूसरी बार। २. दोहरा।
बेहवाल—*दे०* बेहाल।
बेहाल—*(वि०)* १. जिसकी दशा अच्छी न हो। दुर्दशा ग्रसित। २. अचेत। बेहोश। ३. दुखी।
बेहिम्मत—*(वि०)* १. असाहसी। २. डरपोक।
बेहिसाब—*(वि०)* १. जिसकी कोई गिनती नहीं की जा सकती हो। २. अगणित। असंख्य। बेशुमार।
बेही—*(वि०)* १. दोनों। दोनों ही। २. दो। *दे०* बेई।
बेहुं—*(वि०)* दोनों।
बेहूदो—*(वि०)* १. निकम्मा। २. असभ्य। अशिष्ट। ३. व्यर्थ।
बेहूंगो—*दे०* बेऊंगो।
बेहोश—*(वि०)* अचेत। मूर्छित। बेसुध।
बेहोशी—*(ना०)* अचेतनता। मूर्छा।
बेहोस—*दे०* बेहोश।
बेहोसी—*दे०* बेहोशी।
बें—*(ना०)* बकरी के बोलने की आवाज।
बेंचणो—*दे०* वेंचणो।
बेंत—*दे०* वैंत।
बेंतणो—*दे०* वैंतणो।
बेंताणो—*दे०* वैंतावणो।
बेंताळीस—*दे०* बेंयाळीस।
बेंतावणो—*दे०* वेंतावणो।
बेंयाळीस—*(वि०)* चालीस और दो। *(न०)* बयालीस की संख्या '४२'।
बेंयासी—*(वि०)* अस्सी और दो। *(न०)* अस्सी और दो की संख्या। '८२'
बै—*(सर्व०)* १. वै। २. उन। ३. उस। ४. उसने।
बैकुंठ—*दे०* वैकुंठ।
बैकूंटी—*दे०* वैकुंठी।

बैठक—(ना०) १. बैठने की क्रिया। २. बैठने की मुद्रा। ३. वल्लभ संप्रदाय का कृष्ण मन्दिर। ४. महाप्रभुजी का मंदिर। ५. बैठने का आसन। ६. बैठने की जगह। ७. आने जाने वाले तथा घर वालों के लिये ऊठने बैठने का घर का कमरा। ८. राजसभा में बैठने का अधिकार व स्थान। ९. एक कसरत। १०. शरीर का वह अंग जो बैठने समय जमीन पर टिके। चूतड़। ६ पृष्ठ। ११. गुदा। १२. किसी व्यवस्थित सभा के अधिवेशन का भरा जाना। १३. हथाई। चौपाल। १४. मूर्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी। १५. सोहबत। १६. कपड़ा बुनते समय जुलाहे के बैठने का स्थान। १७. चुनाव क्षेत्र।

बैठकियो—दे० बैठको।

बैठकी—दे० बैठको।

बैठको—(ना०) १. पीढा। पाटा। २. आसन। बिछावन। पीढो। बैसणो।

बैठणो—(क्रि०) १. बैठना। आसन जमाना। २. सवारी करना। ३. समतल के किसी भाग का नीचे धंस जाना। ४. विद्यमान होना। जीवित होना। ५. तोल में निश्चित परिमाण ज्ञात होना। ६. फिट होना। ७. तरल पदार्थ में मिली हुई वस्तु का तल में जम जाना। ९. पिचक जाना। १०. अस्त होना। ११. बेरोजगार रहना। १२. उम्मेदवारी त्यागना। १३. पतन होना। (ना०) १. विद्यमानता। २. बैठको। ३. मृत व्यक्ति के यहां संवेदना प्रगट करने को जाना।

बैठाड़णो—(क्रि०) १. बिठाना। बिठलाना। २. किसी वस्तु को (फूल पत्ती आदि के) गुंचे में ठोक कर उसके सदृश्य तैयार करना। ३. सवारी कराना। ४. तरल पदार्थ में मिली हुई वस्तु को (तल में जमाना। ५. फिट करना। जमाना। ६. सेजगढ़ से हटाना। ७. अपनी ओर झुका लेना। ८. बैठने के लिये मजबूर करना।

बैठाणो—(ना०) मरे हुये के पीछे शोक मनाने वाले अपने अपने घरों के लिये तम्बू डालकर बारह दिन तक घर वालों का बैठे रहना। दे० बैठावणो।

बैठावणो—दे० बैठाड़णो।

बैड़—दे० बैड़।

बैड़ो—(वि०) १. कठोर, कर्कश। अरुचिकर तथा अप्रिय (वाणी)। २. विकट। ३. जबरदस्त। ४. अक्खड़। ५. कटु। कड़ुआ (स्वाद)।

बैण—दे० बैण।

बैणची—(ना०) बैठने का एक आसन। पीढा। बैणसी।

बैत—(ना०) १. पद्य। २. काव्य। कविता। दे० बैत।

बैद—दे० बैद्य।

बैदगी—दे० बैद्यक।

बैधो—(ना०) १. झगड़ा। टंटा। २. संशय। ३. फर्क। अंतर।

बैन—(ना०) १. बहन। २. वचन। कथन।

बैनै—(सर्व०) उसको।

बैनोई—(ना०) बहनोई।

बैभव—दे० बैभव।

बैर—(ना०) १. स्त्री। नारी। २. पत्नी। ३. शत्रुता। दुश्मनी। बैर।

बैरक—(ना०) पताका। धजा।

बैरखो—दे० बोरखो।

बैरण—(ना०) १. वह स्त्री जो शत्रुता रखे। बैरिन। बैरण। २. सौत। सावकी।

बैरणो—दे० बैरणो।

बैरभाव—दे० बैरभाव।

बैरंग—*(वि०)* १. बिना टिकट लगा। (डाकपत्र) २. कुछ भी लिये बिना अथवा कमाये बिना, जैसा था वैसा ही लौट आना। खाली हाथ।

बैराइयाँ—दे० वैराइयां।

बैराई—दे० वैराई।

बैराग—दे० वैराग्य।

बैरागर—वैरागर।

बैरागी—दे० वैरागी।

बैरियो—*(न०)* स्त्रीवश पुरुष। स्त्रैण। जोरू का गुलाम। *(वि०)* स्त्रियों के जैसे स्वभाव तथा लक्षणों वाला। **मायड़ियो**। २. स्त्रियों में रहने वाला।

बैरी—*(न०)* शत्रु। दुश्मन। **बैरी**। दे० बैर।

बैल—*(न०)* गोजाति का बधिया किया हुआ नरपशु जो बैलगाड़ी और हल में जोता जाता हैं। **बळद**।

बैलगाड़ी—*(ना०)* बैलों द्वारा खींची जाने गाड़ी। **बळदागाडी**।

बैलियो—*(न०)* बैल।

बैवणो—*(क्रि०)* १. बहना। २. बैठना।

बैवाड़णो—दे० बैठाड़णो।

बैस—*(न०)* एक प्राचीन क्षत्रिय वंश। दे० वैश्य।

बैसक—*(ना०)* १. गुदा। २. बैठक :

बैसणियो—दे० *(न०)* सं० १ *(वि०)* बैठने वाला।

बैसणी—*(ना०)* छोटा पीढा। **मौणची**। **पीढो**।

बैसणो—*(क्रि०)* दे० बैठणो। *(न०)* १. मूंज, निवार आदि से बुना हुआ पायेदार एक जने के बैठने का एक चौकोर आसन। पीढा। २. रहने का स्थान। निवास स्थान। ३. राजधानी।

बैसाकू—*(वि०)* १. सवारी का (ऊंट, गाड़ी आदि)। २. सवारी करने वाला। वाहन पर बैठने वाला। **बैसार**। **बैसारू**।

बैसाख—दे० वैशाख।

बैसाखी—*(ना०)* लंगड़े आदमी के चलने के लिये बगल में रखा जाने वाला डंडा। दे० वैशाखी।

बसाड़णो—दे० बैठाड़णो।

बैसाणणो—दे० बैठाड़णो।

बैसार—दे० बैसारू।

बैसारणो—दे० बैठाड़णो।

बैसारू—*(वि०)* वाहन तथा सवारी पर बैठने वाला। दे० बैसाकू।

बैसारू गाड़ी—*(ना०)* यात्री गाड़ी। मुसाफिर गाड़ी।

बैंक—*(न०)* वह अर्थ संस्था जिसमें रुपये जमा कराये जाते हैं और ब्याज पर उधार दिये जाते हैं।

बैंगण—*(न०)* बैंगन। वृन्ताक। **बिताक**। **रींगणो**।

बैंगणी—*(वि०)* १. बैंगन के रंग का। २. बैंगन संबंधी।

बैंच—*(न०)* १. लोहे, लकड़ी, सीमेंट आदि की लम्बी चौकी। २. न्यायालय। ३. न्यायाधीश का आसन।

बैंचणो—*(क्रि०)* १. बांटना। वितरण करना। २. भाग करना। हिस्सा करना।

बैंड—*(न०)* अंग्रेजी बाजा बजाने वालों का दल।

बैंडाक—*(न०)* घोड़ा।

बैंडूर—*(न०)* घोड़ा।

बैंडो—दे० बैंडो।

बैंत—*(ना०)* १. एक लता। बेंत। २. छड़ी। ३. बालिश्त। दे० बैंत।

बैंतणो—दे० बेंतणो।

बैंताळीस—दे० बेंयाळीस।

बैंतपुरण—*(न०)* १. सवारी। २. सवारी का साधन।

बैंदोई—दे० बहनोई।

बो—*(सर्व०)* वह। बो। *(न०)* बकरा। दे० बोह।

बोइंतर—*(न०)* बहत्तर की संख्या '७२'। *(वि०)* सित्तर और दो। बहत्तर।

बोइंतरो—*(न०)* सदी का बहत्तरवाँ वर्ष।

बोक—*(न०)* १. बकरा। २. मुंह। ३. छेद। ४. मूर्खता। *(ना०)* पानी पीने के लिये मुंह के आगे बनाया जाने वाला हथेली का एक सम्पुट। अंजली। बूक। *(वि०)* मूर्ख। बेवकूफ।

बोकड़ो—*(न०)* बकरा।

बोकणो—*(क्रि०)* बकरे का बोलना।

बोकनो—*(न०)* १. मुंह। २. कान और आँख के बीच का स्थान। कनपटी। गंडस्थल। कनफड़ो।

बोखळाणो—*(क्रि०)* १. क्रोध या आवेश में अंडबंड बकना। बौखलाना। संतुलन खोना। २. क्षुब्ध होना।

बोखलियो—दे० बोखो।

बोखलो—दे० बोखो।

बोखापणो—दे० बोखास।

बोखास—*(न०)* बोखापना।

बोखी—*(वि०)* टूटे हुये दांतों वाली।

बोखो—*(वि०)* १. बिना दांतों वाला। पोपला। २. टूटे हुये दाँतों वाला। ३. दंत विहीन।

बोगणो—*(न०)* १. सोने-चांदी के पत्रों पर फूल पत्तियें बिठाने का अनेक प्रकार की आकृतियों का एक सांचा। २. चौड़े मुंह की बटलोई। बोघरणो।

बोगी—*(ना०)* १. दोनों ओर मुंह वाला एक साँप। चुकरैंड। २. आठ पहियों वाला रेल का डिब्बा। डिब्बा। *(वि०)* मूर्खा।

बोगी रो भाटियो—*(अव्य०)* एक गाली।

बोगो—*(न०)* दो मुंह वाला सर्प। *(वि०)* मूर्ख।

बोघरणो—दे० बोगणो सं० २।

बोघलो—*(वि०)* मूर्ख। बुद्धिहीन।

बोघो—*(वि०)* मूर्ख। मंदबुद्धि।

बोचणो—*(क्रि०)* १. काटना। २. कतरना। ३. दांत से काटना। ४. बोसा देना।

बोची—*(ना०)* १. चुंबन। बोसा। झालो। २. दाँत चुभाना। दांत से काटना।

बोछरडाई—*(ना०)* १. दूसरों के बीच में व्यर्थ और आवश्यकता से अधिक बातें करने की आदत। २. उच्छृंखलता। ३. चंचलता। ४. अविनय। ५. लबाड़पना। ६. अशिष्टता।

बोछरडो—*(वि०)* १. अविनय बोलने वाला। २. अशिष्ट उत्तर-प्रत्युतर करने वाला। ३. अधिक जबान करने वाला। लबाड़। ४. उत्पाती। ५. उच्छृंखल। ६. चंचल।

बोछाड़—*(ना०)* १. हवा के तेज झोंके से घर (के द्वार) में बरसने वाली वर्षा की बूंदें। २. हवा के झोंके से आने वाली झड़ी। बौछार। ३. शस्त्रों की झड़ी।

बोझ—*(न०)* १. भार। वजन। २. जिम्मेदारी। ३. भारीपन। गुरुत्व। ४. रुचि के विरुद्ध काम। ५. बढ़े हुये खर्च की चिंता। ६. गठरी।

बोझड़ो—दे० बूझो।

बोझा—दे० बूझा।

बोझो—*(न०)* १. दे० बोझ। २. दे० बूझो।

बोट—*(न०)* १. आरा से काटा हुआ लकड़ी का टुकड़ा। २. टुकड़ा। ३. जहाज। ४. किश्ती।

बोटणो—*(क्रि०)* १. टुकड़ा करना। काटना। २. तोड़ना। ३. छूना। स्पर्श करना। ४. भोज्य पदार्थ को जूठन का हाथ लगा देना। ५. कौए का पानी के घड़े आदि पर बैठ जाना तथा उसमें चोंच डुबा देना।

बोटी—*(ना०)* १. टुकड़ा। २. मांस का टुकड़ा।

बोटीजणो—*(क्रि०)* १. स्पर्श होना। २. जूठा हाथ लग जाना। ३. काटा जाना। ४. तोड़ा जाना।

बोटी बोटी - *(अव्य०)* टुकड़े-टुकड़े (शरीर के)।

बोड़णो—*(क्रि०)* १. डुबाना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। ३. पागल होना।

बोड़ा—*(ना०)* रैगर जाति, उसकी कोई शाखा या भेद।

बोड़ाणो—*(क्रि०)* १. डुबवाना। २. नष्ट करवाना। बरबाद करवाना। ३. उन्मत्त बनाना।

बोडाणो—*(ना०)* गुजरात का एक प्रसिद्ध कृष्णभक्त जिसकी एकनिष्ठ भक्ति के वश में होकर श्री द्वारिकाधीश द्वारका से डाकोर आये थे।

बोडियो—*(वि०)* टूटे हुए दांत वाला (हाथी)।

बोढाणो | *(क्रि०)* १. चुटकी भरना। चुटकी से चमड़ी को ऐंठना या तोड़ना। २. नाश करना। ३. रखना। धारण करना।

बोणो—दे० बोवणो।

बोतड़ो—दे० रड़बो।

बोतल—*(ना०)* दवा, तेल आदि भरने का कांच का बना लम्बी गरदन का एक बरतन। शीशा। बाटली। सीसो।

बोता—*(न०व०वि०)* तीन की संख्या का सूचक।

बोताम—*(ना०)* बटन।

बोतो—*(ना०)* अनाज नापने के समय पायली, माणा आदि के मुंह पर दोनों हाथ रखने का एक ढंग, जिससे अनाज कुछ अधिक लिया जा सके। *(वि०)* १. डरपोक। २. कायर। ३. कमजोर। बोदो।

बोथ—*(ना०)* नाप तोल का अनुमान।

बोथणो—*(क्रि०)* नाप तोल का अनुमान करना।

बोथा सारु—*(मुहा०)* शक्ति के अनुसार।

बोथो—*(ना०)* १. सामर्थ्य। शक्ति। २. बिसात। हैसियत। बूतो। *(वि०)* जिसकी धार कुंद हो गई हो। भोंथरा। भोंटा। *(ना०)* बोथी। दे० बोतो।

बोदरी—*(ना०)* एक प्रकार का शीतला रोग।

बोदलो—दे० बोदो। *(ना०)* एक जाति का ऊंट।

बोदापणो—*(ना०)* १. कमजोरी। २. पुरानापन। ३. कायरता। ४. अयोग्यता। ५. ढीलापन।

बोदो—*(वि०)* १. कमजोर। अशक्त। २. जो अन्दर से खोखला हो गया हो। ३. निकम्मा। ४. जीर्णशीर्ण। ५. कायर। डरपोक। ६. अयोग्य। नालायक। ७. भ्रष्टाचारी। ८. सुस्त। ढीला। ९. गावदी। १०. सड़ा हुआ। ११. फटा हुआ। १२. पुराना। (ना० बोदी)।

बोध *(ना०)* १. ज्ञान। जानकारी। २. समझ। बुद्धि। ३. विवेक। ४. मति। ५. उपदेश। ६. अर्थ। आशय। ७. बुद्ध।

बोधक—*(वि०)* बोध करने वाला। उपदेशक।

बोधणो—*(क्रि०)* १. समझाना। जनाना। २. ज्ञान देना। उपदेश करना। ३. जताना।

बोध निधान—*(वि०)* बुद्धिमान । समझदार ।

बोपार—दे० व्यापार ।

बोपारी—दे० व्यापारी ।

बोफो—*(वि०)* बेवकूफ । मूर्ख । **डोफो** ।

बोबाड़ा—*(नं०)* जोर से आवाज करने या चिल्लाने की क्रिया ।

बोबियो—*(नं०)* १. कांटी तथा गोखरू नामक वनस्पति का फल । २. स्तन । ३. कांटे का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है ।

बोबो—*(नं०)* स्तन । थण । **छाती** ।

बोभर—दे० भोभर ।

बोभरो—दे० भोभरो ।

बोम—*(नं०)* आकाश । व्योम । **आभो** ।

बोम तिलक—*(नं०)* सूर्य । **सूरज** ।

बोमंगी—*(वि०)* १. आकाश में उड़ने वाला । आकाशगामी । **वोमंगी** । २. उच्चगशयी । ३. वीर । बहादुर । *(नं०)* पक्षी । **पंखी** ।

बोमी—*(नं०)* व्योमी । पक्षी ।

बोय—*(ना०)* १. बदबू । दुर्गन्ध । २. गंध । ३. चिल्लाहट । ४. जोर से बोलना । *(अव्य०)* दुख, शोक तथा रुदन सूचक शब्द ।

बोय-बोय—*(नं०)* १. जोर से बोलने का भाव । २. हा-हू । शोरगुल । ३. जोर से रोना । बोय-बोय । हाय-हाय ।

बोय देणो—*(मुहा०)* अवनत स्थिति में ला पटकना । बरबाद कर देना । सत्यनाश कर देना । बोय-बोय करें ऐसी स्थिति में पटक देना ।

बोर—*(नं०)* १. स्त्रियों का एक शिरोभूषण । **रखड़ी** । २. बेर । बोर । बदरीफल ।

बोरखो—*(नं०)* १. हाथ का एक आभूषण । भुजबंध । २. बारह, अठारह या सतांईस मनकों की एक माला । ३. अक्षर जमाने की पाटी पर लिखने की सफेद रोशनाई (खड़िया मिट्टी) की दवात । **बोळखो** । ४. दवात । बोरका । ५. प्रति समय हाथ में रखी रहने वाली एक जपमाला ।

बोरटी—दे० बोरड़ी ।

बोरड़ी—*(ना०)* बेर का वृक्ष । बदरी वृक्ष । **बेरी** । **बोरटी** ।

बोरणो—दे० बुहारणो ।

बोरलो—दे० बोर सं० १ ।

बोरसी—*(ना०)* अंगीठी । **सिगड़ी** ।

बोरियो—*(नं०)* १. स्त्रियों के सिर का एक गहना । **बोर** । २. कुरते की घुंडी । ३. बेर । बदरीफल । **बोर** ।

बोरी—*(ना०)* अनाज आदि भरने का टाट का थैला ।

बोरूपियो—दे० बहुरूपियो ।

बोरो—*(नं०)* टाट या जट का बड़ा थैला ।

बोळ—*(ना०)* १. बहरापन । बधिरता । २. रंग । ३. लाल रंग । ४. सराबोर । तर बतर ।

बोल—*(नं०)* १. शब्द । आवाज । २. कथन । वाणी । ३. वचन । कौल । ४. उच्चारण । ५. मृदंग, ढोलक आदि वाद्यों की ध्वनि । ६. वाद्य के निश्चित तथा बंधे हुये शब्द । ७. किसी गायन की एक कड़ी । ८. यश । ९. काव्य । १०. कीर्तिकाव्य । ११. कटु वचन । १२. उपदेश ।

बोळक—*(नं०)* जल चक्र ।

बोलकणो—*(वि०)* १. बड़ों के सामने जवाब करने वाला । २. अधिक बोलने वाला । वाचाल । **बोलाड़** ।

बोळकी—*(ना०)* १. जवान गाय । २. बधिर स्त्री ।

बोलको—दे० बोलकणो ।

बोळखा-री-पाटी—*(ना०)* अक्षर जमाने व लिखने का अभ्यास करने की एक काष्ठ-पट्टी जिस पर सुन्दर अक्षरों में हरताल से कोई इबारत लिखी होती है और उस पर वारनिश किया होता है। खड़िया मिट्टी की रोशनाई से उस पर लिखने का अभ्यास किया जाता है।

बोळखो—*(नं०)* १. हरताल से लिखी हुई अक्षर जमाने की काष्ठ-पट्टी पर लिखने का वह दवात जिसमें स्याही की जगह खड़िया-मिट्टी का घोळ और केबाळिया (केश) डाले जाते हैं। खड़िया-मिट्टी का दवात। खड़ियो। २. दवात। बोरका।

बोलचाल—*(ना०)* १. टंटा-झगड़ा। वाग्-युद्ध। २. आने-जाने तथा बोलने का व्यवहार। मेलमिलाप। ३. बात करने या बोलने का ढंग। ४. बातचीत। ५. नित्य बोलने के काम में आने वाली भाषा। बोली-चाली। ६. जल्दी सवेरे होने वाली कलरव। ७. मेल-मिलाप। बोलना-चालना।

बोलड़ा—*(नं०ब०व०)* १. यश। २. अपयश। ३. अपशब्द। ४. दे० बोल।

बोलण—*(नं०)* १. मुंह। २. रसना। जीभ। ३. वाणी। गिरा।

बोलणी—*(ना०)* १. जीभ। रसना। २. वाणी। गिरा। ३. मन्त्रों अथवा वर्णों के बोलने का ढंग। उच्चारण।

बोलणो—*(क्रि०)* १. मुंह से शब्द निकालना। बोलना। कहना। २. बात करना। संभाषण करना। ३. किसी वस्तु से शब्द उत्पन्न करना या निकालना। आवाज होना। ४. उत्तर देना। ५. पुकारना। ६. विवाद करना। झगड़ना करना। ७. कहलवाना कहना। *(नं०)* संकल्प। *(वि०)* बोलने वाला।

बोळणो—*(क्रि०)* डुबाना। पानी में डाल देना।

बोलती—*(ना०)* १. बोली। वाणी। २. बोलने की शक्ति। ३. जीभ। ४. जिव्हा।

बोलतो—*(नं०)* १. आत्मा। २. जीवन तत्व। प्राण। ३. बोलने वाला। ४. मनुष्य।

बोलबाला—*(ना०)* १. उन्नति। बढ़ती। २. जय। फतह। ३. यश। प्रशस्ति। ४. एक आशीर्वाद। ५. एक आशीर्वादात्मक पद। ६. मान। प्रतिष्ठा। ७. प्रभाव।

बोलबाली—दे० बोला बाली।

बोल-बाँध—*(नं०)* १. वचन। कौल। २. प्रतिज्ञा।

बोल-बोलो—दे० बोलो-बालो।

बोलमा—*(ना०)* १. वांछित फल प्राप्ति की कामना से किसी देवता को नैवेद्य चढ़ाने का संकल्प करना। किसी काम की सिद्धि के लिये कोई पूजा भेंट आदि करना। मनौती।

बोळ-री-पाटी—दे० बोळखा-री-पाटी।

बोलाऊ—*(नं०)* १. संदेशवाहक। पत्र-वाहक। २. दूत। कासिद।

बोळाऊ—दे० बोळावो।

बोलाकड़ो *(वि०)* १. अधिक बोलने वाला। वाचाल। २. झगड़ाखोर।

बोलाचाली—दे० बोलचाल।

बोलाड़—दे० बोलकणो या बोलाळ।

बोलाणो—दे० बोलावणो।

बोलाळ—*(वि०)* १. अधिक बोलने वाला। २. लबाड़। बोलाड़। ३. वक्ता।

बोलाळी—*(नं०)* १. मनुष्य के बोलने की दूर से सुनाई देने वाली आवाज। २. प्रातःकाल में प्राणियों के नींद में से उठकर बोलने की सामूहिक ध्वनि। ३. निद्रा त्याग का समय। ४. निद्रा

त्याग । ५. नींद में से जगने पर बोलने-चालने आदि की होने वाली जाग्रतावस्था की क्रियाएं । ६. शोर । कोलाहल । ७. झगड़ा । बोलचाल । ८. ध्वनि । आवाज ।

बोलावणी—*(ना०)* मृतक के शोक में सहानुभूति दिखलाने को जाने की क्रिया । मुकाण । काज ।

बोळावणी—दे० बोळावणी ।

बोलावणो—*(क्रि०)* १. किसी को बोलने के लिये प्रेरित करना । २. निमंत्रण देना । ३. बुलवाना । ४. पुकारना । ५. प्यार करना (बच्चे को) । लाड-करणो । ६. ध्वनि कराना ।

बोळियो—दे० बोळो ।

बोली—*(ना०)* १. बोलने की क्रिया । २. भाषा । ३. किसी क्षेत्र की गौण भाषा जो केवल बोलने में चलती है । क्षेत्र भाषा । लोकभाषा । ४. किसी प्राणी के मुंह से निकला हुआ शब्द । वाणी । ५. बातचीत । ६. सार्थक बात । ७. नीलाम की बोली । ८. नीलाम में लगाया हुआ दाम । ९. कौल । वचन । इकरार । १०. हंसी । ठिठौली । ११. अवधि । मयाद ।

बोळी—*(ना०)* फाख्ता । पंडुक पक्षी । पक्षी । कमेड़ी । हुड़कली । *(वि०)* बहरी । बधिरा ।

बोली-बतळावणा—*(ना०)* १. बात-चीत । साधारण बात-चीत । २. बोली-बाली का संबंध या व्यवहार । ३. बात-चीत करने का तरीका ।

बोळो-बेफार—*(ना०)* ग्रीष्म का मध्य दुपहर का समय । मध्य दुपहर । मध्य बेफार ।

बोळो—*(वि०)* १. बहरा । बधिर । २. बजाने से जो ठीक आवाज नहीं दे, जैसे बोळो रुपियो । *(ना०)* चमड़े का काम करने वाली एक जाति । रैगर । चर्मकार ।

बोळो-घोनड़—दे० बोळो जंग ।

बोळोजंग—*(वि०)* बिलकुल बहरा ।

बोळो ठीकर—दे० बोळो जंग ।

बोळो ठीकरो—दे० बोळो जंग ।

बोलोबोलो—*(अव्य०)* चुपचाप । खामोशी से । शांति से ।

बोवणी—*(ना०)* १. दुकान पर होने वाली पहली बिकरी । बोहनी । बोहणी । २. बोने का काम । बुवाई । बावणी ।

बोवणो—*(क्रि०)* १. खेत में बीज बोना । बोवाई करना । २. डुबाना । ३. बरबाद करना । नष्ट करना । ४. गँवाना । खोना । ५. विपत्ति में पड़ना या डाल देना ।

बोसो—*(ना०)* चुम्बन । चूमो ।

बोह—*(ना०)* १. गंध । महक । बास । २. दुर्गन्ध । ३. अफवाह । खबर । ४. गहराई । ५. लेपन । (तेल का) *(वि०)* बहुत । अधिक । *(अव्य०)* १. पुनः । फिर । २. फिर भी । ३. तो भी ।

बोहजाण—*(वि०)* १. बहुत सी बातें जानने वाला । बहुज्ञ । २. पंडित । विद्वान । ३. ज्ञानी ।

बोहणी—*(ना०)* प्रातः दुकान खोलने पर होने वाली पहली बिकरी । प्रथम विक्रय । बोहनी । बोवणी ।

बोहत—*(वि०)* बहुत । अधिक ।

बोहनामी—*(ना०)* १. अनेक नामधारी । अनेक नाम वाला । २. ईश्वर । परमात्मा ।

बोहरगत—*(ना०)* सूद पर रुपया कर्ज देने का धंधा ।

बोहरंग- *(वि०)* १. अनेक रंगों वाला। विविध रंगों से रंगा हुआ। २. सुन्दर। रंग-बिरंगा।

बोहरंग-चूनड़ी—*(ना०)* १. अनेक रंगों वाली चुनरी। बुंदकीदार, रंगीन महीन सुन्दर ओढ़नी। २. एक लोक गीत।

पोहरंगी—*(वि०)* १. अनेक रंगों वाली। रंग-रंगीली। २. रंगीली। रसिका। ३. रंगीला। रसिक। विनोदी। ४. नटखट। ५. अविश्वसनीय। ६. अनेक विचारों वाला। तरंगी।

बोहरिणियो – दे० बोहरिणी।

बोहरिणी—*(वि०)* बहुत कर्जदार।

बोहरो—दे० बोहरो।

बोहळ—*(वि०)* बहुत।

बोहलज्जो—*(वि०)* १. निर्लज्ज (व्यंगोक्ति)। २. बहुत लज्जा वाला।

बोहळाई—*(ना०)* बहुलता। अधिकता। प्रचुरता।

बोहळायत—दे० बोहळाई।

बोहळो—*(वि०)* बहुत। बहुल। प्रचुर।

बोहवार—*(अव्य०)* १. बहुत बार। अनेक अवसरों पर। २. बहुत विलंब से।

बोहित—*(न०)* नाव। नैया।

बोही – *(सर्व०)* वही।

बोहो—*(वि०)* बहुत। अधिक। **बोह**।

बोहोत—दे० बहुत।

बौद्ध—*(न०)* १. बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म का अनुयायी। २. बुद्ध द्वारा प्रचारित धर्म। *(वि०)* बुद्ध संबंधी।

ब्याऊ—दे० ब्याऊ।

ब्याकुल—दे० ब्याकुल।

ब्याज—दे० ब्याज।

ब्याजनिंदा—दे० ब्याजनिंदा।

ब्याजबी—दे० वाजबी।

ब्याजू—दे० ब्याजू।

ब्याणो—दे० ब्याणो।

ब्याळू—दे० ब्याळू।

ब्याव—दे० ब्याव।

ब्यावणो—*(क्रि०)* गाय, भैंस आदि का बच्चा जनना। **ब्याणो**। **ब्यावबो**।

ब्याहण—दे० ब्याहण।

ब्याहणो—दे० विवाहणो।

ब्याही—दे० ब्याही।

ब्यावलो—दे० ब्यावलो।

ब्याहलो—दे० ब्यावलो।

ब्यां—*(सर्व० ब०व०)* १. उन। **उणां**। २. उन्होंने। उन लोगों ने।

ब्यांनं—*(सर्व०ब०व०)* उनको। **उणांनं**।

ब्यांरी—*(सर्व०ब०व०)* उनकी। **उणांरी**। **वणांरी**।

ब्यांरो—*(सर्व०ब०व०)* उनका। **उणांरो**। **वणांरो**।

ब्यांसूं—*(सर्व०ब०व०)* उनसे। **उणांसूं**।

ब्योपार—दे० वैपार।

ब्योपारी—दे० वैपारी।

ब्रख—दे० वृक्ष।

ब्रज—दे० व्रज।

ब्रजदेश—*(न०)* गोकुल मथुरा-वृंदावन आदि का प्रदेश। ब्रजमंडल।

ब्रजनंद—*(न०)* श्रीकृष्ण।

ब्रजनाथ—दे० व्रजनाथ।

ब्रजबनिता—दे० व्रजवनिता।

ब्रजबाळ—दे० व्रजबाळ।

ब्रजमंडळ—दे० व्रजदेश।

ब्रजवासी—दे० व्रजवासी।

ब्रजराज—दे० व्रजराज।

ब्रजाग—दे० वज्राग्नि या व्रजाग।

ब्रत—दे० व्रत।

ब्रतधारी—दे० व्रतधारी।

ब्रतांत—दे० वृत्तांत।

ब्रद—दे० विरुद।

ब्रदाळ—दे० विरुदाळ ।
ब्रदाळी—*(ना०)* विरुदावली ।
ब्रवण—*(न०)* १. दान । २. कथन । वर्णन । ३. कीर्ति । प्रशंसा ।
ब्रवणो—*(क्रि०)* १. देना । प्रदान करना । २. दान करना । ३. कहना । ४. वर्णन करना । ५. प्रशंसा करना । कीर्तिगान करना ।
ब्रश—*(न०)* महीन बालों व तारों का बना एक उपकरण, जिसकों घिस कर किसी वस्तु को साफ किया जाता है ।
ब्रहम—दे० ब्रह्म ।
ब्रहमगिनान—दे० ब्रह्मज्ञान ।
ब्रहमपुरी—दे० ब्रह्मपुरी ।
ब्रहम सपूत—*(न०)* ब्रह्मा के पुत्र नारद, सनकादिक ।
ब्रहमंड—दे० ब्रह्मांड ।
ब्रहमा—दे० ब्रह्मा ।
ब्रहमाण—*(न०)* सूर्य । दे० ब्रहमाद ।
ब्रहमाणी—दे० ब्रह्माणी ।
ब्रहमाद—*(न०)* १. ब्राह्मण जाति । २. समस्त ब्राह्मण जाति । ३. ब्रह्मा । ४. ब्रह्मादि ।
ब्रहास—दे० बरहास ।
ब्रह्म—*(न०)* १. सच्चिदानंद स्वरूप जगत का मूल तत्व । २. परमात्मा । ३. ब्रह्मा । ४. वेद । ५. ब्राह्मण । ६. बड़ा । महान । ७. आत्मा । ८. एक की संख्या ।
ब्रह्म अपराध—*(न०)* बहुत बड़ा अपराध । बड़ा पाप ।
ब्रह्म आखर—दे० ब्रह्माक्षर ।
ब्रह्मऋषि—*(न०)* ब्राह्मण ऋषि । ब्रह्मर्षि ।
ब्रह्मकन्या—*(ना०)* १. सरस्वती । शारदा । २. ब्राह्मण की कन्या । ब्राह्मण पुत्री ।
ब्रह्मकर्म—*(न०)* ब्राह्मणोचित कर्म ।
ब्रह्मकवच—*(न०)* एक मंत्र ।
ब्रह्मकांड—*(न०)* ब्रह्म की मीमांसा करने वाला वेद का एक भाग । ज्ञानकांड ।
ब्रह्मकुंड—*(न०)* एक तीर्थ विशेष ।
ब्रह्मक्षत्री—*(न०)* १. ब्राह्मण होकर के क्षत्री का काम करने वाली जाति । २. कपड़ा छापने का काम करने वाली एक जाति । खत्री ।
ब्रह्मखाड—*(ना०)* १. अत्यन्त गहरा खड्डा । २. संसार ।
ब्रह्मगति—*(ना०)* मोक्ष ।
ब्रह्मघाट—*(न०)* पुष्कर के सरोवर का एक घाट ।
ब्रह्मघात—*(ना०)* ब्राह्मण की हत्या ।
ब्रह्मघाती—*(वि०)* ब्राह्मण की हत्या करने वाला ।
ब्रह्मचर्य—*(न०)* १. ब्रह्म के साक्षात्कार की साधना । २. वीर्य रक्षण की साधना । ३. इन्द्रिय निग्रह । ४. सात्विक जीवन व्यतीत करते हुये विद्याध्ययन करने की अवस्था । ५. महाव्रतों में का एक महाव्रत । ६. पांच यमों में का एक यम । ७. ब्रह्मचारीपना ।
ब्रह्मचर्याश्रम—*(न०)* मनुष्य जीवन के चार आश्रमों में से प्रथम आश्रम, जिसमें ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये विद्याध्ययन किया जाता है ।
ब्रह्मचारिणी—*(ना०)* १. सरस्वती । २. पार्वती । ३. ब्रह्मचर्य पालन करने वाली स्त्री ।
ब्रह्मचारी—*(न०)* १. ब्रह्मचर्य पालन करने वाला मनुष्य । २. विद्यार्थी । ३. वेदाध्ययन करने वाला । ४. अविवाहित पुरुष । ५. महादेव । शिव ।
ब्रह्मजल—*(न०)* १. गंगाजल । २. ब्राह्मण के घर का जल । ३. शुद्ध जल ।

ब्रह्मज्ञान- *(न०)* ब्रह्म का ज्ञान। आत्म-ज्ञान।

ब्रह्मज्ञानी—*(वि०)* ब्रह्मज्ञ। आत्मज्ञानी। ब्रह्म को जानने वाला।

ब्रह्मतीर्थ—*(न०)* नर्मदा के तट का एक तीर्थ स्थान।

ब्रह्मतेज—*(न०)* १. ब्रह्मचर्य का तेज। २. ब्रह्म का प्रकाश।

ब्रह्मत्व—*(न०)* १. ब्रह्ममय होने का भाव। २. ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदैत्य—*(न०)* राक्षस ब्राह्मण।

ब्रह्मद्वार—*(न०)* ब्रह्मरंध्र। दसमोद्वार।

ब्रह्मनिष्ठ—*(वि०)* ब्रह्म के ध्यान में लीन। ब्रह्मज्ञ।

ब्रह्मपद—*(न०)* १. ब्रह्मत्व। २. ब्राह्मी स्थिति। ३. मोक्ष।

ब्रह्मपुत्र—*(न०)* १. नारद मुनि। २. वशिष्ठ मुनि। ३. मरीचि। ४. मनु। ५. ब्राह्मण। ६. ब्रह्मपुत्रा नदी।

ब्रह्मपुत्रा—*(ना०)* भारत की एक बड़ी नदी।

ब्रह्मपुत्री—*(ना०)* १. सरस्वती। २. ब्राह्मण की कन्या। ३. ब्राह्मण-स्त्री। ब्राह्मणी।

ब्रह्मपुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में से एक पुराण।

ब्रह्मपुरी—*(ना०)* १. ब्रह्मलोक। २. वाराणसी। काशी। ३. ब्रह्माजी की पुरी। पुष्कर तीर्थ। ४. ब्राह्मणों की बस्ती। ५. ब्राह्मणों का मोहल्ला।

ब्रह्मभट्ट—*(न०)* इस नाम की एक ब्राह्मण जाति जो वंशावलियां लिखने व राजाओं के गुणगान करने का काम करती है। २. ब्राह्मणों की एक उपाधि। ३. ब्राह्मणों की एक शाखा।

ब्रह्मभोज—*(न०)* ब्राह्मण भोजन।

ब्रह्ममाळ *(न०)* मारवाड़ के श्रीमालनगर (भीनमाल) का प्रथम (सबसे प्राचीन) नाम।

ब्रह्ममुहूर्त—*(न०)* सूर्योदय के पहले की दो घड़ी रात। ब्राह्ममुहूर्त।

ब्रह्मयोनि—*(न०)* १. ब्राह्मण। २. एक तीर्थ स्थान। *(ना०)* सरस्वती।

ब्रह्मरंध्र—*(न०)* मस्तक का छेद। दशवां द्वार। कपाल का बंद छिद्र। मनुष्य के मस्तक में का बंद छिद्र जिसमें से प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। २. जिसमें से ब्रह्मलोक में जाने वाले के प्राण निकलते हैं।

ब्रह्म राक्षस—देo ब्रह्मराक्षस।

ब्रह्मराक्षस—*(न०)* १. महाक्रोधी ब्राह्मण। २. दुष्ट ब्राह्मण। ३. राक्षसयोनि को प्राप्त ब्राह्मण। भूतयोनि को प्राप्त ब्राह्मण। ४. वह ब्राह्मण जिसके आचरण राक्षस जैसे हों। ५. महादुष्ट व्यक्ति।

ब्रह्मरूप- *(वि०)* ब्रह्म के समान। २. बहुत भला। *(न०)* एक छंद।

ब्रह्मर्षि—*(न०)* १. ब्राह्मण ऋषि। मंत्रदृष्टा ऋषि।

ब्रह्मवैवर्तपुराण- *(न०)* अठारह पुराणों में से एक।

ब्रह्मलोक—*(न०)* १. ब्रह्मा का लोक। २. मोक्ष। परमपद।

ब्रह्मवाचा—*(ना०)* १. सच्चा वचन। २. ब्रह्म की साक्षी से दिया हुआ वचन। ३. ब्रह्म वाक्य।

ब्रह्मवाद—*(न०)* वेदान्तवाद। अद्वैतवाद।

ब्रह्मविद्या—*(न०)* १. ब्रह्मसंबंधी विद्या। २. ब्रह्मज्ञान। ३. गायत्री।

ब्रह्मसपूत—*(न०)* नारद आदि ब्रह्मा के पुत्र।

ब्रह्मसभा—*(ना०)* ब्राह्मणों की सभा ।

ब्रह्मसमर्पण—*(न०)* पुष्टि (वल्लभ) संप्रदाय में दीक्षित होने की एक वैष्णव विधि । ब्रह्म संबंध ।

ब्रह्मसंबंध—दे० ब्रह्म समर्पण ।

ब्रह्मसमाज—*(न०)* १. ब्राह्मण समाज । २. बंगाल के राजाराममोहन राय द्वारा चलाया हुआ एक सम्प्रदाय । ब्रह्मो-समाज ।

ब्रह्मसुता—*(ना०)* १. सरस्वती । २. ब्राह्मण कन्या ।

ब्रह्मसूत्र—*(न०)* श्री व्यास महर्षि द्वारा प्रणीत ब्रह्मतत्व का एक प्रसिद्ध ग्रंथ । वेदान्त का एक ग्रंथ । २. यज्ञोपवीत । जनेऊ । ३. वेदान्त सूत्र ।

ब्रह्मसोनी—*(न०)* एक ब्राह्मण जाति जो ब्राह्मण कर्त्तव्यों के साथ स्वर्णकारी, सराफी, जवाहरात, व्यापार, जड़त-कारी आदि व्यवसायों का काम करती है ।

ब्रह्महत्या—*(ना०)* ब्राह्मण की हत्या ।

ब्रह्मा—*(न०)* सृष्टि की रचना करने वाले ईश्वर का एक स्वरूप । वेद धर्म की त्रिमूर्ति में का एक रूप जो सृष्टि की उत्पत्ति करता है । विधाता ।

ब्रह्माक्षर—*(न०)* १. वर्णमाला का प्रथम वर्ण । २. ओम् । प्रणव ।

ब्रह्माण—*(न०)* १. दे० ब्रह्मण । सभी जातियों के ब्राह्मण । ब्राह्मण समुदाय ।

ब्रह्माणी—*(ना०)* १. सरस्वती । २. दुर्गा । शक्ति । ३. पार्वती । ४. गायत्री । ५. ब्रह्मा की शक्ति ।

ब्रह्माद—दे० ब्रह्मद ।

ब्रह्मानंद—*(न०)* ब्रह्मज्ञान से प्राप्त होने वाला शाश्वत आनन्द ।

ब्रह्माव—*(न०)* १. आशीर्वाद । २. ब्राह्मण-समाज ।

ब्रह्मावर्त—*(न०)* सरस्वती और दृशद्वती के बीच का भारत का प्राचीन प्रदेश ।

ब्रह्मास्त्र—*(न०)* ब्रह्मा का अस्त्र ।

ब्रह्मांड—*(न०)* १. अनंत लोकों की सृष्टि । विश्व । २. कपाल ।

ब्रह्मांड पुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में का एक पुराण ।

ब्रह्मोपासना—*(ना०)* ब्रह्मपद प्राप्त करने के लिये की जाने वाली उपासना । ब्रह्म की उपासना ।

ब्रंद—दे० वृंद ।

ब्रंदारक—दे० वृंदारक ।

ब्रंदावन दे० वृंदावन ।

ब्राह्मण—*(न०)* १. हिन्दुओं के चार वर्णों में से पहिला वर्ण । द्विज । २. इस वर्ण का मनुष्य । ३. मंत्रों का भिन्न भिन्न कर्मों में विनियोग बताने वाला वेद भाग ।

ब्राह्मण ग्रंथ—दे० ब्राह्मण सं० ३ ।

ब्राह्मण भोजन—दे० ब्रह्मभोज ।

ब्राह्मण सोनी – दे० ब्रह्मसोनी ।

ब्राह्मणिया पाणी—*(न०)* १. शुद्ध जल । २. ब्राह्मण के घर का पानी ।

ब्राह्मणी—*(ना०)* १. ब्राह्मण की स्त्री । २. सरस्वती । ब्रह्माणी । ३. ब्राह्मण जाति की स्त्री । बिरामणी ।

ब्राह्मी - *(ना०)* १. सरस्वती । २. स्मरण-शक्ति और मेधा शक्ति बढ़ाने वाली एक वनस्पति । ३. भारतवर्ष की एक प्राचीन लिपि । ४. वाणी । *(वि०)* ब्रह्म संबंधी ।

ब्रिटिश—*(न०)* ब्रिटेन सम्बन्धी ।

ब्रिटेन—*(न०)* यूरोप का एक प्रसिद्ध देश ।

बीस—*दे०* बीस ।

ब्लाउज—*(न०)* स्त्रियों के पहिनने की एक कुरती ।

ब्लॉक—*(न०)* तांबे, जस्ते आदि का वह ठप्पा, जिससे चित्र छापे जाते हैं ।

ब्लेक मार्केट—*(न०)* कालाबाजार ।

भ

भ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के पवर्ग का चौथा ओष्ठ्य वर्ण । *(न०)* १. जल । २. पर्वत । ३. ऋषि । ४. राजा । ५. आकाश । ६. सूर्य । नक्षत्र ।

भइयो—*(न०)* १. भाई । २. छोटा बच्चा ।

भई—*(न०)* भाई । *(भू०क्रि०)* हुई ।

भकभूर—*(वि०)* धूल, राख आदि के लगने से जो बदरंग हो गया हो । भकुंड । *(ना०)* १. निर्बल या कायर लोगों का समूह । २. नाश । संहार ।

भकाणो—*(क्रि०)* १. बहकाना । २. धोखा देना । ३. भुलाना ।

भकार—*(न०)* 'भ' वर्ण । *दे०* भखार ।

भकारी—*दे०* भखारी ।

भकुंड—*(वि०)* धूल से भरा हुआ । भकभूर ।

भक्ख—*दे०* भक्ष ।

भक्त—*(न०)* १. परमेश्वर की भक्ति करने वाला । परमात्मा की उपासना करने वाला । भगत । २. भोजन । ३. भात । ओदन । *(वि०)* जुदा किया हुआ ।

भक्तपरायण—*(न०)* भक्त का आश्रय स्थान । भगवान ।

भक्तमाळ—*(ना०)* भक्त चरितावली की पुस्तक ।

भक्तवच्छल—*दे०* भक्तवत्सल ।

भक्तवछल—*दे०* भक्तवत्सल ।

भक्तवत्सल—*(वि०)* भक्त पर स्नेह रखने वाला ।

भक्ति—*(ना०)* १. परमात्मा में परम अनुराग । २. भजन करने की क्रिया या भाव । ३. उपासना । भजन । ४. श्रद्धा । अनुरक्ति । ५. नौ की संज्ञा (नवधा भक्ति पर से) । *दे०* नवधा भक्ति । ६. भोजन । ७. बंटवारा । हिस्सा ।

भक्तिभाव—*(न०)* १. भक्ति का भाव । २. आदर । प्रेम ।

भक्तिमार्ग—*(न०)* परमात्मा को पहचानने तथा प्राप्त करने का एक साधन । ज्ञानमार्ग के अतिरिक्त भक्ति का पंथ । भक्ति द्वारा परमात्म-साधना का एक मार्ग । सेवा, पूजा, अर्चना, नाम-कीर्तन इत्यादि द्वारा ईश्वर-प्राप्ति का सिद्धांत ।

भक्तियोग—*(न०)* भक्ति जिसमें प्रधान हो वह योग ।

भक्तिसूत्र—*(न०)* शाण्डिल्य ऋषि द्वारा प्रणीत वैष्णव संप्रदाय का एक ग्रंथ ।

भक्ष—*(न०)* १. भोजनीय पदार्थ । भोजन । खुराक । २. पशु-पक्षियों द्वारा किया जाने वाला जीवों का शिकार । ३. देवता को दी जाने वाली बलि । भख ।

भक्षक—*(वि०)* भक्षण करने वाला ।

भक्षण—*दे०* भक्ष ।

भक्षणो—*(क्रि०)* भक्षण करना । भोजन करना ।

भक्षी—*(क्रि०)* समस्त पदों के अन्त में 'भक्षक' अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द। जैसे-मांसभक्षी।

भक्ष्य—*(वि०)* जो खाया जा सके। खाने योग्य। *(न०)* भोजन।

भख—*(न०)* पानी। दे० भक्ष।

भखण—दे० भक्षण।

भखणो—*(क्रि०)* १. खाना। भोजन करना। २. कहना। बोलना। ३ बकना।

भखनाळ—दे० भगनाळ।

भखपनंग—*(न०)* १. मोर। मयूर। मोरियो। २. पवन।

भखभूर—दे० भकभूर।

भखमंजार—*(न०)* मूषक। चूहा। ऊंदरो।

भखरी—*(ना०)* गेहूं के आटे में मोयन डालकर बनाई हुई एक प्रकार की रोटी। माखरी।

भखाणो—*(क्रि०)* बहकाना। भुलावा देना। भकाणो।

भखार—*(न०)* १ माल, सामान रखने का कोठा। गोदाम। बखार। २. बैठक। ३. बैठक का कमरा। ४. भूमि गृह। भूँहरो।

भखारी—*(ना०)* छोटा बखार।

भखावटो—*(न०)* १. प्रातःकाल। ब्राह्म-मुहूर्त। २. सूर्योदय। उषा काल।

भखावड़ो—दे० भखावटो।

भखावणो—दे० भखाणो।

भखी—दे० भक्षी।

भखेर—दे० भखर। *(न०)* १. भारत का एक प्राचीन प्रदेश। २. बलख-बुखारा।

भग—*(न०)* १. सूर्य। २. बारह आदित्यों में से एक। ३. सद्भाग्य। प्रारब्ध। ४. ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छहों का समूह। ५. व्रण। क्षत। ६. छिद्र। सुराख। ७. स्त्री की गुह्येन्द्रिय। योनि। ८. महिमा। ९. चंद्रमा। १०. कांति। ११. संज्ञा। १२. कला। १३. लक्ष्मी। १४. शुभ। १५. शिव।

भगड़ो—*(न०)* १. स्वामी, साधु, वैरागी आदि (तुच्छकार में)। २. ढोंगी साधु।

भगण—*(न०)* आदि गुरु और शेष दो लघु मात्राओं वाला गण।

भगणो—*(क्रि०)* भागना। दौड़ना। भग जाना।

भगत—*(न०)* १. भक्त। २. भक्ति। ३. रामावत साधुओं में से निकली हुई एक जाति जो मंदिरों में गाने बजाने का काम करती है। ४. भगत जाति का व्यक्ति। ५. भोजन। ६. भोजन-गोष्ठी। दावत। गोठ। ७. ज्योनार। भोज। जीमण। ८. आतिथ्य। ९. सम्मान। खातिर। १० साधु।

भगतण—*(ना०)* १. भगत जाति की स्त्री। २. मंदिरों में गाने-नाचने का पेशा करने वाली स्त्री। ३. भगतण-वेश्या। ४. भक्ति करने वाली।

भगतमाळ—दे० भक्तमाळ।

भगतां कज—*(अव्य०)* भक्तों के लिये।

भगतांपत—*(न०)* ईश्वर। भक्तों का स्वामी।

भगतांवस—*(अव्य०)* भक्तों के वश में।

भगती—दे० भक्ति।

भगदड़—*(ना०)* १. भयाक्रांत होकर भागना। २. हलचल।

भगनाळ—*(ना०)* १. गहन गह्वर। २. गहरा छिद्र। ३. चौड़ी और लम्बी नाली।

भगनी—*(ना०)* बहन। भगिनी। भैण।

भगमा पहरणा—*(मुहा०)* साधु होना। संन्यासी होना।

भगमो—*(वि०)* १. भगवें रंग का। २. गेरूए रंग से रंगा हुआ। **भगवों**।

भगमोभेस—*(न०)* संन्यासी का वेष।

भगळ—*(न०)* १. खेल। २. हाथ सफाई का खेल। ३. अव्यवस्था। ४. कपट। छल। ५. ढोंग। ६. ठगाई।

भगळखानो—दे० भड़ोलखानो।

भगळ खेल—*(न०)* १. जादू का खेल। २. युद्ध। ३. धोखा। *(वि०)* मायावी।

भगळ खेलणो—*(मुहा०)* १. युद्ध करना। २. खेल खेलना। खेल दिखाना। ३. ढोंग करना। ४. नखरा करना। ५. जादू दिखाना।

भगळविद्या—*(ना०)* १. जादू। इंद्रजाल। २. मायाजाल।

भगवट—*(ना०)* १. भागने की क्रिया। २. भागदौड़। दौड़ादौड़। ३. पराजय। हार। ४. कायरता।

भगवत—दे० भगवान।

भगवती—*(ना०)* १. देवी। २. सरस्वती। ३. दुर्गा। ४. गंगा। ५. तलवार।

भगवतीसूत्र—*(न०)* एक जैन ग्रंथ।

भगवद्गीता—*(ना०)* महाभारत के भीष्म पर्व के अठारह अध्यायों का एक सर्वोत्तम तत्वज्ञान का बहुविख्यात उपनिषद ग्रंथ, जिसमें महाभारत के युद्ध मे अर्जुन का मोह दूर करने के लिये श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच में हुये संवादों का वर्णन किया गया है। **गीता**। ब्रह्मज्ञान का विश्वविख्यात सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ।

भगवद्भक्त—*(न०)* भगवान का भक्त।

भगवद् भक्ति—*(ना०)* भगवान की भक्ति।

भगवंत—दे० भगवान।

भगवान—*(न०)* १. परमात्मा। प्रभु। २. शिव, ईश्वर। शंकर। ३. विष्णु। नारायण। ४. श्रीराम। ५. श्रीकृष्ण। ६. पूज्य पुरुष। *(वि०)* षट् ऐश्वर्य युक्त।

भगवों—दे० भगमो।

भगंदर—*(न०)* गुदा के पास होने वाला व्रण।

भगा—*(अव्य०)* १. लिये। वास्ते। हेतु। **पण**। २. सबब। हेतु से।

भगाड़णो—दे० भगाणो।

भगांण—दे० भगाण।

भगाणो—*(क्रि०)* १. किसी को दौड़ने में प्रवृत्त करना। खदेड़ना। भगाना। २. ऐसा कार्य करना, जिससे दूसरा कहीं से हट जाय। भगाना। ३. किसी को उठा ले जाना।

भगाळ—*(न०)* आदमी की खोपड़ी।

भगाळी—*(न०)* महादेव। शिव।

भगावणो—दे० भगाणो।

भगिनी—दे० भगनी।

भगी—*(अव्य०)* लिये। वास्ते। *(ना०)* १. भगदड़। २. फूट। मतभेद।

भगीरथ—*(न०)* स्वर्ग से गंगा को पृथ्वी पर लाने वाले अयोध्या के सूर्यवंशी महाराज दिलीप के पुत्र। *(वि०)* १. महा कठिन। २. बड़ा भारी। भारी।

भगोती—दे० भगवती।

भगोल—*(न०)* सूर्य तथा नक्षत्रों युक्त गोल आकाश। २. नक्षत्र-चक्र।

भगोली—*(ना०)* छोटा भगोला। **तपेली**।

भगोलो—*(न०)* एक बरतन। भगोना। **तपेलो**।

भग्गी—*(ना०)* भगदड़। भागदौड़। समूह का सहसा इधर-उधर भाग जाना।

भग्गू—*(न०)* १. भागने वाला। २. कायर। डरपोक।

भग्न—*(वि०)* १. टूटा हुआ। २. पराजित ३. नष्ट।

भच—*(न०)* भोंकने या घंसाने का शब्द। *(क्रि०वि०)* तुरंत। एकदम। *(न०)* सिर में होने वाली पीड़ा विशेष।

भचक—*(ना०)* १. भचकने की क्रिया या भाव। २. भय। डर। ३. प्रहार। ४. भिड़ंत।

भचकणो—*(क्रि०)* १. स्तब्ध होना। २. चकित होना। ३. टकराना। ४. प्रहार होना।

भचके—*(क्रि०वि०)* १. एकाएक। २. जल्दी से।

भचको—*(न०)* धक्का। टक्कर।

भचक्र—*(न०)* ग्रहों का कक्ष।

भचाभच—दे० भचोभच।

भचीड़—*(अव्य०)* १. टक्कर। धक्का। २. प्रहार। चोट। ३. हानि का आघात। ४. दर्द।

भचीड़णो—*(क्रि०)* १. जोर से पटकना। पछाड़ना। २. टक्कर देना।

भचीड़ो—दे० भचीड़।

भचोभच—*(अव्य०)* १. भचभच शब्द। २. ऊपराऊपरी। ३. टकराने की ध्वनि।

भजणो—*(क्रि०)* १. भजन करना। २. देवता आदि का नाम जपना। ३. उपासना करना। ४. आश्रय लेना। ५. सेवा करना। ६. भाग जाना। ७. कहना। ८. उपभोग करना। सेवन करना। ९. अभ्यास करना। १०. स्वीकार करना।

भजन—*(न०)* १. ईश्वर सुमिरण। २. भक्ति। ३. सेवा। पूजा। ४. जप। ५. वह गीत जिसमें किसी देवता या ईश्वर के गुणों का वर्णन हो। ईश्वर भक्ति सम्बन्धी गीत। पद।

भजन कीर्तन—*(न०)* ईश्वर का भजन व कीर्तन।

भजन-भाव—*(न०)* ईश्वर का नाम संकीर्तन, जप, पूजा इत्यादि।

भजन मंडळी—*(ना०)* भजन गाने वालों की मंडली।

भजनमाळा—*(न०)* भजनों की पुस्तक। भजनावली।

भजनानंद—*(न०)* ईश्वर भजन में मिलने वाला आनंद।

भजनानंदी—*(वि०)* ईश्वर भजन में मग्न रहने वाला।

भजनावळी—*(ना०)* भजनमाला।

भजनी—दे० भजनीक।

भजनीक—*(वि०)* भजन करने वाला।

भजनोपदेसक—*(वि०)* भजन द्वारा उपदेश करने वाला।

भजाड़णो—दे० भजाणो।

भजाणो—*(क्रि०)* भगा देना।

भजावणो—दे० भजाणो।

भजिया—*(न०ब०व०)* १. बड़े-पकोड़े। पकोड़े। २. सिवैयां। सेवें। ३. बीकानेर की मोठों की सेवें। भुजिया।

भट—*(न०)* १. योद्धा। २. पंडित। ३. ब्राह्मणों की एक अल्ल। भट्ट। ४. भाट। ५. नौकर।

भटकणियो—*(न०)* कूमट वृक्ष का बीज। कूमटियो। *(वि०)* भटकने वाला। मारा-मारा फिरने वाला।

भटकणो—*(क्रि०)* १. भटकना। व्यर्थ घूमना। २. रास्ता भूल जाने के कारण इधर उधर घूमना। भूला फिरना। ३. भ्रम में पड़ना। ४. आग का प्रज्वलित होना। सहसा आग का वेग से लगना। ५. फटाका फूटना। ६. निर्णय नहीं कर सकना। भ्रमित होना।

७. पथ विचलित होना। मार्ग चूकना। ८. चमकना। ९. टकराना। टक्कर खाना।

भटकळ—*(न०)* १. युद्ध। भट्टकलह। **जुध**। २. नाज के अंदर नाज के दाने जैसा कंकड़। ३. नाज का बड़ा दाना। ४. नाश।

भटका—*(न०ब०व०)* १. उमंग। उत्साह। २. किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा। ३. निरंतर प्राप्त होते रहने वाली वस्तु का कुछ समय या सदा के लिये नहीं मिलने से होने वाली चिंता या उसकी स्मृति। ४. वैभव की स्मृति। ५. संकट व दीनावस्था में पूर्व के वैभव की सालने वाली स्मृति। ६. भटकने की क्रिया या भाव। ७. व्यसन के अभाव में होने वाली तीव्र इच्छा। **बायड़**।

भटकाणो—*(क्रि०)* १. व्यर्थ इधर-उधर घूमना। भटक जाना। २. इधर-उधर घुमाना। ३. सहसा आग का वेग से लगाना। ४. फटाके फोड़ना। ५. भ्रम में डालना। ६. मार्ग भुलवा देना। ७. निर्णय नहीं होने देना।

भटकावणो—*दे०* भटकाणो।

भटकी—*(ना०)* भ्रम। चक्कर। अज्ञान।

भटकीजणो—*(क्रि०)* १. टकराना। टक्कर खाना। **फेटणो**। २. टक्कर लगाना। *दे०* भटकणो।

भटाकियो—*दे०* भटाको।

भटाको—*(न०)* पटाखा। बारूद से भरा हुआ फटाका।

भटाळि—*(ना०)* भट्टावळि। सेना।

भटियाणी—*(ना०)* १. भाटी वंश की कन्या। भटियानी। २. अद्वितीय वीर तोगा राठोड़ की वीरांगना। सती भटियानी। ३. राव मालदेव की स्वाभिमानिनी पत्नी जो रूठी रानी के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों लोक। देवी के रूप में पूजी जाती हैं।

भटियारण—*(ना०)* भठियारे की पत्नी।

भटियारो—*(न०)* १. मुसाफिरों आदि के लिये भट्टी पर रोटियां बनाने वाला। भठियारा। २. भाड़भूंजा। **भड़भूंजो**।

भट्टू—*(ना०)* १. बहिन। २. सहेली। **सायण**।

भट्ट—*दे०* भट।

भट्टारक—*(न०)* १ पंडित। *(वि०)* पूज्य। मान्य।

भट्टिक सम्वत्—*दे०* भाटिका संवत।

भट्टी—*(ना०)* १. बड़ा चूल्हा। २. जमीन खोदकर बनाया हुआ बड़ा चूल्हा। भाड़। ३. भाटी राजपूत।

भट्टो—*(न०)* ईंटें, चूना आदि पकाने का चिन कर बनाया हुआ एक प्रकार का पजावा। भट्टा। **कजावो**।

भठ—*(न०)* बड़ी भट्टी।

भठियारो—*(न०)* भठियारा।

भड़—*(वि०)* वीर। बहादुर। सुभट।

भड़ अभंग—*(न०)* हराया नहीं जा सकने वाला वीर। अजेय सुभट।

भड़क—*(ना०)* १. भय। डर। २. चौंकने की क्रिया। ३. गुफा। *(क्रि०वि०)* जल्दी।

भड़कण—*(वि०)* १. डरपोक। २. चौंकने वाला।

भड़कणो—*(क्रि०)* १. सहसा चौंक पड़ना। २. एकदम आग पकड़ना। ३. क्रुद्ध होना। ४. डरना।

भड़कल—*दे०* भड़कण।

भड़काणो—*(क्रि०)* १. डराना। २. क्रुद्ध करना। ३. प्रज्वलित करना। ४.

चौकन्ना करना। ५. चौंकाना। भड़काना।

भड़कावणो—दे० भड़काणो।

भड़किमाड़—*(न०)* १. योद्धा। २. देश रक्षक। ३. रक्षक।

भड़कियो—*(न०)* १. मिट्टी की सुराही। २. एक बारूद खाना।

भड़किवाड़—दे० भड़किमाड़।

भड़को—*(न०)* १. मिट्टी की सुराही। **भुड़को**। २. एकाएक ज्वाला उठना। ३. विस्फोट।

भड़खाणी—*(ना०)* तलवार। खड्ग। **भट भक्षणी**।

भडग—*(न०)* शिव। महादेव।

भड़ज—दे० भिड़ज।

भड़ताळ—*(ना०)* आग। अग्नि। **वासदे**।

भड़भड़ाट—*(न०)* भड़भड़ की आवाज।

भड़भड़ाणो—*(क्रि०)* भड़भड़ की ध्वनि करना।

भड़भड़ियो—*(वि०)* १. बहुत बोलने वाला। **झिकाळियो**। **बड़बड़ियो**। २. व्यर्थ बोलने वाला।

भड़भड़ी—*(ना०)* महामारी। संक्रामक बीमारी।

भड़भोत—*(वि०)* वीर। बहादुर।

भड़भुच—*(न०)* १. नाश। संहार। २. गिरने या कटने का शब्द। ३. शस्त्र का झटका। झटके से कटना।

भड़भूंजण—*(ना०)* भड़भूंजे की पत्नी। २. भड़भूंजा जाति की स्त्री।

भड़भूंजो—*(न०)* भाड़ से चना आदि अन्न भुनने का काम करने वाला।

भड़भोलो—*(न०)* होली को पहनाने की गोबर की माला का मनका। **गोबर-मणको**।

भड़मल—दे० भड़मल्ल।

भड़मल्ल—*(न०)* १. वीर। पुरुष। २. योद्धा। ३. निष्णात।

भडली—*(ना०)* एक स्त्री जिसके नाम से उसके पति डंक ने भडली पुराण में स्वाभाविक लक्षणों के आधार पर काल दुकाल, ऋतुओं और वर्षा के संबंध में भविष्य कथन किया है।

भडलीवायक—*(न०)* भडली पुराण में ऋतु, वर्षा आदि के संबंध की भविष्योक्तियाँ।

भड़वाई—*(ना०)* भड़ुए का काम। भड़ुआपना। **भड़वापणो**।

भड़वापणो—दे० भड़वाई।

भड़वीर—*(न०)* वीर। योद्धा।

भड़वो—*(न०)* वेश्याओं का दलाल।

भड़ंग—*(वि०)* निर्लज्ज। बेशर्म। *(न०)* घोड़ा। अश्व।

भड़ंगी—*(वि०)* १. आडम्बरी। पाखंडी। २. बेशर्म। *(ना०)* घोड़ी।

भड़ंगाण—*(न०)* अश्वसमूह।

भड़ंजर—*(न०)* १. अस्थिरपंजर। २. **भट्टपंजर**।

भड़ाक—*(अव्य०)* तुरंत। शीघ्र।

भड़ाको—*(न०)* १. तोप, बंदूक आदि के छूटने का शब्द। २. एकाएक ज्वाला उठना।

भड़ाभड़—*(अव्य०)* एकदम। शीघ्र। *(ना०)* भड़भड़ या भड़ाभड़ का शब्द।

भड़ाळ—*(न०)* वीर। सुभट।

भड़ाव—*(ना०)* १. भीड़। २. समूह। ३. भिड़ना। सटना। भिड़ाव।

भडांभड़—*(न०)* योद्धाओं का योद्धा। महायोद्धा। परमवीर।

भड़ांस—*(ना०)* मन में दबे हुए असंतोष या क्रोध की अभिव्यक्ति। आक्रोश। **गुस्सो**।

भडांविभाड़—*(वि०)* १. शत्रु-वीरों का नाश करने वाला। शत्रुओं का संहार

करने वाला। २. योद्धाओं का संहार करने वाला।

भड़िंद—*(नo)* किसी भारी वस्तु के गिरने की आवाज।

भड़ियाळ—*(विo)* १. वीरों से टक्कर लेने वाला। २. भिड़ने वाला।

भड़ै—*(अव्यo)* १. पास में। निकट में। २. पास। निकट। कनै। नखै।

भडोळ—*(विo)* १. मूर्ख। २. बेशऊर। फूहड़।

भडोळखातो—देo भडोळखानो।

भडोळखानो—*(नo)* १. अंधेरखाता। २. अव्यवस्था।

भडोळपणो—*(नo)* १. बेशऊरी। फूहड़पना। २. मूर्खता। ३. अव्यवस्था।

भड़ोलियो—देo वडोलियो।

भण—*(नo)* ताड़ वृक्ष।

भणक—देo भणकारो।

भणकणो—*(क्रि०)* १. शब्द होना। आवाज होना। २. भनभन शब्द होना। ३. आना या जाना।

भणकार—देo भणकारो।

भणकारो—*(नo)* १. आवाज। शब्द। २. धीमा शब्द। भनक। ३. उड़ती खबर। ४. कुछ होने या किसी के आने का संकेत।

भणको—देo भणकारो।

भणण—*(नo)* १. भौंरे के उड़ने से होने वाला शब्द।

भणण-भणण—*(नo)* १. सिर का घूमना। २. सिर में भणण-भणण शब्द होकर आने वाला चक्कर। ३. भौंरे के उड़ने का शब्द।

भणणाटो—देo भणण-भणण।

भणणो—*(क्रि०)* १. कहना। २. बोलना। ३. पढ़ना। बांचना। ४. अध्ययन करना। पढ़ाई करना। ५. सीखना। ६. रटन करना। ७. टेरलगाना। गाना। ८. रचना करना। ९. जपना।

भणत—*(नाo)* १. विद्या। २. शिक्षा। ३. पढ़ाई। ४. गाना। गायन। ५. सूझ। बुद्धि। ६. ज्ञान। ७. कृषकों या मजदूरों का सामूहिक रूप से कार्य करते हुए उच्चारण की जाने वाली राम ध्वनि आदि।

भणतर—*(नाo)* १. पढ़ाई। शिक्षा। २. शिक्षण।

भणभणाट—*(नाo)* मच्छर-मक्खियों के उड़ने का शब्द। देo भणण-भणण।

भणहणणो—*(क्रि०)* १. भौंरे के उड़ने का शब्द होना। गुंजार होना। २. गुंजार करना।

भणाणो—देo भणावणो।

भणावणो—*(क्रि०)* १. पढ़ाना। अध्ययन कराना। २. सिखाना। बतलाना। ३. बहकाना।

भणि—*(अव्यo)* निमित्त, लिये, की, और इत्यादि प्रत्ययों का कारक प्रत्यय।

भणित—*(नाo)* १. कथा। २. बात।

भणियण—*(नo)* १. चारण। २. कवि। *(विo)* पढ़ा हुआ।

भणियो—*(विo)* पढ़ा हुआ। पठित। शिक्षित। भणियोड़ो।

भणियो-गुणियो—*(विo)* १. पढ़ा-लिखा। विद्वान। २. गुणी। गुणवान।

भणियोड़ो—देo भणियो।

भणी—*(अव्यo)* १. लिये। २. के लिये। ३. 'को' प्रत्यय। ४. ओर। तरफ।

भणी-गुणी—*(विo)* १. पढ़ी-लिखी हुई। २. समझवाली।

भणीजणो—*(विo)* १. पढ़ना। अध्ययन करना। २. बांचना।

भणो-भण—*(अव्य०)* १. पुनः पुनः पढ़ना। २. बार-बार जपना। ३. बार-बार उच्चारण करने का आदेश।

भत—*(अव्य०)* भाँति। तरह। *(न०)* १. भक्त। २. भात। ३. भोजन।

भतई—*दे०* भातवी।

भतवार—*(ना०)* खेत में काम करने वालों के लिये भाता (भोजन) ले जाने वाली स्त्री।

भतवारण—*दे०* भतवार।

भतवारी—*दे०* भतवार।

भतवारो—*(न०)* खेत में भाता ले जाने का समय। **भातवेळा। रोटीवेळ।** *(वि०)* भाता ले जाने वाला।

भति—*(अव्य०)* भांति। तरह।

भतीज—*दे०* भतीजो।

भतीजी—*(ना०)* भाई की लड़की।

भतीजो—*(न०)* भाई का लड़का। भतीजा। भ्रातृज।

भतूळियो—*(न०)* वातचक्र। **भूतेळो। बघूळो।**

भतूळो—*दे०* भतूळियो।

भत्त—*(अव्य०)* भाँति। प्रकार। तरह। *(न०)* १. भक्त। २. भोजन।

भत्ति—*(ना०)* भक्ति।

भत्तो—*(न०)* किसी विशेष काम के लिये हेडक्वार्टर से बाहर भेजे जाने पर वेतन से अतिरिक्त दिया जाने वाला धन। यात्रा व्यय। एलाउंस। भत्ता।

भत्रीजी—*दे०* भतीजी।

भत्रीजो—*दे०* भतीजो।

भथ्थो—*दे०* भत्तो।

भद—*(ना०)* बदनामी। अपकीर्ति।

भद उडणी—*(मुहा०)* अपकीर्ति होना।

भदर—*(न०)* १. सिर, दाढ़ी और मूंछों आदि का मुंडन। २. माता, पिता आदि गुरुजनों की मृत्यु पर पर कराया जाने वाला मुंडन।

भदरक—*(न०)* १. सुलक्षण। २. योग्यता। ३. अच्छाई। ४. यथार्थता। ५. तत्व। सार। ६. प्रसन्नता। *(वि०)* १. सुन्दर। २. अच्छा।

भदंत—*(न०)* बौद्ध भिक्षुक। *(वि०)* मान्य। पूज्य।

भद्द—*(न०)* भाद्रपद मास। *दे०* भद।

भद्दापणो—*(न०)* भद्दापन।

भद्दी—*(वि०)* १. बदनाम। २. बुरी। ३. कुरूप। ४. अशिष्ट।

भद्दी लगणी—*(मुहा०)* अपकीर्त्ति होना। बदनामी होना।

भद्दो—*(वि०)* १. खराब। बुरा। भद्दा। खोटा। २. बेडौल। कुरूप। ३. अशिष्ट। ४. अश्लील।

भद्र—*(न०)* १. महादेव। शिव। २. हाथी। ३. बैल। ४. महादेव का एक गण। वीरभद्र। ५. कल्याण। ६. सुवर्ण। सोना। ७. चंदन। ८. पर्वत। ९. सिर, दाढ़ी, मूंछों आदि का मुंडन। १०. सफेद रंग। *(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. भला। ३. शिष्ट। सभ्य। ४. मंगलकारी ५. मांगलिक। ६. भाग्यशाली।

भद्रक—*(वि०)* १. शुभ। २. भला। सीधा। भद्रिक। **भोळो।** *दे०* भदरक।

भद्रकाळी—*(ना०)* दुर्गा। महामाया।

भद्रखेम—*(न०)* कुशल क्षेम।

भद्रखेमा—*(ना०)* दुर्गा। महामाया।

भद्रजाति—*(न०)* हाथी। हस्ती। गज।

भद्रपीठ—*(ना०)* सिंहासन।

भद्रपुरुष—*(न०)* भला पुरुष।

भद्रंकर—*(वि०)* कल्याणकारी।

भद्रा—*(ना०)* १. गाय। २. दूर्वा। ३. दुर्गा। ४. द्वितिया, सप्तमी, और द्वादशी

तिथियें। ५. एक अशुभ योग (ज्योतिष)। ६. सुघड़ स्त्री। ७. फूहड़ स्त्री। ८. आकाश गंगा। ९. पृथ्वी। १०. कल्याणकारी शक्ति। ११. हलदी। १२. श्री कृष्ण की एक पत्नी का नाम।

भद्राकरण—*(न०)* मुंडन। हजामत।

भद्राक्ष—*(न०)* एक वृक्ष जिसके बीजों से माला के मनके बनते हैं। नकली रुद्राक्ष।

भद्रासण—*(न०)* सिंहासन। भद्रासन। भद्रपीठ।

भनेब—*(वि०)* १. नाश करने वाली। २. भगाने वाली। दूर करने वाली। *(ना०)* तलवार।

भपको—दे० भभको।

भबको—दे० भभको।

भभक—*(ना०)* १. तेज दुर्गंध। २. डर। भय। ३. आतंक। ४. ज्वाला। *(क्रि०वि०)* १. डर कर के। २. जल्दी।

भभकणो—*(क्रि०)* १. एक दम आग की ज्वाला का उठना। २. जमीन में से पानी का ऊपर उठना। ३. क्रुद्ध होना। ४. क्रोध में अंट संट बोलना। ५. बहुत तेज दुर्गंध फूटना।

भभकदार—*(वि०)* १. भभके वाला। २. सुन्दर। ३. चमकीला।

भभकाणो—*(क्रि०)* १. क्रोधित करना। २. प्रज्वलित कराना। ३. दुर्गंध फैलाना।

भभकी—*(ना०)* १. धौंस। धमकी। २. जलन। दाह।

भभको—*(न०)* १. आडंबर। ऊपरी दिखावा। २. झूठी शोभा। ३. आग की ज्वाला। ४. जमीन में से पानी का ऊपर उठना। ५. अर्क निकालने का एक यंत्र। ६. सुन्दरता। ७. चमक।

भभरूक—*(न०)* भूत। *(वि०)* १. बिखरे हुए बालों वाला।। २. डरावना।

भभरूत—दे० भभरूक।

भभीखण—*(न०)* विभीषण।

भभीछण—दे० भभीखण।

भभूत—*(ना०)* १. भस्म। राख। विभूति। २. यज्ञ कुंड की भस्म। विभूति। ३. साधुओं की धूनी की भस्मी।

भभूती—दे० भभूत।

भभो—दे० भम्भो।

भम्भो—*(न०)* 'भ' वर्ण। भकार।

भमण—*(न०)* १. संसार। जगत। २. भ्रमण। चक्कर। ३. आना-जाना। आवागमन।

भमणियो—*(न०)* एक काष्ट चक्र जिस पर कूप में से चरस निकालते समय उसकी वर्त चलती है।

भमणो—*(क्रि०)* १. भ्रमण करना। घूमना। २. भटकना। ३. गोलाकार फिरना। चक्कर लगाना। ४. भ्रमित होना। चक्कर खाना।

भमती—*(न०)* १. मंदिर का परिक्रमा-पथ। २. परिक्रमा।

भमती देणो—*(मुहा०)* परिक्रमा करना। परिक्रमा लगाना।

भमर—दे० भँवर।

भमर कड़ी—दे० भँवरकड़ी।

भमर गुफा—दे० भँवरगुफा।

भमरजाळ—*(न०)* १. फंदा। जाल। उलझन। २. संसार-व्यवहार। लौकिक व्यवहार। ३. धोखा। छल। भंवरजाळ।

भमरड़ो—*(न०)* लट्टू।

भमर-रव—*(न०)* भौंरे का गुंजन।

भमर वेधण—*(न०)* दशरथपुत्र। लक्ष्मण का एक नाम।

भमरा माखी—दे० भँवरा माखी।

भमरा माटी—*(ना०)* १. भंवरी द्वारा दीवार आदि पर बनाया हुआ मिट्टी का घर जिसमें कीटों को (लटों को) पकड़ कर अपनी गुंजन क्रिया से भंवरी रूप में परिणित करती है। २. भंवरी द्वारा अपने अंडों को रखने के लिये बनाया हुआ मिट्टी का घर।

भमरियो—*दे०* भँवरियों।

भमरी—*(ना०)* १. भिड़। ततैया। टांटियो। भंवरी। डींभू। २. एक खिलौना। चकरी।

भमरो—*(ना०)* भौंरा। भ्रमर।

भमळ—*(ना०)* चक्कर। सिर का घूमना। *(वि०)* काला। श्याम।

भमंग—*(ना०)* भुजंग। सर्प। साप।

भमंगर—*(ना०)* सर्प।

भमाड़णो—*दे०* भमावणो।

भमाणो—*दे०* भमावणो।

भमावणकुंजर—*(ना०)* पांडव। भीम।

भमावणो—*(क्रि०)* १. भ्रमण कराना। चक्कर खिलाना। फिराणो। २. इधर-उधर भटकवाना। ३. चक्कर दिलवाना। घुमाना। ४. भुलावा देना। ५. असमंजस में डालना।

भमियाळ—*(वि०)* १. भ्रमण करने वाला। २. जानकार।

भय—*(ना०)* डर। खौफ। भीति। बीह।

भयभंजण—*(वि०)* भय को मिटाने वाला। ईश्वर। भौभंजण।

भयभीत—*(भू०क्रि०)* डरा हुआ।

भयमोचण—*(वि०)* भय का नाश करने वाला। ईश्वर।

भयंकर—*(वि०)* १. भयानक। भयावना। डरावना। २. जबरदस्त। भयावणो।

भयंकरी—*(ना०)* एक देवी।

भयंग—*(ना०)* पृथ्वी। *(ना०)* भुजंग। सांप।

भयंगचर—*(ना०)* गरुड़।

भयाण—*(वि०)* भयानक। भयंकर। डरावणो। भयावणो।

भयाणक—*दे०* भयाण।

भयानक—*दे०* भयाण।

भयावणो—*(वि०)* भयावना। डरावना। डरावणो।

भयी—*(क्रि०भू०)* हुई। बनी। हुई।

भयो—*(क्रि०भू०)* हुआ। बना। हुओ। हुवो।

भर—*(ना०)* घास, अनाज, लकड़ी आदि का इतना परिमाण या वजन जो एक बार में बैलों की जोड़ी से (बैलगाड़ी में भर कर के) या एक ऊंट, खच्चर आदि से खींचा जा सके। २. घास, कड़बी आदि का वह परिमाण जो बैलगाड़ी में भरा जा सके। ४. पूर्ण होने या भर जाने की स्थिति। ५. वजन। तौल। ६. भार। बोझा। ७. उत्तरदायित्व। ८. पूर्णता। ९. पूरण। १०. छोटा टीबा। धोरियो। ११. भराव। *(अव्य०)* तक। पर्यंत। *(वि०)* १. समान। तुल्य। २. पूरा। पूर्ण। ३. सब। समस्त।

भरकुट—*(ना०)* सिर। भ्रकुट, माथो।

भरखम—*(वि०)* १. बहुत। २. भारी। ३. जिसमें बहुत भार हो। भार वाला। ४. भार उठाने वाला। ५. सहनशील। भरखमो।

भरखमपण—*दे०* भरखंपण।

भरखमो—*(वि०)* १. सहनशील। २. गंभीर। ३. भार को सहन करने वाला।

भरखवूं—*दे०* भरखमो।

भरखवो—*दे०* भरखमो।

भरखंहरण—*दे०* भरखमो।

भरगु—*(ना०)* भृगुऋषि। परशुराम।

भरगत—*(न०)* नाज आदि किसी वस्तु को तोलने के लिये भरा जाने वाला तकड़ी के पहले पलड़े के समय कहा जाने वाला वृद्धि सूचक शब्द । बरगत । शुभारंभ २. भरा हुआ । पूर्णता । भार । वजन । ३. बेबरगत ।

भरगोळा—*(न०ब०व०)* कच्चे आंगन को जमाने के लिये गोबर, मिट्टी और राख को मिलाकर बनाये हुये छोटे गीले गोले, जिनको आंगन में पथरा कर और पांवों से खूंद कर जमा दिया जाता है ।

भरचक—दे० भरपूर ।

भर जवान—दे० भाल मोटियार ।

भर जवानी—*(ना०)* पूर्ण युवावस्था ।

भर जोवन—*(न०)* भरपूर जवानी । पूर्ण यौवन ।

भरड़—*(ना०)* १. ध्वनि । २. नाश ।

भरड़णो—*(क्रि०)* १. दलना । पीसना । २. मारना । पीटना । ३. नाश करना ।

भरड़ो—*(न०)* नाश । ध्वंस ।

भरण—*(न०)* १. धान्य को मापने का एक पात्र । २. भरण से मापे हुए अनाज का परिमाण । ३. आहार । भोजन । ४. पालन-पोषण । ५. बादल । मेघ । ६. गुजरान । ७. संग्रह । ८. तगारी । *(वि०)* १. पोषण करने वाला । २. भरने वाला ।

भरणाकी—*(ना०)* १. छोटा कुंडा । तगारी । २. नाज भरने या मापने का एक पात्र ।

भरणाको—*(न०)* एक पात्र । कूंडा ।

भरणानद—*(न०)* बादल । मेघ ।

भरण-निवाण—*(न०)* १. बादल । मेघ । २. वर्षा ।

भरणपोखण—दे० भरणपोषण ।

भरणपोषण—*(न०)* किसी को पालने पोसने की क्रिया या भाव । पालन-पोषण । परवरिश ।

भरणाट—*(न०)* १. मक्खियों के उड़ने का शब्द । २. चक्कर । घुमरी ।

भरणाटो—दे० भरणाट ।

भरणाणो—*(क्रि०)* चक्कर देना । घुमाना ।

भरणियो—*(वि०)* भरने वाला । *(न०)* एक पात्र । भरणको ।

भरणी—*(ना०)* १. कांच, मिट्टी आदि का एक ढक्कनदार पात्र । २. भरणी नामक नक्षत्र । ३. करघे का एक उपकरण ।

भरणीजळ—*(ना०)* सोलह दिशाओं में की एक दिशा । उत्तर और ईशान के बीच की दिशा । भरहेर दिशा ।

भरणो—*(न०)* १. ऋण । कर्ज । २. खान-पान की सामग्री । ३. रुपयों के बदले में दिया जाने वाला सामान । ४. नुकसान की पूर्ति । क्षतिपूर्ति । ६. किसी के निमित्त विवशतावश दिया जाने वाला या खर्च किया जाने वाला धन । ७. भरण-पोषण का खर्च । *(क्रि०)* १. पूरा करना । भरना । २. ऋण चुकाना । अदा करना । ३. बन्दूक में बारूद-गोली भरना । ४. वाहन पर माल लादना । ५. खाली पद पर नियुक्त करना । ६. दांत से काटना । डसना । ७. शरीर पर लेपन करना । ८. शरीर का पुष्ट होना । ९. गर्भ धारण करना (पशु) । १०. घाव का पूरा हो जाना । ११. अपेक्षित वस्तु की पूर्ति करना । १२. छेद को बन्द करना । १३. किसी के विषय में गुप्त रीति से निंदात्मक बातें करना । विरोधीभाव उत्पन्न करना । १४. चेचक-पिप्सी आदि का सारे शरीर में निकल आना । १५. टैक्स देना । १६. दंड देना । जुर्माना अदा करना । १७. भुगतना । सहना । सहन करना । १८. किसी वस्तु का

संग्रह करना। १९. किसी काम में सहायता की स्वीकृति देना। २०. नापना। २१. ऊबना। २२. मापना।

भरत—*(न०)* १. घड़ी नहीं जाने वाली एक मिश्रित धातु, परन्तु ढाल करके इसके बरतन आदि बनाये जाते हैं। २. बैलगाड़ी, ऊंट आदि पर लादे जाने वाले बोझे की मिकदार। लादे जाने वाले भार की मात्रा। जैसे–'गाड़ी रो भरत'। 'ऊंट रो भरत।' ३. माप। प्रमाण। **भर**। ४. वस्त्र पर निकाली हुई बेल बूंटी। ५. खेत में बरसात के पानी का भराव होना। ६. दशरथ के पुत्र कैकयी से उत्पन्न, श्री रामचन्द्र के छोटे भाई। ४. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यन्त के पुत्र का नाम। ८. कसीदे का काम। ९. नाट्यशास्त्र के प्रणेता एक मुनि।

भरतखंड—*(न०)* भारतवर्ष।

भरतपुर—*(न०)* एक भूतपूर्व रियासत राजस्थान की और उसकी राजधानी का नगर।

भरतरी—*(न०)* उज्जैन के प्रसिद्ध राजा भर्तृहरि जिन्होंने 'भर्तृहरि शतक–त्रय' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी।

भरता—*(वि०)* १. भरण-पोषण करने वाला। भर्ता। २. अधिपति। ४. विष्णु। ५. युधिष्ठिर।

भरतार—*(न०)* १. पति। भर्ता। २. राजा। ३. ईश्वर।

भरताग्रज—*(न०)* श्री रामचंद्र।

भरतियो—*(न०)* १. माल बेचने वाले व्यापारी की ओर से माल खरीदने वाले व्यापारी को माल का ब्योरा, निर्ख और कीमत आदि को दर्शाने वाला माल के साथ भेजा जाने वाला नोंध पत्र। बिल। बीजक। २. सांचे में ढाल कर बनाई हुई भरत नाम की मिश्रित धातु की हांडी या लुटिया। ३. सेवक। भृत्य।

भरती—*(ना०)* १. ज्वार-भाटा। २. समुद्र की चढाई। ज्वार। ३. प्रवेश। ४. रिक्त स्थान, पद, अवकाश इत्यादि को भरने की क्रिया। ५. वस्तु भरने के थेले या पात्र का परिमाण। ६. थेले या पात्र में भरी जाने वाली वस्तु का परिमाण। ७. स्कूल, फौज आदि में प्रविष्ट होने का भाव।

भरथरी—*दे०* भरतरी।

भरदुआज—*दे०* भरद्वाज।

भरद्वाज—*(न०)* १. इस नाम के अनेक ऋषि, मुनि, ब्रह्मर्षि हुये हैं। इनमें से कई गोत्र-प्रवर्तक, शास्त्रकार ऋचाकार तापस और मंत्रकार आदि हैं। २ एक शकुन पक्षी।

भरनीगंल—*दे०* भरियानींगळ।

भरपाई—*(ना०)* १. क्षतिपूर्ति। २. पावने की रसीद। प्राप्ति की रसीद। ३. लेना, खाता, हुंडी आदि रकम की संपूर्ण प्राप्ति। *(क्रि०वि०)* पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

भरपाणो—*(क्रि०)* १. समग्र रूप में वसूल होना। भरपाना। २. पाना। प्राप्त होना।

भरपूर—*(वि०)* १. पूर्ण भरा हुआ। पूरी तरह से भरा हुआ। २, खूब। पुष्कल। *(अव्य०)* पूरी तरह से।

भरपेट—*(अव्य०)* १. पेट भर कर। पेट भर जाय जितना। २. चाहिये जितना। आवश्यकतानुसार। *(वि०)* अत्यधिक। खूब।

भर-बाथां—*(अव्य०)* १. बाहुपाश में ले करके। बाथ में भर करके। २. बाथ में भरा जाय जितना। बाथ में।

भरभार—*(न०)* १. उत्तरदायित्व । जिम्मेदारी । २. सामान । सामग्री ।

भरभूंट्यो—दे० भुरट ।

भरम—*(न०)* १. भेद । रहस्य । २. गुप्त-भेद । ३. मर्म की बात । गूढ़ बात । गूढ़त्व । ४. साख । प्रामाणिकता । ५. प्रतिष्ठा । ६. संशय । संदेह । ७. अज्ञान । ८. गुंजाइश ।

भरमजाळ—दे० भ्रमजाळ ।

भरमणा—*(ना०)* १. संदेह । शक । २. भ्रमण । ३. अनिश्चय ।

भरमाणो—दे० भरमावणो ।

भरमाभरमी—*(अव्य०)* १. संदेह की दशा में । २. परस्पर की बात को नहीं समझ सकने के कारण । ३. संकोच-वश ।

भरमार—*(ना०)* १. अधिकता । बहुत । २. अनावश्यक प्रचुरता । *(वि०)* ज्यादा ।

भरमावणो—*(क्रि०)* १. भ्रम में डालना । २. फंसाना । ३. बहकाना । २. धोखा देना ।

भरमो—*(वि०)* १. किसी धातु आदि को गला कर और सांचे में ढाल कर बनाया हुआ । २. भरा जाने वाला । ३. भरा हुआ ।

भरम्म—दे० भरम ।

भरळ—*(न०)* चमक । *(वि०)* तेज ।

भरळाट—दे० भरळाटो ।

भरळाटतन—*(न०)* सूर्य । सूरज ।

भरळाटो—*(न०)* १. क्रोध । २. ज्वाला । ३. चमक ।

भरवाई—दे० भराई ।

भरवाड़—*(न०)* १. भेड़ बकरी रखने या चराने वाला । रबारी । २. पशु-पालक ।

भरसक—*(अव्य०)* १. पूरी शक्ति के साथ । २. जहां तक हो सके । यथाशक्ति । ३. पूरी कोशिश के साथ ।

भरसूंड—दे० भरसूंडो ।

भरसूंडो—*(न०)* १. नाक । २. मुंह । ३. सुअर ।

भरहेर—दे० भरणीजळ ।

भराई—*(ना०)* भरने का काम या मजदूरी ।

भराटी—*(ना०)* लकड़ी, घास आदि का सिर पर उठाया जा सके उतना गट्ठड़ या बोझा । भारा । भारी । भारो । भरोटी ।

भराणो—दे० भरावणो ।

भराव—*(न०)* १. पानी आदि किसी वस्तु का एक जगह भर जाना या इकट्ठा होना । भरावट । २. भरने का भाव या काम । ३. उभार । सौष्ठव । ४. सौंदर्य । ५. पूर्ति । ६. पूर्णता । ७. भरती । ८. फौड़े-फुन्सी का मवाद से भर जाना ।

भरावट—दे० भराव ।

भरावणो—*(क्रि०)* १. भरवाना । २. पूर्ण कराना । ३. भराना । ४. संग्रह करवाना । ५. रिक्त स्थान को पूर्ण करवाना । ६. अदायगी करवाना ।

भरावदार—*(वि०)* १. भराव वाला । उभार वाला । २. सुन्दर ।

भरावो—*(न०)* पीतल, भरत आदि धातुओं को ढाल कर बरतन, खिलौने आदि बनाने वाला शिल्पी । दे० भराव ।

भरांत—दे० भ्रांत ।

भरिया—*(न०)* बच्चे की टट्टी ।

भरिया करणो—*(मुहा०)* बच्चे का टट्टी जाना ।

भरियानींगळ—*(न०)* १. नासूर। नाड़ी व्रण। २. गुदा व्रण।

भरियोडील—*(न०)* सौष्ठवयुक्त शरीर। हृष्टपुष्ट शरीर।

भरियोड़ो—*(वि०)* १. क्रोधित। २. उदास। ३. करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत। ४. व्याकुल। ५. संग्रहीत। ६. भरा हुआ। पूर्ण। ७. मुगतान किया हुआ।

भरियो-तिरियो—*(वि०)* १. पूरा भरा हुआ। परिपूर्ण। २. बड़े कुटुम्ब वाला (घर)। ३. सम्पन्न।

भरियोभरम—*(न०)* १. अच्छी भावना। अच्छा ख्याल। २. किसी के प्रति बनी हुई अच्छी भावना। ३. गुप्त बात। ४. रहस्य। भेद। ५. विश्वास।

भरूच—*(न०)* गुजरात का एक ऐतिहासिक नगर। भृगुकच्छ।

भरुज—*(न०)* गीदड़। **सियाळियो**।

भरूंट—*दे०* मुरट।

भरूंटो—*(न०)* १. भरूट घास। २. भरूट का दाना। ३. गट्ठड़। भारा। **भारो**।

भरे—*(वि०)* १. सफल। कामयाब। २. मन में समायाहुआ। हृदयंगम।

भरेत—*(न०)* वह खेत जिसमें वर्षा का पानी इकट्ठा होता हो।

भरे पड़णो—*(मुहा०)* १. पार लगना। २. सफल होना। ३. अनुकूल बनना (परिस्थिति)।

भरोटी—*दे०* भराटी।

भरोटो—*(न०)* भारा। *दे०* भराटी।

भरोती | *(ना०)* १. एक प्रकार का कर। २. **पावती**। रसीद। ३. प्रमाण। ४. भरती।

भरोसादार—*(वि०)* विश्वास पात्र। **भरोसाबंद**।

भरोसाबंद—*दे०* भरोसादार।

भरोसे—*(अव्य०)* १. बदले में। के स्थान में। २. सहारे पर। ३. भरोसे से।

भरोसो—*(न०)* १. विश्वास। भरोसा। २. आशापूर्ण विश्वास। ३. आशा। ४. अवलंब। सहारा।

भर्तृहरि—*दे०* भरतरी।

भळ—*दे०* भाळ।

भल—*दे०* भलो।

भळक—*(ना०)* चमक।

भळकणो—*(वि०)* चमकने वाला। *(क्रि०)* १. चमकाना। २. दिखाई देना।

भळकादार—*(वि०)* १. चमकदार। चमकीला। २. सुन्दर। ३. अनोखा।

भळको—*(न०)* १. क्षणिक प्रकाश। चमक। २. एक गहना। ३. छोटा भाला। ४. तीर। बाण। ५. कटारी।

भळणो—*दे०* भिळणो।

भलपण—*(न०)* १. भलाई। अच्छाई। २. सज्जनता।

भळभळाट—*(न०)* चमक।

भळभळो—*(वि०)* थोड़े क्षार वाला 'पानी'।

भलम—*(वि०)* १. भला। अच्छा। २. सुन्दर। *(न०)* १. **भलाई**। **भलापणो**। २. ख्याति। कीर्ति।

भलमनसाइत—*दे०* भळमनसात।

भलमनसाई—*दे०* भलमनसात।

भलमनसात—*(ना०)* भला होने का भाव। सज्जनता। **भलाई**।

भलमनसायत—*दे०* भलमनसात।

भलमंसाई—*दे०* भलमनसाई।

भलमंसात—*दे०* भलमनसात।

भलमंसी—*दे०* भलमनसात।

भळळ—*(ना०)* चमक।

भळळाट—*(ना०)* चकाचौंध करने वाला प्रकाश। तेज प्रकाश।

भळहळ—*(ना०)* १. चमक। प्रकाश। २. शोभा।

भळहळणो—*(क्रि०)* १. चमकाना। प्रकाश देना। २. दीपना। शोभा देना।

भलाई—*(ना०)* नेकी। अच्छापन।

भळाणो—*दे०* भळावणो।

भलापणो—*(ना०)* १. भलाई। अच्छाई। २. सज्जनता।

भलाभला—*(वि०ब०व०)* १. बड़प्पन और महत्व वाले। २. योग्यता और प्रभाव वाले। ३. अपनी चतुराई और समझ का गर्व करने वाले। ४. अच्छे-अच्छे।

भलाभलो—*(अव्य०)* १. श्रेष्ठ से श्रेष्ठ। २. अच्छे से अच्छे। ३. सब अच्छे। ४. भले से भला और उससे भी भला, इस प्रकार एक दूसरे से अधिक भला।

भळामण—*दे०* भळावण।

भळामणी—*दे०* भलावण।

भळावण—*(ना०)* १. जिम्मेदारी। जिम्मावारी। उत्तरदायित्व। २. सिफारिश। ३. संरक्षा। संभाल। ४. निगरानी। देखरेख। ५. सुपुर्दगी।

भळावणी—*दे०* भळावण।

भळावणो—*(क्रि०)* १. सौंपना। सुपुर्द करना। २. किसी की देख-रेख में रखना। किसी की जिम्मेदारी में रखना।

भलां—*(अव्य०)* १. अस्तु। खैर। भला। अच्छा। २. जो हो। ३. यदि इच्छा हो। चाहे। ४. यदि उचित हो। ५. चाहे जो हो। कुछ भी हो। ६. भले ही। ७. प्रसन्नता से। *(वि०)* १. भला। अच्छा। २. उचित।

भलांई—*(अव्य०)* १. स्वीकारात्मक शब्द। अच्छा। ठीक। २. यदि इच्छा हो। ३. चाहे।

भली—*(वि०)* १. अच्छी। २. सयानी। सैणी।

भली परै—*(अव्य०)* अच्छी प्रकार।

भलीभांत—*(अव्य०)* अच्छी प्रकार से।

भलीभूंडी—*(अव्य०)* १. अच्छी या बुरी। २. जैसी है वैसी।

भलीवार—*(ना०)* १. लाभ। बरकत। २. सार। सत्व। ३. अच्छाई। उत्तमता। ४. कुशलता। ५. सुसमय।

भले—*(अव्य०)* १. अस्तु। अच्छा। अच्छु। २. धन्य।

भळे—*(ना०)* १. राजस्थानी बालकों के शिक्षण की प्रथम पाटी का नाम। २. राजस्थानी स्वर वर्णों की संज्ञा। इसे 'बेलीटी' भी कहते हैं। ३. शिक्षण की प्रथम पाटी की मंगलाकृति 'ा ए ं ा' की प्रथम बेलीटी (खड़ी दो लकीरों) के बाद की वलाकृति जिसके बीच में मींडो (शून्य) और उसके बाद पुनः बेलीटी लगी रहती है। दोनों ओर की बेलीटी के बीच की शून्य रहित टेढी आकृति का नाम। ३. वळ (वळहै) की अपभ्रंश उच्चारण ध्वनि। *दे०* वळ। ४. 'वळ है' का अपभ्रष्ट लोक व्यवहृत नाम। *दे०* 'वळ' तथा 'वळ है'। *(अव्य०)* पुनः। फेर।

भळेटियो—*(ना०ब०व०)* १. आड़े-टेढ़े अक्षर। अवाच्य अक्षर।

भलेरो—*दे०* भलो।

भळै—*(अव्य०)* १. पुनः। उपरान्त। फिर। २. दूसरी बार। वळै। ३. 'वळहै' का अपभ्रंश रूप। *दे०* भळे।

भलो—*(वि०)* १. भला। अच्छा। २. लाभदायक। ३. महान। ४. सुन्दर।

५. बड़ा। ६. मन को भाने वाला। *(न०)* १. कल्याण। २. हित। लाभ। *(अव्य०)* अच्छा। अस्तु। अच्छू।

भलोड़ो—*(वि०)* अच्छा। भला।

भलोभूंडो—*(वि०)* १. अच्छा या खराब। २. जैसा है वैसा। ३. खराब। *(न०)* चर्चा। टीका।

भल्ल—दे० भलो।

भल्लक—*(न०)* भालू। रीछ।

भव—*(न०)* १. संसार। जगत। २. जन्म। ३. महादेव। ४. जीवन। जिंदगी। ५. ग्यारह का संख्या सूचक शब्द। ६. भय। डर। ७. जन्म-मरण का दुख। ८. कामदेव। ९. यम। १०. बादल। ११. ब्रह्मा।

भवकूप—*(न०)* संसार रूपी कुआँ।

भवजळ—*(न०)* भव रूपी जल। भवसागर। संसार सागर।

भवण—*(न०)* १. भवन। २. भ्रमण।

भवणो—*(क्रि०)* होना।

भवतात—*(न०)* सूर्य।

भवतारक—दे० भवतारण।

भवतारण—*(न०)* संसार रूपी समुद्र से पार करने वाला। संसार से उद्धार करने वाला। परमात्मा। ईश्वर।

भवदीय—*(अव्य०)* आपका। सगोडो।

भवन—*(न०)* १. घर। २. मंदिर। ३. संसार। ४. अस्तित्व।

भवनपति—*(न०)* १. गृहपति। २. ईश्वर। ३. राशि घर में किसी घर का स्वामी। (ज्यो०)

भवबंधन—*(न०)* सांसारिक बंधन।

भवभयहरण—*(न०)* संसार (के जन्म-मरण) के भय को मिटाने वाला। परमात्मा।

भव-भव—*(अव्य०)* १. जन्म-जन्म में। प्रत्येक जन्म में। २. अनेक जन्मों तक। भो-भो।

भवभंजण—*(वि०)* १. संसार के दुखों का नाश करने वाला। २. संसार का नाश करने वाला। ३. ईश्वर।

भवस—*(न०)* १. भविष्य। २. जन्म। ३. जीवन। जिंदगी। ४. मुसलमान।

भवसागर—*(न०)* संसार रूपी समुद्र। भवजळ। भववारिधि।

भवसायर—दे० भवसागर।

भवसिंधु—दे० भवसागर।

भवसुखा—*(ना०)* नदी।

भव सोदरी—*(ना०)* सरस्वती।

भवा—*(ना०)* पार्वती।

भवाटवी—*(न०)* संसार रूपी जंगल।

भवाणो—*(क्रि०)* १. कराना। २. मन बहलाना।

भवावणो—दे० भवाणो।

भवान—*(सर्व०)* आप।

भवानी—*(ना०)* १. पार्वती। २. दुर्गा। ३. एक शकुन चिड़िया। कबारेल। ४. उलूक जाति की कोचरी नामक चिड़िया। चोबरी। भैरव। ५. एक रागिनी।

भवार्णव—*(न०)* संसार रूपी समुद्र।

भवाँ—*(न०)* भौंह। *(क्रि०वि०)* कदापि। हरगिज।

भवाँइ—*(क्रि०वि०)* कदापि। हरगिज। कभी भी।

भवांतर—*(न०)* जन्मान्तर। दूसरा जन्म।

भवि—*(क्रि०वि०)* पुनः। फिर। बळे। फेर। *(न०)* १. भय। २. मुक्तिगामी। (जैन०)

भविक—*(वि०)* सिद्धि प्राप्त करने के योग्य (जैन०)।

भविष्य—*(न०)* १. आने वाला समय। २. आने वाले समय की बात। ३. ३. प्रारब्ध। नसीब।

भविष्यत्काल—*(न०)* व्याकरण के तीन कालों में से एक। आने वाला काल।

भविष्य पुराण—*(न०)* अठारह पुराण धर्म ग्रंथों में एक पुराण।

भविष्यवाणी—*(ना०)* भविष्य में होने वाली बात जो पहले से किसी ने बता दी हो।

भविस—दे० भविष्य।

भविसभाखणो—*(क्रि०)* आने वाली या होने वाली घटना को बता देना।

भविसवाणी—दे० भविष्य वाणी।

भवे—*(अव्य०)* १. कदापि। हरगिज। २. कभी भी। भवाँई। ३. भविष्य में। ४. निश्चय ही।

भवेश—*(न०)* १. महादेव। शिव। २. भविष्य। ३. प्रारब्ध। ४. संसार का स्वामी। परमात्मा। भवेश। ५. राजा।

भवोभव—*(अव्य०)* १. प्रत्येक जन्म में। जन्म-जन्म में। *(न०)* प्रत्येक जन्म।

भव्य—*(वि०)* १. गौरवशाली। २. प्रभावशाली। ३. सुन्दर। *(न०)* १. कुशल। २. शिव। महादेव।

भसम—दे० भस्म।

भसमी—दे० भस्म।

भसर—*(न०)* प्याज। कांदो।

भसंड—*(न०)* १. घोड़ा। २. हाथी।

भसूंड—*(न०)* १. हाथी। २. हाथी की सूंड।

भस्म—*(ना०)* १. भस्म। राख। २. धातुओं को जलाकर बनाई हुई खाक। ३. यज्ञ की भस्मी। विभूति। प्रसादी। भभूत।

भस्मक—*(न०)* खूब भूख लगने का रोग।

भस्मासुर—*(न०)* एक राक्षस।

भस्मीभूत—*(वि०)* जलकर राख बना हुआ।

भहभेर—*(न०)* १. बड़ा ढोल। बड़ा नगाड़ा।

भंग—*(ना०)* १. भाँग। विजया। *(न०)* १. टूटने की क्रिया या भाव। भंगाण २. टुकड़ा। ३. विध्वंस। नाश। ४. विघ्न। ५. पराजय। हार। ६. भगदड़। खलबली। ७. घाव। ८. धोखा।

भंगड़—दे० भंगेड़ी।

भंगण—*(ना०)* भंगी की स्त्री। *(वि०)* तोड़-फोड़ करने वाला।

भंगणो—*(क्रि०)* १. तोड़ना। २. नष्ट करना। मिटाना। ३. टूटना। ४. नष्ट होना।

भंगाण—*(न०)* १. टूटने की क्रिया या भाव। २. भगदड़। भागना। ३. नाइत्तिफाकी। अनबन। ४. शत्रुता। बैर।

भंगार—*(न०)* १. टूटी-फूटी वस्तुओं का ढेर। २. कूड़ा करकट।

भंगी—*(न०)* मैला उठाने का काम करने वाली जाति या व्यक्ति। महत्तर। मेहतर।

भंगीवाड़ो—*(न०)* १. भंगियों का मोहल्ला। २. गंदी बस्ती।

भंगेड़ी—*(वि०)* बहुत भंग पीने वाला।

भंगेरी—दे० भंगेड़ी।

भंगेळ—*(वि०)* भागने वाला। दे० भंगाण।

भंगोरणो—*(क्रि०)* ठोंकना। पीटना।

भंज—*(न०)* १. नाइत्तिफाक । मतभेद । २. फूट । कलह । ३. टूटी हुई वस्तु । ४. नाश । ५. विघ्न । ६. सोने या चाँदी को तोड़ कर उसमें मिलावट आदि की की जाने वाली परीक्षा का एक तरीका ।

भंजक—*(वि०)* १. तोड़ने वाला । २. भागने वाला । ३. विघ्नकर्त्ता ।

भंजगी—*(ना०)* बाधा । विघ्न ।

भंजण—*(वि०)* १. नाश करने वाला । मिटाने वाला । भंजन । २. भागने वाला *(न०)* १. नाश । संहार । २. पराजय ।

भंजणभीर—दे० भीरभंजण ।

भंजणो—*(क्रि०)* १. टूटना । २. भगा देना । हरा देना । ३. तोड़ना । तोड़ देना । *(वि०)* १. भागने वाला । २. मारने वाला । नाश करने वाला । ३. हराने वाला ।

भंट—दे० भुरट ।

भंड—*(वि०)* १. बुरा । २. बदनाम *(न०)* १. बरतन । पात्र । २. स्थान । ३. घर । भाँडो । दे० भाँड ।

भंडण—*(न०)* १. हानि । २. बदनामी । ३. कवच । *(वि०)* निंदा करने वाला ।

भंडणो—*(क्रि०)* १. निरर्थक होना । बेकार होना । २. बदनाम होना । ३. बदनाम करना । भाँडणो ।

भंडसूरियो—*(न०)* ग्राम सूकर ।

भंडाई—*(ना०)* १. भाँड का काम । भाँडाई । २. बुराई । बदनामी ।

भंडाफोड़—*(न०)* रहस्य का प्रकट होना । रहस्योद्घाटन ।

भंडार—*(न०)* १. कोश । खजाना । २. खाने-पीने की वस्तुएँ आदि रखने का स्थान । कोठार । ३. गोदाम ।

भंडारियो—*(न०)* १. आला । ताक । ताखा । २. बैलगाड़ी के नीचे बनी हुई पेटी जिसमें सागड़ी (गाड़ी वाला) अपना सामान रखता है । ३. छोटा भंडार ।

भंडारी—*(न०)* १. भंडार का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी । २. कोषाध्यक्ष । ३. रसोइया । ४. बनियों की एक जाति या शाखा । ५. छोटी कोठरी । *(ना०)* पृथ्वी ।

भंडारो—*(न०)* १. साधु-संन्यासियों में मरने के बाद किया जाने वाला मृत्यु भोज । २. साधुओं का भोज ।

भंडाणो—*(क्रि०)* १. बदनाम होना । बेइज्जत होना । २. बदनाम करना । ३. निन्दा या बदनामी हो ऐसा काम करना । निन्दा करना ।

भंडावणो—दे० भंडाणो ।

भंडीजणो—*(क्रि०)* बदनाम होना ।

भंडीस—*(वि०)* नाश करने वाला । *(न०)* दक्ष प्रजापति ।

भंडो—*(न०)* १. रहस्य । भेद । २. छिपी हुई बात या काम । ३. कुकर्म ।

भंडो फूटणो—*(मुहा०)* १. रहस्योद्घाटन होना । २. गुप्त बात प्रगट होना । ३. कुकर्म प्रगट होना ।

भंत्त—दे० भाँति ।

भंति—दे० भाँति ।

भंते—*(न०)* बौद्ध साधु का सम्बोधन ।

भंभ—*(न०)* धुआँ ।

भंभर—*(वि०)* घबराया हुआ ।

भंभरभोळो—*(वि०)* १. सरल । सीधा । निष्कालस । २. स्नेही । प्रेमी ।

भंभारो—*(न०)* भूतपूर्व जैसलमेर राज्य में अड़कमल भाटी राजपूतों की जागीरी का प्रदेश

भंभीर—*(वि०)* भयानक ।

भंभूळियो—*(न०)* १. वातचक्र । **भभूळियो** । २. चक्कर ।

भंभूळो—*दे०* भंभूळियो ।

भंभो—*(न०)* १. कृषि तथा उससे संबंधित काम । २. धंधा । ३. एक वाद्य । ४. वैभव । **विभो** ।

भँवर—*(न०)* १. काले रंग के घोड़े का नाम । २. काले रंग का घोड़ा । ३. स्त्रियों का एक आभूषण । ४. आवर्त । चक्कर । **भमळ** । ५. जलावर्त । जल चक्र । ६. श्याम रंग । ७. पोता । पौत्र । ८. पति । ९. भौंरा । भ्रमर । १०. घर या गली के गंदे पानी के लिए बना हुआ कुँआ । ११. भौंह । १२. लोकगीतों का नायक । १३. लोकगीतों में दामाद तथा स्नेहीजनों का संबोधन । १४. छैला व्यक्ति । *(वि०)* १. प्रेमी । २. रसिक । ३. काले रंग का । श्यामल ।

भँवरकड़ी—*(ना०)* १. लोहे की एक कड़ी । घानी या घरट की लाठ की वह कड़ी जो लाठ फिरने के साथ वह भी फिरती रहती है । २. खूंटा में फिरने वाली कड़ी ।

भँवरगुफा—*(ना०)* १. अंधेरी कोठड़ी । २. योग के अनुसार षट् चक्रों में से एक चक्र ।

भँवरजाळ—*दे०* भमरजाळ ।

भँवरमाता—*(ना०)* एक देवी ।

भँवरामाखी—*(ना०)* एक विषैली मक्खी ।

भँवरामाटी—*दे०* भमरामाटी ।

भँवराळो—*(वि०)* काले वर्ण का । २. गोलाई वाला । *(न०)* रसिक । छैला ।

भँवरियो—*(न०)* १. पोता । पौत्र । २. भंवर (पौत्र) के जन्म के समय गाया जाने वाला एक लोकगीत । ३. कान और नाक का एक गहना ।

भँवरी—*दे०* भमरी । *(ना०)* पौत्री ।

भँवरो—*दे०* भमरो ।

भँवळ—*दे०* भमळ ।

भँवारो—*(न०)* भौं । भृकुटी । भ्रू । *दे०* मुआँरो ।

भा—*(न०)* १. भाई । २. घर में वृद्धजनों तथा पूजनीयों के लिए एक संबोधन । ३. कांति । तेज । ४. प्रकाश । ५. किरण । रश्मि । ६. सूर्य । ७. आकाश । ८. लक्ष्मी । ९. शोभा ।

भाइ—*(न०)* चूल्हा ।

भाइड़ो—*(न०)* भाई (तुच्छकार में) ।

भाइपो—*(न०)* १. कुटुम्बी । २. कुटुम्बीजनों को दिया जाने वाला भोज । **कडूंबो** । **भाईपो** ।

भाई—*(न०)* १. सहोदर । भ्राता । २. सगोती । भाई-बन्धु । ३. चाचा, मामा, मासी और मुआ वगैरा का लड़का । ४. किसी व्यक्ति के लिये विवेकयुक्त संबोधन । ५. बराबर वालों के लिए एक आदर सूचक शब्द । ६. मित्र ।

भाईचारो—*(न०)* १. प्रेमपूर्ण व्यवहार । २. भाई पना । ३. मित्रता ।

भाईजी—*(न०)* १. बड़ा भाई । २. पिता ।

भाईदूज—*(ना०)* कार्तिक शुक्ला दूज । **भाईबीज** ।

भाईपो—*(न०)* १. बंधु-बांधव । कुटुम्बीजन । **भाईपो** । **कडूंबो** । २. वह भोज जिसमें केवल कुटुम्बीजन ही निमंत्रित हों । भाइयों का भोज । **भाईपै-रोजीमण** । **भाइपो** ।

भाईबँटो—*(न०)* १. पैतृक सम्पत्ति का भाइयों में बाँटा जाने वाला भाग । २. भाइयो में बाँटी हुई संपत्ति । ३. बाँटी हुई सम्पत्ति का कोई भाग ।

भाईबंध—*(न०)* एक ही वंश या गोत्र के लोग । भाईबंधु । २. मित्र ।

भाईबीज—दे० भाईदूज ।

भाईवापो—*(न०ब०व०)* १. भाई, बापो ऐसे विनय सूचक शब्द । २. खुशामद ।

भाईश्री—*(न०)* पत्र आदि में समान वय या समान स्थिति वाले को लिखा जाने वाला एक शिष्ट संबोधन ।

भाउ—*(न०)* भाई । दे० भाव ।

भाक—*(न०)* प्रातःकाल । प्रभात ।

भाकलो—*(न०)* १. ओढ़ने का मोटा ऊनी वस्त्र । २. एक मोटा सूती वस्त्र । ३. ऊँट के बालों से बनी हुई बिछाने की मोटी दरी । गंवो ।

भाकसी—*(ना०)* १. छोटी और अंधेरी कोठरी । २. अन्ध कूप । ३. गुँईतले में बनी हुई कैदियों के लिए अंधेरी कोठरी । ४. कैदखाना । जेल । हवालात । ५. भट्ठी ।

भाख—*(न०)* १. एक प्रकार का डिंगल छन्द । २. प्रभात । उषा काल । ३. भाषा । ४. भाषण । बोली ।

भाखडी—*(ना०)* एक प्रकार का डिंगल छन्द ।

भाखण—दे० भाषण ।

भाखणो—*(क्रि०)* १. भाषण करना । २. आज्ञा करना । ३ कहना । बोलना । ४. परिचय देना । (भूत प्रेत आदि का) ५. वर्णन करना ।

भाखफाटणो—(मुहा०) सवेरा होना । प्रातःकाल होना ।

भाख फाटै—*(अव्य०)* सबेरे । प्रातःकाल में ।

भाखर—*(न०)* १. पहाड़ । पर्वत । मगरो । डूंगर । २. बड़ा ढेर ।

भाखर खड़—*(न०)* मूंज की तरह की एक घास । इसकी रस्सी से भी खाट बुनी जाती है ।

भाखराळ—*(न०)* पहाड़ी प्रदेश ।

भाखरांईस—दे० भाखरां नरेस ।

भाखरां नरेस—१. *(न०)* आबू पर्वत २. सिंह ।

भाखरांराज—दे० भाखरां नरेस ।

भाखरी—*(ना०)* १. पहाड़ी । डूंगरी । २. मोटी रोटी । ३. भखरी ।

भाखलो—दे० भाकलो ।

भाखा—दे० भाषा ।

भाखाटीका—दे० भाषा टीका ।

भाखाचित्र—*(न०)* १. अक्षर । वर्ण । २. शब्द । ३. काव्य । कविता ।

भाखो खीणो—*(वि०)* १. निर्बल । २. अधभूखा । ३. निराश । निरणो ।

भाखोटो—दे० भखावटो ।

भाग—*(न०)* १. हिस्सा । २. टुकड़ा । खंड । ३. पुस्तक का हिस्सा । ४. गणित में किसी संख्या को कई अंशों में बांटने की क्रिया । ५. भाग्य । ६. सौभाग्य । ७. ललाट । ८. प्रातःकाल । भाक । साकळो ।

भाग खुलणो—*(मुहा०)* भाग्योदय होना । सितारा चमकना । लाभ होना ।

भाग-जोग—दे० भाग-संजोग ।

भागणियो—*(वि०)* १. भागने वाला । २. डरपोक । कायर । भागू ।

भागणो—*(क्रि०)* १. दौड़ना । भागना । २. टूटना । टुकड़े होना । ३. नाश होना । मिटना । ४. बीतना । व्यतीत होना । ५. काँटा चुभना । ६. हिस्सा करना । *(वि०)* १. डरपोक । कायर । २. भागने वाला ।

भागदोड़—*(ना०)* १. भगदड़ । २. दौड़ा-दौड़ । ३. जोरदार प्रयत्न । दौड़धूप ।

भागधाम—*(न०)* ललाट । भाल ।

भागधारी—*(वि०)* १. भाग्यशाली । २. हिस्सेदार ।

भागफळ—*(न०)* गणित में भाज्य संख्या को भाजक संख्या से भाजित करने पर प्राप्त होने वाली संख्या । भजनफल । २. भाग्यफल ।

भागफूटणो—*(मुहा०)* असफलता मिलना । दुर्दशाग्रस्त होना ।

भागफूटो—*(वि०)* भाग्यहीन । अयोग्य ।

भागबळ—*(न०)* प्रारब्ध का बल । तकदीर ।

भागबळी—*(वि०)* भाग्यशाली । प्रारब्ध-शाली ।

भागभरोसैं—*(अव्य०)* १. भाग्य के भरोसे पर । २. धीरज रखकर । धैर्य से ।

भाग-रो-कोट—*(वि०)* भाग्यशाली । बहुत बड़ा भाग्यवान ।

भागल—*(वि०)* १. भागने वाला । २. भयाक्रान्त होकर भागने वाला । ३. हतोत्साहित करने वाला । उत्साह भंग करने वाला । ४. नाहिम्मत । ५. हतोत्साह । ६. कायर ।

भागळ—*(ना०)* अर्गला । आगळ । भोगळ ।

भागवत—*(न०)* १. एक प्रसिद्ध धर्मग्रंथ । भागवतपुराण । २. वृतान्त । ३. हरि भक्त । वैष्णव ।

भागवत पुराण—दे० भागवत सं० १ ।

भागवती—*(न०)* १. वैष्णव साधुओं के गले में पहनने की कण्ठी । २. दे० भगवती ।

भागवंत—*(वि०)* १. भाग्यशाली २. दे० भागवत ।

भागवान—*(वि०)* १. भाग्यवान । २. धनी । धनाढ्य ।

भागवानी—*(ना०)* धनाढ्यता । संपन्नता । धनवानी ।

भागवाळो—*(वि०)* १. भाग्यशाली । २. हिस्सेदार ।

भाग-संजोग—*(न०)* १. मौका । अवसर । २. मेल । मिलाप । ३. भाग्यानुसार । ४. इत्तिफाक । ५. यदृच्छा । *(वि०)* १. आकस्मिक । अचानक होने वाला । २. भाग्यानुसार होने वाला ।

भागसाळी—दे० भाग्यशाली ।

भागहीण—*(वि०)* भाग्यहीन । हतभाग्य ।

भागाकार—*(न०)* भाग करने का गणित ।

भागादोड़—दे० भागदोड़ ।

भागाभाग—दे० भागदोड़ ।

भागी—*(वि०)* १. भाग्यशाली । २. भागीदार । ३. अधिकारी । हकदार ।

भागी चार—*(ना०)* काटा हुआ चारा । कुट्टी । भुसर ।

भागीदार—*(वि०)* सहभागी । हिस्सेदार । पार्टनर ।

भागीदारी—*(ना०)* १. भागीदार होने की स्थिति । २. हिस्सा । भाग ।

भागीरथ—दे० भगीरथ ।

भागीरथी—*(ना०)* गंगा नदी । मंदाकिनी । जाह्नवी ।

भागू—दे० भागणियो ।

भागो—*(वि०)* टूटा हुआ । टूटा-फूटा ।

भागोचारो—दे० कुतर । दे० भागा चार ।

भागोड़ो—*(वि०)* १. टूटा हुआ । २. भागा हुआ । ३. धँसा हुआ ।

भागोत—दे० भागवत ।

भाग्य—*(न०)* प्रारब्ध । नसीब ।

भाग्यशाली—*(वि०)* १. भाग्यवान । नसीबदार । २. धनाढ्य ।

भाणनंदा—(ना०) यमुना।
भाणव—(न०) १. चारण। २. कवि।
भाणवी—(ना०) १. सूर्य २. किरण। ३. सूर्य पत्नी।
भाणसुतन—(न०) कुंती का सूर्य द्वारा उत्पन्न महावीर और महादानी पुत्र कर्ण। भानुसुत। दे० भाणनन्द।
भाणाभेद—(न०) १. परोसने में वस्तु का तथा न्यूनाधिक का भेद। २. पंक्तिभेद। ३. पक्षपात।
भाणा वहवार—दे० भाणै वहवार।
भाणियो—दे० भाणेजो।
भाणी—दे० भाणेजी।
भाण—(न०) १. भानजा के लिए संबोधन। २. भानजा। भागिनेय।
भाणेज—दे० भाणेजो।
भाणेज जमाई—(न०) भाणी का पति। भाणजी जमाई।
भाणेजी—(ना०) बहिन की बेटी। भानजी।
भाणेजो—(न०) बहिन का बेटा।
भाणै वहवार—(न०) १. एक थाली में अथवा एक पंक्ति में बैठ कर भोजन करने का जाति व्यवहार। रोटी व्यवहार। २. किसी के घर या किसी समाज में भोजन करने-कराने का व्यवहार। ३. वह सामाजिक प्रतिबन्ध जिससे किसी के यहाँ भोजन तो किया जा सकता है, किन्तु कन्या नहीं दी ली जा सकती।
भाणो—(क्रि०) १. पसन्द आना। २. रुचिकर होना। ३. अच्छा लगना। ४. भोजन करने की इच्छा होना। भावणो। (न०) १. थाली में परोसा हुआ भोजन। २. भोजन परोसी हुई थाली। भोजन परोसा हुआ थाल। ३. विवाह, औसर-मौसर आदि के भोजन समारोह में निमन्त्रित के नहीं आसकने पर उसके घर पर भेजा जाने वाला भोजन। पारेसो। ४. भानजा। बहन का बेटा। भाणेजो।
भात—(न०) १. विवाह के समय वर तथा कन्या के मामा की ओर से वस्त्र, आभूषण आदि की पहरामणी करने के उत्सव की एक आवश्यक रीति। माहेरो। मामेरो। मोसाळो। (भात भरना एक आवश्यक कर्त्तव्य समझा जाता है)। २. कन्या पक्ष की ओर से बरात को दिया जाने वाला भोज। ३. रँधे हुये चावल। ४. एक वैवाहिक लोकगीत।
भात भरणो—(मुहा०) भाहेरा करना। भानजा या भानजी के विवाह में मामा की ओर से बहन के यहां वस्त्र-भूषणों की भेंट करना।
भातवी—(न०) भात भरने वाला। माहेरा करने वाला। मामेरात। माहेरात।
भातवेळा—(ना०) १. दुपहर का भोजन करने का समय। कलेवे के बाद का दूसरा भोजन करने का समय। रोटीवेळा। बाटीवेळा। २. दुपहर। ३. खेत में भाता ले जाने का समय। भतवारो।
भातावेळा—दे० भतवारो (न०)।
भाती—(न०) १. भात भरने वाला। माहेरा करने वाला। भातवी। मामेरात। २. यात्रा में साथ लिया जाने वाला खाद्य पदार्थ। पाथेय। भातो। ३. जैन तीर्थ यात्रियों को तीर्थ से रवाना होते समय किसी भक्त-दानी द्वारा बाँटा जाने वाला पाथेय।

भाग्यहीन—*(वि०)* अभागा । बदनसीब ।
भाच—दे० भाछ । *(न०)* एक छन्द ।
भाचरो—*(न०)* १. बड़ी अहरन । लुहार *की अहरन ।* २. *मस्तक का पिछला* भाग । ३. मस्तक । सिर । सूअर का बच्चा ।
भाचक्र—दे० भादंड ।
भाछ—*(न०)* जागीरदार व किसान से लिया जाने वाला कर ।
भाज—*(ना०)* १. दौड़ । दौड़ना । २. भगदड़ ।
भाजक—*(न०)* गणित में किसी संख्या का भाग करने वाली संख्या । *(वि०)* विभाजन करने वाला ।
भाजण—*(न०)* १. भाजन । पात्र । बरतन २. भागने की क्रिया या भाव । *(वि०)* १. योग्य । २. अधिकारी ।
भाजणो—दे० भागणो । *(क्रि०)* शोभा देना । **भाजणो** ।
भाजन—*(न०)* १. पात्र । बरतन । वासण । २. अधिकारी ।
भाजी—*(ना०)* १. सब्जी । तरकारी । *(न०)* १. भाई । **भाईजी** ।
भाट—*(न०)* १ मागध । बंदी । २. कवि । ३. एक जाति जो जातियों की वंशावली लिखने व सुनाने का धंधा करती है । (जातियों के प्रायः अपने-अपने अलग भाट होते हैं ।) ४. भाट जाति का व्यक्ति । भट्ट । ५. एक वनजारा जाति ।
भाटक—*(न०)* किराया । **भाड़ो** *(वि०)* भटकने वाला ।
भाटकणो—*(क्रि०)* १. प्रज्वलित होना । २. क्रुद्ध होना । ३. प्रगट होना । ४. भटकना ।
भाटण—*(ना०)* १. भाट की स्त्री । २. भाट जाति की स्त्री ।
भाटणी—दे० भाटण ।
भाटापैण—*(ना०)* स्लेट पर लिखने की खड़िया मिट्टी की लेखन । पत्थर पैन ।
भाटिक संवत्—*(न०)* जैसलमेर के भट्टी राजा द्वारा प्रवर्त्तित मार्गशीर्षीय संवत जो विक्रम सम्वत् ६८१ में चालू किया गया था । भट्टिक संवत् । भाटी संवत् ।
भाटियो—*(ना०)* भाटिया जाति का मनुष्य ।
भाटी—*(न०)* एक राजपूत जाति ।
भाटीपो—*(न०)* जैसलमेर के भाटी क्षत्रियों के राज्य का नाम । जैसलमेर राज्य ।
भाटी संमत—दे० भाटिक संवत ।
भाटो—*(न०)* १. पत्थर । पाषाण । २. अवरोध । रुकावट ।
भाड—*(न०)* बड़ा मेंढक । *(वि०)* १. गरीब । २. मूर्ख । ना समझ ।
भाड़—*(ना०)* भड़भूंजे की भट्टी ।
भाड़ में जाणो—*(मु०)* नष्ट होना ।
भाड़ेती—*(न०)* किरायेदार ।
भाड़ो—*(न०)* १. किसी की वस्तु को काम में लाने के बदले में दिया जाने वाला पैसा । २. किसी दूसरे की सवारी पर चढ़ने का किराया । फेअर । ३. जमीन या मकान का किराया । रैण्ट । ४. मजदूरी । पारिश्रमिक ।
भाण—*(न०)* सूर्य । भानु । २. हास्यरस का एक अंकी. एक पात्री प्रहसन । *(ना०)* बहिन । भैण ।
भाणकियो—दे० भाणजो ।
भाणकी—*(ना०)* भानजी । **भाणेजी** ।
भाणजी—दे० भाणेजी ।
भाणजो—दे० भाणेजो ।
भाणढ—दे० भाणव ।
भाणनंद—*(न०)* १. कर्ण । २. यमराज । ३. शनि । ४. सुग्रीव ।

भातो—*(न०)* १. पाथेय । संबल । भाता । २. खेत में काम करने के लिये पहुँचाया जाने वाला भोजन । ३. तरकश । ४. किसी वस्तु में दी जाने वाली अत्तर आदि सुगंधित पदार्थ की भावना । पुट । ५. बहन, बेटी को ससुराल भेजते (आणा कराते) समय साथ में दिया जाने वाला चूरमा, मिठाई, तवा-पुड़ी आदि जिसकी समाज में हांथी बाँटी जाती है ।

भात्रीजी—दे० भतीजी ।

भात्रीजो—*(न०)* भतीजा । भ्रातृज ।

भाथाणबन्ध—*(वि०)* तीरन्तरकशधारी । बाण-तूणीरधारी ।

भाथाळ—*(न०)* तरकशधारी ।

भाथी—*(ना०)* १. थोड़ा भाता । अल्प पाथेय । २. छोटा तरकश । ३. धौंकनी । धमण ।

भाथो—*(न०)* तरकश । भाथा । दे० भातो ।

भादरवो—दे० भादवो । *(न०)* बड़े कड़ाह का नाम ।

भादरेस—*(न०)* भक्त ईसरदास बारहठ की जन्मभूमि के गांव का नाम, जो राजस्थान के बाड़मेर जिल्ले में स्थित है ।

भादवो—*(न०)* भाद्रपद मास ।

भादंड—दे० किरणियो ।

भादुर—*(वि०)* बहादुर ।

भाद्रपद—दे० भादवो ।

भान—*(न०)* १. ख्याल । विचार । २. ज्ञान । ३. आभास । ४. कल्पित विचार । ५. स्मरण । ६. चेतना । सुधि । होश । ७. समझ । बुद्धि । ८. सावचेती । सावधानी । ९. ज्ञान । मालूम । १०. प्रतीत । ११. भानु । सूर्य ।

भानचक्र—*(न०)* भानुचक्र । सूर्यचक्र ।

भानमती—*(ना०)* १. इन्द्रजाल विद्या की विशेषज्ञ राजाभोज की अत्यन्त रूपवती कन्या और विक्रमादित्य की रानी भानुमती । २. गाना-बजाने का धंधा करने वाली मुसलमान जाति की स्त्री ।

भानु—*(न०)* १. सूर्य । २. आक । अर्क । आकड़ो । ३. विष्णु ।

भानुभा—*(ना०)* सूर्य किरण ।

भाबूसा—*(न०)* पुत्र के लिये सम्मान सूचक शब्द । बाबूसा । (जोधपुर में)

भाबोसा—*(न०)* १. पिता । २. पिता के बड़े भाई । ३. बड़े भाई का संबोधन ।

भाभज—दे० भावज ।

भाभड़ाभूत—*(न०)* १. अति क्रोध से विकराल भूत की भाँति के उपद्रव करने के आचरण की स्थिति । २. विकराल रूप । ३. भयंकर उपद्रवी भूत । ४. एक ऐतिहासिक व्यक्ति (सौराष्ट्र का) । *(वि०)* क्रूर ।

भाप—*(ना०)* वाष्प । दे० बाफ सं० १

भाफ—दे० भाप ।

भाभा—*(न०)* १. पिता । २. पिता का बड़ा भाई । ३. कुटुंब के बड़े या संबंधीजनों के संबोधन का आदर सूचक शब्द । बाबा । ४. राजाओं की रखेल का पुत्र । रावराजा (मारवाड़ में) ।

भाभाजी—दे० भाभा सं० १, २.

भाभी—*(ना०)* बड़े भाई की पत्नी । भौजाई ।

भाभीजी—*(ना०)* १. जेठानी । २. भाभी ।

भाभो—दे० भाभा ।

भाभोजी—*(न०)* पिता । बाप ।

भाभोसा—दे० भाभोजी ।

भामं—*(ना०)* १. स्त्री। भामिनी। २. पत्नी।

भामण—*(ना०)* १. स्त्री। भामिनी। २. पत्नी।

भामणा—*(न०ब०व०)* वारना। उत्सर्ग। न्योछावर। निछावर।

भामणी—*(न०)* १. भामिनी। स्त्री। २. पत्नी।

भामणै—*(अव्य०)* १. निछावर होता हूँ। बलिहारी जाता हूँ। २. न्योछावर करता हूँ। *(न०)* न्योछावर।

भामणो—*(क्रि०)* १. भ्रमण करना या कराना। २. न्योछावर होना। *(न०)* १. न्योछावर। २. भ्रमण। चक्कर।

भामंडळ—*(न०)* १. सूर्य, चंद्र के चारों ओर दिखाई देने वाला प्रकाश का घेरा। २. तेजस्वी पुरुषों के मुख के चारों ओर दिखाई देने वाला प्रभा-मंडल। ३. धर्माचार्य, महंत, राजा आदि की सवारी के साथ रखा जाने वाला लंबे डंडे वाला सोने या चाँदी का पीपल के पत्ते के आकार का एक उपकरण जिसमें एक बाजू प्रभायुक्त सूर्य, की और दूसरी बाजू प्रभायुक्त चंद्र की मुखाकृतियां बनी हुई होती है। श्रीमंडल। किरणियो। भाडंड।

भामा—दे० भाम।

भामिनी—दे० भामणी।

भामी—*(न०)* न्योछावर। उत्सर्ग। *(वि०)* निछावर होने वाला।

भाय—*(ना०)* १. तरह। प्रकार। २. अभिरुचि। रुचि। पसंद। ३. कृपा। दया। ४. इच्छा। मरजी। खुशी। ५. भाव। अभिप्राय। *(वि०)* १. समान। बराबर। २. अच्छा। भाने वाला।

भायखा—*(ना०)* १. भाषा। २. वाणी। बोली। वायका।

भायजी—दे० भाईजी।

भायप—*(ना०)* १. भाईचारा। भाईपना। २. मित्रता। दोस्ती।

भायपो—दे० भाइपो।

भायली—*(ना०)* १. साथिन। सहेली। २. प्रेमिका। (पुरुष की)

भायलो—*(न०)* १. मित्र। २. स्त्री का प्रेमी पर पुरुष।

भायसो—*(न०)* मृत भैंस का उतारा हुआ पूरा चमड़ा।

भाये—दे० भावै।

भायेली—दे० भायली।

भायेलो—दे० भायलो।

भायो—*(न०)* १. भाई। २. पुत्र। (प्यार में)।

भार—*(न०)* १. बोझा। वजन। २. सेना। ३. भय। आतंक। ४. कष्ट। संकट। ५. वजन। तौल। ६. उत्तरदायित्व। ७. समूह। ८. ढेर। ९. प्राकृतिक पदार्थों का एक संख्या परिमाण। १०. वनस्पति का १२३००१६०८ संख्या-परिमाण। ११. २०२१७४००० की संख्या। १२. भिन्न-भिन्न प्रकारों के वर्ग। १३. बहार। सौंदर्य। १४. शक्ति। बल। १५. सामान। असबाब। १६. सहारा। १७. संभाल। १८. गौरव। १९. पृथ्वी। २०. पाप। २१. अत्याचार। २२. क्रोध।

भारअढार—*(न०)* १. अठारह भार-परि-माण। अढारभार, जैसे—अढारभार वनस्पति। २. वनस्पति सृष्टि का एक

निश्चित संख्या-मान । ३. अष्टादश भार वनस्पति ।

भारअढार वनस्पति—*(न०)* १. वृक्ष, लता आदि उद्भिज वर्ग । सभी प्रकार की वनस्पति । वनस्पति सृष्टि । २. अत्यन्त सघन वृक्ष, लता आदि की शोभा । (अढार भार वनस्पति में चार भार अपुष्प, आठ भार सपुष्प और फल और छ भार लताएँ मानी गई हैं ।) इसी प्रकार स्वाद के गंध औरकंटकादि । आधार पर भी विभाजन किया गया है ।

भारखमो—दे० भरखमो ।

भारगव—*(न०)* १. भृगुवंश में उत्पन्न व्यक्ति । भार्गव । २. ब्राह्मणों की एक अल्ल । *(वि०)* भृगु संबंधी । दे० भार्गव ।

भारजा—*(ना०)* १. भार्या । पत्नी । २. स्त्री । ३. फूहड़ स्त्री ।

भारझलो—*(वि०)* १ भार उठाने वाला । २. दृढ़ । मजबूत । ३. उत्तरदायित्व को सम्हालने वाला या निभाने वाला । ४. सहनशील । **भरखमो । भारीखमो ।**

भारण—*(न०)* १. दबाव । २. बोझा । *(वि०)* १. दुर्गम । २. कठिन । *(अव्य०)* १. दबाने के लिये । २. भार रखने के लिये ।

भारणियो—*(वि०)* दबाने वाला । *(न०)* चरस के मुंह पर बांधा जाने वाला वजन, जिससे उसमें पानी झट भर आये ।

भारणो—*(क्रि०)* १. दबाना । २. गाड़ना । **दाँटना** । ३. किसी वस्तु को अंगारे वाली राख (भोभर) से ढक देना । **भोभर में दबाना** ।

भारत—*(न०)* १. भारतवर्ष । हिन्दुस्तान । भारत देश । २. महर्षि व्यास द्वारा प्रणीत एक प्रसिद्ध महाकाव्य । महाभारत । ३. महाभारत का मूल रूप । ४. लंबा चौड़ा विवरण । ५. विवाद । झगड़ा । कलह । ६. युद्ध । ७. कसीदे की भरत वाला वस्त्र ।

भारतवर्ष—*(न०)* वह देश जो हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है । भारत । आर्यावर्त । हिन्दुस्थान ।

भारती—*(ना०)* १. सरस्वती । २. वाणी । वचन । ३. कविता । ३. संस्कृत भाषा । ५. भारतमाता । ६. दशनामी संन्यासियों की एक उपाधि या शाखा । ७. संन्यासियों के दस वर्गों में से एक । ८. ब्राह्मी बूंटी ।

भारतीय—*(वि०)* १. भारत का । २. भारतवासी ।

भारथ—*(न०)* युद्ध ।

भारदुआज—दे० भरद्वाज ।

भारपलाण—*(न०)* ऊंट की पीठ पर रखा जाने वाला । बोझा ढोने का पलान ।

भार बरदार—*(वि०)* भार वाहक ।

भार बरदारी—*(ना०)* १. बोझा ढोने का काम । २. ढोया जाने वाला माल सामान । ३. बोझ ढोने का पारिश्रमिक ।

भार बोझ—*(न०)* १. भार । वजन । २. सामान । ३. जवाबदारी ।

भारभरो—दे० भारपलाण ।

भारभुज—*(न०)* राजा ।

भार लदण—*(न०)* १. ऊँट । २. गदहा । *(वि०)* वह जिस पर भार लादा जाये । **भार वहो** ।

भारलदो—दे० भार पलाण ।

भार वहण—दे० भार लदण ।

भारवहो—दे० भार लदण ।

भारवि—*(न०)* संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि ।

भारसह—*(न०)* बनिया । *(वि०)* सहनशील ।

भारंग—*(न०)* १. अग्नि । २. चंद्रमा ।

भारंड—*(न०)* एक बड़ा पक्षी । दे० अनड़पंख ।

भारात—दे० भाराथ ।

भाराथ—*(न०)* युद्ध । लड़ाई । जुध । भारात । दे० भारत ।

भाराथियो—*(वि०)* योद्धा ।

भारावंध—*(वि०)* १. अनेक गट्ठड़ बांधे जाय जितना । बहुत अधिक । पुष्कल । २. भारों (गट्ठरों) के रूप में बंधा हुआ ।

भारी—*(ना०)* १. बुहारी । झाड़ू । २. ईंधन, लकड़ी या घास आदि का छोटा गट्ठर । छोटा भारा । *(वि०)* १. जिसमें अधिक भार हो । वजनी । २. कठिन । मुश्किल । ३. असह्य । ४. प्रबल । ५. खूब । ६ उत्तम । ७. बहुत । ८. गरिष्ट । ९. पीड़ायुक्त । १०. आकर्षक ।

भारीखमो—दे० भरखमो ।

भारीखवूं—दे० भरखमो ।

भारीगण—*(न०)* चड़स का एक उपकरण ।

भारीगरो—*(न०)* १ स्त्री-पुरुष और बाल-बच्चे आदि सभी घर के लोग । २. एक ही व्यक्ति के बेटे-पोते आदि का समूह ।

भारीपगे—*(वि०)* गर्भवती । सगर्भा ।

भारीपणो—*(न०)* १. भारीपन । २. उदारता ।

भारीबोल—*(न०)* १. कटुवचन । २. गर्वोक्ति ।

भारीमियाळ—दे० मियाळ ।

भारो—*(न०)* १. ईंधन-लकड़ी या घास आदि का बड़ा गट्ठर । २. ढेर । राशि ।

भारोभार—*(अव्य०)* बराबर तोल में । तोलोतोल । *(वि०)* १. समान तोल की । २. एक वस्तु के तोल के बराबर दूसरी । *(न०)* १. एक समान वजन । २. एक वस्तु के वजन जितनी दूसरी वस्तु । ३. समान वजन होने का भाव ।

भार्गव—*(न०)* १. परशुराम । २. शुक्राचार्य । *(वि०)* भृगु के वंश में उत्पन्न ।

भार्गवी—*(ना०)* १. लक्ष्मी । २. पार्वती । ३. दूब ।

भार्या—*(ना०)* पत्नी ।

भाल—*(न०)* १. ललाट । २. मस्तक ।

भाळ—*(ना०)* १. सम्हाल । २. खोज । तलाश । ३. पता ठिकाना । ४. खबर । ५. दृष्टि । ६ रक्षा । ७. इन्तजार । प्रतीक्षा । ८. सिफारिश ।

भाळक—*(वि०)* १. सम्हाल रखने वाला । २. तलाश करने वाला । ३. देखने वाला ।

भाळ करणो—*(मुहा०)* १. तपास करना । २. देखभाल करना । ३. सम्हालना ।

भालड़ियो—*(वि०)* १. तीखे सींगों वाला (बैल) । २. भालाधारी । *(न०)* छोटा भाला ।

भाळणो—*(क्रि०)* १. तलाश करना । खोजना । २. विचार करना । ३. समझना । ४. जांचे करना । तपास करना । ५. निगरानी रखना । ६. देखना ।

भालम—*(न०)* १. भाला। २. युद्ध। ३. खोज। तपास। भाळ।

भालमसाज—*(वि०)* १. भाला रखने वाला। २. भाला चलाने वाला। *(न०)* भाला बरदार।

भालाळो—*(न०)* पाबूजी राठौड़ का एक विरुद। *(वि०)* भालाधारी।

भालियळ—*(न०)* ललाट। *(वि०)* १. तलाश करने वाला। २. देखने वाला।

भाळियोड़ो—*(वि०)* १. देखा हुआ। २. जाना हुआ।

भाळू—*(वि०)* १. खोजने वाला। ढूंढ़ने वाला। हेरने वाला। २. शिकार की तलाश करके शिकारी को खबर देने वाला।

भालू—*(न०)* रीछ।

भालेराव—*(न०)* भाला चलाने वाला व्यक्ति। भाला चलाने में कुशल व्यक्ति।

भालो—*(न०)* एक शस्त्र। भाला। नेजा।

भालोड़—*(न०)* १. तीर। बाण। २. भाला। ३. किसी शस्त्र के आगे का नुकीला पैना भाग।

भाव—*(न०)* १. दर। निर्ख। २. भावना। ३. आशय। ४. प्रेम। ५. अंग चेष्टा। ६. दशा। अवस्था। ७. भक्ति। ८. आवेश। ९. नखरा। १०. मन की गूढ़ावस्था। ११. श्रद्धा। १२. कृपा। १३. मुख की चेष्टा। १४. ढंग। १५. स्वभाव। १६. आदर भाव। १७. विश्वास प्रतीति। १८. भूतावेश। १९. चित। २०. प्रकार। तरह। २१. चेचक रोग का प्रकोप व नाम। २२. चाल-चलन। २३. रचना अथवा उसके किसी अंग का सारांश। २४. जन्मकुंडली में ग्रहों के विभिन्न स्थान। २५. आश्रय की मनोस्थिति का प्रकटीकरण।

भावइ—*(अव्य०)* १. लेखे। विचार में। २. ओर से। तरफ से। ३. चाहे। चाहे तो।

भावज—*(ना०)* भौजाई।

भावट—दे० भावठ।

भावट भांगणी—*(मुहा०)* १. अभिलाषा पूर्ण करना। २. कष्ट मिटाना।

भावठ—*(ना०)* १. इच्छा। अभिलाषा। २. उपाधि। जंजाळ। ३. भोजन करने की रूचि। ४. भूख। ५. धोखा। ६. संकट। कष्ट।

भावठ-भांजण—*(वि०)* १. अभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला। २. जंजाल में से छुड़ाने वाला। दुखों से छुड़ाने वाला। ३. गरीबी मिटाने वाला। ४. ईश्वर। परमात्मा।

भावठ-हरण—दे० भावड़-भांजण।

भावड़—*(ना०)* १. भोजन करने की रूचि। खाने की इच्छा। २. भूख। क्षुधा।

भावणा—*(ना०)* रूचि। इच्छा।

भावणो—*(क्रि०)* १. भोजन करने की रूचि होना। २. भूख लगना। ३. अच्छा लगना। ४. रूचिकर होना। ५. पसंद आना। अच्छा लगना। *(वि०)* १. सुन्दर। २. रुचिकर।

भावतावै—*(न०)* १. भाव या कीमत की घटा-बढ़ी। २. किसी वस्तु का मूल्य या दर। ३. रंगढंग।

भावतो—*(वि०)* १. मनवांछित। इच्छित। २. रुचिकर।

भावन—*(ना०)* १. एक छंद। २. एक लोक गीत। ३. भावना। मरजी। ४. पसंद। रुचि।

भावना—*(ना०)* १. कल्पना। २. विचार। ख्याल। ३. अभिलाषा। ४. मरजी। इच्छा। ५. स्मरण ६. औषधि को रस में घोटने की एक क्रिया। ७. किसी वस्तु में सुगंध आदि का किया जाने वाला हलका मिश्रण। पुट। ८. श्रद्धा। ९. शक्ति।

भावभक्ति—*(ना०)* १. भाव और भक्ति। २. ईश्वरभक्ति। ३. आदर सत्कार।

भावभीनो—*(वि०)* भाव से गद्‌गद्। भाव-मय।

भावळी—*(ना०)* १. चाही कृषि में बैलों के साथ सिंचाई के काम में मदद करने वाले का रखा जाने वाला भाग। जितनी बैल जोड़ियों से सिंचाई होती है उनमें एक बैल जोड़ी वाले का बराबर भाग। २. अपनी-अपनी बैल जोड़ी और अपने अपने परिश्रम की सहभावना और भागीदारी से की जाने वाली चाही खेती।

भावळी लाग—*(न०)* १. एक कृषि लाग। २. भावली पर कृषक से लिया जाने वाला लगान।

भाव वाचक—*(वि०)* व्याकरण में किसी वस्तु का भाव या गुण सूचित करने वाली (संज्ञा)।

भाववाच्य—*(न०)* क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया (अकर्मक) का कर्त्ता और कर्म के स्थान पर कोई अन्य भाव हो। (व्याकरण)

भाव-विभोर—*(न०)* १. भाव मग्न। २. श्रद्धा या भक्ति विह्वल। ३. प्रेम। अनुराग।

भावार्थ—*(न०)* १. वह अर्थ जो मूल का भाव मात्र हो। ३. तात्पर्य। अभिप्राय।

भावावेश—*(न०)* भाव का आवेश। उमळको।

भावांतर—*(न०)* १. मन दूसरी ओर हो जाना। २. अर्थांतर।

भाविक—*(वि०)* १. भावी से संबंध रखने वाला। २. भावों से संबंध रखने वाला। *(न०)* वह अनुमान जो होने वाला हो।

भावी—*(ना०)* १. होनहार। भवितव्यता। होनी। २. भाग्य में लिखा। ३. भविष्य काल। ४. प्रारब्ध। भाग्य। ५. श्रद्धा। भक्ति। ६. आने वाला समय। *(वि०)* भविष्य। में आने या होने वाला।

भावीक—*(वि०)* श्रद्धा भक्ति रखने वाला। आस्था वाला।

भावी जोग—दे० भावे जोग।

भावीपण्य—*(न०)* सट्टा। सट्टा-सौदा। (फ्यूचर्स)।

भावुक—*(वि०)* १. जिसके मन पर कोमल भावों का शीघ्र प्रभाव पड़ता हो। २. उत्तम भावना रखने वाला। ३. सहृदय। ४. रसज्ञ। ५. विचारशील।

भावुकता—*(ना०)* भावुक होने का भाव या गुण।

भावे—*(अव्य०)* १. चाहे। चाहे तो। २. अथवा। या। या तो। कै।

भावे जेयी—*(अव्य०)* १. चाहे जहाँ। २. चाहे जहाँ से। ३. चाहे जिस जगह पर।

भावे-जोग—*(अव्य०)* १. संयोग बने तो। २. संयोग से। ३. एकाएक। ४. कुदरत से। अपने आप। भावी योग से।

भावे जोगे—दे० भावे जोग।

भावे तो—*(अव्य०)* इच्छा हो तो।

भावोत्तेजक—*(वि०)* भावों को उत्तेजन देने वाला।

भावोद्दीपक—*(वि०)* जो भावों को उत्तेजित करे।

भावोन्मत्त—*(वि०)* भाव विह्वल।

भाषक—*(वि०)* बोलने वाला।

भाषण—*(न०)* १. कथन। २. व्याख्यान। ३. बातचीत।

भाषण-प्रतियोगिता—*(ना०)* किसी विषय पर बोलने की प्रतियोगिता।

भाषा—*(ना०)* १. भावों को प्रकट करने वाली शब्दावली और उसे बर्तने का ढंग। मुंह से निकाले हुये सार्थक शब्दों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरे पर प्रकट किये जाते हैं। २. सरस्वती। ३. वाणी। बोली। ४. किसी देश विशेष की बोली।

भाषाज्ञान—*(न०)* १. भाषा की व्याकरण का ज्ञान। २. बोलने का ढंग। ३. बोलने में शिष्टाशिष्ट अथवा शुद्धाशुद्ध का विचार।

भाषाटीका—*(न०)* किसी काव्य ग्रंथ आदि की बोलचाल की भाषा में की हुई व्याख्या।

भाषा विज्ञान—*(न०)* वह विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति, विकास और रूप परिवर्तन आदि का विवेचन होता है। भाषा शास्त्र।

भाषी—*(वि०)* १. बोलने वाला। २. भाषण करने वाला।

भास—*(न०)* १. दृश्य। २. प्रकाश। ३. सूर्य। ४. इच्छा। ५. मिथ्याज्ञान। ६. एक छंद विशेष। कवित्त। ७. गीध। ८. ज्योत्सना।

भासणो—*(क्रि०)* १. दिखाई देना। २. प्रतीत होना। ३. समझ में आना। ४. प्रकाशित होना। ५. प्रकाशना। ६. कहना। बोलना।

भासमाण—*(न०)* सूर्य। भास्वान। *(वि०)* १. दिखने वाला। २ जान पड़ने वाला। ३. दिखाई देता हुआ। ४. जान पड़ता हुआ। भासमान।

भासमान—*(वि०)* १. जान पड़ता हुआ। २. दिखाई पड़ता हुआ। ३. दिखाई देने वाला। *(न०)* सूर्य।

भासंकर—दे० सूरज।

भासा—दे० भाषा।

भासांतर—*(न०)* अनुवाद। भाषान्तर।

भासियो—दे० भायसो।

भासी—*(क्रि०अ०)* १. भाणो (भावणो) का भविष्यत् रूप। भायेगा। २. रुचिकर होगा। ३. पसंद आयेगा। *(वि०)* बोलने वाला।

भासुर—*(वि०)* प्रकाशमान दीप्तिमान। *(न०)* सूर्य।

भास्कर—*(न०)* १. सूर्य। २. शिव। महादेव। ३. अग्नि।

भास्वान—*(न०)* १. सूर्य। २. दीप्ति। *(वि०)* १. दीप्तिवान। २. वीर।

भाह—*(ना०)* १. भाड़। भट्ठी। २. धूनी। ३. अग्नि। ४. खुशी।

भाह रै—*(वि०)* १. ऊँचा। २. तीव्र। तेज। ३. मोटा। भारी।

भाँ—*(ना०)* १. भूमि। २. दूरी। फासला। भांय। *(वि०)* १. दूर। २. अन्तर। भांय।

भांख—*(ना०)* तलहटी।

भाँग—*(ना०)* भंग। विजया।

भाँगड़—*(वि०)* भंगेड़ी।

भाँगड़ भूतो—*(वि०)* अधिक भंग पीकर नशे में चूर रहने वाला। नशेबाज।

भांगड़ली—*(ना०)* १. भंग । भांग । २. विजया । *(न०)* एक लोकगीत ।

भांगणो—*(क्रि०)* १. तोड़ना । २. टुकड़े करना । ३. नाश करना । ४. खर्च करना । ५. मिटाना । ६. दूर करना । *(वि०)* १. तोड़ने वाला । २. नाश करने वाला ।

भांगरो—*(न०)* एक वनस्पति । भृंगराज ।

भांगेड़ी—दे० भंगेड़ी ।

भांज—*(ना०)* १. विघ्न । बाधा । २. तोड़-फोड़ ।

भांजघड़—*(ना०)* १. विचार-विमर्श । २. विचारधारा । २. विचारों में उलझना। उलझन । ४. विचारों का उत्पन्न होना और लय होना । ५. किसी समस्या को सुलझाने के लिये एक के बाद एक दूसरा उपाय सोचना । ६. निर्माण और नाश । बनाना और तोड़ना । ७. खटपट ।

भांजणा—*(वि०)* १. मिटाने वाला । २. काटने वाला । ३. तोड़ने वाला । ४. नाश करने वाला । *(अव्य०)* १. नाश करने के लिए । २. तोड़ने के लिये ।

भांजणा-घड़णा—*(न०)* १. नाश करके उत्पन्न करने वाला । २. उत्पन्न करके नाश करने वाला । ३. उत्पन्न और नाश करने वाला । ईश्वर । परमात्मा ।

भांजणो—दे० भांगणो ।

भांजी—*(ना०)* किसी बनते हुए काम में डाली जाने वाली बाधा ।

भांड—*(न०)* १. विदूषक । मसखरा । २. एक जाति जो अपनी वाचालता से हंसाने और मनोरंजन का काम करती है । ३. बरतन । पात्र । *(वि०)* १. प्रशंसा करने वाला । २. बकवाद करने वाला । ३. निर्लज्ज ।

भांडणो—*(क्रि०)* १. बदनाम करना । निंदा करना । २. भ्रष्ट करना । ३. लड़ना । ४. लड़ाई करना ।

भांडाई—*(ना०)* १. भांड का काम । निंदा ।

भांडागार—*(न०)* १. संग्रहालय । २. खजाना । ३. कोठा ।

भांडैरू—*(न०)* १. नीच जाति का मनुष्य । २. भांड लोग । ३. कमीन काम । *(वि०)* निंदक ।

भांडो—*(न०)* १. मकान । घर । २. २. धान्य भरने का कोठा । ३. बरतन । ४. पेट । ५. गोदाम ।

भांडो फूटणो—दे० भंडो फूटणो ।

भांत—*(ना०)* १. छींट छापने का लकड़ी का बना डट्टा । छाप । ठप्पा । २. ठप्पे के छापने से बनी आकृति । ३. बनावट । रचना । ४. ढांचा । डौल । ५. भांति । प्रकार । ६. ढंग । तरीका । ७. शैली ।

भांतगर—*(न०)* १. भांत बनाने वाला शिल्पी । २. वस्त्र को भांत द्वारा छापने वाला व्यक्ति ।

भांतगरो—दे० भांतगर ।

भांतणो—*(क्रि०)* ठप्पे से छापना ।

भांतभांतीलो—*(वि०)* १. अनेक प्रकार का । २. रंग-बिरंगा । ३. अनेक प्रकार की बनावट का ।

भांति—दे० भांत ।सं० ५, ६ और ७ ।

भांतीगर—दे० भांतगर ।

भांतीलो—*(वि०)* १. आकृति वाला । २. अनेक भांति का । ३. खुश मिजाज ।

भांपणा—*(न०ब०व०)* आंख की पलकों के बाल । भोपणिया ।

भाँपणियो—दे० भोंपणियो ।
भाँपणो—*(क्रि०)* १. भाँपना । ताड़ना । २. सही अनुमान लगाना । ३. देखना ।
भाँब—*(ना०)* भाँभी का बेगार काढ़ने का काम ।
भाँबण—*(ना०)* १. भांबी जाति की स्त्री । २. भांबी की पत्नी ।
भाँबी—*(न०)* १. एक जाति जो मरे हुये पशुओं का चमड़ा उतारने का काम करती है । ढेढ़ । चमार । २. भांबी जाति का व्यक्ति जो सरकार की ओर से बेगारीपने का काम करता है । बेगार लेने व बेगार का काम करने वाला ढेढ़ जाति का व्यक्ति ।
भाँभ—दे० भाँब ।
भाँभण—दे० भाँबण ।
भाँभर—*(न०)* १. चक्कर । २. जोश ।
भाँभी—दे० भाँबी ।
भाँय—दे० भाँ ।
भाँयको—*(न०)* दूरी । फासला ।
भाँवर—*(ना०)* पाणिग्रहण के समय वर-वधु के द्वारा दी जाने वाली यज्ञाग्नि की परिक्रमा । फेरो ।
भाँह—दे० भाँ ।
भिक्षक—*(न०)* भिखारी । भीख मांगने वाला । भिक्षुक ।
भिक्षणेस—*(न०)* सिंह ।
भिक्षा—*(ना०)* १. भीख । २. माँगना ।
भिक्षाटण—*(ना०)* भिक्षा लेने के लिये जाना । भिक्षाटन ।
भिक्षुक—दे० भिक्षक ।
भिखग दे० भिखंग ।
भिखमंगो—*(न०)* भिखारी ।
भिखंग—*(न०)* १. भिखारी । भिक्षुक । २. बिचारा ।
भिखारण—*(ना०)* भिखारिन । मंगती । भिखियारण ।
भिखारी—*(न०)* भीख मांगने वाला । भिक्षमंगा । मंगतो ।
भिखिया—दे० भिक्षा ।
भिखियारण—दे० भिखारण ।
भिखियारी—दे० भिखारी ।
भिख्या—दे० भिक्षा ।
भिगत—*(वि०)* १. निर्धन । कंगाल । २. असमर्थ । नाहैसियत । ३. अयोग्य । नालायक । ४. अबुध । मूर्ख । ५. अविवेकी ।
भिगोणो—*(क्रि०)* भिगोना । पानी से तर करना ।
भिगोयोड़ो—दे० भिजोयोड़ो ।
भिगोवणो—दे० भिगोणो ।
भिचक—*(न०)* १. भय । डर । २. बाधा । ३. सकोच ।
भिचकणो—दे० बिचकणो ।
भिचकी—*(ना०)* बाधा । अड़चन ।
भिचकी मारणो—*(मुहा०)* अड़चन पैदा करना ।
भिजोणो—दे० भिगोणो ।
भिजोयोड़ो—*(भू०का०कृ०)* पानी से तर किया हुआ ।
भिजोवणो—दे० भिगोणो ।
भिटणो—दे० भींटणो ।
भिड़—*(ना०)* १. बर्र । ततैया । टांटियो । भमरी । २. संकट ।
भिड़क—*(ना०)* १. गुफा । २. डर । भय । ३. चौंकने की क्रिया या भाव ।
भिड़कण—*(वि०)* डरपोक ।
भिड़कणो—*(क्रि०)* दे० भड़कणो ।
भिड़काणो—दे० भड़काणो ।
भिड़कावणो—दे० भड़काणो ।
भिड़ज—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

भिड़णो—*(क्रि०)* १. भिड़ना। लड़ना। २. युद्ध करना। ३. टक्कर खाना। ४. स्पर्श करना। छूना। ५. वाद-विवाद करना।

भिड़त—*(ना०)* १. लड़ाई। संघर्ष। २. वादविवाद। ३. टक्कर। मुकाबला।

भिड़मो—*(वि०)* १. ठोस। २. सघन। ३. भिड़ा हुआ। ४. लगा हुआ। ५. स्पृश्य।

भिड़वों दे० भिड़मो।

भिड़ंग - दे० भड़ंग।

भिड़ंगाण—दे० भड़ंगाण।

भिड़ंगी—*(ना०)* घोड़ी।

भिड़ंत—दे० भिड़त।

भिड़ाणो—*(क्रि०)* १. टकराना। २. स्पर्श कराना। छुआना। ३. मुकाबला करना। ४. लड़वाना। ५. बन्द करना।

भिड़ावणो—दे० भिड़ाणो।

भिड़ाल—*(वि०)* १. बहादुर। २. वीर।

भिणभिण—*(न०)* भिनभिनाहट।

भिणभिणाट—दे० भिणभिण।

भिणभिणाणो—*(क्रि०)* भिनभिनाना।

भिणभिणावणो—दे० भिणभिणाणो।

भिदणो—*(क्रि०)* १. अंदर धँसना। २. छेदा जाना। ३. घायल होना। ४. छेद होना। ५. छेद करना। ६. एकमेक होना। ७. नाश होना।

भिदाणो—*(क्रि०)* १. अंदर घंसाना। २. छेद करवाना। ३ घायल कराना।

भिदावणो—दे० भिदाणो।

भिदुर—*(न०)* वज्र। **बजर**।

भिनभाव—*(न०)* भेदभाव। जुदाई। भिन्नभाव।

भिनभिन—*(वि०)* अलग-अलग। भिन्न-भिन्न। दे० भिणभिण।

भिनसारो—*(न०)* पो फटने का समय। भिनसार। प्रभात। **पो फाट**।

भिन्न—*(वि०)* १. अलग। पृथक। २. अन्य। दूसरा। ३. तोड़ा हुआ। विभाजित। *(न०)* इकाई से कम भाग की संख्या सूचित करने वाली कोई संख्या अपूर्णांक। (गणित)।

भिन्नता—*(ना०)* १. भिन्न होने का भाव। २. घृणा करने का भाव। ३. घृणा। ४. दूरी। अलगाव। ५. छिपाव।

भिभरो—*(न०)* कपाल। **माथो**। दे० विवरो।

भिरड़—*(ना०)* १. क्रोध। गुस्सा। २. नाराजगी। ३. ततैया। **भमरी**।

भिरड़कोट—*(न०)* १. मालाणी प्रान्त का ध्वंश हुआ एक ऐतिहासिक नगर और किले का नाम जिस पर रावल मल्ली नाथ का अधिकार था। २. ध्वंसावशेष खेड़ नगर के किले का नाम। भरड़कोट। ३. धूलि कोट। **धूड़कोट**।

भिरड़णो—*(क्रि०)* १. क्रोध करना। २. नाराज होना। ३. नाश करना।

भिळणो—*(क्रि०)* १. दो वस्तुओं का शामिल होना। २. किसी वस्तु में अन्य वस्तु का मिल जाना। ३. किसी के पक्ष में मिल जाना। ४. आक्रमण करना। ५ आक्रमणकारी का अधिकार होना। कब्जा होना। ६. खेत में खड़ी फसल का पशुओं द्वारा चर जाना।

भिळाणो—*(क्रि०)* १. मिलाना। सम्मिलित करना। २. किसी वस्तु को अन्य वस्तु में मिला देना। ३. खड़ी फसल को ढोरों द्वारा चरवा देना। ४. युद्ध द्वारा किसी गढ़, नगर या देश पर अधिकार करवा देना। ५. आक्रमण करवाना।

भिलामो—*(न०)* एक वृक्ष और उसका फल। भल्लातक। भिलावां।

भिलाळ—*(न०)* भीललोग। भीलों का समूह।

भिल्ल—दे० भील।

भिल्लमाल—*(न०)* मारवाड़ के प्राचीन श्रीमाल नगर का एक नाम जो आजकल भीनमाल नाम से प्रसिद्ध है। इसी ऐतिहासिक प्राचीन नगर में महाकवि माघ का जन्म हुआ था।

भिषक्—*(न०)* वैद्य।

भिसोळणो—*(क्रि०)* १. अक्षर, चित्र आदि अंकित चिन्हों को मिटा देना। पाटी या स्लेट पर लिखा हुआ मिटा देना। २. मिटाना। ३. बिगाड़ना।

भिस्ट—दे० भ्रष्ट।

भिस्टो—*(न०)* विष्टा।

भिस्ती—*(न०)* १. पानी ढोने वाला। पखाली। सक्का। २. एक मुसलमान जाति जो मशक से पानी ढोने का काम करती है।

भिंडी—*(ना०)* १. एक पौधे की फली जिसकी तरकारी बनाई जाती है। २. एक प्रकार की घास और उसकी रस्सी।

भिंभो—दे० विभो। दे० भंभो।

भी—*(अव्य०)* १. पुनः। फिर। २. उपरान्त। ३. और। ४. बार-बार। ५. अवश्य। जरुर। ६. विशेष। अधिक। ७. तक। पर्यन्त। *(न०)* १. डर। भय। २. भाई। *(ना०)* १. स्त्री। २. बहिन।

भीकम—*(न०)* कटी हुई लिंगेन्द्री वाला पुरुष।

भीकम चांदी—*(ना०)* लिंगेन्द्री को काटने की क्रिया। २. कटी हुई लिंगेन्द्री।

भीख—*(ना०)* १. भिक्षा। २. भय।

भीखग—*(न०)* भीख माँगने वाला। भिखारी भिक्षुक।

भीखण—दे० भीषण।

भीखणो—*(क्रि०)* भीख माँगना।

भीखम—दे० भीष्म।

भीखम चांदी—दे० भीकम चांदी।

भीखा री घोड़ी—*(ना०)* बच्चों के परस्पर घोड़ी बनकर उस पर चढ़-उतरने का खेल।

भीगणो—दे० भीजणो।

भीच—*(न०)* १. शूरवीर। सुभट। योद्धा। २. भृत्य।

भीचणो—*(क्रि०)* दे० भींचणो।

भीछ—दे० भील।

भीजणो—*(क्रि०)* १. भीजना। गीला होना। आर्द्र होना। २. प्रभावित होना। ३. दयार्द्र होना।

भीजियोड़ो—*(भ०का०कृ०)* १. पानी में गीला हुवा हुआ। २. पसीजा हुआ। द्रवीभूत। ३. दयार्द्र।

भीट—*(ना०)* झड़बेरी या कैर आदि कटीले वृक्षों की पतली टहनियों का समूह।

भीटणो—दे० भींटणो।

भीटहरो—*(न०)* बैलगाड़ी पर लादी जा सके उतनी बेरी वृक्ष की कंटीली शाखाओं की पाहियों का ढेर। विठोडो। भींटो का समूह।

भीठ—*(न०)* १. युद्ध। २. प्रहार।

भीठोरो—दे० भीटहरो।

भीड़—*(ना०)* १. जनसमूह। भीड़। २. संकट। ३. अभाभाव। तंगी। ४. किसी बात की अधिकता।

भीड़णो—*(क्रि०)* १. बन्द करना। २. कस कर के बांधना। कसना। ३. अंक

भरना । आलिंगन करना । ४. मिलना । ४. मिलाना । ५. लगाना । ६. कंजूसी करना ।

भीड़भंजपा—*(वि०)* कष्ट हरने वाला । *(न०)* १. शिव । २. ईश्वर । ३. मारवाड़ के छप्पन के पहाड़ों का पंचतीर्थी में एक तीर्थ स्थान ।

भीड़ियोड़ो—*(भू०कृ०)* १. कसा हुआ । २. बन्द किया हुआ । ३. आलिंगन किया हुआ ।

भीड़ी—दे० भीड़ू ।

भीड़ू—*(न०)* १. खेल (रम्मत) का साथी । खेल में अपने समूह का साथी । २. सहायक । मददगार । ३. संकट में काम आने वाला । ४. मित्र ।

भीड़ो—*(न०)* १. काम की अधिकता । काम पर काम । २. रुपये पैसे की छूट नहीं होना । अर्थाभाव । तंगी ।

भीत—*(ना०)* भींत । दीवार । *(वि०)* डरा हुआ । घबराया हुआ । *(न०)* डर । भय ।

भीतर—*(न०)* १. अंतःपुर । जनानखाना । २. अंतःकरण । हृदय । *(अव्य०)* अन्दर । में ।

भीतरळो—*(वि०)* अन्दर वाला । *(न०)* १. अंतःकरण । हृदय । २. मन ।

भीतरवाड़ियो—*(न०)* अंतःपुर में आने जाने वाला विश्वासी नौकर ।

भीतरियो—*(न०)* १. पुष्टिमार्ग के मंदिर में रसोई बनाने अथवा पानी भरने वाला व्यक्ति । २. वल्लभसंप्रदाय में ठाकुरजी का मुख्य पुजारी और ठाकुरजी के पास रहने वाला । अंतःपुर में आने जाने वाला विश्वासी नौकर । भीतरवाड़ियो ।

भीतरी—*(वि०)* अन्दर का ।

भीति—*(ना०)* भय । डर ।

भीतिहर—*(न०)* दुर्ग । किला । गढ़ ।

भीनणो—दे० भीजणो ।

भीनमाळ—*(न०)* मारवाड़ का एक अत्यन्त प्रख्यात प्राचीनतम ऐतिहासिक नगर । महाकवि माघ की जन्मभूमि का नगर । श्रीमाल नगर ।

भीनास—*(ना०)* गीलापन । आर्द्रता । नमी । सेज ।

भीनो—*(वि०)* १. गीला । भीगा हुआ । आर्द्र । गीलो । २. अनुरक्त । आसक्त । ३. लुब्ध । लुभाया हुआ । ४. लीन । तन्मय । ५. साँवला । श्यामल ।

भीम—*(न०)* १. पांडु पुत्र । युधिष्ठिर का छोटा भाई । २. शिव । ३. विष्णु । *(वि०)* १. भयानक । विकराल । २. मोटा । कदावर ।

भीमक—*(न०)* भीष्मक । रुक्मिणी के पिता व विदर्भ देश के राजा ।

भीमगोडो—*(न०)* मारवाड़ के छप्पन के पहाड़ों में एक तीर्थ स्थान ।

भीमग्यारस—*(ना०)* ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी । निर्जलाग्यारस ।

भीमजी—*(न०)* एक लोकगीत ।

भीमतळाव—*(न०)* बड़ा तालाब ।

भीमथळी—*(न०)* जैसलमेर जिले का एक प्रदेश ।

भीमनाद—*(न०)* भयंकर नाद । भीषण ध्वनि ।

भीमसेन—*(न०)* पांडु पुत्र भीम ।

भीमसेनी कपूर—*(न०)* एक प्रकार का कपूर ।

भीमसेनी ग्यारस—*(ना०)* ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की निर्जला एकादशी ।

भीमा—*(ना०)* दक्षिण भारत में एक नदी का नाम ।

भीमेण—*(न०)* भीम, भीमसेन या भीमसिंह का काव्य रूप ।

भीमो—दे० भीम ।

भीमोदरी—*(न०)* दुर्गा ।

भीय—*(न०)* डर । भय । बी ।

भीर—*(न०)* प्रस्थान । बहीर । रवाना । दे० भीड़ ।

भीरभंजण—दे० भीड़भंजण ।

भीरू—*(वि०)* डरपोक । कायर ।

भीरूक—*(न०)* चाँदी । रौप्य । रूपो ।

भील *(न०)* १. एक जाति । २. इस जाति का व्यक्ति ।

भीलड़ी दे० भीलण ।

भीलण—*(ना०)* १. भील जाति की स्त्री । २. भील की पत्नी । भीलड़ी ।

भीलणी—दे० भीलण ।

भीषण—*(वि०)* १. भयानक । डरावना । २. विकट ।

भीष्म—*(न०)* गंगा से उत्पन्न राजा शांतनु के पुत्र देवव्रत । गांगेय ।*(वि०)* भयंकर ।

भीष्मक—दे० भीमक ।

भीष्म पितामह—दे० भीष्म *(न०)* ।

भीसम—दे० भीष्म ।

भीसुर—*(वि०)* प्रकाशमान । दीप्तमान । भासुर ।

भोह—*(न०)* डर । भय ।

भींग—दे० भींगी ।

भींगी—*(ना०)* चमकदार हरे रंग के आवरण वाला एक कीड़ा ।

भींगो—*(न०)* भींगी कीट का हरे रंग का चमकदार आवरण जिसे लड़कियाँ गुड़ियों के शृंगार में प्रयुक्त करती हैं ।

भींच—दे० भीच ।

भींचणो—*(क्रि०)* १. दबाना । २. भिड़ाना । भीचना । ३. मुट्ठी बन्द करना । ४. कस कर चिपकाना । ५. छाती से लगाना । ६. दबोचना । ७. दाँत और मुंह बन्द करना ।

भींचरड़—*(वि०)* १. संहार करने वाला । २. वीर । बहादुर । *(न०)* योद्धा । सुभट ।

भींजणो – दे० भीजणो ।

भींजिया—*(न०)* बच्चे का मूत्र ।

भींट—१. छुआछूत । २. स्पर्श । छूना । ३. बेरी की कंटीली टहनियों का उतना झुरमुट जो बेई से उठाया जा सके । पाही ।

भींटणो—*(क्रि०)* १. अस्पर्श्य को स्पर्श करना । ३. नजदीक आना ।

भींटीजणो—*(क्रि०)* स्पर्श होना ।

भींटोरो—*(न०)* झड़बेरी की शाखाओं को इकट्ठा करके बनाया हुआ । बड़ा ढेर । बीठोडो । दे० भींटहरो ।

भींडी—दे० भिंडी ।

भींत—*(ना०)* १. दीवाल । २. प्राचीर । परकोटा ।

भींत घड़ियाल—दे० भींतघड़ी ।

भींत घड़ी—*(ना०)* दीवार घड़ी ।

भींतचितराम—दे० भींत चित्राम ।

भींत चित्राम—*(न०)* दीवाल पर बनाये हुए चित्र । भीतिचित्र ।

भींतड़ी—*(ना०)* १. छोटी दीवार । २. दीवार ।

भीतड़ो—*(न०)* १. घर (तुच्छार्थ) २. दीवार । भींत ।

भींभर—*(न०)* १. क्रोध । गुस्सा । २. सिर । ३. भींगुर । तिंवरी ।

भींभरणो—*(क्रि०)* १. क्रोधित होना। अतिक्रोध करना। २. क्रोध में अंट संट बोलना।

भींभळ—*(वि०)* १. आतुर। २. विह्वल *(नo)* १. उत्सव। २. नेत्र।

भींभळनैणी—*(नाo)* १. आतुर नेत्रों से प्रतीक्षा करने वाली। २. मुग्धा नायिका।

भींभळी—*(वि०)* १. आतुरतावाली। २. मुग्धा।

भींव—दे० भीम।

भींस—*(नाo)* १. दबाव। २. तंगी। अर्थाभाव।

भींसणो—दे० भीड़णो।

भुअ—*(नाo)* १. भूमि। धरणी। २. जगत। संसार।

भुअण—दे० भुवण।

भअंग—दे० भुजंग।

भअंगम—दे० भुजंगम।

भआ—*(नाo)* पिता की बहिन। बूआ। फूंफी।

भुआजी—*(नाo)* १. दारिद्रय। निर्धनता।

भआड़ो—*(नo)* बाप का बहनोई। बूआ का पति। फूंफो।

भुआळ—*(नo)* १. राजा। भूपाल। २. केश। जटा।

भुइं—*(नाo)* भूमि। पृथ्वी।

भक्त—*(भू० कृ०)* १. खाया हुआ। २. भोगा हुआ। ३. भुनाया हुआ। ४. व्यवहृत। *(नo)* भोजन। आहार।

भुक्तकार—*(नo)* रसोईदार।

भुक्तभोगी—*(वि०)* वह जिसने भोगा हो।

भुक्ति—*(नाo)* १. भोजन। २. रसोई। ३. संसारसुख। भोग। ४. चार प्रकार के प्रमाणों में का एक।

भखमरी—*(नाo)* निर्धनता।

भुखमरो—*(वि०)* १. भूखा। २. दरिद्री।

भुरखड़—*(वि०)* १. दरिद्री। भूखा।

भुरयाळवो—दे० भूखा।

भगटी—दे० भ्रकुटि।

भुगड़ी—*(नाo)* १. सूखे बेर। २. चबेने की वस्तुओं का मिश्रण। चबेना।

भुगत—दे० भुक्त।

भुगतणो—*(क्रि०)* १. सहन करना। २. उपभोग करना। भोगना। ३. अनुभव करना। ४. हानि, बीमारी आदि से कष्ट पाना। रिवणो।

भुगताई—*(नाo)* भुगतने की क्रिया या भाव। २. निपटारा। चुकारा। ३. अनुभव।

भुगतारण—*(नाo)* १. आगूंच सौदों की मिती (प्रायः पूनम) के दिन हानि-लाभ की की जाने वाली लेन-देन। (सट्टाखोरी) २. मूल्य चुकाना। ३. खरीदा हुआ माल देना। ४. हुंडी के रुपयों की अदायगी। ५. प्राप्ति। ६. निपटारा।

भुगतारणो—*(क्रि०)* १. सहन करना। २. हानि पहुंचाना। ३. पीड़ा पहुंचाना। दुख देना। रिबावणो। ४. उपभोग कराना। ५. मूल्य चुकाना। ६. निबटाना। ७. संदेश पहुंचाना। ८. अनुभव कराना।

भुगतायोड़ो—*(भू०कृ०)* १. भोगाया हुआ। २. संदेश पहुंचाया हुआ। ३. अनुभव कराया हुआ।

भुगतावणो—दे० भुगताणो।

भगति—*(नाo)* १. लौकिक सुख। मुक्ति २. भोजन। भगत।

भुचकणो—*(क्रि०)* काँपना। धूजना। धूजणो।

भुज—*(नo)* १. कंधे से कुहनी तक का भाग। भुजा। बाहु। २. हाथ। ३. हाथी की

सूंड। ४. शाखा। ५. समकोण का एक पूरक कोण। ६. त्रिभुज का एक आधार। ७. दो की संख्या का एक सूचक शब्द। ८. बुर्ज। गस्तम्भ। भुरज। ९. भूतपूर्व कच्छ राज्य की राजधानी का नगर।

भुजअंतर—(न०) वक्षस्थल। सीना। छाती।

भुजक—(न०) चाकर। सेवक। भोजक।

भुजकाँदो—(न०) नाखून।

भुजकोटर—(न०) काँख। खाख। भुजमूल।

भुजग—(न०) सर्प।

भुजगीश—(न०) शेषनाग।

भुजठाळक—दे० भुजळग।

भुजड़—(न०) वीर। योद्धा।

भुजडंड—दे० भुजादंड।

भुजत्राण—(न०) युद्ध के समय पहिनने के एक प्रकार के लोहे के दस्ताने। भुजा-कवच।

भुजपाळ—(न०) योद्धा।

भुजपास—(न०) आलिंगन। बाहुपाश।

भुजबळ—(न०) सामर्थ्य। बाहुबल।

भुजबळी—(वि०) १. बाहुबली। बलिष्ट भुजाओं वाला। २. पराक्रमी।

भुजबंध—(न०) १. भुजा में बांधा जाने वाला एक आभूषण। बाजूबंध। २. भुजत्राण। भुजा कवच।

भुजभार—(न०) १. बाहुबल। २. उत्तरदायित्व।

भुजमूळ—(न०) कांख। भुजकोटर।

भुजळक—दे० भुजळग।

भुजळग—(ना०) तलवार।

भुजवै—(न०) भुजपति। भुज का राजा।

भुजंग—(न०) १. सर्प। २. राजा। ३. स्वामी। ४. भुजा। बाहु। हाथ।

भुजंगचर—(न०) १. गरुड़। २. मोर।

भुजंगप्रयात—(न०) एक छंद।

भुजंगभक्—(न०) १. गरुड़। २. मोर।

भुजंगल—दे० भुजंग।

भुजंगरसना—(ना०) १. दो की संख्या। २. सांप की जीभ।

भुजंगशत्रु—(न०) १. गरुड़। २. मोर।

भुजंगसत्र—दे० भुजंगशत्रु।

भुजंगी—(न०) १. सर्प। २. नाग। (ना०) १. सर्पिनी। सांपिन। २. एक छंद।

भुजंगीश—दे० भुजंगेश।

भुजंगेश—(न०) शेषनाग।

भुजा—(ना०) १. हाथ। २. बाहु। बांह।

भुजाकाळ—(न०) कालरूपी भुजाएँ। (वि०) बहुत दृढ़ भुजाओं वाला।

भुजागळ—(वि०) १. जिसकी भुजायें अर्गला के समान शत्रु को आगे बढ़ने से रोकने में समर्थ है। २. बड़ा वीर। शक्तिशाली। ३. विशाल। ४. पहरेदार। (ना०) १. बड़ी अर्गला। अरगल। २. अवरोध।

भुजाट—(न०) १. दोनों भुजाओं (कंधों) के बीच का अंग। वक्षस्थल। छाती। २. दोनों भुजाएं। ३. भुजा। बाहु। (वि०) दृढ़ भुजाओं वाला। जबरदस्त। वीर।

भुजाडंड—(न०) १. पुष्ट भुजाएं। २. बाहुदंड। ३. योद्धा। (वि०) १. विशाल और पुष्ट शरीर वाला। २. वीर। बलवान। शक्तिशाली।

भुजाळ—(वि०) १. योद्धा। वीर। २. लंबी भुजाओं वाला। आजानबाहु।

भुजाळ-विसाळ—(वि०) विशाल भुजाओं वाला। प्रलब बाहु।

भुजाळी—(ना०) १. कटारी। २. तलवार।

भुजाळो—दे० भुजाळ।

भुजिया—दे० भंजिया।

भुटणो—*(क्रि०)* १. मन ही मन में कुढ़ना। २. क्रोधित होना।

भुड़कलो—दे० भुड़को।

भुड़कियो—दे० भुड़को।

भुड़को—*(न०)* १. लंबी नालीदार मिट्टी की सुराही। चंबू। कुंजो।

भुड़तो—*(वि०)* १. आग से सिका हुआ। २. कुचला हुआ। ३. बैंगन आदि को आग में भूंजकर बनाया हुआ एक प्रकार का बिना रसे का मसालेदार सालन। भुरतो।

भुडंड—दे० भुजडंड।

भुण कमळो—*(न०)* ऊंट।

भुनणो—*(क्रि०)* १. भूंजना। २. गुस्से होना।

भुनाणो—*(क्रि०)* १. भुंजवाना। २. रुपया, नोट आदि को छोटे सिक्कों में बदलवाना।

भुय—दे० भुअ।

भुयण—दे० भुवण।

भुयंग—*(न०)* भुजंग। सांप। विषधर।

भुयंगम—दे० भुजंगम।

भुयंद—*(न०)* राजा। भूपेन्द्र।

भुयाळ—*(न०)* भूपाल। राजा।

भुरकणो—*(क्रि०)* १. औषध आदि किसी वस्तु का बारीक चूर्ण घाव आदि पर छिड़कना। २. कोई महीन बुकनी छांटना। बुरकना।

भुरकला—दे० भरगोळा।

भुरकाणो—दे० भुरकणो।

भुरकी—*(ना०)* १. जादू। मोहिनी मंत्र। २. वशीकरण। ३. मंत्रित भस्मी। ४. महीन चूर्ण।

भुरकी नांखणो—*(क्रि०)* १. वश में करना। २. मोहित करना।

भुरज—*(न०)* १. बुर्ज। गरगज। २. शिखर। ३. मेघ शिखर। ४. दुर्ग। गढ।

भुरजाळ—*(न०)* १. किला। दुर्ग। २. राजा। *(वि०)* १. बुर्जों वाला। २. वीर।

भुरजाळी—*(ना०)* रानी। दुर्गस्वामिनी। *(वि०)* गोल सींगों वाली भैंस। भुरजी।

भुरजाळो—*(न०)* १. दुर्गस्वामी। राजा। २. दुर्ग। किला। *(वि०)* १. बुर्जों वाला। २. वीर। बहादुर।

भुरजी—*(वि०)* गोल सींगों वाली (भैंस)। *(ना०)* उक्त भैंस।

भुरजी भैंस—*(ना०)* गोल सींगों वाली सुन्दर भैंस।

भुरट—*(न०)* १. एक कांटों वाली घास जिसके (पौधे के) बीजों से रोटी आदि बनाई जाती है। हूंच। २. उक्त घास का बीज। एक वन धान्य।

भुरटियो—दे० भुरज। *(वि०)* भुरट जैसा।

भुरड़णो—*(क्रि०)* १. नाश करना। २. दबाना। ३. अपने अधिकार में करना। ४. चूर्ण करना।

भुरड़ीजणो—*(क्रि०)* १. दुखी होना। संतप्त होना। २. नाश होना।

भुरतो—*(न०)* बैंगन आदि सेक कर बनाया हुआ मसालेदार एक व्यंजन। भुड़तो। दे० भुड़तो।

भुरभुर—*(न०)* एक घास।

भुरभुरो—*(वि०)* दबाने से जिसके कण बिखर जाय। (ऐसा पदार्थ)।

भुरंट—दे० भुरट।

भुरंड—*(न०)* लुहार।

भळभुळ—*(ना०)* गरम रेत। गरम धूल।

भुलाणो—*(क्रि०)* १. भूल कराना। २. भुला देना। ३. भ्रम में डालना। ४. भूल जाना।

भुलापो—*(न०)* १. विस्मृति। २. धोखा। **भुलावो**।

भुलावणो—दे० भुलाणो।

भुलावो—*(न०)* १. भ्रम। धोखा। २. विस्मृति। **भुलापो**।

भुव—*(न०)* १. शिव। २. भूमि।

भुवण—*(न०)* १. भुवन। जगत। २. भवन। घर। ३. पृथ्वी। ४. स्वर्ग। ५. तीन की संख्या। ६. चौदह की संख्या।

भुवन—दे० भुवण।

भुवन चउद—*(न०)* चौदह भुवन।

भुवनश्रय—दे० त्रिभुवन।

भुवननोहिनी—*(ना०)* १. जगत को मोहित करने वाली। २. प्रभु की माया। ३. एक देवी।

भुवनेश्वर—*(न०)* १. शिव। २. ईश्वर।

भुवनेश्वरी—*(ना०)* १. महामाया। देवी। २. एक देवी का नाम। ३. प्रभु की माया। शक्ति।

भुवनेसरी—दे० भुवनेश्वरी।

भुवपै—*(न०)* राजा।

भुवंग—*(न०)* १. सर्प। भुजंग। २. वेश्यागामी।

भुवंगण—*(न०)* भुजंगम। सर्प।

भुवा—दे० भुआ।

भुवाड़ो—दे० भुआड़ो।

भुवाळ—*(न०)* १. भूपाल। राजा। २. केश।

भुस—*(ना०)* भूसा।

भुसण—*(न०)* कुत्ता।

भसणो—*(क्रि०)* भौंकना। (कुत्ते का)

भुहारा—*(न०)* भौंह। भ्रकुटी।

भुंआरो—*(न०)* भूमिघर। तहखाना।

भुंआंरो—*(न०)* १. भूमिघर। तहखाना। २, भौं। भ्रकुटी।

भुंईदाग—दे० भूमिदाग।

भुंईवावळी—*(ना०)* जमीन पर शाखाओं-प्रशाखाओं द्वारा फैलने वाला एक बबूल वृक्ष।

भुंई—*(ना०)* १. भूमि। २. प्रदेश। ३. दूरी। भौं।

भुंई दिखण—*(ना०)* मारवाड़ का दक्षिण प्रदेश। गोढ़वाड़ा।

भुंई पाड़ियो—दे० भौं पड़ियो।

भुंईरो—दे० भुंआरो।

भुंजवाणो—दे० भुंजाणो।

भुंजाई—दे० भूंजाई।

भुंजाईयो—*(न०)* भुंजाई करने वाला।

भुंजाणो—*(क्रि०)* भुंजवाना।

भुंट—दे० मुरट।

भुंय—*(ना०)* १. दूरी। २. भूमि। भौं।

भुंवारो—दे० भुंआरो।

भुंवाळी—*(ना०)* चक्कर। भँवळ। भमळ।

भुंहरो—*(न०)* भूमिघर। तलघर। भूंरो।

भुंहारो—दे० भुंआरो।

भू—*(न०)* १. पृथ्वी। २. पानी (बाल भाषा में)। ३. संसार। ४. माता। ५. बहु। बधु। ६. पत्नी। स्त्री। ७. एक की संख्या।

भूक—*(न०)* १. नाश। २. ध्वंस।

भूकंप—*(न०)* धरती कंप। भूचाल।

भूकियो भळको—*(न०)* एक प्रकार का भाला।

भूकी—*(ना०)* बारीक चूर्ण।

भूको—*(न०)* १. चूरो । चूर्ण । २. नाश ।

भूको होणो—*(मुहा०)* टुकड़े-टुकड़े होना । नाश होना ।

भूख—*(ना०)* १. क्षुधा । २. तीव्र इच्छा । ३. आवश्यकता । ४. दरिद्रता । ५. अभिलाषा । ६. कमी ।

भूखरा—*(न०)* १, आभूषण । २. भूषण । *(वि०)* श्रेष्ठ ।

भूख बुझणी—*(मुहा०)* १. भूख का मिट जाना । २. भूख का नहीं होना । खाने की इच्छा न होना । ३. निर्धनता दूर होना । ४. संतोष होना ।

भूख भेळो होणो—*(महा०)* निर्धनता को प्राप्त होना । धनमाल समाप्त होना ।

भूख नै मेटणो—*(मुहा०)* १. गरीबी को दूर करना । २. भोजन करना । ३. इच्छा की पूर्ति होना ।

भूख मरणो—*(मुहा०)* १. समय पर नहीं खाने से भूख का मिट जाना । २. भूख नहीं लगने का रोग होना ।

भूख मारणो—*(मुहा०)* चाय पानी आदि से भूख को मिटा देना ।

भूख मिटणी—*दे०* भूख बुझणी ।

भूख-रो-ठाम—*(वि०)* १. बहुत खाने वाला । २. आलसी । ३. निकम्मा ।

भूख लागणो—*(मुहा०)* खाने की इच्छा होना । भूख लगना ।

भूखाँ मरणो—*दे०* भूखे मरणो ।

भूखाळ—*(वि०)* भूखो ।

भूखाळ्यो—*दे०* भूखो ।

भूखां-मरतो—*(वि०)* १. मूल से व्याकुल । २. कंगाल । भिखारी । ३. गरीब । धनहीन ।

भूखियो—*(वि०)* १. गरीब । दरिद्री । २. भूखा ।

भूखी—*(वि०)* क्षुधिता ।

भूखे मरणो—*(मुहा०)* क्षुधा पीड़ित होना ।

भूखो—*(वि०)* १. भूखा । क्षुधित । २. गरीब । दरिद्र । ३. अभिलाषी ।

भूखो-तिरसो—*(वि०)* भूखा और प्यासा ।

भूखो-तिसियो—*दे०* भूखो तिरसो ।

भूखो-प्यासो—*दे०* भूखो-तिरसो ।

भूख्यो—*दे०* भूखो ।

भूख्यो-तिस्यो—*दे०* भूखो-तिरसो ।

भूगर्भ—*(न०)* १. पृथ्वीतल । २. विष्णु ।

भूगोळ—*(न०)* १. पृथ्वी । पृथ्वी का गोला । २. वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी के ऊपरी तथा प्राकृतिक विभागों आदि के स्वरूपों का वर्णन होता है । भूगोल ।

भूचर—*(ना०)* १. पृथ्वी पर रहने वाला व चरने वाला (मनुष्य-पशु) । स्थल के प्राणी । २. शिव । महादेव । ३. भूत । पिशाच ।

भूचाळ—*दे०* भूकंप ।

भूजा—*(ना०)* सीता । जानकी ।

भूजी—*(ना०)* माता । मा-सा ।

भूजीसा—*दे०* भूजी ।

भूटका—*दे०* भटका ।

भूटको—*(न०)* बंदूक के छूटने का शब्द ।

भूडो—*(न०)* १. रेती । २. टीला । टीबा । धोरो ।

भूडोळ—*दे०* भूकंप ।

भूण—*(न०)* काष्ठ का एक चक्र जिस पर चरस की वरत (रस्सी) चलती है ।

भूणमथो—*दे०* भुणकमळो ।

भूणियो—*दे०* भूण ।

भूत—*(वि०)* बीता हुआ । गत । *(न०)* १. आकाश, वायु, अग्नि, पानी और पृथ्वी ये पांचों तत्व । २. प्राणी । ३. जीव । ४. प्रेत । भूत । भंतर । ५.

पिशाच । ६. पांच की संख्या । ७. राक्षस ।

भूत काढणो— *(महा०)* भूतावेश को मिटाना ।

भूतकाळ—*(न०)* १. बीता हुआ समय । २. वर्तमान क्रिया शब्द का भूतकाळ द्योतक रूप । बीते हुये समय की क्रिया । (व्या.)

भूत कृदन्त—*(न०)* क्रिया से बना हुआ पूर्ण भूतकाल सूचक कृदन्त (व्या.) ।

भूतखानो—*(न०)* १. गंदापना । गंदीखाना । अस्वच्छता । २. भूतों का स्थान ।

भूतजूण—*(ना०)* भूतयोनि ।

भूतजोणी—*दे०* भूतजूण ।

भूतणी—*(ना०)* १. भूतनी । प्रेतनी । बंतरी । २. डाकिनी । ३. कुवेश स्त्री । कुरूप स्त्री । ४. लड़ाकू स्त्री ।

भूतनाथ—*(न०)* महादेव । शिव ।

भूतपति—*(न०)* शिव । महादेव ।

भूतपूर्व—*(वि०)* वर्तमान समय से पहिले का ।

भूतभडंग—*दे०* भूत भडींगो ।

भूत-भडींगो—*(वि०)* १. भूत के समान गंदा और भयावना । २. उन्मत्त । मस्त । ३. निर्लज्ज ।

भूतभावन—*(न०)* १. महादेव । २. परमात्मा ।

भूतभाषा—*(ना०)* पैशाची भाषा ।

भूतम—*(न०)* सोना । स्वर्ण ।

भूतयज्ञ—*(न०)* समस्त जीवों के कल्याणार्थ एक गृहस्थ यज्ञ ।

भूतयोनि—*(ना०)* प्रेतयोनि । भूत जाति । भूतजूण ।

भूतराज—*(न०)* महादेव । शिव ।

भूतळ—*(न०)* १. धरातल । पृथ्वीतल । २. मृत्यु लोक । ३. संसार । ४. पाताळ ।

भूतळोटियो—*दे०* भतूळियो ।

भूतविद्या—*(ना०)* भूतों का आह्वान करने तथा दूर करने की विद्या ।

भूतहन—*(न०)* ऊंट ।

भूतारण—*(न०)* पृथ्वी का उद्धार करने वाला ।

भूतावळ—*(ना०)* भूतों की टोली । प्रेत-समूह । भूतावळी ।

भूतावळी—*दे०* भूतावळ ।

भूतात्मा—*(ना०)* १. शरीर । २. शिव । ३. जीवात्मा ।

भूति—*(न०)* १. सम्पत्ति । वैभव । २. लक्ष्मी । ३. सौभाग्य । ४. शिव ।

भूतिया—*(न०ब०व०)* आक के डोडे के अंदर का तंतु समूह ।

भूतियो—*(न०)* वातचक्र । भतूळियो । २. आक का डोडा ।

भूती—*(ना०)* १. क्रोध । २. भस्म । विभूति ।

भूतेळियो—*दे०* भतूळियो ।

भूतेळो—*दे०* भतूळियो ।

भूतेश—*(न०)* महादेव । शिव । भूतों के पति शंकर ।

भूतेस—*दे०* भूतेश ।

भूतेश्वर—*(न०)* महादेव । शिव ।

भूतेसर—*दे०* भूतेश ।

भूतेसरी—*(न०)* दुर्गा । पार्वती । भूतेश्वरी ।

भूथाण—*(न०)* बाण रखने का चोंगा । भाथा । तुणीर ।

भूदाग—*(न०)* शव को जमीन में दफनाने की क्रिया ।

भूदार—*(न०)* सुअर । वाराह ।

भूदेव—*(न०)* ब्राह्मण । विप्र । ब्रामण ।

भूधर—*(न०)* १. पर्वत । भाखर । २. परमेश्वर । ३. श्रीकृष्ण । ३. बैल । बळद । ५. शेषनाग ।

भूधरधणी—*(न०)* १. ईश्वर। २. विष्णु। ३. राम।

भूधरसुता—*(ना०)* पार्वती।

भूनणो—दे० भूंजणो।

भूप—*(न०)* राजा। भूपति।

भूपग—*(न०)* राजा।

भूपज—*(न०)* १. राजा। २. राजकुमार।

भूपति—*(न०)* राजा।

भूपवन—*(न०)* सिंह।

भूपाण—*(न०ब०व०)* १. राजा। २. राजा-लोग, राजाओं का समूह।

भूपाळ—*(न०)* भूपाल। राजा।

भू-पाणो—*(मुहा०)* १. मार मारना। पीटना। २. हैरान करना। सताना।

भूबळ—*(वि०)* वीर। शक्तिशाली। *(न०)* योद्धा। दे० भूभळ।

भूभट—*(न०)* योद्धा।

भूभरण—*(न०)* १. पृथ्वी पालक। ईश्वर। २. मेघ।

भूभळ—दे० भोभर।

भूम—दे० भोम।

भूमबाब—*(न०)* एक प्रकार का भूमिकर। टैक्स।

भूमग—*(न०)* भुजंग।

भूमंड—*(न०)* १. राजा। २. सूर्य। ३. पृथ्वी।

भूमंडल—*(न०)* पृथ्वी।

भूमि—*(ना०)* १. धरती। पृथ्वी। २. दूरी। फासला। ३. आधार। ४. प्रदेश।

भूमिका—*(ना०)* १. किसी ग्रंथ के आरंभ का वह वक्तव्य जिससे उसकी ज्ञातव्य बातों का पता चलता है। ग्रंथारंभ के पूर्व लिखा जाने वाला उस ग्रंथ का परिचायक विवरण। प्रस्तावना। प्राक्कथन। २. कक्षा। स्थिति। *(वेदांत)*। ३. चित्त की अवस्था। *(वेदान्त)*। ४. नाटक में किसी पात्र का अभिनय। ५. श्मशान भूमि। ६. भूमि।

भूमिज—*(न०)* १. मंगलग्रह। २. सोना। स्वर्ण। *(वि०)* भूमि से उत्पन्न।

भूमी—दे० भूमि।

भूमीचारो—दे० भोमीचारो।

भूय—*(अव्य०)* पुनः। फिर। फेर। *(वि०)* अधिक। बहुत। *(न०)* सिंह। २. भूमि।

भूयण—*(ना०)* पृथ्वी। दे० भुवन।

भूयसी—दे० भूरसी।

भूयंग—दे० भुजंग।

भूर—*(ना०)* भूरापन। *(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. अधिक।

भूरकी—*(ना०)* भूरे रंग की (भैंस)।

भूरगढ़—*(न०)* जैसलमेर के किले का नाम।

भूरसी—*(ना०)* मंगल कार्य की सम्पूर्ति पर ब्राह्मण को दी जाने वाली दक्षिणा। भूयसी।

भूरसी उतारणो—*(न०)* मार मारना। खूब पीटना।

भूरि - *(वि०)* अधिक। प्रचुर।

भूरियो—*(न०)* १. अंग्रेज। २. ऊंट। ३. बब्बरसिंह। *(वि०)* भूरे रंग वाला। भूरा।

भूरी—*(वि०)* १. भूरे रंग की (भैंस)। २. भूरे रंग की।

भूरो—*(वि०)* १. सिंह। २. वीर पुरुष। योद्धा। ३. ऊंट। ४. अंग्रेज। ५. वरदरा चूर्ण। भूको। *(वि०)* १. भूरे रंग का। धूसर रंग का। २. भूरे वर्ण का। ३. वीर। ४. दानी। ५. यशस्वी।

भल—*(ना०)* १. गलती। क्षामी। २. दोष। अपराध। ३. विस्मरण। विस्मृति।

भलकणो—*(वि०)* भूल जाने की आदत वाला।

भूलचूक—*(ना०)* १. भूल। त्रुटि। २. प्रमाद। ३. लेख, हिसाब इत्यादि में कुछ का कुछ लिखा जाना या लिखना छूट जाना। ४. अपराध।

भूल-चूक लेणी-देणी—*(मुहा०)* भूल से कम ज्यादा लियां-दिया गया हो उतना लेना-देना।

भूलणो—*(क्रि०)* १. भूलना। चूक जाना। प्रमाद करना। २. विस्मृत हो जाना। ३. गफलत करना। ४. इठलाना या गर्व में आ जाना। इतराना। ५. भटक जाना। ६. भ्रम में पड़ना। ७. भूल करना। ८. खो देना। ९. ध्यान न रखना।

भूल भलैया—*(ना०)* बहुत अधिक गलियों या खंभों वाली इमारत जिसमें से निकलने में या गिनने में मनुष्य भटक जाता है—भ्रमित हो जाता है।

भूलोक—*(ना०)* १. मनुष्य लोक। २. पृथ्वी लोक। मृत्यु लोक।

भूलो-चूको—*(वि०)* भूला हुआ। *(ना०)* १. भूल। त्रुटि। २. अपराध।

भूलोड़ो—*(भू० कृ०)* १. भूला हुआ। भ्रमित। २. विस्मृत। ३. इतराया हुआ। ४. गलती किया हुआ।

भूलो-भटक्यो—*(वि०)* १. पथ भ्रष्ट। २. मार्ग भूला हुआ। *(क्रि०वि०)* भूल से। भूल करके।

भूषण—*(व०)* एक प्रसिद्ध कवि। दे० भूषण।

भूसी—*(ना०)* अनाज आदि के ऊपर का छिलका।

भूसुर—दे० भूदेव।

भूसो—*(ना०)* १. अनाज के डंठल के टुकड़े जो पशुओं को खिलाये जाते हैं। भूसा। घास। २. चापड़। थूलो।

भूं—*(ना०)* रोने की आवाज।

भूंक—*(ना०)* गदहे के रेंकने से उत्पन्न शब्द।

भूंकण—*(ना०)* गदहा। गर्दभ।

भूंकणो—*(ना०)* गदहा का भो भो शब्द करना। भूंकना। गदहे का रेंकना।

भूंका—*(ना०ब०व०)* प्याज के छोटे पौधे के पत्ते

भूंखर—*(ना०)* अतितेज। शीतल।

भूंगड़ा—*(ना०ब०व०)* भूने हुये चने।

भूंगर—*(ना०)* १. एक जंतु। २. लाल मुंह की भेड़। *(वि०)* १. रोने की आदत वाला। २. रोने जैसी सूरत वाला। ३. मूर्ख।

भूंगरी—*(ना०)* लाल या पीले मुंह की भेड़।

भूंगळ—*(ना०)* १. एक वाद्य। २. किवाड़ बंद करने का एक लंबा डंडा। ३. कारखानों, मीलों आदि में कार्यकरों के आने जाने के समय की बजने वाली सीटी। *(वि०)* मूर्ख। अभूझ।

भूंगळी—*(ना०)* १. छोटी नलिका। २. आग में फूंक मार कर उसे प्रज्वलित करने की एक नली। भोगळी।

भूंगळो—*(ना०)* बड़ी नली।

भूंगी—*(ना०)* फूंगी नामक एक उद्भिज। खुंभी। छिगरी। कुकुरमुत्ता।

भूंगो—दे० भूंगी। *(ना०)* १. एक प्रकार का कर। २. एक कीड़ा।

भूंच—*(वि०)* १. गंवार। जंगली। २. मूर्ख।

भूंचणो—*(क्रि०)* १. मांगना । २. भोगना ।

भूंच धरती—*(ना०)* ऊसर भूमि ।

भूंछ—दे० भूंच । *(वि०)* कटा हुआ ।

भूंछलो—*(न०)* १. जंगली लोक । २. असभ्य लोक ।

भूंछलोग—दे० भूंछलोक ।

भूंज—*(न०)* भूंजने की क्रिया या भाव । दे० भूंच ।

भूंजणो—*(क्रि०)* १. भूंजना । सेंकना । २. तलना । पकाना । ३. बंदूक की गोलियों से छिद्रित या आहत कर देना ।

भूंजाई—*(ना०)* १. रसोई । २. भोजन । ३. अतिथि सत्कार के लिये बनाई जाने वाली विविध प्रकार की भोजन सामग्री । ४. बड़ा भोज ।

भूंड *(ना०)* १. बदनामी । निंदा । अपयश । २. दोष । ३. सूअर ।

भूंडण—*(ना०)* सूअर की मादी । शूकरी । *(वि०)* १. अपवित्र । गंदी । २. कुरूपा । ३. कलहप्रिय ।

भूंडणो—*(क्रि०)* १. बदनाम करना । अपकीर्ति करना । निंदा करना । **भांडणो** । २. दोष देना ।

भूंडा—*(न०ब०व०)* १. गालियाँ । २. निंदा । बुराई । ३. निंदा परक कविता ।

भूंडाई—*(ना०)* १. निंदा । बदनामी । अपकीर्ति । २. दोष । अवगुण । ३. बुरा काम । ४. त्रुटि । खराबी । ५. आलोचना ।

भूंडापणो—दे० भूंडाई ।

भूंडी—*(ना०)* १. बदनामी । २. अपकीर्ति । दे० भूंडो ।

भूंडो—*(वि०)* १. खराब । बुरा । निकृष्ट । २. कुरूप । भोंडा । ३. अशुभ । ४. अशिष्ट । ५. अरुचिकर । ६. हानिकारक । ७. बदनाम । ८. खल । दुष्ट ।

भूंडो-भलो—दे० भलो-भूंडो ।

भूंफोड़ो—*(न०)* १. बाँस । २. भूमि को फोड़कर निकलने वाला पौधा ।

भूंभ—*(ना०)* मस्ती । उन्मत्तता ।

भूंभाड़ा—*(न०ब०व०)* रोने की क्रिया, भाव । रोने की आवाज ।

भूंसणो—*(क्रि०)* लिखे हुए को मिटाना । **भिसोळणो** ।

भूँह—*(ना०)* आँख के ऊपर धनुषाकार रोमावली । भौंह । भ्रू । **भँवारो** ।

भूँहरो—*(न०)* १. भूमिघर । तलघर । २. भौंह । भुँहारो । *(वि०)* धूलि से आच्छादित ।

भृकुट—*(न०)* मस्तक । **माथो** ।

भृकुटि—*(ना०)* १. भौंह । २. कुपित दृष्टि । **तेवर** ।

भृगट—दे० भृकुट ।

भृगु—*(न०)* १. एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि । २. परशुराम । ३. शिव ।

भृगुलता—*(ना०)* विष्णु भगवान के छाती में भृगु ऋषि द्वारा मारी हुई लात का चिन्ह ।

भृत्य—*(न०)* नौकर । सेवक । **चाकर** ।

भृंग—*(न०)* भौंरा । भमरो । **भँवरो** ।

भेक—*(न०)* मेंढक । दादुर । **मींडको** । **डेडरियो** ।

भेख—*(न०)* १. वस्त्रादि पहिनने का ढंग । २. साधुओं की वेशभूषा । ३. संप्रदाय सूचक निश्चित पहनावा । ४ पोशाक । वेश । ५. बाना । रूप । ६. बनावटी रूप रंग । ७. संन्यासियों का भोज । साधु समाज का जीमन । **भंडारो** । ८. संन्यास ।

१. संन्यासियों का समाज। साधुसमाज। सम्प्रदाय।

भेलज—दे० भेषज।

भेलणो—(क्रि०) १. संन्यास लेना। २. भेष बदलना।

भेलधारी—(न०) भेलधारण करने वाला। संन्यासी। साधु।

भेज—दे० भीनास।

भेजणो—(क्रि०) भेजना। किसी व्यक्ति या वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना। पहुँचाना। पठाना। भेलणो।

भेजाणो—(क्रि०) भेजने का कार्य किसी और से करवाना। भिजवाना।

भेजावणो—दे० भेजाणो।

भेजियोड़ो—(भू०कृ०) भेजा हुआ। प्रेषित।

भेजी—दे० भेजो।

भेजो—(न०) १. भेजा। दिमाग। २. खोपड़ी के अन्दर का गूदा।

भेट—(ना०) १. उपहार। २. मिलाप। मुलाकात। ३. देवता या पूज्य व्यक्ति की सेवा में भक्ति पूर्वक अर्पण की जाने वाली वस्तु। ४. सौगात। ५. दर्शन। ६. टक्कर। भिड़ंत।

भेटको—(न०) १. टक्कर। २. मिलन। मिलाप।

भेटण—(ना०) १. मुलाकात। मिलन। २. स्पर्श।

भेटणा—(न०ब०व०) १. मिलन। मिलाप। २. अकस्मात् मिलन। ३. टक्कर।

भेटणो—(क्रि०) १. आलिंगन करना। २. मुलाकात करना। ३. मिलना। ४. दर्शन करना। ५. स्पर्श होना। ६. परिचय होना। ७. टक्कर खाना। ८. तीर्थयात्रा करना। ९. स्पर्श करना।

भेटी—(ना०) टक्कर। धक्का।

भेटीजणो—(क्रि०) १. स्पर्श हो जाना। २. मिल जाना। ३. दर्शन हो जाना।

भेटी मारणो—(मुहा०) १. गाय, भैंस आदि का सींगों से टक्कर मारना। २. टक्कर मारना।

भेटो—(न०) १. मिलाप। २. संसर्ग। ३. अकस्मात् होने वाला मिलाप।

भेटो होणो—(मुहा०) अकस्मात् मिलना।

भेड़—(ना०) बकरी के आकार का एक चौपाया जिसके बालों (ऊन) से कंबल आदि वस्त्र बनते हैं। मेष। गड्डर।

भेड़णो—(क्रि०) १. भिड़ाना। टक्कर लगाना। २. (किमाड़) बंद करना। ३. कसना। बाँधना।

भेड़ियो—(न०) एक हिंसक पशु। भेड़िया।

भेड़ो—(न०) नरभेड़। खेटो।

भेडो—(न०) भेड़ का मूत्र।

भेद—(न०) १. रहस्य। २. अंतर। फर्क। ३. गुप्त बात। ४. जुदाई। ५. वर्ग। विभाग। ६. शत्रु पक्ष के लोगों में झगड़ा उत्पन्न कर अपने पक्ष में मिलाना। ७. किस्म। प्रकार। ८. छेदन।

भेदक—(वि०) १. भेद जानने वाला। २. भेदने वाला। ३. रेचक।

भेदग—(न०) गुप्तचर। दे० भेदक।

भेदणो—(क्रि०) १. छेदना। भेदन करना।

भेदन—(न०) भेदने की क्रिया या भाव।

भेदनीति—(ना०) फूट डालने की नीति।

भेदबुद्धि—(ना०) १. एकता का अभाव। अलगाव। २. फूट।

भेदभाव—*(ना०)* १. अंतर । जुदाई । २. कपट । ३. पक्षपात । ४. एकात्मता का अभाव ।

भेदमरुढ—*(ना०)* गुप्तचर । भेदिये ।

भेदमलो—दे० भेदागढ ।

भेदियो—*(ना०)* १. गुप्तचर । जासूस । २. गुप्त रहस्य जानने वाला ।

भेदी—दे० भेदियो ।

भेदू—*(ना०)* भेदियो । जासूस ।

भेयटी—*(ना०)* भाटीक्षत्री । *(वि०)* वीर ।

भेर—दे० भेरी । *(अव्य०)* फिर । फेर ।

भेरभद्द—*(ना०)* १. बड़ा ढोल । २. बड़ा नगाड़ा ।

भेरी—*(ना०)* १. बड़ा ढोल या नगाड़ा । २. नौबत । ३. तुरही ।

भेळ—*(ना०)* १. मिश्रण । मिलावट । २. मिलाई जाने वाली वस्तु । ३. संकर संतान ।

भेळकरो—*(ना०)* १. मिलन । मुलाकात । २. एकत्र ।

भेळण—*(ना०)* १. मिलाने की क्रिया या भाव । २. मिलाई जाने वाली वस्तु ।

भेळणो—*(क्रि०)* १. मिलाना । मिश्रण करना । २. आक्रमण करना । ३. लिखे हुए को मिटा देना । ४. ध्वंस करना । नष्ट करना । ५. मिलाना । लड़ाना । ६. भिड़ना । लड़ना । ७. खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चरवा देना । ७. खेत खेले आदि पर अधिकार करना । ६. खेत जोतना । १०. अपनी ओर मिलाना ।

भेळप—*(ना०)* १. मिलावट । मिश्रण । २. भागीदारी । साझा । ३. प्रीति । मेल । ४. मित्रता । ५. इकट्ठापन । शामिल । ६. पारिवारिक व्यवस्था ।

भेळभेळ—दे० भेळाभेळ ।

भेळवाड़—*(ना०)* १. फसल की कटाई । २. फसल की कटाई होने के बाद खेत में पशुओं को चराने की क्रिया । ३. खड़ी फसल को पशुओं से चराने की क्रिया । ४. शामिल रहने की क्रिया या भाव ।

भेळसेळ—*(ना०)* मिश्रण । *(वि०)* मिश्रित एकत्रित ।

भेळा—*(वि०)* १. शामिल । सम्मिलित । इकट्ठा ।

भेळाण—दे० भेळवाड़ ।

भेळाणो—दे० भेळावणो ।

भेळापो—*(ना०)* १. मेल मिलाप । २. एक साथ रहने की क्रिया या भाव । मिलकर रहना । शामिल रहने की भावना । ३. भागीदारी । ४. मित्रता ।

भेळाभेळ—*(अव्य०)* १. साथ-साथ । साथी-साथ । साथ में । २. एक ही बार में । *(वि०)* एक के साथ दूसरा (काम) ।

भळाभेळी—दे० भेळाभेळ ।

भेळावणो—*(क्रि०)* १. आक्रमण करने का मार्ग बतलाना । २. आक्रमण को सफल बनवाना । आक्रमण को सफल बनवाने के लिए सहायता करना । ३. नष्ट करवाना । ध्वंस करवाना । ४. मिलवाना । प्राप्त करवाना । ५. मिलवाना । मिश्रित करवाना । ६. खड़ी फसल को ढोरों से चरवा देना ।

भेळाप—भेळापो ।

भेळियो—*(ना०)* १. दो या दो से अधिक अनाजों का मिश्रण । २. भेळिये की बनाई हुई खिचड़ी । ३. विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का मिश्रण ।

भेली—*(ना०)* १. गुड़ की पिंडी । २. ढेला । डला । ढळो ।

भेळी—*(वि०)* १. एकत्र । शामिल । २. संकुचित । सिकुड़ी हुई । *(ना०)* सिमटन । *(क्रि० वि०)* साथ में ।

भेळो—*(वि०)* १. एकत्र । शामिल । २. संकुचित । ३. मिश्रित । *(ना०)* १. स्पर्श । २. मिलन । ३. समेटने की क्रिया या भाव । सिमटन । *(क्रि० वि०)* साथ में ।

भेळो करणो—*(क्रि०)* १. समेटना । २. समाप्त करना । ३. दबाना । ४. सामिल करना । ५. संग्रह करना ।

भेळो होणो—*(क्रि०)* १. मिलना । २. २. मृतक के परिवारों से मिलने जाना । ३. किसी अस्पर्श्य से छू जाना ।

भेव—*दे०* भेद ।

भेवणो—*(क्रि०)* १. भिगौना । २. भेदना ।

भेष—*दे०* भेख ।

भेषज—*(ना०)* १. औषधि । दवा २. उपचार । चिकित्सा ।

भेस—*दे०* भेख ।

भेसधारी—*दे०* भेखधारी ।

भेसाद—*(ना०)* १. एक देवी । २. देवी । भैंसाद देवी । महिषासुर मर्दिनी ।

भेंत—*(ना०)* दीवार । भींत ।

भै—*(ना०)* भय । डर ।

भैचक—*(वि०)* १. भयभीत । डरा हुआ । भौंचक्का । २. व्याकुल । घबराया हुआ ।

भैचकणो—*(क्रि०)* १. डरना । भयभीत । होना । २. घबराना । ३. चकित होना ।

भैंड़ो—*(वि०)* १. भयावना । डरावना । २. खराब । बुरा । ३. भेंगा ।

भैण—*(ना०)* बहिन । भगिनी । भाण ।

भैणियो—*(०)* एक गाली ।

भैभंग—*(वि०)* निडर । अभय ।

भैभीत—*(वि०)* १. भयभीत । डरा हुआ । २. जबरदस्त ।

भैयो—*(ना०)* भाई ।

भैरव—*(ना०)* १. शिव । २. शिवजी के गणों का अधिपति । भैरो । भैक । ३. उलूक जाति की एक शकुन चिड़िया । चीबरी । कोबरी । ४. बड़ा नगाड़ा । ५. बड़ा ढोल । ६. एक राग । *(वि०)* १. भयंकर । २. विकट ।

भैरव-चीबरी—*दे०* भैरव सं. ३

भैरव झाँप—*दे०* भैरूझांप ।

भैरव झोळी—*दे०* भैरू झोळी ।

भैरवी—*(ना०)* १. चामुंडा देवी । २. उल्लू जाति की एक चिड़िया । चीबरी । ३. एक रागिनी ।

भैरवी चक्र—*(ना०)* शाक्तों का एक तांत्रिक उत्सव ।

भैराहर—*(ना०)* ऊँट ।

भैरू—*दे०* भैरव ।

भैरूजी—*(ना०)* एक लोकगीत । *दे०* भैरव ।

भैरूझाँप—*(ना०)* १. मोक्ष प्राप्ति के लिये पहाड़ पर से कूद कर प्राण त्याग करने की एक तांत्रिक क्रिया । २. विकट कुदान । ३. किसी जोखम के काम को बिना विचारे हाथ में ले लेने का भाव । ४. गिरनार के ऊपर की एक टेकरी ।

भैरू झोली—*(ना०)* भैरव का रूप बना कर भिक्षा मांगने की एक क्रिया ।

भैं—*(ना०)* १. भैंस । २. भेड़ की बोली ।

भैंस—*(ना०)* १. काले रंग का एक दुधारू पशु । भैंस । महिषी । डोबी । डोबो । २. आक का फल (डोडी) ।

भैंसा-कूदणी—*(ना०)* बच्चों का एक खेल ।

भैंसागूगळ—*(ना०)* एक प्रकार का गुग्गल ।

भैंसाद—*(ना०)* महिषासुरमर्दिनी देवी ।

भैंसामाता—*(ना०)* एक भयंकर शीतला रोग। भारी चेचक।

भैंसो—*(न०)* भैंस का नर। पाड़ा। भैंसा। महिष।

भो—*(न०)* १. भय। डर। २. जन्म। ३. संसार। *(अव्य०)* हे! अरे!

भोई—*(न०)* १. कहार। २. पालकी उठाने की मजदूरी करने वाली एक हिन्दू जाति। ३. इस जातिका व्यक्ति।

भोक्ता—*(वि०)* १. उपभोग करने वाला। २. भोजन करने वाला। *(न०)* स्त्री का पति। खाविंद।

भोग—*(न०)* १. सुख दुख आदि का अनुभव करना। २. प्रारब्ध। ३. भोगने की सामग्री। ४. देवता को अर्पण की जाने वाली भोजन सामग्री। देवार्पण। नैवेद्य। ५. भोजन। ६. दुख। ७. सुख। ८. बलिदान। ९. सर्प का फन। १०. संभोग। ११. खेत के मालिक को कृषक की ओर से (जिसने खेत बोया है) दिया जाने वाला कर रूप में नाज। १२. मालगुजारी। भूमिकर। लगान। १३. खेत की आमदनी। १४. अधिकार। १५. परिमाण। १६. धन। सम्पत्ति। १७. सूर्य। १८. मौज मजा। १९. प्राप्ति। आय। २०. लाभ। २१. परिणाम।

भोगण—*(वि०)* भोगने वाला।

भोगणजमी—*(न०)* राजा।

भोगणो—*(क्रि०)* १. सुख-दुख आदि कर्मफल का अनुभव करना। २. भोगना। सहन करना। ३. उपभोग करना। ४. स्त्री प्रसंग करना। ५. उपयोग में लेना। *(वि०)* भोगने वाला। भोगण।

भोगता—*दे०* भोक्ता।

भोगतो—*(न०)* १. छोटा जागीरदार। २. भोग भरने वाला।

भोग धरणो—*(मुहा०)* भगवान को नैवेद्य चढ़ाना।

भोगनो—*(न०)* १. कनपटी। २. मस्तक सिर। माथो।

भोगभँवर—*(वि०)* १. वैभवशाली। २. मौजशौक करने वाला। आनन्द लूटने वाला। छैलो।

भोगभाड़ो—*(न०)* एक कृषि कर।

भोगळ—*(ना०)* १. अर्गला। आगळ २. एक शस्त्र।

भोग लगाणो—*(न०)* १. भोजन करना। २. भगवान को भोजन अर्पण करना।

भोगळाऊ—*(वि०)* भोगळावे में रखा हुआ है।

भोगळावो—*(न०)* १. जमीन या मकान रेहन रख कर लिया हुआ कर्ज। २. इस प्रकार कर्ज लेने की एक रीति। (इसमें ऋणदाता ऋणी का मकान या जमीन अपने कब्जे में लेकर उसका किराया या उपज नहीं देता और ऋणी रुपयों का ब्याज नहीं देता।

भोगळियाळी—*(ना०)* कटारी।

भोगळियो—*(न०)* कर्ज के बदले में रेहन रहा हुआ मनुष्य। (शेखावाटी)। बोळियो। सागड़ी।

भोगळी—*(ना०)* १. अर्गला। आगळ। २. मोगली। छोटी नली। ३. नाक या कान में पहनने का लोग (कान नाक का आभूषण) ४. फूंक मार कर अग्नि को प्रज्वलित करने की नली। मूंगळी। ५. स्त्रियों के शिरोभूषण 'बोर' के पीछे लगने वाली नली।

भोगळो—*(न०)* बैलगाड़ी के पहिये का एक उपकरण ।

भोगवण—*(अव्य०)* भोगने के लिए । *(न०)* १. भोगने की वस्तु । २. भोग्या । ३. वेश्या ।

भोगवणो—दे० 'भोगणो' जिसका अर्थ ।

भोगवती—*(ना०)* १. गंगा नदी । २. सर्पों की नगरी ।

भोगवाळो—*(वि०)* १. भोगने वाला । २. जो भोग रहा है । ३. खेत का लगान भरने वाला । ४. 'भोगळावो' का उलटा ।

भोगवास—*(न०)* १. केलिगृह । रतिगृह । २. भग । योनि ।

भोगविलास—*(न०)* १. आमोद-प्रमोद । मौज-शौक । २. इन्द्रिय सुखों में लिप्त स्थिति ।

भोगसील—दे० भोगीसील ।

भोगास—१. भोगने की इच्छा । कामेच्छा । २. भग । योनि ।

भोगी—*(वि०)* १. विषयी । कामी । २. उपभोग करने वाला । ३. भोगने वाला । *(न०)* १. सर्प । २. राजा । ३. जमींदार ।

भोगी भमरो—*(न०)* १. छैला । रंगीला व्यक्ति । २. भोग विलास में लिप्त व्यक्ति ।

भोगी भँवर—दे० भोगी भमरो ।

भोगीसैल—*(न०)* जोधपुर से ७-८ मील दूर उत्तर में मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मंडोर (मंडोवर-माडव्यपुर) के एक ऐतिहासिक पर्वत व तीर्थ का नाम । (कहा जाता है कि पहले यहां नागवंशीय क्षत्रियों का राज्य था । पर्वत पर जंजहर रूप में दुर्ग अवशिष्ट है । यह भी प्रसिद्ध है कि यहां नागों (सर्पों) का स्थान था । नागाद्रि, नागकांदरी नदी, नागकुंड, नाग पंचमी का बड़ा मेला इत्यादि नाम इनकी स्मृति के परिचायक हैं । अधिक मास में भोगीसैल की सात दिन की परिक्रमा का बड़ा मेला लगता है ।)

भोग्य—*(वि०)* भोगने योग्य ।

भोज—*(न०)* १. भोजन । २. बहुत से मनुष्यों के लिए बनाया हुआ भोजन । ३. जीमनार । ३. मालव प्रदेश का एक प्राचीन ख्यातनाम विद्वान राजा । धारा नगरी इनकी राजधानी थी ।

भोजक—*(न०)* १. शाकद्वीपी ब्राह्मण । सेवक । सेवग । (भोजक प्रायः जैन मंदिरों में सेवा पूजा करते हैं । *(वि०)* भोजन करने वाला ।

भोजग—दे० भोजक ।

भोजन—*(न०)* भोज्य पदार्थ । रोटी-शाक । खाने की वस्तुएं । खाना । जीमण ।

भोजन भट्ट—*(वि०)* बहुत खाने वाला ।

भोज पत्र—*(न०)* एक वृक्ष और उसकी छाल । भूर्जपत्र । (प्राचीन समय में भोज पत्र की भीतर छाल कागज की जगह काम आती थी । अभी अनेक ग्रंथ इस पर लिखे मिलते हैं) ।

भोजनशाला—*(ना०)* रसोईघर । रंधाणी ।

भोजनालय—*(न०)* १. रसोईघर । २. वह स्थान जहां (एक साथ बैठ कर) भोजन किया जाता है । पंगत ।

भोजपुरी—*(ना०)* बिहार के एक प्रदेश की बोली । *(वि०)* भोजपुर का ।

भोजाई—*(ना०)* बड़े भाई की पत्नी । भाभी ।

भोजी—*(वि०)* बहुत भोजन करने वाला । *(ना०)* भाभी ।

भोट—*(न०)* १. सिर। २. कटा हुआ सिर। मुंड। ३. बिना सिर का धड़। रुंड। ४. तेज गरमी। ५. तेज धूप। ६. अग्नि। ७. प्रहार। ८. बौछार। झड़ी। ९. भूटान देश का निवासी। भोटिया। *(वि०)* मूर्ख। मूढ़।

भोटणो—*(क्रि०)* १. प्रहार करना। २. काटना। बोटणो।

भोटियो—*(वि०)* भूटान का। *(न०)* भूटान देश का निवासी।

भोटो—*(वि०)* १. जिसकी धार तीक्ष्ण नहीं हो। बोथो। ३. मूर्ख।

भोठ—*दे०* भोट।

भोड—*(न०)* सिर। माथो। भोभरो।

भोडक—*दे०* भोड।

भोडक्को—*दे०* भोड।

भोडळ—*(न०)* अभ्रक। अळपोस। जळपू।

भोडळो—*(वि०)* १. मूर्ख। मंद बुद्धि।

भोण—*(न०)* भवन। घर।

भोत—*(वि०)* बहुत। घणो।

भोताड़—*(न०)* भय। डर। बीह।

भोताड़ेड़—*(वि०)* भयान्वित। डरियोड़ो।

भोतेरो—*(वि०)* बहुतेरा। घणो। घणेरो। घणोसारो।

भोदू—*दे०* भोदो।

भोदो—*(वि०)* मूर्ख। जड़। भोदू। बोदो।

भोपणियो—*(न०)* भौंह। भ्रू।

भोपाई—*(ना०)* १. भोपे का ढोंग। २. ढोंग। पाखंड। ३. ढकोसला।

भोपाडफरी—*(ना०)* १. कृत्रिम आतंक। २. भोपे के द्वारा बतलाया जाने वाला ढोंग। भोपाई।

भोपा-भरड़ो—*(न०)* १. भोपे का पाखंड। २. बनावटी झाड़-फूंक करने वाला भोपा। ३. भोपे का खेल। ४. भोपे के जैसा ढोंगी तथा विकृत आचरण।

भोपाळ—*(न०)* १. राजा २. मध्य प्रदेश की राजधानी। ३. एक भूतपूर्व रियासत।

भोपाळी—*(ना०)* एक रागिनी।

भोपी—*(ना०)* १. भोपा की स्त्री। २. आन देवताओं (लोक देवी-देवताओं) का झूठा आवेश लाकर ढोंग करने वाली स्त्री। *(वि०)* मूर्खा। बोफी।

भोपो—*(न०)* मावड़ियाँ, पाबूजी आदि आन देवताओं (लोक देवों) का पुजारी तथा ऐसे देवों का शरीर में आवेश लाकर घूमने-घूमने का ढोंग करने वाला। भोफा। *(वि०)* १. मूर्ख। बेवकूफ। बोफो। २. ढोंगी। ढूंगी।

भोपो-भरड़ो—*दे०* भोपा-भरड़ो।

भोपो मढ़ में है—*(मुहा०)* १. चित्त में प्रसन्नता है। २. प्रसन्न है।

भोभर—*(ना०)* अग्निकणों सहित गरम राख। धूभळ। भोभळ।

भोभरो—*(न०)* १. सिर। माथो। (व्यंग्य अथवा क्रोध में)। २. ललाट। लखाड़। ३. खोपड़ी। कपाल।

भोभळ—*दे०* भोभर।

भो-भंजण—*(न०)* १. भय का नाश करने वाला। २. भक्त दुःख का नाश करने वाला। परमात्मा।

भो-भो—*दे०* भव-भय।

भोम—*(ना०)* १. भूमि। २. जागीरी। ३. समझ। बुद्धि। ४. दक्षता। कुशलता। ५. विवेक। ६. जानकारी। ७. मंगल ग्रह। ८. मंगलवार। ९. अग्नि। आग। वासदे।

भोमका—*(ना०)* १. श्मशान भूमि। २. मठ भूमि। ३. वृतान्त। भूमिका। ४. भूमि।

भोमबाब—*(न०)* १. भोमियों से लिया जाने वाला कर। २. भूमिकर। लगान।

भोमवार—*(न०)* सोम और बुध के बीच का दिन। मंगलवार।

भोमियावांट—*(न०)* जमीन या जागीरी का भाइयों में किया जाने वाला बराबर हिस्सा।

भोमियो—*(वि०)* १. जानकार। २. प्राणवीच। २. मार्गदर्शक। *(न०)* १. थोड़ी भूमि का मालिक। छोटा जमींदार। २. एक लोक देवता। ३. भूमिपति। राजा।

भोमियोजी—*(न०)* एक लोक देवता।

भोमी—*(ना०)* १. भूमि। जमीन। जमीं। दे० भोमियो सं. १।

भोमीचार—*(न०)* १. जागीरी। २. भूमि का आधिपत्य।

भोमीचारो—*(न०)* १. जागीरी। २. लूटखसोट। ३. भोमियों का घनी आबादी वाला स्थान।

भोर—*(न०)* प्रातः काल। तड़का। प्रभात। तड़को। सवेरो।

भोरड़—*(न०)* वृद्ध। बूढो।

भोरणो—*(क्रि०)* १. चूरा करना। महीन टुकड़े बनाना। २. चूर्ण में किसी और वस्तु को मिलाना। ३. नाश करना। ४. भुलाना।

भोरो—*(न०)* १. चूर्ण। २. महीन टुकड़े। ३. दाना। कण। ४. लड्डू, बरफी आदि मिठाई के छोटे टुकड़े। रोटी, लड्डू आदि खाद्य वस्तु के छोटे-छोटे टुकड़े।

भोळ—*(ना०)* १. विस्मृति। २. कमी। न्यूनता। ३. भोलापन।

भोळणो—*(क्रि०)* १. ठगना। २. भुलावे में डालना।

भोळप—*(ना०)* १. भोलापन। २. अविवेक। मूर्खता। ३. बीमारी की चेतना रहित बातें। ४. भुलावा। भ्रम। ५. पागलपन। ६. सरलता। सीधापन। ७. भूल। गलती। ८. भूलने की आदत। *(वि०)* बिना होश-हवास। चेतना रहित। अचेत।

भोळवणो—*(क्रि०)* १. भुलाना। भुलावे में डालना। २. भ्रम में डालना। ३. ठगना। ४. धोखा देना।

भोळाईजणो—*(क्रि०)* १. भुलावे में आना। २. ठगा जाना। ३. भ्रम में पड़ जाना। ४. सुपुर्द किया जाना।

भोळाई—*(ना०)* १. भोलापन। २. सरलता। सीधापन। ३. सुपुर्दगी।

भोळाण—दे० भोळावण।

भोळाणो—*(क्रि०)* १. सुपुर्द करना। सौंपना। २. किसी की निगरानी में रखना। ३. भ्रम में डालना। भुलाना। ४. धोखा करना।

भोळानाथ—*(न०)* महादेव। शिव।

भोळापण—*(न०)* १. सीधापन। सरलता। २. अज्ञानता। मूर्खता। ४. नादानी।

भोळावण—*(ना०)* १. किसी दूसरे की सम्भाल। निगरानी। देखरेख। २. सिफारिश। ३. निगरानी में रखने की क्रिया।

भोळावणो—दे० भोळाणो

भोळावो—*(न०)* १. भुलावा। २. ठगी। ३. भोलापन।

भोळियो—दे० भोळो।

भोळी—*(वि०)* १. अज्ञानी। मूर्खा। २. सरल। सीधी। सरल प्रकृति वाली। *(ना०)* भुलावा। *(न०)* ऊँट।

भोळीचक्रवत—*(न०)* महादेव ।

भोळीजणो—दे० भोळाइजणो ।

भोळै—*(क्रि० वि०)* १. भूल से । २. अनजान में । ३. भरोसे से । ४. भ्रम से । दे० 'भळै' तथा 'वळ है' ।

भोळो—*(वि०)* बेवकूफ । मूर्ख । अज्ञानी । २. सरल स्वभाव का । ३. सीधी प्रकृति वाला । सीधा । ३. कपट रहित । *(न०)* १. भ्रम । २. विस्मरण ३. मूर्ख का भद्र पर्याय ।

भोळोढाळो—*(वि०)* १. मूर्ख । २. भोला । सीधा ।

भोळोभाळो—*(वि०)* सीधा और सरल । २. धोखे से उतर जाय ऐसा । ३. मूर्ख । बेवकूफ ।

भोवाळ—*(न०)* भूपाल । राजा ।

भोसागर—दे० भवसागर ।

भों—*(न०)* १. भूमि । २. अन्तर । दूरी । फासला । छेटो ।

भोंगरी—*(ना०)* एक घास ।

भों-चाल्यो—*(वि०)* पैदल । *(क्रि० वि०)* पैदल चल कर ।

भोंदू—दे० भोदू ।

भों-पड़ियो—*(वि०)* १. निर्धन । २. निर्बल ।

भोंपू—*(न०)* १. मोटर आदि का हॉर्न । २. मिल आदि की समय सूचक सीटी ।

भोंह—*(ना०)* भौंह । भृकुटी ।

भौ—*(न०)* १. डर । भय । २. संसार । दुनियां ।

भौगोलिक—*(वि०)* भूगोल सम्बन्धी । भूगोल का ।

भौजी—*(ना०)* बड़े भाई की पत्नी । भाभी ।

भौण—*(न०)* १. भवन । २. भुवन ।

भौत—*(वि०)* १. बहुत । अतिशय । २. पर्याप्त । यथेष्ठ ।

भौतिक—*(वि०)* १. पंचभूत से संबंध रखने वाला । २. पंचभूतों से बना हुआ । ३. स्थूल । जड़ । ४. पार्थिव । ५. शरीर सम्बन्धी । ६. सांसारिक । ७. भूतयोनि से संबंधित ।

भौंरामाखी—*(ना०)* बड़ी मक्खी । भमरा माखी ।

भौंरामाटी—*(ना०)* भ्रमरी द्वारा बनाये जाने वाले मिट्टी के घर की मिट्टी जो औषधियों में काम आती है । भमरा माटी ।

भौंरो—*(न०)* भ्रमर । भमरो । भंवरो ।

भ्याड—दे० भाड ।

भ्यारियो—*(वि०)* १. तुच्छ । २. भोंदू । ३. डरपोक ।

भ्यास—*(न०)* १. अभ्यास २. स्वभाव । आदत ।

भ्रकुट—*(न०)* १. सिर । मस्तक । माथो । २. भृकुटी । भौंह । ३. भाल । कपाल ।

भ्रकुटक—दे० भ्रकुट ।

भ्रकुटी *(ना०)* भौंह । भृकुटि ।

भ्रकुंड—*(न०)* सिर । मस्तक । माथो ।

भ्रख—*(न०)* भक्ष । भोजन । भख ।

भ्रखण—*(न०)* भक्षण । भोजन । आहार । भखण ।

भ्रखणो—*(क्रि०)* भक्षण करना । भोजन करना । जीमणो । खाणो ।

भ्रगु—दे० भृगु ।

भ्रगुट—दे० भ्रकुट ।

भ्रघट—दे० भ्रकुट ।

भत—दे० भृत्य ।

भतार—दे० भरतार ।

भृत्य—(न०) नौकर । चाकर ।

भ्रम—(न०) १. संदेह । शक । २. भूल । ३. धुन । संभ्रम । ४. पीड़ा । पीड़ा ।

भ्रमजाल—(न०) माया मोह का बन्धन ।

भ्रमण—(न०) १. घूमना-फिरना । २. आना-जाना । आवागमन । ३. यात्रा सफर । ४. चक्कर ।

भ्रमणा—दे० भरमणा ।

भ्रमणो—(क्रि०) १. धोखा खाना । २. बहकना । ३. चक्कर खाना । ४. घूमना । भमणो ।

भ्रमर—(न०) १. भौंरा । भमरो । २. लहर । ३. जलचक्र । ४. दोहे का एक भेद । भमरो ।

भ्रमाणो—(क्रि०) १. धोखा देना । २. बहकाना । ३. चक्कर देना । घुमाना ।

भ्रमावणो—दे० भ्रमाणो ।

भ्रमीजणो—(क्रि०) १. धोखा खाना । २. भ्रम में पड़ना ।

भ्रष्ट—(वि०) १. अपने स्थान से गिरा हुआ । पतित । २. दूषित । ३. बद-चलन । ४. दुराचारी ।

भ्रष्टाचार—(न०) १. दुराचार । २. घूस-खोरी । ३. रिश्वत ।

भ्रसंड—(न०) १. हाथी का माथा । २. हाथी की सूण्ड ।

भृंग—(न०) १. भ्रमर । भौंरा । भृंगराज । २. विजया । भांग ।

भृंगली—(ना०) एक बाजा ।

भृंगी—(न०) १. भौंरा । भ्रमर । २. महादेव । शिव ।

भ्रंत—दे० भ्रांत ।

भ्राजणो—(क्रि०) १. शोभा देना । २. शोभित होना ।

भ्राणी—(वि०) शोभित ।

भ्रात—(न०) भाई । सहोदर ।

भ्रातब्रजेश्वर—(न०) श्रीकृष्ण के बड़े भाई । बलराम । भ्रातवजेश्वर ।

भ्रातविजेसर—दे० भ्रातवजेसर ।

भ्राता—(न०) भाई । भ्राता । सहोदर ।

भ्रातालछी—(ना०) चंद्रमा ।

भ्रामक—(वि०) भ्रम में डालने वाला ।

भ्राह—(ना०) १. अग्नि २. भट्टी ।

भ्रांत—(ना०) १. संदेह । शक । २. शत्रुता । दुश्मनी । ३. विरोध । (वि०) १. भ्रांति में पड़ा हुआ । धोखे में पड़ा । हुआ । २. भूला हुआ । ३. चक्कर खाया हुआ । ४. भटका हुआ ।

भ्रांति—(ना०) १. भ्रम । धोखा । २. सन्देह । ३. चक्कर । ४. मोह । ५. एक काव्यालंकार ।

भ्रांतिजथा—(न०) एक काव्यालंकार ।

भ्रू—(न०) आँखों के ऊपर के धनुषाकार बाल भृकुटी । भौंह ।

भ्रूण—(न०) १. स्त्री का गर्भ । २. गर्भ में रहा हुआ बालक । ३. कच्चा गर्भ ।

भ्रूण हत्या—(ना०) १. गर्भस्थ शिशु की हत्या । २. गर्भपात । ३. शिशु हत्या । ४. भ्रूण हत्या का महापाप ।

भ्रूह—(ना०) भौंह । भृकुटी ।

म

म—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का पच्चीसवाँ और पवर्ग का अन्तिम वर्ण। इसका उच्चारण ओष्ठ और नासिका द्वारा होता है।

म—*(अव्य०)* नहीं। मत। मा। *(न०)* १. संगीत के मध्यम स्वर का संकेत। २. मगण। ३. विष्णु। ४. सप्तम। काल।

मइयो—दे० मैयो।

मइं—*(सर्व०)* १. मैं। २. मुझ। ३. मेरा।

मई—*(ना०)* ईसवी सन् का पाँचवा महीना। मे मास। दे० 'मय' अव्यय अर्थ।

मईयो—*(न०)* ऊँटनियों के झुण्ड में रखा जाने वाला ऊँट। साँड ऊँट।

मउ—*(ना०)* १. गरीबी के कारण भूखे और दुखी लोगों का समूह। २. अकालग्रस्त भूखे लोगों का समूह। *(वि०)* भूख और गरीबी से दुखी। *(ना०)* गरीब प्रजा।

मउड़—दे० मौड़।

मऊ—*(न०)* मालव प्रदेश का एक नगर। दे० मउ।

मऊख—*(ना०)* १. किरण। मयूख। २. प्रकाश। ३. शोभा। ४. ज्वाला।

मकड़ी—*(ना०)* एक कीड़ा। लूता।

मकड़ो—*(न०)* १. एक जंगली अन्न। २. मौड़ा।

मकतब—*(न०)* पाठशाला।

मकनो—*(वि०)* मस्त। दे० मुकनो।

मकनो हाथी—*(न०)* १. बड़ा और मस्त हाथी। २. बिना दाँतों वाला हाथी। ३. बहुत छोटे दाँतों वाला हाथी। मकुना। मदकल।

मकबरो—*(न०)* रोजा। कब्र। मजार।

मकबूजा—*(वि०)* अधिकृत। जो कब्जे में है।

मकर—*(न०)* १. मगर। मगरमच्छ। २. मछली। ३. दसवीं राशि। ४. मजाक। हँसी ठट्ठा। ठठोळी। ५. छल। कपट। ६. नखरा। ७. मौज। ८. उन्माद। ९. गर्व। १०. दर्पण। ११. नौ निधियों में की एक निधि। १२. माघ मास।

मकरकेतु—*(न०)* १. कामदेव। २. भगवान कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का अपर नाम।

मकरध्वज—दे० मकरध्वज।

मकरध्वज—*(न०)* १. कामदेव। २. हनुमान का पुत्र। एक रस औषधि। *(वि०)* बलवान। वीर।

मकरमोयो—*(वि०)* किंचित घी और गरमपानी मिलाकर बनाया हुआ (आटा)। माकड़मोयो।

मकरराशि—*(ना०)* बारह राशियों में से दसवीं राशि।

मकरसंक्राति—*(ना०)* १. सूर्य का मकर राशि में प्रवेश होने का दिन। २. सूर्य पूजा का पर्व।

मकरंद—*(न०)* १. पुष्प रस। २. पुष्प रज। पराग। ३. भौंरा। ४. कोयल। ५. पुष्प केशर। पुंकेशर। ६. मधु। ७. मधुमक्खी। मदमक्खी।

मकराई—*(ना०)* १. धूर्तता। २. घमंड। ३. छल।

मकरावार—*(न०)* समुद्र।

मकरावृता—*(वि०)* मछली के आकार का।

मकराकृत कुंडल—*(न०)* (भगवान विष्णु के कानों में पहिनने के) मकर की आकृति के कुंडल ।

मकराणो—*(न०)* मकराना (मारवाड़) की खानों से निकलने वाला प्रसिद्ध श्वेत संगमरमर । **आरसपहाण** । आदर्श पाषाण । २. मारवाड़ का एक नगर जहां मकराना पत्थर निकलता है । ३. बलुचिस्तान के पास का एक प्रदेश मकरान ।

मकरी—*(ना०)* १. मगरमच्छ की मादा २. **मछली** ।*(वि०)* १. मजाकी । २. छली । कपटी । धूर्त ।

मकरोवणो—*(क्रि०)* बेसन या आटे को मकरमोयो (दानेदार) बनाना ।

मकसद—*(न०)* १. इरादा । २. विचार । ३. उद्देश्य ।

मकसो—*(वि०)* १. मैला । अस्वच्छ । २. कांतिहीन । फीका । मंद । ३. धुंधला । ४. अरुचिकर । नापसंद । ६. प्रभाव-रहित ।

मकाई—दे० मक्की ।

मकान—*(न०)* घर । आवास । निवास-स्थान ।

मकार—*(न०)* 'म' वर्ण । **मम्मो** ।

मकाळ—*(न०)* शीतकाल में तापने का अग्नि पात्र । **सिगड़ी** । **बोरसी** ।

मकियो—*(न०)* १. मक्के का सिट्टा । भुट्टा । **सिटियो** । २. घड़े में जमाई हुई मिश्री का मकिये की आकृति का पाशेदार संकु ।

मकुनो—*(न०)* १. बिना दांत वाला हाथी । संदली । २. बिना मूंछों वाला मनुष्य । **निमूंछिया** । **मकनो** । **मुकनो** ।

मकूनी रोटी—*(ना०)* गेहूं व चने के आटे की रोटी । **बेजड़ रोटी** ।

मकोड़ो—*(ना०)* चींटी । **कीड़ी** ।

मकोड़ो—*(न०)* १. चींटी वर्ग का पर उससे बड़ा काले रंग का एक कीट । **मांको** । **मांकड़** । २. सोने व चांदी की सांकल की कड़ी । ३. पाँवों के झाँझर का अंकुड़ा ।

मकोय—*(न०)* एक वनस्पति औषधि । **काकमाची** ।

मक्कर—*(न०)* १. गर्व । अभिमान ।

मक्का—*(न०)* १. अरब में मुसलमानों का एक तीर्थ, जहाँ मुहम्मद का जन्म हुआ था । २. एक अनाज । मकई ।

मक्कार—*(वि०)* १. बेईमान । २. धोखे बाज । ३. चालाक ।

मक्कारी—*(ना०)* १. बेईमानी । २. धोखे-बाजी ३. चालाकी ।

मक्की—*(ना०)* एक अनाज । मक्का । मकई ।

मक्रकेत—*(न०)* मकरकेतु । कामदेव ।

मक्रकेतअंसी—*(न०)* प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध ।

मख—*(न०)* १. यज्ञ । २. मधु । शहद ।

मखजन—*(न०)* भंडार । खजाना ।

मखण—*(न०)* मक्खन ।

मखतूल—*(न०)* १. काला रेशम । २. एक सुगन्धित द्रव ।

मखत्राता—*(न०)* १. यज्ञ रक्षक । २. श्री रामचन्द्र ।

मखदूम—*(न०)* १. गुरु । २. मालिक । स्वामी ।

मखदोखी—*(न०)* राक्षस ।

मखमल—*(न०)* एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा, जिसके एक ओर रोएं उभरे होते हैं ।

मखाणा—*(न०ब०व०)* एक मिठाई ।

मखियारणो—*(न०)* मक्खियों से रक्षा करने तथा शोभा के लिये घोड़े या बैल के मुख पर बाँधा जाने वाला डोरियों से गुँथा हुआ जालीदार उपकरण ।

मखवाळ—*(वि०)* यज्ञ करने वाला । *(न०)* ऋषि ।

मखशाला—*(ना०)* यज्ञशाला ।

मखोल—*(न०)* मश्करी । हंसी । ठट्ठा ।

मखोलियो—*(वि०)* मजाक करने वाला । मस्करो ।

मग—*(न०)* १. मार्ग । २. स्थान । जगह । ३. भोजक जाति । शाकद्वीपी ब्राह्मण । सेवग । ४. मूंग ।

मगज—*(न०)* १. मस्तिष्क । सिर । २. दिमाग । भेजा । ३. गिरी । बीज । भींजी । ४. बुद्धिशक्ति । ५. बुद्धि । अक्ल । ६. गर्व । मिजाज । ७. अकड़ ।

मगजपच्ची—*(ना०)* व्यर्थ की बकवास । मगजमारी ।

मगजमारी—दे० मगजपच्ची ।

मगजी—*(ना०)* रजाई, अंगरखी आदि पर लगाई जाने वाली गोट । किनारी । मगजी ।

मगण—*(न०)* छन्द शास्त्र के आठ गणों में से एक जिसमें तीन गुरु वर्ण होते हैं । *(वि०)* मगन ।

मगत—*(न०)* भिखारी । मंगता । मगतो ।

मगतण—दे० मगती ।

मगतवेड़—*(ना०)* १. भिखारियों का समूह । भिक्षुक दल । २. भिखारी ।

मगती—*(ना०)* भिखारिन । मँगती । भिखमंगी । मगतण ।

मगतो—*(न०)* भिखारी । मँगता । भिखमंगा ।

मगद—*(न०)* मैदा, घी और चीनी से बनाई जाने वाली बिना पानी की एक भुरभुरी मिठाई ।

मगद-पंचधारी—*(न०)* एक मिठाई ।

मगदळ—दे० मगद ।

मगदूर—*(न०)* १. शक्ति । ताकत । २. हिम्मत । ३. काबू । वस । ४. गुंजाइश । ५. हैसियत ।

मगध—*(न०)* दक्षिण बिहार प्रांत का प्राचीन नाम ।

मगन—दे० मग्न ।

मगनणी—दे० मुगधणी ।

मगनता—*(ना०)* १. प्रसन्नता । खुशी । २. मस्ती । ३. तल्लीनता ।

मगर—*(न०)* १. मगरमच्छ । २. मनुष्य के शरीर में पेट के पीछे का और पशुओं आदि में ऊपर का भाग । पीठ । पृष्ठ भाग । २. करील वृक्ष के फूल । बाटो । *(अव्य०)* लेकिन । परन्तु । पण । पिण ।

मगर पचीसी—*(ना०)* १. पच्चीस वर्ष की मगरूरी । २. भर जवानी । पूर्ण युवावस्था ।

मगरमच्छ—*(न०)* पानी का एक हिंसक जंतु । मकर । मगर । घड़ियाल ।

मगरिब—*(न०)* पश्चिम दिशा । आथुण ।

मगरियो—*(न०)* १. छोटा पहाड़ । पहाड़ी । भाखरी । डूंगरो ।

मगरी—*(ना०)* १. छोटी पहाड़ी । २. मगरमच्छ की मादा ।

मगरूर—*(न०)* १. घमंड । अहंकार । २. जोश । *(वि०)* घमंडी । अहंकारी ।

मगरूरी—*(ना०)* १. घमंड । अहंकार । २. जोश ।

मगरो—(न०) १. पर्वत । पहाड़ । डूंगर । २. जंगल का मैदान । ३. बिछा घास आदि की जंगल की सूखी जमीन का मैदान । तालर । ४. झाड़-झंखाड़ रहित पथरीली जमीन । पठार ।

मगसो—दे० मकसो ।

मगेज—(न०) गर्व । अभिमान । घमंड ।

मगेजण—(वि०) गर्वीली । गर्विता ।

मगेहरणो—(न०) द्वार । दरवाजो । दरवाजे ।

मग्न—(वि०) १. मग्न । मग्नम । २. लीन । तल्लीन । ३. डूबा हुआ ।

मघ—दे० मघ सं० ३.

मघ ब्राह्मण—(न०) १. सेवक । भोजक । सेवग । २. शाकद्वीपी ब्राह्मण ॥

मघवा—(न०) इंद्र । देवराज ।

मघा—(न०) सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवां नक्षत्र । पांच तारों का एक समूह ।

मचं—(न०) १. शरीर का भराव । २. शरीर में रक्त का बढ़ना । रक्त वृद्धि । ३. शरीर का फुलाव व पुष्टता । ४. सुडौलपना । सौष्ठव । ५. उन्माद । (क्रि० वि०) शीघ्रता से ।

मचक—(ना०) १. धँसाना । दबाव । २. अनुरोध या आग्रह की स्वीकृति । मानना । शरीर में चोट आदि से हड्डी तथा नाड़ी के खिसक जाने से होने वाली पीड़ा । ४. चोट लगने से हड्डी या नाड़ी का खिसक जाना ।

मचकणो—(क्रि०) १. बोझ से दबना या झुकना । २. हिलना डुलना ।

मचकाणो—(क्रि०) १. प्रहार करना । मारना । २. मैथुन करना । ३. धमकाना ।

मचकूर—(न०) १. हाल । हकीकत । वृत्तान्त । २. घटना । ३. चर्चा । ४. सलाह । ५. सेना ।

मचको—(न०) १. शरीर के किसी अवयव का अचानक झटकाना । २. झटका । ३. शरीर से लगने वाला धक्का । ४. पेंग । झोटा । ५. आपलूसी । ६. क्षति ।

मचकोड़णो—(क्रि०) १. सरोड़ना । २. पराजित करना । हराना । ३. नष्ट करना । ४. मारना । ५. बिगाड़ना । (मुँह) ।

मचकोड़णो—(क्रि०) १. लौटना । २. पराङ्मुख होना । मुख मोड़ना । ३. अलग होना । ४. छा जाना । फैल जाना । ५. अस्त होना । ६. युद्ध होना । ७. शोर होना । हल्ला-गुल्ला होना ।

मचरको—(न०) १. झटका । धक्का । २. बवाल । ३. हिलना-डुलना ।

मचळ—(ना०) बवंडर ।

मचळणो—(क्रि०) १. किसी वस्तु की प्राप्त करने के आतुर होना । ललचाना । २. मचलना ।

मचलियो—(न०) छोटी खाट । खटिया ।

मचळी—(ना०) वमन । उलटी ।

मचली—(ना०) छोटी खाट । खटली ।

मचाण—(न०) शिकार करने तथा खेत की रखवाली के लिये बाँधा जाने वाला ऊँचा आसन ।

मचाणो—दे० मचावणो ।

मचावणो—(क्रि०) १. आरम्भ करना । शुरू करना । २. छा देना । फैला देना । ३. शोर करना । हल्ला करना । ४. युद्ध करना । ५. करना । बनाना । घटित करना ।

मचोळ—(न०) १. धक्का । २. आघात । ३. तरंग । लहर । ४. मसलने या मारने की क्रिया या भाव ।

मचोळणो—(क्रि०) १. मारना । २. मसलना ।

मचौळो – दे० मचोळ ।

मच्छ—(न०) १. मकरमच्छ । २. मछली । ३. बड़ी मछली । ४. भगवान विष्णु का मत्स्यावतार । (वि०) मक्तिमाली ।

मच्छ अस्सवारी—(न०) कामदेव ।

मच्छ गळागळ—(न०) १. बड़े मत्स्य का छोटे मत्स्य को, उसका उससे छोटे का, इस क्रम से बड़े का छोटे को निगलने की प्रक्रिया या अराजकता । २. बड़ों के द्वारा छोटों का शोषण करने का एक न्याय-उदाहरण । ३. सबल द्वारा निबल को सताना ।

मच्छर—(न०) १. मत्सर । गर्व । २. ईर्ष्या । डाह । ३. एक उड़ने वाला कीड़ा जो डंक मारकर रक्त चूसता है । माछर ।

मच्छावतार (न०) श्री विष्णु का प्रथम अवतार । मत्स्यावतार ।

मच्छीमार – (न०) मछुआ ।

मछ—(न०) १. मत्स्य । मछली । दे० मच ।

मछमंछा—दे० मत्स्यगंधा ।

मछर—(न०) १. अभिमान । २. क्रोध । ३. ईर्ष्या । मत्सर । डाह । ४. क्लेश । ५. चौहान क्षत्री । ६. शत्रुता । ७. पराक्रम । ८. प्रभाव । दे० माछर ।

मछर-गर—(वि०) १. मत्सर-गुरु । २. अभिमानी । ३. स्वाभिमानी । ४. स्वाभिमानियों का गुरु । ५. मुहता नैणसी का एक विशेषण ।

मछरणो—(क्रि०) १. क्रोधित होना । २. गर्व करना ।

मछपति—दे० मत्स्यपति ।

मछकायल—दे० मछराळो ।

मछरायल—दे० मछराळो ।

मछराळी—(वि०) १. मत्सर वाला । डाह वाला । २. वीर । ३. मस्त । ४. क्रोधी ।

मछरीक—(न०) चौहान क्षत्री । (वि०) १. मत्सर वाला । डाह वाला । २. अभिमानी । अहंकारी । ३. स्वाभिमानी । ४. मस्त । मतवाला । ५. क्रोधी । ६. ईर्ष्यालु ।

मछरेत—दे० मछरेल ।

मछरेल—(वि०) १. वीर । २. अभिमानी । ३. स्वाभिमानी । ४. मस्त । मतवाला ।

मछळी—(ना०) मत्स्य । मछली । माछळी ।

मछवो (न०) मछुआ । धीवर ।

मछहटी—(न०) मत्स्य हाटक ।

म-छिंड—(अव्य०) मत छोड़िये । छोड़ना नहीं ।

मछंदरनाथ—दे० मछेंद्रनाथ ।

मछेंद्रनाथ—(न०) गोरखनाथ के गुरु । एक प्रसिद्ध हठ योगी सिद्ध-महात्मा । मत्स्येन्द्रनाथ । मछंदरनाथ ।

मजकूर—(वि०) १. जिसका उल्लेख पहिले हो चुका हो । उक्त । उल्लिखित । २. हाजिर । वर्तमान । (न०) १. विवरण । वृत्तान्त । २. परामर्श । मंत्रणा ।

मजब—(न०) समाज का विधान ।

मजमिन—(न०) 'मगजी' का कोई अतिक्रम शब्द । दे० मगजी ।

मजदूर—(न०) श्रमिक । मजूर ।

मजदूरी—(ना०) १. श्रमिश्रम । २. श्रम । ३. मजदूर का श्रम ।

मजबूत—(वि०) १. दीर्घायु । २. दीर्घिक । प्रेमी ।

मजबूत—*(वि०)* १. दृढ़। पक्का। २. हृष्टपुष्ट। ३. बलवान। ४. स्थिर।

मजबूती—*(ना०)* १. दृढ़ता। ३. पुष्टता। ३. बल। शक्ति। ४. स्थिरता।

मजबूर—*(वि०)* विवश। बाध्य।

मजबूरी—*(ना०)* विवशता। लाचारी।

मजमून—*(न०)* १. इबारत। लेख। २. विषय। ३. लिखावट।

मजरै—दे० मुजरै।

मजल—*(न०)* यात्रा में ठहरने का स्थान। मंजिल।

मजलिस—*(ना०)* १. सभा। जलसा। २. महफिल। नाचरंग। ३. समाज।

मजळो—*(वि०)* १. तोल, माप, नाप इत्यादि में कुछ कम। २. मक्खीचूस। कंजूस। ३. कपटी। दे० मिजळो।

मजहब—*(न०)* १. धर्म। मत। पंथ। २. सम्प्रदाय।

मजहबी—*(ना०)* १. धार्मिक। २. साम्प्रदायिक।

मजाक—*(ना०)* मश्करी। हँसी। ठट्ठा दिल्लगी।

मजाकियो—दे० मजाकी।

मजाकी—*(वि०)* मजाक करने वाला।

मजाग—दे० मजाक।

मजागरो—*(न०)* १. किसी टंटे की जबानी पंचायती। २. किवाड़ के चौखट में जड़ने के लिये लगाई जाने वाली एक सुराखों वाली लोह पट्टी जिसमें पेच कसे जाते हैं। कुलाबा।

मजाज—दे० मिजाज।

मजाजा—दे० मरजादा।

मजार—*(न०)* कब्र। कबर।

मजाल—*(ना०)* १. साहस। हिम्मत। २. सामर्थ्य। शक्ति।

मजिआसणो—*(न०)* दवात। मसीभाजन। मसिपात्र।

मजियाणो—दे० मजिआसणो।

मजियासणो—दे० मजिआसणो।

मजीठ—*(ना०)* एक वनस्पति जिसके डंठलों से लाल रंग बनाया जाता है। (यह एक रक्त शोधक औषधि भी है। चूड़ियों को लाल करने के लिये स्त्रियां इसे चूड़े पर मलती हैं।)

मजीठियो—*(वि०)* मजीठ के जैसे रंग वाला।

मजीरा—दे० मजीरा।

मजू—दे० मजूस।

मजूर—*(न०)* श्रमिक। मजदूर।

मजूरण—*(ना०)* १. मजदूरी करने वाली स्त्री। २. मजदूर की स्त्री।

मजूरणी—दे० मजूरण।

मजूरी—*(ना०)* पारिश्रमिक। मजदूरी।

मजूस—*(ना०)* पेटी। मंजूषा। संदूक।

मजेज—*(न०)* मिजाज। गर्व।

मजेजण—*(ना०)* १. वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण आदि का गर्व हो। गर्विता। २. लोकगीतों की एक नायिका। *(वि०)* गर्वीली। गर्विष्ठा। मिजाजण।

मजेदार—*(वि०)* १. आनंददायक। २. स्वादिष्ट।

मजेदारी—*(ना०)* १. मजा। आनन्द। २. सुमेल। ३. प्रसन्नता।

मजेरो—*(वि०)* अच्छी प्रकार। संतोषजनक।

मजो—*(न०)* १. मजा। हंसी। दिल्लगी। २. आनंद। ३. सुख। आराम। ४. स्वाद।

मज्जन—*(न०)* स्नान।

मज्जा—*(ना०)* १. हड्डी के भीतर भरा रहने वाला स्निग्ध गूदा। २. फल का गूदा।

मज्झ—दे० मझ ।

मझ—*(वि०)* मध्य । बीच । *(प्रत्य.)* अन्दर । में ।

मझताळी—*(ना०)* महादेव ।

मझधार—*(अव्य०)* बहते हुये पानी की बीच धारा में । *(ना०)* १. असहाय अवस्था । २. बहते हुये पानी की बीच की धारा ।

मझनियो—*(ना०)* १. एक लोक गीत । २. प्रथम मिलन का गीत ।

मझलो—*(वि०)* बीच का ।

मझार—दे० मझ ।

मटक—*(ना०)* १. नखरा । नाज । **मटको** । २. गर्व । *(क्रि०वि०)* १. धीरे (गति) । २. नखरे से (चलना) ।

मटकणो—*(क्रि०)* १. नखरा करना । २. गर्व करना ।

मटकाणो—*(क्रि०)* १. नखरा करना । २. आंखें घुमाना । ३. खाना । (तिरस्कार में) । **गिटणो** ।

मटकाळो—*(वि०)* नखरे करने वाला ।

मटकी—*(ना०)* १. मिट्टी का पानी का घड़ा । २. एक प्रकार का नृत्य ।

मटको—*(ना०)* १. मिट्टी का बड़ा घड़ा । २. नखरा । चोचला । ३. गर्व । ४. एक प्रकार का चर्म वाद्य ।

मटमैलो—*(वि०)* १. मिट्टी के जैसा मैला । २. मिट्टी के जैसे रंग का ।

मटर—*(ना०)* एक द्विदल अन्न ।

मटरको—*(ना०)* नखरा । साज-शृंगार ।

मटरगस्ती—*(ना०)* व्यर्थ इधर-उधर घूमना । **रखड़णो** । **भटकणो** ।

मटरमाळा—*(ना०)* एक कंठाभूषण ।

मटूणो—*(ना०)* मध्यमा और कनिष्ठिका के बीच की अंगुली । अनामिका ।

मठ—*(ना०)* १. साधु-संन्यासियों का आश्रम । २. करणी देवी का मंदिर । ३. मंडन । शोभा । ४. आनंद । मजा । ५. गर्व । अभिमान । *(वि०)* कंजूस । **माठो** ।

मठधारी—*(ना०)* मठाधीश । **मठवै** ।

मठड़ी—*(ना०)* मैदे का नमकीन खाजा । मठरी ।

मठवै—*(ना०)* मठपति । महंत ।

मठाधीश—दे० मठधारी ।

मठारणो—*(क्रि०)* १. बात को बढ़ा-चढ़ा कर और संवार कर कहना । २. मजा लेते हुए बातें करना । ३. धाव-धूंच आदि निकाल कर सफाई लाने के लिए बरतन, पत्थर आदि पर अंतिम हलकी घड़ाई करना । फिनिशिंग करना । सहारना । ४. घड़ना । टीपना ।

म-ठेल—*(अव्य०)* दूर मत करिये । हटाइये नहीं ।

मठोठ—*(ना०)* १. गर्व । अभिमान । २ अकड़ । ऐंठ । ३ बारसोत के ऊपर की लकड़ी । ४. द्वार के ऊपर का लंबा चपटा पत्थर ।

मठोठणो—*(क्रि०)* १. ठोंकना । पीटना । २. ऐंठना । मरोड़ना । ३. खा जाना । (तिरस्कार में) ४. गर्व करना ।

मठोठी—*(ना०)* ऐंठन । बल । मरोड़ ।

मट्ठो—*(ना०)* १. मठा । मट्ठा । मस्तु । २. छाछ । तक्र ।

मड़—*(ना०)* शव । लाश । मुर्दा । *(वि०)* १. मृत । **मरियोड़ो** । २. दुर्बल ।

मड़क—*(ना०)* गर्व । घमंड ।

मड़कल—*(वि०)* १. बहुत क्षीण । २. अति दुर्बल । दुबला-पतला । ३. अशक्त । ४. सुस्त । आलसी । ५. बेहिम्मत । ६. मृतक तुल्य । **मड़ियो** ।

मड़कलियो—दे० मड़कल ।

मड़द—दे० मरद ।
मड़दो—दे० मड़ ।
मड़हट—*(न०)* मरघट । श्मशान ।
मड़ियल—*(वि०)* दे० मड़कल ।
मड़ियो—दे० मड़कल ।
मड़ो—*(न०)* १. मुर्दा । लाश । शव । मड़ । *(वि०)* १. सुस्त । आलसी । २. दुर्बल ।
मढ—*(न०)* १. किला । दुर्ग । २. करणी देवी का मंदिर । ३. मठ । ४. छोटा घर ।
मढणो—*(क्रि०)* १. घड़ना । बनाना । २. ढकना । खोल चढ़ाना । आच्छादित करना ।
मढपति—*(न०)* १. मठ का स्वामी। २. दुर्गपति ।
मढली—*(ना०)* १. छोटा घर । २. कुटिया । ३. किसी लोक देवी या लोक-देवता का छोटा मंदिर ।
मढलो—*(न०)* १. घर । २. बड़ा झोंपड़ा । ३. लोक देवी या लोक देवता का मंदिर ।
मढी—*(ना०)* साधु की झोंपड़ी । साधु के रहने का घर । दे० मंडी ।
मढुली—*(ना०)* १. छोटा घर । २. मकान ।
मण—*(न०)* १. चालीस सेर का तोल । २. चालीस सेर (तोल में) । ३. मणि ।
मणको—*(न०)* माला आदि का मनका । **मणियो** ।
मणचो *(न०)* एक घास तथा उसके बीज । (उपवास में फलाहार के रूप में इसके आटे का हलवा बना कर खाते हैं) । **मळीचो : मणीचो** ।
मणधर—*(न०)* सांप । **मिणधर** ।
मणधारी—दे० मणिधारी ।
मणहर—दे० मनोहर ।
मणा—*(ना०)* १. कमी । खामी । २. मना । मनाई । ३. सीमा । हद । पराकाष्ठा ।
मणां—दे० मणांबंध ।
मणांबंध—*(क्रि०वि०)* बहुत मनों में । अनेक मन (तोल परिमाण में) । *(न०)* तोल के हिसाब से किसी वस्तु के संख्याबंध मनों के ढेर ।
मणारंभ—*(न०)* समुद्र । महार्णव ।
मणाल—दे० मुणाल ।
मणि—*(ना०)* १. रत्न । जवाहर । २. भगांकुर । ३. शिश्न का अग्र भाग । ४. सर्प के फन में रहने वाली एक गोल टिकिया जैसा पदार्थ । *(वि०)* श्रेष्ठ ।
मणिजळ—*(ना०)* बिजली । **खिवण** ।
मणिधर—*(न०)* सर्प । नाग ।
मणिधारी—*(न०)* १. श्रेष्ठ पुरुष । २. महात्मा । ३. राजा । ४. नाग । मणि वाला सर्प । *(वि०)* श्रेष्ठ ।
मणिपुर—*(न०)* भारतवर्ष का एक पूर्वी राज्य और उसकी राजधानी का नगर । (इम्फाल) ।
मणिबंध—*(न०)* १. हाथ की कलाई । २. कलाई का एक आभूषण ।
मणिमथ—*(वि०)* १. जिसके माथे में मणि हो, वह (सर्प) । २. जिसके माथे में मोती हो वह (हाथी) ३. शिरोमणि ।
मणिमंडित—*(वि०)* रत्नजड़ित ।
मणिमाळ—दे० मणिमाळा ।
मणिमाळा—*(ना०)* १. रत्नों की माला । २. लक्ष्मी । ३. एक छंद ।
मणियड़—*(न०)* १ रावळ मल्लिनाथ के पूर्व मारवाड़ के मालाणी परगने का नाम । २. मालाणी परगने का एक साहित्यिक नाम । ३. मारवाड़ का मालाणी प्रदेश । **मणियर** ।
मणियाडर—दे० मनिआर्डर ।

मणियार—*(ना०)* मोती, मनका, कांच आदि फुटकर सामान बेचने वाला व्यक्ति। **मिणियारो**।

मणियारण—*(ना०)* मनिहारिन।

मणियारी—*(ना०)* १. मोती, मनका, चूड़ी, कांच, कंघा आदि मनिहारे के बेचने की फुटकर सामग्री। २. मनिहारिन। **मणियारण**।

मणियारो—*(ना०)* मनिहारा। **मणियार**।

मणियो—*(ना०)* १. मनका। दाना। **मिणियो**। २. गले की उभरी हुई हड्डी। ३. चालीस सेर का तोल। **मणीको**।

मणीको—*(ना०)* चालीस सेर का तोल। एक मन का तोल। **मणियो**।

मणीचो—दे० मणचो।

मणेक—*(वि०)* एक मन के आसपास।

मणोरथ—दे० मनोरथ।

मणोरम—दे० मनोरम।

मणोहर—दे० मनोहर।

मत—*(ना०)* १. सम्मति। राय। २. अभिप्राय। मतलब। ३. बुद्धि। मति। ४. भाव। आशय। मतलब। ५. धर्म। सम्प्रदाय। ६. धर्मगत सम्प्रदाय। ७. ज्ञान। ८. धर्मशास्त्र द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त। ९. वह सम्मति जो किसी सभा आदि की सदस्यता के चुनाव के लिये खड़े होने वाले व्यक्ति के पक्ष में दी जाती है। वोट। १०. धन। माल। मत्ता। *(वि०)* मत्त। मस्त। *(अव्य०)* १. एक निषेधात्मक शब्द। नहीं। २. कदाचित्। शायद।

मतकुण—दे० मत्कुण।

मतदाता—*(वि०)* वोट देने वाला।

मत ना—*(अव्य०)* मत। नहीं।

मतबळ—*(ना०)* 'मतलब' का वर्ण व्यतिक्रम शब्द। दे० मतलब।

मतभेद—*(ना०)* आपस में एक दूसरे की राय का न मिलना।

मतलब—*(ना०)* १. तात्पर्य। अभिप्राय। २. अर्थ। ३. स्वार्थ। ४. संपर्क। वास्ता। ५. उद्देश्य। ६. शब्द या वाक्य का अर्थ।

मतलबियो—दे० मतलबी।

मतलबी—*(वि०)* स्वार्थी। खुदगर्ज।

मतवाळ—*(ना०)* १. मौज। २. मस्ती। ३. आनंद की बातें। ४. नशा। ५. हंसी-ठट्ठा। परिहास। ६. मद्य-गोष्टी। ७. मजलिस। सभा।

मतवाळो—*(वि०)* १. मस्त। उन्मत्त। मतवाला। २. नशे में चूर। ३. कामी। ४. पागल। ५. अभिमानी। ६. किले अथवा पहाड़ी पर से शत्रु दल पर लुढ़काया जाने वाला पत्थर। टोळ।

मत हीणो—*(वि०)* बुद्धिहीन। मूर्ख। मतिहीन।

मतंग—*(ना०)* १. हाथी। २. बादल। मेघ। **बाबळो**।

मतंगज—*(ना०)* हाथी।

मतंगणी—*(ना०)* हथिनी। **मतंगिणी**।

मतंगरिपु—*(ना०)* सिंह। बाघ।

मतंगी—*(ना०)* १. महावत। २. गजयूथपति।

मतंगो—*(ना०)* १. अलखिया साधु के भिक्षा माँगने के समय (शरीर पर काली ऊन की डोरियाँ आदि लपेट कर) धारण किया जाने वाला वेश। २. जाजम (आदि बिछायत) के कोनों पर रखे जाने वाले चित्रित कलापूर्ण प्रस्तरखंड।

मता—*(ना०)* १. धन। संपत्ति। **बहरा**। २. माल। धनमाल। ३. बुद्धि। समझ।

मतालबो—*(ना०)* १. राजा द्वारा जागीरदार से लिया जाने वाला एक कर।

मतावलंबी—*(वि०)* किसी मत, पंथ, सिद्धान्त, धर्म या पक्ष का अनुयायी।

मतौं—*(अव्य०)* निषेधवाचक शब्द। मत। नहीं।

मति—*(ना०)* १. समझ। बुद्धि। २. स्मृति। ३. इच्छा। *(अव्य०)* मत। नहीं।

मतिभ्रम—*(ना०)* १. विचारशक्ति की विकृति। २. बुद्धिनाश। ३. पागलपन। *(वि०)* पागल।

मतिवान—*(वि०)* बुद्धिमान। विवेकशील।

मतिहीण—*(वि०)* बुद्धिहीन। मतहीणो।

मतिमंद—*(वि०)* १. मूर्ख। नासमझ। २. मंद बुद्धि का।

मती—*(अव्य०)* एक निषेधात्मक अव्यय। मत। नहीं। *(ना०)* मति। बुद्धि।

मतीरड़ी—*(ना०)* वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला एक लंब-गोल बढ़िया मतीरा।

मतीरो—*(ना०)* बरसाती तरबूज। मतीरा। काळींगो।

मतु—*(ना०)* १. किसी के विरुद्ध लिखे गये या किसी सामूहिक निर्णय के न्याति लिखत में सहमति सूचक हस्ताक्षर का पारिभाषिक शब्द। २. किसी ऋणपत्र इकरारनामा आदि दस्तावेजात पर साक्षी या स्वीकृति के तौर पर किये जाने वाले हस्ताक्षरों का सूचक शब्द। ३. साख (साक्षी) या कबूलात के दस्तखत। जैसे—"मतु एक धीरजमल रामचंदाणी रो छै, ऊपर लिखियो सही छै, कबाड़ीमल (आरोपी या ऋणी) रै कहणै सूं घालियो छै। स्वाक्षर।

मतै—*(अव्य०)* १. स्वेच्छापूर्वक। २. अपने आप। स्वतः ही। *(ना०)* १. इरादा। विचार। संकल्प। २. तैयारी। *(वि०)* कटिबद्ध। सन्नद्ध।

मतै-मतै—*(अव्य०)* १. अपनी-अपनी इच्छानुसार। २. आप ही आप।

मतो—*(ना०)* १. इरादा। विचार। संकल्प। २. परामर्श। सलाह। विचार। ३. स्वीकृति। कबूलियत। कबूलात। ४. साक्षी के हस्ताक्षर। ५. कबूलात करने वाले के हस्ताक्षर। स्वाक्षर। मतु। ६. हस्ताक्षर। दस्तखत। सही।

मतो करणो—*(मुहा०)* १. इरादा करना। २. निश्चय करना। ३. विचार करना।

मतो घालणो—*(मुहा०)* किसी के दस्तावेज में साक्षी के रूप में हस्ताक्षर करना।

मत्कुण—*(ना०)* १ खटमल। मांकड़। २. पांच वर्ष का हाथी।

मत्त—*(वि०)* १. मस्त। २. उन्मत्त। पागल।

मत्तगयंद—*(ना०)* १. एक प्रकार का छंद। २. हाथी। मस्त हाथी।

मत्तू—दे० मतू।

मत्थ—*(वि०)* ऊपर। *(ना०)* सिर। माथो।

मत्थो—*(ना०)* माथा। मस्तक। माथो।

मत्सर—*(ना०)* १. द्वेष। ईर्षा। २. अभिमान। घमंड।

मत्सरणो—*(क्रि०)* अभिमान करना।

मत्स्य—*(ना०)* मछली।

मत्स्यगंधा *(ना०)* शांतनु राजा की पत्नी। योजनगंधा। सत्यवती।

मत्स्यपति—*(ना०)* वरुण देव।

मत्स्य पुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में से एक। हिन्दुओं का एक धर्म ग्रंथ।

मथण—दे० मथन।

मथणी—दे० मथाणी।

मथणो—*(क्रि०)* १. मंथन करना। बिलोना। बिलोड़ित करना। २. प्रयत्न करना। ३. कठिन परिश्रम करना। ४. किसी काम की सफलता के लिये बार बार प्रयत्न करना। ५. उलट-पुलट करना।

मथन—*(न०)* १. छाछ। २. दही। ३. समुद्र।

मथनी—दे० मथाणी।

मथरा—दे० मथुरा।

मथाण—*(न०)* १. मंथन। २. नाश। ३. समूह। झुंड। ४. कठिन प्रयत्न।

मथाणी—*(ना०)* १. दही बिलोने का मंथन दंड। मथानी। २. दही मथने का पात्र। बिलोनी।

मथामण—*(ना०)* १. सोच-विचार। सोचा-सोची। **बस्टघड़**। २. भग्ज-पच्ची। **माथापच्ची**। **मथोकोड़**। ३. मंथन। ४. मंथन का पारिश्रमिक।

मथामणी—दे० मथामण।

मथारी—*(ना०)* झड़बेरी की कंटीली डालियों का उतना भार जो बेई में डाल कर उठाया जा सके। **खई**।

मथारो—*(न०)* १. लेख का परिचायक शब्द या वाक्य। शीर्षक। २. शीर्ष-स्थान। सबसे ऊंचा स्थान। ३. उद्गम स्थान। **मथासरो**। ४. सीमा। हद। ५. अंत। किनारा। ६. वंश का आदि पुरुष। ७. आकाश में सिर के ठीक ऊपर का भाग। जैसे—सूरज मथारै आयो। ८. विवाद या विचार की मूल बात।

मथाळो—दे० मथारो।

मथासरो—दे० मथारो।

मथियळ—*(वि०)* जो मथा गया है। *(न०)* समुद्र।

मथियोड़ो—*(भू०कृ०)* मथा हुआ।

मथीत—*(न०)* दही।

मथरा—*(ना०)* सप्तपुरियों के अंतर्गत पुरी विशेष। श्रीकृष्ण का जन्म स्थान। एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो यमुना के किनारे स्थित है। मधुपुरी।

मथेरण—दे० मथेरण।

मथेन—दे० मथेरण।

मथेरण—*(न०)* गृहस्थ जैन यती। स्त्री-पुत्र वाला जैन साधु।

मथ्थै—दे० माथै।

मद—*(न०)* १. मद्य। शराब। २. नशा। ३. प्रमाद। ४. भ्रांति। भ्रम। ५. उन्माद। ६. गर्व। ७. हर्ष। आनंद। ८. हाथी की कनपटी तथा ऊंट की गरदन से निकलने वाला द्रव। दान। ९. वीर्य। १०. शहद। ११. जोश। १२. खर्च और जमा के अलग-अलग विभाग। पेटा। १३. किसी संस्था का पेटा विभाग। १४. कार्य विभाग। १५. कामुकता। १६. कस्तूरी। *(वि०)* काला। काळो।

मदउत्कट—*(न०)* मदमस्त हाथी।

मदक—*(न०)* अफीम का सार जो चिलम में गांजे-तमाकू के साथ डाल कर पिया जाता है।

मदकळ—*(न०)* हाथी। *(वि०)* १. उन्मत्त। मस्त। मतवाला। २. पागल।

मदकंध—दे० मदगंध।

मदगळ—दे० मदकळ।

मदगळित—*(वि०)* गर्वखंडित। मदगलित।

मदगंध—*(न०)* १. हाथी। २. मद्य।

मदगंधा—*(ना०)* शराब । दारू ।
मदछकियो—*(वि०)* १. मदमस्त । मतवाला । मतवाळो । २. शराब पिया हुआ ।
मदछाक—*(न०)* शराब से भरा हुआ प्याला ।
मदझर—*(न०)* हाथी ।
मदत—दे० मदद ।
मदततगार—दे० मददगार ।
मदद—*(ना०)* १. सहायता । सहारा । २. साझ में काम करने वालों का समूह ।
मददगार—*(वि०)* सहायक ।
मदधर—*(न०)* १. हाथी । २. ऊंट ।
मदन—*(न०)* १. कामदेव । २. कामक्रीड़ा । २. वसंत ऋतु । ४. भौंरा । ५. खंजन-पक्षी । ६. धतूरा । ७. मौलसिरी-पुष्प ।
मदनकदन—*(न०)* शिव । महादेव ।
मदनगोपाल—*(न०)* श्रीकृष्ण ।
मदनफळ—*(न०)* मैनफळ ।
मदनभेरी—*(ना०)* एक वाद्य ।
मदनरस—*(न०)* १. एक रस औषधि । २. संभोग । मैथुन ।
मदनारि—*(न०)* शिव ।
मदनांध—*(वि०)* कामांध ।
मदनी—*(ना०)* १. मदिरा । शराब । दारू । २. कस्तूरी ।
मदपअसण—*(न०)* शराब के पीने के साथ खाया जाने वाला व्यंजन ।
मदपटाधर—*(न०)* मस्त हाथी । *(वि०)* मस्त ।
मदपान—*(न०)* मदिरापान ।
मदमस्त—*(वि०)* १. मतवाला । मस्त । मदमातो । २. नशे में चूर ।
मदमोख—*(न०)* हाथी ।
मदरसो—*(न०)* मदरसा । पाठशाला ।
मदरास—दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध शहर । तमिलनाडु की राजधानी ।
मदवो—*(वि०)* १. शराबी । मस्त । मदोन्मत्त । ३. रसिक । ४. गर्व में चूर ।
मदार—*(न०)* १. आक का पौधा । आकड़ो । २. हाथी । ३. उत्तरदायित्व । ४. सूअर । दे० मुदार ।
मदारी—*(न०)* बंदर, भालू आदि का तमाशा दिखाने वाला बाजीगर ।
मदारो—*(न०)* १. सीमा पर गड़ा हुआ पत्थर । सीमा चिन्ह । लंगो । २. मीनार ।
मदाळ—*(न०)* हाथी । *(वि०)* मदमस्त । मदाळो ।
मदाळो—दे० मदाळ ।
मदावर—*(न०)* हाथी ।
मदाँ—*(न०)* हस्ति समूह ।
मदाँझर—*(न०)* हाथी । मदझर ।
मदांध—*(वि०)* १. नशे में अंधा । २. घमंडी । ३. मदोन्मत्त । ४. कामुक । मदांधो ।
मदांधो—दे० मदांध ।
मदिरा—*(ना०)* १. शराब । दारू । २. मालिनी छंद ।
मदीनो—*(न०)* अरब का एक गांव जहाँ मुहम्मद की कब्र बनी हुई है । मदीना ।
मदोल—*(न०)* जरीदार पगड़ी ।
मदोन्मत—*(वि०)* मदमस्त ।
मद्दल—*(न०)* १. बड़ा ढोल । मादळ । २. हाथी ।
मद्धि—*(अव्य०)* बीच में । मध ।
मद्य—*(ना०)* मदिरा । शराब । दारू ।
मद्यप—*(वि०)* शराबी ।
मध—*(अव्य०)* बीच में । *(वि०)* मध्य । बीच का ।

मधक—*(ना०)* महुआ नामक वृक्ष । **महुड़ो** ।

मधकीट—दे० मधुकैटभ ।

मधकीटभ—दे० मधकीट ।

मधम—दे० मध्यम ।

मधमारण—*(ना०)* मधु दैत्य को मारने वाला । श्रीकृष्ण ।

मधरी गति—*(ना०)* १. मंथर गति । २. मंद और सधी हुई गति ।

मधरी चाल—दे० मधरी गति ।

मधरो—दे० मुधरो ।

मधीणो—*(ना०)* जिस घर में दूध देने वाली गाय भैंस न हो ।

मधु—*(ना०)* १. चैत्रमास । २. वसंत ऋतु । ३. शहद । ४. मदिरा । ५. भौंरा । ६. अमृत । ७. पानी । ८. मिसरी । ९. दूध । १०. महुआ वृक्ष । ११. मकरंद । १२. मधुपुरी (मथुरा) बसाने वाला मधुराक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने संहारा था । *(वि०)* १. मीठा । २. पीला (रंग) ।

मधुकंठ—*(ना०)* कोयल ।

मधुकर—*(ना०)* १. भौंरा । २. कामी-पुरुष । ३. चंद्रमा । ४. डिंगल का एक गीत छंद ।

मधुकरी—*(ना०)* १. भिक्षा । २. रोटी, पूरी साग आदि (पके हुए अन्न) की भिक्षा । ३. भिक्षा की झोली ।

मधुकैटभ—*(ना०)* मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य ।

मधुप—*(ना०)* भ्रमर । भौंरा । भमरो ।

मधुपर्क—*(ना०)* दही, घी, चीनी, शहद और जल । इनका मिश्रण जो देवताओं को अर्पण किया जाता है तथा स्नान कराया जाता है जिसे भक्तजन प्रसाद रूप में प्राप्त करते हैं । **पंचामृत** ।

मधुपुरी—*(ना०)* मथुरा नगरी । मथुरा । मधु नामक राक्षस की बसाई हुई नगरी जो आजकल मथुरा नाम से प्रसिद्ध है ।

मधुप्रिय—*(ना०)* बलराम ।

मधुमाखी—*(ना०)* फूलों का रस चूस कर शहद रूप में इकट्ठा करने वाली मक्खी । **मधमाखी** ।

मधुमारण—*(ना०)* मधु दैत्य को मारने वाला । श्रीकृष्ण ।

मधुमास—*(ना०)* चैत्रमास ।

मधुर—*(वि०)* १. मीठा । २. सौम्य । ३. धीमा । ४. जो सुनने में अच्छा लगे ।

मधुरस—*(ना०)* १. ईख । २. शहद ।

मधुराई—*(ना०)* मधुरता ।

मधुराज—*(ना०)* भौंरा ।

मधुरान्न—*(ना०)* मिष्ठान्न । मिठाई ।

मधुराष्टक—*(ना०)* विट्ठलनाथ जी द्वारा रचित श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध स्तोत्र ।

मधुरी—*(वि०)* १. मीठी । २. धीमी । ३. श्रवण सुखद । ४. मदिरा ।

मधुवन—*(ना०)* ब्रज का एक वन ।

मधुसारथी—*(ना०)* कामदेव ।

मधुसूदन—*(ना०)* श्रीकृष्ण ।

मधू—*(ना०)* संग्राम । युद्ध ।

मध्य—*(ना०)* १. किसी वस्तु के बीच का भाग । २. कमर । कटि । ३. अंतर । ४. पश्चिम दिशा । ५. संगीत में बीच का सप्तक । ६. नृत्य की एक गति । ७. पेट । ८. विश्राम । *(वि०)* १. बीच का । २. उपयुक्त । ठीक । *(अव्य०)* बीच में ।

मध्यप्रदेश—*(ना०)* भारत का एक राज्य ।

मध्यम—*(ना०)* १. संगीत में सप्त स्वरों में से चौथा स्वर । 'म' स्वर । २. एक राग । ३. साहित्य में तीन प्रकारों के नायकों में से एक । ४. व्याकरण में

तीन प्रकार के पुरुषों में से एक। *(वि०)* १. बीच का। २. मझोला। ३. नीच। हलका।

मध्यम पुरुष—दे० मध्यम सं० ४

मध्यमा—*(ना०)* १. बीच की अंगुली। २. अधेड़ आयु की स्त्री। ३. रजस्वला स्त्री। ४. नायिका का एक प्रकार। ५. वाणी की तीसरी स्थिति।

मध्यस्थ—*(वि०)* दो पक्षों के विवाद की मध्यस्थता करने वाला। पंच।

मध्यान—*(ना०)* दिन का मध्याह्नकाल। मध्याह्न।

मध्ये—*(क्रि०वि०)* १. बीच में। २. संबंध में। ३. लिये।

मन—*(ना०)* १. संकल्प विकल्प करने वाली इंद्रिय। २. अन्तःकरण। हृदय। ३. इच्छा। अभिलाषा। ४. इरादा। विचार। *(वि०)* चपल। चंचल।

मन आवणो—*(मुहा०)* इच्छा होना।

मन उपड़णो—*(मुहा०)* १. चित्त का नहीं लगना। २. बहुत समय रहने के कारण उस जगह का मोह कम हो जाना।

मनऊँच—*(वि०)* १ दानी। २. उदार। ३. अप्रसन्न। नाराज। ४. गर्व।

मनऊंचो—*(ना०)* १. घमंड। २. नाराज। ३. उदार।

मन करणो—*(मुहा०)* इच्छा करना। इरादा करना।

मनकामना—*(ना०)* मनोकामना।

मनकूला जायदाद—*(ना०)* चल संपत्ति।

मनख—*(ना०)* मनुष्य। मिनख।

मनखंच—*(ना०)* वैमनस्य। मनमुटाव।

मनखंचो—*(वि०)* १. उदास। २. अप्रसन्न।

मनगणी—दे० मुगधणी।

मनगमणो*(क्रि०)* मन को रुचिकर लगना। पसंद आना। दे० मनगमतो।

मनगमतो—*(वि०)* १. मन को अच्छा लगने वाला। ३. इच्छित।

मनगरवो—*(ना०)* स्वाभिमानिनी।

मनगरी—*(वि०)* १. आज्ञाकारिणी। २. गुरुजनों या स्वजनों की इच्छानुसार कार्य करने वाली। ३. मन को पसंद आने वाली। ४. सबको अच्छी लगने वाली। मनसमी। ३. अपनी इच्छानुसार करने वाली।

मनगरो *(वि०)* १. आज्ञाकारी। २. गुरुजनों या स्वजनों की इच्छानुसार कार्य करने वाला। ३. मन को भाने वाला। ४. सबको अच्छा लगने वाला। ५. अपनी इच्छानुसार कार्य करने वाला। *(वि०)* १. मस्त। २. खुश। ३. स्वाभिमानी।

मनघढंत—*(वि०)* मन से घड़ी हुई। कल्पित।

मनचायो—दे० मनचाह्यो।

मनचाह्यो—*(वि०)* इच्छित। मनवांछित। मनभायो।

मनचीतो—*(वि०)* १. मनपसंद। मनचाहा। २. मन में सोचा हुआ।

मनछा—*(ना०)* १. इच्छा। मंसा। २. वासना।

मनजाणियो—*(वि०)* १. मन की मर्जी के अनुसार। इच्छानुसार। २. किसी से परामर्श बिना किया जाने वाला।

मनजात—*(ना०)* कामदेव। *(वि०)* मन से उत्पन्न।

मनजीतणो—*(मुहा०)* १. इच्छाओं पर काबू पाना। २. इन्द्रियों पर संयम रखना।

मनठरणो—*(मुहा०)* संतोष होना।

मनणो—*(क्रि०)* १. मानना। २. माना जाना। ३. मान्यता पाना।

मनदावणो—*(वि०)* १. इच्छानुसार करने वाला। २. किसी के दबाव में नहीं आने वाला। (मन + दाव + आवणो)।

मनधर—*(न०)* छाती।

मनन—*(न०)* १. चिंतन। विचार। २. अध्ययन।

मनपसंद—दे० मनभायो।

मन फाटणो—*(मुहा०)* १. रुचि या इच्छा का कम होना। २. उपेक्षा होना। ३. अच्छा नहीं लगना।

मन बाळणो—*(मुहा०)* १. दुखी होना। २. दुखी करना।

मन भर जाणो—*(मुहा०)* १. तृप्त होना। २. संतोष होना। २. खुश हो जाना।

मनभरणो—*(मुहा०)* दे० मन भरजाणो।

मनभरियो—*(वि०)* जो मन में भर गया है। *(न०)* प्रियतम। पति।

मन भरीजणो—*(मुहा०)* दे० मन भर जाणो।

मनभंग—*(वि०)* १. उदास। २. निराश। हताश। ३. कायर।

मनभायो—*(वि०)* मन को अच्छा लगने वाला। मन पसंद। मनचाह्यो।

मन भावणो—*(वि०)* मनपसंद। *(क्रि०)* मन को अच्छा लगना। रुचिकर लगना।

मन मतै—*(अव्य०)* १. इच्छानुसार। २. स्वतन्त्रता से।

मनमथ—*(न०)* कामदेव। मन्मथ।

मनमथारि—*(न०)* महादेव। शिव।

मनमद—*(वि०)* १. कंजूस। लोभी। २. उदास। दुखी। ३. मंदबुद्धि।

मन मरणो—*(मुहा०)* १. इच्छाओं का मिट जाना। २. मन में इच्छाओं का न उठना। ३. मुरझा जाना।

मनमाठो—*(वि०)* १. नाराज। अप्रसन्न। रुष्ट। २. कंजूस।

मनमनणा—*(मुहा०)* पसंद करना।

मनमानणो—*(मुहा०)* १. स्वीकार होना। २. अच्छा लगना।

मनमानियो—*(वि०)* मनवांछित। *(अव्य०)* इच्छानुसार।

मनमानी—*(अव्य०)* इच्छानुसार।

मनमारणो—*(मुहा०)* १. इच्छाओं को दबाना। २. विवश होना।

मन-माँगियो—*(वि०)* मनवांछित।

मन-माँगी—*(वि०)* मनवांछित।

मन मुटाव—*(न०)* १. वैमनस्य। २. अप्रीति। ३. विरोध। अणबण।

मनमेळग—दे० मनमेळू।

मनमेळू—*(वि०)* १. मिलन प्रिय। संग-प्रिय। २. जिनके मन मिले हुए हों। एकमना। अभिन्न मनस्क। अभिन्न हृदयी। *(न०)* १. प्रियमित्र। प्रिय साथी। २. पति। खाविंद। धणी।

मनमेलो—*(वि०)* १. धूर्त। कपटी। छली। २. बेईमान। ३. कुटिल।

मन में तेवड़णो—*(मुहा०)* १. इरादा करना। २. निश्चय करना।

मन में फूलणो—*(मुहा०)* १. हर्षित होना। २. खोटा हर्ष मनाना।

मन में बळणो—*(मुहा०)* दिल में जलन होना।

मन में रहजाणो—*(मुहा०)* १. मन की इच्छा का पार नहीं जाना। २. काम पूरा होने के पूर्व विघ्न उपस्थित होना या मरना।

मनमोट—*(वि०)* १. उदार। २. दानी। मोटमन।

मनमोद—*(न०)* डिंगळ का एक छंद। प्रसन्नता।

मनमोदक—*(न०)* मन के लड्डू। कोरी कल्पनाएं।

मनमोहन—*(न०)* श्रीकृष्ण। *(वि०)* मन को मोहित करने वाला।

मनमौजी—*(वि०)* १. स्वेच्छाचारी। २. तरंगी।

मनरख—*(वि०)* चापलूस। खुशामदी।

मनरखी—*(वि०)* मनोनुकूल चलने वाली। मन रखने वाली (पत्नी)। *(ना०)* दासी। सेविका।

मनरखो—*(वि०)* १. मनोनुकूल चलने वाला। २. सेवक। दास।

मनरळी—*(ना०)* मन की इच्छा। मनोकामना। रळी। *(वि०)* प्रसन्नचित्त। हर्षित।

मनराखणो—*(मुहा०)* प्रसन्न रखना।

मन रो मैलो—*(वि०)* १. कुटिल। २. कपटी।

मन लागणो—*(मुहा०)* तबियत लगना।

मनवंछित—*(वि०)* मन में जिसकी इच्छा की गई हो। इच्छित।

मनवा—*(न०)* १. मनुष्य। २. मन। ३. इच्छा। अभिलाषा।

मनवाणो—*(क्रि०)* मनवाना।

मनवार—*(ना०)* १. मनाने का काम। खुशामद। २. मनुहार। ३. निहोरा। अनुनय। ४. आग्रह। अनुरोध।

मनवाह—*(न०)* गरुड़।

मनवांछा—*(ना०)* १. मन की इच्छा। कामना। २. वासना।

मनसब—*(न०)* १. मुगलकालीन सेवा का एक पद। २. ओहदा। पद। ३. अधिकार।

मनसबदार—*(न०)* ओहदेदार। अधिकारी।

मनसमी—*(वि०)* १. मनोनुकूल आचरण करने वाली। २. स्वेच्छाचारिणी। ३. चतुरा। बुद्धिमान। ४. उदार और स्थिर चित्त वाली। ५. स्वाभिमानिनी। ६. पति की इच्छानुसार आचरण करने वाली। मनगरी। ७. पतिव्रता। *(ना०)* १. पतिव्रता स्त्री। सती। २. मनस्विनी।

मनसमो—*(वि०)* मनस्वी - दे० मनगरो।

मनसा—*(ना०)* १. मंशा। इच्छा। कामना। मंछा। २. इरादा। विचार। ३. एक देवी। ४. एक प्रकार की भक्ति।

मनसा देवी—*(ना०)* १. मनसापूर्ण करने वाली एक देवी। मंछादेवी। २. माया।

मनसा वाचा कर्मणा—*(अव्य०)* मन वचन और कर्म से।

मनसिज—*(न०)* कामदेव।

मनसुख—*(वि०)* मन को सुख देने वाला। *(न०)* १. मनानंद। २. एक प्रकार का कपड़ा।

मनसुध—*(अव्य०)* शुद्ध मन से। *(न०)* शुद्धमन।

मनसूख—*(वि०)* १. जो अप्रामाणिक ठहराया गया हो। निकम्मा ठहराया हुआ। २. रद्द। मंसूख। ३. परित्यक्त।

मनसूबो—*(न०)* १. मंसूबो। इरादा। विचार। २. आयोजन।

मनस्विनी—दे० मनसमी।

मनस्वी—*(वि०)* १. बुद्धिमान। २. प्रतिभाशाली। ३. दृढ़ मन वाला।

मन हटकारणो—*(मुहा०)* व्यसन तथा लुभाने वाली वस्तु पर से मन को बलात् दूर करना।

मनहर—*(वि०)* १. मनोहर। २. एक छंद।

मनहरण—*(वि०)* मनोहर। *(न०)* कामदेव।

मनहु—*(अव्य०)* मानो। जानो।

मना—*(न०)* निषेध। *(वि०)* १. वर्जित। निषिद्ध। २. अनुचित। *(अव्य०)* 'मत+ना' का छोटा रूप। मत। नहीं। *(ना०)* मन।

मनाई—*(ना०)* निषेध। मनाही। मुमानियत।

मनाणो—*(क्रि०)* १. रूठे हुए को राजी करना। २. किसी को मानने के लिये तैयार करना। मनाना। ३. देवता की मान्यता करना। स्तुति करना। ४. खुशामद करना। ५. आयोजन करना।

मनामणा—दे० मनावणा।

मनावणा—*(न०ब०व०)* १. मानने की क्रिया या भाव। २. रूठे हुये को राजी करना। मनावन। मेल होना। शत्रुता का मिटना। ४. मनुहार। ५. खुशामद।

मनावणो—*(क्रि०)* दे० मनाणो।

मनां—*(अव्य०)* मन से। चित्त से। *(सर्व०)* मुझको। म्हनै।

मनिच्छा—*(ना०)* मन की इच्छा। इच्छा। अभिलाषा।

मनी आर्डर—*(न०)* १. किसी गांव के किसी व्यक्ति को डाकघर के द्वारा रुपये भेजने की एक व्यवस्था। २. मनीआर्डर द्वारा प्राप्त रुपया।

मनीजणो—*(क्रि०)* १. माना जाना। २. मान्यता पाना। सम्मान पाना। ३. वैमनस्य मिटना। नाराजगी मिटना। विरोध मिटना।

मनीषी—*(वि०)* १. विद्वान। २. मेधावी। *(न०)* १. ऋषि। २. मुनि। ३. पंडित।

मनु—*(वि०)* १. ब्रह्मा के पुत्र और मानव जाति के आदि पुरुष। (प्रत्येक कल्प में १४ मनुओं का आविर्भाव होता है, वे ये हैं:—१. स्वायंभुव। २. स्वारोचिष। ३. उत्तम। ४. तामस। ५. रैवत। ६. चाक्षुष। ७. वैवस्वत। ८. सावर्णि। ९. दक्ष सावर्णि। १०. ब्रह्मसावर्णि। ११. धर्म सावर्णि। १२. रुद्रसावर्णि। १३. देव सावर्णि। १४. इंद्रसावर्णि, इस समय सप्तम मनु वैवस्वत का अधिकार चलता है। २. मनुस्मृति के रचयिता एक ऋषि। ३. चौदह की संख्या। ४. ब्रह्मा।

मनुज—*(न०)* १. मनु का पुत्र। २. मनुष्य। ३. मनुष्य जाति।

मनुजात—*(वि०)* मनु से उत्पन्न। दे० मनुज।

मनुष्य—*(न०)* नर। मानव। मनुंज। आदमी। मनख।

मनुस्मृति—*(ना०)* मनु द्वारा रचित एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्र ग्रंथ।

मनू—*(अव्य०)* १. मानो। गोया। जाणो। जाणो के। २. जैसे। यथा। ज्यूं।

मनेछा—दे० मनिच्छा।

मनै—दे० मना। दे० म्हनै।

मनै-गनै—*(अव्य०)* १. विचार करके। मन में विचार करके। २. विचार से। ३. विवेकपूर्ण परामर्श द्वारा।

मनो—'मन' का संधि रूप। दे० मानो।

मनोकामना—*(ना०)* मन की इच्छा। अभिलाषा।

मनोगत—*(न०)* १. विचार। २. इच्छा। ३. वासना। ४. मन की बात।

(अव्य०) मन के अनुकूल। *(भू०कृ०)* १. मन में आया हुआ। २. मन में उठा हुआ।

मनोज—*(ना०)* कामदेव। मनमथ।

मनोज्ञ—*(वि०)* सुंदर।

मनोती—*(ना०)* किसी काम की सिद्धि के लिये किसी देवता की भेंट पूजा का संकल्प करना। मनौती।

मनोदशा—*(ना०)* मन की दशा।

मनोनीत—*(वि०)* १. जो मन के अनुकूल हो। २. जो चुना गया हो।

मनोबळ—*(न०)* मन की शक्ति।

मनोभव—*(न०)* कामदेव।

मनोभाव—*(न०)* मन में उत्पन्न विचार या भाव।

मनोमन—*(अव्य०)* मन ही मन में। एक दूसरे के मन में।

मनोयोग—*(न०)* मानसिक एकाग्रता। मानसिक ध्यान।

मनोरथ—*(न०)* १. अभिलाषा। इच्छा। २. संकल्प। ३. वल्लभ सम्प्रदाय में श्री बालकृष्ण लाल का विशेष उत्सव। वल्लभ संप्रदाय का उत्सव।

मनोरथ पूगणो—*(मुहा०)* मनोरथ का पूर्ण होना।

मनोरथ फळणो—*(महा०)* इच्छापूर्ण होना।

मनोरंजक—*(वि०)* मन को प्रसन्न करने वाला।

मनोरंजन—*(न०)* १. दिल बहलाव। २. मन को प्रसन्न करने वाला कार्य।

मनोरम—*(वि०)* सुंदर।

मनोरो—*(न०)* १. मनार। २. मीनार। ३. मनोरथ।

मनोवांछा—दे० मनवांछा।

मनोवृत्ति—*(ना०)* मन की वृत्ति। मन की स्थिति।

मनोहर—*(वि०)* १. मन को हरने वाला। २. सुंदर। मनोज्ञ। *(न०)* १ छप्पय छंद का एक भेद। २. सुवर्ण। सोनो। ३. श्रीकृष्ण।

मन्मथ—*(न०)* कामदेव।

मन्वंतर—*(न०)* १. ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवां भाग। २. एक मनु का राज्य काल। एक मनु का समय।

मन्है—दे० मने।

मपधुनी—*(ना०)* ढोलक की ध्वनि या बोल।

मफर—*(ना०)* १. भंग डालकर बनाई हुई एक मिठाई। २. भंग की मिठाई। माजम। माजून।

मम—*(सर्व०)* मेरा। *(अव्य०)* मत। नहीं।

ममत—*(ना०)* १. दुराग्रह। अनुचित हठ। २. चढ़ाचढ़ी। बढ़ाबढ़ी। ३. अपनापन। ममता। ४. स्नेह। प्रेम। ५. लोभ।

ममता—*(ना०)* १. अपना समझने का भाव। २. स्नेह। ३. मोह। ४. कृपा।

ममताळू—*(वि०)* १. स्नेही। २. जिद्दी। हठी।

ममती—*(वि०)* हठी। दुराग्रही। जिद्दी।

ममत्व—*(न०)* १. मेरापन। अहंपद। ममता। २. हठ। दुराग्रह। ३. हेत। ४. गर्व। ५. लोभ।

ममळावणो—*(क्रि०)* मुंह में डाल कर इधर-उधर फिराना। चुगळणो।

ममाई—*(ना०)* १. एक औषधि। ममियाई। २. मुंबई शहर का एक नाम।

ममारख—*(न०)* मुबारक। बधाई। अभिनंदन। दे० मुबारक।

ममारखी—दे० मुबारकबादी।

ममो-चच्चो—दे० मम्मो-चच्चो ।

ममीरो—*(न०)* हलदी की जाति के एक पौधे की जड़ जो नेत्र रोगों की औषधि है । ममीरा । आंख की दवा ।

ममो—दे० मम्मो ।

ममोळियो—दे० ममोलो ।

ममोलो—*(न०)* वीर बहूटी । इन्द्रवधु । **ममोळियो । ममोलो ।**

मम्मादेवी—*(ना०)* मुंबई की मुंबादेवी । मंबादेवी ।

मम्माई—*(ना०)* महाराष्ट्र प्रदेश का महा नगर । मुंबई ।

मम्मो—*(न०)* 'म' अक्षर । मकार ।

मम्मो चच्चो—*(न०)* एक अश्लील गाली का छिपा या शिष्ट रूप ।
'म' और 'च' के आदि अक्षरों के दो शब्दों की एक अश्लील गाली ।

मय—*(अव्य०)* एक प्रत्यय जो तद्रूप, आधार तथा प्रचुरता का बोधक होता है । जैसे—करूणामय, मंगलमय, प्राणमय इत्यादि । *(न०)* १. मद्य । २. शराब । ३. एक प्रसिद्ध दैत्य शिल्पी । मयदानव । ४. घोड़ा । ५. खच्चर । ६. ऊंट ।

मयगल—*(न०)* हाथी ।

मयण—*(न०)* १. मदन । कामदेव । २. हाथी ।

मयन—*(न०)* मदन । कामदेव ।

मयमंत—*(वि०)* १. नशे में चूर । मयमत्त । २. मदोन्मत्त । मदमस्त । ३. मतवाला । मस्त । *(न०)* हाथी ।

मयंक—*(न०)* १. चन्द्रमा । २. कपूर ।

मयंकर—*(न०)* चन्द्रमा । मयंक ।

मयंद—*(न०)* मृगेन्द्र । सिंह । २. राम की सेना का एक बानर । ३. हाथी । ४. ऊंट । ५. डिंगल छंद का एक भेद ।

मया—*(ना०)* १. कृपा । दया । २. प्रसन्नता । ३. प्रेम । ४. माया । ५. इजाजत ।

मयाद—*(ना०)* १. मिआद । २. अवधि । **म्याद ।**

मयादी—*(वि०)* जिसमें मयाद का उल्लेख हो ।

मयादी बुखार—*(न०)* एक प्रकार का ज्वर । **निकाळो ।**

मयावंत—*(वि०)* १. मेहरबान । कृपालु । २. कृपापात्र ।

मयूख*(ना०)* १. किरण । रश्मि । २. प्रकाश । ३. ज्वाला ।

मयूर—*(न०)* १. मोर । २. एक डिंगल छंद ।

मरक—*(न०)* १. द्वेष । २. उमंग ।

मरकट—*(न०)* १. बंदर । मर्कट । २. एक प्रकार का दोहा छंद ।

मरकत—*(न०)* १. पन्ना नामक रत्न । मरकत मणि । २. नीलमणि ।

मरकतमणि—दे० मरकत ।

मरगड़—*(न०)* धड़ । कबंध ।

मरघट—*(न०)* श्मशान । **मसाण ।**

मरज—दे० मर्ज ।

मरजाणो—*(क्रि०)* मर जाना । मरना । *(न०)* एक गाली ।

मरजाद—*(ना०)* १ मर्यादा । सीमा । हद । २. मान । प्रतिष्ठा । ३. गौरव । ४. करार । प्रतिज्ञा । ५. नियम । ६. लाज । शरम । हया । ८. सुन्दरता । शोभा । ९. महिमा । १०. मुलाहिजा । ११. सभ्यता । १२. पुष्टि मार्ग सम्प्रदाय की अत्यन्त शुद्धि से रहने की एक आचार-प्रणाली ।

मरजादा—दे० मरजाद ।

मरजादी—*(न०)* पुष्टि मार्ग का अनुयायी। *(वि०)* मर्यादा का पालन करने वाला।

मरजी—*(ना०)* १. इच्छा। खुशी। २. कृपा। मेहरबानी। ३. प्रसन्नता। खुशी। ४. स्वीकृति हूंकारो।

मरजीदान—*(वि०)* १. कृपापात्र। २. विश्वासपात्र। ३. मानित।

मरजीवो—*(न०)* समुद्र में गोता लगा कर मोती निकालने वाला। गोताखोर।

मरट—*(ना०)* १. ऐंठन। ऐंठ। २. गर्व। अभिमान। गरब। ३. स्वाभिमान। ४. बल। बट। वट।

मरड़—*(ना०)* गर्व। घमंड।

मरड़को—*(ना०)* १. ऐंठन। २. गर्व। घमंड।

मरड़ो—*(न०)* पेट का एक रोग जिसमें दर्द्रियें लगने के साथ खून व आँव गिरता है। पेचिश।

मरण—*(न०)* मृत्यु। मौत। **मरणो**।

मरण-तैवार—*(न०)* मरण त्यौहार। मृत्योत्सव। वीरता से लड़ते हुए मरने का उत्साह।

मरण मनोरथ—*(न०)* १. वीरतापूर्वक लड़ते हुये मरने की अभिलाषा। २. वीरगति प्राप्त करने की अभिलाषा। ३. मरणोत्सव।

मरणासन—*(वि०)* शरीर छोड़ने की तैयारी में हो ऐसा।

मरणांत—*(न०)* मृत्यु पर्यन्त। २. मरने के बाद।

मरणियो—*दे० मरणीक*।

मरणी—*(ना०)* मृत्यु। **मरण**।

मरणीक—*(वि०)* १. मरने को तत्पर। २. युद्ध में लड़कर मरने का उत्साही। वीरगति को पाने का उत्सुक। ३. *मरणशील। मरणधर्मा।*

मरणो—*(न०)* मृत्यु। *(क्रि०)* १. मरना। मृत्यु होना। २. दुखी होना। त्रसित होना। ३. न्योछावर होना। ४. नाश होना। ५. उत्साह मंद होना। ६. भूख से दुखी होना। जैसे भूखां मरणो। ७. पराजित होना। ८. मुर्झाना। ९. आसक्त होना। १०. प्राप्त न होना। ११. कुम्हलाना।

मरणोछब—*(न०)* मृत्योत्सव। वीर पुरुष का मृत्यु उत्सव। **वडप्रब**।

मरणो-परणो—*(न०)* १. मृत्यु अथवा विवाह। २. मृत्यु और विवाह।

मरतक—*(न०)* १. मृतक। मुर्दा। शव। **मुड़दो**। २. गमी। मृत्युशोक। **सोग**। ३. मृत्यु।

मरतबा—*(ना०)* बार। दफा। मर्तबा। **वेळा**।

मरतबाण—*(न०)* चीनी मिट्टी का अचार आदि रखने का बरतन। मृतिकाभांड। अमृतबान।

मरतबो—*(न०)* १. प्रतिष्ठा। इज्जत। मर्तबा। २. पद। **ओहदो**। ३. अधिकार। ४. **पदवी**। उपाधि। खिताब। **मुरतवो**।

मरतंग—*(न०)* १. मरण। गमी। २. मुर्दा। शव। लाश। **मुड़दो**।

मरद—*(न०)* १. पुरुष। मनुष्य। मर्द। **मिनख**। २. पति। खाविंद। **धणी**। ३. वीर पुरुष। ४. मजदूर। **मजूर**। *(वि०)* १. मर्द। वीर। २. साहसी। हिम्मती। हीमती।

मरदण—*दे० मर्दन*।

मरदण करणो—दे० मरदणी।

मरदणियो—*(वि०)* १. मर्दन करने वाला। २. नाश करने वाला।

मरदणो *(क्रि०)* १. मर्दन करना। २ मसलना। ३. नाश करना। ४. मालिश करना। ५. पीसना। ६. रगड़ना।

मरदन—दे० मर्दन।

मरदम—दे० मर्दुम।

मरद महेळी—*(ना०)* पुरुष और स्त्री। स्त्री पुरुष।

मरदमी—*(ना०)* १ मर्दुमी। मर्दानगी। २. पुरुषत्व। ३. वीरता। पौरुष। ४. साहस। ५. इन्सानियत।

मरदाई—दे० मरदानगी।

मरदाणी—*(ना०)* वीरांगना। मर्दानी।

मरदानगी—दे० मरदमी।

मरदानी—*(वि०)* मर्दों के सम्बन्ध की। *(ना०)* १. वीरांगना। २. मर्दामी।

मरदानी डोढी—*(ना०)* महलों में पुरुषों का प्रवेश द्वार।

मरदानो—दे० मरदानी।

मरदांमरद—*(वि०)* १. श्रेष्ठ वीर। २. नरों में श्रेष्ठ।

मरदा-मरदो—*(क्रि० वि०)* जबरदस्ती। बलात्। बलपूर्वक।

मरफाण—*(न०)* एक वाद्य।

मरम—*(न०)* १. रहस्य। मर्म। २. आशय भाव। ३. शरीर का वह कोमल भाग जहाँ चोट लगने से अत्यन्त वेदना या मृत्यु हो जाती है। मर्मस्थान। ४. शरीर का संधि स्थान। ५. कपट। *(वि०)* दुखदाई। कष्टप्रद।

मरमचर—*(न०)* हृदय।

मरमट—*(न०)* १. गर्व। घमंड। २. ऐंठ। मरोड़। ३. बल।

मर-मिटणो—*(मुहा०)* १. जान होम देना। कुर्बान हो जाना। २. बर्बाद हो जाना। ३. मर मिटना।

मरम्मत—*(ना०)* किसी वस्तु के टूटे-फूटे भाग को सुधारने का काम। सुधार। जीर्णोद्धार। मरामत।

मरमपीड़ा—*(ना०)* मार्मिक चोट। २. मानसिक क्लेश।

मरमस्थळ—दे० मर्मस्थल।

मरवण—दे० मारवण।

मरवो—*(न०)* १. वन तुलसी की जाति का एक पौधा। मरुआ। २. एक लोकगीत।

मरसियो—*(न०)* १. मृत्युगीत। २. शोक काव्य। ३. मृतक की प्रशंसा का का काव्य।

मरहट—*(न०)* मरघट। श्मशान। मसाण।

मरहटो—*(न०)* महाराष्ट्र का निवासी। मराठा। मराठो। मराठी।

मरहठ—*(न०)* १. महाराष्ट्र। २. मरघट।

म-राख—*(अव्य०)* मत रखिये। मत रखो।

म-राच—*(अव्य०)* मत बनाओ।

मराट—*(वि०)* १. जबरदस्त। २. वीर। ३. मानने वाला।

मराठवाड़ो—*(न०)* महाराष्ट्र प्रदेश।

मराठी—*(ना०)* १. महाराष्ट्र की भाषा। महाराष्ट्री। *(न०)* महाराष्ट्र का रहने वाला।

मराठो—*(न०)* महाराष्ट्र प्रदेश का रहने वाला। मरहठा। मराठी।

मराणो—*(क्रि०)* मरवाना।

मरातब—*(व०)* १. पद। ओहदा। २. सत्तायुक्त पद।

मरामत—दे० मरम्मत।

मराळ—*(न०)* १. हंस । मराल । २. बादल । ३. हाथी । ४. घोड़ा ।

मराळि-गत—*(ना०)* १. हंस के समान गति । २. हंसिनी की चाल ।

मराळी—*(ना०)* १. हंसी । हंसिनी । २. हथिनी । ३. घोड़ी ।

मरियोड़ो—*(वि०)* १. मृत । मरा हुआ । २. पराजित । ३. कबड्डी आदि के खेल में जो हार गया है, Out हो गया हो ।

मरी—*(ना०)* १. महामारी । बीमारी । २. मिर्च ।

मरीच—*(न०)* काली मिर्च ।

मरीचि—*(ना०)* १. किरण । रश्मि । *(न०)* १. एक वैदिक ऋषि । २. सूर्य ।

मरीचिका—*(ना०)* १. भ्रामक । २. झूंठी आशा । मृगतृष्णा । ३. किरण ।

मरीज़—*(न०)* बीमार । रोगी मनुष्य ।

मरी मसाला—*(न०ब०व०)* साग-तरकारी आदि में डाले जाने वाले मिर्च-मसाले । नमक-मिर्च, जीरा, धनिया । इत्यादि ।

मरु—*(न०)* १, मरुस्थल । रेगिस्तान । २. मारवाड़ देश ।

मरुआणी—दे० मारवणी । दे० मरुवाणी ।

मरुकांतार—*(न०)* मरुप्रदेश । रेगिस्तान ।

मरुत—*(न०)* १. वायु । २. इन्द्र । ३. देवता । ४. पर्वत ।

मरुतचक्र—*(न०)* वातचक्र । भतूळियो । भूतैळो ।

मरुथळ—*(न०)* मरुस्थल । मारवाड़ ।

मरुदेवी—*(न०)* भगवान ऋषभदेव की माता ।

मरुदेश—*(न०)* मारवाड़ ।

मरुदीप—*(न०)* मरुस्थल में छोटी उपजाऊ भूमि । नखलिस्तान । शाद्वलस्थल । मरुद्वीप । ओएसिस ।

मरुद्विप—*(न०)* ऊंट । उष्ट्र ।

मरुधन्व—*(न०)* मारवाड़ ।

मरुधर—*(न०)* मरुदेश । मारवाड़ ।

मरुधरा—दे० मरुधर ।

मरुनायक—*(न०)* १. मरुधरापति । २. मरुदेश का स्वामी ।

मरुनायकजी—*(न०)* राजस्थान के प्रदेश (जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर) में श्रीकृष्ण का नाम । श्रीकृष्ण ।

मरुप्रिय—*(न०)* ऊंट ।

मरुफळ—*(न०)* पीलू । जाळिया । कैर । पका कैर । डालू । बरसाती तरबूज । मतीरो । काळींगो ।

मरुभाखा—दे० मरुभाषा ।

मरुभाय—*(न०)* ऊंट ।

मरुभाषा—*(ना०)* मारवाड़ी भाषा । राजस्थानी भाषा ।

मरुभूमि—दे० मरुधर ।

मरुभोम—दे० मरुभूमि ।

मरुमण्डल—*(न०)* मारवाड़ देश । मरुश्री ।

मरुराय—दे० मरुराव ।

मरुराव—*(न०)* मरुधरापति । मारवाड़ का राजा ।

मरुवई—(न०) मरुधरापति ।

मरुवाणी—*(ना०)* मरुदेश की भाषा । मारवाड़ी भाषा । राजस्थानी भाषा ।

मरुवाह—(न०) ऊंट । मरुद्वाह । जाखोड़ो ।

मरुस्थल—(न०) १. रेगिस्तान । २. मारवाड़ देश ।

मरोड़—(न०) १. गर्व । घमंड । २. ऐंठ । ३. ऐंठन । बल । ४ आन-बान । ५. ठसक । अदा । ६. जटिलता । विरोध । ७. अक्षर की बनावट या सुन्दरता ।

मरोड़णो—*(क्रि०)* १. मोड़ना। मरोड़ना। बल डालना। २. मसलना। ३. मार डालना। ४. तोड़ना। ५. नष्ट करना। ६. दुख देना। ७. घुमाना।

मरोड़ो—*(न०)* १. पेशिच की बीमारी। २. पेट का दर्द। ३. मरोड़ने की क्रिया। ४. ऐंठन। बल। बट। **बट** *(वि०)* मरा हुआ। **मरियोड़ो मुधोड़ो**।

मर्ज—*(न०)* रोग। बीमारी। २. बुरी आदत। लत। ३. दुख। संकट। ४. व्यसन।

मर्जियात—*(अव्य०)* १. इच्छा से। २. स्वैच्छिक।

मर्दन—*(न०)* १. लेपन। २. मसलने की क्रिया या भाव। ३. विनाश। ४. दबाव। ५. मालिश।

मर्दुम—*(न०)* मनुष्य।

मर्दुमशुमारी—*(ना०)* मनुष्य-गणना। जन-गणना।

मर्म—*(न०)* १. तात्पर्य। २. रहस्य। ३. शरीर का कोमल भाग।

मर्मस्थल—*(न०)* शरीर का वह कोमल स्थान, जहाँ चोट लगने से भारी दर्द होता है।

मर्मस्थान—दे० मर्मस्थल।

मर्याद—दे० मरजाद।

मर्यादा—दे० मरजादी।

मर्यादी—दे० मरजादी।

मल—*(न०)* १. मल्ल। पहलवान। २. योद्धा। ३. वीर।

मळ—*(न०)* १. मल। मैला। विष्ठा। २. मैल। ३. गंदगी। ४. शरीर से निकलने वाला विकार या मैल। ५. पाप। दोष। ६. समुद्र फैन। ७. मनोविकार।

मळक—*(ना०)* १. वस्तु के मूल्य में उतार। वस्तु तथा वस्तुओं के भाव में मन्दी का रुख। सौंघाई। सस्तापन। मन्दी। २. हँसी। मुस्कराहट।

मळकणो—दे० मुळकणो।

मलखंभ *(न०)* १. कसरत के कामों में आने वाला चिकना थंभा। २. इस पर की जाने वाली कसरत।

मलगोबै—*(वि०)* १. अस्पष्ट (बात)। २. प्रसंग से मिलती-जुलती (बात)। ३. इधर-उधर की बात के साथ। संकेत रूप से की जाने वाली (बात)।

मलजुध—दे० मल्ल युद्ध।

मळणो—दे० मिलणो। दे० मसलणो।

मळद्वार—*(न०ा)* गुदा। गाँड। मलद्वार।

मळधारी—*(न०)* १ साधु। २. मैलावस्त्र-धारी जैन साधु। ३. त्यागी साधुओं की एक उपाधि। *(वि०)* मलको धारण करने वाला।

मलप—दे० मलफ।

मलपणो—*(क्रि०)* १. कूदते हुए भागना। २. छलांग मारना। ३. मस्त चाल से चलना। ४. दौड़ना। भागना।

मलफ—*(ना०)* १. छलांग। कुदान। २. मस्ती।

मलफणो—दे० मलपणो।

मलबार—*(न०)* केरल का एक प्रदेश। मलयालम।

मलबारी—*(वि०)* मलबार का। मलबार से सम्बन्धित *(न०)* मलबारी पान।

मळबो—*(न०)* १. टूटे या गिरे हुये अथवा बनते हुये मकान की ईंटें-पत्थर आदि या उनका ढेर। २. कूड़ा-करकट। ३. गाँव की सफाई के लिये लिया जाने वाला एक कर।

मलम—*(न०)* मरहम। मल्लम।

मलमल—*(ना०)* एक प्रकार का बारीक सूती कपड़ा ।

मळमाखळ—*(न०ब०व०)* खाने पीने के गंदे बासन-बरतनों में पड़े हुये कीड़े ।

मळ मास—*(न०)* अधिक मास ।

मळ मूत—*(न०)* १. मलमूत्र । २. गंदगी ।

मलय—*(न०)* चंदन । चनण । २. केरल ।

मलयगिरि—*(न०)* चंदन के वृक्षों वाला (दक्षिण का एक) पर्वत ।

मलयज—*(न०)* १. चंदन । २. मलयानिल *(वि०)* १. मलय पर्वत में उत्पन्न होने वाला । २. शीतल ठंडा । ठाडो ।

मलयागरु—*(न०)* १. श्रेष्ठ जाति का चंदन । मलयगिरि का चंदन । २. मलयागिरि में होने वाला अगर का वृक्ष ।

मलयाचल *(न०)* मलयगिरि । मलयाद्रि ।

मलयानिल—*(न०)* १. मलय पर्वत से आने वाली हवा । २. सुगन्धित पवन ।

मलयालम—*(ना०)* १. केरल प्रान्त की भाषा । २. केरल का मालाबार इलाका ।

मलंग—*(न०)* १. एक प्रकार का मुसलमान फकीर । २. मस्त फकीर । ३. छलांग । कुदान । *(वि०)* १. छलांग लगाने वाला । २. मस्त ।

मळाई—*(ना०)* १. दूध गरम करने पर उसके ऊपर जमने वाली तह । बालाई । पर । तर । मलाई । साढ़ी । २. तेल-किट्ट । कीटो । ३. सार वस्तु । *(वि०)* १. कुटिल । मलिन । २. कृपण । कंजूस । ३. जिद्दी । हठी ।

मलाण—*(वि०)* १. म्लान । मैला । गंदा । २. मुरझाया हुआ । ३. उदास ।

मलागरी—दे० मलयागिरि । *(न०)* एक प्रकार का रंग ।

मलाबार—*(न०)* दक्षिण में पश्चिमी किनारे पर अवस्थित केरल का एक प्रदेश ।

मलामली—*(क्रि० वि०)* १. जबरदस्ती । बलपूर्वक । बलात । २. किसी भी प्रकार । येनकेन-प्रकारेण । मलोमली ।

मलार—*(ना०)* एक राग । मल्लर । मल्हार राग ।

मलारणो—*(क्रि०)* १. गाना । गाणो । २. गाना शुरू करना । उगेरणो । ३. मल्हार राग गाना ।

मलाल—*(न०)* १. उद्वेग । २. दुःख । ३. उदासी ।

मलावरोध—*(न०)* कोष्टबद्धता । कब्जी ।

मलिक—*(न०)* १. बादशाह । २. नबाब । ३. एक उपाधि (मुसलमान) ४. मुसलमान सरदार । मलिक । ५. बंगाल में हिन्दुओं की एक अल्ल ।

मलिका—*(ना०)* बेगम । रानी (मुसलमान) ।

मलिन—*(वि०)* १. मैला । गंदला । २. बदरंग । ३. म्लान । ४. दूषित ।

मलिनता—*(ना०)* १. गंदगी । २. मैलापन । ३. बदरंगी ।

मळियागिरी—*(न०)* १. एक प्रकार का रंग । मलागरी । २. चंदन के वृक्षों वाला दक्षिण का एक पर्वत । मलयगिरि ।

मळियाचर—*(न०)* चंदन का वृक्ष । मलयतरु ।

मलियो—*(न०)* १. आबू की पर्वती गोडवाड़ का एक लोकगीत । 'आबू रा पहाड़ां में मलियम मोर बोलै रै' २. एक राजस्थानी रागिनी विशेष ।

मळीच—*(वि०)* १. मैला । गंदा । २. मद्धाकाशुक ।

मळीचो—दे० मणचो ।

मलीण—*(वि०)* १. मलिन । गंदा । मैला । २. उदास । म्लान । दूषित । ४. दूषित स्वभाव का । मलिन मन वाला ।

मलीदो—*(न०)* १. मिष्टान्न । २ चूरमो । ३. सत्ववाला भोजन । ४. हलवा । सीरो । ४. एक बढ़िया मुलायम ऊनी वस्त्र । ५. मलीदा ।

मलीन—दे० मलीण ।

मलीनाथ—*(न०)* मारवाड़ के मालाणी प्रान्त के अधिपति राव सलखा के पुत्र रावळ मल्लीनाथ (इनकी रानी रूपादे की प्रेरणा से ये भी बड़े भक्त और सिद्ध हो गये थे । इनका समाधि मंदिर तिलवाड़ा ग्राम के सामने धान गांव के पास लूनी नदी के किनारे बना हुआ है । जहां चैत्र मास में इनके नाम पर पंद्रह दिन का बड़ा भारी व्यापारिक मेला लगता है) ।

मलीर—*(न०)* एक वस्त्र ।

मलूक—*(न०)* १. मुख की शोभा । २. रूप । ३. घोड़ा । ४. बंदर । ५. पुष्प । ६. एक सन्त का नाम । ७. साथी । मित्र । *(वि०)* १. सुन्दर । २. कोमल । ३. उत्तम ।

मलूको—*(न०)* १. राक्षस । २. नृसिंह चतुर्दशी के दिन राक्षसी मुखोटे लगाये हुए और काले कपड़े पहने हुए (शोर मचाते हुए) प्रदर्शित किये जाने वाले हिरण्यकशिपु के दूत । ३. यवन । ४. मलिक ।

मळेच्छ—*(न०)* १. म्लेच्छ । २. मुसलमान । ३. अनार्य । *(वि०)* १. कंजूस । २. मैला । गंदा । ३. [illegible]

मळेच्छणी—*(न०)* मुसलमान स्त्री । *(वि०)* मुसलमान की ।

मळेच्छमुख—*(न०)* ताँबा । ताँबो ।

मळेच्छवाड़ो—*(न०)* १. मलेच्छों का मुहल्ला । म्लेच्छ बस्ती । गंदीबाड़ी । ३. गंदगी । मलिनता ।

मलेणी—*(वि०)* मलफने वाली (घोड़ी) ।

मलेरिया—*(न०)* मौसमी ज्वर । सीयो ताप ।

मलैअद्र—*(न०)* मलयअद्रि । मलयगिरि । मलयाद्रि ।

मलोमली—दे० मलामली ।

मल्ल—*(न०)* १. बाहु योद्धा । पहलवान । २. द्वन्द्व युद्ध करने वाला योद्धा । ३. वीर । बहादुर । ४. एक प्राचीन जाति । ५. एक प्राचीन जनपद । *(वि०)* बलवान ।

मल्लम—दे० मलम ।

मल्लयुद्ध—*(न०)* १. पहलवानों की लड़ाई । कुश्ती । २. द्वन्द्व युद्ध ।

मल्लविद्या—*(न०)* द्वन्द्व युद्ध करने की कला ।

मल्लाह—*(न०)* केवट । खेवटियो ।

मल्लो—*(न०)* १. अमुक वजन का एक पत्थर जिसे व्यायाम करने वाले एक हाथ से उठाने का अभ्यास करते हैं । २. पत्थर का एक भारी तोल । *(वि०)* मस्त ।

मल्हपणो—*(क्रि०)* १. लपकना । झपटना । २. कूदना । फाँदना । ३. मस्ती से चलना ।

मल्हार—दे० मलार ।

मल्हारणो—दे० मलारणो ।

मल्हावणो—*(क्रि०)* पेंग चढ़ाना (झूले का)। हींचो चढ़ाणो। हींचणो।

मवड़—*(ना०)* १. सेहरा। मौड़। २. मौर। मुकुल। मंजरी। ३. माता।

मवड़ो—*(ना०)* द्वार। दरवाजा। मोड़ो।

मवरखा—*(ना०)* तारीख।

मवाद—*(ना०)* १. व्रण में से निकलने वाला पीव। रसी। २. गंदगी। ३. सामग्री।

मवेशी—*(ना०)* चौपाया। ढोर। पशु।

मशक—*(ना०)* १. मच्छर। डांस। २. पीठ *पर लादकर भिश्ती के पानी ढोने का* चमड़े का एक पात्र। ३. एक फूंक-वाद्य।

मशक्कत—*(ना०)* १. मजदूरी। मेहनत। कसरत।

मशगूल—*(वि०)* १. तल्लीन। २. कार्य में लगा हुआ।

मशरु—दे० मिसरु।

मशवरा—*(ना०)* सलाह। परामर्श। मसविरा।

मशहूर—*(वि०)* प्रसिद्ध। विख्यात।

मशाल—*(ना०)* डंडे के एक सिरे में चिथड़े लपेट कर बनाई हुई एक मोटी चिराग जिसका दूसरा सिरा हाथ में थमा रहता है।

मशीन—*(ना०)* यन्त्र। कल।

मस—*(ना०)* १. मस्सा। २. स्याही। रोशनाई। २. मूंछ निकलने से पहिले की रोमावली। ३. मस्ती। ४. यौवन से पूर्ण अवस्था। ६. अभिमान। ७. मच्छर। मच्छर।

मसक—दे० मशक।

मसकरी—*(ना०)* मसखरी। हँसी। ठट्ठा।

मसकरो—*(वि०)* १. मसखरा। ठट्ठा-बाज। *(ना०)* विदूषक। भाँड़।

मसकल—*(ना०)* शाण। सान। सिकली। फेरणी।

मसकियो—*(ना०)* मशक से पानी ढोने वाला। मशकी। सक्का। भिश्ती।

मसखरी—दे० मसकरी।

मसखरो—दे० मसकरो।

मसजिद—*(ना०)* नमाज पढ़ने का स्थान। मसीत। महजत।

मसतग—दे० मस्तक।

मसतंग—दे० मस्तक।

मसनद—*(ना०)* बड़ा तकिया।

मसल—*(ना०)* १. कहावत। २. उदाहरण।

मसळणो—*(क्रि०)* १. मसलना। मर्दन करना। मलना। २. गूंदना। ३. ३. नाश करना।

मसलत—*(ना०)* १. सलाह। परामर्श। मशविरा। २. बात। विचार। कथन। ३. बातचीत। गोष्ठी। चर्चा। ४. रहस्य। भेद। ५. प्रसंग-चर्चा।

मसळामसळी—*(अव्य०)* १. विचारणीय विषय को इधर-उधर की बातों से या पिष्टपेषण द्वारा रोक कर सुलझाने नहीं देने की क्रिया या भाव। २. बार-बार मसलने की क्रिया। ३. अनेकों द्वारा मसलने की क्रिया।

मसलो—*(ना०)* १. कहावत। २. उदाहरण। ३. समस्या। उलझन। ४. व्यंग्य। ५. सलाह।

मसवाड़—*(ना०)* १. (मकान, दुकान आदि का) किराया। भाड़ा। भाड़ो। २. मासिक वृत्ति। ३. मकान। ४. मास। महीना।

मसवास—*(ना०)* किसी एक स्थान पर महीनेभर रहने का महीने से अधिक नहीं रहने की क्रिया या भाव।

मसंड—दे० [illegible]।

म-संताय—*(अव्य०)* १. मत छिपिये। २. मत सताओ।

मसंद—*(न०)* १. एक बड़ा तकिया। मसनद। २. गद्दा-तकिया। ३. राजा। ४. सामंत। सरदार। ५. सीमा।

मसाण—*(न०)* श्मशान। मसान। मरघट। **जीराव**।

मसाण भोम—*(ना०)* श्मशान भूमि। मरघट।

मसाणियो—*(वि०)* श्मशान सम्बन्धी। *(न०)* श्मशान में रहने वाला वैरागी साधु।

मसाणियो वैराग—*(न०)* क्षणिक जीवन का श्मशान तक सीमित रहने वाला वैराग्य। सभी प्रकार के वैभव छोड़कर देह त्याग करने पर उसके शव को जलाने के लिए श्मशान तक जाने वालों में उत्पन्न होने वाली क्षणिक वैराग्य-वृत्ति, जो घर आने पर विलीन हो जाती है।

मसाल—दे० मशाल।

मसालची—*(न०)* मशाल को हाथ में लेकर चलने वाला व्यक्ति। मशालची।

मसालियो—*(न०)* हल्दी-मिर्च आदि मसाले पीसने वाला व्यक्ति। २. मशालची। ३. राजघराने में दीपक जलाने वाला व्यक्ति।

मसालो—*(न०)* १. धनिया, मिर्च, लौंग आदि जो साग आदि में डाले जाते हैं। २. वे पदार्थ जिनकी सहायता से कोई वस्तु तैयार की जाती है। साधन। सामग्री। ३. मिष्टान्न।

मसि—*(ना०)* १. स्याही। रोशनाई। २. काजल। *(वि०)* काला। श्याम।

मसिवरण—*(न०)* श्यामवर्ण।

मसी—*(ना०)* १. एक दंत मंजन जिसके मलने से मसूढ़े काले हो जाते हैं। २. हाथी या ऊँट का झरने वाला मद।

मसीजणो—*(न०)* दवात। **मसियासणो**।

मसीत—*(ना०)* मस्जिद। **मसीद**।

मसीद—*(ना०)* मस्जिद। **मसीत**।

मसीन—दे० मशीन।

मसीह—*(न०)* ईसा मसीह।

मसूड़ो—*(न०)* मुँह के अन्दर का वह अंश जहां से दाँत निकले होते हैं। मसूढ़ा।

मसूर—*(न०)* एक द्विदल लाल रंग का अन्न जिसकी दाल बनती है।

मसूरियो—*(न०)* जोधपुर और चौपासनी गांव के बीच में जोधपुर नगर का एक स्थान जहाँ मारवाड़ के प्रसिद्ध लोक-देवता रामदेवपीर का मन्दिर बना हुआ है। २. गोल तकिया। ३. गालतकिया।

मसो—*(न०)* १. अर्श। बवासीर। मस्सा। २. शरीर पर उभरा हुआ छोटा दाना। मस्सा।

मसोड़—*(ना०)* सोते समय दो चादरें या लिहाफ, रुलाई पर चादर डालकर बनाया जाने वाला दोहरा ओढ़न। **बोबड़**।

मसोतो—*(न०)* रसोईघर में बरतन आदि साफ करने, झाड़ने, पोंछने व गरम पात्र को उठाने आदि के लिए काम में लाया जाने वाला वस्त्र खंड। १. चूल्हे ऊपर के गरम बरतन को (जिससे) पकड़कर उतारने का मसिवाला (काला) कपड़ा। मसिपोत।

मसोदो—*(न०)* लेख का प्रारूप। मसविदा। मसौदा।

मस्त—*(वि०)* १. उन्मत्त । मतवाला । २. मदोन्मत्त । मदपूर्ण । ३. यौवन मद से भरा हुआ । ४. परम आनंदित । खुश-मिजाज । ५. बेपरवाह । ६. अभिमानी ।

मस्तक—*(न०)* १. माथा । सिर । माथो । २. शिखर । चोटी ।

मस्तमौला—दे० मस्त ।

मस्तं—*(अव्य०)* १. अक्षर की शिरोरेखा (माथा बंधी) के ऊपर का भाग जहाँ (अक्षर के ऊपर) अनुस्वार लगाया जाता है और अनुस्वार लगाते समय पुरानी परिपाटी के अनुसार इस प्रकार बोल करके बालक को अनुस्वार लगाना सिखाया जाता है । जैसे—मस्तं मींडी 'कं' । २. मस्तक । माथो ।

मस्तंगी—*(न०)* एक प्रकार का गोंद ।

मस्ताई—दे० मस्ती ।

मस्तान—*(वि०)* १. मस्त के जैसा । २. मस्त । मत्त । *(न०)* मस्त फकीर ।

मस्तानी—*(ना०)* १. मस्त होने की अवस्था । मस्ती । २. शैतानी । ३. नशा । ४. सम्भोग की प्रबल कामना । *(वि०)* १. मस्ती वाली । २. तगड़ी ।

मस्तानो—*(वि०)* १. मस्त । २. तगड़ा ।

मस्ती—१. मस्त होने की क्रिया या भाव । शैतानी । ३. नशा । ४. संभोग की प्रबल कामना । ५. बेपरवाही । असावधानी ।

मस्तु—*(न०)* १. छाछ । २. दही का पानी । ३. मट्ठा । ४. फटे दूध का पानी ।

मस्तूल—*(न०)* नाव में पाल बाँधने का बड़ा खम्भा ।

मस्तो—*(न०)* चासनी को मथकर गाढ़ी तथा सफेद बनाने का हलवाईयों का लकड़ी का का एक उपकरण ।

मस्सो—दे० मसो ।

मह—*(न०)* १. उत्सव । २. यज्ञ । ३. तेज प्रकाश । ४. प्रसन्नता । *(वि०)* १. महा । अति । बहुत । २. बड़ा । श्रेष्ठ ।

महक—*(ना०)* १. सुगन्ध । खुशबू । २. गंध । बास ।

महकणो—*(क्रि०)* १. सुगंध फैलना । महकना । महमहणो । २. गंधाना । बासना । बूदेना ।

महकदार—*(वि०)* सुगन्धि वाला ।

महकमो—*(न०)* १. कचहरी । न्यायालय २. दफ्तर । कार्यालय । ऑफिस । ३. किसी विशिष्ट कार्य के लिए बनाया हुआ विभाग ।

महज—*(अव्य०)* १. केवल । सिर्फ । २. शुद्ध । खालिश ।

महजत—दे० मसीत ।

महजरनामो—*(न०)* १. दो या दो से अधिक पक्षों का मतभेद मिटा कर की जाने वाली एकता का इकरार नामा । २. ऐसी एकता या न्याति संगठन इत्यादि के इकरारनामे का कोर्ट या पंचायत में पेश किया जाने वाला आवेदन पत्र । ३. अनेक मनुष्यों द्वारा सम्मिलित रूप से कोर्ट मे पेश किया जाने वाला हिंसा सम्बन्धी साक्षी पत्र । ४. सामूहिक रूप से लिखा जाने वाला कोई प्रतिज्ञा पत्र ।

महजीत—*(ना०)* मस्जिद । मसीत ।

महण—*(न०)* १ महार्णव । सागर । २. ईश्वर । *(वि०)* महान ।

महणामथ—*(न०)* १. समुद्र मंथन । २. समुद्र मंथन करने वाला । ३. भगवान विष्णु *(वि०)* शक्तिशाली ।

महणारथ—*(न०)* समुद्र । महणारंभ ।

महणारंभ—*(न०)* समुद्र । सागर । महार्णव । महण

महणी—*(ना०)* १. कलंक । लांछन । २. बदनामी । दोष । ४. चुभने वाली गूढ़ बात । ५. मर्मवचन ।

महणो—*(न०)* १. कलंक । लांछन । २. दोष । बदनामी । ४ मर्मवचन । ५. ताना । व्यंग्यपूर्ण चुभने वाली बात ।

महत—*(न०)* १. महत्व । बड़ाई । २. प्रतिष्ठा । ३. जल । ४. शिव । *(वि०)* १. महान । श्रेष्ठ । २ प्रधान । ३. ऊँचा । ४. अधिक । ५. महत्वपूर्ण ।

महतर—*(न०)* १. महत्तर । मंगी । २. सर्वश्रेष्ठ पुरुष । ३. राजा । ४. वृद्ध पुरुष । ५. महात्मा । ६. योगी । *(वि०)* १. बड़ा । श्रेष्ठ । २. अभिमानी । ३. महत सेवा करने वाला । ४. बहुज्ञ । ५. कलाप्रवीण ।

महतराणी—*(ना०)* १. महत्तर की स्त्री । भंगिन । २. पटरानी । ३. वृद्धा । ४. साध्वी ।

महता—दे० महतो ।

महताऊ—*(वि०)* महत्त्व वाला । विशेषता वाला ।

महताब—*(न०)* १. एक आतिशबाजी । २. चाँदनी । ३. चन्द्रमा । ४. अग्नि ।

महतारी—*(ना०)* माता ।

महतो—*(न०)* १. मुख्य व्यक्ति । मुखिया । २. मुंशी । ३. प्रबंधक ।

महत्तम—*(वि०)* १. सर्वश्रेष्ठ । २. सर्वोच्च ।

महत्ता—*(ना०)* १. महत्व । विशेषता । २. महिमा । ३. बड़प्पन । ४. श्रेष्ठता । ५. प्रतिष्ठा ।

महत्तत्व—*(न०)* १. प्रकृति का प्रथम तत्व विकार या कार्य । २. ब्रह्म । ३. बुद्धितत्व ।

महत्त्व—*(न०)* दे० महत्ता ।

महत्त्वपूर्ण—*(वि०)* जो महत्व का हो ।

महत्त्वाकांक्षा—*(ना०)* बड़प्पन प्राप्त करने की इच्छा ।

महत्त्वकांक्षी—*(वि०)* बड़ी ऊंची आकांक्षा या अरमान वाला ।

महदधि—*(न०)* महादधि । महासागर ।

महदंशे—*(अव्य०)* प्रायः करके । प्रणो करनै । २. मोटे भाग में । ज्यादा करके ।

महदालय—*(न०)* आकाश । आभो ।

महदी—*(न०)* मुसलमानों के बारहवें इमाम । दे० मैंदी ।

महनत—*(ना०)* १. श्रम । परिश्रम । २. प्रयत्न । कोशिश । मेहनत ।

महनताना—*(न०)* पारिश्रमिक । मेहनताना ।

महपत—*(न०)* महिपति । राजा ।

महफिल—*(ना०)* १. नाचने गाने का जलसा । २. सभा । ३. जलसा ।

महबूब—*(न०)* १. प्रिया । २. प्रियतम ।

महबूबा—*(ना०)* १. प्रियतमा ।

महमद—*(न०)* १. मोहम्मद । २. दे० मैमद ।

महमदी—*(वि०)* मोहम्मद से संबंधित । मोहम्मद का । *(न०)* मुगलकालीन एक सिक्का ।

महमह—*(वि०)* १. सुगन्धित । सुगन्धवाला । २. अत्यधिक (सुगन्ध) । ३. मधुर । प्रिय । मीठा । *(अव्य०)* ४. सुगन्धित रूप में । *(ना०)* सुगन्ध । महक ।

महमहकणो—दे० महकणो ।

महमहण—*(न०)* १. समुद्र । महामहार्णव । २. विष्णु । ३. शिव । ४. परब्रह्म । ५. महामहनीय ।

महमणो—दे० महकणो ।

महमंत—*(वि०)* १. मदोन्मत्त । २. उन्मत्त । मस्त । *(न०)* हाथी ।

महमा—दे० महिमा ।

महमाऊ—*(वि०)* महिमा वाला । महिमावंत । *(अव्य०)* महिमा के लिए ।

महमान—दे० महेमान ।

महमानदारी—दे० महेमानदारी ।

महमानी—दे० महेमानी ।

महमाय—*(ना०)* १. महिमा । २. महामाया ।

महमाया—दे० महामाया ।

महमूंदी—*(ना०)* १. बड़प्पन । महत्व । २. मुगलकालीन एक सिक्का । ३. एक कीमती कपड़ा ।

महम्मण—दे० महमहण ।

महर—*(ना०)* कृपा । दया । मेहर । *(न०)* १. गूजर । अहीर । २. मुखिया । ३. मुसलमानों के विवाह के समय वर की ओर से कन्या को दिया जाने वाला धन ।

महरघ—दे० महार्घ ।

महरबान—*(वि०)* कृपालु । दयालु । मेहरबान ।

महरबानी—*(ना०)* कृपा । दया । मेहरबानी ।

महरम—*(न०)* १. रहस्य । २. भेदिया । ३. वह निकट सम्बन्धी जिसके साथ कन्या का विवाह जायज न हो । (मुसलमानों में)

महरवाणगी—*(न०)* मेहरबानी ।

महरवाणी—दे० महरबानी ।

महरा—*(न०)* १. कहार जाति । २. उक्त जाति का व्यक्ति ।

महराण—*(न०)* १. महार्णव । सागर । महार्णव । महमहण । २. महानद ।

महराब—*(ना०)* द्वार, खिड़की आदि पर बना हुआ अर्द्ध गोलाकार ताखा । अर्द्ध गोलाकार आला । मेहराब ।

महरी—*(ना०)* महरा की स्त्री ।

महरूम—*(वि०)* वंचित ।

महरो—*(न०)* कहार । कहार जाति का व्यक्ति ।

महर्षि—*(न०)* महान् ऋषि ।

महल—*(न०)* १. बड़ा और सुन्दर मकान । प्रासाद । हवेली । २. मकान । घर । ३. रनिवास । ४. मकान के ऊपरी खंड का सजाया हुआ बड़ा कमरा । महालिओ ।

महळ—*(ना०)* १. महिला । स्त्री । २. बहू । जोरू ।

महलमाळिया—*(न०ब०व०)* १ दीपावली पर केवल शक्कर की बनाई जाने वाली एक मिठाई । २. मकान–महल आदि । महालय ।

महळा—दे० महळ ।

महलाण—*(न०)* १. मुकाम । पड़ाव । २. महलों की पंक्ति । प्रासाद समूह ।

महलात—*(न०ब०व०)* १. महल । २. महलों का समूह । महलों की पंक्ति । महलाण ।

महलायत—*(न०ब०व०)* १. महल समूह । २. महलों की पंक्ति । महलाण ।

महळी—*(ना०)* १. महिला। स्त्री। २. पत्नी। बहू। जोरू।

महसूल—*(न०)* १. कर। २. जमीन का लगान। ३. माल गुजारी। ४. किराया।

महसूस—*(वि०)* अनुभूत। *(न०)* १. अनुभव। २. प्रतीति।

महं—*(सर्व०)* मैं। स्वयं। *(वि०)* महा। बड़ा। श्रेष्ठ।

महँगाई—दे० मूँगाई।

महंगेरो—दे० मोंघेरो।

महंगो—दे० मूंगो।

महंत—*(न०)* १. किसी साधु-समाज का अधिष्ठाता। २. साधू-मंडली का प्रधान। ३. किसी सम्प्रदाय या मठ का आचार्य। ४. मठाधीश। ५. वैरागी वैष्णव साधुओं का प्रधान।

महंताई—*(ना०)* १. महंत का पद। महंती। महंतपना। २. महंत का काम।

महा—*(वि०)* १. महान। बड़ा। २. सर्वोच्च। ३. अत्यधिक।

महाअंग—*(न०)* १. ऊंट। २. हाथी।

महाउओ—*(न०)* १. महावत। २. माधव। श्रीकृष्ण।

महाउत—दे० महावत।

महाकवि—*(न०)* १. बहुत बड़ा कवि। २. महाकाव्य रचने वाला।

महाकाळ—*(न०)* १. महाकालेश्वर। रुद्र। २. शिव का प्रलय (सर्वान्तक) रूप। ३. शिव। ४. महाप्रलय। ५. अनंत काल। ६. अखंड समय।

महाकाली—*(ना०)* १. महाकाळ रूपी महादेव की अष्टभुजा पत्नी। महादेव की शक्ति। २. दुर्गा। महामाया।

महाकालेश्वर—*(न०)* द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। उज्जयिनी में स्थित ज्योतिर्लिंग।

महाकाव्य—*(न०)* १. प्रबंध काव्य का एक भेद। साहित्यशास्त्रानुसार वह सर्गबद्ध काव्य ग्रन्थ, जिसका नायक कोई देवता, राजा या धीरोदात्त गुण सम्पन्न क्षत्रिय होता है, इसमें प्रधान एक रस के अतिरिक्त सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन रहता है। अत्युत्तम रूप से वर्णित विविध विषयों वाला एवं उच्च कवित्व शक्ति वाला काव्य।

महाकाश—*(न०)* संपूर्ण वृहदाकाश।

महाकृत्य—*(न०)* तीर्थ यात्रा, दान, संध्या-पूजा, हवन इत्यादि पुण्य कृत्य।

महागिड—*(न०)* महावाराह। वाराहावतार। बड़ा सूअर।

महागौरी—*(ना०)* १. पार्वती। २. दुर्गा।

महाग्रह—*(न०)* १. सूर्य। २. राहु। ३. शनि। ४. मंगल।

महाघण—*(न०)* मेघ घटा। कळायण। कांठळ।

महाघणरूप—*(न०)* विष्णु।

महाचंडी—*(ना०)* १. दुर्गा। २. कालिका देवी।

महाछत—*(न०)* १. राजा। २. महावीर पुरुष।

महाजन—*(न०)* १. श्रेष्ठ पुरुष। २. भला पुरुष। ३. धनी व्यक्ति। ४. ब्याज लेकर रुपयों के लेन-देन का काम करने वाला। सूद का धंधा करने वाला। ५. बनिया। व्यापारी। ६. व्यापारी वर्ग। ७. प्रजा वर्ग। ८. साधु। महात्मा। ९. जनपद। १०. नागरिक।

महाजनी—*(ना०)* १. राजस्थान की एक लिपि जिसका साधित रूप आजकल

की गुजराती लिपि है। २. बही खातों में लिखी जाने वाली लिपि। बाणीकी। ३. लेन-देन का धंधा। *(वि०)* महाजन संबंधी।

महाजळ—*(न०)* १. समुद्र। सागर। २. अथाह समुद्र।

महाजंग—*(न०)* बड़ा युद्ध।

महाजोध—*(न०)* बड़ा योद्धा।

महाज्ञानी—*(न०)* १. शिव। २. बहुत बड़ा ज्ञानी।

महाडोळ—*(न०)* बड़ी पालकी।

महातत्त—*(न०)* महत्तत्व। पच्चीस तत्वों में से एक। तीसरा तत्व। २. मूल तत्व।

महातम—*(न०)* १. महात्म्य। २. घोर अंधकार।

महातमा—दे० महात्मा।

महात्मा—*(न०)* १. महापुरुष। २. महान् तपस्वी। ३. संत। योगी। संन्यासी। ४. पवित्र व्यक्ति। ५. परमात्मा। ६. शिव।

महात्म्य—*(न०)* महत्व। महिमा। महातम।

महादत—*(न०)* बड़ा दान।

महाथळ—*(न०)* बड़ा रेगिस्तान। मरुस्थल।

महादळ—*(न०)* बड़ी सेना।

महादशा—*(ना०)* १. मुख्य ग्रह का प्रभाव। २. मुख्य ग्रह की दशा। गजदशा।

महादान—*(न०)* १. ग्रहण समय का दान। २. सोने की गाय, घोड़ा, घर, भूमि इत्यादि का दान।

महादानी—*(वि०)* बड़ा दातार। बड़ा दानी।

महादेव—*(न०)* शंकर। शिव।

महादेवी—*(ना०)* १. दुर्गा। २. पार्वती।

महान—*(वि०)* १. बहुत बड़ा। विशाल। २. श्रेष्ठ। उत्तम। उदात्त। ३. बहुत।

महानग—*(न०)* १. बड़ा पर्वत। २. अरुणाचल, आबू पर्वत, सुमेरु, हिमालय इत्यादि बड़े पर्वत।

महानता—*(ना०)* १. बड़प्पन। २. विशालता। ३. श्रेष्ठता।

महानस—*(न०)* रूंट। संबशीव।

महानिशि—*(ना०)* १. प्रलय रात्रि। २. रात्रिकाल। दे० महारैण।

महानुभाव—*(न०)* १. महान आदरणीय पुरुष। २. एक सम्प्रदाय। *(वि०)* १. महाशय। २. प्रशस्त हृदय। ३. उदार।

महापथ—*(न०)* १. केदारनाथ तीर्थ और उसका पर्वत। २. मृत्यु। ३. मोक्ष।

महाप्रलै—दे० महाप्रलय।

महापर्व—दे० महाप्रव।

महापसाव—*(न०)* बड़ा दान।

महापातक—दे० महापाप।

महापाप—*(न०)* बड़ा पाप। महापातक।

महापापी—*(न०)* बहुत बड़ा पाप करने वाला। महापातकी।

महापुरुष—*(न०)* १. महात्मा। २. संन्यासी। ३. परमात्मा।

महाप्रव—*(न०)* १. महापर्व। बड़ा पर्व दिन। २. मकरसंक्राति, होली, दीवाली आदि बड़े त्यौहार। ४. मरणमहोत्सव। ५. वीरगति। ६. विजय।

महाप्रभु—*(न०)* १. ईश्वर। २. विष्णु। ३. शिव। ४. चैतन्य महाप्रभु। ५. श्री वल्लभाचार्य।

महाप्रलय—*(न०)* वह बड़ा प्रलय जिससे समस्त सृष्टि का नाश हो जाता है।

महाप्रसाद—*(न०)* जगन्नाथपुरी के श्री जगन्नाथ को चढ़ाया हुआ भात प्रसाद। २. देवमूर्ति को चढ़ाया हुआ नैवेद्य। ३. बलि का मांस।

महाप्रस्थान—*(न०)* १. मृत्यु। २. मोक्ष।

महाप्राण—*(न०)* वे चौदह वर्ण जिनके उच्चारण करने में प्राण वायु का अधिक प्रयोग होता है। यथा :—ख, छ, ठ, थ, फ। घ, झ, ढ, ध, भ। श, ष, स, तथा ह। (व्या.) २. महान आत्मा।

महाबळ—*(वि०)* १. बड़ा बलवान। २. शक्तिशाली। *(न०)* १. हनुमान। २. सीसा। ३. युद्ध। ४. पवन।

महाबळी—*(वि०)* शक्तिशाली। *(न०)* १. मन। २. हनुमान।

महाबाहु—*(वि०)* १. बड़ी भुजाओं वाला। २. आजानबाहु। ३. शूरवीर।

महाब्राह्मण—*(न०)* वह पतित ब्राह्मण जो मृतक संस्कार कराने का धंधा करके आजीविका चलाता है। २. वह ब्राह्मण जाति जो मृतक संस्कार कराती है तथा मृतक का दान लेती है। कठहा। कारटियो।

महाभड़—*(वि०)* बड़ा योद्धा। महावीर।

महाभागवत—*(न०)* १. प्रह्लाद नारद आदि बारह महाभक्त। २. चौदह खण्ड-भागवत। *(ना०)* श्रीमद्भागवत।

महाभारत—*(न०)* वेद व्यास द्वारा प्रणीत प्रसिद्ध पौराणिक महाकाव्य। इसमें कौरवों और पाण्डवों के युद्ध वर्णन के साथ धर्म, तत्व-ज्ञान, व्यवहार, राजनीति आदि विषयों का बहुत विस्तृत वर्णन और विवेचन किया गया है। २. बड़ा युद्ध। भारथ।

महाभाष्य—*(न०)* पाणिनि मुनि के अष्टाध्यायी व्याकरण पर पतंजलि ऋषि द्वारा किया गया भाष्य।

महाभुजंग—*(न०)* शेषनाग।

महाभोग—दे० महाप्रसाद। साँप।

महामरण—*(न०)* १. कर्त्तव्य पालन करते हुए मरना। २. वीर मृत्यु। ३. देश जाति या धर्म के लिए बलिदान होना।

महामहण—दे० महार्णव।

महामहिम—*(वि०)* जिसकी महिमा बहुत हो। *(न०)* एक बड़ी उपाधि।

महामंगळा—*(ना०)* १. दुर्गा। पार्वती। २. पृथ्वी। ३. अग्नि।

महामंडलेश्वर—*(वि०)* १. अनेक मण्डलों का अधिपति। २. मंडलेश्वरों का अधिपति।

महामंत्र—*(न०)* गायत्री मंत्र। २. महामृत्युंजय मंत्र। ३. रामनाम। ४. षडाक्षर मंत्र। ५. सिद्धिदायक मंत्र। ६. संकटमोचन मंत्र।

महामंत्री—*(न०)* प्रधानमंत्री। प्रधानामात्य।

महामाया—*(ना०)* १. दुर्गा। २. प्रकृति। ३. गंगा। ४. पार्वती। ५. सीता। ६. गायत्री। ७. भगवान बुद्ध की माता का नाम।

महामारी—*(ना०)* प्लेग, हैजा आदि संक्रामक रोग। अड़पड़ी।

महामुनि—*(न०)* मुनियों में श्रेष्ठ। मुनि।

महामृत्युंजय—*(न०)* १. शिव। २. मृत्यु के निवारण का वैदिक शिव मंत्र।

महारउ—*(वि०)* मेरा। महारो। म्हारो।

महारण—*(न०)* १. महायुद्ध। बड़ी लड़ाई। २. बड़ा जंगल। ३. मैदान।

महारणव—(न०) महार्णव । सागर । महासमुद्र । समुंदर ।

महारथी—(न०) बहुत बड़ा योद्धा ।

महारस—(न०) १. प्रभु की भक्ति का आनन्द । हरिरस । २. ब्रह्मानंद । ३. अभ्रक भस्म । ४. पारा । ५. कांतिसार लोह ।

महाराज—(न०) १. राजा । सम्राट । २. साधु । ३. आचार्य । ४. ब्राह्मण । ५. रसोईया ।

महाराजा—(न०) बड़ा राजा ।

महाराजाधिराज—(न०) १. राजाओं का राजा । २. एक उपाधि ।

महाराड़—(ना०) महायुद्ध ।

महाराणा प्रताप—(न०) भारत के राजाओं में मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार न करने वाला एक मात्र महान वीर हिन्दू-सूर्य मेवाड़ के अधिपति महाराणा प्रताप ।

महाराणा-यश-प्रकाश—(न०) मलसीसर ठाकुर भूरसिंह द्वारा संकलित प्रकाशित महाराणा प्रताप संबंधी एक इतिहास ग्रंथ ।

महाराणो—(न०) १. मेवाड़ के नरेशों की उपाधि । महाराना । २. राजा ।

महारात—दे० महा रैण ।

महाराव—(न०) १. कोटा, बूंदी, सिरोही आदि राजाओं की उपाधि । २. राजा ।

महारावळ—(न०) जैसलमेर, डूंगरपुर आदि राजाओं की उपाधि ।

महाराष्ट्र—(न०) १. भारत का एक प्रांत । २. बड़ा राष्ट्र ।

महारिख—(न०) महर्षि । महान ऋषि ।

महारिप—(न०) १. बड़ा शत्रु । महा रिपु । २. काम, क्रोध, लोभादि दुर्गुण ।

महारी—(सर्व०) मेरी ।

महारैण—(ना०) १. प्रलय रात्रि । २. अमावस की अंधेरी रात । ३. वर्षा की अंधेरी रात । ४. शिव रात्रि ।

महारो—(सर्व०) मेरा ।

महार्घ—(वि०) १. बहुमूल्य । बेश कीमती । २. महँगा ।

महार्णव—(न०) महासागर । समंदर । नाराधिप ।

महालक्ष्मी—(ना०) १. नारायण की एक शक्ति । २. भगवान विष्णु की पत्नी । लक्ष्मी । ३. लक्ष्मी की मूर्ति ।

महालणो—(क्रि०) १. आनंदोपभोग करना । २. मौज करना । ३. ठाटबाठ से रहना । ४. ठाट से चलना । म्हालणो ।

महाळियो—(न०) १. ऊपर की मंजिल का कमरा । २. ऊपर के खंड में बना शयन ग्रह । मैड़ी । ३. प्रासाद । महल । महालय । माळियो ।

महावत—(न०) पीलवान । हाथीवान ।

महावर—(न०) लाख का रंग जिसे सौभाग्यवती स्त्रियां पैरों में लगाती हैं ।

महावरो—(न०) १. वह वाक्य या पद जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो । २. अभ्यास । टेव । ३. आदत । ४. व्यसन ।

महावीर—(न०) १. हनुमान । २. बड़ा वीर पुरुष । ३. जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर । (वि०) १. शक्तिशाली । जोरावर । २. साहसी ।

महावेध—(न०) बड़ा युद्ध ।

महाव्रत—(न०) १. बड़ा व्रत । २. कठिन व्रत ।

महाशक्ति—(न०) १. सृष्टि को उत्पन्न करने वाली आद्य शक्ति । २. दुर्गा ।

महाशिवरात्रि—*(ना०)* विशिष्ट शिव पूजा और व्रत की फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि।

महासती—*(ना०)* पतिव्रता स्त्री।

महासभा—*(ना०)* बड़ी सभा।

महासंख—*(वि०)* मूर्ख। डफोलशंख। *(न०)* बड़ा शंख।

महासागर—*(न०)* बड़ा समुद्र।

महि—*(ना०)* १. पृथ्वी। २. महिमा।

महिख—*(न०)* १. महिष। भैंसा। २. राजा। ३. महिषासुर दैत्य।

महिख-जीह—*(ना०)* कटारी।

महिखी—*(ना०)* १. महिषी। रानी। २. भैंस।

महितळ—*(न०)* पृथ्वीतल। भूतल। भूंईपुड़।

महियळ—दे० महितळ।

महिधर—दे० महीधर।

महिपति—*(न०)* राजा।

महिपाळ—१. राजा। २. ईश्वर। महिपाळग।

महिपाळग—*(न०)* १. पृथ्वी का पालन करने वाला। २. राजा। ३. ईश्वर।

महिपुड़—*(न०)* पृथ्वीतल। धरातळ। महियळ।

महिमा—*(ना०)* १. महत्ता। २. प्रताप। ३. यश। कीर्ति। जस। ४. गौरव। महत्व। ५. प्रभाव। ६. आठ सिद्धियों में से एक। ७. सत्कार। ८. शोभा।

महिम्न—*(न०)* १. पुष्पदंताचार्य द्वारा रचा गया शिव-महिमा का एक प्रसिद्ध संस्कृत स्तोत्र। २. महिमा।

महियड़—दे० महियळ।

महियळ—*(न०)* १. महितल। पृथ्वीतल। भूतळ। २. संसार। दुनिया।

महियारी—*(ना०)* १. गूजरिन। गूजरी। ग्वालिन। २. माता।

महियो—*(न०)* १. सांड ऊंट। ऊंटनियों को गर्भाधान कराने वाला नस्लवाला ऊंट। २. बड़ा ऊंट। मस्त ऊंट। ३. बहुत सुन्दर और तेज चाल वाला ऊंट।

महिरंजण—*(न०)* बादल। मेघ।

महिराणवर—*(न०)* १. राजा। २. बड़ा समुद्र। महार्णव।

महिरेलण—*(न०)* १. दुकाल में प्रजा को मुफ्त अन्न वितीर्ण करने के कारण खेड़ के अधिपति राव रायपाल को प्राप्त विरुद। २. मेघ। बादल।

महिल—*(ना०)* महिला। *(न०)* महल।

महिलाण—*(न०)* १. पड़ाव। *(ना०)* महिला समाज। महिलाएं।

महिष—*(न०)* १. भैंसा। २. राजा। ३. महिषासुर दैत्य।

महिषासुर—*(न०)* एक दैत्य।

महिषासुरमर्दिनी—*(ना०)* दुर्गा। देवी। महाशक्ति।

महिषी—*(ना०)* १. भैंस। २. रानी।

महिसाह—*(न०)* पृथ्वी को धारण करने वाला। ईश्वर। २. वाराह अवतार।

महिसी—दे० महिषी।

महिसुर—*(न०)* ब्राह्मण। विप्र। बामण।

मही—*(ना०)* १. पृथ्वी। २. छाछ। तक्र। ३. दही। ४. एक नदी। महेन्द्रतनया। ५. गौ। गाय। *(वि०)* महीन। बारीक। झीणो।

महीअर—दे० महीधर।

महीणो—दे० महीनो।

महीतळ—*(न०)* पृथ्वी तल। पृथ्वी। धरणी। धरा।

महीदेव—*(न०)* ब्राह्मण। बामण।

महीधर—*(न०)* १. पर्वत । भाखर । २. विष्णु । ३. शेषनाग । ४. पृथ्वी को धारण करने वाला ।

महीन—*(वि०)* १. पतला । २. झीना । बारीक । झीणो । ३. सूक्ष्म ।

महीनो—*(न०)* १. मास । महीना । २. मासिक वेतन ।

महीप—*(न०)* १. राजा । २. इन्द्र ।

महीपति—*(न०)* राजा ।

महीमंडण—*(न०)* १. पृथ्वी की शोभा । २. मेघ । ३. वर्षा । ४. राजा । ५. इन्द्र ।

महीमळ—दे० महियळ ।

महीश—*(न०)* राजा ।

महीसाह—*(न०)* १. शेषनाग । २. पर्वत । ३. ईश्वर ।

महुअर—*(न०)* १. पूंगीवाद्य । २. अलगोजा । ३. मधुकर । भौंरा ।

महुओ—दे० महुड़ो ।

महुड़ो—*(न०)* महुआ का क्षुप । महुओ ।

महुत—*(न०)* मुहूर्त ।

महुर—*(वि०)* १. मधुर । २. धीमा । ३. पहला । प्रथम । *(क्रि०वि०)* १. आगे । अगाड़ी । २. पहले । महोर ।

महुरी—दे० मोहरी या मुंहरी ।

महुवरि—दे० महुअर ।

महुरत—दे० महोरत ।

महेमान—*(न०)* मेहमान । पाहुना । प्रामणो । पांवणो ।

महेमानदारी—*(ना०)* मेहमानी । पाहुनाई । प्रामणाचारी ।

महेमानी—दे० महेमानदारी ।

महेवो—*(न०)* १. मारवाड़ के बाड़मेर प्रांत का एक इतिहास प्रसिद्ध खंडहर गांव जिसके नाम पर राजेश्वरों की एक उपजाति महेचा (महेवचा) प्रसिद्ध में आई । जैनियों का एक तीर्थ स्थान होने से भी महेवा की प्रसिद्धि है । यहां जैन, वैष्णवों के अन्य मंदिरों में नाकोड़ा पार्श्वनाथ का मुख्य और प्रसिद्ध मंदिर है । २. मारवाड़ के मालानी प्रांत का एक भाग ।

महेश—*(न०)* महादेव ।

महेश्वर—*(न०)* महादेव ।

महेसरी—*(न०)* एक वैश्य जाति । माहेश्वरी । मेसरी । *(ना०)* दुर्गा ।

महोछब—*(न०)* महोत्सव । बड़ा उत्सव ।

महोत्सव—*(न०)* बड़ा उत्सव । बड़ो उछब । महोछब ।

महोदधि—*(न०)* महासागर । महाउदधि ।

महोदय—*(न०)* १. महाशय । २. महानुभाव । ३. एक शिष्ट संबोधन ।

महोबत—*(ना०)* १. मुहब्बत । प्रेम । २. प्यार । स्नेह ।

महोबो—*(न०)* १. एक नगर । २. उत्तर प्रदेश का एक भाग ।

महोर—*(क्रि०वि०)* पहले । आगे । *(ना०)* १. मुहर । २. सिक्का । ३. कागजपत्र पर लगाई जाने वाली रबर की मुहर ।

महोरत—*(न०)* १. दिनरात का तीसवां भाग । मुहूर्त । २. शुभकाल । शुभ घड़ी । ३. निर्दिष्ट समय । ४. ज्योतिष के अनुसार किसी कार्य को करने का निर्धारित उत्तम समय ।

महोरां—*(क्रि०वि०)* पहले । प्रथम ।

महोल—*(व०)* १. मिस । बहाना । मुहेल । २. सहल ।

महोलो—*(न०)* १. मुहल्ला । वास । २. अभिवादन । मुजरा । सलाम । ३.

उत्सव । ४. चाकरी । सेवा । ५. महल । ६. स्वागत ।

मंकाड़ो—*(न०)* १. मकोड़ा । २. बंदर । ३. लंगूर । ४. घोड़ा ।

मंग—*(न०)* सिंह । दे० मांग ।

मंगण—*(न०)* १. भिखारी । २. याचक । मगतो ।

मंगणो—दे० मांगणो ।

मंगत—*(न०)* मंगता । भिखारी । मंगतो । मंगण ।

मंगतवेड़—*(ना०)* १ भिखारियों का समूह । २. भीख मांगने का पेशा । ३. भिखारी । *(वि०)* भिखारी जैसा ।

मंगताई—*(ना०)* १. मांगने का काम । भिखारीपना । २. नीचता ।

मंगती—*(ना०)* भिखारिन । मगती ।

मंगतो—*(न०)* भिखारी । भिखमंगा । मगतो ।

मंगनी—*(ना०)* सगाई । वाग्दान ।

मंगर—*(ना०)* पीठ । मगर । मोर ।

मंगळ—*(न०)* १. कल्याण । शुभ । २. मंगलग्रह । ३. मंगलवार । भोमवार । ४. मंगलगीत । ५. विवाहोत्सव । ६. जन्मोत्सव । ७. अग्नि । ८. विष्णु । ९. एक छंद । १०. लाल रंग । *(वि०)* १. प्रातःकालीन । २. कल्याणकारी । ३. मांगलिक ।

मंगळआरती—*(ना०)* वैष्णव मंदिरों में ब्राह्ममुहूर्त में की जाने वाली ठाकुरजी की आरती । २. आरती का पद्य ।

मंगळकरण—*(न०)* भजानन । गणेश ।

मंगळरकरणो—*(क्रि०)* १. द्वार बंद करना । २. दीपक बुझाना । (लाक्षणिक अर्थ)

मंगळ कळस—*(न०)* १. यज्ञ, विवाह आदि शुभ अवसरों पर पूजा, पाठ इत्यादि में स्थापित किया जाने वाला जल से भरा हुआ घड़ा । मंगल घट ।

मंगळकृत—*(न०)* १. वीर गति । २. मरणोत्सव । ३. मंगलकृत्य । शुभ काम ।

मंगळकारी—*(वि०)* कल्याणकारी ।

मंगळगान—दे० मंगळगीत ।

मंगळगीत—*(न०)* शुभ अवसरों पर गाये जाने वाले गीत । मंगळगान ।

मंगळग्रह—*(न०)* १. शुभग्रह । २ मंगल नामक ग्रह । खगोल, ज्योतिष ।

मंगळघट—दे० मंगळ कळस ।

मंगळचार—दे० मंगळाचार ।

मंगळ-झळ—*(ना०)* १. अग्नि ज्वाला । २. सती स्त्री का चिता की अग्नि ज्वाला में प्रवेश करना ।

मंगळणो—*(क्रि०)* प्रज्वलित होना । जलना ।

मंगळदायक—*(वि०)* १. कल्याण करने वाला । २. गणेश । गजानन ।

मंगळधमळ—*(न०)* १. विवाह के गीत । २. मंगलगीत । ३. मांगलिक धमाल-राग । ४. उत्सव ।

मंगळधवळ—दे० मंगळधमळ ।

मंगळध्वनि—*(ना०)* उत्सव के नृत्य, वायन वाद्य इत्यादि की ध्वनि ।

मंगळपाठ—*(न०)* स्वस्ति वाचन ।

मंगळमरण—*(न०)* १. देश, जाति और धर्म के लिये मरना । २. वीर मृत्यु ।

मंगळरूप*(न०)* १. जो निरंतर मंगल रूप है । ईश्वर । २. श्रीकृष्ण ।

मंगळवार—*(न०)* सोमवार के बाद का दिन । भौमवार ।

मंगळवेळा—*(न०)* १. प्रातःकाल । शुभ वेला ।

मंगळसाज—*(न०ब०व०)* उत्सव के समय बजाये जाने वाले ढोल, शहनाई आदि (छत्तीस प्रकार के) वाद्य ।

मंगळसूत्र—*(न०)* १. देव पूजा आदि मांगलिक अवसरों पर कलाई में बाँधा जाने वाला लाल रंग का सूत्र । मौळी । रक्षा सूत्र । २. सौभाग्यवती स्त्रियों के गले का एक आभूषण । ३. एक शिरोभूषण । सौभाग्यवती स्त्रियों का मुख्य आभूषण रखड़ी । बोर ।

मंगळा—*(ना०)* १. पार्वती । २. दुर्गा । ३. पतिव्रता स्त्री । ४. हल्दी । ५. अग्नि । ६. दूर्वा । ७. मंगला आरती । ८. मंगला आरती के समय गाया जाने वाला आरती पद । ९. मंगलगीत ।

मंगळाचरण—*(न०)* किसी कार्य या ग्रंथ-लेखन के आरंभ में सफल समाप्ति हेतु की जाने वाली ईश्वर प्रार्थना का श्लोक या पद्य । २. मंगल सूचक प्रारंभिक प्रार्थना । ३. उक्त प्रार्थना का पद या श्लोक ।

मंगळाचार—*(न०)* १. ग्रंथारंभ के पूर्व, परमेश्वर, सरस्वती, गुरु माधव, गणेश इत्यादि का स्मरण । २. मंगलाचरण । ३. आनन्द ४. उत्सव । ५. आशीर्वादोच्चारण । दे० मंगळाचरण ।

मंगळाणो—दे० मंगलावणो ।

मंगळामुखी—*(ना०)* वेश्या । पातर ।

मंगळारंभ—*(न०)* कार्य का शुभारंभ ।

मंगळावणो—*(क्रि०)* १. अग्नि जलाना । २. दीपक जलाना । ३. होली का जलाना । दे० मंगळकरणो ।

मंगळियो—*(न०)* मिट्टी का छोटा घड़ा चुकल्यो ।

मंगळी—*(वि०)* १. विवाह संबंधी । २. शुभ प्रसंग संबंधी । ३. जिसकी जन्म-कुंडली में पहले, चौथे, आठवें, बारहवें स्थान में मंगल हो । ४. अग्नि संबंधी । ५. अग्नि संस्कार संबंधी । *(ना०)* १. अग्नि । २. दहकती चिता ।

मंगळीक—*(वि०)* मांगलिक । *(न०)* १. शुभ वस्तु । २. उत्सव । ३. ब्राह्मण (पालीवाल) को दान में दी हुई भूमि । मंगळीकी थळ । दे० मंगळी ।

मंगळीकी थळ—*(न०)* १. पालीवाल ब्राह्मण को दान में दी हुई जमीन । २. जैसलमेर जिले का एक भू-भाग ।

मंगवाणो—दे० मंगावणो ।

मंगसखानो—*(न०)* बड़े शमियाना के अन्दर का छोटा शामियाना ।

मंगसर—दे० मिगसर ।

मंगाणो—दे० मंगावणो ।

मंगावणो—*(क्रि०)* मंगवाना ।

मंगेज—*(न०)* अभिमान । गर्व ।

मंगेजण—*(वि०)* गर्वीली । मिजाजवाली । मानिनी । गर्विता ।

मंगेड़ो—दे० मंगेरणो ।

मंगेतर—*(वि०)* जिसके लिये किसी की मंगनी हुई हो । जिसके साथ विवाह होना निश्चित हो गया हो (वह लड़का या लड़की) ।

मंगेरणो—*(न०)* दरवाजा । द्वार । मगेरणो । बारणो । मंगेड़ो ।

मंगोल—*(न०)* १. पूर्वी-उत्तरी (मध्य) एशिया में बसने वाली एक जाति । २. इस जाति का व्यक्ति ।

मंगोलियो—*(न०)* पूर्वी-उत्तरी एशिया का एक प्रदेश । मंगोलिया ।

मंच—*(न०)* १. चौकी । चबूतरा । २. खाट । ३. मचान । ४. व्यास पीठ ।

मंचो—दे० माँचो ।

मंछ—*(ना०)* १. मछली । माछली । २. 'रघुनाथरूपक' के रचियता कविवर मंछाराम का काव्य नाम ।

मंछर—*(न०)* १. मात्सर्य । मत्सर । डाह । २. गर्व । ३. मच्छर । माछर ।

मंछा—*दे०* मंसा ।

मंछादेवी—*दे०* मनसा देवी ।

मंछावाचा—*(न०)* एक व्रत । *(अव्य०)* मन से और वचन से ।

मंछी—*(ना०)* १. मछली । २. मूंछी ।

मंजण—*(न०)* १. स्नान । मंजन । २. दाँत । साफ करने का चूर्ण । दंत मंजन । ३. माँजने या स्वच्छ करने की क्रिया । *(वि०)* नष्ट करने वाला ।

मंजणो—*(वि०)* स्नान करना *दे०* मांजणो ।

मंजन—*दे०* मंजण ।

मंजर—*(ना०)* १. मंजरी । २. झरोखा । *(वि०)* मनोहर ।

मंजरणो—*(क्रि०)* वृक्ष पर मंजरी आना ।

मंजरी—*(ना०)* १. बौर । मुकुल । २. कली । ३. कोंपल । ४. मोती । ५. तुलसी । ६. गुच्छा । ७. लता । ८. एक रागिनी ।

मंजाई—*(ना०)* माँजने की क्रिया या मजदूरी ।

मंजाणो—*(क्रि०)* बरतन को राख मिट्टी आदि से रगड़ कर साफ करवाना ।

मंजार—*दे०* मंजारी । *(क्रि० वि०)* बीच में ।

मंजारखळ—*(न०)* कुत्ता । कूतरो । कुत्तो ।

मंजारखळ—*(न०)* बेर । बिल्ल ।

मंजारी—*(ना०)* बिल्ली । बिल्ली । बिलखी ।

मंजावणो—*दे०* मंजाणो ।

मंजासणो—*दे०* मंजियासणो ।

मंजियोडो—*(भू०कृ०)* साफ किया हुआ । मंजा हुआ *(वि०)* अनुभवी ।

मंजिल—*(ना०)* १. मकान का ऊपरी खंड । २. यात्रा में ठहरने का स्थान । मक्षल । ३. लक्ष्य ।

मंजीर—*(न०)* १. मंजीरा । २. ताल । २. करताल । ३. घूंघरू । ४. नूपुर ।

मंजीरा—*(न०ब०व०)* ढोलक, तबला आदि के साथ ताल देने की कटोरीनुमा काँसे की जोड़ी । मजीरा । करताल ।

मंजु—*(वि०)* सुन्दर ।

मंजुल—*(वि०)* १. सुन्दर । मंजु । २. कोमल । मधुर । ३. कुंज । ४. नदी का किनारा ।

मंजूर—*(वि०)* कबूल । स्वीकृत । मान्य ।

मंजूरी—*(ना०)* १. स्वीकृति । २. सम्मति ।

मंजूषा—*(ना०)* पेटी । मंजूस ।

मंजूस—*दे०* मंजूषा ।

मंझ—*(न०)* १. बीच । बीच का भाग । *(वि०)* बीच का । *(अव्य०)* बीच में ।

मंझलो—*(वि०)* बीच का ।

मंझा—*(ना०)* कमर *दे०* मंझा ।

मंझार—*दे०* मंझ ।

मंझो—*दे०* मांजो ।

मंड—*(न०)* १. रचना । २. शोभा । ३. निर्भरता । आधार । ३. युद्ध । ४. मेंढक । ५. शरीर । ६. मंडप । ७. सृष्टि । ८. ब्रह्मांड ।

मंडक्यो—*(न०)* पिछली छोटी रोटी ।

मंडण—*(न०)* १. शृंगार । २. शोभा । ३. आभूषण । ४. स्थापना (बात या मत की) । मंडन । ५. समर्थन । (खंडन का उलटा) ।

मंडणो—*(क्रि०)* १. रचा जाना । २. शुरु होना । ३. होना । ४. तैयार होना । ५. लिखा जाना । ६. लिखना । ७. स्थिर होना । डटना । ८. जुड़ना । ९. सुसज्जित होना । १०. रखा जाना । ११. रखना । १२. पीछे पड़ना । १३. शोभित होना । १४. ढोल आदि पर चमड़ा चढ़ना । १५. तसवीर को काच के साथ चौखटे में बिठाना । मँढ़ना ।

मंडन—दे० मंडण ।

मंडप—*(न०)* १. किसी उत्सव आदि के लिए फूल पत्तों और कपड़ों से छा कर सजाया हुआ वितान २. देवालय में निज मंदिर के का गुम्बज वाला चौक । ३. देव मंदिर के ऊपर का गोलाकार भाग ४. भवन । ५. तम्बू । शामियाना ।

मंडपाळ—*(न०)* राजा ।

मंडळ—*(न०)* १. परिधि । घेरा । मंडल । २. गोलाई । ३. परिवेश । ४. सूर्य, चंद्र बिम्ब । चमकदार वस्तु के आसपास का गोल घेरा । ५. किसी विशेष कार्य, व्यवसाय, प्रदर्शन आदि के लिए बनाया हुआ कुछ लोगों का संगठित दल । ६. मामलों का निर्णय करने वाला अधिकरण । ७. क्षितिज । ८. प्रदेश । ९. ऋग्वेद के दस खंडों में का प्रत्येक । १०. विशिष्ट व्यक्तियों या गाँवों का समाज या समूह । ११. एक वाद्य ।

मंडळाकार—*(वि०)* मंडल के आकार का । गोल ।

मंडळाधीश—दे० मंडलेश्वर ।

मंडळी—*(ना०)* १. छोटा मंडळ । टोळी । २. छोटी सभा । ३. समूह । ४. सभा । ५. गोलाकार । ६. दूब । ७. वटवृक्ष ।

मंडलीक—*(न०)* १. बारह राजाओं का अधिपति । २. राजा ।

मंडलेश्वर—*(न०)* मंडल का अधिपति ।

मंडाई—*(ना०)* १. रखने, चुनने या लिखने की क्रिया । माँडने का पारिश्रमिक ।

मंडाण—*(न०)* १. आरंभ । शुरुआत । २. रचना । बनावट । ३. काम आरम्भ करने का आयोजन । तैयारी । ४. सजावट । ५. आडम्बर । ६. आसार । लक्षण ।

मंडाणो—दे० मंडावणो ।

मंडावणो—*(क्रि०)* १. शुरु करवाना । २. चित्रित करवाना । ३. लिखवाना । ४. स्थापन करवाना । ५. तसवीर आदि की चौखट में बिठवाना । ६. शोभित करवाना । सजवाना । ७. किसी वस्तु को देने के लिये हाथ या पल्ला पसरवाना । ८. ढोलक, तबला आदि वाद्यों पर चमड़ा चढ़वाना । ९. घोड़े, ऊंट आदि पर काठी पलाण कसवाना ।

मंडित—*(वि०)* १. सजाया हुआ । २. विभूषित । आच्छादित । ४. जटित । अड़ा हुआ ।

मंडियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. मँढ़ा हुआ । २. लिखा हुआ । ३. चित्रित । ४. स्थापित । ५. सज्जित ।

मंडी—*(ना०)* १. सब्जी अनाज इत्यादि बेचने खरीदने का बाजार । २. थोक बिक्री का स्थान । ३. बड़ा बाजार । ४. दे० मढी ।

मंडूक *(न०)* मेंढक । डेडरियो ।

मंडूर—*(न०)* लोहे का कीट ।

मंडोर—दे० मंडोवर सं. १ ।

मंडोवर—*(न०)* १. मांडव्य ऋषि के नाम पर बसा हुआ मारवाड़ की प्राचीन राजधानी का खंडहर-रूपनगर। आजकल मंडोर के नाम से प्रसिद्ध यह ऐतिहासिक नगर जोधपुर से ६ मील उत्तर में आया हुआ है। २. मंदिर की वह दीवाल जिस पर विविध देवताओं के और संस्कृति की सूचक मूर्तियाँ बनी होती है। ३. मंदोदरी।

मंडोवरराणी—दे० मंदोदरी।

मंडोवरी—दे० मंदोदरी।

मंढणो—*(क्रि०)* ढोल, ढोलक आदि वाद्यों पर चमड़ा चढ़ाना। २. तसवीर को काँच के तख्ते के साथ चौखटे में जड़ना।

मंढाणो—दे० मंढावणो।

मंढावणो—*(क्रि०)* १. ढोल, ढोलक आदि वाद्यों पर चमड़ा चढ़वाना। २. तसवीर को काँच के तख्ते के साथ चौखटे में लगवाना।

मंढी—दे० मंडी।

मंत—दे० मंत्र।

मंतर—दे० मंत्र।

मंतर-जंतर—दे० जंतर-मंतर।

मंतर-तंतर—दे० मंत्र-तंत्र।

मंतरणो—*(क्रि०)* १. मंत्र के द्वारा किसी पर प्रभाव डालना। जादू करना। २. किसी धागे आदि को मंत्रित करना। ३. बहकाना। फुसलाना। ४. वशीभूत करना। ५. झाड़ा-फूंका करना।

मंतरावणो—*(क्रि०)* मंत्रवाना।

मंतरियोड़ो—*(भू० कृ०)* मंत्रित।

मंतरी—दे० मंत्री।

मंतरोळियो—दे० मंत्रोळियो।

मंतव्य—*(न०)* मत। विचार।

मंत्र—*(न०)* १. वेद वाक्य। २. ऋग्वेद की ऋचा। ३. इष्ट सिद्धि के लिये किया जाने वाला जप। ४. देवी तथा देवता को साध्य करने का गूढ शब्द। ५. गुप्त मंत्रणा। परामर्श। ६. जादू। ७. विचार। अलौकिक शक्ति से युक्त शब्दयोजन।

मंत्रकार—*(न०)* मंत्र रचियता ऋषि।

मंत्रजळ—*(न०)* मंत्रित पानी।

मंत्रणा—*(ना०)* परामर्श। सलाह।

मंत्रतंत्र—*(न०)* जादू टोना।

मंत्रदेवता—*(न०)* मंत्रों द्वारा बुलाया जाने वाला देवता।

मंत्रद्रष्टा—*(न०)* वेद मंत्रों को समझने या रचने वाला (ऋषि)।

मंत्रपूत—*(वि०)* मंत्रों द्वारा पवित्र किया हुआ।

मंत्रबळ—*(न०)* मंत्रों की शक्ति।

मंत्रमुग्ध—*(वि०)* मंत्र द्वारा बस में किया हुआ।

मंत्रवादी—जादूगर।

मंत्रविद्या—*(न०)* मंत्रशास्त्र।

मंत्रवी—दे० मंत्री।

मंत्रशक्ति—*(ना०)* १. मंत्र की शक्ति अथवा उसका बल। मंत्र का प्रभाव। २. मंत्र की कार्य सार्थकता।

मंत्रशास्त्र—*(न०)* मंत्र तथा उनकी विधि का शास्त्र।

मंत्रसंहिता—*(ना०)* वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।

मंत्रसाधक—*(न०)* मंत्र की साधना करने वाला।

मंत्रसिद्धि—*(न०)* १. मंत्र की कार्य साधक शक्ति की प्राप्ति । २. मंत्र का सिद्ध होना । मंत्र की सफलता ।

मंत्रहीन—*(वि०)* अदीक्षित ।

मंत्रित—*(वि०)* अभिमंत्रित ।

मंत्री—*(न०)* १. परामर्शदाता । सलाहकार । २. राजा का प्रधान सलाहकार । प्रधान । आमात्य । ३. संस्था का तंत्र सम्भालने वाला व्यक्ति । सेक्रेटरी । ४. मिनिस्टर ।

मंत्रेलो—*(वि०)* मंत्रित ।

मंत्रोळियो—*(न०)* दिखावटी मित्रता रखने वाला । कपटी मित्र । २. स्वार्थी मित्र ।

मंथ—*(न०)* १. दही बिलौने का दंड । मथाणी । २. मंथन । ३. बिलौने की क्रिया ।

मंथज—*(न०)* मक्खन । माखण ।

मंथण—*(न०)* मंथन करने की क्रिया या भाव । मंथन ।

मंथणो—*(क्रि०)* मंथन करना ।

मंथन—*(न०)* १. द्रव प्रदार्थ को मथना । २. गहरी छान-बीन । ३. गहरा अध्ययन ।

मंथरा—*(ना०)* राजा दशरथ की रानी केकयी की एक दासी ।

मंद—*(वि०)* १. धीमा । २. आलसी । ३. ढीला । ४. मूर्ख । ५. अशक्त । ६. थोड़ा । कम । ७. खराब । बुरा । ८. कृपण । ९. प्रभावहीन ।

मंदगति—*(ना०)* धीमी चाल ।

मंदगी—*दे०* मांदगी ।

मंदबुद्धि—*दे०* मंदमति ।

मंदभागी—*(वि०)* कम नसीब । मंदभाग्य । अभागा । भागफूटो ।

मंदभाग्य—*दे०* मंदभागी ।

मंदमति—*(वि०)* मूर्ख । मंदबुद्धि । अबूझ ।

मंदर—*(न०)* १. मंदराचल । २. मंदिर । ३. इन्द्र ।

मंदराचळ—*(न०)* मथानी बनाकर देव व दानवों ने समुद्र मंथन किया था उस पर्वत का नाम । मंदर । मंदरगिरि ।

मंदवाड़—*(ना०)* बीमारी । रोग ।

मंदाआखर—*(न०)* मंदभाग्य ।

मंदाइणी—*दे०* मंदाकिनी ।

मंदाकणी—*दे०* मंदाकिनी ।

मंदाकिनी—*(ना०)* १. गंगा नदी । २. आकाश गंगा । ३. एक छंद ।

मंदाकम—*(ना०)* मंदकर्म । पापकर्म । पाप ।

मंदाक्रांता—*(न०)* एक छंद ।

मंदाग्नि—*(ना०)* अन्न न पचने का रोग । अपच । बदहजमी ।

मंदायण—*दे०* मंदाकिनी ।

मंदायणी—*दे०* मंदाकिनी ।

मंदार—*(न०)* १. आक । मदार । आकड़ो । २. धतूरा । ३. एक स्वर्गिक वृक्ष ।

मंदिर—*(न०)* १. देवालय । २. प्रासाद । महल । ३. भवन । मकान । घर ।

मंदिर मार्गी—*दे०* मिंदरमारगी ।

मंदिरियो—*(न०)* बाल कृष्ण की सेवा-पूजा का घर में बनया हुआ छोटा मंदिर ।

मंदी—*(ना०)* १. वस्तुओं के भाव घटना । तेजी का उलटा । सस्ती २. मंद होने का भाव । मंदता । कमी । *(वि०)* १. तुलना में उतरती हुई । २. कम । न्यून । ५. धीमी ।

मंदील—*दे०* मदील ।

मंदीवाड़—*(ना०)* सस्तापन । सस्ताई । सूंगीवाड़ो । २. दे० मांदीवाड़ ।

मंदोदरी—*(ना०)* रावण की पत्नी ।

मंदोवर—दे० मंदोदरी ।

मंदोवरी—दे० मंदोदरी ।

मंदो—*(वि०)* १. धीमा । मंद । २. ढीला । सुस्त । शिथिल । जिसका भाव घट गया हो । मंदा । ४. घटिया । हलको । ५. कम कीमत का । सस्ता । सस्तो ।

मंशा—दे० मंसा ।

मंस—दे० मांस ।

मंसचर—*(वि०)* मांसाहारी ।

मंसब - दे० मनसब ।

मंसा—*(ना०)* १. मंशा । इच्छा । मनसा । मंछा । २. मरजी । खुशी ३. इरादा ।

मंसादेवी—दे० मनसादेवी ।

मंसामाता—*(ना०)* एक लोकदेवी । दे० मनसादेवी ।

मंसुख—*(वि०)* १. खारिज । २. बहिष्कृत । मसूख ।

मंसूबो—दे० मनसूबो ।

मा—*(ना०)* १. माता । जननी । २. दादी । ३. वृद्धा । ४. देवी । ५. लक्ष्मी । *(अव्य०)* मत । नहीं ।

माइ—*(ना०)* मातृ । माता ।

माइत—*(न०)* १. माता-पिता । मा-बाप । २. गुरुजन । बडेरा । ३. अभिजन ।

माइतपणो—*(न०)* १ माता-पिता के समान होने वा समझने का भाव । २. बड़प्पन ।

माइतर—दे० माइत ।

माइत्र—दे० माइत ।

माइसोर—*(न०)* कर्णाटक प्रदेश की राजधानी का नगर ।

माई—दे० माइ ।

माई-जायो—*(न०)* भाई । दे० माइ-रो-लाल ।

माई-बाप—*(न०)* १. माता-पिता । २. अभिजन । ३. अभिभावक ।

माई-रो-लाल—*(न०)* १. दानशीलता, वीरता और परोपकारिता इत्यादि कार्यों द्वारा अपनी माता की कोख को उज्ज्वल तथा यशस्वी बनाकर अपने जन्म को सार्थक बनाने वाला व्यक्ति । २. सुपुत्र । सपूत ।

माउ—*(ना०)* १. माता । २. वृद्धा स्त्री ।

माउजी—दे० माजी ।

माउल—*(ना०)* मामा । मातुल ।

माकड—दे० मांकड़ ।

माकड़लंको—दे० मांकड़लंकी ।

माकड़ी—दे० मांकड़ी ।

माकड़ो—दे० मांकड़ो ।

माकण—दे० मांकण ।

माकणी—दे० माकड़ी ।

मांकिड़मोयो—दे० मकरमोयो ।

मार्कंदक—*(न०)* १. आम । २. आम्रफल । ३. इंद्र ।

माकूल—*(वि०)* १. उचित । मुनासिब । २. यथेष्ट । ३. योग्य ।

माख—*(न०)* १. मक्खी, मच्छरों की कीट जाति । २. मक्खियों का झुंड । ३. नर मक्खी । मक्खियों का नर । मक्खा । माखो । ४. गर्व । ५. नशा । ६. क्रोध । ७. पछतावा । ८. उड़द ।

माखण—दे० मांखण ।

माखणियो—*(न०)* मक्खन । नवनीत । मांखण *(वि०)* मक्खन के समान । २.

चापलूस । खुसामदियो । ३. एक कपड़ा । ४. एक पत्थर । ५. एक घास ।

माखणियो भाटो—*(न०)* १. एक अति मुलायम पत्थर । चूरी भाटो । २. मक्खन के समान मुलायम और श्वेत पत्थर ।

माखी—*(ना०)* १. मक्खी । मक्षिका । २. २. मधुमाखी । मदमाखी । ३. बन्दूक की नली के अग्रभाग पर बना हुआ वह उभरा हुआ (मक्खी जैसा छोटा) अंश जिससे निशाना साधा जाता है । ४. शहद । मधु ।

माखीचूस—*(वि०)* कंजूस । मक्खीचूस ।

माखीचोर—*(न०)* मक्खी जैसा एक नर कीट जो मक्खियों को मारता है । माखीनाहर ।

माखीनाहर—दे० माखीचोर ।

माखीमद—*(न०)* शहद । मधु ।

माखीमार—*(वि०)* १. आलसी । सुस्त । २. कृपण । कंजूस । *(न०)* दे० माखी चोर । १. मक्खी मारने का उपकरण ।

माखी माळो—*(न०)* मधुमक्खियों का छत्ता ।

माखीवमण—*(न०)* शहद । मधु । मक्षिका-वमन ।

माखो—*(वि०)* १. बहुत अधिक खाने वाला । २. लंपट । ३. गंदा । मैला । *(न०)* १. नर मक्खी । २. अफीमची । अमलदार । बंधाणी ।

माग—*(ना०)* १. मार्ग । रास्ता । २. जगह । स्थान । ३. मैदान । ४. खाली जगह । मोकळास । मोकळाई ।

मागध—*(न०)* १. वंशावली पढ़ने वाली एक प्राचीन जाति । २. भाट । बंदी-जन ३. मगध देश का निवासी ।

मागधी—*(ना०)* मागध देश की एक प्राचीन प्राकृत भाषा ।

मागरवाळ—*(न०)* माँगने वाला । याचक ।

मागा *(ना०)* १. स्थान । जगह २. खाली जगह । मोकलास । रिक्त स्थान ।

माघ—*(न०)* १. पौष के बाद आने वाला महीना । २. 'शिशुपाल वध' नामक प्रसिद्ध काव्य के रचयिता दशवीं शती में श्रीमाल (भीनमाल मारवाड़) में हो गये संस्कृत भाषा के महाकवि ।

माघजी—*(न०)* १. ज्योतिषी २. शकुनी ।

माचणो—*(क्रि०)* १. मस्त होना । २. धन, जन, बल, इत्यादि से फूल जाना । गर्व करना । ३. हैसियत से अधिक बातें बनाना । शेखी मारना । ४. हैसियत से अधिक आगे पाँव बढ़ाना । ५. वर्षा की झड़ी लगना । खूब तेज वर्षा होना । ६. होना । बनना । घटना । ७. लगातार होते रहना । ८. युद्ध का अधिक तेज होना । ९. शुरु होना । १०. अनीति करना ।

माछ—*(न०)* १. मत्स्य । मछली । २. जल-जंतु । ३. गर्व । ४. मस्ती । ५. मच्छर । ६. हिम्मत । साहस । गाढ ।

माछर—*(न०)* मच्छर । डाँस ।

माछळी—*(ना०)* एक जलचर प्राणी । मच्छी । मछली ।

माछळो—*(न०)* १. वर्षा ऋतु में उदय होते हुये सूर्य की एक मत्स्याकार किरण जो तत्काल वर्षा होने की सूचक मानी जाती है । २. बड़ी मछली । ३. मछली के आकार की कोई वस्तु । ४. सोना, चाँदी को कसौटी पर परखने के लिए बनाये गये विविध बट्टे दार सोने के नमूनों में से एक कोई ।

माछी—*(ना०)* १. मछलियाँ पकड़ने का धंधा करने वाली एक जाति २. धीवर। मच्छीमार। ३. मछली। माछळी।

माछीगर—दे० माछी सं. १ और २।

माज—दे० माझ।

मा-जणियो—*(ना०)* सहोदर। भाई।

मा-जणी *(ना०)* बहिन। सहोदरा।

माजणो—दे० माजनो।

माजन - दे० महाजन।

माजना करणा—*(मुहा०)* लड़ना। झगड़ना। फजीता होना।

माजनें-रो—*(वि०)* समान गुण लक्षणों वाला (प्रायः निकृष्टता में)।

माजनो—*(ना०)* १. प्रतिष्ठा। आबरू। २. लक्षण। रंगढंग। ३. हैसियत। सामर्थ्य।

माजनो पाड़णो—*(मुहा०)* फटकारना। दुतकारना। बेआबरू करना।

माजम *(ना०)* १. मंग या भंग के घी से बनी एक मिठाई। २. भंग की माजूम। मक्कर।

माजरो—*(ना०)* १. वृत्तांत। २. घटना। ३. मामला। मांजरा।

मा-जाई—*(ना०)* बहन। भैण। मा-जणी।

मा-जायो—*(ना०)* भाई। मा-जणियो।

माजी—*(ना०)* १. वृद्ध विधवा स्त्री। २. वृद्धा। बुढ़िया। डोकरी। ३. विधवा दादी या माता। ४. माता। ५. पुत्रवधु की सास। ६. वृद्धा विधवा सास।

माजुम—दे० माजम।

माजून—*(ना०)* १. अवलेह के रूप में बनी औषधि। दे० माजम।

माजूफळ—*(ना०)* माजू वृक्ष का फल जो दवा बनाने या रंगने के काम आता है। माँया।

माझ—*(ना०)* १. मजा। आनन्द। २. २. गर्व। ३. रहस्य। भेद। ४. विवेक। ५. मर्यादा। सीमा। ६. मध्य। बीच। ७. इज्जत। *(अव्य०)* में, अन्दर। भीतर। दे० माझ।

माझमरात—दे० माँझलरात।

माझळ—दे० माँझळ।

माझळरात—दे० माँझळ रात।

माझा—*(ना०)* १. मर्यादा। सीमा। २. प्रतिष्ठा। ३. लाजशरम। ४. विवेक। ५. कुल, समाज, धर्म अथवा देश की मर्यादा।

माझी—*(ना०)* १. मुखिया। अगुआ। २. भील जाति।

माझी राणो—*(ना०)* १. भील जाति के लिये आदर सूचक शब्द। २. भील। ३. महाराणा की सेना का अग्रणी या प्रमुख सैनिक। ४. भील सैनिक।

माट—*(ना०)* १. मौन। खामोश। २. धीरज। सब्र। ३. समाप्ति। इति। ४. बड़ा घड़ा। मटका। माटो।

माट करणो—*(मुहा०)* १. चुप रहना। शांत रहना। २. चुप करना। शांत होना। ३. सब्र करना। धीरज धरना। ४. इति करना। बात झगड़ाओं को समाप्त करना। उदा—हमें तो माट कर माँटी।

माटली—*(ना०)* मटकी। मिट्टी का घड़ा।

माटी—*(ना०)* १. मिट्टी। २. शरीर। ३. मृत शरीर। लाश। ४. मांस।

माटो—*(ना०)* मिट्टी का बड़ा घड़ा। २. मिट्टी के घड़े का बना हुआ एक चर्म

वाद्य । एक बड़ा मटका जिसके मुँह पर चमड़ा मँढा रहता है। जो चरजा आदि स्तुति-गायन के समय बजाया जाता है। ३. पाणिग्रहण के बाद कन्या को ससुराल विदा करते समय दिया जाने वाला खाजा-पापड़ से भरा हुआ बड़ा माटा। ४. साहस वीरता इत्यादि आश्चर्यजनक कामों को करने वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में किया जाने वाला एक शब्द प्रयोग। ५. एक सम्पुट। सलुन-तकिया। तकिया कलाम। *(वि०)* १. मस्त। मस्त। २. भला। ३. जबरदस्त।

माठ—*(न०)* १. गर्व। २. स्वाभिमान। ३. सीमा। हद। ४. मेंड। ५. कमी। ६. शान्ति। चुप्पी। ९. सब्र। संतोष।

माठणो—*(क्रि०)* १. पत्थर, धातु आदि की घड़ाई, नक्काशी आदि पर सफाई का अन्तिम हाथ (फिनिशिंग) करना। मठारणो। २. घड़ना। टीपना। ३. कमी करना। ४. चुप रहना।

माठा-दिन—*(ना०)* बुरे दिन। बुरे दिन।

माठ-मनो—*(वि०)* १. कृपण। कंजूस। २. लोभी।

माठाधुया—*(न०)* १. ध्रुपद का एक भेद। २.मधुर ध्रुपद रागिनी। ३.संगीत में ताल का एक भेद (वाद्य)।

माठी—*(ना०)* १. कलाई में पहनने का सोने या चाँदी का ठोस कड़ा। २. एक प्रकार की मिठाई। ३. खाजा। ४. शस्त्रों पर चमक चढ़ाने का लोहे का एक टुकड़ा। *(वि०)* १. निर्बल। कमजोर। २.कामचोर। ३ अशुभ। बुरी ४. अवांछित। ५. मंदी। ढीली। धीमी। ६. उदास।

माठीवेळा—*(ना०)* संकट काल।

माठो—*(वि०)* १. निबुद्धि। मूर्ख। २. अवांछित। अनिष्ट। ३. अशुभ। बुरा। ४. ढीठ। धृष्ट। ५. काम से घबराने वाला। कामचोर। ६. काम ढंग से नहीं पताने वाला। ७. अकर्मण्य। ८. कपटी। धूर्त। ९. खोटा। १०. निर्बल। कमजोर। ११. अरुचिकर। १२. आलसी। १३. दृढ़। १४. कठिन। १५. दुखदायी। १६. मंद। धीमा। १७. मंथर। १८. अनुचित।

माड—*(न०)* १. जैसलमेर प्रदेश। २. मांड। माँड़ी। कलफ। ३. गर्व। अभिमान। *(क्रि० वि०)* जबरदस्ती से। बलात्।

माडधर—*(न०)* जैसलमेर प्रदेश। माड-धरा।

माडधरा—दे० माडधर।

माडधरो—*(न०)* १. माड देश का निवासी। जैसलमेरियो। २. माटी क्षत्री। माडेचो।

माडपह—*(न०)* १. माड प्रभु। माड प्रदेश का स्वामी। २. जैसलमेर का राजा।

माडपंच—*(न०)* बिना नियुक्त किये अपने आप बनने वाला पंच। बिना कहे लोगों की पंचायती करने वाला। धींगाणियो पंच। अड़बड़ पंच।

माड-रो-छात—*(न०)* माड देश (जैसलमेर राज्य) का राजा।

माडाँ—*(क्रि०वि०)* १. जबरदस्ती। बलात्। २. मन के उपरांत। मन मार कर। माडाणी।

माडाणी—दे० माडाँ।

माड़ी—*(वि०)* १. निकम्मी। २. कमजोर। ३. सुस्त। मंदी। *(ना०)* मा। माता।

माडी—*(ना०)* १. एक प्रकार की गाढ़ी कढ़ी। कढ़ी। २. कपड़े पर लेप करने के लिये जुआर या चावल के आटे की बनी राब। मांड़ी।

माडेचण—*(ना०)* जैसलमेर (माड) धरा की स्त्री। *(वि०)* माड प्रदेश की।

माडेची—दे० माडेचण। *(ना०)* आवड़ देवी।

माडेचो—*(ना०)* भाटी क्षत्री। *(वि०)* १. माड़ प्रदेश का रहने वाला। २. जैसलमेर का निवासी।

माडै—दे० माडाँ।

माड़ो—*(वि०)* १. मंद। सुस्त। धीमा। ढीला। २. निकम्मा। खराब। निकृष्ट। ३. दुर्बल। कमजोर। ४. अनुचित।

माढ—*(ना०)* १. मकान का एक बाजू का खुला भाग। २. मकान। ३. मंदिर। ४. एक मरु-स्थलीय प्रसिद्ध रागिनी। ५. विनय और प्रेम पूर्वक आग्रह। अनुरोध। ६. बहस।

माढी—दे० मढी।

माढू—*(ना०)* १. वीर पुरुष। २. घर का मुख्य पुरुष। मुखी। ३. सज्जन पुरुष। सत् पुरुष। ४. मित्र। ५. मनुष्य। पुरुष। ६. मानव। ७. मनुष्य जाति। स्त्री-पुरुष।

माण—*(ना०)* १. मान। सम्मान। २. गर्व। अभिमान। ३. स्वमान। स्वाभिमान। ४. हठ। जिद। ५. शक्ति। ६. मद्यपात्र। ७. शराब बनाने का पात्र।

माणक—*(ना०)* माणिक्य। एक लाल रत्न।

माणखो—दे० मानखो।

माणग—*(वि०)* १. ऐश्वर्य और अधिकारों का उपभोग करने वाला। २. भोगी। रसिक।

माणगर—दे० माणग।

माणण—*(वि०)* उपभोग करने वाला। *(ना०)* उपभोग करने की क्रिया या भाव।

माणणी—*(ना०)* स्त्री। *(वि०)* मानिनी। गर्विता।

माणणो—*(क्रि०)* १. उपभोग करना। २. उपयोग करना। ३. मौज करना। आनन्द करना। ४. संभोग करना। मैथुन करना।

माणतंबी—*(वि०)* मानहीन। प्रतिष्ठा-रहित। बेआबरू।

माणभंग—दे० मानभंग।

माणमोड़ो—*(वि०)* (शत्रुओं का) मान मर्दन करने वाला।

माणयड़—दे० मणियड़।

माणव—दे० मानव।

माणस—*(ना०)* १. आदमी। मनुष्य। २. कुटुम्बीजन। परिजन। ३. आश्रित लोग। सेवक। ४. साथ में रहने वाले लोग। ५. पति। *(ना०)* १. स्त्री। लुगाई। २. दासी। ३. स्त्री-समाज। ४. प्रजा। ५. पत्नी। जोड़ायत। जोरू।

माणसर—*(ना०)* मानसरोवर। पाबासर।

माणसियो—*(ना०)* १. आँख की पुतली। आँख के बीच का काला भाग। पुतली। २. मनुष्य।

माणँग—दे० माणग।

माणिक्य—दे० माणक।

माणिणी—दे० मानिनी।

माणियो—*(ना०)* १. एक मन (४० सेर) चालीस सेर का तोल। मणीको। २. एक माणे का माप। चार पायली का माप।

माणी—*(ना०)* बारह मन का तौल । *(वि०)* मान वाला । मानी ।

माणीगर—*(वि०)* १. भोगी । उपयोग करने वाला । २. स्वाभिमानी । ३. दानी । **माणेराव** ।

माणू—*(न०)* मनुष्य । आदमी । **मिनख** ।

माणेतण—दे० मानेतण ।

माणेराव—दे० माणीगर ।

माणेरो—*(वि०)* १. मानवाला । अभिमानी । २. स्वाभिमानी ।

माणो—*(न०)* १. अनाज मापने का एक पात्र जो चार पायली का होता है । २. चार सौ भरी का एक माप । ३. माणो माप की वस्तु ।

माणोसर—*(न०)* मानसरोवर । **मानसर** । **पावासर** ।

मात—*(वि०)* १. समान । तुल्य । २. परास्त । ३. तुच्छ । नगण्य । *(अव्य०)* भर । मात्र । केवल । सिर्फ । *(ना०)* १. माता । जननी । २. दुर्गा । शक्ति । देवी । ३. अक्षर के ऊपर लगाई जाने वाली 'ए' स्वर की मात्रा । 'ए' स्वर की मात्रा का चिन्ह—'ै' । ४. पराजय । हार । ५. सामर्थ्य । ६. परिमाण ।

मातबर—*(वि०)* १. धनवान । सम्पन्न । २. प्रतिष्ठित । ३. विश्वसनीय । साहूकार । विश्वस्त । ४. पुष्ट । दृढ़ ।

मातबरी—*(ना०)* १. धैर्य । २. गंभीरता । ३. साहूकारी । ४. क्षमता । ५. विश्वसनीयता ।

मातभोम—*(ना०)* मातृभूमि ।

मातम—*(न०)* १. मृतक शोक । २. मृत्युशोक । ३. दुख । शोक ।

मातमपुरसी—*(ना०)* मृतक के घर जाकर उसके शोकाकुल कुटुम्बियों को दी जाने वाली सान्त्वना । **बुकाव** । **काज** । मातमपुर्सी ।

मातमपोसी—*(ना०)* मार । **पिटाई** (व्यंग्य में) । दे० मातमपुरसी ।

मातमा—*(न०)* घर बारी जैन यती । वह जैन साधु (जती) जो गृहस्थी बन गया हो ।

मातर—*(ना०)* एक मिष्टान्न । कसार । कंसार । *(अव्य०)* १. मात्र । सिर्फ । २. केवल । *(वि०)* सब । समस्त ।

मातरा—*(ना०)* १. धन सम्पत्ति । पूंजी । **मायामातरा** । २. वर्ण के आगे, पीछे ऊपर, नीचे लगने वाला स्वर चिन्ह । मात्रा । ३. वर्ण के ऊपर लगने वाला स्वर चिन्ह । यथा 'के' के ऊपर की मात्रा ।

मातल—*(न०)* १. महावत । २. इन्द्र का हाथी । मातलि ।

मातलोक—*(न०)* १. मातृलोक । २. मृत्युलोक ।

मातवाट—*(न०)* मातृमार्ग । मातृपक्ष ।

मातहत—*(वि०)* १. अधीनस्त । २. पराधीन ।

मातंग—*(न०)* हाथी । गज । हस्ती ।

मातंग-धू—*(न०)* गणेश । गजानन ।

मातंगपुर—*(न०)* दिल्ली । हस्तिनापुर ।

मातंगी—*(न०)* हाथी । *(ना०)* १. पार्वती । २. भंग । विजया । भांग । ३. हथिनी ।

माता—*(ना०)* १. देवी । शक्ति । २. मां । जननी । ३. शीतळा देवी । ४. शीतळा रोग । चेचक । ५. गौ । गाय । ६. पृथ्वी ।

माताजी—दे० माता १,२,३—*(ना०)* १. गुरुभाइन । गुरानी । २. वृद्ध स्त्री । ७. सासु । ८. वृद्ध विधवा स्त्री ।

माता अतवारो—*(न०)* माता की मृत्यु पर किया जाने वाले भोज। मौसर। औसर।

माती—*(वि०)* १. हृष्ट-पुष्ट। बलवती। २. मस्तानी। मस्त। ३. मोटी। स्थूल।

माती मुरगी—*(न०)* धनवान व्यक्ति (व्यंग्य में)।

मातुल—*(न०)* मामा।

मातृ—*(ना०)* माता।

मातृभाषा—*(ना०)* व्यक्ति की माता की अथवा जाति की भाषा। मादरी जबान।

मातृभूमि—*(ना०)* जन्मभूमि। मादरे-वतन।

मातृका—*(ना०ब०व०)* १. सप्त मातृकाएं। २. इनमें से कोई एक। ३. विवाहादि-मांगलिक अवसरों पर स्थापित की जाने वाली माया।

माती—*(वि०)* १. हृष्ट-पुष्ट। बलवान। २. मत्त। मस्त। ३. मोटा। स्थूल। ४. बहुत बरसने वाला। ५. खूब बरसा हुआ (चौमासा)। ६. अधिक। खूब। ७. खूब अच्छा। श्रेष्ठ। ८. बदबूदार। (घी, तेल)। ९. घमंडी।

मात्र—*(अव्य०)* १. केवल। सिर्फ। भर। २. समग्रता वाचक शब्द, यथा—मित्रमात्र, जीवमात्र। ३. परिमाण तथा मापवाचक शब्द, यथा—रजमात्र। मांगळमात्र।

मात्रा—*(ना०)* १. औषधि का एक बार सेवन करने योग्य परिमाण। खुराक। २. परिमाण। माप। मिकदार। ३. बारहाखरी लिखते समय स्वर चिन्ह की वह रेखा जो अक्षर के ऊपर लगाई जाती है। मात्रा। ४. अक्षर में लगाई जाने वाली स्वर सूचक रेखा। ५. ह्रस्व स्वर के उच्चारण में लगने वाला समय। ६. काव्य या संगीत में समय की गणना की इकाई। ७. अंश। ८. शक्ति। ९. वर्ण के ऊपर, नीचे, आगे और पीछे लगने वाला स्वरचिन्ह। १०. सम्पत्ति।

मात्राछंद—*(न०)* मात्रिक छंद।

मात्रादोष—*(न०)* छंद में मात्रा मेल का दोष।

मात्राबंध—*(न०)* मात्रिक छंद।

मात्रामेळ—*(वि०)* १. मात्राओं की माप वाला या गणना वाला (छंद)। २. छंद में मात्राओं का मेल। ३. जिसमें न्यूनाधिक मात्राओं के ऊपर पद्य बंध का आधार रहता है वह (छंद)।

मात्रिक—*(वि०)* १. मात्राओं से संबंधित। २. मात्रामेल वाला (छंद)।

मात्रिका—*(ना०ब०व०)* सप्त मातृकाएं। २. इनमें से कोई एक।

मात्रेही—*(ना०)* सोतेली मां। विमाता। दुमात।

माथ—*(न०)* मस्तक। माथा। *(क्रि०वि०)* ऊपर।

माथाकूट—दे० माथापची।

माथापच—दे० माथापची।

माथापची—*(ना०)* १. मग्जपच्ची। २. हुज्जत। बहस। ३. व्यर्थ का वाद-विवाद या तर्क-वितर्क। ४. बहुत सोचने-विचारने का विषय। झंझट। झमेला।

माथाफोड़ी—दे० माथापची।

माथासरो—दे० मथारो।

माथासूळ—*(न०)* सिरदर्द।

माथुर—*(न०)* १. कायस्थों की एक अल्ल। २. ब्राह्मणों की एक अल्ल।

माथै—*(क्रि०वि०)* १. ऊपर। पर। २ सहारे। ३. भरोसे। ४ सिर पर। सिर के ऊपर।

माथै आणो—*(मुहा०)* १. बदनामी आना। २. बदनाम होना। ३. इल्जाम आना।

माथै करणो—(मुहा०) १. कर्ज लेना। २. उधार खरीदना।

माथै मंडाणो—*(मुहा०)* उधार लेकर दस्तावेज लिख देना।

माथै हाथ देणो—*(मुहा०)* पश्चाताप करना। पछताना।

माथै हाथ फेरणो—*(मुहा०)* सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देना।

माथै हाथ होणो—*(मुहा०)* कृपा दृष्टि होना।

माथै होणो—*(मुहा०)* इलजाम लगाना।

माथो—*(न०)* १. मस्तक। सिर। २. किसी वस्तु के ऊपर का भाग। ३. दिमाग। बुद्धि।

माथो ऊंचो राखणो—*(मुहा०)* प्रतिष्ठा बनाये रखना।

माथो गूंथणो—*(मुहा०)* सौभाग्यवती स्त्री के सिर के बालों में विविध पट्टियें बनाना, बोर (रखड़ी), गेडी आदि गूंथना, मांग बनाना व वेणी आदि गूंथ कर सिर को अलंकृत करना।

माथो धोवणो—*(मुहा०)* प्रसूता का प्रथम स्नान करना।

माथो पटकणो—*(मुहा०)* १. सिरतोड़ मेहनत करना। २. खुशामद करना। चापलूसी करना। ३. हार मानना। ४. खूब प्रयत्न करना। मार-कोशिश करना।

माद—*(ना०)* १. खलिहान में अनाज की बालों को बैलों द्वारा कुचलवा कर लगाया हुआ ढेर। २. उन्माद। नशा। ३. अहंकार। गर्व। दे० मोद सं० ४, ५।

मादक—*(वि०)* नशा उत्पन्न करने वाला। नशीला।

मादकता—*(ना०)* १. नशा। २. मस्ती।

मादर—*(ना०)* माता।

मादळ—*(न०)* १. मृदंग। २. पखावज। ३. ढोल। ४. हाथी। ५. नहीं गरम और नहीं शीतल। समशीतोष्ण। मोतदिल।

मादळपाट—*(न०)* एक प्रकार का सूती कपड़ा।

मादळियो—*(न०)* १. गले में पहिनने का एक आभूषण। २. स्त्रियों के हाथ में बांधने का सात दानों का एक गहना। ३. अभिमंत्रित जंत्र को सुरक्षित रखने के लिये उसे गले या बाहु में बांधने का एक साधन। मादलिया। तावीज।

मादा—*(ना०)* १. स्त्री जाति का प्राणी। २. पशु या पक्षियों में स्त्री जाति। ३. स्त्री। नारी।

मादियो—दे० माद्यो।

मादी—दे० मादा।

माद्दो—*(न०)* १. समझ। २. विवेक। ३. योग्यता। शब्द की व्युत्पत्ति। माद्दा।

माद्यो—*(न०)* १. एक अपशब्द व गाली। २. गोला। दास। *(वि०)* १. लुच्चा। २. कमीना। ३. अत्याचारी।

माद्री—*(ना०)* पांडु पुत्र नकुल और सहदेव की माता का नाम।

माधव—*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु। ३. वैशाख मास। ३. वसंत ऋतु।

माधवाचार्य—*(न०)* द्वैतवाद के प्रतिपादक और वेदान्त सूत्र के भाष्यकार दक्षिण के एक प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य। माध्वाचार्य।

माधवी—*(ना०)* १. एक लता। २. दुर्गा। ३. मिश्री। नवात। ४. एक प्रकार की शराब। ५. तुलसी। ६. कुटनी।

माधियो—दे० माधो।

माधुरज—*(ना०)* १. माधुर्य। मिठास। २. सौंदर्य।

माधुरी—*(ना०)* १. शोभा। २. मिठास। ३. मदिरा। दे० मधुरी। *(वि०)* मीठी।

माधो—दे० माधव।

माधोदास दधवाड़ियो—*(ना०)* रामरासो, गुण-गजमोक्ष और 'भाखा-दसमस्कंध' आदि के रचयिता प्रसिद्ध भक्त कवि।

माध्यो—दे० माधो।

मान—*(ना०)* १. सम्मान। आदर। २. आवक। प्रतिष्ठा। आदर। ३. स्वागत सत्कार। ४. अभिमान। गर्व। ५. स्वाभिमान। ६. ढोलक, मृदंग आदि वाद्यों पर बजाया जाने वाला विराम ताल। ७. परिमाण। ८. प्रकार। ढंग। भांति। *(अव्य०)* १. कारण। हेतु। २. लिये। वास्ते। *(वि०)* समान।

मानख—*(ना०)* १. मनुष्य। आदमी। २. मानव। मिनख।

मानखाई—*(ना०)* १. मनुष्यता। मानवता। मिनखपणो। २. विवेक।

मानखो—*(ना०)* १. मनुष्य जीवन। २. मनुष्यों की भीड़। जनसमूह। ३. मानव समाज। लोग। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत। ५. गुण। लक्षण।

मानणो—*(क्रि०)* १. मानना। स्वीकार करना। २. आज्ञा पालन करना। ३. धारण करना। ४. महत्व देना। ५. अनुकूल पड़ना। ६. विश्वास करना। ७. ध्यान देना। ८. मान्यता देना। ९. प्रभावित होना।

मानता—*(ना०)* १. मान्यता। २. प्रतिष्ठा। ३. पुष्टता। सिद्धता। ३. प्रतिज्ञा। आखड़ी। ५. किसी कार्य की सिद्धि के निमित्त किसी देवता को संकल्प की हुई भेंट जो कार्य हो जाने पर उस देवता को अर्पित की जाती है। पूजा। मनौती। बाधा। ६. श्रद्धा। भक्ति।

मानतान—*(ना०)* १. मान-मनुहार। २. मान सम्मान। ३. आग्रह। अनुरोध। ४. प्रतिष्ठा। आवरू।

मानसाळ—*(ना०)* मानसरोवर।

मानपत्र—*(ना०)* अभिनंदन पत्र।

मानभंग—*(ना०)* अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। अपमान। माणभंग। *(वि०)* अपमानित।

मानभोग—*(ना०)* हलुवा। सीरा। (पुष्टी-मार्गीय)।

मान मरतबो—*(ना०)* १. प्रतिष्ठा। इज्जत। २. पद-प्रतिष्ठा। ओहदो-आवरू।

मान-मरोड़—*(ना०)* सम्मान और स्वाभिमान। *(वि०)* मान भंग करने वाला।

मानमर्जादा—*(ना०)* १. विवेक। अदब। २ मानमर्यादा।

मानमंदिर—*(ना०)* १ वेधशाला। २. मान-गृह। कोप-भवन।

मानव—*(ना०)* १. मनुष्य। आदमी। मिनख। २. पुरुष जाति। *(वि०)* १. मनुष्य संबंधी। २. मनुष्योचित।

मानव-जीवन—*(ना०)* मनुष्य जीवन। मनुष्य का जीवन। मिनखारूप। मिनखजमारो।

मानवता—*(ना०)* १. प्रत्येक के ऊपर प्रेम। २. मनुष्य का कर्तव्य। ३. मनुष्यता।

आदमीयता। मिनखपणो। ४. हित बुद्धि।

मानवंती—*(ना०)* १. गर्विता। २. मानवती।

मानवी—*(ना०)* मनुष्य। *(वि०)* मनुष्य संबंधी। मानवीय। *(ना०)* स्त्री।

मानवीकरण—*(ना०)* साहित्य तथा लोक वार्ताओं में जड़ वस्तुओं को परस्पर संभाषण कराने की काल्पनिक क्रिया।

मानस—*(ना०)* १. मन। हृदय। २. कामदेव। ३. तुलसीकृत रामायण। रामचरित मानस। ४. मानसरोवर। ५. संकल्प विकल्प। ६. मनुष्य। *(वि०)* १. मन के द्वारा होने वाला। २. मन से संबंधित। मन का।

मानसओक—*(ना०)* १. कामदेव। २. हंस।

मानसर—*(ना०)* मानसरोवर। पाखासर।

मानसरोवर—*(ना०)* कैलाश पर्वत पर हिमालयगत एक प्रसिद्ध और पवित्र झील। पाखासर।

मानसिक—*(वि०)* १. मन की कल्पना से उत्पन्न। २. मन संबंधी।

मानसी—*(वि०)* मन का। मन से उत्पन्न। *(ना०)* एक प्रकार की भक्ति।

मानसी पूजा—*(ना०)* १. मन में की जाने वाली पूजा। २. मन से की जाने वाली पूजा।

मानहानि—*(ना०)* अपमान।

मानिनी—*(वि०)* १. गर्विणी। मान करने वाली। २. रूठने वाली।

मानिंद—*(वि०)* सदृश्य। समान। तुल्य।

मानी—*(वि०)* १. स्वाभिमानी। २. अभिमानी। *(ना०)* १. अर्थ। मतलब। २. भेद। ३. प्रयोजन।

मानीती—दे० मानेतण।

मानीतो—*(वि०)* १. माना जाने वाला। प्रेमपात्र। २. कृपा पात्र।

मानुख—*(ना०)* मनुष्य। मिनख। मनख।

मानुस—*(ना०)* मनुष्य। मनख। *(वि०)* मनुष्य संबंधी। मानवी।

मानेतण—*(ना०)* पति द्वारा मानिता पत्नी। विशेष प्रिय पत्नी, (अनेक पत्नियों में से)। *(वि०)* १. मानिनी। गर्विता। २. विशेष प्रिय।

मानेती—दे० मानेतण।

मानो—*(अव्य०)* जैसे। गोया। आखो। उत्प्रेक्षा अलंकार में प्रयुक्त शब्द।

मान्य—*(वि०)* १. आदरणीय। माननीय। २ स्वीकार करने योग्य।

मान्यता—*(ना०)* १. मान्य होने अथवा माने जाने की स्थिति या भाव। २. मन में स्थिर सिद्धांत, तत्व, तथ्य या बात। ३. किसी बात का किसी संस्था द्वारा योग्य या प्रामाणिक माना जाना।

मान्यवर—*(वि०)* बहुत माननीय।

माप—*(ना०)* १. परिमाण का कोई पात्र जिसे भर कर किसी वस्तु को मापा जाय। परिमाण-पात्र। मापने का उपकरण। मापियो। २. मापने की क्रिया। भराई। ३. माप में भर कर के निकाला हुआ परिमाण। सीमा। हद। (भाव वाचक) यथा—'इण भक्ति रो कोई माप नहीं।'

मापणियो—*(वि०)* माप करने वाला। *(ना०)* मापने का पात्र। परिमाण पात्र। मापणी। माप। मापणो।

मापणी—*(ना०)* १. मापने का काम। २. मापने का पात्र। माणो, पायलो, पायली, टीपरो, अदोळी आदि पात्र या

उपकरण । मापणियो । मापणो । ३. रस्सी । डोरी । जेवड़ी ।

मापणो—*(क्रि०)* १. परिमाण-पात्र में भर कर के किसी वस्तु का परिमाण निकालना । भराई करना । माप करना । २. तुलना करना । ३. थाह लेना । ४. अनुमान करना । *(न०)* मापने का उपकरण । परिमाण-पात्र ।

मापियो—दे० माप सं. १ ।

मा-पेट—*(वि०)* सहोदर ।

मा-पेट-बहन—*(ना०)* सहोदरा । सगी बहन । सोदरी ।

मा-पेट-भाई—*(न०)* सहोदर भाई । सगो-भाई ।

मापो—*(न०)* १. अनुमान । २. परिमाण । ३. एक माप । ४. मापने का पात्र । ५. कृषक से लिया जाने वाला एक कर । ६. सीमा । (भाव वाचक) । ७. पर्दा (घोड़ा गाड़ी का) । ८. चुंगी ।

माफ—*(वि०)* क्षमा किया हुआ । *(न०)* क्षमा । छमा ।

माफक—*(वि०)* १. मुआफिक । अनुकूल । २. साधारण । मामूली । ३. कम । आवश्यकतानुसार नहीं । ठीक सर । ४. बराबर । समान । ५. थोड़ा । कम ।

माफकत—*(ना०)* अनुकूलता । *(वि०)* अनुकूल ।

माफकसर—*(अव्य०)* १. न थोड़ा न ज्यादा । २. निभाया जा सके जितना । ३. आवश्यकतानुसार ।

माफग—दे० माफक ।

माफगत—दे० माफकत ।

माफिक—दे० माफक ।

माफिजखानो—*(न०)* वह स्थान जहाँ मुकदमों की पुरानी फाइलें रहती हैं। रेकॉर्ड ऑफिस । मुहाफिजखानो ।

माफी—*(ना०)* १. क्षमा । २. मुक्ति । छुट्टी । *(वि०)* करमुक्त (खेत, गांव आदि) ।

माफीदफतर—दे० माफिसखानो ।

माफीदार—*(न०)* १. वह व्यक्ति जिसकी भूमि का भूमि कर नहीं लिया जाता हो । २. जिसको माफी की भूमि मिली हो ।

माफो—*(न०)* हरिण की नाभि में उत्पन्न होने वाली कस्तूरी की गांठ ।

मा-बाप—*(न०ब०व०)* १. मातापिता । २. अन्त्यज तथा भिखारियों के द्वारा उच्चवर्ग को किया जाने वाला एक संबोधन । ३. माता पिता के समान पद धारण करने वाला ।

माम—*(ना०)* १. अहंकार । २. शक्ति । ३. अधिकार । ४. प्रतिष्ठा । इज्जत । ५. विजय । ६. दृढ़ता । ७. ममता । ८. साहस । ९. अभिलाषा । १०. संपत्ति । *(वि०)* दीन । गरीब ।

मामड़देव—*(न०)* मामोजी नामक एक लोक देवता ।

मामड़ियाई—*(ना०)* एक लोक देवी । आवड़देवी ।

मामलत—दे० मामलात ।

मामलात—*(ना०)* १. साधारण बात । २. विवाद । ३. घटना ।

मामळावणो—*(क्रि०)* मुँह में रखी हुई चीज को इधर-उधर फिराते रहना । चुगलना । चुबलना । चुगळणो ।

मामलियो—दे० मामोलियो । *(न०)* मामा (तुच्छकार में) ।

मामलो—*(न०)* १. युद्ध । २. झगड़ा । ३. विवाद । ४. मुकदमा । केस । ५. दुर्घटना । ६. घटना । ७. काम ।

विषय । ८. रौब । प्रभाव । ९. सम्मान । १०. वैभव । ११. प्रतिष्ठा । मान । १२. आक्रमण । १३. दशा । स्थिति । १४ वृतान्त । हाल ।

मामस—*(ना०)* सास की भाभी । मामी सास । मान्नी सासू ।

मामसरो—*(ना०)* सास का भाई । मांमी ससरो ।

मामाजी-रो-हींड—दे० रणोही या हींड ।

मामाणो—*(ना०)* मामा का घर । ननिहाल । नानाणो ।

मामा-मुरकी—*(ना०)* कान के ऊपर के भाग में पहनी जाने वाली एक बाली ।

मामाळ—दे० मामाणो ।

मामालूणी—*(ना०)* एक घास ।

मामी—*(ना०)* मामा की पत्नी । माता की भाभी ।

मामी-सासरो—*(ना०)* सास का पीहर ।

मामी-सासू—*(ना०)* सास की भाभी । मामस ।

मामी-सुसरो—*(ना०)* सास का भाई । मामसरो ।

मामू—*(ना०)* मामा ।

मामूणो—दे० मामाणो ।

मामूर—*(वि०)* १. आवश्यकीय । २. सारा । सब । ३. पूर्ण । भरा हुआ । ४. आबाद । *(क्रि०वि०)* १. पूर्ण रूपेण । सर्वथा । बिल्कुल । २. आवश्यकतानुसार । ३. नियुक्त । *(ना०)* सामान । सामग्री ।

मामूली—*(वि०)* १. साधारण । सामान्य । २. सरल । सीधा । ३. छोटा (पद, धन में) ।

मामेरात—*(ना०ब०व०)* बहिन के पुत्र या पुत्री के विवाह में भाई अथवा उसके कुटुम्बीजन, जो बहिन के यहाँ भात भरने को जाते हैं ।

मामेरातण—*(ना०)* भात भरने जाने वालों के साथ जाने वाली बहिन के पीहर की स्त्री या स्त्रियां । मामेरातण ।

मामेरातणी—दे० मामेरातण ।

मामेरातिया—दे० मामेरात ।

मामेरो—*(ना०)* भानजे या भानजी के विवाह में मामा की ओर से नकद, आभूषण और वस्त्रादि भेंट रूप में देने की एक वैवाहिक प्रथा । मायेरो । भात । किरियावर । मोसाळो ।

मामो—*(ना०)* माता का भाई । मामा । मातुल ।

मामो-खेजड़ो—दे० मामोजी ।

मामोजी—*(ना०)* १. जालोर के कान्हड़दे सोनगरा और अल्लाउद्दीन बादशाह के युद्ध मे कान्हड़दे की ओर से अप्रतिम वीरता दिखाकर वीरगति को प्राप्त हुआ जो 'मामोजी' के नाम से एक लोक देवता की भांति पूजा जाता है । 'चौहान कल्प द्रुम' में इस वीर का नाम कर्मसिंह लिखा है । २. वीर गति को प्राप्त करने वाला परोपकारी योद्धा । ३. मामा के लिए आदर सूचक शब्द ।

मामोलियो—*(ना०)* वीर बहूटी । इन्द्रवधु । मामलियो । मामोल्यो । मामूनी ।

मामोलो—दे० मामोलियो ।

माम—*(ना०)* १. आशा । २. देवी ।

मायड़—*(ना०)* माता । मां । (प्रेम तथा सम्मान में ।)

मायत—दे० मायत ।

मायनो—*(न०)* अर्थ । मतलब ।

मायरा-री-गुफा—*(ना०)* प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान जो महाराणा प्रताप का शस्त्रागार था और जहां से छापामार युद्ध किया जाता था । यह गुफा गोगूंदा और हल्दी घाटी के मध्य स्थित है ।

मायरो—*दे० मामेरो ।*

माया—*(ना०)* १. जिसके द्वारा ब्रह्माण्ड रचा गया अथवा भासमान होता है, वह आदि शक्ति । २. ईश्वर की एक प्रबल बीज रूप शक्ति जो प्रपंच की कारणभूता है । ३. प्रकृति । ४. अविद्या । माया का एक भेद । ५. अज्ञान । ६. प्रपंच । ७. धोखा । छल । ८. बंधन । ९. भ्रम । मोह । १०. ममता । ११. जादू । १२. करतूत । १३. कला । १४. निंद्यकर्म । १५. वासना । १६. स्नेह । १७. धन । सम्पत्ति । १८. विवाह के दिन स्थापित की जाने वाली मंगलरूप मातृका । माया । १९. माया के लोकगीत । २०. लक्ष्मी । २१. चमत्कार । २२. देवी । शक्ति । २३. सप्तपुरियों में से एक । २४. जगत । सृष्टि ।

मायाजाळ—*(न०)* १. गृहस्थी का जंजाल । २. मोह । ३. सांसारिक बंधन । झंझट । ४. धोखा ।

मायापति—*(न०)* १. ईश्वर । २. धनवान । धनाढ्य ।

माया-मता—*(ना०)* धन-सम्पत्ति । माया-माया । माया-मात्रा ।

माया-ममता—*(ना०)* १. स्नेह । प्रेम । २. दया । कृपा । ३. मया और ममत्व ।

माया-माणीगर *(वि०)* १. वैभव का भोगने वाला । २. मौज करने वाला । ३. वैभवशाली ।

माया-मातरा—*दे० मायामता ।*

माया-मात्रा—*दे० मायामता ।*

मायाळू—*(वि०)* १. प्रीतिवाला । प्रेमी । हेताळ । २. दयालु ।

मायावंत—*(न०)* धनवान ।

मायावाद—*(न०)* १. वेदान्त सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म से भिन्न जगत का अनुभव यह माया । २. ब्रह्म को सत्य और जगत को मिथ्या मानने का सिद्धान्त ।

मायावी—*(न०)* धोखाबाज । छली । छळियो । *(वि०)* माया संबंधी ।

मायाँ—*(ना०ब०व०)* १. विवाह आदि अवसरों पर पूजी जाने वाली सात लोक मातृकाएँ । २. बालकों के रोगों में जिनका प्रकोप समझा जाता है वे सात मलिन लोकदेवियां । मावड़ियां । मायांसा । मैलड़ियाँ ।

मायांजी—*दे० मायां ।*

मायूस—*(वि०)* १. उदास । २. हताश । निराश ।

मायेरो—*दे० मामेरो ।*

मार—*(ना०)* १. प्रहार । चोट । २. मार-पीट । ठोका-पीटी । ३. मृत्यु । ४. कामदेव । ५. धतूरा । ६. धक्का । ७. आक्रमण । ८. विष । ९. अत्यधिक परिश्रम का बोझा । १०. अस्त्र की दूरमार (Range) व संहारक शक्ति । ११. लक्ष्य । १२. हानि । नुकसान । १३. युद्ध । १४. पराजय । हार । *(वि०)* मारने वाला ।

मार-उपावण—*(न०)* १. मारने वाला और उत्पन्न करने वाला । २. मार करके उत्पन्न करने वाला । परमेश्वर ।

मारक—*(वि०)* १. मारने वाला । २. किसी के प्रभाव को नष्ट करने वाला (औषधि आदि) । ३. अनिष्टकारी (ग्रहादि) ।

मारकणो—*(वि०)* १. मारने-पीटने की आदत वाला । २. सींग पांव आदि से मारने की आदत वाला (पशु) ।

मारकंड—*दे०* मार्कंड ।

मारकाट—*(नां०)* मारामारी । मारने और काटने की क्रिया । लड़ाई ।

मारकुओ—*(नं०)* १. आक्रमणकारी । २. हरण कर ले जाने वाला । ३. मारने वाला । ४. प्रहार करने वाला । ५. प्रहार झेलने वाला । मारकू ।

मारकू—*(वि०)* १. लुटेरा । २. मारने वाला । *दे०* मारकुओ ।

मारकेट—*(नं०)* १. बाजार । २. मंडी ।

मारकेश—*(नं०)* जन्म कुंडली में पड़ने वाला अमंगलकारी ग्रहों का योग ।

मारको—*(वि०)* १. मारने वाला । २. जोरदार । बलवान । वीर । ३. हौशियार । चतुर । ४. चालाक । धूर्त । ५. युद्ध का । ६. युद्ध सूचक । *(नं०)* १. निशान । चिन्ह । २. रेलवे से भेजे जाने वाले माल पर लिखा जाने वाला विलटी नम्बर तथा गंतव्य स्थान का कोड शब्द । ३. प्रहार ।

मारखाऊ—*(वि०)* मार खाने की आदत वाला ।

मारखाणो—*(क्रि०)* १. मारखाना । पिटना । २. हारना । ३. पिछड़ जाना । ४. धोखा खाना । ५. लूट कर खाना । लूट करना । लूटना ।

मारग—*(नं०)* १. मार्ग । रास्ता । २. उपाय । ३. मत । ४. सम्प्रदाय । ५. प्रकार । ढंग । तरीका । ६. कर्त्तव्य ।

मारगण—*(नं०)* १. तीर । बाण । २ २. याचक । भिक्षुक । मंगता ।

मारग काढणो—*(महा०)* युक्ति सोचना । उपाय निकालना ।

मारग कापणो—*(मुहा०)* १. यात्रा समाप्त करना । २. जीवन यात्रा समाप्त करना ।

मारग चालणो—*(मुहा०)* १. रास्ते पर लाना । २. काम पर लगाना ।

मारग चालणो—*(मुहा०)* १. नीति अनुसार व्यवहार करना । लोक सम्मत नीति अथवा परम्परा का पालन करना ।

मारग छोड़णो—*(मुहा०)* १. कुमार्गी होना । बदचलन होना । २. बहेड़ों की रीति-नीति को त्याग करना ।

मारग झालणो—*(मुहा०)* १. रास्ते पर आना । २. काम पर लगना ।

मारग दिखाणो—*(मुहा०)* १. काम करने का ढंग बताना । २. रास्ता दिखाना ।

मारग लागणो—*(मुहा०)* १. दुश्चरित्र का सन्मार्ग पर लगना । २. बेकार का काम पर लगना ३. मर जाना । ४. खतम होना ।

मारग वहणो—*(मुहा०)* *दे०* मारग चालणो ।

मारगियो—*दे०* मारग । बाटड़लो ।

मारगी—*(वि०)* मार्ग सम्बन्धी । *(नं०)* अनुयायी ।

मारगू—*(नं०)* १. पथिक । २. मार्गदर्शक । *(वि०)* मार्ग पर चलने वाला ।

मारजण—दे० मार्जन ।

मारजणी—*(ना०)* मार्जनी । बुहारी । सोहनी । **सारमणी** ।

मारजा—*(ना०)* महाजनी पाठशाला का शिक्षक । महाजनी शिक्षक । वाणीकी पढ़ाने वाला **गुरां** । (बीकानेर में) ।

मारजित—*(ना०)* १. महादेव । शिव । २. बुद्ध ।

मार-जिवाड़ण—१. मारने और जिलाने वाला । २. मारकर जिलाने वाला । ईश्वर ।

मारण—*(ना०)* १. मारने की क्रिया । २. मारने का तांत्रिक प्रयोग । ३. विष । *(वि०)* मारने वाला ।

मारणारो—*(वि०)* मारने वाला ।

मारणियो—*(वि०)* मारने वाला ।

मारणो—*(क्रि०)* १. मारना । २. वध करना । प्राण लेना । २. मारना । पीटना । चोट पहुंचाना । ३. हराना । ४. प्रभाव घटाना । ५. गुण धर्म का नाश करना । ६. लूटना । ७. पछाड़ना । ८. प्रहार करने के लिए हाथ उठाना । ठोंकना । ९. धातु को भस्म करना । १०. छोड़ना । फेंकना तीर पत्थर आदि का ११. मिटाना । दूर करना । *(वि०)* मारने वाला ।

मारतंड—दे० मार्तंड ।

मारतोल—*(ना०)* बड़ा हथोड़ा ।

मारदड़ी—*(ना०)* गेंद का एक प्राचीन खेल ।

मारधाड़—*(ना०)* १. आक्रमण और मार-काट । २. धाड़ा और मारकाट ।

मारपीट—*(ना०)* १. हाथापाई । मारा-मारी । २. पिटाई । ३. मारने और पीटने की क्रिया ।

मारफत—*(अव्य०)* द्वारा । जरिये ।

मार-फाड़—*(वि०)* १. साहसी । हिम्मती । २. वीर । बहादुर । *(ना०)* मारने और फाड़ने की क्रिया ।

मार-मार—*(ना०)* १. मारामारी । २. झगड़ । *(क्रि० वि०)* अत्यन्त शीघ्रता से ।

मारमोरा—*(ना०)* बिलाड़ा (मारवाड़) का एक ऐतिहासिक **बगीचा** । इसके निकट कल्पतरु नाम का एकविशाल वट वृक्ष है जिसकी ऊँचाई २५० हाथ है ।

मारवण—*(ना०)* १. मारवाड़ देश की स्त्री । २. रूप गुण सम्पन्न स्त्री । ३. प्रेयसी । प्रेमिका । ४. वह स्त्री जिसका चरित्र मुख्य रूप से काव्य में वर्णित हो । ५. पत्नी । ६. राजस्थानी लोक गीतों की नायिका । ७. एक लोकगीत । ८. पूगल की राजकुमारी, जो नरवर के राजकुमार साल्ह कुंवर (ढोला) की पत्नी थी ।

मारवणी—दे० मारवण ।

मारवाड़—*(ना०)* १. राजस्थान का एक पश्चिमी प्रांत । राजस्थान बनने के पूर्व राजस्थान की सबसे बड़ी रियासत, जोधपुर राज्य जहां राठौड़ों का राज्य था । २. प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान का वह मरु प्रदेश (भू-भाग) जिसमें शेखावाटी, मेरवाड़ा, मेवाड़, मोठवाड़, धाट । सोढाण, जैसलमेर (माड प्रदेश), बीकानेर, जोधपुर और सिरोही इत्यादि के भूत-पूर्व रजवाड़े सम्मिलित हो जाते हैं ।

मारवाड़ण—*(ना०)* मारवाड़ की स्त्री ।

मारवाड़ी—*(ना०)* १. मारवाड़ का निवासी । *(ना०)* मारवाड़ की भाषा । राजस्थान की भाषा । राजस्थानी भाषा । मरु

भाषा । *(वि०)* १ मारवाड़ से संबंधित । मारवाड़ का सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से राजस्थान का वह पुरुष जिसकी मातृभाषा राजस्थानी (मारवाड़ी) हो ।

मारवाड़ी व्याकरण—*(न०)* पं. रामकरण आसोपा द्वारा सर्व प्रथम वि. सं. १९५३ में प्रकाशित मारवाड़ी (राजस्थानी) व्याकरण ग्रन्थ ।

मारवी—*(ना०)* १. रूप, गुण सम्पन्न स्त्री । मरु प्रदेश की स्त्री । **मारवई** । **मारवी** । **मारवणी** । *(वि०)* मरु प्रदेश की । मरु प्रदेश से सम्बन्धित ।

मार-हथो—*(वि०)* मारने वाला ।

माराकूटो—*(न०)* मारना कूटना । मार-कुटाई । पिटाई । मारपीट ।

मारा-मार—दे० मारामारी ।

मारा-मारी—*(ना०)* १. मार-पीट । २. लड़ाई ।

मारांकुश—*(न०)* नख । नाखून ।

मारी—*(सर्व०)* मेरी । *(ना०)* १. बीमारी । मरी । २. मारा-मारी । लड़ाई ।

मारीच—*(न०)* एक राक्षस जो रावण का मामा और ताड़का राक्षसी का पुत्र था ।

मारी-थारी—*(ना०)* १. परस्पर गालियाँ देने का भाव । आपस में गालियाँ देना । गाली गलौच । गाळागाळी । गाळीगुप्ता । २. लोभवृत्ति । ३. ममता । *(सर्व०)* मेरी और तेरी ।

मारुआड़—दे० मारवाड़ ।

मारणी—दे० मारवणी ।

मारत—*(न०)* पवन । वायु ।

मारति—*(न०)* हनुमान । पवन सुत ।

मारुवाँ-राव—*(न०)* मरुधराधिपति । मारवाड़ का राजा ।

मारूवैं—*(न०)* मरुधरापति ।

मारूवो—*(वि०)* मारवाड़ी । मारवाड़ का रहने वाला ।

मारू—*(ना०)* १. मरुदेश का निवासी । मारवाड़ का निवासी । २. युद्ध के समय वीरों को जोश दिलाने के लिये गाया जाना वाला एक राग । ३. युद्ध में बजाये जाने वाले बड़े नगाड़े को बजाने का एक प्रकार । ४. युद्ध का बाजा । ५. राजस्थानी लोक गीतों का एक नायक । ६. ढोला की स्त्री मारवण । ७. पति । प्रियतम । ८. एक लोक गीत । ९. मारवाड़ ।

मारू-कामण—*(ना०)* १. मारवाड़ की स्त्री । २. रूप-गुण सम्पन्न कामिनी । सुन्दर स्त्री ।

मारूजी—*(न०)* १. राजस्थानी लोक गीतों का एक नायक । २. पति । ३. एक लोक गीत ।

मारूणी—दे० मारवणी ।

मारूदेश—दे० मारुधर ।

मारूधर—*(ना०)* १. मरुधर । मारवाड़ । २. मरुप्रदेश ।

मारूभाखा - दे० मरुभाषा ।

मारूराग—*(ना०)* १. एक रागिनी ।

मारूराण—दे० मारुराव ।

मारूराव—*(न०)* मरुधरापति । मारवाड़ का राजा ।

मारे—दे० म्हारै ।

मारेल—*(वि०)* १. बेबश । विवश । दबाव में आया हुआ । २. हारा हुआ । पराजित । ३. आश्रित । ४. घायल । ६. अशक्त । कमजोर ।

मारो—*(न०)* हानि । घाटा । नुकसान । *(सर्व०)* मेरा । म्हारो ।

मारो-मार—*(अव्य०)* १. ऊपरा ऊपरी । २. अति शीघ्रता से । खूब उतावले से । बिना रुके ठहरे । लगातार ।

मार्कंड—*(न०)* एक ऋषि । मार्कंडेय ऋषि ।

मार्कंड पुराण—*(न०)* एक पुराण ग्रन्थ ।

मार्कंडेय—दे० मार्कंड ।

मार्च—*(न०)* ईसवी सन् का तीसरा महीना । २. सैनिकों की चाल । ३. कूच ।

मार्जन—*(न०)* १. स्नान । २. पवित्र करने के लिये तीर्थादि का जल छिड़कने की क्रिया । ३. भूल या दोष का परिहार । ४. शुद्धिकरण । ५. पवित्रता । ६. सफाई ।

मार्जनी—*(ना०)* झाड़ू । बुहारी । मारजणी । सारवणी ।

मार्जार—*(न०)* बिल्ला । बिलाव । मिन्नो ।

मार्जारी—*(ना०)* बिल्ली । मिन्नी ।

मार्तंड—*(न०)* १. सूर्य । रवि । सूरज । २. बारह की संख्या ।

माल—*(न०)* १. धन । सम्पत्ति । २. जायदाद, सामान, भूमि आदि । ३. सामान । ४. हलवा आदि पौष्टिक और स्वादु भोजन । ५. गाय, भैंस आदि पशुधन । ६. शक्ति । सामर्थ्य । ७. क्रय-विक्रय का सामान । ८. सार । तत्व । ९. शकुन चिड़िया ।

माळ—*(ना०)* १. चरखे की डोरी जिससे तकुआ घूमता है । रहँट पर लगी हुई वह माला जिसमें पानी की घड़ियें बंधी रहती हैं । ३. पास-पास में सटे हुये जावों (कुआंई खेतों) की पंक्ति । ४. माला । पंक्ति । ६. मकान की मंजिल । ७. वन । जंगल । ८. एक कृषि कर ।

मालक—*(न०)* १. मालिक । स्वामी । २. पति । ३. हकदार ।

मालकियत—दे० मालकी ।

मालकपणो—*(न०)* १. स्वामीत्व । मालकी । मालिकपणो । २. बड़प्पन । बड़ापणो ।

मालकाँगणी—*(ना०)* एक औषधीय वनस्पति ।

मालकी—*(ना०)* स्वामीत्व । मालिकपणो ।

मालकेत—*(न०)* शेखावाटी के एक लोक देवता ।

मालकोट—*(न०)* १. मारवाड़ का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर मेड़ता । मेड़ान्तक । २. मेड़ता का कोट ।

मालकोष—*(न०)* एक राग ।

मालगाड़ी—*(ना०)* डिब्बों में माल भरकर ले जाने वाली मालगाड़ी । भारगाड़ी ।

मालगुजार—*(न०)* १. मालगुजारी वसूल करने वाला जमींदार । २. भूमि कर देने वाला जमींदार ।

मालगुजारी—*(ना०)* खेतों, भूमि या जागीरी पर लिया जाने वाला एक सरकारी कर । लगान ।

मालगोदाम—*(न०)* १ वह कोठा जहां व्यापारिक माल रक्खा जाता है । २. रेलवे के स्टेशनों व बंदरगाहों पर बना हुआ वह स्थान जहां बाहर भेजा जाने

वाला या कहीं से आया हुआ माल रखा रहता है।

मालजादी—*(वि०)* १. व्यभिचारिणी। कुलटा। २. हराम से उत्पन्न। हरामजादी।

मालजादो—*(व०)* १. हरामजादा। भड़ुआ। २. व्यभिचारी।

मालण—*(ना०)* १. साग-भाजी बेचने वाली स्त्री। २. माली की स्त्री। मालिन। ३. नाक में होने वाली फुंसी।

मालणो—दे० माल्हणो।

माल-ताल—*(न०)* १. माल सामान। २. धन दौलत। ३. दुकान की क्रय-विक्रय की सामग्री। दुकानदारी का माल।

मालती—*(ना०)* १. एक लता। २. इस लता के पुष्प। ३. एक छन्द। ४. युवती। ५. एक रागिनी।

मालदार—*(वि०)* धनवान। तवंगर।

माल-धणी—*(न०)* १. मालक। मालिक। २. सामान का स्वामी। ३. मालिक। स्वामी।

मालपुओ—*(न०)* एक पकवान। **मालपो**।

मालपुड़ो—दे० मालपुओ।

मालम—दे० मालुम।

माल-मता—*(न०)* १. भूमि, सामान आदि। २. रिक्थ। ३. चल और अचल सम्पत्ति। ४. सामान। ५. मालमिलकत।

माल-मलीदा—*(न०ब०व०)* १. पक्वान्नादि बढ़िया भोजन सामग्री। २. मौज-शौख।

माल-मसालो—*(न०)* १. पक्वान्न। २. मिष्टान्न।

माल-मिलकत—दे० मालमता।

माल-मोटियार—*(न०)* पूर्णयुवा। हृष्ट-पुष्ट जवान। भरजवान।

मालव—*(न०)* १. मालवा प्रदेश। (मध्य प्रदेश में)। २. एक राग। ३. मालवा निवासी।

मालवण—*(ना०)* १. मालवा की स्त्री। २. मालवा में उत्पन्न तम्बाकू। ३. तंबाकू की एक जाति। ४. जुआर की एक जाति। ५. ढोला की द्वितीय पत्नी। ६. देवस्थान को प्रदत्त भूमि जिसकी लकड़ी नहीं काटी जाती। रखत। ७. रक्षित वन।

मालवणी—*(ना०)* १. 'ढोला मारूरा दूहा' काव्य की प्रतिनायिका। २. ढोला की मालवा की दूसरी पत्नी। ३. मालव देश की स्त्री।

माळवो—*(वि०)* १. मालव प्रदेश का रहने वाला। मालवी। मालव। २. मालवा से संबंधित। ३. मालव का। *(ना०)* १ मालवे की भाषा या बोली। २. रागिनी। *(न०)* गुड़। गुळ।

माळवो—*(न०)* मध्य भारत का एक प्रदेश। मालव। मालवा।

माळा—*(ना०)* १. गले में पहनने का एक आभूषण। हार। २. फूलों का हार। पुष्प मालिका। ३. जपमाळा। सुमिरनी। तसबी। ४. किसी भी वस्तु का उससे मिलता हुआ संकलन, जैसे—ग्रंथमाळा। ५. पंक्ति। कतार। हार।

माळाकार—दे० माळी *(न०)* मनुष्य या वस्तुओं का माला के आकार का घेरा।

मालाजाळ—*(ना०)* १. राव मल्लिनाथ की रानी रूपांदे के निवास तथा साधना का ऐतिहासिक स्थान। २. माला (मल्लिनाथ) की जाल। किम्बदंती है कि

रावळ मल्लिनाथ जंगल में एक जाल वृक्ष के नीचे बैठ कर भजन तथा साधना किया करते थे। इसलिये इस जालवृक्ष का नाम 'माला जाल' पड़ा और उसके पास बस्ती बस गई। वहाँ आबादी हो जाने के कारण, उस स्थान को त्याग करके वे लूनी नदी के किनारे आकर रहे और वहीं देहपात किया। वहां पर मल्लिनाथ का देवल बना हुआ है।

मालाणी—*(ना०)* राव मल्लिनाथ के नाम से प्रसिद्ध मारवाड़ का पश्चिमी प्रदेश, जिसके पश्चिम में धाट (थार-पारकर) प्रदेश आया हुआ है।

मालाणो—*(न०)* १. मालाणी प्रदेश का निवासी। २. राव मालदेव या मल्लिनाथ का वंशज।

माळाधारी—*(न०)* १. साधु। २. भक्त। *(वि०)* गले में माला पहनी रखने वाला।

माळा फेरणी—*(मुहा०)* जपमाला के मनको फिराते हुए परमात्मा के नामों का स्मरण करना।

मालामाल—*(वि०)* १. बहुत सम्पन्न। २. निहाल।

मालाळा—*(न०)* १. यात्रा में दाहिनी ओर होने वाले शकुन। २. शुभ शकुन।

माळावाळो—दे० माळाधारी।

मालिक—*(न०)* १. स्वामी २. परमेश्वर। ३. पति। खाविंद। ४. हकदार। मालक।

मालिणी—*(न०)* १. मालिनी नामक छंद। २. दुर्गा।

माळियो—दे० महाळियो।

मालिस—*(ना०)* १. मर्दन। २. मालिश।

माळी—*(न०)* १. साग-सब्जी, कृषि और बागवानी करने वाली एक जाति। २. इस जाति का व्यक्ति। ३. बागवान।

माली—*(न०)* एक छंद। *(वि०)* १. माल विभाग का। महकमा माल से संबंधित। २. आर्थिक।

माळीपना चेढ़णा—*(मुहा०)* हनुमान, भैरु आदि की मूर्ति पर पन्नी लगाना।

माळीपना लागणा—*(अव्य०)* प्रतिष्ठित होना।

माळीपनो—*(न०)* रांगा या पीतल का कागज के समान रंग-बिरंगा पतला पत्तर। पन्नी।

मालुम—*(वि०)* १. जाना हुआ। विदित। २. प्रगट। ३. सुविदित। *(न०)* सूचना।

मालूघो—दे० मालपुवो।

मालूम—दे० मालुम।

माळै—दे० माथै।

मालो—*(न०)* १. व्यायाम के लिये हाथ से उठाने का एक भार। पत्थर आदि का बना एक भार जिसे व्यायाम करने वाले हाथ से ऊपर उठाते हैं। २. जोधपुर के राव मालदेव का काव्य नाम।

माळो—*(न०)* १. घोंसला। २. खेत की रखवाली करने के लिये बनाया हुआ मचान।

मालोमाल—दे० मालामाल।

माल्हणो—*(क्रि०)* १. उपभोग करना। २. मौज करना। ३. बस्ती से चलना। म्हालणो।

माव—*(वि०)* अधिक। बहुत। *(ना०)* १. माता। २. नहीं माना (म+माव) ३. जगह। स्थान। मौका। *(न०)* समाना। प्रवेश।

मावजो—*(न०)* १. हानि के बदले में मिलने वाला धन। मुआवजा। २. बदला।

मावटो—दे० मावठो।

मावठो—*(न०)* माघ मास में होने वाली वर्षा। माघवृष्टि। महावठो। २. सर्दियों में होने वाली वर्षा।

मावड़—*(ना०)* माता। मावड़ी।

मावड़ली—दे० मावड़। मायड़।

मावड़ियाँ—दे० मायाँ।

मावड़ियो—*(न०)* १. घर में घुसा रहने वाला। २. माता की ओट में रहनेवाला। ३. वह डीरू पुरुष जिसे पुरुषों की संगति करने में डर या लज्जा लगती हो। ४. स्त्रैण। ५. डरपोक। कायर। ६. स्त्रियों के समान आचरण या स्वभाव। वाला। बायलो।

मावड़ी—*(ना०)* माता। मावड़।

मावणो—*(क्रि०)* १. समाना। २. भरजाना। ३. बराबर आ रहना या आ जाना। माचो। ४. निभना।

मावत—दे० महावत।

मावळियाई-भाई—*(न०)* १. दुमात भाई। २. ममेरा भाई। मातृकुलभाई।

मावळियाँ—दे० मावड़ियाँ।

मावस—*(ना०)* अमावस्या। अमावस।

मावसी—*(ना०)* मौसी। मासी। माही।

मावित्र—दे० माइत।

मावीत—दे० माइत।

मावीतर—दे० माइत।

मावीती—*(ना०)* १. अभिभावकता। माइतपना। माइतपचो। संरक्षण। सरपरस्ती। २. बड़प्पन। ३. वात्सल्य। ४. गर्व।

मावीत्र—दे० माइत।

मावो—*(न०)* १. दूध को उकाल कर बनाया जाने वाला घट्ट पदार्थ। खोया। कोटी। २. अफीम, शराब आदि नशीली वस्तुओं की एक बार में ली जाये अथवा पर्याप्त नशा आ जाये उतनी मात्रा। ३. सारभाग। सत्व। ४. लुगदी। ५. इज्जत। प्रतिष्ठा। ६. प्रकृति। स्वभाव।

मास—*(न०)* १. महीना। वर्ष का बारहवाँ भाग। २. बारह की संख्या। ३. गर्भ। हमल।

मासवारी—दे० माहवारी।

मासिक—*(वि०)* १. मास सम्बन्धी। २. मास में एक बार होने वाला। माहवार। *(न०)* मासिक धर्म। माहवारी।

मासी—*(ना०)* मां की बहन। मौसी। माही।

मासूक—*(न०)* प्रियतम। प्रेमी।

मासूम—*(वि०)* १. निर्दोष। २. मुलायम।

मासो—*(न०)* १. मासी का पति। मौसा। माहड़ो। २. तोले के बाहरवें भाग का एक तौल। आठ रत्ती का एक तोल। माशा।

मास्टर—*(न०)* १. अध्यापक। २. स्वामी। मालिक।

माह—*(न०)* १. माघ मास। २. मास। महीना। *(क्रि० वि०)* अन्दर। भीतर।

माहड़ो—दे० मासो सं. १

माहर—दे० माहरो।

माहरी—*(सर्व० वि०)* मेरी। म्हारी।

माहरु—*(सर्व० वि०)* मेरा। म्हारो। मेरी।

माहरो—*(सर्व० वि०)* मेरा । म्हारो । म्हाको । मेरो ।

माहळो—*(वि०)* मेरे वाला । मेरा ।

माहव—*(न०)* माधव श्रीकृष्ण ।

माहवठो दे० मावठो ।

माहवार—*(अव्य०)* हरेक महीने में । मास प्रतिमास । *(वि०)* मासिक ।

माहवारी—*(ना०)* १. स्त्रियों का मासिक धर्म । २. मासिक वेतन । ३. मासिक रूप से चलने वाला क्रम । मास-दर-मास । *(वि०)* मासिक ।

माहवो—दे० माहव ।

माहितगार—*(वि०)* जानकार ।

माहिती—*(ना०)* १. जानकारी । २. मालूम । ३ विवरण ।

माहिर—*(वि०)* चतुर । निपुण ।

माहिलवाड़ियो—*(न०)* राजमहल का नौकर । दे० माहिलवाड़ियो लोक ।

माहिलवाड़ियो-लोक—*(न०)* १. अंतरंग लोक । भीतरी लोग । २. अंतःपुर की सेवक-सेविकाएं । ३. नौकर-चाकर । ४. राजघराने का महिला वर्ग ।

माही—*(ना०)* १. मौसी । मासी । २. राजस्थान और गुजरात की एक नदी । *(वि०)* माघ मास से संबंधित । *(अव्य०)* में । मध्य । बीच में ।

माही मरातिब—*(न०)* राजा महाराजाओं की सवारी के आगे चलने वाले सात ग्रहों के चिन्हों वाले झंडों का समूह ।

माहुर—*(न०)* विष । जहर ।

माहेरात—दे० मामेरात ।

माहेरातण—दे० मामेरातण ।

माहेरातणी—दे० मामेरातणी ।

माहेरातिया—दे० मामेरातिया ।

माहेरो—दे० मामेरो ।

माहेव—*(न०)* १. मालवी प्रांत का महेवा नगर और उसके आजू बाजू का जागीरी प्रदेश । २. 'महेवा' का काव्यगत रूपान्तर ।

माहेवी—*(ना०)* गाय । *(वि०)* माहेव का रहने वाला ।

माहेश्वरी—*(ना०)* १. दुर्गा । २. पार्वती । ३. एक वैश्य जाति । महेसरी । मेसरी ।

माहोमाह—*(अव्य०)* १. भीतर ही भीतर । २. परस्पर । ३. एक दूसरा । ४. मन ही मन ।

माँ—*(न०)* माता । *(अव्य०)* १. नहीं । २. मत । ३. भीतर में । अन्दर ।

माँई—दे० माई माँ । *(ना०)* १. माता । २. खाट को कसा हुआ रखने के लिए पैताने के उपले से थोड़ा ऊपर बंधा रहने वाला एक उपकरण जिसमें उपले में होकर अदवान लगी रहती है ।

मां-ई-जायो—*(न०)* सौतेला भाई ।

माँई-माँ—*(ना०)* विमाता । सौतेली माता । दुमात । मात्रेही ।

माँकड़—*(न०)* १ मत्कुण । खटमल । २. बंदर । ३. लंगूर । ४. मकोड़ा ।

मांकड़ लंकी—*(वि०)* मकोड़े के समान क्षीण कटि वाली *(स्त्री)* ।

मांकड़ा—*(न०ब०व०)* १. बैलगाड़ी का एक उपकरण । २. ऊंट के पुट्ठे ।

मांकड़ी—*(ना०)* १. जानवरों के रीढ की हड्डी । पशु की पूंछ का मूल भाग । ३. मरे हुये पशु की पूंछ के मूल भाग का चमड़ा । ४. पीठ । ५. कुआं खोदने का एक उपकरण । ६. चक्की के ऊपर

के पाट में सुराख में बिठाया हुआ सुराखदार लकड़ी का टुकड़ा जिसमें नीचे के पाट का कील रहता है। ७. हल के ऊपर के सिरे पर लगी रहने वाली आड़ी लकड़ी, जिस पर हल चलाने वाले का हाथ रहता है। ८. भला। योग्य। (व्यंग्य में)।

मांकड़ो—*(न०)* १. मकोड़ा। २. लंगूर।

मांकणा—*(न०)* १. मत्कुण। खटमल। २. बंदर।

मांको—दे० मकोड़ो।

मांखणा—*(न०)* मक्खन।

मांग—१. सगाई की हुई कन्या। वह कन्या जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी हो। किसी लड़के की वाग्दत्ता। ३. व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से अपने हकों के लिये उठाई जाने वाली आवाज। ४. माँगने का भाव या क्रिया। ५. आवश्यकता। ६. वह वस्तु जिसके लिये प्रार्थना की जाय। ७. सिर के बालों को दो ओर करके सँवारने से बनी हुई रेखा। ८. स्त्रियों का केश-रेखा में कुमकुम भरने की क्रिया। ९. आठ '८' (व्यापारी संकेत।)

मांगटीको—*(न०)* स्त्रियों का एक शिरोभूषण,

मांगण—*(न०)* १. चारण। २. भाट। ३. भिखारी। *(वि०)* माँगने वाला। मंगतो।

मांगणहार—दे० मांगणियार।

मांगणियार—*(न०)* १. भिखारी। २. याचक। ढाढ़ी। ३. मांगने के पेशे वाली जाति या उस जाति का मनुष्य।

मांगणी—*(ना०)* १. चारण, भाट, ढाढ़ी आदिकों की आश्रयदाताओं से पुत्रि की खातिर। यथाशक्ति। २. मांगने का पेशा। ३. याचना। ४. लड़की के माता पिता से लड़के की सगाई के लिये की जाने वाली मांग।

मांगणो—*(क्रि०)* १. मांगना। याचना करना। किसी को किसी वस्तु को देने के लिये कहना। २. तकाजा करना। ३. भिक्षा की याचना करना। ४. पूछना। *(च०)* भिक्षा।

मांगत—*(ना०)* १. पूर्वजन्म का ऋण। २. भाग। हिस्सा। ३. लेनदारी।

मांगफूल—*(न०)* स्त्रियों का एक शिरोभूषण। सीसफूल।

मांग भरणी—*(मुहा०)* सौभाग्यवती स्त्री की मांग में मांगलिक सिंदूर आदि भरना।

मांगर—*(न०)* मंगता। भिखारी।

मांगलिक—*(वि०)* १. मंगल करने वाला। २. मंगलसूचक। *(न०)* १. गुड़, सुपारी, अक्षत, कुंकुम, नारियल इत्यादि मंगलसूचक वस्तु या वस्तुएं। २. नाटक का मंगल पाठ करने वाला पात्र।

मांगलिक—दे० मांगलिक।

मांगळिया—*(न०)* गहलोतों की एक शाखा।

मांगळियो—*(न०)* मिट्टी का छोटा घड़ा। चुकल्यो। बेहड़ियो।

मांगळी—*(ना०)* पानी का छोटा घड़ा। मंगळियो। मंगळी।

मांगल्य—*(न०)* मंगलमयता। कल्याण। *(वि०)* कल्याणकारक।

मांगातांणो—*(न०)* १. लेन-देन। २. ऋण। कर्ज। ३. उधरानी। उधराई।

मांगियो—*(न०)* १. सगाई किया हुआ लड़का। २. वह लड़का जिसके साथ अपनी कन्या की सगाई की गई हो।

३. वह लड़का जिसका अमुक लड़की के साथ विवाह संबंध की बात पक्की हो चुकी हो। वाग्दत्ता का भावी पति। *(वि०)* मांगा हुआ।

मांगो—*(न०)* १. लड़के के लिए कन्या की या कन्या के लिये लड़के की सगाई (वाग्दान) करने की की जाने वाली मांग। सगाई का प्रस्ताव। २. पानी का घड़ा। घड़ो। मटको।

मांगो करणो—*(मुहा०)* लड़की के लिये लड़के के पिता से और लड़के के लिये लड़की के पिता से परस्पर वाग्दान संबंध करने के लिये प्रस्ताव रखना। लड़के लड़की की सगाई करने के लिये कहना—मांग करना।

मांचलियो—*(न०)* खाट का ऊनता सूचक नाम।

मांचली—*(ना०)* खटिया।

माँचातोड़—*(वि०)* १. खाट पर अधिक समय तक सोते रहने वाला। २. खाट पर सोते रहने की आदत वाला। ३. निकम्मा। ४. आलसी।

माँची—*(ना०)* १. छोटा खाट। २. दीवाल की ऊंचाई तक चिनाई करने के लिये बांधा जाने वाला मंच जिस पर से चुनाई करने वाला चुनाई करता है।

माँचो—*(न०)* चारपाई। खाट।

माँजणो—*(क्रि०)* १. मांजना। मिट्टी रगड़ कर बरतन आदि को साफ करना। २. नहाना।

माँजरी—*(वि०)* १. पीली आंखों वाली। २. बिल्ली के जैसी आंखों वाली।

माँजरो—*(वि०)* १. पीली आंखों वाला। २. बिल्ली के समान आंखों वाला।

माँजो—*(न०)* पतंग की डोर। मांजो।

माँझ—*(क्रि०वि०)* १. अंदर। में। २. मध्य।

माँझल—*(वि०)* मध्य। बीच (का)। *(क्रि०वि०)* १. मध्य में। २. अंदर। में।

माँझलरात—*(ना०)* आधी रात। मध्य-रात्रि।

माँझी—*(वि०)* १. प्रमुख। मुख्य। २. शूरवीर। *(न०)* १. नाव खेकर पार लगाने वाला। नाविक। खेवटियो। केवट। २. भील।

माँझी राणो—दे० माझी राणो।

माँझो—*(न०)* १. जरीदार एक वस्त्रखंड जो पगड़ी पर बांधा जाता था। २. पगड़ी का जरीदार पल्ला। ३. पतंग की डोर। मांजो। ४. हल चलाने के समय हल की दो रेखाओं के बीच की भूमि।

माँटण—*(ना०)* १. वीर स्त्री। २. एक स्त्री संबोधन। ३. मजदूरिन। मजूरण।

माँटी—*(न०)* १. स्वामी। पति। २. मजदूर। मजूर। ३. पुरुष। मर्द। ४. एक संबोधन। ५. मित्र। ६. 'भाई' के अर्थ में या 'भाई' की जगह प्रयुक्त होने वाला शब्द। *(वि०)* १. वीर। बहादुर। २. साहसी। ३. बलवान। जोरावर।

माँटीड़ो—*(वि०)* १. वीर। बहादुर। २. साहसी। मर्द। *(न०)* एक तकिया कलाम।

माँटीपणै—*(क्रि०वि०)* १. मर्दानगी से। २. वीरता से।

माँटीपणो—*(न०)* १. मर्दपना। मर्दानगी। २. पौरुष। ३. वीरता। ४. साहस। मांटीपो। ५. स्वामित्व।

मांटीपो—दे० मांटीपणो।

मांड—*(ना०)* १. कन्या का घर (विवाह के समय) मांडो। २. वैभव। ऐश्वर्य। ३. रचना। ४. जागीरी। जमींदारी। ५. आधार। सहारा। ६. लगाव। झुकाव। ७. मांडी। कलफ। कड़प। ८. बस्ती आबादी।

मांडण—दे० मंडण।

मांडणा—*(ना०ब०व०)* १. स्त्रियों द्वारा चित्रित चित्रावली। २. आंगन या द्वार पर स्त्रियों द्वारा बनाई हुई मंगल आकृतियां। स्वस्तिक। साथियो। सातियो। ३. कोई आकृति। ४. रूप-रंग। ढंग। ५. चिन्ह। ६. आसार। ७. चित्र। चित्राम।

मांडणी—*(ना०)* १. रचना। २. शोभा। ३. चित्रकारी। ४. लिखावट। लेखन। ५. पट्टी-पहाड़े। छड़िया। गुड़िया। ६. कन्या पक्ष की स्त्री (विवाह में)।

मांडणी बोलणो—*(मुहा०)* पट्टी-पहाड़े आदि का कंठाभ्यास करना। मुंहारणी करणो।

मांडणी-यादकरणो—दे० मांडणी बोलणो।

मांडणो—*(क्रि०)* १. करना। बनाना। २. प्रारंभ करना। ३. लिखना। ४. विस्तृत रूप से वर्णन करना। ६. धारण करना। पकड़ रखना। ७. अन्य व्यक्ति के द्वारा किसी वस्तु को लेने के लिये पात्र को हाथों में थामकर उसके आगे करना। ८. सजाना। ९. स्थापित करना। १०. निश्चित करना। ११. चित्रित करना। १२. निश्चय करना। १३. रचना। १४. घोड़े या ऊँट पर पलान बाँधना।

मांडळ—*(ना०)* १. घेरा। २. मंडल। ३. मोट का एक उपकरण।

मांडलिक—*(ना०)* १. चक्रवर्ती राजा के अधीन छोटा राजा। २. किसी मंडल का शासक। ३. सम्राट के अधीनस्थ राज्य। मंडल का शासन।

मांडव—*(ना०)* मालवा (मध्यप्रदेश) का एक ऐतिहासिक नगर।

मांडवगढ—दे० मांडव।

मांगव रिखेसर—दे० मांडव्य ऋषि।

मांडवी—(ना०) कुशध्वज की पुत्री और महाराज दशरथ के पुत्र भरत की पत्नी।

मांडवो *(ना०)* मंडप। मांडवो।

मांडव्य ऋषि – *(ना०)* एक ब्रह्मनिष्ठ महर्षि। कहा जाता है कि इन महर्षि ने जहाँ तपस्या की थी उसी स्थान पर महर्षि की स्मृति में इनके नाम से मंडोवर नगर बसाया गया था।

मांडहो—*(ना०)* १. विवाह के समय कन्या के घर की संज्ञा। मांडो। २. विवाह-वेदी। विवाह-मंडप। ३. मंडप। मांडवो।

मांडाई—दे० माडांणी।

मांडियो – *(ना०)* विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति। *(क्रि०भू०)* १. शुरू किया। २. लिखा।

मांडी—*(ना०)* १. रोटी। २. मांडी। कलफ। ३. विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति।

मांडेई—दे० माडांणी।

मांडैती—*(ना०)* विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति। मांडियो।

मांडै—दे० माडांणी।

मांडो—*(ना०)* १. विवाह के समय कन्या के घर की संज्ञा। २. जहां विवाह का मंडप बांधा जाता है वह घर या स्थान। ३. मुंह। मुख।

माँडो चूरणो—*(क्रि०)* विवाह के बाद दूल्हे का ससुराल जाकर कुछ दिन रहना। **मांडा चपणो।**

माँढियो—दे० मांढियो। *(न०)*

भाँताघेन—*(ना०)* १. मान्यता और ध्यान। २. उपासना। आराधना। ३. इच्छा-पूर्ति के लिये किसी देवता को भेंट करने का संकल्प।

माँद—*(ना०)* १. बीमारी। २. पीड़ा। ३ अंगली पशु की गुफा।

माँदगी—*(ना०)* बीमारी। रोग। अस्व-स्थता।

माँदीवाड़—*(ना०)* १. लंबी बीमारी। २. घर में कोई न कोई बीमार बने रहने की स्थिति। ३. बीमारी। रुग्णता। **माँदीवाड़ो।**

माँदीवाड़ो—दे० माँदीवाड़।

माँदो—*(वि०)* १. बीमार। रोगी। रुग्ण। २. मंद। सुस्त।

माँय—दे० माँह।

माँयकर—*(अव्य०)* अंदर होकर।

माँयलो—*(वि०)* १. अंदर का। भीतरी। २. गुप्त।

माँरो—दे० म्हाँरो।

माँस—*(न०)* गोश्त। आमिष।

माँसभक्षी—दे० माँसारी।

माँसारी—*(वि०)* माँसाहारी। मांसभोजी। **मांसारी।**

माँसाहारी—दे० मांसारी।

माँह—*(क्रि० वि०)* १. अंदर। २. भीतर। ३. बीच में। मध्य मे। *(वि०)* मध्य। बीच।

माँहजी—*(सर्व०)* मेरी। म्हारी।

माँहजो—*(सर्व०)* मेरा। म्हारो।

माँहडो—*(न०)* मुँह। मुख। मूंडो।

माँहढो—दे० मांहडो।

माँहलो—*(वि०)* अंदर का। भीतर वाला।

माँहळो—*(सर्व०)* हमारा। म्हाँरो।

माँहाळो—*(वि०)* हमारे वाला। हमारा।

माँहि—दे० मांह।

मिआद—दे० मयाद।

मिआन—दे० म्यान।

मिकदार—*(न०)* १. परिमाण। मात्रा। २. तौल।

मिक्स्चर—१. एलोपेथी की तरल औष-धियों का मिश्रण। २. भिन्न-भिन्न पदार्थों का सम्मिश्रण। ३. भेलसेल। मिश्रण।

मिगसर—*(न०)* १. मार्गशीर्ष महीना। अगहन। २. मृगशिरा नक्षत्र।

मिचणो—*(क्रि०)* आंखें बंद होना।

मिचळाट—*(ना०)* जी घबराहट। घिन। मतली। उबकाई।

मिचलाणो—*(क्रि०)* मतलाना। जी घिनाना। उबकाई आणो।

मिचळो—*(वि०)* १. जो मिचलाहट या मतली उत्पन्न करता हो। २. बे-जायका। ३. मलिन।

मिचो—दे० माँचो।

मिच्छामिदुक्कड़म—*(अव्य०)* मिथ्या मे दुष्कृतम्=मेरा दुष्कृत मिथ्या हो। पर्यूषण समाप्ति पर जैनों में परस्पर किया जाने वाला अभिवादनोच्चार।

मिजनियो—*(न०)* कन्या की विदाई का एक लोकगीत। **मिजन्यो।**

मिजमान—*(न०)* मेहमान। अतिथि। पाहुना। पाँवणो।

मिजमानी—*(ना०)* १. आतिथ्य। मेह-मानी। २. दावत। जीम

मिजराब—*(न०)* तंतुवाद्य बनाने का एक छल्ला। मजलियो।

मिजलस—दे० मजलिस।

मिजळाई—*(ना०)* १. मैलापन। कुटिलता। २. घटियापन। हलकाई। ३. कंजूसी।

मिजळो—*(वि०)* १. अविश्वसनीय। २. मलिन बुद्धि वाला। ३. मलिन विचारों का। ४. नीच। ओछा। मजळो। ५. मुख पर मीठा। ६. कंजूस। ७. निकम्मा।

मिजागरो—दे० मजागरी।

मिजाज—*(न०)* १. गर्व। घमंड। २. स्वास्थ्य। तबियत। ३. आदत। स्वभाव।

मिजाजण—*(वि०)* १. गर्वीली। मिजाजवाली। २. मानिनी। ३. रूठने वाली।

मिजाजी—*(वि०)* अभिमानी।

मिजासणो—दे० मिजिआसणो।

मिजिआसणो—दे० मजिआसणो।

मिटणो—*(क्रि०)* १. मिटना। खत्म होना। २. दूर होना। ३. नाश होना। ४. कम होना। क्षीण होना।

मिटाड़णो—दे० मिटाणो।

मिटाणो—*(क्रि०)* १. मिटाना। खत्म करना। २. दूर करना। हटाना। ३. नाश करना। ४. कम करना। घटाना।

मिटावणी—दे० मिटाणो।

मिटियाड़—*(ना०)* १. मिट्टी। २. कीचड़।

मिटियामेट—*(न०)* नाश। बिगाड़। मिटियामेळ।

मिटियामेळ—दे० मिटियामेट।

मिटियाळी—*(वि०)* मिट्टी वाली (जमीन)।

मिट्टी—दे० माटी।

मिठ—*(वि०)* १. मीठा। मधुर। २. प्रिय।

मिठ बोली—*(ना०)* मधुर भाषा। मीठी बोली। *(वि०)* मीठी बोलने वाली। मधुर भाषिणी।

मिठ बोलो—*(वि०)* मिष्टभाषी। मधुर भाषी।

मिठाई—*(ना०)* १. घेवर, रसगुल्ले, लड्डू आदि (खांड के योग से बनाये जाने वाले) विविध प्रकार के मिष्टान्न पदार्थ। अनेक प्रकार के मिष्टान्न पकवानों की समष्टि संज्ञा। २. मधुरता।

मिठाण—*(न०)* १. मिष्टान्न। पकवान। २. गुड़, खांड आदि मीठी वस्तुएँ।

मिठास—*(ना०)* १. मीठापन। मधुरता। २. प्रेम। ३. आसक्ति।

मिठू—*(न०)* तोता। पोपट। सूओ। सूवटो।

मिण—दे० मणि।

मिणणो—*(क्रि०)* मापना। निश्चित परिमाण के भाण्ड में भर करके वस्तु का मान निकालना।

मिणधर—दे० मणिधर।

मिणधारी—दे० मणिधारी।

मिणमथ—दे० मणिमथ।

मिणियार—दे० मणियार।

मिणियारी—दे० मणियारी।

मिणियारण—*(ना०)* मनिहारे की स्त्री। मनिहारिन।

मिणियारी—*(न०)* चूड़ी आदि काच का सामान बेचने वाला। मनिहारा।

मिणियो—*(न०)* १. माला का दाना। मनका। मणिया। २. गले का सामने की ओर उभरा हुआ भाग। मणियो।

३. बोर, कुमड़ी, भूंगड़ी आदि (बेचने के समय) मापने का पात्र। ४. थोड़ी मात्रा की वस्तु को मापने का छोटा पात्र। ५. छोटी टीपरी। मिल्यो। टीपरियो।

मित—*(वि०)* १. थोड़ा। २. चाहिये जितना। परिमाण सर। ३. सीमा। ४. तुलना।

मितभाषी—*(वि०)* थोड़ा बोलने वाला। थोड़ा बोलरो।

मितभोजी—*(वि०)* थोड़ा खाने वाला। मिताहारी। थोड़ा खाऊ।

मितव्यय—*(नं०)* किफायत। कम-खरची।

मितव्ययी—*(वि०)* आवश्यकतानुसार खर्च करने वाला। कम खर्च करने वाला।

मिति—*(ना०)* १. परिमाण। मान। २. सीमा। हद। ३. समय। ४. तिथि। ५. ब्याज का दिन।

मितियाँ—*(न०ब०व०)* व्यापारिक उधार खाते के लेन-देन में बाकी रही हुई रकम पर निकलने वाले ब्याज के दिन।

मिती—*(ना०)* १. तिथि। दिनांक। तिथि। तारीख। २. ब्याज का दिन।

मितीकाटो—*(ना०)* हुंडी आदि की मिती के पहिले भुनताना करने पर मिलने वाली छूट।

मितीखाणो—*(मुहा०)* ब्याज के दिनों में एक दिन कम कर देना। २. एक दिन का ब्याज छोड़ देना।

मित्त—*(ना०)* १. मित्र। २. सूर्य।

मित्र—*(न०)* १. वह-जो हर काम में हर समय सहायक हो। हितैषी। दोस्त। सखा। सैण। मनमेळू। २. सूर्य। *(वि०)* सखेत।

मित्रता—*(ना०)* दोस्ती।

मिथा—मिथ्या।

मिथिला—*(ना०)* जनकपुरी।

मिथुन—*(न०)* १. बारह राशियों में से तीसरी राशि। २. जोड़ा। युगल। ३. मैथुन। संगम।

मिथ्या—*(वि०)* १. असत्य। झूठ। कूड़। २. अवास्तविक। ३. व्यर्थ।

मिथ्याज्ञान—*(न०)* १. भ्रम। २. भूल।

मिथ्याभिमान—*(न०)* झूंठा अभिमान। कूड़ो घमंड।

मिथ्याभिमानी—*(वि०)* झूंठा अभिमान करने वाला। कूड़ो घमंडी।

मिनकादाख—दे० मुनक्का।

मिनकी—दे० मिन्नी।

मिनख—*(न०)* १. मनुष्य। आदमी। २. सर्वसाधारण जनता। प्रजा। ३. पति। खाविंद। ४. स्त्री। पत्नी।

मिनख-जमारो—*(न०)* १. मनुष्य जन्म। मिनखाजूण। २. मानव जीवन।

मिनखणी—*(ना०)* स्त्री। औरत।

मिनखपणो—*(ना०)* १. मानवता। मनुष्यता। २. भलमनसाई। सज्जनता।

मिनखमार—*(वि०)* १. भयानक हत्यारा। २. महादुष्ट। ३. अधर्मी।

मिनखाचारो—*(न०)* मनुष्याचार। मानवाचार। मानवता। मनुष्यता।

मिनखाजूण—*(ना०)* मनुष्ययोनि। मिनख जमारो।

मिनखावेली—*(ना०)* मनुष्य शरीर।

मिनट—*(नं०)* एक घन्टे के साठवां भाग का समय।

मिनड़ी—दे० मिन्नी।

मिनड़ी—*(न०)* मिन्नी। बिल्ली।

मिनमिन—*(ना०)* १. विचारों की उलझन। २. किसी काम को करने या न करने की उलझन। संकल्प-विकल्प। ३. मन में बड़बड़ाते रहने का भाव। ४. नाक से बोलने का भाव।

मिनमिनाणो—*(क्रि०)* १. संकल्प-विकल्प करना। २. मन ही मन बोलना। ३. धीमे स्वर से बोलना।

मिनमिनियो—*(वि०)* मिनमिन करने वाला।

मिनारो—*(न०)* १. एक प्रकार का ऊंचा स्तंभ। मिनारा। मीनार। मनार। २. सीमा-स्तंभ। मवारो।

मिनियो—*(न०)* बिल्ली का बच्चा। बिलौटा।

मिन्नत—*(ना०)* १. विनती। प्रार्थना। २. दीनता।

मिन्नी—*(ना०)* बिल्ली।

मिन्नो—*(न०)* बिल्ली। बिलाव।

मिमजर—दे० मंजरी। बौर।

मियाघोड़ी *(न०)* बच्चों का एक खेल।

मियाणी—*(ना०)* १. मिया की स्त्री। २. मुसलमानिनी।

मियान—दे० म्यान।

मियानी—दे० म्यानी।

मियानो—*(न०)* १. तात्पर्य। अर्थ। २. फल। ३. वजह। कारण। ४. खुलासा। ५. सारांश। ६. रहस्य। भेद। ७. एक प्रकार की पालकी।

मियामिट्ठू—*(वि०)* आत्मप्रशंसक।

मियाळ—*(न०)* दो ओर ढलुवें छप्पर के नीचे का एक मजबूत (और छप्पर की ढलान के अनुसार) नीचे से मुड़ा हुआ लट्ठा जो छप्पर के बीच की बल्ली को थामे रखता है। भारीमियाळ। म्याळ। दे० म्याळ।

मियाळो—*(वि०)* मेरे वाला। मेरा।

मियो—*(न०)* मुसलमान।

मिरग—दे० मृग।

मिरगछाळा—दे० मृगछाळा।

मिरगली—*(ना०)* हरिणी। हरिनी।

मिरगलो—दे० मृग।

मिरगानैणी—*(वि०)* मृगनयनी।

मिरगी—*(ना०)* १. एक रोग जिसका वेग आते ही बेहोश होकर रोगी अचानक जमीन पर गिर जाता हैं और शरीर तन जाता है। ताण। २. मृगी। हरिनी।

मिरगो—दे० मृग।

मिरच—*(ना०)* १. एक फली जो बहुत तीखी और चरपरी होती है और शाक, व्यंजनों आदि में डाली जाती है। हरी मिर्च। लाल मिर्च। २ गोल मिर्च। काली मिर्च। ३. मिर्च का पौधा।

मिरचियाकंद—दे० एक प्रकार का कंद।

मिरची—दे० मिरच।

मिरजई—*(ना०)* एक प्रकार की कुरती।

मिरजो—*(न०)* १. मुगल मुसलमानों की एक उपाधि। मिरजा। २. शाहजादा। ३. मुसलमान।

मिरतक—*(ना०)* १. मृत्यु। २. मृतक।

मिरतु—दे० मृत्यु।

मिरतुकाळ—*(न०)* मृत्युकाल।

मिरदंग—दे० मृदंग।

मिरदंगियो—*(न०)* मृदंग बजाने वाला।

मिरिगाखी—*(वि०)* मृगनयनी। मृगाखी।

मिरियो—*(न०)* १. घी, तेल आदि द्रव पदार्थ मापने का लोहे का लम्बी डंडी वाला एक छोटा उपकरण। डीपरियो। २. मिरियै का माप। ३. मिरिया के परिमाण का द्रव पदार्थ।

मिरी—दे० मिर्च।

मिलक—दे० मलिक।

मिलकत—*(ना०)* धनमाल आदि। पूंजी। मिल्कत।

मिलणी—*(ना०)* १. विवाह में कन्या पक्ष का गाजे-बाजों के साथ बरात के सामने जाकर समधियों का इत्र, गुलाल, इत्र, अफीम, पान, सुपारी, नारियल और रौप्य मुद्रा आदि मांगलिक वस्तुओं की आग्रहपूर्वक मनुहार तथा भेंट-उपरांत बाहुपाश में आलिंगन करके स्वागत करने की एक प्रथा। २. मिलणी में प्राप्त हुई भेंट-उपहार। ३. मिलाप।

मिलणो—*(क्रि०)* १. मिलना। मिलाप होना। भेंटना। २. दो अलग-अलग पदार्थों का एक होना। ३. प्राप्त होना। हाथ आना। ४. लाभ होना। नफा होना। ५. परस्पर एक जैसा होना। तुलना में समान होना। ६. इकट्ठा होना। एकत्रित होना। ७. सटना। ८. स्पर्श होना। ९. एक रूप होना। घुलना। १०. संगठित होना।

मिलणी-जुलणी—*(क्रि०)* मिलना-जुलना। मिलना और परस्पर बातचीत करना। मुलाकात करना।

मिलसार—दे० मिळतियाण।

मिळतियाण—*(वि०)* १. सबसे मेल-जोल रखने वाला। मिलनसार। २. सबसे प्रेम पूर्वक मिलने वाला। ३. प्रेमी।

मिळती—*(वि०)* मिलान खाती हुई। २. अवसरानुसार। *(ना०)* दोस्ती। मित्रता।

मिळतो—*(वि०)* १. मेलखाता हुआ। २. अनुरूप।

मिळतो-जुळतो—*(वि०)* १. एक समान। सरीखा। २. मिलने-जुलने वाला।

मिलाण—*(न०)* १. तुलना। २. मिलन। भेंट। ३. पड़ाव। मेलाव।

मिलाणो—*(क्रि०)* १. मिलाना। मिलाप करवाना। २. अलग-अलग पदार्थों को एक करना। ३. प्राप्त करवाना। हाथ लगवाना। ४. लाभ कराना। ५. तुलना में समान बनाना। ६. एकत्रित करना। ७. सटाना। जुड़ाना। ८. छुआना। स्पर्श करना। ९. एक रूप करना। घोलना। १०. संगठित करना।

मिलाप—दे० मेळाप।

मिळाव—*(न०)* मिलाने की क्रिया या भाव।

मिळावट—*(ना०)* १. किसी वस्तु में घटिया वस्तु का मिश्रण। खोट। २. सम्मिश्रण। ३. साँठ-गाँठ। साजिश। मिलावट करने की क्रिया।

मिळावणो—दे० मिलाणो।

मिळियार—*(वि०)* १. साथी। २. प्रेमी। स्नेही। ३. मिलकर काम करने वाला।

मिळीभगत—*(ना०)* १. प्रेमपूर्वक मिल-जुल कर रहने या काम करने की भावना। २. धूर्तता। चाल।

मिष्टान्न—*(ना०)* १. मीठा और पौष्टिक खाद्य-पदार्थ । पकवान । २. मिठाई ।

मिस—*(न०)* १. बहाना । हीला । २. पाखंड । ३. छल । कपट । *(अव्य०)* रूप में । बहाने । बदले में ।

मिसकीन—*(न०)* १. भिखारी । २. दीन । गरीब । ३. विनम्र ।

मिसर—दे० मिसरजी । *(ना०)* मिस्र देश ।

मिसरजी—*(न०)* १. मिश्र गोत्र का ब्राह्मण । २. रसोईया ।

मिसरा—*(न०)* १. उर्दू की शेर का आधा भाग । २. उर्दू कविता की समस्या ।

मिसरीई—*(न०)* १. एक रंगीन वस्त्र । २. एक रंग । ३. मसूड़ा ।

मिसराणी—*(ना०)* १. मिसरजी की पत्नी । २. रसोई करने वाली स्त्री ।

मिसरी—*(ना०)* १. कूजे में जमाई हुई चीनी की चाशनी । मिश्री । नबात । दे० मिस्री । *(वि०)* शीतल । ठण्डा ।

मिसरू—*(न०)* एक रंग-बिरंगा सूती-रेशमी कीमती वस्त्र । पटोळो ।

मिसल—*(ना०)* १. दरबार में पद व प्रतिष्ठा के अनुसार बैठने की जगह व पंक्ति । २. राजसभा । ३. सभा । ४. मुकदमें से संबंध रखने वाले नत्थी किये हुये कागज । मिसिल । ५. राज्य सभा का एक पद । ६. श्रेणी । वर्ग । *(वि०)* समान । सदृश ।

मिसलत—*(ना०)* सलाह । मसलहत । मसलत ।

मिसाल—*(ना०)* १. उदाहरण । २. दृष्टांत । ३. आदर्श । नमूना । ४. उपमा ।

मिसिरोटी—*(ना०)* मिश्रित अनाजों के आटे की रोटी । मिस्से आटे की रोटी ।

मिस्टान—दे० मिष्टान्न ।

मिस्तर—दे० मोळिवो सं. ७ तथा पोटलो सं. १ ।

मिस्तरी—*(न०)* १. यंत्र, मशीन आदि वस्तुओं की मरम्मत करने वाला व्यक्ति । २ शिल्पी । कारीगर ।

मिस्र—*(न०)* एक देश का नाम । २. ब्राह्मणों की अल्ल । *(वि०)* मिश्रित । मिला हुआ ।

मिस्रण—*(न०)* मिश्रण । मिलावट ।

मिस्री—*(वि०)* १. मिस्र देश का । मिस्र देश संबंधी । २. मिस्र देश की भाषा । ३. मिस्र देश का निवासी । ४. पीपे, घड़े आदि में जमाई हुई खांड की चाशनी । मिसरी ।

मिस्सी—दांत काले करने का एक मंजन ।

मिहिर—*(न०)* १. सूर्य । २. चंद्रमा । ३. पवन । ४. बादल ।

मिट—दे० मिनट । दे० टकसाल ।

मित—*(न०)* मित्र । दोस्त ।

मितर—दे० मंत्र । दे० मित्र ।

मितरणो—दे० मंतरणो ।

मिदर—दे० मंदिर ।

मिदर मारगी—*(न०)* मूर्ति पूजक श्वेतांबर जैन सम्प्रदाय या उसका अनुयायी । मंदिरमार्गी ।

मिदरियो—*(न०)* १. मंदिर । २. घर । मंदरियो ।

मीच—*(ना०)* मौत । मृत्यु ।

मीचणो—*(क्रि०)* १. आँखें बंद करना । २. मारना । ३. मृत्यु होना । मरना ।

मीचाणो—*(क्रि०)* १ आँखें बंद करवाना । २. मुंदवाना ।

मीजान—*(न०)* १. कई संख्याओं का जोड़ । योगफल । जमा २. तकड़ी । तराजू । ३. अनुमान । अंदाज ।

मीजान काढणो—*(मुहा०)* १. माप, तौल आदि का अनुमान करना। २. किसी बात के निष्कर्ष पर आना। नतीजा निकालना।

मीजी—दे० मींजी।

मीट—दे० मींट।

मीटर—*(न०)* १. एक माप। २. बिजली पानी आदि के खर्च को बताने वाला यन्त्र।

मीटिंग—*(ना०)* सभा या समिति की बैठक। गोष्ठी।

मीठ—*(वि०)* १. मधुर। मीठा। २. प्यारा। *(ना०)* मधुरता। मीठास।

मीठड़ींजाळ—दे० मीठीजाळ।

मीठड़ो—दे० मीठो।

मीठवाणिया—*(वि०)* मीठे पानी की सिंचाई से उत्पन्न (गेहूं) मीठागेहूं।

मीटाण—*(ना०)* १. मीठी वस्तुएं। २. मिठाई।

मीठा-गेहूं—दे० मीठवाणिया।

मीठा-चावळ—*(न०)* १. गुड़ या चीनी डालकर राँधा हुआ चावल। २. एक पकवान।

मीठापणो—*(न०)* १. मधुरता। मिठास। २. मृदुता। कोमलता।

मीठा-बोली—*(वि०)* मृदुभाषिणी। सुभाषिणी।

मीठा-बोलो—*(वि०)* मृदुभाषी। मिष्टभाषी।

मीठा-मारू—*(न०)* १. प्रियतम। २. लोकगीतों का एक नायक। ३. पति।

मीठास—*(न०)* १. मीठापन। मधुरता। २. प्रेम। ३. मृदुता।

मीठी—*(वि०)* १. सुखदाई। २. मिष्ठ। मधुर। *(ना०)* १. सुलह। संधि। समझौता। २. प्रीति। प्रेम। ३. आनन्द। हर्ष। ४. सुख। ५. खुशामद।

मीठी-ऊंघ—*(वि०)* दे० मीठी नींद।

मीठीछुरी—*(वि०)* १. धोखाबाज। कपटी। *(न०)* कपटी मित्र।

मीठी-जाळ—*(ना०)* मीठे पीलू-फलों वाला जाल वृक्ष। पीलू वृक्ष। मीठड़ी जाळ।

मीठी-नजर—*(ना०)* १. प्रेमभरी दृष्टि। २. कृपा।

मीठी-नींद—*(ना०)* १. सुख की नींद। २. हल्की नींद।

मीठी-बोरड़ी—*(ना०)* मीठे फलों वाला बेर वृक्ष।

मीठी-बोली—*(ना०)* १. मृदुवाणी। २. मृदुभाषा। मीठीवाणी।

मीठी-मा—*(ना०)* १. विमात। २. ताई।

मीठी-मार—*(ना०)* १. मर्म स्थान की चोट। गुप्त या गूढ, आंतरिक मार। छानी-मार। २. वचन की मार। मन को चुभने वाली बात। ३. प्रेम की मार। ४. धोखा।

मीठी-वाणी—दे० मीठी बोली।

मीठो—*(न०)* १. मिठाई। २. नमक। लवण। *(वि०)* १. मधुर। मीठा। २. धीमा। ३. सुस्त। ४. स्वादिष्ट। ५. प्रिय। ६. साधारण।

मीठो-उत्तर—*(न०)* मीठी-भाषा की इनकारी उत्तर जिससे अगला नाराज न हो।

मीठो-चूटो—*(न०)* खाने की मीठी चीजें। मिठाई आदि। मीठा भोजन।

मीठो-चूनो—*(न०)* खड़िया। खड़ी। जिप्सम।

मीठो-जहर—*(न०)* बच्छनाग विष।

मीठो-जीरो—*(न०)* १. सौंफ । बरियाळी । २. काला जीरा ।

मीठो-ठग—*(न०)* मीठा बोलकर ठगने वाला व्यक्ति । धूर्त ।

मीठो-तेल—*(न०)* १ तिल का तेल । तिल्ली तेल । २. मूंगफली का तेल ।

मीठो नीम—*(न०)* एक प्रकार का निंब वृक्ष जिसके पत्ते कढ़ी आदि व्यंजनों में डाले जाते हैं । बकायन ।

मीठो नीमड़ो—*दे०* मीठो नीम ।

मीठो महराण—*(न०)* १. सिंधु नदी । २. मीठा महार्णव । मीठा समुद्र ।

मीठो वरस—*(न०)* लड़की की उमर का तेरहवां या अठारहवां वर्ष ।

मीढ—*दे०* मींढ ।

मीढणो—*दे०* मींढणो ।

मीढळ—*दे०* मींढळ ।

मीढो—*दे०* मींडो ।

मीण—*(ना०)* मछली । मीन । *दे०* मैण ।

मीणणो—*(क्रि०)* मापना ।

मीणो—*दे०* मीना जाति का पुरुष । मैणो ।

मीत—*(न०)* मित्र । दोस्त । साथी । भायलो । साथीड़ो ।

मीथो—*(न०)* एक वस्त्र ।

मीन—*(ना०)* १. बारह राशियों में एक राशि । २. मछली । माछळी

मीन-मेख—*(न०)* १. संदेह । शक । २. आगे-पीछे सोचने का भाव । सोच-विचार । ३. न्यूनता । कमी । खोट ।

मीनाकार—*(न०)* १. सोने चांदी पर मीने का काम करने वाला । २. मत्स्याकार ।

मीनाकारी—*(ना०)* १. सोने चांदी पर किया जाने वाला मीने का काम । २. किसी काम की बारीकी ।

मीनाक्षी—*(वि०)* मीन के समान सुन्दर और लंबी आँखों वाली (सुन्दरी) ।

मीना बाजार—*(न०)* अकबर द्वारा प्रचलित एक विशिष्ट बाजार जिसमें स्त्रियां ही खरीद फरोख्त करने जाती थी ।

मीनाबाव—*(न०)* एक कर । लगान ।

मीनार—*दे०* मिनारो ।

मीनारो—*दे०* मिनारो ।

मीनो—*(न०)* १. सोने चांदी के गहनों पर किया जाने वाला रंग-बिरंगे कांच के बेल बूंटों का काम । २. सोने-चांदी के आभूषणों पर रंग-बिरंगे कांच की की जाने वाली रंग-बिरंगी नक्काशी । मीने की चित्रकारी । ३. सुराहीनुमा शराब का पात्र । ४. एक बहुमूल्य पत्थर ।

मीम—*(ना०)* मेडम ।

मीमचियो—*(वि०)* १. छोटी मुखाकृति व छोटी आँखों वाला । कुमड़ी । मुचो । *(न०)* १. बीज । २. छोटा बीज । ३. छोटी मग ।

मीमझर—*दे०* नीमजर ।

मीमली—*दे०* मामोलो ।

मीमांसक—*(न०)* मीमांसा दर्शन का जानकार ।

मीमांसा—*(ना०)* १. एक वैदिक दर्शन । २. विवेचन । समीक्षा ।

मीमियो—*(न०)* बकरी का बच्चा । मेमना ।

मीयाघोड़ी—*(ना०)* बालकों का एक खेल ।

मीयो—*दे०* मियो ।

मीर—*(न०)* १. मुसलमान। २. मुसलमान योद्धा। ३. प्रमुख। मुख्य। ४. सरदार। नेता। मुखिया। ५. नवाब। ६. बादशाह। ७. ईश्वर। ८. मालिक। स्वामी।

मीरजादो—*(न०)* १. मीर का लड़का। मीरजादा। २. शाहजादा। मीरजो।

मीरजो—दे० मीरजादो।

मीरतुजक—*(न०)* १. कानूनदाँ। २. सेनापति।

मीर-बक्शी—*(न०)* वेतन बाँटने वाला अधिकारी। (मुस्लिम काल में)।

मीर-मजलिस—*(न०)* सभापति।

मीर-मुंशी—*(न०)* मुंशी वर्ग का ऊपरी अधिकारी।

मीरासी—*(न०)* १. मुसलमान ढोली। २. गाने-बजाने वाली एक मुसलमान जाति। मुसलमान ढाढी।

मीराँ—*(वि०)* उदार। *(न०)* १. साधु। संत। २. ईश्वर। ३. स्वामी। मालिक। दे० मीराँबाई।

मीराँबाई—*(ना०)* अनन्य कृष्ण भक्त मीराँबाई। राव दूदाजी के पुत्र रत्नसिंह की पुत्री (जन्म सं० १५५४) और मेवाड़ के महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज की पत्नी थीं। *(वि० वि०)* इनके रचे हुए भक्ति पदों में हृदय की तीव्र संवेदना, तन्मयता और तीव्रानुभूति का परिचय मिलता है। इनकी मृत्यु द्वारका में हुई थी।)

मील—*(ना०)* १. कपड़ा उत्पादन करने का कारखाना। मिल। २. आधे कोस (१७६० गज या ८ फर्लांग) की दूरी। माइल।

मींगणी—*(ना०)* बकरी, हरिन, चूहे आदि की छोटी गोलियों के आकार की विष्टा। मेंगनी।

मींगणो—*(न०)* गोली के आकार की विष्टा। (ऊंट का) मेंगना।

मींगी—दे० मींजी।

मींगो—*(वि०)* कलापूर्ण और बारीक (काम)।

मींजणो—*(क्रि०)* १. मसलना। २. रगड़ना। ३. मूंदना।

मींजर—दे० मिंमजर।

मींजी—*(ना०)* १. बीज की गिरी। बादाम, बेर आदि कठोर छिलके वाले बीजों के अन्दर का तैलीय बीज। मग्ज़। २. गूदा। हड्डी के भीतर का गूदा।

मींट—*(ना०)* १. दृष्टि। नजर। भींट। २. अनिमेष दृष्टि। ३. हलकी नींद। ४. मृत्यु। मौत। ५. नेत्र। ६. नशे की अवस्था।

मींट मांडणो—*(मुहा०)* १. ध्यान देना। २. देखना। ३. नजर रखना।

मींट लागणो—*(मुहा०)* १. नींद आना। २. झपकी आना।

मींडक—दे० मींडको।

मींडकी—*(ना०)* मेंढकी। डेडरी।

मींडको—*(न०)* मेंढक। दादुर। डेडरो। डेडरियो। डेडको।

मींडा खड़बड़—*(ना०)* १. लड़ाई। झगड़ा टंटा। २. वाद-विवाद बोलाचाली।

मींडियो—*(न०)* गोल सींगों वाला बैल। *(वि०)* गोल सींगों वाला।

मींडी—*(ना०)* १. शून्य। सिफर। २. स्त्रियों के सिर के बालों की लटी गूंथने का

एक प्रकार। ३. एक प्रकार की छोटी पतली चोटी। मेढी। ४. गोलाकार सींगों वाली भैंस या गाय। *(वि०)* जिसके सींग गोलाकार हों (गाय, भैंस आदि)।

मींडी लागणी—*(मुहा०)* १. किसी मनुष्य का मूर्ख या अविवेकी होना। २. धनमाल का अपव्यय करने वाला होना। ३. कुविचारी होना।

मींडो—*(न०)* १. शून्य। सिफर। २. मेढा। मेष। घेटो। लरडो।

मींड्यो—दे० मींडियो।

मींढ—*(ना०)* १. मीढ। तुलना। बराबरी। २. जांच। तपास।

मींढणो—*(क्रि०)* १. मिलान करना। तुलना करना। २. जांचना। तपासना।

मींढळ—*(न०)* विवाह-कंकण में बाँधी जाने वाली वस्तुओं के साथ का एक सूखा फल। मैंनफल। मैंढल। २. भेड़। ३. मेढ़ा।

मींढी—दे० मींडी।

मींढो—दे० मींडो।

मुअत्तल—*(वि०)* निलंबित।

मुआरणी—दे० मुंहारणी।

मुआवजो—*(न०)* १. हानि के बदले में मिलने वाला धन। २. बदला। मावजो।

मुओड़ो—दे० मुंओड़ो।

मुकट—दे० मुकुट।

मुकटबंध—*(न०)* राजा।

मुकटमणि—दे० मुकुटमणि।

मुकटो—*(न०)* १. रेशमी धोतीविशेष। पूजा करने व भोजन करते समय पहिनने रेशमी वस्त्र। २. पीताम्बर।

मुकड़दम—*(न०)* मुकद्दम। मुखिया।

मुकड़दमों—दे० मुकदमो।

मकतो—दे० मुगतो।

मुकदमो—*(न०)* १. नालिश। दावा। अभियोग। मुकदमा। २. मामला। विषय।

मुकद्दर—*(न०)* भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।

मुकन—दे० मुकुंद।

मुकनो—*(वि०)* बिना दाँतों वाला (हाथी) मकुना। २. बिना मूंछो वाला। निमूंछियो। *(न०)* १. बिना दांतों वाला हाथी। मकुना। संदली। २. स्त्रियों का परदा। बुरका। ३. बिना मूंछों वाला आदमी।

मुकम्मिल—*(वि०)* पूरा किया हुआ। पूरा। मुकम्मल।

मुकर—*(न०)* १. दर्पण। आईना। मुकुर। २. अस्वीकार। इनकार। *(वि०)* १. मुकर्रर। तय। निश्चित। २. नियुक्त।

मुकरड़ै—*(वि०)* कुल। *(न०)* योग। कुल जोड़। *(अव्य०)* एकसाथ। एक मुश्त।

मुकरणो—*(क्रि०)* १. इनकार करना। २. नट जाना। मुकरना।

मुकळाई—दे० मुकळास।

मुकळणो—दे० मुकळावणो।

मुकळायत—दे० मुकळास।

मुकळावणो—*(क्रि०)* १. भेजना। २. विदा करना। रवाना करना। ३. छोड़ना। ४. बिखेरना। ५. खुला करना। ६. छूटा करना।

मुकळावो—*(न०)* द्विरागमन। गौना। हलाणो। आणो।

मुकळास—*(ना०)* सोने व बैठने की खाली जगह। पर्याप्त स्थान। २. स्थान।

छुटकारा । ३. मुक्तकाश । गुंजाइश । छूट । ४. सुविधा । ५. प्रमुक्तता । हदबस्तपत्र ।

मुकंद—*(न०)* १. विष्णु । २. मुकुंद ।

मुकाण—*(न०)* मृतक के घर संवेदना प्रकट करने को जाने की क्रिया या भाव । परचावणी । काज ।

मुकाणो—*(क्रि०)* १. बिजवाना । २. छुड़वाना । ३. रखवाना । धरवाना ।

मुकाती—*(न०)* १. मुकाता देकर खेत जोतने वाला किसान । २. मुकाता वसूल करने वाला । ३. मुकाते की रकम । *(वि०)* मुकाता से संबंधित । मुकाते का ।

मुकातो—*(न०)* खेत या गाँव की उपज पर अमुक समय के लिये एक मुश्त अमुक रकम लेकर दिया जाने वाला ठेका पट्टा । २. मुकाते पर लगने वाला एक कर । ३. मुकाते की या मुकाते के कर की रकम । ४. जोतने के लिये दिये हुये खेत को मिलने वाला एवजाना ।

मुकादम—*(न०)* १. जमादार । मुखिया । २. ठेकेदार या काम करने वाला व्यक्ति ।

मुकाबलो—*(न०)* १. सामना । मुठभेड़ । २. झगड़ा । ३ विरोध । ४. तुलना । बराबरी । ५. मिलाप । मिलन । ६. बहस । विवाद ।

मुकाम—*(न०)* १. पड़ाव । ठहराव । विश्राम । २. स्थान । जगह । ३. घर । ४. जाँभोजी का मंदिर और उनके नाम पर मेला भरने का स्थान ।

मुकालबो—*(न०)* 'मुकाबलो' का विपर्यय ।

मुकावणो—दे० मुकाणो ।

मुकीम—*(न०)* १. मुद्रा परीक्षक । २. टंक शाला में मुद्रित की जाने वाली मुद्राओं के लिये सोना चांदी आदि तौलने व मुद्राओं की जांच परताल करने वाला अधिकारी ।

मुकुट—*(न०)* देवी-देवताओं तथा राजाओं के सिर पर धारण करने का ताज । मुगट । *(वि०)* सर्वोत्तम । श्रेष्ठ ।

मुकुटमणि—*(वि०)* सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ । *(ना०)* मुकुट में जड़ा हुआ रत्न ।

मुकुर—*(न०)* १. दर्पण । शीशा । २. कलि । कलिका ।

मुकुल—*(न०)* कलिका । कली ।

मुकुंद—*(न०)* १. विष्णु भगवान । २. श्रीकृष्ण ।

मुकेस—*(न०)* बढ़िया जरी के काम का कपड़ा । मुक्कैश ।

मुक्की—*(ना०)* १. प्रहार करने के लिये बांधी जाने वाली मुट्ठी । २. मुक्की का प्रहार ।

मुक्केबाज—*(वि०)* १. मुक्कों से लड़ने वाला । २. मुक्के मारने में निपुण ।

मुक्को—*(न०)* १. बँधी मुट्ठी । घूंसा । २. मुट्ठी का आघात ।

मुक्त—*(वि०)* १. जीवन-मरण से छूटा हुआ । २. बंधन से छूटा हुआ । ३. छुटकारा पाया हुआ । ४ बंधन रहित । ५. त्यक्त ।

मुक्तक—*(न०)* १. फुटकर कविता । २. पूर्ण-भाव वाला स्वतंत्र छन्द ।

मुक्तकंठ—*(वि०)* १. स्पष्ट । खुब । २. कपट रहित । निश्छल । ३. जोर से बोलने वाला ।

मुक्ता—*(न०)* मोती । *(वि०)* पर्याप्त । काफी । मुकतो ।

मुक्ताचर—*(न०)* हंस ।

मुक्तापिष्टी—*(ना०)* अनेक्ष मोतियों का चूर्ण जो पौष्टिक दवाओं में काम आता है ।

मुक्ताफल—*(न०)* मुक्ताफल । मोती ।

मुक्तावळ—दे० मुक्तावलि ।

मुक्तावलि—*(ना०)* मोतियों का हार । मोतीमाळा ।

मुक्ताहळ—दे० मुक्ताफल ।

मुक्ताहार—*(न०)* मोतियों का हार ।

मुक्ति—*(ना०)* १. मोक्ष । २. छुटकारा ।

मुख—*(न०)* १. वदन । मुंह । मूंडो । २. आकृति । शक्ल । ३. किसी वस्तु का अगला या ऊपर का भाग । *(क्रि०वि०)* सामने । सम्मुख ।

मुख जबानी—*(वि०)* १. जबानी याद । कंठस्थ । कंठे । २. जो लिपिबद्ध न हो ।

मुखड़ो—*(न०)* मुख । वदन । मूंडो ।

मुखणो—*(क्रि०)* १. कहना । २. खाना । भोजनो ।

मुखतियार—*(वि०)* अपनी मरजी में आये उस प्रकार करने की सत्ता प्राप्त । मुख्तार । *(न०)* १. किसी के प्रतिनिधि के रूप में काम करने वाला अधिकार प्राप्त व्यक्ति । अभिकर्ता । २. प्रतिनिधि । ३. वकील ४. व्यस्थापक । ५. मुख्य अधिकारी या कार्यकर्ता ।

मुखतियार नामो—*(न०)* अपनी ओर से किसी काम को करने की सत्ता सौंपने का अधिकार-पत्र । वह लेख-पत्र जिसके द्वारा किसी को प्रतिनिधि रूप में काम करने के अधिकार दिये जाते हों । मुख्तारनामा ।

मुखन्नस—*(न०)* हिजड़ा । नपुंसक । हींजड़ो ।

मुखपट—*(न०)* घूंघट । गूंघटो ।

मुखपृष्ठ—*(न०)* ग्रन्थ या समाचार पत्र का पहिला पृष्ठ जिस पर ग्रंथ, ग्रंथकार इत्यादि का नामोल्लेख हो । टाइटिल पेज ।

मुखबिर—*(न०)* वह अपराधी जो सरकारी गवाह बन जाये । २. खबर देने वाला जासूस । भेदिओ ।

मुखबिरी—*(ना०)* मुखबिर का काम ।

मुखबीण—*(न०)* एक फूंक बाद्य । मुहचंग ।

मुखमल—दे० मखमल ।

मुखमंजण—*(न०)* १. भोजनोपरांत मुख सुवासित करने के लिये पान, इलायची आदि खाने की कोई वस्तु । मुखवास । २. पान । ३. दातुन ।

मुखर—*(न०)* १. शब्द । बोल । २. कटु बोल । *(वि०)* १. वाचाल । २. अग्रणी ।

मुखवाद—*(न०)* १. विवाद । कहा-सुनी । तकरार । २. बहस । तर्क वितर्क ।

मुखवास—*(न०)* १. मुख सुवासित करने की वस्तु । मूंछण । २. पान । तंबोल ।

मुखसंभव—*(न०)* ब्राह्मण ।

मुखश्री—*(ना०)* मुख की शोभा ।

मुखातिब—*(वि०)* जिससे कुछ कहा जाय । जिससे बातचीत की जाये । संबोधित ।

मुखंत—*(अव्य०)* मुख से । मुख के द्वारा ।

मुखामुख—दे० मूंढामूढ ।

मुखारविंद—*(न०)* मुख कमल । मुखारविंद ।

मुखालिफ—*(वि०)* प्रतिपक्षी । विरोधी ।

मुखमुख—दे० मुखामुख ।

मुखियो—*(न०)* १. प्रधान । सरदार । २. पुष्टी मार्गीय मन्दिर में सेवा करने वाला मुख्य अधिकारी । *(वि०)* अगुआ ।

मुखी—*(न०)* १. प्रधान । २. नेता । मुखियो ।

मुखोटो—*(न०)* मुंह पर पहनी जाने वाली कोई मुखाकृति । नकली चेहरा । २. चेहरा ।

मुरुतसर—*(वि०)* संक्षिप्त ।

मुरुतार—दे० मुखतियार ।

मुरुतारनामो—दे० मुखतियारनामो ।

मुरुय—*(वि०)* १. खास । आवश्यक । २. सबसे बड़ा । प्रधान । ३. महत्वपूर्ण ।

मुरुयमन्त्री—*(न०)* १. राज्य का बड़ा मन्त्री । चीफ मिनिस्टर । २. किसी सभा सोसायटी का बड़ा मन्त्री । जनरल सेक्रेटरी ।

मुगट—*(न०)* मुकुट । ताज ।

मुगटधर—दे० मुगटधारी ।

मुगटधारी—*(वि०)* मुकुट धारण करने वाला । मुकुटधारी । मुगटधर । *(न०)* राजा ।

मुगटमणी—*(वि०)* सर्वश्रेष्ठ । मुकुटमणि ।

मगटमिण—दे० मुगटमणी ।

मुगटो—*(न०)* १. एक रेशमी वस्त्र । पीताम्बर । अबोटियो । २. रेशमी धोती । मुकटो ।

मुगत—*(न०)* मोती । *(वि०)* मुक्त । खुला । दे० मुक्ति ।

मुगता—*(ना०)* मोती । मुक्ता । *(वि०)* १. फैला हुआ । विस्तृत । २. पर्याप्त ।

मुगताउळि—दे० मुक्तावलि ।

मुगताफळ—*(न०)* मोती । मुक्ताफळ ।

मुगतामाल—*(न०)* १. मिष्टान्नादि में डाला जाने वाला मेवा, केसर, इलायची इत्यादि । २. वह पकवान या मिष्टान्न जिसमें मेवा की अधिकता हो । ३. खूब स्वादिष्ट घृतपूर्ण भोजन ।

मुगतामाळ—*(ना०)* मोतियों की माला । मुक्तामाल ।

मुगतावळ—दे० मुक्तावली ।

मुगताहळ—दे० मुक्ताफल ।

मुगतियो—*(वि०)* १. मोक्ष प्राप्त । २. मोक्षगामी ।

मुगती—दे० मुक्ति ।

मुगतो—*(वि०)* १. पर्याप्त । २. विस्तृत । फैला हुआ । मुकतो ।

मुगदर—*(न०)* १. मदा । २. मोगरी । ३. मोगरियो की जोड़ी ।

मुगध—दे० मुग्ध ।

मुगधणी—*(ना०)* बैलगाड़ी के निचले बैलगाड़ी पर लादकर लाई हुई जलाने की लकड़ी । मथनणी ।

मुगधणो—दे० मुगनणो ।

मुगधा—दे० मुग्धा ।

मुगनणी—दे० मुगधणी ।

मुगनणो—*(न०)* १. बड़ी मुगनणी । २. मुगनणी । जलाने की लकड़ी भरी हुई बैलगाड़ी ।

मुगरेब—*(ना०)* १. एक प्रकार की तलवार । २. शस्त्र विशेष ।

मुगल—*(न०)* १. तातार जाति का मुसलमान । २. मुसलमान ।

मुगलाई—*(ना०)* मुगल बादशाह की सल्तनत । *(वि०)* १. मुगल का । २. मुगल सम्बन्धी ।

मुगलाणी—*(ना०)* १. मुगल जाति की स्त्री । २. मुगल की स्त्री ।

मुगालतो—*(न०)* १. धोखा । २. भ्रम । गलतफहमी । ३० भूल ।

मुग्ध—*(वि०)* १. स्नेहप्रसित । २. मूर्ख । अज्ञ । ३. मोहित । ३. सीधा । भोला । ४. सुन्दर ।

मुग्धा—*(ना०)* १. अभिनव यौवना । नव-यौवना । २. साहित्य में नवयौवन प्राप्त नायिका का एक भेद । मुग्धा नायिका ।

मुग्धा नायिका—दे० मुग्धा सं. २

मुचकलो—दे० मुचळको ।

मुचकुंद—*(न०)* इक्ष्वाकुवंशी महाराज मांधाता का महाबली पुत्र । देव-दानवों के युद्ध में, इसने देवों की सहायता की थी । श्रीकृष्ण ने कालयवन को इसीके द्वारा मरवाया था । मुचुकुंद ।

मुचड़णो—*(क्रि०)* १. वस्तु के पात्र में चोट लगने से वस्तु का झड़ना या मुड़ जाना । मोच आना । २. अलग होना । छूटना । ३. शरीर के किसी संधि में रुधक पड़ना । ४. शरीर के अंग के जोड़ खिसक जाना ।

मुचळको—*(न०)* अपराधी से लिखाया जाने वाला प्रतिज्ञापत्र, जिसमें वह प्रतिज्ञा करता है कि वह नियमित समय पर न्यायालय में हाजिर होगा अथवा भविष्य में वह यदि अपराध करेगा तो अमुक दण्ड का भागी होगा । मुचलका ।

मुछंदर—*(वि०)* बड़ी मूंछों वाला । मुछाळो ।

मुजब—*(अव्य०)* वजह । सांति । मुताबिक । मुजिब ।

मुजरायक—*(वि०)* १. मुजरा करने वाला । २. लाचारिमा । ३. कृपाभिलाषी ।

मुजरिम—*(ना०)* अभियुक्त ।

मुजारै—*(न०)* १. ऋणी के हिसाब में की जाने वाली छूट-छाट । २. लेने देने जमा की हुई रकम । ३. ऋण के पेटे दी हुई किसी वस्तु का ऋणी के खाते में जमा किया हुआ मूल्य । ४. किसी रकम में से काटी हुई रकम । मजरै । *(अव्य०)* मुआवजे में । बदले में ।

मुजरो—*(न०)* १. प्रणाम । २. अभिवादन । ३ जवाँई को गाने जाने वाला एक लोकगीत । ४. वेश्या द्वारा बिना नाचे बैठ कर गाया जाने वाले गाने ।

मुजळो—*(वि०)* १. किंचित । कम । अतिन्यून (तोल में) २. थोड़ा । ओछो । ३. कृपण । कंजूस । ४ कपटी । मनमैलो । ५. हीन वृत्ति । मिजळो ।

मुजाक—*(न०)* १. विघ्न । अड़चन । २. परवाह । मुलाहजा । ३. आशंका । खटको । ४. विवाद । झगड़ो ।

मुझ—*(सर्व०)* १. मेरा । म्हारो । २. मेरी । म्हारी । ३. स्वयं ।

मुझाळणो—*(न०)* लकड़ी की लाख के मुँह पर बनी हुई न्यारी या खुराख जिसमें तेल्यी पोंछी रहती है ।

मुटाव—*(न०)* तनाव । खिंचाव (मन में) ।

मुटियो—*(न०)* मजदूर ।

मुठभेड़—*(ना०)* १. टक्कर । २. सामना । ३. मिलन ।

मुठाणो—*(ना०)* तलवार ।

मुठांणो—*(क्रि०)* तलवार को हाथ में पकड़ना ।

मुट्ठी—*(ना०)* १. हाथ की वह मुद्रा जो अंगुलियों को हथेली की ओर मोड़ने से बनती है । मुट्ठिका । २. मुट्ठी में समाई जाने वाली वस्तु का परिमाण ।

मुट्ठो—*(ना०)* किसी वस्तु का ऐसा भाग या टुकड़ा जो मुट्ठी में पकड़ा जाय। यथा—चंदन का मुट्ठा। चंदण रो बूटो।

मुड़—*(ना०)* हाथ-पाँव आदि संधि स्थलों में पड़ने वाली मोच। मुरड़। मरोड़।

मुड़—दे० मुरड़ सं. १।

मुड़णो—*(क्रि०)* १. टेढ़ा होना। २. लौटना। वापिस गिरना। ३. इधर का उधर होना। घुमाव लेना। ४. युद्ध से पराङ्मुख होकर आना। ५. सलवट पड़ना।

मुड़दल—*(वि०)* १. पराक्रमहीन। २. वीर्य-हीन। मुरदार।

मुड़दासींगी—*(ना०)* सेंदूर और सीसे का मिश्रण जो दवा के काम आता है। मुरदासंग।

मुड़दो—*(न०)* १. प्राण रहित शरीर। शव। मुर्दा। *(वि०)* अशक्त। कमजोर।

मुडासो—दे० मुंडासो।

मुडिया—*(ना०)* बिना मात्रा की बनियाई लिखावट। महाजनी लिपि।

मुड्डा—*(न०ब०व०)* गोल नोक वाली एक जूता जोड़ी।

मुड्डो—*(न०)* १. सरकंडे की बनी हुई कुर्सी। २. सीमा का पत्थर। मुंडियो। ३. एक प्रकार की पगरखी, जिसकी आगे की नोक गोल होती है।

मुढलो—*(न०)* एक आसन। पीढ़ा। पाटा। मूढ़ा।

मुणणो—*(क्रि०)* १. कहना। २. गुन-गुनाना। ३. वर्णन करना।

मुणसणो—*(क्रि०)* मार देना।

मुणाल—*(न०)* १. हंस। मृणाल। २. कमल। ३. ब्रह्मा।

मुणिंद—*(न०)* मुनींद्र।

मुणिस—*(न०)* १. मनुष्य। २. युद्ध। लड़ाई। *(क्रि०स०का०)* कहूंगा। वर्णन करूंगा।

मुणिसगुर—*(न०)* १. श्रेष्ठ मनुष्य। २. वीर पुरुष। योद्धा।

मुणीस—*(न०)* मुनीश। मुनीश्वर। *(क्रि०भ०)* कहूंगा।

मुतफरकात—*(वि०)* फुटकर। *(ब०ब०व०)* १. फुटकर चीजें। २. फुटकर खर्चे की मद।

मुतबळ—*(न०)* 'मतलब' का विपर्यय।

मुतलक—*(अव्य०)* १. बिलकुल। निपट। २. कुछ भी। थोड़ा भी। ३. कदापि।

मुतळब—दे० मतलब।

मुतळबियो—दे० मतलबियो।

मुतळबी—दे० मतलबी।

मुतसद्दी—दे० मुसद्दी।

मुताणो—*(क्रि०)* पिशाब करवाना।

मुताबिक—*(अव्य०)* १. अनुसार। २. समान। बराबर।

मुतालब—*(वि०)* १. प्राप्त करने योग्य। २. प्राप्त किया जा सके। प्राप्तव्य। *(अव्य०)* लेने शेष हैं। मुनासिब-तलब या तकाजा।

मुतालिक—*(अव्य०)* संबंध में। इसके बाबत। विषय में।

मुताळी—*(ना०)* १. मूतने की जगह। मूतरडी। २. मूत्रेंद्री।

मुतावणो—दे० मुताणो।

मुतास—*(ना०)* पिशाब की हाजत।

मुतासी—दे० मुतास।

मुताहळ—*(न०)* मुक्ताफल। मोती।

मुताहळ-माळ—*(ना०)* मोतियों की माला। मोती माला।

मुथरा—दे० मथुरा।
मुद—(न०) आनंद। हर्ष।
मुदकारी—(वि०) आनंददायक।
मुदगणी—दे० मुगधणी।
मुदगर—दे० मुगदर।
मुदत—(ना०) १. अवधि। मयाद। २. नियत काल। ३. बहुत दिन। दीर्घ-काल। मुद्दत। ४. समय। वक्त। ५. देर। विलंब। ६. मदद।
मुदमंगळ—(न०) प्रसन्नता। आनंद। हर्ष।
मुदाई—(वि०) १. मुख्य। प्रधान। २. प्रसन्न। (न०) मुखिया।
मुदायत—(वि०) प्रधान। मुख्य। (न०) १. उत्तराधिकारी। २. विशिष्ट व्यक्ति।
मुदायलो—(न०) जिसके ऊपर मुकदमा किया गया हो। प्रतिवादी।
मुदार—(न०) १. दारमदार। आधार। आश्रय। मदार। २. कार्य का भार। ३. उत्तरदायित्व। भार।
मुदित—(वि०) प्रसन्न। आनंदित।
मुदिता—(ना०) १. एक नायिका। २. प्रसन्नता।
मुदिर—(न०) बादल।
मुदी—(वि०) १. मुख्य। २. अगुआ।
मुदेत—दे० मुदायत।
मुदै—(अव्य०) १. अतः। इसलिये। २. दरअसल। वास्तव में। ३. पहले। सर्वप्रथम। ४. आदि में। आरंभ में। (वि०) मुख्य। खास। असल।
मुदो—दे० मुद्दो।
मुद्दई—(न०) नालिश करने वाला। वादी।
मुद्दत—दे० मुदत सं. १ से ५।
मुद्दती हुंडी—(ना०) वह हुंडी जिसमें उसके रुपये चुकाने की मुद्दत (व्यापारिक नियमानुसार दी जाने वाली अवधि) दी हुई होती है।
मुद्दल—(न०) १. मूल पूंजी। मूल धन। २. किसी व्यवसाय में लगी असल पूंजी। व्यवसाय उद्योग में लगाया हुआ उतना धन जिस पर ब्याज खर्च आदि नहीं गिना गया है। (अव्य०) बिलकुल। (वि०) १. सब। २. असल।
मुद्दो—(न०) १. मतलब। तात्पर्य। २. असली बात। खास बात। खास काम। ३. अधिकार। अख्तियार। प्रभुत्व। ४. अवलंबन। आधार।
मुद्ध—(न०) मस्तक।
मुद्रक—(न०) १. छापने वाला। २. मुद्रण कार्य का जानकार।
मुद्रण—(न०) छपाई का कार्य।
मुद्रणालय—(न०) छापाखाना। प्रिंटिंग प्रेस। छापखाना।
मुद्रा—(ना०) १. नाथ योगियों के कानों में पहिनने का एक प्रकार का कुंडल। २. विनिमय के साधन रूप टंकसाल में ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु का सिक्का। मुहर, रुपया, करेंसी नोट। पैसा। ३. कागज का सिक्का। ४. किसी के नाम की छाप। सील। ५. सीसे के छपाई के ढले हुए अक्षर। ६. योगासनों के रूप में बैठने-उठने का ढंग। अंगविन्यास। ७. विष्णु भक्तों के बाहुओं पर अंकित शंख चक्र आदि के चिन्ह। ८. अंगूठी। ९ मुखाकृति। १०. संध्या करने के समय अंगुलियों का बनाया जाने वाला एक आकार।
मुद्राली—(ना०) दुर्गा। काली। (वि०) मुद्राधारी।

मुद्रालेख—*(ना०)* आदर्शसूचक वाक्य । Motto.

मुद्रिका—*(ना०)* १. अंगूठी । मूँदड़ी । बींटी । २. कुश-मुद्रिका ।

मुद्रित—*(वि०)* १. छपा हुआ । २. छापा हुआ ।

मुधरो—*(वि०)* १. जो सुनने में अच्छा लगे । मधुर । मीठा । २. धीमा । मंद । अधरो । ३. मंदगामी । ४ सौम्य । नम्र । *(क्रि०वि०)* मंद गति से । धीमे ।

मुधि—*(ना०)* बुद्धि ।

मुधिबळ—*(ना०)* बुद्धिबल ।

मुग्ध—*(वि०)* मोहित । मुग्ध । *(ना०)* मुग्धा ।

मुनकादाख—दे० मुनक्का ।

मुनक्का—*(ना०)* एक प्रकार की बीजों वाली बड़ी दाख । मिनकादाख ।

मुनादी—*(ना०)* ढोल आदि बजा कर की जाने वाली घोषणा । ढिंढोरा । ढंढेरो । ढंढेळो ।

मुनाफो—*(न०)* नफा । लाभ । मुनाफा ।

मुनासिब—*(वि०)* १. उचित । वाजिब । ठीक । योग्य ।

मुनां—*(सर्व०)* मुझको ।

मुनि—*(न०)* १. तपस्वी । त्यागी । २. ऋषि । ३. मौन व्रतधारी । ४. सात की संख्या ।

मुनिराज—*(न०)* मुनिगणों में प्रधान मुनि ।

मुनिवर—*(न०)* मुनिश्रेष्ठ ।

मुनिव्रत—*(न०)* १. मौन रखने का व्रत । मौनीव्रत । २. मुनियों की स्वावृत्ति । ३. मुनि द्वारा रखा जाने वाला व्रत । ४. तपस्या ।

मुनिंद—*(न०)* १. जो मुनियों में श्रेष्ठ हो । मुनींद्र । २. नारद मुनि ।

मुनीम—*(न०)* आय व्यय का हिसाब लिखने वाला नौकर । गुमास्ता ।

मुनीश—*(न०)* मुनियों का ईश । बड़ा मुनि । मुनीन्द्र ।

मुनीश्वर—*(न०)* श्रेष्ठ मुनि ।

मुनींद्र—दे० मुनिंद ।

मुनेस—दे० मुनीश ।

मुन्नी—*(ना०)* १. छोटी बच्ची । लड़की । २. पुत्री ।

मुन्ना—*(न०)* १. छोटा बच्चा । २. पुत्र ।

मुफत—दे० मुफ्त ।

मुफतखोर—दे० मुफ्तखोर ।

मुफर—दे० मफर ।

मुफलिस—*(वि०)* गरीब । दरिद्र ।

मुफीद—*(वि०)* १. लाभदायक । २. अनुकूल ।

मुफ्त—*(वि०)* १ बिना मूल्य का । २. जो बिना परिश्रम के प्राप्त हुआ हो । *(अव्य०)* १. व्यर्थ । बेफायदा । २. अकारण ।

मुफ्तखोर—*(वि०)* मुफ्त का खाने वाला ।

मुबारक—*(वि०)* १. शुभ । कल्याणकारी । *(अव्य०)* धन्य । मुबारक हो । *(ना०)* अभिनन्दन । बधाई । बमारक ।

मुबारकबाद—दे० मुबारिकबादी ।

मुबारकबादी—*(ना०)* १. अभिनंदन । धन्यवाद । २. मुबारकबाद या अभिनंदन करने की क्रिया । मुबारकबाद ।

मुमकिन—*(वि०)* १. संभव । २. शक्य ।

मुमानियत—*(ना०)* निषेध । प्रतिबंध ।

मुमुक्षु—*(वि०)* मोक्ष की इच्छा करने वाला । मोक्षार्थी ।

मुर—*(न०)* एक दैत्य। *(वि०)* तीन। *(अव्य०)* १. तीसरी बार। २. पुनः। फिर।

मुरकली—*(ना०)* छोटा मुरकला। दे० मुरकी।

मुरकलो—दे० टीपरो या मिरियो।

मुरकी—*(ना०)* पुरुषों के कान का एक गहना। कान की एक छोटी बाली। कान की मुरकी।

मुरगीघी—*(ना०)* १. जूती। २. मुंडा जूती। ३. एक जलपक्षी। ४. एक छोटी तलवार।

मुरगी—*(ना०)* मुर्गी। कुक्कुटी। कूंकड़ी।

मुरगो—*(न०)* मुर्गा। कुक्कुट। कूंकड़ो।

मुरचंग—दे० मोरचंग।

मुरचो—*(न०)* टखना।

मुरछळ—*(वि०)* बेहोश। *(ना०)* बेहोशी। दे० मोरछला।

मुरछा—*(ना०)* मूर्च्छा। बेहोशी।

मुरछागत—*(ना०)* मूर्च्छा। मूर्च्छावस्था। बेहोशी। मुसागत।

मुरछित—*(वि०)* मूर्च्छित। बेहोशी।

मुरज—*(न०)* मृदंग। पखावज।

मुरझेणो—*(क्रि०)* १. फूल, पत्ते आदि का मुर्झाना। २. सुस्त होना। ३. उदास होना। ४. दुखी होना। ५. कांतिहीन होना। ६. बेहोश होना।

मुरट—*(न०)* एक घास। कांस।

मुरड़—*(न०)* १. ककड़वाली एक सफेद मिट्टी। २. गर्व। अभिमान। ३. स्वाभिमान। ४. अकड़। ५. हाथ, पांव आदि संधि स्थानों में पड़ने वाली मोच। मुड़। *(वि०)* विपरीत। उलटी।

मुरड़णो—*(क्रि०)* १. मरोड़ना। मोड़ना ऐंठना। २. लौटना। मुड़ना। ३. उखाड़ना। छीनना। झपटना। ५. नाश करना।

मुरतबो—दे० मरतबो।

मुरथळ—*(न०)* मरुस्थल।

मुरदनी—*(ना०)* १. उदासीनता। २. कायरता।

मुरदार—*(वि०)* १. मुर्दा के समान। मुड़वल। २. निर्बल। ३. डरपोक। ४. मृत। निष्प्राण। *(न०)* पीप। मवाद। रसी।

मुरदो—*(वि०)* १. मरा हुआ। मृत। २. कमजोर। अशक्त। *(न०)* शव। लाश।

मुरधर—*(न०)* मारवाड़। मरुधर।

मुरधर मंडण—*(न०)* मारवाड़ का राजा। मरुधरेश।

मुरधरा—दे० मरुधरा।

मुरधरियो—*(न०)* मरुधर निवासी। मारवाड़ी।

मुर नमण—*(न०)* शिव। महादेव। मुरलोयण।

मुरब्बी—*(वि०)* १. पूज्य। बुजुर्ग। गुरुजन। बडेरो। बड़को। २. मुखिया। अग्रणी। ३. बड़प्पन रखने वाला। ४. सहायक।

मुरब्बो—*(न०)* १. चाशनी में तैयार किया हुआ कैरी आदि फलों का व्यंजन। मुरब्बा। २. कृषि भूमि का एक नाप ३. चार भुजाओं वाला चतुष्कोण।

मुर भुवण—*(न०)* त्रिलोक। त्रिलोकी। त्रिभुवन।

मुरभवणपति—*(न०)* त्रिलोकीनाथ। ईश्वर।

मुरली—*(ना०)* वंशी। बांसुरी। बंसरी। बंसरी। बंसी।

मुरलीधर—*(प०)* श्रीकृष्ण ।

मुरली मनोहर—*(प०)* श्रीकृष्ण ।

मुर लोक—*(प०)* त्रिभुवन । तीनलोक । तीनों लोक ।

मुर लोयण—*(प०)* त्रिलोचन । महादेव । शिव । मुरनयण । त्रिनयन ।

मुराई—*(का०)* १. मसूड़ा । २. एक घास । मोराळी ।

मुराड़ो—*(व०)* १. एक घास । २. घास का पूला । ३. चिता जलाने के लिये जलाया जाने वाला घास का पूला । ४. जलाने के लिये काम में लिया जाने वाला घास-कांटों आदि का ढेर । ५. अग्नि ज्वाला । ६. पशुओं के मुंह का एक रोग ।

मुराद—*(ना०)* १. अभिलाषा । कामना । २. अभिप्राय । आशय ।

मुरारि—*(प०)* मुर राक्षस के शत्रु । श्रीकृष्ण ।

मुरीद—*(प०)* १. शिष्य । २. अनुयायी ।

मुराळी—दे० मोराळी ।

मुळ—*(अव्य०)* सर्वथा । बिलकुल ।

मुलक—*(प०)* १. देश । मुल्क । २. प्रदेश । ३. संसार ।

मुळक—*(ना०)* मुस्कराहट ।

मुलकगिरी—*(ना०)* १. देश विजय । २. देशाटन । सुसाफिरी । ३. लूटपाट ।

मुळकणो—*(क्रि०)* १. मंदमंद हंसना । मुस्कराना । २. खुश होना ।

मुळकाणो—दे० मुळकणो ।

मुळेमो—दे० मूळमो ।

मुलजिम—*(प०)* अभियुक्त ।

मुलतवी—*(वि०)* मुल्तवी । स्थगित । रोका हुआ ।

मुलतानी—*(ना०)* १. परत रूप में जम्म होने वाली एक खनिज मिट्टी जो पीली सफेद नरम और चिकनी होती है जो कपड़ेमिट्टी करने और सिर धोने आदि में काम आती है । गेट । २. एक रागिनी । ३. मुलतानी बोली । *(वि०)* १. मुलतान नगर का निवासी । मुलतान से संबंधित । मुलतान का ।

मुलतानी माटी—*(ना०)* दे० मुलतानी सं. १ ।

मुलम्मो—*(प०)* १. सोने या चांदी की चढ़ाई हुई परत । झोल । २. ऊपरी तड़क-भड़क ।

मुलाकात—*(ना०)* १. मिलन । भेंट । २. परिचय । जान-पहिचान । ३. समागम ।

मुलागाती—*(वि०)* मिलने वाला । मुलाकाती ।

मुलागात—दे० मुलाकात ।

मुलाजमत—*(ना०)* नौकरी । चाकरी ।

मुलाजिम—*(प०)* नौकर ।

मुळाटो—दे० मोळेटो ।

मुलायजो—*(प०)* १. बड़ों के सम्मान का भाव । २. सम्मान या मर्यादा की ध्यान । लिहाज । संकोच । हिचक । ४. लाज । शर्म । ५. अदब । ६. निरीक्षण । मुलाहिजा । ७. रियायत छूट । ८. प्रभाव ।

मुलायम—*(वि०)* १. जो कड़ा न हो । नरम । कोमल । सुंवाळो । २. नाजुक । सुकुमार ।

मुलायमी—दे० मोलायमी ।

मुलाहिजो—दे० मुलायजो ।

मुलेठी—*(ना०)* गुंजा नामक लता की जड़ । मुलहटी । मधुयष्टी ।

मुल्क—दे० मुलक ।
मुल्की—(वि०) देश का । देश सम्बन्धी ।
मुल्तवी—दे० मुलतवी ।
मुल्ला—(न०) मौलवी । मुल्ला ।
मुल्लो—दे० मुल्ला ।
मुवक्किल—(न०) वह व्यक्ति जिसने मुकदमे को कचहरी में लड़ने को वकील किया है ।
मुश्क—(न०) कस्तूरी ।
मुश्किल—(वि०) कठिन । दुष्कर । (ना०) १. कठिनता । दिक्कत । २. विपत्ति ।
मुश्तरका—(वि०) साझे का । हिस्से का ।
मुसकरसट—(ना०) मंद-हास्य ।
मुसकराना—(क्रि०) १. मंद-मंद हंसना । मुस्कराना । २. पुलकित होना ।
मुसकल—दे० मुश्किल ।
मुसकस—(न०) निश्चय ।
मुसकी—(न०ब०व०) पीठ पर ले जाकर दोनों हाथों को सामिल करके बांधने की क्रिया । २. बाहु । भुजाएं । मुश्कें ।
मुसकिल—दे० मुश्किल । मुसकल ।
मुसटाना—(क्रि०) १. मुष्टि प्रहार करना । २. गला दबोचना । ३. भींचना । ४. मारना ।
मुसटंडा—(वि०) १. मुफ्त का माल खाकर मोटा ताजा बनने वाला पाखंडी । २. मोटा-ताजा । हृष्ट-पुष्ट । ३. बदमाश । गुंडा ।
मुसद्दी—(न०) १. मुतसद्दी । राजकाज करने वाला व्यक्ति । २. लेखक । मुंशी । ३. पेशकार । ४. मुनीम ।
मुसम्मात—(ना०) नामवाली । स्त्री । श्रीमती ।
मुसम्मी—(न०) नामवाला । पुरुष । श्रीयुत ।
मुसलमान—(न०) इस्लाम धर्म का अनुयायी ।
मुसलमानी—(ना०) छोटे बच्चों की मूत्रेन्द्री के अग्रभाग का चमड़ा काटने की मुसलमानों की एक धार्मिक रीति । सुन्नत । (वि०) मुसलमान का ।
मुसल्लो—(न०) १. मुसलमान । मुसल्ला । मौलवी । २. ईदगाह । ३. वह दरी जिस पर नमाज पढ़ी जाती है ।
मुसागत—(ना०) १. मूर्च्छागति । बेहोशी । मुरछागत । २. दुख । तकलीफ । ३. परिश्रम । मेहनत । मशक्कत ।
मुसाफिर—(न०) यात्री । पथिक । बाटेक । मार्गी ।
मुसाफिरखानो—(न०) १. मुसाफिर के ठहरने का स्थान । २. सराय ।
मुसाफिरी—(ना०) यात्रा । प्रवास ।
मसायब—दे० मुसाहिब ।
मुसाळ—दे० मोसाळ ।
मुसाहिब—(न०) १. राज्याधिकारी । २. पदाधिकारी । प्रधान । दीवान । मुसायब ।
मुसाहिबी—(ना०) मुसाहिब का पद या काम ।
मुसीबत—(ना०) तकलीफ । कष्ट ।
मुस्टी—दे० मुठ्ठी ।
मुस्त—(न०) मुट्ठी । घूंसा (अव्य०) मुट्ठी भर ।
मुस्तगीस—(न०) १. फरियादी । २. दावेदार ।
मुस्तीखांड—(ना०) शक्कर । कड़कड़ खांड । गड़गड़खांड ।
मुस्तैद—(वि०) १. तत्पर । तैयार । २. सावधान ।

मुहकम—*(वि०)* १. दृढ़। मज़बूत। २. पक्का। ३. चिरस्थायी।

मुहड़ी—दे० मूस।

मुहत—*(न०)* महत्व। दे० मुहूर्त्त।

मुहतो—*(न०)* १. जागीर का प्रबंधक। २. बनियों की एक अल्ल। मूंतो। दे० महतो।

मुहताज—दे० मोहताज।

मुहब्बत—दे० मोहब्बत।

मुहमेज—*(क्रि०वि०)* आमने-सामने। *(ना०)* १. टक्कर। भिड़न्त। मुठभेड़। २ युद्ध।

मुहमेळ—*(ना०)* तुकबंदी (का०)। *(वि०)* मिलनसार।

मुहमेळो—दे० मूं-मेळो।

मुहम्मद—*(न०)* इस्लाम धर्म के प्रवर्तक।

मुहर—*(क्रि० वि०)* १. आगे। २. पहिले। *(ना०)* १. स्वर्ण मुद्रा। मोहर। २. नाम, हस्ताक्षर आदि की छाप लेने का ठप्पा।

मुहरखो—*(न०)* १. संदेशवाहक। २. जासूस। ३. पशुओं के मुंह पर बांधी जाने वाली एक जाली। मुहरो। मोहरो।

मुहर्रम—*(न०)* १. अरब वर्ष का पहिला महिना। २. इमामहुसैन के शोक के दस दिन।

मुहरि—*(क्रि० वि०)* १. आगे। २. पहले। ३. सामने।

मुहरिर—*(न०)* १. मुंशी। मुहर्रिर। २. लेखक। लिपिक। कल्र्क।

मुहरी—*(ना०)* ऊंट की नकेल में बंधी रहने वाली रस्सी। मोहरी।

मुहरो—*(न०)* ऊंट आदि पशुओं के मुंह पर बांधी जाने वाली जाली। दे० मोहरो।

मुहवड़—*(ना०)* हाथी की सूंड का कवच। *(क्रि० वि०)* आगे।

मुहाड़ी—*(ना०)* १. चरस की सूंड का नीचे का भाग। २. सूंड का अगला भाग।

मुहाळ—*(ना०)* १. हाथी के दांत पर लगाई जाने वाली चूड़ी। २. द्वार। ३. आश्चर्य। दे० 'मुराड़ो' स० ६। *(वि०)* १. प्रसन्न। २. असम्भव।

मुहाळो—दे० मुहाळ।

मुहावरेदार—*(वि०)* मुहावरों से युक्त (भाषा)।

मुहावरो—*(न०)* १. भाषा में रूढ़ि से जिसका विशेष अर्थ होता हो वह शब्द प्रयोग। २. वह वाक्य या पद जिसका अर्थ लक्षणा या व्यंजना द्वारा निकलता हो। मुहावरा। वाग्वृत्ति। वाग्धारा। ३. अभ्यास। आदत। ४. व्यसन। ५. व्यसन-वस्तु की मात्रा। ६. बात करने की छटा।

मुहिम—*(ना०)* १. सेना। फौज। २. युद्ध। संग्राम। ३. आक्रमण। चढ़ाई। अभियान। ४. कोई विकट काम। ५. हरावळ। *(क्रि०वि०)* १. आगे २. सामने।

मुहियड़—*(वि०)* १. मुख्य। प्रधान। २. आगे रहने वाला। ३. वीर।

मुहियो—*(वि०)* १. अग्रगामी। २. प्रधान। मुखिया।

मुहिर—*(क्रि० वि०)* आगे।

मुहुत—दे० मुहत।

मुहुरमुह—*(क्रि०वि०)* बार-बार। पुनः पुनः। मुहुर्मुहुः।

मुहुर-मुहुर—दे० मुहरमुह।

मुहूर्त्त—दे० महोरत।

मुंअंधारो—(न०) १. सूर्योदय के पूर्व का और सूर्यास्त के बाद का ऐसा अंधेरा जिसमें आदमी पहचाना जा सके। २. तड़के। सवेरे जल्दी।

मुंई—(क्रि०) १. मर गई। (वि०) मरी हुई। (इ०) एक गाली।

मुंओ—(अपूर्ण क्रि०) १. मरा था। (वि०) मरा हुआ। (न०) एक गाली।

मुंओड़ी—(वि०) मरी हुई।

मुंओड़ो—(वि०) मरा हुआ।

मुंगधणी—(ना०) १. ईंधन (बलीता) से भरी हुई बैलगाड़ी। २. गाड़ी भर बलीता।

मुंगधणो—दे० मुंगधणी।

मुंचणो—(क्रि०) १. छोड़ना। २. टपकाना। ३. मारना।

मुंजेवड़ी—(ना०) मूंज की रस्सी। मूंजोड़ी। मूंजड़ी।

मुंजोड़ी—दे० मुंजेवड़ी।

मुंड—(न०) १. मस्तक। सिर। २. बिना बालों का (मुंडन किया हुआ) सिर। ३. कटा हुआ सिर। (वि०) १. गंजा। २. मूंडा हुआ।

मुंडक—(न०) १. नाई। क्षौरिक। २. सिर। मस्तक।

मुंडण—(न०) १. मथवा। सिर। २. सिर के बाल उतरवाना। मुंडन।

मुंडन—(न०) १. बच्चे के पहली बार बाल उतरवाने का संस्कार। मुंडन संस्कार। झड़ूला उतारणो। २. सिर के बाल साफ करवाना। मुंडण।

मुंडमाळ—(ना०) काली का या शिवदेव के गले में धारण की हुई मस्तकों की माला।

मुंडाई—(ना०) मुंडवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

मुंडाणो—(क्रि०) मुंडवाना।

मुंडावणो—दे० मुंडाणो।

मुंडासो—(न०) किसी वस्तु को सिर पर उठाने के लिये सिर पर बांधा जाने वाला मोटा कपड़ा। २. साफा। पगड़ी।

मुंडियो—(न०) सीमा का पत्थर। सीमा चिन्ह।

मुंडी—(ना०) विधवा। रांड। (वि०) जिसके बाल कटे हुये हों (स्त्री)।

मुंडेर—(ना०) छोटी दीवाल (छत पर की) पंडी।

मुंडो—(न०) १. सीमा का पत्थर। २. खेत, गांव, जागीर आदि की सीमा पर खड़ा किया पत्थर। खेड़ो।

मुंतजिम—(न०) १. व्यवस्थापक। २. मुंसिफ।

मुंदणो—(क्रि०) १. आंख का बंद होना। २. मरना।

मुंध—(ना०) मुग्धा नायिका। (वि०) १. मूर्ख। २. मूर्ख।

मुंबई—दे० मुंमाई।

मुंबो—दे० मूंबो।

मुंशी—(न०) १. लेखक। २. ऑफिस का क्लार्क। मुनशी।

मुंसिफ—(न०) हाकिम। छोटी अदालत का न्यायाधीश। हाकम।

मुंह—(न०) मुख। मूंढो।

मुंहअंधारो—दे० मुंअंधारो।

मुंहकाण—दे० मुकाण।

मुंहगो—दे० मूंघो।

मुंहजोर—(वि०) १. अधिक बोलने वाला। २. उद्दण्ड।

मुंहजोरी—(ना०) १. अधिक बोलना। लबाड़पना। २. उद्दण्डपना।

मुंहड़ै—(अव्य०) १. सामने। आगे। समक्ष। २. सीमा-स्थित। ३. निकट। ४. मुंह से।

मुंहड़ो—(न०) १. मुंह। मुख। २. किसी बिरतन जैसी आकृति का वह ऊपरी भाग जहां से वह खुलता है। ३. आकृति। शक्ल। ४. दरवाजा।

मुंह देखाई—(ना०) नए वर द्वारा वधू के प्रथम मुख-दर्शन की सांकेतिक क्रिया। २. वह भेंट जो मुंह-दर्शन के लिये दी जाने वाली भेंट।

मुंहमाळ—(न०) १. तलवार के म्यान के ऊपर सिरे में लगा हुआ धातु का कवच। मुनाळ। २. गाय भैंस आदि चौपायों का मुख तथा मुखकी कुंदरता।

मुंहसती—दे० मूंमती।

मुंहमेज—दे० मुहमेज।

मुंहर—दे० मुंहर।

मुंहरखी—दे० मुंहरखी।

मुंहरी—(ना०) ऊंट आदि के नाक में बांधी जाने वाली रस्सी। नकेल।

मुंहरो—दे० मुंहरी।

मुंहसारणी—दे० मुंहारणी।

मुंहारणी—(ना०) पाठशाला में जो सीखा गया है अथवा पट्टी-बहाई जो सीखे जाने वाले हैं उन सबका (सभी विद्यार्थियों का सामूहिक रूप से या अकेले) किया जाने वाला दैनिक कंठाभ्यास। गणना-वृत्ति। मुखरणी।

मुंहारणी करणी—दे० मांडणी बोलणी।

मुंहारणी बोलणी—दे० मांडणी बोलणी।

मुंहारणी याद करणी—दे० मांडणी बोलणी।

मुंहारणी सीखणी—दे० मांडणी बोलणी।

मुंहासा—(न०ब०व०) युवावस्था में मुंह पर निकलने वाले दाने। मुंहाले।

मू—दे० मूं।

मूक—(वि०) १. अवाक्। गूंगा। वाचक। २. दीन। ३. विनीत। ४. चुप। शांत।

मूकणो—(क्रि०) १. छोड़ना। त्यागना। तजना। २. मुक्त करना। ३. रखना। धरना। ४. स्थापना करना। ५. पहिनना। ६. भेजना। ७. दूर करना।

मूकाणो—(क्रि०) १. छुड़ाना। २. रखवाना। ३. भिजवाना। ४. विवश करना।

मूकी—दे० मुक्की।

मूको—दे० मुक्को।

मूछण—(न०) १. काटने का काम। २. मुखवास। ३. शराब, अफीम आदि के बाद मुख साफ करने के लिए खाये जाने वाले पदार्थ। खारभंजणा।

मूछणो—(क्रि०) काटना।

मूछियो देणो—(मुहा०) काटना। मारना। नाश करना।

मूझ—दे० मुझ।

मूझतणी—(वि०) मेरी।

मूझतणो—(वि०) मेरा।

मूठ—(ना०) १. स्त्रियों के गले का एक गहना। मोंवोळी। तोड़ियो। २. उरद के दानों को मंत्रित करके चलाई जाने वाली एक प्राण-घातक चोट। ३. एक मैला मात्रिक प्रमेय। ४. चार अंगुल का नाप। ५. मुट्ठी। ६. रस्सी, तार आदि को मुट्ठी से किया जाने वाला नाप। ७. मूठ की चौड़ाई का नाप। ८. तलवार आदि का हत्था। बेस्ता। ९. उल्कापात। १०. वज्रपात।

मूठाणी—दे० मूठाळी ।
मूठाणो—(क्रि०) १. तलवार उठाना । तलवार पकड़ना ।
मूठाळी—(ना०) तलवार । तरवार ।
मूठियो—(न०) १. स्त्रियों के पहिनने का हाथी दांत, लाख, नारियेरी आदि की चूड़ियों का सैट । २. कलाई । ३. कोहनी से कलाई तक का भाग । ४. टखने और पिंडली के बीच का पैर का पतला भाग । ५. मुट्ठी के आकार की (मुट्ठी में बांध कर बनाई हुई) घी में तली हुई लोई । मुठिया । खुरमो ।
मूठी—मुट्ठी ।
मूडवर—(न०) रावण ।
मूडी—दे० मूंडी ।
मूडो—(न०) १. सरकंडे की कुरसी । मुड्डा । मुड्ढी । २. सौ मन का वजन । ३. किसी वस्तु के भाव का एक परिमाण ।
मूढ—(वि०) मूर्ख । बुद्धिहीन ।
मूढता—(ना०) १ मूर्खपना । २. अज्ञानता ।
मूढमार—(ना०) १. मर्म स्थानों पर की जाने वाली मारपीट । २. ऐसी पिटाई जो दिखे नहीं, पर पीड़ा अधिक करे ।
मूढामूढ—दे० मूंढामूंढ ।
मूढियो—(न०) किसी आभूषण (कड़े) या वस्तु में जानवर (बाघ) की मुंहाकृति । २. मुखाकृति ।
मूढो—दे० मूंढो ।
मूण—(ना०) १. पानी का बड़ा माट । मिट्टी का बड़ा घड़ा । २. गूंधे जाने वाले मैदे या आटे में डाला जाने वाला घी या तेल, जिससे पूरी, ठौर, मुठिया आदि तलने पर खस्ता या मुलायम बनते हैं । मोयन ।
मूणदार—(वि०) मोयनदार ।
मूणियो—(न०) पानी का बड़ा घड़ा ।
मूणो—दे० मूण सं० १.
मूत—(न०) मूत्र । पिशाब । पेसाब । मूतर ।
मूतणियो—(वि०) मूतने वाला । (न०) मूत्रेन्द्रिय ।
मूतणी—दे० मूतरणी ।
मूतणो—दे० मूतरणो ।
मूतर—दे० मूत्र ।
मूतरड़ी—(ना०) मूतने की जगह । पिशाबघर ।
मूतरणी—(ना०) मूत्रेन्द्रिय । मूतणी ।
मूतरणो—(क्रि०) पिशाब करना । मूतना । मूतणो ।
मूतिया—(न०) मूत्र । पिशाब ।
मूती—(ना०) १. मूत्र । २. मूत्रनली । लिंगेन्द्री ।
मूत्र—(न०) पिशाब । मूत ।
मूत्रकृच्छ्र—(न०) रुक-रुक कर पेशाब आने का रोग ।
मूत्रपिंड—(न०) शुद्धरक्त और मूत्र को अलग करने वाला अवयव । किडनी ।
मूत्राशय—(न०) मूत्र के इकट्ठा होने की थैली । नाभि के नीचे अंदर का वह भाग जहां मूत्र संचित होता है । युरिन ब्लेडर ।
मून—(न०) १. मौन । चुप । २. नहीं बोलने का व्रत । मौनव्रत । (वि०) मूक । गूंगो ।
मूम—(ना०) १. रहस्य । २. तीव्र इच्छा । ३. इच्छा । ४. झुकाव । प्रवृत्ति । ५. गर्वोक्ति । ६. गर्व । अभिमान । ७. आक्रमण । ८. बजार में किसी वस्तु के तेजी या मंदी का रुख । रुण । तेजी या मंदी की विशेष दिशा । (Trend.

ट्रेंड) ६. भावों का झुकाव। रुझान। १०. मोम। मैण।

मूमती—(ना०) सफेद वस्त्र का एक टुकड़ा जिसे जैन साधु अपने मुख पर बांधे रहते हैं। मुंहपती। मुखपट्टी।

मूमल—(ना०) १. जैसलमेर की एक लोक प्रसिद्ध सुंदर स्त्री। २. लोक गीतों की एक नायिका। ३. प्रेमी महेंद्र और प्रेमिका मूमल के एक अनूठे प्रेम की लोकगाथा।

मूमल री मैड़ी—(ना०) जैसलमेर से कुछ दूर काक नदी के किनारे पर स्थित मूमल के प्रसिद्ध महल का खंडहर।

मूर—दे० मूळ सं. १ और ६।

मूरख—(वि०) मूर्ख। बुद्धिहीन। बेवकूफ। नासमझ। २. अपढ़। अभण।

मूरखता—(ना०) मूर्खता। नासमझी। मूरखाई।

मूरखाई—(ना०) मूर्खता। नासमझी। मूरखपणो।

मूरखो—दे० मूरख।

मूरत—दे० मूर्त्ति।

मूरतवंत—(वि०) १. मूर्तिमान। २. साक्षात।

मूर्ख—दे० मूरख।

मूर्खता—दे० मूरखता।

मूर्खानंद—(वि०) महामूर्ख।

मूर्च्छना—(ना०) १. सातों स्वरों का क्रम से आरोह-अवरोह। २. मूर्च्छा।

मूर्च्छा—(ना०) बेहोशी। बेभान।

मूर्ति—(ना०) १. देवी-देवता की आकृति के अनुरूप घड़ी हुई प्रतिमा। विग्रह। २. स्वरूप। सूरत। आकृति। ३. शरीर। देह। ४. चित्र। ५. प्रतीक। ६. भगवान बदरीनाथ की माता का नाम।

मूर्तिपूजक—(न०) देवता की मूर्ति को पूजने वाला।

मूर्तिपूजा—(ना०) मूर्ति की पूजा।

मूर्धन्य—(वि०) १. मूर्धा से संबंध रखने वाला। २. मूर्ध स्थान से उच्चारण होने वाला। ३. मस्तक में स्थित। ४. प्रधान। मुख्य। (न०) मूर्धस्थानीय वर्ण।

मूर्धन्यवर्ण—(न०) वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्धा से होता है—ऋ, ट, ठ, ड, ढ आदि वर्ण।

मूर्धा—(न०) १. मस्तक। सिर। २. मुँह में तालु और अलिजिह्वा के बीच का भाग। मूर्द्धा।

मूळ—(न०) १. वृक्षादि वनस्पति की जड़। जड़। २. आरंभ। ३. उत्पत्ति। ४. आधार। नींव। ५. स्वयं ग्रंथकार द्वारा लिखित ग्रंथ। ६. नदी का उत्पत्ति स्थान। ७. कारण। ८. उन्नीसवां नक्षत्र। ९. सर्वथा। बिलकुल। १०. मूलधन। ११. चंदन। १२. पूर्व दिशा।

मूल—दे० मूल्य।

मूळकूण—(ना०) पूर्व दिशा। २. सोलह दिशाओं में की एक दिशा।

मूळको—(न०) जड़। मूल।

मूळगो—(वि०) १. समस्त। पूर्णतया। २. नितान्त। सर्वथा। बिलकुल। ३. किंचित्। थोड़ा भी।

मूळग्रंथ—(न०) असल ग्रंथ, जिसकी टीका, भाषान्तर आदि हो गये हों।

मूळचूळ—(वि०) १. वास्तविक। २. मौलिक।

मूळतत्व—(न०) १. पंच महाभूतों में का एक। २. किसी वस्तु का प्राथमिक

घटक तत्व । ३. शास्त्र या कला के प्राथमिक सिद्धान्त ।

मूळद्वार—*(न०)* १. गुदा द्वार । २. मुख्य द्वार ।

मूळधन—*(न०)* व्यापार में लगाई हुई असली पूंजी ।

मूळपुरुष—*(न०)* वंश का आदि पुरुष ।

मूळप्रकृति—*(ना०)* संसार की वह आदि सत्ता जिसका यह संसार परिणाम या विकास है । सृष्टि का आदिकरण ।

मूळप्रति—*(ना०)* १. छपवाने के लिए किया गया लेखन । २. छापने का मूल लेख । प्रेस कॉपी ।

मूळमंत्र—*(न०)* बीजमंत्र ।

मूळा—*(न०)* १. मूल नक्षत्र । २. 'मूळो' का बहुवचन ।

मूळां-री-सिकार—*(ना०)* १. ऊंचे वृक्ष पर बंधे हुए मचान पर बैठ कर किया जाने वाला शिकार । २. वृक्ष की ओट में या वृक्ष पर बैठ कर किया जाने वाला शिकार । ३. जलाशय के किनारे खंदक में बैठ कर किया जाने वाला शिकार ।

मूळी—*(ना०)* १. स्वाद में चरपरा और लंबी जड़ वाला एक पौधा । २. उक्त पौधे की सफेद, नरम और लंबी जड़ । गोड । मूळो । ३. छोटा मूल । जड़ी । ४. जड़ी बूटी ।

मूळो—दे० मूळी ।

मूल्य—*(न०)* १. कीमत । मोल । दाम । २. महत्व ।

मूल्यवान—*(वि०)* १. कीमती । २. महत्वपूर्ण ।

मूषक—*(न०)* १. चूहा । ऊंदरो । २. चोर ।

मूस—*(ना०)* १. सोना-चांदी गालने की घरिया । कुठाली । मुहड़ी । मूष ।

मूसणो—*(क्रि०)* १. मोसना । चुराना । २. ठगना । ३. लूटना । ४. झपटना । ५. अपहरण करना ।

मूसळ—*(न०)* अनाज को ओखली में डाल कर छड़ने-कूटने का एक मोटा डंडा । सांबेलो । खांडणियो ।

मूसलचंद—*(न०)* १. गँवार । २. झगड़ा करने वाला । ३. हस्तक्षेप करने वाला । अड़बड़पंच ।

मूसलधार—*(अव्य०)* मूसल के समान मोटी व अनवरत धारा (वर्षा) ।

मूसली—*(ना०)* १. वनस्पति की जड़ जो वीर्यवर्धक होती है । मुसली । २. बलराम । बलिभद्र ।

मूसाळो—दे० मामेरो ।

मूसावाहण—*(न०)* गणेश । गजानन ।

मूसो—*(न०)* १. चूहा । मूषक । ऊंदरो । २. चोर । ३. ठग । ४. चहूटियों का एक पेचम्बर । मूसा । ५. ताना । व्यंग्य । मोसो ।

मूहळ—दे० मूसळ ।

मूं—*(सर्व०)* १. मैं । म्हूं । २. मुझे । मुझको । म्हनै । ३. मेरी । मेरा । म्हारी ।

मूंअंधारो—*(न०)* किसी का मुँह स्पष्ट नहीं दिखने जैसा प्रातःकाल व संध्या समय का अंधेरा । प्रभात या सूर्यास्त के थोड़े बाद का समय ।

मूंग—*(न०)* हरे रंग का एक द्विदल धान्य ।

मूंगड़ी—*(ना०)* मूंग के चूर्ण को मसालों आदि के साथ आटे में मिलाकर बनाई हुई तथा तवे पर तली हुई एक खस्ता रोटी।

मूंगथाळ—दे० मोहनथाळ।

मूंगफळी—*(ना०)* १. जड़ में उत्पन्न होने वाला एक फल। एक तैलीय मूल फल। मूंगफली। चीनियां बादाम। सिंग। २. मूंग की फली।

मूंगम—*(ना०)* १. आदर। सत्कार। मान। २. प्रतिष्ठा। ३. मनुहार। मनवार। ४. महँगाई।

मूंगवड़ी—*(ना०)* मूंग की बड़ी।

मूंगाई—*(ना०)* १. महँगाई। २. आदर। सम्मान।

मूंगियाड़ो—*(ना०)* वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाने की अवस्था। मूंगीवाड़ो।

मूंगियो—*(वि०)* मूंग के रंग जैसा हरा। *(ना०)* मूंगा। प्रवाल।

मूंगीवाड़ो—दे० मूंगियाड़ो।

मूंगेडी—दे० मूंगवड़ी।

मूंगेरो—दे० मोंघेरो।

मूंगो—*(वि०)* महँगा दे० मूंमियो।

मूंगोडी—दे० मूंगवड़ी।

मूंघम—दे० मूंगम।

मूंघवाड़ी—*(ना०)* महँगाई। मूंगीवाड़ो। मूंगियाड़।

मूंघाई—दे० मूंगाई।

मूंघा मोलो—*(वि०)* महँगे मूल्य का। बेशकीमती।

मूंघो—*(वि०)* महँगा।

मूंछ—*(ना०)* पुरुष के ऊपरी होठ पर के बाल।

मूंछणो *(क्रि०)* १. मारना। २. काटना। ३. भोजनोपरांत पान, इलायची आदि खाकर मुँह साफ करना।

मूंछ ताणणो—*(मुहा०)* १. गर्व करना। २. साहस करना। ३. शक्ति व साहस का काम करना।

मूंछाळ—*(वि०)* बड़ी मूंछों वाली।

मूंछाळो—*(वि०)* मूंछों वाला। बड़ी मूंछों वाला। *(ना०)* १. मर्द। २. वीर। बहादुर।

मूंछियो देणो—*(मुहा०)* १. मारना। काटना। २. हानि पहुंचाना।

मूंज—*(ना०)* सरकंडे की छाल की रस्सी। मूंजड़ी। वड़कली।

मूंजड़ी—दे० मूंज।

मूंजी—*(वि०)* कंजूस। कृपण।

मूंजोड़ी—दे० मूंज।

मूंजीपणो—*(ना०)* कंजूसी।

मूंझणो—*(क्रि०)* दम घुटना। अमूंझणो। *(ना०)* १. दम घुटन। अमूंझण। २. घबराहट।

मूंझाणो—दे० मूंझणो। दे० मूंझावणो।

मूंझारो—*(ना०)* एक ज्वर। निमोनिया।

मूंझावणो—*(क्रि०)* १. गहन विचार में उलझना। २. व्यग्र होना। ३. घबरा जाना। ४. हतोत्साह होना।

मूंठ—दे० मूठ।

मूंड—*(ना०)* १. सिर। माथो। २. कटा हुआ सिर। मुंड।

मूंडकटी—*(ना०)* युद्ध में वीरतापूर्वक मर मिटने के उपलक्ष में मिली जागीरी।

मूंडकी—*(ना०)* १. सिर। २. कटा हुआ सिर।

मूंडको—*(न०)* १. व्यक्ति। मनुष्य। **जण। जणो**। २. सिर। मुंड। **माथो**। ३. तीर्थों पर लगने वाला यात्री कर। ४. व्यक्ति कर। ५. सीमा का पत्थर। **मुंडो**।

मूंडण—*(न०)* मुँह। शक्ल (क्रोध में) दे० मुंडण।

मूंडणो—*(क्रि०)* १. मुंडन करना। बाल साफ करना। २. धोखा देना। ठगना। ३. चेला बनाना।

मूंडवाळ—*(न०)* नाई। नाऊ। हजाम। **मूंडाळ**।

मूंडागे—*(अव्य०)* मुँह के आगे। साम्हने।

मूंडाणो—दे० मूंडावणो।

मूंडाळ—*(न०)* नाई। **मूंडवाळ**।

मूंडा-मूंड—दे० मूंढा-मूढ।

मूंडावणो—*(क्रि०)* १. मुंडन करवाना। २. **धोखा** खा जाना। ठगा जाना। ३. चेला बनना।

मूंडी—*(ना०)* १. धनमाल। पूंजी। २. व्यवसाय के लिए लगाया हुआ या इकट्ठा किया हुआ धन। ३. रकम। पूंजी। ४. सिर। ५. नाई।

मूंडे—*(क्रि० वि०)* १. सामने। आगे। सम्मुख। २. मुँह के आगे। **रोबरू**। ३. मुँह में।

मूंडो—*(न०)* १. मुँह। मुख। **मूंढो**। २. धान्य आदि का एक माप। २. एक माप पात्र। ३. माप का चिन्ह। ४. सीमा चिन्ह। ५. दूरी का चिन्ह। ६. बरतन थैली आदि का मुख। ७. द्वार। ८. सिरा। नोक। ९. पक्षी की चोंच।

मूंढामूंढ—*(अव्य०)* १. मुँह पर। प्रत्यक्ष। **रोबरू**। २. मुँह के सामने। सम्मुख।

मूंढो—*(न०)* १. मुँह। २. चेहरा। शक्ल। २. बरतन, थैली आदि के ऊपर का भाग जहाँ से वह खुलता है। ३. चोंच।

मूंदड़ी—*(ना०)* मुद्रिका। अंगूठी।

मूंदड़ो—*(न०)* बड़ी अंगूठी।

मूंदणो—*(क्रि०)* १. आंखें मींचना। २. बंद करना। ३. ढकना। ४. गाड़ना।

मूंध—*(ना०)* १. स्त्री। नारी। २. पत्नी। ३. मुग्धानायिका।

मूंधो—*(वि०)* औंधा। उलटा। **ऊंधो**।

मूंमाथो—*(न०)* १. अंत। पार। २. किसी वस्तु का अधिक से अधिक परिमाण।

मूंमेळो—*(न०)* १. मिलन। मुलाकात। २. साक्षात्कार। ३. (मृत्यु के समय) अन्तिम मिलन।

मूंरी—दे० मुंहरी।

मूं-सूझाको—*(न०)* १. एक दूसरे को पहिचाना जाये ऐसा पिछली रात (प्रभात) का मिटता हुआ अंधेरा। २. प्रभात समय।

मृग—*(न०)* १. हरिन। हिरण। **झिग**। २. पशु। ३. चौपाया मात्र।

मृगचर्म—दे० मृगछाळा।

मृगछाळा—*(ना०)* हरिन की खाल। मृगचर्म।

मृगशावक—*(न०)* हरिण का बच्चा। मृगछौना। **हिरणोटो**।

मृगजळ—*(न०)* जल अथवा जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी रेगिस्तान में कड़ी धूप में दिखाई देने

वाला पानी का आभास । मिथ्या जलाभास । मृगतृष्णा । मृग-मरीचिका ।

मृगतृष्णा—दे० मृगजल ।

मृगनयनी—*(ना०)* मृग के समान सुन्दर नयनों वाली स्त्री । मृगाक्षी । **मिरगानैणी** ।

मृगपति—*(न०)* सिंह । मृगेन्द्र ।

मृगमद—*(ना०)* कस्तूरी ।

मृगया—*(न०)* शिकार । आखेट ।

मृगराज—*(न०)* सिंह । शेर । मृगेन्द्र ।

मृगशिरा—*(न०)* तीन तारों वाला एक नक्षत्र । **हिरणी** ।

मृगाक्षी—दे० मृगनयनी ।

मृगांक—*(न०)* १. चंद्रमा । २. (रत्न, स्वर्ण आदि से बनी) एक रसौषधि ।

मृगी—*(ना०)* १. हरिणी । **मिरगली** । २. एक रोग । **मिरगी** ,

मृगेन्द्र—*(न०)* सिंह । शेर । मृगराज ।

मृड—*(न०)* महादेव । शिव ।

मृडा—*(ना०)* पार्वती ।

मृणाल—*(ना०)* १. कमल नाल । २. हंस । **मुणाल** ।

मृत—*(वि०)* १. मृत्यु प्राप्त । **मरा हुआ** । **मरियोड़ो** ।

मृतक—*(वि०)* मरा हुआ । *(न०)* मुर्दा । शव । लाश ।

मृतजीवनी—*(ना०)* एक औषधि । मृत-संजीवनी ।

मृत्तिका—*(ना०)* १. मिट्टी । **माटी** ।

मृत्यु—*(ना०)* १. मरण । **मौत** । काल ।

मृत्युलोक—*(न०)* वह लोक जिसमें प्राणियों का जन्म मरण होता है । **पृथ्वीलोक** ।

मृत्युंजय—*(न०)* १. शिव । महादेव । २. एक वेद मंत्र । *(वि०)* १. मृत्यु को जीतने वाला । २. अमर ।

मृद—*(ना०)* मिट्टी ।

मृदंग—*(न०)* १. एक प्रसिद्ध वाद्य । एक प्रकार की ढोलक ।

मृदु—*(वि०)* १. मीठा २. नाजुक । कोमल । ३. सुहावना ।

मृदुध्वनि—*(ना०)* १. कोयल । २. मीठी ध्वनि ।

मृदुल—*(वि०)* १. कोमल । २. सुकुमार ।

मृषा—*(न०)* झूंठ । असत्य । **कूड़** । *(अव्य०)* १. व्यर्थ । झूठमूठ । *(वि०)* झूठा । **कूड़ो** । **अणूंतो** ।

मे—दे० मेह ।

मेउड़ो—*(न०)* वर्षा । मेह ।

मेक—*(वि०)* १. एक । २. अकेला ।

मेकडसण—*(न०)* गणेश । गजानन । एकदंत । **मेकदंत** । जिनके बाहर का एक दांत है वह ।

मेकदंत—*(न०)* गजानन । एकदंत । **मेकडसण** ।

मेकवर—*(अव्य०)* एक बार । एक दफा ।

मेख—*(ना०)* १. निमेष । पलक । २. कील । **खीली** । ३. खूंटा ४. फाचरा । ५. दाँत में जड़ी जाने वाली चूंप ।

मेखचो—*(न०)* कील ठोकने का हथौड़ा ।

मेखळा—*(ना०)* १. किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरने वाली डोरी. रेखा, शृंखला आदि । मेखला । २. तागड़ी । करधनी । **कंदोरो** । कटिसूत्र । ३. गोल घेरा । ४. साधुओं के कमर का (मूंजका) मोटा कंदोरा । ५. नर्मदा नदी ।

मेखळियो—*(न०)* कुत्ता । अंगरखी । मेखळी । कमर तक का अंगरखा ।

मेखळी—*(ना०)* १. बिना बाँहों का लंबा चोगा । २. करधनी । ३. खासी साधुओं के कमर में बंधा रहने वाला मोटा कटिसूत्र । ३. झोली ।

मेघ—*(न०)* १. बादल । २. मेह । वर्षा ।

मेघअरि—*(न०)* पवन । वायरो ।

मेघदूत—*(न०)* महाकवि कालिदास का संस्कृत का प्रसिद्ध खंड काव्य ।

मेघनाद—*(न०)* १. मेघगर्जन । २. रावण का एक पुत्र । इन्द्रजीत ।

मेघपुहुप—*(न०)* १. श्रीकृष्ण के रथ के घोड़े का नाम । मेघपुष्प । २. जल ।

मेघमलार—*(ना०)* वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग ।

मेघमाळा—*(ना०)* बादलों की घटा ।

मेघवाळ—*(न०)* एक जाति और इस जाति का मनुष्य ।

मेघवाळण—*(ना०)* मेघवंश जाति की स्त्री । मेघवाळी ।

मेघवाळी—दे० मेघवाळण ।

मेघसहस्स—*(न०)* १. पवन । हवा । २. इन्द्र ।

मेघसार—*(न०)* कपूर । घनसार ।

मेघाडंबर—*(न०)* १. हाथी का होदा । अंबाड़ी । २. राजाओं के ऊपर रखा जाने वाला छत्र । ३. दलबादल । ४. बड़ा चंदोवा । ५. भारी मेघ घटा । मेघ-गर्जन ।

मेघाणो—*(न०)* १. मेघ । बादल । २. मेघ घटा ।

मेचक—*(वि०)* श्याम । काला । *(न०)* १. अंधेरा । २. धूआँ । ३. कृष्णपक्ष ।

मेछ—*(न०)* १. मुसलमान । म्लेच्छ । २. फिरंगी । अंग्रेज । ३. असुर । ४. विधर्मी । *(वि०)* दुष्ट ।

मेछक—*(वि०)* श्याम । काला ।

मेछमुख—*(न०)* तांबा ताम्र ।

मेछाण—*(न०)* मुसलमान । २. मुसलमानों का समूह । म्लेच्छगण । मेछाड़ ।

मेछाणदळ—*(न०)* मुसलमानों की सेना बादशाही फौज ।

मेछाड़—*(न०)* म्लेच्छगण । मेछाण ।

मेछायण—*(ना०)* १. मुसलमानों की सेना । २. म्लेच्छगण ।

मेज—*(ना०)* चार पायों वाली लकड़ी की एक ऊँची चौकी ।

मेजणो—*(क्रि०)* मिटाना ।

मेजपोश—*(न०)* मेज पर बिछाया जाने वाला । कपड़ा ।

मेजर—*(न०)* केप्टन से ऊँचा और लेफ्टिनेंट कर्नल से नीचे का सेना का एक अधिकारी । इन दोनों के बीच का अफसर । *(वि०)* बड़ा ।

मेट—*(न०)* मुलतानी मिट्टी ।

मेटरस व्याध—*(वि०)* व्याधि मिटाने वाला । *(न०)* १. वैद्य । हकीम । २. ईश्वर ।

मेटणो—*(क्रि०)* १. मिटाना । २. नष्ट करना । नाश करना । ३. निवारण करना । ४. उल्लंघन करना । लोपना ।

मेटाणो—*(क्रि०)* १. नष्ट करवाना । २. मिटवाना । ३. उल्लंघन करवाना । ४. निवारण करवाना ।

मेटावणो—दे० मेटाणो ।

मेड—*(न०)* तीर । बाण ।

मेड़तणी—*(ना०)* १. मारवाड़ के मेड़ता प्रांत में जन्म लेने के कारण भक्तिमती मीरां का सांकेतिक नाम। २. मेड़ते नगर की स्त्री। ३. मीरां का एक विशेषण। *(वि०)* मेड़ता की रहने वाली *(ना०)* मेड़तिया राठौड़ वंश की होने के कारण ससुराल वालों की ओर से संबोधित किया जाने वाला पुत्रवधु का नाम।

मेड़तियो—*(ना०)* १. मेड़तिया राठौड़। दूदावत राठौड़। *(वि०)* १. मेड़ते का निवासी। २. मेड़ता से संबंधित। ३. मेड़ते का।

मेड़तो—*(ना०)* मारवाड़ का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर। मेड़ता।

मेड़-सुनार—*(ना०)* स्वर्णकारी का काम करने वाली एक मेड़ क्षत्रिय जाति।

मेढ—*(ना०)* १. स्तंभ। थंभा। २. खूंटा। ३. मेघ। ४. यज्ञ। ५. युद्ध। ६. बाण। तीर।

मेढ़ासींगी—*(ना०)* एक लता जो औषधि के काम आती है।

मेढी—*(ना०)* १. प्रधान। मुखिया। २. घर का बड़ा या प्रधान पुरुष। ३. प्रभावशाली तथा मेधावी पुरुष। ४. स्त्रियों के सिर के बालों की गूंथी हुई एक प्रकार की चोटी। ५. खेत की हदबंदी। मेंड़। ६. खलियान के बीच में खड़ा किया हुआ थंभा। ७. खलिहान को गाहटने वाली बैलों की जोड़ी में से अन्दर की ओर फिरने वाला मुख्य बैल।

मेढीमणो—*(वि०)* १. वीर। बहादुर। बेढीमंणो। २. स्वाभिमानी। उच्चाशय।

मेथी—*(ना०)* एक पौधा जिसकी पत्तियों और बीजों का साग बनाया जाता है तथा जिसके दाने औषधियों में काम आते हैं।

मेथो—*(ना०)* जौ-गेहूं के साथ उगने वाला एक घास।

मेद—*(ना०)* १. चरबी। वसा। २. शरीर में उठने वाली चरबी की गाँठ। रसौली।

मेदनी—*(ना०)* १. पृथ्वी। २. जनसमूह। भीड़। टोळो।

मेदपाट—*(ना०)* १. मेवाड़ देश। २. मेवाड़ राज्य का एक प्राचीन नाम।

मेदपाट-मरजाद—*(ना०)* मेवाड़ राज्य की मर्यादा। मेवाड़ की लाज। महाराणा प्रताप का एक विरुद।

मेदपाट-मंडळ—*(ना०)* १. राजस्थान राज्य का मेवाड़ प्रदेश। २. स्वतन्त्रता के पहले का मेवाड़ राज्य या देश।

मेदा—*(ना०)* १. सीमा। हद। २. मर्यादा। मरजादा।

मेघ—*(ना०)* १. हवन। यज्ञ। २. बलि। भोग। ३. हवन में होमे जाने वाले घृत, तिल, आदि पदार्थ।

मेधा—*(ना०)* १. बुद्धि। स्मरणशक्ति।

मेधावी—*(वि०)* १. बुद्धिमान। २. तीव्र बुद्धिमान।

मेधी—*(ना०)* कवि। *(वि०)* बुद्धिमान।

मेन—*(ना०)* १. कामदेव। २. अंधकार।

मेनका—*(ना०)* १. हिमालय की पत्नी। पार्वती की माता। मेना। २. एक अप्सरा।

मेर—*(न०)* १. मेरु पर्वत। २. हुक्के का वह नली भाग जिसमें उसकी चिलम बिठाई हुई रहती है। ३. जपमाला के बीच का बड़ा मनका। ४. राजस्थान के पहाड़ी इलाके की एक जाति। ५. इस जाति का मनुष्य। ६. छंद शास्त्र की वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने लघु-गुरु के कितने छंद हो सकते हैं। ७. वेलियो छंद का एक भेद। ८. अस्ताचल। ९. तरफ। ओर। बाजू। १०. सीमा। ११. पर्वत। १२. शिरोमणि। १३. मरण। *(अव्य०)* १. निश्चय ही। २. किसी भी प्रकार। ३. पर्वत पर या पर्वत के पास बसे नगरों के नामों के अन्त में लगने वाला एक प्रत्यय, जैसे—(अज+मेर) अजमेर, (जैसल+मेर) जैसलमेर, (बाहड़+मेर) बाहड़मेर इत्यादि। *(वि०)* १. ऊँचा। २. अटल। ३. श्रेष्ठ। ४. अस्त। गायब।

मेरणो—*(न०)* द्वार। दरवाजा। **बारणो**। *(क्रि०)* १. अस्त होना। २. छिपाना।

मेरमन—*(वि०)* १. उदार। २. दानी। **मेरुमन**।

मेरमेरायो—*(न०)* दीवाली का एक बालोत्सव।

मेरवाड़ो—*(न०)* अजमेर तथा उसके आसपास का पहाड़ी प्रदेश।

मेरु—दे० मेर स० १, २, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२। *(वि०)* १,२,३।

मेरुदंड—*(न०)* रीढ़ की हड्डी।

मेरुगिरि—*(न०)* मेरु पर्वत। सुमेरु पर्वत।

मेरु परवत—*(न०)* सुमेरु पर्वत।

मेरो—*(सर्व०)* मेरा। **म्हारो**। *(ना०)* मेरी। **म्हारी**।

मेल—दे० मेलट्रेन।

मेळ—*(न०)* १. प्रेम। प्रीति। संप। २. मित्रता। ३. मिलन। ४. आय-व्यय का प्रतिदिन का हिसाब। **रोजमेळ**। ५. कन्या पक्ष की ओर से बारात को दिया जाने वाला प्रथम जीमन। जैसे—मेळ-री-लापसी। ६. एक से अधिक दिन तक होने वाले औसर (मृत्यु भोज) के प्रथम टंक का भोज, जैसे—मेळ-रो-जीमण। ७. तजवीज। ८. संयोग। ९. सुलह। संधि। १०. मिलावट। ११. मौका। अवसर। १२. प्रकार। तरह। *(वि०)* समान। तुल्य।

मेळग—*(वि०)* १. संग्रह करने वाला। २. मिलने वाला। ३. परिचित। ४. मित्र। *(न०)* १. काव्य रचना करने वाला कवि। २. चारण।

मेळगर—*(न०)* १. कवि। २. दर्शक। प्रेक्षक। *(वि०)* १. मिलाने वाला। जोड़ने वाला। २. संगठित करने वाला।

मेळजोळ—*(न०)* १. परिचय। **ओळखाण**। २. मित्रता।

मेलट्रेन—*(न०)* डाक गाड़ी। डाक लाने-ले जाने वाली शीघ्रगामी मुसाफर रेल-गाड़ी।

मेळण(*न०)* दूध का दही बनाने के लिये उसमें डाली जाने वाली छाछ या दही की अमुक मात्रा। जामन। **जांवण**। *(वि०)* मिलाने वाला।

मेळणहार—*(वि०)* मिलाने वाला।

मेलणहार—*(वि०)* १. भेजने वाला। २. रखने वाला।

मेळणार—दे० मेळणहार।

मेलणार—दे० मेलणहार।

मेळणियो—*(वि०)* मिलाने वाला। **मेळणार**।

मेलणियो—*(वि०)* १. रखने वाला। २. भेजने वाला। **मेलणार**। ३. पहुंचाने वाला। ४. छोड़ने वाला।

मेलणो—*(क्रि०)* १. भेजना। २. रखना। धरना। ३. पहुँचाना। ४. छोड़ना। ५. जमाना। ६. पीटना। **ठोकणो**।

मेळणो—*(क्रि०)* १. मिलाना। **मिश्रण करना**। २. मिलान करवाना। ३. मिलार करवाना। **मिळावणो**। ४. प्राप्त करना। ५. जोड़ना।

मेळप—*(ना०)* मित्रता। दोस्ती।

मेळ-मुलागात—*(ना०)* मेल-मिलाप।

मेळवण—देo मेळण।

मेळवणी—*(ना०)* १. मिलाने का काम। २. किसी वस्तु में मिलाई जाने वाली कोई दूसरी वस्तु।

मेळवणो—देo मेळणो।

मेळाऊ—*(वि०)* १. मिलने वाला। २. मिलाने वाला। ३. दगाबाज। *(न०)* १. मित्र। २. शत्रु। ३. कुटनी।

मेळाखो—*(न०)* १. संध्या समय। **साँझ**। २. मिलन।

मेलाण—*(न०)* १. यात्रा-विश्राम। **मुकाम**। पड़ाव। २. रुकना।

मेळाप—*(न०)* १. मिलन। मिलाप। भेंट। २. मित्रता। ३. प्रीति।

मेळापो—देo मेळाप।

मेळावड़ो—*(न०)* १. त्यौहार, उत्सव आदि पर होने वाली भीड़। मेला। २. उत्सव। ३. मिलन। ४. समागम। **मेळाधो**। ५. समारोह।

मेलावणो—*(क्रि०)* १. भिजवाना। २. रखवाना। ३. धरवाना। ४. पहुंचाना। पहुंचवाना। ५. छुड़वाना। त्याग कराना।

मेळावो—देo मेळावड़ो।

मेलियोड़ो—*(भू० कृ०)* १. रक्खा हुआ। २. भेजा हुआ। ३. पहुँचाया हुआ। ४. छोड़ा हुआ।

मेळू—*(वि०)* १. पक्षकार। २. हितु। हितैषी। ३. मिलने वाला। ४. मिलाने वाला।

मेळो—*(न०)* १. मिलन। मिलाप। २. उत्सव। त्योहार। ३. व्यापार के निमित्त लगने वाला अस्थाई बाजार। ४. किसी त्यौहार, उत्सव आदि पर लगने वाली भीड़। मेला। ५. समागम। संयोग। ६. परिचय। ७. मिलन।

मेल्हणो—देo मेलणो।

मेव—*(न०)* मेवात प्रदेश में रहने वाली एक नौ मुसलिम जाति तथा इस जाति का मनुष्य।

मेवलियो—*(न०)* १. मेह। वर्षा। २. एक लोकगीत। ३. लोकगीतों का प्यारा नाम।

मेवाड़—*(न०)* १. भूततूर्व एक रियासत। २. राजस्थान का एक प्रदेश या इलाका। **मेदपाट**।

मेवाड़ी—*(ना०)* १. मेवाड़ निवासी। २. मेवाड़ से संबंधित। *(न०)* मेवाड़ की बोली। राजस्थानी भाषा की एक बोली।

मेवाड़ो *(वि०)* मेवाड़ का निवासी। *(न०)* मेवाड़पति।

मेवात—*(न०)* राजस्थान में अलवर तथा भरतपुर के आसपास का प्रदेश।

मेवाती—*(वि०)* १. मेवात का रहने वाला। २. मेवात संबंधी। *(ना०)* मेवात प्रदेश की बोली।

मेवास—*(न०)* १. लुटेरों का रक्षा स्थान। २. लुटेरों के छिपने का स्थान। ३. जीव-रक्षा का स्थान। ४. मोरचा। ५. पूर्व और आग्नेय कोण के बीच की एक विशेष दिशा। ६. स्थान। मुकाम।

मेवासी—*(न०)* १. लुटेरा। डाकू। २. चोर। घाड़ैती। *(वि०)* अपरिचित। चंचल। उद्दण्ड।

मेवासो—दे० मेवास सं. १,२,३,४.

मेवो—*(न०)* १. सूखा हुआ फल। बादाम, पिस्ता आदि। मेवा। २. मेवा मिश्रित पकवान।

मेष—*(ना०)* १. बारह राशियों में से पहली राशि। २. भेड़ा। भेटो।

मेसरी—दे० महेश्वरी।

मे-सारू—*(अव्य०)* १. मेरे अधिकार की। मेरे वश की। म्हारै सारै। २. मेरे लिये। मेरे सारू। म्हारै सारू।

मेह—*(ना०)* १. वर्षा। बरसात। २. बादल। मेघ। ३. एक रोग। ४. प्रमेह। ५. मूत्र।

मेहरी—दे० महणो।

मेहणो—*(ना०)* १. ताना। व्यंग्य। २. उपालंभ। ओळमो। ३. कलंक।

मेहपाठ—*(न०)* मेड़ता का प्राचीन नाम।

मेहपुर—दे० महेवो सं. १.

मेहर—*(न०)* एक अछूत जाति।

मेहराब—*(ना०)* १. द्वार के ऊपर का अर्द्ध-मंडलाकार सांचा।

मेहवो—दे० महेवो।

मेहाई—*(ना०)* करणी देवी। मेहासधू। मेहा की पुत्री।

मेहाजळ—*(न०)* १. मेघवर्षा। वर्षा। २. वर्षा जल। ३. वर्षायज्ञ। ४. मेघ-घटा।

मेहासधू—*(ना०)* मेहा की पुत्री। करणी देवी।

मेहाझड़—*(ना०)* वर्षा की झड़ी।

मैं—*(अव्य०)* अधिकरण कारक का चिन्ह जो शब्द के अन्त में लग कर उसके भीतर, मध्य या चारों ओर होना सूचित करता है। अन्दर, भीतर, मध्य, संलग्न इत्यादि अर्थों वाला अव्यय।

मैंगळ—*(न०)* हाथी। *(वि०)* मदोन्मत्त।

मैंडक—*(न०)* दादुर। मेढ़क। मींडको। डेडरियो। डेडरो।

मैंदरो—*(न०)* १. उमरकोट का मूमल का प्रेमी क्षत्री कुमार महेन्द्र। २. मूमल-महेंदरे के अनूठे प्रेम का एक प्रसिद्ध लोकगीत।

मैंदी—दे० मैंदी।

मैंबर—*(न०)* सभासद। सदस्य।

मै—*(वि०)* समान। बराबर। *(न०)* १ भाँति। प्रकार। २. साँढ़-ऊंट। मैयो। ३. ऊँट। ४. खच्चर। *(अव्य०)* मय। साथ। सहित।

मैजत—दे० महजत।

मैड़ी—*(ना०)* ऊपर की मंजिल में बना शयनगृह। अटारी। मोळियो।

मैण—*(न०)* १. मोम। २. कामदेव। मदन। ३. मुद्रिका।

मैण-कपड़—*(न०)* मोमजामा। मैणियो।

मैणाजई—*(न०)* मदनजयी। महादेव।

मैणाधुज—*(न०)* १. एक प्रकार का बाजा। २. बाजा। वाद्य। ३. मदनध्वज लिंग।

मैणाबत्ती—दे० मोमबत्ती।

मैणाल—*(न०)* १. हाथी। दे० मैणादे।

मैणादे—*(ना०)* गोपीचंद राजा की माता। मैनावती। **मैणावती**।

मैणांगना—*(ना०)* कामदेव की पत्नी। मदनांगना। रति।

मैणियो—*(न०)* मोमजामा। **मैसकपड़**।

मैरखी—*(ना०)* १. मैणा जाति की स्त्री। मैणा की पत्नी। मीनी। २. ताना। व्यंग्यपूर्ण चुटकीली बात। **मेहणो**। *(वि०)* बदमाश। गुंडी।

मैणो—*(न०)* १. मैणा जाति का पुरुष। मीना। २. ताना। व्यंग्यपूर्ण चुटकीली बात। **मेहणो**। *(वि०)* बदमाश।

मैत्री—*(ना०)* मित्रता। दोस्ती।

मैथिली—*(ना०)* १. सीता। जानकी। २. मिथिला प्रदेश की बोली। ३. मिथिला का निवासी।

मैथुन—*(न०)* रतिक्रीड़ा। संभोग। स्त्री प्रसंग।

मैदान—*(न०)* १. खुली जगह। २. युद्ध भूमि। रण क्षेत्र। ३. खेल-कूद की निश्चित जगह। ४. समतल भूमि।

मैदान जाणो—*(मुहा०)* शौच-निवृत्ति को जाना। टट्टी जाना। **झाड़े जाणो**।

मैदालकड़ी—*(ना०)* एक औषध-लकड़ी जिसको पानी में घिस कर चोट पर लेपन करने से चोट की पीड़ा मिट जाती है।

मैदो—*(न०)* १. गेहूं का चोकर रहित बहुत बारीक आटा। २. पेट। **कोठो**।

मैन—*(न०)* मदन। कामदेव।

मैनचर—*(न०)* १. कामी पुरुष। विषयी नर। २. राक्षस। ३. दुष्टजन।

मैनफळ—*(न०)* मदनफल। **मींडळ**।

मैना—*(ना०)* १. एक चिड़िया। सारिका। २. हिमाचल की पत्नी।

मैनाक—*(न०)* एक पौराणिक पर्वत।

मैनेजर—*(न०)* १. व्यवस्थापक। २. प्रबंधक। ३. संचालक।

मैमट—*(न०)* १. शत्रु। २. यवन। म्लेच्छ। ३. स्वाभिमान। ४. गर्व। ५. वीरता। ६. बादल। मेघ। *(वि०)* १. काली। श्याम। (घटा), जैसे—'मैमट घटा'। २. मदमस्त। उन्मत्त। ३. उमड़ता हुआ। ४. वीर। बहादुर।

मैमद—*(न०)* १. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। २. प्रसाधनद्रव्य। ३. मृगमद। कस्तूरी।

मैमंत—*(वि०)* मदमस्त। मतवाला। **महमंत**। *(न०)* हाथी।

मैमूदी—दे० महमूंदी।

मैयो—*(न०)* साँढ-ऊंट। मै। **मद्यो**।

मैल*(न०)* १. किसी वस्तु पर जमी हुई धूल, गर्द आदि। कचरा। गंदगी। २. विकार। ३. कपट।

मैलखोरो—*(वि०)* जिस पर जमा हुआ मैल एकाएक दिखाई न दे। (वस्त्र)। *(न०)* घोड़े का जीन तथा ऊंट के पलान के नीचे रखा जाने वाला नमदा या कोई कपड़ा। **मैलझलो**।

मैलझलो—दे० मैलखोरो।

मैलड़ियात—*(न०ब०व०)* 'उजळियात' नहीं। शूद्र वर्ग की निम्न जातियों के लोग।

मैलड़ियाँ—*(ना०)* १. एक लोकदेवी। **मैलड़ी**। *(ना०ब०व०)* २. बालकों के रोगों का कारण माना जाने वाली सात लोक देवियों का समूह। **मावड़ियाँ**।

मैलड़ी—*(ना०)* एक लोक देवी। *(वि०)* १. दुष्टा। २. भूतनी।

मैल धोवणो—*(मुहा०)* निंदा करना।

मैलरखो—दे० मैलखोरो।

मैला कपड़ां—*(अव्य०)* ऋतुमती होने का भाव। रजस्वला।

मैलाकरम—*(न०)* १. कुकर्म। २. वाम-मार्गियों के कृत्य।

मैलामंत्र—*(न०)* मारण, उच्चाटन आदि की तांत्रिक क्रिया के मलिन मंत्र।

मैला हाथ—*(अव्य०)* १. रजस्वला। *(वि०)* जिसने अपने हाथों से कुकर्म किये हों।

मैली—*(ना०)* १. आंवल। जेरी। जरायु (पशु)। *(वि०)* १. गंदी। मलिन। कुचैली। २. पतित।

मैली विद्या—*(ना०)* मारण, जारण अथवा भूत प्रेतादि को वश में करने की विद्या।

मैले माथै—*(अव्य०)* रजस्वला। ऋतुमती काल में। रजस्वला होने के समय।

मैलो—*(वि०)* १. मलिन। अस्वच्छ। मैला। २. गंदा। विकारयुक्त। ३. पतित। ४. कपटी। धूर्त। *(न०)* १. विष्ठा। मल। गू। २. कचरा। कूड़ो।

मैलो माथो—*(न०)* रजस्वला।

मैवट—दे० मैमट।

में—*(सर्व०)* सर्वनाम उत्तम पुरुष के कर्ता का रूप। स्वयं। म्हैं। *(न०)* अहम्-भाव।

मेंगळ—*(न०)* हाथी। मदकळ।

मेंगाई—*(ना०)* महंगा होने का भाव। मूंगाई।

मेंगो—*(वि०)* महँगा। मूंगो।

मेंदी—*(ना०)* १. एक झाड़ी जिसकी पत्तियों को पीसकर स्त्रियां तलवे और हथेली में लगाती हैं। मेंहदी। २. एक लोकगीत।

मेंमूंदी—दे० महमूदी।

मो—*(सर्व०)* १. मेरा। मेरे। म्हारो। म्हारे। २. मेरी। मेरे। म्हारी। ३. मुझ। ४. मुझको। म्हनै।

मोई—*(ना०)* १. घी में तल कर बनाई हुई मंग की बुकनी जिसमें मिश्री, केसर, इलायची आदि मिली होती है। २. मकरोया हुआ आटा या बेसन।

मो-कज—*(अव्य०)* मेरे लिये।

मोकळ—*(ना०)* १. आज्ञा। इजाजत। २. छुट्टी। ३. मुक्ति। ४. भेजने की क्रिया।

मोकळणार—*(वि०)* भेजने वाला। प्रेषक। भेजणियो।

मोकळणो—*(क्रि०)* १. भेजना। २. रवाना करना। ३. छोड़ना।

मोकळमुखो—*((वि०)* लबार। लबाड़ी।

मोकळाणो—*(क्रि०)* १. फैलाना। विस्तृत करना। २. भिजवाना। पठवाना। ३. कसे हुये को ढीला करना। बंधन ढीला करना। ढीला करना। ४. खोलना। बंधन हटाना।

मोकळात—दे० मुकळास।

मोकळायत—दे० मुकळास।

मोकळावणो—दे० मोकळाणो।

मोकळो—*(वि०)* १. अधिक। बहुत। प्रचुर। २. बहुत सारा। ३. आवश्यकतानुसार। ४. विस्तृत। फैला हुआ। ५. पसरा हुआ। फैला हुआ। ६. बन्धन रहित। खुला। ७. छोड़ा हुआ। मुक्त। ८. जो कसा हुआ या तना हुआ

न हो। जो दृढ़ता से जकड़ा या बँधा हुआ न हो। ढीला।

मोकळो-करणो—*(मुहा०)* १. छोड़ना। २. फैलाना। ३. अधिक बनाना।

मोक्ष—*(न०)* १. आवागमन से छुटकारा। जन्म-मरण से मुक्ति। मुक्ति। २. बंधन से छुटकारा। ३. मृत्यु। ४. चार पदार्थों में से एक। ५. ऋण। ६. सूर्य चंद्रादि के ग्रहण का मिटना।

मोक्षकाळ—*(न०)* १. ग्रहण छूटने का समय। २. मृत्यु।

मोक्षण—दे० मोखण।

मोक्षदाता—*(वि०)* १. मुक्ति देने वाला। २. छोड़ने वाला।

मोख—*(ना०)* १. आवश्यकता। जरूरत। चाहिजवाण। २. अभिलाषा। ३. रुचि। ४. अनुकूल अवसर। ५. मौका। ६. अनुकूलता। ७. प्रसंग। ८. मोक्ष। ९. छुटकारा। १०. स्वतन्त्रता। ११. पानी की बड़ी नाली। मोखी। १२. सूर्य की मोघ नामक किरण। मोघ।

मोखण—*(वि०)* १. छोड़ने वाला। मुक्त करने वाला। २. छुड़ाने वाला। *(न०)* १. भोजन। २. छूट। ३. छुटकारा।

मोखणो—*(क्रि०)* १. मुक्त करना। छोड़ना। २. अधिक खाना। ३. जल्दी-जल्दी खाना। ४. भोजन करना। खाना। भक्षण करना। ५. नाश करना। *(वि०)* मुक्त करने वाला। छोड़ने वाला।

मोखम—*(ना०)* आवश्यकता। मोख।

मोखरै—*(अव्य०)* १. सबसे आगे। २. सबसे बड़ा। ३. सबसे ऊंचा। सर्वोच्च।

मोखाणो—*(क्रि०)* १. छुड़वाना। २. भोजन करवाना। ३. नाश करवाना।

मोखी—*(ना०)* १. पानी की नाली। मोरी। २. बारी। खिड़की।

मोखू—*(वि०)* मोक्षेच्छु।

मोखो—*(न०)* बड़ी नाली। नाला। बड़ी मोरी।

मोगड़ो—*(न०)* १. द्वार। २. देहरी। डहली।

मोगम—दे० मोघम।

मोगर—*(न०)* १. मूंग, मोठ आदि की छिलका रहित दाल। २. पकाई हुई मोगर की रस्सेदार तरकारी। मोगर का तीवन। ३. गदा। मुगदर। ४. ४. सेना। ५. समूह। झुंड। ६. मुसलमान।

मोगरथट—*(ना०)* १. सेना-समूह। २. बहुत बड़ी सेना। ३. गदाधारी सेना। ४. यवन सेना। मुसलमानी फौज।

मोगरथाट—दे० मोगरथट।

मोगरी—*(ना०)* १. मूली की लम्बी फली। २. कपड़े धोने की लकड़ी। घोटी। ३. लकड़ी आदि किसी वस्तु के सिरे की मुगरी की तरह उठा हुआ भाग।

मोगरेल—*(न०)* मोगरे के फूलों से बनाया हुआ तेल।

मोगरो—*(न०)* १. एक प्रसिद्ध सुगन्धित फूल और उसका पौधा। कुंद। बेला। २. लकड़ी आदि किसी वस्तु के सिरे का मुगरे की तरह उठा हुआ भाग। ३. गहने में लगी हुई धुंघरी या उभरा हुआ छोटा गोल दाना। ४. छर्रे के समान छोटी गोली।

मोगल—*(ना०)* चारण जाति की एक लोकदेवी।

मोगा—*(न०ब०व०)* श्राद्ध पक्ष ।

मोगो—*(वि०)* १. कमजोर । मड़ियल । २. निरन्तर बीमार रहने वाला । ३. मूर्ख । ४. मंदबुद्धि । ५. मृत्युशोक । ६. सुस्त । ७. मुर्दा । ८. मुरदार । मुड़दल । *(न०)* श्राद्ध पक्ष का दिन । आश्विन वदी का कोई दिन ।

मोघ—*(ना०)* वर्षा ऋतु में अस्त होते हुये सूर्य की बादलों के भीतर होकर निकली हुई वर्षा सूचक लम्बी किरण । **मोख** । *(वि०)* १. न हो सकने जैसा । २. व्यर्थ । ३ निकम्मा । ४. त्यागा हुआ ।

मोघम—*(वि०)* १. अस्पष्ट । अनिश्चित । २. भेदभरी । *(ना०)* १. अनिश्चित । अवस्था । अनिर्णीत अवस्था । *(अव्य०)* भेद भरी दशा में ।

मोच—*(ना०)* १. हार । पराजय । २. प्रहार । चोट । ३. शरीर के किसी अंग की जोड़ का इधर-उधर खिसक जाना । ४. हाथ-पाँव आदि के संधि स्थान की हड्डी या नस में पड़ने वाली लचक । ५ चोट लगने या गिरने से बरतन या किसी धातु की वस्तु में पड़ने वाला गड्ढा । **घूंच** । ६. हीनता । तुच्छता । ७. कमजोरी । ८. सेमल वृक्ष । ९. नष्ट । नाश ।

मोचक—*(वि०)* १. मुक्त करने वाला । छोड़ने वाला । २. मारने वाला । ३. नष्ट करने वाला ।

मोचड़ो—दे० मोजड़ी ।

मोचण—*(ना०)* १. मोची की स्त्री । २. छोड़ने, बहने, मारने या दूर करने की क्रिया या भाव । छुटकारा ।

मोचणो—*(क्रि०)* १. छोड़ना । मुक्त करना । २. त्यागना । ३. मिटाना । ४. मोच (गड्ढा या घूंच) डालना । ५. मारना । ६. नष्ट करना ।

मोचरस—*(न०)* सेमल वृक्ष का गोंद ।

मोची—*(न०)* जूते बनाने का धन्धा करने वाली जाति या उस जाति का व्यक्ति ।

मोचीवाड़ो—मोचियों का मोहल्ला ।

मोजड़ी—*(ना०)* १. जूती । **पगरखी** । कामदार कीमती जूती । **अमीरी** जूती ।

मोजाण—*(ना०)* १. आनंद । **मौज** । २. दान । त्याग । ३. भोग-विलास ।

मोजो—*(न०)* १. **मौजा** । गाँव । २. दस्ताना । ३. **मोजा** । जुर्राब । ४. पिंडली के नीचे का भाग । ५. पैर का कवच । ६. समुद्र की लहर ।

मोट—*(न०)* १. योग । **जोड़** । २. गठरी । **पोटली** । ३. चरसा । कोश । **खड़ो** । ४. बड़प्पन । ५. गर्व । घमंड । *(अव्य०)* सब मिलाकर । योग करने से । *(वि०)* १. मोटा । **जाडो** । २. साधारण ।

मोटको—दे० मोटो ।

मोटप—*(ना०)* बड़प्पन । **मोटाई** । **बड़ाई** ।

मोटम—*(ना०)* बड़प्पन । बड़ाई । **बड़ापणो** ।

मोटमन—*(वि०)* १. उदार । २. दानी । ३. मनस्वी । *(ना०)* उदारता ।

मोट-मरजाद—*(ना०)* १. गुरुजनों तथा बड़ों की प्रतिष्ठा । २. गुरुजनों तथा अदब, मान-मर्यादा रखने का भाव । ३. शिष्टाचार । ४. सदाचार । ५. स्वाभिमान । ६ बड़प्पन ।

मोटर—*(ना०)* १. एक विद्युत यंत्र जिससे अन्य यंत्रों का संचालन किया जाता है। २. पेट्रोल आदि खनिज द्रवों की दहन प्रक्रिया से चलने वाली मोटर गाड़ी। मोटरकार।

मोटरकार—दे० मोटर सं० २।

मोटाई—*(ना०)* १. मोटापना। स्थूलता जाडाई। २. अहंकार। ३. बड़प्पन। ४. प्रतिष्ठा। उदारता। ६. किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई। मोटापणो।

मोटापणो—दे० मोटाई।

मोटापो—दे० मोटाई।

मोटियार—*(ना०)* १. पुत्र। २. युवा लड़का। ३. पति। ४. पुरुष। मनुष्य। ५. मजदूर। ६. जवांन आदमी। *(वि०)* युवा। जवान। तरुण।

मोटियारगाळो—*(ना०)* युवावस्था। जवानी।

मोटियारण—*(ना०)* जवान स्त्री। युवती।

मोटियारपणो—*(ना०)* जवानी। तरुणाई। २. मर्दानगी। वीरता।

मोटी—*(वि०)* १. बड़ी। २. महान। उदार। ३. प्रतिष्ठित। ४. जो लंबाई-चौड़ाई में विस्तृत हो। ५. जो पद, धन में बड़ी हो। *(ना०)* १. जेठानी। २. बड़ी पत्नी।

मोटेरो—*(वि०)* १. बड़ा। वृद्ध। २. बड़ा वाला। *(अव्य०)* १. तुलना में बड़ा हो सो।

मोटोमारवाड़—*(ना०)* राजस्थान का बीकानेर और शेखावाटी का विशाल प्रदेश।

मोटीवखत—दे० मोटोवखत।

मोटीवगत—दे० मोटोवखत।

मोटो—*(वि०)* १. बड़ा २. महान। ३. जबरदस्त। बलवान। ४. उदार। ५. प्रतिष्ठित। ६. जो लंबाई-चौड़ाई में विस्तृत हो। ७. जो पद, धन आदि में बड़ा हो। ८. महत्वपूर्ण। ९. बहुत दिनों का (घी)। १०. लवणिस। खारा (पानी)। खारो। *(न०)* बड़ा भाई।

मोटोड़ो—*(वि०)* बड़ा वाला। दे० मोटो।

मोटोताजो—*(वि०)* हृष्टपुष्ट। मोटोमातो।

मोटोधणी—*(न०)* ईश्वर। परमेश्वर।

मोटोप्रब—*(न०)* १. वीर मृत्यु। २. मृत्योत्सव। मरणोछब। ३. विवाह में नेग चुकाने का अवसर। ४. जन्म-विवाहादि उत्सव। ४. बहुत बड़ा उत्सव। ५. अतिआनंद का समय।

मोटोमतो—*(न०)* शुभ विचार। शुभ इरादा।

मोटोमातो—दे० मोटोताजो।

मोटोवखत—*(न०)* १. वीर मृत्यु। २. वीर, भक्त तथा सुखी वृद्ध की मृत्यु ३. मरणोत्सव। ४. उत्सव। ५. पर्व। ६. भाग्य। ७. शुभ अवसर।

मोटचार—दे० मोटियार।

मोठ—*(ना०)* एक द्विदल धान्य। मूंग। *की जाति का एक कठोळ अनाज।*

मोठड़ो—*(वि०)* रंग बिरंगी बंधाई या छपाई वाला (ओढ़ना साफा आदि)।

मोठड़ी—*(ना०)* मोठ की फली। फळगठी। २. मोठ की रोटी या खाखरा।

मोड—*(न०)* १. ढोंगी साधु। २. साधु (तुच्छता सूचक)।

मोड़—*(न०)* वह स्थान जहां से रास्ता किसी और दिशा की ओर मुड़ता हो। घुमाव। २. टेढ़ापन। वक्रता। **बाँक**। **बळ**। ३. ऐंठन। ४. सेहरा। मुकुट। **मोड़**। ५. बनावट।

मोड़गर—*(वि०)* १. मोड़ने वाला। २. हराने वाला।

मोड़णो—*(क्रि०)* १. टेढा करना। २. फेरना। घुमाना। ३. बळ डालना। ऐंठना। ४. लौटाना। फेरना। ५. किसी को मुड़ने के लिए प्रवृत्त करना। ६. मारना। ७. विमुख करना। ८. समेटना। ९. सल डालना।

मोड़-तोड़—*(न०)* १. मोड़ने-तोड़ने का काम। युक्ति। **जोड़तोड़**। ३. घुमाव।

मोड़-बंधी—*(ना०)* दुलहिन। **बींनणी**।

मोड़-बंधो—*(न०)* दुलहा। **बींद**।

मोडाण—*(न०)* १. बिन सींगों वाला हरिण। वह हरिण जाति जिसके सींग नहीं होते। २. ऐसे हिरणों का समूह। **मोडियाण**।

मोडियाण—दे० मोडाण।

मोडियो—*(वि०)* १. मुंडा हुआ। जिसके सिर के केश कटे हुए हों। २. जिस पर वनस्पति न हो (पर्वत)। *(न०)* १. रबड़ का बच्चानुमा खिलौना। २. मुंडा हुआ माथा रखने वाला साधु। ४. बिना सींग वाला (हरिण)।

मोडी—*(ना०)* १. एक चिड़िया। २. मुंडाये हुये सिर वाली। ३. स्त्री-साधु। **साधण**। बिना सींगों वाला हिरण।

मोड़ो—*(न०)* १. देर। बिलंब। २. दरवाजा। द्वार।

मोडो—*(वि०)* १. जिसके सिर के केश साफ कराये हुये हों। २. मुंडन कराया हुआ। ३. जिस पर वृक्ष, हरियाली आदि न हो (पहाड़)। ४. बिना सींगों वाला। *(न०)* १. ढोंगी साधु। २. साधु। संन्यासी। (तुच्छता सूचक)। ३. सिर को मुंडा हुआ रखने वाला **साधु**।

मोण—दे० मूण सं० २।

मोताद—*(ना०)* १. इनाम या सेवा के बदले में दी जाने वाली नियत भोजन सामग्री। **पेटियो**।

मोताहळ—*(न०)* १. मुक्ताफल। मोती। २. तारागण। तारक समूह।

मोतियाबिंद—*(न०)* आंखों का एक रोग जिसमें पुतलियों के ऊपर एक झिल्ली बन जाती है।

मोतियो—*(वि०)* १. अत्यन्त हलके गुलाबी रंग से रंगा हुआ। *(न०)* १. कुंद पुष्प का एक भेद। २. बेला पुष्प। ३. मोतियाबिंद। ४. एक घास। नागर मोथा। **मोथ**। ५. उक्त घास की मोती के समान गोल, मीठी और सुगंधित जड़। ६. हलका गुलाबी रंग।

मोती—*(न०)* १ एक बहुमूल्य रत्न जो सीप में से निकलता है। मुक्ता। मुक्ताफल। **मोताहळ**। *(वि०)* सफेद। **धोळो**।

मोतीचूर—*(न०)* बुंदियों का लड्डू। मोदक। **लाडू**।

मोतीझरो—*(न०)* १. एक मयादी ज्वर। मंथज्वर। मोतीझिरा।

मोतीदाम—*(न०)* एक छंद। एक वर्ण वृत्त।

मोतीमाळा—*(ना०)* मोतियों की माला मुक्तावलि। **मुक्ताबळ**।

मोतीसर—*(न०)* १. चारणों का भाट। २. मोतियों की माला।

मोतीहार—*(न०)* मोतियों की माला या हार। **मुक्तावल**।

मोतींड—*(न०)* गाय, भैंस के प्रसव के समय निकलने वाला पानी से भरा झिल्ली का एक गोला।

मोथ—*(ना०)* १. एक प्रकार की घास। २. नागरमोथा। मुस्त।

मोथियो—दे० मोतियो सं० ४, ५. मोथ सं० १।

मोथी—*(ना०)* १. मोथा की स्त्री। २. थल प्रदेश की स्त्री। *(वि०)* १. बेढ़ंगी। बेशऊर। २. जिसे ओढ़ने-पहिनने, खाने-पीने तथा उठने-बैठने की तमीज न हो (वह स्त्री)। ३. **गंवारी**। ४. भद्दी।

मोथो—*(वि०)* १. बेशऊर। बेढ़ंगा। फूहड़। २. मूर्ख। ३. गंवार। ४. जिसे बोलने, बैठने-उठने की तमीज न हो। **थळियो**। *(न०)* १. थल प्रदेश का निवासी। **थळियो**। **थळियो-गिंवार**। २. नागर-मोथा नामक घास।

मोथ्यो—दे० मोथ।

मोद—*(न०)* १. हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। २. मांगलिक कार्य। ३. उत्साह। ४. गेहूं की उपज की पहली गेहूं से भरी वह बैलगाड़ी जो मंडी में बेचने को लाई जाती है। ५. बाजार में बेचने को लाई हुई गेहूं से भरी हुई बैलगाड़ी। ६. गेहूं की वह पहली किश्त जो कृषक अपने ऋण के एवज में बोहरे (महाजन) के यहां बैलगाड़ी में भर कर पहुंचाता है। **माव**। ७. एक बैलगाड़ी में भरे जाने वाले गेहूं का परिमाण। ८. एक वर्ण-वृत्त। ९. गेहूं भरने के लिये बैलगाड़ी में बिछाया जाने वाला मोटा कपड़ा। १०. गर्व। अभिमान। ११. एक प्रकार की शराब।

मोदक—*(न०)* लड्डू। **लाडू**। *(वि०)* आनंददायक।

मोदण—*(न०)* १. अनाज भरने के लिये बैलगाड़ी पर बिछाया जाने वाला मोटा कपड़ा। **मोदियो**। **झालण**। *(ना०)* मोदी की स्त्री।

मोदणो—*(क्रि०)* १. प्रसन्न होना। २. आत्म प्रशंसा करना। ३. अभिमान करना। ४. महकना। *(न०)* अनाज भरने के लिये बैलगाड़ी पर बिछाया जाने वाला मोटा कपड़ा। **मोदण**। **मोदियो**।

मोदळ—*(न०)* १. मुगदर। २. हरावल। **हरोल**। ३. सेनाध्यक्ष।

मोदियो—*(न०)* १. झाऊ, खींप आदि घास के सींकों की हुई टाटी जो बैलगाड़ी पर अनाज आदि भरने के लिये लगाई जाती है। २. मोटा-जाड़ा कपड़ा जो बैलगाड़ी पर अनाज भरने के लिये बिछाया जाता है। **झालण**। **मोदण**। **मोद**।

मोदी—*(न०)* १. दाल, चावल, आटा आदि बेचने वाला परचूनिया व्यापारी। २. सरकारी मोदीखाने का अधिकारी। ३. एक अल्ल।

मोदीखानो—*(न०)* खाद्य सामग्री रखने या बेचने का स्थान।

मोनूं—*(सर्व)* मुझे। मुझको। **म्हने**।

मोबियो—*(न०)* १. एक विशेष प्रकार का खपरेल जो प्रायः छप्पर के किनारे पर रखा जाता है। छप्पर के किनारे की बड़ी नरिया। २. बँडेर पर रखी जाने वाली बड़ी नरिया।

मोभ—*(ना०)* १. छप्पर में लगाया जाने वाला एक बड़ा और मोटा लट्ठा। शहतीर। बल्ली। २. प्रथम उत्पन्न लड़के या लड़की का विशेषण। ३. प्रथम प्रसव (स्त्री का)। ४. एक राज्य कर। ५. बड़प्पन। ६. कीर्ति। यश। ७. अवसर। ८. रहस्य।

मोभण—*(ना०)* प्रथम प्रसव की लड़की। भाई-बहिनों में सबसे बड़ी बहिन।

मोभियो—दे० मोबियो। दे० मोभी।

मोभी—*(ना०)* १. सबसे बड़ा पुत्र। प्रथम पुत्र। २. कुल का आधार।

मोभो—*(न०)* १. प्रतिष्ठा। आबरू। २. योग्यता। ३. दर्जा। पद। ४. यश। ५. सुअवसर। ६. बड़प्पन। ७. रहस्य।

मोम—दे० मैण।

मोमबत्ती—*(ना०)* बीच में धागा डाल कर बनाई हुई मोम की बत्ती। **मैणबत्ती**।

मोमाखी—*(ना०)* मधुमक्खी। **मधमाखी**।

मोयण—दे० मूण सं. २.

मोयल—दे० मोहिल।

मोयलो—*(न०)* १. मुसलमान कुम्हार। २. एक मुसलमान जाति। ३. मोहिल क्षत्री।

मोर—*(न०)* १. मोर। मयूर। २. आम की मंजरी। मौर। बौर। ३. एक लोकगीत। *(अव्य०)* १. बीते समय में। २. क्रम में प्रथम। ३. आदि या आरंभ में। ४. सर्वप्रथम। सबसे पहिले। **मोहर**।

मोरख—*(न०)* हल का एक उपकरण।

मोरचंग—*(न०)* एक वाद्य। **मुरचंग**। **मुँहचंग**।

मोरचाबंदी—*(ना०)* किलेबंदी।

मोरचो—*(न०)* १. किले के चारों ओर की खाई। २. वह सुरक्षित स्थान जहां लड़ाई के समय सेना खड़ी रहती है। किलेबंदी। ३. सेना के आगे का भाग। **हरावळ**। ४. युद्ध तत्पर सेना की एक व्यूह रचना। ५. युद्ध में होने वाला मुकाबला। सामना। ६. नमी के कारण लोहे पर जमने वाला जंग। काट।

मोरछड़—दे० मोरछल।

मोरछल—*(न०)* मोर की पाँखों का चँवर। **मोरछड़**।

मोरड़ी—*(ना०)* १. मयूरी। मोरनी। **ढेल**। **ढेलड़ी**। २. नथ में मोर के आकार का एक जड़ाऊ भाग। **मोरणी**। ३. छाजन की एक छोटी बल्ली।

मोरड़ो—दे० मोरलो।

मोरणी—*(ना०)* १. सारंगी की खूंटी। २. दे० मोरड़ी।

मोरणो—*(क्रि०)* १. बाजरी के सेके हुये सिट्टे को मसल कर दाने निकालना। २. आम्रवृक्ष में मौर उत्पन्न होना। ३. वृक्षों में मंजरी लगना। **मौरना**। ४. नाश करना। *(न०)* एक सरकारी कर।

मोरध्वज—*(न०)* १. एक प्रसिद्ध भक्त राजा। **मोरध्वज**। २. जोधपुर के किले का नाम।

मोरपंख—*(न०)* मोर की पाँख।

मोर-वीणा—*(न०)* एक वाद्य।

मोर-मींडली—*(ना०)* स्त्रियों का एक सिरोभूषण।

मोरमींडी—*(ना०)* स्त्रियों के सिर के केशों की गुंथी हुई एक प्रकार की लटों।

मोर-मुकुट—*(न०)* मोर की पाँखों का (श्रीकृष्ण का) मुकुट। **मोरमुगट**।

मोरमुगट—दे० मोरमुकुट।

मोरली—दे० मुरली।

मोरलो—*(न०)* १. सेकने के लिये बनाया हुआ गेहूं की बालों का गुच्छा। **मोरड़ो**। २. मोर।

मोराळी—*(ना०)* १. एक घास। २. पूंछ।

मोरियो—*(न०)* १. मोर। मयूर। २. 'आंबो मोरियो' नामक लोकगीत। ३. पुत्री को ससुराल विदा करते समय गाया जाने वाला (करुण रस) प्रसिद्ध लोकगीत। ४. 'मोरियो' संबंधी अन्य लोकगीत। ५. किवाड़ नहीं खुल सकने के लिये भीतर की ओर लगाया हुआ एक उपकरण। एक प्रकार की सिटकनी। ६. छोटी नथ।

मोरी—*(ना०)* १. पानी की नाली। **खाळी**। २. तालाब में से पानी निकालने की नाली। ३. छोटा द्वार। **बारी**। ४. बंदूक का मुँह। ५. मोर्य वंश। *(सर्व०)* मेरी। **म्हारी**।

मोरीसाळो—*(न०)* नाओलाद जागीरदार के दत्तक लेने का एक कानून।

मोरींगो—*(न०)* १. खपरेल की छत के किनारे पर लगाया जाने वाला लकड़ी का शंकु। २. खूंटी। ३. छेद वाली खड़ी लगी हुई या गड़ी हुई मेख।

मोरींगो खाट—*(न०)* वह झूलता पलंग जिसके पाये मयूराकृत हों।

मोरूणो—*(वि०)* पहले का। **मोहरलो**। **पहलूणो**।

मोरूसी—*(वि०)* पैतृक (धन संपत्ति)।

मोरेवो—*(न०)* १. एक घास। २. उक्त घास का बीज।

मोरो—*(सर्व०)* मेरा। *(न०)* १. सूखे तिनके, घास आदि का मुट्ठा। पुवाल।

मोरघो—दे० मोरियो।

मोर्य—*(न०)* १. एक प्राचीन राजवंश। २. परमार क्षत्री।

मोल—*(न०)* १. मूल्य। कीमत। २. महत्व। ३. भाव। दर। निर्ख।

मोल करणो—*(मुहा०)* कीमत पूछना।

मोलट—*(न०)* १. पोलो खेलते समय बॉल को चोट मारने के लिये लकड़ी का बना एक उपकरण। २. लकड़ी का हथोड़ा।

मोलणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु की कीमत मालूम करना। २. खरीदना। क्रय करना। **मोलवणो**।

मोलतोल—*(न०)* मोल और तोल जानने की क्रिया या भाव। २. भाव ठहराना। **मोलाई**।

मोलवणी—दे० मोलाई।

मोलवणो—*(क्रि०)* १. मोल पूछना। मोल-तोल पूछना। २. मोल लेना। खरीदना। **मोलणो**।

मोलाई—*(ना०)* किसी वस्तु का मोल तोल पूछने की क्रिया या भाव। मोल तोल।

मोलाण—*(न०)* १. किसी वस्तु का मोल पूछना। २. खरीदी।

मोलाणो—दे० मोलावणो।

मोलावणो—*(क्रि०)* १. बिकने वाली वस्तु का मोल तोल पूछना। मोल करना। २. खरीदना।

मोलियो—*(वि०)* १. जो पत्नी को वश में नहीं रख सके। २. जो पत्नी के वश में रहे। स्त्रैण। जोरू का गुलाम। ३. निर्बल। ४. नपुंसक। ५. स्त्रियों के जैसे लक्षणों वाला।

मोळेटो—*(न०)* सिर पर बोझा उठाने के लिये कपड़े का लपेट कर बनाया हुआ मोटा इंडुआ। कपड़े को लपेट कर बनाई हुई माथे पर रखने की गेंडुरी। मुरेठा। मुळाटो।

मोली—*(वि०)* १. मोल वाली। २. दुर्बल।

मोळो—*(वि०)* १. मंदा। सस्ता। २. कम। थोड़ा। जैसे—'काम काज मोळा है।' ३. कमजोर। अशक्त। ४. मंद। सुस्त। ५. उदास। ६. अच्छा न होना। जैसे—जमानो मोळो हैं। वरस मोळो है।' ७. खट्टा न होना। स्वादिष्ट। रूचिकर। मधुर। जैसे—'मोळो दही।' ८. स्वादहीन। फीका। ९. तीखा न होना। जैसे—मिरचां मोळी है। १०. फीका। ११. निराशाजनक।

मोलो—दे० मोलियो।

मोवणी—दे० मोहणी।

मोवणो दे० मोहणो।

मोवन—दे० मोहन।

मोस—*(न०)* १. चोर। २. चोरी। ३. ताना। व्यंग्य। ४. हत्या। वध। ५. लांछन।

मोसणो—*(क्रि०)* १. चोरना। चोरी करना। लूटना। २. मारना। नष्ट करना। ३. गला दबा कर वध करना। ४. हत्या करना। ५. लांछित करना। ६. धन माल हड़प करना। ७. ताना मारना।

मोसर—*(ना०)* मूंछ।

मोसरां—*(ना०)* १. मूंछों का प्रस्फुटन। २. प्रस्फुटित होती हुई मूंछें। ३. मूंछें।

मोस्को—*(न०)* रूस की राजधानी का नगर।

मोसाळ—*(न०)* मां का पीहर। मामा का घर। मामाणो। नानाणो।

मोसेरो—*(वि०)* मौसे का। दे० माहेरो।

मोसो—*(न०)* १. ताना। व्यंग्य। २. मासी का पति। मौसा।

मोह—*(न०)* १. आसक्ति। २. स्नेह। प्यार। ३. अज्ञान। ४ अविद्या। ५. देहादि में आत्मबुद्धि। ६. ममता। ७. भ्रम। भ्रांति। ८. सांसारिक वस्तुओं में आकर्षण। ९. मूर्छा। बेहोशी। १०. गर्व। अभिमान।

मोहक—*(वि०)* १. मोह उत्पन्न करने वाला। २. मन को लुभाने वाला। ३. आकर्षक। २. सुन्दर।

मोहडो—*(न०)* मुख। मुँह।

मोहणी—दे० मोहिनी।

मोहणो—*(क्रि०)* १. मोहित करना। मोहना। रिझाना। २. आकर्षित करना। ३. भ्रम में डालना। ४. माया में फंसाना। ५. बेहोश करना। *(वि०)* मोहित करने वाला।

मोहत—*(न०)* १. मुहूर्त्त। मुहत। २. महत्व। ३. ममत्व।

मोहताज—*(वि०)* १. निर्धन। गरीब। २. आश्रित। मुहताज। ३. आकांक्षी। ४. जरूरतमंद। गरजमंद। ५. इनाम।

मोहताद—*(ना०)* १. दान। २. बख्शिश। इनाम। ३. आश्रितों को दी जाने वाली विशेष सहायता। ४. नेग।

मोहन—*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. कामदेव के पांच बाणों में से एक। ३. बारह मात्राओं का एक ताल। ४. धतूरा। *(वि०)* १. मोहित करने वाला। २. आकर्षित करने वाला।

मोहनगारो—*(वि०)* मोहित करने वाला।

मोहन-थाळ—*(न०)* एक मिठाई ।

मोहन-भोग—*(न०)* एक प्रकार की मिठाई ।

मोहन-माळा—*(ना०)* गले की सोने की माला ।

मोहनी—*(ना०)* १. वशीकरण । २. वश में करने का तांत्रिक प्रयोग । ३. आकर्षण । ४. माया । ५. सुंदर स्त्री । ६. मोहित करने की क्रिया या भाव ।

मोहनी-मंत्र—*(न०)* वशीकरण मंत्र ।

मोहबत—*(न०)* १. प्यार । **लाड** । २. इश्क । मुहब्बत ।

मोह-माया—*(ना०)* १. प्रीति और कृपा । २. सांसारिक जंजाळ ।

मोहर—*(वि०)* १. प्रथम । पहला । २. आगे का । *(अव्य०)* १. पहले । २. सम्मुख । सामने आगे । ३. अग्रभाग पर । *(ना०)* १. स्वर्णमुद्रा । अशरफी । मुहर । २. किसी धातु या रबड़ का बना हस्ताक्षर या नाम आदि का ठप्पा । छाप । ३. ठप्पे से अंकित नाम चिन्ह आदि । ४. लिफाफे, पारसल आदि पर लगाई जाने वाली चपड़ी की सील । ५. सेना का अगला भाग । **हरावळ** ।

मोहरकैं—*(अव्य०)* १. आगे । २. पहले । ३. इस समय । अभी । ४. इससे पहिले । ५. पिछले वर्ष । ६. गत समय का । **लारलो** ।

मोहरको—दे० मोहरलो ।

मोहरत—दे० मुहूर्त्त ।

मोहरम—*(न०)* दे० मुहर्रम ।

मोहरलो—*(वि०)* १. पहले का । **पहलड़ो** । २. गत समय का । **लारलो** ।

मोहरा—*(अव्य०)* १. पहले । २. आगे । ३. पहले कभी ।

मोहरामेळ—*(न०)* तुकबंदी ।

मोहरियाळ—*(वि०)* सबसे आगे रहने वाला । मुखाग्रक । अग्रणी ।

मोहरी—*(ना०)* १. ऊंट की नकेल में बंधी रहने वाली रस्सी । **मुंहरी** । **मूरी** । २. पात्र, थैली आदि का मुंह । ३. पाजामे का वह भाग जिसमें टांगे रहती है । **पांयचो** ।

मोहरो—*(न०)* १. पद्य की पंक्तियों के अंतिम शब्द का मात्रा मेल कविता के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों का परस्पर मेल । २. तुक । ३. तुकबंदी । ४. शतरंज की गोटी । ५. सेना का अग्रभाग । **हरावळ** । ६. ऊंट, बैल आदि के मुंह पर बाँधी जाने वाली जाली । **मुंहरो** ।

मोहल—दे० महल ।

मोहलत—दे० 'मौलगत' तथा 'मौलत' ।

मोहलायत—दे० महलायत ।

मोहलो—*(न०)* १. प्रणाम । जुहार । २. मुहल्ला । **वास** । ३. गली ।

मोहजाळ—*(न०)* मोहजाल । सांसारिक प्रपंच ।

मोहि—*(सर्व०)* १. मुझे । मुझको । **म्हने** । *(अव्य०)* मुझसे । मेरे द्वारा ।

मोहित—*(वि०)* मोह ग्रसित । मोह में पड़ा हुआ ।

मोहिनी—दे० विष्णु का मोहिनी रूप । मोहनी ।

मोहियो—*(क्रि०भू०)* मोह लिया ।

मोहिल—*(न०)* एक क्षत्री जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

मोहिलवाटी—*(ना०)* छापर-द्रोणापुर परगने का नाम जिस पर वीर मोहिल ने अधिकार करके उसे अपने नाम से प्रसिद्ध किया था ।

मोहिलो—दे० मोमलो ।
मोहीजणो—(क्रि०) मोहित होना ।
मोंघेरो—(वि०) १. बनिस्बत महँगा । २. अधिक महँगा ।
मोंढो—दे० मोंहढो ।
मों-माखी—(ना०) शहद की मक्खी । मधु मक्षिका । मधमाखी ।
मोंहढो—(न०) मुंह । मुख । मूंडो ।
मोंर—(ना०) पीठ । मगर ।
मौकूफ—(वि०) १. मुलतवी । स्थगित । २. नौकरी से निकाला हुआ । बरखास्त । ३. दूर किया हुआ । हटाया हुआ । ४. रद्द किया हुआ ।
मौकूफी—(न०) १. बरख्वास्तगी । २. रद्द ।
मौको—(न०) १. अवसर । मौका । २. प्रसंग । लाग । ३. समय । ४. वह स्थान जहां पर कोई घटना घटी हो । ५. स्थान । जगह ।
मौखिक—(वि०) जबानी ।
मौज—(न०) १. आनन्द । सुख । २. आराम । ३. लहर । तरंग । ४. मर्जी । ५. दान । ६. इनायत । इनाम ।
मौज-वरीसण—(वि०) १. दानी । २. उदार ।
मौजशौक—(न०) १. भोगविलास । २. आनन्दोल्लास ।
मौजी—(वि०) १. आनंदी । लहरी । २. विलासी । ३. मनस्वी । ४. उदार । ५. स्वच्छंदी ।
मौजीज—(वि०) १. प्रतिष्ठित । २. सद्वंशजात । कुलीन । ३. बुद्धिमान । ४. अनुभवी ।
मौजूद—(वि०) १. तैयार । प्रस्तुत । २. उपस्थित । हाजिर । ३. विद्यमान ।
मौजूदगी—(ना०) उपस्थिति । विद्यमानता ।
मौजूदा—(वि०) वर्तमान काल का ।
मौजो—(न०) गांव ।
मौड़—(न०) १. विवाह के समय वर-वधू के सिर पर बांधा जाने वाला एक मुकुट । २. मुकुट । (वि०) श्रेष्ठ ।
मौड़बंधी (वि०) १. विवाह के समय मौड़बंधी हुई । २. नवविवाहिता । ३. जिसके सिर पर मौड़ बंधा हो । (ना०) वधु । दुलहिन ।
मौड़बंधो—(वि०) १. जिसके सिर पर मौड़ बंधा हो । मौड़ बंधा हुआ । २. नवविवाहित । (न०) वर राजा । दुल्हा ।
मौड़ो—(क्रि०वि०) देर । विलम्ब ।
मौत—(ना०) १. मृत्यु । मरण । निधन । २. वैसा कष्ट जो मृत्यु के समय होता है । अत्यन्त कष्ट । ३. आफत ।
मौतड़ी—(ना०) मृत्यु । मौत । दे० मौतणी ।
मौतणी—(ना०) मर जाने की एक गाली । (स्त्री को) । (वि०) मरने जैसी । अति अशक्त ।
मौतरड़ी—दे० मौतड़ी ।
मौतेड़ो—(न०) मृतक का शोक तथा अशौच । (वि०) निर्बल । अशक्त ।
मौन—(न०) दे० मून ।
मौर—(न०) १. मंजरी । बौर । २. पीठ । मगर । छाती और पेट का पिछला भाग ।
मौरणो—(क्रि०) वृक्ष पर मंजरी आना ।
मौरसली—दे० मौलसरी ।
मौरूसी—(वि०) १. पैतृक । २. वंशानुगत ।
मौळ—(ना०) १. वस्तुओं के मूल्य गिर जाने की स्थिति । मंदी ।

२. शिथिलता । ढिलाई । ३. मुँह का फीकापन । ४. स्वाद का बिगड़ना । ५. चबेना खाने की इच्छा । ६. उपेक्षा । बेकदरी । ७. अभाव । कमी । ८. उदासी ।

मौलगत—*(ना०)* १. मोहलत । समय । मयाद । २. रिआयत । छूट । ३. छुट्टी अवकाश । ४. अवसर । मौका ।

मौलत—*(ना०)* १. मोहलत । अवधि । २. अवकाश । छुट्टी ।

मौलवी—*(न०)* १. मुसलमानों का धर्मगुरु । २. उर्दू, अरबी का शिक्षक ।

मौलसरी—*(न०)* एक वृक्ष और उसका सुगंधित फूल ।

मौलिक—*(वि०)* १. असली । वास्तविक । २. मूल या जड़ से संबंधित ।

मौळिया मंगळ—*(न०)* वह व्यक्ति जिसकी जन्म कुंडली में पहले, चौथे, आठवें और बारहवें घर में मंगल पड़ा हुआ हो ।

मौळियो—*(न०)* १. पघड़ी । बांधणूं पघड़ी । ३. पंचरंगी पघड़ी या साफा ।

मौळी—*(ना०)* १. देवपूजा आदि के समय हाथ में बांधा जाने वाला लाल या पीले रंग का मंगलसूत्र । मौलि । ३. ईंधन की लकड़ी का गट्ठर । ३. मस्तिष्क । सिर । माथो ।

मौळो—दे० मोळो ।

मौसम—*(ना०)* १. ऋतु । मौसिम । २. वातावरण । ३. अनुकूल समय ।

मौसमी—*(वि०)* मौसम संबंधी ।

मौसर—*(न०)* १. मृत्युभोज । २. अवसर । मौका । वेळा । ३. मूंछ । मोसर ।

मौसी—दे० मासी ।

मौसो—*(न०)* मौसी का पति । माहड़ो । मासो ।

म्याऊ—*(न०)* बिल्ली की बोली ।

म्याद—दे० मयाद ।

म्यान—*(न०)* १. मियान । शस्त्रकोश । २. खड्गकोश । असिकोश ।

म्यानी—*(ना०)* पाजामे के पांयचों के बीच का कपड़ा । मियानी ।

म्यानो—*(न०)* १. एक प्रकार की पालकी । २. पहेली का अर्थ व उत्तर । ३. तात्पर्य । अर्थ । आशय । ४. कारण ।

म्याळ—*(न०)* १. चौपायों को बाँधने का छप्पर । २. छप्पर के नीचे लगने वाली मोटी बल्ली । मियाळ । दे० मियाळ ।

म्यावट—*(न०)* ब्याने के दो चार दिन बाद का गाय भैंस आदि के दूध को गरम करने से बनने वाला गाढ़ा और फटा हुआ दूध ।

म्रग—दे० मृग ।

म्रगकासब—*(न०)* हिरण्यकशिपु ।

म्रगछावड़—दे० मृगशावक ।

म्रगणाळ—*(न०)* तीर, बाण ।

म्रगदंस—*(न०)* कुत्ता ।

म्रगली—*(ना०)* हिरण की मादा । मृगी । हिरणी ।

म्रगलो—*(न०)* हिरण । मृग ।

म्रगाखी—दे० मृगाक्षी ।

म्रगाण—*(न०ब०व०)* १. मृग समूह । २. मृग ।

म्रगांकी—*(न०)* मृगांक । चन्द्रमा । एणांक ।

म्रजाद—दे० मरजाद ।

म्रजादा—दे० मरजाद ।

म्रत—दे० मृत ।

म्रतमंदिर—*(न०)* १. मृत व्यक्ति के दाह स्थान पर बना हुआ स्मारक । छतरी । चैत्य । श्मसान । थड़ो । २. चिता ।

अतलाज—*(ना०)* १. मानव देह में मृत्यु को प्राप्त करने की सार्थकता को कलंक नहीं लगने देने का प्रसंग। मृत्यु की लाज। मृत्युमर्यादा। २. सार्थक मृत्यु। ३. जीवन को सार्थक बनाने वाली मृत्यु।

अतलोक—*दे०* मृत्युलोक।

अतवारो—*(ना०)* १. मृत्यु अशौच। (मृताशौच। सूतक। २. मृत्यु का शोक। ३. मृत्यु का समय।

अतवारो दोस—*दे०* अतवारो सं० १.

अतु—*दे०* मृत्यु।

अदंग—*दे०* मृदंग।

अम—*दे०* मरम।

अखा—*दे०* मृषा।

अग—*दे०* मृग।

अगकासब—*दे०* अगकासब।

अगछाळा—*(ना०)* मृगचर्म।

अगनैणी—*दे०* मृगनयनी।

अगभखण—*(न०)* पवन। वायु। बायरो।

अगराज—*(न०)* सिंह। मृगराज। शेर।

अगलियो—*(न०)* हरिन का बच्चा। मृगशावक। हिरणोटो।

अगली—*(ना०)* हरिणी। मृगी। हिरणी। हिरणकी।

अगलो—*(न०)* १. हरिण। मृग। हिरणियो। २. हरिण का बच्चा। मृगशावक।

अगलोयणी—*(ना०)* मृगलोचना। अगनैणी। मिरगानैणी।

अगसर—*दे०* मिगसर।

अगसाखा—*दे०* बन्दर। बांदरो।

अगाखी—*दे०* मृगाक्षी।

अगाट—*(न०)* १. मृग। हरिण। २. मृग समूह। अगला। अगाण।

अगाण—*(न०)* मृग समूह। अगला।

अगानैणी—*दे०* मृगनयनी।

अगी—*दे०* मृगी।

अड—*दे०* मृड।

अडांणी—*दे०* मृडा।

अत—*दे०* मृत।

अतका—*दे०* मृत्तिका।

अतमंदिर—*दे०* अतमंदिर।

अतंग—*दे०* मृतक।

अदंग—*दे०* मृदंग।

मलान—*दे०* मलाण।

मलेच्छ—*(न०)* १. मुसलमान। यवन। २. विधर्मी। ३. वह जाति जिसमें वर्णाश्रम धर्म न हो। अनार्य। ४. वह जाति जिसकी भाषा संस्कृत न हो। *(वि०)* १. अशौच का पालन नहीं करने वाला। मलेछ। २. गंदा। ३. पापी।

म्हनैं—*(सर्व०)* मुझे। मुझको। मुनैं। मेरे को।

म्हारली—*(सर्व०)* मेरी वाली। मेरी। म्हारी।

म्हारलो—*(सर्व०)* मेरे वाला। मेरा। म्हारो।

म्हारी—*(सर्व०)* मेरी। म्हारली।

म्हारैं—*(सर्व०)* मेरे।

म्हारो—*(सर्व०)* मेरा। म्हारलो।

म्हारोड़ी—*(सर्व०)* मेरी वाली। मेरी। म्हारी।

म्हारोड़ो—*(सर्व०)* मेरे वाला। मेरा। म्हारो।

म्हालणो—*दे०* माल्हणो।

म्हावरो—*दे०* मुहावरो।

म्हासूं—*(वि०सर्व०)* मुझसे। म्हारे सूं। मेरे से।

म्हाँ—*(सर्व०)* हम। म्हे।

म्हाँकी—*(सर्व०ब०व०)* हमारी । **म्हांरी** ।
म्हाँकैं—*(सर्व०ब०व०)* हमारे । **म्हांरैं** ।
म्हाँको—*(सर्व०ब०व०)* हमारा । **म्हांरो** । **म्हांरळो** ।
म्हाँनूं—*(सर्व०ब०व०)* हमको । हमें । **म्हानैं** ।
म्हाँनैं—*(सर्व०ब०व०)* हमको । हमें । **म्हानूं** ।
म्हाँरली *(सर्व०ब०व०)* हमारे वाली । हमारी । **म्हांरी** ।
म्हाँरलो—*(सर्व०ब०व०)* हमारे वाला । हमारा । **म्हांरो** ।
म्हांरी—*(सर्व०ब०व०)* हमारी । **म्हाँकी** ।
म्हांरैं—*(सर्व०ब०व०)* हमारे । **म्हाँकैं** ।
म्हांरो—*(सर्व०ब०व०)* हमारा ।
म्हांरोड़ी—*(सर्व०ब०व०)* हमारी । **म्हाँरी** ।
म्हांरोड़ो—*(सर्व०)* हमारा । **म्हाँरो** ।
म्हांसू—*(सर्व०ब०व०)* हमसे । **म्हांरैसूं** ।
म्हूं—*(सर्व०)* मैं । **म्हैं** । हूं । **मूं** ।
म्हे—*(सर्व०ब०व०)* हम । हमलोग । **म्हां** ।
म्हैं—*(सर्व०)* मैं । स्वयं । हूं । **म्हूं** ।
म्हैसूं—*(सर्व०)* मुझसे । **म्हारैं सूं** ।
म्होटाई—दे० मोटाई ।
म्होटो—दे० मोटो ।
म्होर—दे० महोर ।
म्होंडो—दे० मूंढो ।

य

य—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का छब्बीसवाँ व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु है ।

य—*(न०)* यगण का संक्षिप्त नाम ।

यक—*(वि०)* १. एक । २. अकेला । *(न०)* १. यज्ञ विशेष । २. एक का आँका ।

यकवीस—*(वि०)* इक्कीस । दे० इकवीस ।

यकसार—*(वि०)* एक जैसा । **एक सिरीसो** ।

यकार—'य' अक्षर ।

यकीन—*(न०)* १. विश्वास । भरोसा । **आकीन** । २. निश्चय । ३. निस्संदेह ।

यक्ष *(न०)* १. एक देव योनि । २. कुबेर । ३. कुबेर का गण ।

यक्षकर्दम—दे० जखकादम या यखकादम ।

यक्षनायक—*(न०)* कुबेर ।

यक्ष प्रश्न—*(न०)* (यक्ष ने पांडवों को पूछा जैसा) कूट प्रश्न । जो शीघ्र या सरलता से समझ में नहीं आ सके ऐसा प्रश्न । अटपटा सवाल । **कोयड़ो** ।

यक्षराज—*(न०)* कुबेर ।

यक्षरात्रि—*(ना०)* दिवाली ।

यक्षाधिपति—*(न०)* कुबेर ।

यक्षिणी—*(ना०)* १. देव-स्त्री । २. यक्ष की स्त्री ।

यक्ष्मा—*(न०)* क्षयरोग । तपेदिक । **खैण-रोग** ।

यख—*(न०)* बर्फ । बरफ । दे० यक्ष ।

यख कादम—*(न०)* केशर, चंदन, कस्तूरी और कपूर आदि मिलाकर बनाया हुआ एक सुगंधित अंग लेप । **यक्षकर्दम** । **जखकादम** ।

यखनी—*(ना०)* १. उबाले हुये माँस का रसा। शोरबा। २. मसाले डाल कर पकाया हुआ मांस।

यखु—*(न०)* तीर। बाण।

यगण—*(न०)* एक लघु और दो गुरु मात्राओं वाला गण (छंदशास्त्र)।

यग्य—दे० यज्ञ।

यच्छ—दे० यक्ष।

यच्छकरदम—दे० यखकादम।

यजन—*(न०)* १. यज्ञ करना। २. पूजन। ३. यज्ञ।

यजमान—*(न०)* १. ब्राह्मण को दक्षिणा, पारिश्रमिक आदि देकर धार्मिक कृत्य कराने वाला। **जजमान**। २. यज्ञानुष्ठान में दीक्षित व्रती। ३. यज्ञ करने या कराने वाला। ४. दाता। ५. आश्रयदाता।

यजमानी—*(ना०)* यजमानवृत्ति। पुरोहिती। **जजमानी**। २. यजमानों द्वारा दान-दक्षिणा से आजीविका चलाना।

यजमानवृत्ति—दे० यजमानी।

यजुर्वेद—*(न०)* चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञ कर्मों का विवरण तथा विधान वर्णित है।

यजुर्वेदी—*(न०)* १. यजुर्वेद को जानने या मानने वाला। २. एक ब्राह्मण शाखा। *(वि०)* यजुर्वेद संबंधी।

यज्ञ—*(न०)* १. भारतीय आर्यों का एक धार्मिक कृत्य। एक वेदोक्त कर्म। **होम**। **जाग**। **याग**। **मख**। २. विवाह आदि मांगलिक उत्सव। ३. महाभोज। ४. ब्रह्मभोज। ५. धर्मयुद्ध। ६. लोक-सेवा। ७. लोकसेवा का काम।

यज्ञकुंड—*(न०)* यज्ञ-वेदी।

यज्ञपुरुष—*(न०)* १. विष्णु। २. यज्ञ का अधिष्ठाता देव।

यज्ञपति—*(न०)* श्रीविष्णु।

यज्ञवेदी—*(ना०)* यज्ञ की वेदी।

यज्ञशाला—*(ना०)* यज्ञ करने का स्थान।

यज्ञसामग्री—*(ना०)* घृत। यव, तिल आदि यज्ञ की सामग्री।

यज्ञसूत्र—*(न०)* यज्ञोपवीत। **जनोई**।

यज्ञहोता—*(न०)* यज्ञ में वेद मंत्रों द्वारा देवताओं का आवाहन करने वाला।

यज्ञाग्नि—*(न०)* यज्ञ की अग्नि।

यज्ञोपवीत—*(न०)* यज्ञसूत्र। ब्रह्मसूत्र। **जनेऊ**। **जनोई**।

यण—*(सर्व०)* इस। **इण**। **ईं**। *(न०)* स्वर संधि का एक प्रकार। (व्या.)

यतन—*(न०)* १. प्रयत्न। कोशिश। यत्न। **जतन**। २. उद्योग। चेष्टा। ३. रक्षा। ४. रक्षा का प्रबंध। ५. उपचार। चिकित्सा।

यतरो—*(वि०)* इतना। **अतरो**। **इतरो**। **इत्तो**।

यति—*(ना०)* छंद में आने वाला विराम। दे० यती।

यतिभंग—*(न०)* १. छंद में उचित स्थान पर यति का नहीं होना। २. एक काव्य दोष।

यती—*(न०)* १. यति। त्यागी। संन्यासी। २. श्वेताम्बर जैन साधु। **जती**। ३. विराम। विरति।

यतीम—*(न०)* अनाथ बालक।

यतीमखानो *(न०)* अनाथालय।

यत्किंचित—*(वि०)* जरा-सा। **जराक**।

यत्न—दे० यतन।

यत्नवान—*(वि०)* प्रयत्नशील। **यतन-वान**।

यत्र—*(अव्य०)* जहां। **जठं**।

यत्र-तत्र—*(अव्य०)* यहाँ-तहाँ। **जठै-तठै।**

यथा—*(अव्य०)* १. जैसे। जिस प्रकार। जैसे कि। २. उदाहरणार्थ। ३. निम्नानुसार।

यथाक्रम—*(अव्य०)* क्रमानुसार।

यथातथा—*(अव्य०)* १. जैसा-तैसा। २. मामूली। **जथा-तथा।** ३. ज्यों-त्यों। जैसे-तैसे। **ज्युं-त्युं।**

यथानियम—*(अव्य०)* नियमानुसार। **जथानेम।**

यथापूर्व—*(अव्य०)* पहले के जैसा ही। ज्यों का त्यों। **पहली ज्युं।**

यथाबुद्धि—दे० यथामति।

यथामति—*(अव्य०)* मति अनुसार। जैसी समझ। । यथाबुद्धि।

यथायोग्य—*(अव्य०)* १. जो जिस योग्य हो। २. जैसा उचित हो वैसा। ३. उपयुक्त। मुनासिब। **जथाजोग।**

यथार्थ—*(अव्य०)* १. जैसा है वैसा। २. ठीक। उचित। ३. वास्तविक। ४. अर्थ के अनुसार।

यथाशक्ति—*(अव्य०)* शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार। हैसियत के मुआफिक।

यथासमय—*(अव्य०)* १. समयानुसार। २. ठीक समय पर। **वेळासर।**

यथासंभव—*(अव्य०)* जहां तक हो सके। **बणै जठै ताईं।**

यथेच्छ—*(वि०)* १. इच्छानुसार। २. भरपूर।

यथेष्ट—*(वि०)* पर्याप्त। काफी।

यथोचित—*(अव्य०)* जैसा उचित हो।

यदपि—*(अव्य०)* यदि ऐसा है ही। यद्यपि। **जदपि।** जो।

यदा-कदा—*(अव्य०)* कभी-कभी। **कबै-कबै। जदै-कदै।**

यदि—*(अव्य०)* अगर। **जदि। जो।**

यदु—*(न०)* यादवों का पूर्वज।

यदुनंदन—*(न०)* श्रीकृष्ण।

यदुनाथ—*(न०)* श्रीकृष्ण।

यदुपति—*(न०)* श्रीकृष्ण।

यदुवर—*(न०)* श्रीकृष्ण।

यदुवंश—*(न०)* यदु का वंश। यादव कुल। **जदुवंस।**

यदुवंशी—*(वि०)* यादव कुल में उत्पन्न। **जादव।**

यद्यपि—दे० यदपि।

यम—*(न०)* १. मृत्युदेव। यमराज। २. समय। निग्रह। ३. दो की संख्या। ४. चित को धर्म में रखने वाले कर्मों का साधन। ५. शनि। ६. कौआ। ७. विष्णु। ८. वायु। ९. ऊँट। १०. अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अस्तेय ये पाँच संयम प्रकार। *(अव्य०)* इस प्रकार।

यमक—*(न०)* एक शब्दालंकार जिसमें एक ही शब्द कई बार भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है। (काव्य.)

यमज *(न०)* १. जुड़वें बच्चे। २. अश्विनीकुमार। *(वि०)* १. जुड़वाँ। २. दो।

यमदग्नि—*(न०)* परशुराम के पिता का नाम।

यमदूत—*(न०)* १. यम का दूत। **जमदूत।** २. कौआ। **कागलो।**

यमधार—*(ना०)* १. तलवार। २. कटार।

यम-नियम—*(न०)* अष्टांग योग के प्रथम दो अंग। पाँच महाव्रत रूपी यम

(दे० 'यम' शब्द सं० १०) तथा शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान—ये पाँच नियम।

यमपुर—*(न०)* यमलोक। **जमलोक**।

यम-यातना—*(ना०)* यम के द्वारा दिया जाने वाला दंड।

यमराज—*(न०)* १. यमों का राजा। २. धर्मराज जो मृत प्राणियों का लेखा देखते हैं। ३. यमलोक का राजा। **जमराज**।

यमलार्जुन—*(न०)* शाप के कारण दो जुड़वाँ वृक्षों के रूप में नलकूबर और मणिग्रीव नामक दो यक्ष।

यमी—*(न०)* इंद्रियों को वश में रखने वाला। *(ना०)* यम की छोटी बहन।

यमुना—*(ना०)* १. भारत की एक प्रसिद्ध पवित्र नदी। २. यम की बहिन।

यमुनोत्तरी—*(ना०)* हिमालय पर्वत में यमुना का उद्गम स्थान। **जमनोतरी**।

यय्यो—*(न०)* 'य' अक्षर। यकार।

यळ—दे० यळा।

यळधर—*(न०)* १. शेष नाग। इलाधर। २. पर्वत।

यळपत—*(न०)* राजा। इलापति।

यळमंड—*(न०)* १. राजा। इलामंडन। २. वर्षा। ३. मेघ। ४. मंगलग्रह।

यळमंडण—दे० यळमंड।

यळवै—*(न०)* इलापति। राजा।

यळसुत—*(न०)* मंगलग्रह। इलासुत। पृथ्वी पुत्र।

यळा—*(ना०)* इला। पृथ्वी। यळ। **पिरथी**।

यळेस—*(न०)* राजा। इलाईश। यळवै।

यव—*(न०)* १. जौ नामक एक अन्न। **जव**। २. बारह सरसों अथवा एक जौ की तौल। ३. लम्बाई का एक नाप। ४. अंगुलियों के उपरि पोर पर यव का चिन्ह। (सामुद्रिक)।

यवन—*(न०)* १. मुसलमान। २. म्लेच्छ। ३. यूनान देश का निवासी।

यवनिका—*(ना०)* रंगमंच का परदा।

यश—*(न०)* १. कीर्त्ति। ख्याति। **जस**। २. प्रशंसा। बड़ाई। ३. सिद्धि।

यशद—*(ना०)* एक खनिज धातु। **जसद**। **जसोद**।

यशस्वी—*(वि०)* कीर्त्तिवान्। ख्याति प्राप्त।

यशोदा—*(ना०)* नंदजी की पत्नी, जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। **जसोदा**।

यशोधरा—*(ना०)* भगवान बुद्ध की पत्नी।

यशोमती—*(ना०)* १. यशोदा। २. यशस्वती।

यष्टि—दे० यस्टी।

यसो—*(वि०)* १. ऐसा। **इसो**। २. जैसा। **जिसो**।

यस्टी—*(ना०)* १. लकड़ी। छड़ी। २. सौष्ठव। यष्टि।

यहूदी—*(न०)* १. एक धर्म। २. इस धर्म का अनुयायी। ३. पैगम्बर मूसा का अनुयायी। ४. पेलेस्टाइन का मूल निवासी। *(वि०)* यहूदी संबंधी।

यंछा—*(ना०)* इच्छा।

यंत—*(न०)* गाड़ी चलाने वाला। **सागड़ी**। सारथी। दे० जंत सं. ३।

यंत्र—*(न०)* १. तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार के कोष्टक-लेखन आदि। जंत्र। **जंतर**। २. तावीज। गंडा।

राखडी । ३. सितार, चिकारा आदि तंतुवाद्य । तंत्रवाद्य । ४. तोप । ५. बंदूक । ६. ताला । ७. संचा । मशीन । ८. पकड़ । नियंत्रण । ९. औजार ।

यंत्रणा—*(ना०)* १. क्लेश । २. कष्ट । यातना । दुख । ३. पीड़ा । दर्द । **जंतरणा** ।

यंत्रमंत्र—*(न०)* जादू टोना । टोटका । **जन्तर-मन्तर**

यंत्रालय—*(न०)* १. छापाखाना । मुद्रणालय । २. कारखाना ।

यंद—*(न०)* इन्द्र ।

यंद्र—*(न०)* इन्द्र ।

यंबर—*(न०)* १. आकाश । २. मेघ । बादल । **अंबर** । ३. वस्त्र ।

या—*(अव्य०)* १. अथवा । किम्वा । वा । कै । २. हे । अरे । *(सर्व०)* १. इस । २. इसने । ३. यह । ४. जो ।

या इलाही—*(अव्य०)* हे खुदा । हे परमात्मा ।

याकूत—*(न०)* लाल रंग का एक बहुमूल्य पत्थर । माणिक ।

याकूती—दे० आकूती ।

याग—*(न०)* यज्ञ ।

याचक—दे० जाचक ।

याजक—दे० याज्ञिक ।

याज्ञवल्क्य—*(न०)* एक स्मृतिकार ऋषि ।

याज्ञिक—*(वि०)* १. यज्ञ संबंधी । २. यज्ञ करने या कराने वाला । *(ना०)* एक अल्ल ।

यातना—*(ना०)* कष्ट । पीड़ा । **जातमा** ।

यातायात—*(न०)* आने जाने की क्रिया । आना-जाना **अवर-जवर** । **आणो-जाणो** ।

यातुधान—*(न०)* राक्षस । **जातुधान** ।

यात्रा—*(ना०)* १. तीर्थ यात्रा । तीर्थाटन । **जात्रा** । **जातरा** । २. जाने की क्रिया । प्रस्थान । ३. सफर । मुसाफिरी ।

यात्राळू—दे० यात्री ।

यात्री—*(न०)* १. यात्रा करने वाला । मुसाफिर । २. तीर्थाटन करने वाला । **जात्री** । **जातरी** । **यात्राळू** ।

याद—*(ना०)* १. स्मरण । स्मृति । २. स्मरणशक्ति । ३. चिंता । ४. सुध ।

यादगरी—दे० यादगारी ।

यादगार—*(ना०)* १. याद रखने के लिये लिखी गई बातें । २. स्मारक । स्मृति चिन्ह ।

यादगारी—दे० यादगिरी ।

यादगिरी—*(ना०)* १. यादगार । स्मृति चिन्ह । २. याददास्त । स्मरणशक्ति ।

याददास्त—*(न०)* १. स्मरणशक्ति । २. याद रखने के लिए लिखी हुई बातें ।

याददास्ती—दे० याददास्त ।

यादव—*(न०)* १. श्रीकृष्ण । २. यदुवंश के लोग । ३. भाटी राजपूत ।

यादवपति—*(न०)* श्रीकृष्ण ।

यादववंशी—*(वि०)* यादव वंश का ।

यादवास्थळी—*(ना०)* १. यादवों की आपसी लड़ाई । २. अन्दर-अन्दर की लड़ाई । परस्पर की लड़ाई । फूट ।

यादवी सेना—*(ना०)* श्रीकृष्ण की यादव सेना ।

यादी—*(ना०)* १. सूची । लिस्ट । २. टीप । नोंध । ३. स्मरणपत्र ।

यान—*(न०)* १. वाहन । २. वायुयान ।

यानी—*(अव्य०)* १. तात्पर्य यह है । २. अर्थात् । अथवा । याने ।

यानूं—*(सर्व०)* इनको । **इणांनै** ।

यानै—*(सर्व०)* इनको। **इणांनै**। दे० यानी।

याम—*(न०)* १. तीन घंटों का समय। पहर। प्रहर। **पहोर**। २. संयम। *(ना०)* रात। **जाम**।

यामिनी—*(ना०)* १. रात। २. हलदी।

यायावर—*(न०)* १. घुमन्तू। २. खानाबदोश। २. संन्यासी।

यार—*(न०)* १. मित्र। प्रेमी। २. हिमायती। ३. परस्त्री से प्रेम करने वाला। परस्त्री का प्रेमी। **जार**।

यारणा—*(ना०)* परपुरुष से अनुचित संबंध रखने वाली स्त्री।

यारी—*(ना०)* १. दोस्ती। मित्रता। २. परस्त्री से किया जाने वाला प्रेम।

यावच्चंद्र-दिवाकरौ—*(अव्य०)* १. जहाँ तक सूर्य और चंद्रमा रहे वहाँ तक। सदा के लिए। २. आज्ञापत्र, ताम्रपत्र आदि राजकीय फरमानों में लिखा जाने वाला एक पारिभाषिक पद।

यावत *(अव्य०)* जहाँ तक। **जठै तांई**।

यावलो—*(न०)* 'य' अक्षर।

यावो—*(न०)* 'य' अक्षर।

यां—*(सर्व०ब०व०)* १. इन। २. इन्होंने। **इणां**।

याँकी—*(सर्व०ब०व०)* इनकी। **इणांरी**।

याँके—*(सर्व०ब०व०)* इनके। **इणांरै**।

याँको *(सर्व०ब०व०)* इनका। **इणांरो**।

याँत्रिक—*(वि०)* यंत्र संबंधी।

याँनै—*(सर्व०ब०व०)* इनको। **इणांनै**।

याँमें—*(सर्व०ब०व०)* इनमें। **इणांमें**

याँरै—*(सर्व०ब०व०)* इनके। **इणांरै**।

याँरो—*(सर्व०ब०व०)* इनका। **इणांरो**।

याँसूं—*(सर्व०ब०व०)* इनसे। **इणांसूं**।

युक्त—*(वि०)* १. जुड़ा हुआ। संयुक्त। **जुड़ियोड़ो**। २. योग्य। उचित।

युक्ति—*(ना०)* १. तर्क। २. उचित विचार। ३. कौशल। चातुर्य। ४. उपाय। ५. रीति। ६. करामात। तदबीर। **जुगती**।

युक्तिबाज—*(वि०)* चतुर। होशियार। चालाक।

युग—*(न०)* १. समय। काल। २. जमाना। **जमानो**। ३. काल का एक दीर्घ परिमाण जिसका विभाजन-सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग, इन चारों युगों में किया गया है। **जुग**। ४. पीढ़ी। पुश्त। ५. भूस्तर विद्या तथा इतिहास के आधार पर निश्चित किया हुआ काल विभाग, जैसे—पाषाण युग। गांधी युग। ६ युगल। जोड़ा। ७. **जुआ**। **जुआड़ो**।

युग पलटो—*(न०)* १. युग परिवर्तन। २. युगान्तर।

युगपुरुष—*(न०)* अपने समय का सबसे बड़ा पुरुष।

युगप्रवर्तक—*(वि०)* युग स्थापक (पुरुष)।

युगल—*(न०)* जोड़ा। जुगल। जोड़ी। *(वि०)* दो।

युगांडा—*(न०)* अफ्रीका का एक देश।

युगोस्लाविया—*(न०)* यूरोप का एक देश।

युत—*(वि०)* १. मिला हुआ। २. सहित। युक्त। ३. एकत्र।

युद्ध—*(न०)* लड़ाई। संग्राम। रण। **जुध**।

युद्धभूमि—*(ना०)* रणक्षेत्र।

युद्धवीर—*(न०)* युद्ध करने में कुशल। रणवीर।

युद्धस्थिर—दे० जुधथिर।

युधिष्ठिर—*(न०)* पाँच पाँडवों में सबसे बड़े का नाम। धर्मराज। अजातशत्रु। प्रथम पांडव।

युनिवर्सिटी—*(ना०)* विश्वविद्यालय । विद्यापीठ ।

युवक—*(वि०)* युवा । **जवान** । तरुण । *(न०)* युवा पुरुष । **मोटियार** ।

युवती—*(ना०)* जवान स्त्री । यौवनवती । तरुणी । **मोटियारण** ।

युवराणी—*(ना०)* युवराज की पत्नी ।

युवराज—*(न०)* राजा का सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का उत्तराधिकारी होता है । **पाटवी कुंवर** ।

युवा—*(वि०)* जवान । तरुण । **मोटियार** ।

युं—*दे०* यूं ।

यूथ—*(न०)* १. समूह । झुण्ड । **टोळो** । २. सेना । फौज ।

यूथपति—*(न०)* सेनापति ।

यूनान—*(न०)* ग्रीस देश ।

यूनानी—*(न०)* १. यूनान देश का निवासी । २. यूनान देश की भाषा । ३. एक चिकित्सा प्रणाली । *(वि०)* यूनान देश से संबंधित ।

यूरोप—*(न०)* १. एक पृथ्वी खंड । २. युरुप प्रदेश ।

यूरोपियन—*(न०)* यूरोप का निवासी । *(वि०)* यूरोप का ।

यूं—*(अव्य०)* १. इस प्रकार । यों । २. ऐसा । **युं** । **इयुं** ।

यूंही—*(अव्य०)* १. निरुद्देश्य । बिना काम । २. योंही ।

येनकेन प्रकारेण—*(अव्य०)* किसी भी प्रकार । जिस किसी भी तरह । **क्युं-क्युं करनै** ।

वैरसो—*(सर्व०)* इतना । *(वि०)* ऐसा । **इसो** । **अैड़ो** ।

यौ—*(सर्व०)* १. इस । २. इसने । ३. यह । **ओ** ।

योग—*(न०)* १. दो या दो से अधिक संख्याओं की जोड़ । २. संयोग । ३. संबंध । ४. युक्ति । ५. कौशल । ६. औषध । ७. ध्यान । ८. चितवृत्ति का निरोध । ९. ईश्वर से साक्षात्कार की साधना । १०. तपश्चर्या । ११. मोक्ष का उपाय । १२. मेल-मिलाप । १३. प्रयोग । १४. लाभ । १५. प्राप्ति । १६. वैराग्य । १७. हठयोग । १८. अवसर । प्रसंग । १९. साम, दाम, दंड, भेद नामक उपाय । २०. वशीकरण ।

योगक्षेम—*(न०)* १. जो न हो उसकी प्राप्ति और प्राप्त का रक्षण । २. लाभ और उसकी रक्षा । ३. गुजारा । जीवन-निर्वाह । ४. कुशलक्षेम । कुशल-मंगल ।

योगदर्शन—*(न०)* महर्षि पतंजलि का दर्शन शास्त्र जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने का विधान है । योगशास्त्र ।

योग-फल—*(न०)* दो या दो से अधिक संख्याओं की जोड़ का फल (गणित) ।

योग-बल—*(न०)* तपोबल । योगशक्ति ।

योग-भ्रष्ट—*(न०)* वह योगी जिसकी साधना पूरी न हुई हो । जिसकी योग साधना खंडित हो गई हो । असफल योगी ।

योग-माया—*(ना०)* १. भगवती । दुर्गा । भवानी । महामाया । **जोगमाया** । २. योग की अलौकिक शक्ति ।

योग-मुद्रा—*(ना०)* १. योग की विशिष्ट क्रिया । २. योग की पांच मुद्राओं में से कोई एक ।

योगराज गूगळ—*(न०)* वायु रोग की एक प्रसिद्ध औषधि ।

योगरूढ़—*(न०)* दो शब्दों के योग से बनने वाला वह शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़ कर कोई विशेष अर्थ बतलाये। योगरूढ़ि से बना हुआ भिन्न अर्थ जैसे - पंकज (पंक+ज)।

योगावसिष्ठ—*(न०)* वशिष्ठ ऋषि का एक वेदांत ग्रंथ। प्रसिद्ध दर्शन-ग्रंथ।

योग-विद्या - *(ना०)* योग संबंधी शास्त्र।

योग-शास्त्र—*(न०)* योग की क्रियाओं का शास्त्र। योगविद्या।

योग-सिद्धि—*(ना०)* योग के द्वारा प्राप्त सिद्धि।

योग-सूत्र—*(न०)* सूत्रों का संग्रह। दे० योगदर्शन।

योगानुयोग—*(अव्य०)* संयोग से।

योगाभ्यास—*(न०)* योगशास्त्रानुसार योग का अभ्यास।

योगासन—*(न०)* योग की साधना के आसनों में से कोई एक।

योगांग—*(न०)* योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ अंग।

योगिका—*(ना०)* एकाधिक पदों वाले शब्द को लिखते समय पदों के बीच में प्रयुक्त छोटा संयोजन-चिन्ह। हाइफन।

योगिणी—*(ना०)* योगिनी। तपस्विनी।

योगी—*(न०)* योग साधन करने वाला। योग साधक। **जोगी**। २. आत्मज्ञानी। ३. तपस्वी। **तपसी**।

योगीराज—*(न०)* बड़ा योगी। श्रेष्ठ योगी। **जोगीराज**।

योगीश्वर—*(न०)* १. शिव। २. श्रीकृष्ण। ३. बड़ा योगी। ४. सिद्ध। ५. तपस्वी। योगियों का स्वामी। **जोगेसर**।

योगेश्वर—दे० योगीश्वर।

योग्य—*(वि०)* १. उपयुक्त। लायक। २. समर्थ। ३. आदरणीय।

योग्यता—*(ना०)* १. लायकी। काबलियत। सुयोग्यता। २. निपुणता। होशियारी। ३. सामर्थ्य।

योजन—*(न०)* दो, चार या आठ कोस की दूरी। **जोजन**।

योजना—*(ना०)* १. योग्य का योग्य के साथ विन्यास करना। विन्यास। मिलाप। मिलान। २. किसी बड़े काम को करने का विचार या आयोजन। प्लान (Plan) ३. प्रयोग। व्यवहार। ४. रचना। ५. किसी काम या उद्देश्य को सिद्ध करने के लिये उपाय, साधन आदि की निश्चित रेखा। (Plan) प्लान।

योद्धा—*(न०)* १. युद्ध करने वाला। २. वीर पुरुष। शूरवीर। **जोधा**। ३. सैनिक।

योधो—दे० योद्धा।

योनि—*(ना०)* १. उत्पत्ति स्थान। २. जननेंद्रिय। भग। ३. जन्म। ४. आकर। खानि। ५. प्राणियों की जातियाँ जो चौरासी लाख कही जाती हैं। ६. जल। ७. गर्भाशय।

योनिकंद—*(न०)* योनि का एक रोग।

योनियन्त्र—दे० सरगासेरी।

योषिता—*(न०)* स्त्री। **जोखता**।

योही—*(सर्व०)* यही। **ओहिज**।

यौगिक—*(न०)* १. प्रकृति और प्रत्यय के योग से बना हुआ शब्द। (व्या०) २. दो या दो से अधिक पदार्थों का मिश्रण। रासायनिक मिश्रण। *(वि०)* १. व्युत्पत्तिसिद्ध (व्या०) २. योग संबंधी।

यौम—*(न०)* दिन । दिवस ।

यौवन—*(न०)* १. जोबन । २. जवानी । तरुणाई ।

यौवना—*(ना०)* युवा स्त्री । युवती । जुवती । मोटियारण ।

र

र—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा का २७ वाँ व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है ।

र—*(न०)* 'रगण' का संक्षिप्त नाम ।

रइयत—*(ना०)* प्रजा । रैयत ।

रइणाइर—दे० रत्नाकर ।

रइबारी—दे० रबारी ।

रई—*(ना०)* मथानी । मंथन डंड । मथाणी ।

रईस—*(न०)* १. अमीर । २. मालदार । श्रीमंत । ३. जागीरदार । ४. राजा । *(वि०)* नाजुक । कोमल ।

रकझक—*(ना०)* १. तकरार । बोलचाल । २. लगातार बोलते रहने का काम ।

रकबो—*(न०)* १. क्षेत्रफल । रकबा । २. खेत के आस-पास की बिना जोती हुई जमीन ।

रकम—*(ना०)* १. धन । २. रुपया-पैसा । ३. रुपयों की अधिक तादाद । ४. गहना आदि मूल्यवान वस्तु । ५. रुपयों की लेनदेन के संबंध का बही में किया गया इंदराज । ६. अंकों के रूप में लिखी गई रुपयों की संख्या । तादाद । धूर्त । बदमाश । ८. लुच्चाई आदि के गर्हित कामों में अपने नाम से प्रसिद्ध व्यक्ति ।

रकमवार—*(अव्य०)* १. एक के बाद एक । क्रमवार । २. विस्तार पूर्वक । विगतवार । ३. प्रत्येक रकम के संबंध में । ४. रकम के क्रम के अनुसार ।

रकाब—*(न०)* १. घोड़े तथा ऊँट की काठी (जीन) में दोनों ओर बँधे हुए पाँव रखने के पाँवदान । पागड़ा । २. रकाबी ।

रकाबदार—*(न०)* १. रकाब पकड़ कर राजा महाराजाओं को घोड़े पर चढ़ाने वाला सईस । २ खानसामा । ३. हलवाई ।

रकाबी—*(ना०)* तश्तरी । रकेबी ।

रकार—*(न०)* 'र' अक्षर ।

रकेबी—दे० रकाबी ।

रक्त—*(न०)* १. रुधिर । खून । लोही । २. लाल रंग । रक्तवर्ण । *(वि०)* १. रक्त के रंग जैसा । लाल । सुर्ख । रातो । २. रंगा हुआ । ३. अनुरक्त ।

रक्त-कुष्ठ—*(न०)* एक प्रकार का कोढ़ । रक्तपित्त ।

रक्त-चंदन—*(न०)* लाल रंग का चंदन । लालचंदन ।

रक्तपात—*(न०)* भयंकर मारकाट ।

रक्त-प्रदर—*(न०)* स्त्रियों की योनि में से रक्त बहने का एक रोग ।

रक्त-पित्त—*(न०)* रक्तकोढ़ । रक्तकुष्ठ ।

रक्त-लोचन—*(न०)* १. कबूतर । २. कोयल । ३. चकोर । *(वि०)* १. लाल आँख वाला । २. क्रोधित ।

रक्त-विकार—*(न०)* रक्त में खराबी का रोग । **लोहीविकार** ।

रक्त-संबंध—*(न०)* वंश या कुल का संबंध । **सगोत्री** । **हाडसंबंध** । **हाडसगो** ।

रक्षक—*(वि०)* रक्षा करने वाला । *(न०)* पहरेदार ।

रक्षण *(न०)* १. रक्षा । २. रक्षा करने का भाव या क्रिया ।

रक्षा—*(ना०)* १. आक्रमण, आपत्ति, हानि, नाश आदि से किया जाने वाला बचाव । रक्षण । २. राखी । **राखड़ी** । ३. राख । भस्मी । ४. शरण । आश्रय ।

रक्षाबंधन—*(न०)* १ श्रावण शुक्ला पूनम का एक त्यौहार जिस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है । २. राखी बाँधने का पर्व । ३. राखी बाँधने की क्रिया ।

रक्षित—*(वि०)* १. रक्षा किया हुआ । २. संचित । ३. रक्षण में रखा हुआ । **रखत** ।

रख—*(न०)* १. जैन यति । **जती** । २. तीन की संख्या का एक व्यापारी संकेत । ३. गोचरभूमि ।

रखड़णो—*(क्रि०)* भटकना । मारा-मारा फिरना । **भटकणो** ।

रखड़ी—*(ना०)* १. सौभाग्यवती स्त्रियों के सिर का एक आभूषण । **बोर** । शीश-फूल । २. राखी । **राखड़ी** ।

रखणा—दे० रक्षण ।

रखणार—*(वि०)* १. रखने वाला । २. धारण करने वाला । ३. रक्षा करने वाला ।

रखणो—दे० राखणो ।

रखत—*(ना०)* १. वह भूमि जो पशुओं को चराने के लिये रखी गई हो । गोचरभूमि । **रख** । **रखा** । २. रक्षित भूमि । ३. धन । सम्पत्ति । ४. मोती ।

रखपाळ—*(वि०)* रक्षा करने वाला । रक्षा और पालन करने वाला । *(न०)* ईश्वर ।

रख-रखाव—*(न०)* परस्पर का समान व्यवहार । लेना जैसा देना । २. रक्षा । ३. पक्षपात ।

रखवाणो—*(क्रि०)* रखवाना । **रखाणो** ।

रखवाळ—दे० रखवाळो । दे० रखपाळ ।

रखवाळण—*(ना०)* रखवाली करने वाली ।

रखवाळणो—दे० रखवाळणो ।

रखवाळी—*(ना०)* १ हिफाजत । रक्षण । २. चौकीदारी । पहरा ३. चौकीदारी करने का महनताना । **रखवाळो** ।

रखवाळी-भाछ—*(ना०)* चौकीदारी का कर ।

रखवाळो—*(न०)* १. चौकीदार । पहरेदार । **पोहरायत** । २. रक्षा करने वाला । *(ना०)* १. चौकीदारी । पहरेदारी । २. रक्षा । बचाव । **रखवाळो** ।

रखा—*(ना०)* गोचर भूमि । **रखत** । **ओरण** ।

रखाई—*(ना०)* १. रखने की क्रिया, भाव या मजदूरी । २. हिफाजत करने की उजरत । **रखामण** ।

रखाणो—दे० रखावणो ।

रखापखी—*(ना०)* पक्षपात । **रखापत** ।

रखापत—*(ना०)* १. प्रतिष्ठा का रक्षण । २. दूसरों की इज्जत रखने के बदले में मिलने वाली इज्जत । ३. परस्पर का व्यवहार । ४. पक्षपात ।

रखामण—दे० रखाई ।

रखामणी—दे० रखाई ।

रखावणो - *(क्रि०)* १ रखवाना। धराना। **रखाणो**। २. नियुक्त करवाना। ३. अधिकार में लिवाना। ४. निवास करवाना। ५. धारण कराना।

रखी—दे० रखी।

रखे—*(अव्य०)* १. ऐसा न हो कि। २. यदि। ३. नहीं। ४. कदापि। कदाचित्। *(वि०)* रहित। बिना। *(क्रि०वि०)* दूर।

रखेनै—दे० रखे।

रखेल—*(ना०)* बिना ब्याहे रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। **रखेली**।

रखेली—दे० रखेल।

रखो—*(न०)* १. रक्षा। २. रक्षण। **चौकी**। ३. ओट। ४. परदा। ५. बचाव। ६. बाड़। ७. रखवाला। पहरेदार। **चौकीदार**।

रखोपो— *(न०)* १. रक्षा का भार। रक्षा का उत्तरदायित्व। २. रक्षा। रक्षण। ३. आश्रय। शरण।

रख्खी—*(ना०)* पद यात्रा में साथ ले जाया जाने वाला दो मुंह वाला एक लंबा थैला जो कंधे पर रखा जाता है।

रख्या—*(ना०)* १. रक्षा। २. राख। भस्म।

रग—*(ना०)* १. नस। नाड़ी। **नाड़**। २. मनोवृत्ति। ३ हठ। ४. निंदासूचक हास। उपहास। ५. कंबल। **कांबळ**। ६. पत्ते की नस। ७. चिढ़ाने के लिये कही जाने वाली चुभती बात। व्यंग्य। ८. चिढ़। ९. छेड़छाड़। **खोड़ीलाई**।

रगड़—*(ना०)* १. घर्षण। घिस्सा। २. घर्षण से उत्पन्न चिन्ह। खरोंच लगने का निशान। ३. मालिश। ४. भारी श्रम। सख्त महनत।

रगड़को—दे० १. रगड़ स० १. २.। २. घसड़को।

रगड़णो—*(क्रि०)* १. रगड़ना। मसलना। घर्षण करना। २. पीसना। ३. हैरान करना। ४. खूब परिश्रम कराना। ५. परिश्रम करना। ६. घसीटना।

रगड़ाणो— *(क्रि०)* रगड़वाना।

रगडाळै—*(क्रि० वि०)* धीमी गति से। *(वि०)* विवाद या अन्य किसी कारण से रुका हुआ (काम)।

रगड़ा रगड़ी—*(ना०)* १. तोल में कुछ कम। २. रगड़ने का काम। ३. झगड़ा। टंटा। बोलचाल।

रगड़ो—*(न०)* १. झगड़ा। २. खटपट। ३. अनबन। ४. घर्षण से उत्पन्न चिन्ह। **रगड़**। घिस्सा। खरोंच। ५. रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगड़ो-झगड़ो—*(न०)* झगड़ा-टंटा।

रगण—*(न०)* पहला और तीसरा गुरु और दूसरा (बीच का) लघु अक्षरों वाला गण (छंद)।

रगत—*(न०)* रक्त। लोही। *(वि०)* लाल। **रातो**।

रगत-कोढ—*(न०)* रक्तकुष्ठ।

रगत-खाळ—*(न०)* रक्त का नाला।

रगत-चंदण—*(न०)* रक्तचंदन।

रगत-पित—दे० रक्त-पित्त।

रगत-भव—*(न०)* मांस। आमिष।

रगत-विकार—दे० रक्त-विकार।

रगदण—*(ना०)* १. बेडोल स्त्री। २. वेश्या।

रगदणो—*(क्रि०)* मसलना। रौंदना। मर्दित करना।

रगदळणो—*(क्रि०)* दे० रगदणो। दे० रगदोळणो।

रगदोळणो—*(क्रि०)* १. धूल में रगड़ना। २. हानि पहुँचाना। ३. कीचड़ लगाना। खरड़णो। कीचड़ से लथपथ करना। ४. मर्दित करना। मसलना। ५. रौंदना। ६. पीटना।

रगबग—*(वि०)* खूब रंगा हुआ। रंग या पानी से चर्चित।

रगसणो—*(क्रि०)* १. बैठे-बैठे चलना। २. लंगड़ाते हुए चलना। ३. धीरे-धीरे काम करना। ४. धीरे-धीरे चलना।

रगस-रगस—*(क्रि०वि०)* धीरे-धीरे। अटकते-अटकते।

रगसियो—*(वि०)* धीमा। सुस्त। दे० रगी।

रगी—*(वि०)* १. जिद्दी। दुराग्रही। हठी। २ कपटी। छली। ३. मलिन स्वभाव का। मैले मन का। मैला। ४. निंदासूचक हँसी उड़ाने वाला। ५. उपहास करने वाला। ६. कृपण।

रघु—*(न०)* १. एक सूर्यवंशी राजा। श्रीराम के प्रपितामह। २. श्रीराम। ३. रघु के वंशज।

रघुकुळ—*(न०)* रघु-राजा का वंश।

रघुनंदन—*(न०)* श्री रामचन्द्र।

रघुनाथ—*(न०)* श्री रामचन्द्र।

रघुनाथ-रूपक—*(न०)* जोधपुर निवासी प्रसिद्ध कवि मंछाराम (मंछ कवि) कृत डिंगल का एक रीति ग्रंथ, जिसके उदाहरणों में रामायण की संपूर्ण कथा क्रम से कही गई है।

रघुपति—*(न०)* श्री रामचन्द्र।

रघुवर—*(न०)* श्री राम।

रघुवंश—*(न०)* १. महाकवि कलिदास का रचा हुआ एक संस्कृत महाकाव्य। २. रघुकुल।

रघुवीर—*(न०)* श्री रामचन्द्र।

रचण—*(वि०)* रचने वाला।

रचणा—*(न०)* रचना। कृति।

रचणो—*(क्रि०)* १. रचना। २. बनाना। ३. कविता बनाना। ४. मेहंदी का रंग खिलना। राचणो। ५. रंगना। ६. सजाना। ७. फैलाना।

रचना—*(ना०)* १. बनावट। बनाने का ढंग। कौशल। २. निर्माण। ३. व्यवस्था। ४. निर्मित पदार्थ। ५. केश विन्यास। ६. सजावट। ७. कविता। काव्य। ८. साहित्यिक कृति। ९. लीला। माया। १०. रचने की क्रिया या भाव। ११. स्थापना। १२. जाल। फंदा।

रचयिता—*(न०)* १. रचने वाला। रचना करने वाला। २. ग्रन्थ लेखक।

रचाणो—दे० रचावणो।

रचावणो—*(क्रि०)* रचना करना। दे० रचणो।

रचित—*(वि०)* १. रचा हुआ। २. कृत। ३. लिखित। ४. सज्जित।

रचियोड़ो—दे० रचित।

रचियो-पचियो—*(वि०)* १. तल्लीन। मशगूल। २. हिलामिला। ३. मस्त।

रच्छक—*(वि०)* रक्षक।

रछानी—दे० राछानी।

रछेरी—*(वि०)* १. रक्षित। २. निर्भय। ३. चंचल। ४. रक्षिता। ५. सुन्दर। *(ना०)* रखेल। रक्षिता।

रज—*(ना०)* १. धूलिकण। २. धूल। गर्द। ३. रजोगुण। ४. स्त्रियों के मासिक धर्म के समय निकलने वाला रक्त। आर्तव। ५. पुष्प रज। पराग। ६. प्रतिष्ठा। ७. वीरता। ८. टुकड़ा। ९. चाँदी। *(वि०)* रजकण जितना। बहुत थोड़ा।

रजक—*(न०)* धोबी । दे० रिजक ।

रज-कण—*(न०)* १. धूलिकण । २. रज जितना छोटा कोई कण ।

रजकर—*(वि०)* दीन । गरीब ।

रजको—*(न०)* (बैल और घोड़े के लिये उपयोगी) मेथी की जाति का एक पौधा ।

रजणो—*(क्रि०)* १. मन लगना । रंजणो । २. संतोष होना । ३. शोभित होना । ४. रंगा जाना । ५. रज रज होना । ६. मिट्टी में मिलना ।

रजत—*(न०)* चाँदी । रूपो । *(वि०)* १. सफेद । शुभ्र । २. उज्ज्वल ।

रजत-जयंती—*(ना०)* किसी मनुष्य या संस्था आदि की पच्चीस वर्ष बाद या पच्चीसवें वर्ष में मनाई जाने वाली जयन्ती ।

रजथान—*(न०)* १. राजस्थान । २. राज्य ।

रज-धरम—*(न०)* १. क्षत्रियत्व । **रजपूती** । २. राजधर्म ।

रजधानी—दे० राजधानी ।

रजनी—*(ना०)* १. रात । रात्रि । २. लाख । ३. हलदी । **हळदर** ।

रजनीकर—*(न०)* चंद्रमा ।

रजनीचर—*(न०)* निशाचर । राक्षस ।

रजनीमुख—*(न०)* संध्या । **साँझ** ।

रजपूत—*(न०)* १. राजपूत । २. क्षत्री ।

रजपूतण—दे० रजपूताणी ।

रजपूतपणो—दे० रजपूताई ।

रजपूताई—*(ना०)* १. क्षत्रियत्व । **रजपूतपणो** । २. वीरता । शूरता । **रजपूताई** ।

रजपूताणी—*(ना०)* राजपूत की स्त्री । क्षत्राणी ।

रजपूताणी जायो—*(न०)* राजपूत ।

रजपूती—दे० रजपूताई ।

रजब—*(न०)* हिजरी वर्ष का सातवाँ महीना ।

रजबनामो—*(न०)* अकबर द्वारा करवाया हुआ महाभारत का फारसी अनुवाद ।

रजमर—*(ना०)* १. जानकारी । ज्ञान (जैस०) **ठाह** । २. परिचय ।

रजमी—दे० रमजी ।

रजमो—*(न०)* १. बल । शक्ति । २. जोश । उफान । ३. रजस्व । ४. आवेश । ५. उत्साह । ६. गर्व । घमंड । **जोम** । ७. तेज । नूर । पानी । ८. पौरुष । साहस । पराक्रम ।

रज-रज—*(न०ब०व०)* १. टुकड़े-टुकड़े । २. प्रत्येक रजकण ।

रजवट—*(ना०)* १. क्षत्रियत्व । **रजपूतपणो** । २. रजस्व । रजोगुण । ३. वीरत्व । वीरता ।

रजवण—दे० राजवण ।

रजवत—*(वि०)* रज के समान । धूलि के जैसा ।

रजवंती—*(ना०)* रजस्वला । रजवती । ऋतुमती ।

रजवाट—दे० रजवट ।

रजवाड़ी—*(वि०)* १. रजवाड़ा संबंधी । २. रजवाड़े का । ३. राज्य निवासी ।

रजवाड़ी राज—दे० रजवाड़ो ।

रजवाड़ो—*(न०)* १. देशी राज्य । २. रजपूती राज्य । ३. सार्वभौम राज्य के अन्तर्गत कोई छोटा राज्य ।

रजस—दे० रजोगुण ।

रजसुळा—दे० रजस्वला ।

रजस्वला—*(ना०)* ऋतुमती। रजवंती। अटकाव वाली स्त्री। रजमुढा। *(वि०)* अटकाव वाली।

रजा—*(ना०)* १. आज्ञा। हुक्म। २. कृपा। ३. इच्छा। मरजी। ४. अनुमति। ५. छुट्टी। रुखसद। परवानगी। ६. अवकाश। तातील। छुट्टी।

रजाइस—*(ना०)* आज्ञा। हुक्म।

रजाई—*(ना०)* लिहाफ। दुलाई। सकलात। सौरख।

रजा-कजा—*(ना०)* १. किसी मंगल कार्य में होने वाली दुर्घटना। २. आकस्मिक घटना। अकस्मात। अनचीती आफत। ३. बीमारी। माँदगी। ४. मृत्यु। मौत। कजा।

रजाबंद—*दे०* रजाबंध।

रजाबंध—*(वि०)* १. राजी। रजामंद। सहमत। रजाबंद। २. अविरोध। ३. संतुष्ट। राजी।

रजामंद—*दे०* रजाबंध।

रजामंदी—*(ना०)* १. आज्ञा। परवानगी। २. अनुमति। ३. अविरोध। ४. स्वेच्छा। राजीखुशी। ५. इच्छा। मरजी।

रजिस्टर—*(ना०)* नोंधपत्रक। पंजी। पंजिका।

रजिस्ट्री—*(ना०)* १. किसी दस्तावेज, प्रतिज्ञापत्र आदि का किया गया विधिवत पंजीकरण। २. चिट्ठी, पारसल आदि का डाकघर में पंजीबद्ध करने का काम। ३. पंजीयन पत्र पार्सल आदि।

रजी—*(ना०)* रेत। धूलि। रेती। धूड़। रंजी।

रजुआत—*(ना०)* १. रजू करने या होने का भाव। *(अव्य०)* प्रत्यक्ष। सम्मुख। २. संबंध। ३. पेश। प्रस्तुत।

रजू—*(अव्य०)* १. प्रत्यक्ष। सम्मुख। *(वि०)* प्रस्तुत। हाजिर किया हुआ। *(ना०)* रस्सी। रज्जू।

रजू दफ्तर—*(अव्य०)* दस्तावेज की नोंध या नकल सरकारी दफ्तर में ले ली गई है। इस बात का उस पर लगाया जाने वाला नोट।

रजूबाकी—*(ना०)* परस्पर हिसाब करने के बाद रही हुई निश्चित बाकी रकम।

रजोगुण—*(ना०)* जीवधारियों की प्रकृति का वह गुण जिसमें उनके भोग-विलास में रुचि उत्पन्न होती है। प्रकृति के तीन गुणों में से दूसरा। प्रवृत्ति का हेतुभूत गुण।

रजोगुणी—*(वि०)* रजोगुण वाला।

रजोहरण—*दे०* रजोयणो।

रजोदर्शन—*(ना०)* १. पहली बार रजस्राव या रजस्वला होना। २. स्त्रियों का मासिक धर्म।

रजोधर्म—*(ना०)* स्त्रियों का मासिक धर्म।

रजोयणो—*(ना०)* जैन साधु की पूंजणी। रजोहरण। ओघो।

रजोहरण—*दे०* रजोयणो।

रज्जियो—*(ना०)* १. राजा। राजन्। २. स्वामी। मालिक। धणी। *(क्रि०भू०)* १. शोभित हुआ। २. संतुष्ट।

रज्जु—*(ना०)* १. रस्सी। डोरी। २. बागडोर।

रट—*(ना०)* बार-बार ईश्वर के नाम, शब्द, पद आदि बोलने या कंठाग्र करने की क्रिया।

रटण —*(ना०)* १. जीभ । २. रटने की क्रिया या भाव । रटन ।

रटणो – *(क्रि०)* १. कंठस्थ करने के लिये बार बार पढ़ना । रटना । २. कोई शब्द या बात बार बार कहना । ३. रोना । ४. कहना । ५. बोलना ।

रटंत—*(ना०)* रटने की क्रिया या भाव । रटाई ।

रड़कणो—दे० रिड़कणो ।

रडणो—*(क्रि०)* १. बैठे-बैठे गिर जाना । २. दूध का खोल कर गाढ़ा होना ।

रड़णो—*(क्रि०)* १. रोना । रुदन करना । २. लड़ना ।

रड़वड़—*(न०)* अवारागर्दी करने की क्रिया । अवारागर्दी ।

रड़वड़णो—*(क्रि०)* १. भटकना । भटकते फिरना । **रखड़णो** ।

रड़बो—*(न०)* बूढ़ा ऊँट । **सींदड़ो** ।

रड़ा-रड़ी—*(ना०)* रोना-धोना ।

रड़ी—*(ना०)* १. ऊँची पहाड़ी जगह । पहाड़ी जमीन । २. फैली हुई छोटी पहाड़ी । **टेकरी** । **रिड़ी** ।

रड़ो—*(न०)* छोटा पहाड़ । **टेकरो** । **रिड़ी** ।

रढ—*(ना०)* १. हठ । जिद । **रंढ** । २. अभिमान । ३. लगन । लगाव । कष्ट ; *(वि०)* १. दृढ़ । मजबूत । २. बलवान ।

रढराण—*(न०)* प्रतिज्ञापालन के लिये प्राण त्याग करने वाला वीर पुरुष । मरणान्त प्रतिज्ञा नहीं तोड़ने वाला । **रढरावण** । *(वि०)* १. रावण के समान हठ करने वाला । २. महाजिद्दी । दुराग्रही । ३. महाबली । ४. वीर ।

रढरावण—दे० रढराण ।

रढाळो—*(वि०)* १. जिद्दी । हठी । २. वीर । १. अभिमानी । **रढी** ।

रढी—*(वि०)* १. हठी । जिद्दी । **रढीलो** । २. अभिमानी । ३. वीर । **रढाळो** ।

रढीलो—दे० रढी ।

रण—*(न०)* १. युद्ध । २. निर्जन ऊसर भूमि । ऊसर प्रदेश । ३. रेतीला प्रदेश । ४. खुला मैदान । ५. रणक्षेत्र ।

रणक—दे० रणको ।

रणकणो—*(क्रि०)* १. टक्कर लगने से धातु पात्र का आवाज करना । २. भैंस या पाडे का बोलना । ३. पायल का बजना । ४. घंटे के बजने की ध्वनि होना । ५. रटना ।

रणकभवन—दे० रणतभँवर ।

रणकार—दे० रणंकार ।

रणकारो—दे० रणको ।

रण-कालो—*(वि०)* युद्धोन्मत्त । **रण-गैलो** ।

रणकावणो—*(क्रि०)* १. धातुपात्र को टकरा कर उसमें आवाज करना । २. घंटा बजाना ।

रणको—*(न०)* १. धातुपात्र के टकराने का शब्द । २. घंटा बजने के बाद कंपित रहने वाली ध्वनि । **रणकारो** । **झणकार** । ३. याद । ४. पायल की झनकार । ५. शस्त्रों के परस्पर टकराने की ध्वनि ।

रणक्षेत्र—दे० रणखेत ।

रणखेत—*(न०)* रणक्षेत्र । युद्धभूमि । लड़ाई का मैदान ।

रण गळियार—*(वि०)* रणरसिक । रणोन्मत्त । **रण-गैलो** ।

रण-गहलो—दे० रण-गैलो ।

रण-गीत—*(न०)* शौर्य-गीत । सिंधु-राग का गीत । **कड़खो** ।

रणगैलो—*(वि०)* रणोन्मत्त । **रण-कालो** ।

रणचंडी—*(ना०)* १. युद्धदेवी । २. वीरांगना ।

रणछोड़—*(न०)* १. श्रीकृष्ण का एक नाम । (यह नाम उस समय पड़ा जब वे जरासंध के आक्रमणों से बचने के लिए *रणक्षेत्र छोड़कर. मथुरा से द्वारिका* चले गये थे ।)

रणछोड़राय—*(न०)* १. श्रीकृष्ण । २. द्वारिका और डाकोर के प्रसिद्ध तीर्थ-मंदिरों में प्रतिष्ठित श्री भगवत् स्वरूप का नाम ।

रणजाग—दे० रणयज्ञ ।

रणजीत—*(वि०)* युद्ध में जीतने वाला । युद्ध विजयी ।

रणझण—*(ना०)* घुंघुरू की झनकार ।

रणझणो—*(क्रि०)* पायल या घुंघरुओं की ध्वनि होना ।

रणझीक—*(ना०)* शस्त्रास्त्रों की झड़ी ।

रणतभंवर—*(न०)* १. विवाह के गीतों में माना गया तथा गाया जाने वाला विनायक (श्री गजानन) का निवास स्थान । रणथंभोर । २. रणथंभोर नगर का लोकगीत नाम ।

रणताळ—*(न०)* १. युद्ध । २. घोरयुद्ध । ३. शस्त्रों के प्रहार । ४. शस्त्रास्त्रों की झड़ी । ५. मारपीट । लड़ाई-झगड़ा । ६. रणतूर ।

रणतूर—*(न०)* १. युद्ध का एक वाद्य । २. तुरही ।

रण-थट्ट—*(न०)* सेना ।

रणथळी—दे० रणस्थली ।

रण-थंभ—*(न०)* १. रण में स्तंभरूप । २. रण में पीछे पाँव नहीं धरने वाला । वीर पुरुष । युद्ध में अडिग रहने वाला । ३. रणाग्रणी । ४. युद्ध की जीत का स्मरणस्तंभ । ५. युद्ध स्मारक ।

रण-थंभण—*(वि०)* योद्धा । वीर । **रणथंभ** ।

रणथंभोर—*(न०)* राजस्थान का एक प्रसिद्ध *ऐतिहासिक नगर । महावीर हम्मीर* की राजधानी । दे० रणतभँवर संख्या १ ।

रण-दुंदुभी—*(न०)* युद्ध का बाजा । युद्ध का नगाड़ा । **मारूढोल** ।

रण-देवता—*(न०)* युद्ध देवता । **रिकब** ।

रण-द्वीप—*(न०)* रेगिस्तान में पानी और हरियाली वाली जगह । मरुदेश में हरियाली भूमि । शाद्वल स्थान । रणोद्यान । नखलिस्तान ।

रण-धीर—*(वि०)* युद्ध में अडिग रहने वाला ।

रण-बंका राठोड़—*(न०)* १. मारवाड़ के राठौड़ राजाओं का विरुद । २. राठौड़ों का मुद्रालेख ।

रण-बंको—*(न०)* युद्धवीर । योद्धा । *(वि०)* रणकुशल ।

रण-भंवर—*(वि०)* युद्धोन्मत्त ।

रण-भूमि—*(ना०)* युद्धक्षेत्र । **रणथळी** ।

रण-भेरी—*(ना०)* एक रणवाद्य ।

रण-मत्त—*(वि०)* रणोन्मत्त । *(न०)* हाथी ।

रण-मल्ल—*(न०)* वीर । सुभट ।

रण-यज्ञ—*(न०)* युद्ध रूपी यज्ञ । **रणजाग** ।

रण-रसियो—*(वि०)* रणरसिक ।

रण-रंग—*(न०)* रणोत्साह । युद्ध की उमंग ।

रण-राग—दे० रणगीत ।

रण-रीझल—*(वि०)* १. रणरसिक । २. रणोन्मत्त ।

रण-रीढ—*(वि०)* जोरावर । बहादुर ।

रण-रूह—*(वि०)* रणोत्साह ।

रण-रोळ—*(न०)* १. युद्ध जनित विनाश । २. युद्ध का कोलाहल । रणरोर ।

रण-रोही—*(ना०)* १. युद्धक्षेत्र । २. जंगल । वन । ३. दे० रणोही ।

रणवट—*(न०)* १. युद्धक्षेत्र । २. रण कुशलता । ३. युद्धक्षेत्र में योद्धा का धर्म । टेक । ४. रणमार्ग । **रणवाट** । ५. वीरता । बहादुरी ।

रण-वाउळो—दे० रणवावळो ।

रण-वाट—दे० रणवट ।

रण-वाद्य—*(न०)* युद्ध का बाजा । **रणसींगो** ।

रणवावळो—*(वि०)* रणोन्मत्त । युद्धोन्मत्ता । **रणगहलो** ।

रणवास—*(न०)* १. रानियों के रहने का महल । अंतःपुर । रनिवास । २. रानी । ३. रानियाँ ।

रण-शूर—*(न०)* युद्धवीर ।

रण-शैया—*(ना०)* रण क्षेत्र रूपी शय्या । युद्ध में मरना ।

रण संग्राम—*(न०)* १. बड़ा युद्ध । २. रणभूमि ।

रणसींगो—*(न०)* १. एक फूंक वाद्य । २. एक रणवाद्य । ३. एक सींग वाद्य ।

रणस्थली—*(ना०)* रणभूमि ।

रण-हाक—*(ना०)* १. युद्धगर्जन । २. युद्ध-निमंत्रण ।

रणंकार—*(न०)* १. राम नाम की अनवरत रटन । २. लगातार रामनाम रटने से होने वाला शब्द । राम नाम की ध्वनि । ३. समाधिस्थ योगियों के ब्रह्मरंध्र में होने वाली एक अनिवर्चनीय ध्वनि । ४. शून्य स्थान । ५. रेगिस्तान । **रण** । सुनसान स्थान । ६. घंट बजने की या धातुपात्र के टकराने की ध्वनि । झनकार । गुंजार । **रणकार** ।

रणांगण—*(न०)* युद्धक्षेत्र । **रणस्थली** ।

रणी—*(वि०)* १. वीर । २. योद्धा ।

रणो—*(न०)* १. ऋण । कर्ज । २. **राणो** । राजा । ३. जंगल ।

रणोई—दे० रणोही ।

रणोही—*(ना०)* [रण = युद्ध + रोही = जंगल । दोनों का द्विरुक्त घृष्ट रूप] १. मैदान। २. जंगल । ३. रण (युद्ध) के कारण उजड़ा हुआ स्थल या प्रदेश । ४. युद्ध चीत्कार । ५. युद्ध कोलाहल । रण-ध्वनि । ६. भूतों का स्थान । प्रेतावास । ७. भूतावली । **भूतावळ** । भूतों की क्रीड़ा । प्रेतलीला । ८. अंधेरी रात में रेगिस्तानी जंगलों में चलता हुआ दिखाई देने वाला प्रकाश । प्रेतपावक । ९. अंधेरी रात में श्मशान की हड्डियों में दिखाई देने वाला प्रकाश । हवा लगने से दिखाई देने वाला हड्डियों के फॉसफरस का प्रकाश । लुक । १०. श्मशान, रणस्थली और जंगलादि शून्य स्थानों में दिखाई देने वाली (उक्त दोनों प्रकार की प्रेतपावक के कारण लोक में मान्यता प्राप्त एक प्रकार की प्रसिद्ध) कल्पित प्रेत-लीला । ११. **मामाजी की हींड** । दे० हींड ।

रत—*(न०)* १. रक्त । रुधिर । २. रति । मैथुन । ३. प्रेम । ४. लिंग । ५. योनि । ६. रात । *(वि०)* १. लीन । लिप्त । २. आसक्त । अनुरक्त । ३. लाल । रक्त । ४. युक्त ।

रतकील—*(न०)* कुत्ता । श्वान । कूतरो ।

रतखाळ—*(न०)* खून का नाला ।

रतग—*(ना०)* कोयल ।

रतचंदण—*(न०)* रक्तचंदन ।

रतजगो—*(न०)* १. रात्रि जागरण । २. रात्रि को जगते रहने की क्रिया या भाव । **रातीजोगो** ।

रतन—*(न०)* १. कन्या । कन्यारत्न । २. **आंख** । ३. आंख की पुतली । तारा । ४. घृत । घी । ५. चंद्रमा । ६. तारा । नक्षत्र । ७. अमृत । पीयूष । ८. शंख । ९. एक छंद । १०. रत्न । ११. रत्न के समान उत्तम पुरुष । *(वि०)* उत्तम । श्रेष्ठ ।

रतनजोत—*(ना०)* १. एक वनस्पति । २. *काष्ठ औषधि विशेष ।*

रतन-पारखी—*(न०)* जौहरी । रत्न-परीक्षक । **रतपारखू । जंवरी** ।

रतन-पारखू—दे० रतनपारखी ।

रतन-पेच—*(न०)* सिरपेच ।

रतन महेसदासोत री वचनिका—*(ना०)* खिडिया जगा द्वारा रचित रतलाम के राठौड़ रतनसिंह का धरमत युद्ध और उसकी वीरता के वर्णन का प्रसिद्ध डिंगल काव्य ग्रन्थ ।

रतन-राणो—*(न०)* उमरकोट के सोढ़ा राणा रत्नसिंह का एक लोकगीत । २. राणा रत्नसिंह ।

रतन-रासो—*(न०)* कवि कुंभकरण सांदू कृत प्रसिद्ध डिंगल काव्य ग्रंथ ।

रतनवेल—*(ना०)* १. एक वनस्पति । २. कन्या ।

रतनशाही—*(न०)* बीकानेर के राजा रतनसिंह द्वारा प्रवर्तित (सिक्का) ।

रतनाकर—दे० रतनागर ।

रतनागर—*(न०)* १. रत्नाकर समुद्र । २. समुद्र । ३. रत्नों की खान ।

रतनार—*(वि०)* १. लाल । रक्तिमा । २. रत्न के समान ।

रतने वहवार—*(न०)* १. कन्या देने लेने का वैवाहिक व्यवहार । जिसके यहाँ से कन्या को लाने या जिसके यहाँ कन्या को विवाहने का कोई सामाजिक प्रतिबंध न हो । २. वैवाहिक संबंध । वेवाहीपणो । **३. सगावळ** ।

रतफळ—*(न०)* वृक्ष । बड़ । वट ।

रतल—*(न०)* एक तौल जो लगभग आधे सेर की होती है । ३९ तोलों का *बटखरा । २. रतल भर कोई वस्तु ।*

रतवा—*(न०)* १. रक्तविकार से होने वाला एक चर्म रोग । २. गेहूं के फसल का एक रोग । मेरू ।

रतंबर—*(न०)* १. आकाश की ललाई । २. लाल आकाश । रक्ताम्बर । ३. ललाई । लाली ।

रताळू—*(न०)* एक कंद ।

रतास—*(ना०)* ललाई । लाली । **रातास** ।

रतांधळो—*(वि०)* वह जिसको रात को नहीं दिखता । रात्र्यंध । **रतांधो** ।

रतांधो—दे० रतांधळो ।

रति—*(ना०)* १. मैथुन । सुरत । काम-कीड़ा । संभोग । २. आनंद । प्रीति । ३. आसक्ति । अनुराग । ४. कामदेव की स्त्री । ५. साहित्य में शृंगार रस का स्थायीभाव । ६. सौभाग्य । ७. काम वासना ।

रतिकेळि—दे० रतिक्रीड़ा ।

रतिक्रिया—*(ना०)* संभोग । मैथुन । **रतिकेळि** ।

रतिक्रीड़ा—दे० रतिक्रिया ।

रतिनाह—*(ना०)* कामदेव । **रतिपति** ।

रतिपति—*(ना०)* कामदेव । **रतिनाह** ।

रतिभाव—*(ना०)* १. शृंगार रस का स्थायीभाव । २. प्रेम ।

रतियाव—दे० रातीवाहो ।

रतिरास—*(ना०)* रतिक्रीड़ा ।

रतिवंत—दे० रतिवान ।

रतिवान—दे० रतीवान ।

रतिवै—*(ना०)* रतिपति । कामदेव ।

रतिशास्त्र—*(ना०)* कामशास्त्र ।

रती—*(ना०)* १. बुद्धि । २. कांति । तेज । ३. सौंदर्य । शोभा । ४. एक माशे के आठवाँ भाग का एक तौल । एक गुंजा जितना वजन । ५. एक माशे का आठवाँ भाग । ६. बल । शक्ति । दे० रति ।

रतीभर—*(वि०)* १. रती जितना । गुंजा जितना । २. गुंजा के बराबर तौल का । ३. बहुत थोड़ा । जरासा ।

रतीवान—*(वि०)* १. बुद्धिमान । २. कांतिवान । तेजस्वी । ३. भाग्यशाली । सौभाग्यशाली । ४. सुंदर । मनोहर । ५. शक्तिशाली । ६. बलवान । **रतीवाळो** ।

रतीवाळो—दे० रतीवान ।

रतुंबड़ो—दे० रतूमड़ो ।

रतूमड़ो—*(वि०)* १. लाल रंग वाला । ललाई वाला । २. वह जिसमें लाल रंग भी हो ।

रतो—*(वि०)* रत । अनुरक्त ।

रत्तड़ी—*(ना०)* रात । रात्रि । *(वि०)* रक्त वर्ण की । लाल । **राती** ।

रतड़ो—*(वि०)* लाल । **रातो** ।

रत्ती—दे० रती ।

रत्तो—*(वि०)* १. अनुरक्त । आसक्त । २. लाल । रातो ।

रत्न—*(ना०)* १. बहुमूल्य पत्थर । जवाहर । मणि । २. प्रत्येक जाति में उत्कृष्ट वस्तु । ३. समुद्र मंथन के समय निकली हुई चौदह वस्तुओं में से प्रत्येक । ४. रत्न के समान उत्तम पुरुष । **नररत्न** । ५. चौदह की संख्या । दे० रतन ।

रत्नगर्भा—*(ना०)* पृथ्वी ।

रत्नजड़ित—*(वि०)* रत्नों से जड़ा हुआ ।

रत्नपरीक्षक—*(ना०)* जौहरी । **रतनपारखी** ।

रत्नपारखी—*(ना०)* जौहरी । **रतनपारखू** ।

रत्नाकर—*(ना०)* १. रत्नों की खान । २. एक समुद्र का नाम । ३. समुद्र ।

रत्याव—*(ना०)* रात का डाका । **रातीवाहो** ।

रत्र—*(ना०)* १. रक्त । खून । **लोही** । २. रात्रि ।

रथ—*(ना०)* एक वाहन । बहल । स्यंदन ।

रथकार—*(ना०)* १. रथ बनाने वाला । २. बढ़ाई । **खाती** । **वणाक** ।

रथजात्रा—*(ना०)* आषाढ, शुक्ला द्वितिया का उत्सव जिस दिन जगन्नाथ बलराम और सुभद्रा की रथ में सवारी निकाली जाती है । **रथजात्रा** ।

रथयात्रा—दे० रथजात्रा ।

रथवाह—*(ना०)* घोड़ा । अश्व ।

रथवान—*(ना०)* रथ चलाने वाला । रथी ।

रथांग—*(न०)* १. रथ का पहिया। २. चक्र। ३. विष्णु का चक्र। ४. रथ का कोई भाग।

रथाँगपाणि—*(न०)* १. हाथ में चक्र धारण करने वाले श्री कृष्ण।

रथी—*(न०)* १. सारथी। रथवान। २. रथ का सवार। ३ रथ में बैठ कर लड़ने वाला योद्धा। ४. सहस्र योद्धाओं से अकेला लड़ने वाला योद्धा। ५. चिता। ५. अरथी। सीढ़ी।

रथी-अरण—*(न०)* सूर्य। रवि।

रद—*(वि०)* १. रद्दी। निकम्मा। २. खराब। नष्ट। *(न०)* १. दाँत। २. हाथी दाँत।

रदन—*(न०)* १. दाँत। २. दाँत पंक्ति।

रदनोरी—*(ना०)* १. गृहलक्ष्मी। २. पत्नी। स्त्री।

रदछदन—*(न०)* ओंठ। रदच्छद। होंठ। अधर। होठ। रदछद।

रदनछद—दे० रदछदन।

रदी—*(न०)* हाथी।

रद्द—*(न०)* १. रद्दी। निकम्मा। २. खराब। नष्ट। ३. खारिज।

रद्दी—*(वि०)* १. निकम्मा। व्यर्थ। बेकार। २. खराब। हलका। *(न०)* पुराने और काम में नहीं आने वाले कागज।

रद्दो—*(न०)* १. वह थाळ जिसमें मिठाई चिनकर रखी जाती है। २. दीवार पर चिनी जाने वाली ईंटों की एक पंक्ति। थर। ३. चिनी हुई मिठाइयों का स्तर।

रदोबदळ—*(न०)* परिवर्तन।

रन-रोही—*(ना०)* १. सूना जंगल। जंगल। रणरोही। २. युद्धक्षेत्र।

रनी—*(ना०)* १. वन। जंगल। २. वीर। योद्धा।

रनेत—*(न०)* भाला।

रन्नादे—दे० राणल।

रपचूताणी—दे० रजपूताणा।

रपट—*(ना०)* १. रिपोर्ट। सूचना। २. फिसलना। ३. उतार। ढलाव।

रपटणो—*(क्रि०)* फिसलना।

रपसूताणी—दे० रजपूताणी।

रफ—*(वि०)* १. जो ओपवाला न हो। जिस पर पॉलिस नहीं की गई हो। खुरदरा। २. मसौदे का रूप। *(न०)* मसौदा।

रफत—*(ना०)* १. रफ्त। आदत। अभ्यास। रब्त। २. संबंध। लगाव। ३. मेल-जोल। ४. मुहावरा। आदत।

रफते-रफते—*(अव्य०)* धीरे-धीरे। रफ्ता-रफ्ता।

रफा—*(वि०)* १. समाप्त। २. दूर किया हुआ। ३. मिटाया हुआ।

रफतार—*(ना०)* १. रफ्तार। चाल। गति। २. ढंग। तरीका। ३. वेग। ४. हालत। दशा।

रफादफा—*(न०)* १. मिटाया हुआ। २. दूर किया हुआ। शांत किया हुआ।

रफू—*(न०)* फटे कटे कपड़े को तागे की बुनावट से ठीक करने का काम। तुनन। *(वि०)* १. गायब। लुप्त। २. पलायन किया हुआ।

रफूचक्कर—*(वि०)* १. गायब। लुप्त। २. पलायन किया हुआ। *(न०)* भाग जाने की क्रिया या भाव।

रफे-दफे—*(वि०)* १. शांत किया गया। दबाया गया। २. दूर किया गया। निवारित। ३. अस्तव्यस्त। छिन्न-भिन्न। ४. साफ। ५. अदृश।

रब—*(न०)* ईश्वर। परमेश्वर। खुदा। मालिक।

रबड़—*(न०)* एक वृक्ष के दूध का बनने वाला लचीला पदार्थ। रबर।

रबड़ी—*(ना०)* औटा कर गाढ़ा और लच्छेदार बनाया हुआ दूध। मीठा डालकर औटाया हुआ दूध। बसौंधी।

रबसूताणी—दे० रपसूताणी।

रबाब—*(न०)* एक तंतु वाद्य। सारंगी जैसा एक बाजा।

रबाबी—*(न०)* रबाब बजाने वाला।

रबारण—*(ना०)* १. रबारी की स्त्री। २. रबारी जाति की स्त्री। **रैबारण**।

रबारी—*(न०)* भेड़ बकरी तथा ऊँटों को चराने वाली एव इनको खरीदने-बेचने तथा इनकी ऊन और जट का व्यवसाय करने वाली जाति का पुरुष। गडरिया।

रबी—*(ना०)* १. वसंत ऋतु। २. वसंत ऋतु में काटी जाने वाली फसल।

रभस—*(न०)* १. रहस्य २. पश्चाताप। ३. उत्सुकता। ४. हर्ष। ५. शीघ्रता। उतावळ।

रम—*(वि०)* १. सुन्दर। २. मनोरंजक। *(ना०)* एक विलायती शराब।

रमक—*(ना०)* ध्वनि। झनकार।

रमकझमक—*(ना०)* १. नृत्य। नाच। २. नृत्य का एक प्रकार। ३. रुमझुम करते हुये लटके से चलना।

रमकड़ो—*(न०)* खिलौना। रमतियो। रामेकड़ो।

रमकीलो—*(वि०)* छैला। छबीला।

रमची—दे० रमजी।

रमजान—*(न०)* हिजरी सन् का नौवाँ महीना। रोजों का महीना।

रमची—*(ना०)* एक प्रकार की लाल मिट्टी। रजमी। रमची।

रमझोळ—*(ना०)* १. नूपुर। झाँझर। २. नूपुरध्वनि। ३. नाचना-कूदना, हँसना-खेलना आदि मनोरंजन।

रमझोळी—*(न०)* साथ में काम करने या खेलने वाला। हमजोली।

रमण—*(न०)* १. प्रेमी। २. पति। कांत। ३ विलास। क्रीड़ा। ४. भ्रमण। विहार। ५. मैथुन।

रमणियो—*(वि०)* खिलाड़ी। रमाकू। दे० रमणो।

रमणी—*(ना०)* १. सुन्दर स्त्री। २. स्त्री। ३. साधु का शौचार्थ दूर जंगल में जाना। ४. साधु की यात्रा। *(वि०)* सुन्दर। मनोहर।

रमणीक—*(वि०)* सुन्दर। मनोहर। रमणीय।

रमणीय—दे० रमणीक।

रमणो—*(न०)* जीने की सबसे ऊपर की पैड़ी जो अपेक्षाकृत बड़ी और चौरस होती है। २. दो ओर जाने वाली पैड़ी का बीच का बड़ा और चौरस पगथिया। ३. बारसाख (बारसोत) के नीचे का पत्थर। ४. कोई गोल वस्तु। ५. लुढ़कने वाली कोई वस्तु। ६. शिकार की जगह। ७. खिलौना। रमकड़ो। रामतियो। ८. मैदान। ९. जंगल। १० ऊंचा स्थान। *(क्रि०)* १. खेलना। रमना। २. डंडियों (चिटियों) की गेहर नाचना। ३. स्त्रियों का लूहर

खेलना। लूहर गाते हुए नाचना। ४. रमण करना। आनन्द करना। ५. रवाना होना। चला जाना। ६. प्रभु का प्रस्थान करना। ७. तमाशा, रमत या खेल करना। ८. काम क्रीड़ा करना। ९. किसी बात का ग्रह या याददाश्त में सतत बने रहना। १०. दाँव खेलना (चौपड़, शतरंज आदि का)। ११. पैंतरा खेलना। चाल करना। युक्ति करना। १२. मरना। स्वर्ग को जाना। १३. युद्ध करना। १४. समा जाना। १५. एकमेक हो जाना। घुल जाना। १६. व्याप्त होना। १७. लीन होना।

रमत—*(ना०)* १. लोकनाट्य। खुला नाटक। अभिनय। खेल। स्यांग। तमाशा। रामत। २. खेलने की कोई रीति (कबड्डी, गिल्लीडंडा, शतरंज, ताश आदि) ३. हँसी मजाक। विनोद।

रमत-गमत—*(ना०)* १. हँसी-मजाक। परिहास। कौतूहल। २. खेल-क्रीड़ा।

रमताराम—*(ना०)* १. एक जगह टिक कर नहीं रहने वाला। जो बराबर घूमता फिरता हो। २. साधु। भमताराम।

रमतियाळ—*(वि०)* १. खेलने में ही चित्त रखने वाला। २. खिलाड़ी। रमाक। ३. मजाकी।

रमतियो—*(ना०)* १. खिलौना। रमकड़ो। २. योनि। भग (व्यंग्य में)।

रमतो—*(वि०)* १. जो शरीर में तंग नहीं। ढीला (वस्त्रादि) २. बंधन रहित। जो घूमता-फिरता रहता हो।

रमळ—*(ना०)* पासे फेंक कर भविष्य बताने वाली विद्या। रमलविद्या।

रमा—*(ना०)* १. लक्ष्मी। २. सुन्दर स्त्री। ३. पत्नी।

रमाक—*(वि०)* १. खिलाड़ी। खेलने वाला। खेलाड़ी। रमणियो। रमाकू। २. निपुण। खिलाड़ी।

रमाकड़—दे० रमाकण।

रमाकड़ो—दे० रमाक।

रमाकांत—*(ना०)* विष्णु। रमापति।

रमाकू—दे० रमाक।

रमाज—*(ना०)* भेड़िया। लकड़बग्घा।

रमाड़णो—*(क्रि०)* १. खिलाना। रमाणो। हमाणो। २. मौका देना। ३. फुसलाना। ४. मौज कराना।

रमाणो—दे० रमाड़णो।

रमाद—*(ना०)* कुबेर।

रमापति—*(ना०)* विष्णु।

रमावणो—दे० रमाड़णो।

रमेकड़ो—दे० रमकड़ो।

रमैणी—*(ना०)* कबीर के बीजक का एक अंश। रमैनी।

रम्य—*(वि०)* सुन्दर। मनोहर।

रय—*(ना०)* १. रज। दे० रै सं० १,२,३।

रयण—*(ना०)* १. रात्रि। रजनी। रात। २. रत्न। जवाहरात। ३. राजा। ४. समुद्र। ५. भूमि। पृथ्वी।

रयणी—*(ना०)* रात्रि।

रय्यत—*(ना०)* प्रजा।

रया—*(ना०)* प्रजा।

रयो-सयो—*(वि०)* शेष। बाकी। अवशिष्ट। रहा-सहा।

ररंकार—*(ना०)* १. राम नाम की सतत। रटन। २ राम नाम की ध्वनि।

ररो—दे० ररों।

ररों—*(न०)* १. 'र' अक्षर। रकार। २. राम नाम का प्रथम अक्षर।

रळकणो—*(क्रि०)* १. गोल वस्तु का लुढ़कना। २. छाज में डालकर हिलाना। ३. प्रस्थान करना।

रळकाणो—दे० रळकावणो।

रळकावणो—*(क्रि०)* १. अनाज आदि को छाज में डालकर हिलाना। २. लुढ़काना।

रळको—*(न०)* १. बहाव। धारा। २. गोबर की पतली लिपाई। ३. जाव को दूसरी बार सींचना।

रळणो—*(क्रि०)* १. हिलना-मिलना। २. हिलमिल कर रहना। ३. प्राप्त करना। मिलना। ४. एक वस्तु का दूसरी में मिल जाना। सामिल हो जाना। ५. बिखरना। फैलना। ६. बरसना। ७ पड़ना। दे० रुळणो।

रळतळी—*(ना०)* प्रसिद्ध वीर ऊदा गोगादेओत की तलवार का नाम।

रळतळणो—*(क्रि०)* १. अधिक मात्रा में बहना। २. लथपथ होना। ३. भटकना। ४. दुखी होना। ५. फिसलना।

रळपट—दे० रुळपट।

रळमिळणो—*(न०)* १. हिलना-मिलना। २. एकमेक हो जाना। ३. मिलकर रहना। प्रेम पूर्वक हिल-मिल कर रहना।

रळमिळ-नै—*(अव्य०)* हिल मिल कर। मिल करके।

रळाणो—*(क्रि०)* १. मिलाना। सम्मिलित करना। २. एकमेक करना। ३. छाज में हिलाना। रळावणो।

रळाबोळी—*(न०)* शोरगुल। होहल्ला। रोला। रोळो।

रळावणो—*(क्रि०)* दे० रळाणो।

रळाँ—दे० रळी सं. ५।

रळियामणो—*(वि०)* १. मनोहर। सुन्दर। २. श्रेष्ठ। ३. मधुर। प्रिय।

रळियायत—*(वि०)* प्रसन्न। खुश। *(न०)* १. प्यार। प्रेम। लाड। रळियायत। २. उत्सव।

रळियावत—दे० रळियायत।

रळियो-मिळियो—*(वि०)* १. हिला-मिला। २. मिला हुआ।

रळी—*(ना०)* १. सुख। आनंद। २. मन की उमंग। उमंग। कोड। ३. अभिलाषा। इच्छा। हूंस। ४ क्रीड़ा। खेल। ५. संभोग। ६. प्रसन्नता। खुशी। हर्ष। ७. याद।

रळी-रंग—*(न०)* १. उत्सव। २. खुशियाँ। रंग-रळी।

रव—*(ना०)* १. शब्द। ध्वनि। २. झुंजार। ध्वनि। ३. पायल घुंघरू आदि की मीठी ध्वनि। ४. रवि। सूर्य। ५. गति। ६. शोर। कोलाहल। ७. बहुत छोटा टुकड़ा। रवो।

रवगा *(ना०)* नदी।

रवण—*(न०)* १. शब्द। ध्वनि। २. काँसा नामक धातु। काँसी। ३. कोयल। ४. ऊँट। ५. रमण। क्रीड़ा। *(वि०)* १. चंचल। २. ध्वनि करने वाला।

रवणो—*(क्रि०)* १. ध्वनि होना। २. आवाज करना। ३. बोलना।

रवणक—*(ना०)* १. रौनक। शोभा। २. शब्द। ध्वनि। ३. ऊँट।

रवताई—दे० रावताई।

रवताळ—*(अव्य०)* १. तत्काल। तुरंत। एकदम। झटपट। २. शूरवीर। वीर। *(वि०)* उतावला।

रवताळो—*(वि०)* १. वीर। बहादुर। शूर-वीर। २. उतावला। *(अव्य०)* तत्काल। तुरंत।

रवद—*(न०)* मुसलमान। यवन।

रवदाण—दे० रवदाळ।

रवदाळ—*(न०)* १. यवन समूह। **रवदाण**। २. यवन सेना। ३. यवन। मुसलमान।

रवदांराव—*(न०)* बादशाह।

रवन्नो—*(न०)* १. माल व जकात महकमे का वह आज्ञापत्र (निकास चिट्ठी) जिससे किसी माल को (महसूल भरने के बाद) बाहर भेजने का अधिकार मिलता है। रवानो। २ वह पत्र जिस पर भेजे हुए माल का ब्योरा होता है। **रवानो**।

रव-सुत—*(न०)* यमराज। यम। रविसुत। **जम**।

र-वा—*(ना०)* १. कृपा। २. रियायत। ३. इच्छा।

र-वाज—दे० रिवाज।

र-वाजी—*(वि०)* १. सोने चाँदी में खोट मिली हुई (वस्तु)। २ काम चलाऊ। ३. रिवाज के अनुसार।

रवात—*(ना०)* १. रवायत। रिआयत। छूटछाट। २ कृपा। मेहरबानी। ३. कहानी।

रवादार—*(वि०)* दानेदार।

रवानगी—*(ना०)* विदाई। प्रस्थान।

रवाना—*(न०)* प्रस्थान। विदाई। *(वि०)* १. जो कहीं भेजा गया हो। प्रस्थित। २. भेजा हुआ। प्रेषित। ३. विदा किया हुआ।

रवानो—दे० रवन्नो।

रवाळ—*(न०ब०व०)* १. बहुत बारीक रवे। किसी धातु के बहुत बारीक गोल-गोल दाने (प्रायः सोना चाँदी के)। २. घोड़े, बैल आदि की एक सरखी चाल। ३. एक प्रकार की चाल।

रवि—*(न०)* १. सूर्य। सूरज।

रवि-जा—*(ना०)* यमुना नदी।

रवि-तनया—*(ना०)* यमुना नदी।

रवि-नामो—*(न०)* वैभव। ऐश्वर्य।

रवि-वार—*(न०)* अदीतवार। शनिवार के बाद का दिन। **सूरजवार**।

रवी—*(ना०)* १. पेय-मिष्टान्न। २. मिश्री, घी और आटे को उबाल कर बीमार के लिये बनाया हुआ पाचक और पौष्टिक पेय। ३. सूर्य। रवि।

रवेज—*(न०)* रिवाज। प्रथा। **धारो**।

रवेस—*(न०)* १. झरोखा। गवाक्ष। २. बाग में क्यारियों के बीच बना मार्ग। ३. गति। चाल। ४. ढंग। *(वि०)* प्रिय। दे० रवेज।

रवो—*(न०)* १. छोटा गोल दाना। (प्रायः सोना-चाँदी का) २. दानेदार आटा। ३. आटे में गरम पानी और घी मिला कर बनाया हुआ दाना। ४. गुड़ का चक्का। **भेली**। ५. कोर-गोटा लगाया हुआ गुलाबी या लालरंग का स्त्रियों का बहुमूल्य रेशमी ओढ़ना। ६. हलवा बनाने का गेहूँ का दलिया। सूजी।

रश्मि—*(ना०)* किरण। ज्योत्स्ना।

रस—*(न०)* १. स्वाद २. भोजन करनेपहले (मधुर अम्ल, कटु, लवण, कषाय, तिक्त)। ३. छः की संख्या। ४ खाये हुये अन्न का प्रथम परिणाम। ५. सार। ६. साहित्य के नौ रस (शृंगार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, भयानक, बीभत्स, अद्भुत, शांत)

७. नौ की संख्या। ८. आनन्द। ९. प्रेम। स्नेह। १०. इच्छा। ११ तरल पदार्थ। १२. फलों का जलीय अंश। १३. वृक्ष का निर्यास। १४. पारा। १५. रस औषधि। धातु भस्म। १६. वीर्य। १७. वश। अधिकार। १८. सम्बन्ध। १९. लाभ। हित। २०. सुख का अनुभव। २१. कामक्रीड़ा। २२. गुण। २३. भाँति। तरह। २४. शरबत। २५. गन्ने का रस। २६. दूध। २७. विष। २८. रस वस्तु। (गुड़, चीनी, नमक आदि) २९. मद्य। शराब। ३०. ऊंट, घोड़ा आदि का होने वाला एक रोग।

रसक—*(न०)* फिटकड़ी।

रसकपूर—*(न०)* १. सफेद रंग की एक उप धातु। २. पारे को मारकर बनाई हुई एक रसायन।

रस-कस—*(न०)* १. सार। सत्व। कस। २. लाभ। ३. स्थिति (बाजार की तेजी मंदी)। ४. रस वस्तुएँ (गुड़, चीनी, नमक आदि तथा औषधियाँ)। ५. आनंद। मजा।

रस-कूंपी—*(ना०)* सिद्ध महात्माओं के द्वारा उनके प्रसन्न होने पर वरदान रूप में दी जाने वाली एक कल्पित रस-कुप्पिका जिसके रस के स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है।

रस-केलि—*(ना०)* १. कामक्रीड़ा। २. हँसी खेल।

रसगुलो—*(न०)* एक मिठाई। रसगुल्ला।

रसधन—*(न०)* श्रीकृष्ण।

रस-जाणण—*(ना०)* जीभ। जिह्वा।

रस-जेठो—*(न०)* १. शृंगाररस। २. मधुर रस।

रसज्ञ—*(वि०)* १. काव्य अथवा साहित्य के मर्म को समझने वाला। २. काव्य साहित्य, संगीत या शृंगार इत्यादि का आनंद लेने वाला। ३. रस का जानने वाला। ४. निपुण। ५. रसिक।

रसज्ञता—*(ना०)* रसज्ञ होने का भाव।

रसज्ञा—*(ना०)* जीभ।

रसण—*(ना०)* जीभ। रसना।

रसणतर—*(वि०)* १. जीभ रहित। अजिव्हा। २. मूक। अबोलो।

रसणा—*(ना०)* रसना। जिह्वा। जीभ।

रसत—*(ना०)* १. सेना का खाने पीने का सामान। खाने पीने की सामग्री। २. सेना इत्यादि के साथ चलने वाली खाने की सामग्री। रसद। २. एक प्रकार का कर।

रसद—*(वि०)* १. स्वादिष्ट। २. सुखद। ३. कच्चा अनाज। दे० रसत।

रसदार—*(वि०)* १. रसवाला। २. स्वादिष्ट।

रसधर—*(न०)* बादल। मेघ।

रसधातु—*(न०)* १. पारा। २. शरीरस्थ सात धातुएँ।

रसना—*(ना०)* १. जीभ। २. लगाम। ३. कटिमेखला। कंदोरो। करणकती। ४. रस्सी। ५. वाणी। *(वि०)* लाल।

रसपाचक—*(न०)* रसोइया।

रसपूत—दे० रजपूत।

रस-पूरी—*(ना०)* १. एक मिठाई। २. आम्ररस और पूरी।

रसपूर्ण—*(वि०)* १. रस से पूर्ण। रस-पूर्ण। २. मधुर।

रसभरी—*(ना०)* एक पौधा और उसका खट-मीठा फल। रास्पबेरी।

रस-भंग—*(न०)* १. रसक्षति । रस में भंग । ३. आनन्द में विघ्न ।

रस-भीनो—*(वि०)* १. आनंदित । आनंद-मग्न । २. रसयुक्त आनंद से युक्त ।

रसम—दे० रस्म ।

रस-मय—*(वि०)* रस से पूर्ण । मधुर ।

रस-माता—*(ना०)* जीभ ।

रसमि—*(ना०)* १. रश्मि । किरण । २ आभा । चमक । ३. आँख की पलक के बाल । ४. घोड़े की लगाम ।

रस-रहस—*(न०)* १. रस रहस्य । रतिकला । २. काम क्रीड़ा ।

रस-रंग—*(न०)* १. रतिक्रीड़ा । मैथुन । २. प्रेम क्रीड़ा । विहार ।

रसराज—*(न०)* १. शृंगार रस । २. पारा ३. कामदेव । ४. चन्द्रमा । ५. पृथ्वी । ६. शिव ।

रसलीन—*(वि०)* १. विलासी । २. आनंद में लीन रहने वाला ।

रसवंती—दे० रसवंती ।

रसवंत—*(वि०)* १. रसिक । २. रसज्ञ । ३. स्वादिष्ट ।

रसवंती—*(ना०)* १. एक औषधि । रसौत । २. जीभ । ३. रसोई । ४. पृथ्वी । *(वि०)* रस से भरी हुई । रसपूर्ण ।

रसवायो—*(वि०)* जोशीला ।

रस-वाहिनी—*(ना०)* अन्न के रस को शरीर में फैलाने वाली नाड़ी ।

रसविकार—*(न०)* एक रोग । वृषण में रस उतर जाने का रोग । हर्निया ।

रस-विरोध—*(न०)* परस्पर रसों का विरोध (काव्य)

रसशाला—*(ना०)* १. पारा इत्यादि में से औषधियाँ बनाने का कारखाना । २ रसायन प्रयोगशाला ।

रससार—*(न०)* १. मधु । शहद । २. पारा । पारो ।

रसा—*(ना०)* १. पृथ्वी । २. जीभ । ३. अंगूर । ४. आम ।

रसाइण—दे० रसायण ।

रसाई—*(ना०)* १. मेलजोल । मित्रता । २. पहुँच । ३. सन्धि ।

रसा-कसी—*(ना०)* १. खींचातानी । २. अनबन । ३. लड़ाई-झगड़ा ।

रसाण—*(ना०)* रसायन । कीमिया ।

रसातळ—*(न०)* छठवां पाताल । २. अधोगति ।

रसापति—*(न०)* १. राजा । २. विष्णु ।

रसाभास—*(न०)* १. काव्य में अनुचित विषय या स्थान को लक्ष्य करके उत्पन्न किया हुआ रस । २. साहित्य में रस का ऐसे स्थान पर आना, जहाँ उपयुक्त न हो । ३. रस की पूर्ण निष्पत्ति न होने से संबंधित । एक दोष । ४. अमैत्री ।

रसायण—*(ना०)* १. धातु, पारा आदि की भस्मवाली औषधि । रसायन । २. जरा और व्याधि को दूर करने वाली औषधि । ३. ताँबे से सोना बनाने का (कल्पित) योग ।

रसायण शास्त्र—*(न०)* रसायन विज्ञान या रसायन विद्या ।

रसाळ—*(वि०)* १. रसमय । रसीला । *(न०)* १. फल । २. आम । आम्रफल । ३. समस्त फलजाति । ४. सामान्य फल वर्ग । ५. कटहल । ६. गन्ना । ७. गेहूँ । गंदुम ।

रसाळू—*(वि०)* १. प्रेमी । स्नेही । २. रसिक । रसिया । आनन्दी । ३. सुहृदय । रसिक । ४. रसवाला । सरस । रसभरा । *(नं०)* इस नाम के ख्याल (रमैत, तमाशा) का एक नायक ।

रसावळा—*(नं०)* १. डिंगल का एक काव्य रूप कथा—गोगाजी रा रसावळा । २. डिंगल का एक छंद ।

रसिक—*(वि०)* १. काव्य का मर्मज्ञ । रसज्ञ । २. रस का अनुभवी । ३. रस या आनंद देने वाला । ४ रसवाला । ५. भावुक । ६. रसिया ।

रसिकता—*(ना०)* रसिक होने की अवस्था भाव या धर्म । रसियापणो ।

रसिक बिहारी—*(ना०)* १. किशनगढ़ महाराजा सांवतसिंह उपनाम नागरीदास की रानी भक्त कवयित्री बनीठनीजी का उपनाम । २. श्रीकृष्ण ।

रसिका—*((ना०)* १. जीभ । २. रसज्ञ स्त्री । ३. रसीली स्त्री । *(वि०)* १. रसीली । २. सुन्दर ।

रसियापणो—दे० रसिकता ।

रसियो—*(वि०)* १. रसिक । २. रस का उपभोग करने वाला । ३. एक लोक गीत ।

रसी—*(ना०)* मवाद । पीव ।

रसीद—*(ना०)* १. किसी वस्तु के पहुंच जाने या प्राप्त होने की चिट्ठी । पहुँच । पावती । २. प्राप्ति का पत्र ।

रसीले राज—*(नं०)* जोधपुर महाराजा मानसिंह का काव्य नाम ।

रसीलो—*(वि०)* १. रसिक । रसियो । २. भोग-विलास का प्रेमी । ३. रस-वाला । ४. स्वादिष्ट । ५. सुन्दर । ६. कोमल ।

रसूक—*(नं०)* सम्बन्ध ।

रसूम—*(नं०)* १. कानून नियम । २. दावा दायर करते समय दी जानेवाली फीस । कोर्ट फीस । ३ कर राजस्व ।

रसूल—*(नं०)* खुदा के द्वारा पृथ्वी पर भेजा गया दूत । पैगम्बर ।

रसेंद्र—*(नं०)* १. पारा । २. कामदेव । ३. चंद्रमा ।

रसोइयो—दे० रसोयो ।

रसोई—*(ना०)* १. घर का वह स्थान जहाँ भोजन बनाया जाता है । २. पकाई हुई भोजन सामग्री । भोजन । ३. भोजन । जीमण ।

रसोईघर—*(नं०)* पाकशाला । रसोई । रसोवड़ो ।

रसोईदार—दे० रसोयो ।

रसोड़दार—दे० रसोयो ।

रसोड़ो—*(नं०)* रसोईघर । भोजनशाला । रसोई । रंधाणो ।

रसोयण—*(ना०)* १. रसोई करने वाली । २. रसोई करने वाली नौकरानी । रांधण ।

रसोयो—*(नं०)* रसोईदार । रसोइया ।

रसोली—*(ना०)* शरीर पर उठने वाली चरबी की गिलटी या गाँठ । मेद ।

रसोवड़ो—*(नं०)* रसोईघर । रहोड़ो ।

रस्तो—*(नं०)* १. मार्ग । रास्ता । २. उपाय । ३. सीधा मार्ग । सन्मार्ग ।

रस्म—*(ना०)* १. रिवाज । प्रथा । धारो । २. कोर्ट फीस । ३. मेलजोल ।

रस्सो—*(ना०)* पतली डोरी । डोरी ।

रस्सो—*(नं०)* मोटी रस्सी । रस्सा । रांडू ।

रहक—*(ना०)* १. तलवार। २. तलवार का घाव।

रहकड़ो—*(न०)* १. छोटी तोप। २. एक बैल वाली बैलगाड़ी। रेंकळो। ३. गाड़ी पर रखी जाने वाली तोप।

रहकळो—दे० रहकड़ो।

रहच—दे० रहचण।

रहचण—*(न०)* १. लड़ाई। युद्ध। २. विनाश। संहार।

रहचणो—*(क्रि०)* १. तल्लीन होना। विमग्न होना। २. लड़ना। झूझना। दे० रहसणो।

रहट—दे० अरहट।

रहठाण—*(न०)* १. रहने की जगह। निवास स्थान। २. पता। ठिकाना। मुकाम। ३. पड़ाव।

रहण—*(न०)* घर। आवास। रहठाण।

रहण-सहण—दे० रहन-सहन।

रहणी—*(ना०)* १. आचार-विचार। २. चालचलन। ३. रहने की रीति।

रहणी-करणी—*(न०)* १. जीवन व्यतीत करने व काम करने का ढंग। २. लोक व्यवहार। रहन-सहन। ३. बर्ताव। वर्तन। रंगढंग।

रहणो—*(क्रि०)* १. रहना। निवास करना। २. स्थित होना। टिकना। रहना। ठहरना। ३. नौकरी करना। ४. ठीक ढंग से आचरण करना। ५. शेष रहना। बाकी बचना। ६. रुकना। अटकना। अवरुद्ध होना। ७. चूकना। अवसर खोना। ८. बंद करना। चालू नहीं रखना। ९. बंद होना। चालू नहीं रहना। १०. मरना। ११. विद्यमान होना। १२. पीछे रहना।

रहत—*(न०)* १ आनंद। मौज। २. निवास। ३. पड़ाव। ४. रिवाज। *(वि०)* रहित। विहीन।

रहती—*(ना०)* १. रहने का भाव। ठहरना। पड़ाव। २. निवास। ३. चुप्पी। शांति।

रहन—*(न०)* १. किसी के पास कोई वस्तु इस शर्त पर रखना कि ऋण चुकाने पर वह लौटा दी जायेगी। रेहन। बंधक। २. रहने का भाव या क्रिया। ३. व्यवहार।

रहन नामो—*(न०)* वह दस्तावेज जिस पर रहन रखने की शर्तें लिखी हों। रेहननामा।

रहन-सहन—*(न०)* जीवन व्यतीत करने और काम करने का तरीका।

रहम—*(ना०)* १. दया। महरबानी। कृपा। २. करुणा।

रहमत—*(ना०)* कृपा। दया। रहम।

रहमाण—दे० रहमान।

रहमान—*(वि०)* परम कृपालु। बड़ा दयावान। *(न०)* ईश्वर।

रहळ—*(ना०)* १. शीतकाल की बहुत ठंडी हवा। हील। २. पढ़ने के समय पुस्तक को खुली रखने का एक उपकरण। रिहल।

रहवाळ—*(ना०)* घोड़े या ऊंट की एक चाल।

रहवाळी—*(ना०)* १. कुछ दिन साथ रहने की याद। २. घोड़े या ऊंट की एक चाल।

रहवास—*(न०)* रहने का स्थान। रहठाण।

रहवासी—*(वि०)* रहने वाला। निवासी।

रहस—*(न०)* १. लीला । क्रीड़ा । २. आनंद । ३. एकान्त स्थान । ४. नाश । दे० रहस्य ।

रहसणो—*(क्रि०)* १. मारना । काटना । २. चीर डालना । ३. कत्ल करना ।

रहसाण—*(न०)* नाश । संहार ।

रहसि—*(न०)* १. एकान्त । २. रहस्य । ३. संभोग । ४. कला । ५. लीला ।

रहस्य—*(न०)* १. गुप्तभेद । २. गूढ़ वस्तु । ३. मर्म । ४. मर्म की बात । ६. गूढ़ार्थ । तत्व । ६. कला । ५. एकान्त । ८. लीला ।

रहंचणो—दे० रहसणो ।

रहंसणो—दे० रहसणो ।

रहावणो—*(न०)* १. रखेल, दासी, गोली या खवासण का पुत्र । **राहावणो । रावणो । गोलो** । २. रेहन रखी हुई वस्तु । ३. चौकी । ४. चौकीदार । *(वि०)* रखने वाला ।

रहित—*(वि०)* १. बगैर । बिना । बिगर । विहीन । २. पृथक । भिन्न ।

रहीम—*(न०)* १. ईश्वर । खुदा । २. रहीम सतसई, रासपंचांध्यायी आदि ग्रंथों के रचयिता एक प्रसिद्ध मुसलमान कवि । इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था । रहीम बरवै छंद के निर्माता माने जाते हैं । *(वि०)* दयालु । कृपालु ।

रहीस—*(वि०)* रहने वाला । निवासी ।

रही-सही—*(वि०)* १. शेष रही हुई । बची खुची । २. बादस्तूर । *(ना०)* कुशल ।

रहोड़णो—*(क्रि०)* रोकना ।

रहोड़ो—दे० रसोड़ो ।

रह्यो-सह्यो—*(वि०)* रहा-सहा । बचा हुआ । बाकी रहा हुआ । बचा-खुचा । अवशिष्ट ।

रंक—*(वि०)* १. गरीब । दरिद्र । २. कृपण । ३. आलसी । *(न०)* १. भिखारी । २. निर्धन व्यक्ति । ३. कृपण व्यक्ति ।

रंकपणो—*(ना०)* १. गरीबी । दरिद्री । २. कृपणता । कंजूसी । ३. आलस्य ।

रंक-पाळ—*(न०)* १. दीनों का पालन-पोषण करने वाला । गरीब निवाज । २. राजा ।

रंग—*(न०)* १. लाल, पीला, काला इत्यादि वर्ण का चूर्ण अथवा प्रवाही । २. वह वस्तु जिससे कोई वस्तु रंगी जाये । ३. पदार्थ का वह गुण जिसका ज्ञान केवल आँखों द्वारा ही होता है । ४. नाटक । अभिनय । ५. नशा । मादकता । **नसो** । ६. चाल-ढाल । ७. स्वभाव । ८. प्रभाव । असर । ९. जोश । १०. सौंदर्य । **फूटरपणो** । ११. मस्ती । १२. आनंद । **मजो** । १३. उत्सव । **उछव** । १४. विनोद । कुतूहल । १५. युवावस्था । **मोटियारपणो** । १६. आतंक । १७. प्रभुत्व । १८. प्रेम । प्रीति । १९. प्रतिष्ठा । इज्जत । २०. अफीम लेने के पूर्व अपने इष्ट देव, पुण्य श्लोक और वीर पुरुषों आदि का स्मरण करके उसे उन्हें अर्पण करने की क्रिया । २१. काव्योच्चारण द्वारा महापुरुषों और वीर पुरुषों का माहात्म्य वर्णन करते हुए उन्हें अफीम (कसूंबी) अर्पण करने की क्रिया । २२. धन्य । शाबास । **झोक । सैवास** । २३. प्रसन्नता । २४. कामकेलि । मैथुन । संभोग । २५. शरीर का वर्ण । २६. ताश के खेल में काट का पत्ता । २७. भांति । प्रकार । २८. क्रोध । रोस । २९. झगड़ा ।

लड़ाई। ३०. आवेश। ३१. हालत। दशा। ३२. अद्भुत दृश्य। ३३. ठाट-बाट। ३४. साज-सामान। ३५ गंजीफे के चार प्रकार। तुरुप। ३६. अफीम (कसूंबा) का प्रशंसा सूचक काव्य जो अफीम लेने के पूर्व देवता, वीरों इत्यादि को अर्पण करते समय बोला जाता है।

रंग आणो—दे० रंग आवणो।

रंग आवणो—*(मुहा०)* १. रंग का अच्छा खिलना। रंग में सुंदरता आना (रंगाई का काम)। २. आनंद होना। मजा आना।

रंग उघड़णो—*(मुहा०)* १. रंग का अच्छा खिलना। २. रहस्य का खुल जाना।

रंग उड़णो—*(मुहा०)* १. आनंदोत्सव होना। २. रंग का फीका पड़ जाना। कपड़े आदि के रंग का मंद हो जाना। ३. प्रतिष्ठा में धक्का लगना। ४ म्लान मुख होना।

रंग उड़ावणो—*(मुहा०)* १. मौज करना। २. रंग मिटा देना।

रंग उतरणो—*(मुहा०)* १. रंग का हलका पड़ना। २. रंग का उड़ जाना। ३. प्रतिष्ठा में कमी आ जाना।

रंग करणो—*(मुहा०)* १. रंगना। २. रंग बनाना। ३. मौज करना।

रंग काम—*(न०)* १. दीवाल, कपोंट इत्यादि रंगने का काम। २. रंगों की चित्रकारी।

रंग कामणी—*(ना०)* रंग-कामिनी। वेश्या।

रंगकार—*(न०)* १. रंगरेज। रंगारो। २. चित्रकार। उस्तो।

रंगकेलि—*(ना०)* मैथुन। रंगक्रीड़ा।

रंगक्रीड़ा—दे० रंगकेलि।

रंग चढ़णो—*(मुहा०)* १. रंग लगना। प्रेम होना। २. किसी काम में अनुरक्त होना।

रंग चढाणो—दे० रंग चढावणो।

रंग चढावणो—*(मुहा०)* १. उकसाना। उत्तेजित करना। २. अफीम लेते समय उसे अपने इष्टदेव को अर्पण करना। ३. रंगना।

रंग चाढणो—दे० रंग चढावणो।

रंग जणणी—*(ना०)* लाख। लाक्षा।

रंग जमणो—*(मुहा०)* १. उत्सव होना। २. आनंद होना। ३. किसी बात का उचित समाधान हो जाना। ४. किसी काम का यथावत रूप से पार पड़ जाना। ५. गति आना।

रंग जमाणो—दे० रंग जमावणो।

रंग जमावणो—*(मुहा०)* १. प्रभाव दिखाना। २. सफल बनाना।

रंगड़—दे० रंगड़।

रंग ढंग—*(न०)* १. लक्षण। २. दशा। ३. व्यवहार। ४. वातावरण। ५. आचरण।

रंगणवाळी—दे० रंगणारी।

रंगणहार—दे० रंगणार।

रंगणहारी—दे० रंगणारी।

रंगणहारो—दे० रंगणारो।

रंगणहाळी—दे० रंगणारी।

रंगणहाळो—दे० रंगणारो।

रंगणार—दे० रंगणारो।

रंगणारी—*(वि०)* रंगने वाली। *(ना०)* रंगणार की स्त्री। रंगरेजिन। रंगारी।

रंगणारी—*(वि०)* रंगने वाला *(ना०)* रंगरेज । रंगारी ।

रंगणो—*(क्रि०)* १. रंग चढ़ाना (कपड़े आदि पर) । रंगना । २. चमड़ा कमाना । ३. बढ़ा-चढ़ा कर लिखना ।

रंगत—*(ना०)* १. आनंद । मजा । मजो । २. रौनक । ३. सुंदरता । खूबसूरती । ४. रंग । ५. रंगाई । रंगाई का काम । ६. रंगाई की कला । ७. दशा । हालत । ८. वर्षा । बरसात । मेह । ९. प्रेम । स्नेह । नेह । १०. मेल-मिलाप । ११. मित्रता । दोस्ती । १२. रंगने का पारिश्रमिक । रंगाई । रंगामण । रंगामणी ।

रंगताळी—*(ना०)* एक लोक नृत्य ।

रंग दामणी—*(ना०)* एक स्त्री शिरो-भूषण ।

रंगदार—*(वि०)* १. रंगवाला । २. मौजी । आनंदी । ३. रंगा हुआ । रंगित ।

रंगदारी—*(ना०)* १. शाबासी । सैंबासी । २. रंगने का काम । रंगाई ।

रंग देणो—*(मुहा०)* १. धन्यवाद देना । २. अफीम को लेने के पूर्व उसे देवार्पण करना । ३. रंग चढ़ाना । ४. रंगना । रंगणो ।

रंगना—*(ना०)* रमणी । स्त्री ।

रंग निवास—*(ना०)* रंगमहल । केलिगृह ।

रंग पंचमी—*(ना०)* वसंत पंचमी । माघ मास की शुक्ल पंचमी । माघ सुदि पांचम ।

रंग पांचम—दे० रंग पंचमी ।

रंगफोड़—*(ना०)* घटस्फोट । रहस्योद्-घाटन ।

रंग फोड़णो—*(मुहा०)* १. रहस्य का उद्घाटन करना । २. झगड़ा करना ।

रंग बदळणो—*(मुहा०)* १. रंग का फीका पड़ना । २. रंग में परिवर्तन लाना । ३. स्थिति में परिवर्तन आना । ४. बदलना । ५. तेवर चढ़ाना । आवेश में आना ।

रंग बरसणो—दे० रंग बरसणो ।

रंग बरसाणो—दे० रंग बरसाणो ।

रंगबाज—*(वि०)* मौजी । आनंदी ।

रंग बिगड़णो—*(मुहा०)* १. उत्सव में विघ्न होना । रंग में भंग पड़ना । २. प्रेम टूटना । झगड़ा होना ।

रंग-बिरंगो—*(वि०)* १. विविध रंगों वाला । रंग-बिरंगा । २. अनेक प्रकार का ।

रंग-भरणो—*(मुहा०)* रंग की पूर्ति करना ।

रंग-भरियो—*(वि०)* १. रसिक । २. मौजी । आनंदी ।

रंग-भंग—*(ना०)* १. उत्सव में विघ्न पड़ना । आनंद में भंग पड़ना । २. झगड़ा । ३. कलह ।

रंग भामणी—*(ना०)* वेश्या ।

रंग-भीनो—*(वि०)* १. छैला । रंगीला । २. प्रेम रस में सिक्त । ३. रसिक । ४. मौजी । मस्तानी । ५. वेश्या ।

रंग भीनो—*(वि०)* १. प्रेम में आसक्त । २. विषयासक्त । ३. मौजी । आनंदी । मस्त । ४. छैला । रंगीला । ५. रसिक ।

रंगभूमि—*(ना०)* १. वह स्थान जहां नाटक खेला जाता है । रंगमंच । २. नाट्यशाला । ३. अखाड़ा । ४. रण-क्षेत्र । रणभूमि ।

रंग-भेद—*(ना०)* मानव जाति में काले-गोरे रंग का भेद-भाव ।

रंगमहल—*(न०)* १. भोग-विलास करने का सुन्दर महल। आमोद-प्रमोद का प्रासाद। **रंगहेली**। २. इषद्वती (लुप्त) के किनारे (बीकानेर डिवीजन) एक प्राचीन नगर का नाम और उसके खंडहर।

रंग-मंच—*(न०)* नाट्यशाला का मंच।

रंग-मंडप—*(न०)* १. देव मंदिर का खुला चौक। २. रंगभूमि। ३. उत्सव के निमित्त बनाया हुआ सुन्दर मंडप।

रंग माणणो—*(मुहा०)* १. मौज करना। २. संभोग करना।

रंगमातो—*(वि०)* १. उन्मत्त। २. प्रसन्न-चित्त। ३. रसिक। **रसियो**।

रंग में आणो—*(मुहा०)* १. उत्तेजित होना। वेग में आना। २. अपने (स्वभावगत) रूप में प्रगट होना। ३. क्रोध में आना।

रंग में आवणो—दे० रंग में आणो।

रंग में भंग—*(अव्य०)* उत्सव में विघ्न पड़ना।

रंग रजवो—दे० रंगरेज।

रंग रळियायत—*(न०)* १. आनंदोत्सव। २. रतिक्रीड़ा। ३. प्रेम।

रंगरळी—*(ना०)* १. मौज। आमोद-प्रमोद। २. रतिक्रीड़ा।

रंगरस—*(न०)* १. प्रणयक्रीड़ा। २. रति-क्रीड़ा। ३. भोग-विलास। ४. प्रेम-रस। ५. आनंद मंगल। आमोद-प्रमोद।

रंग-रसियो—*(वि०)* रंगरसिक। विलासी। भोग विलास का शौकीन।

रंग-रंगीली—*(वि०)* १. छबीली। २. प्रेमिका। ३. नखराली। ४. अनेक रंगों की।

रंग-रंगीलो—*(वि०)* १. छैला। २. प्रेमी। ३. रसिक। ४. अनेक रंगों का। रंग-बिरंगा।

रंग राखणो—*(मुहा०)* १. शान रखना। बाजी रखना। २. मान बढ़ाना। ३. बात रखना। ४. जीत जाना।

रंग-राग—*(न०)* १. उत्सव। २. मौज-मजा। ३. गान-तान।

रंगरातो—*(वि०)* १. रंगीला। मस्त। २. रंग में अनुरक्त।

रंग-रास—*(न०)* १. मैथुन। २. मनोरंजन। ३. नृत्य-गीत।

रंगरूट—*(न०)* सेना में नयी भरती किया जाने वाला जवान।

रंग-रूड़ो—*(वि०)* १. अच्छे रंग वाला। २. विविधताओं वाला। ३. मनमोहक। मनोहर।

रंग-रूप—*(न०)* १. सुडौलपन। सौष्ठव। २. घाट। सूरत। शक्ल। आकृति। ३. सुन्दरता। **फूटरापो**।

रंगरेज—*(न०)* कपड़े रंगने वाला। **रंगारो**।

रंगरेजण—दे० रंगारी।

रंगरेजो—दे० रंगरेज।

रंगरेळी—दे० रंगरळी।

रंगरेलो वीठू—*(न०)* जैसलमेर का एक व्यंगकार वीठू शाखा का चारण कवि।

रंग-रोळो—दे० रंगरळी।

रंग लागणो—*(मुहा०)* १. चित्त का किसी विषय की ओर आकर्षित होना। २. किसी काम में अनुरक्त होना। ३. प्रेम होना। रंग लगना। रंग चढ़ना। ४. किसी बात में अतिशय रुचि होना।

५. किसी बात में संलग्न रहना। ६. चसका लगना। ७. शौक होना।

रंग वरसणो—*(मुहा०)* १. उत्सव होना। २. गीत नृत्य होना।

रंग वरसाणो— *(मुहा०)* १. उत्सव मनाना। २. गीत-नाच आदि करवाना।

रंगवाई—दे० रंगाई।

रंग-वाग—*(न०)* जनाना बाग। महिला बाग।

रंग-बिरंगो—*(वि०)* १. खराब रंग का। बेरंगा। बदरंग। २. कई रंगों का। ३. अनेक प्रकार का।

रंगशाळा—*(ना०)* नाटक शाला।

रंगसाज—*(न०)* १. चित्रकार। २. रंगरेज। ३. रंग बनाने वाला।

रंगसाजी—*(ना०)* १. चित्रकारी। २. रंगने का या रंग चढ़ाने का काम। ३. रंगने की कला।

रंग-हिंडोरा—दे० रंग-हिंडोळो।

रंग-हिंडोळो —*(न०)* १. भगवान श्रीकृष्ण का हिंडोले में झूलना। २. हिंडोले में झूलने का उत्सव। दोलोत्सव। ३. केलि-हिंडोला। क्रीड़ा-दोल। रंग-दोला।

रंग हेली— *(ना०)* १. रंग हवेली। केलि-गृह। २. रंगीली सहेली। ३. रंग की लहर। आनंदोत्सव। ४. कामकेलि।

रंगाई—*(ना०)* १. रंगने की क्रिया। २. रंगने की कला। ३. रंगने का मेहनताना। **रंगामणी।**

रंगा चंगा—*(न०)* १. सगाई (वाग्दान) की एक प्रथा जिसमें कन्या के पिता की ओर से सगाई करने को आये हुए वर पक्ष वालों (के पहने हुए वस्त्रों) पर रंग डाल कर सगाई को पक्का (प्रमाणित) करने की क्रिया। २. सगाई की खुशी में मनाये जाने वाले अफीम गोष्ठी, भोजन गोष्ठी आदि गोष्ठियों के उत्सव। ३. उत्सव। ४. प्रसन्नता। *(वि०)* स्वस्थ। चंगा। **राजी खुशी।**

रंगाचार— *(न०)* १. प्रेम-मिलन। २. उत्सव। धाम धूम। ३. आमोद-प्रमोद। मौज-मजा। ४. पुत्र जन्म, विवाह आदि के उत्सव।

रंगाटी—*(न०)* रंगरेज। **रंगारो।**

रंगाणो— *(क्रि०)* रंगवाना। रंगाना।

रंगामण—दे० रंगाई।

रंगामणी—दे० रंगाई।

रंगार—दे० रंगारो।

रंगारी—*(ना०)* रंगरेज की स्त्री। **रंगरेजण।**

रंगारो—*(न०)* रंगरेज। रंगार।

रंगावट —*(ना०)* १. रंगे हुए वस्त्र की झलक या आभा। २. रंगाई की सुन्दरता। ३. रंगने की कला। **रंगामणी।**

रंगावणो —दे० रंगाणो।

रंगावळी—*(न०)* १. एक प्रकार का कवच। २. किसी मांगलिक अवसर पर घर के आंगन और द्वार पर चित्रित किये जाने वाले स्वस्तिक इत्यादि। **रंगोळी।**

रंगिक—*(न०)* एक प्रकार का छंद।

रंगियोड़ो— *(भू०कृ०)* १. आसक्त। मोहित। २. रंगा हुआ। ३. प्रभावित।

रंगी—*(ना०)* १. सरस्वती। २. नीसाणी छंद। *(वि०)* १. रंगीला। मौजी। २. रंगीन। ३. विनोदी।

रंगीन—*(वि०)* रंगा हुआ। रंगित।

रंगीली—*(वि०)* १. छैली। रंगीली। बांकी। २. रसिका। ३. सुंदरी। ४. छिनाल। ५. आकर्षक। ६. रंगों वाली। रंगीन।

रंगीली—*(वि०)* १. रसिक। मौजी। छैला। रसिया। २. मजाकी। मसखरो। रंगीला। ३. आनंदी। मस्त। ४. प्रेमी। ५. सुन्दर। ६. आकर्षक।

रंगेचंगे—*(अव्य०)* १. बिना विवाद तकरार के। २. प्रसन्नचित्त से। ३. खूब आनंद से। खुशी से।

रंगो चंगो—*(वि०)* १. स्वस्थ। २. मस्त। ३. आनंदित।

रंगोछव—*(न०)* १. वसंतोत्सव। रंगोत्सव। २. होलिकोत्सव। ३. आनंद। मौज-मजा।

रंगोळी—*(ना०)* उत्सव, पर्व आदि के अवसर पर आंगन में रंग भर करके बनाई हुई स्वस्तिक आदि की मंगल आकृतियां। साथियो। सांथियो। रंगावळी।

रंघड़—दे० रांघड़।

रंघड़पणो *(न०)* १. उद्दण्डता। २. शूर वीरता। रंघड़ाई।

रंघड़ाई—*(न०)* १. उद्दण्डता। २. शूर-वीरता। रंघड़पणो।

रंच—*(वि०)* १. अल्प। थोड़ा। तनिक। २. तुच्छ। हलका। *(न०)* भिखारी।

रंजक—*(न०)* १. भिखारी। *(वि०)* १. क्षीण। २. रंच।

रंजमात्र—*(अव्य०)* थोड़ा भी।

रंज—*(न०)* १. दुख। खेद। २. शोक। *(वि०)* १. प्रसन्न। खुश। २. उदास।

रंजक—*(वि०)* १ प्रसन्न करने वाला। *(न०)* १. रंगने वाला। रंगरेज। २. बंदूक छोड़ने के लिए उसके कान पर रखा जाने वाला बारूद।

रंजण—*(न०)* १. प्रसन्नता। २. तृप्ति। *(वि०)* १. आनंद देने वाला। २. रंगने वाला।

रंजणो—*(क्रि०)* १. प्रसन्न होना। २. तृप्त होना। ३. मन लगना। रळणो। ४. संतुष्ट होना। ५. आश्वस्त होना। ६. रंगना। ७. प्रसन्न करना। ८. दुख पाना। ९. रंज होना। १० दुख देना।

रंजत—*(ना०)* तृप्ति। संतोष।

रंजन—दे० रंजण।

रंजाट—*(वि०)* रंगा हुआ। लीन। *(न०)* कोलाहल। ऊधम।

रंजिस—*(ना०)* १. वैमनस्य। अनबन। रंजिश। २. अप्रसन्नता। रंजीसगी।

रंजी—दे० रजी।

रंजीदाणी—दे० रेतदाणी।

रंजीदमी—दे० रंजिस।

रंजीदो—*(वि०)* १. दुखी। २. अप्रसन्न। रंजीदा।

रंडपोखो—*(न०)* रंडीबाज।

रंडवो—*(न०)* १. निधुर। रंडुओ। २. स्त्रैण। ३. नामर्द।

रंडा—*(ना०)* १. विधवा। २. एक गाली। रांड। रंडी। *(वि०)* मूर्ख। मूर्खा।

रंडाणो—*(क्रि०)* पति का मर जाना। विधवा हो जाना। रंडीजणो।

रंडापो—*(न०)* वैधव्य। रंडापा।

रंडार—*(वि०)* रांड। विधवा। *(ना०)* रंडी। एक गाली।

रंडावणो—दे० रंडाणो ।

रंडियो—दे० रंडवो ।

रंडी—*(ना०)* १. विधवा । २. पातुर । वेश्या । ३. एक पाली ।

रंडीजणो *(क्रि०)* दे० रंडाणो ।

रंडीबाज—*(वि०)* १. वेश्यागामी । २. व्यभिचारी ।

रंडीबाजी—*(ना०)* १. वेश्यागमन । २. व्यभिचार ।

रंडुओ—दे० रंडवो ।

रंडू—दे० रांडू ।

रंढ—*(ना०)* हठ । जिद्द । रढ । हर ।

रंढाळ—*(वि०)* १. हठी । जिद्दी । हठीलो । हठीलो । २. युद्ध में अचल रहने वाला । युद्ध में पीछे नहीं हटने वाला । ३. वीर । ४. क्रोधी । रंढाळो ।

रंढाळी—*(वि०)* हठ करने वाली । जिद्दी ।

रंढाळो—दे० रंढाळ ।

रद्ध—*(ना०)* १. छिद्र । सूराख । रंध्र । २. भग । योनि । ३. दुख । पीड़ा । ४. अनबन । झगड़ा । ५. रंदे की छीलन ।

रदणो—*(क्रि०)* रदे से छील कर लकड़ी साफ करना ।

रंदळा—*(ना०)* सूर्य की पत्नी का नाम । राणल । राणादे ।

रंदाई - *(ना०)* रंदा लगाकर लकड़ी साफ करने का भाव या क्रिया ।

रंदाणो—*(क्रि०)* रंदा लगवाकर लकड़ी साफ करवाना ।

रंदो—*(ना०)* लकड़ी छीलने का खाती का एक औजार । रंदा ।

रंध्र - *(ना०)* १. छिद्र । सूराख । रंध्र । ठींडो । डेबूको । २ भग । योनि । ३. गुफा । ४. कमी ।

रंधण—दे० रंधेज । *(ना०)* रसोई बनाने की क्रिया ।

रंधणो—*(क्रि०)* रांधा जाना । दे० रंधेज ।

रंधाई—*(ना०)* १ किसी खाद्य पदार्थ को पकाने की क्रिया या भाव । २. रंधवाने की मजदूरी ।

रंधाणी—*(ना०)* रसोई घर । रसीड़ो । रसोई ।

रंधावणो—*(क्रि०)* भोजन बनवाना । रंधवाना ।

रंधावणो—दे० रंधाणो ।

रंधीण—दे० रंधेज ।

रंधेज—*(ना०)* खीच, खिचड़ी, खाट, सैंगटी इत्यादि अनेक प्रकार के खिचड़ी जैसे—खाद्य पदार्थों की संज्ञा । खीचो ।

रंध्र—दे० रंध ।

रंभ—*(ना०)* १. रंभा । २. केला । ३. बांस । ४. आरम्भ । प्रारम्भ । ५. युद्ध ।

रंभण—*(न०)* १. आलिंगन । २. चुंबन ।

रंभा—*(ना०)* १. एक अप्सरा । २. सुंदर स्त्री । ३. गौरी । ४. वेश्या । ५. उत्तर दिशा । ६. केला ।

रंभाणो—दे० रांभणो ।

रंभाफळ - *(न०)* केला । कदलीफल ।

रंभोरू—*(वि०)* केले के तने के समान जांघ वाली । *(ना०)* सुंदर जांघ वाली स्त्री ।

रा—*(न०)* १. राय । राजा । २. राव । प्रभु । ईश्वर । ३. धन । *(ना०)* १. लक्ष्मी । २. किसी वस्तु के फट जाने या फूट जाने से बनी दरार । दरज । संधि । ३. बेल की नकेल । रास ।

(अव्य०) सबंध सूचक 'रो' विभक्ति का बहुवचन रूप। छठी विभक्ति। के।

राइ—*(ना०)* १. राजा। २. पंक्ति। श्रेणी। जैसे—बमराइ। *(वि०)* श्रेष्ठ। अच्छा।

राइ आंगण—*(ना०)* बड़ा चौक। राजमहल का आंगन।

राइकाणी—*(ना०)* १. रायका जाति की स्त्री। २. रायका की पत्नी। **रायकाणी। रबारण।**

राइको—*(ना०)* १. ऊंट भेड़ तथा बकरियां रखने, चराने तथा उनकी ऊन और ऊंट का व्यवसाय करने वाली जाति तथा उस जाति का पुरुष। **रबारी। रायको।**

राइतन—*(ना०)* १. राजा। २. अनेक राज्यों के राजा लोग। राजाओं का समूह। ३. राजवंश के लोग। ४. राज्य। **रजवाड़ो।** ५. राज्य वर्ग।

राइतो—*(ना०)* राई और मसाले डाले हुए दही में किसी फल का कचूमर, पकोड़ी या बुंदिया आदि डाल कर बनाया हुआ एक खट-मीठा और चरपरा व्यंजन। रायता। **रायतो।**

राइवर—*(ना०)* १. दूल्हा। **बींद।** २. विवाह के गीतों में दूल्हे का सम्मान सूचक पर्याय। ३. विवाह के गीतों का एक नायक। ४. राजाओं में श्रेष्ठ राजा। राजाधिराज। ५. राजकुमार ६. राजा। ७. श्रीकृष्ण। ८. पति। **सौहर।**

राइहर—*(ना०)* १. राजा। २ दूल्हा। ३. राज्यकुल। **रायवर।**

राई—*(ना०)* १. सरसों की जाति का एक लाल तिलहन। राई। राजिका। २. राधा का साहित्यिक नाम। राधिका। राधा। *(वि०)* बहुत थोड़ा।

राईगूंदी—*(ना०)* छोटे गूंदों का पेड़।

राईबोर—*(ना०)* छोटा बैर। झड़बैरी के बैर। **बोर।**

राई-भर—*(अव्य०)* बहुत ही थोड़ा। बहुत थोड़ा ही।

राई-लूण—*(ना०)* १. दृष्टिदोष (नजर) के निवारण के लिये राई और नमक को वार कर अग्नि में डालने का प्रयोग। *(वि०)* किंचित। किंचित भी।

राईवर—*(ना०)* राधा वर। श्रीकृष्ण। दे० राइवर।

राई-वाई—*(ना०)* १ व्यवस्था। प्रबंध। २. बैल को हलादि में जोतने के योग्य बनाने की क्रिया का नाम। राही बाही।

राउ—*(ना०)* राव। राजा। नृप।

राउ जैतसी रो छंद—*(ना०)* बीठू सूजो कृत बीकानेर राव जैतसी का कामरान के साथ युद्ध वर्णन का ग्रंथ।

राउत—*(ना०)* १. राजा। २. राजपुत्र। राजकुमार। ३. वीर पुरुष। ४. एक जाति। रावत।

राउर—*(सर्व०)* आपका। श्रीमान् का।

राउळ—दे० रावळ।

राउळी—दे० रावळी।

राकस—दे० राक्षस।

राकसराय—*(ना०)* रावण।

राकसणी—*(ना०)* १. राक्षस स्त्री। राक्षसी। २. दुष्टा स्त्री। ४. राक्षस स्वभाव व गुणों वाली स्त्री।

राका— *(ना०)* १. पूनम की रात। २. पूर्णमासी। ३. चंद्रमा। ४. पहली बार रजस्वला होने वाली स्त्री।

राकापति—*(न०)* चंद्रमा। राकेश।

राकेश—*(न०)* १. चंद्रमा। २. पूर्णिमा का चन्द्र।

राक्षस—*(न०)* १. दानव। दैत्य। असुर। २ राक्षस के समान लक्षणों वाला मनुष्य। क्रूर मनुष्य। दुष्ट मनुष्य।

राक्षस-ब्याव—*(न०)* आठ प्रकार के विवाहों में से एक। कन्या से बलात् किया जाने वाला विवाह।

राख—*(ना०)* १. जले हुए पदार्थ का शेष अंश। भस्म। ऊजळी। वानी। २. धूल। धूड़।

राख उडणो—*(मुहा०)* गरीबी होना।

राख-उडाणो—*(मुहा०)* १. अनुचित काम करना। २. कलंकित होना। ३. कुल की कीर्ति को नष्ट करना।

राख-उडियो—*(अव्य०)* एक गाली। *(वि०)* १. कलंकित। २. बेइज्जत। ३. निर्लज्ज। नलल्लो।

राख करणो—*(मुहा०)* नष्ट करना।

राख रमाणो—*(मुहा०)* १. साधु होना। २. भस्म लगाना।

राखड़ी—*(ना०)* १. राखी। रक्षाबंधन। २. शीशफूल। बोर। ३. अनिष्ट से बचने के लिये कलाई में बाँधा जाने वाला मंत्रित धागा।

राखड़ी-डोरो—*(न०)* गंडा। ताबीज।

राखड़ी पूनम—*(ना०)* श्रावण शुक्ल पूर्णिमा। राखी पूनम।

राखण-छळ—*(वि०)* १. युद्ध को जारी रखने वाला। २. युद्ध की शान रखने वाला। ३. युद्ध रसिक।

राखण-वाळी—*(वि०)* १. रखने वाली। २. रक्षा करने वाली। बचाने वाली। ३. प्रीति रखने वाली।

राखण-वाळो—*(वि०)* १. रखने वाला। २. रक्षा करने वाला।

राखणहारी—दे० राखण वाळी।

राखणहारो—दे० राखण वाळो।

राखणहाळी—दे० राखण वाळी।

राखणहाळो—दे० राखण वाळो।

राखणारी—*(वि०)* १. रखने वाली। २. रक्षा करने वाली। राखण वाळी।

राखणारो दे० राखणियो।

राखणियो—*(वि०)* १ रखने वाला। २. रक्षा करने वाला। राखणवाळो।

राखणो—*(क्रि०)* १. रखना। धरना। २. नष्ट न होने देना। सम्हाल कर रखना। ३ रक्षण करना। बचाना। ४. संग्रह करना। ५. धारण करना। ६. रोकना। ठहराना। ७. स्थिर करना। अटकाना। ८. नियुक्त करना। ९. अधिकार में ले लेना। १०. निवास कराना। ११. रहने देना। १२. स्वीकार करना। लेना। १३. खरीदना। १४. पालन-पोषण करना। १५. रेहन रखना।

राखपत—*(ना०)* १. किसी की खोई जाने वाली प्रतिष्ठा की रक्षा करना। किसी की आबरू को बचाने का काम। २. मेलजोल।

राखपत-रखापत—*(अव्य०)* १. 'लेना जैसा देना' का व्यवहार। लेने देने में समानता का व्यवहार। २. जैसा अगला करे या समझे उसी प्रकार करने या समझने का भाव। ३. अच्छे के साथ अच्छा और

बुरे के साथ बुरा व्यवहार करने की नीति ।

राखस—दे० राक्षस ।

राखसणी—दे० राकसणी ।

राखसिया—*(ना०)* चौहान क्षत्रियों की एक शाखा ।

राखसी-माया—*(ना०)* राक्षसी-लीला ।

राखी—*(ना०)* १. रक्षाबंधन का त्यौहार । २. श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का दिन । दे० राखड़ी सं. १.

राखी-बंधण—*(न०)* रक्षाबंधन । **राखड़ी** ।

राखी-बंध-भाई—*(न०)* धर्म-भाई ।

राखो—*(न०)* १. गरम शलाका से दग्ध करके किया जाने वाला पीड़ाँग-उपचार । दग्ध क्रिया । **डंभण क्रिया** । २. दग्ध चिकित्सा । ३. दग्ध चिन्ह । **डाग** । **डाम** । **डंभण** ।

राखोड़ी—*(ना०)* राख । भस्म ।

राखोड़ो—*(न०)* १. राख । भस्म । २. धूलि-धूसर । ३ राख का ढ़ेर । ४. पुराना, बिगड़ा या सड़ा-गला सामान ।

राख्या-धणी—*(न०)* १. हुंडी लिख कर रुपये रखने वाली आसामी । जिसको हुंडी लिख कर दी हो उससे रुपये प्राप्त करने वाला व्यक्ति । २ हुंडी का एक पारिभाषिक शब्द ।

राग—*(ना०)* १. आसक्ति । मोह । २. अनुराग । प्रेम । ३. शोभा । ४. रंग । ५. लाल रंग । ६. स्वर, ताल और लय युक्त गायन । ७. मनोरंजन हो इस प्रकार गाने की रीति । ८ कष्ट । ९. क्लेश । १०. क्रोध । ११. ईर्ष्या । १२. श्रद्धा । १३. छोटा हरिण । १४. अलक्तक । अलता । १५. छः की संख्या ।

राग-जाँगड़ो—*(न०)* सिंधु राग । युद्ध राग । **कड़खो** ।

रागड़दाई—*(ना०)* १. बात को रगड़ते रहने की आदत । २. वस्तु की खरीदी में नक्की किये हुए भाव-मोल में कम देने की आदत । ३. हद बाहर की कंजूसी । ४. जिद । हठ । ५. अनावश्यक होशियारी । ६. कुटिलता । मैलापना ।

रागड़दो—*(न०)* गाढ़ा प्रवाही पदार्थ । **गागड़दो** ।

रागड़ो—*(न०)* १. भैंसा । महिष । २. हरिण ।

रागणी—*(ना०)* १. राग का भेद । राग की पत्नी । रागिनी । २. छत्तीस की संख्या । ३. छोटा राग ।

रागणो—*(क्रि०)* १. गाना । अलापना । २. अनुरक्त होना । ३. निमग्न होना ।

रागदोख—*(न०)* १. रागद्वेष । २. कटुता ।

राग-द्वेष—*(न०)* १. राग और द्वेष । २. प्रेम और ईर्ष्या । **रागधेख** ।

राग-धेख—दे० राग-द्वेष ।

राग-रस—दे० राग-रंग ।

राग-रंग—*(न०)* १. उत्सव । २. खुशी । ३. मौज-मजा । ४. रति-क्रीड़ा । **राग-रस** ।

राग-रागणी—*(ना०)* राग और राग-निर्या । छः राग और ३६ रागनियाँ ।

राग-वडाळो—*(न०)* सिंधु राग । **राज-जाँगड़ो** । युद्ध उत्साहने वाला राग ।

रागांरळ—*(न०)* १. हंसी-खुशी । प्रसन्नता । २. मौज-मजा ।

रागी—*(न०)* गायक । गवैया । *(वि०)* १. आसक्त । अनुरक्त । प्रेमी । २. साँसा-

रिक सुखों में आसक्ति वाला। ३. द्वेषी। ४. रंगा हुआ। ५. क्रोधी।

रागे-पड़णो—*(मुहा०)* १. यथापूर्ण होना। २. स्थिति सुधर जाना। ३. ठिकाने लगना। मार्ग लगना।

राघव—*(न०)* श्रीराम।

राच—दे० राछ।

राचणी—*(वि०)* १. सुंदर रंग-रूप से खिलने वाली। २. जिसका रंग खूब खिले वह (मेंहदी)। *(क्रि०)* रचना करना।

राचणो—*(क्रि०)* १. रचना करना। मंगल रूप चित्रित करना। २. बनाना। ३. रंग में ओप आना। रंग खिलना। ४. मेंहदी का रंग आना। ५. शोभा होना। ६. प्रसन्न होना। ७ लगा रहना (काम में)। संलग्न रहना। ८. मन लग जाना। ९. तबियत लगना। १०. पसंद आना। ११. फैलना।

राछ—*(न०)* १. औजार। २. बरतन। बासन। बासण। ३. हथियार। ४. उस्तुरा। **पाछणो**।

राछ-पीछ—*(न०)* औजार इत्यादि।

राछानी—*(ना०)* नाई का उस्तरा, कैंची आदि हजामत के औजार रखने की पेटी। **राछोड़ी**।

राछोड़ी—दे० राछानी।

राज—*(सर्व०)* १. आप और तुम के स्थान पर किया जाने वाला एक आदर सूचक प्रयोग। आप। श्रीमान्। २. सर्वनाम 'वह' का आदरसूचक पर्याय। 'वे' (हिन्दी में) *(न०)* १. राज्य। २. अधिकार। सत्ता। ३. रहस्य। भेद। ४. पति। ५. पत्नी। ६. अंधेरा। ७. संबोधन। ८. मकान बनाने वाला कारीगर। **कड़ियो**। ९. शासन। हुकूमत। १०. एक उपसर्ग व प्रत्यय। यथा-राज-वैद्य और कवि-राज।

राज-अंग—*(न०)* दीवान। मंत्री।

राज-कथा—*(ना०)* १. राजाओं की चर्चा। २. राज्य-चर्चा। ३. राज-नीति।

राज-कन्या—*(ना०)* राजा की लड़की। राज पुत्री। राज-कुमारी।

राज-कर—*(न०)* राजस्व। टैक्स। राज्य का कर। **महसूल**।

राज-करणो—*(मुहा०)* १. राजा की हैसियत में राज करना। २. दीपक को बुझाना। ३. आराम करना। ४. मौज करना। ५. रजस्वला होना। ६. माता-पिता की छत्र छाया का सुख भोगना।

राज-कर्ता—*(न०)* राज्यकर्ता। राजा।

राज-कर्मचारी—*(न०)* सरकारी नौकर।

राज-कवि—*(न०)* १. राजा या राज्य द्वारा प्रतिष्ठित कवि। २. आश्रित दरबारी कवि।

राज-कंवर—*(न०)* १. राजा का पुत्र। **राज-कुमार**। २. पुत्र। ३. पुत्री।

राज-कंवरि—*(ना०)* राजा की पुत्री। **राज-कुमारी**।

राज-काज—*(न०)* १. राज्य संबंधी काम-काज। २. राज-नीति। ३. राज-रीति। ४. राज्य व्यवस्था। **राज-प्रबंध**।

राज-काजी—*(वि०)* राज्य के कार्यों में निष्णात। राज-नीतिज्ञ।

राज-कारण—*(न०)* १. राज्य संबंधी काम-काज। २. राज्य व्यवस्था। ३. राज-नीति।

राजकीय—*(वि०)* राज्य या शासन संबंधी।

राज-कुटुंब—*(न०)* राजा का कुटुम्ब। राज-कुल।

राज-कुमार—*(न०)* राजा का पुत्र। राज-कुंवर।

राज-कुमारी—*(ना०)* राजा की पुत्री। राजकुंवरी।

राजकुळ—*(न०)* १. राजा का कुटुम्ब। २. ऐसा कुल जिसमें राजा हुए हों। ३. राज्य-दरबार।

राज-कुळी—*(न०)* राज्यवंश। *(वि०)* राज्यवंश का।

राज-कुँअर—दे० राज-कुंवर।

राज-कुँअरि—दे० राज-कुँवरी।

राज-कुँवर—*(न०)* राजा का पुत्र। राज-कुमार।

राज-कुँवरी—*(ना०)* राजा की पुत्री। राज-कुमारी।

राज-कोष*(न०)* राजा या राज्य का खजाना।

राज-खातो—*(न०)* १. राज्य विभाग। २. बड़ा काम। ३. अंधेर खाता। ४. अंधाधुंधी।

राज-गत—*(ना०)* राजा या शासन की गति-विधि।

राजगत-देवगत—*(ना०)* १. राजाकी गति और देव गति। २. अचानक घटना। ३. संकट। विपत्ति। ४. आकस्मिक संकट।

राजगदी—दे० राजगादी।

राजगरो—*(न०)* (फलाहार में काम आने वाला) एक वन-धान्य।

राजगादी—*(ना०)* १. राज्य गद्दी। २. राज्य-सिंहासन।

राजगीर—*(न०)* मकान बनाने वाला कारीगर। राज। कड़ियो।

राजगुरु—*(न०)* १. एक ब्राह्मण जाति। २. राजा का गुरु।

राज-गृह—*(न०)* १. राजा का घर। राज-महल। २. मगध देश का एक प्राचीन नगर।

राज-गेहली—*(वि०)* १. राज्योन्मत्त (स्त्री)। २. प्रेमोन्मत्त (स्त्री)।

राज-गेहलो—*(वि०)* राज्योन्मत्त।

राज-घाट—*(न०)* दिल्ली में जमुना किनारे का एक घाट जहाँ गांधीजी की समाधि बनी हुई है। २. बड़ा घाट।

राज-चिन्ह—*(न०)* १. राजा होने के सामुद्रिक लक्षण। २. मुकुट, छत्र, चामर, दंडादि राजा के अधिकार सूचक चिन्ह। ३. राजा तथा राज्य का सिक्का तथा उसकी छाप।

राज-छत्र—*(न०)* राजा के ऊपर रखा रहने वाला छत्र। राज्य छत्र।

राज-जोग—दे० राज-योग सं. १.

राज-ठाट—*(न०)* राज्य वैभव।

राज-ठोड़—*(न०)* राजधानी।

राजणो—*(क्रि०)* १. शोभा देना। २. शोभित होना। ३. शोभा पाना। ४. बिराजना। बैठना। ५. चमकाना। ६. राज्य करना।

राजत—*(वि०)* सुशोभित।

राज-तंत्र—*(न०)* १. राज्य। शासन। २. ऐसा तंत्र या शासन जिसका सर्वेसर्वा राजा हो।

राज-तिलक—*(न०)* १. राज्याभिषेक के समय राजा के किया जाने वाला तिलक। २. राज्याभिषेक।

राज-तेज—*(न०)* १. राज्य का प्रभाव। २. राजा का तेज।

राजथळ—*(न०)* राजधानी। दे० राजस्थान।

राजथळी—दे० राजथळ।

राज-थंभ—*(न०)* १. राज्य कार्य चलाने में स्तंभ रूप। २. राज्य नीति-निपुण। ३. प्रधान राज्य-संचालक। ४. राज्य का स्मारक-स्तंभ।

राज-थाट—*(न०)* राज्य वैभव। राजसी-ठाट।

राजथान—*(न०)* १. राजधानी। २. राजस्थान।

राज-दरबार—*(न०)* १. राजा का दरबार या इजलास। राजसभा। २. वह बड़ा स्थान जहां दरबार भरा जाता हो।

राजदवार—*(न०)* १. राज-द्वार। २. कचहरी। न्यायालय। ३. न्यायालय का द्वार।

राज-दंड—*(न०)* १. एक राज्य चिन्ह। २. राजा का दण्ड। ३. राज्यसत्ता। ४. राजा की सत्ता। ५. राजा के हाथ में शासन का प्रतीक दंड।

राज-दुलारी—*(ना०)* राजकुमारी। राजा की प्यारी (पुत्री)।

राज-दूत—*(न०)* १. राजा का दूत। २. राज्य के द्वारा किसी देश में नियुक्त करके भेजा जाने वाला प्रतिनिधि या दूत। एम्बेसेडर।

राज-देय—*(न०)* राज्य कर। कर।

राज-द्रोह—*(न०)* राजा या राज्य के प्रति बगावत। गद्दारी।

राज-द्रोही—*(वि०)* राजा या राज्य के विरुद्ध बगावत करने वाला। गद्दार।

राज-द्वार—*(न०)* १. न्यायालय। कचेड़ी। २. सरकारी कार्यालय। ३. राजा की ड्योढ़ी। ४. राज दरबार।

राजद्वारी—*(वि०)* राज्य संबंधी।

राज-धर्म—*(न०)* १. राजा या राज्य का प्रजा के प्रति कर्त्तव्य। २. राजा या राज्य द्वारा घोषित राज्य-धर्म।

राजधानी—*(ना०)* १. राज्य का पाट नगर। २. जहां राजा या राज्यकर्त्ता रहता हो, वह मुख्य नगर। ३. राज्य का केन्द्रीय कार्यालय जहां अवस्थित हो।

राजन्—*(न०)* १. पति। खाविंद। २. राजा। ३. राजा के लिये संबोधन। ४. राजकुटुंब का मनुष्य। राजन्य। ५. क्षत्रिय। दे० आदरसूचक संबोधन।

राज-नट—*(न०)* १. नटों की एक जाति। २. राज्याश्रित नट।

राज-नीति—*(ना०)* १. राज्य के शासन की नीति। २. राज्य संबंधी नीति। ३. कूटनीति।

राज-पत्री—*(न०)* पक्षीराज। गरुड़।

राज-पद—*(न०)* १. राजा का पद। २. राज्य-शासन में उच्च पद।

राज-पंथ—*(न०)* राजमार्ग।

राज-पाट—*(न०)* १. राज-गद्दी। राज्य सिंहासन। २. राजा या राज्य का अधिकार। ३. शासन-प्रबंध।

राजपाळ—*(न०)* राज्य का सर्वोच्च अधिकारी। राज्यपाल। गवर्नर।

राज-पुत्र—*(न०)* १. राजकुमार। २. राजपूत। क्षत्रिय।

राज-पुत्री—*(ना०)* राजकुमारी। राजा की लड़की।

राज-पुरुष—*(न०)* १. राज्य कर्मचारी। २. राज्य या शासन की नीति को समझने वाला। ३. राज्य का प्रधान अधिकारी।

राजपूत—दे० रजपूत।

राजपूताणी—दे० रजपूताणी।

राजपूताना—दे० राजस्थान।

राजपूती—दे० रजपूती।

राज-प्रासाद—*(न०)* राज-महल।

राज-बळ—*(न०)* शासन-शक्ति।

राजबाई—*(ना०)* एक चारण देवी, जिसने बीकानेर के भक्त कवि पृथ्वीराज राठौड़ की संकट के समय सहायता की थी।

राज-बीज—*(न०)* राजा के वंश में जन्म लिया हुआ व्यक्ति॥

राज-भक्त—*(वि०)* अपने राजा या राज्य के प्रति निष्ठा रखने वाला।

राज-भक्ति—*(ना०)* राजा या राज्य के प्रति निष्ठा।

राज-भवन—*(न०)* १. राजा का महल। २. राज्यपाल का भवन। जन्म-पत्रिका की जन्म-कुंडली में दसवाँ स्थान।

राज-भंडार—*(न०)* राज्य का खजाना। राजकोष।

राज-भाषा—*(ना०)* राज्य के काम-काज की भाषा।

राज-भोग—*(न०)* १. श्री ठाकुरजी (भगवान्) का दुपहर का भोजन। २. राज-भोग के समय होने वाले श्रीठाकुरजी के दर्शन। ३. एक प्रकार का बढ़िया चावल। ४. एक प्रकार का बढ़िया आम। ५. एक मिठाई।

राज-मद—*(न०)* सत्ता का नशा।

राज-मराळ—*(न०)* राज हँस।

राज-महल—*(न०)* राजा का महल। राज-प्रासाद।

रा-माता—*(ना०)* राजा की माता।

राज-मार्ग—*(न०)* १. सार्वजनिक मार्ग। आम रास्ता। राजपथ। २. चौड़ा-मार्ग।

राज-मुगट—*(न०)* १. राजा का मुकुट। २. राज्य प्राप्त करने के समय मुकुट पहनने की विधि। ३. राज्याभिषेक।

राज-मुद्रा—*(ना०)* १. राजा या राज्य की मुहर। २. राज्य का सिक्का।

राज-यक्ष्मा—*(न०)* राजरोग। क्षय रोग। खैण रोग। तपेदिक।

राजयोग—*(न०)* १. जन्म कुंडली में राजा बनने का ग्रह योग। २. महर्षि का पतंजलि द्वारा वर्णित अष्टांग योग।

राज-रढ—*(ना०)* राजहठ।

राज-रमणी—*(ना०)* १. रानी। २. राज्य या राजा के कुल की स्त्री।

राज-रसम—*(न०)* १. राजनीति। २. कोर्ट फीस।

राज-राजेश्वर—*(न०)* राजाओं का राजा। महाराजाधिराज। सम्राट।

राज-राजेश्वरी—*(ना०)* १. महारानी। पट्टरानी। साम्राज्ञी। २. दस महा-विद्याओं में की एक विद्या।

राज-राणी—*(ना०)* पटरानी। पट्टराणी।

राज-री—*(सर्व०)* आपकी।

राज-रीत—*(ना०)* १. राजा के दरबार की रीति। २. राजाओं की रीति। भाँति।

राज-रूपक—*(न०)* कवि वीरभाण कृत जोधपुर महाराजा अभयसिंह के अहमदाबाद युद्ध के वर्णन का प्रसिद्ध डिंगल-काव्य ग्रंथ।

राज-रो—*(सर्व० विशे०)* आपका।

राज-रोग—दे० राजयक्ष्मा ।

राजर्षि—*(न०)* १. राजवंश या क्षत्रिय कुल में जन्मा ऋषि । २. ऋषि तुल्य ज्ञानी या भक्त राजा ।

राजल—*(ना०)* राजबाई का संक्षिप्त नाम । दे० राजबाई ।

राज-लक्ष्मी—*(ना०)* राज्य लक्ष्मी । राज्य वैभव ।

राजलोक—*(न०)* १. राजा की रानी या रानियाँ । २. रनिवास की महिलाएँ । अन्तःपुर । ३. स्त्री वर्ग । ४. परिजना ।

राजवट—*(न०)* १. क्षत्रियत्व । २. राज्य-सत्ता । ३. राज्य मद ।

राजवण—*(ना०)* १. दुलहिन । २. राजा की स्त्री । रानी । ३. राजघराने की स्त्री । ४. राजवी की पत्नी । ५. पत्नी । ६. वैवाहिक लोक गीतों की संभावित स्त्री ।

राजवर्ग—*(न०)* १. शासक समुदाय । राज्य वर्ग । २. राज्य कुल । ३. राज्य में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाला वर्ग विशेष ।

राज-वर्गी—*(न०)* १. राज्य वर्ग संबंधी । २. राज्य में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाला वर्ग विशेष ।

राज-वंश—*(न०)* राजा का कुल ।

राज-वंशी—*(वि०)* राजा के वंश का । राजकुल में जन्मा हुआ ।

राज-विद्रोह—दे० राजद्रोह ।

राज-विलास—*(न०)* १. उदयपुर के महाराणा राजसिंह की वीरता का मान कवि द्वारा रचा गया एक डिंगल-काव्य-ग्रंथ । २. राज्य के सुख भोग । ३. राजा का आनंदोपभोग ।

राजवी—*(न०)* १. राज्यपति । राजा । २. राजपुत्र । राजवंश का पुरुष । राजघराने का व्यक्ति । ३. राजा के समान वैभव वाला पुरुष ।

राज-वैद—*(न०)* राजा का वैद्य । राज-वैद्य । राजघराने का चिकित्सक ।

राज-वैद्य—दे० राजवैद ।

राज-वैभव—*(न०)* १. राजा का वैभव । २. राजा के समान वैभव ।

राज-व्यास—*(न०)* १. राज मंदिर में कथा बचने की वृत्ति वाला कथा-व्यास ।

राजशाही—दे० राजाशाही ।

राजस—*(न०)* १. वैभव । २. राज सुख । राज-वैभव । ३. रजोगुण । रजस्व । ४. क्रोध । ५. राजधानी । ६. राज्य । ७. राजा ।

राज-सत्ता—*(ना०)* १. राजा या राज्य की सत्ता । २. राज्य चलाने वाली सत्ता । ३. राज शक्ति ।

राज-सभा—*(ना०)* १. राजा की सभा । २. राजाओं का दरबार । ३. संसद का ऊपरी गृह । ४. राज्य सभा ।

राज-समंद—*(न०)* कांकरोली (राज०) के पास बना एक बड़ा तालाब । राजसर ।

राज-साज—*(न०)* १. कड़िये (मिस्त्री) का सामान । दे० राजपाट ।

राजसिक—*(वि०)* १. रजोगुण से उत्पन्न । २. रजोगुण संबंधी ।

राज-सिंघासण—*(न०)* राज-सिंहासन ।

राज-सिंहासन—*(न०)* राजा का सिंहासन । राजगद्दी ।

राजसी—*(वि०)* १. राजा से संबंधित । २. राजा के समान । ३. राजा की शान-शौकत जैसा । दे० राजस सं० १,२,३,४.

राजसूय—*(न०)* १. वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट को होता

है । २. राज्याभिषेक के समय सर्वोपरि राजा के द्वारा किया जाने वाला यज्ञ ।

राजस्थान—*(न०)* १. भारत का वह पश्चिमी प्रांत जिसमें पहले जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, उदयपुर इत्यादि अनेक राजाओं के राज्य थे । २. राजधानी ।

राजस्थानी—*(वि०)* राजस्थान का । *(न०)* राजस्थान का निवासी । *(ना०)* राजस्थान की भाषा ।

राजस्व—*(न०)* १. कर, शुल्क आदि से होने वाली राज्य की आमदनी । २. राज्य सम्पत्ति ।

राजहठ—*(ना०)* १. राजा की हठ । राजरख । २. अति प्रबल हठ । ३. तीन प्रसिद्ध हठों में से एक हठ । (बालहठ, त्रियाहठ और राजहठ) ।

राजहंस—*(न०)* १. एक प्रकार का बड़ा हंस । २. मोती चुगने वाला तथा दूध को पानी से अलग करने की शक्ति वाला एक कल्पना-रम्य हंस । ३. एक कवि-प्रसिद्धि । ४. एक छंद । ५. एक संकर राग ।

राज-होणो—*(मुहा०)* १. दीपक का बुझ जाना । २. राज्य का प्राप्त होना ।

राजा—*(न०)* १. किसी राज्य या देश का प्रधान शासक । २. नरेश । नृप । ३. स्वामी । ४. वीर्य । ५. राजा के चित्र वाला ताश का पत्ता । ६. उदार स्वभाव वाला मनुष्य । ७. मूर्ख व्यक्ति । ८. उल्लू । घूघू । *(वि०)* १. उदार । २. मूर्ख ।

राजाई—*(ना०)* राजा का पद व अधिकार ।

राजा करण री वेळा—*(ना०)* १. प्रभात । २. मंगल कार्य करने का (प्रभात का) समय । ३. महादानी कर्ण नित्य दान बाँटा करते थे वह प्रभात का समय ।

राजाधिराज—*(न०)* १. राजाओं का राजा । २. बड़ा राजा । महाराजा ।

राजापणो—*दे०* राजाई ।

राजावाटी—*(ना०)* राजस्थान का एक प्रदेश ।

राजाशाही—*(ना०)* १. राजा की इच्छानुसार चलने वाला राज्य । २. राजा का राज्य । ३. एक सिक्का । *(वि०)* १. राजा से संबंधित । २. राजा का ।

राजासण—*(न०)* राज सिंहासन । राजासन ।

राजिंद—*(न०)* १. राजेन्द्र । २. इन्द्र के समान वैभव वाला राजा । ३. दूल्हा । ४. राजा ।

राजियो—*(न०)* प्रसिद्ध कवि कृपाराम खिड़िया का सेवक, जिसके नाम से कृपाराम ने अनेक सोरठे बनाये ।

राजी—*(वि०)* १. खुश । प्रसन्न । २. सम्मत । सहमत । ३. अनुकूल । ४. स्वस्थ । ५. संतुष्ट । ६. मग्न । मस्त । *(ना०)* १. पंक्ति । श्रेणी । २. राई । ३. रेखा । लकीर ।

राजी-खुशी—*(वि०)* १. कुशल । २. प्रसन्न । *(ना०)* १. स्वेच्छा । २. प्रसन्नता । कुशलता । *(अव्य०)* कुशलपूर्वक । सही-सलामत ।

राजीनामो—*(न०)* वह लेख जो वादी और प्रतिवादी के बीच समझौता होने पर लिखा जाता है और न्यायालय में पेश किया जाता है । दोनों की सहमति

से प्रस्तुत सुलहनामा। राजीनामा। **राजीनांवो**।

राजीनांवो—दे० राजीनामो।

राजीपो—*(न०)* १. परस्पर की सद्-भावनाएं, सदिच्छाएं, प्रीति, मेल, मिलाप, आव-जाव इत्यादि। २. वैमनस्य का मिटना। परस्पर का मनमुटाव मिटा कर पुनः आत्मीयता का व्यवहार करना। **राजीपणो**। अनबन का अभाव।

राजी-बाजी—*(वि०)* प्रसन्न। खुश। *(ना०)* १. प्रसन्नता। राजी-खुशी। २. मन-मुटाव का मिटना। **राजीपो**।

राजीव—*(न०)* १. कमल। २. नीलकमल।

राजेन्द्र—*(न०)* १. राजाओं का राजा। २. पति। **राजींद**।

राजेरो—*(वि०)* शोभित। शोभायमान।

राजेश्वर—दे० राजेसुर।

राजेसुर—*(न०)* राजेश्वर। राजाधिराज। राजाओं का अधीश्वर।

राज्य—*(न०)* १. राजा के शासन का प्रदेश। २. किसी एक सत्ताधारी का प्रदेश। ३. सत्ता। शासन।

राज्य-तिलक—दे० राज्याभिषेक।

राज्याभिषेक—*(न०)* राजगद्दी पर बिठाने की विधि। किसी राजा का राज्याधिकारी बनने के समय का एक धार्मिक कृत्य। **राज्य तिलक**।

राट—*(न०)* १. राजा। २. राज्य। राष्ट्र। **राठ**।

राटक—*(न०)* १. शस्त्र-प्रहार। २. युद्ध के ढोल, नगाड़े की ध्वनि।

राठ—दे० राट।

राठदड़ो—दे० राड़दड़ो।

राठवड़—*(न०)* १. राठौड़ क्षत्री। २. राष्ट्रवर।

राठासण—*(न०)* १. राष्ट्रासन। राज्यासन। २. राठासण देवी।

राठासण-देवी *(ना०)* १. एकलिंगजी से दो कोस की दूरी पर मेवाड़ राज्य की एक प्रसिद्ध देवी। राष्ट्रश्येना देवी। २. राज्य की देवी।

राठासण रो मगरो—*(न०)* वह पर्वत जिस पर राठासण देवी का मंदिर बना हुआ है।

राठी—*(न०)* १. बेगारी। **बेठियो**। २. माहेश्वरी जाति की एक शाखा।

राठोड़—*(न०)* राठौड़ क्षत्री।

राठोड़ीजी—*(ना०)* राठौड़ राजपूत की लड़की का उसकी ससुराल में किया जाने वाला सम्मान-सूचक संबोधन।

राठोड़ी—*(वि०)* १. राठौड़ों का। २. राठौड़ संबंधी। *(ना०)* १. जबरदस्ती। ३. मनचाही।

राड़—*(न०)* १. लड़ाई। तकरार। २. युद्ध। ३. त्रास। संकट। ४. गृह कलह। ५. दरार। छेद।

राड़क—*(वि०)* लड़ाईखोर। झगड़ालु। *(न०)* योद्धा। **राड़ीगारो**।

राड़दड़ो—दे० राड़धरो।

राड़धरो—*(न०)* १. मारवाड़ के मालाणी प्रांत का एक भाग जो राड़ (युद्ध) करने के लिये प्रसिद्ध रहा है। (राड़ = युद्ध + धरा = भूमि)। यहाँ के घोड़े, ऊंचे, मजबूत और अपनी खास नस्ल के लिये प्रसिद्ध हैं। २. युद्ध भूमि। युद्धस्थली। ३. राष्ट्रकूटों (राठौड़ों) ने जिस पर सर्व-प्रथम अधिकार किया वह भूभाग। राठौड़ों की भूमि। राष्ट्रधरा। ४. राड़ ऋषि के नाम पर इस भूमि का

नाम राड़धरा पड़ा। (मारवाड़ की मर्दमशुमारी)।

राड़मंड—*(न०)* योद्धा। *(वि०)* १. युद्ध-रसिक। २. युद्ध करने वाला।

राड़ाजीत—*(वि०)* युद्ध विजयी।

राड़ी—*(ना०)* १. रस्सी। २. लड़ाई। **राड़**। *(वि०)* राड़ करने वाला। लड़ने वाला। **लड़ाकू**।

राड़ीगारो—दे० राड़क।

राड़ो—*(न०)* १. लड़ाई का उग्र रूप। घमासान लड़ाई। २. युद्ध। ३. भिड़ंत। ४. आक्रमण। हमला।

राढा—*(ना०)* १. शोभा। २. हठ।

राढाळी—*(वि०)* हठीली। जिद्दी। *(ना०)* युद्ध। जंग।

राढाळो—*(वि०)* हठीला। जिद्दी।

राढो—*(न०)* अत्यन्त गाढ़ा तरल पदार्थ। **रागड़दो**।

राण—*(न०)* १. राजा। राना। २. रावण। दशानन। *(वि०)* दृढ़।

राणदे—दे० राणल।

राण-बाण—*(वि०)* १. दृढ़। मजबूत। २. स्वस्थ। ३. कुशल। निपुण।

राणल—*(ना०)* १. सूर्य की पत्नी। **राणादे**। **रन्नादे**। २. 'रानी' शब्द का लोकगीत रूप। ३. दुलहिन। *(न०)* राना। राजा।

राणल-पति—*(न०)* सूर्य।

राणल-वर—*(न०)* सूर्य। **सूरज**। **राणल-पति**।

राणारासो—*(न०)* मेवाड़ के दयालदास राव रचित एक काव्य ग्रंथ।

राणादे—दे० राणल।

राणावत—*(न०)* १. उदयपुर के महाराणा उदयसिंह के वंशज। २. राणा परिवार। राणा वंश। ३. राणा का वंशज।

राणावतजी—*(ना०)* राणा की पुत्री (ससुराल का संबोधन)।

राणी *(ना०)* १. राजा की पत्नी। राज्ञी। रानी। २. स्त्री राज्यकर्त्री। ६. ताश के खेल में राणी का पत्ता। ४. स्वामिनी।

राणी-जाई—*(ना०)* रानी की पुत्री। राजकुमारी।

राणी-जणियो—*(न०)* राजकुमार।

राणी-जायो—*(न०)* रानी-पुत्र। राजकुमार। **राणी-जणियो**।

राणी-दीवाळी—*(ना०)* दीवाली का खास दिन। दीपावली। काणी-दीवाली का दूसरा दिन।

राणी-पदो—*(न०)* पट्टरानी का पद।

राणी-मंगो—*(न०)* रानियों को मांगने वाली जाति का व्यक्ति।

राणेस—*(न०)* १. महाराणा। २. बड़ा राजा।

राणो—*(न०)* १. राना। राजा। २. मेवाड़ के राजाओं की उपाधि। ३. भील। ४. ढोली। *(वि०)* काना (एकाक्ष) के विपरीत काम में लाया जाने वाला शब्द। 'काणो' का उलटा। जो काना (एकाक्ष) न हो। जिसको दोनों आंखों से दिखता हो।

राणो-राण—*(वि०)* १. प्रामाणिक। २. सत्यसंध। ३. दृढ़ निश्चयी। ४. पक्का। दृढ़। ५. सभी। समस्त। ६. सही। दुरुस्त। ७. शुद्ध। *(न०)* १. राजाओं में श्रेष्ठ। २. अधिपति।

रात—*(ना०)* रात्रि। निशा।

रात-गाळो—*(न०)* रात का समय।

रात-चाळो—दे० रात-रोळो।

रात-जगण—*(न०)* १. रात्रि को जगना। जागरण। २. कुत्ता।

रातड़—*(ना०)* ललाई। लालिमा।

रातड़ली—दे० रात।

रातड़ी—*(ना०)* रात।

रात-ढाळो—*(न०)* यात्रा काल में रात को किया जाने वाला विश्राम।

रात-दिन—*(अव्य०)* १. हमेशा। सदा। सर्वदा। २. रात और दिन।

रातपाळी—*(ना०)* १. मिल या कारखाने का रात को चालू रहना। २. रात को काम करने की ड्युटी।

रातब—*(ना०)* १. घोड़ों के लिये बनाई जाने वाळी एक प्रकार की लापसी। २. लापसी।

रात-बासी—*(वि०)* जिसको पकाये, बनाये या स्थिति में आये पूरी रात बीत गई हो। रात भर पड़ा हुआ हुआ (भोजनादि)।

रात बासो—दे० रातवासो।

रात बिरत—दे० रात बिरात।

रात बिरात—*(अव्य०)* १. समय-बेसमय। वक्त-बेवक्त। २. जब कभी। रात या दिन में जब कभी। ३. जब मौका मिले। **रात-बेरात**।

रात-राजा—*(न०)* १. उलूक। **घूघू**। **राजा**। २. चोर।

रात-राणी—*(ना०)* एक वृक्ष विशेष जिसके पुष्प रात्रि में सुगंधि देते हैं।

रातरोळो—*(न०)* १. रात्रि युद्ध। २. रात को किया जाने वाला आक्रमण। रात्र्याक्रमण। ३. काम युद्ध। संभोग।

रातळ—*(ना०)* गिद्धनी। **श्रीभक्षण**।

रात-वरत—दे० रात बिरत।

रात-वासी—*(वि०)* १. रात का बचा हुआ बासी (भोजन)। २. रात्रि पर्यन्त विश्राम करने वाला। *(न०)* रात्रि का विश्राम।

रात वासो—*(न०)* १. रात में कहीं पर किया जाने वाला मुकाम। रात के समय डाला जाने वाला पड़ाव। २. यात्रा में रात को विश्राम करने का स्थान। रात्र्याराम। **रात-पड़ाव**। रात्रि विश्राम।

रातवाह—दे० रातीवाह।

रात-वाहाऊ—*(न०)* १. रात्रि दूत। २. रात्रिचर। *(वि०)* रात्रि को आक्रमण करने वाला। **रातवाहो**।

रातवाहो—*(न०)* १. रात को किया जाने वाला आक्रमण। रात्र्याक्रमण। २. रात्रिदूत। ३. रात्रिचर। *(वि०)* रात को आक्रमण करने वाला। **रात-वाहाऊ**।

रातंग—*(न०)* गिद्ध पक्षी। **गीध**।

रातंबर—*(न०)* सूर्य।

राता देई—*(ना०)* १. माता का विशिष्ट नाम। मां का सम्मान सूचक नाम। माता। २. लोक गीतों में माता का आदर सूचक नाम।

रातांखियो—*(न०)* रक्त वर्ण नेत्र। *(वि०)* रक्त वर्ण नेत्र वाला। २. क्रोध से हुये लाल नेत्रों वाला।

रातिव—दे० रातब।

रातो—*(ना०)* १. लाल मिट्टी। **हिड़मच**। *(वि०)* १. लाल रंग की। **लाल**। २. अनुरक्ता।

राती चोळ—*(वि०)* गहरी लाल।

रातीजगो—दे० रतजगो।

राती-जनादी—*(ना०)* १. तांबे का अत्यल्प मूल्य का एक प्राचीन सिक्का। जनादी। २. अल्प से भी अल्प धन।

फूटी बादाम। फूटी कोडी। २. निर्धनता। रातीपाई।

रातीपाई—दे० राती-जनादी।

राती-वासो—दे० रातवासो।

रातीवाह—दे० रातवाहो।

रातो-वाहो—दे० रातवाहो।

रातींधो—*(न०)* १. रात को नहीं दिखने की बीमारी। रात्र्यांध रोग। रतौंधी।

राते—*(अव्य०)* १. रात में। २. रात को।

रातो—*(वि०)* १. लाल। लाल रंग का। २. लाल रंगा हुआ। ३. आसक्त। अनुरक्त। ४. उन्मत्त। *(न०)* खून। रक्त। लोही।

रातो-कोट—*(न०)* पोकरण (मारवाड़) के किले तथा कोट का नाम।

रातो-चंदण—*(न०)* लाल चंदन।

रातो-चुट—दे० रातो चोळ।

रातो-चोळ—*(वि०)* गहरा लाल। खूब लाल। रातोचुट।

रातोड़ो—*(वि०)* १. लाल रंग का। २. लाल।

रातो-पीळो—*(अव्य०)* क्रोधावेश में। *(वि०)* १. क्रोध करने वाला। जल्दी गरम हो जाने वाला। २. क्रोधित। उत्तेजित।

रातो-मातो—*(वि०)* १. हृष्ट-पुष्ट। मोटा और पुष्ट। ताता-माता। सेंठो। २. हृष्ट-पुष्ट और मस्त।

रातो-रात—*(अव्य०)* १. रात ही रात में। २. रात भर में। ३. दिन के सिवाय रात में भी। ४. दिन उगने के पहले। सूर्योदय हो उसके पहले। ५. रात में ही। सूर्यास्त से सूर्योदय तक।

रात्रि—*(ना०)* रात। रजनी।

राद—दे० राध सं० १.

रादनी—*(ना०)* १. बिजली। विद्युत। तड़िता। खिवण। २. वज्र।

रादोड़ो दे० राधोड़ो।

राध—*(ना०)* १. पीव। मवाद। पीप। रसी। राधोड़ो। २. वैशाख मास।

राधा—*(ना०)* १. श्रीकृष्ण की परम अनुरागिनी एक गोप कन्या। राधिका। २. बिजली। ३. प्रीति। प्रेम। ४ वैशाख की पूर्णिमा। ५. सारथि अधिरथ की पत्नी का नाम।

राधा-किशन—*(न०)* राधा और कृष्ण। राधा-कृष्ण।

राधा-कृष्ण—*(न०)* राधा और कृष्ण।

राधा-वल्लभ—*(न०)* १. एक वैष्णव संप्रदाय। २. श्रीकृष्ण।

राधा-वेध—*(न०)* १. मच्छ-वेध। २. लक्ष्य-वेध। ३. अर्जुन।

राधेय—*(न०)* महादानी कर्ण। (धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ की पत्नी राधा द्वारा पालित)।

राधेश्याम—*(न०)* राधा और कृष्ण।

राधोड़ो—दे० राध सं० १.

रान—*(वि०)* वीरान। उजाड़। *(न०)* १. जंगल। २. जांघ। जंघा। साथळ। रांग।

रानल—दे० राणल।

रानलवर—दे० राणलवर।

राफ—*(ना०)* १. मुखविवर। २. मुख तथा होठों की दोनों ओर की लंबाई। ३. होंठ। ओष्ठ। ४. सांप का फन। ५. मुसलमान।

राफट रोळो—*(न०)* अव्यवस्था। गड़बड़।

राफड़ो—*(न०)* १. चींटियों का बिल। कीड़ी-नगरो। २. चूहे का बिल। बर। ३. विवर।

राफाँ फाटणो—(मुहा०) घमण्ड होना या करना।

राब—*(ना०)* १. बाजरी या जुआर के आटे को छाछ में पकाकर बनाया हुआ एक पतला पेय या लेह्य भोज्य पदार्थ। राबड़ी। २. गन्ने का रस जो चासनी जैसा गाढ़ा होता है।

राबड़ियो—*(न०)* १. दे० राब। २. रबड़ी। बसौंधी।

राबड़ी—*(ना०)* दे० राब।

राबड़ो—दे० राब।

रावता—*(न०ब०व०)* परस्पर मेज-जोल। मित्रता। दोस्ती। सौहार्द। मेळ-जोळ।

राबोड़ियो—दे० राबड़ियो।

राबोड़ी—*(ना०)* १. दे० राब। २. दे० सी-राबड़ी (सीरावड़ी)।

राम—*(न०)* १. दशरथनंदन राम जो विष्णु का अवतार माने जाते हैं। २. बलराम। ३. परशुराम। ४. ईश्वर। ५. तीन की संख्या। ६. शक्ति। बल। ७. साहस। हिम्मत। ८. प्राण। ९. परमेश्वर का एक नाम। १०. सर्व में रमने वाला राम।

रामइयो—*(न०)* १. बादल। २. बिना सूंड का चड़स। ३. श्रीराम। *(वि०)* १. सुंदर। २. सुखदायक।

राम करणो—*(मुहा०)* मृत्यु होना। मरना।

रामकली—*(ना०)* एक राग।

राम-कहाणी—*(ना०)* १. बीतक कथा। २. लंबी बात। ३. दुख की बात।

रामकी—*(ना०)* साधु की गृहस्थ-शिष्या (व्यंग्य में)। वह गृहस्थ-शिष्या जिसका किसी साधु के साथ अनुचित संबंध हो।

राम केळो—*(न०)* एका बढ़िया केला।

रामको—*(न०)* रामकी का गुरु (व्यंग में)।

राम-गंगा—*(ना०)* १. एक नदी। २. एक पक्षी।

राम-चरित-मानस—*(न०)* तुलसी-कृत रामायण का नाम।

रामचंगी—*(ना०)* एक प्रकार की बंदूक।

रामचंद्र—*(न०)* दशरथ पुत्र श्रीराम। अवधपति राम।

राम-चिड़ी—*(ना०)* एक प्रकार की चिड़िया।

रामछो—*(न०)* बैल की की ललाट पर सुंदरता के लिए बांधी जाने वाली सूत की जाली।

रामजणी—*(ना०)* १. गणिका। रामजनी। पातर। २. नृत्य करने वाली। नर्तकी। नटी। नाचण।

रामजन—*(न०)* १. श्रीराम का भक्त। २. साधु। संत।

राम जाणे—*(अव्य०)* १. भगवान जाने। २. कुछ पता नहीं। मालूम नहीं। क्या पता।

रामजी—*(न०)* १. श्रीराम। २. परमात्मा।

रामजी-री-गाय—*(ना०)* वीरबहूटी। इंद्रवधू नामक लाल कीड़ा। मामोल्यो। मामलियो। *(वि०)* सरल स्वभाव का। अल्ला की गाय जैसा।

रामजी-रो घोड़ो—*(न०)* टिड्डी के जैसा आठ लम्बे पांवों का एक कीड़ा।

राम-जोत—*(ना०)* १. एक वनस्पति। २. ज्योति स्वरूप राम। ३. परमात्म-प्रकाश।

रामझारो—*(न०)* टोंटी वाला एक जल-पात्र।

राम-डोळी—*(ना०)* अरथी । रथी । **सीढ़ी** ।जनाजा ।

राम-ढोल—*(न०)* १. बड़ा ढोल । २. बड़ा नगाड़ा ।

रामण—*(न०)* रावण । दशानन ।

रामणहथो—दे० रावणहथो ।

रामत—*(ना०)* १. खेल । २. ख्याल । तमाशा । अभिनय । ३. लोकाभिनय । **लोक-रमत** । **रम्मत** । ४. ईश्वर की लीला । ५. बाजी । दाँव । ६. मजाक । ७. रास नृत्य । ८. मदारी का खेल । ९. मैथुन-क्रीड़ा ।

राम-तारक—*(न०)* 'राम' का तारक मत्र—'रां रामायनमः' ।

रामतियो—*(न०)* १. खिलौना । २. योनि । भग (व्यंग्य में) ।

राम-तुलसी—*(ना०)* एक प्रकार की बड़े पत्तों वाली तुलसी ।

राम-तोरू—*(ना०)* १. मछली । **माछळी** । (सधूकड़ी भाषा) २. एक प्रकार की तुरई ।

राम-दळ—*(न०)* १. बड़ी सेना । २. राम की सेना ।

रामदुवारो—दे० राम दुआरो ।

रामदास—*(न०)* १. श्री राम का भक्त । २. हनुमान । ३. छत्रपति शिवाजी के गुरु का नाम ।

राम-दासियो—*(वि०)* १. असमर्थ । निर्बल । २. गरीब । दीन । दुखी । ३. छल छिद्र नहीं जानने वाला । सीधा । भोळो ।

राम-दुआरो—*(न०)* राम स्नेही साधु के रहने का स्थान । राम द्वारा ।

राम-दुवाई—*(ना०)* १. राम की शपथ । **रामजी री आण** । २. सौगंध ।

राम-दुहाई—दे० राम दुवाई ।

राम-दूत—*(न०)* श्री हनुमानजी ।

रामदे पीर—दे० रामदेवजी तँवर ।

रामदेवजी तँवर—*(न०)* एक प्रसिद्ध लोकदेवता । रामदेवरा में इनकी समाधि बनी हुई है, इन्हें मुसलमान भी पूजते हैं, अतः यह रामसा-पीर अथवा रामा-पीर भी कहाते हैं ।

राम-देवरो—*(न०)* रामदे पीर का समाधि स्थान । रूणीचो गाँव ।

रामद्वारो—दे० राम दुआरो ।

राम-धरम—(न०) १. धर्मपूर्वक की हुई शपथ । सौगंध । २. राम को साक्षी रूप समझकर की हुई प्रतिज्ञा या सौगंध । ३. ईमान । राम-धर्म ।

राम-धर्म—दे० राम धरम ।

रामधाम—(न०) १. साकेत लोक जहाँ भगवान राम रूप में बिराजते हैं । २. अयोध्या । ३. स्वर्ग । ४. मृत्यु ।

रामधुन—*(ना०)* राम नाम की ध्वनि । राम नाम का जपन ।

रामनवमी—*(ना०)* चैत्र शुक्ला नौमी । श्री रामचन्द्र का जन्म दिन ।

राम-नाम सत है—*(अव्य०)* मृतक को श्मशान ले जाते समय सामूहिक रूप से बोला जाने वाला बोल ।

रामनामी—*(ना०)* १. गले में पहिनने का एक गहना । २. मीनाकारी के काम का राम नाम अंकित एक कंठाभूषण । ३. राम नाम से अंकित एक उपवस्त्र । रामनामी दुपट्टा । राम उपरना । **राम खेस** ।

रामनौमी—दे० रामनवमी ।

राम पद—*(न०)* १. मृत्यु । २ मोक्ष । **राम शरण** ।

राम-फळी—*(का०)* तेल में तली और मिर्च मसाले लगी ग्वार-फली।

राम-बाटी—दे० राम-रोटी।

राम-बाण—*(वि०)* १. अचूक। अमोघ। कभी निष्फल नहीं जाने वाला। २. अवश्य और तुरन्त लाभ करने वाली (औषधि)। ३. अत्यन्त प्रभावोत्पादक (औषधि, उपाय या बात)। *(न०)* कभी निष्फल न जाने वाला रामजी का बान।

राम-भक्त—*(न०)* १. राम का उपासक। २. हनुमान।

राम-भरोसै—*(अव्य०)* १. ईश्वराधार। २. राम के भरोसे पर।

राम-भोग—*(न०)* १. एक प्रकार का चावल। २. एक प्रकार का आम। ३. श्रीराम को अर्पण किया हुआ नैवेद्य।

राममंत्र—*(न०)* १. श्रीराम का तारक मंत्र। 'रां रामायनमः'। २. 'राम' नाम।

राम-रक्षा-स्तोत्र—*(न०)* सब आपत्तियों से रक्षा करने वाला एक प्रसिद्ध राम-स्तोत्र।

राम-रज—*(न०)* १. पीलीरज। धेवड़ी। २. श्री राम की चरण रज।

रामरमी—*(ना०)* १. उस अभिवादन का नाम जो परस्पर 'राम-राम' कह कर किया जाता है। २. दीपावली, होली और नव-वर्ष लगने के दिन परस्पर किये जाने वाले अभिवादन का नाम।

रामरस—*(न०)* १. नमक। लूण। (सधूकड़ी भाषा)। २. राम की भक्ति का रस।

रामराज—*(न०)* १. श्रीराम का राज्य। २. श्री राम का न्याय से चलाया जाने वाला आदर्श और सुखी राज्य। श्री राम की, अनुपम सर्वहितकारी राज्य व्यवस्था। न्यायपूर्ण लोक हितकारी शासन। अत्यन्त सुखदायक राज्य।

राम-राम—*(अव्य०)* १. 'राम-राम' कह कर किया जाने वाला नमस्कार। अभिवादन। (मिलने या विदा होने के समय) २. आश्चर्य या दुख सूचक उद्‌गार।

राम-राम करो—*(अव्य०)* यह बात रहने दो, अब कुछ होने का नहीं। शांति धारण करो। धीरज धरो इत्यादि उद्‌बोधन।

राम-राम-सा—दे० राम राम सं० १

राम-रासो—*(न०)* १. माधवदास दधवाड़िया कृत राम कथा का प्रसिद्ध डिंगल ग्रंथ। २. लड़ाई। झगड़ा (व्यंग्य)।

राम-रोटी—*(ना०)* मालपूआ (सधूकड़ी भाषा)। २. बड़ी मोटी रोटी।

राम-रोळो—*(न०)* १. लड़ाई। २. शोर-गुल (व्यंग्य)।

रामलीला—*(ना०)* श्रीराम के चरित्र की लीलां। प्रायः तुलसीकृत रामायण के आधार पर खेला जाने वाला एक नाटक। राम की लीलाओं पर आधारित लोक-नाट्य।

रामशरण—*(अव्य०)* १. श्री राम की शरण। २. मृत्यु।

राम-सनेही—*(न०)* १. राम स्नेही संप्रदाय। सर्व में रमने वाले राम की उपासना करने वाला संप्रदाय। २. राम स्नेही संप्रदाय का साधु। ३. रामस्नेही सम्प्रदाय का अनुयायी। *(वि०)* १.

राम स्नेही संप्रदाय का। २. रामस्नेही संप्रदाय से संबंधित। ३. राम में स्नेह रखने वाला।

राम-सनेही-साधू—*(ना०)* रामचरणजी (१७१९–'९८ ई०) द्वारा प्रवर्तित रामस्नेही संप्रदाय का साधु।

राम सरण होणो—*(मुहा०)* मरना। मृत्यु होना।

रामसरी—*(ना०)* १. एक चिड़िया। रामश्री। २. एक राग।

रामसा-पीर—*(ना०)* दे० रामदेवजी तुंवर।

रामा—*(ना०)* १. लक्ष्मी। रमा। २. सीता। ३. स्त्री। ४. सुंदर स्त्री। ५. रुक्मिणी।

रामानंद—*(ना०)* रामावत संप्रदाय के स्थापक एक वैष्णवाचार्य (सं० १३५६–१४६७)।

रामानंदी—*(वि०)* १. रामानंद का अनुयायी। २. रामावत संप्रदाय संबंधी।

रामानुज—*(ना०)* १. विशिष्टाद्वैत-वाद के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य। (वि० सं० १०७३–११९४)। २. एक सम्प्रदाय। ३. राम के छोटे भाई।

रामानुजी—*(वि०)* १. रामानुज सम्प्रदाय का अनुयायी। २. रामानुज संप्रदाय का। ३. रामानुज सम्प्रदाय संबंधी।

रामायण—*(ना०)* १. वह ग्रंथ जिसमें श्रीराम के चरित्र का वर्णन हो। वाल्मीकि रामायण, तुलसीकृत रामायण, आध्यात्मा-रामायण इत्यादि रामायण ग्रंथ। २. जीवन-कथा।

रामा-धुध—*(ना०)* राम का आयुध। धनुष।

रामारै—*(अव्य०)* १. 'राम मारचा रै' का संक्षिप्त रूप। राम के द्वारा मारा हुआ अथवा जिस पर राम कुपित हो गया हो। दईमारा। हत भाग्य। २. इस आशय की एक गाली। दे० रामारघो।

रामारघो—*(अव्य०)* १. 'राम मारघो' (राम मारियो) का अपभ्रष्ट या संक्षिप्त रूप। २. दे० रामारै सं० १, २,३ एक सम्पुट। एक सखुन-तकिया।

रामावत—*(ना०)* आचार्य रामानन्द द्वारा चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय। *(वि०)* १. रामावत संप्रदाय का। रामानंदी। २. रामावत संबंधी।

रामावतार—*(ना०)* विष्णु का राम रूप में अवतार।

रामा-सामा—*(अव्य०)* १. नमस्कार। २. किसी भी प्रकार के नमस्कार का एक नाम। ३. होली, दीवाली पर परस्पर किये जाने वाले अभिवादन का नाम। रामरमी।

रामेकड़ो—दे० रमकड़ो।

रामेड़ो—*(ना०)* एक फसल वाला खेत। बरसाती खेत।

रामेश—दे० रामेश्वर।

रामेश्वर—*(ना०)* १. श्रीराम द्वारा स्थापित भारत के दक्षिण समुद्र तट का शिव-लिंग। २. शिव। ३. दक्षिण भारत का प्रसिद्ध शैव-तीर्थ।

रामैयो—*(ना०)* १. राम का नाम (लोक काव्य)। राम। २. सर्व में रमने वाला नाम 'राम'। ३. बिना सूंड का मोट। चड़स। कोस।

रामोड़ी—*(ना०)* एक वनस्पति।

राय—*(ना०)* १. राजा। २. रानी। ३. स्वामिनी। मालकिन। ४. देवी। राय काछ-पंचाळ। ५. तांबा (सोना में)

मिला हुआ। ६. राज्य। ७. किसी वस्तु के फट जाने पर दिखाई पड़ने वाला रेखाकार छिद्र। दरार। रा। *(ना०)* १. मत। अभिप्राय। ४. सलाह। परामर्श। ५. कायस्थ जाति का पर्याय या संबोधन। ६. एक उपाधि।

राय-आंगण—*(ना०)* १. रनिवास का बड़ा चौक। २. महल के आगे का चौक। ३. राज्यांगन।

राय-कँवर—दे० राजकुमार।

राय-कँवरी—दे० राजकुमार।

राय-कुमार—दे० राज-कुमार।

राय-कुमारी—दे० राज-कुमारी।

राय केळ—*(ना०)* १ एक प्रकार का बढ़िया केला। राम-केळो। २ एक लता।

रायकाणी—*(ना०)* रायका जाति की राइकाणी स्त्री। रबारण।

रायको—*(ना०)* भेड़, बकरियाँ तथा ऊँटों का समूह रखने और चराने तथा पालने या व्यवसाय करने वाली जाति का मनुष्य। राइको। ऊंट, भेड़-बकरी रखने वाला। रबारी। गड़रिया। रैबारी।

राय-जादी—*(ना०)* १. राजा की पुत्री। राज-कुमारी। २. दुलहिन। ३. वैवाहिक लोक-गीतों में दुलहिन का एक विशेषण।

राय-जादो—*(ना०)* १. राजा का पुत्र। राज-कुमार। २. दुलहा। ३. वैवाहिक लोक-गीतों में गाया जाने वाला दूल्हे का एक विशेषण।

रायजी—*(ना०)* १. कायस्थ जाति का एक उपनाम। २. कायस्थ। ३. कायस्थ का संबोधन। ४. कायस्थ का सम्मान सूचक नाम।

रायड़ो—*(वि०)* १. तांबा मिश्रित (सोना चाँदी)। २. दे० रायलो।

रायण—*(ना०)* एक वृक्ष और उसका फल। खिरनी।

रायण-कोकड़—*(ना०)* सूखा रायण फल। सूखी खिरनी।

रायतन—दे० राइतन।

राय-तेली—*(ना०)* १. बड़ा तेली। २. प्रतिष्ठित तेली। ३. एक लोक गीत का नायक। ४. राजा का तेली।

रायतो—दे० राइतो।

रायपसेणी—*(ना०)* राजप्रश्नी नामक एक जैन सूत्र।

राय-बहादुर—*(ना०)* अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली एक उपाधि।

रायरिख—*(ना०)* राजर्षि।

रायरो—दे० रायलो।

रायलो—*(ना०)* प्रायः गेहूँ के साथ उत्पन्न होने वाला एक पौधा और उसका तैलीय बीज।

रायवर—दे० राइवर।

राय-साधार—*(ना०)* राजाओं का रक्षक।

राय साहब—*(ना०)* १. एक उपाधि जो अंग्रेजों के काल में रईसों और राज-कर्मचारियों को दी जाती थी। २. दे० रायजी।

रायहर—*(ना०)* १. राजा। २. राजा का पौत्र। ३. राजा का वंशज।

राय-विकुंठ—दे० राय-वैकुंठ।

राय-वैकुंठ—*(ना०)* वैकुंठ पति। विष्णु।

राय-हिंदवाँ—*(ना०)* १. हिंदुओं का राजा। २. हिंदू राजा। हिंदू सम्राट। ३. हिन्दुस्थान का राजा। भारत सम्राट।

रायांगण—दे० राय-आंगण।

रायां-गुर—*(ना०)* राजाओं का राजा। बड़ा राजा। २. श्रेष्ठ राजा।

रायाँ-तन – *(न०)* १. राजवंश । २. राजवंश के लोग । ३. राजा लोग । ४. राजा ।

रायाँ-तिलक—*(न०)* राजाओं में तिलकरूप , श्रेष्ठ राजा ।

रायाँ-विभाड़—*(वि०)* बड़े-बड़े राजाओं का दमन करने वाला ।

रार—दे० राड़ ।

रारंग— *(न०)* १ नेत्र । आँख । २. लालनेत्र ; ३. क्रोधपूर्ण नेत्र ।

रारी— *(न०)* १. नेत्र । २ आँख । दे० रारंग ।

राळ— *(न०)* १. राल नाम का एक पेड़ । २. इस पेड़ का पीले रंग का एक जलनशील निर्यास । साल वृक्ष का रस । राल ।

रालड़ दे० राली ।

रालड़ी – *(न०)* राली । रल्लिका ।

राळणो *(क्रि०)* १. डालना । गिराना । २ ढकना । ओढ़ाना । ३. मिलाना । मिश्रित करना । ४. बिखराना । फैलाना । ५. धारण करना । ३. बिछाना ।

राळा-रोळो *(न०)* १. हो-हल्ला । शोरगुल । २. काम की खटपट । भाग-दौड़ तथा उतावल ।

राली *(न०)* गुदड़ी । रल्लिका । **रालड़ी** ।

राव- *(न०)* १. राजा । २. सरदार । ३. एक उपाधि । ४. बहीबंचा भाट । वंशावली लिखने-बाँचने वाला भाट । ५. एकाक्षी (व्यंग्य) काणो ।

रावउत— *(न०)* राजकुमार । राजा का पुत्र ।

रावटी – *(न०)* १. गोल छज्जा । गुंबज । २. गोल छज्जा वाला मकान । गुंबज वाला घर । ३. छोटा तंबू । ४. मेहराब । ५. एक प्रकार का खुला व हवादार महल ।

रावण—*(न०)* १. लंका का प्रसिद्ध राक्षस राजा जिसे श्रीराम ने मारा था । दशानन । २. भैंसा । **पाडो** ।

रावण-खंडी—*(वि०)* १. ओष्ट खंडिता । २. रदन खंडिता ।

रावण-खंडो—*(वि०)* जिसका ऊपर का होठ खंडित हो ।

रावण-रिपु—*(न०)* श्रीराम ।

रावण-हथ्थो—*(न०)* एक तंतुवाद्य ।

रावणा-राजपूत—*(न०)* एक जाति विशेष ।

रावणो—*(न०)* रावणाराजपूत जाति का व्यक्ति । दे० रहावणो ।

रावत—*(न०)* १. राजा । २. छोटा राजा । सरदार । ३. भील जाति या इस जाति का मनुष्य । ४. शूरवीर । ५. कई जातियों की एक अल्ल । ३. दोनापत्तल बनाने वाली मारवाड़ की एक जाति । **बारी** ।

रावतरी —*(न०)* सोने के आभूषण झालने का टाँका ।

रावत-वंश—*(न०)* राजवंश ।

रावताई—*(न०)* १. रावतपना । राजापना । २ रावत की उपाधि । ३. रावत का काम ।

रावताणी—*(न०)* १. रानी । २. रावत जाति की स्त्री ।

रावतेस—*(न०)* १. राजा । २. बड़ा राजा ।

राव-राजा—*(न०)* १. एक उपाधि । २. राजाओं की उप-पत्नियों से उत्पन्न संतान । (जोधपुर) ।

रावळ—*(न०)* १. जैसलमेर, डूंगरपुर आदि के राजाओं की उपाधि। २. भोजादित्य से रावल करण तक की २६ पीढ़ी तक चित्तौड़ के शासकों की उपाधि। ३. राजा। ४. राजा की एक उपाधि। ५. मारवाड़ के (जसोल और सिणधरी आदि के) कई जागीरदारों की उपाधि। ६. न ज के अन्दर मिले हुये बारीक कंकर के दाने। ७. गुजरात में ब्राह्मणों की एक अल्ल। ८. एक गाने-बजाने वाली जाति। ९. बदरीनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी की उपाधि।

रावळिया—*(न०ब०व०)* अनाज में मिले हुये छोटे-छोटे कंकड़।

रावळियो—*(न०)* १. खेल तमाशे दिखा कर जीवन निर्वाह करने वाली जाति का मनुष्य।

रावळी—*(वि०सर्व०)* आपकी। *(वि०)* १. रावले की। २. रावला सम्बन्धी।

रावळै—*(सर्व०)* आप, तुम और वे के स्थान पर होने वाला आदर सूचक प्रयोग। आप। तुम। *(अव्य०)* १. रावळा में। २. रावला की ओर। ३. रावळा को।

रावळो—*(न०)* १. जागीरदार का घर। २. ठाकुर का अंतःपुर। ३. जागीरदार की कचेरी। *(सर्व०वि०)* १. आपका। श्रीमान् का। जैसे रावळो हुकम माथै ऊपर। २. भवदीय। रावरा। आपका। आपरो। *(वि०)* १. जागीर संबंधी। २. रावळा संबंधी।

राव-साहब—*(न०)* अंग्रेजी शासन काल में दी जाने वाली एक उपाधि।

रावी—*(ना०)* पंजाब की एक नदी।

राशि—*(ना०)* १. ढेर। ढिगलो। २. समूह। जैसे, नक्षत्र राशि। ३. नक्षत्रों के बारह समूहों में का प्रत्येक। मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन, इनमें से कोई। ४. बारह की संख्या। ५. गणित की संख्या। अंक।

राष्ट्र—*(न०)* देश। राज्य।

राष्ट्र-कवि—*(न०)* १. राष्ट्र द्वारा मान्य कवि। २. राष्ट्र भावना से युक्त कविता करने वाला कवि।

राष्ट्रकूट—*(न०)* १. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश। २. राठौड़।

राष्ट्रपति—*(न०)* राष्ट्र का संवैधानिक सर्वोच्च शासक।

राष्ट्र-भाषा—*(ना०)* समस्त देश में मान्य और प्रचलित सर्व सामान्य भाषा।

राष्ट्रश्येना-देवी—*दे०* राठासण देवी।

राष्ट्रसंघ—*(न०)* अनेक राष्ट्रों की सदस्यता वाली विश्व-संस्था। यूएनओ।

रास—*(न०)* १. बैलों के नाक में बाँधी जाने वाली रस्सी। बागडोर। राह। मुंहरी। २. लगाम। ३. सामूहिक रूप से गोलाकार फिरते हुए किया जाने वाला नाच और गायन। नर-नारियों द्वारा गाते बजाते गोलाकार नाचने की सम्मिलित क्रीड़ा। ४. संगीतमय नृत्य। लास्य। *दे०* राशि। ५. काव्य। जैसे बाहुबलि रास। ६. खेल। क्रीड़ा। ७. रस्सी। डोरी। ८. धनुष की डोरी। प्रत्यंचा।

रासड़ी—*दे०* राहड़ी।

रास-क्रीड़ा—*दे०* रास-लीला।

रास-क्रीळा—*दे०* रास लीला।

रास-थळ—*(न०)* नृत्य शाला।

रास-धारी—*(न०)* रास अभिनय करने वाला। **कीर्तनियो**।

रासभ—*(न०)* गदहा। खर। **गधो**। **रासभो-गधेड़ो**।

रासभी—*(ना०)* गदही। **गधी**। **गधेड़ी**। **रासबी**।

रासभो—*(न०)* गदहा। **रासभ**। **गधेड़ो**। **रासबो**। **खर**।

रास-मंडळी—*(ना०)* रास खेलने वालों की मंडली।

रास-लीला—*(ना०)* १ श्रीकृष्ण की गोपियों के साथ की हुई रास-क्रीड़ा। २. कीर्तनियों द्वारा किया जाने वाला कृष्ण की रास लीला का अभिनय।

रास-विलास—*(न०)* रास क्रीड़ा।

रास-विहारी—*(न०)* श्रीकृष्ण।

रासी—*(वि०)* १. हलकी किस्म का। घटिया। खराब। २. मिलावट वाला। ३ मध्यम। *दे०* राशि।

रासीक—*(वि०)* साधारण। *दे०* **राखो**।

रासो—*(न०)* १. डिंगल या पिंगल में लिखित किसी राजा का चरित्र, युद्ध, वीरता, प्रेम विषयक वर्णन का काव्य ग्रंथ। २. एक प्रकार का वीर-रस का काव्य। ३ युद्ध। लड़ाई। ४. बनाव। ५ भीड़भाड़। ६. हो-हल्ला। ऊधम। ७. किसी काम का आयोजन। ८. कलह। झगड़ा।

रास्तो—*(ना०)* १. मित्रता। २. मेल-मिलाप। ३. सच्चाई। ईमानदारी।

रास्तो *(न०)* १. मार्ग। राह। **रस्तो**। २. उपाय। ३ प्रथा। रिवाज। ४. सच्चा उपाय। ५. सन्मार्ग।

राह—*(ना०)* १. रास। लगाम। **बागडोर**। २. मार्ग। रास्ता। **रस्तो**। ३. प्रतीक्षा। **वाट**। ४. रिवाज। प्रथा। रीति। ५. नियम। ६ सम्प्रदाय। धर्म। ७. नौ ग्रहों में से एक। राहु। **अथड़**।

राह-खरच—*(न०)* यात्रा-व्यय।

राहग-रो-मगरो—*(न०)* मेवाड़ का एक पर्वत।

राहगीर—*(न०)* मुसाफिर। पथिक। **मारगू**। **वटाऊ**। **पंथी**।

राह-चक—*(न०)* युद्ध। **वेढ**।

राहजनी—*(ना०)* लूटपाट। डाकाजनी।

राहड़—*(ना०)* १. संध्या। **सांझ**। २. लड़ाई।

राहड़-वेळा—*(ना०)* १. संध्या समय। २. वह समय जिसमें आसमान गर्द और कुहरे से छाया हुआ हो। ३. कुसमय।

राहड़ी—*(ना०)* रास। रस्सी।

राहणो—*(न०)* राजा की परिग्रह। **परचै**। *दे०* राहावणो।

राहत—*(ना०)* १. आराम। २. छुटछाट।

राहदारी—*(ना०)* १. रास्ते पर चलने वाले वाहन, पशु-समूह, माल-सामान आदि पर लगने वाला कर। २. किसी राज्य की सीमा में होकर माल ले जाने पर लगने वाला कर। ३. रास्ते पर ले जाने वाले माल के ऊपर लगने वाला कर। **बहतीवाण**। **वाटवळ**।

राहदेखणी—*(मुहा०)* प्रतीक्षा करना। इंतजार करना।

राह-बी—*(न०)* १. सेना के दोनों पक्ष। २. हिन्दू-धर्म और मुस्लिम-धर्म। ३. हिन्दू और मुसलमान। **बिहुंराह**।

राह-बेई—*दे०* राह-बी।

राह-रीत—*(ना०)* १. चलती आई सामाजिक परंपरा। रीति। रूढ़ि। राह-रीत। २. व्यवहार।

राह-वेधी—*(वि०)* १. दूरदर्शी। दूरदेश। २. युद्ध-विशारद। युद्ध विशेषज्ञ। ३. युद्धाग्रणी। ४. कूटनीतिज्ञ। ५. लूट-खसोट करने वाला। लूटेरा। ६. मार्ग-दर्शक। **भोमियो**.

राहाड़—*(ना०)* लड़ाई। युद्ध।

राहाळो—*(वि०)* १. वीर। युद्ध करने वाला। *(ना०)* १. वीर पुरुष। योद्धा। २. सन्मार्गी। ३. राहगीर।

राहावणो—*(ना०)* १. सेवक। चाकर। २. राजा या जागीरदार द्वारा चाकरानी, गोली या रखेल स्त्री से उत्पन्न की हुई संतान। गोला। **रावणो**। ३. थाना। चौकी। ४. सैनिक। शिविर के सैनिक। ५. चौकीदार। ६. रेहन रखी हुई वस्तु। *(वि०)* रखने वाला।

राही—*(ना०)* राहगीर। पथिक। **पंथी**। **बटाऊ**। *(वि०)* १. सन्मार्गी। २. अनुभवी। ३. अभ्यासी। आदत वाला।

राही-बाही—*(ना०)* १. सुख-चैन। २. किसी संकट काल के गुजर जाने के बाद की सुख-शांति। ३. परिचय, पहिचान आदि से मन लगना। *(वि०)* अभ्यस्त।

राहु—*(ना०)* नौ ग्रहों में का एक। एक अमंगलकारी ग्रह। सूर्य को ग्रसने वाला ग्रह। **अ-धड़**।

राहो—*दे०* आगड़।

राँक—*(वि०)* १. गरीब। दरिद्री। २. दुखी। **रंक**। ३. डरपोक। *(ना०)* भिखारी। **मंगतो**। **भीखमंगो**।

राँकड़ी—*(वि०)* १. दारिद्रिणी। गरीबनी। **गरीबणी**। २. तुच्छ। हीन। *(ना०)* भिखारिन। **मंगती**।

राँग—*(ना०)* १. नींव। मूल भित्ति। भीत की जड़। २. दीवाल खड़ी करने के लिए नाली के रूप में खोदा जाने वाला गहरा खड्डा। ३. मूल। आधार। ४. आरंभ। ५. झड़बेरी की जड़ की छाल जो चमड़ा रंगने (साफ करने या कमाने) के काम में आती है। ६. **जाँघ**। **साथळ**। *(वि०)* हैरान। परेशान।

राँगड़ी—*(ना०)* मैंस का तुच्छार्थक नाम।

राँगण—*(ना०)* १. रंगरेज, छींपे आदि का कपड़े रंगने का व्यवसाय। २. वह स्थान जहाँ बड़े रूप में कपड़े रंगने के अभिप्राय से रंग के पानी को गर्म करने के लिये भट्टियें बनी रहती हैं।

राँग-राँग—*(वि०)* हैरान। परेशान। क्लान्त।

राँगल—*(भू०कृ०)* रंगा हुआ।

राँगे-आवणो *(मुहा०)* १. वश में आना। २. परिस्थिति सुधारना।

राँगो—*(ना०)* १. एक धातु। सीसा। रांगा। २. कलई।

राँघड़—*(वि०)* १. शूरवीर। २. उद्दण्ड। **रंघड़**। *(ना०)* एक मुसलमान जाति।

राँघड़पण *दे०* राँघड़ाई।

राँघड़ाई—*(ना०)* १. शूरवीरता। २. उद्दंडता। **रांघड़पणो**।

राँचणो—*दे०* राचणो।

राँझो—*(ना०)* १. तकरार। २. उलझन। ३. विघ्न। बाधा। ४. रंज।

रांट—*(ना०)* १. पाँवों का टेढ़ापन। टेढ़ा पाँव। २. खाट का टेढ़ापन। ३. लकड़ी

आदि में पड़ने वाला बल। ४. ऐंठन। टेढ़ापन। ५. विरोध। अनबन। नाराजी।

राँटीलो—*(वि०)* १. टेढ़ा। मुड़ा हुआ। २. मिजाजी।

राँटो—*(वि०)* १. टेढ़े पाँवों वाला। २. टेढ़ा। ऐंठन वाला। ३. नाराज। ४. किसादी। **टंटाखोर**।

राँड—*(ना०)* १. विधवा स्त्री। २. वेश्या। ३. स्त्रियों के लिये अपशब्द या गाली। ४. कुलटा स्त्री।

रांडणो—*(न०)* १. विधवा होना। २. विधवा बनाना।

रांडापो—दे० रंडापो।

राँडाळो—*(न०)* एक गाली। *(वि०)* राँड वाला। विधवा से उत्पन्न।

राँडियो—*(वि०)* १. विधुर। रंडुवा। २. नपुंसक। ३. स्त्रियों के वश में रहने वाला। स्त्रैण। ४. डरपोक। भीरू।

राँडी—दे० रांड। दे० रंडी।

राँडी-रांड—*(ना०)* १. निराश्रित विधवा। असहाय विधवा। २. विधवा।

राँडी-रोवणा—*(न०)* १. रोते हुए बात करना। २. व्यर्थ की बातें। ३. झगड़े-टंटे की बातें।

राँडोली—*(ना०)* विधवा।

रांडोलो—*(वि०)* १. विधुर। **वाँदो**। २. नपुंसक। नामर्द। ३. कायर। १. निर्बल।

राँढू—*(न०)* मोटी रस्सी। रस्सा।

राँत—*(ना०)* १. झंझट। २. झगड़ा। झमेला। ३. तकरार। *(वि०)* कंजूस।

राँती—*(वि०)* १. झगड़ाखोर। २. निर्बल। कमजोर। ३. कंजूस। ४. मनमैला।

रांदल—दे० रंदला।

रांधण—*(ना०)* १. राँधने का धंधा करने वाली स्त्री। भोजन बनाने का धंधा करने वाली स्त्री। २. रांधने का काम।

रांधणियो—*(न०)* राँधनेवाला, रसोइया। भोजन बनाने वाला।

रांधणी—दे० रंधाणी।

रांधणो—*(क्रि०)* १. भोजन बनाना। खाना पकाना। २. हैरान करना (क्रोध में)।

राँप—*(ना०)* चमड़ा काटने का मोची का एक औजार। २. खेत में घास आदि काटने का एक औजार। **रांपड़ो**।

रांपड़ो—दे० राँप।

रांपणो—*(क्रि०)* रांपी से चमड़ा काटना।

रांपी—*(ना०)* चमड़ा काटने का मोची का एक औजार।

रांभणो—*(क्रि०)* गाय का बोलना। **रंभाणो**।

रांयण—दे० रायण।

रांस—*(ना०)* **डाँड**। परछत्ती।

रांसीलो—दे० रसीलो।

रिआयत—*(ना०)* १. कमी। छूट। छूट-छाट। **रवायत**। २. नरमी। ३. कृपा।

रिआया—*(ना०)* प्रजा। जनता।

रिकल—दे० रण-देवता।

रिक्त—*(वि०)* १. खाली। २. शून्य।

रिक्ता—*(ना०)* चतुर्थी, नौमी और चतुर्दशी तिथियों में से कोई तिथि।

रिक्थ—*(न०)* १. उत्तराधिकार में प्राप्त होने वाली सम्पत्ति। २. किसी व्यवसाय में लगाई जाने वाली पूंजी।

रिक्ष—*(न०)* रीछ।

रिख—*(न०)* १. ऋषि । २. नक्षत्र । तारा । ३. सात की संख्या ।

रिख-दूण *(वि०)* चौदह ।

रिख-पंति—*(ना०)* १. नक्षत्र पंक्ति । २. ऋषि पंक्ति ।

रिख-पूनम—*(ना०)* आषाढ़ी पूर्णिमा ।

रिखभ—दे० ऋषभदेव ।

रिखभ-देव—दे० ऋषभदेव ।

रिखमुकर—*(न०)* ऋष्यमूक पर्वत ।

रिखमूक—दे० रिखमुकर ।

रिखहेसर—दे० रिखहेसरु ।

रिखहेसरु—*(न०)* ऋषभेश्वर । ऋषभदेव ।

रिखियो—*(न०)* रामदेवजी का भाँभी जाति का भक्त ।

रिखी—दे० ऋषि ।

रिखीकेस—*(न०)* १. आबू पर्वत का एक तीर्थ । २. हरिद्वार के पास गंगा किनारे का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान । ऋषिकेश । ३. श्री विष्णु । ४. श्रीकृष्ण ।

रिखीसर—*(न०)* ऋषीश्वर । बड़ा ऋषि । **रिखेसर** ।

रिखेसर—दे० रिखीसर ।

रिग-झिग—*(ना०)* १. विवाद । २. झगड़ा-टंटा । ३. बोलचाल ।

रिगत-भिक्षा—*(ना०)* १. दुराग्रह से प्राप्त की हुई भिक्षा । २. तुच्छ बात ।

रिगवेद—*(न०)* ऋगवेद । चारों वेदों में से प्रथम वेद । यह दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना गया है ।

रिगसणो—*(क्रि०)* १. रेंगना । २. सरकना ।

रिचा—दे० ऋचा ।

रिजक—*(न०)* १. जीविका । आजीविका के साधन । वृत्ति । २. रोजी । खुराक । ३. अन्नजल । दानापानी । ४. जागीर । ५. संपत्ति । धनमाल ।

रिजको—दे० रजको ।

रिजग—दे० रिजक ।

रिजाई—*(ना०)* गिलाफ । रजाई । **सोरख** ।

रिजाळी—*(वि०)* बदमाश । चालाक (औरत) ।

रिझवार—*(ना०)* १. उत्सव । २. अत्योल्लास । ३. किसी उत्सव पर दिया जाने वाला बड़ा दान । ४. उदारता का अपूर्व दृश्य ।

रीझवाराँ-रिझवार—*(अव्य०)* १. उत्सव पर उत्सव । उत्सव ही उत्सव । २. उत्सवों पर किया जाने वाला नेगचार । दान वीरता । ३. उत्सवों पर व्यक्त की जाने वाली अपूर्व उदारता ।

रिझाणो—*(क्रि०)* १. प्रसन्न होना । २. लुभाना । ३. प्रसन्न करना । **रिझावणो** ।

रिझावणो—दे० रिझाणो ।

रिड़कणो—*(क्रि०)* भैंस का बोलना ।

रिड़मल—*(न०)* जोधपुर बसाने वाले राव जोधा के पिता रणमल का दूसरा नाम ।

रिड़ी—*(ना०)* १. उठी हुई पथरीली भूमि । २. छोटी पहाड़ी । टेकरी ।

रिढ—*(ना०)* भेड़ । **गाडर** ।

रिण—दे० ऋण । दे० रण ।

रिणताळ—दे० रणताळ ।

रिणतूर—*(न०)* १. एक वाद्य । २. रणवाद्य । रणतुरही ।

रिण-पलंग—*(न०)* रणशैया ।

रिणताळ—दे० रणताळ ।

रिणतूटो—*(वि०)* रणभूमि में लड़कर मरने वाला ।

रिणाई—*(वि०)* १. कर्ज। २. अभाव-ग्रस्त। ३. कर्जदाता।

रिणी—*(वि०)* १. कर्जदार लेने वाला। ऋणी। २. उपकृत। एहसानमंद। अनुग्रहीत।

रिणो—दे० ऋण।

रिणोई—दे० रणोही।

रित—दे० रूत। दे० रति।

रित-पति—*(न०)* १. कामदेव। २. ऋतु-पति। वसंत ऋतु।

रितवंती—*(ना०)* रजस्वला स्त्री। ऋतुमती।

रितु—दे० ऋतु।

रितु-पालटो—*(न०)* ऋतु परिवर्तन।

रितुराज—*(न०)* वसंत ऋतु। ऋतुराज। रितुराय।

रितुराय—दे० रितुराज।

रिद—*(न०)* जलाशय। तालाब। ह्रद।

रिदो—*(न०)* हृदय। हिरदो।

रिध—*(ना०)* १. धन। २. ऋद्धि। समृद्धि। ३. गणेशजी की एक पत्नी। ऋद्धि। ४. सफलता। ५. पूर्णता। *(न०)* प्रकार। भाँति।

रिधदाता—*(न०)* १. गणेश। गजानन। २. दानी।

रिध-सिध—*(ना०)* १. ऋद्धि और सिद्धि। सर्व सम्पत्ति। २. समृद्धि और सफलता। सुख-दो सम्पत्ति। ३. गणेशजी की पत्नियाँ के नाम।

रिधू—*(वि०)* १. अटल। २. श्रेष्ठ। ३. निश्चय। *(अव्य०)* निश्चय ही।

रिप—*(न०)* रिपु। शत्रु। वैरी।

रिपनाट—दे० रिपुनाट।

रिपियो—*(न०)* रुपया।

रिपु—*(न०)* शत्रु। रिप। वैरी। दुसमण।

रिपुघन—*(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला। रिपुघ्न। २. शत्रुघ्न।

रिपुनाट—*(वि०)* १. शत्रु के आगे नहीं झुकने वाला। २. शत्रुओं को नष्ट करने वाला।

रिपुराह—दे० रिमराह।

रिपोट—*(ना०)* १. किसी घटना का विवरण जो किसी को सूचना देने के लिये किया जाय। रिपोर्ट। २. किसी संस्था का कार्य विवरण।

रिबणो—दे० रीबणो।

रिबावणो—*(क्रि०)* खूब दुख देना।

रिबीजणो—दे० रीबीजणो।

रिम—*(न०)* १. शत्रु। रिपु। २. मुसलमान।

रिमझिम—*(न०)* १. नाचते समय झाँझर का होने वाला शब्द। २. छोटी बूंदों के रूप में होने वाली वर्षा की ध्वनि।

रिमझोळ—दे० रमझोळ।

रिमथाटचूर—*(वि०)* शत्रु सेना का नाश करने वाला।

रिमराह—*(न०)* १. राहु रूपी शत्रु। राहु के समान शत्रु। २. शत्रुपना। शत्रुता। ३. शत्रु के लिए राहु रूप। ४. नरक। ५. म्लेच्छ। ५. यवन। *(वि०)* १. शत्रुओं का नाश करने वाला। २. वीर। बहादुर।

रिमरेस—*(वि०)* शत्रु-संहारक। *(न०)* शत्रु-संहार।

रिमसेन—*(ना०)* शत्रु-सेना।

रिमहर—*(न०)* १. शत्रु। २. शत्रु-नाशक।

रियासत—*(ना०)* १. राज्य। २. जागीर। ३. हुकूमत।

रियासती—*(ना०)* रियासत संबंधी ।
रिर—दे० रीण ।
रिरहो—दे० रीणो ।
रिलकियो—*(ना०)* फटे पुराने कपड़ों की बनी हुई गुदड़ी । **रिलको** ।
रिलको—दे० रिलकियो ।
रिळमिळ—*(क्रि० वि०)* हिलमिल कर ।
रिल्लो—*(भू०कृ०)* भरा हुआ । **रेलम-छेल** ।
रिव—*(ना०)* सूर्य । रवि । **सूरज** ।
रिवताळ—दे० रवताळ ।
रिवताळो—दे० रवताळो ।
रिव-मंडळ—*(ना०)* सूर्य-मंडल ।
रिव-संदण—*(ना०)* रविस्यंदन । **सूर्य-रथ** ।
रिव-सुत—*(ना०)* १. रविसुत । शनि । २. यमराज । ३. कर्ण ।
रिवाज—*(ना०)* प्रथा । रस्म । **धारो** ।
रिश्ता—दे० रिस्तो ।
रिश्तेदार—*(वि०)* संबंधी । **सगो** ।
रिश्वत—दे० रिस्वत ।
रिश्वतखोर—*(वि०)* रिश्वत लेने वाला ।
रिषभ—दे० ऋषभ ।
रिषि—*(ना०)* ऋषि ।
रिसणो—*(क्रि०)* १. टपकना । २. चूना । धीरे-धीरे बहना ।
रिसाणो—*(क्रि०)* क्रोधित होना । रीस करना ।
रिसामणो—*(ना०)* १. नाराजगी । अप्रसन्नता । २. रिसानी । **रीस** ।
रिसालदार—*(ना०)* घुड़-सेना का एक अधिकारी तथा पद ।
रिसालो—*(ना०)* १. घुड़सवार सेना । २. राजा का परिग्रह ।
रिस्तो—*(ना०)* १. रिश्ता । संबंध । नाता । २. **सगाई** । वाग्दान । **सगपण** ।
रिस्वत—*(ना०)* रिश्वत । घूस । **सूंक** ।
रिहा—*(वि०)* बंधन से छूटा हुआ । मुक्त । **छुटकारो** ।
रिहाई—*(ना०)* छुटकारा । मुक्ति ।
रिहाण—*(ना०)* अफीम गोष्ठी । **संभा** ।
रिंग—*(ना०)* १. अंगूठी । २. अंगूठी जैसी कोई वस्तु । २. चूड़ी जैसी गोलाकार वस्तु ।
रिंदरोही—दे० रनरोही । दे० **निंदरोही** ।
री—(प्रत्य०) संबंध-सूचक विभक्ति 'रो' का नारी जाति रूप । की ।
रीक—*(ना०)* १. भीख । भिक्षा ।
रीकण—*(ना०)* १. टिड्डी की एक छोटी अवस्था का नाम । टिड्डी के बच्चे । २. टिड्डी । ३. भिखारी । ४. भिखारियों का झुंड ।
रीकणो—*(क्रि०)* १. भीख मांगना । २. रोना ।
रीक-मंगो—दे० रीकमांगो ।
रीक-माँगो—*(ना०)* भिखारी ।
रीखण—दे० रीकण ।
रीखणो—*(क्रि०)* १. रोना । **रींखणो** । २. रो करके दीनता दिखाना । ३. खुशामद करना । ४. लाचारी बताना ।
रीझ—*(ना०)* १. हर्ष । प्रसन्नता । २. इनाम । ३. काव्य रचना से रीझ कर दिया जाने वाला पुरस्कार । ४. विवाह में दिया जाने वाला नेग । ५. दान ।
रीझणो—*(क्रि०)* १. प्रसन्न होना । २. इनाम देना । ३. काव्यकृति से रीझ कर दान देना । ४. नेग बाँटना । ५. तुष्टमान होना । *(वि०)* प्रसन्न होने वाला ।

रीझ-मौज—*(ना०)* १. इनाम। उपहार। २. दान। ३. नेग।

रीझळ—*(वि०)* १. रसिक। २. रीझने वाला। ३. आनंदी। ४. दानी।

रीझळ-जुध—*(वि०)* युद्ध-रसिक। दे० रण-रीझल।

रीझाणो—दे० रिझाणो।

रीझावणो—दे० रीझाणो।

रीठ—*(ना०)* १. बर्षा की झड़ी। २. शस्त्रों की झड़ी। ३. युद्ध। ४. नाश। ५. प्रहार। ६. क्रोध। ७. पाप। ८. शस्त्र। *(वि०)* १. खराब। बुरा। २. नष्ट। बरबाद। ३. बहुत अधिक।

रीठण—*(वि०)* १. शीघ्र-शीघ्र प्रहार करने वाला। शस्त्रों की झड़ी लगा देने वाला। २. क्रोधी।

रीठणो—*(क्रि०)* १. प्रहार करना। २. शस्त्रों की झड़ी लगाना। ३. क्रोध करना। ४. नाश करना।

रीठो—*(वि०)* १ दृढ़। मजबूत। २. मोटा ताजा। ३. प्रसन्न। ४. नष्ट। ५. अमंगलकारी। *(ना०)* १. कल्याण। मंगल। २. अमंगल। ३. नाश। ४. पाप। ५. एक वृक्ष जिसके फल कपड़े आदि धोने में काम आते हैं। रीठा। अरेठो।

रीढ—*(ना०)* पीठ के बीच की लंबी खड़ी हड्डी। मेरुदंड।

रीढो—*(वि०)* १. दुख सहने का अभ्यस्त। दुख सह कर धीर बना हुआ। दृढ़। २. उपयोग में आकर मजबूत बना हुआ। पक्का। ३ जो न सुधरे। चिकना घड़ा। ४. निर्लज्ज। बेशर्म। ५. हठी।

रीण—*(ना०)* १. दीनता। २. दीनता से की जाने वाली विनय। खुशामद। गिड़गिड़ाना। रिर।

रीण-भाखणो—*(मुहा०)* गिड़गिड़ाकर दीनतापूर्वक माँगना। गिड़गिड़ाना।

रीणो—*(वि०)* १. दीन। २. दुखी। ३. संतप्त। ४. विनीत। ५. गिड़गिड़ाया हुआ। ६. दीन होकर गिड़गिड़ाने वाला। रिरहो।

रीत—*(ना०)* १. रीति। प्रकार। तरह। २. चाल। ढंग। ३. रस्म। प्रथा। ४ पद्धति। रूढ़ि। धारो। ६. मर्यादा।

रीत-भांत—*(ना०)* १. रूढ़ि। २. पारंपरिक प्रथा। ३. प्रथा पालन करने की विधि। ४. रीति अनुसार किया जाने वाला आवसरिक काम। ५. चाल-चलन। रीत-रसम।

रीत-रसम—दे० रीतभांत।

रीत-रिवाज—दे० रीत-भाँत।

रीतवणो—*(क्रि०)* १. खाली करना। २. खाली होना।

रीतसर—*(अव्य)* १. रीति के अनुसार। रीत्यानुसार। २. वह भाव या सौदा जिसमें सौदा कराने वाले दलाल का कमीशन सामिल हो। दलाली या कमीशन सहित कीमत। ३. इस भाव का सांकेतिक शब्द। 'साफी निरख' का उलटा।

रीतसर-भाव—दे० रीतसर।

रीतहड़—दे० तहड़ कूण।

रीति—दे० रीत। *(ना०)* काव्य-शैली।

रीति-ग्रंथ—*(ना०)* लक्षण-ग्रंथ (काव्य.)।

रीतो—*(वि०)* खाली। रिक्त। दे० रीत।

रीतो—*(वि०)* १. खाली। रिक्त। २. अज्ञानी। अनजान। ३. निराश।

रीधणो—*(क्रि०)* १. आच्छादित करना। २. प्रसन्न होना। ३. ऋद्धि युक्त करना। ४. सम्पन्न होना। ५. रोकना। ६. अवरुद्ध करना। ७. शत्रुता करना। ८. द्वेष करना।

रीधो—*(वि०)* १. प्रसन्न। राजी। रीझा हुआ। २. सम्पन्न। ऋद्धियुक्त। ३. रहित। ४. अवरुद्ध। ५. द्वेषी। ६. खाली। रीता।

रीबणो—*(क्रि०)* १. लम्बी बीमारी भुगतना। लम्बी बीमारी से दुखी होना। **रिबणो**।

रीबीजणो—दे० रीबणो।

रीम—*(ना०)* कागज के बीस दस्तों की गड्डी।

रीर—*(ना०)* १. प्रलाप। २. रुदन। ३. खुशामद।

रीराणो—दे० रीरावणो।

रीरावणो—*(क्रि०)* १. रोना। २. खुशामद करना। ३. रुलाना।

रीळ—*(ना०)* रह रह कर उठने वाला दर्द। हूळ।

रील—*(ना०)* १. सिनेमा के दृश्यों की लंबी पट्टी। २. धागा लपेटने की एक प्रकार की नली।

रीव—*(ना०)* १. रुदन। क्रंदन। २. दुख।

रीवणो—*(क्रि०)* १. क्रंदन करना। २. दुखी होना।

रीस—*(ना०)* १. क्रोध। गुस्सा। २. नाराजगी। नाराजी।

रीसट—*(वि०)* क्रोधी। गुस्से होने वाला।

रीसटियो—*(वि०)* क्रोधी। गुस्से होने वाला।

रीसणा—दे० रूसणा।

रीसणो—*(ना०)* अप्रसन्नता। नाराजगी। **रूसणो**। *(क्रि०)* १. क्रोध करना। रीस करना।

रीसवाड़णो—*(क्रि०)* १. नाराज करना। २. क्रोधित करना।

रीसाणा—दे० रीसावणा।

रीसामणा—०दे रीसावणा।

रीसां बळणा—*(मुहा०)* क्रोध करना। गुस्से होना।

रीसाणो—*(क्रि०भू०)* क्रुद्ध हो गया। *(वि०)* १. क्रुद्ध। २. नाराज। *(क्रि०)* नाराज करना। *(ना०)* अप्रसन्नता। नाराजी। कोप।

रीसावणा—*(ना०)* नाराजी।

रीसाळू—*(वि०)* १. क्रोध करने वाला। **रीसोद**। क्रोधी। २. नाराज।

रीसावणो—*(क्रि०)* नाराज करना।

रीसीजणो—*(क्रि०)* १. क्रोधित होना। २. नाराज होना। अप्रसन्न होना।

रीसोद—दे० रीसाळू।

रींकणो—*(क्रि०)* १. रोना। २. बड़बड़ाना। २. गिड़गिड़ाना। ४. दीनता दिखाना।

रींखणो—*(क्रि०)* १. खुशामद करना। २. रो करके दीनता दिखाना। **रीखणो**।

रींगणी—*(ना०)* एक वनस्पति व उसका फल। **भूरी-गणी**।

रींगणो—*(ना०)* बैंगन। वृंताक। **बंताक**। मंटा। **बैंगण**। **रींगण**।

रींछ—*(ना०)* भालू। *(वि०)* १. डरावना। २. काला।

रींछड़ी—*(ना०)* मादा रींछ। **रींछण**।

रींछण—*(ना०)* १. रींछ की मादा। २. टिड्डी के बच्चों का झुंड। टिड्डी के

बच्चे । रीखण । *(वि०)* १. झगड़ालू (स्त्री) । २. डरावनी ।

रींछी—*(ना०)* वर्षा के बाद के वे श्वेत बादल जो प्रायः पहाड़ पर पड़े (विश्राम करते) हुए दिखाई देते हैं । पर्वत स्थित अभ्र-पँक्ति ।

रींट—*(न०)* रेंट । सेडो ।

रुआब—*(न०)* १. रोब । धाक । २. आतंक । ३. प्रभाव ।

रुआंट—*(ना०)* रोमावली । रुंआवळी ।

रुई—*(ना०)* कपास के डोडे का सफेद रेशेदार गुच्छा । रूई । रू. ।

रुईदार—*(वि०)* जिसमें रूई भरी हो । रुईवाला ।

रुकणी—*(ना०)* बंधण । कैद । रोक ।

रुकणो—*(क्रि०)* १. रुकना । अटकना । अवरुद्ध होना । २. किसी चलते हुए काम का बंद हो जाना ।

रुकन—*(ना०)* १. रिवाज । २. नियम । धारो ।

रुकम—*(न०)* १. स्वर्ण । सोना । रुक्म । २. भीष्मक राजा का पुत्र । रुक्म । ३. मर्यादा । ४. परंपरा । रिवाज ।

रुकमकार—*(न०)* स्वर्णकार । सोनी ।

रुमकणी—*(ना०)* विदर्भ नरेश भीष्मक की पुत्री और श्रीकृष्ण की पत्नी । यह लक्ष्मी का अवतार थीं । रुक्मिणी ।

रुकाणो—*(क्रि०)* रुकवाना । रुकःवणो ।

रुकाव—दे० रुकावट ।

रुकावट—*(ना०)* रोक । अटक । रुकाव ।

रुकावणो—दे० रुकाणो ।

रुक्का-परवाणा—*(न०ब०व०)* सरकारी रुक्के-फरमान इत्यादि ।

रुक्को—*(न०)* १. रुक्का । पुरजा । २. ऋणपत्र । ३. सनद । ४. चिट्ठी ।

रुख—*(ना०)* १. चेष्टा । चेहरे का भाव । २. कृपादृष्टि । ३. भावताव । बाजार की विशिष्ट वस्तुओं के भाव में उतार-चढाव । ४. दिशा । ५. मंतव्य । ६. वातावरण । ७. सिर । ८. चेहरा । ९. गाल । कपोल । १०. सामने का भाग । ११. आकृति । १२. क्रोध । *(अव्य०)* १. तरफ । ओर । २. भांति । *(वि०)* समान । तुल्य ।

रुखमणी-हरण—*(न०)* साँयाजी झूला का रुक्मिणी हरण संबंधी एक डिंगल काव्य ग्रंथ ।

रुखवाळणो—दे० रुखाळणो ।

रुखवाळी—दे० रुखाळी ।

रुखवाळो—*(न०)* दे० रुखाळो या रखवाळो ।

रुखसत—*(ना०)* १. छुट्टी । अवकाश । २. विदाई । रवानगी ।

रुखाळणो—*(क्रि०)* रखवाली करना । रक्षा करना ।

रुखाळी—*(ना०)* रखवाली । पहरेदारी । हिफाजत । दे० रखवाळी ।

रुखाळो—*(न०)* १. निगरानी । रक्षा । रखवाली । २. निगरानी रखने वाला आदमी । पहरेदार । ३. चौकी-पहरा । हिफाजत । *(वि०)* रखवाली करने वाला ।

रुग—*(न०)* १. रोग । बीमारी । मांदगी । २. पशुओं के दौड़ने से होने वाला शब्द । ३. जोर की वर्षा-ध्वनि ।

रुगट—*(ना०)* १. नटना । नटाई । नटनि । कह करके फिर जाना । २. धोखा । ३. चालाकी । ४. इनकार । ५. खेल में की जाने वाली चालाकी या बेई-

मानी। रुगटी। *(वि०)* १. नटने वाला। इनकार करने वाला। कह करके फिरने वाला। २. धोखा देने वाला।

रुगट खाणो—*(मुहा०)* १. कह कर के बदल जाना। २. बेईमानी करना।

रुगटखोर—दे० रुगटियो।

रुगटियो—*(वि०)* १. नट जाने वाला। २. धोखा देने वाला। **रुगटखोर**।

रुगटी—*(ना०)* १. नटना। नटाई। २. धोखा। **रुगट**। ३. चालाकी। *(वि०)* नटने वाला। कह करके फिरने वाला। **रुगट**। रोंगटी।

रुगड़—*(वि०)* १. नालायक। २. ओछा। कमीना। ३. कह करके नट जाने वाला। ४. असभ्य। ५. चुगलखोर।

रुगण—*(वि०)* रुग्ण। रोगी। **मांदो**।

रुगो—*(अव्य०)* अच्छा। अस्तु। खैर। *(वि०)* १ निखालस। २. केवल। मात्र। ३. भला। बहुत अच्छा।

रुग्घो-चुग्घो—*(अव्य०)* १. किंचित। थोड़ा बहुत। २. अवशिष्ट।

रुघनाथ—*(ना०)* रघुनाथ।

रुच—*(क्रि०वि०)* १. रुचि अनुसार। २. रुचि के साथ। *(वि०)* सुंदर।

रुचक—*(ना०)* १. घर। २. दक्षिण दिशा। ३. घोड़े का गहना।

रुचणो—*(क्रि०)* रुचना। पसंद आना। **भावणो**। *(वि०)* मनभावन।

रुचि—*(ना०)* १. इच्छा। चाह। **भावड़**। २. स्वाद। ३. भूख। ४. शोभा। ५. किरण। *(वि०)* मनोहर। सुंदर।

रुचिकर—*(वि०)* १. रुचि उत्पन्न करने वाला। २ पसंद। ३. सुंदर। ४. स्वादिष्ट। मधुर। सरस।

रुचिधाम—*(ना०)* सूर्य। रवि।

रुचिर—*(वि०)* १. सुंदर। मनोहर। **फूटरो**। २. तेजस्वी। ३. मीठा। **मीठो**। *(ना०)* केसर।

रुज—*(ना०)* १. रोग। **मांदगी**। २. पीड़ा। कष्ट। ३. घाव। **जखम**।

रुजगार—*(ना०)* १. रोजगार। व्यापार। २. व्यवसाय। धंधा। **कामधंधो**।

रुजगार-बाड़ी—*(ना०)* व्यापार-व्यवसाय। **काम-धंधो**।

रुझणो—*(क्रि०)* १. घाव का भर जाना। २. रुकना।

रुट्ठ—दे० रुष्ट।

रुड़णो—*(क्रि०)* १. ढोल, नगाड़े आदि का बजना। बजना। **बजणो**। २. लुढ़कना।

रुड़ाणो—*(क्रि०)* १. ढोल, नगाड़े आदि का बजाना। बजाना। **बजाणो**। २. लुढ़काना।

रुणाक—*(ना०)* १. झनकार। ध्वनि। २. याद। स्मृति।

रुणाक-झुणाक—*(ना०)* नूपुर घुंघरू आदि का रुनझुन शब्द।

रुण-झुण—*(ना०)* घुंघरू, नूपुर आदि के बजने का शब्द। रुनझुन। **झणकार**।

रुण-झुणणो—*(क्रि०)* घुंघरू, पायल आदि का बजना।

रुणझुणियो—*(ना०)* १. रुणझुण-रुणझुण बजने वाला खिलौना। २. एक वासंतिक लोक गीत। ३. घुड़ले के उत्सव का एक लोकगीत।

रुणी—*(वि०)* १. ऋणी। कर्जदार। २. अहसानमंद।

रुणेचो—*(ना०)* करमसी। साँखलो। दे० साँखलो करमसी रुणेचो।

रुणो – *(न०)* ऋण । कर्ज ।

रुत—*(ना०)* १. ऋतु । मौसम । २. रुई । रू ।

रुतबेदार— *(वि०)* ईज्जत वाला ।

रुतबो—*(न०)* १. पद । ओहदा । २. प्रतिष्ठा । इज्जत ।

रुदन—*(न०)* रोना । क्रंदन । रोणो । रोवणो ।

रुदरास—दे० रुद्राक्ष ।

रुदो—*(न०)* १. हृदय । दिल । हिरदो । २. अंतःकरण । चित्त । मन ।

रुद्ध – *(वि०)* रुका हुआ । अवरुद्ध । बंद ।

रुद्र—*(न०)* १. शिव का एक रूप । महादेव । २. एक प्रकार के गण देवता । ३. ग्यारह की संख्या । ४. रौद्र रस । *(वि०)* भयानक । भयंकर ।

रुद्रकाळो—*(ना०)* दुर्गा ।

रुद्रज—*(न०)* पारा ।

रुद्रथानक—*(न०)* १. कैलाश । २. शिव-लोक ।

रुद्र-प्रयाग—*(न०)* हिमालय पर्वत स्थित एक तीर्थ ।

रुद्र-महालय—दे० रुद्रमाळ ।

रुद्रमाळ—*(न०)* १. सिद्धपुर (गुजरात) का एक प्राचीन खंडहर रूप महाशिवालय, अणहलपुर पाटण के सिद्धराज जयसिंह द्वारा निर्माण कराया हुआ बारह मंजिलों का एक इतिहास प्रसिद्ध रुद्र महालय । २. शिवजी के गले की माला ।

रुद्रमाळो—दे० रुद्रमाळ ।

रुद्रवाचा—*(ना०)* १. रुद्र की साक्षी से दिया हुआ वचन (मंत्र प्रयोग में) । २. अटल वचन ।

रुद्राक्ष—*(ना०)* १ एक वृक्ष । २. रुद्राक्ष का बीज (इन बीजों की माला बनाई जाती है ।)

रुद्राणी—*(ना०)* १. पार्वती । २. दुर्गा ।

रुद्री—*(ना०)* १. शिव की स्तुति का एक वैदिक सूक्त । २. इस सूक्त के ग्यारह पाठ ।

रुधणो—*(क्रि०)* १. रुकना । अवरुद्ध होना । २. बंद होना ।

रुधिर—*(न०)* रक्त । खून । लोही । *(वि०)* लाल । रक्तवर्ण ।

रुपणो—*(क्रि०)* १. रुपना । रोपा जाना । लगाया जाना । २. अड़ना । हठ करना ।

रुपिया-भर—*(वि०)* एक रुपये के वजन जितना । तोला भर । एक तोळो ।

रुपियो—*(न०)* १. भारत, लंका, बंगलादेश, पाकिस्तान और इंडोनेशिया में चलने वाला एक सिक्का । चाँदी, चांदी मिश्रित या किसी सफेद धातु का सिक्का । रुपया । (भारत, बंगलादेश और पाकिस्तान में सौ पैसे, लंका में सौ सेंट और इंडोनेशिया में सौ सेन एक रुपये की कीमत है । अंग्रेजी काल में भारत में रुपया सोलह आनों अर्थात् चौंसठ पैसों का था) । २. धन दौलत ।

रुपियो-पइसो—*(न०)* धन । संपत्ति । रुपया-पैसा ।

रुबाई—*(ना०)* १. उर्दू-फारसी का एक काव्य प्रकार ।

रुमझुम – दे० रिमझिम ।

रुमा—*(ना०)* नमक की खान ।

रुमापुर—*(न०)* सांभर नगर का प्राचीन नाम ।

रुमाल—*(न०)* हाथ मुँह पोंछने का कपड़े का चौकोर टुकड़ा । रूमाल ।

रुमाली—*(ना०)* १. लंगोट। २. मुसलमान स्त्रियों का घर में ओढ़ने का छोटा ओढ़ना।

रुळकार – दे० रुळियार।

रुळणो—*(क्रि०)* १. भटकना। मारा-मारा फिरना। २. अकेला पड़ना। ३. बर्बाद होना। ४. अवनत होना। ५. लक्ष्य से च्युत होना। ६. बिखरना। **बिखरणो।**

रुळपट – दे० रुळियार।

रुळपटपणो—*(अव्य०)* १. बिना कामकाज। २. मारा-मारा फिरना।

रुळपटियो—दे० रुळपट।

रुळयार—दे० रुळियार।

रुळावणो—*(क्रि०)* बरबाद करना।

रुळियार—*(वि०)* १. अविश्वस्त। २. इधर-उधर भटकने वाला। ३. घर-घर भटकने वाला। ४. जिसका आचरण ठीक न हो। लंपट। **रुळेट।** ५. वह पशु जो भटकता हुआ फसलों को खाता रहता है।

रुळियारगी—*(ना०)* लंपटता। लुच्चाई।

रुळियारण—*(ना०)* रुळियार स्त्री।

रुळियार-रासो – *(न०)* अव्यवस्था।

रुळियारो—*(न०)* १. गड़बड़ी। २. गड़बड़ी से हुई हानि।

रुळियो-खुळियो—*(अव्य०)* १. कहीं-कहीं। २. कोई-कोई। ३. कभी-कभी।

रुळी—*(वि०)* १. सूनी। खाली। निर्जन। २. एकान्त। ३. निराश्रिता। ४. अकेली। *(क्रि०भू०)* १. भटक गई। २. बर्बाद हो गई।

रुळेट *(वि०)* १ बिना काम इधर-उधर मारा-मारा फिरने वाला। २. अविश्वासी। ३. लंपट। **रुळियार।**

रुळेवो—*(वि०)* झुंड में से छूट कर अलग पड़ा हुआ (पशु)।

रुळो—*(वि०)* १. सूना। खाली। निर्जन। २. जहां कोई न हो। एकान्त। ३. निराश्रित। ४. अकेला। ५. व्यभिचारी।

रुवाड़णो – दे० रुवावणो।

रुवावणो—*(क्रि०)* रुलाना। **रुवाड़णो।**

रुष्ट – *(वि०)* १. क्रुद्ध। कुपित। २. अप्रसन्न। **नाराज। रूठ।**

रुसनाई—*(ना०)* स्याही। **रोशनाई।**

रुस्तम—*(न०)* ईरान का प्रसिद्ध पहलवान।

रुहाड़—*(न०)* दिन भर घटा छाई रहना, थोड़ा-थोड़ा बरसना और ठंडा पवन चलना।

रुहिनाळ—*(न०)* रुधिर का नाला।

रुहिर—*(न०)* रुधिर। खून। **लोही।**

रुहिराळ—*(वि०)* १. रक्तरंजित। रुधिर-सिक्त। लहुलुहान। २. रक्त वाला। रक्त का।

रुहिराळियो—*(वि०)* रुधिरसिक्त। प्रहारों के रक्त से तर-बतर। खून से शराबोर।

रुंआड़ो—*(न०)* १. बाल। केश। २. महीन बाल। रोम। रोंआं। रूंगतो।

रुंआळी—*(ना०)* रोमावली। रोमराजि। **रुंवाळी।** *(वि०)* १. बालों वाली। २. शरीर पर अधिक बालों वाली।

रुंअळो—*(वि०)* १. जिसके शरीर पर घनी रोमराजि हो। अधिक बालों वाला। **रुंवाळो।** २. बालों वाला। दे० रुंआड़ो।

रुंओ—*(न०)* रोंआं। रोम। लोम।

रुंड—*(न०)* १. धड़। सिर के नीचे का भाग। कबंध। २. सिर कट जाने पर बचा हुआ धड़। ३. मस्तक। **माथो।**

रुंडमाळ—*(ना०)* मनुष्य के मस्तकों की माला। मुंडमाला। रुंडहार।

रुंडमुंड—*(वि०)* १. मुंडन किया हुआ। २. गोल मटोल। *(ना०)* २. मुंडन किया सिर। १. धड़ और सिर।

रुंडहार—दे० रुंडमाळ।

रुँवाड़ो—दे० रुँआड़ो।

रुँवाळी—दे० रुँआळी।

रुँवाळो—दे० रुँआळो।

रू—*(ना०)* रूई। रूत।

रूई—दे० रुई।

रूक—*(ना०)* तलवार।

रूकचाळो—*(ना०)* युद्ध। संग्राम। रूकरस।

रूकभल—*(वि०)* १. शस्त्रधारी। तलवार-धारी। २. योद्धा। रूकभल।

रूकरस—*(ना०)* युद्ध। रूकचाळो।

रूकसओधा—*(ना०)* वीर-वंशज।

रूकहथ—दे० रूकभल।

रूखापणो—*(ना०)* रूखापना।

रूखो—*(वि०)* १. जो चिकना न हो। खुरदरा। २. फीका। नीरस। ३. घृत रहित। (भोजन)। रुक्ष। ४. उदासीन। ५. निर्मोही। निष्प्रेम।

रूखो-सूखो—*(वि०)* १. बिना घी का और बासी-सूखा। रूखा-सूखा। २. स्वाद रहित। ३. सादा।

रूठणो—*(क्रि०)* १. नाराज होना। रूठना। २. क्रोध करना। ३. नाराज होकर अलग हो जाना।

रूठी-राणी—*(ना०)* जोधपुर के राव मालदेव (वि० सं० १५८८–१६१९) की उमादेवी भटियानी नाम की रानी। मालदेव का अति सुंदरी भारमली नाम की दासी के साथ प्रेम हो जाने के कारण राव मालदेव से जीवनभर रुष्ट होकर यह स्वाभिमानिनी रानी आजन्म ब्रह्मचारिणी रही परन्तु राव मालदेव की मृत्यु के समय उनके साथ चिता-रोहण कर सती हो गई। लोक में 'राणी भटियाणीजी' के नाम से काम-नाओं को पूर्ण करने वाली लोक-देवी के नाम से पूजी जाती है। इनका सबसे बड़ा थान जसोल, (मारवाड़) में है। राव मालदेव से आजीवन रुष्ट रहने के कारण 'रूठी राणी' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

रूठोड़ो—*(वि०)* १. नाराज। अप्रसन्न। २ क्रोधित।

रूड़ी—*(वि०)* १. अच्छी। भली। २. सुन्दर। खूबसूरत।

रूड़ी-रसणा—*(ना०)* १. सुंदर भाषा। २. राजस्थानी भाषा। ३. संस्कृत भाषा। ४. मधुर वाणी।

रूड़ो—*(वि०)* १. अच्छा। भला। २. सुंदर। खूबसूरत। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. स्वस्थ। तंदुरुस्त। निरोग। ५. सक्षम। ६. होशियार। चतुर। ७. वीर। ८. अनूठा।

रूढ—*(ना०)* यौगिक शब्द जिसके खंड करने पर कोई अर्थ नहीं निकले। *(वि०)* १. प्रचार तथा व्यवहार में दृढ़ बना हुआ। २. उत्पन्न। ३. प्रसिद्ध। ४. आरूढ़। ५. गँवार। अबूझ। ६. कठोर।

रूढ-यौवना—*(ना०)* एक प्रकार की नायिका।

रूढा—*(ना०)* लक्षणा शब्द-शक्ति का एक भेद।

रूढि—*(ना०)* १. रूढ़ बनी हुई रीति। २. बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा।

३. बहुत काल से प्रचारित होने के कारण शब्द की रूढ़ अर्थ को बोध कराने शक्ति। ४. उत्पत्ति। ५. ख्याति। ६. विचार। ७. चढ़ाई। ८. वृद्धि। ९. उभार।

रूढी—दे० रूढ़ि।

रूण—*(ना०)* १. आवाज। शब्द। २. मर्जी। ३. बाजार के भावों के उतार-चढ़ाव का अनुमान। ४. रिवाज। परंपरा। ५. रुख। ६. मनस्थिति।

रूणासर—*(अव्य०)* १. बाजार-भाव की रुख से। २. रिवाज के मुआफिक। परंपरानुसार।

रूणेचो—*(न०)* पोकरन के पास का रामदेव पीर का समाधि स्थान।

रूणो—दे० रमणो न मं० १,२।

रूत—*(न०)* रूई। रू।

रूधणो—*(क्रि०)* १. रोकना। २. हैरान करना। तंग करना।

रूप—*(न०)* १. आकार। सूरत। २. सौंदर्य। ३. वेश। ४. दशा। ढंग। ५. चिन्ह। ६. सम्मान। ७. शोभा। ८ वाक्य में प्रयोग करने के लिये प्रत्यय, विभक्ति आदि लगाकर बनाया हुआ शब्द। पद। ९. दृश्य पदार्थ। १०. रचना (सृष्टि)। ११. लक्षण।

रूप-अतीत—*(न०)* रूप से रहित। पर ब्रह्म।

रूपक—*(न०)* १ काव्य। कविता। २. कीर्ति-काव्य। गुण वर्णन। **रूपग**। ३. काव्य-ग्रंथ। ४. किसी वीर का काव्य में चरित्र-चित्रण। ५. वीर-काव्य। ६. शोभा। ७. कीर्ति। ८. प्रति-कृति। ९. एक प्रकार का नाटक। १०. एक अर्थालंकार। ११. स्तुति। १२. दान। १३. दहेज। १४. वंश-परंपरा की ख्याति। १५ गीत नामक डिंगल-छंद। १६. एक आभूषण। १७. रुपया।

रूपक-जोड़—*(न०)* १. कवि। २. यश-कविता करने वाला कवि। **रूपगजोड़ो**। ३. चारण। ४. भाट। ५. भोजक। ६. ढाढ़ी।

रूपक-जोड़ो—दे० रूपक-जोड़।

रूपकड़ी—*(ना०)* सुंदरी। सुंदर स्त्री। *(वि०)* सुंदर। **फूटरी**। *(ना०)* कवयित्री।

रूपकड़ो—*(वि०)* सुंदर। रूपवान। **फूटरो**। *(न०)* कवि। **रूपक-जोड़ो**।

रूप-कंठीर—*(न०)* १. सिंह का रूप। २. नर और सिंह का रूप। ३. नृसिंहावतार।

रूपकार—*(न०)* १. चित्रकार। **चितेरो**। २. चांदी का काम करने वाला। रुपेरो। ३. स्वर्णकार।

रूपकारी—*(ना०)* चित्रकारी।

रूपकीश—*(न०)* हनुमान।

रूपग—दे० रूपक।

रूप-गर्विता—*(ना०)* अपने रूप का गर्व करने वाली नायिका।

रूपग-जोड़ो—दे० रूपक-जोड़ो।

रूप-चवदस—*(न०)* रूपचतुर्दशी। **काणी दीवाली**।

रूप-छळ—*(न०)* १. युद्ध विशारद। २. युद्ध की शान। ३. जिसके ऊपर युद्ध का आधार हो वह वीर योद्धा।

रूप-जीवणी—दे० रूपजीवी।

रूपजीवी—*(ना०)* वेश्या। रूपजीवा। **पातर**।

रूपण—*(न०)* आलंकारिक वर्णन।

रूपनाथ—*(न०)* राठौड़ वीर पाबूजी के गुरु का नाम।

रूप-निधान—*(न०)* रूप का भंडार। अत्यन्त रूपवान।

रूपमाळा—*(ना०)* १. नीसाणी छंद का एक भेद। इसे हंसगत-नीसाणी भी कहते हैं। २. चाँदी के मनकों की माला।

रूप-मिण—*(न०)* रूपमणि। तारा।

रूप-रंग—*(न०)* रूप और रंग। सौष्ठव।

रूप-राणी—*(ना०)* रूप सुंदरी।

रूप-राशि—*(वि०)* अत्यधिक सुंदर।

रूप-रेखा—*(ना०)* १. किसी बात या काम की मात्र रूप बताने वाली रेखा। २. संक्षिप्त विवरण। ३. किसी योजना के आकार आदि का परिचायक अनुमान।

रूपवती—*(वि०)* सुंदर रूप वाली। फूटरी।

रूप-वन—*(न०)* १. वृक्ष शृंगार। चंदन। रूंख सिणगार। २. वन का शृंगार।

रूपवंत—*(वि०)* सुंदर। रूपवान। फूटरो।

रूपवंती—दे० रूपवती।

रूपवान—*(वि०)* सुन्दर।

रूपसी—*(वि०)* १. वह जिसमें रूपा (चाँदी) मिला हुआ हो (सोना)। २. सुन्दर। मनोहर। *(ना०)* १. सुंदर स्त्री। २. एक रागिनी। ३. वेश्या।

रूपा-जीवा—*(ना०)* वेश्या। रूपाजीवी।

रूपा-जीवी—दे० रूपा-जीवा।

रूपाण—*(न०)* १. रूपनगर। २. रूपनगर राज्य या प्रदेश। ३. रूप। सुंदरता। *(वि०)* १. रूपे की बनी हुई। रौप्य निर्मित। २. रूपे से संबंधित। ३. चाँदी की।

रूपारास—*(ना०)* पूर्व और आग्नेय कोण के बीच की दिशा।

रूपारेल—*(ना०)* एक शकुन चिड़िया।

रूपाळी—*(वि०)* रूपवती। सुंदरी।

रूपाळो—*(वि०)* १. सुंदर। २. सुंदर रूपवाला।

रूपांतर—*(न०)* १. अन्य रूप। रूप में परिवर्तन। २. किसी वस्तु का परिवर्तित रूप। ३. अनुवाद।

रूपाँदे-राणी—*(ना०)* महेवे (मारवाड़ के मालाणी प्रान्त में) के रावल मल्लिनाथ की भक्तिमती राणी का नाम। (इनका थान मालाजाळ में बना हुआ है। इनके बनाये हुए वाणी-पद गाये जाते हैं।

रूपी—*(वि०)* १. समान। सदृश्य। २. आकार वाला। ३. सुंदर। *(अव्य०)* के समान।

रूपेटो—*(न०)* १. चाँदी-निर्मित पात्र। २. चांदी का बड़ा कटोरा। पालखियो।

रूपेरण—*(वि०)* चाँदी से मढी हुई (तलवार की मूठ या कोई अन्य वस्तु।

रूपो—*(न०)* १. चाँदी। २. मिलावट वाली चाँदी।

रूबरू—*(अव्य०)* प्रत्यक्ष। समक्ष। सामने। अरूबरू।

रूम—*(न०)* १. तुर्किस्तान। २. कमरा। ३. जगह। ४. खाली जगह।

रूमड़ी—*(ना०)* खराब खून को निकालने की प्रक्रिया व उसका उपकरण।

रूम-सूम—*(न०)* यूरोप का तुर्किस्तान तथा प्राचीन रोम का प्रदेश। तुर्किस्तान। रूमशाम।

रूमाल—*(न०)* हाथ-मुंह पोंछने का एक जेबी वस्त्र खंड।

रूमीमुस्तंगी—*(ना०)* एक औषधि। एक जाति का गोंद। रूमीमुस्तकी।

रूळ—*(नं०)* १. नियम । **कायदो** । **धारो** । २. लकीर खींचने का डंडा । ३. सीधी खींची हुई लकीर ।

रूळदार—*(वि०)* जिसमें पंक्तियां खींची हुई हों (कागज) ।

रूळसर—*(अव्य०)* कायदे से । नियम से ।

रूव—*(नं०)* १. रुई । २. रूप ।

रूस—*(नं०)* यूरोप और एशिया का एक देश । रसिया ।

रूसणा—*(नं०ब०व०)* दो पक्ष या व्यक्तियों के बीच की अनबन । मनमुटाव । नाराजी । **रीसणा** । **रीसाणा** ।

रूसणो—*(नं०)* नाराजी । अप्रसन्नता । **रीसणो** । *(क्रि०)* नाराज होना । रुष्ट होना । **रूठणो** । **वैराजी होणो** ।

रूसळ—*(वि०)* रूठा हुआ । रुष्ट । **रूसियोड़ो** ।

रूसियोड़ो—*दे०* रूसळ ।

रूसी—*(वि०)* १. रूस का । २. रूस संबंधी । ३. रूस का निवासी । *(ना०)* रूसी भाषा ।

रूसीजणो—*(क्रि०)* नाराज होना । अप्रसन्न होना । **रूठणो** ।

रूस्यो—*(वि०)* नाराज । *(क्रि०भू०)* नाराज हो गया । **रूसियोड़ो** ।

रूस्योड़ो—*दे०* रूस्यो या रूसियोड़ो ।

रूह—*(ना०)* १. आत्मा । २. जीवात्मा । ३. अर्क । ४. इत्र । अतर ।

रूं—*(नं०)* रोम । रोआं । **रूंगटो** ।

रूंख—*(नं०)* वृक्ष । पेड़ । **रूंखड़ो** । झाड़ ।

रूंखड़लो—*दे०* रूंख ।

रूंखड़ी—*(ना०)* १. पौधा । २. वनस्पति । ३. काष्ठ-औषधि । जड़ी-बूटी ।

रूंखड़ो—*(नं०)* वृक्ष । पेड़ । **रूंख** ।

रूंखाँ-सिणगार—*(नं०)* वृक्ष-शृंगार । चंदन-वृक्ष ।

रूंग—*दे०* रोंआ ।

रूंगटाळो—*(ना०)* १. भेड़ । २. रोमावली । *(वि०)* रोमवाली । जिसके शरीर में अधिक रोम हो ।

रूंगटो—*(नं०)* रोंगटा । रोंआं । लोम । रोम । **रूं** ।

रूंगतो—*दे०* रूंगटो ।

रूंगी—*(ना०)* १. रुदन । रोना । २. हठ । जिद । ३. अप्रसन्नता । नाराजी । ४. सनक । *(वि०)* सनकी (स्त्री) ।

रूंगीलो—*(वि०)* १. सनकी । २. रोने वाला । **रोवणियो** ।

रूंगो—*(नं०)* १. रोने का भाव । रोना । रुलाई । २. नाराजी । ३. बच्चे की हठ । *(वि०)* सनकी ।

रूं-तोड़—*(नं०)* बाल के टूटने से होने वाला एक व्रण । बालतोड़ ।

रूंदणो—*(क्रि०)* १. रौंदना । कुचलना । २. मसलना ।

रूंदळणो—*(क्रि०)* १. रौंदना । कुचलना । २. मसलना ।

रूंधणो—*दे०* रूधणो ।

रूंस—*(नं०)* १. क्रोध । २. इच्छा । ३. शोभा । ४. पंक्ति ।

रूंसदार—*(वि०)* ठसक वाला । शान वाला । २. शोभावाला ।

रे—*(अव्य०)* छोटे या तुच्छ आदमियों के लिये ओ, अे, रे, अरे, अर्थसूचक एक संबोधन । *(वि०)* निकृष्ट । तुच्छ ।

रेकारो—*(अव्य०)* 'रे' या 'अरे' कह कर के किये जाने वाले तुच्छ संबोधन की

सज्ञा । अनादर-सूचक संबोधन का नाम । **तूंकारो** ।

रेख—*(ना०)* १. जागीरी की आमदनी के ऊपर अमुक परिमाण में (न्यूनाधिक) जागीरदारों से राजा की ओर से लिया जाने वाला एक कर । जागीरदार से लिया जाने वाला स्वामी-राज्य का एक कर । २. केन्द्रीय सरकार द्वारा राजा से लिया जाने वाला एक कर । खिराज । **खरणी** । ३. किसी वस्तु के टूटने-फूटने से (जो दो भागों में अलग नहीं हुई हो) बनी रेखा । दरार । **रा** । ४. रेखा । लकीर । **ओळी** । **लीटी** । ५. नई निकली हुई मूंछें । ६. मर्यादा । सीमा । **हद** । ७. पंक्ति । ८. इज्जत । ९. आमदनी । १०. उंगली की पोर की रेखा ।

रेखग—*(न०)* सिर । **माथो** ।

रेख-चाकरी *(ना०)* १. राजाओं द्वारा अपने मातहत जागीरदारों से ली जाने वाली रेख (खिराज) और चाकरी । (पुरानी प्रथा) २. राजाओं द्वारा जागीरदारों से खिराज के बदले में मनुष्य, घोड़े, और ऊंट आदि से ली जाने वाली सैनिक सेवा (प्राचीन प्रथा)

रेखता—*(न०)* १. एक प्रकार की गजल । २. उर्दू तथा फारसी कविता की एक तर्ज । ३. उर्दू एवं खड़ी-बोली का मुगलकालीन रूप । ४. उर्दू भाषा का आरंभिक रूप और नाम ।

रेखा—*(ना०)* १. मर्यादा । सीमा । २. लकीर । पंक्ति । **ओळी** । ३. श्रेणी । कतार । पंक्ति । ४. दरार । **रा** ।

रेखा-गणित—*(न०)* कोणों, रेखाओं और वृत्तों के विवरण वाला गणित । भूमिति । ज्योमेट्री ।

रेखा-चित्र—*(न०)* १. रेखाओं द्वारा बनाया हुआ चित्र । २. किसी के जीवन का संक्षिप्त निरूपण । स्केच ।

रेखांश—*(न०)* उत्तर और दक्षिण ध्रुव में से पसार होने वाली भूगोलक ऊपर की रेखा । लान्जिटयूड ।

रेखांकित—*(वि०)* १. जिसके नीचे रेखा खींची हुई हो । (शब्द आदि) २. जिसमें रेखाएं खींची हुई हों ।

रेगर—*(न०)* १. चमड़ा रंगने (कमाने) वाली एक जाति । २. इस जाति का पुरुष ।

रेगर-जटियो—*(न०)* मरे पशुओं का चमड़ा कमाने (रंगने) वाली जाति का व्यक्ति । रेगर ।

रेगिस्तान—*(न०)* रेतीला प्रदेश । मरु-स्थल । **रण** । थळ ।

रेच—*(वि०)* जिसके खाने से दस्त लगे वह (वस्तु) । *(न०)* नाक के द्वारा श्वास बाहर निकालने की क्रिया । रेचक प्राणायाम ।

रेचक—*(वि०)* १. दस्तावर । *(न०)* जुलाब लाने वाली वस्तु । २ अवरुद्ध सांस को नासिका द्वारा बाहर निकालने की प्राणायाम की एक क्रिया ।

रेचन *(न०)* १. नाक द्वारा सांस बाहर निकालने की क्रिया । २. दस्त लाने की दवा ।

रेजकी—दे० रेजगी ।

रेजगारी—*(ना०)* १. इकन्नी, दुअन्नी, पैसे आदि छोटे सिक्के, बड़े सिक्के की कीमत के छोटे सिक्के । **रेजगी** । **परचूरण** । खुर्दा । परचूरण सामान । ३. निम्न वर्ग की प्रजा । सर्व साधारण लोग ।

रेजगारी-लोग—*(न०)* १. निम्नवर्ग की प्रजा। २. सर्वसाधारण लोग।

रेजगी—दे० रेजगारी।

रेजळे-पड़णो—*(मुहा०)* १. भूल जाना। २. धीरे-धीरे बनना।

रेजळो—*(न०)* १. थकावट। **थाक**। २. सुस्ती। ३. रुकावट।

रेजो—*(न०)* १. हाथ से बुना हुआ मोटा कपड़ा। खादी। २. लोक-गीतों का नायक। ३. दुल्हा। ४. सोने चाँदी आदि को गला कर शलाका रूप में ढालने का एक लंबा लोह-उपकरण।

रेट—*(न०)* भाव। दर। **निरख**। *(वि०)* रद्दी किया हुआ। रद्द। अमान्य।

रेटणो—*(क्रि०)* १. आज्ञा या वचन का उल्लंघन करना। २. आज्ञा पालन नहीं करना। हुकम-अदूली करना। ३. अस्वीकार करना। इनकार करना। ४. अमान्य करना। ५. औंधा करना। ६. मार गिराना।

रेड़—*(ना०)* १. धारा। २. प्रवाह तंतु।

रेड़-टूटणो—*(मुहा०)* थोड़े समय के लिये प्रवाह या किसी काम का बंद हो जाना। *धारा का खंडित होना।*

रेड़णो—*(क्रि०)* १. धारा के रूप में पानी आदि का डालना। बहाना। गिराना। पानी आदि प्रवाही वस्तु की धार बाँधना। २. अन्दर डालना। ३. नगाड़ा बजाना। ४. हांकना।

रेडियो—*(न०)* बेतार की आवाज (खबरें, गाना इत्यादि) सुनने का एक यन्त्र।

रेढ—*(ना०)* हठ। जिद।

रेढो—*(न०)* सूअर। *(वि०)* हठी। ज़िद्दी।

रेण—*(ना०)* १. रज। धूल। बालू। रेणु। २. पृथ्वी। दे० रावतरी।

रेणका—*(ना०)* १. रज। बालू। **रेणुका** (प्रायः गंगा और यमुना की)। २. परशुराम की माता का नाम। रेणुका। ३. पृथ्वी।

रेणव—*(न०)* चारण। गढवी।

रेणी—*(न०)* चूना, नमक और बबूल की छाल से पकाया हुआ। **चमड़ा**।

रेणु—दे० रेण।

रेणुका—दे० रेणका।

रेणादे—दे० राणलदे।

रेणायर—*(न०)* समुद्र। रत्नाकर।

रेत—*(ना०)* १. धूल। रेता। बालू। २. वीर्य। ३. रज। ४. पारा।

रेतणो—*(क्रि०)* रेती (कानस) से घिसना।

रेतदाणी—*(ना०)* लिखे हुए की स्याही सुखाने की अनेक सुराखें वाली रेत रखने की डिबिया। रेतीदानी। **रंजीदाणी**।

रेतस—*(न०)* वीर्य। रेत। शुक्र। **राजा**।

रेती—*(ना०)* १. बालू। धूल। २. **कानस**। **अरगती**। फाइल।

रेतीलो—*(वि०)* रेतवाला (भूमि प्रदेश)।

रेतीदाणी—दे० रेतदाणी।

रेफ—*(न०)* अक्षर के ऊपर लिखा जाने वाला हलंत रकार (र्) २. 'र' अक्षर का नाम।

रेर—*(ना०)* १. राम नाम रटने की ध्वनि। २. ध्वनि।

रेल—*(ना०)* १. लोहे की पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है। **चीलो**। २. लोह का शहतीर। ३. लोहे की पटरी पर चलने वाली रेलगाड़ी। दे० रेल-गाड़ी। ४. पानी का बहाव। **बाढ़**। **पूर**। ५. आधिक्य।

रेलगाड़ी—*(ना०)* लोहे की पटरी पर चलने वाली आग गाड़ी। भाप या बिजली के एंजिन से पहियों पर चलने वाली गाड़ी।

रेलणो—*(क्रि०)* १. पानी का जोर से बहना। २. पानी फैलना। (वर्षा या नदी का)। ३. धक्का देकर आगे बढ़ाना। ४. बढ़ना या धकेलना।

रेलम-छेल—*(ना०)* १. पानी का बहुत दूर तक फैल जाना। २. अधिकता। ३. बहुत अधिक मात्रा। ४. भारी भीड़। *(वि०)* १. बहुत अधिक। २. भरा हुआ।

रेलम-ठेल—दे० रेलमछेल।

रेलम-पेल—दे० रेलम-छेल।

रेलियो—*(न०)* मेंहदी के जैसा एक पौधा जो बाड़ (कंपाउंड) के रूप में बगीचों, बंगलों आदि में लगाया जाता है।

रेलो—*(न०)* १. पानी का प्रवाह। २. छोटा प्रवाह। ३. भीड़ का प्रवाह।

रेव—*(न०)* शोर। हाहाकार।

रेवड़—*(न०)* भेड़ बकरियों का झुंड। एवड़।

रेवड़ियो—*(न०)* भेड़ बकरी को चराने वाला। गडरिया। रबारी। एवड़वालो।

रेवड़ी—*(ना०)* खांड की चासनी और तिल की बनी टिकिया।

रेवत-चीणी—*(ना०)* १. रेवंदचीनी। रेवंद का गोंद। एक वनस्पति का गोंद। २. एक पौधा।

रेवती—*(ना०)* १. एक नक्षत्र। २. बलराम की पत्नी। ३. रेवती तीर्थ। ४. एक मातृका।

रेवंत—*(न०)* १. घोड़ा। २. अश्वरूप सूर्यपुत्र।

रेवंतियाँ—दे० रैवतियाँ।

रेवा—*(ना०)* नर्मदा नदी का एक नाम। नर्मदा नदी।

रेवा-उतन—*(न०)* हाथी।

रेवाड़ी—*(ना०)* झूलना एकादशी, जलयात्रा आदि पर्वोत्सवों पर देव प्रतिमा की सवारी के लिए उपयोग में लाया जाने वाला एक यान। देव विमान।

रेवाड़ो—*(न०)* भेड़ बकरियों का बाड़ा। बाड़ा। रेवड़ बांधने या रखने का आहाता।

रेवाळ—*(ना०)* ऊँट और घोड़े की एक सरीखी और आरामदायक चाल। २. मध्यम तेज चाल।

रेशम—*(न०)* एक प्रकार के कीड़े की लार का बनने वाला तन्तु तथा उससे बना हुआ वस्त्र। कौशाम्बर। चीनांशुक। रेसम।

रेशमी—*(वि०)* १. रेशम का। २. रेशम का बना हुआ। ३. रेशम सम्बन्धी। कौशेय।

रेशा—*(न०)* १. तंतु। २. नाड़ी। नस। ३. अंश। भाग।

रेस—*(ना०)* १. पराजय। हार। २. हानि। नुकसान। क्षति। ३. नाश। ध्वंश। बरबादी। ४. हिंसा। ५. दण्ड। ६. रसातल। ७. अभिलाषा। ८. भय।

रेसण—*(वि०)* मारने वाला। संहारक।

रेसणो—*(क्रि०)* १. नाश करना। बरबाद करना। २. मारना। ३. हानि पहुंचाना। ४. हराना। पराजय देना।

रेसम—दे० रेशम। *(न०)* एक शस्त्र।

रेसमानी—*(वि०)* रेशमी । **रेसमी** ।

रेसमी—*(वि०)* १. रेशम का २. मुलायम ।

रेसि—*(ना०)* १. इच्छा । २. पराजय । हार । ३. नाश । ४ हत्या । हिंसा ।

रेसो—*(न०)* १. फलफूल आदि का तंतु, रेशा । २. अंश । *(अव्य०)* किंचित भी । थोड़ा भी ।

रेह—*(ना०)* १. रेखा । **रा** । २. धूल । मिट्टी । *(न०)* कपट । **छल** ।

रेहण—*(न०)* १ जंग । काट । २. मैल ।

रेहळ—*दे०* रैळ ।

रेहा—*(ना०)* १. रेखा । लकीर । **लींगटी** । २. दरार । दरज । **रा** ।

रेहाण—*दे०* रिहाण ।

रेंकणो—*(क्रि०)* गधे का बोलना । **भूंकणो** ।

रै—*(ना०)* १. मनस्तोष । सब्र । संतोष । २. तृप्ति । ३. धन । संपत्ति । ४. सोना । सुवर्ण । *(अव्य०)* संबंध सूचक एक विभक्ति । 'के' अर्थ सूचक विभक्ति ।

रै-करणो *(मुहा०)* १. संतोष करना । २. मन मारना ।

रैकळियो—*दे०* रैकळो ।

रैकळो—*(न०)* १. एक बैल वाली गाड़ी । छोटी बैलगाड़ी । छकड़ा । **रेखळियो** । २. तोपगाड़ी ।

रेखळियो—*दे०* रैकळो ।

रैखळो—*दे०* रैकळो ।

रैगर—*दे०* रेगर ।

रैठाण—*दे०* रहठाण ।

रैण—*(ना०)* १, रात । २. साधने (धातु आदि को) का साधन । *(न०)* सोना चांदी के गहनों के अंगों को जोड़ने का टांका । रावतरी । रेण । *(न०)* १. रत्न । २. राज्य ।

रैणव—*दे०* रेणव ।

रैणा—*(ना०)* १. पृथ्वी । रयना । रत्न-गर्भा । २. रात्रि । *(न०)* रत्न ।

रैणादे—*दे०* रत्नादे ।

रैणायर—*(न०)* रत्नाकर समुद्र ।

रैणी—*(ना०)* रात्रि । रात ।

रैणीचर—*(वि०)* रजनीचर । राक्षस ।

रैत—*(ना०)* प्रजा । रैयत ।

रैदास—*(न०)* एक प्रसिद्ध चमार । हरि-भक्त ।

रैदास्यो—*(न०)* संत रैदास का शिष्य । *(वि०)* भोला । सीधा ।

रैबूदियो—*(वि०)* १. भोलाभाला । २. देघकूफ । ३. ठिगना ।

रैयत—*दे०* रैत ।

रैल—*(ना०)* १. पुस्तक पढ़ने के लिये उसे रखने का कैंचीनुमा लकड़ी की दो पट्टियों का एक ढाँचा । रिहल । रेहल । २. शीतकाल में चलने वाला तेज डंडा पवन ।

रैळो—*(न०)* आंगन के किसी छोटे भाग को शुद्ध करने के लिए गाय के गोबर से लीपने की क्रिया । आँगन के किसी थोड़े भाग में गोबर में की जाने वाली लिपाई ।

रैवंतक-गिरी—*(न०)* गिरनार पर्वत ।

रैवाळ—*(न०)* जागीरदार द्वारा कृषक से खेती का भाग लेने के पश्चात कृषक की बची हुई अनाज की राशि । *दे०* रहवाळ ।

रैंगणो—*(क्रि०)* पेट के बल खिसकना । रेंगना ।

रैंडी—*(ना०)* १. एरंड का पेड़ और उसका बीज । २. पीठ की ओर झुके हुये सींगों वाली गाय ।

रैंवतियां—*दे* मैमेलड़ियां ।

रो—*(प्रत्य०)* संबंधकारक छठी विभक्ति। 'का' अर्थक विभक्ति।

रोक—*(ना०)* १. रुकावट। अवरोध। २. कैद। ३. बंधन। *(वि०)* नकद। रोकड़ा।

रोक-टोक—*(ना०)* १. रुकावट। २. निषेध। मनाई।

रोकड़—*(न०)* १. नकद रुपया पैसा। २. पूंजी। जमा धन। ३. नकद लेन-देन। ४. नकद लेनदेन की बही। रोकड़ बही।

रोकड़-बही—*(ना०)* १. रोकड़ लेने देने की बही। २. वह बही जिसमें प्रतिदिन आय-व्यय लिखा जाता है।

रोकड़-बाकी—*(ना०)* दिन भर के लेन-देन के बाद पोते में शेष रही हुई रकम। संवरण-शेष। क्लोजिंग-बेलेंस।

रोकड़-मेळ—दे० रोकड़-बही।

रोकड़ियो—*(वि०)* १. जिसके पास रोकड़ है। धनवान। २. उधार से नहीं खरीदने वाला। ३. उधार से नहीं बेचने वाला ४. वह मुनीम जो रोकड़ बही लिखने का व रुपया-पैसा लेने देने का काम करता है। वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ और जमा-खर्च का हिसाब रहता है। ५. खजांची।

रोकड़ी—दे० रोकड़ सं. १, २, ३।

रोकड़ो—*(वि०)* १. उधार नहीं रखा हुआ। उसी समय दी हुई (कीमत)। *(न०)* १. नकद धातु का सिक्का। (नोट नहीं) नकद रुपया पैसा आदि। रोकड़। २. कुछ भी छिपाये बिना तुरन्त कहा जाने वाला कथन। स्पष्ट कथन। दो टूक कथन या उत्तर।

रोकड़ो-जवाब—*(अव्य०)* साफो इनकार।

रोकणो—*(क्रि०)* १. रोकना। अटकाना। २. होने नहीं देना। ३. जाने नहीं देना। मार्ग रोकना। ४. किसी काम या नौकरी पर लगाना। ५. रुपये को किसी माल की खरीदी में लगा देना। ६. कद में रखना।

रोक-थाम—*(ना०)* १. किसी कार्य को रोकने का प्रयत्न। २. अनुचित कार्य को रोकने का प्रयत्न।

रोकाई—*(ना०)* रोकने की क्रिया या भाव।

रोख—दे० रोष।

रोखणो—*(क्रि०)* क्रोधित होना। क्रोध करना।

रोखी—*(वि०)* १. क्रोधी। २. ईर्ष्यालु।

रोग—*(न०)* १. बीमारी। व्याधि। **मांदगी**। २. झगड़ा-टंटा।

रोगण—दे० रोगणी।

रोगणी—*(ना०)* रोगी (स्त्री) रोगिनी।

रोग-चाळो—*(न०)* रोग का फैलाव। रोग का उपद्रव।

रोग-दोग—*(न०)* रोग तथा भूतप्रेत आदि के आवेश की पीड़ा।

रोग-निदाण—*(न०)* रोग की उत्पत्ति और लक्षणों की पहिचान। निदान।

रोगली—*(वि०)* निरन्तर बीमार रहने वाली।

रोगलो—दे० रोगीलो।

रोगान—*(न०)* १. रोगन। वारनिश। २. घी, तेल आदि की चिकनाई।

रोगियो—*(वि०)* रोगी। **रोगीलो**। **मांदो**।

रोगी—*(वि०)* बीमार। रोगवाला। **मांदो**। **रोगियो**।

रोगीलो—*(वि०)* १. प्रायः बीमार रहने वाला। २, रोगी। माँदो।

रोचक—*(वि०)* १ रुचिकर। २. मनोरंजक।

रोचणो—*(क्रि०)* शोभा देना। **फाबणो।**

रोचन—*(न०)* १. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। २. सुन्दर स्त्री। रोचना। ३. गोरोचन। ४. रोली। ५. अनार। ६. प्याज।

रोज—*(न०)* १. रुदन। रोना। रुलाई। २. दिन। दिवस। *(अव्य०)* नित्य। प्रतिदिन। हमेशा।

रोजगार—*(न०)* १. जीविका का साधन। २. उद्यम। काम। ३. **वैपार।** व्यापार। ४. धन्धा। मजदूरी। **मजूरी।** ५. वेतन। **तनखा।**

रोजगारी—*(ना०)* १. दैनिक पारिश्रमिक का काम। २. दैनिक काम का पारिश्रमिक। **दैनगी।** ३. रोजगार। कामधंधा।

रोजनामचो—दे० रोजमेळ।

रोजनामो—दे० रोजमेळ।

रोजनाँवो—दे० रोजनामो।

रोजमर्रा—दे० रोजरोज।

रोज-मेळ—*(न०)* लेनदेन का दैनिक हिसाब-मिलान। **रोजनामचो।** २. प्रतिदिन का हिसाब। ३. रोजमेल की बही।

रोज-मेळ-बही—*(ना०)* वह बही जिसमें दिनभर के लेनदेन के इन्द्राजों के अनन्तर उस दिन की पोते-बाकी रकम लिखी रहती है। प्रतिदिन के लेन-देन और आय-व्यय के हिसाब की बही।

रोज-रोज—*(अव्य०)* हमेशा। सदा। प्रतिदिन। **रोजमर्रा।**

रोजा-ईद—*(ना०)* रोजों के बाद आने वाली ईद।

रोजायत—*(वि०)* रोजा रखने वाला। *(न०)* मुसलमान।

रोजिंदारी—*(ना०)* रोज की मजदूरी। **दैनगी।**

रोजी—*(ना०)* १. जीविका। **गुजरान। रोजगार।** २. भाग्य।

रोजीना—*(अव्य०)* नित्यप्रति। हमेशा। **सदा ही। रोज-रोज।**

रोजीनो—*(न०)* दैनिक वेतन। **दैनगी। रोजिंदारी।**

रोजो—*(न०)* १. मुसलमानों का रमजान मास में किया जाने वाला उपवास। दिन का उपवास (रात को नहीं)। २. धार्मिक मुसलमान या फकीर की कब्र। रोजा।

रोझ—*(न०)* नीलगाय।

रोट—*(न०)* १. मोटी रोटी। २. मोटी रोटी, गुड़ और घी के चूरमे का हनुमानजी को चढ़ाया जाने वाला भोग या नैवेद्य।

रोटी—*(ना०)* १. चपाती। रोटी। २. भोजन। खाना। ३. धन-दौलत।

रोटी-पाणी—*(अव्य०)* १. भोजन-भक्ति भोजन-सेवा। २. भोजन। ३. आव-भगत। खातिरदारी। ४. रोटी और पानी।

रोटी-बेटी-बहवार—*(अव्य०)* साथ में बैठकर या एक थाली में जीमने-जीमाने और कन्या के लेने देने (विवाह) का सम्बन्ध।

रोटी-राव—*(वि०)* अतिथियों का भोजन-पानी से विशेष आदर-सत्कार करने वाला।

रोटी-वहवार—*(अव्य०)* १. वह जातीय नियम जिसके यहां भोजन किया जा सके। २. साथ में बैठकर जीमने-जीमाने का संबंध।

रोटी-वेळा—*(ना०)* कलेवे के बाद (प्रातः १० से १२ बजे तक) के भोजन करने का समय **जीमणविळियाँ। भात-वेळा। बाटी-वेळा।**

रोटो—*(न०)* १. गेहूं के आटे की वह गोल मोटी लोई जो उपलों की आँच में सेकी जाती है। **बाटी।** २. रहँट का एक उपकरण। ३. पृथ्वी व पर्वत का वह उठा हुआ भाग जिसका सिरा माथे की तरह गोल हो।

रोठ—दे० रोठो।

रोठो—*(न०)* १. जमीन का उठा हुआ कड़ा भाग। २. पथरीली भूमि। ३. गुंबज की भाँति उठा हुआ पहाड़ी भाग। **रोटो।** ४. बेस्वादी. मोटी और खराब सुपारी।

रोड—*(ना०)* मार्ग। सड़क।

रोड़—*(न०)* १. अनघड़ पत्थर। २. रोध। अवरोध। रोक। रुकावट। ३. खच्चर। ४, टट्टू। *(वि०)* १ मूर्ख। बेवकूफ। २. चाल पर नहीं आया हुआ या सवारी आदि के लिये काम लायक चाल नहीं सीखा हुआ (बैल, ऊँट आदि)। ३. वर्णसंकर।

रोड़णो—*(क्रि०)* १. रोक रखना। २. हठ करके रोक रखना। ३. हठ पूर्वक मन को वश में करना। ४. हठ पूर्वक किसी बात का पालन करना। दृढ़ता से पालन करना। २. अटक में रखना। कैद में रखना।

रोड़ावणो—*(क्रि०)* रुलाना। **रोवाड़णो।** २. रुकाना।

रोड़ीराव—*(न०)* गदहा। **गधो।** खर।

रोड़ो—*(न०)* १. रुकावट। अवरोध। २ अनघड़ पत्थर।

रोडो—*(न०)* दुर्भाग्य। २. सिर (क्रोध में)।

रोढ—*(न०)* १. खच्चर। २. गदहा। ३. संहार।

रोढणो—*(क्रि०)* संहार करना। नाश करना।

रोण—दे० रवण।

रोणो—दे० रोवणो।

रोद—*(न०)* १. मुसलमान। *(वि०)* रौद्र। विकराल।

रोद्रणी—*(ना०)* यवन-सेना।

रोध—*(न०)* १. अवरोध। २. जलाशय का बाँध। ३. संहार। *(वि०)* अवरोधक।

रोधक—*(वि०)* अवरोधक।

रोधणो—*(क्रि०)* रोकना।

रोप—*(ना०)* १. शाक-सब्जी आदि के पौधों को उखाड़ कर दूसरी जगह रोपने की क्रिया। **रोपण।** २. उखाड़ कर दूसरी जगह रोपी हुई शाक-सब्जी। रोपा हुआ छोटा पौधा। ३. प्याज के रोपे हुये या रोप करने योग्य छोटे पत्ते। ४. प्याज के छोटे पत्ते। ५. बाण। तीर।

रोपणी—*(ना०)* १. बोआई। **बोवनी। वावणी।** २. साग-सब्जी की बाड़ी में पौधों की रोप लगाने का काम। ३. होलिका-डंड-स्थापन। ४. होलिका डंड। **होळी-डांडो।** गाँव के चौक में खड़ी की जानेवाली शमी-वृक्ष की शाखा। होलिका-स्तम्भ(फागुन मास में)।

रोपणो—*(क्रि०)* १. पैर जमाना । । पैर जमा कर खड़े रहना । अड़ कर खड़े रहना । २. किसी वस्तु का सिरा गड्ढे में जमा कर उसे खड़ा करना । गाड़ना । खोंस देना । ३. बीज डालना । बीजना । बोना । रोपना । ४. सम्पादन करना । ५. छोटे पौधों को उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना ।

रोपावणो *(क्रि०)* रुपवाना । लगवाना । बुवाना ।

रोफ—*(न०)* आतंक । भय ।

रोब—दे० रुआब ।

रोबदार— *(वि०)* १. प्रभावशाली । रोबीलो । २. शक्तिशाली ।

रोबीलो—दे० रोबदार ।

रोबो—दे० रोभो ।

रोभो—*(न०)* कष्ट । दुख । रोबो ।

रोम—*(न०)* १. शरीर के बाल । रोआँ । रूंआ । २. ऊन । ३. छेद । ४. इटली की राजधानी का नाम ।

रोमकंद—*(न०)* एक छंद विशेष ।

रोमावळी—*(ना०)* रोम-पंक्ति । रोमराजि । रूंआळी ।

रोमांच—*(न०)* आनंद व भय से रोएँ खड़े हो जाना ।

रोर—*(वि०)* १. दरिद्र । २. तेज । प्रचंड । *(न०)* १. हल्ला । कोलाहल । २. आवाज । शब्द । ध्वनि । ३. उपद्रव । उत्पात । ४. रौरव ।

रोळ—*(ना०)* १. शोर । कोलाहल । २. खलबली । ३. मश्करी । मजाक । *(न०)* १. दल । झुंड । २. उबटन । लेपन । *(वि०)* १. अवारा । लम्पट । २. अविश्वसनीय । ३. निकम्मा ।

रोळणो—*(क्रि०)* १. नाश करना । बरबाद करना । २. हैरान करना । रुलाना । गेहूँ आदि में कीड़े नहीं लगने देने के लिये राख मिलाना । ४. इधर-उधर बिखेरना । छितराना । *(वि०)* नाश करने वाला ।

रोळदट—*(ना०)* १. जुल्म । २. उच्छृंखलता । ३. शोर । हल्ला । ४. अराजकता । ५. असावधानी ।

रोळवणो—दे० रोळणो ।

रोळंब—*(न०)* भ्रमर । भमरो । भौंरा ।

रोळा—*(न०)* छंद विशेष ।

रोळागार—*(वि०)* कलहकारी । उपद्रवी ।

रोळा-रोळ—*(ना०)* १. भगदड़ । भागदौड़ । २. कोलाहल ।

रोळी—*(ना०)* १. तिलक लगाने की एक लाल बुकनी । कुंकुम । रोरी । २. गेहूँ का एक रोग । ३. विघ्न । रोळो ।

रोळो—*(न०)* १. युद्ध । २. कोलाहल । शोर । हल्ला ।

रोवणकारो—दे० रोवणगाळो ।

रोवणको—*(वि०)* १. रोने की आदत जैसी सूरत वाली । २. रोने वाली । ३. रोने की स्थिति में आई हुई । *(अव्य०)* ४. रोने जैसी ।

रोवणको—दे० रोवणगाळो ।

रोवणगारो—दे० रोवणगाळो ।

रोवणगाळो—*(वि०)* १. रुलाई आ जावे जैसा । २. जल्दी रोने वाला । *(न०)* रोने की सी दशा ।

रोवणहारी—*(वि०)* १. विधवा । २. रोने वाली ।

रोवणारी—*(वि०)* रोने वाली ।

रोवणारो—दे० रोवणियो ।

रोवणियो—*(वि०)* रोने वाला । **रोवणारो** ।

रोवणो—*(क्रि०)* १. रोना, रुदन करना । दुखी होकर आँसू बहाना । २. पछताना । *(ना०)* १. दुख । क्लेश । २. दुख का वर्णन ।

रोवा-कूटो—*(ना०)* बहुत से जनों का एक साथ रोना ।

रोवाड़णो—*(क्रि०)* रुलाना ।

रोष—*(ना०)* १. क्रोध । गुस्सा । २. कुढ़न । चिढ़ । ३. जोश ।

रोस—दे० रोष । *(ना०)* ताक । टाँड । **पछीत** ।

रोसणो—*(क्रि०)* हैरान करना ।

रोसन—*(ना०)* सेना का का दाहिना भाग । *(वि०)* १. प्रकाशमान । २. प्रगट । जाहिर । रोशन ।

रोसनदान—*(ना०)* हवा-प्रकाश के लिये रखी हुई छोटी खिड़की । वेंटीलेटर ।

रोसनाई—*(ना०)* १. लिखने की स्याही । **रूसनाई** । २. रोशनी ।

रोसनी—*(ना०)* १. प्रकाश । रोशनी । उजाला । २. उत्सव-पर्व आदि पर लगाई जाने वाली दीपक राशि ।

रोसरतो—*(वि०)* १. रोषरक्त । २. रोषावृत्त । रोषाविष्ट । ३. क्रोधी ।

रोसंगी—*(वि०)* क्रोधी । क्रोधायमान । **रोसांग** ।

रोसाण-अंध—*(वि०)* क्रोधांध ।

रोसानळ—*(ना०)* क्रोधाग्नि ।

रोसांग—दे० रोसंगी ।

रोसी—*(वि०)* रोष वाला । रोषित । क्रुद्ध । **रोसीलो** ।

रोसीलो—*(वि०)* १. रोषावृत्त । २. रुष्ट । ३. क्रोधी । **रोसी** । ४. स्वाभिमानी ।

रोह—*(ना०)* १. अवरोध । रोक । २. प्रतिकार । बदला । प्रतिशोध । ३. मोरचा । ४. युद्ध ।

रोहड़णो—*(क्रि०)* १. रोकना । अवरोध करना । २. बंधन में रखना ।

रोहणदे—*(ना०)* चंद्रमा की पत्नी रोहिणी ।

रोहणियाळ—*(वि०)* अकेला ही शत्रु सेना को रोक कर उससे युद्ध करने वाला । महावीर । **रोहणियास** ।

रोहणियास—दे० रोहणियाळ ।

रोहणी—दे० रोहिणी ।

रोहणीवर—*(ना०)* चंद्रमा ।

रोहणो—*(क्रि०)* १. नाश करना । संहार करना । २. रोकना । ३. घेरना ।

रोहाइ-भीतरोट—दे० रोहीवीतरोट ।

रोहाड़—*(ना०)* १. ठंडी और छुटपुट वर्षा । २. ठंडी में लगातार बादल बने रहने वाला मौसम ।

रोहिणी—*(ना०)* १. चंद्रमा की पत्नी । २. चौथा नक्षत्र । ३. बिजली । ४. बलराम की माता का नाम । ५. गाय ।

रोहिणेय—*(ना०)* बलराम ।

रोहित—*(वि०)* लाल रंग का । *(ना०)* १. मृग । २. लोमड़ी ।

रोहिताश्व—*(ना०)* १. सत्यवादी हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम ।

रोहितास—*(ना०)* अग्नि । दे० रोहिताश्व ।

रोही—*(ना०)* १. जंगल । वन । २. सुनसान स्थान ।

रोहीड़ो—*(ना०)* ढाक वृक्ष । टेसू वृक्ष ।

रोही-वीतरोट—*(ना०)* सिरोही जिले का एक प्रदेश ।

रोहो—*(न०)* १. आक्रमण । २. अवरोध । रोक । ३. मोरचा ।

रौद—*(न०)* १. मुसलमान । **रोद** । २. शत्रु । *(वि०)* रौद्र । क्रोधपूर्ण ।

रौद-धड़ा—*(ना०)* यवन-सेना ।

रौदाळ—*(न०)* १. मुसलमान । २. मुसलमान लोग । *(वि०)* १. बेसऊर । २. निकम्मा ।

रौद्र—*(न०)* १. काव्य के नौ रसों में का एक । २ रौद्रपना । *(वि०)* १. भयंकर । उग्र । २. रुद्र संबंधी ।

रौराइण—*(न०)* १. मुसलमान लोग । म्लेच्छगण । २. यवन-सेना । *(ना०)* यवन-स्त्री ।

रौद्राळ—*(न०)* १. यवनगण । मुसलमान । *(वि०)* रुद्ररूप । महान क्रोधी ।

रौनक—*(न०)* १. शोभा । २. चमक-दमक । ३. प्रफुल्लता ।

रौरव—*(न०)* एक नरक का नाम । *(वि०)* भयंकर ।

रौळ—दे० रोळ ।

रौळदट—दे० रोळदट ।

रौळो—दे० रोळो ।

रौस—*(अव्य०)* भाँति । तरह ।

रौंस—दे० रौंस ।

ल

ल— संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा का २८ वाँ व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान दंत है ।

लकड़—*(न०)* लकड़ी ।

लकड़-फाड़—दे० लकड़फाड़ो ।

लकड़-फाड़ो—*(न०)* जलाने की लकड़ी चीरने फाड़ने वाला । *(वि०)* असंगत और अशिष्ट बोलने की आदत वाला । **लकड़फाड़** ।

लकड़बघो—*(न०)* एक हिंसक पशु । लकड़बग्घा ।

लकड़बघ्घो—दे० लकड़बघो ।

लकड़ी—*(ना०)* १ वृक्ष का कटा हुआ कोई भाग । २. ईंधन । **बळीतो** । ३. छड़ी । ४. लाठी ।

लकड़ी-देणो—*(मुहा०)* १. अग्नि संस्कार करना । २. लाश को जलाने के लिये श्मशान जाना । लाश के साथ श्मशान तक जाना ।

लकड़ो—*(न०)* लकड़ी का मोटा टुकड़ा । लक्कड़ ।

लकलक—*(न०)* लंबी गरदन वाला एक जल-पक्षी ।

लकवो—*(न०)* पक्षाघात । फालिज ।

लकार—*(न०)* 'ल' वर्ण । **लल्लो** ।

लकीर—*(ना०)* १. रेखा । **लीटी** । **ओळी** । २ पंक्ति । **ओळ** । **पंगत** । ३. परंपरा ।

लकुट—*(ना०)* लकड़ी । छड़ी ।

लकूंदर—*(न०)* १. बंदर । २. बंदूक का घोड़ा । ३. **जामगरी** । पलीता । *(वि०)* १. लुच्चा । लफंगा । २. नागा ।

लक्कड़-फाड़—दे० लकड़फाड़ ।

लक्कड़-फाड़ो—दे० लकड़फाड़ो ।

लक्ष—*(न०)* १. एक लाख की संख्या । २. ध्यान । ३. उद्देश्य । लक्ष्य । ४. निशान (ताकने का) । *(वि०)* सौ हजार । एक लाख ।

लक्षण—*(न०)* १. चिन्ह । निशान । २. अन्य वस्तु से अलग करने वाला कोई खास धर्म-गुण । ३. किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचानी जा सके । ४. ढंग । आचरण । ५. रोग की पहचान । ६. शरीर के अंग में वे चिन्ह जो शुभ या अशुभ के द्योतक होते हैं । (सामुद्रिक) ७. परिभाषा । ८. स्वभाव । ९. बुद्धि । १०. बत्तीस की संख्या ।

लक्षणा—*(ना०)* लक्ष्यार्थ का बोध कराने की शब्द-शक्ति । शब्द की वह शक्ति जिससे उसका साधारण अर्थ से भिन्न अर्थ प्रगट हो । (व्या०)

लक्ष-वरीस—*(वि०)* लाखों का दान देने वाला ।लाख-वरीस ।

लक्ष-वेधी—*(वि०)* निशाने का भेदन करने वाला ।

लक्षाधिपति—*(न०)* लाख रुपयों की पूंजी वाला । लखपति । लखेसरो ।

लक्षि—*(ना०)* १. लक्ष्मी । २. एक लाख । ३. लखपति । *(वि०)* लक्ष-वाला ।

लक्ष्मण—*(न०)* श्रीराम का छोटा भाई । राजा दशरथ की रानी सुमित्रा का पुत्र ।

लक्ष्मणा—*(ना०)* १. श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक । २. एक वनस्पति ।

लक्ष्मी—*(ना०)* १. धन की अधिष्ठात्री देवी । २. विष्णु की पत्नी । ३. चौदह रत्नों में से एक जो समुद्र-मंथन में से निकला था । ४. धन । सम्पत्ति । ५. दुर्गा का एक नाम । ६. गृहस्वामिनी । ७. शोभा । ८. शमी वृक्ष । खेजड़ी ।

लक्ष्मी-कांत—*(न०)* विष्णु भगवान ।

लक्ष्मी-नाथ—*(न०)* विष्णु भगवान ।

लक्ष्मी-पति—*(न०)* १. विष्णु भगवान । २. धनवान । ३. सुपारी या लौंग का पेड़ ।

लक्ष्मी-पूजा—*(ना०)* दीपावली पर होने वाला लक्ष्मी-पूजन ।

लक्ष्य—*(न०)* १. वह जिस पर निशाना लगाया जाय । निशान । २. जिस पर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाय । ३. लक्ष । हेतु । ४. वह जिसका अनुमान लगाया जाय । अनुमेय । ५. उद्देश्य । ६. ध्येय । *(वि०)* १ लक्ष देने जैसा । २. देखने, जानने या ताकने में आये जैसा । दृश्य ।

लक्ष्य-वेध—*(न०)* चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना साधना ।

लक्ष्यार्थ—*(न०)* शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलने वाला अर्थ । (व्या०)

लख—*(न०)* १. लाख की संख्या । २. लक्ष । ध्यान ।

लख-चौरासी—*(ना०)* १. चौरासी लाख जन्मों का चक्र । २. चौरासी लाख जीव-योनि ।

लखण—*(न०)* १. समझ । बुद्धि । २ विवेक । ३. लक्षण । चिन्ह । ४. गुण । ५. योग्यता । ६. व्यवहार । ७ आचार । ८ राम के भाई लक्ष्मण । लखन ।

लखण-झरणो—*(मुहा०)* १. खोटे लक्षणों का प्रगट होना । २. बुरी आदतें होना । ३. खोटे काम करना ।

लख-भोक—*(न०)* लाख बार धन्यवाद ।
लखण-अग्रज—*(न०)* श्रीरामचन्द्र ।
लखण पड़णो—*(मुहा०)* आदत पड़ना ।
लखणो—*(क्रि०)* १. जानना । २. जान लेना । ३. समझ लेना । ४. भाँपना । ताड़ जाना । ५. देखना । ६. देख लेना ।
लख-दळियो—*(न०)* एक प्रकार का दलिया ।
लख-दाद—*(ना०)* लाख बार धन्यवाद । असंख्य धन्यवाद ।
लखपति—*(न०)* लक्षाधिपति । **लखवइ** ।
लखमण-वीर—*(न०)* श्रीराम ।
लखमी—दे० लिखमी ।
लखमीनाह—*(न०)* लक्ष्मीनाथ । विष्णु ।
लखमी पत—दे० लक्ष्मीपति ।
लखमीवर—*(न०)* लक्ष्मीपति ।
लख-मोलो *(वि०)* लाख रुपयों के मूल्य का ।
लख-लाणत—*(ना०)* लाख बार धिक्कार ।
लख-लूट—*(ना०)* १. बेहद खर्च । **लखलूट** । २. अपव्यय । *(वि०)* बहुत अधिक पुष्कल । बेहद ।
लखवइ—*(न०)* लखपति ।
लखाणो—*(क्रि०)* १. दिखाई देना । दिखना । २. समझ में आना । ३. समझाना । ४. दिखाना । ५. ज्ञात होना ।
लखारण—दे० लखारी ।
लखारी—*(ना०)* लखारे की या लखारा जाति की स्त्री । **लखेरी** ।
लखारो—*(न०)* लाख की चूड़ियों आदि का काम करने वाली जाति का पुरुष । **लखेरा** ।
लखाव—*(ना०)* जानकारी ।
लखावणो दे० लखाणो ।
लखियो—*(न०)* १. ऋण । कर्ज । २. लक्ष्य ।
लखी—*(वि०)* लाख के रंग जैसा । दे० लख्खी ।
लखीणो—दे० लाखीणो ।
लखी-वणजारो—दे० लख्खी वणजारो ।
लखेवणो—*(न०)* कर्ज दिये हुए रुपयों को कानूनी मयाद के अंदर नहीं चुका सकने की स्थिति में खत (दस्तावेज) को मयाद बाहर नहीं जाने देने के लिये कर्जदार से अपने लेने पेटे बहुत साधारण रकम लेकर अथवा झूठा जमा-इंदराज करके कर्जदार के दस्तखत करवा कर या जाली रूप से करके खत की मयाद बढ़ाने की ऋणदाता की एक जालसाजी कार्यवाही । अस्तू ।
लखेसरी—*(न०)* लखपति । **लखवइ** ।
लखोटो—*(न०)* बड़े तालाब के बीच में बना हुआ मिट्टी का चबूतरा या छतरी आदि, जो तालाब की गहराई देखने व तैरने वालों के विश्राम के लिये बनाया जाता है । लक्ष्य स्तूप । लक्ष्यवट । **लाखावट** । **लाखोटो** ।
लख्खी—*(वि०)* १. शुभ लक्षणों वाला । २. लक्षाधिपति । ३. वह जो बैल, गाय आदि एक लाख पशुओं का मालिक हो ।
लख्खी-वणजारो—*(न०)* १. लाखों का व्यापार करने वाला बनजारा । २. वह बनजारा जिसके पास (माल ले-जाने या लाने के लिए लाल बैल हों तथा उनमें पोठ में) लाखों का माल भरा हो । ३. बहुत बड़े टांडे का नायक । ४. राजस्थानी लोक वार्ताओं का एक

बनजारा-नायक जिसके पास माल ढोने के लिये एक लाख बैलों का कारवाँ था।

लग—*(अव्य०)* १. किसी व्यापार या वस्तु की सीमा या अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति। तक। पर्यन्त। २. निकट। पास। ३. वास्ते। *(ना०)* १. पक्ष। २. समर्थन। ३. लगन। लौ। लगाव। ४. अटकन। टेका। **अटकण**। ५ मकान की दीवाल की ऊँचाई।

लगट—दे० लागट।

लगणो—दे० लागणो।

लगते-हाथ—*(अव्य०)* एक काम को करते हुये दूसरे काम को भी उसके साथ या उसके कर चुकने के तुरंत बाद करना। इसके साथ ही। साथ का साथ। **साथो-साथ। लगतो-लगत।**

लगतो—*(अव्य०)* १. पास। निकट। २. जुड़ा हुआ।

लगतो-लगत—दे० लगते-हाथ।

लगन—*(न०)* १. विवाह। २. विवाह का मुहूर्त्त। ३. शुभ कार्य का मुहूर्त्त। ४. कोई एक ग्रह एक राशि में रहे, उतना समय। ५. ज्योतिषी से लिखाया गया लगन-पत्र। ६. किसी कार्य में पूर्णतया ध्यान लगाना। ७. लगाव। ८. स्नेह। ९. संबंध। *(वि०)* १. लगा हुआ। लिप्त। २. आसक्त।

लगना—*(न०)* १. एक वैवाहिक लोकगीत। २. लग्न। लौ। ध्यान। ३. प्रेम। स्नेह।

लगनियार—*(न०)* विवाह का एक विशेष भोजन समारोह।

लग-भग—*(अव्य०)* १. प्रायः। करीब-करीब। **घणो-करने। घणो-सारो।** ३. अनुमान से। अंदाज से। **आसरे।** ३. पास में। **अड़ोअड़।**

लग-लगाट—दे० लगते-हाथ।

लगवाड़—*(ना०)* १. अनुचित संबंध (स्त्री-पुरुष का)। २. संबंध। ३. प्रीति। ३. स्त्री का यार।

लगवाड़ियो—*(न०)* पर स्त्री से अनुचित संबंध रखने वाला। स्त्री का यार।

लगस—*(न०)* १. सेना। २. बादल समूह। *(अव्य०)* १. साथ-साथ। २. ताईं। तक।

लगा—दे० लगायत।

लगाड़णो—*(क्रि०)* १. लगाना। मिलाना। २. सटाना। ३. जड़ना। ४. जोड़ना। ५. चिपकाना। ६. छुआना। ७. काम सौंपना। ८. दाँव पर धन लगाना। ९. खर्च करना। १०. अर्पण करना। ११. जलाना। सुलगाना। **सिळगावणो।** १२. दाम आँकना। १३. बोली लगाना। १४. लागू करना।

लगाड़ू—*(वि०)* लगाने वाला (झगड़ा आदि)।

लगाण—दे० लगावण। दे० लगान।

लगाणो—दे० लगाड़णो।

लगातार—*(अव्य०)* निरंतर। सतत। **लगोलग।**

लगान—*(न०)* १. कर। टैक्स। २. माल-गुजारी।

लगाम—*(ना०)* १. घोड़े के मुँह में लगाया जाने वाला लोहे का एक ढाँचा (चौकड़ा) जिसके दोनों ओर रस्सी या चमड़े की लंबी पट्टी बंधी रहती है। बाग। रास। २. अंकुश।

लगामण—दे० लगावण।

लगायत—*(अव्य०)* १. आखिर तक। अंत तक। २. इत्यादि। ३. तक। तक भी। ४. सबको लेकर। सब के साथ। सब मिलाकर। ५. लगा कर।

लगार—*(वि०)* १. थोड़ा। २. किंचित। लगारेक। *(क्रि०वि०)* लगा करके।

लगारेक—*(अव्य०)* किंचित मात्र भी। किंचित मात्र। *(वि०)* १. बहुत थोड़ा। २. थोड़ा। ३. लगाया जा सके जितना।

लगाव—*(ना०)* १. संबंध। वास्ता। २. प्रीति। ३. अनुचित संबंध। ४. रूप या स्वाद बदलने के लिये मूल पदार्थ में की जाने वाली किसी अन्य वस्तु की मिलावट। ५. वह स्थान जहाँ से मकान में आसानी से प्रवेश किया जा सके। ६. पक्षपात।

लगावट—*(ना०)* १. झगड़ा लगाने या बहकाने की बात। दे० लगाव।

लगावरण—*(ना०)* रोटी के साथ खाई जाने वाली साग तरकारी। साग; तरकारी, चटनी आदि।

लगावरणो—दे० लगाड़णो।

लगीची—*(ना०)* १. तीव्र आसक्ति। प्रगाढ प्रेम। लगन। २. सत्संग। ३. नियमित काम।

लगेज—*(ना०)* १ रेल की यात्रा में साथ रहने वाला सामान। रेलवे मुसाफिर का सामान। २. अमुक परिणाम से अधिक सामान को तुलवा कर और शुल्क देकर रेलवे अधिकारी से रसीद प्राप्त करना।

लगे-टगे—*(अव्य०)* लगभग। करीब।

लगै—*(अव्य०)* तक। लग। पर्यंत।

लगोलग—*(अव्य०)* १. बिलकुल पास में। लगता हुआ। २. पाडोस में। ३. लगते हाथ। इसके साथ ही। ४. लगातार। निरन्तर।

लग्गो—*(ना०)* काम का आरंभ। लग्गा।

लग्न—दे० लगन।

लग्न-कुंडली—*(ना०)* जन्म-कुंडली। टेवो।

लग्न-पत्रिका—*(ना०)* १. कुंकुमपत्रिका। कुंकुपतरी। कंकोतरी। २. वह पत्रिका जिसमें विवाह का मुहूर्त्त दिया गया हो।

लघिमा—*(ना०)* १. अति लघु हो जाने की एक सिद्धि। २. आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि।

लघु—*(वि०)* १. छोटा। २. कम। ३. हलका। ४. नीच। ५. दुर्बल। ६. एक मात्रा का। ह्रस्व। *(ना०)* १. काव्य तथा व्याकरण में वह शब्द जो एक ही मात्रा का होता है। अ, इ, उ आदि। २. समय का एक परिमाण।

लघु-कथा—*(ना०)* १. कथा साहित्य का एक प्रकार। २. छोटी वार्ता।

लघुतम—*(ना०)* वह सबसे छोटी संख्या, जो छोटी अथवा अधिक संख्याओं से बिना शेष के विभाजित हो सके। लघुतम समावर्तक। (ग०) *(वि०)* सबसे छोटा।

लघुता—दे० लघुताई।

लघुताई—*(ना०)* १. लघुता। छोटापन। २. हलकापन।

लघु-मति—*(वि०)* कम अक्ल। मूर्ख।

लघु-लिपि—*(ना०)* शीघ्र-लिपि।

लघु-वयस—*(ना०)* १. छोटी उम्र वाला। २. बालक।

लघु-शंका—*(ना०)* पेशाब करना। पेशाब की हाजत। **एकी जाणो। एकी।**

लचक—*(ना०)* १. झुकने की क्रिया। २. लचकाती चाल। ३. कमर में पड़ने वाला झुकाव। ४. झुकाव के कारण कमर में पड़ने वाली चनक (दर्द)। ५. मरोड़। **मचक।**

लचकणो—*(क्रि०)* १. झुकना। २. कोमलता तथा नखरे के कारण चलते समय स्त्रियों का रह-रह कर झुकना।

लचकाणो—*(वि०)* १. लज्जित। शर्मिंदा। **लजकाणो।** *(क्रि०)* १. झुकाना। लचकाना। २. लज्जित होना। ३. ढीला पड़ना।

लचकीली—*(वि०)* १. कमर लचकाने वाली। २. लचक वाली।

लचकीलो—*(वि०)* १. जो आसानी से झुक जाता हो। २ लचक वाला।

लचको—*(ना०)* १. लिहाज। संकोच। २. शर्म। ३. लौंदा। *दे०* **लचक।**

लचपच—*(वि०)* १. लचीला। २. अधिक घृत युक्त (लपसी आदि)। ३. घृत आदि प्रवाही से पूर्ण लौंदा जैसा। **लचपचो।**

लचपचो—*दे०* लचपच।

लचरको—*(ना०)* १. लाज। शर्म। **लचको।** २. लिहाज। ३. विनय। ४. हिलने-डुलने की क्रिया या भाव।

लचाणो—*(क्रि०)* १. शर्मिंदा करना। २. शर्मिंदा होना। ३. झुकाना।

लचीलो—*(वि०)* लचकदार। लचीला।

लच्छ—*(ना०)* १ लक्षण। २. स्वभाव। ३. निशाना। *(ना०)* लक्ष्मी। **लाछ।**

लच्छन—*दे०* लक्षण।

लच्छी—*(ना०)* १. लक्ष्मी। २. सूत, रेशम, ऊन, तार आदि की गुच्छी।

लच्छी वर—*(ना०)* लक्ष्मी के पति विष्णु भगवान।

लच्छेदार—*(वि०)* १. लच्छों वाला। जिसमें लच्छे हों। २. चिकनी चुपड़ी तथा मजेदार (बात)।

लच्छो—*(ना०)* १ धागा, तार, डोरी आदि की लपेटन। गुच्छे के रूप में गुथे या लपेटे हुए तार, धागा आदि। २. स्त्रियों के पाँव का एक गहना।

लछ—*(ना०)* १. लक्ष्मी। धन। २. लक्ष्मी। विष्णु-पत्नी। ३. लक्षण। ४. स्वभाव। आदत।

लछमण—*(ना०)* महाराजा दशरथ और उनकी रानी सुमित्रा के पुत्र। श्रीराम के छोटे भाई। लक्ष्मण।

लछमण-झूला—*(ना०)* १. एक तीर्थ। २. ऋषिकेश के पास बना गंगा पर एक पुल।

लछमी—*दे०* लिछमी।

लछवइ—*(ना०)* लक्ष्मीपति। विष्णु।

लछ-वर—*(ना०)* लक्ष्मीपति। विष्णु।

लछी—*(ना०)* लक्ष्मी।

लछी-वर—*(ना०)* लक्ष्मी-वर। विष्णु।

लछो—*दे०* लच्छो।

लज—*(ना०)* लज्जा। शर्म। **लाज।**

लजकाणो—*दे०* लचकाणो।

लजखाणो—*(वि०)* लज्जित। शर्मिंदा। *(क्रि०)* लज्जित होना।

लजणो—*(क्रि०)* लज्जित होना। शर्मिंदा होना। **लाजणो।**

लजदार *(वि०)* लाज वाला।

लज-पथ—*दे०* लज-राह।

लज-रख—*(वि०)* लाज रखने वाला ।

लज-राह—*(ना०)* लाज का मार्ग । मर्यादा ।

लजवण—*(ना०)* लाज । शरम । *(वि०)* लजाने वाला ।

लजवंती—*(वि०)* लाज वाली । *(ना०)* छुईमुई का पौधा ।

लजवाळो—*(वि०)* लाज वाला ।

लजाणो—*(क्रि०)* १. लज्जित होना । **लजावणो** । २. लज्जित करना । *(वि०)* लाज वाला ।

लजा-थंभ—*(ना०)* १. लज्जा-स्तंभ । लज्जा-रक्षक । २. मर्यादा रक्षक । ३. लज्जा-स्वरूप । ४. मर्यादा-स्वरूप ।

लजामणो—*(वि०)* १. लज्जा जनक । शर्मिंदा करने वाला । २. लज्जित । शर्मिंदा ।

लजायमान—*(वि०)* शर्मिंदा । लज्जित ।

लजाळू—*(वि०)* लज्जाशील । लजीला । शर्मीला । *(ना०)* छुईमुई का पौधा ।

लजावणो—दे० लजाणो ।

लजावंत—*(वि०)* लाज वाला ।

लजिया—*(ना०)* लाज । शर्म ।

लजियाहीण—दे० लज्जाहीन । बेशर्म ।

लजीज—*(वि०)* १. लज्जतदार । स्वादिष्ट । २. प्रिय । ३. सुंदर । बढ़िया ।

लजीली—*(वि०)* लाज वाली । लजवंती ।

लजीलो—*(वि०)* लज्जाशील । **लजाळू** ।

लज्ज—दे० लज्जा ।

लज्जत—*(ना०)* १. स्वाद । जायका । २. मजा । आनंद ।

लज्जतदार—*(वि०)* १. स्वादिष्ट । २. मजेदार । **लजीज** ।

लज्जा—*(ना०)* १. लाज । शर्म । २. संकोच । ३. बदनामी ।

लज्जा-जनक—*(वि०)* १. लाज करने वाला । १. लज्जाप्रद ।

लजाप्रद—*(वि०)* लज्जाजनक ।

लज्जावान—*(वि०)* शर्मदार । लज्जाशील ।

लज्जाशील—*(वि०)* लाज वाला । शरम वाला ।

लज्जाहीन—*(वि०)* बेशर्म । निर्लज्ज । **लाजहीणो** । **निलज** ।

लज्या—दे० लज्जा ।

लज्याळी—*(वि०)* लाज वाली । लजवंती ।

लज्याळो—*(वि०)* लाज वाला । लज्जावान ।

लज्जा हीण—*(वि०)* बेशरम । निर्लज्ज । **निलजो** ।

लछिका—*(ना०)* गणिका । वेश्या । **पातर** ।

लट—*(ना०)* १. रेंगने वाला एक छोटा कीड़ा । २. केशलटा । **लटिया** । ३. लटी । अलक ।

लटक—*(ना०)* १. शैली । २. छटा । खूबी । ३. अंगों की कोमल मनोहर चेष्टा । ४. लटका । ५. लटकने की क्रिया भाव ।

लटक-जुहार—*(ना०)* १. झुक करके किया जाने वाला अभिवादन । २. खुशामद ।

लटकण—*(ना०)* १. कान का एक गहना । २. नाक का एक गहना । नकबेसर । ३. लटकने वाली वस्तु । ४ लोलक ।

लटकणो—*(क्रि०)* १. लटकना । झूलना । २. किसी आधार के नीचे की ओर टंगना । ३. काम का अधूरा पड़ा रहना । ४. आधार रहित होना । ५. न इधर का रहना और न उधर का । बीच में ही रुल जाना । ६. वंचित

रहना। प्राप्त न हो सकना। ७. दुविधा में पड़ना।

लटकदार—*(वि०)* लटके वाला।

लटक-मटक—*(ना०)* १. छटा। २. नखरा। लटका।

लटकाणो— दे० लटकावणो। दे० लटकणो।

लटकाळी—*(वि०)* १. लटके वाली। २. नखरे वाली। नखराळी।

लटकाळो—*(वि०)* १. लटके वाला। २. नखरे वाला। नखराळो।

लटकावणो—*(क्रि०)* १. लटकाना। टांगना। २. भरोसे में रखना। ३. लटकवाना। ४. न इधर का रखना और न उधर का। बीच में ही लटके रखना।

लटकियो—*(न०)* १. शिशु के झूले में लटकाया जाने वाला खिलौना। २. शिश्न।

लटकीली—दे० लटकाळी।

लटकीलो - दे० लटकाळो।

लटकेदार—*(वि०)* १. नखरे वाला। लटके वाला। लटकीलो।

लटको—*(न०)* १. ढंग। २. बनावटी चेष्टा। ३. ढोंग। ४. लटका। नखरो। ५. कृत्रिम चाल। ६. सिर हिलाकर बतलाई जाने वाली स्वीकृति या अस्वीकृति का प्रकार। ७. शरीर का मोहक हावभाव। ८. झपकी। हल्की नींद।

लटणो—*(क्रि०)* १. झुकना। २. लाटा लिया जाना। ३. कमजोर होना।

लटपट—*(ना०)* खुशामद। चापलूसी।

लटा—*(ना०)* केशपाश। *(वि०)* १. लंपट। २. पतित। नीच।

लटाई *(ना०)* १. फसल को लाटने की क्रिया या भाव। २. ऋणदाता को दिया जाने वाला कृषि भाग। ३. नेगियों को दिया जाने वाला कृषि-नेग।

लटाफोरी—*(ना०)* खुशामद।

लटारो—*(न०)* बोहरे या जागीरदार को कृषि उपज का निश्चित भाग देने वाला व्यक्ति। २. लाटने वाला व्यक्ति।

लटिया—*(न०ब०व०)* सिर के केशों के उलझे हुए बालों की लटें।

लटी—*(ना०)* १. सिर के केशों की छोटी लट। लटिया। अलक। २. वेश्या। ३. झूठी बात। गप। ४. बुरी बात। ४. घोड़े की अयाल।

लटूमणो—*(क्रि०)* १. लटकना। २. झूमना। लटूंबणो। ३. चिपकना।

लटूंबणो—दे० लटूमणो।

लट्टू—*(न०)* १. लकड़ी का एक खिलौना, जिसे डोरी लपेट कर और जमीन पर फेंक कर नचाया जाता है। बंगूड़ो। भमरड़ो। २. बिजली का बल्ब। लोटियो।

लट्टू-होणो—*(मुहा०)* मोहित होना।

लट्ठो—*(न०)* कुत्ता। स्वान। कुत्तो। कूतरो।

लठ—दे० लठ्ठ।

लठ्ठ—*(वि०)* १. मोटा और मजबूत। २. मूर्ख। *(न०)* हाथ में पकड़ने की मोटी लकड़ी। बड़ा डंडा। डांग। २. मोटा-लम्बा लकड़ा। ठूंठ। ठूंठो।

लठ्ठबाज—*(वि०)* १. लड़ाई झगड़ा करने वाला। २. लठैत।

लठ्ठो—*(न०)* १. एक प्रकार का कपड़ा। २. लकड़ी का लंबा बल्ला। शहतीर। ३. भेड़िया।

लड़—*(ना०)* १. लड़ी। २. माला। ३. संकल। ४. गले में पहिनने का एक आभूषण। **सांकळ**। ५. कतार। पंक्ति।

लड़कणियो—*दे०* लड़णियो।

लड़कणो—*(वि०)* लड़ने का स्वभाव वाला। **टंटाखोर**।

लड़काई—*(ना०)* १. लड़कपन। **बचपन**। **छोरापणो**। २. बाल्यावस्था। ३. नासमझी।

लड़की—*(ना०)* १. बच्ची। बालिका। **छोकरी**। **छोरी**। **बायलो**। २. पुत्री। कन्या। **बेटी**।

लड़को—*(न०)* १. बालक। **छोकरो**। **छोरो**। २. पुत्र। **बेटो**।

लड़खंड़णो—*(क्रि०)* १. डगमगाना। २. काँपना। थर्राना।

लड़खड़ाणो—*(क्रि०)* *दे०* लड़खड़णो। डांटना। धमकाना।

लड़णियो—*(वि०)* लड़वैया। लड़ने वाला। **लड़कणियो**।

लडणो—*(क्रि०)* १. लड़ना। मारा-मारी करना। भिड़ना। २. युद्ध करना। ३ तकरार करना। टंटा करना। झगड़ा करना। ४. टकराना। ५. वाद-विवाद करना। बोला-बोली करना। ६. अनबन होना। ७. कोर्ट-चढ़ना। अदालत में फरियाद-दावा करना। ८. कुश्ती करना। ९. अत्यधिक परिश्रम करना। १०. नाराज होना।

लड़णो-भिड़णो—*(क्रि०)* झगड़ा करना। लड़ना-भिड़ना।

लड़त—*(ना०)* १. लड़ाई। २. विवाद। ३. कुश्ती। ४. अनबन। तकरार। ५. मारा-मारी।

लड़थड़णो—*(क्रि०)* थकावट, अशक्ति या नशे आदि के कारण चलते समय पाँवों का यथाक्रम नहीं पड़ना। लड़खड़ाना। २. इन्हीं कारणों से अटकते हुए बोलना। ३. फिसलना। ४. लड़खड़ाना। ठोकर खाना। ६. भिड़ना। टकराना।

लड़थड़ाणो—*दे०* लड़थड़णो।

लड़ थड़ावणो –*दे०* लड़थड़णो।

लड़दो—*दे०* लड़धो।

लड़धो—*(वि०)* १. बेतमीज। २. मूर्ख। बेवकूफ। ३. स्वस्थ और दृढ़ शरीर वाला पर बुद्धिहीन। ४. अलमस्त। ५. **लठ्ठ**। अल्हड़। ६. जवान। ७. गंवार। ८. बेडोल।

लड़-पोतो—*(न०)* प्रपौत्र का पुत्र।

लड़लूम—*दे०* लड़ालूम।

लड़ाई—*(न०)* १. झगड़ा। टंटा। **कजियो**। २. युद्ध। ३. विवाद। ४. मारा-मारी। ५. टक्कर। ६. अनबन। ७. विरोध। ८. कुश्ती।

लड़ाईखोर—*(वि०)* १. लड़ने के स्वभाव वाला। २ टंटाखोर। ३. लड़ने वाला। **लड़णियो**।

लड़ाक—*(वि०)* लड़ने वाला।

लड़ाकण—*(वि०)* लड़ने वाली।

लड़ाकू—*दे०* लड़ाक।

लडाणो—*दे०* लडावणो।

लड़ाणो—*(क्रि०)* १. लड़ने के लिये उकसाना। लड़ने में प्रवृत्त करना। २. भिड़ना। ३. कलह के लिये उद्यत करना। ४. परस्पर उलझाना। लड़वाना। ६. मुकाबिला करवाना।

लड़ायक—*(वि०)* १. लड़ने वाला। २. लड़ सके जैसा। लड़ सकने वाला। ३. लड़ने वाला

लड़ालूम—*(वि०)* १. सर्वांग में आभूषणों से लदी हुई या शोभित (स्त्री)। अलंकृत। २. वस्त्रालंकारों से सुसज्जित। सुसज्जित। ३. फलों की लड़ियों से शोभित व भारान्वित। (लता या वृक्ष)। ४. अत्यधिक फल-पुष्प युक्त। ५. फलों का गुच्छा। ६. गुच्छा।

लडावणो—*(क्रि०)* १. प्यार करना। लाड़ करना। २. प्यार से पुचकारना। ३. लाड़ या प्रशंसा की बातें करना। प्रशंसा करना। ४. जमाई व समधियों के मजाक और व्यंग्य के गीत गाना *(विवाह, गौना आदि के प्रसंगों में)*।

लड़ावणो—दे० लड़ाणो।

लड़ांलूम—दे० लड़ालूम।

लड़ाँ-लूंबाँ—दे० लड़ालूम।

लड़ाँ-लूंभ—दे० लड़ालूम।

लड़ियो—*(न०)* 'खींप' या 'सिणिया' नामक क्षुप की सींकों की बंटी हुई मोटी रस्सी।

लड़ी—दे० लड़।

लड़ेत—*(वि०)* १. लड़ने वाला। २. वीर। योद्धा।

लड्डू—दे० लाडू।

लणाणो—*(क्रि०)* पकी हुई फसल को काटना। लुनना।

लत—*(ना०)* १. आदत। २. बुरी आदत। ३. व्यसन। **टेव**।

लता—*(ना०)* १. बेल। वेलि। **बेल**। **बेलड़ी**।

लताड़—*(ना०)* १. डाँट। झिड़की। २. लानत। धिक्कार। ३. हानि। ४. पराजय। हार। ५. लात। **लतेड़**।

लताड़णो—*(क्रि०)* १. लातों से मारना। २. फटकारना। झाड़ना। ३. डाँटना। झिड़कना। **लतेड़णो**।

लतियो—*(वि०)* १. बुरी लत वाला। २. लतखोर। ३. नीच।

लतीफो—*(न०)* १. चुटकला। २. हँसी की बात। लतीफा। ३. अनूठी बात।

लतेड़—दे० लताड़।

लतेड़णो—दे० लताड़णो।

लत्ता—*(ना०)* लात।

लत्ती—*(ना०)* १. लात का प्रहार। २. लात मारने की क्रिया। ३. कपड़े की लंबी पट्टी। ४. हाथी-दांत की मोटाई नापने की नाप-पट्टी।

लत्तो—(न०) १. कपड़ा। लत्ता। २. फटा-पुराना कपड़ा। चिथड़ा। ३. मोहल्ला। **बास**।

लत्थोबथ—*(न०)* बाहु-युद्ध। **बाथोबाथ**।

लथपथ—*(वि०)* १. भीगा हुआ। तर। २. कीचड़ आदि से लिपटा हुआ।

लथबथ—*(अव्य०)* एक दूसरे को बाथ में भींड़ने की क्रिया। **बत्थंबत्था**। **बाथो-बाथ**। *(वि०)* १. ढीला पड़ा हुआ। २. थका हुआ। परेशान। ३. सड़ा हुआ। *(न०)* प्रेमालिंगन।

लदणो—*(क्रि०)* १. भार उठाना। २. लद्दू वाहन या पशु पर सामान भरना या रखना। लादना। **लादणो**। ३. उठना। ४. बीतना। गमन करना।

लदबदणो—*(क्रि०)* किसी प्रवाही पदार्थ से लथपथ होना। २. ढीला पड़ना। ३. सड़ना।

लदवाणो—दे० लदाणो।

लदाण—*(न०)* १. लादने की क्रिया या भाव। २. लादने का सामान। ३. भार। बोझ।

लदाणो—*(क्रि०)* १. लदवाना। ऊंट। २. गाड़ी आदि पर भार-सामान भराना।

लदारो—*(न०)* १. गुदा-द्वार। २. गुदा। गांड।

लदाव—*(न०)* १. भार। बोझा। २. *लदान*। ३. ईंटों की एक प्रकार की गोल चिनाई। ४. लादने का सामान। ५. लादने का काम।

लदावणो—दे० लदाणो।

लद्दू—*(वि०)* वह (पशु या वाहन) जिस पर बोझा ढोया जाय।

लद्ध—*(वि०)* लुब्ध। *(न०)* लाभ।

लधणो—*(क्रि०)* १. प्राप्त होना। मिलना। लाधणो।

लप—*(ना०)* १. अंजलि की तरह हाथ का संपुट जो नाज आदि सूखी वस्तुओं के लेने के लिए बनाया जाता है। अंजलि। ३. अंजलि भर कोई वस्तु। ३. लपलपाने की क्रिया। *(अव्य०)* हथेली भर। अंजलि भर। *(क्रि० वि०)* १. शीघ्र। झट। २. शीघ्रता से।

लपक—*(अव्य०)* शीघ्रता से। झटपट। *(ना०)* लपकने की क्रिया।

लपकणो—*(क्रि०)* १. एक दम कूदना। २. कोई वस्तु पाने के लिए हाथ आगे बढ़ाना। ३. झपट कर आगे बढ़ना। शीघ्रता से आगे बढ़ना। ४. टूट पड़ना।

लपको—*(वि०)* लबाड़। *(न०)* १. बड़ा ग्रास। मोटो कवो। २. बिना बतलाये किसी के बीच में बोलना।

लपट—*(ना०)* १. ज्वाला। आग की लौ। २. गरम हवा (लू) का झोंका। ३. पवन का सुगंध युक्त झोंका। ४. गंध। महक। ५. तीव्र सुगंध। ६. हवा। वायु। ७. लिपटना।

लपटणो—*(क्रि०)* १. लिपटना। लपटना। २. सटना। ३. फंसना। ४. रत रहना। ५. गले लगना।

लपटाणो—*(क्रि०)* १. लिपटाना। लपटाना। २. गले लगाना। ३. घिराना। घिरा जाना। ४. सटाना। ५. उलझना। ६. उलझाना।

लपटो—*(न०)* १. पतला हलवा। २. राब। सेंगटो। पटोळियो।

लपटोळणो—*(क्रि०)* १. कीचड़ से लपेटना। २. वस्त्रादि से लपेटना। ३. षड्यन्त्र में फंसाना।

लपण—*(ना०)* १. वृक्ष की नीचे की ओर लटकने वाली शाखा। २. जीभ। ३. मुंह। ४. कथन। ५. छिपाव।

लपणो—*(क्रि०)* १. छिपना। २. लुकना। बोलना।

लपतरो—दे० लिपतर।

लपन—*(न०)* १. मुख। २. कथन। ३. बोली। ४. जीभ।

लपनश्री—*(ना०)* लपसी। लापसी। लापी।

लपनी—*(ना०)* जीभ। जबान।

लपर—*(वि०)* लबाड़। गप्पी। वाचाल। लापर।

लपरको—*(न०)* १. बार-बार बीच में बोलने की क्रिया। २. किसी लेह्य पदार्थ को चाटने से होने वाला शब्द या क्रिया।

लपराई—*(ना०)* १. लबाड़पना। २. बेशऊरी।

लपळको—दे० लपरको।

लपलप—*(ना०)* बकबक। लपलपाहट। *(अव्य०)* एकदम। झपाटे से।

लप-लपाट—*(ना०)* १. बकवाद। २. शस्त्र की चमक। लप-लपाहट। ३. उतावल।

लपलपाणो—*(क्रि०)* १. बकबाद करना। लपलप करना। २. शस्त्र का म्यान से बाहर निकल कर चमकना। ३. उतावल करना। ४. लपकना।

लपसणो—*(क्रि०)* फिसलना।

लपसी—दे० लापसी।

लपसींदर—दे० लफींदर।

लपाक—*(क्रि०वि०)* शीघ्र। झट। जल्दी।

लपाणो—*(क्रि०)* १. छिपाना। २. छिपना।

लपी—*(ना०)* चिकनी मिट्टी। दे० लप्पो।

लपेट—*(ना०)* १. लपेटने की क्रिया या भाव। २. बल। ऐंठन। ३. पकड़। ४. घेरा। ५. उलझन। ६. एक कसरत।

लपेटण—*(न०)* १ लपेटने या बाँधने का कपड़ा। वेष्टन। बेठन। **बींटण**। २. उलझन। ३. लपेटन की वस्तु।

लपेटणो—*(क्रि०)* १. लपेटना। परिवेष्टित करना। बींटना। **बींटणो**। २. गीली या गाढ़ी वस्तु पोतना। ३. कपड़े के अंदर बाँधना। **बींटणो**। ४. किसी को उलझन में सामिल करना। ५. उलझाना। ६. वश में करना। ७. ढकना। दे० लपेटण।

लपेटमो—*(वि०)* १. रहस्य भरा। २. लपेटने जैसा। ३. जो लपेट कर बनाया गया हो।

लपेटो—*(न०)* १. लपेटने की वस्तु। २. साफा। ३. एक प्रकार का कामदार रेशमी कपड़ा। ४. षड़यंत्र। जाळ।

लपोड़—*(वि०)* १. बातूनी। २. व्यर्थ या झूठी बातें बनाने वाला। ३. झूठा विश्वास देने वाला। ४. आत्मप्रशंसी। ५. मूर्ख। **लपोड़-संख**।

लपोड़-संख—दे० लपोड़।

लप्पड़—*(ना०)* चाँटा। चपत। तमाचा। **थप्पड़**। **थाप**।

लप्पादार—*(वि०)* १. जिसमें लप्पा लगा हो। २. लप्पे की किनारी वाला। ३. जरी वाला।

लप्पी—*(ना०)* चिकनी मिट्टी।

लप्पो—*(न०)* १. जरी। कारचोबी। २. गोटा-किनारी। ३. गोटा-किनारी का काम। ४. जरी वाला कपड़ा। *(वि०)* १. लपेटा हुआ। परिवेष्टित। २. बिना ढंग का।

लफ—दे० लप।

लफरो—*(न०)* १. झंझट। इल्लत। २. भूत-प्रेत आदि का आवेश। ३. उपाधि। विघ्न।

लफंगाई—*(ना०)* लफंगापन।

लफंगो—*(वि०)* १. लपट। व्यभिचारी। २. दगाबाज। ३. कपटी। छली। ४. झूठा। ५. झूठा विश्वास दिलाने वाला।

लफाफो—दे० लिफाफो।

लफालफ—*(क्रि०वि०)* जल्दी-जल्दी से।

लफावणो—*(क्रि०)* १. ऐंच लेना। खींच लेना। २. ऊपर से पकड़ लेना। ३. उछलते हुए को पकड़ना। ४. दूसरे का कर्जा अपने जिम्मे लेना।

लफींदर—*(न०)* १. इल्लत। झंझट। २. विघ्न। ३. व्यर्थ की लम्बी बात। ४. कोई लंबी वस्तु। ५. बच्चों को डराने वाला एक कल्पित जानवर। हाऊ।

लफ्ज—दे० शब्द।

लब—*(न०)* होंठ। ओष्ठ। होठ।

लबको—*(न०)* १. गीले पदार्थ का लोंदा। २. मोटा ग्रास। किसी अंग को दग्ध करने की क्रिया। डाम। चबको। ३. वेदना अथवा भय से किसी

अंग का लबक-लबक करना । दे० लपको सं० १, २ ।

लबड़ धक्के—*(अव्य०)* १. जबरदस्ती से । बलात्कार से । २. धमका करके । डांट-फटकार से । ३. झपाटे या जल्दी से (काम करवाना) । ४. धक्का मार के ।

लबलबी—*(ना०)* बंदूक के घोड़ा को अंगुली से गिराने का खटका ।

लबाचो—दे० लबायचो ।

लबाड़—*(वि०)* १. झूठ बोलने की आदत वाला । २. चुगलखोर । ३. शठ । दुर्वृत । ४. झूठा । ५. गप्पी । ६. अधिक बोलने वाला । बातूनी ।

लबाड़ी—दे० लबाड़ ।

लबादो—दे० लबायचो सं० १, ३.

लबायचो—*(नं०)* १. लूईदार बड़ा कोट । लबादा । फुलगर । २. स्त्रियों का एक लहंगा । ३. लंबा चोगा । ४. मैले और फटे हुए कपड़ों का ढेर । ५. टूटे-फूटे सामान का ढेर ।

लबालब—*(अव्य०)* ऊपर तक या किनारों तक भरा हुआ ।

लबेस—दे० लिबास ।

लब्ध—*(वि०)* १. उपार्जित । २. मिला हुआ । *(नं०)* भाग करने पर आया हुआ फल (गणित) । भागफळ ।

लब्धि—*(ना०)* १. प्राप्ति । लाभ । २. सिद्धि । ३. फल (गणित) । ४. प्रश्न का उत्तर ।

लब्धोदय—*(नं०)* पद्मिनी-चरित-चौपाई के कर्त्ता एक कवि ।

लभणो—*(क्रि०)* १. मिलना । प्राप्त होना । लाभणो । लाधणो ।

लभ्य—*(वि०)* १. पाने योग्य । २. मिल सकने योग्य ।

लम—*(नं०)* लहमा । क्षण । निमेष । पळ ।

लम-कनियो—*(वि०)* १. लंबे कानों वाला । २. गदहा ।

लम-करण—दे० लंब-करण ।

लम-गोळ—दे० लंबगोळ ।

लमछड़—*(नं०)* १. एक प्रकार की लंबी और बिना घोड़े की बंदूक । २. लंबा भाला । सांग । *(वि०)* पतला व लंबा । लंबतड़ंग ।

लम-जीभो—दे० लंब-जीभो ।

लमजेट—दे० तांती, सं० ५ ।

लम-टंगड़ी—दे० लंब-टंगड़ी ।

लम-टंगड़ो—दे० लंब-टंगियो ।

लम-टंगियो—दे० लंब-टंगियो ।

लम-टांगड़ी—दे० लंब-टंगड़ी ।

लम-टाँगड़ो—दे० लंब-टंगियो ।

लम-टांगियो—दे० लंब-टंगियो ।

लमणो—*(नं०)* आंख और कान के बीच की जगह । कान के आगे का भाग । गंडस्थल । कनपटी । लवणो ।

लम-तड़—दे० लंब-तड़ंग ।

लम-तड़ंग—दे० लंब-तड़ंग ।

लम-नस—दे० लंब-नस ।

लम-नसी—दे० लंब-नसी ।

लम-नसो—दे० लंब-नसो ।

लमा-होठो—दे० लंबोठ ।

लमाई—दे० लंबाई ।

लमाण—दे० लंबाण ।

लमाणो—दे० लंबाणो ।

लमेक—*(क्रि०वि०)* क्षणभर । पलभर ।

लमोतरो—दे० लबोतरो ।

लमोदर—दे० लंबोदर ।

लय—*(न०)* १. लीन। लीनता। २. ध्यान। ३. एक का दूसरे में समाना। मिल जाना। ४. विनाश। ५. प्रलय। ६. विराम। विश्राम (संगीत)। ७. नृत्य, गीत और वाद्य की समता (संगीत)। ८. स्वर निकालने का ढंग। ९. गाने का ढंग। धुन। १०. स्वर निकालने में लगने वाला समय (संगीत)। ११. अनुराग। प्रेम। १२. स्थिरता।

लरज—*(न०)* सितार का पाँचवाँ तार।

लरजणो—*(क्रि०)* १. काँपना। धूजना। २. हिलना। ३. डरना।

लरड़—*(वि०)* १. लंबा। २. मूर्ख।

लरड़ी—*(ना०)* भेड़। गाडर। *(वि०)* १. बेसमझ। मूर्खा। अबुधा। २. लंबी (औरत)।

लरड़ो—*(वि०)* १. बेसमझ। मूर्ख। २. लंबा। (मनुष्य)। *(न०)* नर-भेड़। भेड़। भेड़ो। घेटो। सींगों वाला मेढ़ा। मेंढो।

लल—*(ना०)* १. सऊर। विवेक। २. विनय। ३. समझ। ४. नम्रता। ५. तीव्र ठंडी हवा। हील।

लळ—*(ना०)* १. आशा। २. झुकाव।

ललक—*(ना०)* १. प्रबल अभिलाषा। लालसा। २. आलाप (संगीत)।

ललकणो—*(क्रि०)* १. ललचाना। २. लालसा करना। ललकना। ३. झुकना। ४. दौड़ना।

ललकार—*(ना०)* १. युद्ध के लिये किया जाने वाला उच्च स्वर से आह्वान। हाक। २. गायन में लय का आरोह। ३. आलाप की अवरोह के पूर्व की लय। ४. चढ़ता हुआ आलाप। (संगीत) ५. हँकाई। ६. उत्तेजना। ७. हुंकार। गर्जन। ८. आक्रमण की चुनौती।

ललकारणो—*(क्रि०)* युद्ध के लिए आह्वान करना। ललकारणो। २. हाँकना। चलाना (बैल आदि को)। ३. गाना। आलाप देना। आलापना। ४. सावधान करना। ५. चुनौती देना।

ललकारो—*(ना०)* १. झूले का पेंग। २. युद्ध का आह्वान। ३. प्रोत्साहन। ४. उत्तेजना। ५. हाँकने के लिए उत्तेजन। ६. आलाप।

ललचाणो—दे० ललचावणो।

ललचावणो—*(क्रि०)* १. लुभाना। ललचाना। २. लालच में फँसना। ३. लालच में फँसाना। ४. मोहित होना। ५. मोहित करना।

लळणो—दे० लुळणो।

ललना—*(ना०)* १. सुंदर स्त्री। २. कामकला में प्रवीण स्त्री। ३. स्त्री। महिला। ४. जीभ।

लल-लखण—*(न०)* विनम्रता और सद्गुण।

ललरणो—*(क्रि०)* १. हकलाना। २. अटकते हुए बोलना।

लल-लुळताई—*(ना०)* १. विवेक और विनम्रता। २. समझ और विनय।

ललवट—*(ना०)* ललाट। भाल। लिलाड़।

लळवळ—*(ना०)* १. अधिक बोलने की क्रिया। २. जीभ को बार-बार बाहर निकालना। ३. लचकना।

लळवळणो—*(क्रि०)* १. अधिक बोलना। लपलप करणो। २. जीभ को बार-बार बाहर निकालना (साँप)। ३. लचकना।

ललाई—*(ना०)* लाली। लालिमा। **ललास। लालास।**

ललाट—*(ना०)* १. मस्तक। माथा। २. भाल। **ललवट। लिलाड़।** ३. भाग्य।

ललाट में बूक माँडणी—*(मुहा०)* अत्यधिक लोभ करना।

ललाट-रेखा—*(ना०)* भाग्य का लेख। तकदीर। प्रारब्ध।

ललाड़—दे० ललाट।

ललाणो—*(क्रि०)* १. ललचाना। लालच दिखाना। २. झूठा आश्वासन देना।

ललाम—*(वि०)* १. सुंदर। रमणीय। २. लाल रंग का। लाल। ३. श्रेष्ठ। *(न०)* अयाल।

ललास—दे० ललाई।

ललित—*(वि०)* १. सुंदर। मनोहर। २. प्रिय। ३. नाजुक। कोमल। *(न०)* १. एक छंद। २. एक राग। ३. एक अलंकार। ४. बालक। **लाडलो। टाबर।**

ललित-कळा—*(ना०)* वह कला जिसको व्यक्त करने में सौंदर्य की अपेक्षा रहती है। मन और कल्पना के श्रम पर मुख्य आधार रखने वाली कला। जैसे—संगीत, चित्रकला। फाइन-आर्ट्स। ललित-कला।

ललित-किशोरी—*(ना०)* श्रीकृष्ण (विहारीजी) के परमभक्त लाला कुंदन लाल के भक्ति-पदों की आभोग-संज्ञा। 'ललित-माधुरी' भी इन्हीं के नाम का आभोग कहा जाता है।

ललिता—*(ना०)* १. युवा सुंदर स्त्री। रमणी। सुन्दरी। २. दुर्गा। ३. कस्तूरी। ४. एक रागिनी। ५. एक वर्णवृत्त। ६. स्वच्छंद स्त्री। ७. राधिका जी की मुख्य सखी का नाम।

ललो—*(ना०)* १. सखी। २. लड़की। ३. लाडिली कन्या। ४. नायिका के लिये प्यार का शब्द। नायिका के लिये संबोधन।

लल्लो—*(न०)* 'ल' अक्षर। लकार।

लल्लो-चप्पो—*(न०)* खुशामद।

लव—*(न०)* १. बहुत थोड़ी मात्रा। २. अंश। ३. निमेष का छट्ठा भाग। ४. भेड़ के बाल। ऊन। ५. राम का पुत्र। ६. जीभ। ७. होंठ। ८. लगन। लौ। लब। ९. अवसर। १०. जायफल। ११. भेड़ के बाल काटने की क्रिया। १२. कवि। *(वि०)* थोड़ा।

लवकणो—*(क्रि०)* १. फुदकना। धड़कना। २. चमकना।

लवच्छेपणी—*(ना०)* लगाम। लवक्षेपणी।

लवज—*(न०)* १. लफ्ज। शब्द। २. बोल।

लवण—*(न०)* नमक। लोन। लूण।

लवण-भास्कर—*(न०)* वैद्यक का एक प्रसिद्ध हाजिमा-चूर्ण।

लवणो—*(क्रि०)* १. मेंढक का टर्राना। २. बहुत बोलना। बक-बक करना। ३. पशु-पक्षियों का बोलना। ४. भेड़ के बाल काटना। *(न०)* १. कान और आंख के मध्य का स्थान। कनपटी। २. गंडस्थल। **लमणो।**

लवणोद—*(न०)* १. समुद्र। २. लवण-समुद्र। **लवणोदधि।**

लवणोदधि—*(न०)* पुराणोक्त सात समुद्रों में का एक खारे पानी का समुद्र। **लवणोद।**

लवना—*(ना०)* लगन। लौ। लब। **लिव।**

लव-लव—*(ना०)* १. धड़कन। फुदकन। २. हृदय, नाड़ी आदि की धड़कन। ३. बकबक। बकवाद। ४. मेंढक की टर्राहट।

लव-लवणो—*(क्रि०)* १. घिघियाना। २. अधिक बोलना। बकवाज करना। ३. मेंढक का टर्राना। ४. हृदय या नाड़ी आदि का धड़कना।

लव-लवाट—*(ना०)* १. बकवाज। २. मेंढक की टर्राट। ३. नाड़ी की धड़कन।

लवली—*(ना०)* १. लता। वेलि। **वेल**। २. जीभ। जिह्वा। **लाळकी**।

लवलीन—*(वि०)* तल्लीन। मग्न। तन्मय। **लैलीन**।

लव-लेश—*(वि०)* १. अत्यन्त अल्प। बहुत थोड़ा। *(अव्य०)* १. तिल मात्र। २. जरा भी। थोड़ा भी। *(ना०)* बहुत थोड़ा अंश। अत्यल्प मात्रा।

लवलेस—दे० लवलेश।

लवल्या—*(ना०)* १. लगन। २. तीव्र आसक्ति।

लवंग—*(ना०)* १. लौंग। लूंग। २. लवंग जैसा कान का एक गहना। ३. स्त्रियों के नाक का एक आभूषण। लूंग।

लवाजमो—*(ना०)* १. राजा, महंत आदि बड़े आदमियों के साथ रहने वाले छोटे बड़े लोग। लवाजिमा। २. जुलूस के साथ रहने वाला जन समूह। कोतल हाथी-घोड़े, तायफा, बाजा इत्यादि शोभा-साधन, ३. आवश्यक सामग्री। ४. राज्य की ओर से प्राप्त पद, उपाधि, इनाम, भेंट, वेतन इत्यादि। **लाजमो**। ५. दैनिक, साप्ताहिक आदि समाचार-पत्र तथा मासिक पत्रिकाओं आदि का शुल्क।

लवाणो—दे० लोहाणो।

लवार—*(ना०)* १. गाय का बछड़ा। **टोगड़ो**। २. गाय, भैंस आदि का छोटा बछड़ा। लैरु। ३. बछड़ा-बछड़ी।

लवारड़ी—*(ना०)* गाय की बछिया। लौरी। **टोगड़ी**।

लवारियो—दे० लवार। सं. १–२।

लवेस—*(ना०)* १. लिबास। २. पहनावा। पहरावो। *(वि०)* लव-लेश।

लवो—*(ना०)* बटेर पक्षी। लवा।

लश्कर—*(ना०)* १. फौज। सेना। **लसकर**। २. दल। समूह। ३. छावनी। ४. फौज का सामान।

लस—*(ना०)* १. चेप। २. चिपचिपाहट।

लसकर—दे० लश्कर।

लसकरियो—*(ना०)* १. सेना में नौकरी करने वाला। लश्करी। २. सैनिक। सिपाही। ३. प्रवासी। ४. एक लोक गीत। ५. पति। *(वि०)* शौकीन।

लसकरियो-ढोलो—*(ना०)* १. एक लोक-गीत। २. एक लोकगीत का नायक। ३. पति।

लसण—*(ना०)* १. लशुन। लहसुन। **लहण**। २. शोभा। ३. एक प्रकार का तिल। शरीर की चमड़ी में होने वाला एक छोटा किंतु तिल से बड़ा काला दाग।

लसणियो—*(ना०)* एक रत्न। लहसुनिया।

लसणी—*(ना०)* १ गाय। २. हाव-भाव। ३. शोभा।

लसणो—*(सर्व०)* १. शोभित होना। २. अच्छा। लसना। ३. तैयार होना। सज्जित होना। सजना। ४. चिपकना। ५. संग्राम से भाग जाना। ६. फिसलना।

लसोड़ा—*(न०ब०व)* १. छोटे गूंदे फळ। गूंदिये। लभेर। २. गूंदी वृक्ष। गूंदो। लभेड़ी। २. बड़ा गूंदा। लभेड़ा।

लस्सी—*(ना०)* १. दही में चीनी, पानी आदि को मिलाकर और मथ कर बनाया हुआ एक ठंडा पेय। मट्ठे का शरबत। २. दूध, खाँड और पानी का शरबत।

लहक—*(ना०)* शोभा। दे० लहको।

लहकणो—*(क्रि०)* १. किंचित लंगड़ाना। २. मिजाज में चलना। ३. अटकते हुये बोलना। ४. लहराना। फर्राना। ५. हवा का बहना। ६. शोभित होना। ७. लहके से चलना या बोलना।

लहको—*(न०)* १. बोलने, चालने आदि व्यवहारों में किसी की अनुरूपता। २. चाल। ३. शरीर की मरोड़। ४. मोहक चाल। ५. राग निकालते हुये तथा शब्द को लंबाते हुए बोलना। ६. बोलने चलने इत्यादि का विशिष्ट ढंग।

लहजो—*(न०)* १. बोलने या गाने का एक ढंग। लहजा। २. क्षण। पल। ३. मजा। आनंद। ४. कारीगरी का एक विशेष ढंग। उत्तम कारीगरी। ५. बनावट। कारीगरी।

लहण—*(ना०)* लहसुन। दे० लहाण।

लहणात—दे० लहणायत।

लहणायत—*(न०)* ऋणद। उधार देने वाला। लेनदार। लहणात।

लहणायो—*(न०)* १. ऋणद। उधार देने वाला। २. लाभ। ३. यश-लाभ। यश-प्राप्ति। ४. पूर्व जन्म का शेष लेना। ५. पूर्व जन्म का किसी में बाकी रहा हुआ लेना जो इस जन्म में किसी प्रकार चुकता होता है। ६. किसी व्यक्ति के द्वारा लाभ की प्राप्ति।

लहणो—*(न०)* १. विवाह आदि के प्रसंग पर सौगात रूप में दिये जाने वाले भोज्य पदार्थ का वह भाग, जो एक घर में दिया जाता है। २. औसर-मौसर पर किसी व्यक्ति के लिए उसके घर पर भेजी जाने वाली भोजन सामग्री। भाणो। ३. अन्य जनों में जमा रकम। लेना। ४. उधार दिये हुये सामान का बकाया। लेना। पावना।

लहणो-फेरणो—*(मुहा०)* विवाह आदि में पड़ोसियों-संबंधियों में हाँथी फेरना।

लहम—*(न०)* थोड़ा समय। किंचित समय।

लहर—*(ना०)* १. तरंग। हिलोर। २. उमंग। ३. जोश। ४. वायु का हलका झोंका। ५. महक। ६. नशे का झोंका। ७. मौज। मजा। ८. लहर की भांति बनी हुई या बनाई हुई रेखा। टेढ़ी-तिरछी रेखा। ९. क्षण। पल। १०. स्त्रियों के कानों का एक आभूषण। लहरां। ११. कृपा। मेहरबानी। १२. साफे, ओढ़ने आदि में की जाने वाली विविध रंगों की रंगाई। १३. एक प्रकार की गुंथाई।

लहरको—*(न०)* १. हवा की हलकी लहर। २. बैठे-बैठे आने वाली नींद की हलकी झपकी। ३. लहर। तरंग। ४. हलका धक्का। ५. कमर का झुकाव। ६. लोक-नृत्य की एक मुद्रा। ७. रह-रह कर होने वाली पीड़ा का वेग।

लहरणो—(क्रि०) १. हिलोर आना। २. जोश आना। ३. वायु का हलका झोंका आना। ४. महकना। ५. नशे का झोंका आना। ६. मौज करना। लहरना। ७. इच्छायें उठना। ८. लहरें उठना।

लहरदार—*(वि०)* लहरों वाला।

लहर-बंबाळ—*(न०)* १. युद्धोन्माद। युद्ध का नशा। २. घनघोर युद्ध। *(वि०)* दातार। दानी।

लहराण —*(वि०)* लहरों से युक्त।

लहराणो—(क्रि०) लहराना।

लहरावणो—*(क्रि०)* लहरों से युक्त होना। तरंगित होना। २. उल्लसित होना। ३. लहराना घूमना।

लहरिया-ओढणो—*(न०)* विविध रंगों की लहरों वाला ओढ़ना।

लहरिया-पाघ—*(ना०)* विविध रंगों की लहरों वाली पगड़ी।

लहरिया-फेंटो—*(न०)* विविध रंगों की लहरों वाला साफा।

लहरिया-साफो—दे० लहरिया फेंटो।

लहरियो—*(न०)* १. रंगीली लहरदार धारियों का कपड़ा। २. लहरदार रंगा हुआ स्त्रियों का एक ओढ़ना। ३. डोरिया। ४. एक लोकगीत। *(वि०)* १. जिसमें लहरें बनी हों। लहरों वाला।

लहरी—*(वि०)* १. आनंदी। मौजी। २. मनमौजी। ३. उड़ाऊ। ४ उच्छृंखल। ५. ओछा। ६. मनमाना काम करने वाला। ७. दानी। ८. लहरों वाला। *(ना०)* लहर। तरंग। *(न०)* समुद्र।

लहरीड़ो—दे० कीलियो। *(वि०)* लहरी। मौजी।

लहरी-रव—समुद्र। समंदर। महामहण।

लहरीस—*(न०)* समुद्र। समंदर। समूंदर।

लहरचो—दे० लहरियो।

लहलोट—*(वि०)* १. आनन्द से उछलता हुआ। २. खुशी से लोट-पोट हुआ। लहालोट।

लहवारो—*(न०)* आश्वासन।

लहंगो—*(न०)* स्त्रियों के कमर के नीचे का भाग ढकने का एक घेरदार पहनावा।

लहाण—*(ना०)* १. औसर-मौसर आदि भोज-समारंभो के अवसर पर निमंत्रकों को दी जाने वाली (मिठाई या बर्तन आदि की) भेंट। २. तीर्थ-यात्रा की गंगा-प्रसादी (भोज) या अन्य किसी शुभ अवसर पर ज्ञात (अपनी जाति) में प्रति घर या प्रति व्यक्ति को दी जाने वाली भेंट। ३. लाभ।

लहावो—*(न०)* १. आनंद का उपभोग। लहावो। २ आनंद। मौज।

लहियो—*(न०)* १. हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने वाला। लिपिक। प्रतिलिपिकार। २. लेखक।

लहु—दे० लघु।

लहू—*(न०)* रक्त। खून। लोही।

लहू-लुहाण—*(वि०)* खून से तरबतर। लहू-लुहान।

लंक—*(ना०)* १. कटि। कमर। २. स्त्री की कमर। ३. पतली कमर। ४. पतली कमर का मरोड़। कमर का झुकाव। ५. लंका-द्वीप।

लंकप—*(न०)* १. रावण। २. विभीषण। ३. लंकापति।

लंकपत—*(न०)* लंकापति। रावण।

लंक-वरीस—*(ना०)* लंका का दान करने वाले श्रीराम ।

लंका—*(ना०)* १. भारत के दक्षिण में एक टापू । २. एक राष्ट्र ।

लंकाऊ—*(ना०)* दक्षिण दिशा । *(वि०)* १. दक्षिण दिशा का । २. लंका का ।

लंका-करणी—*(मुहा०)* जला देना ।

लंका-जीतणी—*(मुहा०)* बड़ी विजय करना ।

लंका-धू—*(न०)* १. दक्षिणी ध्रुव । २. दक्षिण-दिशा । १.दक्षिण दिशा के ध्रुव का नाम ४. दो और एक की संज्ञा दे० धू-लंका ।

लंकापति—*(न०)* १. रावण । २. विभीषण । **लंकप** ।

लंकाळ—*(वि०)* १. सिंह के समान वीर । २. योद्धा । ३. लंका का । ४. जबरदस्त । **लंकालो** । *(न०)* १. सिंह । **लंकाळो** ।

लंकालियण—*(न०)* लंका पर अधिकार करने वाले श्रीराम ।

लंकाळी—*(ना०)* १. सिंहनी । २. पतली कमर वाली स्त्री । *(वि०)* क्षीण कटि वाली । पतली कमर वाली ।

लंका-लूंटणी—*(मुहा०)* १. बड़ा नफा करना । २. खजाना हाथ लगना ।

लंकाळो—दे० लंकाळ ।

लंकाव—दे० लंकाऊ ।

लंकी—*(वि०)* १. सिंह के समान पतली कमर वाली । २. वीर योद्धा । *(न०)* १. एक प्रकार का कबूतर । २. एक प्रकार का नागर वेल का पान ।

लंकेश—दे० लंकापति ।

लंगड़ाणो—*(क्रि०)* लंगड़ाते हुए चलना । **लंगड़ावणो** । **खोड़ावणो** ।

लंगड़ावणो—दे० लंगड़ाणो ।

लंगड़ी—*(न०)* १. बच्चों का एक खेल । २. घोड़े की एक चाल । *(वि०)* लंगड़ाने वाली । **खोड़ी** ।

लंगड़ो—*(वि०)* १. जिसका एक पाँव काम न देता हो । **खोड़ो** । २. जिसके एक पाया न हो । *(न०)* एक जाति का आम ।

लंगर - *(न०)* १. पाँव का एक गहना । **तोड़ो** । २. जहाज में बँधा हुआ लोहे का बड़ा भारी काँटा जो जहाज को ठहराने के लिये पेंदे तक पानी में छोड़ दिया जाता है । ३. वह स्थान जहाँ एक साथ गरीबों को भोजन कराया जाता है । ४. ऐसा भोजन बनाने का स्थान । ५. सैनिकों का रसोड़ा । ६. बड़ी सांकल । ७. पंक्ति । **पंगत** । ८. सेना । ९. भीड़ । *(वि०)* १. बहुत । २. बेशरम ।

लंगर-खानो—*(न०)* १. वह स्थान जहाँ गरीबों के लिये भोजन पकाया जाता है और उन्हें बाँटा जाता है । २. सैनिकों के लिए भोजन बनाने का स्थान ।

लंगरी—दे० लांगरी । *(वि०)* वीर । *(ना०)* सेना ।

लंगरी-राव—*(वि०)* १. वीर । २. सेनापति ।

लंगस—दे० लगस ।

लंगा—*(ना०)* गाने-बजाने वाली एक मुसलमान जाति ।

लंगारो—दे० लंगो ।

लंगी—*(ना०)* १. लंगा की स्त्री । २. लंगा जाति की स्त्री ।

लंगार—*(ना०)* लंबी कतार । **कतार** ।

लंगूर—*(न०)* लम्बी पूंछ और काले मुँह वाला बन्दर ।

लंगूरियो—*(ना०)* लंगूर । *(वि०)* लंगूर जैसा ।

लंगेरो—*(ना०)* झड़बेरी के पत्तों सहित कटी हुई पतली टहनियों का ढेर ।

लंगो—*(ना०)* १. गाने बजाने का काम करने वाली मुसलमान लंगा जाति का व्यक्ति । २. मुसलमान ढाढी । ३. खड़िया मिट्टी की एक शिखराकार छोटी लिगी (टिकिया) जिससे पाठशाला में जीखा डाल कर लिखी जाने वाली पाटी-पोती जाती है । ४. इस प्रकार का बनाया हुआ सीमा चिन्ह । **मदारो** ।

लंगोट—*(ना०)* रूमाली । कच्छा । **लंगोटी** ।

लंगोट-बंद—*(ना०)* ब्रह्मचारी । *(वि०)* लंगोट लगाया हुआ ।

लंगोटियो—*(ना०)* बचपन का साथी । *(वि०)* १ लंगोट वाला । लंगोट लगाया हुआ ।

लंगोटी—*(ना०)* छोटा लंगोट । गुह्य भाग को ढकने की चीरी ।

लंगोटो—दे० लंगोट ।

लंगोर—*(वि०)* योद्धा । वीर । बहादुर ।

लंगो-लार—*(वि०)* १. पंक्तिबद्ध । २. एक के पीछे एक ।

लंघण—*(ना०)* १. लंघन । उपवास । **लांघण** । २. उल्लंघन ।

लंघण-दुरग—*(वि०)* दुर्ग लाँघने वाला । *(ना०)* अत्यन्त वीर पुरुष ।

लंघणो—*(क्रि०)* १. लांघना । २. उल्लंघना । उल्लंघन करना ।

लंघो—दे० लंगो ।

लंछण—*(ना०)* १. लाँछन । कलंक । २. चिन्ह । ३. लक्षण । **लखण** ।

लंजी—*(ना०)* १. स्त्री । २. प्रियतमा । पत्नी । ३. मौजी स्त्री । *(वि०)* मौजी ।

लंजो—*(वि०)* १. मौजी । शौकीन । २. प्रिय । ३. सुन्दर । ४. रसिक । *(ना०)* १. प्रियतम । पति । २. जमाई के लोक-गीतों का एक नायक । ३. एक लोक-गीत । ४. राजस्थानी लोक गीतों के नायक का एक विशेषण ।

लंठ—*(वि०)* १. मूर्ख । २. स्थूल । मोटा । ३. गँवार ।

लंदन—*(ना०)* इंगलैंड की राजधानी का नगर ।

लंप—*(ना०)* १. केरोसीन तेल । **घासलेट तेल** । २. लैम्प ।

लंपट—*(वि०)* १. व्यभिचारी । २. ऐयाश ।

लंपटपणो—*(ना०)* १. व्यभिचार । २ दुराचार । कुकर्म । लंपटता ।

लंफणो—*(क्रि०)* कूदना । लांघना ।

लंब—*(वि०)* लंबा । *(ना०)* १. फासला । अन्तर । २. लंबाई ।

लंबक—*(ना०)* अध्याय । परिच्छेद । प्रकरण । *(वि०)* लंबा ।

लंब-करण—*(ना०)* १. गदहा । लंबकर्ण । २. बकरा, हाथी, खरगोश आदि लंबे कानों वाले प्राणी । *(वि०)* १. लंबे कान वाला । २. मूर्ख ।

लंब-कराड़—दे० लंब-ग्रीव ।

लंब-गरदन—दे० लंब-ग्रीव ।

लंब-गाबड़—दे० लंब-ग्रीव ।

लंब-गोळ—*(वि०)* अंडाकार ।

लंब-ग्रीव—*(ना०)* १. ऊँट । २. जिराफ । जैसे लम्बी गरदन वाले प्राणी

लंबछड़—दे० लांबछड़ ।

लंब-जीभो—*(वि०)* १. बकवादी । २. बातूनी । **झिकाळी** ।

लंब-टंगड़ी—*(वि०)* लंबी टाँगों वाली ।

लंब-टंगड़ो—दे० लंब-टंगियो ।

लंब-टंगियो—*(वि०)* लंबी टाँगों वाला ।

लंब-टाँगड़ी—दे० लंब-टंगड़ी ।

लंब-टांगड़ो—दे० लंब-टंगियो ।

लंब-टांगियो—दे० लंब-टंगियो ।

लंबणो—*(क्रि०)* १. लंबा होना । २. लटकना ।

लंब-तड़—दे० लंब-तड़ंग ।

लंब-तड़ंग—*(वि०)* १. ताड़ की भाँति लंबा । **लंबतड़** । २. लंबा और तगड़ा ।

लंब-नस—*(ना०)* ऊँट । **बडनस** ।

लंब-नसी—*(ना०)* ऊंटनी । **सांयड़** । **बड-नसी** ।

लंब-नसो—दे० लंब-नस ।

लंब-प्रयाण—दे० लांबो पयाणो ।

लंबर—दे० नंबर ।

लंबरदार—*(ना०)* मालगुजारी वसूल करने वाला एक अधिकारी और पद ।

लंब-होठ—दे० लंबोठ ।

लंबाई—*(ना०)* १. लंबापन । २. लम्बाई की नाप ।

लंबाण—*(ना०)* १. लम्बाई । २. दूरी ।

लंबाणो—*(क्रि०)* १. लम्बा करना । २. लम्बा होना । ३. अधिक समय तक चलाना । **लंबावणो** ।

लंबावणो—दे० लंबाणो ।

लंबू—*(वि०)* लम्बा (व्यंग में लंबे आदमी के लिये) ।

लंबो—*(वि०)* १. जो एक दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो । **लंबा** । **लांबो** । २. दीर्घ । ३. जिसका विस्तार बहुत हो ।

लंबो-चौड़ो—*(वि०)* विस्तृत ।

लंबोठ—*(ना०)* ऊंट । लम्बोष्ठ । **लंबहोठ** ।

लंबोतरो—*(वि०)* १. लंबे आकार का । २. जो अपेक्षाकृत लम्बा हो ।

लंबोदर—*(ना०)* श्रीगणेश । श्रीगजानन । **लंबोवर** ।

लंबोवर—दे० लम्बोदर ।

लंभ—*(ना०)* लाभ ।

ला—दे० लाय । *(अव्य०)* १. नकार दर्शक उपसर्ग । जैसे ला-इलाज । २. नहीं । न । ३. बिना ।

लाइक—दे० लायक ।

लाइकी—दे० लायकी ।

लाइट—*(ना०)* १. प्रकाश । रोशनी । **दीवाबत्ती** । २. विद्युत । बिजली । *(वि०)* हलका । **फेरो** ।

लाइण—दे० लाण ।

लाइणो—दे० लायणो ।

लाइन—*(ना०)* १. पँक्ति । कतार । **हार** । २. रेखा । लकीर । **लीटो** । **ओळी** । ३. रेलवे-लाइन । रेल की पटरी । **चीलो** । ४. बिजली या टेलीफोन के तार की लाइन । ५. धंधा । व्यवसाय । ६. आचरण । ७. रीति । रिवाज । ८. मार्ग ।

लाइन-सर—*(अव्य०)* १. पँक्ति में । कतार में । **लैणसर** ।

लाइफ—*(ना०)* १. जिंदगी । जीवन । २. आयु । **ऊमर** ।

लाइब्रेरी—*(ना०)* पुस्तकालय । **पोथी-खानो** ।

लाइलाज—*(वि०)* जिसका कोई ईलाज न हो । २. असाध्य । ३. निरुपाय ।

लाइसेंस—*(ना०)* परवाना । **परवाणो** ।

लाई—*(वि०)* १. बेचारा। असहाय। २. दीन। गरीब। ३. विवश। *(ना०)* १. एक गाली। अपशब्द। २. तमाचा खील। वाणी।

लाई-खाई—*(ना०)* १. जितनी आमदनी उतना खर्च। २. जैसे तैसे करके गुजारा करना। ३. साधारण स्थिति।

लाई-थानै—*(अव्य०)* एक गाली। दे० लाई-रांड।

लाई-राँड—*(ना०)* एक गाली। दे० लाई-राँड-रो।

लाई-राँड-रो—*(अव्य०)* १. पूर्व पति की संतान। (पुत्र) जो पुनर्विवाह करने पर साथ में लाई हो। २. विधवा द्वारा उत्पन्न पुत्र। ३ एक गाली।

लाउड-स्पीकर—*(न०)* ध्वनि वर्धक यन्त्र। माइक्रोफोन।

ला-ओलाद—*(वि०)* निः संतान। **वांझियो।**

लाकड़—*(वि०)* मूर्ख। *(न०)* लकड़ा। **लकड़ो।**

लाकड़ी—दे० लकड़ी।

लाक्षणिक—*(वि०)* १. लक्षण सहित। २. लक्षणा शक्ति पर आधारित।

लाक्षा—*(न०)* महावर। दे० लाख सं. २.

लाक्षा-गृह—*(न०)* लाख का घर जो दुर्योधन ने पांडवों को उसमें जला देने की इच्छा से बनाया था।

लाख—*(न०)* सौ-हजार की संख्या। २. एक प्रकार का प्रसिद्ध लाल पदार्थ जिसे पीपल आदि पेड़ों पर कीड़े बनाते हैं। लाक्षा। लाह। *(वि०)* सौ-हजार।

लाख-उपाय—*(अव्य०)* १. किसी भी प्रकार। २. कोई भी प्रलोभन।

लाख-टकाँ-रो—*(वि०)* १. ऊँचे मूल्य का। २. महत्व का। ३. अधिक प्रामाणिक।

लाख-पसाव—*(न०)* १. कवि, चारण, भाट आदि को दिया जाने वाला लाख रुपये अथवा लाख रुपयों के मूल्य की वस्तुओं का दान। २. ग्राम, हाथी, लाख रुपये अथवा लाख रुपयों की कीमत की (आभूषण, पोषाक आदि) वस्तुओं का राजा-बादशाह की ओर से दिया जाने वाला सिरोपाव।

लाख-लाखीक—*(अव्य०)* १. लाखों-लाख २. लाखों की संख्या में। ३. लाखों का लखपति।

लाख-वरीस—दे० लक्ष-वरीस।

लाखा-गृह—दे० लाक्षा-गृह।

लाखा-घर—दे० लाखा-गृह।

लाखाँ—*(अव्य०)* १. लाखों प्रयत्न करने पर भी। किसी भी प्रकार। २. कितने ही लाख।

लाखाँई—दे० लाखां।

लाखावट—*(न०)* १. तालाब के बीच में बना हुआ मिट्टी का स्तूप। लक्ष्यवट। **लखोटो।** २. सिवाने के किले का एक ऐतिहासिक स्थान। ३. सिवाने का किला। **अणखलो।** **कुंभटगढ़।** ४. एक वट-वृक्ष। ५. बड़ा वट वृक्ष।

लाखावटी—*(ना०)* राजस्थान में मारवाड़ का एक प्रदेश।

लाखां-धणी—*(न०)* लक्षाधिपति। लखपति।

लाखाँ-वातां—दे० लाखां-वातां।

लाखाँ-वातां—*(मुहा०)* १. लाख उपाय करने पर भी। २. निश्चय ही। ३. किसी भी प्रकार। लाखां ही।

लाखी—*(वि०)* १. लाख के रंग का। २. लाख जैसा। ३. लाख का बना हुआ। *(ना०)* १. लखपति। २. लाल रंग।

लाखीक—*(वि०)* १. लक्षाधिक। २. लक्षमूल्यवान। लाखों के मूल्य वाला। ३. अमूल्य। ४. धनवान। ५. उदार।

लाखीणी—*(वि०)* १. श्रेष्ठ गुणों वाली। गुणवती। २. शुभ लक्षणों वाली। सुलक्षणी। **सुलखणी**। ३. श्रेष्ठ। आबरूदार। ५. लाख रुपयों के मूल्य की। ६. बहुमूल्य। **घणमोली**।

लाखीणी-लाडी—*(ना०)* १. शुभ लक्षणों वाली पुत्र-वधु। २. नव-वधु। ३. पत्नी। ३. एक लोक गीत।

लाखीणो—*(वि०)* १. श्रेष्ठ गुणों वाला। गुणवान। २. शुभ लक्षणों वाला। **सुलखणो**। ३. श्रेष्ठ। ४. प्रतिष्ठित। आबरूदार। ५. लाख रुपयों के मूल्य का। ६. बहुमूल्य। **घणमोलो**।

लाखे—दे० लाखाँ।

लाखेई—दे० लाखे।

लाखेसरी—दे० लखेसरी।

लाखो-चारण—*(ना०)* 'क्रिसन-रुकमणी-री वेली' पर सर्व प्रथम, राजस्थानी में, **बालव-बोध** नाम की टीका करने वाला विद्वान् चारण कवि।

लाखोटो—*(ना०)* दे० लखोटो।

लाखो-फूलाणी—*(ना०)* १. एक लोक गीत। २. केलाकोट (कच्छ) के पूर्वकाल के बड़े दानी अधिपति का नाम।

लाग—*(ना०)* १. नेग। २. लगान। कर ३. बैर। शत्रुता। ४. आधार। ५. युक्ति। ६. लगाव। सम्बन्ध। ७. लगन। ८. प्रेम। ९. दाग। धब्बा। १०. कलंक। ११. अनुचित सम्बन्ध। १२. उपाय। १३. दाँव। १४. प्रतियोगिता। १५. कुशलता। कौशल। १६. जादू। टोना। १७. चेप। १८. रुचि। *(वि०)* लगा हुआ।

लागट—*(अव्य०)* चालू। लगातार। निरंतर। **सळंगी**। *(वि०)* १. लांछित। कलंकित। २. संलग्न। लगा हुआ। ३. सड़ा हुआ। (फल आदि)। ४. मिलावटी। ५. वर्णसंकर। ६. ऊँट के ईडर और पैर के परस्पर रगड़ने से होने वाला (घाव)। ऐसे घाव या रगड़ वाला (ऊँट))।

लागणी—दे० लगन सं. १, ७.।

लागणो—*(क्रि०)* १. लगना। खटकना। २. चिपकना। चिमटना। ३. पहुँचना। ४. भूतादि का आवेश होना। ५. सटना। ६. खर्च होना। ७. ज्ञात होना। ८. टकराना। ९. चोट लगना। १०. जलना। ११. सड़ना। १२. छूना। स्पर्श होना। १३. बन्द होना। (कपाट आदि)। १४. जारी होना। १५. जारी रहना। १६. अनुभव होना। १७. इच्छा होना (भूख, प्यास आदि की) १८. असर होना। १९. शुरू होना। (मास, पक्ष) २०. लागू होना। अनुकूल होना (दवा आदि का)। २०. हानि कारक होना (पाणी लागणो) *(वि०)* १. मोहित करने वाला। आकर्षक। (नेत्र, स्वभाव) २. वश में करने वाला। ३. अच्छा लगने वाला। *(क्रि०)* १. कोई रिश्ते वाला (रिश्ते में लगने वाला या कुटुम्बी) ज्ञात होना,

लागत—*(ना०)* १. खर्च। व्यय। खर्चा। २. किसी वस्तु के बनाने में होने वाला या हुआ खर्च। वह व्यय जो किसी वस्तु

के बनाने में लगता है। ३. मूल खर्च। ४. मूल कीमत।

लागती-रो—*(नं०)* १. संबंधी। रिश्तेदार। २. कुटुंबी।

लागतो-वळगतो—*(वि०)* १. संबंध वाला। २. लेने देने का हक वाला। ३. कुटुंबी या कोई अन्य संबंधी।

लागदार—*(नं०)* १. शत्रु। बैरी। *(वि०)* १. प्रेमी। २. नेग लेने वाला। वह जिसका लाग लगता हो। **नेगी**। ३. कर वसूल करने वाला या देने वाला। ४ मिलावट वाला। ५. कलंकित। ६. पक्षपाती।

लाग-बाग—दे० लाग-भाग।

लाग-भाग *(नं०)* १. नेग और हक। २. नेग का हिस्सा। ३. नेग और हिस्सा। ४. नेग के साथ और कुछ नेग वगैरा। ५. कर। ६. कृषि-कर।

लाग-लपेट - *(नां०)* १. पक्षपात। २. छिपाव। ३. छल। धोखा।

लागव—*(नं०)* शत्रु। दुश्मन। **बैरी**।

लाग-वग—*(नां०)* १. जान-पहिचान। मेल-मुलाकात। २. संबंध। ३. किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग। वसीला। कोई काम करने या कराने का साधन, जरिया या पहुंच इत्यादि। लगाव। ४. सिफारिश।

लाग-सोळ - *(नं०)* १. संबंध। २. पक्का संबंध। ३. अनुचित संबंध। ४. एक लगान। ५. सोलह प्रकार के कर। ६. सोलह प्रकार के नेग।

लागू—*(वि०)* १. लगा हुआ। २. जो लग सकता हो। ३. जो लगाया जा सके। ४. चालू। जारी। ५. अनुकूल पड़ने वाला। ६. पीछे लगा हुआ। ७. हैरान करने वाला। *(नं०)* १. शत्रु। बैरी। २. प्रभाव। असर।

लागो—*(नं०)* १. नेग। दायो। लाग। २. कर। टैक्स। ३. पीछा। **केड़ो**। ४. संबंध।

लाघव—*(नं०)* १. लघुता। छोटापन। २. कमी। न्यूनता। ३. हलकापन। ४. हाथ की सफाई। कुशलता। चपलता। *(वि०)* छोटा। लघु।

लाचार—*(वि०)* १. असमर्थ। २. विवश। ३. निरुपाय। ४. गरीब। दीन।

लाचारगी—दे० लाचारी।

लाचारी—*(नां०)* १. असमर्थता। २ विवशता। ३. गरीबी। **लाचारगी**।

लाछ—*(नां०)* १. लक्ष्मी। २. धन-माल। संपत्ति।

लाछण—दे० लांछण।

लाछ-पत—दे० लाछ-वर।

लाछ-वर—*(नं०)* १. विष्णु। लक्ष्मीपति। २. श्रीकृष्ण। ३. धनवान।

लाछ-वै—*(नं०)* लक्ष्मीपति। विष्णु।

लाछी—दे० लछि।

लाज—*(नां०)* १. मोहरी। रास। **मुंहरी**। २. लज्जा। शरम। ३. मर्यादा। कान। **काण**। ४. परदा। घूंघट, **मूंघटो**। ५. आबरू। प्रतिष्ठा। ६. संकोच। लिहाज। ७. रस्सी। **डोरी**।

लाजणो—*(क्रि०)* १. लज्जित होना। शरमाना। २. शरम खाना। लिहाज रखना। संकोच रखना। *(वि०)* लाज वाला। संकोची।

लाज-थंभ—दे० लजा-थंभ।

ला-जबाब—*(वि०)* १. अनुत्तर। २. अनुमेय।

लाज-बायरो – *(वि०)* निर्लज्ज । बेशरम । **नलजो** ।

लाज-बाहिरो दे० लाज-बायरो ।

लाजम—*(वि०)* १. घटित । २. आवश्यक । ३. उचित । लाजिम । मुनासिब । ४. अनिवार्य ।

लाजमी—दे० लाजम ।

लाजमो—दे० लवाजमो ।

लाज-लचको—दे० लाज-लचरको ।

लाज-लचरको—*(न०)* १. लाज और विनय । २. लाज और मर्यादा ।

लाजवंत—*(वि०)* १ मर्यादा वाला । २. शरमवाला ।

लाजवती—*(ना०)* छुईमुई का पेड़ । लजालू । *(वि०)* लाज वाली । **लजवंती** ।

लाज-सरम—*(ना०)* लाज-शरम । लाज ।

लाजाळू—*(वि०)* १. शर्मीला । लज्जालू । **लजियाळो । लज्याळो** ।

लाजिम—दे० लाजम ।

लाट—*(न०)* १. बहुत-सी वस्तुओं का समूह । २ किसी एक वस्तु का बड़ा समूह । ३. किसी वस्तु का थोक जो एक साथ खरीदी या बेची जाये । लॉट । ४. गुजरात के भरुच प्रदेश के आस-पास के प्रदेश का प्राचीन नाम । ५. दे० लाठ संख्या ३ ।

लाटणार—दे० लाटणियो ।

लाटणियो—*(न०)* लाटा लाटने वाला । खलिहान में से अपना निश्चित भाग ले जाने वाला ऋणद या राज्य-कर्मचारी ।

लाटणी—*(ना०)* १. लाटने का काम । २. नाज मापने का एक पात्र ।

लाटणो – *(क्रि०)* १ लूटना । २. बोहरे (ऋणद) और जागीरदार द्वारा फसल की उपज का अपना निश्चित हिस्सा लेना । ३. कृषि के लिये दिये हुए ऋण के बदले कृषक से उसके खलिहान से ही नाज प्राप्त करना ।

लाटा—*(न०)* लाटो का बहुवचन ।

लाटानुप्रास—*(न०)* अनुप्रास-अलंकार का एक भेद ।

लाटी—*(वि०)* १. अपूर्ण । २. नाज से किनारे तक ही भरी हुई । ३. किनारों पर नाज का थग देकर नहीं भरी हुई (पायली) ।

लाटू-पाटू—*(वि०)* १. बिना खानदान वाला । २. निकम्मा । ३. जैसा-तैसा ।

लाटो—*(न०)* १. पराल, भूसा आदि से साफ किया हुआ नाज (खलिहान में) । २. कृषक को दिये गये ऋण के बदले में खलिहान में पड़े अनाज को ऋणदाता द्वारा वसूल करने की क्रिया या भाव । ३. बोहरे द्वारा ले जाया जाने वाला अनाज । ३. साबुन का लट्ठा । (Bar Soap) ४. खलिहान । खळो । ५. लाटी जाने वाली अन्न राशि । ६. खलिहान में बँटवारा की हुई अन्न-राशि ।

लाठ—*(ना०)* १. ऊँचा और मोटा खंभा । २. कोल्हू की लाठ । घानी में पेलने वाला खड़ा, मोटा और गोल बल्ला । ३. अंग्रेजी राज्य के समय किसी प्रांत का सबसे बड़ा शासक । गवर्नर । ४. अंग्रेजी शब्द 'लेफ्टिनेंट' का भ्रष्ट रूप ।

लाठ-साहब—*(न०)* दे० लाठ सं० ३. १. बहुत बड़ा आदमी (व्यंग्य में) । **लाट साब** ।

लाठियो-गुळ—*(ना०)* एक प्रकार का हलका गुड़ ।

लाठी—*(ना०)* बड़ा डंडा । **डांग** ।

लाठी-झल—*(वि०)* १. हाथ में लाठी रखने वाला । २. लाठीबाज ।

लाठी-बाज—*(वि०)* लाठी चलाने में कुशल । लाठी चलाने वाला ।

लाड—*(न०)* १. बच्चों के साथ किया जाने वाला दुलार । २. प्यार । दुलार । नेह । लाड़ । नेह । हेत ।

लाडकवाई—*(वि०)* १. लाड़-प्यार से रही या पली-पोसी हुई । २. प्यारी । **लाडवाई** ।

लाडकवायो—*(वि०)* १. लाड़ में रहा या पला हुआ । २. प्यारा । **लाडवायो** ।

लाड-कँवर—*(न०)* पुत्र । **डीकरो** । *(ना०)* पुत्री । बेटी । **डीकरी** ।

लाड-कँवरि—*(ना०)* पुत्री ।

लाडकी—*(वि०)* प्यारी । *(ना०)* पुत्री । **डीकरी** ।

लाडको—*(वि०)* प्यारा । *(न०)* पुत्र । **डीकरो** ।

लाड-कोड—*(न०)* १. प्यार और उमंग । २. विवाह एक की प्रथा । ३. विवाह के बाद जमाई को कुछ दिन ससुराल में रखने की एक प्रथा के अन्तर्गत नित्य नये और विविध प्रकार के भोजन, गीत-गाली, व्यंग्य—विनोद, हँसी आदि से किया जाने वाला सम्मान और प्यार ।

लाड-गहलो—*(वि०)* अधिक लाड़ से बिगड़ा हुआ ।

लाड-गैली—*(वि०)* अधिक प्यार से बिगड़ी हुई ।

लाड-गैलो—दे० लाड-गहलो ।

लाड-जमाई—*(न०)* १. जमाई के प्रति अधिक प्यार का एक विशेषण । २. प्यारा जमाई । ३. खास जमाई । ४. जमाई । दामाद ।

लाड-जँवाई—दे० लाड-जमाई ।

लाडलड़ी—*(ना०)* १. 'लाडी' की प्रेम संज्ञा । दे० लाडी । २. दुलहिन । ३. वधु ।

लाडलड़ो—*(न०)* १. दूल्हा । २. पति । *(वि०)* प्यारा ।

लाड़ली—*(ना०)* १. दुलहिन । लाडी । २. राधा । राधिका । ३. पुत्रवधू । ४. पुत्री । कन्या । *(वि०)* १. प्यारी । २. लाडिली ।

लाडलीजी—*(ना०)* श्री राधिकाजी ।

लाडलो—*(न०)* १. दूल्हा । २. पुत्र । *(वि०)* प्यारा । लाडला ।

लाडवायो—दे० लाडकवायो ।

लाडाँ—*(ना०)* पुत्री । बेटी । **डीकरी** ।

लाडाँ-कोडाँ—*(अव्य०)* प्यार और उमंग से ।

लाडिस—*(ना०)* ताश के खेल में जीत का एक दाँव ।

लाडी—*(ना०)* १. पत्नी । २. दुलहिन । **बीनणी** । ३. वधू । वधूटी । पुत्र-वधू । ४. स्त्री । ५. स्नेह-संबोधन । *(वि०)* १. प्यारी । प्रिय । २. प्यारा । प्रिय ।

लाडू—*(न०)* लड्डू । मोदक । *(वि०)* प्रिय ।

लाडे-कोडे—*(अव्य०)* १. लाड़-प्यार से । २. लाड़ और उमंग से । **लाडाँ-कोडाँ** ।

लाडेसर—*(न०)* १. पुत्र । २. पुत्री । *(वि०)* प्यारा । ३. सबसे अधिक प्यारा ।

लाडेसरी—*(ना०)* १. पुत्र-वधू । २. पुत्री ।

लाडो—*(न०)* १. दूल्हा । बींद । २. पुत्र । *(ना०)* १. पत्नी । २. कन्या । ३. दुलहिन । *(वि०)* १. प्रिय । २. प्रिया । *(न०)* स्नेह-सम्बोधन ।

लाण—*(वि०)* १. बिचारी । असहाय । बेचारी । लाइण । २. दीन । गरीब । गरीबनी । ३. विवश । मजबूर । ४. लाई का नारी लिंग ।

लाणत—*(ना०)* लानत । धिक्कार । भर्त्सना ।

लाणो—*(क्रि०)* १. कहीं से कोई वस्तु लेकर आना । आणणो । २. उपस्थित करना । लाना । ३. सामने रखना । ४. लाकर देना ।

लात—*(ना०)* १. पाद-प्रहार । पदाघात । २. पैर । पाँव ।

लातणो—*(वि०)* लात मारने वाला । *(क्रि०)* १. गाय-भैंस का दूध देना बंद कर देना । २. लात मारना ।

लातम-लातां—*(ना०)* परस्पर लातें मारने की लड़ाई ।

लातर—*(ना०)* १. धिक्कार । २. अधन्य । ३. फटकार । *(वि०)* १. भ्रष्ट । २. विचलित ।

लातरणो—*(क्रि०)* अपने पद, धर्म, सिद्धांत और प्रतिज्ञा इत्यादि से हट जाना । २. विचलित होना । ३. थकना । हैरान होना । ४. निचोड़ना । ५. निचोड़वाना । ३. धिक्कारना । ७. भ्रष्ट होना । ८. पथ-भ्रष्ट होना । ९. विवश होना । १०. विवश करना । ११. पथ-भ्रष्ट करना ।

लात-लडींगो—*(वि०)* १. लातों से लड़ने वाला । लातों से मारा-मारी करने वाला । २. लंबी टाँगों वाला ।

लाद—*(ना०)* १. ऊंट,गदहे आदि पर लादा जा सके उतना बोझ । उतना बोझा जो पशु की पीठ पर लदा हुआ है । २. घास आदि का उतना वजन या मान जो बोरों में भर कर एक ऊंट या गदहे पर लादा जाये । ३. लादी हुई कोई सामग्री या वस्तु । ४. लदाई । ५. लादने की क्रिया या भाव । ६. हाथी, घोड़े, गदहे की विष्टा । लीद ।

लादण-भर—*(न०)* गदहा । गधो ।

लादणो—*(क्रि०)* १. ऊँट, गदहे आदि की पीठ पर ढोने के लिये सामान रखना । किसी पर बोझ रखना । लादना ।

लादियो—*(न०)* घोड़े का मल-द्वार ।

लादी—*(ना०)* १. फर्श बंधी करने का अमुक परिमाण का चौरस पत्थर या सीमेंट का टुकड़ा । २. टाइल । ३. छोटा लादा ।

लादो—*(न०)* ऊंट, गदहों आदि की पीठ पर लदा हुआ घास या ईंधन का गट्ठड़ ।

लाधणो—*(क्रि०)* १. मिलना । प्राप्त होना । हाथ लगना । २. खोई हुई वस्तु का मिल जाना । लाभणो । ३. उपाय हाथ लगना । सूझना ।

लाधी—*(भू०क्रि०)* मिली । लब्ध ।

लाधो—*(भू०क्रि०)* मिला । प्राप्त हुआ ।

लानत—दे० लाणत ।

लापड़—दे० लप्पड़ । दे० लापर ।

लापता—*(वि०)* १. जिसका पता न हो । बिना पते का । २. गुम । खोया हुआ । ३. गायब । लुप्त ।

लापर—*(ना०)* १. कुँए की बरत का अंतिम और मोटा छोर । *(वि०)* १. लबाड़ । गप्पी । २. वाचाल ।

लापरपणो—*(न०)* लबारपन ।

ला-परवा—*(वि०)* ला-परवाह। बे-परवाह। बेफिक्र।

ला-परवाई—*(ना०)* ला-परवाही। बे-परवाही। बे-फिक्री। असावधानी।

ला-परवाह—दे० ला-परवा।

ला-परवाही—दे० ला-परवाई।

लापराई—दे० लपराई।

लापसी—*(ना०)* गेहूँ के दलिये को घी में सेंक कर गुड़ के रस में पका कर बनाया हुआ एक भोज्य पदार्थ। लपसी। लपनश्री। लापी।

लाफो—दे० लप्पड़।

लाभ—*(ना०)* १. प्राप्ति। मिलना। २. कारोबार में होने वाला मुनाफा। फायदा। ३. बीमारी में दवा आदि से होने वाली स्वस्थता। ४. हित। ५. आनंद। मजा।

लाभ-कारक—*(वि०)* लाभकारी। फायदाकारक।

लाभ-कारी—*(वि०)* फायदाकारी। लाभजनक।

लाभणो—दे० लाधणो।

लाभ-दायक—दे० लाभकारी।

लाभ-दायी—दे० लाभकारी।

लाभ-पांचम—*(ना०)* कार्तिक शुक्ल पंचमी इस दिन नई बही डालकर उसकी पूजा की जाती है।

लाभपुर—*(ना०)* लाहोर का काव्य नाम।

लाम—*(ना०)* १. उर्दू, फारसी, अरबी और सिंधी लिपि का एक वर्ण। २. इन लिपियों की वर्ण-माला का एक वर्ण। 'ल' का समकक्ष वर्ण। ३. सेना। फौज। ४. युद्ध।

लामण—*(ना०)* १. घाघरे के नीचे का भाग। २. घाघरे के भीतर का नीचे का वस्त्र। ३. लहँगा। लंभनिका। ४. घाघरा। ५. ऋतुमती स्त्री के दुर्गंध तथा स्पर्श से खाद्य वस्तुओं में उत्पन्न होने वाला विकार।

लामणियोड़ो—*(भू० कृ०)* वह जिसको लामण लग गई हो। विकार युक्त (खाद्य)।

लामणी-जणो—*(क्रि०)* पापड़, बड़ी आदि बनने के समय ऋतुमती स्त्री के रक्त की दुर्गंध से उनमें स्वाद, रंग और गुण आदि में विकृति आना।

लामणीजियोड़ो—दे० लामणियोड़ो।

लामो—*(ना०)* तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य। दे० लांबो।

लामो-लरड़—दे० लांबो-लरड़।

लाय—*(ना०)* १. अग्नि। २. अग्नि ज्वाला। लपट। ज्वाला। झाळ। ३. जलन। दाह। पीड़ा। बळतरा। ४. कामाग्नि। ५. बहुत उतावल। ६. ग्रीष्मकाल की तेज गरमी। तपत।

लायक—*(वि०)* १. योग्य। २. उचित। ३. अनुकूल। ४. समर्थ।

लायकाछराँ—*(ना०)* १. काव्य में यथास्थान योग्य अक्षरों को लाने की कला। २. काव्य का योग्य अक्षर-विन्यास। ३. श्रेष्ठ काव्यकृति। ४. अक्षर, शब्द तथा पदों का योग्य स्थानों पर प्रयोग।

लायकात—दे० लायकी।

लायकी—*(ना०)* १. योग्यता। २. विनम्रता। लायकात।

लायण—दे० लाण।

लायणो—*(ना०)* १. मकान आदि के जलने की भयंकर अग्नि या अग्नि-ज्वाला।

२. ऐसी आग के लगने का दृश्य । ३. अत्यावश्यकता । ४. क्रोधावेश का प्रयोग । ५ कामाग्नि । ६. अग्नि-ज्वाला ।

लार—*(अव्य०)* १. पीछा । अनुगमन । २. कारण । हेतु । ३. पीछे । *(ना०)* १. पंक्ति । लाइन । हार । २. एक लगान ।

लारणो—*(न०)* घाघरे को ऊपर से बाँधने की रस्सी ।

लारमलार—*दे०* लारोलार ।

लारली-आगली—*(वि०)* पिछली-अगली । आगे पीछे की ।

लारलो—*(वि०)* १. पीछे का । २. बीता हुआ । विगत । ३. शेष ।

लारवाळ—*(न०)* पुनर्विवाह करने के पश्चात् विधवा जिस लड़के अथवा लड़की को अपने नये पति के घर लाती है, वह । जार वाळियो ।

लारां—*(अव्य०)* १. पीछे । २. बाद में । पीछे से । लारै ।

लारै—*दे०* लारां ।

लारै-लारै—*(क्रि०वि०)* पीछे-पीछे । पीछे का पीछे ।

लारो—*(न०)* १. पीछा । बाहर । २. पीठ । ३. भुलावा । धोखा । ४. पीछे की बात । गत तथ्य । ५. कीमती या असली वस्तु के बदले में हलकी या खोटी वस्तु देकर की जाने वाली ठगाई (बच्चों के साथ) ।

लारो करणो—*(मुहा०)* १. भुलावे में डालना । धोखा देना । चिगावणो । २. पीछा करना ।

लारोलार—*(अव्य०)* १. लार का लार । पीछे का पीछे । २. तुरंत पीछे । ३. पंक्तिबद्ध । एक पंक्ति में । ४. एक के पीछे एक-दूसरा । हारोहार । क्यु Que । लैण । लैणोलैण ।

लारोवरि—*दे०* लारोलार ।

लाल—*(ना०)* १. माणिक नामक एक रत्न । पद्मराग । *(न०)* २. बच्चा । शिशु । ३. पुत्र । ४. प्रिय व्यक्ति । ५. प्रिय के लिये प्रयुक्त एक संबोधन । ६. श्रीकृष्ण । *(वि०)* १. सुर्ख । रक्त जैसे रंग का । रातो । २. प्रिय । प्यारा ।

लाळ—*(ना०)* १. लार । थूक । २. मुंह से निकलती हुई लार का ताँता । ३. संसर्ग-दोष । ४. पशुओं के मुंह से लाळ पड़ने का एक रोग ।

लाल-काँगणी—*(ना०)* एक क्षुप ।

लाळकी—*(ना०)* जीभ । जिह्वा ।

लाल-केसियो *(न०)* १. होली के गीतों का एक रसिक नायक । लालकेसो । २. होली का एक लोकगीत ।

लाल-केसो—*दे०* लाल-केसियो ।

लालच—*(न०)* लोभ ।

लाल-चंदण—(न०) एक प्रकार का लाल चंदन । रक्त-चंदन ।

लाल-चांच—*(न०)* तोता । सुग्गा । सूवटो ।

लालची—*(वि०)* लोभी । जिसे अधिक लालच हो । लालचू ।

लालचुट—*(वि०)* गहरा लाल ।

लालचू—*दे०* लालची ।

लाल-चोळ—*(वि०)* खूब लाल । अत्यधिक रक्त वर्ण वाला । लालबम ।

लालजी—*(न०)* श्रीकृष्ण की बालस्वरूप की मूर्ति । २. गुंसाईजी के पुत्र का सम्मान सूचक नाम । ३. प्रियपुत्र । ४. राजकुमार, पुत्र, देवर, पुत्र-वधू इत्यादि के लिए प्यार का व सम्मान संबोधन ।

लालटेण—*(ना०)* फानुस । लैंटर्न । लाल-टेन ।

लालबम—दे० लाल-चोळ ।

लालबुझाकड़—दे० बूझ-बुझाकड़ ।

लालबुरज—*(न०)* नील । नील का रंग । **गुळी** ।

लालबेगी—(न०) १. मंगी । महत्तर । २. मारवाड़ के भंगियों का एक भेद ।

लालर—*(न०)* विधवाओं के ओढ़ने का एक वस्त्र ।

लालवनी—*(ना०)* १. दुलहिन का एक विशेषण । २. एक लोकगीत ।

लालवनो—*(न०)* १. दुलहे एक का विशेषण । २. प्यारा दुलहा ।

लालसा—*(ना०)* उत्कट अभिलाषा । तीव्र इच्छा ।

लाला—*(न०)* १. बच्चा । २. पुत्र । ३. बच्चे के लिये संबोधन । ४. बनिया वाचक शब्द । ५. थूक । लार । ६. 'गुले-लाला' का फूल । ७. दरिद्रता । गरीबी । ८. अभाव ।

लालाजी—*(न०)* १. एक आदर सूचक संबोधन । २. कायस्थ और बनिया जाति वाचक शब्द ।

लालास—दे० ललास ।

लालास्राव—*(न०)* १. मकड़ी । २. मकड़ी का जाला ।

लालिमा—*(ना०)* ललाई । **रतास** ।

लाळिया—*(न०ब०व०)* १. लारें । २. झाग । ३. खुशामद ।

लाळिया-करणा—*(मुहा०)* १. लारें टपकाना । २. खुशामद करना ।

लाळियो—*(न०)* १. लार से कपड़े खराब न होने देने के लिए छोटे बच्चों के गले में बाँधा जाने वाला एक वस्त्र-खंड । २. जरख । ३. स्यार । *(वि०)* जिसके मुँह से बहुत लार गिरती है ।

लाळी—*(ना०)* १. सियार । गीदड़ । २. बाजरी, ज्वार आदि के बाल में दाना पड़ने के पूर्व सफेद छिलके जैसा पदार्थ । **फूंबी । पूंभी ।**

लाली—*(ना०)* १. ललाई । अरुणता । सुरखी । **रतास** । २. शोभा । ३. सौष्ठव ।

लालो—*(न०)* १. पुत्र । २. लड़का । ३. बच्चे के लिये स्नेहपूर्ण संबोधन ।

लाळो—*(न०)* झूठा आश्वासन ।

लाव—*(ना०)* १. रस्सी । २. मोटा रस्सा । ३ सूंडिये चरस की दो रस्सियों में से सूंड के बाँधी जाने वाली रस्सी । **सेतरी** ।

लावण—दे० लामण । दे० लावण्य ।

लावण-मई—*(वि०)* लावण्यमयी । सुंदर । *(ना०)* सुंदरी । सुंदर स्त्री ।

लावणारी—*(वि०)* लाने वाली ।

लावणारो—*(वि०)* लाने वाला । **लावणियो** ।

लावणियो—*(वि०)* लाने वाला ।

लावणी—*(ना०)* १. एक प्रकार का गायन । लावनी । २. लुनाई । ३. एक छंद ।

लावणो—*(क्रि०)* दे० लाणो ।

लावण्ण—दे० लावण्य ।

लावण्य—*(न०)* अत्यन्त सुन्दरता । सौंदर्य । सलोनापन ।

लावलद—*(वि०)* १. संतान रहित । २. निर्वंश ।

लावा—*(वि०)* बुरा । खराब ।

लावारस—*(वि०)* १. अदायिक । दायाद-हीन । २. जिसका कोई मालिक न

हो। बिना वारिस का। लावारिस। दे० लावो। सं. २।

लावो—*(न०)* १. एक पक्षी। २. ज्वालामुखी पर्वत से निकलने वाला द्रव पदार्थ। दे० लाहो। पिघला हुआ पत्थर, धातु व राख आदि पदार्थ जो ज्वालामुखी में से निकलते हैं। दे० लहावो।

लाश—*(ना०)* शव। मृत शरीर। **मुड़वो**।

लास—*(ना०)* १. खेतों में सामूहिक रूप से परस्पर बिना पारिश्रमिक काम करने की एक प्रथा। **ल्हास**। २. ऐसा काम करने वालों को कराया जाने वाला भोजन। ३. एक नृत्य। **ल्हास**। ४. लाश। शव।

लासक—*(वि०)* १. नाचने वाला। नृत्यक। २. क्रीड़ाप्रिय।

लासू—दे० ल्हासू।

लास्य—*(न०)* १. नृत्य। नाच। २. शृंगारादि कोमल रसों का उद्दीपन। ३. उद्दीपन करने वाला कोमल स्त्रियों का नृत्य। ४. संगीतमय नृत्य।

लाह—*(न०)* लाभ। *(ना०)* लाख। लाक्षा। **चपड़ी**।

लाहणो—*(न०)* विवाहादि के अवसर पर संबंधियों तथा पड़ोसियों आदि को दी जाने वाली मिष्टान्न आदि की सौगात। **हाँथी**। **लैणो**।

लाही—*(ना०)* एक वस्त्र।

लाहो—*(न०)* १. लाभ। २. आनंद। मजा। मौज। **ल्हावो**। ३. समय का *सत्कार्य में उपयोग*। समय का सदुपयोग। ४. भजन-सुमिरण में बीता हुआ समय। ५. एक वस्त्र।

लाहोर—*(न०)* पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर।

लाहोरी—*(न०)* १. लाहोर का। लाहोर सबंधी। २. सेंधा नमक।

लाह्वो—दे० लाहो।

लाँ—*(व०क्रि०ब०व०)* १. लें। लेलें। २. लेते हैं।

लाँक—*(ना०)* १. कमर। कटि। २. कमर की मरोड़। लचक। ३. ढंग। तरीका। **बळामण**। ४. अक्षरों के लिखने की मरोड़। लिखने का ढंग। ५. अक्षर का आकार। ६. शोभा। सुंदरता।

लाँकड़ी—*(ना०)* लोमड़ी। **लांकी**। *(वि०)* १. पतली कमर वाली। २. झुकी हुई कमर वाली। ३. झुकी हुई। ४. गरीब। **रांकड़ी**।

लांक-लाँकीलो—*(वि०)* पतला व लंबा (शरीर)।

लाँकी—दे० लाँकड़ी।

लाँकीलो—*(वि०)* सुन्दर।

लाँको—*(वि०)* १. टेढा। बांका। झुका हुआ। *(न०)* १. साधारण लंगड़ापन। २. ऐंठन वाला। मरोड़ वाला।

लाँग—*(ना०)* १. धोती का वह भाग जो कई तहें देकर लंगोट के जैसा बना कर पीछे की ओर खसोला जाता है। २. धोती और दुपट्टी की किनारी।

लाँगड़—*(न०)* सूअर।

लाँगड़ो—*(वि०)* लंगड़ा। *(न०)* हनुमान।

लाँगरणो—*(क्रि०)* १. पशुओं को एक पंक्ति में बाँधना। २. एक को दूसरे के पीछे बांध कर कतार बनाना। ३. लंगर डाल करके जहाज को पानी में खड़ा करना।

लाँगरी—*(न०)* लंगरखाने में भोजन बनाने वाला व्यक्ति।

लांगळ—*(न०)* हल ।

लांगळी—*(न०)* हलधर । बलराम ।

लांगुळ—*(न०)* १. बन्दर । २. पूँछ । **लांगेरो**—*दे०* लगेरो ।

लांगो—*(न०)* १. हनुमान । २. बंदर । **बांदरो** । २. लंगड़ा भैरव ।

लांगोदार—*(न०)* एक लोक माता ।

लाँघण—*(न०)* १. उपवास । २. हेतु साधने के लिये किसी के विरुद्ध किया जाने वाला उपवास । अनशन । ३. भूखा रहना । ४. लाँघने की क्रिया या भाव ।

लांघणियो—*(वि०)* लाँघने वाला ।

लांघणो—*(क्रि०)* १. उल्लांघना । लांघना । फाँदना । कूदना । २. अतिक्रमण करना । अनुचित रूप से उल्लंघन करना । ३. विरुद्धा-चरण करना । ४. पार जाना । *(वि०)* १. भूखा । २. उल्लंघन करने वाला । **लांघणियो** । **लांघणीक** ।

लाँघा—*(ना०)* १. नागा । २. अनुपस्थित । ३. बीच । अंतर ।

लाँघो—*(न०)* उपवास । लाँघण । लंघन ।

लाँच—*(ना०)* १. रिश्वत । घूस । **लांछ** । २. कलंक । **लाँछ** । **सूंक** ।

लाँचखाऊ—*(वि०)* रिश्वतखोर ।

लाँचियो—*दे०* **लाँचखाऊ** ।

लाँचो—*(न०)* १. विवाहादि अवसरों पर अधिक खर्च हो जाने के कारण (क्षति-पूर्ति के लिये) जागीरदार की ओर से उसकी प्रजा से वसूल किया जाने वाला चंदा । क्षतिपूर्ति कर । २. जागीरदार के निजी खर्च के लिये लिया जाने वाला या लगाया जाने वाला एक कर । ३ अपशकुन । ४. न्यूनता । कमी । ५. अड़चन । बाधा । ६. कठिनता ७. एक घास । *(वि०)* १. खराब । बुरा । २. अनुचित ।

लाँछ—*दे०* लाँच । *(ना०)* १. अयोग्य लड़के-लड़कियों की संबंध करने की दलाली । २. झगड़ा लगाने और कराने का मेहनताना ।

लाँछ-खाऊ—*(न०)* रिश्वतखोर ।

लाँछ-खाणो—*(मुहा०)* रिश्वत खाना ।

लाँछण—*(न०)* १. लांछन । कलंक । २. दाग । ३. चिन्ह । लक्षण ।

लाँछर—*दे०* लाँछण ।

लाँछित—*(वि०)* लाँछन वाला । कलंकित ।

लाँजी—*(ना०)* एक व्यंजन । अमचूर, केले आदि की खट्टी-मीठी तरकारी । *दे०* लंजी ।

लाँजो—*दे०* लंजो ।

लाँठ—*(ना०)* १. जबरदस्ती । २. भीड़ । ३. समूह । ४. अत्याचार । **लांठाई** ।

लाँठाई—*(ना०)* १. जबरदस्ती । बल-प्रयोग । **लुंठाई** । २. अत्याचार । ३. बदमाशी । धूर्तता ।

लाँठी—*(वि०)* १. लाँठो का नारी रूप । *दे०* लाठी ।

लाँठो—*(वि०)* १. जबरदस्त । बलवान । २. मजबूत । दृढ़ । ३. अत्याचारी । ४. शठ । ५. मूर्ख । ६. धूर्त । चालाक । ७. झगड़ालू । लूंठो । ८. महत्वपूर्ण । ९. बलिष्ट । १०. धनवान । धनी । सम्पन्न ।

लाँप—*(न०)* १. एक घास । २. अग्नि । *(वि०)* १. गरीब । निर्धन । २. कमजोर । ३. भोलाभाला । निष्कपट । **लांपड़ो** ।

लांपड़ो—दे० लांप ।

लांपो—*(न०)* १. श्मशान में मृतक की चिता में लगाई जाने वाली अग्नि। २. अग्नि । ३. झगड़ा । कलह । ४. गंदी बात । ५. अश्लील पिता ।

लांबकळी—*(वि०)* १. लंबी गरदन वाली। २. अपेक्षाकृत लम्बी हो । लंबी । ३. पतली और लंबी कमर वाली ।

लांबाई—दे० लंबाई ।

लांबावणो—दे० लंबावणो ।

लांबा-आंगिया—दे० लांबी आंगी ।

लांबी-आंगी—दे० लांबी कांचळी ।

लांबी-कांचळी—*(ना०)* विधवा की लंबी कंचुकी। वैधव्य सूचक काले रंग की लंबी बाँहों की काँचली । लांबो ।

लाँबो—*(ना०)* विधवा के पहनने की लंबी बांहों की काले या मजीठिया रंग की कंचुकी ।**लांबी कांचळी** । *(वि०)* लंबी ।

लाँबो—दे० लंबो ।

लाँबो-चौड़ो—दे० लंबोचौड़ो ।

लाँबो-तड़ंग—दे० लंबतड़ंग ।

लाँबोतरो—दे० लंबोतरो ।

लांबो-पयाणो—*(न०)* १. लंबामार्ग । २. अधिक समय के लिये किया जाने वाला विदेश-गमन । लंबा प्रयाण । ३. मरण । मृत्यु ।

लाँबो-लरड़—*(वि०)* अधिक लंबा । बहुत लंबा ।

लाँवण दे० लामण ।

लांवणीजणो—दे० लामणीजणो ।

लि।।—दे० 'लिखत'

लि:—दे० लिखतं ।

लिए—दे० लिये ।

लिखणो—*(क्रि०)* १. लिखना । २. आलेखन करना । ३. ग्रन्थ निर्माण करना ।

लिखत—*(न०)* १. लिखने की क्रिया या भाव । २. लिखा हुआ । दे० दस्तावेज ।

लिखतं—*(वि०)*लिखने वाला । लिखितम् । *(अव्य०)* १. प्राचीन समय के पत्र लेखन में लिखने वाले के नाम के पहले लिखा जाने वाला एक अव्यय । यथा—लिखतं जोधपुर सूं फलाणचन्द रा राम-राम बांचजो अपरंच·····**लिखतूं** । २. हस्तलिखित ग्रंथों के अन्त में लिखा-जाने वाला लिपिकार के नाम का पहले का अव्यय ।

लिखतूं—*(अव्य०)* जहाँ से और जिसके द्वारा लिखा जाता है, उसके नाम को सूचित करने वाला शब्द । २. लिखने वाला । दे० लिखतं । (संक्षेप 'लि: अथवा 'लि।।) ।

लिखमी—*(ना०)* लक्ष्मी । **लिछमी** । **लाछ** ।

लिखमी-पत—*(न०)* लक्ष्मीपति । विष्णु ।

लिखमी-पीव—*(न०)* लक्ष्मीपति । विष्णु ।

लिखवाई—दे० लिखाई ।

लिखाई—*(ना०)* १. लिखने का काम । २. लिखने का पारिश्रमिक । ३. लिखने का ढंग । ४. लिखावट ।

लिखाई-पढ़ाई—*(ना०)* १. विद्योपार्जन । २. लिखने पढ़ने का काम ।

लिखाण—*(न०)* १. लिखित रूप में कोई इकरार । २. लिखाई । ३. दस्तावेज । ४. लेख ।

लिखाणो—(क्रि०) १. किसी से लिखाने का काम कराना। लिखवाना। २. लिपिबद्ध कराना।

लिखा-पढी—(ना०) १. पत्र-व्यवहार। २. किसी बात, लेन देन या व्यवहार का लिखकर किया जाने वाला पक्का रूप। अनुबन्ध। ३. लिखने और पढ़ने का काम।

लिखामण (ना०) १. लिखने का काम। २. लिखने का पारिश्रमिक। **लिखाई। लिखामणी।**

लिखामणी—दे० लिखामण।

लिखावट—(ना०) १. लिखने का ढंग। २. लिखने की शैली। (लेख-शैली)। ३. लिखे हुये अक्षर आदि।

लिखारो—(न०) १. लिखने वाला। २. लेखक। **लहियो।**

लिखावणो—दे० लिखाणो।

लिखावतं—(वि०) १. राजा द्वारा विशेष सम्मानित व्यक्ति के पत्र में 'वचनात्' के स्थान पर लिखाया जाने वाला पारिभाषिक शब्द। (सनद, परवाना आदि में इस अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है। २. लिखने वाला (पत्र-व्यवहार में)।

लिखित—(वि०) १. लिखा हुआ। अंकित। २. लिखाया हुआ। ३. जो लेख के रूप में हो। (न०) १. लिखी हुई बात। २. प्रमाणपत्र। **लिखत।**

लिखिया—(न०) भाग्य। प्रारब्ध। विधि का लिखा लेख।

लिखिया-लेख—दे० लिखिया।

लिखी—दे० लिखतं।

लिखाजणो—(क्रि०) लिखा जाना।

लिगतर—दे० लिपतर।

लिगतरो—(न०) पुराना, फटा और सूखा हुआ जूता। **लिपतरो। लीतरो।**

लिगतो—(वि०) १. धीठ। ढीट। २. बेशऊर। अशिष्ट। ३. कुमार्गी। ४. पतित। (न०) कुत्ता। **कूतरो।**

लिगार—(वि०) थोड़ा। किंचित्।

लिगारेक—(वि०) किंचिन्मात्र। किंचित्-मात्र। **थोड़ोसो।** (अव्य०) १. थोड़ा ही। २. थोड़ा भी।

लिच्छवी—(न०) १. एक इतिहास प्रसिद्ध राजवंश। २. एक बौद्धकालीन प्रजा।

लिछमी—(ना०) १. लक्ष्मी। **लिखमी।** २. धन। सम्पत्ति। ३. धरती। ४. मिट्टी। धूलि।

लिछमीजी—(ना०) १. रोकड़ रुपये। २. धन-सम्पत्ति। ३. लक्ष्मीजी।

लिछमीधर—(वि०) धनवान।

लिछमीवर—(न०) विष्णु। लक्ष्मी के पति।

लिछमीवान—(वि०) १. धनवान। २. भाग्यवान।

लिप—(ना०) पेट की एक गाँठ। तिल्ली। प्लीहा।

लिपटणो—(क्रि०) १. लिपटना। २. गले लगाना। ३. चारों ओर से घेरते हुये। सटना।

लिपटाणो—(क्रि०) १. लिपटाना। **लिपटावणो।** २. गले लगाना। ३. चौतरफ से सटाना। ४. लिपटना। ५. गले लगना।

लिपटावणो—दे० लिपटाणो।

लिपड़ी—*(ना०)* लेई जैसी चिपचिपी वस्तु।

लिपतर—*(न०)* फटा हुआ जूता। **लिमतर**। **लिंगतरो**।

लिपतरो—दे० लिपतर।

लिपळो—दे० लिपड़ी। *(वि०)* १. लबाड़। २. मूर्ख। जार।

लिपसा—*(ना०)* लिप्सा।

लिपाई—*(ना०)* १. लीपने का काम या मजदूरी। **निपाई**। २. लीपने की मजदूरी।

लिपि—*(ना०)* १. वर्णमाला के शब्द लिखने की प्रणाली। २. वर्णों के अंकित चिन्ह। ३. भाषा के वर्ण लिखने की रीति।

लिपिक—*(न०)* १. ग्रन्थ लिखने वाला। **लहियो**। लेखक। मुंशी। क्लर्क।

लिपिकार—दे० लिपिक।

लिपि-ज्ञान—*(न०)* १. लिपि लिखने की कला। २. विभिन्न लिपियों की जानकारी।

लिपि-बद्ध—*(वि०)* लिखा हुआ। लिखित।

लिपि-विद्या—*(ना०)* १. प्राचीन लिपियों को पढ़ने की विद्या। २. लिपियों का ज्ञान।

लिप्त—*(न०)* १. निमग्न। २. लगा हुआ। २. फँसा हुआ।

लिफाफ—*(न०)* १. आडम्बर। २. अतिशयोक्ति।

लिफाफो—*(न०)* कागज की एक छोटी थैली जिसमें पत्र आदि लिखकर पोस्ट द्वारा भेजे जाते हैं। लिफाफा एन्वलप।

लिबास—*(न०)* पोशाक।

लियाकत—*(ना०)* योग्यता। **लायकात**। २. सामर्थ्य।

लियाळी—*(ना०)* १. कटारी। दे० ल्याळी।

लिये—*(अव्य०)* १. वास्ते। निमित्त। तदर्थ। **सारू**। इत्यादि। २. सम्प्रदान कारक की विभक्ति।

लिराइजणो—दे० लिरीजणो। *(क्रि०)* लिवाने में सहयोग देना।

लिरीजणो—*(क्रि०)* लिया जाना। लेने में समर्थ होना।

लिलवट—*(न०)* १. निलवट। ललाटपट्ट। ललाट। **लिलाट**। २. कपाल। **माथो**।

लिलाट—दे० ललाट।

लिलाड़—दे० ललाट।

लिलाड़ी—*(ना०)* ललाट।

लिव—*(ना०)* लगन। लौ। **लव**।

लिवना—दे० लिव।

लिवराणो—*(क्रि०)* लेने में मदद करना। लिवाना।

लिवाणो—दे० लिवराणो।

लिसोड़ा—*(न०ब०व०)* गूंदी वृक्ष के फल।

लिस्ट—*(ना०)* सूची।

लिस्बन—*(न०)* पुर्तगाल की राजधानी का नगर।

लिहाज—*(न०)* १. शील-संकोच। २. विवेक। ३. सम्मान या मर्यादा का ख्याल। ४. लाज। ५. पक्षपात।

लिहाजू—*(वि०)* १. लिहाज वाला। २. लेने देने और व्यवहार में उदारता एवं विनम्रता वाला। ३. लाज वाला।

लिहाड़ी—दे० सिलाड़ी।

लिहाड़ो—*(वि०)* १. पतित। २. नीच। लिहाड़ा। ३. घृणित। ४. निकम्मा। ५. अति कृपण।

लिहाफ—*(ना०)* रिजाई। रजाई।

लिंग—*(न०)* १. चिन्ह। २. वह लक्षण जिसके द्वारा नर-जाति या नारी-जाति

का भेद जाना जाता है। (व्या०) ३. लिंगदेह। ४. जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर। ५. शिवमूर्ति। शिवपिंडी। ६. अठारह पुराणों में से एक का नाम। ७. पुरुषेन्द्रिय। ८. साधन। हेतु। ९. लिंगायतों द्वारा गले में लटकाई जाने वाली। शिवलिंग युक्त डिबिया।

लिंग-देह—*(ना०)* जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर।

लिंग-पुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में से एक।

लिंग-शरीर—दे० लिंगदेह।

लिंगानुशासन—*(न०)* व्याकरण में लिंगों (जाति) के नियमों का ग्रंथ।

लिंगायत *(न०)* इस नाम का शैव सम्प्रदाय तथा उसका अनुयायी।

लिंगेन्द्री—*(ना०)* पुरुष की मूत्रेन्द्रिय। लिंगेन्द्रिय।

लीक—*(ना०)* १. लकीर। रेखा। **लीटी**। २. प्रथा। परम्परा। ३. सीमा। ४. पगडंडी। ५. प्रतिष्ठा। ६. सत्य। ७. जमीन पर। खिचने वाली बैलगाड़ी के पहिये की रेखा। **चीलो**।

लीकियो—*(न०)* लकड़ी पर रेखा खींचने का सुथारों का औजार। २. कागज पर रेखा खींचने की पट्टी या रूल।

लीकियो-रंदो—*(न०)* १. रंदे जैसा लकड़ी पर लकीर निकालने का सुथारी औजार। **लीकियो**।

लीको—*(न०)* १. पँक्ति। **ओळी**। २. परम्परा। ३. नियम। ४. पानी का पतला रेला।

लीख—*(ना०)* जूं का अंडा। लिक्षा।

लीखाँ-मारणी—*(मुहा)* निकम्मा बैठे रहना। फालतू समय बिताना।

लीचड़—*(वि०)* १. निकम्मा। किसी के काम नहीं आने वाला। २. कंजूस। ३. मैला।

लीजणो—*(क्रि०)* लिया जाना।

लीटर—*(न०)* द्रव पदार्थों का एक माप।

लीटी—*(ना०)* १. पँक्ति। हार। **ओळ**। २. लकीर। रेखा। रेख। **लीक**। **ओळी**।

लीटो—*(न०)* १. मोटी लकीर। **जाडी-लीटी**। २. लिखे हुए को मिटाने का भाव।

लीडर—*(न०)* अगुआ। नेता।

लीण—*(न०)* १. हलके बादल। लोर। *(वि०)* १. उचित। २. लीन। तन्मय। ३. संलग्न।

लीतड़ो—दे० लीतरो।

लीतरो—*(वि०)* चरित्रहीन। *(न०)* १. जूती। **लिगतरो**। २. फटा पुराना जूता।

लीद—*(ना०)* बिना सींग बिना पंजे वाले अहिंसक घोड़े, गदहे आदि पशुओं की विष्टा। **लाद**।

लीध—*(न०)* लेने का भाव या क्रिया। लिया।

लीधी—*(क्रि०भू०)* 'लीधो' का नारी रूप) ले ली।

लीधे—*(अव्य०)* १. लिये। कारण। **कारणें**। २. लेने से।

लीधो—*(क्रि०भू०)* 'लेणो' क्रिया का भूतकाल शब्द। लिया। ले लिया।

लीन—*(वि०)* १. लगा हुआ। २. तल्लीन। मशगूल। ३. ध्यान। मग्न। *(क्रि०भू०)*

लीनी—दे० लीधी।

लीनो दे० लीधो।

लीपणो—*(न०)* लीपने का गोबर-मिट्टी का गाढ़ा घोल । *(क्रि०)* लीपना पोतना **नीपणो** ।

लीपियो-गूंपियो—*(वि०)* साफ-सुथरा । लिया हुआ ।

लीमड़ी—*(ना०)* छोटा नीम वृक्ष । **नीमड़ी** ।

लीमड़ो—*(न०)* नीम वृक्ष । **नीमड़ो** । **नींबड़ो** ।

लीर—*(ना०)* १. कपड़ा कागज, चद्दर आदि की लंबी लीरी । धज्जी । २. जीर्ण । ३. फटा हुआ ।

लीरियो—*(न०)* १. सिर पर बाँधने की वह पगड़ी जो मलमल को लम्बाई में फाड़ कर बनाई गई हो । **चीरियो** । २. कपड़े का लम्बा टुकड़ा ।

लीरो—*(ना०)* कपड़े कागज आदि का *लम्बा और पतला टुकड़ा । धज्जी ।*

लीरो—*(न०)* १. लंबाई में फाड़ा हुआ कपड़ा, कागज आदि । कपड़ा कागज आदि का लम्बा टुकड़ा । **चीरो** । **चीरी** । २. आम, ककड़ी आदि की लंबी फाँक ।

लील—*(ना०)* १. पानी के अंदर उत्पन्न होने वाली एक महीन और चिकनी घास । **काई** । सिवार । शैवाल । २. लीला । क्रीड़ा । ३. आनन्द । हर्ष । सुख । ४. चोट लगने से बना चमड़ी पर हरे रंग का चिन्ह । झाम । **चाठो** । ५. पौधा जिससे नीला रंग बनता है । ६. नीला रंग । **नील** ।

लीलकंठ —*(न०)* नीलकंठ पक्षी । महादेव ।

लीलको—*(न०)* छिलके सहित पिसे हुए मूंग के आटे को सब्जी के पानी में गूंध कर बनाया हुआ एक प्रकार का मसालेदार पापड़ ।

लीलगर—*(न०)* रंगरेज । **नीलगर** ।

लील-गाय—*(ना०)* नील गाय । **रोझ** ।

लीलटाँच—*(न०)* १. एक पक्षी । नील टाँच ।

लीलड़ी—*दे०* लीली ।

लीलणो—*(क्रि०)* १. निगलना । **गिटणो** । २. हड़पना । हड़पजाना ।

लीलड़ो—*दे०* लीलको ।

लील-भुआळ—*(न०)* १. बड़े राज्य का सुखी और सम्पन्न राजा । २. चक्रवर्ती राजा । ३. बादशाह । नवाब । ४. इन्द्र । *(वि०)* १. वैभवशाली । २. सौभाग्यशाली ।

लील-भुवाळ—*दे०* लीलभुआळ ।

लीलम—*(न०)* एक रत्न । नीलम ।

लील-लिछमी-रो-लाडो—*(पद०)* १. बहुत बड़े परिवार और लक्ष्मी का धनी । २. लीलामयी लक्ष्मी का लाडिला पुत्र ।

लीलवण—*(ना०)* १. हरियाली २. एक घास । ३. हरी साग-सब्जी । शाक-तरकारी । **लीलोतरी** । **लीलोती** । **लीलोत्री** ।

लीलवाण—*दे०* लीलवण ।

लील-विलास—*(न०)* १. आनन्द मंगल । २. लीला और विलास । क्रीड़ा ।

लीलंग—*(न०)* १. हंस । २. घोड़ा ।

लीलंग-वाहणी—*(ना०)* सरस्वती । शारदा ।

लीलंबर—*दे०* नीलंबर ।

लीला—*(ना०)* १. क्रीड़ा । आनन्द । २. अवतारों के काम । ३. अवतारों के

कामों का अभिनय, जैसे–रामलीला, रासलीला। ४. माया। ५. प्रकृति। ६. अद्भुत खेल। ७. कुदरती रचना। ८. चरित्र। *(वि०)* १. हरा। २. हरे रंग का। ३. गीला।

लीला-अवतार—*(न०)* लीला करने को लिया हुआ विष्णु का अवतार। श्रीकृष्ण।

लीलाणी—*(ना०)* हरियाली। *(भू०क्रि०)* वर्षा होने से तृण-घास आदि से धरती हरी होगई। हरियाली छा गई।

लीलाणो—*(क्रि०)* हरियाली छाना। *(क्रि०भू०)* हरा हो गया।

लीला-धण—*(न०)* १. लीलाओं के धनी। लीलापति। विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

लीला-पुरुषोत्तम—*(न०)* श्रीकृष्ण।

लीलाम—*(न०)* बोली बोलकर माल बेचने का एक प्रकार। नीलाम।

लीला-लहर—*(न०)* १. आनंद। सुख। २. वैभव। ३. वृद्धि। ४. खूब मौज-मजा।

लीलावइ—दे० लीलावती।

लीलावतार—दे० लीला अवतार।

लीलावती—*(ना०)* १. ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पुत्री, जिसने लीलावती नाम के प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी। २. दुर्गा। ३. एक रागिनी। *(वि०)* विलासवती। क्रीड़ा करने वाली।

लीलास—*(ना०)* १. गीलापन। २. नीले रंग की झाँई।

लीलासंघ—*(न०)* १. अलौकिक काम करने वाला। २. श्रीकृष्ण।

लीला-सूका—*(अव्य०)* १. गीला और सूखा साथ में जलने के लक्षणार्थ में। २, सभी प्रकार के। ३. छोटी-मोटी, अच्छी-खराब, कच्ची-पक्की इत्यादि। ४. दोषी और निर्दोषी, योग्य और अयोग्य सभी एक समान। *(न०)* १. सुख और दुख। २. उन्नति-अवनति। चढ़ती पड़ती। *(वि०)* गीला और सूखा।

लीली—*(वि०)* १. गीली। भीगी हुई। आर्द्र। २. हरेरी। रस वाली। ३. हरियाली युक्त। ४. हरे रंग की। हरी। *(ना०)* १. लोक देवता रामदेव की घोड़ी का नाम। २. श्वेत रंग की घोड़ी। श्वेताश्वी। ३. हरियाली।

लीली-मिरच—*(ना०)* हरी मिरच।

लीली-लेखण—*(ना०)* खूब चलता हुआ व्यापार-धंधा। व्यापार, लेनदेन इत्यादि के कारण बही में इंद्रराज करते रहने से लेखनी के चलते रहने की क्रिया।

लीली-वाड़ी—*(ना०)* अनेक पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र और इनकी पत्नियाँ आदि से सम्पन्न घर। हरा-भरा घर। बहुत बड़े परिवार वाला सुखी-संपन्न घर।

लीलो—*(वि०)* १ हरित। हरे रंग का। हरा। सब्ज। २. जो सूखा न हो। रस वाला। तरोताजा। हरेरा। सब्ज। ३. गीला। आर्द्र। नम। *(न०)* १. सफेद रंग का घोड़ा। श्वेताश्व। २. सफेद रंग के घोड़े का नाम। ३. घास। चारा। घास-पात। ४. हरियाली।

लीलोकच—*(वि०)* १. खूब गहरे हरे रंग का। लीलोछम। २. खूब रस भरा। (साग, सब्जी, फल आदि)।

लीलो-काळ—*(न०)* अतिवृष्टि से होने वाला दुकाल।

लीलो-खड़—*(न०)* हरा घास ।
लीलो-घा—दे० लीलो घास ।
लीलो-घास—*(न०)* हरा घास । **लीलो-खड़** ।
लीलो-चारो—दे० लीलो घास ।
लीलो-छम—दे० लीलो कच ।
लीलो-जमानो—*(न०)* सुकाल ।
लीलो-डूंगर—*(न०)* पर्वत जिस पर खूब हरियाली और पानी हो । हरा पर्वत ।
लीलोतरो—*(ना०)* १. पेड़, पौधे व हरे घास का विस्तार । हरियाली । वनस्पति । **लीलोती** । २. साग-सब्जी । हरा साग । **लीलो साग** ।
लीलोती—दे० लीलोतरी ।
लीलोथोथो— *(न०)* नीला थोथा । तूतिया ।
लीलो-दुकाळ—दे० लीलो काळ ।
लीलो-परवत—दे० लीलो डूंगर ।
लीलोफर—दे० नीलोफर ।
लीलो-भाखर—दे० लीलो डूंगर ।
लीलो-मगरो—दे० लीलो डूंगर ।
लीलो-साग—*(न०)* १. मूली, गोभी, बैंगन, बथुआ, बंदलिया इत्यादि प्रकार की हरे साग । साग-सब्जी ।
लीह—*(ना०)* १. रेखा । लकीर । **ओळ** । २. मर्यादा । **लीक** । ३. मार्ग । ४. सीमा । ५. आज्ञा ।
लीहटी—*(ना०)* १. लकीर । रेखा । २. परंपरा । दे० लीह ।
लीहो—*(न०)* रेशम व ऊन के वस्त्रों में पड़ने वाला कीड़ा । **लेवो** ।
लींगटी—*(ना०)* लकीर । रेखा । **लीटी** । **ओळी** ।
लींगटो—*(न०)* १. लकीर । रेखा । पंक्ति । **लीटी** । **ओळी** । २. परम्परा ।
लींगस—*(न०)* १. किसी बात या काम को लंबाये रखने की क्रिया । २. लंबाया हुआ काम या बात ।
लींगारणो—दे० नींगारणो ।
लींडी—*(ना०)* १. छोटा लींडा । २. मेंगनी । **मींगणी** ।
लींडो—*(न०)* १. विष्टा की लंबी टींट । २. कठिन मल । ३. किसी को खिझाने के लिए लींडे के रूप में दिखाया जाने वाला अंगूठा ।
लींबड़ो—दे० लीमड़ो ।
लींबू—दे० नींबू ।
लींबोळी—*(ना०)* १. नीम का फल । निबौरी । **नीबोळी** । **गुट्टो** । २. स्त्रियों के गले का एक गहना । **मूठ** ।
लुइजी-पियो-तैस्सितोरी—*(न०)* इटली का, राजस्थानी भाषा का प्रसिद्ध विद्वान ।
लुक—*(वि०)* छिपा हुआ । *(न०)* छिपाव
लुकणो—*(क्रि०)* १. छिपना । **छिपणो** । २. बंद होना । (आँख का) ।
लुकमान-हकीम—*(न०)* कुरान में वर्णित एक प्रसिद्ध और बुद्धिमान हकीम ।
लुक-मीचणी—*(ना०)* बालकों का आँख-मिचौनी का खेल ।
लुकमो—*(न०)* निवाला । **कवो** ।
लुकंजणा—*(न०)* एक प्रकार का अंजन । जिसे आंजने वाले का अदृश्य हो जाना माना जाता है ।
लुकाणो—*(क्रि०)* छिपाना । **लुकावणो** ।
लुकावणो—दे० लुकाणो ।
लुकियोड़ो—*(वि०)* छिपा हुआ । **छिपियोड़ो** ।
लुगदी—*(ना०)* १. किसी वस्तु को तरल पदार्थ के साथ पीस कर बनाया हुआ

लौंदा। २. गीली पिंडी। छोटा गीला पिंडा। छोटा लौंदा।

लुगाई—*(ना०)* १. स्त्री। बैर। २. पत्नी। जोड़ायत।

लुगाई-टाबर—*(न०)* स्त्रियाँ और बच्चे। स्त्री-बच्चे।

लुगाई-पताई—*(ना०)* १. स्त्री वर्ग। २. स्त्री आदि। ३. पति वाली स्त्री। सधवा।

लुगाई-रो-लिगतरो—दे० लुगाई-रो-लीतरो।

लुगाई-रो-लीतरो—*(पद०)* १. औरत (पत्नी) के सम्मुख जूता के समान अनादृत। २. औरत का जूता उठाने वाला। ३. जोरू का गुलाम। पत्नी-सेवक। ४. जोरू का जूता।

लुगात—*(ना०)* शब्दकोश। कोश।

लुगायाँ-पतायाँ—*(ना०)* 'लुगाई-पताई' का बहुवचन।

लुगावड़ियो—*(वि०)* १. स्त्री के वश में रहने वाला। स्त्रैण। बैरियो। २. स्त्रियों की सी आदत वाला। ३. पत्नी-दास।

लुगावड़ी—*(ना०)* १. लुगाई (स्त्री) के लिये तुच्छकार प्रयोग। २. स्त्री। ३. पत्नी।

लुच्चाई—*(ना०)* लुच्चापन।

लुच्ची—*(वि०)* १. कपटी। २. बदमाशिनी। ३. व्यभिचारिणी। ४. झगड़ाखोर।

लुच्चो—*(वि०)* १. कपटी। २. बदमाश। ३. व्यभिचारी। ४ ढोंगी। ५. झगड़ाखोर। ६, चोर।

लुटणो—*(कि०)* १. लुट जाना। २. लूटा जाना। ३. लेटना।

लुटाणो—*(कि०)* १. लुटवाना। २ बाँटना। ३ लुट जाना। ४. बरबाद करना।

लुटावणो—दे० लुटाणो।

लुटेरो—*(वि०)* लूटने वाला। डाकू।

लुड़कणो—*(कि०)* १. बैठे बैठे गिर जाना। लुढकना। २. मरना।

लुड़काणो—*(कि०)* बैठे हुये को गिरा देना। लुढ़काना।

लुड़कावणो—दे० लुड़काणो।

लुणणो—*(कि०)* दे० लणणो।

लुणाई—*(ना०)* १. भेड़ के बाल काटने की क्रिया या पारिश्रमिक। लणाई। २. फसल काटने की क्रिया व मजदूरी। लुनाई। लवनी।

लुत्थ-वुत्थ—दे० लत्थो-वत्थ।

लुत्फ—*(न०)* आनंद। मजा।

लुपणो—दे० लुकणो।

लुपके-चुपके—*(अव्य०)* १. गुप्त रीति से। २. चोरी से।

लुपियोड़ो—दे० लुकियोड़ो।

लुप्त—*(भू०कृ०)* १. जिसका लोप हो गया हो। नष्ट। २. अदृश्य। गायब। छिपा हुआ।

लुप्तोपमा—*(ना०)* एक उपमा अलंकार। लुप्त अंगों वाली उपमा। साहित्य।

लुबध—*(वि०)* १. लुभाया हुआ। २. मोहित। लुब्ध। ३. लोभी।

लुबधणो—*(कि०)* लुभाना। लुब्ध होना।

लुबधी—दे० लुब्धी।

लुब्ध—दे० लुबध।

लुब्धी—*(वि०)* लोभी। लुबधी।

लुभणो—*(कि०)* १. लुभना। लुभा जाना। २ लुभायमान होना।

लुभावणो—*(कि०)* १. लुभायमान होना। २. लुभाना। *(वि०)* १. लुभाने वाला। मोहित करने वाला। २. सुन्दर। मनोहर।

लुळणो—*क्रि(०)* १. झुकना । **नमना** । २. मुड़ना । ३. टेढ़ा होना । लथपथ होना ।

लुळताई—*(ना०)* १. नम्रता । २. विनय-शीलता । विनय । ३. सौंपे हुए काम को व्यवस्थित रूप से और समय पर काम कर देने का ढंग । विनम्र ।

लुळवि —*(क्रि०वि०)* झुक करके ।

लुळाणो—*(क्रि०)* १. झुकाना । २. मुड़ाना । ३. टेढ़ा करना । ४. लथपथ कराना ।

लुहाणी *(ना०)* लोहना जाति की स्त्री । **लोहणी** । **लोहाणी** ।

लुहाणो—*(न०)* लोहना जाति का व्यक्ति । लोहना । लुहाना । **लोहणो** ।

लुहार—*(न०)* १. लोहे का काम करने वाली जाति । २. लोहे का काम करने वाली इस जाति का पुरुष ।

लुहारण—*(ना०)* १. लुहार जाति की स्त्री । २. लुहार की स्त्री । लुहारिन । **लुहारी** ।

लुहारी—*(ना०)* १. लुहार का काम । २. लुहार जाति की स्त्री । लुहारिन । **लुहारण** ।

लुंगी—*(ना०)* १. धोती के स्थान पर लपेटने का कपड़ा विशेष । तहमद । २. छोटे बच्चे की लिंगेन्द्री । **लूंगी** ।

लुंचणो—*(क्रि०)* १. लुंचन करना । २. नोचना ।

लुंचन—*(न०)* चुटकी में पकड़ कर झटके से बालों का उखाड़ने जैन साधुओं की धार्मिक विधि ।

लुंटक—*(वि०)* लूटने वाला । लुटेरा ।

लुंबिनी—*(न०)* कपिल वस्तु के पास का उपवन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे । नेपाल की तराई में एक प्राचीन उपवन ।

लू—*(ना०)* १. ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा । **लूक** । २. गरम हवा से होने वाला रोग ।

लूआंध—*(ना०)* १. गरम आंधी । खूब तेज लू । २. तेज आंधी । ३. क्षोभित भीड़ । ४. भीड़ । समूह ।

लूक—*(ना०)* १. लू । ग्रीष्म ऋतु का उष्ण पवन । लू । **लूआं** । २. लपट । ज्वाला ।

लूकड़ी—*दे०* लूकड़ी ।

लूखाई—*दे०* लूखास ।

लूखाणो —*(न०)* घर की गाय, भैंस आदि का दूध देना बंद कर देने की स्थिति ।

लूखापण—*दे०* लूखास ।

लूखापणो—*दे०* लूखास ।

लूखास—*(न०)* लूखापना । निःस्नेह । रुक्षता । रूखाई । *दे०* लूखाणो ।

लूखी-सूखी—*(वि०)* बिना चुपड़ी और सूकी हुई (रोटी) ।

लूखो—*(न०)* एक घास । *(वि०)* १. बिना घी के । घृत रहित । लूखा । २. बिना प्रीति वाला । स्नेह-रहित । ३. अस्निग्ध । रुक्ष । ४. निर्धन । खाली ।

लूखो-खाणो—*(मुहा०)* १. यथावश्यक प्राप्त नहीं होना । २. अवहेलना होना ।

लूखो-सूखो—*(वि०)* १. लूखा और सूखा । बासी । २. जैसा-तैसा (खाद्यान्न) ।

लूगड़ी—*(ना०)* १. ओढ़नी । २. स्त्रियों के ओढ़ने का छोटा कपड़ा ।

लूगड़ो—*(न०)* वस्त्र । कपड़ा ।

लूगो—*(वि०)* १. वह जिसकी कलप और चुनन मिट गई हो (कपड़ा) । २. अशक्त । ३. ढीला । सुस्त । ३. बीमार ।

लूघड़िया —*(न०ब०व०)* विवाह के पूर्व वाग्दत्ता (कन्या) के लिए वरपक्ष की ओर से भेजे जाने वाले वस्त्र-गहने आदि ।

लूछणियो—*(न०)* लूछने का कपड़ा ।

लूछणो—*(क्रि०)* कपड़े से पोंछ कर साफ करना । पोंछना । *(न०)* लूछने का कपड़ा । पोंछने का कपड़ा ।

लूट—*(ना०)* १. लूटने की क्रिया । २. जबरदस्ती छीन कर लिया हुआ माल ।

लूट-खसोट—*(ना०)* छीन कर या यंत्रणा देकर धन-माल ले लेने की क्रिया । **लूट-खोस** ।

लूट-खोस— दे० लूट-खसोट ।

लूटणियो—*(वि०)* लुटेरा ।

लूटणो—*(क्रि०)* १. किसी को डरा धमका कर धन-माल ले लेना । बलात् खोस करके ले लेना । लूटना । २. किसी वस्तु की उचित कीमत से बहुत दाम लेना । ठगना । ३. अनुचित रूप से ले लेना । ४. बरबाद करना ।

लूट-पाट— दे० लूटमार ।

लूटमार—*(ना०)* किसी को मार-पीट कर धन-माल छीन लेने की क्रिया ।

लूण—*(न०)* नमक । लवण । **मीठो** ।

लूण-उतारणो—*(मुहा०)* दृष्टि-दोष से बचने के लिए नमक न्योछावर करना ।

लूणखो—*(न०)* एक घास ।

लूणपणो—*(न०)* नमक हलाली । स्वामि-भक्ति ।

लूण-पाणी—*(न०)* १. (किसी के यहां आश्रित रह कर लिया हुआ) अन्न-जल । **अंजळ** । २. उपकार । **महसान** । ३. नमक और पानी ।

लूण-लखण—*(न०)* १. विवेक । २. शिष्टता । ३. समझ । बुद्धि ।

लूण-वारणो—*(मुहा०)* १. दृष्टि दोष से बचने के लिए नमक वारना । २. कु-दृष्टि निवारणार्थ नमक वारना ।

लूण-हराम— दे० नमक हराम ।

लूण-हरामी—दे० नमक हरामी ।

लूण-हलाल—दे० नमक हलाल ।

लूणागर—*(न०)* १. लूणी नदी । २. नमक की खान । ३. खारा समुद्र ।

लूणियो—*(न०)* एक घास । *(वि०)* नम-कीन । दे० लूणो सं० ४ ।

लूणी—*(ना०)* १. अजमेर के नाग पर्वत से निकलने वाली राजस्थान की एक बरसाती नदी जो मारवाड़ में बहती हुई कच्छ के रण में जाकर फैल जाती है । २. एक घास । *(वि०)* नमकीन ।

लूणो—*(न०)* १. मक्खन । **माखण** । २. एक घास । ३. गीली हवा या गीलापन से ईंट आदि के ऊपर आ जाने वाली छारी । ४. पोंछने का कपड़ा । ५. चक्की की बाटी से आटा पोंछ कर निकालने का वस्त्र खंड । **लूसणियो** । **लूछणियो** । **झारणो** । *(क्रि०)* कपड़े से पोंछना । **लूसणो** ।

लूण्यो— दे० लूणो सं० १,२,३ ।

लूत—*(ना०)* मकड़ी ।

लूतराई—*(ना०)* १. चरित्रहीनता । २. ओछापन । ३ नीचता । ४. लुच्चाई ।

लूतरी—*(वि०)* १. कुलटा । २. नीच । ३. लुच्ची ।

लूतरो—*(वि०)* १. ओछा । २. चरित्रहीन । ३. नीच । ४. लुच्चा ।

लूता—*(ना०)* मकड़ी ।

लूपरी—*(ना०)* १. जिसमें केशर, इलायची और मेवा न हो, घी कम हो और

पानी ज्यादा हो ऐसा हलवा। २. दे० पोटिस।

लूम—*(ना०)* १. फलों का गुच्छा। २. बाजूबंद आदि गहने की वह लंबी एक डोरी या लटकन जिसके छोर में मणि-मोती आदि पिरोये रहते हैं। ३. फुंदना। झूमका। ४. एक गहना। ५. पूंज। दुम।

लूमक-झूमक—*(ना०)* १. फुंदना-फुंदनी। फुंदनों का गुच्छा। २. विविध प्रकार के छोटे-मोटे फुंदनों का समूह।

लूमको—*(ना०)* बड़ी लूम। **झूमको**।

लूमड़ी—दे० लूंकड़ी।

लूमणो—दे० लूंबणो।

लूम-लूमाळो—दे० लूंब-लूंबाळो।

लर—*(ना०)* १. वसंत का एक स्त्री गीत-नृत्य। एक गीत-नृत्य। २. कन्याओं का वासंतिक गीत-नृत्य। ३. एक नृत्य प्रकार। ४. हलके बादल।

लूरणो—*(क्रि०)* १. नाचना। २. लुढ़कना। ३. हिलना।

लूलू—*(वि०)* मूर्ख।

लूलो—*(वि०)* १. जिसका हाथ कटा हो। २. असमर्थ। ३. अशक्त।

लूलो-खोड़ो—दे० लूलो-लंगड़ो।

लूलो-लंगड़ो—*(वि०)* १. लूला और लंगड़ा। जिसके हाथ-पैर कटे या टूटे हुए हों। २. असमर्थ। असहाय।

लूवणो—दे० लूणो सं० ३ और ४। *(क्रि०)* कपड़े से पोंछना। **लूसणो**।

लूस—*(ना०)* १. शालीनता। नम्रता। २. सौंदर्य। सुन्दरता।

लूसणियो—*(ना०)* १. लूसने का कपड़ा। **पोतो**। **लूछणियो**। *(वि०)* लूसने वाला। पोंछने वाला। *(ना०)* २. चक्की की वाटी (वर्तुल-मार्ग) में से आटे को निकालने तथा वाटी को पोंछ कर साफ करने का कपड़े का छोटा टुकड़ा। **नींगारणो**। **झारणो**। **लूहणियो**।

लूसणो—*(क्रि०)* १. पोंछना। कपड़े से रगड़ कर साफ करना। **लूछणो**। २. लूटना। खोसना। *(ना०)* पोंछने का कपड़ा। **लूणो**, **लूसणो**। दे० लूणो सं० ४।

लूहणियो—दे० लूसणियो।

लूहणो—दे० लूसणो।

लूहर—दे० लूर।

लूंक—*(ना०ब०व०)* खेजड़ी व बबूल के पत्ते। **लूंग**।

लूंकड़ी—*(ना०)* लोमड़ी। **लूंकी**।

लूंकती—दे० लूंकड़ी।

लूंकार—*(ना०)* ओढ़ने का एक ऊनी वस्त्र।

लूंकी—दे० लूंकड़ी।

लूंग—*(ना०)* १. खेजड़ी या बबूल के पत्ते। **लूंक**। २. लवंग। ३. बंदूक का एक लौंग की तरह का अवयव। ४. नाक का या कान का आभूषण।

लूंगती—दे० लूंकड़ी।

लूंगाड़ो—*(वि०)* १. बदमाश। लुच्चा। २. ओछा। कमीन।

लूंगो—*(ना०)* १. एक ऊनी कपड़ा। २. धोती के स्थान पर लपेटा जाने वाला वस्त्र विशेष। तहमद। ३. लाल रंग का एक कपड़ा। ४. छोटे बच्चे की मूत्रेन्द्री। ५. मूत्रेन्द्री। शिश्न।

लूंछणो—दे० लूसणो।

लूंजी—दे० लाँजी।

लूंट—दे० लूट।

लूंट-खोस—दे० लूट-खोस ।
लूंटणियो—*(वि०)* लूटने वाला ।
लूंटणो—दे० लूटणो ।
लूंट-पाट—दे० लूटपाट ।
लूंटमार—दे० लूटमार ।
लूंटारो—*(वि०)* लूटने वाला । **लूटणियो** । लुटेरा ।
लूंठाई—दे० लाँठाई ।
लूंठी—*(वि०ना०)* १ जबरदस्त । २. झगड़ालू । **कंकालण** । ३. मोटी । ४. शक्तिमान । **लांठी** ।
लूंठो—*(वि०)* १. जबरदस्त । २. झगड़ालू । ३. मोटा । ४. ताकतवर । शक्तिमान । **लांठो** ।
लूंड—दे० लूंडो ।
लूंडी—*(वि०)* १. मूर्खा । २. **गहली** । *(ना०)* दासी । लौंडी ।
लूंडो—*(वि०)* १. मूर्ख । २ गहलो । *(ना०)* लौंडा । लड़का ।
लूंदो -*(ना०)* डले के रूप में गीली वस्तु का बनाया हुआ पिंड । लोंदा ।
लूंब—दे० लूम ।
लूंबणो—*(क्रि०)* १. झुकना । २. लिपटना । ३. झूमना । ४. घेर लेना । ५. लटकना । ६. आक्रमण करना । ७. लूटना । ८. झूलना ।
लूंब-लूंबाळो—*(वि०)* अनेक लूमो वाला । लूमों से युक्त । **लूम-लूमाळो** ।
लंबा-लूंब—*(वि०)* १. सज्जित (आभूषणों से) सजा हुआ । शृंगार किया हुआ । २. अनेक लूंबों से युक्त ।
लूंबाळो—*(वि०)* लूम वाला । लूमों वाला ।
ले—*(आ० क्रि०)* १. 'लेणो' क्रिया का आज्ञा सूचक रूप । *(अव्य०)* १. योंही सही । ऐसा ही सही । २. तक । पर्यन्त ।
लेई—*(ना०)* कागज चिपकाने के लिए मैदा को पका कर बनाया हुआ लस । लूई ।
लेऊ—दे० लेवाळ ।
लेऊंला—दे० लेवूंला ।
लेकिन—*(अव्य०)* १. परन्तु । किंतु । **पण** । २. तथापि ।
लेख—*(ना०)* १. भाग्य । २. शिलालेख । ३. किसी विषय पर लिख कर प्रकट किये गये विचार । ४. छोटा निबंध । ५. दस्तावेज । ६. विधाता द्वारा लिखा जाने वाला भाग्य । ७. देवता ।
लेखक—*(ना०)* १. ग्रंथ या लेख लिखने वाला । **लिखारो** । **लिखणियो** । २. लिपिक । **लहियो** ।
लेखण—*(ना०)* १. कलम । लेखनी । २. लिखने की क्रिया । ३ जानने का भाव ।
लेखण-झल—*(वि०)* १. लेखक । २. लिखने का अभ्यासी । ३. मुंहता नैणसी का एक विशेषण ।
लेखण-वढ—*(ना०)* १. कलम की नोक की टेढ़ी कटाई । कलम की नोंक की कटाई की भाँति तलवार का प्रहार । **जनोई-वढ** । **कलम-काप** ।
लेखणो—दे० लेखवणो ।
लेखवणो—*(क्रि०)* १. गिनती करना । २. हिसाब में लेना । ३. किसी के व्यक्तित्व को समझना । ४. आवश्यकता समझना । ५. मानना । दे० लखेवणो । ६. देखना ।
लेखा-पाड़—*(ना०)* वह बही जिसमें खास-खास, बड़े-बड़े और पुराने खातों की नकलें ली हुई रहती हैं । **लेखापाड़-वही** ।

लेखा-पाड़-वही—दे० लेखा पाड़ ।

लेखा-वही—दे० लेखा-पाड़ ।

लेखा-वही—दे० लेखा-पाड़ ।

लेखिका—*(ना०)* १. स्त्री-लेखक । लिखने वाली । २. ग्रंथ रचना करने वाली । रचयित्री । **लिखारी** ।

लेखित—*(वि०)* १. लिखा हुआ । लिखित । २. लिखवाया हुआ ।

लेखै—*(अव्य०)* १. बही में ऋण पक्ष । जमा पक्ष का उलटा । उधार पक्ष । २. वस्तु का मूल्य दिये बिना नाम पर लिखवाना । उधार । ३. उधार पर । ४. समझ में । विचार के अनुसार । ५. प्रीत्यर्थ । वास्ते । निमित ।

लेखेपासो—*(न०)* बही में ऋण पक्ष । जमा पक्ष का उलटा उधार पक्ष ।

लेखो—*(न०)* १. हिसाब । गणना । लेखा । २. आय-व्यय का विवरण । ३. लेनदेन का विवरण या हिसाब । ४. अनुमान । विचार । ५. उदाहरण । ६. समानता ।

लेट—*(वि०)* जो ठीक समय पर न आये या न करे । देर । विलंब । **मौड़ो** ।

लेटणो—*(क्रि०)* १. सोना । २. आड़ा होना । **आळोटणो** । ३. आराम करना ।

लेडो—*(न०)* १. बनिये की अपमानजनक संज्ञा । २. कायर राजपूत । *(वि०)* मूर्ख ।

लेणदार—*(न०)* ऋणदाता । **लेणायत** ।

लेणदारी—*(ना०)* १. लोगों में बकाया पैसा । २. उधार दी हुई रकम ।

लेणदेण—*(ना०)* १. वास्ता । संबंध । २. लेन-देन का संबंध । ३. ब्याज पर रुपया लेने देने का धंधा ।

लेणा-देणी—*(ना०)* १. वास्ता । संबंध । २. लेन देन का सम्बन्ध । ३. पूर्व जन्म का (मांगता हुआ) देने का अथवा लेने का हो, ऐसा संबंध । ऋणानुबंध । **लेणी-देणी** ।

लेणायत—दे० लेणदार ।

लेणायतियो—*(वि०)* १. ऋणदाता । २. दुखदाई ।

लेणारी—*(वि०)* १. लेने वाली । २. दुख देने वाली ३. ऋणदात्री ।

लेणारो—*(वि०)* १. लेनेवाला । २. ऋण-दाता ।

लेणियो—दे० लहणियो ।

लेणियो-देणियो—दे० लेणा-देणी ।

लेणी-देणी—दे० लेणा-देणी ।

लेणो—*(न०)* १. किसी में बकाया रहा हुआ धन । उगाही । उधार लेना । २. ऋणद का ऋणी में शेष रहा हुआ धन । लेनदारी । *(क्रि०)* १. लेना । ग्रहण करना । पकड़ना । २. खरीदना । मोल लेना । ३. भार ग्रहण करना । ४. धरना । ५. स्वीकार करना । ६. दाखिल करना । ७. मान्य रखना । ८. ले जाना । ९. अपने पूर्व लगने वाली संज्ञा को क्रिया रूप देना जैसे—ऊंघ लेणो, साम लेणो, दम लेणो, प्राण लेणो इत्यादि ।

लेणो-देणो—*(न०)* १. वास्ता । संबंध । २. लेना और देना । लेनदेन । *(क्रि०)* १. लेना और देना । २. परस्पर संबंध कायम करना ।

लेतां-देतां—*(अव्य०)* १. लेते-देते हुए । लेते हुए और देते हुए । २. लेते अथवा देते हुए ।

ले-नाठू—*(वि०)* १. लेकर भाग जाने वाला । **लेभग्गू** । २. उतावला ।

लेनै—*(अव्य०)* लेकरके । **लेयनै** ।

लेप—*(ना०)* १. ऐसी वस्तु जो लीपी, पोती या चुपड़ी जाय । २. लीपा, चुपड़ा या पोता हुआ स्तर । **परत** । ३. उबटन । ४. तह । ५. आसक्ति । **लगाव** ।

लेपक—*(वि०)* लेप करने वाला ।

लेपड़ी—*(ना०)* १. दीवाल आदि में पोती हुई मिट्टी, गार आदि की उखड़ी हुई परत या पपड़ी । २. किसी वस्तु के ऊपर का उखड़ा हुआ स्तर । ३. चिटकी हुई किसी वस्तु की परत । पपड़ी । ४. लेपन की हुई वस्तु की सूखी हुई परत ।

लेपड़ो—दे० लेपड़ी ।

लेपण—दे० लेप । लेप करने की क्रिया ।

लेपणो—*(क्रि०)* १. गाढ़े गीले पदार्थ की तह चढ़ाना । लेपन करना । २. चुपड़ना । ३. लीपना । **लीपणो** । **नीपणो** ।

लेपन—दे० लेप । लेप करने की क्रिया ।

ले-पालक—*(वि०)* १. किसी को अपने पास रखकर उस का पालन-पोषण करने वाला । २. गोद रखकर पालन करने वाला । ३. पालक ।

लेफो—दे० नेफो ।

ले-भग्गू—दे० ले नाठू ।

ले-भागू—दे० ले नाठू ।

ले-भागेड़—दे० ले नाठू ।

लेय—*(क्रि०वि०)* १. लेकर । २. लेके ।

लेयनै—*(क्रि०वि०)* ले करके । **लेर** ।

लेयरं—दे० लेयनै ।

लेर—*(अव्य०)* १. पीछे । **पछे** । २. बाद में । पीछे से । ३. ले करके ।

लेळ—*(ना०)* सर्प । साँप । **लेलिह** । **सरप** ।

लेलरी—*(ना०)* १. दीवाल, ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि में नमी या क्षार आदि के कारण उत्पन्न होने वाली क्षारी । २. क्षार आदि के कारण किसी वस्तु में होने वाला क्षरण ।

लेलिह—दे० लेलिहाण ।

लेलिहाण—*(ना०)* सर्प । साँप । लेलिह । **सरप** ।

लेली—*(ना०)* सर्प । *(ना०)* १. सर्पिणी । २. **परड़** । ३. एक मादा पक्षी । ४. दे० लेलरी ।

लेलीहाळो—*(वि०)* १. टुकड़ेल । २. कामचोर । ३. गंदा । मैला । *(ना०)* सर्प ।

लेळो—*(वि०)* १. वह जिसके मुँह से लार टपकती रहती हो । २. मूर्ख ।

लेलोट—*(ना०)* अन्धा-धुन्धी । *(वि०)* १. अंधाधुंध । २. अपार । खूब ।

लेवड़—*(ना०)* १. लेने की भावना । २. लेने का काम । ३. खरीदने की भावना । ४. खरीदने का काम । दे० लेवड़ो ।

लेवड़-देवड़—*(ना०)* १. लेना-देना । २. लेन-देन का संबंध । ३. उधार लेने-देने का काम या संबंध । ४. निपटारा । ५. लेन-देन । ६. लेने-देने का काम ।

लेवड़ो—दे० लेपड़ो ।

लेवण-देवण—*(अव्य)* लेने देने में । लेने-देने के संबंध में । *(ना०)* लेना-देना ।

लेवणियो—*(वि०)* १. लेने वाला । २ खरीदने वाला ।

लेवणो—दे० लेणो ।

लेवा-देवो—*(ना०)* १. लेने-देने, कामकाज या बात-चीत का संबंध । २. लेना-देना । ३. बात-चीत । विवाद । ४. मारामारी । **थापा-थुक्की** । *(अव्य०)* वास्ता । संबंध ।

लेवाळ—*(वि०)* १. आवश्यकता वाला। २. लेने वाला। लेऊ। ३. खरीदने-वाला। खरीददार। ४. कन्या का विक्रय करने वाला। कन्या-विक्रयी। ५. माँग कर लेने वाला। ६ मांगने वाला। ७. कर्ज लेने वाला। कर्ज ख्वाह। ८. कर्ज की उधरानी करने वाला।

लेवाळी—*(ना०)* १. आवश्यकता। २. खरीदी। ३. खरीदने की आवश्यकता। ४. लेने की जरूरत।

लेवाँला—*(भ०क्रि०ब०व०)* १. लेंगे। २. ले लेंगे। लेसाँ।

लेवी—*(ना०)* १. सरकार द्वारा संग्रह हेतु *कृषकों से की जाने वाली अनाज की* वसूली।

लेवूंला—*(भ०क्रि०)* १. लूंगा। २. ले लूंगा। लेऊंला। लेसूं।

लेवेला—*(भ०क्रि०)* १. लेगा। २. ले लेगा। लेसी।

लेवो—*दे०* लीहो। *दे०* लेवी सं. २.

लेश—*(वि०)* जरा। थोड़ा।

लेस—*(वि०)* लेश। थोड़ा। *(ना०)* किनार। फीता।

लेसन—*(न०)* १. पाठ्य पुस्तक का एक दिन में सिखाया जाय उतना भाग। २. पाठ्य पुस्तक की कोई एक बात या विषय। पाठ। ३. बोध। शिक्षा। सीख। सजा या दंड।

लेस-मात्र—*(वि०)* बहुत थोड़ा। लेशमात्र। *(अव्य०)* थोड़ा भी।

लेसां—*दे०* लेवाँला।

लेसी—*दे०* लेवेला।

लेसूं—*दे०* लेवूंला।

लेह—*(न०)* १. आनंद। अवलेह। २. चाट कर खाई जाने वाली चीज।

लेह्य—*(वि०)* चाटने योग्य।

लेंगटो—*(न०)* बाजरी का लपटा। पटोळियो। लेमटो।

लैं—*(न०)* १. अवसर। मौका। २. तन्मय। लीन। लय।

लैंकार—*(ना०)* १. लंबी ध्वनि। २. मधुर ध्वनि।

लैंको—*दे०* लहको।

लैंजो—*दे०* लहजो।

लैण—*(ना०)* १. लाइन। रेखा। लीटी। लींगटी। २. कतार। पंक्ति। ३. रेलवे लाइन। रेल की पटरी। ४. सिपाहियों के क्वार्टरों की पंक्ति। *दे०* लहाण सं. १

लैंणसर—*(अव्य०)* पंक्तिबद्ध। लाइन में।

लैणो—*दे०* लाहणो।

लैर—*दे०* लहर। *दे०* लारं।

लैरको—*दे०* लहरको।

लैलीन—*दे०* लवलीन।

लैस—*(वि०)* १. शस्त्रों से सज्जित। २. सब प्रकार से तैयार। *(न०)* भाला।

लैंगो—*दे०* लहँगो।

लैंप—*(न०)* दीपक। चिराग। फानुस।

लो—*(अव्य०)* १. लोक गीतों में लोय शब्द का संक्षिप्त रूप।

लो—*दे०* लोय। *(न०)* लाभ। १. एक पाद पूरणार्थक अव्यय। २. 'लेणो' क्रिया का आज्ञार्थक रूप।

लोअ—*(न०)* लोग।

लोअण—*(न०)* लोचन। नेत्र।

लोई—*(ना०)* १. जाटनियों का ऊनी ओढ़ना। २. कंबल। कामळ। ३. गूंधे हुए आटे का छोटा गोला जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं। लोयो।

लोक—*(न०)* १, जगत । २. सर्व-साधारण लोग । जनता । प्रजा । ३. परिगणित जाति । ४. इहलोक या परलोक । ५. वर्ग या जाति । ६. गँवार व्यक्ति । ७. परिजन । ८. किसान । करसो । ९. तीन की संख्या । *(वि०)* १. असभ्य । मूर्ख । २. गँवार । ३. सर्व साधारण जनता से संबंधित ।

लोक-कथा—*(ना०)* १. जन-साधारण में प्रचलित । वार्ता । २. दंत-कथा ।

लोक-कल्याण—*(न०)* लोगों का भला । जन हित ।

लोक-कविता—दे० लोक-काव्य ।

लोक-काव्य—*(न०)* लोक प्रचलित काव्य । लोक-कविता ।

लोक-गाथा—दे० लोक-कथा ।

लोक-गीत—*(न०)*जनसाधारण में प्रचलित गीत (Folk Song) ।

लोक-चख—*(न०)* सूर्य । दिनकर ।

लोक-चर्चा—*(ना०)* १. जन साधारण में प्रचलित बात । अफवाह ।

लोक-चाल—*(ना०)* ग्राम रिवाज । लोक रीति ।

लोक-चाळो—*(न०)* लोक रिवाज ।

लोक-जीवन—*(न०)* १. सर्व साधारण का जीवन । २. लोक का जीवन-व्यवहार । ३. लोक-व्यवहार ।

लोक-डर—*(न०)* लोक-मर्यादा का भय ।

लोक-ढंग—*(न०)* सर्व-साधारण लोगों के रीति-रिवाज ।

लोक-ढाळो—दे० लोक-ढंग ।

लोकत्रय—*(न०)* स्वर्ग, मृत्यु और पाताल—ये तीनों लोक ।

लोक-धणी—*(न०)* १ राजा । २. परमेश्वर ।

लोक-धर्म—*(न०)* सर्व साधारण में प्रचलित धर्म ।

लोक-धारो—दे० लोकी-चाल ।

लोक-धुन—*(ना०)* १. लोक-गीत । २. लोक-रागिनी । ३. लोक-ध्वनि । ४. अफवाह । जनश्रुति ।

लोक-नाटक—*(न०)* खुले रंग-मंच के ख्याल ।

लोक-नाथ—*(न०)* १. परमेश्वर । २ राजा ।

लोक-नायक—*(न०)* १. सूर्य । २. लोकों का नायक । अगुआ ।

लोक-निंदा—*(ना०)* अपकीर्ति । बदनामी ।

लोक-नृत्य—*(न०)* सामान्य जनता में प्रचलित नृत्य और उसका प्रकार ।

लोक-नित—दे० लोक-नृत्य ।

लोकप—*(न०)* १. ब्रह्मा । २. राजा ।

लोक-पति—दे० लोकप ।

लोक-पाल—*(न०)* १. राजा । २ दिक्-पाल । ३. परमेश्वर ।

लोक-प्रवाद—*(न०)* जन-साधारण में प्रचलित बात । २. अफवाह ।

लोक-प्रसिद्ध—*(वि०)* जग-जाहिर । संसार प्रसिद्ध । संसारख्यातो

लोक-बळ—*(न०)* जन-शक्ति ।

लोक-पक्ष—दे० लोक पख ।

लोक-पख—*(न०)* १. लोक पक्ष । २. बहुमत । २. लोगों का दल ।

लोक-बाग—*(न०)* १. जन समूह । २. सर्व साधारण प्रजा ।

लोक-भाषा—*(ना०)* सर्व साधारण की बोली । ग्राम जनता की बोली ।

लोक-मत—*(न०)* किसी विषय पर जन-साधारण की राय। जनमत।

लोक-मरजादा—दे० लोक-मर्यादा।

लोक-मर्यादा—*(ना०)* १. लोक-लाज। लोकप्रचलित रूढ़ि।

लोक-माता—*(ना०)* १. जगज्जननी। २. समस्त जगत का पोषण करने वाली माता। ३. लक्ष्मी।

लोक-मानस—*(न०)* लोगों का अभिप्राय २. लोक-रुचि।

लोक-मान्य—*(वि०)* १. लोकों में मान-प्राप्त। २. लोकों द्वारा स्वीकृत। *(न०)* महान प्रसिद्ध विद्वान नेता स्व० बालगंगा धर तिलक का विरुद।

लोक-राज—*(न०)* जनता का राज्य। जनतंत्र। चुनाव-प्रणाली के अनुसार चुने गये मनुष्यों के द्वारा चलाई जाने वाली राज्य-व्यवस्था।

लोक-रिवाज—दे० लोक-रीति।

लोक-रीति—*(ना०)* लोकों में प्रचलित सामान्य रीति-रिवाज।

लोक-रुख—*(ना०)* १. लोगों का विचार मनोभाव या धारणा। २. लोगों की मंशा।

लोक-रुचि—*(ना०)* लोगों की रूचि। लोगों की पसन्द।

लोकल—*(वि०)* १. स्थानीय। प्रादेशिक। २. पेसेंजर गाड़ी।

लोक-लज्जा—*(ना०)* लोकों में बुरा कहे जाने का भय। लोकलाज।

लोक-लज्या—दे० लोक लज्जा।

लोक-लाई—*(न०)* १. गँवार। २. ग्रामीण। ३. अबुद्ध।

लोक-लाज—दे० लोक लज्जा।

लोक-लीक—*(ना०)* लोक मर्यादा। लोक-रीत।

लोक-लुगाई—*(न०)* १. पति-पत्नी। २. स्त्री-पुरुष।

लोक-वाणी—*(ना०)* १. लोक भाषा। लोकों की वाणी। ३. लोकों में प्रचलित बात या विचार। अफवाह।

लोक-वाद—दे० लोक प्रवाद।

लोक-वाद्य—*(न०)* लोकों में प्रचलित वाद्य-यन्त्र। रावणहत्थो चिकारो आदि।

लोग-वायका—*(ना०)* अफवाह। उड़ती खबर। लोकों में प्रचलित बात।

लोक-वारता—दे० लोक वार्ता।

लोक-वार्ता—*(ना०)* १. लोकों में प्रचलित बात। २. दंत-कथा। ३. कहानी।

लोक-व्यवहार—*(न०)* १. लोकरीति। सर्वसाधारण में प्रचलित रीति। २. लोकों का सामान्य व्यवहार। ३. लोकाचार।

लोकशाही—*(ना०)* जनतंत्र। लोकराज।

लोक-श्रद्धा—*(ना०)* लोकों की श्रद्धा।

लोकस—*(न०)* एक वृक्ष।

लोक-सभा—*(ना०)* संसद पार्लियामेंट।

लोक-समझ—*(न०)* १. गंवारपना। २. लोगों की सभा। मोटी-बुद्धि।

लोक-संगीत—*(न०)* संगीत शास्त्र के नियमों से अनियंत्रित सर्व साधारण प्रजा का संगीत। अशास्त्रीय संगीत।

लोक-संग्रह—*(न०)* लोक-कल्याण। लोक-हित।

लोक-साई—*(वि०)* १. उड़ती (बात या खबर) लोगों में फैली हुई बात। २ गँवारु। ३. अविश्वस्त।

लोक-साहित्य—*(न०)* जन साधारण का परम्परागत साहित्य। लोकों में प्रचलित कथा वार्ता अथवा कविता रूपी साहित्य। जनवांङ्मय।

लोक-हक—*(न०)* जन साधारण का परंपरागत अधिकार।

लोक-हाय—*(ना०)* लोगों की बददुआ। कुआशिष। बुरासीस।

लोकहित—*दे०* लोक-संग्रह।

लोकाचर—*(न०)* १. मृतक के पीछे किया किया जाने वाला क्रिया-कर्म मृतक-कर्म। २. मृतक को श्मशान पर जलाने जाना। ३. मृतक के घर वालों के यहाँ समवेदना के निमित्त जाना। ४. लोक-व्यवहार। ५. सामान्य लोगों का आचार-व्यवहार।

लोका-चारियो—*(न०)* मृतक की श्मशान यात्रा में सामिल होने वाला।

लोकाट—*(न०)* एक वृक्ष और उसका बेर के बराबर मीठा फल।

लोकात—*दे०* लोकायत।

लोकानुरंजन—*(न०)* लोगों का मनोरंजन।

लोकापवाद—*(न०)* लोकनिंदा।

लोकायत—*(न०)* परलोक को न मानने वाला। *दे०* लोकीक।

लोकान्तर—*(न०)* परलोक।

लोकी—*(वि०)* लोक-संबंधी। गँवारू।

लोकीक—*(न०)* सर्व साधारण। लोक। सर्व साधारण। समाज। जन समाज।

लोकेश—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. परमात्मा।

लोकेषणा—*(ना०)* संसार में यश की कामना।

लोकोक्ति—*(ना०)* १. कहावत। २. एक अलंकार।

लोकोत्तर—*(वि०)* १. अलौकिक २. असाधारण।

लोकोपकार—*(न०)* लोकों का हित। सार्वजनिक कल्याण।

लोखंड—*(न०)* लोहा धातु। लोहा।

लोग—*(न०)* आसपास के समस्त आदमी। जन-समूह। *दे०* लोक।

लोग-बाग—*(न०)* १. जन साधारण। जनता। २. भीड़।

लोच—*(न०)* १. कमनीयता। सुन्दरता। २. कोमलता पूर्ण सौंदर्य। ३. कोमलता। ४. लचीलापन। लचलचाहट। ५. यथा नियम गठन। ६. जैन साधुओं के सिर के बाल अपने हाथ से उखाड़ने की क्रिया। लुंचन। ७. आँसू। ८. अभिलाषा। ९. विनयशीलता। १०. चिपचिपाट।

लोचण—*(न०)* आँख। लोचन।

लोचणी—*(ना०)* आँख। लोचन। *(वि०)* मोहित करने वाली।

लोचणो—*(क्रि०)* १. अभिलाषा करना। कामना करना। रुचि उत्पन्न करना। ३. प्रकाशित करना। ४. विनीत भाव उत्पन्न करना। ५. कोमलता प्रगट करना। ६. जैन साधुओं का अपने सिर के बाल अपने हाथ से उखाड़ना। ७. शोभा देना। ८. लसदार बनाना। ९. विचार करना।

लोचदार—*(वि०)* लोच वाला।

लोचन—*(न०)* आँख। लोचण। चख।

लोचप-लोच—*(न०)* १. झूंठा प्रेम। कृत्रिम स्नेह। २. खुशामद। *(वि०)* १. क्लान्त। थका हुआ। २. जर्जरित। ३. अशक्त।

लोचा-लोचो *(न०)* १. खाने की शीघ्रता। २. भय या उतावली के कारण जैसे-तैसे झटपट, थोड़ा-बहुत डूचा मार कर खाने की क्रिया। ३. खाने का विफल प्रयत्न। ४. जैसा-तैसा किया गया काम।

लोचो—*(न०)* १. झमेला। गोटाला। २. तकरार। गड़बड़। ३. लोंदा।

लोट—*(न०)* १. कागज का सिक्का। पेपर मनी। करेंसी नोट। नोट। २. आटा। चून। पिसान। ३. लुढ़कना। ४. लौटने की क्रिया या भाव।

लोटड़ी—*(ना०)* कंधे में लटकाया जा सके ऐसा ग्वालों का मिट्टी का एक जल-पात्र। **बुगती। कुलड़ी।**

लोटण—*(न०)* एक जाति का कबूतर। *(वि०)* लेटने वाला।

लोटण-करवा—*(न०)* १. राजस्थानी लोकगीत। २. ऊँट।

लोटणो—*(क्रि०)* १. लोटना। लेटना। **आळोटणो**। २. किसी वस्तु, आधार या भूमि पर चित्त या पट होते हुये इधर-उधर होना। ३. कष्ट से करवटें बदलना। ४. वापस आना। लौटना।

लोट-पोट—*(वि०)* १. बेसुध। २. विश्राम। ३. कुलाँच। ४. अत्यानंद।

लोटियो—*(न०)* १. शौचपात्र। **बाड़ियो**। २. छोटा लोटा।

लोटी—*(ना०)* (जैस०) १. छोटा मंदिर। देवली। २. लोक देवता की छतरी। ३. छतरी। स्मारक। दे० लोठी।

लोटो—*(न०)* धातु निर्मित एक जल पात्र। **लोठो**।

लोटचो—दे० लोटो।

लोठी—*(ना०)* पानी का छोटा लोटा। लुटिया।

लोठी ढाळवा जाणो—*(मुहा०)* शौच जाना। टट्टी जाना।

लोठो—*(न०)* एक जल पात्र। पानी की बड़ी लुटिया। लोटा।

लोड—*(न०)* वजन। भार। दे० लोढ।

लोडणो—*(क्रि०)* १. विलोड़ित करना। २. हिलाना। ३. ऊंचा-नीचा करना। ४. रगड़ना। ५. सिला पर पीसना। ६. घिसना। ७. लूटना। ८. मारना। ९. नाश करना।

लोडाऊ—*(वि०)* १. हिलाने वाला। २. कँपाने वाला। ३. लड़ने वाला। ४. वीर। ५. खर्च करने वाला। **उड़ाऊ**। ६. आवश्यकता वाला। ७. नाश करने वाला। *(न०)* मुसलमान। यवन।

लोडीजणो—*(क्रि०)* १. हिलना। डोलना। २. पीसा जाना।

लोडो—*(न०)* १. हलका धक्का। २. पानी का भारी धक्का। ३. बैठे हुए नींद लेना। ४. ऊंट पर बैठे हुए को नींद आना। ५. नींद का झोंका।

लोढ—*(न०)* १. पानी का धक्का। २. अधिक वेग से धक्का मारने वाली लहर। ३ मन का वेग। ४. रुदन। ५. भीड़ का धक्का।

लोढणो—*(क्रि०)* १. चरखे के द्वारा रूई को पींजना। २. चरखे से कपास अलग करना। चरखे से कपास पीलना। ३. लोढे से पीसना। सिल पर पीसना।

लोढी—*(ना०)* १. सिल पर पीसने का पत्थर। लोढ़ा। लोढिया। बट्टा। ३. हाथी दाँत का माप से काटा हुआ उतना टुकड़ा जिससे स्त्रियों के दोनों हाथों की चूड़ियों का सैट चीरा जाय।

लोढो—*(नo)* १- सिल-बट्टे का लोढिया। बट्टा। २. पीसने का छोटा पत्थर। छोटा बट्टा। ३. अधिक वेग वाली लहर। धक्का मारने वाली लहर। पानी का धक्का। ४. मन का वेग। ५. पत्थर। ६. नशे का झोंका।

लोतर—*(नाo)* १. विवेक और शुचिताई से काम करने का ढंग। २. सुचारू रूप से काम करने की सूझ। ३. विवेक। ४. ज्ञान। ५. शुभ गुण।

लोथ—*(नाo)* १. लाश। मुर्दा। शव। २. गूँधे हुए आटे की बड़ी पिंडी। ३. मांस का बड़ा टुकड़ा। मांस पिंडी।

लोथड़ी—दे० लोथ।

लोथो—*(नo)* मिट्टी की पिंडी जो दीवाल को लीपने के लिये बनाई जाती है।

लोद—दे० लोदर।

लोदर—*(नo)* १. लोध्र वृक्ष। २. एक औषधि। लोध्र वृक्ष की छाल।

लोदरवो—*(नo)* जैसलमेर के पास का खंडहर रूप प्राचीन नगर।

लोदी—*(नo)* पठानों की एक जाति।

लोद्र—*(नo)* १. यवन। मुसलमान। २. रौद्र का वैणसगाई-निर्वाह रूप। जैसे—लोद्रां चौ लूआँध, भागी सहु कोई भणै। सोभड़ा स्रग सात में, बाबा तोरण बांध। ३. लोध नाम का वृक्ष। लोध्र।

लोधा—*(नo)* एक कृषक जाति।

लोप—*(विo)* लुप्त। गायब। *(नo)* १. नाश। गायब। २. उल्लंघन। ३. विच्छेद। ४. अभाव। कमी।

लोपक—*(विo)* १. लोप करने वाला। २. लोप होने वाला। ३. शब्द में लोप होने वाला कोई अक्षर।

लोपण—*(विo)* १. लोपने वाला। *(नo)* लोपने की क्रिया।

लोपणो—*(क्रि०)* १. उल्लंघन करना। न मानना। २. नष्ट करना। ३. गायब करना। छिपाना।

लोपाणो—*(क्रि०)* १. उल्लंघन कराना। २. नष्ट कराना। ३. छिपाना।

लोफर—*(विo)* १. बदमाश। २. आवारा।

लोबान—*(नo)* एक वृक्ष का सुगंधीदार गोंद जो धूप खेने और औषधि में काम आता है।

लोबो—दे० लोभो।

लोभ—*(नo)* १. लालच। तृष्णा। २. कंजूसी। कृपणता। ३ चाह। लालसा।

लोभण—*(विo)* लोभिनी। लोभी (स्त्री)। *(नाo)* लोभी स्त्री।

लोभणो—*(क्रि०)* १. लोभ करना। २. कंजूसी करना। ३. मोहित करना।

लोभाऊ—*(विo)* १. लोभी। स्वार्थी। २. इच्छुक। ३. दूसरे की वस्तु को हड़प करने का इच्छुक। ४. मोहित होने वाला। लुभा जाने वाला। ५. कामी। ६. आक्रामक। ७. शत्रु।

लोभाळ—*(विo)* लोभी। दे० लोभाऊ।

लोभावणो—*(क्रि०)* १. लुभाना। मोहित होना। ललचाना। २. मोहित करना। ३. लोभ में पड़ना। *(विo)* लुभाने वाला। लुभावे जैसा।

लोभाँध—*(विo)* लोभ से अंधा बना हुआ। अति लोभी।

लोभियो *(विo)* लोभी। लालची। लोभ वाला। लोभाळ।

लोभी—*(विo)* १. लालची। लोभ वाला। लोभियो। २. लुब्ध। ३. कंजूस।

लोभीड़ो—दे० लोभी ।

लोभो—*(वि०)* १. लटका हुआ । २. नीचे की ओर लुढका हुआ । ३. आसक्त । *(न०)* १. ऐसी वस्तु जिसके लिये या जिसको देख कर लोभ उत्पन्न हो जाय । २. धन । माल । ३. स्वाद । ४. मजा ।

लोम—*(न०)* १. बाल । केश । २. रोम । रोंआ ।

लोमकीट—*(न०)* जूं । केश कीट ।

लोमड़ी—*(ना०)* एक प्रसिद्ध जंगली पशु । **लूंकी** ।

लोम-विलोम—*(वि०)* १. उलटा सुलटा । २. अनिश्चित । *(न०)* एक शब्दालंकार ।

लोय—*(ना०)* १. दीपशिखा । लौ । २. आग की लपट । अग्नि शिखा । ३. पत्नी । स्त्री । ४. लोग । ५. पणिहारी, लूहर, आदि राजस्थान के लोकगीतों का एक संबोधन । ६. लोकगीतों का एक संपुट ।

लोयण—*(न०)* नेत्र । आंख । **लोचण** ।

लोया-चटणो—*(मुहा०)* १. निकम्मा बैठे रहना । समय बरबाद करना ।

लोयो—*(न०)* गुंधे हुये आटे की लोई । रोटी बनाने के आटे की लोई ।

लोर—*(न०)* १ बादल । २. पश्चिम दिशा से पूर्व की ओर तेज गति से जाने वाले बादल । पश्चिम के बादल । **ऊंबां** । ३. उमड़ी हुई घटा के आगे तेज गति से चलने वाले बादल । कोळामण । **जोगणी** । ४. झूले या पलने का पेंग । हिलोर । **हीलो** । ५. पुकारने की लंबी आवाज । ६. पपीहे की आवाज ।

लोरड़ी—*(ना०)* गाय की बछिया ।

लोरस—*(न*

लोराँ—

ळकार—*(न०)* 'व' अक्षर ।

ळकारणो—*(क्रि०)* १. ललकारना । २. युद्ध के लिये आह्वान करना । ३. उत्साहित करना । ४. चिताना, चेतावनी देना । ५. सावधान करना । ६. हेसूचित करना ।७. उत्तेजित करना । ८. हे सक्रोध प्रेरित करना । ९. बुलाना ।

खंल । *(वि०)* जिसके अन्त में 'व' रित एक संपुट । ५. कान क. आभूषण । **झूमरो** । *(वि०)* १. सुन्दर । २. उत्सुक । ३. चंचल । ४. प्रिय ।

लोळ—*(ना०)* १. कान के नीचे का लटकने वाला भाग । **लोलकी** । ललरी । २. अग्नि ज्वाला । **झाळ** । ३. समूह । ४. झुकाव । ५. टेढ़ापन । ६. दीपशिखा ।

लोलक—*(न०)* १. कान का एक गहना । २। नथ, बाली आदि गहनों का लटकन । ३. घड़ी या घंट का लटकन ।

लोलणी—*(ना०)* १. पतली कमर वाली स्त्री । **सीहलंकी** । २. लटके से चलने वाली स्त्री । **नखराळी** । लटके वाली । **लटकाळी** । ३. चंचल प्रवृत्ति की स्त्री । लोलिनी ।

लोळणो—*(क्रि०)* १. कीचड़ से लथपथ करना । २. झुकाना ।

लोलणो—*(वि०)* १. लंबा । २. कुढंगा । लम्बो-कुढंगो ।

लोढो—*(न०)* १. सिल-बट्टे का बट्टा। २. पीसने का छोटा छोटा बट्टा। ३. अधिक वेग वा लहर। धक्का मारने वाली लहर। पानी का धक्का। ४. मन का वेग। ५. पत्थर। ६. नशे का झोंका।

लोतर—*(ना०)* १. विवेक और शुचिताई से काम करने का ढंग। २. सुचारू रूप से काम करने की सूझ। ३. विवेक। ४. ज्ञान। ५. शुभ गुण।

लोथ—*(ना०)* १. लाश। मुर्दा। शव। २. गूंधे हुए आटे की बड़ी पिंडी। ३. मांस का बड़ा टुकड़ा। मांस पिंडी।

लोथड़ी—दे० लोथ।

लोथो—*(न०)* मिट्टी की पिड़ी ओढ़ी रखने को लीपने वाली करणी का नाम। करणी देवी। **थाबळियाळ**।

लोवड़ी—*(ना०)* १. ओढ़ने का एक ऊनी वस्त्र। **लोई**। २. काली ऊन की इकहरी कंबल। ३. जाटनियों का ऊनी ओढ़ना।

लोह—*(न०)* १. लोहा। २. तलवार। ३. छेनी। ४. टाँकी। ५. कटारी। **कटार**। ६. शस्त्र। ७. लगाम।

लोह-अभिसार—*(न०)* युद्ध। लड़ाई। जंग।

लोहकार—*(न०)* लुहार।

लोह-जड़णो—*(मुहा०)* ताला लगाना।

लोहणी—दे० लुहाणी।

लोहणेस—*(न०)* खड्गधारी वीर।

लोहणो—दे० लुहाणो।

लोहतम—*(न०)* स्वर्ण। सोना।

लोहतोड़ो—*(न०)* ऊंट।

लोह-मरोड़—*(वि०)* अत्यन्त शक्तिशाली। बहुत बलवाला।

लोह-लंगर—*(न०)* १. हाथी को बांधने की लोहे की मोटी साँकल। २. समुद्र में डाल कर जहाज को खड़ा रखने की लोहे की मोटी साँकल और लंगर। *(वि०)* लोह और लंगर की भाँति मजबूत। अत्यन्त दृढ़। खूब मजबूत।

लोह-लाठ—*(वि०)* दृढ़। मजबूत। *(न०)* १. लोह पुरुष। २. सिंह। ३. लोह स्तम्भ। लोहे की लाठ।

लोहसार—*(न०)* १. लोहभस्म। २. फौलाद। ३. तलवार। खड्ग।

लोहाणी—दे० लुहाणी।

लोहाणो—दे० लुहाणो।

लोहार—दे० लुहार।

लोहारण—दे० लुहारण।

लोहाळ—*(न०)* शस्त्र प्रहार। दे० लोहियाळ।

लोहाळी—*(ना०)* १. तलवार। २. कटारी। ३. हथकड़ी-बेड़ी। *(वि०)* लोहे वाली।

लोहित—*(वि०)* १. रक्त से तरबतर। २. लाल रंग का। *(न०)* १. मंगलग्रह। २. खून। **लोही**।

लोहियाळ दे० लोह्याळ।

लोहियो—*(न०)* १. लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला। लोहे का व्यापारी। **लोहियो**। २. वैश्य जाति की एक शाखा।

लोहो—*(न०)* १. रक्त। खून। २ कुळ। वंश। *(वि०)* एक गोत्र वाला। गोत्रज।

लोही-भीण—*(वि०)* खून से तरबतर।

लोही-वाळो—*(वि०)* १. शुद्ध वंश वाला। २. शुद्ध रक्त का। ३. स्वाभिमानी। ४. क्रोधी। ५. वीर। बहादुर। ६. खून वाला। ७. दृढ़ प्रतिज्ञ।

लोह्याळ—*(वि०)* १. चोट या घावों आदि के कारण खून से लथपथ। २. लोही वाला।

लोह्यो—दे० लोहियो।

लोंठाई—लांठाई।

लोंटी—दे० लाँठी।

लोंठो—दे० लाँठो।

लौ—*(ना०)* १. लगन। धुन। २. आशा। ३. चाह। ४. दीपशिखा। ५. आग की लपट।

लौकिक—*(वि०)* १. व्यावहारिक। *(न०)* १. सांसारिक। ऐहिक। २. समाज। ३. परंपरा।

लौटणो—*(क्रि०)* १. कहीं से वापस आना। वापिस आना। २. पीछे की ओर घूमना। मुड़णो। ३. उलटना।

ल्याकत—*(ना०)* लियाकत। योग्यता। लायकात। लायकी।

ल्याणो—दे० लाणो।

ल्याळी—*(न०)* १. शृगाल। सियार। सियाळ। २. शृगाली। सियाळी। ३. भेड़िया।

ल्यावणो—दे० लावणो।

ल्हाण—दे० लहाण।

ल्हावो—दे० लाहो।

ल्हास—*(ना०)* १. सहकारी भावना से सामूहिक रूप से बिना पारिश्रमिक लिये परस्पर किया जाने वाला खेती संबंधी काम। २. ल्हास का काम करने वालों के लिये बनाया जाने वाला भोजन। ३. बहुत जनों का एक साथ बिना पारिश्रमिक

वकार—*(न०)* 'व' अक्षर।

वकारणो—*(क्रि०)* १. ललकारना। २. युद्ध के लिये आह्वान करना। ३. उत्साहित करना। ४. चिताना, चेता-वणी देना। ५. सावधान करना। ६. लहे सूचित करना। ७. उत्तेजित करना। ८. लहे सक्रोध प्रेरित करना। ९. बुलाना।

वकारांत—*(वि०)* जिसके अन्त में 'व' अक्षर हो।

वहैण—दे० लहण, सं० १.

वहोड़की—*(वि०)* छोटी।

वहोड़ती—*(वि०)* छोटी। वहोड़की। *(ना०)* दूसरी पत्नी। वहोड़ी।

वहोड़तो—*(वि०)* छोटा।

वहोड़-वडाई—*(ना०)* छोटे बड़े की आयु का अंतर व मान-मर्यादा।

वहोड़ियो—*(वि०)* १. छोटा। २. दूसरा।

वहोड़ी—*(वि०)* छोटी। लहुरी। *(ना०)* दूसरी पत्नी।

वहोड़ी-वडी—*(ना०)* आवश्यकता के समय (पत्नियां)। पीछे विवाही हुई दोनो (पत्नियां) को।

वहोड़ो—*(वि०)* १. छोटा। २. दूसरा। बड़े से दूसरे नंबर का छोटा।

लोढो—*(न०)* १- सिल-बट्टे के बट्टा। २. पीसने का छोटा छोटा बट्टा। ३. अधिक वेग वा लहर। धक्का मारने वाली लहर। पानी का धक्का। ४. मन का वेग। ५. पत्थर। ६. नशे का झोंका।

लोतर—*(ना०)* १. विवेक और शुचिताई से काम करने का ढंग। २. सुचारू रूप से काम करने की सूझ। ३. विवेक ४. ज्ञान। ५. शुभ गुण।

लोथ—*(ना०)* १. लाश। मुर्दा। शव। २ गूँधे हुए आटे की बड़ी पिंडी। का बड़ा टुकड़ा। मांस पिंडी।

लोथड़ी—दे० लोथ।

लोथो—*(न०)* मिट्टी की पिंडी आढ़ी को लीपने [illegible]। करणी ?

व

व—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण-माला का उनतीसवाँ व्यंजन, जिसका उच्चारण दाँत व ओठ की सहायता से किया जाता है।

व—*(अव्य०)* और।

वइराट—दे० विराट।

वई—(अव्य०) सम्प्रदान कारक की विभक्ति। लिये। वास्ते। निमित्त।

वकठी—*(ना०)* जिसके सेवन से स्थिति वक्र हो जाय वह भंग। भाँग। (संकेत शब्द)

वकर—*(न०)* १. रोब। धाक। २. वक्रता। ३. निर्दयता। ४. बलि। बलि-दान। ५. क्रोध। *(वि०)* टेढ़ा। वक्र। **आंटीलो**।

वकरणो—*(क्रि०)* १. क्रोध करना। गुस्से होना। २. विकराल होना। ३. कहना। बोलना। ४. प्रगट होना। ५. आपे से बाहर होना। ६. बिगड़ना। ७. टेढा बोलना। ८. अंट-संट बोलना। ९. क्रोध में किसी रहस्य को खोल देना। १०. आवेश में नहीं कहने की बात को कह देना। ११. भूत-प्रेत का (किसी में आवेश द्वारा) अपना परिचय देना।

वकळ—*(वि०)* १. व्यर्थ की बकवाद करने वाला। प्रलापी। २. विकल।

वकस—*(ना०)* छाती। वक्ष।

वकार—*(न०)* 'व' अक्षर।

वकारणो—*(क्रि०)* १. ललकारना। २. युद्ध के लिये आह्वान करना। ३. उत्साहित करना। ४. चिताना, चेता-वनी देना। ५. सावधान करना। ६. सूचित करना। ७. उत्तेजित करना। ८. सक्रोध प्रेरित करना। ९. बुलाना।

वकारांत—*(वि०)* जिसके अन्त में 'व' अक्षर हो।

वकालत—*(ना०)* वकील का काम। **वकीलात**।

वकील—*(न०)* १. धाराशास्त्री। सनदी कायदा शास्त्री। २. प्रतिनिधि।

वक्तव्य—*(न०)* भाषण। कथन।

वक्ता—*(वि०)* १. भाषण करने वाला। वक्ता। २. कथा करने वाला।

वक्तोवक्त—*(अव्य०)* १. ऐन वक्त पर। ठीक समय पर। २. अचानक। अकस्मात। ३. आवश्यकता के समय। **वगतो-वगत**।

वक्र—*(वि०)* टेढ़ा। बाँका। **वांको**।

वक्रता—*(ना०)* बाँकापन। टेढ़ाई। **वांक**। **वळांक**। वळ।

वक्र-तुंड—*(न०)* गणेश। गजानन।

वक्र-दृष्टि—*(ना०)* १. क्रोध अथवा द्वेष की नजर। २. टेढ़ी नजर।

वक्रोक्ति—*(ना०)* १. एक काव्यालंकार. जिसमें काकु अथवा श्लेष से वाक्य का भिन्न अर्थ करने में आता है । २. कटाक्ष वचन ।

वक्ष—*(न०)* छाती ।

वक्षस्थल—१. छाती । २. स्त्री-स्तन ।

वखण—*(न०)* १. बखान । तारीफ । २. निंदा ।

वखत—*(ना०)* १. वक्त । समय । २. मौका । अवसर । ३. भाग्य । ४. फेरा । चक्कर । बार । ५. फुरसत । **नवरास** ।

वखत-बे-वखत—*(अव्य०)* १. जब जी चाहे । २. जब कभी । ३. समय-असमय । ४. समय-कुसमय ।

वखतसर—*(अव्य०)* १. समय पर । २. योग्य समय ।

वखतावर—*(वि०)* १. धनवान । २. भाग्यशाली ।

वखताँ-बिलंद—*(वि०)* भाग्यशाली ।

वखतो-वखत—दे० वक्तोवक्त ।

वखाण—*(न०)* १. व्याख्यान । २. उपदेश । ३. प्रशंसा । तारीफ । बखान । ४. कीर्ति । यश । ५. वर्णन ।

वखाणणो—*(क्रि०)* १. प्रशंसा करना । तारीफ करना । २. वर्णन करना । ३. यशगान करना । ४. व्याख्यान देना । ५. विस्तार से कहना । ६ गालियाँ देना ।

वखाणन—*(न०)* १. उपदेश । २. प्रशंसा करने की क्रिया या भाव ।*(वि०)* प्रशंसा करने योग्य ।

वखाणियोड़ो—*(भू०कृ०)* १. बखान किया हुआ । प्रशंसित । २. व्याख्यान दिया हुआ । ३. वर्णित ।

वखार—*(न०)* भंडार । कोठार । **भखार** ।

वग—*(ना०)* १. पहिचान । जान-पहिचान । **ओळखाण** । २. पक्ष । दल । ३. अवसर । मौका । संयोग । ४. सुविधा । अनुकूलता । ५. ढंग । ६. सिफारिश । **लागवग** । ६. उपाय । मार्ग । ८. झुंड । वर्ग । **वग्ग** ।

वगड़—*(न०)* १. जंगल । वन । **बगड़** । २. गली का चौक या मार्ग । ३. बड़ा बाड़ा । **बगड़** । ४. खुली जगह । मैदान ।

वगडो—*(न०)* जंगल । वन । **रोही** ।

वगणो—*(क्रि०)* १. लूटना । २. भागना । ३. गिरती हुई वस्तु को हाथ में ग्रहण करना । पकड़ना । **झेलणो** ।

वगत—दे० वखत ।

वगत-बे-वगत—दे० वखत-बे-वखत ।

वगतर—दे० बगतर ।

वगतसर—दे० वखतसर ।

वगतावर—दे० बखतावर ।

वगतो-वगत—दे० वखतो-वखत ।

वग-देणो—*(मुहा०)* १. मौका देना । २. सुविधा देना ।

वग-पड़णो—*(मुहा०)* मौका हाथ लगना । **मौका लगना** ।

वग-वसीलो—*(न०)* १. बड़े आदमी की जान पहिचान । २. किसी बड़े आदमी की सहायता । ३. सिफारिश । ४. जान-पहिचान ।

वग-वाळो—*(वि०)* १. सिफारिश वाला । २. पक्ष वाला । ३. किसी बड़े से संबंध रखने वाला ।

वगाड़—दे० वगाड़ो ।

वगाड़ो—*(न०)* १. बिगाड़ । नाश । २. बरबादी । ३. हानि ।

वगीचो—दे० बगीचो ।

वगे—*(अव्य०)* लिये । वास्ते । *(वि०)* गायब । अलोप ।

वगेकरणो—*(मुहा०)* १. ठिकाने लगाना । २. गायब करना । छिपा देना ।

वगेची—दे० बगेची ।

वगैरे—*(अव्य०)* १. वगैरा । इत्यादि । २. और ३. दूसरे ।

वगोरणो—दे० वगोवणो ।

वगोवणा—*(न०ब०व०)* १. निंदा । २. फजीती । ३. वाद-विवाद । ४. लड़ाई । **कजिया** ।

वगोवणो—*(क्रि०)* १. निन्दा करना । बुराई करना । **भांडणो** । २. बदनाम करना । ३. नाश करना ।

वग्ग—दे० वर्ग सं० १, २, ६, ७ ।

वघ—*(न०)* बाघ । शेर ।

वघ-वाव—*(ना०)* व्याघ्र गंध । बाघ के शरीर की गंध । बाघ स्पर्शी वायु ।

वघार—दे० बघार ।

वघारणी—*(ना०)* १. हींग । २. बघारने का काम ।

वघारणो—*(क्रि०)* बघारना । छोंकना ।

वच—*(नं०)* १. वचन । २. बीच । मध्य । ३. एक औषधि । *(अव्य०)* बीच में ।

वच-गाळै—*(अव्य०)* १. बीच में । २, अध-बीच में । ३, मध्य काल में ।

वच-गाळो—*(न०)* १. बीच का समय । २. बीच का भाग । ३. बीच । मध्य ।

वचन—*(न०)* १. मुख से निकलने वाले सार्थक शब्द । २. उक्ति । कथन । ३. वचन । बोल । ४. प्रतिज्ञा । कौल । ५. व्याकरण में वह विज्ञान जिसके द्वारा शब्द के रूप में एक या अनेक का बोध होता है । शब्द का संख्या-दर्शक भाव । एक वचन । द्विवचन । बहुवचन ।

वचन-तीर—दे० वचन-बाण ।

वचन देणो—*(मुहा०)* प्रतिज्ञा करना । कौल करना ।

वचन-बाण—*(न०)* कटु वचन । वचन रूपी तीर ।

वचन-भंग—*(न०)* कह करके फिर जाना । प्रतिज्ञा-भंग ।

वचन-वीर—*(वि०)* अपनी बात पर अड़ा रहने वाला । जबान का पक्का ।

वचन-सिद्ध—*(वि०)* १. वह जिसका वचन सिद्ध हो जाय । जो कहे सो हो जाय वह (पुरुष) । ऐसा सिद्ध जिसकी वाणी सफल हो जाय । २. सत्यभाषी ।

वचनहारणो—*(मुहा०)* १. कह कर पलट जाना । २. धोखा देना ।

वचनात्—दे० वचनायतं ।

वचनायतं—*(अव्य०)* प्राचीन समय में राजा-महाराजाओं की ओर से लिखाये जाने वाले पत्र या परवानों इत्यादि का एक पारिभाषिक शब्द, जिसका अर्थ वचनानुसार, या आज्ञानुसार होता है ।

वचनामृत—*(न०)* १. अमृत के समान वचन । २. उपदेशामृत ।

वचनिका—*(ना०)* १. राजस्थानी भाषा का एक काव्य प्रकार जिसमें गद्य-पद्य दोनों का समावेश होता है । २. राजस्थान का गद्य-पद्यमय काव्य-ग्रन्थ । ३. राजस्थानी का अनुप्रास युक्त गद्य-काव्य । ४. अवतरणिका । ५. छोटा इतिहास प्रसंग ।

वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी-री—*(न०)* जगा खिड़िया कृत रतलाम के राजा राठौड़ रतनसिंह का औरंगजेब के साथ युद्ध वर्णन का गद्य-पद्य मय डिंगल ग्रंथ ।

वचाड़णो—*(क्रि०)* १. पढ़वाना । २. पढ़ना । पाठ करना । ३. बचाना । उबारना ।

वचावणो—दे० वचाड़णो ।

वचीजणो—*(क्रि०)* पढ़ा जाना ।

वचेट—*(वि०)* १. बिचला । बीच का । २. तीन में से बीच का । ३. वह जो पहले और तीसरे के बीच में जन्मा हुआ हो ।

वचेटियो—दे० वचेट ।

वच्छ—*(ना०)* १. छाती । वक्ष । २. बच्चा । ३. बछड़ा ।

वच्छळ—दे० वत्सल ।

वछ—*(न०)* १. बछड़ा । २. बच्चा । वत्स ।

वछनाग—*(न०)* एक विषैला कंद । वत्सनाभ ।

वछ-बारस—*(ना०)* भादों शुक्ला १२ को मनाया जाने वाला स्त्रियों का एक उत्सव तथा व्रत, जिस दिन गोवत्स की पूजा की जाती है और दान आदि दिये जाते हैं । वत्सद्वादशी ।

वछळ—दे० वत्सळ ।

वछूटणो—*(क्रि०)* १. गर्भपात होना । २. २. अलग होना । ३. प्रसव होना ।

वछेरी—*(ना०)* १. छोटी घोड़ी । बछेरी । जवान घोड़ी । २. घोड़ी का बच्चा ।

वछेरो—*(न०)* १. छोटा घोड़ा । २. घोड़े का बछड़ा । घोड़ी का बछड़ा । बछेरा ।

वछोड़णो—*(क्रि०)* १. नाश करना । २. मार डालना । ३. त्यागना । छोड़ना । ४. अलग होना । ५. अलग करना । ६. छोड़ देना ।

वज—*(ना०)* एक वनस्पति ।

वजणो—*(क्रि०)* १. लड़ना । युद्ध करना । २. बाजे का बजना । बजना ।

वजन—*(न०)* १. तौल । जोख । २. बाट । बटखरा । ३. भार । बोझ । ४. परिमाण । ५. प्रभाव । ६. प्रमाण । ७. आबरू । प्रतिष्ठा ।

वजनदार—*(वि०)* १. भारी । बोझिल । २. प्रामाणिक । ३. प्रभाव डालने वाला । ४. आबरूदार । प्रतिष्ठित ।

वजर—*(न०)* १. इंद्र का शस्त्र । वज्र । २. बिजली । ३. लोहा । ४. हीरा । ५. तम्बाकू । *(वि०)* १. मूर्ख । २. कठिन । ३. विकट । घोर ।

वजर-किंवाड़—*(न०)* १. बहुत मजबूत किंवाड़ । बजरकिंमाड़ । २. लोहे का किंवाड़ ।

वजरटीक—*(न०)* स्त्रियों का एक गहना । बजरटी ।

वजर-ठोठ—*(वि०)* १. महामूर्ख । २. वह जिसको खूब महिनत करने पर भी पढ़ना लिखना न आवे । बजरठोठ ।

वजर-तुंड—*(न०)* गरुड़ । वज्रतुंड ।

वजर-धर—*(न०)* इंद्र । वज्रधर ।

वजर-धुनि—*(ना०)* १. बादलों की घोर गर्जना । २. बिजली गिरने का शब्द । बिजली की कड़कड़ाहट ।

वजराग—*(न०)* १. वज्राग्नि । २. बिजली । ३. बादल की भयंकर गर्जना । ४. घोर आपत्ति ।

वजरेसरी—दे० वज्रेश्वरी ।

वजवजणो—*(क्रि०)* १. ठसकना । ठसक दिखाना । इतराना । २, गर्व करना । ३. किसी की मान-मर्यादा या लाज-शरम नहीं रखना । ४. समाज या वातारण के अनुकूल नहीं चलना । ५. किसी को नहीं मानना ।

वजह—*(ना०)* कारण । सबब ।

वजंतरी—दे० बजंत्री ।

वजाड़णो—*(क्रि०)* बजाना । **बजाणो** । **बजावणो** ।

वजावणो—*(क्रि०)* वाद्य आदि का बजाना । बजाना । **बजाणो** ।

वजीर—*(ना०)* १. राज्य का मुख्य अधिकारी । प्रधान । दीवान । २. शतरंज का एक मोहरा । ३. वजीर जाति । ४. वजीर जाति का मनुष्य । **मोलो** ।

वजारत—*(ना०)* वजीर का काम । **वजीरी** । **दीवाणगी** ।

वजीरणा—दे० वजीरणी ।

वजीरणी—*(ना०)* वजीर की स्त्री ।

वज़ीरी—दे० वजारत ।

वजू—*(ना०)* नमाज पढ़ने के पहिले मुँह, हाथ, पाँव धोने की क्रिया ।

वजूद—*(ना०)* वास्तविकता।

वजे—दे० वजह ।

वजेदार—*(वि०)* १. भारी नखरे वाला । २. पक्का । खरा ।

वज्र—*(ना०)* १. बिजली । २. हीरा । ३. इंद्र का अस्त्र । ४, लोहा । *(वि०)* १. दृढ़ । मजबूत । २. कठोर ।

वज्रपात—*(ना०)* १. बिजली का गिरना । २. आफत । संकट ।

वज्राग—*(ना०)* १. वज्राग्नि । २. घोर विपत्ति । बड़ी आफत ।

वज्रांग—दे० वज्रांगी ।

वज्रांगी—*(ना०)* हनुमान । वज्रांग । **बजरंग** । **बजरंगबली** । **बजरंगी** ।

वज्रेश्वरी—*(ना०)* १. देवी । २. एक बौद्ध देवी ।

वज्रोली—*(ना०)* हठ योग की एक मुद्रा ।

वट—*(ना०)* १. ऐंठन । मरोड़ । २. रस्सी का बल । ३. गर्व । अभिमान । ४. क्रोध । ५. टेक । प्रण । ६. आबरू । प्रतिष्ठा । ७. रोब । धाक । ८. प्रताप । तेज । ९. मार्ग । ११. वटवृक्ष । वड़ ।

वट काढणो—*(मुहा०)* १. मारपीट करके बदला लेना । २. रस्सी आदि की ऐंठन खोलना । ३. गर्व चूर्ण करना ।

वटकियो—*(ना०)* कटोरो । **वाटको** ।

वटकी—दे० वाटकी ।

वटको—दे० वाटको ।

वट खोलणो—दे० वट काढणो सं० २ ।

वट भरीजणो—*(मुहा०)* १. गर्व करना । २. गुस्सा करना । ३. बल पड़ना ।

वटणो—*(क्रि०)* १. माल की बिक्री होना और उसकी कीमत मिलना । २. रोटी-पापड़ आदि का बेला जाना । ३. बटना । बल देना । ४. सधना । पटना । बनना । ५. रोब जमना । ६. अधिकार चलना । ७. माना जाना । ८. पिसना । ९. पीसा जाना ।

वटदार—*(वि०)* १. घमंडी । अभिमानी । २. रोबवाला । **रोबीलो** ।

वट-पूनम—*(ना०)* १. ज्येष्ठ-पूर्णिमा । **जेठी-पूनम** । २. इस दिन की जाने वाली वट-पूजा । ३. वट पूजा का दिन ।

वटमार—*(ना०)* १. लुटेरा । २. लूटमार ।

वटमारी—*(ना०)* लूट । लूट-खसोट । **बटमारी** ।

वटळ—*(वि०)* भ्रष्ट । दे० विटल ।

वटळणो—*(क्रि०)* १. अपने से हलकी जाति या विधर्मी के यहाँ भोजन-पानी करने या हाथ का खाने से भ्रष्ट हो जाना ।

२. हलकी जाति या दूसरे धर्म में मिल जाना। ३ शास्त्र वर्जित का सेवन करना। अभक्ष भोजन करना। दे० विटळणो।

वटळावणो—*(क्रि०)* १. खान-पान आदि से किसी को भ्रष्ट करना। २. धर्म भ्रष्ट करना। ३. बलात् दूसरी जाति या धर्म में ले आना या लेजाना।

वटळियोड़ो—*(वि०)* भ्रष्ट। दे० विटळियोड़ो।

वटळीजणो—दे० वटळणो।

वटलोई—*(ना०)* बटलोई। देगची।

वटवाळ—*(न०)* १. मारवाड़ राज्य के समय का कस्टम खाते का कर्मचारी। बटवाल। २. लुटेरा।

वटवो—*(वि०)* १. मूर्ख। २. अविवेकी। दे० वटुओ।

वट-सावित्री-व्रत—*(न०)* जेठ पूर्णिमा को वट वृक्ष और सावित्री के पूजन का सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला एक पर्व। एक व्रत।

वटाऊ—दे० वाटेरू।

वटाळ—*(वि०)* १. धर्म भ्रष्ट। २. वर्ण-संकर। ३. कलंकित।

वटाळणो—*(क्रि०)* १. भ्रष्ट करना। २. बट्टा लगाना। कलंक लगाना। ३. धर्म भ्रष्ट करना। दूसरे धर्म में मिलाना। दे० विटाळणो।

वटाळो—*(वि०)* १. बट्टे वाला। खोट वाला। २. वर्णसंकर। ३. भ्रष्ट। ४. कलंकित।

वटाव—*(न०)* १. वह छूट या कमी जो किसी वस्तु के क्रय-विक्रय या लेन-देन (परिवर्तन) में की जाती है। बट्टा। बटाव। २. बेचे हुए माल पर ग्राहक को दी जाने वाली छूट। कमीशन। दस्तूरी। आढ़त। ३. आमदनी। ४. नफा। लाभ।

वटाव-खातो—*(न०)* १. उपज और खर्च का खाता। उपज और खर्च। २. बेचान खाता। ३. नफा खाता। ४. नफो। लाभ।

वटावणो—*(क्रि०)* १. बड़े सिक्के को छोटे सिक्के में बदलना। २. रुपये, नोट आदि का रेजगारी में बदलवाना। ३. हुंडी, चैक आदि को रोकड़ रुपयों में बदलना। बटाना। ३. गुंथवाना। बटवाना। बटाना।

वटुओ—*(न०)* १. रुपये-पैसे रखने की कई खानों वाली एक जेबी थैली। २. एक लोकगीत। ३. पोवाई का काम करने वाला। पटवा। *(वि०)* १. बेसमझ। मूर्ख। २. अविवेकी।

वट्ट—*(न०)* १. मार्ग। राह। वाट। २. कटोरा। वाटको।

वट्टड़ी—*(ना०)* १. मार्ग। पगडंडी। वाट। २. रीति। रिवाज। परंपरा।

वट्टो—*(वि०)* १. कलंक। २. मिलावट। बट्टा। ३. मिलावट की वस्तु। ४ मिलावट की हुई हलकी किस्म की वस्तु। बट्टा। ५. किसी वस्तु की परस्पर अदला-बदली करने-कराने में (वस्तु के गुणावगुण की दृष्टि से) मिलने वाली कम कीमत। परिवर्तन में भोगा जाने वाला नुकसान।

वठी—*(क्रि० वि०)* वहाँ। उधर। उस ओर। उठै। ओठै।

वठीने—*(क्रि०वि०)* उधर। वहाँ। उठीने।

वठीलो—*(वि०)* वहाँ का। उस ओर का। उठीरो। ओठेरो। उठीनलो।

वठै—*(क्रि०वि)* वहाँ । उधर । **उस जगह । ओठै । उमै ।**

वड—*(वि०)* १. बड़ा । २. महत् । ३. विस्तृत । विशाल । ४. वयोवृद्ध । ५. ५. उत्तम ।

वड़—*(न०)* वटवृक्ष । बड़ ।

वड-आंच—*(वि०)* १. आजानबाहु । २. दानी ।

वड़कली—*(ना०)* मूंज या भाखरखड़ की रस्सी । **मूंज । मूंजोड़ी ।**

वड-कँवार—*(ना०)* ज्येष्ठ पुत्री । बड़ी कुंवरी । **बड़ी लड़की ।**

वड-काग—*(न०)* बड़ा कौआ । **डोड-कागलो । हाडो ।**

वड-काज—*(न०)* १. देश, जाति और धर्म के लिये किया जाने वाला बलिदान । २. बड़ा कार्य । ३. वीर मृत्यु । ४. युद्ध । ५. परोपकार । ६. पुण्य काम ।

वड-काम—दे० वड काज ।

वड-कुमार—*(न०)* १. बड़ा लड़का । २. बड़ी लड़की ।

वड़को—*(न०)* वडेरा । पूर्वज । **बड़को ।**

वड़कोळो—*(न०)* बड़ का फल ।

वड़कोळियो—दे० बड़कोळो ।

वड-खेत—*(न०)* १. श्रेष्ठ कुल । उच्च-वंश । २. अच्छी नस्ल । ३. युद्ध-भूमि ।

वड-गमण—*(न०)* १. मृत्यु । २. वीर मृत्यु ।

वड-गाढ—*(न०)* महा पराक्रम । *(वि०)* महापराक्रमी ।

वड-गात—*(वि०)* १. बड़े कुटुम्ब वाला । २. बड़े शरीर वाला । मोटा । ३. वीर । ४. प्रतिष्ठा वाला । *(न०)* मोटा शरीर ।

वड-गाळ—*(ना०)* १. निंदा । अपकीर्ति । २. कलंक । ३. पर्वत श्रेणियों के बीच का बड़ा मार्ग । ४. युद्ध में पीछे पाँव रखने का कलंक । ५. प्रतिज्ञा करके फिर जाने की बदनामी ।

वड-गिर—*(न०)* १. हिमालय पर्वत । २. आबू पर्वत । अर्बुद गिरि ।

वड-गूजर—*(न०)* एक जाति ।

वड-गूंदो—*(न०)* एक वृक्ष और उसका फल । बड़ा लिसोड़ा ।

वड-गोतण—*(वि०)* १. बड़े कुल की । उच्च वंश की । २. बड़े कुटुंब वाली । ३. स्वमानी । *(ना०)* १. उच्च कुल की समधिन । २. समधिन । (संबोधन या लोकगीतों में) ।

वड-गोती—*(वि०)* १. उच्च कुलोत्पन्न । बड़े कुल का । २. बड़े कुटुंब वाला । ३. प्रतिष्ठित । *(न०)* समधी ।

वड-गोद—*(ना०)* १. मृत्यु । २. ईश्वर की शरण । श्रीहरि शरण ।

वड-चाक—*(न०)* १. विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र । २. बड़ा चक्र ।

वड-चावो—*(वि०)* १. सुप्रसिद्ध । सुविख्यात । *(न०)* बड़ा पुत्र । **मोभी ।**

वड-छळ—*(न०)* बड़ा युद्ध । महायुद्ध ।

वड-छात—*(न०)* बड़ा राजा । महाराजा ।

वड-जमाई—*(न०)* बड़ा दामाद ।

वड-जाग—*(न०)* १. महा यज्ञ । २. युद्ध । **राड़ ।**

वड-जाम—*(न०)* बड़ा पुत्र । **मोभी बेटो ।**

वड-जोध—*(न०)* १. बड़ा योद्धा । २. बड़ा पुत्र ।

वड-डाच—*(न०)* काल । महाकाल ।

वड-ढोल—*(न०)* १. युद्ध का ढोल । २. बड़ा ढोल । **मावळ ।**

वड़णी—*(ना०)* १. मजदूरन । **मजूरणी** । २ दैनिक मजदूरी वाली । **दैनगियाणी** । वड़ी करने वाली स्त्री । ३. वड़िया की स्त्री ।

वड़णो—*(क्रि०)* १. घुसना । पैठना । वड़ना । **घुसणो** । २. अन्दर जाना ।

वड-थोक—*(न०)* १. बड़ी सेना । २. बड़ा समूह । ३. बड़ी बात ।

वड-दाता—*(न०)* बड़ा दानी ।

वड-दातार—*दे०* वड दाता ।

वड-दानी—*(न०)* १. महादानी । २. बलिराजा । ३. प्रातः स्मरणीय कर्ण ।

वडदावणो—*दे०* बड़दावणो ।

वड-दूत—*(न०)* यमदूत ।

वड-धाम—*(न०)* १. बड़ा तीर्थ । २. स्वर्ग ।

वड-नदी—*(ना०)* गंगा नदी ।

वड-नस—*(न०)* ऊंट ।

वड-नाग—*(न०)* शेषनाग ।

वड-नाम—*(न०)* प्रसिद्धि । कीर्त्ति । ख्याति ।

वड-नामी—*(वि०)* बड़ी कीर्ति वाला । विख्यात ।

वड-नाळ—*(ना०)* तोप ।

वड-नीर—*(न०)* समुद्र । सागर ।

वड-नेवर—*(न०)* १. **बेड़ी** । २. हथकड़ी-बेड़ी ।

वडपण—*(न०)* बड़प्पन । **वडापणो** । २. उदारता । ३. गंभीरता । ४. गौरव । ५. श्रेष्ठता ।

वडपण-चीलो—*(न०)* १. पुरखों द्वारा निर्देशित मार्ग । **वडेरां-रो-मार्ग** । बड़ेरों की परंपरा । बड़ों की रीति-भांति । २. श्रेष्ठ परम्परा ।

वड-पंख—*(न०)* गरुड़ ।

वड़-पात—*(न०)* १. बड़ा कवि । २. षठ पत्र ।

वड़-पान—*(न०)* वट पत्र ।

वडपुर—*(न०)* १. दिल्ली । २. बड़ा शहर ।

वड-फण—*(न०)* शेष नाग ।

वडफर—*(ना०)* ढाल । **खेटक** । **आडण** ।

वड-फळ—*(न०)* १. मतीरा । २. कुम्हड़ा । ३. सुफल ।

वड-फाग—*(न०)* युद्ध ।

वड-बेड़ो—*दे०* वरहेड़ो ।

वड-बेहड़ो—*दे०* वरहेड़ो ।

वड-बोर—*(न०)* एक जाति का बड़ा बेर ।

वड-बोरड़ी—*(ना०)* बड़े बेर वाला बेरी वृक्ष ।

वड-बोल—*(न०)* १. आत्मश्लाघा । २. डींग । शेखी । ३. श्रेष्ठ वाणी । ४. ताना । व्यंग्य । मेणो ।

वड-बोलो—*(वि०)* १. डींग हांकने वाला । २. आत्मश्लाघी । ३. बकवादी ।

वड-भाख—*(ना०)* संस्कृत भाषा । देव-वाणी ।

वड-भाग—*(न०)* बड़ा भाग्य । सौभाग्य । बड़ा भाग ।

वड-भागण—*(वि०)* १. बड़े भाग्यवाली । नसीब वाली । २. सौभाग्यशालिनी । ३. पति, सम्पत्ति और आज्ञाकारी पुत्रों वाली ।

वड-भागी—*(वि०)* भाग्यशाली । प्रारब्ध-वान । बड़े भाग्य वाला ।

वड-भात—*(न०)* बारात को दिया जाने वाला विशेष भोज ।

वडम—*(वि०)* १. बड़ा । **वडो** । २. श्रेष्ठ । **चोखो** ।

वड-मन—दे० वडमनो ।

वड-मनो—*(वि०)* १. उदार । २. दानी । ३. गंभीर ।

वडम-बोल—दे० वड-बोल ।

वड-मुख—*(न०)* १. राजा । २. सूर्य । *(वि०)* १. दंभी । २. शेखी मारने वाला । ३. बड़े मुँह वाला ।

वड-मेधा—*(न०)* ब्रह्मा । *(वि०)* मेधावी ।

वड-मोल—*(वि०)* बहु-मूल्य ।

वड-याग—दे० वड जाग ।

वड-राग—*(ना०)* सिंधु राग ।

वड-राड़—*(ना०)* बड़ा युद्ध ।

वड-रिख—*(न०)* महर्षि ।

वड-रीत—*(ना०)* श्रेष्ठ परम्परा ।

वड-लीक—दे० वड रीत ।

वड़लो—*(न०)* बड़ । वटवृक्ष । बड़ ।

वड-लोह—*(न०)* १. बड़ा प्रहार । २. शस्त्र । ३. तलवार ।

वड-वहू—*(ना०)* बड़े पुत्र की पत्नी । बड़ी बहू ।

वडवा—*(ना०)* १. घोड़ी । अश्वी । २. वंशावली लिखने वाला । भाट । वाड़व ।

वडवाग—दे० वडवानळ ।

वडवाग्नि—दे० वडवानळ ।

वड-वाट—*(ना०)* १. वीर-गति । मोक्ष । २. बड़ा मार्ग । ३. उदारता ।

वड-वात—*(न०)* १. यश । कीर्त्ति । २. गुण । ३. महत्व ।

वडवानळ—*(ना०)* समुद्र की अग्नि । वडवाग्नि ।

वड-वार—दे० बडवार ।

वडवाळ—*(ना०)* बड़ की शाखा । बड़ की जटा ।

वड-वीर—*(वि०)* १. शूरवीर । बड़ा बहादुर । २. बड़ा भाई ।

वड-संख—*(न०)* १. श्रीकृष्ण का पांचजन्य शंख । २. ढपोर शंख । डफोळ संख ।

वड़साळो—*(न०)* १. समाधान का प्रयत्न । २. समाधान की बातचीत । विस्टाळो ('विष्टि' से उत्पन्न 'विस्टाळो' का व्यतिक्रम । विस्टाळो > वस्टाळो > वसटाळो > वटसाळो > वडसाळो) । यथा—'श्रंगद वड़साळो' नामक सांया भूला रचित एक काव्य-ग्रंथ ।

वड-सासु—*(ना०)* १. ससुर की माता । २. सास की जिठानी ।

वड-सुसरो—*(न०)* १. ससुर का पिता । २. ससुर का बड़ा भाई ।

वडहड़ो—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल का । ऊंचे कुल वाला । दे० बरहेड़ो ।

वड-हथ—*(वि०)* १. आजानुबाहु । २. शूरवीर । ३. बलवान । ४. दृढ़ । मजबूत ।

वडाई—*(ना०)* १. बड़प्पन । बड़ाई । २. प्रशंसा । ३. कीर्ति । ४. शेखी । डींग । ५. अभिमान । घमंड । गरब ।

वडाउडि—दे० वडा-वडी ।

वडाऊ—दे० वडेरो ।

वडापणो—*(न०)* १. बड़प्पन । २. श्रेष्ठता ।

वडार—*(न०)* कन्या पक्ष की ओर से बारातियों को दिया जाने वाला एक विशेष भोज । बृहदाहार । बडो भात । बड़हार । बढ़ार ।

वडारण—*(ना०)* १. सम्मानित दासी । २. रानी की दासी । ३. खवास । दासी । ४. गोली । खवासण ।

वडाळ—*(वि०)* १. बड़ा। **वडो। बड़ो।** २. श्रेष्ठ। उत्तम। **वडाळी।**

वडाळ-भुजाळ—*(न०)* १. बड़ी भुजाओं वाला। २. अनेक भुजाओं वाला। ३. सर्वशक्तिमान। ईश्वर। *(वि०)* आजानबाहु। **वडहथ।**

वडा-लूघड़िया—*(न०ब०व०)* मंगेतर के लिये दूसरी बार ले जाये जाने वाले वस्त्राभूषण।

वडाळो—*(वि०)* १. प्रसिद्ध। प्रख्यात। २. बड़ा (पद, आयु आदि में)। ३. बुजुर्ग। **वडील। वडेरो।** ४. बड़ा। ५. श्रेष्ठ। **वडाळ।**

वडा-वडी—*(अव्य०)* बड़े से बड़ा। बड़े से बड़ा और उससे भी बड़ा, इस प्रकार एक-दूसरे से बड़ा होने का क्रम। बड़ा-बड़ी।

वडिया—*(ना०)* १. घर की सबसे बड़ी वडेरी। बाप की माँ। दादी। २. ताई।

वडियाजी—दे० वडिया।

वडियो—*(न०)* १. मजदूर। **मजूर।** २. दैनंगियो। दैनिक पारिश्रमिक पर काम करने वाला व्यक्ति।

वडी—*(ना०)* १. पुरुष की प्रथम विवाहिता पत्नी। २. दूसरी पत्नी के पहले विवाही हुई पत्नी। ३. बड़ी बहू। *(वि०)* बड़ी। **मोटी।**

वड़ी—*(ना०)* १. रस्सी। २. मूंज की रस्सी। ३. रस्सी का बंधन। ४. मजदूरी। ५. भुंगोरी। **बड़ी।** ६. शरीर का जोड़। संधि। साँध।

वडी-इलायची—*(ना०)* बड़ी इलायची।

वडी-जान—*(ना०)* १. बारात को दिया जाने वाला एक बड़ा भोज। २. बड़ी बारात। ३. दो बारातों में से बड़ी लड़की को विवाहने वाले वर की बारात।

वडी-जेळ—*(ना०)* १. सख्त सजा। २. बड़ा जेलखाना।

वडी-ठौड़—*(ना०)* १. देव मंदिर। २. राजा या बादशाह का दरबार।

वडी-तीज—दे०*(ना०)* १. भाद्रपद कृष्ण पक्ष की तृतीया। २. इस दिन सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रत-उपवास। (इस व्रत में चंद्रोदय के बाद सत्तू का अल्पाहार करने का महात्म्य कहा जाता है।)

वड़ी-पापड़—*(न०)* मुंगोरी और पापड़।

वड़ी-मजूरी—*(ना०)* मजदूर का काम। मजदूरी। **मजूरी।**

वडील—*(वि०)* १. पूज्य। २. बडेरा। गुरुजन। **बडेरो।**

वड़ी-वड़ी—*(अव्य०)* १. अंग-प्रत्यंग। जोड़ प्रति जोड़ (अंग की)।

वड़े—*(अव्य०)* १. के द्वारा। से। २. लिये। वास्ते। **भणी। भणा।**

वडेर—*(न०)* १. आईजी द्वारा प्रवर्तित आईपंथ का मूल स्थान बिलाड़ा (मारवाड़) में बने इस पंथ के महलात। २. बिलाड़े की आईजी का स्थान। ३. वह घर जिसमें बडेरा रहता था या रहता हो। ४. (बँटवारे आया हुआ) वह घर जिसमें कुटुंब का बड़ा रहता हो। **बड़ेर।**

वडेरी—*(ना०)* १. वंश की सबसे बड़ी स्त्री। २. वंश की कोई पूर्व स्त्री। ३. बड़ी-बुढ़िया।

वडेरो—*(न०)* १. वंश का सबसे बड़ा पुरुष। गुरुजन। **वडील। बडेरो।** २.

वंश का कोई पूर्व पुरुष। पूर्वज। ३. वयोवृद्ध। *(वि०)* प्रधान।

वडो—*(वि०)* १. बड़ा। २. बुजुर्ग। वृद्ध। **बूढो।**

वड़ो—*(न०)* पकोड़ा। बड़ा। *(वि०)* 'परत' या 'परतवाला' अर्थ में संख्या वाचक शब्दों के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय। जैसे—एकवड़ो दोवड़ो (बेवड़ो), तेवड़ो इत्यादि।

वडो-करणो—*(मुहा०)* १. सधवा स्त्रियों का कोहनी के ऊपर के चूड़े (चूड़ियों का सैट) को हाथ में से निकालना। ('चूड़े को उतारना या निकालना' कहना अशुभ समझा जाता है।) २. **राजकरणो।** सन्मान देना। ३. दीपक बुझाना। ४. किवाड़ बंद करना।

वडो-दिन—दे० बड़ो दिन।

वडो-धाम—दे० वड-धाम।

वडो-प्रब—दे० मोटो प्रब।

वडो-भात—दे० वड-भात।

वड़ोलियो—*(न०)* वट वृक्ष का फल।

वडो-साथ—*(न०)* १. किसी समाज में मत-भेदों के कारण बने दो पक्षों में से बड़ा पक्ष। २. बड़ा समाज। ३. बड़ा समूह।

वडो-हुकम—दे० बड़ो हुकम।

वढ—*(न०)* १. शस्त्र की धार। २. लड़ाई। युद्ध। ३. चोट। प्रहार। ४. रीस। क्रोध। ५. शत्रुता। दुश्मनी। ६. समझाने या मना करने पर और अधिक हठ पकड़ना। ७. करौत से चीरने का निशान। **बेढो।** ८. करौत से काटा हुआ टुकड़ा *(लकड़ी आदि का)*। ९. अभिमान। गर्व। १०. हठ। जिद।

वढ-चढणो—*(मुहा०)* १. मना करने या समझाने पर और अधिक उग्र बनना। २. अधिक रोस में भरना। ३. खूब क्रोध करना। ४. अभिमान करना। ५. हठ पकड़ना। जिद करना।

वढणो—*(क्रि०)* १. लड़ना। झगड़ना। तकरार करना। २. मारा-मारी करना। ३. उपालंभ देना। **ओळमो देणो।** ४. धमकाना। ५. कटना। चिरना। **कटणो।**

वढार—दे० वडार।

वढियार—*(न०)* साचोर (मारवाड़) की सीमा के निकट आया हुआ उत्तर गुजरात (बनासकांठा) के भूतपूर्व राधनपुर राज्य का प्रदेश।

वढो—*(न०)* लकड़ी आदि पर करौत या या किसी औजार से बना हुआ। लम्बा निशान। निशान।

वढोकणी—दे० लड़ाकण।

वढीकणो—*(वि०)* झगड़ालू। लड़ाकू। **कजियाखोर।**

वण—*(न०)* १. कपास। २. कपास का पौधा। **वणोकड़ो।** ३. वन। ४. चेचक के फोड़े का निशान। ५. चेचक का कीड़ा। *(अव्य०)* एक उपसर्ग जो अभाव या विपरीत अर्थ को सूचित करता है। रहित, बिना, बगैर। *(सर्व०)* उसने। *(वि०)* उस।

वणकर—*(वि०)* कपड़ा बुनने का धंधा करने वाला। **मेघवाळ।**

वणज—दे० विणज।

वणजारण—दे० वणजारी।

वणजारी—*(ना०)* बनजारे की स्त्री।

वणजारो—*(न०)* १. बैलों की पीठ पर माल लाद कर देश—परदेश ले जाने

वाला व्यापारी। २. बनजारा जाति का मनुष्य। बनजारा।

वणणो—*(क्रि०)* १. बुनना। २. बनना। **बणणो।**

वणत—*(न०)* पारस्परिक संबंध। दे० वणतर।

वणतर—*(ना०)* बुनावट। **वणावट।**

वण-धायें—*(अव्य०)* उस ओर। **उठीनैं। बींनैं।**

वणराइ—*(ना०)* १. वनराजि। वनश्रेणी। २. अनेक भाँति के घने वृक्षों वाला वन। घने वृक्षों वाला जंगल प्रदेश।

वणराय—दे० वणराइ।

वणरी—*(सर्व०वि०)* उसकी। **उणरी। बींरी।**

वणरो—*(सर्व०वि०)* उसका। **उणरो।**

वण-लोभी—*(वि०)* लोभरहित। **निर्लोभी।**

वणसणो—*(क्रि०)* १. विनाश होना। नष्ट होना। २. विनाश करना।

वणसाणो—*(क्रि०)* १. विनाश करना। नष्ट करना। २. विनाश होना।

वणसियोड़ो—*(भू०कृ०)* विनष्ट। नष्ट।

वणाई—*(ना०)* १. बुनाई। २. बुनने का काम या मजदूरी। बणतर। ३. बनावट।

वणाक—दे० बणाक।

वणाक-पूजा—दे० बणाक पूजा।

वणाट—दे० वणावट।

वणाधिप—दे० बनाधिप।

वणाव—*(न०)* १. भेष। बनाव। २. बनावट। ३. शृंगार।

वणावट—*(ना०)* १. बुनने का काम। २. बुनने का ढंग। ३. बुनावट। ४. बनाने का ढंग।

वणास—*(न०)* विनाश। नाश।

वणांरी—*(सर्व०वि०)* उनकी। **उणांरी। वांरी।**

वणांरो—*(सर्व०वि०)* उनका। **उणांरो। वांरो।**

वणिआवणो—*(मुहा०)* १. समझ में आना। २. काम आना। ३. हो जाना। बन जाना। ४. बन सकना। ५. बन आना। हो सकना।

वणिक—*(न०)* १. बनिया। **बाणियो।** २. व्यापारी। **वैपारी।**

वणिक-पुत्र—*(न०)* १. बनिये का लड़का। २. बनिया। **बाणियो।**

वणियाणी—दे० विणियाणी।

वणियाणी-जायो—दे० विणियाणी जायो।

वणींगो—*(वि०)* गप्पी। **बात वणींगो।** *(सर्व०)* उसका।

वणोकड़ी—*(ना०)* कपास का पौधा। **कपाह। वणोखड़ी। बण।**

वणोखड़ी—दे० वणोकड़ी।

वत—*(ना०)* १. बात। २. वस्तु। *(न०)* गाय, भैंस आदि पशु धन। वित्त। *(अव्य०)* १. तरह। भाँति। २. 'उत' या 'ओत' का एक रूप। पुत्र। जैसे—आसावत(आसा का पुत्र)। ३. वंशज।

वतकर—*(न०)* १. धनमाल। २. खास बात।

वतकाव—*(ना०)* १. बात। वृत्तान्त। २. प्रसंग। ३. वर्णन। ४. बातचीत।

वतन—*(न०)* १. मूल गाँव या देश। २. रहने की जगह। निवास स्थान।

वतनी—*(वि०)* निवासी। **रहवासी।**

वतरणो—*(न०)* १. लेखनी। **कलम।** २. स्लेट पर लिखने की खड़िया लेखनी।

सलेट-पैंण । ३. रज-पट्ट (पाटे) पर लिखने की एक लकड़ी की कलम । पाठशाला में जीखा की पाटी पर लिखने की फरास (झाऊ) आदि वृक्षों की टहनी की लेखनी । वर्तनी । **बरतनो** । **बत्तो** ।

वतरो—*(वि०)* उतना । **उतरो** । **उत्तो** । *(न०)* १. सामर्थ्य । शक्ति । २. औकात । **बिसात** । ३. धन-माल । ४. विशेषता ।

वतळ—*(ना०)* १. वार्तालाप । बातचीत । २. संगोष्ठी । ३. मन बहलाने की बातचीत । **वंतळ** ।

वतळावण—१. बोलने का ढंग । २. बतलाने का ढंग । ३. बातचीत । ४. बतलावन । **वतकाव** । दे० बतळावण ।

वतळावणी—दे० वतळावण ।

वतियो—*(न०)* १. वस्तु । २. टूम ।

वतूळो—*(न०)* वातचक्र । **भतूळियो** । **भूतेळो** ।

वत्तेरो—*(वि०)* १. अनुमान से अधिक । २. तुलना में अधिक । (वधतेरो का संक्षिप्त रूप) ।

वत्तो—*(वि०)* अधिक । ज्यादा । **घणो** । (**वधतो** का संक्षिप्त) ।

वत्स—*(न०)* १. बालक । २. बछड़ा ।

वत्सर—*(न०)* वर्ष । **बरस** ।

वत्सल—दे० वत्सळ ।

वत्सळ—*(वि०)* छोटों तथा आश्रितों के प्रति स्नेह रखने वाला । वत्सल ।

वत्सळ-भगताँ—*(न०)* भक्त-वत्सल ।

वद—*न०)* कथन । बोल । *(ना०)* १. कृष्णपक्ष । वदि । २. बद । **बवगाँठ** ।

वद-गाँठ—*(ना०)* जाँघ की जोड़ में होने वाला एक फोड़ा । बद । **बवगांठ** ।

वदणो—*(क्रि०)* १. कहना । बोलना । २. वर्णन करना । ३. मानना । आज्ञा पालन करना । ४. स्वीकार करना । मानना । ५. विवाद करना । ६. बढ़-बढ़ कर बोलना । ७. शर्त करना । करार करना । होड़ मारना । बाजी लगाना । ८. जिद करना ।

वदन—*(न०)* १. मुख । **मूंढो** । **मांहडो** । २. चेहरा । ३. शरीर । देह । **डील** । ४. भग ।

वद-पख—*(न०)* चांद्रमास का कृष्णपक्ष ।

वदळणो—दे०बदळणो ।

वदळाणो—दे० बदलाणो ।

वदळायोड़ो—दे० बदळायोड़ो ।

वदळावणो—दे० बदळावणो ।

वदळियोड़ो—दे० बदळियोड़ो ।

वदळी—दे० बदळी ।

वदळै—*(अव्य०)* १. बदले में । परिवर्तन में । २. लिये । खातिर । **वास्ते** । ३. प्रतिफल स्वरूप ।

वदळो—*(न०)* १. प्रतिकार । बदलो । **साटो** । २. विरोध । ३. एवज । विनिमय । ४. फेरफार । हेराफेरी । ५. नतीजा । परिणाम । ६. सट्टे के व्यापार का एक नियम जिसमें वायदे के रूप में खरीदी या बेची हुई वस्तु को कायम रख कर केवल भाव के उतार चढ़ाव के नफे नुकसान का भुगतान होता है ।

वदाण—*(ना०)* चारपाई को कसने के लिये पैताने की ओर लगाई जाने वाली रस्सी । अदवान । **वदामण** ।

वदामण—दे० वदाण ।

वदा-वदी—*(ना०)* वाद-विवाद । बोल-चाल । झगड़ा । **वाग्युद्ध** ।

वदि—*(ना०)* चांद्र-मास का कृष्ण-पक्ष। बदी। *(वि०)* कृष्ण-पक्ष का।

वदी—*(ना०)* १. कृष्ण-पक्ष। बदपख। २. जामा पर पहनने का एक स्वर्ण आभूषण। एक प्रकार की सोने की लंबी माला जो दोनों कंधों पर पहनी जाकर दाहिने कंधे की बाँयी ओर और बाँये कंधे की दाहिनी ओर जामे पर लटकती रहती है। बद्दी। बदी। *(वि०)* कृष्ण-पक्ष से संबद्ध। कृष्ण-पक्ष का।

वदीतो—*(वि०)* १. प्रसिद्ध। विख्यात। २. विदित। प्रगट। जाहिर।

वध—*(नं०)* १. कत्ल। मारण। खून। २. वृद्धि। बढ़ावा।

वधकर—*(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. सुंदर। ३. तुलना में अधिक या श्रेष्ठ। वधतो।

वधकी—*(वि०)* १. अच्छी। बढ़िया। अधकी। इधकी। २. तुलना में श्रेष्ठ। ३. अधिक। ज्यादा। इधक। ४. कीमती।

वधको—*(वि०)* १. तुलना में बढ़िया या अधिक। २. अच्छा। बढ़िया। इधको। ३. अधिक। ४. मूल्यवान। कीमती। ५. उत्तम। श्रेष्ठ।

वध-घट—*(ना०)* १. न्यूनाधिक। अधिक और कम। कम-ज्यादा। घणो-थोड़ो। २. वस्तुओं के भावों में बढ़ा-घटी। ३. चढ़ाव-उतार। चढ़-उतर। घट-वध।

वधणी—*(ना०)* १. हिक्का। हिचकी। २. बढ़ने की क्रिया।

वधणो—*(क्रि०)* १. बढ़ना। अधिक होना (परिमाण में)। २. फूलना। ३. (मार्ग में) आगे बढ़ना। ४. पद में या धन में बढ़ना। ५. मारना। वध करना। हत्या करना। *(वि०)* बढ़ने वाला।

वधती वेल—*(ना०)* १. उन्नत दशा। २. वंश-वृद्धि। ३ श्रेष्ठ कुल।

वधतो—*(वि०)* १ अधिक। ज्यादा। वत्तो। २. बढ़ता हुआ। ३. श्रेष्ठ। वधको।

वधतो-आंक—दे० तीखो-आंक।

वधरणो—*(क्रि०)* १. वृद्धि पाना। बढ़ना। २. सधवा स्त्री के हाथ की चूड़ी का टूटना। (सौभाग्य का चिन्ह होने के कारण 'चूड़ी का टूटना' कहना अशुभ समझा जाता है।) ३. देवता के आगे (प्रसाद चढ़ाने के लिए) नारियल का तोड़ा जाना।

वधराळ—*(ना०)* वृषण का एक रोग।

वधाई—*(सं०)* १. मंगलाचार। २. खुशी के समाचार। मंगल समाचार। शुभ संदेश। बधाई। ३. शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार। ४. किसी शुभ समाचार पर कहा जाने वाला आनंद प्रगट करने वाला वचन। ५. वृद्धि। ६. उत्सव। ७. स्वस्ति वचन। मंगल-वचन।

वधाईदार—*(वि०)* बधाई देने वाला। वधाउड़ो।

वधाउओ—दे० वधाउड़ो।

वधाउड़ो—*(नं०)* १. बर्र के जैसा एक पतंगा जो वर्षा आने के पहले दिखाई देता है और वर्षा आने का सूचक माना जाता है। २. बधाई देने वाला। ३. शुभ समाचार कहने वाला। ४. बरात में से भेजा जाने वाला वह व्यक्ति जो बरात के गाँव के निकट आ जाने की सूचना कन्या-पक्ष वालों को देता है। वधाऊ।

वधाउवो—दे० वधाउड़ो ।

वधाऊ—दे० वधाउड़ो ।

वधाणो—दे० वधावणो ।

वधापो—दे० वाधेपो ।

वधामणा—*(न०ब०व०)* १. बधाई का संदेश । २. वधाई संबंधी उत्सव । ३. पुत्र जन्मोत्सव । ४. पुत्र विवाहोत्सव । ५. विवाहोत्सव । ६. गुरु तथा पूज्य जन आदि के आगमन पर मनाया जाने वाला स्वागतोत्सव । ७. किसी मंगल कार्य का आयोजन । ८. मांगलिक पदार्थों की भेंट-पूजा और गाजे बाजों के साथ किया जाने वाला स्वागत । स्वागत । मंगलाचार । ९. प्रशंसा । तारीफ । १०. विजय-समारोह । विज्योत्सव । ११. खुशामद । निहोरा । दे० वधावणा ।

वधामणो—*(न०)* बधाई का गीत । बधावा ।

वधारणो—*(क्रि०)* १. बढ़ाना । २. नारियल का भोग धरने के लिए देवता के सम्मुख उसे तोड़ना । ३. सधवास्त्री के हाथ की चूड़ी को तोड़ना । ४. बचत करना ।

वधारो—*(न०)* १. पद, प्रतिष्ठा, जागीरी आदि में की जाने वाली वृद्धि । वृद्धि । २. पदवृद्धि । ३. उपहार वृद्धि । ४. विशेष उपहार । पुरस्कार में वृद्धि या विशेषता । ५. नफा । लाभ । ६. पोते-बाकी । बेलेन्स । ७. उन्नति । तरक्की ।

वधावसा—*(न०ब०व०)* १. शुभ कार्य । मंगल कार्य । २. मंगल कार्य के निमित्त देव-पूजन के लिये की जाने वाली तैयारी । ३. मंगल-गीत । ४. वधावणा नामक एक स्वागत-गीत । ५. स्वागत । ६. हर्ष ७. उपहार । ८. भेंट । ९. पुत्र-जन्म और विवाह आदि अवसरों पर जागीरदार की ओर से उसकी प्रजा से लिया जाने वाला एक कर । दे० वधामणा ।

वधावणो—*(क्रि०)* १. किसी के उत्कर्ष के प्रति हर्ष प्रगट करना । २. स्वागत करना । ३. आगंतुक सम्माननीय पुरुष की मांगलिक पदार्थों से विधि-पूर्वक पूजा आदि करके शोभा यात्रा के साथ घर लाना । ४. दूल्हे-दुलहिन, गुरु, तीर्थ-यात्री इत्यादि सम्माननीय व्यक्तियों के गृह प्रवेश के समय द्वार पर सधवा माता, बहिन या पुत्री इत्यादि द्वारा उनके दाँएँ-बाँएँ जळ सिंचन करके स्वागत करना । ५. बढ़ाना । उन्नत करना । ६. खींच कर लंबा करना । ७. जोड़ना । ८. फैलाना ।

वधा-वधी—*(ना०)* १. माल को लीलाम करने में एक दूसरे से बढ़कर कीमत लगाने की क्रिया । २, एक दूसरे से बढ़ने की होड़ ।

वधावो—*(न०)* १. बढ़ाने की क्रिया । बढ़ावा । २. बढ़ाने की सामग्री । वृद्धि । ४. विवाह, उत्सव आदि पर गाया जाने वाला एक लोक गीत । वधावो । ५. स्वागत-गीत । ६. पुत्र-जन्म, विवाह आदि शुभ कार्य ।

वधिक—*(वि०)* १. माप, तौल, गुण आदि में चढ़ता हुआ । २. अधिक । ज्यादा । ३. तुलना में श्रेष्ठ । ४. वध करने वाला । हिंसक । ५. व्याध । शिकारी ।

वधिये-घटिये—*(अव्य०)* १. बढ़ने घटने पर । २. कम-ज्यादा होने की हालत में ।

वधियोड़ो—*(वि०)* १. बढ़ा हुआ । उन्नत । २. शेष रहा हुआ । बचा हुआ । ३. लंबायमान । ४. सम्पन्न । **संठियोड़ो** ।

वधू—*(ना०)* १. बहु । पत्नी । वहु । २. पुत्रवधू । वहु ।

वधे-लाभ—*(अव्य०)* नाज आदि किसी वस्तु की राशि को तोलने-मापने के समय पहले तोल या माप को तोलने-मापने वाले के द्वारा दी जाने वाली संज्ञा । प्रारम्भ । लाभ की प्राप्ति हो इस भाव का उद्‌गार । २. कार्यारंभ के प्रथम चरण का मंगल या लाभ-सूचक नाम । ३. याचक या भिखारी द्वारा भीख माँगते समय या भीख मिलने पर कहा जाने वाला आशीर्वादात्मक पद ।

वधैया—*(वि०)* बधाई देने वाला । **वधाउड़ो** ।

वधोतर—*(न०)* १. बढ़ता अंक या संख्या । २. दो चार, छः इत्यादि युगल संख्याओं को गिनने पर शेष में एक रह जाने का शुभ फल । दे० वधतो आँक । *(वि०)* कुछ अधिक । अधिक ।

वधोतरी—*(ना०)* १. उत्तरोत्तर होने वाली बढ़ती या उन्नति । २. वृद्धि । बढ़ोतरी ।

वन—*(न०)* १. जंगल । अरण्य । २. दस नामी संन्यासियों का एक भेद ।

वन-खंड—*(न०)* वन का कोई भाग । वन । जंगल ।

वन-खंडी—*(ना०)* १. एक वैष्णव सम्प्रदाय । २. उक्त सम्प्रदाय के साधुओं की जमात । ३. उक्त जमात का साधु ।

वनचर—*(न०)* १. बन्दर । २. वन में रहने वाला । जंगली । जंगली प्राणी ।

वनचारी—दे० वनचर ।

वनजी—*(न०)* **वनो** । दुलहे का आदर सूचक नाम । दुल्हा ।

वनड़ी—*(ना०)* दुलहिन । **वीनणी** । **वनी** ।

वनड़ो—*(न०)* दुलहा । **वींद** । **वीन** ।

वनणा—दे० वंदणा ।

वनता—*(ना०)* १. स्त्री । वनिता । **लुगाई** । **बैर** । २. प्रिया ।

वनथळी—*(ना०)* १. वनस्थली । २. मरु-प्रदेश । **वंथळी** । ३. वन प्रदेश ।

वन-देवता—*(न०)* वन का अधिष्ठाता देव ।

वन-माळ—दे० वन के फूलों की लंबी माला ।

वन-माळा—दे० वनमाळ ।

वन-माळी—*(न०)* १. श्री कृष्ण । २. बागवान । माली । **माळी** ।

वन-में-जाणो—*(मुहा०)* शौच निवृत्ति के लिए वन में जाना । पाखाना फिरने को जाना । टट्टी जाना । **जंगळ जाणो** । **झाड़े जाणो** । (सधूकड़ी भाषा) ।

वनरमाळ—*(ना०)* १. मांगलिक अवसरों पर द्वार पर बांधी जाने वाली फूल-पत्तों आदि की झालर । वंदनवार । वंदन-माल । २. माला-बंधन । ३. वन्द्रमाल ।

वन-राइ—दे० वणराइ ।

वन-राज—*(न०)* सिंह । वाघ ।

वन-राजि—दे० वणराइ ।

वन-राव—*(न०)* १. सिंह । २. शेर । **वाघ** ।

वन-रोही—*(न०)* जंगल । वन । **सीम** । **रोही** ।

वन-वगड़ो—*(न०)* जंगल । वन । **वगड़ो** ।

वन-वास—*(न०)* १. वन में रहना । अरण्य-वास । २. बस्ती छोड़ कर वन मे रहने का दिया जाने वाला दण्ड ।

वन-वासी—*(वि०)* वन में रहने वाला ।

वनवासो—दे० वनवास ।

वन-वेलडी—*(ना०)* जंगली बेल । वन-लता ।

वनश्री—*(ना०)* १. वन की शोभा । २. वृक्ष, लता, पुष्प इत्यादि से शोभित वन ।

वनस्थली—*(ना०)* १. अरण्य प्रदेश । वन प्रदेश । २. मरु प्रदेश । ३. जयपुर जिले में आया हुआ लड़कियों के लिए एक प्रसिद्ध विद्याधाम । वनस्थली विद्यापीठ ।

वनस्पति—*(ना०)* वृक्ष लतादि ।

वना—*(न०)* पुत्र या छोटे बच्चों के लिये दुलार का संबोधन शब्द । बना ।

वनाजी—दे० वनजी ।

वनात—*(ना०)* एक प्रकार का ऊनी वस्त्र । बनात ।

वनाधिप—*(न०)* १. सिंह । वनराज । २. वन देवता ।

वनायुध—*(न०)* शस्त्र ।

वनारणो—*(क्रि०)* १. फल, साग, सब्जी आदि को साफ-सूफ करके छीलना-काटना । समारना । २. साफ करके छीलना-काटना । काटना ।

वनासा—दे० वनजी ।

वनिता—*(ना०)* १. स्त्री । महिला । २. पत्नी । ३. प्रिया ।

वनी—*(ना०)* १. दुलहिन । बींदणी । बीनणी । २. जंगल । ३. वानप्रस्थी । ४. विवाह का एक लोकगीत ।

वनो—*(न०)* १. दूल्हा । बींद । बींदराजा । २. विवाह सम्बन्धी एक लोक गीत ।

वनोरो—दे० वंदोळो ।

वनोळी—दे० वंदोळो ।

वनोळो—दे० वंदोळो ।

वनो-वनी—*(न०)* दुलहा-दुलहिन । बींद-बींदणी ।

वन्नर—*(न०)* बंदर । बांदरो । वानर ।

वन्नर-माळ—दे० वंदरमाळ या वनरमाळ ।

वप—*(न०)* शरीर । वपु ।

वपरण—*(न०)* १. केश काटना । हजामत । २. बीज बोना । बुवाई ।

वपरणी—*(ना०)* नाई की दूकान । क्षौरी ।

वपता—*(न०)* १. पिता । बाप । जामी । २. विपदा । विपत्ति ।

वपधर—*(न०)* शरीर धारण करने वाला । वपुधर । शरीरी । देहधारी ।

वपराण—दे० वपरास ।

वपराणो—दे० वपरावणो ।

वपरावणो—दे० वपरावणो ।

वपरास—*(ना०)* १. उपयोग । २. किसी चीज को काम में लाने का भाव या रिवाज । ३. माल का उठाव । ४. खर्च या बिकरी ।

वपळ—*(वि०)* १. अधिक बोलने वाला । लापर । २. बातुल । ३. झूठा । लबाड ।

वपळो—दे० बपळ ।

वपु—*(न०)* शरीर । देह । डील ।

वफादार—*(वि०)* १. ईमानदार । २. कर्त्तव्य-पालक । ३. स्वामीभक्त । ४. विश्वासी । ५. आज्ञापालक ।

वफादारी—*(ना०)* १. ईमानदारी । २. कर्त्तव्य-पालन । ३. स्वामी-भक्ति । ४. निष्ठा । ५. आज्ञापालन ।

वभो—दे० विभो ।

वमणो—*(क्रि०)* १. फिरना । चक्कर लगाना । २. वमन करना । उलटी करना ।

वमन—*(ना०)* उलटी । कै ।

वमळ—*(न०)* १. अकेले में विचारों का उठना या उठने वाले विचार । २. विचारों का ढेर, चक्कर या उलझन । ३. विचार-तरंग । **विचार-वमळ** ।

वमेक—*(न०)* १. विवेक । २. शऊर । ३. समझ ।

वय—*(ना०)* उम्र । ऊमर । आयु । **अवस्था** ।

वय-खोवण—*(वि०)* अकर्मण्यता से आयु को व्यर्थ नष्ट करने वाला । *(न०)* आयु का नष्ट करना ।

वयण—*(न०)* १. वचन । बोल । २. विनती । ३. प्रतिज्ञा । कौल । **वैण** ।

वयण-सगाई—दे० वैणसगाई ।

वयस्क—*(वि०)* वय प्राप्त । बालिग ।

वयंड—*(न०)* हाथी । गज ।

वयो-वृद्ध—*(वि०)* १. आयु में वृद्ध । वृद्ध । **बूढो** । २. बड़ा । **बडेरो** । *(न०)* **वडील** । पुरखा ।

वर—*(न०)* १. दुलहा । वर राजा । **बींद** । २. वरदान । ३. पति । *(वि०)* १. सुन्दर । २. श्रेष्ठ । उत्तम । *(अव्य०)* जैसा । भाँति ।

वर-अंग—*(न०)* १. भग । योनि । २. सिर । मस्तक । माथो ।

वरक—*(न०)* १. धातु का पतला पत्तर । **बरक** । २. पुस्तक का पन्ना ।

वरकणो—*(क्रि०)* १. जोश में बोलना । चिल्लाना । २. नाराज होना । बिगड़ना । ३. रोना ।

वर-कन्या—*(न०ब०व०)* १. विवाहने वाले लड़का-लड़की । वर और कन्या । २. दुलहा-दुलहिन ।

वरकसी—*(ना०)* १. शत्रुता । २. द्वेष । ३. विरोध । ४. भिड़ंत । ५. मुकाबला । ६. मोरचा । ७. वाद-विवाद । झगड़ा । ८. एक कर ।

वरकी—दे० बरकी ।

वरको—*(न०)* १. आतंक । दबदबा । रोब । **धाक** । २. वरक । पृष्ठ । **पन्नो** । **पानो** । ३. भय ।

वरख—दे० वरस ।

वरखा—*(ना०)* वर्षा । मेह । **वरसात** ।

वरखा-जळ—*(न०)* वर्षा का पानी । **पालरपाणी** ।

वरखावळ—*(ना०)* १. वर्षा की झड़ी । २. कई दिनों तक बरसने वाली वर्षा । वर्षा । **वर्षावलि** ।

वरखिलाफ—दे० बरखिलाफ ।

वरखे—*(न०)* १. वर्ष । सम्वत । *(अव्य०)* वर्ष में ।

वरग—*(न०)* १. वर्ग । समूह । २. श्रेणी ३. जाति । दे० वर्ग ।

वर-गहली—*(वि०)* पति प्रेम में पागल बनी हुई । **वरगैली** ।

वरगे-वैर—*(न०)* १. जाति-वैर । सहज-वैर । स्वाभाविक शत्रुता । जैसे, बिल्ली की चूहे से । २. फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्यों में परस्पर विरुद्ध वर्गों की शत्रुता ।

वर-घोड़ो—*(न०)* दूल्हे की शोभा-यात्रा ।

वरजणो—*(क्रि०)* १. किसी को किसी बात या काम करने के लिये रोक देना । मना करना । २. रोकना । अवरोधना । ३. त्यागना ।

वरजनाऊ—*(वि०)* १. वर्ज्य । त्याज्य । निषिद्ध । वर्जनीय । २. वर्जन करने वाला । ३. रोकने वाला । **वरजक** ।

बरजनीक—*(वि०)* वर्ज्य । अस्वीकार करने योग्य ।

बरजाऊ—दे० बरजनाऊ ।

बरजांग—दे० वज्रांग ।

बरजित—*(वि०)* १. मना । २. बन्द । ३. छोड़ा हुआ । तजा हुआ । ४. मना किया हुआ । वर्जित ।

बरजियोड़ो—दे० वर्जित ।

बरजोड़—*(न०)* १. गाँठ । २. गठ-बंधन । गठ-जोड़ा ।

बरड़ो—दे० बरढो ।

बरढणो—*(क्रि०)* कृषक का बोहरे की लेन-देन का सम्पूर्ण रूप से चुकारा करना ।

बरढो—*(न०)* १. आसामी (कृषक या कर्जदार) से माल-सामान (बैल, गाय, ऊंट, अन्न, गाड़ी इत्यादि) लेकर बोहरे (ऋणद) की ओर से दिये हुये कर्जे का चुकता हिसाब । बेबाक लेन-देन । २. आसामी के कर्जे में रुपये, अन्न व अन्य माल सामान आदि लेकर बोहरे और आसामी का किया जाने वाला लेन-देन का संबंध-विच्छेद । ३. एक कर । ४. घाव । प्रहार । ५. निशान । बेढो ।

बरण—*(न०)* १. हिन्दू जाति के चार भेद—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । वर्ण । २. अक्षर । वर्ण । ३. रंग । ४. भेद । प्रकार । ५. जाति । ६. समाज । ७. चारण, भाट, ढाढी आदि कीर्ति वाचक । ८. किसी को किसी काम के लिये चुनना । ९. आवरण । १०. कुल । वंश । ११. ऊंट ।

बरणणो—*(क्रि०)* १. वर्णन करना । कहना । २. बतलाना ।

बरण-संकर—दे० वर्णसंकर ।

बरणावरणी—दे० वर्णावर्णी ।

बरणी—*(ना०)* १. कर्मकांड, यज्ञ या अभिषेक आदि धार्मिक अनुष्ठानों में ब्राह्मण के द्वारा मंत्र, जप या पाठ आदि कराने की योजना । २. उक्त धार्मिक कर्म के लिए की जाने वाली ब्राह्मण की नियुक्ति । ३. ब्राह्मण के द्वारा दुर्गा पाठ, रुद्री पाठ वा मंत्र पाठ का आयोजन ।

बरणो—*(क्रि०)* १. विवाह करना । वरण करना । २. मन से पति मान लेने का संकल्प करना । पति मानना । ३. पति रूप में किसी एक को पसन्द करना ।

बरत—*(ना०)* १. पुरवट खींचन की मोटी रस्सी । मूंड वाले चरसे का मोटा रस्सा । नहन । बरत्रा । २. हौदे को कसने की मोटी रस्सी । ३. उपवास । व्रत । ४. प्रतिज्ञा । संकल्प । ५. मृत्यु ।

बरतणी—दे० वर्तनी ।

बरतणो—*(क्रि०)* १. व्यवहार करना । २. व्यवहार में लाना । काम में लाना । बरतना । ३. वर्तमान होना । ४. प्रगट करना । ५. प्रसिद्ध होना । ६. बनना । ७. होना । ८. रीति का पालन करना । दे० वतरणो ।

बरतन—*(न०)* १. वेतन । २. नौकरी का खाना-पानी आदि के रूप में मिलने वाला एवजाना । ३. वर्तन । व्यवहार । ४. आचरण । ५. रीति । ६. बरतन । पात्र । बासण ।

बरतमा—*(न०)* १. मार्ग । वर्त्म । २. रथ के पहियों की लकीर । लीक । ३. किनारा । ४. आधार । ५. आँख की पलक ।

वरत-वरतोळिया—*(न०)* १. स्त्रियों के द्वारा किये जाने वाले औत्सव व पार्वण व्रत-उपवास। २. कन्याओं या स्त्रियों के व्रत-उपवास। ३. छोटे-मोटे व्रत इकासने। ४. तीज त्यौहारों के व्रत उपवास।

वरतारो—*(न०)* १. देवता का आवेश। २. भविष्य कथन। ३. वर्ष का भविष्य कथन। ४. घटना। वृत्तान्त। वाकिआ।

वरताव—*(न०)* बर्ताव। व्यवहार।

वरतावणो—*(क्रि०)* १. काम में लाना। व्यवहार में लाना। बरताना। २. बाँटना। वितरण करना। ३. सबमें बाँट कर किसी वस्तु का उपयोग करना या उसे बिताना। ४. समाप्त करना। ५. प्रवर्त करना।

वरतियो—*(न०)* १. जैन साधु। जती। २. जादू टोना करने वाला जैन जती। *(वि०)* व्रत रखने वाला। व्रती।

वरतियोड़ो—*(भू०कृ०)* काम में लाया हुआ।

वरती—*(ना०)* स्वभाव। आदत। बिरती। दे० वृत्ति।

वरतीक—*(न०)* वर्तमान। विद्यमान।

वरतीजणो—*(क्रि०)* १. काम में लाया जाना। बरता जाना। २. प्रगट होना। ३. उपयोग होना। ४. वर्तमान होना। ५. प्रवर्त होना। ६. यापन होना। व्यतीत होना। बीतना। ७. बाँटा जाना। ८. खर्च होना।

वरतुल—*(न०)* १. गोलाकार। वर्तुल। कूंडाळो। २. गोल। वृत्त।

वरतो—दे० बरतो या बरतणो।

वरध—दे० बरधा।

वरथा—दे० वृथा।

वरद—*(वि०)* १. वरदान देने वाला। २. मंगलकारी। ३. शुभ। *(ना०)* १. विवाह में गीत गाती हुई स्त्रियों का कुम्हार के यहाँ मंगल-मृद-कलश लेने को जाना। २. विवाह के पूर्व मंगल-कलश का स्थापन। ३. सम्पूर्ण वैवाहिक कार्य की संज्ञा। ४ शुभ दिन।

वरदराज—*(न०)* श्रीगणेश।

वरदळ—*(न०)* १. वर और कन्या की आयु का उतना अन्तर जो पाणिग्रहण करने के योग्य हो। वर और कन्या की आयु का योग्य अन्तर। २. दोनों की विवाह योग्य अवस्था। ३. वर और कन्या की गुण, लक्षण, आयु तथा स्वास्थ्य इत्यादि से योग्य जोड़ी। ४. वर पक्ष और कन्या पक्ष में समधी बनने की समानता। ५. श्रेष्ठ पक्ष।

वरद-वड़ी—*(ना०)* विवाह के आरम्भ में मूंग की बड़ी (मुंगौरी) बनाकर वैवाहिक कार्य प्रारम्भ करने की एक मांगलिक विधि जो वृद्धि कारक और वरदायक समझी जाती है। वरध-वड़ी।

वरद-विनायक—*(न०)* १. विवाह में गाया जाने वाला मंगला-चरण लोक-गीत। २. विवाह में स्थापित किये जाने वाले श्रीगणेश।

वरदा—*(ना०)* सरस्वती। *(वि०)* वर देने वाली।

वरदाई—*(वि०)* १. विरुद प्राप्त करने वाला। २. वरदान प्राप्त। ३. विरुद प्राप्त। ४. वर देने वाला। ५. उत्तम। श्रेष्ठ। ६. यशस्वी। वरदाळ।

वरदाता—*(वि०)* वर देने वाला। वरदायक।

वरदान—*(न०)* १. देवी, देवता या संत महात्माओं के द्वारा प्रसन्न होकर आशा पूरी करने का दिया हुआ वचन। देवता, महा पुरुष आदि द्वारा मनोरथ-पूर्ति या अभीष्ट-सिद्धि। २. लाभ पहुंचाने वाली बात।

वर-दायक—*(वि०)* वर देने वाला। **वरदेत**। वरदाता।

वरदायण—दे० वरदायणी।

वरदायणी—*(वि०)* वर देने वाली।

वरदायिनी—*(वि०)* वर देने वाली। **वरदायणी**। *(ना०)* सरस्वती। शारदा।

वरदायी—दे० वरदाई।

वरदाळ—दे० वरदाई।

वरदी—*(ना०)* १. एक प्रकार का पहिनावा जो किसी विभाग के कार्यकर्त्ताओं के लिए नियत हो। गणवेश। युनिफार्म। वर्दी। २. खबर। ३. आज्ञा। हुक्म।

वरदेत—दे० वरदायक।

वरध—*(वि०)* वृद्धि। *(ना०)* १. विवाह के पूर्व की एक मंगलविधि। २. वृद्धि। ३. दे० वरद *(ना०)* सं० १, २, ३। ४. विवाह का मांगलिक लोक-गीत।

वरध-वड़ी—दे० वरद-वड़ी।

वरना—*(अव्य०)* १. नहीं तो। २. अथवा ३. अथवा तो। या तो।

वरपाड़—*(न०)* १. शत्रु। दुश्मन। २. दैत्य। ३. दुष्ट।

वर-बेड़ो—दे० वरहेड़ो।

वरम—*(न०)* सूजन। दे० वर्म।

वरमाळ—दे० वरमाळा।

वरमाळणो—*(क्रि०)* १. वरमाला पहिनाना। २. वर पसंद करके उसे माला पहिनाना।

वर-माळा—*(ना०)* स्वयंवर में पसन्द किये हुये वर को कन्या द्वारा पहिनाई जाने वाली माला।

वर-राजा—*(न०)* दुलहा। **बींद**।

वर-लाछ—*(न०)* विष्णु। **लक्ष्मीपति**।

वरवड़ी—*(ना०)* एक लोक देवी। २. चारणों की एक देवी। **(वरुड़ी)**। **वर-वड़ी**।

वरस—*(न०)* १. वर्ष। साल। ३६० दिन या बारह महीनों का समय। २. जमाना। समय। दे० वर्ष

वरस-गांठ—*(ना०)* जन्म तिथि। जयंती। वर्षगांठ। जन्म दिन।

वरसणो—*(क्रि०)* १. बरसना। वर्षा होना। २. दान देना। ३. क्रोध करना।

वरस-दिन—*(अव्य०)* पूरे वर्ष का समय।

वरस-दिहाड़ो—दे० वरस-दिन।

वरस-फळ—*(न०)* १. शुभा-शुभ ग्रहों का वर्ष भर का फल। २. उक्त विवरण की पुस्तिका। *(ज्यो)*

वरस-ब्यावणी—*(वि०)* प्रति वर्ष बच्चे को जन्म देने वाली।

वरसा—*(ना०)* वर्षा। मेह। वृष्टि। **बरखा**।

वरसाऊ—*(वि०)* बरसने वाला (बादल)। दे० वरसाळू।

वरसाण—दे० वरसासण।

वरसात—*(न०)* वर्षा। बरसात।

वरसाती—*(ना०)* १. वर्षा में पहिनने का कोट आदि वस्त्र। रेन कोट। २. मोटर आदि खड़ा करने का बंगले के आगे का भाग। *(वि०)* वर्षा सम्बन्धी। वर्षा का।

वरसाद—*(न०)* वर्षा । मेह । चिरखा ।

वरसाळू—*(वि०)* १. वर्षा का । वर्षा संबंधी । २. वर्षा से उत्पन्न होने वाला । ३. वर्षा ऋतु संबंधी । वर्षा ऋतु का ।

वरसाळो—*(न०)* वर्षा ऋतु । चौमासा । वराळो ।

वरसासण—*दे०* वर्षाशन ।

वरसी—*(ना०)* १. किसी सैंत, महापुरुष आदि की निधन तिथि । पुण्य तिथि । मृत्यु-तिथि । २. मृतक की वार्षिक तिथि पर की जाने वाली क्रिया । ४. वरसी पर किया जाने वाला भोज । वरसी का जीमन ।

वर-सीत—*(न०)* सीतापति श्रीराम ।

वरसीतप—*(न०)* जैनों का एक वार्षिक तप ।

वरसूंद—*(ना०)* १. वर्ष भर की आमदनी का हिसाब करके निकाली जाने वाली धर्मादे की निश्चित धनराशि । वरस-वसूंद । २. धर्मादे के रूप में निकाला जाने वाला ब्याज का अमुक भाग । विसूंद । ४. राज्य कर के रूप में लिया जाने वाला आमदनी का दशवाँ भाग । ५. वर्षासन ।

वरसोदण—*(न०)* १. वर्ष में आने वाला एक त्यौहार । २. इस त्यौहार पर किया जाने वाला चावल-भोजन ।

वरसोदियो—*(वि०)* १. वर्ष भर बना रहे या चले जितना । २. एक वर्ष से संबंधित । वर्ष का । ३. वर्षा का । ४. वर्षा के जल से भरा हुआ । ५. वर्षा के पानी का ।

वरसो-वरस—*(अव्यय)* १. प्रत्येक वर्ष । २. प्रति वर्ष ।

वर-हीण—*(ना०)* १. अयोग्य, विवेकहीन लंबा रोगी इत्यादि अपलक्षणों वाला कँवारा लड़का जो वर बनने के योग्य न हो । कन्या के पाणिग्रहण के लिये अनुपयुक्त वर । २. हानि वाला वर । अयोग्य तथा पुरुषत्वहीन पति । ३. ३. वर की अप्राप्ति ।

वरहास—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

वरहेड़ो—*(न०)* १. मिट्टी का बना हुआ एक छोटा चित्रित मंगल-कलश । वरवेड़ो । २. कलश के ऊपर छोटा (मंगल) कलश । ३. वह दोहरा छोटा कलश (कलश के ऊपर छोटा कलश) जिससे वर के स्वागत की एक विधि सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा संपन्न की जाती है । वरवेड़ो । दे० सामेळो ।

वरंग—*(न०)* १. सिर । उत्तमांग । वरांग । उतवंग । उत्तमंग । माथो । २. भग ।

वरंडी—*दे०* १. वंडी । २. एक विलायती शराब । ब्रांडी ।

वरंडो—*(न०)* १. बरामदा । २. छाया हुआ खुला भाग । पडाळ । ओसरी ।

वराख—*(न०)* भग । योनि । जननेंद्रिय । (क्रोध में) ।

वराचक—*दे०* वराधक ।

वराड़ो—*(न०)* रस्सा । मोटी रस्सी । राँढू ।

वरात—*(ना०)* बरात । जान ।

वराधक—*(वि०)* १. बलशाली । जबरदस्त । बलाधिक । २. श्रेष्ठ ।

वरामणी—*दे०* ब्राह्मणी ।

वरामी—*(ना०)* ब्राह्मी नामक वनस्पति ।

वराळ—*(ना०)* १. भाप । वाष्प । वाफ । २. हृदय का उबाल । मनोवेग । बळार ।

वराळो—दे० बरसाळो ।

वरासण—*(न०)* श्रेष्ठ आसीन । उच्चासन । उच्चपद ।

वरासत—दे० विरासत ।

वराह—*(न०)* १. शूकर । सूअर । २. विष्णु का तीसरा अवतार । वाराहावतार । ३. वह कल्प जिसमें वाराह का अवतार हुआ ।

वराह-अवतार—*(न०)* विष्णु का वराह रूप में तीसरा अवतार । वाराहावतार ।

वराह-कल्प—वह कल्प जिसमें विष्णु का वाराह अवतार हुआ था । वाराह काव्य

वराह-पुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में से एक पुराण । वाराह पुराण ।

वरांग—*(वि०)* सुन्दर अवयवों वाला । *(न०)* १. सिर । माथो । २. योनि । ३. हाथी ।

वरांगना—*(ना०)* १. सुन्दर अंगों वाली स्त्री । २. वारांगना । वेश्या । पातर ।

वरि—*(अव्य०)* १. मानो । २. भाँति । ३. पर । ४. के । ५. ऊपर । ६. के ऊपर । *(वि०)* १. सुन्दरी । २. पतिव्रता । (कृ०) १. वर कर के । वरण करके । २. विवाह कर के ।

वरियाम—*(वि०)* श्रेष्ठ । उत्तम । वरिष्ठ ।

वरियाळी—*(ना०)* सौंफ ।

वरिष्ठ—*(वि०)* १. सर्वोत्तम । श्रेष्ठ । २. सबसे बड़ा ।

वरी—*(ना०)* १. विवाह के समय वर पक्ष की ओर से वधू के लिये दिये जाने वाले (विशेष प्रकार के कीमती) वस्त्राभूषण । २. श्रेष्ठता ।

वरीख—*(ना०)* १. पाँव । पद । २. चाल । ३. ऊँट की एक चाल । वीख । हलकी दौड़ । ४. वर्ष । ५. पदचिह्न ।

वरीस—*(न०)* १. वर्ष । २ बरसने वाला । ३. दानी । दाता ।

वरीसण—*(वि०)* १. बरसाने वाला । २. बख्शीश करने वाला । देने वाला । ३. दान देने वाला ।

वरीसणो—*(क्रि०)* १. देना । दान देना । २. बरसना ।

वरुओ—*(न०)* मिट्टी का जलपात्र । सकोरा । करवो ।

वरुण—*(न०)* १. जल का अधिष्ठाता देवता । जलेश । प्रचेता । २. पश्चिम दिशा का दिक्पाल ।

वरूथ—*(न०)* १. सेना । २. ढाल । ३. कवच । ४. पाखर । ५. रथ का कवच । ६. झुंड । समूह ।

वरूथणी—*(ना०)* सेना । वरूथिनी ।

वरेण्य—*(वि०)* १. पूजनीय । २. श्रेष्ठ । ३. प्रधान । ४. पसंद करने योग्य ।

वरो—*(न०)* १. आवश्यकता २. बिसात । हैसियत । सामर्थ्य । ३. श्रेष्ठता । ४. तेज । ओज । ५. उपयोग ।

वरोटी—*(ना०)* १. वर की ओर से (बरात, संबंधी और मित्रजनों आदि को) दिया जाने वाला बृहद भोज ।

वरोठी—दे० वरोटी ।

वरोळ—*(ना०)* १. विचार । २. विचारधारा । विचारों का चक्कर । विरोळ । ३. भ्रमर । भौंरा । ४. नाश ।

वरोळणो—*(क्रि०)* १. विचारना । विरोळणो । २. बरबाद करना ।

वर्ग—*(न०)* १. बड़े समुदाय का एक भाग । २. समान-गुण-धर्म वालों, सजातीय, वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह । श्रेणी ।

कक्षा । ३. शब्द-शास्त्र में एक ही स्थान से उच्चरित होने वाला वर्ण समूह । जैसे क वर्ग । वह समान्तर चतुर्भुज जिसकी चारों भुजाएँ तथा कोण बराबर हों । ५. दो समान अंकों का गुणन-फल । ६. किसी एक जाति के पशुओं का झुंड । ७. झुंड । समूह । टोळो ।

वर्गीकरण—*(न०)* वर्ग बनाने की क्रिया ।

वर्चस—*(न०)* १. अधिकार । वर्चस्व । २. श्रेष्ठता । ३. बल । पराक्रम । ४. तेज । दीप्ति । ५. वीर्य ।

वर्चस्व—दे० वर्चस ।

वर्जित—*(वि०)* १. छोड़ा हुआ । त्यागा हुआ । २. रोका हुआ । ३. कुपथ्य । ४. मना किया हुआ । वरजियोड़ो ।

वर्ण—*(न०)* १. हिन्दू समाज के चार विभाग (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) । २. हिन्दू समाज के चार विभागों में से कोई एक विभाग । ३. लघुतम ध्वनि इकाई तथा इसका लिपि चिन्ह । ४. वह अक्षर जो शब्द के साथ नहीं लगा हुआ हो । अकेला अक्षर । अक्षर । ५. रंग । ६. रूप । ७. प्रकार । भेद ।

वर्णन—*(न०)* १. सविस्तार कहा जाने वाला वृत्तान्त । बयान । २. प्रशंसा । ३. चित्रण ।

वर्णन करणो—*(मुहा०)* १. विस्तार-पूर्वक कहना । वर्णन करना । २. बखान करना । प्रशंसा करना । बखाणणो ।

वर्ण-माला—*(ना०)* किसी भी भाषा के मूलाक्षरों की क्रमबद्ध अक्षर माला । वर्ण-माला ।

वर्ण-वार्धक्य-विधान—*(न०)* वर्ण गुण अथवा उसमें वृद्धि करने की विधि । जैसे—'विसर' का 'विसहर' । गुण वृद्धि विधान । (व्या०)

वर्ण-विचार—*(न०)* वर्णों का आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों वाला व्याकरण विभाग ।

वर्ण-विपर्यय *(न०)* शब्दों में वर्णों का उलट-पुलट हो जाने की क्रिया, जैसे—'मतलब' का 'मतबळ' ।

वर्ण-वृद्धि-विधान—दे० वर्ण-वार्धक्य-विधान ।

वर्ण-व्यवस्था—*(ना०)* १. हिन्दू समाज के चार वर्णों की विभाजन रीति । २. चार वर्णों द्वारा हुई समाज व्यवस्था । चार हिन्दू वर्णों की समाज व्यवस्था ।

वर्ण-सगाई—*(ना०)* १. कविता में सजातीय वर्णों का आवर्तन । २. तुकान्त में सजातीय वर्णों का आवर्तन । वर्ण-संबंध । दे० वैण-सगाई ।

वर्ण-संकर—*(वि०)* १. भिन्न वर्ण के स्त्री-पुरुष से उत्पन्न । २. व्यभिचार द्वारा उत्पन्न । *(न०)* इस प्रकार उत्पन्न हुआ पुरुष ।

वर्ण-स्थान—*(न०)* मुँह में का स्थान जहाँ से वर्ण बोला जाता है ।

वर्णनातीत—*(न०)* जिसका वर्णन न हो सके ।

वर्णानुक्रम—*(न०)* वर्णमाला के अक्षर-क्रम के अनुसार बनाया हुआ क्रम । वर्णानुक्रमणिका ।

वर्णानुक्रमणिका—दे० वर्णानुक्रम ।

वर्णानुप्रास—*(न०)* सजातीय वर्णों का आवर्तन । एक शब्दालंकार । (साहि०) ।

वर्णावर्णी—*(ना०)* १. अनेक वर्णों के लोगों का संभु मेला । २. वर्णों की अभेदता । वर्ण व जातियों का मिश्रण ।

३. छोटी-मोटी जातियाँ। वर्णों की अंतर्जातियाँ। ४. न्याति-जाति के भेद। ५. जातियाँ और उनकी पेटा-जातियाँ। ६. अनेक जातियाँ।

वर्णाश्रम—*(न०)* १. हिन्दू समाज तथा व्यक्ति का वर्ण और आश्रम के अनुसार विभाग और उनके कर्त्तव्यों की व्यवस्था। २. वर्ण और आश्रम।

वर्णाश्रम-धर्म—*(न०)* १. वर्णाश्रम को मानने वालों के लिये तथा वर्णाश्रम को मान्य, ऐसी व्यवस्था पर रचा हुआ धर्म। २. हिन्दू धर्म। हिन्दू आर्य जाति का वर्णाश्रम धर्म।

वर्तन—*(न०)* १. आचरण। २. चाल-चलन। ३. व्यवहार।

वर्तनी—*(ना०)* १. शब्द के अक्षरों की योजना। शब्द का शुद्ध वर्ण-क्रम। जोड़णी। २. लिखने का ढंग। बरतनी। ३. शब्द का उच्चारण-क्रम। हिज्जे। स्पेलिंग। (व्या.)

वर्तमान—*(न०)* १. वर्तमान काल। चालू समय। २. समाचार। ३. क्रिया का काल। क्रिया शब्द का प्रवर्तमान (चालू) समय (व्या०)। *(वि०)* १. आधुनिक। २. चालू।

वर्ताव—*(न०)* १. बरताव। चाल-चलन। २. व्यवहार। ३. रीति।

वर्तुल—दे० वरतुल।

वर्धक—*(वि०)* बढ़ाने वाला। (प्रायः समासान्त में)।

वर्धमान—*(न०)* १. विष्णु। २. चौबीसवाँ तीर्थंकर महावीर। *(वि०)* १. बढ़ने वाला। २. बढ़ता हुआ।

वर्म—*(न०)* १. कवच। जिरह-बख्तर। २. घर।

वर्मा—*(न०)* १. क्षत्रिय का उपनाम। २. क्षत्रिय।

वर्ष—*(न०)* १. बारह महीने या ३६५ दिनों का समय। बरस। २. पृथ्वी का अमुक सात खंड। जैसे—भारतवर्ष। ३. पृथ्वी का द्वीपों वाला खंड। ४. वर्षा। ५. मेघ। बादल। ६. समय। जमाना।

वर्ष-गाँठ—दे० बरस-गांठ।

वर्ष-फल—दे० बरस-फळ।

वर्षा—*(ना०)* १. बरसात। मेह। २. वर्षा-ऋतु।

वर्षाभिनंदन—*(न०)* नये वर्ष का अभिनंदन।

वर्षासन—*(न०)* (राज्य की ओर से) आजीविका के लिये मिलने वाला वार्षिक धन। वर्षाशन।

वळ—*(ना०)* १. यात्रा में किया जाने वाला समूह भोजन। २. दूसरे गाँव को जाने वाली बारात का मार्ग की मंजिल (पड़ाव) पर (वर की ओर से) बनाया जाने वाला भोजन। ग्रामान्तर बारात का मार्ग-भोजन। ३. देवता को दी जाने वाली बलि। बलि भोजन। ४. ऐंठन। आंटो। ५. मुड़न। टेढ़ापन। वक्रता। ६. दिशा। ७. शत्रुता। ८. ओर। तरफ। ९. झुकाव। आग्रह। १०. करामात। युक्ति। ११. व्रण के कारण संधि स्थल में उठने वाली गाँठ।

वळगण—*(ना०)* भूत प्रेतादि का आवेश। झपट में आना।

वळगणी—*(क्रि०)* १. चिपकना। लगना। २. झपटना। लपकना। ३. भूतप्रेतादि का आवेश होना। ४. भूतप्रेतादि की झपट में आना। ५. आग्रहपूर्वक काम में लगना।

वळगत—*(ना०)* १. लौटाई । वापसी । २. आय । प्राप्ति । कमाई । ३. जमा । ४. जमा-पूँजी ।

वळ घालणी—*(मुहा०)* बल डालना ।

वळण—*(ना०)* १. पूनम आदि किसी निश्चित तिथि पर, महीने भर के खरीद-फरोख्त के सौदों के नफे-नुकसान की भुगतान या लेन-देन । २. नफे-नुकसान के चुकाने का काम । नफा-नुकसान की चुकवणी । ३. वलण का निश्चित दिन या समय । ४. लौट आने की क्रिया । लौटाई । वोलाभाव । ५. फेरा । चक्कर । ६. आचरण । ७. व्यवहार । ८. मन की वृत्ति । ९. टेढ़ाई । मरोड़ । १०. याद । स्मृति । ख्याल । ११. उलटी । कै । १२. उत्तर । १३. प्रतिकार ।

वळण-करणो—*(मुहा०)* १. लौटना । २. सुधि लेना । ३. याद करना ।

वळण-चुकावणी—*(मुहा०)* सौदों के नफे-नुकसान की रकम चुकती करना ।

वळण चूकणो—*(मुहा०)* सट्टे के माल की खरीद-फरोख्त में भावों की कमी वेशी के फर्क का लेन-देन होना ।

वळणी—*(ना०)* १. उत्तर । जवाब । २. वापस आने का भाव ।

वळणो—*(क्रि०)* १. झुकना । २. लौटना । ३. किसी वस्तु का टेढ़ा होना । मुड़ जाना । ४. उलटी होना । वमन होना । कै होना ।

वळतर—*(ना०)* १. प्रतिफल । २. लाभ । ३. आमदनी । आय । ४. ब्याज । ५. कमीशन । छूट । *(वि०)* बदले के रूप में मिलने वाला (रुपया, पैसा, काम, वस्तु आदि) । *(अव्य०)* बदले के रूप में ।

वळता—दे० 'वळतो' का बहु-वचन । दे० वळतो ।

वळताऊ—दे० वळतो ।

वळती—*(ना०)* १. उत्तर । जवाब । २. संदेश । समाचार । ३. पहुंच जाने की खबर । ४. लौटने की क्रिया । अवाई । *(अव्य०)* १. जवाब के रूप में । उत्तर स्वरूप । २. पुनः । फिर ।

वळती-छींया—दे० वळती छींया ।

वळतो—*(क्रि० वि०)* १. लौटता हुआ । वापिस आता हुआ । *(अव्य०)* जवाब में ।

वळदार—*(वि०)* जिसमें बल पड़ा हुआ हो । बल वाला । मोड़ वाला ।

वळ-पड़णो—*(मुहा०)* टेढ़ा होना ।

वलभी—*(न०)* १. मंडप । २. घुमटी । ३. छप्पर । छत ।

वलमीक—*(ना०)* १. दीमकों की बाँबी । २. उनके कारण लगा मिट्टी का ढेर । बिमोटा । ३. आदि कवि वाल्मीकि ऋषि ।

वलय—*(न०)* १. चूड़ी । २. कंकण । कंगन ३. कड़ा । ४. परिधि । घेरा ।

वळळाटो—*(न०)* १. करुणापूर्ण रुदन । २. हायबोय । हाय-तोबा ।

वळ-वळ—दे० वळोवळ ।

वळ-वळाट—*(न०)* १. व्यर्थ की बातें । बकवाद । २. दुख की बातें । वेदना-प्रकाशन । ३. रुदन ।

वळवळाटो—दे० वळवळाट ।

वळा—*(ब०व०)* १. झोंपड़े को छाने के लिये छप्पर के नीचे बाँधी जाने वाली लकड़ियाँ । *(ब०)* ओर । तरफ ।

वला—*(ना०)* १. एक प्रियार्थक सम्बोधन जो प्रायः स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है ।

(वि०) १. प्यारा। २. प्यारी। ३. वल्लभ। प्रियतम।

वळाको—*(न०)* १. लौटकर या लौटते हुए आना। २. चक्कर। फेरा। ३. पुनः आना। दूसरी बार आने की क्रिया या भाव।

वलाजी—दे० वला।

वळामण—*(न०)* १. ढंग। तरीका। २. सुप्रवृत्ति। ३. विवेक। ४. विनय-पूर्वक आज्ञा का पालन करना तथा सुरुचि और व्यवस्थित रूप से काम करना। ५. काम करने का सही तरीका या सूझ। *(वि०)* विवेक सम्मत।

वळामणी—*(ना०)* लौटने की क्रिया या भाव। लौटाई। **वोळावण**।

वळाऊ—*(वि०)* १. पैदल यात्रा में साथ में लिया जाने वाला रक्षक। **वोळाऊ**। २. लौटने वाला।

वळार—दे० वराळ।

वळावो—*(न०)* १. पुनः आने की क्रिया। **वळाको**। २. आँटा। फेरा।

वळाँ—*(न०)* ओर। तरफ।

वळाँक—*(न०)* १. मोड़। २. परिवर्तन। ३. ढंग। तरीका।

वळांटो—*(न०)* शरीर के किसी भाग में होने वाली ऐंठन। **वांइटो**।

वळाँ-वळाँ—*(अव्य०)* १. चारों ओर को। २. चारों ओर से। ३. चारों ओर। सभी ओर।

वळि—*(अव्य०)* १. फिर। और। पुनः। २. चाहे तो।

वळित-पूंछ—*(न०)* कुत्ता। **कूतरो**।

वळियो—*(न०)* १. भूमि का स्तर। जमीन की सतह। परत। २. जमीन के अन्दर बहने वाले पानी का प्रवाह। ३. पसीने के प्रवाह से शरीर के मैल से बनी हुई रेखा। ४. लोक-प्रवाह। लोक मनोवृत्ति। मन की लहर। ६. आवर्तन। चक्कर। ७. परिवर्तन।

वळियो फिरणो—*(मुहा०)* १. जगत की शाश्वत गति-विधि में अन्तर आना। २. संसृति वातावरण में एक साथ परिवर्तन आना। ३. लोगों के पारंपरिक भावों और विचारों में परिवर्तन आना। ४. चक्र का उलटा फिरना शुरू होना। ५. समूल परिवर्तन होना। ६. पारस्परिक सहानुभूति, आत्मीयता, स्नेह और ममत्व में उलटा या सुलटा परिवर्तन होना।

वली—*(न०)* १. पीर। औलिया। २. पहुँचा हुआ फकीर। ३. साधु। ४. मालिक। ५. अल्लाह का प्यारा। ६. धर्मात्मा। ७. महात्मा।

वळी—*(ना०)* १. छप्परे के छत में लगने वाली एक मोटी लंबी लकड़ी। **बल्ली**। **मोभ**। *(अव्य०)* पुनः। **अवेर**। उपरांत।

वळीण—दे० वलींड।

वळींड—*(न०)* छप्पर वाली छत के नीचे लगी रहने वाली मोटी लंबी **बल्ली**।

वळींडो—दे० वळींड।

वळू—*(न०)* १. पक्ष। समर्थन। २. हिमायत। पक्षपात। ३. सहायता। *(अव्य०)* पक्ष में। समर्थन में।

वळे—*(अव्य०)* पुनः। फिर।

वळेरण—*(न०)* छप्परे को छाने के काम में लाई जाने वाली वे पतली लकड़ियाँ जो मोभ (बल्ली) के सहारे टिकी रहती है। इन्हीं लकड़ियों के ऊपर खपरैल बिछाये रहते हैं। **वळींड**। **वळींड**।

वळै—*(न०)* वलय । कंकण । *(अव्य०)* १. पुनः । फिर । २. और । अधिक ।

वळो—*(न०)* १. छप्पर छाने में काम में आने वाली लकड़ी । वळेरण (वळा-समूह) की लकड़ी । छप्पर की अनघड़ पीढ । २. पर्वत । ३. आडावळो (अरावली) पर्वत ।

वळो-वळ—*(क्रि०वि०)* १. इधर-उधर । २. चारों ओर ।

वल्द—*(न०)* पुत्र । बेटा ।

वल्दीयत—*(ना०)* १. किसी का बेटा । किसी का बेटा होने का भाव । २. माँ-बाप का नाम ।

वल्लभ—*(न०)* पति । स्वामी । *(वि०)* प्रियतम । प्यारा ।

वल्लभ-संप्रदाय—*(न०)* वल्लभाचार्य द्वारा प्रणीत कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय । पुष्टि मार्ग ।

वल्लभा—*(ना०)* १. प्रिय पत्नी । कान्ता । २. प्रेयसी ।

वल्लभाचार्य—*(न०)* शुद्धाद्वैत-पुष्टिमार्ग (कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय) के आविष्कारक आचार्य ।

वल्लरी—*(ना०)* १. लता । बेलड़ी । २. मंजरी । मींजर ।

वल्लहो—दे० वल्लभ ।

वल्ली—*(ना०)* १. लता । वेलि । २. पृथ्वी ।

वव्वो—*(न०)* 'व' वर्ण का नाम । 'व' वर्ण । वकार ।

वश—*(वि०)* १. विमुग्ध । २. अधीन । ३. आज्ञाकारी । *(न०)* १. अधिकार । २. अधिकार की सीमा । ३. इच्छा । ४. नियमन । काबू ।

वशिष्ठ—*(न०)* एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो महाराज दशरथ के गुरु थे ।

वशीकरण—*(न०)* १. वश में करने का मंत्र । २. मंत्र-तंत्र द्वारा किसी को वश में करना । ३. छः प्रकारों के अभिचारों में से एक । *(वि०)* वश में करने वाला । वशीकर । दे० वसीकरण ।

वशी-भूत—*(वि०)* दूसरे के वश में आया हुआ । अधीन ।

वस—दे० वश ।

वसण—*(न०)* १. वस्त्र । कपड़ा । वसन । २. घर । मकान । ३. निवास ।

वसणो—*(क्रि०)* १. बसना । रहना । आबाद होना । २. मुकाम करना । ठहरना ।

वसत—दे० वस्तु ।

वसती—दे० वस्ती ।

वसत्र—दे० वस्त्र ।

वसन—दे० वसण ।

वसमो—*(वि०)* १. कठिन । २. खराब ।

वसंत—*(न०)* १. चैत-वैशाख मास की ऋतु । ऋतुराज । २. एक राग ।

वसंत-ऋतु—*(ना०)* चैत्र और वैशाख महीने की ऋतु । ऋतु-राज ।

वसंत-पंचमी—*(ना०)* १. माघ शुक्ल पंचमी । वसंत पांचम । २. वसंत के स्वागत का दिन ।

वसंत-पाँचम—दे० वसंत-पंचमी ।

वसंत-रुत—दे० वसंत-ऋतु ।

वसा—(न०) मेद । चरबी ।

वसाणो—*(क्रि०)* १. बसाना । २. नगर-निर्माण करना । ३. अन्य गांव में जाकर रहना ।

वसावणो—*(क्रि०)* १. किसी के लिये रोटी रोजी का प्रबन्ध करना । २. रहने का इन्तजाम करना । ३. नये घर में बसने के साथ आवश्यक सामग्री बसाना । दे० वसाणो ।

वसी—*(ना०)* १. जागीरदार के आश्रित लोग। २. वे लोग जिनको कम कीमत में या मुफ्त में जमीन देकर बसाया गया हो। ३. वे लोग जिनसे घर टैक्स नहीं लिया जाता हो। ४. जागीरदार के कुनबे, रिश्तेदार व नौकर चाकर लोग। ५. प्रजा। ६. बस्ती। आबादी।

वसीकर—*(वि०)* वश में करने वाला। वशीकर।

वसीकरण—*(न०)* १. वशीकरण। वश में करने या रखने की क्रिया, स्थिति या भाव। २. तांत्रिक उपचार। ३. निग्रह। दमन। दे० वशीकरण।

वसीठ—*(न०)* १. दूत। २. शूद्र। ३. वसिष्ठ ऋषि।

वसीभूत—दे० वशीभूत।

वसीयत—*(ना०)* मरने के पहिले अपनी सम्पत्ति आदि के बारे में किसी को देने के संबंध में की जाने वाली लिखावट या मौखिक इच्छा।

वसीयतनामो—*(न०)* वह दस्तावेज जिसमें वसीयत की शर्तें लिखी हों। वसीयतनामा।

वसीलो—*(न०)* १. किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग। २. किसी बड़े अधिकारी के साथ संबंध। २. संबंध। ३. जरिया। ४. लगाव। ५. साधन। लागबाग। उसीलो।

वसीवान—*(वि०)* १. वशवर्ती। वशीभूत। २. बसा हुआ। *(न०)* १. प्रजा। लोग। २. ऐसी प्रजा व व्यक्ति जो विशेष सेवाओं के कारण कर मुक्त होते हैं।

वसु—*(ना०)* १. पृथ्वी। २. धन-माल। ३. सुवर्ण। सोना। ४. सूर्य। ५. रश्मि। किरन। ६. जल। ७. वैदिक देवताओं का एक गण। ८. आठ देवताओं के मंडल का कोई देवता। ९. आठ की संख्या। *(वि०)* आठ।

वसुदेव—*(न०)* श्रीकृष्ण के पिता का नाम।

वसुधा—*(न०)* १. पृथ्वी। २. लक्ष्मी।

वसुह—दे० वसुधा।

वसुंधरा—*(ना०)* पृथ्वी। भूमि। जमीं।

वसू—*(ना०)* पृथ्वी। वसु। *(अव्य०)* वश में। अधिकार में।

वसूकरणो—*(क्रि०)* गाय-भैंस का दूध देना बंद होना।

वसूल—*(न०)* उधार पेटे चुकती हुई रकम। *(वि०)* १. मिला हुआ। प्राप्त। २. लिया हुआ। ३. उगाहा हुआ।

वसूलात—*(ना०)* १. वसूल करने का मेहनताना। २. वसूली। प्राप्ति।

वसूली—*(ना०)* १. वह धन जो प्राप्त किया गया हो। २. दूसरे से अपना धन प्राप्त करने की क्रिया। माँगते रुपयों की प्राप्ति। प्राप्ति। *(वि०)* प्राप्त करने योग्य।

वसूलो—*(न०)* बढ़ई का एक औजार। बांसोलो।

वसोलो—दे० वसूलो।

वस्त—दे० वस्तु।

वस्ती—*(ना०)* १. बसे हुये घरों का समूह। गाँव। २. आबादी। जनसंख्या। ३. नगर। ४. मूत्राशय। वस्ति। ५. परिवार।

वस्तु—*(ना०)* १. वस्तु। चीज। पदार्थ। २. वास्तविकता। ३. सत्य। ४. सार। ५. किसी काव्य या नाटक का कथानक। ६. इतिवृत। ७. वर्णन।

वस्तुतः—*(अव्य०)* १ वास्तव में। सही हकीकत। २. सचमुच। **साचाणी**।

वस्तु-स्थिति—*(ना०)* १. वास्तविक स्थिति। वास्तविकता। २. हकीकत। ३. सही हकीकत। **साचीबात**।

वस्तो—*(न०)* १. कागज, किताबें व बहियें आदि बाँध कर रखने का कपड़ा। वेष्टन। बस्ता। २. इस प्रकार बाँधी हुई पुस्तकें आदि।

वस्त्र—*(न०)* १. कपड़ा। वस्त्र। २. धोती, कोट, अंगरखा, पघड़ी आदि।

वह—दे० वो। दे० वहण।

वहड़—दे० वैड़।

वहड़की—दे० वैड़की।

वहण—*(न०)* १. प्रवाह। बहाव। वहन। २. संचरण। ३. मार्ग। पथ। ४. वाहन। ५. बहने की क्रिया।

वहणी—*(ना०)* नदी। सरिता।

वहणो—*(क्रि०)* १. चलना। प्रस्थान करना। २. पानी आदि तरल पदार्थों का बहना। बहना। ३. सदाचरण का पालन करना। ४. अनुकूल आचरण करना। अनुसरण करना। ५. अपनी तीक्ष्णता के कारण शस्त्र का उचित रूप से काम में आना। ६. प्रहार होना। ७. हवा का संचरित होना। ८. वहन करना। *(न०)* १. सुथार का एक औजार। २. धारदार औजार।

वहत—*(न०)* १. ऊंट। २. घोड़ा। ३. बैल। ४. सवारी। वाहन। वहतरू। **वैतरू**। ५. बैलगाड़ी। **बळदागाडी**। ६. भार बरदारी। ७. पथिक। ८. हवा। **वायरो**। ९. नदी। १०. नाव। ११. वस्तु। **वहोत**।

वहतरू—दे० वहित सं० २. यात्री। पथिक।

वहतवाण—*(न०)* १. रास्ते के ऊपर ले जाने वाले माल पर लिया जाने वाला कर। २. रास्ते पर चलने वाले वाहन आदि से लिया जाने वाला कर। ३. किसी राज्य में होकर ले जाये जाने वाले माल पर उस राज्य द्वारा लिया जाने वाला कर। **राहदारी**। ४. राज्य के अन्दर होकर माल ले जाने का परवाना। राहदारी की चिट्ठी।

वहतो-चीलो—*(अव्य०)* चालू परंपरा। चालू रिवाज।

वहनी—*(ना०)* अग्नि। वन्हि। **बासदे**।

वहम—*(न०)* १. बहम। संदेह। शंका। **सांसे**। २. असत्य मान्यता। ३. मन में होने वाली असत्य धारणा। ४. झूठा संदेह। ५. भ्रम। **भरम**।

वहम डणो—*(मुहा०)* १. शंका करना। शक करना। २. शक होना।

वहमी—*(वि०)* १. भ्रमित। २. वहम वाला। २. वहम रखने का स्वभाव वाला। **बहमीलो**। ४. झूठा संदेह करने वाला।

वहमीलो—दे० वहमी।

वहर—*(न०)* १. आरे का निशान। २. चीर। फटन। ३. चीर से निकलने वाला चूरा। ४. लकड़ी का चूरा। **चूरो**। ५. करौत से काटी हुई लकड़ी का टुकड़ा।

वहरणियो—*(वि०)* चीरने वाला। वहरने वाला। *(न०)* वहरने का औजार।

वहरणी—*(ना०)* करवत। छोटा आरा। **आरी**। **करौत**।

वहरणो—*(क्रि०)* १. करौत से काटना। चीरना। **चीरणो**। २. भिक्षा देना।

वैरणो । वैराणो (जैन) । दे० विहरणो ।

वहराई—*(ना०)* १. आरे से चीरने का काम । २. चीरने की मजदूरी ।

वहराणो—*(क्रि०)* १. भिक्षा देना । वैराणो । (जैन) । दे० विहराणो । २. चिरवाना । कटवाना ।

वहरामणी—दे० वहराई ।

वहरार—*(वि०)* चीरने वाला । वहरणियो ।

वहरावणो—दे० वहराणो ।

वहल—*(ना०)* १. सवारी की बैलगाड़ी । बैल । २. रथ ।

वहलायत—*(वि०)* कृपा-पात्र ।

वहलियो—*(न०)* १. बहली में जुतने वाला छोटे कद का बैल । २. रथ का बैल ।

वहली—दे० बहली ।

वहवार—*(न०)* १. व्यवहार । २. आचरण । ३. परिपाटी । रूढ़ि । ४. उपचार । ५. लेन-देन का काम । ६. संबंध । ७. दुनियादारी का संबंध । ८. दुनियादारी के काम ।

वहवारियो—*(वि०)* १. व्यवहार वाला । २. व्यवहार में चलने वाला । व्यवहार-कुशल । ३. साहूकार । ४. व्यापारी । *(न०)* १. भला आदमी । २. व्यवहार कुशल आदमी । ३. लेन-देन में बहुत साफ आदमी ।

वहाऊ—दे० वाहाऊ ।

वहाण—दे० व्हाण ।

वहाल—*(न०)* १. स्नेह । प्रेम । प्यार । २. वात्सल्य । व्हाल ।

वहाली—*(ना०)* १. प्रिया । वल्लभा । व्हाली । *(वि०)* प्रिय लगने वाली । प्यारी ।

वहालो—*(न०)* १. प्रियतम । २. वल्लभ । *(वि०)* प्यारा । व्हालो ।

वहावणो—*(क्रि०)* १. बहाना । पानी की धारा में डालना । २. प्रवाहित करना । २. व्यर्थ व्यय करना ।

वहिग—*(क्रि०भू०)* बहगया ।

वहित्र—*(ना०)* १. नाव । २. सवारी । वैतरू । वहतरू । ३. सेना । फौज ।

वहिल—*(न०)* १. बैल । २. बैलों वाला रथ । ३. रथ के आकार की बैलगाड़ी । बहल । बहली । ४. सवारी की बैलगाड़ी ।

वहिलउ—*(क्रि०वि०)* शीघ्र । जल्दी ।

वही—*(ना०)* १. हिसाब-किताब लिखने का चौपड़ा । बही । २. वंशावली लिखने का भाटों का चौपड़ा । दे० वोही ।

वहीर—*(क्रि०वि०)* १. विदा । प्रस्थान । गमन । २. बहिर । ३. प्रस्थान करने की तैयारी । *(ना०)* सेना ।

वही-वंचो—*(न०)* जातियों की वंशावली रखने और पढ़ कर सुनाने वाला भाट ।

वहु—*(ना०)* १. बेटे या छोटे भाई की पत्नी । वधू । २. पत्नी ।

वहुअड़—*(ना०)* १. नवोढ़ा । २. जवान बहू । ३. पुत्र-वधु के लिए प्यार का संबोधन । (प्रायः लोकगीतों में) ।

वहुआरी—*(ना०)* १. छोटे भाई, पुत्र, पौत्रादि की पत्नी । २. परिवार की जवान बहू । ३. बहू । वधू ।

वहुवड़—दे० वहुअड़ ।

वहेलियो—दे० वहलियो ।

वहेलो—*(अव्य०)* तुरंत । शीघ्र ।

वहो—*(न०)* १. प्रवाह । २. नाला । व्हालो ।

वहोरगत—दे० वोहरगत ।

वहोरणा—*(ना०)* १. भीख मांगना । भिक्षा । २. भिक्षा में मिली हुई वस्तु (जैन) ।

वहोरणो—*(क्रि०)* १. भिक्षा मांगना । २. भिक्षा देना । ३. सहन करना । खमणो । ४. संग्रह करना । संघरणो । ५. जोखिम उठाना । माथै लेणो ।

वहोरावणो—*(क्रि०)* भिक्षा देना (जैन साधु को) । वहरावणो ।

वहोरो—दे० वोहरो ।

वहोरी—दे० वोहरी ।

वह्नि—*(ना०)* अग्नि । वाहदे ।

वंक—*(वि०)* बांका । टेढ़ा । *(न०)* टेढ़ापन । बाँकापन ।

वंकट—दे० बंकट ।

वंकड़ो—*(वि०)* १. बाँका । साहसी । २. वीर । *(न०)* बाँकापन ।

वंकनाळ—*(ना०)* १. हठयोग के अनुसार शरीर की तीन मुख्य नाड़ियों में से वह जो नासिका से ब्रह्मरंध्र तक गई हुई मानी जाती है । २. सुनारों की एक छोटी नाल जिसका आगे का भाग टेढ़ा होता है और जिससे दीपक की लौ में फूंक मार कर किसी वस्तु को गरम किया जाता है । बंकनाल ।

वंको—*(वि०)* १. टेढ़ा । बाँका । २. बलशाली । वीर । ३. पुरुषार्थी । वीर । पराक्रमी । ४. साहसी । हिम्मती । बंका ।

वंग—*(न०)* १. ढंग । तरीका । २. सहज आदत । गुरू से पड़ी आदत । ३. अभ्यास । आदत । ४. जान-पहचान । ५. वश । अधिकार । ६. संयोग । अवसर । ७. मार्ग । युक्ति । ८. साधन । ९. अनुकूलता । १०. उपाय । ११. रहस्य ।

वंचक—*(न०)* ठग । धूर्त्त ।

वंचणो—*(क्रि०)* १. ठगना । धोखा देना । २. पढ़ा जाना । ३. बचना ।

वंचाणो—*(क्रि०)* १. पढ़ाना । २. पढ़ा जाना । ३. बचाना । *(क्रि०भू०)* पढ़ा गया ।

वंचाड़णो—*(क्रि०)* १. पढ़ाना । पढ़वाना । २. बचाना ।

वंचावणो—दे० वंचाड़णो ।

वंचित—*(वि०)* १. ठगाया हुआ । २. विमुख । ३. हीन । रहित ।

वंछ—*(ना०)* वांछा । इच्छा ।

वंछणो—*(क्रि०)* इच्छा करना । चाहना । वांछना ।

वंजणो—*(क्रि०)* १. भागना । भाग जाना । २. चले जाना ।

वंट—*(न०)* १. हिस्सा । भाग । २. टुकड़ा । ३. व्यापार आदि में साझा । बंट ।

वंटणो—*(क्रि०)* १. बाँटना । बाँटा जाना । ३. पीसना । ४. पीसा जाना । ५. पिसना ।

वंट-वाड़—*(न०)* १. हिस्सा । भाग । २. बाँटने का काम । वंटवाड़ा । ३. विभाजन । तकसीम ।

वंट-वाड़ो—*(न०)* बांटने की क्रिया या भाव । विभाजन ।

वंठी—*(वि०)* १. खराब । २. काम में ली हुई । ३. भोजन बनाने के काम में ली हुई । (बरतन आदि सामग्री) । खंटी । ४. अनाचारिणी । ५. कुलटा ।

६. ऋतुमती। रजस्वला। ७. बिगड़ी हुई। भ्रष्टा।

वंठो—*(वि०)* १. खराब। २. काम में लाया हुआ। ३. भोजन बनाने के समय काम में लिया हुआ (पात्र) **खंटो**। ४. अनाचारी। ५. अपवित्र। ६. भ्रष्ट। ७. दुश्चरित्र। ८. अयोग्य। ९. दुष्ट। १०. हीन। नीच। ११. झगड़ाखोर।

वंडी—*(ना०)* खुली छत के चारों ओर की छोटी भींत। मुंडेर। **विरंडी**।

वंडो—*(न०)* १. बड़ी वंडी। २. बरंडा। बरामदा। ३. कम्पाउंड। **चौभीतो**।

वंढळ—*(न०)* नपुंसक। *(वि०)* **वांढो**। अपरिणित।

वंतर—*(न०)* व्यंतर। भूत। प्रेत।

वंतरियो—दे० वांतरियो।

वंतरी—*(ना०)* व्यंतरी। भूतनी। प्रेतनी। **भूतणी**।

वंतळ—दे० वतळ।

वंताक—*(न०)* वृंताक। बैंगन। भंटा। **रींगणो**।

वंतूळो—*(न०)* वातचक्र। भतूला। **भूतेळो**। **भतूळियो**।

वंथळी—दे० वनथळी।

वंदण—(न०) प्रणाम। वंदन। नमस्कार। **धोक**। **जुहार**।

वंदण-माळ—दे० वंदर-माळ।

वंदणा—*(न०)* जैन साधु को किया जाने वाला नमस्कार। वंदना। वंदन। **वनणा**।

वंदणीय—दे० वंदनीय।

वंदणो—*(क्रि०)* वंदन करना। **धोक-देणो**।

वंदन—दे० वंदण।

वंदनीय—*(वि०)* वंदन करने योग्य।

वंदरमाळ—*(ना०)* १. विवाहोत्सव आदि पर पुष्प-पत्तों आदि की घर को सजाने के लिए बनाई हुई माला। २. पुष्प-पत्तों की घर के द्वार पर बाँधी जाने वाली मांगलिक-माला।

वंदावणो—*(क्रि०)* १. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर भेंट स्वरूप प्राप्त की जाने वाली नारियल आदि मांगलिक वस्तुओं को वंदन करके ग्रहण करना। २ वंदन करवाना। ३. वंदन करके ग्रहण करवाना। ४. मांगलिक अवसरों पर किसी विधि को वंदन करके प्रारंभ करना। ५. सगाई आदि का संबंध स्थापित करने के निमित्त नारियल आदि शुभ वस्तुओं को स्वीकृत्यार्थ भेजना। ६. सगाई आदि मांगलिक संबंधों को स्थापित करने के निमित्त कन्या-पक्ष की ओर से भेजे हुए नारियल आदि मांगलिक वस्तु को सम्मान के साथ स्वीकार करना। ७. वंदन करना। ८. गुरु, संत, महात्मा आदि को ससम्मान घर पर लाकर भेंट पूजा करना।

वंदे-मातरम्—*(न०)* १. भारत के राष्ट्रगीत। का नाम। २. एक जय घोष। *(अव्य०)* १. भारतमाता को वंदन करता हूँ। २. माता को वंदन करता हूँ।

वंदोळी—*(ना०)* विवाह के पूर्व वर और कन्या का निकाला जाने वाला एक रस्मी जुलूस। विवाह के पहले दिन वर और कन्या का मंदिरों में भेंट धरने व सिलोके बोलने के लिये रात्रि में निकलने वाली एक विशिष्ट शोभा-यात्रा। **वानोळी**।

वंदोळो—*(न०)* पाट-मुहूर्त और कंकण-बंधन के बाद विवाह के दिन तक वर तथा कन्या का संबन्धीजनों के यहाँ निमंत्रित होकर भोजनादि करने जाना और सायंकाल भोजन करने के बादघोड़े पर सवार हो जुलूस के साथ घर लौटाने का उत्सव। वानौळो। वांदोळो।

वंश—*(न०)* १. पुत्र-पौत्रादिक का क्रम। कुल। २. औलाद। पुत्र-पौत्रादि। ३. बाँस। ४. बांसुरी। मुरली।

वंश-उजाळक—*(वि०)* वंश को उज्ज्वल करने वाला। कुल-दीपक। *(न०)* १. पुत्र। २. कुल-वधू।

वंशज—*(वि०)* वंश में उत्पन्न। *(न०)* १. पुत्र। २. औलाद। संतान। ३. वारिस। उत्तराधिकारी। वारिसदार।

वंशधर—दे० वंसोधर।

वंश-परंपरा—*(ना०)* १. वंश-क्रम। २. वंश में चलती आरही रीति। खानदानी रिवाज।

वंश-भास्कर—*(न०)* सूर्यमल मिश्रण रचित एक प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ।

वंश-मर्यादा—*(ना०)* १. वंश के रीति-रिवाज। २. वंश में छोटे-बड़ों के प्रति पालन करने योग्य कर्त्तव्य।

वंशलोचन—दे० वंसलोचन।

वंश-वृक्ष—दे० वंशावळी।

वंश-वृद्धि—*(ना०)* वंश की वृद्धि।

वंश-वेलि—दे० वंशावळी।

वंशावली—*(ना०)* वंश के पुरुषों की जन्मानुक्रम से लिखी गई नामावली। वंश-वृक्ष। वंश-तालिका। पीढीनामो। पीढियावळी।

वंशी—*(वि०)* वंशज। *(ना०)* बाँसुरी। मुरली। बंसरी।

वंशीधर—*(न०)* श्रीकृष्ण।

वंशी-वट—*(न०)* श्रीकृष्ण कालीन वृंदावन का वह वट-वृक्ष जहाँ श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।

वंशीवाळो—*(न०)* श्रीकृष्ण।

वंशोद्धारक—दे० वंस उधारक।

वंस—दे० वंश।

वंश-उजाळक—*(वि०)* वंश को उज्ज्वल करने वाला। वंश की कीर्ति बढ़ाने वाला। *(न०)* १. पुत्र। २. पुत्रवधू।

वंस-उजाळण—दे० वंस-उजाळक।

वंस-उधारक—*(वि०)* वंश का उद्धार करने वाला।

वंस-उधारण—दे० वंस उधारक।

वंसरी—*(ना०)* बाँसुरी। वंसी।

वंसळी—दे० वंसरी।

वंसलोचन—*(ना०)* वंशलोचन। वंश-कपूर। बाँसकपूर।

वंस-वडाळ—*(न०)* १. वंश का बडेरा। २. जिसके नाम से वंश विख्यात होता हो। ३. वंश का मूल-पुरुष।

वंस-वधारण—*(वि०)* वंश को बढ़ाने वाला। *(न०)* पुत्र-पौत्रादि।

वंस-वधारो—*(न०)* वंश-वृद्धि।

वंस-विच्छेदक—*(वि०)* १. वंश का नाश करने वाला। २. वंश को कलंकित करने वाला।

वंस-वेल—*(ना०)* १. संतान। २. वंशावली।

वंसावळी—दे० वंशावळी।

वंसी—*(ना०)* बाँसुरी। मुरली।

वंसी-वाळो—*(न०)* श्रीकृष्ण।

वंसोधर—*(वि०)* १. वंश को धारण करने वाला। २. वंश की कीर्ति को बढ़ाने वाला। ३. वंश में उत्पन्न। *(न०)*

१. परिवार। कुल। २. वंशधर। ३. पुत्र।

वा—*(ना०)* १. वायु। पवन। २. प्राण। जीव। ३. वायु रोग या पीड़ा। ४. वाद। अधोवायु। ५. बास। गंध। मुहल्ला। ६. अंतर। दूरी। जैसे—खेतरवा। ७. बाड़ी। बाड़ी। *(अव्य०)* १. अथवा। या। कि। २. बस। अलम्। पर्याप्त।

वाइक—दे० वायक।

वाइक-चर—*(ना०)* कान। श्रवणेंद्रिय।

वाई—*(ना०)* १. वायु। पवन। २. वायु-रोग। ३. अधोवायु। पाद।

वाउओ—*(वि०)* १. बावला। बकवादी। २. सन्निपात का रोगी। वातग्रस्त। ३. पागल। बावळो।

वाउळो—दे० बावळो।

वाक—*(ना०)* १. चेप। लस। २. लौंच। ३. वाणी। वाचा। ४. जीभ। ५. सरस्वती। ६. वाक्य। ७. आँटे का चिकास।

वाकई—*(अव्य०)* सचमुच। वस्तुतः।

वाक-उछाळ—*(ना०)* बकवाद। *(वि०)* बकवादी। लबाड़ी।

वाक-उछाळू—*(ना०)* बकवादी। लबाड़ी। थूक-उछाळू।

वाकफियत—*(ना०)* जानकारी वाकिफीयत। परिचय। वाकवी।

वाकब—*(वि०)* १. वाकिफ। जानकार। २. अनुभवी। *(ना०)* जानकारी।

वाकवी—दे० वाकफियत।

वाकळ—*(वि०)* कुएँ का (पानी)।

वाकळ-पाणी—*(ना०)* कूपजल। कुएँ का पानी। २. जमीन के अन्दर का पानी। भूमि-जल। भुईजळ।

वाकानवीस—*(ना०)* १. समाचार भेजने-वाला। वाकिआनवीस। २. समाचार ले जाने वाला। ३. राजा की चिट्ठियाँ पहुँचाने वाला राज्य कर्मचारी।

वाकारणी—दे० वकारणी।

वाकिफ—*(वि०)* १. जानकार। २. अनुभवी। वाकब।

वाकी—*(ना०)* १. घटना। वाका। वाकिआ। २. वृत्तान्त।

वाक्य—*(ना०)* १. पूर्ण अर्थ बतलाने वाला शब्द समूह। व्याकरण के अनुसार क्रम से लगा हुआ सार्थक शब्द समूह, जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रगट किया जाता है। २. कथन। वचन।

वाक्य-रचना—*(ना०)* व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य बनाना। (व्याकरण)

वाक्य-विन्यास—*(ना०)* १. पदों को ठीक स्थान पर रखा जाना। २. वाक्य-विचार (व्याकरण)।

वाक्य-विचार—*(ना०)* वाक्य रचना का विवेचन। (व्याकरण)।

वाखड़ी—दे० बाखड़ी।

वाखर—दे० बाखर।

वाखळ—दे० बाखळ।

वाखाण—दे० वखाण।

वाखाणणी—दे० वखाणणी।

वाग—*(ना०)* १. वाटिका। बगीचा। २. सरस्वती। ३. वाणी। ४. रास। लगाम। मोहरी। बाग।

वागड़—*(न०)* १ राजस्थान में डूंगरपुर के आसपास का प्रदेश। २. कच्छ, सौराष्ट्र और मारवाड़ के बीच का रेतीला प्रदेश।

वागड़ी—*(ना०)* १. वागड़ प्रदेश की बोली। *(वि०)* वागड़ संबंधी।

वागडोर—दे० बागडोर।

वागणो—*(क्रि०)* १. लड़ना। लड़ाई करना। २. जूझना। ३. बजना। ४. चोट लगना। ५. वार होना। ६. वार करना।

वागर—*(ना०)* १. व्यवस्थित रूप से लगाया हुआ घास का बड़ा ढेर। २. वह स्थान जहाँ घास की अनेक वागरें पास-पास में खड़ी की हुई होती हैं। चारवाड़ो। ३. ऊँट की गर्दन की वह जगह जहाँ मद चूता है। ४. ऊँट की पूँछ के बाल।

वागरण—*(ना०)* १. वागरी की स्त्री। २. वागरी जाति की स्त्री।

वागरी—*(न०)* १. एक जाति। २. वागरी जाति का मनुष्य।

वागळ—*(ना०)* चमगादड़। चमचेड़।

वाग-हीण—*(वि०)* गूंगा। मूँक। गूंगो।

वागीश—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. बृहस्पति। ३. कवि। ४. वाग्मी। ५. पंडित।

वागीशा—*(ना०)* सरस्वती।

वागीश्वरी—*(ना०)* सरस्वती। शारदा।

वागीसरी—दे० वागीश्वरी।

वागुर—*(ना०)* १. जाल। फंदा। मृग को फंसाने का जाल। वागुरा।

वागेसरी—*(ना०)* १. वागेश्वरी। वागीश्वरी। सरस्वती। २. वाघेश्वरी। सिंहवाहिनी-देवी।

वागो—*(न०)* १. जामा। २. पोशाक। ३. रंग-बिरंगी पन्नियों (मालीपन्नों) को काट-छांट करके बनाई हुई पोशाक जैसी सज्जा जो तेल और सिंदूर से हनुमान की मूर्ति पर चिपकाई जाती हैं। ४. बादशाह, राजा या दूल्हे का मध्ययुगीन कलीदार घेर वाला पहनावा। बागो। अंगी। बागो। जामो।

वागोळ—*(ना०)* जुगाली। ओगाळ।

वागोळणो—*(क्रि०)* १. जुगाली करना। २. ओगाळणो। २. बहुत खाना। खाते ही रहना (व्यंग में)। ३. विचारना सोचना। ४. चुगलना।

वागोळो—*(न०)* गडरियों से लिया जाने वाला टैक्स।

वाग्दान—*(न०)* १. किसी को कुछ देने का वचन। २. कन्या को गलायत के लड़के के साथ विवाहने का दिया जाने वाला वचन। सगाई। सगपण।

वाघ—*(न०)* बाघ। व्याघ्र। शेर।

वाघण—*(ना०)* १. बाघ की मादा। व्याघ्री। शेरनी। २. तलवार।

वाघणी—दे० वाघण।

वाघनख—*(न०)* १. बाघ का नख। (यह दृष्टि दोष के निवारणार्थ बालक के गले में पहनाया जाता है)। २. हाथ की अंगुलियों में पहना जाने वाला एक शस्त्र।

वाघनखो—दे० वाघनख सं० २,

वाघमार—*(वि०)* १. बाघ को मारने वाला वीर। २. अपनी बड़ाई करने वाला। ३. जंगली बिल्ली। ४. बिल्ली।

वाघमूत—*(न०)* १. मनुष्य का पिशाब। मानव मूत्र। २. बाघ का मूत्र।

वाघंबर—*(न०)* व्याघ्र चर्म। बाघ की खाल।

वाघेलो—*(न०)* क्षत्रियों के वाघेला वंश का व्यक्ति ।

वाघेसरी—*(ना०)* बाघ के ऊपर सवारी करने वाली देवी । दुर्गा । व्याघ्रेश्वरी । वाघेश्वरी ।

वाङ्मय—*(न०)* साहित्य । *(वि०)* १. वचन संबंधी । २. जो पठन-पाठन का विषय हो ।

वाच—*(ना०)* १. वाणी । वाचा । २. बोली । ३. वचन । प्रतिज्ञा ।

वाचक—*(वि०)* १. पढ़ने वाला । **पढणियो** । बाँचने वाला । **वाचणियो** । २. पढ़कर सुनाने वाला । ३. बताने वाला । द्योतक । बोधक । *(ना०)* १. पंडित या साधुओं की एक उपाधि । २. नाम । संज्ञा । (व्या०)

वाचणो—*(क्रि०)* पढ़ना । **पढणो** ।

वाचन—*(न०)* पढ़ने का काम । पठन । २. प्रतिपादन । ३. आवृति ।

वाचनालय—*(न०)* दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक आदि समाचार-पत्र और साहित्य इत्यादि की पत्र-पत्रिकाएँ सार्वजनिक रूप से पढ़ने के लिये रखे जाते हों, वह स्थान । रीडिंग-रूम ।

वाच-साच—*(न०)* १. सत्य वाणी । २. प्रतिज्ञा । वचन । ३. सत्य भाषण । *(वि०)* सत्य-भाषी ।

वाचा—*(ना०)* १. वचन । प्रतिज्ञा । २. वाणी । बोली । ३. वचन । शब्द ।

वाचाछळ देवी—*(ना०)* एक लोक देवी ।

वाचा-बंध—*(वि०)* प्रतिज्ञा बद्ध । **वाचा-बंधियो** । वचनबद्ध ।

वाचा-बंधियो—प्रतिज्ञा बद्ध । **वाचाबंध** । वचन-बद्ध ।

वाचाळ—*(वि०)* १. व्यर्थ बोलने वाला । २. अधिक बोलने वाला ।

वाच्यार्थ—*(न०)* शब्द की अभिधाशक्ति से निकलने वाला मूल अर्थ । शब्द का नियत अर्थ ।

वाछड़—दे० बाछड़ ।

वाछड़की—दे० वाछड़ी ।

वाछड़ियो—दे० वाछड़ो ।

वाछड़ी—*(ना०)* गाय की बछिया । **बछड़ी** । लौरी । **लवारड़ी** । **वाछरड़ी** । **टोगड़ी** ।

वाछड़ू—दे० वाछड़ो ।

वाछड़ो—*(न०)* गाय का बछड़ा । लैरु । **लवार** । लवारियो । **वाछो** । **टोगड़ियो** ।

वाछरड़ी—दे० वाछड़ी ।

वाछरड़ो—दे० वाछड़ो ।

वाछंट—*(ना०)* अधोवायु । **पाद** । दे० वाछाँट ।

वाछाँट—*(ना०)* १. मकान के अन्दर या छत के नीचे हवा से उड़कर आई हुई वर्षा की बूँदें । २. अधोवायु । **पाद** । गोज ।

वाछी—दे० वाछड़ी ।

वाछूट—*(ना०)* १. अधोवायु । **पाद** । २. अधोवायु की आवाज । गोज ।

वाछूटणो—*(क्रि०)* १. अधोवायु निकलना । **पादणो** । २. आवाज के साथ अधोवायु का निकलना । अपानवायु का छूटना ।

वाछो—दे० वाछड़ो ।

वाज—*(न०)* १. घोड़ा । वाजि । २. वेग । ३. बल । शक्ति । ४. युद्ध । संग्राम । ५. यज्ञ । ६. घृत । घी । ७. अन्न । ८. बाण का पंख ।

वाजत्र—*(ना०)* १. घोड़ी। २. मंगलकार्य। उत्सव। ३. बाजा-गाजा। वाजित्र और इनकी धूम-धाम, जैसे—ब्याव-वाजत्र।

वाजणूं—दे० वाजणो।

वाजणो—*(क्रि०)* १. बजना। आवाज निकलना (वाद्य का)। २. युद्ध करना। जूझना। ३. अमुक समय होना। बजना (घड़ी में) ४. पवन का बहना। *(वि०)* १. प्रसिद्ध। मशहूर। छाबो। २. प्रगट। जाहिर। ३. बजने वाला। *(ना०)* बाजा (वाद्य)।

वाजबी—*(वि०)* १. वाजिब। योग्य। २. उचित। ३. मिश्रण वाली। जिसमें खोट हो। (सोना चांदी में)। ४. जरूरी।

वाजंतर—दे० वाजित्र।

वाजंत्र—दे० वाजित्र।

वाजंदो—*(वि०)* १. प्रसिद्ध। छाबो। वाजणो। (प्रायः निंदा या व्यंग्यार्थ में)। २. बजने वाला। २. बजाने योग्य।

वाजाळ—*(ना० ब० व०)* घोड़े। *(ना०)* १. घोड़ों की सेना। अश्व सेना। २. अश्वारोही। घुड़सवार। ३. घोड़ा। *(वि०)* १. घोड़े वाला। २. बाजेवाला। ३. बजने वाला। ४. प्रसिद्ध। प्रख्यात। ५. बजने वाला।

वाजाळो—दे० बाजाळ।

वाजित—दे० वाजित्र।

वाजित्र—*(ना०)* वाद्य। बाजा। बाजो। वाजित्र। वाद्ययन्त्र। तार वाद्य।

वाजिब—*(वि०)* १. उचित। २. ठीक। ३. जरूरी।

वाजिमा—*(ना०)* १. कुंए, नहर आदि द्वारा सिंचाई करके उत्पन्न किये हुये (गेहूं)। २. 'वाजिया' किस्म का (गेहूं)।

वाजिया-गेहूं—*(ना०ब०व०)* १. एक प्रकार का बढ़िया गेहूं। २. गेहूं की एक किस्म।

वाजित्र—*(ना०)* वाजित्र। बाजा। वाद्य। वाजंतर। वाजंत्र।

वाजिद—*(ना०)* १. घोड़ा। २. वाजीन्द्र। बढ़िया घोड़ा। ३. एक कवि का नाम।

वाजिदो—दे० वाजंदो।

वाजी—*(ना०)* १. घोड़ा। २. बाण। ३. हवि। ४. अड़सा।

वाजीकरण—*(ना०)* वीर्यवर्धक औषध प्रयोग। *(वि०)* वीर्यवर्धक। संभोग में घोड़े के समान शक्ति वाली औषध-प्रक्रिया।

वाजींद्र—*(ना०)* घोड़ा।

वाजो—*(ना०)* १. बाजा। २. वाद्य।

वाट—*(ना०)* १. मार्ग। वर्त्म। मारग। रास्ता। रस्तो। २. पगडंडी। डांडी। ३. पहिये की लकीर। लीको। ४. प्रतीक्षा। इंतजार। राह। ५. रुई में बल देकर बनाई हुई दीपक की बत्ती। बाती। ६. बाट। बटखरा। तोल। ७. जाल वृक्ष की मंजरी। ८. परम्परा।

वाटकी—*(ना०)* कटोरी। प्याली। वटकी।

वाटको—*(ना०)* कटोरा। प्याला। वटको।

वाट-जोवणी—*(मुह०)* प्रतीक्षा करना। राह देखना। वाटो-होवणो।

वाट-जोवणो—दे० वाट जोवणी।

वाटडली—दे० वाटड़ी।

वाटडलो—*(ना०)* मार्ग। रास्ता। वाट।

वाटड़ी—*(ना०)* १. प्रतीक्षा। २. मार्ग। राह। ३. पद मार्ग। पगडंडी। दे० वाटी सं. १।

वाटणो—*(क्रि०)* १. सिल पर पीसना। लसोटना। २. चूर्ण करना। ३. ग्राहकी होना। परचूनी माल की बिक्री होना। माल बेच कर कीमत प्राप्त करना।

वाटदह—*(न०)* विध्वंस। नाश। **वहवाट**।

वाट-भूलो—*(वि०)* १. पथभ्रष्ट। २. भ्रमित। ३. भूला हुआ।

वाट-वळ—दे० राहदारी।

वाट-वहणियो—*(न०)* बटाऊ। पथिक। पंथी। यात्री। **बटाऊ**। **वाटेरू**।

वाट-वाढणो—*(मुहा०)* मार्ग काटना। मार्ग तय करना। चलते रहना।

वाटिका—*(न०)* १. बगीचा। २. छोटा बगीचा। ३. वाड़ी। ४. कटोरी। **वाटकी**।

वाटी—*(ना०)* १. चक्की के चारों ओर का वह गोलाकार भाग जिसमें आटा गिरता है। **वाटी**। **गरंड**। २. प्रदेश सूचक एक प्रत्यय, जैसे—शेखावाटी, ईंदावाटी, तोरावाटी इत्यादि। दे० वाट। सं. ३, १४, ५.

वाटेड़—दे० वाटेरू।

वाटेरू—*(न०)* पथिक। यात्री। मुसाफिर। **मारगू**। **बटाऊ**।

वाटो—*(न०)* १. मिट्टी, चूने आदि की बनाई हुई बड़ी वाटी। दे० वाटी सं. १।

वाड़—*(ना०)* १. खेत, बगीचे आदि की सुरक्षा के लिए काँटों वाली टहनियों (प्रायः छोटी बोरड़ी) का **बनाया हुआ** घेरा। २. घेरा। आहाता। ३. कनात। ४. ईख। गन्ना। **सेलड़ी**। ५. ईख का खेत।

वाड़-काँटो—*(न०)* १. छोटी से छोटी वस्तु। नाकुछ चीज। वाड़ और काँटा। *(वि०)* परिचित-अपरिचित कोई जाण्यो-अजाण्यो

वाड़णो—*(क्रि०)* १. प्रवेश करना। घुसाना। २. धँसाना। **वाड़णो**।

वाड़ली—दे० वाड़लो।

वाड़लो—*(न०)* स्त्रियों का एक कंठाभूषण।

वाड़व—*(न०)* १. वंशावली लिखने बाँचने का धंधा करने वाली जाति व उस जाति का व्यक्ति। २. ब्राह्मण। ३. वाड़वाग्नि। ४. घोड़ी। ५. बिजली। दामिनी।

वाड़वी—*(ना०)* १. घोड़ी। अश्वी। २. ब्राह्मण स्त्री। ब्राह्मणी। **बामणी**।

वाड़वो—*(न०)* १. वंशावली लिखने वाली जाति का पुरुष। **वड़वो**। भाट। २. ब्राह्मण।

वाड़ा-बंधी—*(ना०)* १. अलग-अलग पक्षों में बँधाना। २. पक्षा-पक्षी। ३. समाज, जाति या पक्ष के रूप में गठबंधन। **तड़बंधी**। **धड़ाबंधी**।

वाड़ियो—*(न०)* १. शौच-शुद्धि का जल-पात्र। **छोटियो**। **बाहरलो छोटी**। २. स्त्रियों के पाखाना फिरने का बाड़ा। ३. छोटा बाड़ा। ४. खजूर भरने का सादड़ी का थैला। ५. खजूर भरा हुआ टोकरा।

वाड़ी—*(ना०)* १. अनेक परिवारों वाला ऐसा मोहल्ला जिसका निकास-प्रवेश द्वार एक ही हो। दरवाजा बंद मोहल्ला। **बाड़ी**। २. कुटुम्ब। परिवार। **बाड़ी**। ३. घर। ४. फुलवाड़ी। वाटिका। ५. वह खेत जिसमें साग-सब्जी, फल-फूल होते हो। साग-सब्जी वाला खेत। ६. सींचा जाने वाला खेत। **बाग**। ७. नित्य उपयोग में लिया जाने वाला घी या तेल का छोटा पात्र। रोटी चुपड़ने का रसोड़े का घृत-पात्र। **घीलोड़ी**। ८. घी परोसने का पात्र। ९. कनात। **बाड**।

वाड़ी-गुआड़ी—*(ना०)* १. बाल-बच्चों तथा भाई-बन्धुओं से सभर गृहस्थी। २. बड़े कुटुम्ब परिवार वाला घर।

वाड़ी-ग्वाड़ी—दे० वाड़ी-गुआड़ी।

वाड़ी-विस्तार—*(न०)* कुटुम्ब-कबीला।

वाडेली—दे० वाढाळी।

वाड़ो—*(न०)* १. बाड़ से घिरा हुआ स्थान। २. घर के पीछे की खुली जगह। ३. बकरा-बकरी गाय-भैंस आदि पशुओं को रखने बाँधने की जगह। बाड़ो। **नोहरो**। ४. पक्ष। पार्टी। **तड़**। ५. किसी एक ही सम्प्रदाय में अपने-अपने गुरुओं का अलग-अलग शिष्य-समुदाय। ६. गाँव के बाहर बाड़ से घेरा हुआ वह स्थान जहाँ स्त्री वर्ग शौचनिवृत्ति को जाता है। ७. गाँव। जैसे—भलरां-रो-वाड़ो, पाँतां-रो-वाड़ो। इत्यादि।

वाड़ोटियो—दे० वाड़ो सं. १, २, ३, ६।

वाढ—*(न०)* १. बाढ़ने (काटने) की क्रिया या भाव। २. बाढ़ने का चिन्ह। ३. टुकड़ा। ४. पेट की आंतों में होने वाली तीक्ष्ण पीड़ा। ५. धार। शस्त्र की धार। ६. मारकाट। लड़ाई। प्रहार। *(ना०)* १. शत्रुता। २. पानी की बाढ़। **पूर**। **रेल**।

वाढ-उतरणो—*(मुहा०)* तलवार के घाट उतरना।

वाढणो—*(क्रि०)* काटना। **कापणो**। **चीरणो**।

वाढाऊ—*(वि०)* १. खड्ग प्रहार करने वाला। २. खड्गधारी। ३. काटने योग्य। ४. काटने वाला। *(ना०)* १. तलवार। २. कटारी।

वाढाणी—दे० वाढाळी।

वाढाळ—*(ना०)* १. तलवार। २. कटारी।

वाढाळ-धर—*(वि०)* तलवार धारण करने वाला। खड्गधारी।

वाढाळी—*(ना०)* १. कटारी। २. तलवार। **तरवार**।

वाढाळो—*(वि०)* १. खड्गधारी। शस्त्रधारी। २. शस्त्र चलाने वाला। ३. शस्त्र चलाने में कुशल। ४. पराक्रमी। वीर। **जोरावर**। *(न०)* १. युद्ध। लड़ाई। २. संहार। नाश।

वाढियोड़ो—*(भू० कृ०)* कटा हुआ।

वाण—*(न०)* १. मूंज। २. मूंज की रस्सी। ३. खाट बुनने की रस्सी। **बाण**। ४. विमान। वाहन। *(ना०)* १ वाणी। २. सरस्वती। ३. भाषा। ४. बैलगाड़ी। ब्हाण। ५. चारण। ६. बनियापना। ७. मर्यादा। ८. शक्ल। ९. स्वभाव। प्रकृति।

वाणक—*(ना०)* १. आकृति। रूप। बानक। २. मुँह। ३. वेश। भेस। बानक।

वाणिज—*(न०)* १. वणिक। २. वाणिज्य।

वाणिज्य—*(न०)* व्यापार। **वैपार**।

वाणियो—*(न०)* वणिक। बनिया।

वाणी—*(ना०)* १. सरस्वती। २. वाक्-शक्ति। ३. मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। ४. बोली। ५. ब्रह्मज्ञानी संतों के रचे हुए आध्यात्म-पद। ६. जीभ। ७. सुर। स्वर।

वाणीकी—*(वि०)* १. वाणिज्य संबंधी। २. वणिक संबंधी। *(ना०)* १. बेलीटी, सिद्धो, चिणायकाँ आदि पाठ, तथा पट्टी-पहाड़े, जोड़, (योग) से लगाकर कटमे-ब्याज तक हिसाबी-गुर इत्यादि एवं लेखा-जोखा (गणित) और बही-खाता आदि लिखने की पढ़ाई। **वाणीकी-भणत**। २. वणिक लिपि। बही-खातों की लिपि। महाजनी। ३. मारवाड़ी लिपि।

वाणीकी-पोसाळ—*(ना०)* नित्य व्यवहार के शिक्षण की लोकोपयोगी पाठशाला। पट्टी-पहाड़े, बही खाते लिखने और ब्याज आदि सभी प्रकार की गणित एव गुर आदि सिखाये जाने की पाठशाला। वाणीकी पाठशाला।

वाणीकी-भणत—दे० वाणीकी *(ना०)* संख्या १, २, ३।

वाणो—*(न०)* १. कपड़े की बुनावट का वह धागा जो आड़े बल भरा जाता है। कपड़े की चौड़ाई का धागा। 'ताणो' का उलटा शब्द। २. कपड़े की चौड़ाई। ३. पाणी के घड़े अथवा घास आदि से भरी हुई बैलगाड़ी। गाडा। **गाडो**।

वात—*(ना०)* १. वार्तालाप। बातचीत। २. कथन। **वचन**। ३. प्रसंग। चर्चा। ४. अफवाह। किंवदंती। ५. हकीकत। ६. खबर। **समाचार**। ७. वृतान्त। ८. परामर्श। सलाह। ९. कहानी। १०. आख्यानक। ११. उल्लेख। १२. वर्णन। १३. भाव। आशय। १४. तारीफ। १५. कारण। १६. विषय। १७. रहस्य। १८. वायु। हवा। १९. वायु रोग। २०. स्थिति।

वातकार—दे० वातगर।

वातकुंभ—*(न०)* हाथी के कुंभस्थल के सामने का (बिंदी के नीचे का) भाग।

वात-खोलणी—*(मुहा०)* भेद खोलना।

वातगर—*(न०)* १. कहानी कहने में निष्णात व्यक्ति। बात-फोश। २. बात-चीत। *(वि०)* बातें करने में कुशल। बातें करने वाला।

वातगरो—*(वि०)* बातों का रसिक। दे० बातगर।

वात-चीत—*(ना०)* १ वार्तालाप। संभाषण। २. गप्पें। ३. विचार-विमर्श।

वातड़ली—*(ना०)* बात। (लालित्यसूचक)।

वातड़ी—दे० वातड़ली।

वातण—दे० वातेरण।

वातप—*(न०)* हरिण। मृग। **अगलो**।

वात-पोस—*(न०)* १. बात अर्थात् कहानी कहने वाला विशेषज्ञ। बात-पोश। मनोरंजन के लिए कहानियाँ कहने वाला। **बातगर**। २. मनोरंजन की कहानियाँ कहने वाला। ३. राजा, ठाकुरों के खाली समय में कहानियाँ सुभाषित आदि सुनाकर मन बहलाने वाला व्यक्ति।

वातमांडणो—*(मुहा०)* कहानी कहना शुरु करना।

वात राखणी—*(मुहा०)* प्रतिष्ठा बचाना।

वात लड़ी—दे० वातड़ली।

वात वणींगो—*(वि०)* १. बातें बनाने वाला। गप्पी। २. निकम्मा।

वात-विगत—*(ना०)* १. हाल-हकीकत। २. समाचार। ३. बातचीत।

वातायण—*(न०)* १. झरोखा। वातायन। २. **बारी**। **खिड़की**। ३. हवा बारी।

वातायु—*(न०)* हरिण। **हिरणियो**। **मिरगो**।

वाताळ—*(वि०)* १. बातें करने वाला। बहुत या निरर्थक बातें करने वाला। बातूनी। २. बात रसिक। **वाताळियो**। **वाताळू**। **वातोकड़**।

वाताळंग—दे० वाताळ।

वाताळगो—*(न०)* १. बातचीत। वार्तालाप। २. मनोरंजन। मनोरंजन की बातचीत। ३. सलाह-मशविरा। परामर्श। ४. चर्चा। जिक्र।

वाचाळण—*(वि०)* बातें करने वाली। बहुत बातें करने वाली। बाताळी। वाचाल। वातेरण।

वाताळियो—दे० वाचाळ।

वाताळी—दे० वाताळणो। दे० वाताळण।

वातालू—दे० वाताळ।

वातावरण—*(न०)* १. पृथ्वी को घेरा हुआ वायु का आवरण। २. आसपास की परिस्थिति जिसका जीवन या अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता हो। ३. आस-पास के नैतिक या मानसिक संयोग। परिस्थिति।

वातियो—*(न०)* १. घोड़ी की जननेन्द्री। घोड़ी की योनि। २. घोड़े की मूत्रेंद्रिय।

वाती—*(ना०)* १. बत्ती। २. कपड़े का दवा-सिंचित टुकड़ा जो घाव में भरा जाता है।

वातुल—*(वि०)* १. वायु वाला। २. जिसकी बुद्धि वायु के प्रकोप के कारण अस्थिर रहती हो। वातग्रसित दिमाग वाला। बावळो। ३. वातग्रसित (शरीर)। वायु रोग वाला।

वातेरण—*(ना०)* १. बातपोश स्त्री। २. वाचाळ स्त्री। *(वि०)* बातें करने वाली। वाताळण।

वातोकड़—दे० वाताळ।

वातोकड़ी—दे० वाताळण।

वातोकड़ो—दे० वातोकड़।

वातोड़ियो—*(वि०)* १. बातूनी। २. बक-वादी। वातोकड़।

वात्सल्य—*(न०)* १. बड़ों का छोटों के प्रति प्रेम। २. अपनी संतान के प्रति माता-पिता का स्नेह। प्रेम। ३. स्नेह। प्रेम। ४. ममता।

वात्स्यायन—*(न०)* १. न्यायसूत्रों के भाष्यकार एक ऋषि। २. काम-सूत्र के रचयिता एक विद्वान् पंडित।

वाद—*(न०)* १. कलह। २. युद्ध। ३. तकरार। बोल-चाल। विवाद। चढ़ा-चढ़ी। ४. उक्ति। ५. दलील। तर्क। ६. बहस। तर्क-वितर्क। ७. निंदा। ८. चर्चा। ९. शास्त्रार्थ। १० तत्वज्ञों द्वारा निश्चित किया हुआ कोई मत या सिद्धान्त। जैसे—सांख्यवाद। अद्वैत-वाद। ११. हठ। जिद। १२. मुकदमा।

वादक—*(वि०)* १. वाद्य बजाने वाला। २. वाद-विवाद करने वाला।

वादण—*(ना०)* वादी की स्त्री।

वादणो—*(क्रि०)* १. तकरार करना। बोल-चाल करना। झगड़ना। २. बहस करना। जिद करना। ३. होड़ करना। ४. युद्ध करना। ५. शर्त लगाना।

वादन—*(न०)* बजाने का उपकरण। वाद्य। बाजा।

वाद-प्रतिवाद—*(न०)* १. उत्तर-प्रत्युत्तर। बहस। २. खंडन-मंडन। ३. वाद-विवाद।

वाद माँडणो—*(मुहा०)* १. लड़ाई करना। २. जबान करना। विवाद करना।

वादळ—*(न०)* बादल। मेघ।

वादळवाई—*(ना०)* १. बादलों का अधिक समय तक छाया रहना (खास कर ठंडी ऋतु में)। २. बादलों का होना। ३. मेघाच्छन्न।

वादळी—*(ना०)* १. बदली। छोटा बादल। २. एक छोटा जल-पात्र। *(वि०)* बादल जैसे रंग का।

वादळो—*(न०)* १. बादल। मेघ। २. यात्रा में साथ रखने का जसद का बना एक

जल-पात्र । ३. झरकनी । घोटा । किनारी । बादला । ४. सोने या चाँदी का चमकीला चिपटा तार ।

वाद-विवाद—*(न०)* १. चर्चा । बहस । २. तर्क-वितर्क । ३. सवाल-जवाब । ४. झगड़ा । तकरार ।

वादंत्र—*(न०)* वाद्य-यंत्र । बाजा ।

वादानुवाद—दे० वाद प्रतिवाद ।

वादित्र—*(न०)* वाद्य । बाजा ।

वादी—*(न०)* १. न्यायालय में मुकदमा प्रस्तुत करने वाला मुद्दई । फरियादी । २. एक नट जाति जो रस्सी पर चलने-नाचने, बाँसों के सहारे चलने-दौड़ने आदि के कौशल और विस्मयपूर्ण कौतुक दिखाने का काम करती है । बादीगर । ३. इस जाति का व्यक्ति । बादीगर । ४. वायु-रोग । वात-विकार । ५. वाद-संबंधी बोलनेवाला । वक्ता । ६. एक प्रत्यय, जैसे—सत्यवादी । ७ विचारार्थ विषय उपस्थित करने वाला ।

वादीगर—*(न०)* १. एक नट जाति । दे० वादी सं० २. ३. बादी । ३. बाजीगर ।

वादीलो—*(न०)* १. गीतों के रसिक नायक का एक विशेषण । स्वाभिमानी रसिक नायक । *(वि०)* १. वात-रोग ग्रसित । २. वाद करने वाला । ३. वाद विजयी । ४. मस्त । मौजी । ५. छैल । रंगीला । ६. हठीला । जिद्दी । ७. बाचाल । बकवादी । ८. फगल । पहलवी ।

वादो—दे० बादी ।

वादो-वाद—*(न०)* १. स्पर्धा प्रतियोगिता । २. होड़ । दे० वाद-विवाद । *(अव्य०)* वाद-विवाद में । स्पर्धा में ।

वाद्य—*(न०)* बाजा ।

वाध—*(वि०)* १. अधिक । बहुत । २. वृद्धि ।

वाधड़ी—दे० बाधरी ।

वाधणो—*(क्रि०)* १. बढ़ना । २. बढ़ाना । ३. रस्सा । रांदू ।

वाधर—दे० बाधरी ।

वाधरी—*(ना०)* चमड़े की लंबी पट्टी या रस्सी । बाधर ।

वाधी—*(ना०)* १. बोहरे (ऋणद) और आसामी (ऋणी-कृषक) के बीच की एक प्रथा जिसमें कृषक को खाने अथवा बोने के लिए दिये गये मोटे अनाज (बाजरी, जुआर आदि) के बदले में गेहूं की फसल पर कृषक से ड्योढा या दुगुना (जैसी शर्त) नये गेहूँ लिया जाता है । २. बाधी के रूप में लिया जाने वाला अनाज । ३. चमड़े की रस्सी ।

वाधू—*(वि०)* अधिक । ज्यादा ।

वाधेत—दे० बाधेत ।

वाधेपो—*(न०)* १. वंश-वृद्धि । संतान-वृद्धि । २. आबादी । ३. वृद्धि । बढ़ापन । आधिक्य । ४. समृद्धि ।

वाधो—*(न०)* १. वृद्धि । २. लाभ । नफा । दे० बाधी सं० १, २.

वाधो-घाटो—*(न०)* १. लाभ और हानि । हानि-लाभ । २. उन्नति-अवनति । ३. बढ़ना-घटना । घाटो-बाधो ।

वाधोतर—दे० बधोतर ।

वान—*(ना०)* १. रत्न । मणि । जवाहर । २. कांति । शोभा । ३. रूप । शक्ल । ४. शरीर सौष्ठव । ५. बनाव-सिंगार । ६. सज-धज । ७. सजावट । ८. यश । कीर्ति । ९. ब्याहे जाने वाले वर-कन्या को कुलदेव दुलहिन के रूप में प्रतिष्ठित

करने का उत्सव। १०. विवाह के पूर्व वर तथा कन्या के तेल-पीठी चढ़ाने (वाने बिठाने) के मुहूर्त्त के दिन किया जाने वाला मांगलिक आचार। पाटोत्सव। ११. दुलहा, दुलहिन को सगे-संबंधी और मित्रों इत्यादि की ओर से भेजी जाने वाली मिष्टान्न आदि की भेंट। सौगात। वायन। १२. एक प्रत्यय जो संज्ञाओं के अन्त में लग कर उस शब्द का विशेषण रूप बनाता है जैसे धनवान, भाग्यवान, बलवान आदि। १३. वर्ण। रंग। १४. घना-जंगल। *(वि०)* वन संबंधी। वन का।

वानक—दे० वाणक।

वानगी—*(ना०)* १. नमूना। २. कोई अद्‌भुत वस्तु। ३. रंग-रूप। ४. आदर्श।

वानप्रस्थ—*(वि०)* घर-बार छोड़कर वन में रहने संबंधी जीवन का तीसरा विभाग।

वान-प्रस्थाश्रम—*(न०)* गृहस्थाश्रम के बाद का आश्रम। तीसरा आश्रम। वन में रह कर संन्यास की तैयारी करने का आश्रम। भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसमें वन में रहने का विधान किया गया है।

वान-भरणो—*(मुहा०)* दूल्हा-दुल्हिन के लिये मिष्टान्न आदि की भेंट भेजना।

वानर-माळ—दे० वंदण-माळ।

वानरी—दे० वांदरी।

वानरो—दे० वांदरो।

वाना—*(न०ब०व०)* १. जिनके संबंध में कुछ कहा जाय। विषय। २. प्रसंग। चर्चाएँ। ३. काम। बातें। ४. समस्याएं। ५. व्यवहार। ६. कामनाएँ। इच्छाएँ। ७. वस्तुएँ। ८. प्रकार। ९. अनेक प्रकार। १०. उपाय। ११. खातिर। सम्मान। १२. रत्न। नगीनो।

वाना-जडित—*(वि०)* रत्न-जड़ित। जड़ाऊ।

वानायु—*(न०)* एक देश का नाम।

वानायुज—*(न०)* १. घोड़ा। २. वानायु देश का घोड़ा।

वानी—*(ना०)* राख। भस्म। ठाडी।

वानेत—*(न०)* १. मुखिया। २. वीर पुरुष।

वानैं—*(सर्व०)* उनको। उणांनैं। वणांनैं।

वानो—*(न०)* १. लड़का या लड़की के पाणिग्रहण से पूर्व विवाह स्थापन की विधि के प्रारम्भिक मुहूर्त्त का उत्सव। विवाह का मंगलारंभ। २. भेष। वेश। पहनावा। ३. वस्तु। ४. बात। काम। ५. उपकार। अहसान। ६. उपाय। प्रयत्न। ७. महत्व। ८. महिमा।

वानो वधारणो—*(मुहा०)* १. महिमा बढ़ाना। २. प्रशंसा करना। ३. सम्मान करना।

वापरणो—*(क्रि०)* १. काम में लेना। उपयोग में लेना। २. खर्च करना।

वापरत—*(ना०)* १. वापरने का काम। उपयोग। वपरास। २. खर्च। उठाव। वपरास। ३. आवश्यकता।

वापरास—दे० वपरास।

वापस—*(वि०)* लौट कर अपने स्थान पर आया हुआ। *(अव्य०)* पीछा। पाछो।

वापी—*(ना०)* बावली। वापिका। बावड़ी। बाव।

वाम—*(ना०)* स्त्री। वामा। लुगाई। *(वि०)* १. बांया। दाहिने का उलटा।

डावो। २. सुन्दर। ३. उलटा। प्रतिकूल। ४. अधम। नीच। हळकट।

वामण—दे० वामन।

वामण-डंड—(न०) वामन-दण्ड।

वामण-विसन—(न०) १. विष्णु का वामन अवतार। २. महाराणा कुंभा का विरुद।

वामणो—(वि०) १. बौना। ठिगना। ठींगणो। २. बांया। ३. बांये हाथ से काम करने के अभ्यास वाला। खाबलो। खाबळियो।

वामन—(न०) महर्षि कश्यप और उनकी पत्नी अदिति के पुत्र विष्णु का पाँचवाँ अवतार। वामन अवतार। (वि०) बौना। ठींगणो।

वामन-पुराण—(न०) अठारह पुराण ग्रंथों में का एक।

वाम-मार्ग—(न०) पंचमकारों पर आधारित एक तांत्रिक मत। वाम-पंथ।

वामस—दे० बामच।

वामा—(ना०) १. नारी। स्त्री। २. सुंदर स्त्री। ३. लक्ष्मी। ४. सरस्वती। ५. शृगाली। गीदड़ी। ६. गधी। ७. घोड़ी। ८. पत्नी।

वामाचार—(न०) १. विरुद्ध आचरण। २. वाम-पंथ। वाम-मार्ग।

वामी—(वि०) बाँयी। डावी। (ना०) १. गीदड़ी। २. गधी। ३. घोड़ी। ४. हथिनी।

वामी-पाघ—(ना०) १. बाँए हाथ से बाँधी जाने वाली पघड़ी। २. राठौड़ राजाओं की पघड़ी।

वामी-बंध—(न०) १. बाँयें पेच की पघड़ी बांधने वाला मारवाड़ का राठौड़ क्षत्री। २. मारवाड़ के राठौड़ शासकों का एक काव्यगत नाम। खांगीबंध। ३. राठौड़ क्षत्री। (वि०) बाँयें पेच की पघड़ी या साफा बांधने वाला।

वामीबंध-खिड़किया-पाघ—(ना०) जोधपुर (मारवाड़) के राजाओं के सिर पर धारण करने की एक प्रकार की बाँयें पेच की (बंधी-बंधाई) पघड़ी।

वामो—(वि०) १. बांया। डावो। २. टेढ़ा। ३. प्रतिकूल। ४. उलटा। ऊंधो।

वाय—(ना०) १. वायु। पवन। वायरो। २. वायु-रोग। वातपीड़ा। ३. अधोवायु। पाद।

वायक—(न०) १. वचन। प्रतिज्ञा। २. वचन। बोल। उच्चार। ३. वाक्य।

वायका—(ना०) १. लोकवाणी। २. लोकवाणी पर प्रसारित समाचार। उड़ती खबर। अफवाह। बात। ३. वचन। बोल। ४. भविष्य कथन। ५. वाणी। बोली।

वाय-गोळो—(न०) पेट का एक वायु-रोग। वायुगोला।

वायड़ाई—(ना०) १. असंगत बातें। २. वायड़ापणो। ३. हठ। जिद। ४. मूर्खाई। ५. पागलपन।

वायड़ो—(वि०) १. बहुत बोलने वाला। वाचाल। २. असंगत बातें करने वाला। ३. हठी। हठीलो। जिद्दी। ४. मूर्ख। ५. वात-ग्रस्त। वेंडो। ६. पेट में वायु उत्पन्न करे वैसा। ७. पागल।

वायणी—(ना०) वेश्या। पातर।

वायदो—(न०) १. प्रतिज्ञा। २. अवधि। मुद्दत। ३. अमुक मुद्दत पर अमुक भाव

से माल लेने-देने (खरीदने-बेचने) का सट्टे का व्यापार। वायदे का सौदा।

वायन—दे० बान सं० १० और ११.

वायनंद—*(ना०)* हनुमान।

वाय-भक्खो—*(वि०)* १. वायु परमाणुओं द्वारा दूषित (भोजन, फल इत्यादि)। २. वायु भक्षण करने वाला (सर्प)।

वायरो—*(ना०)* १. पवन। वायु। २. वातावरण।

वायल—*(ना०)* १. एक वस्त्र।

वायविड़ंग—*(ना०)* १. एक काष्ठ औषधि।

वायव्य—*(ना०)* उत्तर और पश्चिम के बीच की दिशा। *(वि०)* वायु संबंधी।

वायस—*(ना०)* १. कौआ। कागलो। २. अगर का वृक्ष। ३. तारपीन।

वायस-सात्रव—*(ना०)* उल्लू। वायसारी। वायस-अरि। घुग्घु। गूघू।

वाय-सुरणो—*(मुहा०)* अधो वायु का आवाज के साथ निकलना। पाद आना। पादणो।

वायु—*(ना०)* १. पवन। वायु। २. पेट का वायु-रोग। वायु-गोळो। ३. पंच भूतों में का एक। ४. वायु-पीड़ा। वाजी।

वायु-पुत्र—*(ना०)* १. हनुमान। २. भीम।

वायु-पुराण—*(ना०)* अठारह पुराणों में का एक पुराण ग्रंथ।

वायु-भक्षके—*(ना०)* सर्प। साँप। सापं।

वायु-मंडळ—*(ना०)* १. वातावरण। २. पृथ्वी के चारों ओर गोलाकार वाष्पीय आवरण।

वायु-विकार—*(ना०)* त्रिदोषों में वातदोष के न्यूनाधिक से होने वाला रोग। वातविकार।

वायु-सखी—*(ना०)* अग्नि। वासवे।

वार—*(ना०)* १. सप्ताह का प्रत्येक दिन। २. समय। काल। ३. दिन। ४. अवसर। मौका। ४. देर। विलंब। शासन-काल। ७. हमला। आक्रमण। ८. दफा। बार। फेरा। ९. बारी। समय। १०. एक नाप। गज। ११. वारि। पानी।

वारवां—*(अव्य०)* वार एक (एक बार) का काव्य में प्रयुक्त संक्षिप्त रूप। एक बार। *(वि०)* १. वार करने वाला। २. वार रोकने वाला। ३. निषेध करने वाला। रोकने वाला।

वारकन्या—*(ना०)* वेश्या। पातर।

वारगेह—*(ना०)* तंबू। शामियाना।

वारगी—*(अव्य०)* दफा। वार। *(ना०)* एक अनुसूचित जाति। वारगी। विरगी।

वारज—दे० वारिज।

वार-जाया—*(ना०)* वेश्या। पातर।

वारण—*(ना०)* १. हाथी। २. कवच। ३. अंकुश। *(ना०)* १. मनाही। निषेध। २. रोक। रुकावट। बाधा।

वारणा—*(ना०)* १. उत्सर्ग। निछावर। वारना। २. बत्तीस प्रकार के व्यंजन पदार्थ जैसे—बत्तीस वारणा, छत्तीस सारणा।

वारणो—*(ना०)* १. विवाह करके लौट आने पर अति निकट के स्नेही या कुटुंबी जनों के द्वारा वर-वधू को दिये जाने वाले भोजन का एक विशेष समारोह। २. वारणा। उत्सर्ग। वैवाहिक मंगल कामना का समारोह। २. द्वार। बारणो। *(क्रि०)* १. न्योछावर होना। २. निछरावल करना। ३. रोकना।

अटकाना। ४. मना करना। निषेध करना।

वार-तहवार—*(ना०)* वार-त्यौहार। उत्सव या पर्व का दिन। शुभ दिन। पर्व। *(अव्य०)* १. त्यौहार के दिन। २. त्यौहार पर। ३. कभी-कभी।

वारता—*(ना०)* १. आख्यानक। २. कथा। ३. बात। ३. हकीकत। वृतान्त।

वार-त्यौहार—दे० वार-तहवार।

वारद—*(न०)* बादल। मेघ। बादळो। वारिद।

वारदात—*(ना०)* १. दुर्घटना। २. लड़ाई-झगड़ा। दंगा-फसाद।

वारनिस—*(न०)* वह रोगन जिसे किसी वस्तु पर लगाने से चमक आवे।

वार-परब—*(न०)* १. वार-पर्व। पर्व-दिन। उत्सव। २. पुण्यकाल।

वारमवार—दे० बारंबार।

वार-वधू—*(ना०)* १. वेश्या। रंडी। पातर। २. नगर-नायिका।

वार-वनिता—दे० वार-वधू।

वार-विलासिनी—दे० वार-वधू।

वारस—*(न०)* उत्तराधिकारी। वारिस। रिक्थभागी।

वारसदार—दे० वारस।

वार-सुंदरी—दे० वार-वधू।

वारसो—*(न०)* उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।

वारहर—*(न०)* समुद्र। उदधि। वारिधर।

वारंग—*(ना०)* १. अप्सरा। २. वारांगना। वारांगणा। पातर।

वारंगणा—*(ना०)* वारांगना। वेश्या। पातर। वारंग।

वारंगार—*(न०)* मंगलवार।

वारंट—*(न०)* अपराधी को पकड़ने अथवा तलाशी लेने का सरकारी आज्ञा-पत्र।

वारंवार—*(अव्य०)* पुनः-पुनः। बार-बार।

वाराणसी—*(ना०)* गंगा के किनारे वरुणा और असी नदियों के संगम पर स्थित प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र। काशीपुरी। हिन्दुओं का अति प्राचीन और प्रख्यात तीर्थ-स्थान। काशी।

वारा-तारा—*(न०ब०व०)* १. जीवन का महत्व। २. प्रभावपूर्ण जीवन काल। ३. जीवन के महत्वपूर्ण काम या बातें। ४. किसी व्यक्ति की शक्ति, आतंक और सम्मान आदि विशेषताओं का प्रभाव।

वाराधिप—*(न०)* समुद्र। सागर। महार्णव।

वारा फरतो—*(अव्य०)* बारी-बारी से। एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा इस क्रम से।

वाराह—*(न०)* १. शूकर। सूअर। २. एक पर्वत। दे० वराह।

वाराह-अवतार—*(न०)* वाराह रूप में विष्णु का तीसरा अवतार।

वाराह-कल्प—*(न०)* जिस कल्प में विष्णु ने वाराह का अवतार लिया।

वाराह-क्षेत्र—*(न०)* एक क्षेत्र का नाम।

वाराहजी—*(न०)* १. श्रीमालनगर (भीनमाल) के प्रधान नगर-देवता। २. विष्णु का वाराहावतार।

वाराहपुरी—*(ना०)* १. उत्तर गुजरात और राजस्थान के मारवाड़ प्रान्त की सीमा पर डेमा (धरणीधर तीर्थ) का एक प्राचीन नाम। २. श्रीमालनगर (भीनमाल) का एक प्राचीन नाम।

वाराही—*(ना०)* १. शूकरी। २. एक देवी।

वारांगणा— *(न०)* वेश्या । पातर । **वारंग** ।

वारि—*(न०)* पानी । जल ।

वारिगह—*(न०)* १. तंबू । २. प्याऊ । ३. पणियारा । **पणींढो** ।

वारिज—*(न०)* १. कमल । २. मछली । ३. शंख । ४. कौड़ी ।

वारिद—*(न०)* बादल । मेघ ।

वारिस—*(ना०)* वर्षा । मेह । *(न०)* उत्तराधिकारी ।

वारी—*(ना०)* १. बारी । पारी । २. अवसर । ३. न्योछावर । बलिहारी ।

वारु—*(अव्य०)* ठीक । अच्छा । खैर । अस्तु । भला । *(वि०)* १ सुंदर । २. प्रिय ।

वारुणी—*(ना०)* १. मद्य । शराब । २. हथिनी । ३. पश्चिम दिशा । ४. वरुण की स्त्री ।

वारू—*(वि०)* १. वर्ज्य । २. त्याज्य । ३. निषिद्ध । ४. अच्छा । श्रेष्ठ । ५. प्रिय । *(अव्य०)* खैर । अस्तु । अच्छा । भला ।

वारो—*(न०)* १. क्रमानुसार आने वाला अवसर । बारी । पारी । २. समय । काल । ३. किसी युग-पुरुष (अद्वितीय वीर, दानी, न्यायी व श्रेष्ठ महा-पुरुष) का जीवन काल । ४. राजा का शासन काल । ५. कुएँ में से पानी से भरे हुए मोट को बाहर निकाल कर खाली करने की क्रिया । ६. उक्त क्रिया की एक दफा ।

वारोवार—*(अव्य०)* १. बार-बार । पुनः पुनः । **बारंबार** । २. एक बार से दूसरे बार तक का समय । दूसरे सप्ताह उसी दिन । बासर प्रति बासर । ३. सप्ताह भर ।

वार्ता—दे० बारता ।

वार्तिक—*(न०)* १. ग्रंथ की टीका । २. सूत्र ग्रंथ की अर्थ-दर्शक टिप्पणी ।

वार्षिक—*(वि०)* १. वर्ष संबंधी । २. जो प्रति वर्ष होता हो । २. वर्षा संबंधी । *(क्रि०वि०)* प्रति वर्ष के हिसाब से ।

वाळ—*(न०)* केश । बाल ।

वाल—*(न०)* १. तीन रत्ती का एक तौल । २. एक द्विदल अनाज ।

वाळकी—*(ना०)* नाक या कान की बाली । बाली । **तुगल** ।

वाळ-कूंची—*(ना०)* बालों का बना बुरुस । कूंची ।

वालखिला—*(न०)* वालखिल्य ऋषि ।

वालखिल्य—दे० वालखिला ।

वालण-काकड़ी—दे० वालारण-काकड़ी ।

वाळणो—*(क्रि०)* १. मोड़ना । झुकाना । २. लौटाना । ३. कचरा निकालना । ४. ढकना ।

वालदेन—*(न०)* माता-पिता । वालदैन ।

वाळधी—*(ना०)* १. पूँछ । दुम । **पूंछड़ी** । २. भैंसा । वालधि ।

वालम—*(न०)* १. पति । स्वामी । २. वल्लभ । **बालम** ।

वालम-काकड़ी—*(ना०)* लंबी-पतली एक प्रकार की अनाम्ल ककड़ी । वालम-खीरा । **वालारण-काकड़ी** ।

वाल-मृग—*(ना०)* चँवर गाय । वालप्रिय ।

वाळली—दे० वाड़ली ।

वाळलो—दे० वाड़लो ।

वालहो—दे० वाल्हो या व्हालो ।

वाळंद—*(न०)* नाई । हजाम । **खवास** ।

वाळा-कूंची—दे० वाळकूंची ।

वालारण-काकड़ी—दे० वालम-काकड़ी ।

वालि—दे० वाली ।

वालिद—*(न०)* पिता । बाप ।

वालिदा—*(ना०)* माता । जननी । माँ ।

वाली—*(न०)* १. किष्किन्ध देश की पंपा-नगरी का महा पराक्रमी वानर राजा । सुग्रीव का बड़ा भाई । अंगद का पिता । वालि । २. स्वामी । मालिक । ३. संरक्षक ।

वाळी—*(ना०)* १. स्त्रियों के नाक या कान में पहिनने का एक गहना । २. नथ । बाली । ३. कान की बाली । **वाळकी** । (प्रत्य०) 'वाळो' प्रत्यय का नारी रूप, यथा—पाणीवाळी, घरवाळी, लाजवाळी ।

वालीस-धरा—*(ना०)* भूतपूर्व मारवाड़ राज्य का बाली प्रदेश । मारवाड़ के गोडवाड़ प्रान्त का बाली परगना । (काव्य रूप) ।

वाळू—बालू रेती । रेत । रज ।

वालेसर—*(वि०)* प्यारा । वल्लभेश्वर । प्रिय ।

वालेसरी—दे० वालेसर ।

वाळो—*(न०)* १. नारू नामक एक रोग । नहरुआ । २. धातु का पतला लम्बा तार । ३. एक आभूषण । (प्रत्य०) नाम के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय । जैसे—रंगवाळो, जोधपुर वाळो । दूध वाळो । इत्यादि ।

वालोड़—दे० वालोळ ।

वाळो-निकळणो—*(मुहा०)* नहरुआ का रोग होना ।

वालोळ—*(ना०)* फली वाला एक शाक ।

वाळोवळ—*(अव्य०)* १. उपरांत । पीछे । २. पुनः । फिर । और । ३. बार-बार । ४. बारी-बारी से । ५ चारों ओर से । सब तरफ से ।

वाल्मीकि—*(न०)* संस्कृत भाषा के आदि कवि रामायण के रचयिता एक ऋषि ।

वाल्हो—*(न०)* चुम्बन । *(वि०)* प्यारा । प्रिय । वल्लभ ।

वाव—*(न०)* वायु । *(ना०)* वापी । बावली । **वावड़ी** ।

वाव-करण—*(न०)* पंखा ।

वावटो—*(न०)* ध्वजा । पताका । **धजा** । २. झंडा । **झंडो** ।

वावड़—दे० वावोड़ ।

वावड़णो—दे० वावोड़णो ।

वावड़ी—*(ना०)* वापी । बावली । **वाव** ।

वावणी—*(ना०)* बोने का काम । बोआई । **बोवणी** ।

वावरणो—*(क्रि०)* १. उगाने के लिये जमीन में बीज डालना । बोना । २. पौधे को रोपना । रोप लगाना । ३. फेंकना । उछालना । ४. बजाना । ५ बजना ।

वाव-भख—दे० वायु-भक्षक ।

वावर—*(ना०)* १. वायु । २. बाड़ (काँटों की) ३. नारी पशुओं की जननेंद्री । **व्यावर** । ४. उपयोग । ५. खर्च । *(वि०)* १. पागल । बातुल । २. व्यर्थ ।

वावरणो—*(क्रि०)* १. काम में लेना । उपयोग में लाना । उपयोग करना । **वापरणो** । २. खर्च करना । **खरचणो** । ३. बाँटना । ४. शस्त्र चलाना । प्रहार करना ।

वावरत—दे० वपरास ।

वावरी—*(न०)* १. एक अनुसूचित जाति । इस जाति का व्यक्ति ।

वावरो—दे० वावळो ।

वावळ—*(ना०)* १. वर्षा के साथ या उसके पूर्व आने वाला प्रचंड वायु वेग। आँधी। २. धूलिपूर्ण प्रचंड वायु।

वावळी—*(वि०)* १. पगली। मूर्खा। २. वातरोग से ग्रसित। ३. वाचाल। ४. अंटसंट बकने वाली। *(ना०)* १. तोड़ कर देने और अपनी चाल को समाप्त कर देने के बाद घर में पहुंची हुई चौपड़ की गोट को पुनः उलटी चाल चलाने का भाव व क्रिया तथा उलटी चाल (चौपड़ का खेल) चलने वाली गोट।

वावळो—*(वि०)* १. पागल। २. मूर्ख। ३. वातरोग ग्रसित। ४. वाचाळ। ५. अंटसंट बोलने वाला।

वावाळी—*(ना०)* १. कीर्ति। यश। २. ख्याति। प्रसिद्धि। **नामवरी**। ३. सौरभ। सुगंध। ४. धन्य नाम। ५. अंतर की छोटी शीशी। ६. सुगंधित व तावरण। धोरो। ७. बदनामी (व्याजोक्ति)। *(वि०)* १. मोहल्ले की। २. मोहल्ले में रहने वाली।

वावाळी करणो *(मुहा०)* प्रसंसा करना।

वावाळी फूटणो—*(मुहा०)०* १. सर्वत्र धन्य-धन्य होना। २. प्रशंसा होना। ३. ख्याति होना। ५. (व्यंग में) निंदा होना।

वावाळी फैलणो—दे० वावाळी-फूटाणो।

वावाळी व्हेणो—*(मुहा०)* प्रशसा होना।

वावेतर—*(वि०)* १. बोया हुआ। *(ना०)* **बोई हुई जमीन**। २ बोने का काम। **बुवाई**।

वावेलो—(न०) हल्ला। कोलाहल। **बावेला**।

वावो—*(न०)* खेत में की जाने वाली बुवाई। **बोवाई**।

वावोड़—*(न०)* १. उड़ती खबर। अफवाह २. समाचार। खबर। ३. संवाद। बातचीत। ४. पता। खोज। अनुसन्धान। जाँच। **पतो**।

वावोड़णो—*(क्रि०)* १. दिखाना। बताना। २. पता लगवाना।

वास—*(ना०)* १. मोहल्ला। गली। २. २. गाँव का कोई भाग जिसमें किसी एक जाति के मनुष्य रहते हों। ३. निवास। स्थान। **घर**। ४. गंध। ५. दुर्गन्ध। ६. सुगन्ध। महक। **सोरम**।

वासक—दे० वासग।

वासकोट—*(न०)* एक प्रकार का पहिनावा' कोट के नीचे पहिनने की फतूही। सदरी। वैस्टकोट।

वासग—*(न०)* १. वासुकि नाग। २. सर्प।

वास-ग्वाड़—*(ना०)* ग्राम-मोहल्ला। **गुळी-गुवाड़**।

वासण—*(न०)* बरतन। पात्र। **ठाम**। **जाहण**।

वासण-कूसण—*(न०ब०व)* छोटे-बड़े बरतन चम्मच, खुरपा-खुरपी इत्यादि।

वासणो—*(क्रि०)* १. दुर्गंध देना। २. **बसना**। रहना।

वासदी—*(न०)* अग्नि। **वासदे**।

वासदे—*(न०)* १. वैश्वदेव। अग्नि। **वाहदी**।

वासना—१. पूर्व संस्कारों की दृढ़ीभूत कामना। सस्कार स्मृति। २. गंध। ३. दुर्गंध। ४. सुगंध। ५. यश। कीर्ति। ६. काम वासना। ७. अतृप्त इच्छा।

वास-फूटणो—*(मुहा०)* १. खबर फैलना। २. सुगंध या दुर्गंध आना। ३. बदनामी होना। ४. कीर्ति होना।

वासर—*(न०)* दिन। दिवस। **दहाड़ो**। **बार**।

वासरकर—*(न०)* दिनकर। सूर्य। सूरज।

वा-सरणो—*(क्रि०)* अधोवायु का निकालना। **पावणो**।

वासव—*(न०)* इंद्र।

वासवी—*(ना०)* इंद्राणी ।

वासंतिक—*(वि०)* १. वसंत ऋतु का । २. वसंत ऋतु संबंधी ।

वासंती—*(वि०)* १. वसन्त ऋतु का । २. वसंत ऋतु सम्बन्धी ।

वासावळी—*(ना०)* १. अधिक सुगन्ध । २. भरपूर सुगंध का वातावरण । ३. कीर्ति । यश । ४. सुगन्ध । ५. ख्याति ।

वासी—*(वि०)* १. रहने वाला । निवासी । २. वह जिसको पकाये हुये बहुत समय हो गया हो (भोजन) । अधिक समय हो जाने के कारण जिसमें विकार उत्पन्न हो गया हो (भोजन, दूध आदि) ३. पहिले दिन या रात का बनाया या या रखा हुआ भोजन ।

वासी-ईद—*(न०)* ईद का दूसरा दिन ।

वासी-मालाळा—*(न०ब०व०)* प्रभात के समय में (नाश्ता करने के पहले) यात्रा में दाहिनी ओर होने वाले हरिण के शकुन ।

वासी-सांगवणा—*(न०ब०व०)* प्रभात समय में (नाश्ता करने के पहले) यात्रा में बाईं ओर होने वाले हरिण के शकुन ।

वासींदी—*(ना०)* झाड़ू । बुहारी । सारवणी । सावरणी । संमार्जनी ।

वासींदो—*(न०)* १. घर का कूड़ा-कचरा । फूस । कचरो । २. झाड़ू लगाने की क्रिया । ३. झाड़ू से कचरा आदि निकालने की सफाई । ४. रहने वाला । निवासी । बासिंदा । रहवणियो । ५. का रहने वाला । का निवासी ।

वासुकि—*(न०)* १. नागों का राजा । नागेन्द्र । २. समुद्र-मंथन में मंथन-रज्जु (नेतरो) की तरह प्रयुक्त नाग-राज ।

वासुदेव—*(न०)* श्रीकृष्ण । वसुदेव का पुत्र ।

वा-सुरणो—*(मुहा०)* अधोवायु छूटना । पादणो ।

वासो—*(न०)* १. विश्राम । २. पड़ाव । ३. घर । ४. पैसे लेकर भोजन कराने की दुकान या घर । Lodge । ५. मोहल्ला । ६. आड़ोस-पाड़ोस में बसने वाले लोग ।

वास्तव—*(वि०)* १. यथार्थ । २. प्रकृत । ३. सत्य ।

वास्तव में—*(अव्य०)* १. सचमुच । २. हकीकत में । ३. निश्चित रूप में । ४. वस्तुतः ।

वास्तविक—*(वि०)* वास्तव । सत्य । यथार्थ ।

वास्तविकता—*(ना०)* १. सच्ची हकीकत । २. वस्तुगत स्थिति । सत्य । ३. घटित हुई बात । ४. उपयुक्तता ।

वास्तु—*(न०)* १. घर । मकान । २. वास्तु पूजन । ३. वास्तु पूजन का उत्सव या भोज । नांगळ ।

वास्तु-पूजा—*(ना०)* नये घर में प्रवेश करने के लिये की जाने वाली पूजा, यज्ञ इत्यादि । नांगळ ।

वास्तु-विद्या—*(ना०)* भवन निर्माणशास्त्र ।

वास्तु-शांति—*दे०* वास्तु पूजा ।

वास्ते—*(अव्य०)* लिये । निमित्त । कारण । हेतु । वास्ते । भगा ।

वास्तो—*(न०)* १. सम्बन्ध । लगाव । सम्पर्क । वास्ता । २. लेन-देन । ३. मित्रता ।

वाह—*(न०)* १. घोड़ा । बाह । २. बैल । बळद । ३. भैंसा । ४. वाहन । सवारी । ५. भार-वाहन । ६. भार-बरदारी । ७. पवन । वायु । ८. मेघ । बादल । ९.

चंद्रमा। १० प्रहार। चोट। खड्ग प्रहार। ११. बाहु। बाँह। १२. मुहल्ला। बास। १३. धाड़ा। १४. आक्रमण। १५. बास। निवास। रहवास। १६. दान। १७. नेग। लाग। *(ना०)* १. नौका। नाव। २. दिशा। तरफ। ३. दूरी। पहुंच। ४. खबर। जाँच। ५. दूरी। फासला। ६. गंध। सुगंध। ७. रीति। ८. प्रवाह। धारा। *(वि०)* १. सुन्दर। २. श्रेष्ठ। *(अव्य०)* १. आश्चर्य व प्रशंसा सूचक शब्द। धन्य। शाबास। भोक। २. तिरस्कार सूचक शब्द।

वाहग—*(वि०)* १. प्रहार करने वाला। २. भार उठा कर ले जाने वाला। वाहक। ३. फेंकने वाला। ४. जासूस।

वाहड़ियो—दे० वाड़ियो सं० १।

वाहण—*(ना०)* १. वाहन। सवारी, घोड़ा, ऊँट आदि। २. बैलगाड़ी। ३. बरतन। ठाम। बासण। *(ना०)* नदी।

वाहणी—दे० वाहिनी।

वाहणो—*(क्रि०)* १. फेंकना। २. प्रहार करना। मारना। ३. गंध देना। गंधाना। बास आना। ४. खेत में बीज बोना। *(ना०)* सुथारों का एक औजार। वैतरू।

वाहदे—दे० वासदे।

वाहन—*(ना०)* गाड़ी, घोड़ा, ऊँट इत्यादि आने जाने का साधन। सवारी। वैतरू।

वाहना—*(ना०)* १. गंध। २. दुर्गंध। ३. सुगन्ध। बासना।

वाहर—*(ना०)* १. पूछताछ। २. खोज-खबर। ३. सहायतार्थ पीछे धावन। अनुधावन। पीछा। लारो। हेरो। ४. खोज। तलाश। ५. सहायता। मदद। ६. चढाई। आक्रमण।

वाहरू—*(वि०)* १. वाहर करने वाला। पीछा करने वाला। चढ़ाई करने वाला। २. तलाश करने वाला। ३. मदद करने वाला। ४. खबर-सम्हाल लेने वाला।

वाहळो—*(ना०)* १. छोटा जल प्रवाह। नाळो। २. प्रवाह।

वाह-वाह—*(ना०)* कीर्ति। जस। *(अव्य०)* १. धन्य। शाबास। भोक। २. आश्चर्य व खुशी का उद्गार।

वाह-वाही—*(ना०)* १. शाबासी। साधुवाद। २. प्रशंसा। तारीफ। *(अव्य०)* बहुत लोगों का वाह-वाह शब्द कहना।

वाहाऊ—*(ना०)* १. दूत। कासिद। २. अश्वारोही। घुड़सवार। ३. उष्ट्रारोही। ओठी। *(वि०)* १. बहने वाला। २. चलने वाला।

वाहित्र—*(ना०)* १. नाव। जहाज। वाहित्र। २. सवारी। वाहन। बहतरू।

वाहिनी—*(ना०)* १. सेना। फौज। २. नदी। ३. नस। नाड़ी। नाड़।

वाहियात—*(वि०)* १. व्यर्थ। फजूल। २. खराब। ३. निकम्मा।

वाही—*(वि०)* बहने वाला। प्रवाही। दे० 'बासी' तथा 'वासी'।

वाही-खपताँ—*(अव्य०)* सम्पूर्ण प्रयत्न पूर्वक। पूरी कोशिश से। पूरी कोशिश में।

वाही-पूगताँ—दे० वाही-खपताँ।

वाही-लगताँ—दे० वाही-खपताँ।

वाहींदी—दे० वासींदी।

वाहींदो—दे० वासींदो।

वाँ—*(सर्व०)* १. उन। २. उन्होंने।

वाँइटो—*(ना०)* शरीर की अंगुली आदि किसी भाग में होने वाली नस की

अकड़न या ऐंठा और उसके कारण होने वाला दर्द ।

वाँक—*(न०)* १. टेढ़ापन । बळ । २. मोड़ । घुमाव । ३. ऐंठन । मरोड़ । ४. अपराध । दोष । ५. विषमता । असमानता । ६. दुख । संकट । ७. विरोध । बैर । ८. न्यूनता । ९. एक शस्त्र । ९. धनुष । १०. अभिमान । ११. तलवार । १२. व्यंग्य । १३. कमी । कसर । १४. सुंदरता । १५. कमर । कटि । लंक ।

वाँक-चूक—*(ना०)* १. भूल-चूक । *(वि०)* टेढ़ा-मेढ़ा ।

वाँकड़—*दे०* वाँको ।

वाँकड़मल—*(वि०)* वीर । बाँका ।

वाँकड़ली—*(वि०)* टेढ़ी । वाँकी ।

वाँकड़लो—*दे०* वाँकड़मल ।

वाँकड़ी—*(वि०)* टेढ़ी । वाँकी ।

वाँकड़ो—*(वि०)* १. टेढ़ा । वाँको । २. बंका । वीर ।

वाँकम—*(ना०)* १. बाँकापन । वक्रता । २. स्वाभिमान । ३. पराक्रम । *(वि०)* १. टेढ़ा । वक्र । बाँका २. दुर्गम । ३. वीर । पराक्रमी ।

वाँकळ-माता—*(ना०)* एक लोक देवी ।

वाँकाई—*(ना०)* १. टेढ़ापन । २. कुटिलता । ३. गर्व । ४. शौर्य । वीरता ।

वाँकापण—*दे०* वाँकाई ।

वाँकापणो—*दे०* वाँकाई ।

वाँकियो—*(न०)* १. नरसिंहे की तरह फूंक कर बजाया जाने वाला बाजा । २. रथ के पहिये में लगी रहने वाली लकड़ी का धनुषाकार उपकरण । ३. दीवाल में बाहर की ओर निकली हुई ओसरी को सहारा देने के लिए लगा रहने वाला लकड़ी का एक उपकरण ।

वाँकी—*(वि०)* १. एक टेढ़ी । २. दुर्गम । विकट । *(ना०)* १. एक शस्त्र । २. वीरांगना ।

वाँको—*(वि०)* १. टेढ़ा । २ वीर । ३. अद्भुत । ४. कुटिल । ५. जबरदस्त । ६. स्वाभिमानी । ७ दुर्गम । विकट ।

वाँको-चूको—*(वि०)* १. बाँका । टेढ़ा । टेढ़ामेढ़ा । ३. इधर-उधर । ४. आडा-टेढ़ा । आडो-अवळो ।

वाँग—*दे०* वाँगण ।

वाँगण—*(न०)* पहिये की धुरी में दिया जाने वाला तेल । उस तेल की संज्ञा जो पहिये की धूरी में दिया जाता है ।

वाँगणो—*(क्रि०)* १. पहिये की धुरी में तेल देना । २. संभोग करना । (संकेत) ।

वाँचजो—*दे०* बाँचजो ।

वाँचणो—*दे०* वांचणो ।

वाँछणो—*(क्रि०)* इच्छा करना । चाहना । वांछा करना ।

वाँछा—*(ना०)* इच्छा । अभिलाषा । चाह ।

वाँछित—*(वि०)* इच्छित । अभिलषित ।

वाँझ—*(वि०)* वंध्या । बांझ । वाँझड़ी ।

वाँझड़ी—*दे०* वाँझ ।

वाँझड़ो—*दे०* वाँझियो ।

वाँझणी—*दे०* वांझ ।

वाँझणो—*दे०* वाँझियो ।

वाँझियो—*(वि०)* जिसके संतान नहीं हुई हो । (पुरुष) ।

वाँटणो—*(क्रि०)* १. हिस्सा करना । भाग करना । २. वितरण करना । ३. सिल पर पीसना । बाँटना ।

वाँटो—*(न०)* १. गाय, भैंस आदि दुधारु पशुओं के लिए कुतर, बाजरी, गवार, खली आदि को मिला कर पकाया हुआ खाद्य जो दोहते समय खिलाया जाता है। सानी। २. बंट। हिस्सा। भाग।

वाँढणी—दे० वाँढी।

वाँढियो—दे० वाँढो।

वाँढी—*(वि०)* वर नहीं मिलने से क्वारी रही हुई। **वाँढणी**। अपरिणीत।

वाँढो—*(वि०)* वह जिसका वयस्क होने पर भी विवाह न हुआ हो। कन्या नहीं मिलने से क्वारा रहा हुआ। अपरिणीत। **वाँढियो**।

वाँतरियो—*(न०)* अनाज में उत्पन्न होने वाला एक कीड़ा।

वाँद—दे० वान सं० ६ और १०।

वाँदणो—*(क्रि०)* १. वंदन करना। नमस्कार कहना। २. भगवद प्रसादी को सिर और आँखों पर चढ़ाना।

वाँदरी—*(ना०)* बंदर की मादा। बंदरी **वानरी**।

वाँदरो—*(न०)* बंदर। वानर। **वानरो**।

वाँदियोड़ो—*(भू०कृ०)* १. वंदन किया हुआ। २. सम्मानित। वंदित।

वाँदोळी—दे० वंदोळी।

वाँदोळो—दे० वंदोळो।

वाँधा-खोर—*(वि०)* १. तकरारी। झगड़ालू। २. अड़चन डालने वाला।

वाँधो—*(न०)* १. आपत्ति। विरोध। २. तकरार। झगड़ा। ३. अड़चन। ४. शत्रुता।

वाँनै—*(सर्व०ब०व०)* उनको। **व्याँनै**। **उणाँनै**।

वाँ-पर—*(अव्य०)* उनके ऊपर।

वाँयटो—दे० वाँइटो।

वाँरी—*(सर्व०ब०व०)* उनकी। **व्याँरी**। **उणाँरी**।

वाँरै—*(सर्व०ब०व०)* उनके। **व्याँरै**। **उणाँरै**।

वाँरो—*(सर्व०ब०व०)* उनका। **व्याँरो**। **उणाँरो**। **वणाँरो**।

वाँस—*(न०)* १. बाँस। २. आठ हाथ का नाप। २. बाँसुरी। बंसी।

वाँसलड़ो—*(वि०)* पीछे वाला। पिछला। **लारलो**।

वाँसळी—*(वि०)* १. पीछे की। २. पीछे रही हुई। *(ना०)* १. पत्नी (व्यंग्य और क्रोध) २. बंसी।

वाँसली—*(ना०)* मुरली। **बाँसरी**। *(वि०)* पीछे की।

वाँसलो—*(वि०)* पिछला। पीछे वाला। *(न०)* लकड़ी छीलने का एक सुथारी औजार। **वाँसोलो**।

वाँसाँ—*(अव्य०)* १. पीछे से। २. बाद में। **लारैसूं**। ३. पीछे।

वाँसू—*(सर्व०ब०व०)* उनसे। **व्यासूं**। **उणाँसूं**।

वाँसे—*(अव्य०)* १. पीछे। पीछे की ओर। २. अनुपस्थिति में न रहने की हालत में। ३. मर जाने पर।

वाँसो—*(न०)* १. सहायता। २. पीछा। ३. पीठ। ४. पिछली हकीकत। ५. पिछला भाग।

वाँसोलो—*(न०)* खाती का एक औजार। **वाँसलो**।

वाँह—*(न०)* पीछा।

वाँहली—दे० वाँसली।

वाँहलो—दे० वाँसोलो। *(वि०)* पिछला।

पीछे का ।

वाँहे—*(अव्य०)* पीछे । **वांसे । लारे ।**

वांहेंवाळो—*(न०)* पिछला । पीछेका ।

वांहो—दे० वाँसो ।

वि—*(उप)* एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व जोड़ने पर विशेष, अनेक रूपता, निषेध इत्यादि अर्थ देता है ।

विआवणो—दे० वियावणो ।

विकच—*(वि०)* केश रहित । मुंडन किया हुआ । **विकचो** ।

विकचो—दे० विकच ।

विकट—*(वि०)* १. कठिन । २. दुर्गम । ३. भीषण ।

विकणो—*(क्रि०)* बिकना । बिकरी होना ।

विकराळ—*(वि०)* भयानक । डरावना ।

विकराळी—*(ना०)* १. विकराल रूप धारण की हुई एक देवी । २. रक्त-पिपासु योगिनी । ३. तलवार । खड्ग ।

विकरी—*(ना०)* १. विक्रय । बेचान । २. विक्रय से प्राप्त रकम ।

विकरो—*(न०)* बिकरा । विक्रय ।

विकळ—*(वि०)* १. क्षुब्ध । २. व्याकुल । ३. विह्वल । विकल । ४. अपूर्ण । खंडित ५. असमर्थ । ६. पागल । *(न०)* कला का साठवाँ भाग । विकला ।

विकळणो—*(क्रि०)* १. व्याकुल होना । २. असमर्थ होना ।

विकळता—*(ना०)* १. पागलपन । २. व्याकुलता । ३. आतुरता ।

विकल्प—*(न०)* १. तर्क-वितर्क । २. अनिश्चय । ३. धोखा । भ्रम । ४. अनेक बातों, रास्तों इत्यादि में से अपनाने योग्य प्रत्येक । ५. उनमें से किसी एक को अपनाने की स्थिति या उपाय । ६. कोई दूसरा उपाय ।

विकसणो—*(क्रि०)* १. विकसित होना । विकसना । **विगसणो** । २. खिलना । ३. प्रफुल्लित होना । ४. आनंदित होना ।

विकसाणो—दे० विकसावणो ।

विकसावणो—*(क्रि०)* १. फैलाना । २. बढ़ाना । ३. प्रफुल्लित करना ।

विकसित—*(भू०कृ०)* १. खिला हुआ । २. प्रफुल्लित । ३. विकास प्राप्त । जिसका विकास हुआ हो ।

विकाम—दे० बेकाम ।

विकार—*(न०)* १. शारीरिक या मानसिक बिगाड़ । विकृति । २. बिगाड़ । ३. दोष । ४. रोग । ५. मन में उत्पन्न होने वाली प्रबल वृत्ति । (प्रायः दूषित वृत्ति) । ६. औषधि सेवन के समय पथ्य नहीं रखने से होने वाला रोग । ७. परिवर्तन । फेरफार । ८. व्याकरण में उसके नियमानुसार शब्द का रूप बदलना । एक वर्ण के स्थान पर दूसरे वर्ण का आगमन ।

विकारी—*(वि०)* जिसमें कोई विकार या राग-द्वेष हो । विकार वाला ।

विकास—*(न०)* १. प्रसार । फैलाव । २. विस्फुटन । ३. उत्क्रांति । **विगास** ।

विकासणो—*(क्रि०)* १. विकसित होना । २. फैलाना । ३. फैलना ।

विकृत—*(वि०)* १. विकार प्राप्त । बिगड़ा हुआ । **बिगड़ियोड़ो** । २. जो भद्दा हो गया हो । ३. भ्रमपूर्ण ।

विकृति—*(ना०)* १. विकार । बिगाड़ । २. रोग । ३. क्षोभ । दे० विकार ।

विक्रम—*(न०)* १. पराक्रम । शक्ति । २. प्रभुता । ३. गति । चाल । ४. प्रकार । ढंग । ५. विक्रमादित्य । *(वि०)* श्रेष्ठ ।

विक्रम-संवत—*(न०)* उज्जयिनी के प्रसिद्ध प्रतापी राजा विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित सम्वत जो ईसवी सन् से ५७ और शक संवत से १३५ वर्ष पहिले प्रवर्तित हुआ था। विक्रमी सम्वत्।

विक्रमाजीत—दे० विक्रमादित्य।

विक्रमादित्य—*(न०)* उज्जयिनी का एक प्रतापी राजा, जिनके नाम से आज २०४० विक्रम सम्वत् चल रहा है।

विक्रमी—*(वि०)* १. जिसमें वीरता हो। पराक्रमी। २. विक्रम सम्बन्धी।

विक्रय—*(न०)* बेचान। विक्री। **बिकरी**।

विक्रिया—*(ना०)* विकार। खराबी।

विक्री—*(ना०)* बेचान। **बिकरी**। **बिकरो**।

विक्षिप्त—*(वि०)* १. पागल। **बावळो**। २. फैला हुआ।

विक्षुब्ध—*(वि०)* जिसके मन में क्षोभ उत्पन्न हो गया हो।

विक्षेप—*(न०)* १. बाधा। अड़चन। २. अस्थिरता। ३. विलंब। ४. उच्चाट। व्यग्रता। ५. घबराहट। **बिखेप**।

विख—१. विष। जहर। २. परस्पर के सम्बन्धों में कटुता। ३. शत्रुता। ४. सर्प। **साप**।

विख-कन्या—दे० विषकन्या।

विख-कामण—दे० विष-कामिनी।

विखजर—*(न०)* महादेव। शंकर। *(वि०)* विष को हजम करने वाला।

विखधर—*(न०)* १. सर्प। नाग। विषधर। २. महादेव।

विखम—दे० विषम।

विख-मंत्र—*(न०)* विष उतारने का मंत्र। विषमंत्र।

विखमी—*(वि०)* १. अति कठिन। २. असह्य। ३. भयंकर। ४. दुर्गम। ५. प्रतिकूल। विरुद्ध। ६. शत्रु।

विखमी-वार—*(ना०)* १. संकट का समय। २. विषम स्थिति।

विखरणो—*(क्रि०)* १. बिखरना। छितराना। फैलना। २. अलग-अलग होना। छंटना। ३. तितर-बितर होना। ४. दूर-दूर चले जाना।

विखवाद—*(न०)* १. कटुता उत्पन्न हो ऐसी बोल-चाल। २. तकरार। झगड़ा। **कजियो**। ३. शत्रुता।

विखसूचक—*(न०)* चकोर पक्षी।

विखहर—*(न०)* विषधर। नाग। सांप। *(वि०)* विष को हरने वाला।

विखाद—दे० विषाद।

विखायत—*(वि०)* १. संकटापन्न। संकट-ग्रस्त। २. भीतिग्रस्त। **बिखायती**।

विखायती—दे० बिखायत।

विखियात—दे० विख्यात।

विखूटणो—दे० विछूटणो सं० १, २, ४, ५।

विखूटो—*(भू०कृ०)* १ समूह या राशि में से अलग हो गया, रह गया या निकाल दिया गया हुआ। *(क्रि०वि०)* वियुक्त। भिन्न। दूर। *(वि०)* अलग। पृथक।

विखूटो-पड़णो—*(मुहा०)* १. समूह से अलग हो जाना या निकल जाना। २. साथ वालों से पीछे रह जाना। साथ छूट जाना। अकेला रह जाना। ३. अलग हो जाना।

विखेप—दे० विक्षेप।

विखेरणो—*(क्रि०)* १. इधर-उधर फैलाना। छितराना। २. नाश करना। ३. चिने

हुए या जमे हुए को उखाड़ कर इधर-उधर डाल देना। **बिखोरणो**। ४. अलग-अलग करना। ५. भीड़ को हटाना। तितर-बितर करना। बिखराना।

विखेरो—*(न०)* १. वस्तुओं का अव्यवस्थित फैलावा। २. फैलाव। छितराव।

विखै—*(अव्यय)* १. बाबत। संबंध में। २. में। अन्दर। ३. प्रति। ४. पर। ५. निकट। दे० विषय।

विखै-तो—*(अव्यय)* १. तेरे साथ। २. तेरे में। ३. तेरे सम्बन्ध में। ४. तेरी भक्ति, उपासना और ज्ञान का विषय। ५. तेरा विषय। ५. तेरे विषय में।

विखो—*(न०)* १. विपत्ति। संकट। २. संकट काल। आपत्तिकाल। ३. उत्पात। विग्रह। ४. शत्रु के भय से राज्य व गृह विहीन होकर पहाड़ व जंगल में किया जाने वाला गुप्त निवास।

विखोरणो—दे० बिखेरणो।

विख्यात—*(वि०)* प्रसिद्ध। **छावो**। सर्वविदित।

विगड़णो—*(क्रि०)* १. बिगड़ना। खराब होना। २. नाश होना। ३. सड़ना। गलना। ४. क्रोध करना। ५. वैमनस्य होना। ६. पथभ्रष्ट होना। ७. चाल-चलन ठीक नहीं होना।

विगत—*(न०)* १. सम्पूर्ण विवरण। २. विस्तृत वर्णन। ३. सूझ। ४. बाबत। ५. हकीकत। ६. वृत्तान्त। ७. अतीत। ८. राजस्थानी गद्य साहित्य का एक प्रकार। ९. विस्तार पूर्वक विवरण। *(वि०)* १. बीता हुआ। गत। २. मृत। ३. रहित।

विगतवार—*(अव्यय)* १. पूरे विवरण के साथ। तफसीलवार। विस्तार पूर्वक। २. सवृत।

विगताणो—*(क्रि०)* १. सूचित करना। २. विस्तृत वर्णन भेजना।

विगताळो—*(वि०)* १. छल-छिद्र वाला। २. चालाक। ३. विवरण वाला। ४. जानकार। बहुज्ञ। ५. युद्ध विशारद।

विगन—*(न०)* विघ्न।

विगनान—दे० विज्ञान।

विगर—*(अव्यय)* १. बगैर। बिना। २. छोड़ कर। ३. अतिरिक्त। **सिवाय**। ४. रहित। विहीन।

विगसणो—*(क्रि०)* दे० विकसणो।

विगाड़ू—दे० बिगाड़।

विगाड़णियो—दे० बिगाड़ू।

विगाड़णो—दे० बिगाड़णो।

विगाड़ू—*(वि०)* बिगाड़ने वाला। **बिगाड़णियो**।

विगाड़ो—दे० बिगाड़।

विगूचणो—*(क्रि०)* १. भ्रष्ट करना। बदनाम करना।

विगूचीजणो—*(क्रि०)* १. भ्रष्ट होना। २. पतित होना। बदनाम होना।

विगेरे—दे० वगैरह।

विगोईजणो—*(क्रि०)* बदनाम होना। **बगोईजणो। भंडीजणो**।

विगोवणो—*(क्रि०)* निंदा करना। बदनाम करना। **बगोवणो। भाँडणो**।

विग्यान—दे० विज्ञान।

विग्रह—*(न०)* १. युद्ध। झगड़ा। संग्राम। २. कलह। ३. भगवान की मूर्ति। देवता की मूर्ति। प्रतिमा ४. शरीर। ५. शृंगार। ६. विश्लेषण के लिये प्रत्येक शब्द (समास, संधि के अवयवों) को अलग-अलग करना। उपवाक्यादि का **विश्लेषण**। (व्या०)

विग्रहणो—*(क्रि०)* १. युद्ध करना। २. युद्ध होना। **झगड़णो**।

विग्रो—दे० विग्रह। सं. १, २.

विघन—*(न०)* १. विघ्न। बाधा। **रुकावट**। २. **हरकत**। ३. संकट। विपत्ति। आपत्ति। **आफत**। **विपत**।

विघन-हरण—*(न०)* गणेश। विघ्न-हरण। *(वि०)* विघ्न हरने वाला।

विघरणो—*(क्रि०)* १. पिघलना। गलना। २. द्रवीभूत होना।

विघात—*(न०)* १. आघात। प्रहार। २. संहार। नाश। ३. विघ्न। बाधा।

विघ्न—दे० विघन।

विघ्नकर्ता—*(वि०)* १. विघ्न करने वाला। २. रुकावट डालने वाला।

विघ्नकारी—*(वि०)* विघ्नकर्ता। **विघ्न करने वाला**।

विघ्न-नाशक—*(वि०)* विघ्न मिटाने वाला। *(न०)* गणपति।

विघ्न-पति—*(न०)* गणेश।

विघ्न-राज—*(न०)* गणपति।

विघ्न-विनायक—*(न०)* गणपति।

विघ्न-विनाशक—*(न०)* गणपति।

विघ्न-हरण—*(न०)* गणपति।

विच—दे० बीच।

विचक्षण—*(वि०)* १. बुद्धिमान। २. चतुर। चालाक। ३. विद्वान। ४. निपुण। दक्ष। ५. पंडित।

विचत—*(न०)* १. मुसलमान। २. **शत्रु**। **बैरी**।

विचत्र—दे० विचत। *(वि०)* १. अद्भुत। २. विलक्षण। दे० **विचित्र**।

विचरण—*(न०)* १. घूमना-फिरना। २. प्रवास। ३. चलना। ४. आना-जाना।

विचरणो—*(क्रि०)* १. घूमना। फिरना। २. जाना। प्रवास करना। ३. चलना। ४. जीवन यापन करना। ५. आते-जाते रहना।

विचलित—*(वि०)* १. अस्थिर। चंचल। २. अपने स्थान, प्रतिज्ञा सिद्धान्त आदि से हटा हुआ।

विचलो—*(वि०)* बीच का। मध्यम भाग से संबंधित।

विचार—*(न०)* १. संकल्प। २. मन में उठने वाली कोई बात। ३. कल्पना। मनसूबा। ४. इच्छा। ५. अभिप्राय। ६. उद्देश्य। आशय। ७. निश्चय। ८. विवेक। मर्यादा। ९. चिंता। १०. भ्रम। ११. समझ।

विचारणा—*(ना०)* १ विचार करने का भाव। २. विचार की हुई बात। ३. निर्णय।

विचारणीय—*(वि०)* १. विचारने योग्य। २. विचार करने की (बात)।

विचारणो—*(क्रि०)* १. विचार करना। सोचना। २. मनसूबा करना। इच्छा करना। ३. चिंतन करना। ४. कल्पना करना। धारना। धारणो। ५. चर्चा करना। ६. तपासना। ७. निश्चय करना। ८. समझना। ९. भ्रम में पड़ना।

विचार-वमळ—दे० वमळ।

विचारवान—*(वि०)* १. विचार वाला। विचारशील। २. बुद्धिमान।

विचाळ—दे० बीच।

विचाळी—*(अव्य०)* बीच में। *(वि०)* बीचवाली। बिचली।

विचाळै—*(अव्य०)* बीच में।

विचित—दे० विचत।

विचित्र—*(वि०)* १. विलक्षण। २. अद्भुत। ३. अनेक रंगों वाला। ४. सुंदर। *(न०)* १. शत्रु। २. यवन।

विचेटियो—*(वि०)* बीच का। मध्य का।

विच्छू—*दे०* वीछू।

विच्छेद—*(न०)* १. विभाग। २. छेद। ३. काप। ४. वियोग। ५. नाश। ६. क्रम टूटना।

विच्छेदणो—*(क्रि०)* विच्छेद करना।

विछड़णो—*दे०* बिछुड़णो।

विछड़ाणो—*(क्रि०)* १. साथ छुड़ा देना। अकेला कर देना। २. बिछुड़ जाना।

विछड़ियोड़ो—*(भू०कृ०)* १. बिछुड़ा हुआ। अकेला रहा हुआ। २. मार्ग भूला हुआ। ३. भटका हुआ।

विछळणो—*(क्रि०)* १. पानी से साफ करना। धोना। २. साधारण रूप से या थोड़े पानी से धोना।

विछळाणो—*दे०* विछळावणो।

विछळामण—*(न०)* १. विछलाने का पानी। २. विछलाया हुआ पानी। **धोवण**।

विछळावणो—*(क्रि०)* १. धुलाना। २. पानी की धार देकर धुलाना।

विछाणो—*दे०* बिछाणो।

विछात—*दे०* बिछात।

विछायत—*दे०* बिछायत।

विछायती—*दे०* बिछायती।

विछावणो—*दे०* बिछावणो।

विछिया—*(न०ब०व०)* स्त्रियों के पाँवों की अंगुलियों में पहनने की घुंघरुदार अंगूठियाँ। **बिछूड़ियाँ**।

विछियो—*(न०)* जैसलमेर (राजस्थान) के पास मिलने वाला एक खूब कठोर पत्थर जिसके (औषधियाँ घोटने के) खल-बट्टे आदि बनते हैं।

विछुड़णो—*दे०* बिछुड़णो।

विछूटणो—*(क्रि०)* १. छूट जाना। छूटना। २. बिछुड़ना। ३. गर्भपात होना। ४. कट कर दूर पड़ना। ५. अलग होना। दूर हटना। ६. जुदा होना।

विछूटो—*(भू० कृ०)* बिछुड़ा हुआ। *(क्रि०भू०)* बिछुड़ गया।

विछूंदरी—*दे०* विसूंदरी।

विछेप—*दे०* विक्षेप।

विछोह—*(न०)* वियोग। जुदाई।

विछोहो—*दे०* विछोह।

विजड़—*(ना०)* १. खड्ग। तलवार। २. कटारी।

विजड़-हथ—*(वि०)* खड्गधारी।

विजड़ी—*(वि०)* १. खड्ग। २. कटारी।

विजन—*(न०)* पंखा। व्यजन। *(वि०)* १. निर्जन। २. एकान्त स्थान।

विजय—*(ना०)* जीत। फतह।

विजय-ध्वज—*(ना०)* विजय की सूचक ध्वजा।

विजयवर्गी—*(न०)* एक वणिक जाति।

विजय-शाही—*(न०)* १. जोधपुर महाराजा विजयसिंह द्वारा प्रवर्तित चाँदी का रुपया। २. विजयसिंह का राज्यकाल।

विजय-स्तम्भ—*(न०)* १. विजय की यादगिरी में बनाया हुआ स्तम्भ। २. महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित चित्तौड़ दुर्ग का विजय-स्तम्भ।

विजया—*(ना०)* १. भाँग। २. पार्वती।

विजया-दशमी—*(ना०)* १. आसोज शुक्ल दशमी। २. दशहरा। **दसरावो**।

विजयी—*(वि०)* विजय करने वाला। विजयवंत। विजेता।

विजयोत्सव—*(न०)* विजय का उत्सव।

विजळी—*(ना०)* बिजली। दामिनी। **चिवण**।

विजाति—*(ना०)* १. भिन्न जाति। २. दूसरी जाति।

विजेता—*(वि०)* विजयी ।

विजै-थंभ—दे० विजय-स्तम्भ ।

विजैदरगी—दे० वियजवर्गी ।

विजैशाही—दे० विजयशाही ।

विजोग—*(न०)* १. वियोग । विरह । २. मृत्यु । मौत । ३. मृतक का शोक ।

विजोगण—*(वि०)* जो अपने प्रेमी से विछुड़ी हुई हो । *(ना०)* वियोगी स्त्री ।

विजोगणी—दे० विजोगण ।

विजोगी—*(वि०)* जो अपनी प्रेमिका से बिछुड़ गया हो । वियोगी । विरही ।

विज्ञ—*(वि०)* १. जानकार । २. बुद्धिमान । ३. पंडित । विद्वान ।

विज्ञप्ति—*(ना०)* १. विनती । २. सर्व-साधारण के नाम सूचना । ३. विज्ञापन ।

विज्ञान—*(न०)* १. असामान्य ज्ञान । २. शास्त्रीय ज्ञान । ३. अनुभव ज्ञान । ४. ब्रह्म ज्ञान । तत्व ज्ञान । ५. तत्वों का विवेचन के एक स्वतन्त्र शास्त्र का पदार्थ-विद्या । साइन्स ।

विज्ञानिक—दे० वैज्ञानिक ।

विज्ञानी—दे० वैज्ञानिक ।

विट—*(वि०)* १. लंपट । कामी । २. धूर्त । चालाक । *(न०)* १. वैश्य । बनिया । २ भड़ुवा । ३. एक गाली ।

विटप—*(न०)* १. वृक्ष । रूंख । २. वृक्ष की शाखा । डाळी ।

विटमणा—दे० विटंबणा ।

विटळ—*(वि०)* १. अपने धर्म को छोड़कर विधर्मी बनने वाला । धर्मभ्रष्ट । बिगड़ेल । २. मूर्ख । ३. भ्रष्ट । ४. अपवित्र । ५. वर्णसंकर । ६. आचार रहित । ७. पंक्ति बाहर । बहिष्कृत । ८. कुमार्गी ।

विटळणो—*(क्रि०)* १. विधर्मी होना । २ बिगड़ना । ३. अपवित्र होना । भ्रष्ट होना । ४. धर्मभ्रष्ट होना । ५. आचार भ्रष्ट होना ।

विटळियोड़ो—*(वि०)* १. धर्म-भ्रष्ट । २. आचार-भ्रष्ट । ३. वर्णसंकर ।

विटंब—*(वि०)* १, धोखाबाज । २. बद-माश ।

विटंबणा—*(ना०)* १. धोखा । २. भ्रम । ३. माया । ४. माया-जाळ । ५. आवा-गमन । ६. व्यर्थ विचार । विचारों का उतार-चढ़ाव । ७. परेशानी । ८. कठिनाई । मुश्किली । ९. कष्ट । दुख । संताप । १०. उपहास । विडंबना ।

विटंबणो—*(क्रि०)* १. आना-जाना । २. घूमना-फिरना । भटकना । ३. दुःख पाना । ४. धोखा खाना । ५. माया-जाल में फँसना ।

विटाळणो—*(क्रि०)* १. धर्म भ्रष्ट करना । २. अपने धर्म को छुड़ाकर अन्य धर्म को जबरदस्ती अंगीकार कराना । ३. अपवित्र करना । भ्रष्ट करना । वटाळणो । वटळावणो ।

विट्ठल—*(न०)* १. श्रीकृष्ण । २. श्रीविष्णु । ३. महाराष्ट्र, आन्ध्र आदि में बहुपूजित एक विष्णु रूप । विठोबा ।

विठागर—*(न०)* विष्टिकार । समाधान कराने वाला । विस्टाळू ।

विठोबा—*(न०)* पंढरपुर के प्रसिद्ध देव श्री विट्ठल । दे० विट्ठल । सं० ३ ।

विड—*(न०)* शत्रु । दुश्मन ।

विडणो—*(क्रि०)* १. नष्ट होना । २. शत्रुता करना । ३. नष्ट करना ।

विड़द—दे० विरुद ।

विडरणो—*(क्रि०)* १. क्रोध करना। २. अत्यन्त क्रोध से अंटसंट बोलना। ३. तितर-बितर होना। इधर-उधर भागना। ४. कांतिहीन होना। मंद प्रकाश होना। ५. विदीर्ण होना। ६. लड़ना। जूझना। ७. नाराज होना। बिगड़ना।

विडंग—*(न०)* १. घोड़ा। अश्व। २. वायविडंग नामक औषधि।

विडंगाण—*(न०)* १. घोड़ा। २. घुड़-समूह। घोड़े।

विडंगी—*(न०)* १. घोड़ा। अश्व। *(ना०)* घोड़ी। अश्वी।

विडंगी-अरोहा—*(न०)* अश्वारोही। घुड़-सवार।

विडंब—दे० विटंब।

विडंबणा—दे० विटंबणा।

विडार—*(न०)* नाश।

विडारणो—*(क्रि०)* १. नाश करना। मार डालना। २. विदीर्ण करना। चीर डालना। ३. भगाना। तितर-बितर करना।

विडाळ—*(ना०)* बिल्ली। **मिश्री**। *(न०)* बिल्ला। **मिन्नो। मीनको।**

विडोजा—*(न०)* १. इन्द्र। २. इन्द्र का एक नाम।

विढ—*(ना०)* १. झगड़ा। कलह। २. लड़ाई। युद्ध।

विढणी—दे० वेढणी।

विढणो—*(क्रि०)* १. लड़ना। युद्ध करना। २. तकरार करना। झगड़ना।

विढोणाद—दे० विढोणानाद।

विढोणानाद—*(न०)* १. युद्ध हाक। युद्ध घोष। वीर हाक। ३. रणवाद्य। युद्ध के ढोल का बजना। **विढोणाद।**

विढोणार—*(वि०)* युद्ध करने वाला। योद्धा।

विढोणो—दे० विढोणार।

विण—*(सर्व०)* उसने। उण। *(अव्य०)* बिना। बिन। रहित। **बिगर।**

विण-ऊपर—*(अव्य०)* १. इस पर। २. उस पर। ३. तब।

विणज—*(न०)* १. चावलों को खांड की चाशनी में केशर, मेवा आदि डाल कर घी में पकाया हुआ एक भोज्य पदार्थ। बिरंज। केशरी चावल। २. बनिज। वाणिज्य। व्यापार।

विणजणो—*(क्रि०)* १. ग्राहक को पटाना। २. व्यापार करना। रोजगार करना। बनजना।

विणज-हलीलो—*(न०)* व्यापार-धंधा।

विणजार—*(न०)* १. बनजारे की बालद। **पोठ।**

विणजारण—दे० विणजारी या वणजारी।

विणजारी—*(ना०)* १. बनजारी। बनजारा की पत्नी। २. बनजारा जाति की स्त्री। **वणजारी।**

विणजारो—दे० वणजारो।

विणठ—*(भू०कृ०)* विनष्ट। नाश। भ्रष्ट।

विणठणो—*(क्रि०)* १. विनिष्ठ होना। नाश होना। २. भ्रष्ट होना।

विण-माथै—*(अव्य०)* १. इस पर। २. उस पर। ३. तब। *(वि०)* बिना सिर मस्तक रहित।

विणसणो—*(क्रि०)* १. विनाश होना। विनसना। नाश होना। बिगड़ना।

विणसाड़णो—*(क्रि०)* १. विनाश करना। **विणसाणो।** २. बिगाड़ना।

विणसाणो—*(क्रि०)* १. विनाश करना। **विणसाड़णो**। २. विनाश होना।

विणसीजणो—*(क्रि०)* नाश होना। विनाश होना।

विण-हथियारो—*(वि०)* निःशस्त्र। जिसके पास या हाथ में शस्त्र न हो।

विणंज—दे० विणज या विरंज।

विणाक—*(न०)* १. गणपति। विनायक। २. विवाह के पूर्व विनायक पूजार्थ किया जाने वाला गुड़ का मांगलिक भोज। ३. खाती। बढ़ई।

विणायक—दे० विणाक।

विणास—*(न०)* १. विनाश। नाश। २. लोप।

विणासकारी—दे० विनाशकारी।

विणास-काळ—दे० विनाशकाल।

विणासणो—*(क्रि०)* नाश करना। विनाश करना।

विणियाणी—*(ना०)* १. बनिये की पत्नी। २. बनिया जाति की स्त्री। ३. वणिक स्त्री।

विणियाणी-जायो—*(न०)* वणिक-पुत्र। बनिया। **वाणियो**।

वित—*(न०)* १. धन। माल। रुपया-पैसा। वित्त। २. गाय, भैंस आदि पशुधन। ३. स्नेह-धन। *(वि०)* निपुण। चतुर।

वितरण—*(न०)* १. बाँटना। २. अर्पण करना। देना। ३. अर्पण। दान।

वितरणो—*(क्रि०)* १. देना। अर्पण करना। **देवणो**। २. बाँटना। **बाँटणो**।

वितल—*(न०)* सात पातालों में से दूसरा पाताल।

वितंड—*(न०)* व्यर्थ का बकवाद। **वितंडो**।

वितावणो—(क्रि०) १. खतम करना। **वितोवणो**। २. समाप्त करना। बिताना। ३. गुजारना। समय काटना। ४. हैरान करना। दुख देना **विताणो**।

वितावणो—दे० विताणो।

वितिहोतर—*(ना०)* अग्नि। वीतिहोत्र।

वितीत—दे० व्यतीत।

वितुंड—*(न०)* १. घोड़ा। २. हाथी।

वितोवणो—दे० विताणो।

वित्त—*(न०)* १. धन। द्रव्य। संपत्ति। रुपया-पैसा। २. कोष। ३. गाय, भैंस आदि पशुधन। ४. स्नेह-धन। ५. शक्ति। ६. सार।

वित्थरण—*(न०)* विस्तरण। फैलाव।

वित्थरणो—*(क्रि०)* विस्तार होना। विस्तरना। फैलना।

वित्रहोत—*(ना०)* अग्नि। वीतिहोत्र। आग। **वासदे**।

विथकणो—*(क्रि०)* १. थकना। **थाकणो**। २. खूब हैरान होना। ३. थकावट दूर करना।

विथरणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत होना। फैलना। **पसरणो**।

विथा—दे० व्यथा।

विथार—*(न०)* विस्तार। फैलाव। **पसार**। **विस्तारो**।

विथारक—*(वि०)* १. विस्तार करने वाला। २. फैलाने वाला।

विथारण—दे० विथारक।

विथारणो—*(क्रि०)* विस्तार करना। विस्तृत करना। फैलाना। **फैलाणो**। **पसारणो**।

विदग्ध—*(वि०)* १. परिपक्व। २. चतुर। निपुण। ३. विद्वान। ४. रसिक। ५. जला हुआ। *(न०)* पंडित।

विदमान—दे० विद्यमान।

विदर—*(न०)* १. दास । गोला । २. वर्णसंकर ।

विदरी—*(ना०)* दासी । **गोली** ।

विदर्भ—*(न०)* भारत का बरार प्रदेश ।

विदा—*(ना०)* १. रवानगी । प्रस्थान । २. चलने की आज्ञा या अनुमति । **सीख** ।

विदाई—*(ना०)* १. रवानगी । प्रस्थान । २. विदा होने के समय दिया जाने वाला पारितोषिक द्रव्यादि । उपहार । उपढ़ौकन । ३. किसी की विदाई का उत्सव । ४. बरात आदि के प्रस्थान (लौटने) का समारोह ।

विदा करणो—*(क्रि०)* रवाना करना । **सीख देणो** ।

विदाम—*दे०* बिदाम ।

विदायती—*(वि०)* विदा होने वाला । जाने वाला ।

विदारक—*(वि०)* १. मारने वाला । २. चीरने वाला । फाड़ने वाला ।

विदारणो—*(क्रि०)* १. चीरना । फाड़ना । टुकड़े करना । २. नाश करना । ३. मार डालना ।

विदारी-कंद—*(न०)* एक पौष्टिक कंद ।

विदावण—*दे०* बदाण ।

विदा होणो—*(क्रि०)* रवाना होना । **सीख करणो** ।

विदित—*(वि०)* जाना हुआ । ज्ञात ।

विदिशा—*(ना०)* दो दिशाओं के बीच की दिशा । २. एक नदी ।

विदीर्ण—*(वि०)* चीरा हुआ । फाड़ा हुआ । विदारित ।

विदुख—*दे०* विदुष ।

विदुर—*(न०)* धृतराष्ट्र और पांडु का परम ज्ञानी व्यास पुत्र । दासी पुत्र भाई ।

विदुर-नीति—*(ना०)* महात्मा विदुर द्वारा धृतराष्ट्र को संबोधित करके कहा गया एक नीति ग्रन्थ ।

विदुष—*(न०)* विद्वान । पंडित ।

विदुषी—*(ना०)* विद्वान स्त्री । पंडिता ।

विदेश—*(न०)* अन्य देश । परदेश ।

विदेह—*(न०)* १. राजा जनक । २. प्राचीन मिथिला देश । ३. जो शरीर रहित हो । ४. मृत ।

विदेह-धी—*(ना०)* सीता । जानकी । जनक-जा ।

विदेही—*(वि०)* बिना देह वाला । *(ना०)* सीता । जानकी ।

विदोख—*(न०)* १. महादोष । २. दोष रहित ।

विद्यमान—*(वि०)* १. जीवित । २. मौजूद । उपस्थित । ३. वर्तमान ।

विद्या—*(ना०)* १. शिक्षा द्वारा उपार्जित ज्ञान । २. मोक्ष प्राप्त करने वाला ज्ञान । ३. ज्ञान के विशेष-विशेष विभाग । ४. ज्ञान । ५. विज्ञान । ६. गुण । ७. सरस्वती । ८. दुर्गा ।

विद्या-गुरु—*(न०)* पढ़ाने वाला गुरु । विद्या सिखाने वाला गुरु ।

विद्या-दाता—*(वि०)* विद्या देने वाला । *(न०)* १. गुरु । २. सरस्वती ।

विद्या-दान—*(न०)* विद्या का दान । विद्या सिखाना ।

विद्या-देवी—*(ना०)* सरस्वती । शारदा । भवसोदरी । वरदा । वीणा-वादिनी ।

विद्या-धन—*(न०)* विद्या रूपी धन ।

विद्याधर—*(न०)* १. एक देवयोनि । गंधर्व २. जादूगर । *(वि०)* विद्वान । पंडित ।

विद्याधरी—*(ना०)* १. विद्याधर की स्त्री । गंधर्वी । २. जादूगरनी ।

विद्याध्ययन—*(न०)* विद्या की पढ़ाई। विद्याभ्यास। पढ़ाई।

विद्यापीठ—*(न०)* विश्वविद्यालय। युनिवर्सिटी।

विद्याभ्यास—*(न०)* विद्याध्ययन। शिक्षण। पढ़ाई।

विद्यारंभ—*(न०)* १. बालक को पढ़ाना शुरु करना। २. तत्संबंधी संस्कार।

विद्यार्थिनी—*(ना०)* विद्या पढ़ने वाली। विद्याभ्यासिनी। छात्रा।

विद्यार्थी—*(न०)* विद्या पढ़ने वाला। विद्याभ्यासी। छात्र।

विद्यालय—*(न०)* पाठशाला।

विद्या-वृद्ध—*(वि०)* खूब पढ़ा-लिखा। विद्या में श्रेष्ठ। *(न०)* पंडित।

विद्या-हीन—*(वि०)* १. नहीं पढ़ा हुआ। अपढ़। २. मूर्ख। ३. गँवार।

विद्योपासक—*(वि०)* विद्या का उपासक।

विद्रोह—*(न०)* १. बलवा। बगावत। २. द्वेष।

विद्रोही—*(वि०)* १. बलवाखोर। बलवाई। बगावती। बागी। २. द्वेषी।

विद्वज्जन—*(न०)* विद्वान मनुष्य।

विद्वत्ता—*(ना०)* १. ज्ञान। २. पंडिताई। पांडित्य।

विद्वान—*(न०)* १. पंडित। २. ज्ञानी।

विद्वेष—*(न०)* १. शत्रुता। २. द्वेष।

विध—*(ना०)* १. विधि। प्रकार। रीति। २. विधाता। ब्रह्मा। ३. उपाय। तरकीब। ४. व्यवस्था। ५. विधान। *(वि०)* (समास के अन्त में) प्रकार का जैसे—अनेकविध। *(अव्य०)* यथाविधि। विधिवत्।

विधना—*(ना०)* विधाता। ब्रह्मा।

विधर्म—*(न०)* १. विरोधी धर्म। २. दूसरे का धर्म।

विधर्मी—*(वि०)* १. विरोधी धर्मवाला। २ अन्य धर्मावलम्बी।

विध-लाधरण—*(वि०)* १. विधि से प्राप्त होने वाला। २. सरल विधि से प्राप्त होने वाला।

विधवा—*(ना०)* जिसका पति मर गया हो। बेवा। रांड।

विधवापणो—*(ना०)* वैधव्य। रंडापो।

विध-विध—*(वि०)* अनेक प्रकार का। *(अव्य०)* अनेक प्रकार से।

विधा—*(ना०)* १. प्रकार। भाँति। २. ढंग। ३. भेद।

विधाता—*(न०)* १. ब्रह्मा। *(ना०)* विधात्री।

विधान—*(न०)* १. विधि। रीति। २. व्यवस्था। ३. अनुष्ठान। ४. शास्त्राज्ञा। ५. सेवा। ६. उपाय। ७. नियम। कानून। ८. काम करने की प्रणाली। ९. हाथी का ग्रास।

विधायक—*(वि०)* १. व्यवस्था करने वाला। २. आज्ञा देने वाला। ३. विधान करने वाला। *(न०)* विधान सभा का सदस्य।

विधि—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. भाग्य देवता। ३. प्रकृति। ४. शास्त्राज्ञा। ५. संस्कार। ६. कानून। ७. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने की आज्ञा दी जाती है। ८. क्रिया का कर्म। क्रिया की पद्धति। *(व्या०)* ९. भाँति प्रकार। १०. विधान। ११. विधि-विधान।

विधि-निषेध—*(न०)* किसी कार्य को करने या नहीं करने की शास्त्रोक्त आज्ञा।

विधि-पूर्वक—*(अव्य०)* १. शास्त्र विधि के अनुसार। नियमानुसार। २. कानून मुताबिक।

विधि-रानी—*(ना०)* सरस्वती ।
विधि-वत—दे० विधिपूर्वक ।
विधि-वधू—*(ना०)* सरस्वती ।
विधि-वशात—*(अव्य०)* दैवयोग से ।
विधि-विधान—*(न०)* १. विधाता की रचना । २. शास्त्राज्ञा ।
विधि-हीन—*(वि०)* १. शास्त्र-विरुद्ध । विधि रहित ।
विधु—*(न०)* १. चंद्रमा । २. वायु । ३. कपूर । ४. विष्णु । ५. जलस्नान ।
विधुर—*(वि०)* व्याकुल । दुखी । *(न०)* वह जिसकी पत्नी मर गई हो । रंडुआ ।
विधु-वदनी—*(वि०)* चंद्रमुखी । *(ना०)* चंद्रमुखी स्त्री ।
विधूंस—*(न०)* विध्वंस । विनाश ।
विधूंसण—*(वि०)* विध्वंस करने वाला । नाश करने वाला । *(अव्य०)* नाश करने के लिए ।
विधूंसणो *(क्रि०)* १. विध्वंस करना । नाश करना । २ मार डालना ।
विधेय—*(वि०)* १. जिसका करना उचित हो । करने योग्य । २. जो नियमानुसार किया जाय । ३. आधीन । आज्ञाधारक । ४. वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कहा जाय । उद्देश के सम्बन्ध में वाक्य में जो कहा जाय । (व्या.)
विधो-विध—*(अव्य०)* १. यथानियम । २. प्रचलित रीति के अनुसार । यथारीति । विधिपूर्वक । ३. अच्छी तरह से । यथावत । ४. ठीक जगह पर । यथा-स्थान । ५. यथायोग्य । ६. जैसा चाहिये वैसा ।
विधर्म—दे० विधर्म ।
विध्वस्त—*(वि०)* १. नष्ट । विनष्ट । २. नाश प्राप्त ।
विध्वंस—*(न०)* विनाश । नाश । बरबादी ।
विन—दे० बिन ।
विनठणो—*(क्रि०)* नाश होना । विनष्ट होना ।
विनत—*(वि०)* नम्र ।
विनता—*(ना०)* १. गरुड़ की माता । २. दक्ष की एक कन्या । ३. वनिता । स्त्री । *(वि०)* नम्र स्वभाववाली ।
विनती—*(ना०)* १. प्रार्थना । २. अनुनय-विनय ।
विनम्र—*(वि०)* १. विशेष नम्र । २. झुका हुआ । ३. विनीत ।
विनय—*(न०)* १. नम्रता । २. प्रार्थना । ३. प्रणति ।
विनय-वान—*(वि०)* १. विनयवाला । २. सभ्य । ३. शिष्ट ।
विनयी—*(वि०)* विनयशील ।
विनवणो—*(क्रि०)* १. विनती करना । प्रार्थना करना । २. अनुनय-विनय करना ।
विनसणो—*(क्रि०)* नष्ट होना । बरबाद होना ।
विनंती—*(ना०)* अर्ज । प्रार्थना ।
विना—*(अव्य०)* १. रहित । बिना । सिवाय । बिना । वगर । बिगर । २. अतिरिक्त ।
विनाण—*(न०)* १. विज्ञान । २. ज्ञान । ३ उपाय । तरीका । ४. रूप । ५. चरित्र । ६. विधान । ७. विविध प्रकार । ८. प्रकार । तरह ।
विनाणी—*(न०)* लुहार । बेनाणी । बेदाणी । *(वि०)* १. ज्ञानी । २. विज्ञानी ।

विनायक—*(न०)* १. गणेश। गणपति। २. बढ़ई। खाती। वर्धाक।

विनायक-पूजा—दे० वर्धाक-पूजा। गणेश-पूजा।

विनाश—*(न०)* १. नाश। पूरा नाश। २. दुर्दशा। ३. अधिक हानि।

विनाशकारी—*(वि०)* १. नाश करने वाला। २. दुर्दशा करने वाला। ३. हानिकारक।

विनाश-काल—*(न०)* १. विनाश होने का समय। २. मृत्युकाल।

विनाशी—*(वि०)* १. नाश होने वाला। नश्वर। २. नाश करने वाला।

विनास—दे० विनाश।

विनासणो—*(क्रि०)* १. विनाश करना। नाश करना। २. विकृत करना।

विनिपात—*(न०)* १. अवनति। पड़ती। २. नाश। पतन। ३. बुरी तरह से निपात।

विनिमय—*(न०)* १. अदल-बदल। परिवर्तन। २. अलग-अलग देशों के सिक्कों का परस्पर लेन-देन के लिये निश्चित किया हुआ बटाव।

विनियोग—*(न०)* १. किसी फल के उद्देश्य से किया जाने वाला किसी मंत्र या वस्तु का उपयोग। प्रयोग। २. स्थिरीकरण।

विनीत—*(वि०)* १. सुशील। २. शिष्ट। ३. विवेकी। ४. सौम्य। ५. सुशिक्षित। ६. हाईस्कूल या विनय मंदिर के शिक्षण क्रम को पास किया हुआ। मैट्रिक पास्ड। ७. धार्मिक। दे० विनय-युक्त। नम्रतायुक्त।

विनै—दे० विनय।

विनोटा—दे० वींदोळियाँ।

विनोद—*(न०)* १. हास्य। २. मौज। आनंद। ३. मजाक। हँसी। प्रमोद। ४. कौतूहल। तमाशा। ५. प्रसन्नता।

विनोदी—*(वि०)* १. कुतूहल करने वाला। विनोद करने वाला। २. मौजी। ३. आनंदी। क्रीड़ाशील। विनोद वाला।

विनोळियाँ—*(ना०ब०व०)* दे० वींदोली।

विनोळी—दे० वंदोळी। दे० वींदोली।

विन्यास—*(न०)* १. स्थापन। २. सजाना।

विपक्ष—*(न०)* १. दूसरा पक्ष। २. शत्रु-पक्ष। ३. विरोधी। प्रतिद्वन्द्वी।

विपक्षी—*(न०)* १. विरोधी। २. शत्रु। ३. प्रतिद्वन्द्वी।

विपख—दे० विपक्ष।

विपच्छ—दे० विपक्ष।

विपणाक—*(न०)* दूकानदार। बनिया।

विपणी—*(न०)* दूकान। हाट।

विपत—दे० विपत्ति।

विपता—दे० विपत्ति।

विपतकाळ—*(न०)* दुख का समय। विपत्काल।

विपत्ति—*(ना०)* १. संकट दुख। आफत। २. दुख की स्थिति। विपत।

विपथ—*(न०)* कुमार्ग। बुरा मार्ग।

विपद—दे० विपदा।

विपदा—दे० विपत्ति।

विपन्न—*(वि०)* १. कठिनाई में फँसा हुआ। २. आर्त। दुखी। ३. मरा हुआ।

विपर—दे० विप्र।

विपरीत—*(वि०)* १. विरुद्ध। प्रतिकूल। २. उलटा। ऊंधो।

विपर्यय *(न०)* १. उलट-पुलट। २. भ्रम। ३. भूल। गलती। ४. अव्यवस्था। ५. नाश। ६, किसी शब्द का उलटा रूप। ७. किसी शब्द का उलटा अर्थ प्रगट करने वाला शब्द। विपर्याय।

विपल—*(न०)* एक पल का साठवाँ भाग।

विपाक—*(न०)* १. परिपक्वता। २. पूरी अवस्था में पहुंचना। ३. परिणाम। फल। ४. स्वाद। सवाद। ५. पाचन। पचना। ६. पूर्णता।

विपिन—*(न०)* जंगल। वन।

विपिन-विहारी—*(न०)* श्रीकृष्ण। *(वि०)* जंगल में विहार करने वाला।

विपुल—*(वि०)* १. विशाल। अगाध। २. पुष्कल। बहुत अधिक। घनो।

विपुला—*(ना०)* १. एक छंद। २. पृथ्वी।

विप्र—*(न०)* १. ब्राह्मण। ब्राह्मण। २. पुरोहित। ३. वेद मंत्रों का ज्ञाता। *(वि०)* बुद्धिमान।

विप्रलंभ—*(न०)* १. वियोग। विरह। २. प्रिय वस्तु का न मिलना। ३ प्रेमियों का वियोग। ४. छल। धूर्तता। ठगाई। ५. बुरा काम।

विप्लव—*(वि०)* १. उपद्रव। अशांति। २. विद्रोह। बलवा। ३. विपत्ति। ४. नाश।

विप्लवी—*(वि०)* १. उपद्रव करने वाला। २. विद्रोही।

विफरणो—दे० बीफरणो।

विफल—*(वि०)* निष्फल। व्यर्थ।

विफळ—दे० विफल।

विबुद्ध—*(वि०)* १. जाग्रत। जगा हुआ। २ प्रवीण। चतुर। ३. चेतन। *(न०)* १. देवता। २. पंडित। ३. विद्वान।

विबुध—*(न०)* १. ज्ञानी। २. पंडित। ३. देव। ४. शिव। ५. चद्रमा।

विबुधालय—*(न०)* देव मंदिर। देवालय।

विबोध—*(न०)* १. पूरा ज्ञान। २. जागना। ३. होश-हवास।

विभक्त—*(वि०)* १. विभाजित। बाँटा हुआ। २. अलग किया हुआ।

विभक्ति—*(ना०)* १. नाम का क्रिया के साथ संबंध दिखाने वाला प्रत्यय। २. (व्या०) कारकों के चिन्ह। (व्या०) ३. विभक्त होने का भाव। ४. विभाग। ५. अलगाव।

विभचार—दे० व्यभिचार।

विभचारी—दे० व्यभिचारी।

विभव—*(न०)* १. वैभव। ऐश्वर्य। २. धन। सम्पत्ति। ३. शक्ति। ४. सौंदर्य। ५. साठ संवत्सरों में से एक। ६. निर्वास। मोक्ष।

विभा—*(ना०)* १. प्रकाश। २. किरण। ३. शोभा। ३. प्रभा।

विभाकर—*(न०)* १. सूर्य। २. अग्नि। ३. राजा।

विभाग—*(न०)* २. भाग। हिस्सा। बंटवारा। १. अंश। ३. पुस्तक का प्रकरण। अध्याय। ४. सुभीते के लिए कार्य का अलग। किया हुआ क्षेत्र। ५. महकमा। ६ कार्य क्षेत्र। ७ सीमा। ८. मद्द।

विभाजक—*(वि०)* १. विभाग करने वाला। २. वह सख्या जिससे किसी दूसरी संख्या को भाग दिया जाय। (गणित)।

विभाज्य—*(वि०)* १. विभाग करने योग्य। २. बाँटा जाने योग्य।

विभाड़—*(न०)* नाश। ध्वंस।

विभाड़णो—*(क्रि०)* १. नाश करना। मारना। २. तोड़ना। ३. भागना। तितर-बितर कर देना।

विभावना—*(न०)* एक अर्थालंकार। (साहि०)।

विभावरी—*(ना०)* १. रात्रि। रात। २. हल्दी। ३. दूती।

विभास—*(ना०)* एक राग। २. प्रकाश। चमक।

विभीखण—दे० विभीषण।

विभीषण—*(न०)* रावण का भाई।

विभु—*(वि०)* १. सर्वव्यापी। २. नित्य। ३. अचल। ४. शक्तिमान। समर्थ। ५. महान। ६. श्रेष्ठ। *(न०)* १. आत्मा। २. परमात्मा। ३. ब्रह्मा। ४. शिव। ५. प्रभु। स्वामी ६. जीवात्मा।

विभुता—*(ना०)* १. सर्वव्यापकता। २. प्रभुता। ३. ऐश्वर्य।

विभूति—*(ना०)* १. ऐश्वर्य। विभव। २. धन-संपत्ति। अलौकिक शक्ति। ४. प्रभुता। महत्ता। ५. सामर्थ्य। ६. भस्म। ७. शिव के अंग में लगाने की भस्म। भभूत।

विभेदणो—*(क्रि०)* १. भेदन करना। २. नाश करना। ३. तोड़ना।

विभो—*(न०)* १. कृषक का गाय, भैंस, बैल, खेती आदि धन। २. खेती बाड़ी का काम। भंभो। ३. कृषि। खेती। ४. धंधा। कारोबार। काम-धंधा। ५. वैभव। विभव। ऐश्वर्य। साहिबी।

विभोर—*(वि०)* १. विह्वल। २. लीन। ३. मस्त।

विभ्रम—*(न०)* १. संशय। २. भ्रांति। ३. घबराहट। ४. स्त्रियों का एक भाव जिसमें प्रियतम को देखकर हर्ष के मारे गहने उलटे-सुलटे पहिन लेती है। (साहि.) ५. विलास-युक्त हावभाव।

विभ्रांत—*(वि०)* १. भ्रमित। २. घबराया हुआ।

विमणो—दे० विमनो।

विमनो—*(वि०)* १. उदास। २. नाराज। ३. बिना मन का। विमणो।

विमर—दे० विवर।

विमर्श—*(न०)* १. विचार। २. समीक्षा। आलोचना। ३. विवेचन। ४. परामर्श। ५. अधीरता। ६. संशय। ७. क्षमा। का अभाव।

विमल—*(वि०)* १. मल-रहित। विमल। निर्मल। २. स्वच्छ। ३. निष्कलंक। विमळ। ४. शुद्ध।

विमळ—दे० विमल।

विमाण—दे० विमान।

विमाता—*(ना०)* सौतेली माता। माँ की सौत। मांई-मां।

विमान—*(न०)* १. हवाई जहाज। विमाण। २. उड़न-खटोला।

विमाळ—*(न०)* १. निस्तेज। निर्माल। २. निरुपाय।

विमास—*(न०)* १. विचार। २. विमर्श। ३. पश्चाताप। ४. उलझन (मनकी)।

विमासणो—*(क्रि०)* १. विचार करना। २. विमर्श करना। ३. पश्चाताप करना। पछताना। ४. चिंता करना। ५. विचारों में उलझना।

विमाह—दे० विवाह।

विमुक्त—*(वि०)* १. छूटा। बरी। मुक्त। २. त्यक्त। ३. स्वतन्त्र। ४. स्वच्छंद। ५. दंडमुक्त। ६. निवृत।

विमुख—*(वि०)* १. प्रतिकूल। विरुद्ध। २. पराङ्मुख। ३. विरक्त। उदासीन।

विमुग्ध—*(वि०)* १. आसक्त। मोहित। २. भ्रांत। ३. घबराया हुआ। ४. पागल।

विमुहा-खड़णो—*(मुहा०)* १. विरुद्ध चलना। २. प्रतिकूल व्यवहार करना। ३. लौट जाना।

विमुहो—*(वि०)* १. विमुख। विरुद्ध। प्रतिकूल। २. पराङ्मुख। विमुख।

विमूढ—*(वि०)* १. विशेष रूप से मोहित। २. बेसुध। ३. ज्ञान-रहित। ४. नादान। ५. मूर्ख। नासमझ।

विमेक—दे० विवेक ।

विमोचन—*(न०)* १. छुटकारा । मुक्ति । २. बंधन आदि से छूटना । ३. अभियोग से मुक्त होना ।

विमोह—*(न०)* १. मोह । अज्ञान । २. भ्रांति । ३. विशेष मोह ।

विमोहणो—*(क्रि०)* मोहित करना ।

विमोहन—*(न०)* १. कामदेव का एक बाण । २. आकर्षण ।

विमोहित—*(वि०)* मोहित । आसक्त ।

विमोही—*(वि०)* १. मोहित करने वाला । २. प्रेमी ।

वियान—दे० विस्यान ।

वियापक—दे० व्यापक ।

वियापणो—दे० व्यापणो ।

वियावणो—दे० व्यावणो ।

वियावर—दे० व्यावर ।

वियोग—*(न०)* १. अलग होना । २. अलग होने का दुख । ३. विरह । ४. प्रेमियों के बिछुड़ने की अवस्था या भाव । ५. अलगाव । ६. विरह-वेदना । दे० विजोग ।

वियोगांत—*(वि०)* जिसका अंत प्रेमियों के वियोग से हो (कथा, काव्य आदि)।

वियोगिनी—*(वि०)* पति या प्रेमी से बिछुड़ी हुई (स्त्री या नायिका) ।

वियोगी—*(वि०)* १. प्रेमिका से बिछुड़ा हुआ । २. विरही । *(न०)* विरही व्यक्ति ।

विरकत—दे० विरक्त ।

विरक्त—*(वि०)* १. उदासीन । २. अप्रसन्न । खिन्न । ३. आसक्ति रहित । ४. विमन । ५. उदास । खिन्न ।

विरक्ति—*(ना०)* १. उदासीनता । २. अनासक्ति । ३. खिन्नता ।

विरख—*(न०)* १. वृक्ष । रूंखड़ो । २. वृष । वृषभ । बख ।

विरखा—*(ना०)* वर्षा । मेह ।

विरचणो—*(क्रि०)* १. बाँटना । भाग करना । २. निर्माण करना । ३. सजाना ।

विरज—*(वि०)* १. रज-रहित । २. पवित्र । *(न०)* वीर्य । २. व्रज ।

विरड़णो—*(क्रि०)* क्रोध करना ।

विरत—*(वि०)* १. जो प्रवृत्त न हो । २. अनमना । उदास । ३. किसी काम से हाथ खींच लेना । ४. विमुख । ५. निवृत्त । ६. विरक्त । ७. पूजा-पाठ, विवाह आदि करने-कराने की पुरोहिती। गांव गुरु या पुरोहित का बँधा हुआ उक्त काम । वृत्ति ।

विरत-वाड़ी—*(ना०)* विरत का काम । वृत्ति । दे० व्रतवाड़ी ।

विरत-वाळो—दे० व्रतेसरी ।

विरतंत—दे० वृत्तांत ।

बिरतियो—दे० व्रतेसरी ।

विरती—दे० वृत्ति ।

विरतेसरी—दे० व्रतेसरी ।

विरथ—दे० विरथा ।

विरथा—*(वि०)* वृथा । व्यर्थ । फालतू । निरर्थक । *(क्रि०वि०)* १. बिना जरूरत या प्रयोजन के । २. भूल से । ३. मूर्खता से ।

विरद—*(वि०)* १. यश । कीर्ति । २. विरुद । गुण । ३. ख्याति । ४. सिद्धि । *(वि०)* बिना दांतों वाला ।

विरद-झलू—*(वि०)* १. विरुदधारी । २. यशस्वी । कीर्तिमान ।

विरद-पगार—*(वि०)* अनेक विरुद धारण करने वाला । यशस्वी ।

विरद-पत—दे० विरुद-पति ।

विरद-वडो—वरद-वड़ी । विरध-वड़ी ।

विरदाणो—*(क्रि०)* १. प्रशंसा करना । २. यशगाना । ३. खुशामद करना । चापलूसी करना । **वड़दावणो** ।

विरदाथक—*(वि०)* विरुद वाला । विरुदायक ।

विरदाळ—दे० विरुदाळ ।

विरदाळो—दे० विरुदाळ ।

विरदाव—*(न०)* १. विरुद-वचन । २. वरद-वचन । ३. आशीर्वाद । *(अव्य०)* कल्याणमस्तु । स्वस्ति । **वरदाव** ।

विरदावणो—दे० विरदाणो ।

विरदावळी—दे० विरुदावली ।

विरदेत—*(वि०)* १. विरुद-वाला । विरुद-धारी । २. कीर्ति वाला । ३. विरुद बखानने वाला । *(न०)* १. चारण । २. भाट । ३. ढाढ़ी ।

विरध—*(वि०)* वृद्ध । बूढ़ा । **डोकरो** । *(न०)* १. विवाहादि के कार्यारंभ में संपादन किया जाने वाला वृद्धि रूप मंगलोत्सव । २. विवाहोत्सव । ३. विवाह में वृद्धि की कामना का मंगल लोकगीत । **वरध** । **वरद** ।

विरध-वड़ी—*(अव्य०)* १. विवाह के प्रारंभिक मांगलिक कार्यों की एक विधि या प्रथा जो मूंग की बरी (मुंगौड़ी) बनाकर मनाई जाती है । २. विरध-वड़ी के बनाने के समय गाया जाने वाला मंगलगीत । **वरद-वड़ी** ।

विरधी—*(न०)* १. वृद्धि । बढ़ती । २. विवाह, जनेऊ आदि संस्कारों में मनाया जाने वाला वृद्धि का एक मंगलोत्सव ।

विरमाणो—*(क्रि०)* १. त्यागना । २. मरना । ३. विराम करना । आराम करना । ४. अटकना । रुकना ।

विरमो—*(न०)* १. एक वस्त्र । २. कीमती दुशाला ।

विरल—दे० विरलो ।

विरळ—दे० विरलो ।

विरळणो—*(क्रि०)* १. बिखेरना । छितराना । २. भगाना । ३. अलग-अलग करना । ४. बिगड़ना । भ्रष्ट होना । पतित होना ।

विरलो—*(वि०)* १. कोई सा ही । कोई ही । २. जो अधिकता से न मिले । ३. जो घना न हो । ४. विरल । दुर्लभ । ५. अल्प ।

विरस—*(न०)* १. मनोमालिन्य । २ शत्रुता । **बैर** । ३. रसभंग । ४. लड़ाई । **कंजियो** । *(वि०)* १. रस-रहित । नीरस । २. स्वाद-रहित । ३. अरुचिकर । ४. बे-मुहब्बत । स्नेहाभाव ।

विरसणो—*(क्रि०)* १. शत्रुता करना । बैर मोल लेना । २. लड़ाई करना ।

विरह—*(न०)* १. वियोग । **विजोग** । जुदाई । २. दुख । ३. प्रियजन का वियोग । ४. वियोग में अनुभव होने वाला अनुराग ।

विरहणी—*(वि०)* वियोगिनी । **विजोगण** । जिसे अपने प्रेमी या पति का वियोग हुआ हो । प्रिय के वियोगवाली । **विरहिणी** ।

विरह-विजोग—दे० विरह वियोग ।

विरह-वियोग—*(न०)* १. प्रिय व्यक्ति का वियोग । २. वियोग का दुख ।

विरह वीर—*(न०)* बलराम । बलिभद्र ।

विरहाग्नि—*(ना०)* विरह रूपी अग्नि ।

विरहातुर—*(वि०)* विरह से व्याकुल बना हुआ ।

विरहानल—दे० विरहाग्नि ।

विरही—*(वि०)* विरहवाला । वियोगी ।

विरंग—दे० विरंगो ।

विरंगो—*(वि०)* १. बिना रंग का । २. बदरंग । ३. अनेक रंगों वाला ।

विरंच—दे० विरंची ।

विरंची—*(न०)* विरंचि । ब्रह्मा ।

विरंज—*(न०)* १. चावलों का बनाया जाने वाला एक मधुरान्न । **बिरांज** । २. चावल डाल कर बनाया हुआ एक मांस खाद्य ।

विरंडी—दे० वंडी । *(ना०)* एक प्रकार की शराब । ब्रांडी ।

विरंडो—दे० वरंडो ।

विराग—*(न०)* १. वैराग्य । २. उदासीन भाव । ३. इच्छा का अभाव । रुचि का अभाव ।

विरागी—दे० वैरागी ।

विराज—*(न०)* १. सम्राट । २. राजा । ३. एक वैदिक छंद । ४. शोभा । ५. निवास । *(वि०)* नाराज ।

विराजणो—*(न०)* निवास । निवास स्थान । *(क्रि०)* १ बैठना । विराजना । २. शोभा देना । फबना । ३. प्रकाशमान होना । ४. निवास करना । रहना ।

विराज-मान—*(वि०)* १. शोभित । शोभायमान । २. प्रतिष्ठित । स्थापित । ३. उपस्थित । विद्यमान । ४. बैठे हुये (आदरसूचक, बहुवचन रूप में) ।

विराजी—दे० वैराजी ।

विराट—*(वि०)* १. विशाल । बहुत बड़ा । २. बहुत भारी । *(न०)* १. विश्वरूप ब्रह्म । २. विश्व । ३. जयपुर जिले के प्रसिद्ध, प्राचीन ऐतिहासिक नगर । वैराट ।

विराट नगर—*(न०)* जयपुर जिले का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर 'वैराट' का महाभारत कालीन नाम ।

विराड़—*(न०)* १. भागीदारी । २. शांति । ३. मैत्री । ४. दरार । तेड़ । ५. बिमर । ६. दर । बिल । घर । ७. घाव । ८. महसूल । वराड़ ।

विराणो—*(वि०)* अन्य । दूसरा । पराया । बिराना । पारको । पराथो ।

विरादरी—दे० बिरादरी ।

विराम—*(न०)* १. विश्राम । आराम । अवकाश । २. अन्त । अवसान । मृत्यु । मिरतू । ३. वाक्य में वह स्थान जहाँ बोलते समय थोडा ठहरना पड़ता है । ४. पद्य की पंक्ति में यति या ठहराव (काव्य) ।५. चित्रकारी । ६. मीनाकारी ।

विराम-चिन्ह—*(न०)* १. वाक्य या पद्य में पढ़ते समय ठहरने का निशान । २. वाक्य के बीच में या अंत में प्रयुक्त , ; । ? . — इत्यादि चिन्ह ।

विरामणो—*(क्रि०)*१. मरना । मरणो । २. रुकना । अटकना । ३. विश्राम करना । ४. मारना । मारणो ।

विराळ—*(न०)* १. गहन विचार । २. नाश । संहार । विरोळ ।

विरासत—*(ना०)* १. उत्तराधिकार । २. उत्तराधिकार में मिलने वाली सम्पत्ति इत्यादि । बरासत ।

विरियाळी—*(ना०)*सौंफ । सूंफ । बरियाळी ।

विरियाँ—*(ना०)* १. वेला । समय । २. विलंब । देरी ।

विरुद—*(न०)* १. यश । कीर्ति । २. गुण, प्रताप, उदारता इत्यादि का बखान । यश वर्णन । ३. श्रेष्ठता । ४. पदवी । ५. ख्याति ।

विरुद पति—*(न०)* १. अनेक विरुद (गुणों को) धारण करने वाला यशस्वी पुरुष । विरुदपति । २. विजयी पुरुष ।

विरुदाणो—*(क्रि०)* १. प्रशंसा करना । २. खुशामद करना ।

विरुदायक—दे० विरदायक ।

विरुदाळ—*(वि०)* १. विरुद वाला । २. कीर्तिमान । ३. पदवीधारी ।

विरुदावणो—*(क्रि०)* विरदाणो ।

विरुदावळी—*(ना०)* विरुदों या पदवियों का विस्तारपूर्वक वर्णन या संग्रह । गुणावली ।

विरुद्ध—*(वि०)* १. विपरीत । प्रतिकूल । २. रुष्ट । खिन्न । *(अव्य०)* १. मुकाबले में । २. विरोध में । ३. सामने ।

विरूप—*(वि०)* कुरूप । बदसूरत । **कदरूपो** ।

विरेचन—*(न०)* जुलाब ।

विरोध—*(न०)* १. आपत्ति । २. विपक्षता । ३. शत्रुता । ४. कलह । झगड़ा । ५. रुकावट । व्याघात ।

विरोधाभास—*(न०)* १. दो बातों में दिखाई देने वाला विरोध । २. एक अर्थालंकार ।

विरोधी—*(वि०)* १. विरोध करने वाला । २. बैरी । शत्रु । ३. विपक्षी । ४. प्रतिद्वन्द्वी ।

विरोधणो—*(क्रि०)* १. विरोध करना । निषेध करना । २. रुकावट डालना ।

विरोळ—*(न०)* १. नाश । नष्ट । २. गंभीर विचार ।

विरोळणो—*(क्रि०)* १. निर्णयार्थ मन में विचार करना । २. बार-बार सोचना या विचार करना । ३. जाँच करना । तपासना । परीक्षा करना । ४. बिखेरना । छितराना । ५. नाश करना । संहार करना ।

विलकुल—दे० बिलकुल ।

विळकुळणो—*(क्रि०)* १. व्याकुल होना । घबरा जाना । २. लालायित होना । ३. आतुर होना । ४. अधीन होना । ५. क्रोध से लाल पीला होना । ६. तड़फड़ाना । छटपटाना । ७. दुखी होना । ६. उत्तम । श्रेष्ठ ।

विलक्षण—*(वि०)* १. विशेष लक्षणों से युक्त । विशेष लक्षणों वाला । २. असाधारण । ३. अद्भुत । ४. विशिष्ट । ५. विचित्र ।

विलखणो—*(वि०)* १. कुलक्षणों वाला । **कुलखणो** । २. विलक्षण गुण वाला । **सुलखणो** । ३. व्याकुल । उदास । **बिलखो** । *(क्रि०)* १. रोना । बिलखना । विलाप करना । २. उदास होना । ३. दुखी होना । ४. व्याकुल होना ।

विलखो—*(वि०)* १. दुखी । २. उदास । ३. व्याकुल ।

विलग—*(वि०)* १. अलग । पृथक । जुदा । **अळगो** । **वेगळो** । २. लगा हुआ । चिपका हुआ । **चिपियोड़ो** ।

विलगणो—*(क्रि०)* १. चिपकना । लिपटना । विलगना । २. दूर होना । ३. अलग होना ।

विलगाणो—*(क्रि०)* १. विलग्न करना । बिलगाना । २. लिपटाना । चिपटाना ।

चेपणो । ३. दूर करना । अलग करना ।

बिलगावणो—दे० बिलगाणो ।

बिलच्छण—दे० बिलक्षण ।

बिलच्छणो—दे० बिलक्षण ।

बिलज—*(वि०)* निर्लज्ज । **बिलजो** ।

बिलजो—दे० बिलज ।

बिलपणो—*(क्रि०)* बिलाप करना । रोना ।

बिलम—*(न०)* १. बिलंब । देर । **मोड़ो** । २. मोह । ३. आकर्षण । *(वि०)* १. २. मोहित । आकर्षित ।

बिलमणो—*(क्रि०)* १. मोहित होना । २. आकर्षित होना । ३. बिलंब होना । देर होना । ४. ललचाना । ५. उत्साहित होना । ६. विफल होना । ७. गद्-गद् होना । ८. प्रसन्न होना । खुश होना । ९. हर्षित होना ।

बिलमाणो—दे० बिलमावणो ।

बिलमायोड़ो—*(वि०)* १. मोहित । मुग्ध । २. स्नेहाधीन । ३. आकर्षित । ४. अभिभूत ।

बिलमावणो—*(क्रि०)* १. मोहित करना । मुग्ध करना । २. आकर्षित करना । ३. मोहित होना । ४. आकर्षित होना । ५. मीठी बातों से वश में कर लेना । अभिभूत करना । बिलमाना । ६. हर्षाना । हर्षित करना । राजी करना ।

बिलय—*(न०)* १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु में समा जाना । २. लीन होना । ३. घुल जाना । ४. विघटित होना । ५. घुलमिल जाना । ६. छोटे राज्य का बड़े राज्य में मिल जाना । ७. आत्मा का परमात्मा में मिल जाना । ८. सृष्टि का मूल तत्वों में मिल जाना । प्रलय । ९. ध्वंस । नाश । १०. मृत्यु ।

बिलळो—*(वि०)* १. भद्दा । खराब । २. अवाँछनीय । बेहूदा । ३. आचार । भ्रष्ट । पतित । ४. गंदा । मैला-कुचैला । ५. हर समय खाने को ललचाने वाला । लोलुप । ६. व्यर्थ ।

बिळबिळाट—*(न०)* १. बिलाप । रुदन । **बळबळाट** । २. वियोग जनित-बिलाप । ३. रुदन ।

बिलस—*(न०)* १. शोभा । २. बिलास । ३. आनन्द । मोज ।

बिलसणो—*(क्रि०)* १. उपभोग करना । आनंद से भोगना । २. बिलास करना । आनंद करना । ३. शोभा पाना । फबना । ४. भोगना ।

बिलंग—दे० बिलंगणी ।

बिलंगड़ी—दे० बिलंगणी ।

बिलंगणी—*(ना०)* १. कपड़े टाँगने की तनी । अरगनी । **तणी** । **अळगणी** । २. टाँड । पछीत । रौंस ।

बिलद—दे० बुलंद ।

बिलंब—*(न०)* देर । बार । **ढील** । **मोड़ो** ।

बिलंबणो—*(क्रि०)* १. बिलंब करना । २. देर करना । ३. **देर होना** । **मोड़ो हूणो** । दे० बिलमणो ।

बिलाग—दे० बेलाग ।

बिलागणो—*(क्रि०)* दे० बिलगणो ।

बिलाणो—*(क्रि०)* १. बिलीन होना । २. नष्ट होना । बिलाना । ३. लुप्त होना । ४. मरना ।

बिलाप—*(न०)* १. बिलख-बिलखकर रोना । २. रुदन । रोना । ३. क्रंदन ।

बिलाप करणो—*(क्रि०)* १. बिलख-बिलख कर रोना । क्रंदन करना । रोना । २. दुख करना ।

विलापणो—दे० विलाप करणो ।

विलापात—*(न०)* १. रोना-धोना । २. आत्मीय के वियोग का रुदन । ३. वियोग दुख के कारण निरन्तर बना रहने वाला रुदन । विलाप ।

विलाय जाणो—दे० विलाणो ।

विलायत—*(न०)* १. समुद्र पार का देश । २. यूरोप । ३. इंगलैण्ड । ४. विदेश । ५. यूरोप का कोई देश । ६. सात विलायतों में से कोई एक ।

विलायती—*(वि०)* १. विलायत का । २. विलायत का रहने वाला । ३. विलायत का बना हुआ । ४. विलायत संबंधी । ५. विदेशी ।

विलालो—*(वि०)* १. शौकीन । २. मौजी । ३. रसिक । ४. उदार । ५. मजाकी । परिहास-प्रिय । दिल्लगीबाज । ६. खुश-मिजाज ।

विलावणो—दे० विलाणो ।

विलावल—*(ना०)* एक राग (संगीत) । बिलावल ।

विलास—*(न०)* १. प्रेम-क्रीड़ा । क्रीड़ा । २. सुख-भोग । ३. शृंगार-चेष्टा । ४. स्त्री-अंग की कामोत्तेजक चेष्टाएँ । ५. आनंद । हर्ष । ६. मनोरंजन । विनोद । ७. शृंगार-क्रीड़ा । ८. मोहक हाव-भाव । ९. खेल ।

विलासणो—*(क्रि०)* १. प्रेम-क्रीड़ा करना । २. मनोरंजन करना । ३. कामोत्तेजक चेष्टाएं करना । ४. उपभोग करना ।

विलासी—*(वि०)* १. कामासक्त । विषयी । कामुक । विषयासक्त । २. भोगी । ३. प्रवृत्तिवाला । ४. मौजी । आनंदी ।

विळिया—दे० वेळा ।

विलीन—*(वि०)* १. पूरी तरह से लीन । २. अदृश्य । लुप्त । गायब । ३. गुप्त । ४. नष्ट । ५. मृत ।

विलुप्त—*(वि०)* १. लुप्त । २. नष्ट । ३. अदृश्य । गायब ।

विलुब्ध—*(वि०)* १. मोहित । आसक्त । २. लिपटा हुआ । चिपटा हुआ । ३. आलिंगन किया हुआ । ४. विशेष प्रकार से लुब्ध । ५. लुभाया हुआ ।

विलूमणो—दे० विलूंबणो ।

विळूंधणो—*(क्रि०)* १. घेरा लगाना । २. विलुब्ध होना । ३. आसक्त होना । ४. आश्रित होना ।

विलूंबणो—*(क्रि०)* १. विलुब्ध होना । आसक्त होना । लुभाना । २. लीन होना । ३. लिपटना । ४. गलबहियाँ लेना । गले लगना । आलिंगन करना । ५. लहराना । झूमना ।

विलूंबो—*(वि०)* १. आसक्त । २. लीन । ३ लिपटा हुआ । *(भू०क्रि०)* लिपट गया ।

विलै—दे० विलय ।

विलोकणो—*(क्रि०)* १. देखना । २. जाँचना । परीक्षा करना । अवलोकन करना । ३. कृपा दृष्टि रखना ।

विलोचन—*(ना०)* १. आँख । नेत्र । लोचन । २. दृष्टि । *(वि०)* लोचन रहित ।

विलोड़णो—*(क्रि०)* १. हिलाना । २. मथना । विलोड़ना । मंथन करना । मथणो । ३. नाश करना । ४. हैरान करना ।

विलोणो—दे० विलोवणो ।

विलोप—*(न०)* १. लोप । गायब । अदर्शन । २. रद्द । ३. नाश । ४. बाधा । रुकावट । ५. हानि । नुकसान । ६. उल्लंघन ।

विलोपणो—*(क्रि०)* १. लोप करना । गायब करना । २. उल्लंघन करना ।

३. नाश करना। मिटाना। ४. रुकावट डालना। बाधा डालना।

विलोपन—*(न०)* १. लुप्त होने या करने की क्रिया या भाव। लुप्त। गायब। २. नाश। ३. रद्द।

विलोम—*(वि०)* १. विपरीत। प्रतिकूल। उलटा। २. ऊपर से नीचे की ओर जाने-उतरने वाला। ३. केश रहित। *(न०)* १. विपरीत क्रम। २. सर्प। ३. स्वान। कुत्ता। **कूतरो**। ४. रहँट। **अरट**। ५. वरुण।

विलोमज—*(वि०)* उच्च जाति की स्त्री और नीच जाति के पुरुष से उत्पन्न (संतान)।

विलोल—*(वि०)* १. चंचल। अस्थिर। २. सुन्दर। ३. ढीला। ४. अस्त-व्यस्त।

विलोवणो—*(क्रि०)* १. मंथन करना। २. दही को मथना। बिलौना। *(न०)* १. बिलौने का काम। २. बिलोने का पात्र। दही मथने का मटका। **बलोणो**।

विवनो—*(वि०)* १. दुखी। २. मृत। ३. बदरंग। विवर्ण। ४. कांतिहीन। ५. नीच। ६. पागल। **गरलो**।

विवनोम—दे० विवनो।

विवर—*(न०)* १. बिल। दर। २. गुफा। ३. छिद्र। छेद। **बिमरा**। **ढीडो**।

विवरण—*(न०)* १. विवेचन। स्पष्टीकरण। २. वृत्तान्त। ३. विस्तृत वर्णन। ब्योरा। ४. व्याख्या। टीका।

विवरावणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत वर्णन करना। २. व्याख्या करना।

विवरो—*(न०)* १. जानकारी। ज्ञान। २. भेद। ३. अंतर। दे० विवरण।

विवर्जन—*(न०)* १. त्याग। २. रोक। मनाही। रुकावट। ३. उपेक्षा। ४. अनादर। अपमान।

विवर्जित—*(वि०)* १. उपेक्षित। २. अनादृत। ३. निषिद्ध। ४. रोका हुआ। मना किया हुआ। ५. बंद।

विवश—*(वि०)* १. बेबस। मजबूर। २. पराधीन। ३. व्याकुल। ४. अशक्त।

विवसणो—*(क्रि०)* १. पराधीन होना। २. मजबूर होना।

विवसाय—दे० व्यवसाय।

विवसाव—दे० व्यवसाय।

विवह—*(वि०)* अनेक प्रकार का। विविध प्रकार का।

विवह-करि—दे० विवहपरि।

विवह-परि—*(अव्य०)* १. विविध प्रकार से। भाँति-भाँति से। २. विस्तार-पूर्वक।

विवह-विध—*(अव्य०)* १. विविध विधि। २. भाँति-भाँति।

विवहार—दे० व्यवहार।

विवहारियो—दे० व्यवहारी।

विवहारी—दे० व्यवहारी।

विवहार्यो—दे० विवहारियो।

विवाण—दे० विमाण।

विवाद—*(न०)* १. चर्चा। २. झगड़ा। ३. कहा-सुनी। ४. तकरार। ५. मुकदमा। ६. तर्क-वितर्क।

विवादास्पद—*(वि०)* १. जिसके संबंध में विवाद चल रहा हो या चल सकता हो। २. संदिग्ध।

विवादी—*(वि०)* १. विवाद करने वाला। २. झगड़ा करने वाला।

विवाह—*(न०)* शादी। परिणय। पाणि-ग्रहण। **ब्याव**। **कोवा**।

विवाहणो—*(क्रि०)* १. विवाह करना । २. विवाह होना । शादी होना ।

विवाह-बाजन—*(न०)* १. विवाह और उसके संबंध की धाम-धूम । २. विवाहादि मांगलिक उत्सव । **ब्याव-बाजण** ।

विवाहोत्सव—*(न०)* विवाह और उससे संबंधित उत्सव । विवाह समारंभ ।

विविध—*(वि०)* अनेक प्रकार का । भांति-भांति का । **विवाह** ।

विविध-संग्रह—*(न०)* मलसीसर के भूरसिंह शेखावत द्वारा संकलित-संपादित एक ऐतिहासिक काव्य-संग्रह । २. विविध प्रकार का संग्रह ।

विवृत—*(वि०)* १. फैला हुआ । विस्तृत । २. खुला हुआ । ३. जिसकी व्याख्या की गई हो । ४. पूरा मुँह खोलकर बोला जाने वाला स्वर । 'आ' स्वर (व्या०) ।

विवेक—*(न०)* १. भले-बुरे का ज्ञान । २. सत्यज्ञान । ३. विवेचन शक्ति । ४. अच्छी बुद्धि ।

विवेक रहित—*(वि०)* १. बिना विवेक का । २. मूर्ख । ३. अज्ञानी ।

विवेकहीन—*(वि०)* १. मूर्ख । अविवेकी । २. अज्ञानी ।

विवेकी—*(वि०)* १. भले-बुरे को समझने वाला । २. भले-बुरे की समझ या ज्ञानी । ज्ञान रखने वाला । विवेकवान । ३. बुद्धिमान । ४. ज्ञानी

विवेचक—*(वि०)* विवेचन करने वाला ।

विवेचन—*(न०)* १. विचारपूर्वक किया हुआ निर्णय । २. तर्क-वितर्क । ३. मीमांसा । ४. सम्यक् परीक्षण ।

विश—*(ना०)* १. समस्त प्रजा । २. वैश्य ।

विशद—*(वि०)* १. विस्तार सहित । सुस्पष्ट । २. निर्मल । स्वच्छ । उज्ज्वल । **बिसद** ।

विशाखा—*(न०)* १. सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र । २. छोटी शाखा ।

विशारद—*(वि०)* १. विशेषज्ञ । २. पंडित । ३ श्रेष्ठ । *(न०)* एक विद्या उपाधि ।

विशाल—*(वि०)* १. आकार, प्रकार आदि की दृष्टि से बहुत बड़ा । २. विस्तृत, मोटा या ऊँचा । ३. विस्तीर्ण । ४. भव्य ।

विशांपति—*(न०)* राजा ।

विशिख—*(न०)* १. बाण । २. सुई । *(वि०)* शिखाहीन ।

विशिष्ट—*(वि०)* १. विशेषता वाला । २. असामान्य । असाधारण । ३. विलक्षण । ४. अद्भुत । ५. यशस्वी । ६. प्रसिद्ध । ७. अति शिष्ट ।

विशिष्टता—*(ना०)* १. विशिष्ट का भाव या गुण-धर्म । २. विशेषता ।

विशिष्टाद्वैत-मत—*(न०)* श्री रामानुजाचार्य प्रतिपादित एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें जीवात्मा और जगत, ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न माने गये हैं । जीव और जगत ब्रह्म के विशेषण हैं और संसार मिथ्या नहीं है । विशेषणयुक्त अद्वैत ।

विशुद्ध—*(वि०)* १. जिसमें कोई मिलावट न हो । बिना मिलावट का । २. पूर्ण शुद्ध । अत्यन्त शुद्ध ।

विशृंखल—*(वि०)* १. जिसमें कड़ी या शृंखला न हो। २. नियन्त्रण बाहर। ३. अस्त-व्यस्त। ४. उच्छृंखल। ५. बिखरा हुआ। टूटा हुआ।

विशेष—*(वि०)* १. अधिक। विपुल। २. असाधारण। ३. विलक्षण। *(न०)* १. अन्तर। २. प्रकार। ३. विचित्रता।

विशेषण—*(न०)* १. संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने वाला शब्द *(व्या०)*। २. वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो।

विशेषता—*(ना०)* १. अधिकता। २. विलक्षणता। ३. असाधारणता।

विशेष्य—*(न०)* विशेषण द्वारा जिसकी विशेषता बताई जाय वह शब्द। वह संज्ञा-शब्द जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो। *(व्या०)*

विश्रवा-ऋषि—*(न०)* पुलस्त्य ऋषि के पुत्र और रावण के पिता का नाम।

विश्रंभ—दे० विसंभ।

विश्राम—*(न०)* १. थकावट दूर करने के लिए बैठने-लौटने इत्यादि की क्रिया या स्थिति। काम करते हुए थक जाने के कारण काम को छोड़कर रखा जाने वाला थोड़े समय का अवकाश। २. आराम। बिसामो। बिसराम। ३. सुख। शान्ति। ४. विश्राम लेने का स्थान। ५. मृत्यु।

विश्रांत—*(वि०)* १. जो विश्राम कर रहा हो। २. जिसकी थकावट मिट गई ३. थका हुआ। ४. शांत।

विश्रांति—*(ना०)* १. विश्राम। आराम। २. अन्त।

विश्रुति *(वि०)* १. प्रख्यात। प्रसिद्ध। २. जाना हुआ। ३. सुना हुआ।

विश्लेषण—*(न०)* १. सूक्ष्म छानबीन। २. किसी बात के अन्तर्निहित तत्वों का पृथक्करण। अलगाव। ४. वियोग। ५. विघटन।

विश्व—*(न०)* १. संसार। जगत। २. सृष्टि। ३. ब्रह्मांड। ४. लोक। ५. भूमि। पृथ्वी।

विश्व-करण—*(न०)* विश्व की रचना करने वाला। ईश्वर। २. ब्रह्मा।

विश्वकर्मा—*(न०)* १. विश्व की रचना करने वाला एक देव। २. देवों का शिल्पशास्त्री। ३. ईश्वर। ४. ब्रह्मा। ५. शिव। ६. सूर्य। ७. बढ़ई। सुथार। ८. लोहार। ९. सूत्रधार। राज। कड़ियो।

विश्व-कोष—*(न०)* ज्ञान सर्व विद्या-कोश। संग्रह कोश। एनसाइक्लोपीडिया।

विश्वतोमुख—*(वि०)* सर्व ओर मुखवाला। ईश्वर। परब्रह्म।

विश्वनाथ—*(न०)* १. महादेव। शिव। २. परमेश्वर। ३. काशी के शिवजी का ज्योतिर्लिंग।

विश्व-भरण—*(न०)* विश्व का पालन करने वाला। विष्णु।

विश्व-विख्यात—*(वि०)* जगत-प्रसिद्ध।

विश्व-विद्यालय—*(न०)* बहुत बड़ी शैक्षणिक संस्था। विद्यापीठ। यूनिवर्सिटी।

विश्व-वृक्ष—*(न०)* वृक्ष के उदाहरण रूप विस्तार वाला विश्व। २. परमात्मा। परमेश्वर। ३. ब्रह्म।

विश्वसनीय—*(वि०)* विश्वास करने योग्य। विश्वासपात्र।

विश्वस्त—दे० विश्वसनीय।

विश्वंभर—*(न०)* १. विश्व का भरणपोषण करने वाला। ईश्वर। २. विष्णु।

विश्वात्मा—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. शिव। ३. विष्णु ४ सूर्य। ५. ईश्वर।

विश्वामित्र—*(न०)* एक प्रसिद्ध महर्षि।

विश्वास—*(न०)* १. भरोसा। एतबार। २. निष्ठा। श्रद्धा। ३. प्रतीति।

विश्वास-घात—*(न०)* १. विश्वास रखने वाले के साथ धोखाधड़ी का आचरण। २. दगाबाजी।

विश्वास-घाती—*(वि०)* विश्वासघात करने वाला।

विश्वासी—*(वि०)* १. विश्वासपात्र। २. विश्वास करने वाला। ३. विश्वास रखने वाला।

विश्वासु—दे० विश्वासी।

विष—*(न०)* जहर। विख।

विष-कन्या—*(ना०)* १. प्राचीनकाल में वह युवती जिसके शरीर में बाल्यकाल से ही इसलिए विष प्रविष्ट कर दिया जाता था कि उसके साथ संभोग करने वाला तत्काल ही मर जाय। **बिसकन्या** २. अत्यन्त घातक कन्या।

विष-कंठ—*(न०)* शिव। नीलकंठ। महादेव।

विष-कामिनी—*(ना०)* वह नारी जिसका शरीर-सम्पर्क विषैला बना दिया गया हो। विषांगना। **बिस-कामणी। बिस-कामण** २. अत्यन्त घातक स्त्री।

विष-धर—*(न०)* सर्प। साँप। नाग।

विषम—*(वि०)* १. जो सम या समान न हो। २. दो भागों में पूरी तरह बँट न सकने वाली संख्या। एकी। ३. विकट। दुस्साध्य (कार्य)। ४. न्यूनाधिक। ५. ऊबड़-खाबड़ (जगह या मार्ग) ६. अनमेल। बेमेल। ७. असंगत। ८ भयंकर। *(न०)* १. संगीत का एक ताल। २. एक अर्थालंकार।

विषम-ज्वर—*(न०)* जूड़ी बुखार। मलेरिया।

विष-मंत्र—दे० विषमन्त्र।

विषय—*(न०)* १. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्रहीत होने वाले पदार्थ। २. भौतिक पदार्थ। ३. कारबार। ४. इन्द्रिय-जन्य आनन्द। ५. संभोग। रतिक्रीड़ा। ६. ग्रन्थ, लेखादि में विवेच्य वस्तु या विचार। मजमून। ७. प्रकरण। प्रसंग। ८. उद्देश्य, हेतु। ९. देश। जनपद।

विषय-भोग—*(न०)* कामभोग।

विषय-वस्तु—*(ना०)* १. उपन्यास, काव्य आदि की कथा। २. ग्रन्थ आदि का विचारणीय वस्तु तत्व। ३. खास मुद्दे की बात। ४. मुद्दा। ५. तात्पर्य। आशय।

विषय-वार—*(अव्य०)* विषयों (प्रसंग, विचार इत्यादि) के अनुसार।

विषय-वासना—*(ना०)* विषय-भोग की इच्छा या कामना।

विषया—*(वि०)* विष के समान।

विषयानुक्रमणिका—*(ना०)* ग्रंथादि में विवेचित विषयों की अनुक्रम-सूची। अनुक्रमणिका।

विषयी—*(वि०)* विषयासक्त। इन्द्रिय-लोलुप। कामी।

विषाक्त—*(वि०)* १. विषयुक्त। जहरीला। २. दूषित।

विषाण—*(न०)* १. सींग। सींगड़ी। २. हाथी का दाँत। ३. सींग का बाजा।

विषाद—*(न०)* १. सताप । २. मन का दुख । ३. शोक । ४. खेद । ५. निराशा ।

विष्टि—*(ना०)* १. बेगार । **वेठ** । २. समाधान की बातचीत । **विस्टाळो** । ३. समाधान का प्रयत्न । **वाटाघाट** । ४. समाधान ।

विष्टिकार—दे० विसटाळू ।

विष्ठा—*(न०)* १. गुप्त द्वार से विसृत मल । पाखाना । टट्टी । **भिस्टो** । । गू । बींट । **गोबर** ।

विष्णु—*(न०)* त्रिदेवों में से जग का भरण-पोषण करने वाला प्रधान देव । त्रिमूर्ति में सृष्टि का पालन-पोषण करने वाला स्वरूप ।

विष्णु-पत्नी—*(ना०)* १. लक्ष्मी । **लिछमी** । २. पृथ्वी । धरती । **जमी** ।

विष्णु-पुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में से एक पुराण ।

विष्णु-लोक—(न०) बैकुंठ । स्वर्ग ।

विष्णु-सहस्रनाम—*(न०)* विष्णु के हजार नामों का वर्णन करने वाला एक प्रसिद्ध स्तोत्र ।

विस-कन्या—दे० विषकन्या ।

विस-कामण—दे० विष-कामिनी ।

विस-कामणी—दे० विष-कामिनी ।

विसख—दे० विशिख ।

विसटाळू—*(वि०)* समाधान कराने वाला । विष्टिकार । **विठागर** ।

विसटाळो—*(न०)* समाधान की बातचीत । २. टंटे, विवाद आदि का किसी मनुष्य का बीच में पड़कर कराया जाने वाला समाधान ३. समाधान का प्रयत्न । विष्टि । **वड़साळो** । ४. नाराज को मनाने का काम । *(वि०)* १. समाधान की बात-चीत करने वाला । समाधान कराने वाला । विष्टिकार । **विष्टि कराने वाला** । **विस्टाळू** ।

विसतरण—*(वि०)* विस्तार करने वाला । *(अव्य०)* विस्तार करने के लिए ।

विसतरणो—दे० विस्तरणो ।

विसतारण—दे० विसतरण ।

विसथणो—*(क्रि०)* साथ वालों से अलग होना । साथ वालों से छूट जाना ।

विसथो—*(वि०)* १. साथ वालों से अलग । अकेला । २. छूटा हुआ । अलग पड़ा हुआ ।

विसद—दे० विशद ।

विस-धर—दे० विषधर ।

विसन—*(न०)* १. विष्णु । २. व्यसन ।

विसनी—*(वि०)* व्यसनी ।

विसनूव—दे० १. वैष्णव । २. विष्णु ।

विसनोई—*(न०)* १. जांभोजी द्वारा प्रवर्तित २९ नियमों को पालन करने वाला एक लोक सम्प्रदाय । २. विसनोई मत को मानने वाली एक कृषक जाति । ३. विसनोई जाति का व्यक्ति । **सिनानी** ।

विसर—*(न०)* १. निन्दा । बुराई । २. निंदात्मक कविता । **भूंडा** । ३. व्यंग्यात्मक काव्य । विषकर या विषहर काव्य । ४. भूल । विस्मृति । ५. नाश । ६. मृत्यु । ७. जीत । ८. तुष्टीदान के नहीं मिलने पर सुनाया जाने वाला । निन्दात्मक काव्य । ९. साँप । विषधर ।

विसरणो—*(क्रि०)* १. भूल जाना । भूलना । बिसरना । २. बदनाम करना । अपकीर्ति करना । **बिसुरना** ।

विसराणो—*(क्रि०)* १. भुला देना । बिसराना । २. किसी को उसकी

निंदात्मक कविता सुनाना । विसर-काव्य सुनाना । २. निंदा करना । ३. अपशब्द कहना ।

विसराम—दे० विश्राम ।

विसरामणो—*(क्रि०)* १. विश्राम लेना । २. मरना । ३. मर जाना । शरीर त्याग करना । ३. जीवन से विश्राम लेना ।

विसरावणो—दे० विसराणो ।

विसरांत—दे० विश्रांति ।

विसर्ग—*(न०)* १. 'ह्' (अर्ध 'ह') के समान उच्चरित तथा वर्ण के आगे ' : ' इस रूप में प्रयुक्त अर्द्ध'ह'का चिन्ह । २. दान । ३. त्याग । ४. मृत्यु ।

विसर्जन—*(न०)* १. दान । २. परित्याग । ३. समाप्ति । ४. विदा करना । ५. यज्ञ, उत्सव या पूजा में आहूत या स्थापित देवादि को प्रस्थान कराने या जलाशय में प्रवाहित करने की क्रिया ।

विसव—दे० विश्व ।

विसव-विरख—*(न०)* विश्व-वृक्ष ।

विसवार—दे० बेसवार ।

विसवा-बीस—दे० बीस-बिसवा ।

विसवास—दे० विश्वास ।

विसवासी—दे० विश्वासी ।

विसवासू—दे० विश्वासु ।

विसवो—दे० बिसवो ।

विसहर—*(न०)* १. व्यंग्यात्मक कविता । २. निंदात्मक कविता । **विसर** । ३. विष को हरने वाला । ४. विष को हरने वाली औषधि । ५. विषधर । सर्प । साँप ।

विसहर-तिथ—*(ना०)* भादों वदी पाँचम । नाग-पंचमी । विषहर-तिथि । **विषधर-तिथि** । नाग-पूजा का पर्व या दिन ।

वि.सं.—*(न०)* 'विक्रम-सम्वत' का छोटा रूप । वर्ष (सम्वत्) के अंक लिखे जाने के पूर्व विक्रम-सम्वत् को सूचित करने वाला उसका संक्षिप्त नाम तथा रूप यथा – वि.सं. २०३६ ।

विसंगत—*(वि०)* असंगत । **बेमेळ** । जो संगत न हो । जिसकी संगति न बैठती हो ।

विसंभ—*(न०)* १. दृढ़ विश्वास । विश्रंभ । २. प्रत्यय । ३. निश्चय । ४. आधार । ५. प्रेम । ६. प्रेम-विवाद । ७. विश्वंभर ।

विसंभर—दे० विश्वंभर ।

विसात—*(न०)* १. महत्ता । २ मूल्य । **मोल** । ३. औकात । गुजाइश । **हैसियत** । **बिसात** । ४. गिनती । गणना । प्रतिष्ठा । ५. गिनती में लिया जाय ऐसा प्रतिष्ठा वाला व्यक्तित्व । ६. सामर्थ्य । शक्ति । ७. बिसाती की कपड़े पर फैलाई हुई फुटकर सामग्री जो जमीन पर बैठकर बेचता है । **बिहायत** ।

विसाती—दे० बिसायती ।

विसामित—दे० विश्वामित्र ।

विसामो—दे० विश्राम ।

विसायत—दे० बिसात ।

विसायतियो—*(न०)* घूमकर या जमीन पर बैठकर सामान बेचने वाला । कपड़े पर रख और जमीन पर बैठकर फुटकर माल बेचने वाला व्यक्ति । **बिसाती** । **मनिहार** । **फुटकरियो** । **मणियारो** । **बिछायती** ।

विसायती—दे० बिसायतियो ।

विसार—*(ना०)* भूल । *(अव्य०)* भूल करके ।

विसारणो—*(क्रि०)* १. भूलना । विस्मृत करना । २. भुलाना । **बिसारना** ।

विसाळ—दे० विशाल ।

विसावण—*(न०)* वैर । शत्रुता ।

विसावणो—*(क्रि०)* १. शत्रुता करना २. उत्पन्न करना । पैदा करना । ३. फैलाना । ४. मन में स्थान देना । ५. व्यवसाय करना । *(न०)* शत्रुता । दुश्मनी ।

विसास—दे० विश्वास ।

विसासणो—*(क्रि०)* विश्वास करना । भरोसा करना ।

विसाहणो—दे० विसावणो ।

विसाँई—*(ना०)* विश्राम । विश्रांति ।

विसाँपत—दे० विशांपति ।

विसिया—दे० विषया ।

विसी—*(वि०)* उसी प्रकार की । वैसी ।

विसूकणो—*(क्रि०)* गाय, भैंस का दूध देना बन्द करना ।

विसूचिका—*(ना०)* हैजे का रोग । विशूचिका ।

विसूरणा—*(न०ब०व०)* १. निंदा । बुराई । २. शोकोद्गार । ३. शोक-कविता ।

विसूरणो—*(क्रि०)* १. निंदा करना । बुराई करना । २. शोक प्रदर्शित करना । दे० विसूरणा ।

विसूंद—दे० वरसूंद । दे० वीसूंद ।

विसूंदरी—*(ना०)* छिपकली । गृह-गोधिका । विस्तुइया । **बिछूंदरी** ।

विसेख—दे० विशेष ।

विसेखणो—*(वि०)* १. विशेष रूप से प्रशंसा करना । २. विशेता प्रकट करना ।

विसेखियो—*(वि०)* १. विशेष रूप से प्रशंसित । विख्यात । २. विशेष रूप से प्रशंसित हुआ है । *(क्रि० भू०)* १. विशेष प्रशंसित हुआ या किया गया । २. तुलना में विशेष बतलाया गया ।

विसैं—*(अव्य०)* १. से । २. अन्दर । में ।

विसो—*(वि०)* वैसा । उस प्रकार का ।

विस्टाकारी—*(ना०)* १. गाली । २. कलंक । लांछन । ३. अपमान ।

विस्टाळू—दे० विसटाळू ।

विस्टाळो—दे० विसटाळो ।

विस्टी—दे० विष्टि ।

विस्टो—दे० विष्ठा ।

विस्तर—दे० विस्तरो । १. अग्नि । २. विस्तार ।

विस्तरणो—*(क्रि०)* १. विस्तृत होना । फैलना ।

विस्तरो—*(न०)* बिछौना । बिस्तरा । **पथरणो** ।

विस्तार—*(न०)* १. प्रसार । फैलाव । २. विशालता । ३ बढ़ावा । ४. बाल-बच्चे । पुष्कल परिवार ।

विस्तारण—*(ना०)* विस्तार करने की क्रिया । *(वि०)* विस्तार करने वाला ।

विस्तारणो—*(क्रि०)* १. प्रसार करना । फैलाना । २. बढ़ाना । ३. लंबाना ।

विस्तारी—*(वि०)* १. बाल-बच्चों वाला । २. अधिक बाल-बच्चों वाला । ३. बड़े कुटुम्ब वाला । पुष्कल परिवार वाला । ४. विस्तार वाला । ५. विस्तार करने वाला ।

विस्तृत—*(वि०)* १. विस्तार वाला । २. फैला हुआ ।

विस्फोट—*(न०)* १. आग, गैस, दारू इत्यादि का जोर की आवाज के साथ फूटना । २. रहस्योद्घाटन होना । ३. फोड़ा । फुंसी ।

विस्फोटक—*(वि०)* १. विस्फोटित होने वाला । २. विस्फोट करने वाला ।

विस्मय—*(न०)* आश्चर्य । अचंभा । **अचंभो** ।

विस्मय-कारक—*(वि०)* आश्चर्य-जनक ।

विस्मयादि-बोधक—*(न०)* वाक्यों में आश्चर्य, खुशी, खेद इत्यादि का द्योतक अविकारी शब्द (व्या.) ।

विस्मरण—*(न०)* भूलना । याद नहीं रहना । स्मृतिभ्रंश । **पांतरो** ।

विस्मृत—*(वि०)* १. भूला हुआ । २. भुलाया हुआ । विस्मृति से उतरा हुआ । **पांतरियोड़ो** । **भूलोड़ो** ।

विस्मृति—*(ना०)* विस्मरण । भूल जाना । **पांतरो** ।

विस्यान—*(वि०)* वैसा । **वैड़ो** । **ओड़ो** । *(क्रि०वि०)* उसी प्रकार । वैसे ।

विस्यो—दे० विसो ।

विस्वक्रमा—दे० विश्वकर्मा ।

विस्व-विरख—दे० विश्व-वृक्ष ।

विस्वामित—*(न०)* विश्वामित्र ऋषि ।

विह—*(न०)* १. विधाता । ब्रह्मा । विधि । २. प्रकार । ३. भेद ।

विहग—*(न०)* १. पक्षी । २. घोड़ा । ३. सूर्य । ४. चंद्रमा । विहंग ।

विहद—*(वि०)* १. वृहद् । २. विशद । ३. बेहद । असीम ।

विहर—*(न०)* १. टुकड़ा । २. खड्ग प्रहार से कटकर अलग हुआ अंग भाग । ३. विचरण । *(ना०)* १. भूल । विस्मृति । विसरण । **पांतरो** । २. लकड़ी का चूरा ।

विहरणो—*(क्रि०)* १. बिसरना । भूल जाना । **पांतरणो** । २. विचरण करना । चलना । ३. अलग होना । जुदा होना । ४. हटना । ५. अलग करना । ६. हटाना । ७. चीरना । ८. टुकड़े करना । करवत से लकड़ी काटना । **वैरणो** । ९. भिक्षा देना (जैन साधु को) । **वैराणो** । **बहराणो** ।

विहराणो—दे० विहरणो सं. ९ ।

विहवळ—दे० विह्वल ।

विह-विह—*(वि०)* विविध । **विध-विध** । अनेक ।

विहसणो—*(क्रि०)* १. उत्साहित होना । २. प्रसन्न होना । ३. हँसना ।

विहंग—*(न०)* १. पक्षी । २. घोड़ा । ३. सूर्य ४. चंद्रमा । ५. पर्वत । ६. विशिष्टांग । *(वि०)* बहादुर । वीर ।

विहंगड़ो—*(न०)* १. एक रागिनी । २. पक्षी । दे० विहंग ।

विहंग-दृष्टि—*(ना०)* १ समस्त परिस्थिति को बारीकी से एक ही बार में देख लेना या सपास लेना । २. किसी दृश्य या विषय पर डाली जाने वाली सरसरी निगाह ।

विहंगम—दे० विहंग । *(वि०)* विहंग के समान । विहंग की-सी । (दृष्टि) ।

विहंग-राज—*(न०)* गरुड़ ।

विहंगाण—*(न०ब०व०)* १. पक्षी-समूह । २. अश्व-दल । घुड़-समूह । **घुड़ला** ।

विहंगावलोकन—*(न०)* विहंग-दृष्टि से किया जाने वाला अवलोकन या निरीक्षण ।

विहंगेश—*(न०)* गरुड़ ।

विहंड—*(न०)* १. नाश । २. टुकड़ा । खण्ड । *(वि०)* १. नष्ट । २. घायल ।

विहंड-कंस—*(न०)* कंस का नाश करने वाले श्री कृष्ण ।

विहंड-खळ—*(न०)* १. शत्रु का नाश करने वाला वीर पुरुष । २. श्री कृष्ण । ३. श्री राम ।

विहंडणो—*(क्रि०)* १. नाश करना । मारना । खंडन करना । २. काटना । ३. नाश होना । ४. कटना ।

विहंड-दसाणण—*(न०)* श्रीराम । दशानन का नाश करने वाले ।

विहंस—*(न०)* नाश । संहार ।

विहंसणो—*(क्रि०)* नाश करना । दे० विहंडणो ।

विहाग—*(ना०)* एक राग जो अर्द्ध रात्रि के बाद गाई जाती है ।

विहागड़ो—*(ना०)* एक राग ।

विहाण—*(न०)* १. प्रातःकाल । विहान । प्रभात । २. आने वाला प्रातःकाल ३. संध्या समय । ४. परित्याग ।

विहाणे—*(अव्य०)* प्रातःकाल में । सवेरे ।

विहाणो—दे० विहाण । दे० विहावणो ।

विहामो—दे० विसामो ।

विहार—*(न०)* १. टहलने-फिरने की क्रिया । टहलना । घूमना । २. प्रस्थान । गमन । ३. बौद्ध भिक्षुओं का मठ । संघाराम । ४. रति-क्रीड़ा । ५. भारत का एक प्रदेश ।

विहारणो—*(क्रि०)* १. विहार करना । प्रस्थान करना (साधु का) २. चलना । फिरना । टहलना । ३. जैन साधु को भिक्षा देना । **गोचरी कराणो** । ४. भिक्षा के लिये फिरना । **विहरणो** ।

विहारी—*(वि०)* विहार करने वाला । *(न०)* श्री कृष्ण ।

विहावणो—*(क्रि०)* १. बिताना । व्यतीत करना । २. दूर करना । परित्याग करना । ३. छूटना । छूट जाना । ४ अभाव होना । नहीं होना । ५. कमी होना । ६. आवश्यकता होना ।

विहास—*(न०)* मुसकान । मंद स्मित । **मुळकणो** ।

विहासणो—*(क्रि०)* १. हंसना । मुसकाना । **मुळकणो** । २. प्रकाश करना ।

विहि—*(ना०)* विधाता । विधि । ब्रह्मा । **विह** । **वेह** ।

विहित—*(वि०)* १. विधि अनुरूप । नियमानुसार । २. शास्त्रों द्वारा आज्ञा की हुई । शास्त्रोक्त । ३. अनुष्ठित । ४. न्याय्य ।

विहीणा—दे० विहीन ।

विहीन—*(वि०)* १. रहित । हीन । वंचित । २. बिना । बगैर ।

विहूणा—दे० विहूणो ।

विहूणो *(वि०)* १. विहीन । रहित । २. बिना । बगैर ।

विह्वल—*(वि०)* १. विकल । २. गद्गद् ।

विंझ्याचळ—*(न०)* विंध्याचल । विंध्यपर्वत ।

विंडी—दे० बंडी दे० बरंडी ।

विंतांक—*(न०)* बैंगन । वृन्ताक । **बितांक** । **रींगणो** ।

विंदोळी—दे० वंदोळी । दे० वींदोली ।

विंध्यवासिनी—दे० वींझासणी ।

विंध्याचल—*(न०)* विंध्यपर्वत । **विंझ्याचळ** ।

वियो—*(न०)* १. अफीम का रस (कसूंबा) बनाने के लिये रुई में लपेटा हुआ अफीम का टुकड़ा, जिसको पानी में मसलकर कसूंबा बनाते हैं । २. बीज । ३. कोई अनोखी वस्तु । टूम । ४. ऊन का धागा ।

वीक—दे० वीकम ।

वीकपुर—*(न०)* 'बीकानेर' का काव्य नाम ।

वीकपुरो—*(वि०)* बीकानेर का निवासी ।

वीकम—दे० विक्रम ।

वीकमपुर—दे० बीकपुर ।

वीकमपुरो—दे० बीकपुरो ।

वीका-घोड़ी—*(ना०)* एक खेल । दे० भीखा री घोड़ी ।

वीकाण—*(न०)* 'बीकानेर' शहर का एक काव्य नाम ।

वीकाणो—दे० वीकाण ।

बीकानेर –दे० बीकानेर ।

बीकानेरियो—*(वि०)* बीकानेर का निवासी

बीख –*(ना०)* १. पाँव । पैर । चरण । २. पैंड । डग । कदम । ३. चाल । गति । ४. सवारी के पशुओं की एक मध्य-चाल । **बरीख** ५. दृष्टि । **बीठ** । **बेख** । ६. विचारशक्ति । **सूझ** । ७. पद-चिन्ह ।

बीखड़ियां –*(ना०ब०व०)* पद-चिन्ह । पैर के निशान । **पगनिसाण** । **खोज** ।

बीखण—*(न०)* आँख । बीक्षण ।

बीखणो—*(क्रि०)* १. रूई या ऊन की गांठें बिखेरना । जमी हुई रूई या ऊन की परतों को छितराना । पहल बनाना । २. बिखेरना । ३. चलना । ४. देखना । बीक्षण करना । ५. तरसना । ललचाना । ६. दुख देना । ७. दुख सहना ।

बीखरणो—*(क्रि०)* १. तितर-बितर होना । फैलना । छितरना । बिखरना । २. अलग होना । दूर होना ।

बीघो—*(न०)* जमीन का एक नाप । बीघा । बीस बिस्वे का रकबा ।

बीघोटी—दे० बीघोड़ी ।

बीघोड़ी—*(ना०)* प्रति बीघा पर लिया जाने वाला कर या लगान । **बीघोटी** **बीघोटो** ।

बीच—*(न०)* १. मध्य । बीच । २. किसी बीच का अंतर । ३. अंतर । फर्क । भेद । ४. बीच की जगह । मध्यभाग । *(अव्य०)* मध्य में । **बिच** में ।

बीचि—*(ना०)* लहर । तरंग ।

बीचोबीच—*(अव्य०)* ठीक बीच में । बिलकुल बीच में । **बीचोबीच** । **बचोबच** ।

बीछण—*(ना०)* बिच्छू की मादा ।

बीछलणो—*(क्रि०)* १. धोना । २. पानी डाल, हिला कर साफ करना । **खंखोळणो** ।

बीछी—दे० बीछू ।

बीछू—*(न०)* जहरीले डंक वाला एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा । बिच्छू ।

बीछूड़ी—*(ना०)* स्त्रियों के पैर की अंगुलियों में पहने जाने वाला एक गहना ।

बीज—*(ना०)* १. विद्युत । बिजली । **खिवण** । २. वज्र ।

बीजणी—*(ना०)* पंखी । छोटा पंखा । बीजणी ।

बीजणूं—दे० पंखो या बीजणो । हाथ को हिलाकर डाली जाने वाली हवा का साधन ।

बीजणो—*(न०)* पंखा । व्यजन । हाथ-पंखा । **बीजणो** ।

बीजळ—*(ना०)* १. तलवार । २. बिजली । *(वि०)* बिजली के समान प्रकाशमान । २. मनोहर । सुन्दर ।

बीजळसार—*(न०)* १. उत्तम जाति का लोह । २. वह लोह जिसको जंग नहीं लगे । स्टील । ३ कांतिसार । कांतिलोह । कान्तलोह । ४. तलवार ।

बीजळ-हथो—*(वि०)* खड्ग-धारी ।

बीजळी—*(ना०)* बिजली । दे० बीज ।

बीजूजळ—*(ना०)* तलवार ।

बीजूझळ—दे० बीजूजळ ।

बीझणो—*(न०)* १. पंखा । व्यजन । २. खाती का एक औजार । लकड़ी में छेद करने का औजार । **स्यारड़ी** ।

बीटली—*(न०)* अजमेर के किले का नाम तारागढ़ ।

बीटोरो—दे० बींटोड़ो ।

वीठळ—*(न०)* १. श्री कृष्ण । २. विष्णु । विट्ठल ।

वीठळो—दे० वीठळ ।

वीड़—*(न०)* १. जंगल । वन । सीम । २. घना जंगल । ३. गोचर भूमि ।

वीड़ो—दे० वीड़ ।

वीढक—दे० वेढक ।

वीण—दे० वीणा ।

वीणणो—*(क्रि०)* १. चुनना । बीनना । चुगना । **चुगणो** । २. अलग-अलग करना । छांटना ।

वीणती—दे० विनती या वीनती ।

वीणा *(ना०)* एक प्रसिद्ध भारतीय वाद्य-यंत्र जो सभी तार या स्वर वाद्यों में श्रेष्ठ माना जाता है । बीन । **वीणा** ।

वीणापाणि—*(ना०)* सरस्वती । *(न०)* नारद मुनि ।

वीणा-वादिनी—*(ना०)* सरस्वती । शारदा ।

वीणी—*(ना०)* किवाड़ के पल्ले की चौड़ाई में लगाई जाने वाली आड़ी चीप । पट्टी ।

वीणो—*(न०)* स्त्रियों के शिरोकेश की एक बनावट । एक केश-विन्यास ।

वीत—दे० वित्त । दे० व्यतीत ।

वीतक—*(वि०)* बीती हुई घटना या बात ।

वीतणो—*(क्रि०)* १. समाप्त होना । बीतना । **खूटणो** २. गुजरना । ३. कटना । ४. क्षय होना । कम होना । घटना । ५. घटित होना । ६. संकट आ पड़ना । दुख पड़ना । ७. सहन करना या होना । मूर्ख बनना । ८. बनना । ९. नष्ट होना । १०. जीर्ण होना । ११. फट जाना । १२. असर होना । १३. मुगतना । १४. मरना । १५. कमजोर होना ।

वीतराग—*(वि०)* राग रहित । आसक्ति, मोह, मायादि से मुक्त । *(न०)* तीर्थंकर महावीर स्वामी ।

वीतहोत—*(ना०)* १. अग्नि । वीतिहोत्र । २. सूर्य । सूरज ।

वीती—*(वि०)* १. जिसमें बीत गई हो । २. भोगा हुआ । मुक्त । ३ बीती हुई । गत । **बीतोड़ी** ।

वीथि-*(ना०)* मार्ग । रास्ता । बाट । **वाटड़ली** ।

वीदक—दे० वीदग ।

वीदग—*(न०)* १. विरुद गायक । २. चारण । ३. भाट ।

वीदावत—*(न०)* १. राठौड़ वीदा का वंशज । २. वीदा का पुत्र ।

वीन—दे० वींद । दे० वीण ।

वीनणी—*(ना०)* १. दुलहिन । २ पत्नी । ३. पुत्रवधू । ४. छोटे भाई की पत्नी ।

वीनणो—दे० विनवणो ।

वीनती—दे० विनती ।

वीनवणो—*(क्रि०)* विनती करना । अनुरोध करना । **विनवणो** ।

वीनै—*(सर्व०)* उसको । उसे । *(क्रि०वि०)* उधर । उस ओर । *(न०)* विनय ।

वीपी—*(ना०)* लिखा हुआ मूल्य चुकाने से प्राप्त होने वाला डाक मारफत आया हुआ पारसल । डाकखाने से भेजी जाने वाली 'मूल्यदेय' पारसल इत्यादि । वी.पी. । वेल्यु-पे-एबिल ।

वीप्सा—*(ना०)* १. एक अर्थालंकार जहाँ एक शब्द को बार-बार कहा जाय । २. पुनरुक्ति ।

वीफरणो—*(क्रि०)* १. क्रोध से बाहर होना । २. क्रोध में बकना । अंट-संट बोलना । ३. बिगड़ना । ४. गुस्से में होना । ५. क्रोध करना । ६. बहकना । ७.

शैतानी करना। शरारत करना। ८. उत्पात करना। ९. भड़क उठना। १०. बिगड़ना। ११. विद्रोह करना। बिफरना।

बीफरेल—*(वि०)* १. अत्यधिक क्रोधित। २. शैतान। ३. शरारती। ४. उत्पाती। ५. बहका हुआ। ६. विद्रोही। ७. क्रुद्ध।

बीभच्छ—दे० बीभत्स।

बीभछ—दे० बीभत्स।

बीभत्स—*(वि०)* १. घृणाजनक। २. कुत्सित। ३. विकृत। ४. क्रूर। ५. भयावह।

बीभम—दे० विभ्रम।

बीभरणो—दे० 'बींभरणो' या 'बीफरणो'।

बीमा—*(नं०)* विवाह। पाणिग्रहण। ब्याव।

बीमाह—*(नं०)* विवाह। पाणिग्रहण। ब्याव।

बीमो—*(नं०)* १. एक ऐसा विधान जिसके अनुसार तत्सम्बन्धी एक कम्पनी किसी प्रकार की हानि हो जाने की अवस्था में निश्चित रकम ब्याज और लाभ के साथ एक मुश्त दे देने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर इसलिए लेती है कि उसे निर्धारित समय या हानि हो जाने तक किश्तों में निश्चित रकम दी जाती रहे। क्षेम विधान। आगोप। बीमा। २. डाक विभाग की एक जिम्मेवारी। दे० बीमो सं० २।

बीर—*(नं०)* १. बलवान पुरुष। २. साहसी व्यक्ति। ३. योद्धा। ४. भाई या पुत्र के लिए प्रयुक्त शब्द। ५. भाई। बीरो। ६. पुत्र। *(वि०)* १. बहादुर। २. साहसी। ३. पराक्रमी।

बीर-काव्य—*(नं०)* १. वीर-रस का काव्य। २. वह काव्य जिसमें वीरता या बीरों का वर्णन हो। (साहि०)

बीर-केशरी—*(नं०)* सिंह के समान बलशाली वीर पुरुष। बीरों में श्रेष्ठ वीर।

बीर-खेत—*(नं०)* वीर-क्षेत्र। युद्ध-भूमि।

बीरगति—*(ना०)* १. युद्ध में मृत्यु। २. रणक्षेत्र में वीरता पूर्वक लड़कर मरने पर प्राप्त होने वाली गति। ३. स्वर्ग।

बीर-गाथा—*(ना०)* वीर या वीर-रस की कथा (साहि०)।

बीर-गुर—*(नं०)* वीरों का गुरु। बड़ा वीर।

बीर-घंट—*(नं०)* १. बड़ा घंट। २. हाथी के गले में (या भूल से) बँधा रहने वाला घंट।

बीर-चक्र—*(नं०)* युद्ध में वीरता दिखाने वाले सैनिक को दिया जाने वाला पदक। भारत गणराज्य की ओर से दिया जाने वाला एक सैनिक-पदक।

बीरज—*(नं०)* १. वीर्य। शुक्र। २. बल। शक्ति। ३. वीर की संतान।

बीरजवान—*(वि०)* १. वीर्यवान। शक्तिशाली। बलवान। २. युवावीर।

बीरत—*(ना०)* १. वीर-वृत्ति २. वीरत्व। वीरता। बीरपणो। बहादुरी।

बीरत-वयण—*(नं०)* १. वीर वाणी। २. बीर-हाक। वीर शब्द। ३. वीरता के वचन।

बीरत-वयणा—*(ना०)* वीरवाणी। ओज-वाली वाणी। २. बीरों की भाषा। ३. राजस्थानी (मारवाड़ी) भाषा। ४. वीरत्व उत्पन्न करने वाली भाषा। ५. वीर-काव्य।

बीरनंदो—*(नं०)* १. वीर-पुत्र। २. वीर का पुत्र।

वीरप—दे० वीरत ।

वीरपणो—*(न०)* वीरता । बहादुरी ।

वीर-पुरुष—*(न०)* वीर व्यक्ति । बहादुर पुरुष ।

वीर-पूजा—*(ना०)* वीरों का आदर सम्मान ।

वीरबळ—*(न०)* अकबरी दरबार के नौ रत्नों में से एक रत्न-पुरुष जो शीघ्र व्युत्पन्न-मति था । वीरबल ।

वीरबळी—*(ना०)* एक आभूषण ।

वीर-बहूटी—*(ना०)* लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा जो मखमल के समान सचिक्कण और कोमल होता है । इन्द्र-वधू । इंद्रगोप । वीरधूटी । मामोलो । मामलियो ।

वीर-भद्र—*(न०)* १. महादेव का एक गण । २. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा । ३. उशीर । खस ।

वीर-भू—दे० वीर-भूमि ।

वीर-भूमि—*(ना०)* १. वीरों को जन्म देने वाली भूमि । वीरों का जन्मदाता प्रदेश । २. राजस्थान (मरुभूमि) का एक विशेषण ।

वीर-भोम—दे० वीर-भूमि ।

वीर-माता—*(ना०)* वीर पुत्र को जन्म देने वाली माता । वीर की माता । वीर-जननी ।

वीर-मादळ—*(न०)* युद्ध में बजाया जाने वाला बड़ा ढोल । युद्ध-मर्दल । वीर-मर्दल । मादळ ।

वीरमायण—*(न०)* राव वीरमजी राठौड़ का शौर्य सम्बन्धी बहादर ढाढ़ी द्वारा रचा गया डिंगल का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक काव्य ।

वीर-रस—*(न०)* १ काव्य के नौ रसों में से एक । २. वह काव्य या काव्य-रस जिसमें वीरता से शत्रु का दमन करके विजय प्राप्त करने का वर्णन हो ।

वीर-वधू—*(ना०)* १. वीर की पत्नी । २. वीरांगना ।

वीर-वर—*(वि०)* वीरों में श्रेष्ठ । *(न०)* श्रेष्ठ वीर पुरुष ।

वीर-विनोद—*(न०)* इतिहास के इस नाम के दो प्रसिद्ध ग्रंथ (कवि श्यामलालदास और कवि गणेशपुरी कृत) ।

वीर शय्या—*(ना०)* रणभूमि ।

वीर सतसई—*(ना०)* वीर रस के सात सौ छन्दों का ग्रन्थ ।

वीर-हाक—*(ना०)* युद्ध के समय वीर पुरुष की ललकार । वीर-गर्जन । वीरतवयण ।

वीरा—*(अव्य०)* प्रायः स्त्रियों की ओर से परिचित या अपरिचित किसी भी पुरुष के लिए 'भाई' अर्थ को सूचित करने वाला एक सभ्य तथा स्नेह-संबोधन । *(ना०)* १. वीरपति और वीर पुत्रों वाली वीरांगना । २. पति और पुत्रों वाली सौभाग्यवती स्त्री ।

वीराण—*(न० ब० व०)* १. वीर पुरुषों का समूह । वीर-समूह । २. सेना । ३. वीरत्व । पुरुषत्व । *(वि०)* १. वीरों का । २. वीरान । उजाड़ ।

वीरातन—*(न०)* वीरत्व । वीरता । शौर्य ।

वीराधिवीर—*(न०)* वीरों में श्रेष्ठ वीर पुरुष । *(वि०)* वीरों का वीर । वीरों में श्रेष्ठ वीर ।

वीरापण—दे० वीरापो ।

वीरापो—दे० वीरातन ।

वीरारस—दे० वीर-रस ।

वीरां-आगळो—*(वि०)* वीराग्रणी । वीरों में श्रेष्ठ ।

वीरांगना—*(ना०)* अपने सतीत्व, धर्म और देश की रक्षा के लिये युद्ध करने या बलिदान होने वाली स्त्री । वीर-स्त्री । **बाहुड़ी । मांटण ।**

वीरो—*(न०)* १. 'भाई' अर्थ का सूचित 'वीर' शब्द का स्नेह तथा ऊन वाचक पर्याय । २. भाई । ३. माहेरा का एक लोक-गीत ।

वीरोटण—*(ना०)* वीरता । वीरत्व । शौर्य । **वीरातन । विरासत ।**

वीर्य—*(न०)* १. शुक्र । धातु । **राजा ।** २. बीज । ३. बल । पराक्रम ।

वीर्य-वान—*(वि०)* पराक्रमी । बलवान ।

वीर्य-हीन—*(वि०)* १. निर्बल । अशक्त । २. नामर्द ।

वील—*(ना०)* १. रौंछ । परछत्ती । **टांड ।** २. सेंकरी परछत्ती । ताक के ऊपर छोटी-मोटी वस्तु रखने के लिए बनाई जाने वाली छज्जी या छजली ।

वीवा—*(न०)* विवाह । **ब्याव ।** पाणिग्रहण ।

वीवा-वाजण—*(न०)* १. विवाह आदि २. मंगल कार्य । विवाहोत्सव । ३. विवाह आदि उत्सवों में बाजों-गाजों की धूम-धाम ।

बीस—*(वि०)* गिनती में दस और दस । *(न०)* बीस की संख्या '२०' बीस।

वीसधरपाणी—*(न०)* १. रावण । २. बीस-पाणि-धर । बीस भुजाधारी ।

वीस-नैण—*(न०)* रावण । दशानन ।

वीस-पाणी—*(न०)* रावण । **बीसहाथाळो ।**

वीस-बाहु—*(न०)* रावण । बीसभुज ।

वीस-भुज—*(न०)* रावण ।

वीसमणो—*(क्रि०)* मरना । मर जाना । विसरामणो ।

वीसमों—*(वि०)* १. क्रम या गिनती से बीस की जगह पर आने वाला । **बीसवां ।** *(न०)* १. प्रसूता का बीसवां दिन । २. बीसवें दिन की जाने वाली प्रसव-शौच-शुद्धि ।

वीसमो धोणो—दे० बीसमो धोणो ।

वीसरणो—*(क्रि०)* भूल जाना । विस्मृत होना । बिसरना ।

वीस-विसवा—*(अव्य०)* १. निश्चय ही निश्चित रूप से । २. शत-प्रति-शत । **सौ टका ।** ३. जरूरी ही । ४. बहुत करके । **घणो करने ।** ५. पूरी तरह ।

वीस-वीसी—*(वि०)* चार सौ । *(न०)* चार सौ का आंक ४०० ।

वीसहथ—*(न०)* रावण । *(ना०)* बीस हाथों हाथों वाली देवी ।

वीस-हथी—*(ना०)* **बीस भुजाळी ।** बीस वाली देवी ।

वीसा—दे० बीसा ।

वीसा सौ—*(न०)* पहाड़ा में बोली जाने वाली '१२०' की संख्या । (अंकों की गुणन सूची) ।

वीसी—*(ना०)* १ बीस वस्तुओं का समूह । एक बीसी । एक कोड़ी । २. सौ संवत्सरों के पांच विभागों में से एक । बीस वर्ष का समय । बीसी । ३. समय । काल । वक्त । ४. मूल्य देकर भोजन करने की दूकान ।

वीसूंद—*(ना०)* १. ब्याज के ऊपर दी जाने वाली धर्मादे की रकम । ब्याज के ऊपर धर्मादा । २. धर्मादा । ३. ब्याज की आय में धर्मादे का भाग । ४ धर्मादे का विशेष सूद । विशेष-सूद । वि-सूद । दे० वरसूंद । ५. एक प्राचीन राहदारी कर जो मुलतान से जाने वाले मार्ग पर पूंगल में लिया जाता था ।

वीसो—*(न०)* १. जाति का उपभेद। २. सदी का बीसवाँ वर्ष। ३. तौल का एक मान। *(वि०)* १. श्रेष्ठ। उत्तम। २. असली।

वीसोतर—*(वि०)* एक सौ बीस। *(न०)* चारण।

वीसोतर-चारण—*(न०)* समस्त चारण जाति।

वीसोतर-साख—*(ना०)* १. चारणों की एक सौ बीस शाखायें। २. चारण जाति।

वीह—*दे०* बीस। *दे०* बीह।

वीहंडणो—दे० विहंडणो।

वीहा—*दे०* व्याव।

वीं—*(सर्व०)* उस। उण। बीं।

वींखणो—दे० वीखणो।

वीजणी—*(ना०)* पंखी। हाथ से हिलाकर हवा डालने या खाने की पंखी।

वींजणो—*(न०)* पंखा। हाथ से हिला कर हवा खाने का पंखा। व्यजन।

वींझ—*(न०)* १. विंध्य पर्वत। २. छेद। सुराख। वेझ।

वींझणो—*(न०)* १. खाती का एक औजार। वींधणो। स्यारड़ी। २. पंखा। बड़ा हाथ-पंखा। पंखो।

वींझाचळ—*(न०)* विंध्याचल पर्वत।

वींझासण—*दे०* वींझासणी।

वींझासणी—*(ना०)* १. एक लोक देवी। २. विंध्यवासिनी देवी।

वींट—*(ना०)* १. पक्षी की विष्ठा। बीट। २. घेरा।

वींटणो—*(क्रि०)* १. लपेटना। २. घेरा डालना। *(न०)* लपेटन। वेस्टन।

वींटली—*(न०)* अजमेर के किले का एक नाम। तारागढ़।

वींटाकड़ो—*(न०)* १. गठरी। २ बिस्तरे का समेटन। बिस्तरा।

वींटी—*(ना०)* अंगूठी। मुद्रिका। बींटी।

वींटो—*(न०)* बंधा हुआ बिस्तरा। समेटा हुआ बिस्तरा। बिस्तरा। बींटा।

वींटोकड़ो—*दे०* वींटाकड़ो।

वींटोड़ो—*(न०)* झड़बेरी के कांटों की अनुमानतः सौ पाहियों का बड़ा ढेर अथवा उतना समूह जो बैलगाड़ी के ऊपर समा सके। भींटोढ़ो। वींटोरो। भींटोरो।

वींद—*(न०)* १. दुलहा। वर। वनड़ो। २ पति। खाविंद।

वींदणी—*(ना०)* १. दुलहिन। वधू। वीनणी। बीनणी। वनड़ी। २. पत्नी।

वींद-राजा—*(न०)* दुलहा। वर-राजा।

वींद-वागो—*(न०)* दूल्हे का जामा या पोशाक।

वींदोटी—*दे०* वींदोली।

वींदोटो—*(न०)* १. दूल्हे की प्रशंसा का एक राजस्थानी काव्य प्रकार। २. दुलहे की प्रशंसा का काव्य। *दे०* वींदोला।

वींदोला—*(न०ब०व०)* दुलहा या दुलहिन की जूतियाँ। वींदोटा।

वींदोलियाँ—*दे०* वींदोला।

वींदोली—*(ना०)* दुलहा या दुलहिन की जूती। वींदोटी।

वींधणो—*(न०)* छेद करने का खाती का एक औजार। वींझणो। *(क्रि०)* १. सुराख करना। छेद करना। २. हैरान करना। तंग करना।

वींधाणो—*(क्रि०)* १. छिदवाना। २. तंग करवाना। हैरान करवाना। ३. हैरान होना।

वींनै—*(सर्व०)* उसको। उणनै। बीनै।

वींभरणो—*(क्रि०)* १. क्रोधित होना। गरम होना। भीमरणो। बीभरणो। २. बिगड़ना। नाराज होना।

वींया—दे० 'वीवा' या 'विवाह'।

वींयो—*(न०)* रूई के फाहे में लपेट कर रखी जाने वाली पिसे हुये अफीम की मात्रा, जिसे पानी में निचोड़ कर पिया जाता है। दे० वियो।

वींरी—*(वि०)* उसकी। **उणरी। बींरी।**

वींरो—*(वि०)* उसका। **उणरो। बींरो।**

वुओ—*(भू०क्रि०)* बेणो का 'भूतकाल'। हुआ। हो गया। **हुओ।**

वुछाव—*(न०)* १. उत्सव। **उछब।** २. उत्साह। **उछाव।**

वुजर—दे० उजर।

वुसत—*(ना०)* वस्तु। **वस्त। चीज।**

वुही—*(भू०क्रि०)* १. चली। २. अनुसरण किया। ३. बह गई। *(ना०)* एक घास।

वुहो—*(भू०क्रि०)* 'वहणो' का भू-कालिक १. चला। २. अनुसरण किया। ३. बह गया।

वूठणो—*(क्रि०)* बरसना। बरसात होना। **बरसणो।**

वूठाँ—*(अव्य०)* १. वर्षा होने से। बरसने से। २. बरसने पर।

वूठो—*(भू०क्रि०)* वर्षा हुई। बरसा। बरस गया। 'वूठणो' क्रिया का भूतकालिक रूप।

वूहो—दे० वुहो।

वृक—*(न०)* १. भेड़िया। २. चोर। ३. गीदड़। ४. कौआ। ५. वज्र ६. क्षत्रिय।

वृकोदर—*(न०)* पांडु पुत्र भीम का एक नाम।

वृक्क—*(न०)* मूत्राशय। गुरदा।

वृक्ष—*(न०)* पेड़। दरख्त। **झाड़। रूंख।**

वृत—*(वि०)* आवरित। ढंका हुआ। **ढकियोड़ो।**

वृत्त—*(न०)* १. वृत्तान्त। हाल। हकीकत। २. समाचार। ३. चरित्र। ४. आचार। वर्तन। ५. घेरा। ६. घटना का विवरण। ७. स्तन का अग्र भाग। ८. अक्षर मेल छंद। *(वि०)* १. बीता हुआ। २. गोलाकार। गोल।

वृत्ताकार—*(वि०)* गोल आकार वाला। *(न०)* गोलाकार।

वृत्तान्त—*(न०)* १. समाचार। २. विवरण। हकीकत। ३. घटना, विषय, स्थिति, वस्तु इत्यादि का वर्णन।

वृत्ति—*(ना०)* १. मन की अवस्था। मन का व्यापार। २ स्वभाव। ३. जीविका। ४. पारिश्रमिक। ५. ग्रंथ इत्यादि की टीका। व्याख्या। कारिका। ६. रचना शैली। ७. शब्द की अर्थबोधक शक्ति। ८. सहायतार्थ दिया जाने वाला धन। ९. जीवन निर्वाह का साधन। १०. काम। धंधा।

वृथा—*(वि०)* व्यर्थ। फजूल। निष्फल। निरर्थक। **बिरथा।** *(अव्य०)* १. बिना प्रयोजन के। २. भूल से। ३. मूर्खता से।

वृद्ध—*(वि०)* १. बुड्ढा। बूढ़ा। २. बढ़ा हुआ। ३. बड़ा। ४. श्रेष्ठ। *(न०)* १. बूढ़ा आदमी। **डोकरो।** २. पंडित। विद्वान।

वृद्धा—*(वि०)* १. बूढ़ी। २. बड़ी। *(ना०)* बूढ़ी औरत। बुढ़िया। **डोकरी।**

वृद्धावस्था—*(ना०)* बुढ़ापा। वृद्धत्व।

वृद्धि—*(ना०)* १. बढ़ती। अधिकता २. विकास। ३. उन्नति। ४. विस्तार। ५. उत्कर्ष। ६. ब्याज। सूद।

वृश्चिक—*(न०)* १. एक विष-कीट। बिच्छू। २. आठवीं राशि। (ज्यो०)

वृष—*(ना०)* १. बारह राशियों में दूसरी राशि। (ज्यो.) १. सांड। २. बैल।

वृषण—*(न०)* अंडकोश।

वृषभ—*(न०)* १. सांड। २ दे० वृष सं. २.

वृषभ-ध्वज—*(न०)* शिव।

वृषभ-ध्वज—*(न०)* शिव।

वृष्टि—*(न०)* वर्षा । मेह । बरसात । बिरखा ।

वृहत्—*(वि०)* १. बहुत बड़ा । २. विशाल ।

वृहस्पति—*(न०)* १. देवगुरु बृहस्पति । २. वेदकालीन एक नास्तिक ऋषि । अत्यन्त विद्वान व्यक्ति ।

वृहस्पति-वार—*(न०)* १. बुध-वार के बाद का दिन । गुरु-वार । २. सूर्य-परिवार का सबसे बड़ा ग्रह । ३. जो ग्रहों में से एक ग्रह ।

वृंद—*(न०)* १. झुंड । टोला । समूह । टोळो । २. राशि । ढेर । ढिगलो ।

वृंदा—*(न०)* १. तुलसी । २. राधा । राधिका । ३. एक तपस्विनी का नाम ।

वृंदावन—*(न०)* १. मथुरा के पास श्रीकृष्ण की क्रीड़ा-स्थली । गोकुल के पास का तुलसी-वन । २. वृंदा की तपो भूमि ।

वे—*(सर्व०)* 'वो' (हिन्दी 'वह') का बहु-वचन या सम्मान सूचक शब्द । *(अव्य०)* १. उपसर्ग, जिसका शब्द के पहिले लगने से उसका विपरीतार्थ हो जाता है । बे । २. बिना । बगैर ।

वे-अकल—*(वि०)* बुद्धिहीन । नासमझ ।

वे-अकली—*(ना०)* नासमझी ।

वे-अदब—दे० बे-अदब ।

वे-अदबी—दे० वे-अदबी ।

वे-आदर—दे० बे-आदर ।

वे-आब—*(वि०)* १. बिना पानी । जल रहित । २. बिना चमक का । ३. कान्ति-हीन । दे० बे-आबरू ।

वे-आबरू—दे० बे-आबरू ।

वेइ—*(अव्य०)* १. सम्प्रदान कारक का शब्द । २. लिये । वास्ते । निमित्त । ३. वगैरा । इत्यादि ।

वे-इजत—दे० बे-इज्जत ।

वे-इजती—दे० बे-इज्जती ।

वे-इतबार—दे० बे-इतबार ।

वे-इनसाफ—दे० बे-इन्साफ ।

वे-इनसाफी—दे० बे-इन्साफी ।

वे-ईमान—दे० बेईमान ।

वेईमानी—दे० वेईमानी ।

वेउणी—दे० वेउंडी ।

वेऊंगो—*(वि०)* १. बेशऊर । फूहड़ । २. अर्द्ध विक्षिप्त । *(ना०)* वेऊंगी ।

वेउंडी—*(ना०)* छोटी विंडी (पाली) द्वारा घेरा हुआ चूल्हे के आगे का भाग जिसमे चूल्हे की राख इकट्ठी होती है । वेवणी । बेवणी ।

वेऊणी—दे० वेउंडी ।

वे-कदर—दे० बेकदर ।

वे-कदरी—दे० बेकदरी ।

वे-कदरो—दे० बेकदरो ।

वेकर—दे० वेकळू ।

वे-करार—दे० बे-करार ।

वे-करारी—दे० बे-करारी ।

वे-करियो—*(न०)* एक घास ।

वेकरो—*(न०)* मोटी रेती । कंकड़ वाली रेती । बजरी ।

वेकळू—*(ना०)* बालू रेत । पांशु । पांह ।

वे-कसूर—दे० बेकसूर ।

वे-काज—दे० बेकाम ।

वे-काबू—दे० बेकाबू ।

वे-काम—दे० बेकाम ।

वे-कायदे—दे० बे-कायदे ।

वे-कार—दे० बे-कार ।

वेकूब—*(वि०)* बे-वकूफ । मूर्ख ।

वेकूबी—*(ना०)* बे-वकूफी । मूर्खता ।

वेख—*(ना०)* १. दृष्टि । वीक्ष । २. वेश । ३. विचार-शक्ति । सूझ ।

वे-खटके—दे० बेखटके ।

वेखणो—*(क्रि०)* १. देखना। २. तपासना। **देखणो** ।

वे-खता—दे० बे-खता ।

वे-खबर—दे० बे-खबर ।

वेखरी—*(ना०)* १. वाणी की चौथी कोटि (परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी) । २. मुँह से उच्चारित शब्द । बोलने की शक्ति । ३. सरस्वती । वैखरी ।

वेखा—*(न०)* १. ढिलाई । सुस्ती । दीर्घ-सूत्रता । २. विलंब । देरी । ३. व्यर्थ समय खोना ।

वेखाई—*(वि०)* वेखा करने वाला । ढीला । दे० वेखा ।

वेखा करणो—*(मुहा०)* १. फालतू बातें करके देर करना । २. व्यर्थ समय गँवाना । ३. सुस्ती से काम करना ।

वे-खातर—*(वि०)* १. बे-खबर । २. बे-होश । *(न०)* आश्वासन । तसल्ली (विरुद्धार्थ) ।

वेखाळो—*(वि०)* दीर्घसूत्री । ढीला । सुस्त । **वेखो** ।

वेखो—दे० वेखाळो ।

वेग—*(क्रि०वि०)* शीघ्र । जल्दी । *(न०)* १. प्रवाह । बहाव । २. गति । ३. मल-मूत्रादि शरीर के मलों का शरीर से बाहर निकलने की प्रवृत्ति । ४. सिर का एक रोग । ५. कनपटी में होने वाली एक भारी वेदना । ६. त्रास । ७. ताप । ८. तेजी । ९. जोर । १०. शीघ्रता ।

वेगड़—दे० बेगड़ी सं० २.

वेगर—*(न०)* बकरी के काटे हुए बाल । जट ।

वे-गरजी—दे० बे-गरजी ।

वेगळो—*(वि०)* १. दूर । २. जुदा । **न्यारो** ।

वेगागळ—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

वेगार—दे० बेगार ।

वेगारी—दे० बेगारी ।

वेगाळ—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

वेगाळो—*(वि०)* १. वेगवान । उतावला । *(न०)* घोड़ा ।

वे-गुना—दे० बे-गुनाह ।

वेगेरो—दे० वेगो ।

वेगो—*(न०)* शीघ्रता । त्वरा । *(क्रि०वि०)* १. शीघ्रता से । जल्दी से । शीघ्र । २. तुरन्त । **वेगेरो** ।

वे-घर—दे० बे-घर ।

वे-घाट—*(वि०)* बेडौल । कुरूप ।

वेचणो—*(क्रि०)* बेचना । मूल्य लेकर बदले में वस्तु को देना । विक्रय करना ।

वेचवाळ—*(वि०)* बेचने वाला । **वेचू** । **वेचाळ** ।

वेचवाळी—*(ना०)* १. माल बेचने की क्रिया । २. माल बेचने की इच्छा या आवश्यकता ।

वेचाऊ—*(वि०)* १. बेचने योग्य । २. बेचने वाला ।

वेचाक—*(न०)* बीमार । अस्वस्थ । **मांदो** ।

वेचाण—*(न०)* बेचने की क्रिया । बेचना ।

वेचाणो—दे० वेचावणो ।

वेचाळ—दे० वेचवाळ ।

वेचावणो—*(क्रि०)* बिकवाना । बेचाना । **बिकवाणो** ।

वेचू—दे० वेचवाळ ।

वे-चेते—दे० बे-चेते ।

वेछाड़—दे० बेछाड़ ।

वेछाड़णो—*(क्रि०)* १. समतल करना । २. विच्छिन्न करना । विच्छेद करना । ३. अलग करना । ४. मारना ।

वे-जा—*(वि०)* अनुचित । बे-जा । **अखूतो** ।

वे-जान—दे० बे-जान ।

वे-जाब्ता—*(वि०)* १. बिना कानून। २ बिना व्यवस्था। ३. अनुचित।

वेजार—*(वि०)* तंग। परेशान। बेजार।

वे-जोड़—दे० बे-जोड़।

वेजो—दे० बेजो।

वेझ—*(ना०)* सुराख। छिद्र। ठींडो।

वेझको—दे० वेझ।

वेठ—*(ना०)* १. बेगार। बिना पैसों का परिश्रम। २. जबरदस्ती लिया जाने वाला काम। ३. उपाधि। ४. परस्पर का मुफ्त का काम।

वेठ काढणो—*(मुहा०)* १. बेगार निकालना। २. काम को अच्छी तरह से और अच्छा नहीं करना।

वेठणी *(ना०)* १. वेठ में काम करने वाली स्त्री। २. वेठिया की स्त्री।

वेठणो—*(क्रि०)* १. सहन करना। **खमणो**। २. निबाहना। ३. वेठ निकालना। ४. वेठ सहन करना। ५. सम्हालना। ६. भुगतना।

वेठियो—*(ना०)* वेठ का काम करने वाला। **बेगारी**। विष्टिक।

वेड़णो—*(क्रि०)* १. काटना। २. निवारण करना। रोकना। ३. दूर करना। ४. खेत में बाजरी आदि की पूंखों को तोड़ना। दे० बेड़णो।

वेड़लो—*(ना०)* स्त्रियों के कान में पहिनने का एक गहना।

वेडूंबो—*(ना०)* १. छोटा मतीरा। २. गोल और छोटी ककड़ी। ३. सड़ा हुआ मतीरा। *(क्रि०)* १. बिना सूरत शक्ल का। २. मूर्ख।

वे-डोळ—दे० वे-डोळ।

वेढ—*(ना०)* युद्ध। लड़ाई।

वेढक—*(वि०)* १. युद्ध करने वाला। २. वीर। बहादुर। ३. भयंकर। *(ना०)* १. युद्ध। २. योद्धा। **वेढी**। ३. बिना ढक्कन का।

वेढणी—*(ना०)* वीरांगना। *(वि०)* युद्ध करने वाली।

वेढणो—दे० विढणो।

वे-ढब—दे० बे-ढब।

वेढमी—*(ना०)* पिठ्ठी भर कर बनाई हुई पूरी या घी से सान कर बनाई हुई एक प्रकार की बढ़िया रोटी। पिठ्ठी, मसाले आदि भरी तवा-रोटी। बेढई। **बेढा रोटी**। **बेढापुड़ी**।

वेढंग—दे० बेढंगो।

वेढंगो—दे० बेढंगो।

वेढाळो—*(वि०)* १. बिना ढंग का। २. अव्यवस्थित। दे० वेढाळ।

वे-ढाळ—*(ना०)* १. रण-कुशल व्यक्ति। योद्धा। २. युद्ध-प्रिय वीर। **वेढीमणो**।

वेढाँ-करंगी—*(वि०)* १. युद्ध करने वाला। योद्धा। २. युद्ध-कुशल।

वेढी—*(ना०)* योद्धा। **वेढक**। **वेढीगारो**।

वेढीगार—दे० वेढीगारो।

वेढीगारो—*(ना०)* योद्धा। **वेढी**। **वेढक**।

वेढीमणो—*(ना०)* १. जबरदस्त वीर। **वेढीमणो**। २. युद्ध प्रिय वीर। *(वि०)* पराक्रमी।

वेढीलो—दे० वेढीमणो।

वेढो—*(ना०)* १. अंगुली की जोड़ में (हथेली की ओर में) आड़ी रेखा। अंगुली के जोड़ का निशान। पर्व। पोर। **पेरवो**। २. अंगुली की दो गाँठों के बीच का भाग। ३. गाँठ। ग्रंथि। पर्व। ४. ईख, ज्वार आदि के डंठल की गाँठ या जोड़। ५. लकड़ी आदि पर औजार से किया हुआ निशान।

वेण—*(ना०)* १. बाँस । २. बाँसुरी । वेणु । मुरली । **बंसरी** । *दे०* वेणी ।

वेणी—*(ना०)* १. स्त्रियों के केशों की गुंथी हुई चोटी । २. शिखा । चोटी । ३. नदियों का संगम । ४. नदी । ५. नदी का प्रवाह । जल प्रवाह । ६. स्त्रियों के जूड़े में बाँधने की पुष्पों की माला ।

वेणी-माधव—*(ना०)* श्री कृष्ण ।

वेणी-संहार—*(ना०)* १. वेणी संवरण । २. द्रोपदी के वेणी संवरण संबंधी भट्ट नारायण द्वारा रचित एक संस्कृत नाटक ।

वेणु—*(ना०)* बाँसुरी । मुरली । **वंसी** । **बंसरी** । *(न०)* बाँस ।

वेत—*(ना०)* १. संतान । औलाद । २. पशु-संतति । बछड़ा-बछड़ी । ३. बेंत । वेत्र । **वेतर** । ४. सवारी के ऊंट, घोड़ा आदि ।

वेतन—*(न०)* तनख्वाह । मासिकी । माहवारी । **तनखा** । **पगार** ।

वे-तमीज—*दे०* बे-तमीज ।

वेतर—*(न०)* १. मादा-पशु को होने वाला गर्भाधान का समय । २. मादा-पशु की गर्भाधान कराने की इच्छा । ३. मादा पशु को रहा हुआ गर्भ । ४. आसन्न-प्रसूता मादा-पशु । तुरन्त बियाने वाली गाय-भैंस आदि । ५. मादा-पशु का एक बार का प्रसव । ६. गाय-भैंस का बछड़ा-बछड़ी । **बाछड़ो** ।

वे-तरतीब—*दे०* बे-तरतीब ।

वे-तरह—*दे०* बे-तरह ।

वे-तरीके—*दे०* बे-तरीके ।

वे-तरीको—*(वि०)* बिना तरीका । बिना ढंग । **वेढंगो** ।

वे-ताज—*(वि०)* १. बिना ताज का । बे-ताज । २. बिना राज्य का ।

वे-ताब—*दे०* बे-ताब ।

वे-ताळ—*(न०)* १. बेताल । २. भाट, बंदी आदि । *(वि०)* जिसमें ताल का ध्यान नहीं रखा गया हो । बेताल । (संगीत) । *दे०* वैताळ ।

वेतुको—*दे०* बेतुको ।

वेत्र—*(ना०)* बेंत । छड़ी । *दे०* वेतर ।

वे-थाग—*दे०* बे-थाग ।

वेद—*(न०)* १. आर्यों (हिन्दुओं) के, दुनिया में सबसे प्राचीन दर्शन एवं धर्म ग्रंथ । [ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद] श्रुति । निगम । २. ज्ञान । ३. शास्त्रीय ज्ञान । सत्यज्ञान । ४. चार की संख्या । [वि.वि. चारों वेदों में ऋग्वेद सृष्टि का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना गया है] ।

वेदक—*(न०)* हिन्दू । आर्य-हिन्दू । *दे०* वेदग ।

वे-दखल—*दे०* बे-दखल ।

वे-दखली—*दे०* बे-दखली ।

वेदग—*दे०* वेदज्ञ ।

वेदज्ञ—*(न०)* १. वेदों को जानने वाला । २. ब्रह्मज्ञानी ।

वेद-त्रयी—*(ना०)* ऋक्, यजु, और साम ये तीन वेद ।

वेद-ध्वनि—*(ना०)* वेद-घोष । वेदों का परस्पर पढ़ना ।

वेदन—*दे०* वेदना ।

वेदना—*(ना०)* १ कष्ट । तकलीफ । दुख । पीड़ा । २. बीमारी । रोग ।

वेदपाठ—*(न०)* वेदों का पढ़ना । वेदाध्ययन ।

वेदपाठी—*(वि०)* वेदों का पाठ करने वाला ।

वेदपित—*(न०)* अग्नि ।

वेद-मंत्र—*(न०)* १ वेदों के मंत्र । २. वेदों के मूलमंत्र । *(न०)* किसी वेदकी ऋचा ।

वेद-माता—*(ना०)* १. गायत्री । २. सरस्वती । शारदा ।

वे-दर—*(वि०)* १. बिना घर । बेघर । २. बिना इज्जत ।

वेदवंत—*(न०)* वेदज्ञ ।

वेद-वाक्य—*(न०)* १. वेदों का प्रमाणभूत आदेश । २. सत्य-कथन । ३. अनुलंघनीय आदेश ।

वेद-विद्—*(न०)* १. वेदज्ञ । २. विष्णु ।

वेद-विहित—*(वि०)* १. वेद प्रतिपादित । वेदों में कही हुई । २. जिसकी वेदों ने आज्ञा की है ।

वेदव्यास—*(न०)* वेदों के संग्रहकर्ता, मंत्र द्रष्टा संपादक एवं पुराणों तथा महाभारत के रचयिता महर्षि पाराशर के पुत्र महर्षि वेदव्यास । कृष्ण-द्वैपायन ।

वे-दाग—*दे०* बे-दाग ।

वेदाणी—*(न०)* लुहार । बेनाणी ।

वेदांग—*(न०)* १. वेद के शिक्ष, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद तथा निरुक्त ये छः अंग या शास्त्र । २. इनमें का कोई एक शास्त्र ।

वेदांत—*(न०)* १. वेदों का अन्तिम भाग, उपनिषद । २. ब्रह्मसूत्र । ३. ब्रह्मविद्या । ४. अद्वैतवाद । ५. आत्मा-परमात्मा और जगत का जिसमें निरूपण किया गया है वह शास्त्र ।

वेदांती—*(न०)* १. ब्रह्मज्ञानी । २. ब्रह्मवादी । ३. अद्वैतवादी । ४. वेदांत का ज्ञाता । वेदान्त मत का अनुयायी ।

वे-दिल—*(वि०)* १. हताश । निराश । २. उदास । खिन्नचित्त । ३. नाराज ।

वेदियो—*(वि०)* १. वेदज्ञ २. वेद पाठ करने वाला ।

वेदी—*(ना०)* १. यज्ञकुंड । २. मांगलिक या धार्मिक कृत्य करने के लिये बनाया हुआ चबूतरा । ३. एक अस्त्र । ४. उलझन । अटपटापना । ५. कठिनता । ६. विशेषता । ७. उत्कृष्टता । ८. यज्ञ मंडप । ९. सरस्वती । १०. पंडित । ११. जानकारी । १२. कला । १३. होशियारी । १४. विवाद *(वि०)* १. जानकार । २. विद्वान । ३. वेद जानने वाला ।

वेद्य—*(न०)* १. चिकित्सक । वैद्य । २. ज्ञान । *(वि०)* १. जानने योग्य ।

वेद्यक—*(न०)* चिकित्साशास्त्र । आयुर्वेद । वैद्यक ।

वेध—*(न०)* १. युद्ध । लड़ाई । वेढ । २. शत्रुता । अनबन । ३. कलह । ४. आघात । ५. मानसिक क्लेश । ६. छिद्र । सुराख । वेझ । ठींडो । ७. आकाशीय ग्रहों की गति, समय इत्यादि का निरीक्षण । (ज्यो.) ८. सूर्य और चन्द्र ग्रहण के पूर्व का सूतक का समय । ९. सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का किसी अन्य ग्रह की सीध में या छाया में आना । (ज्यो.)

वेधक—*(वि०)* १. युद्ध करने वाला । योद्धा । वेढी । २. छेद करने वाला । ३. पीड़ा करने वाला । ४. कलहकारी । ५. आघात करने वाला । ६. तीक्ष्ण । *(न०)* १. शत्रु । बैरी । २. छेद करने का औजार । ३. अंकुश ।

वे-धड़—*(वि०)* बिना धड़ का । रहित ।

वे-धड़क—*दे०* बेधड़क ।

वेधण-झक—*(न०)* अर्जुन । **वेधण-मच्छ** ।

वेधण-मच्छ—दे० वेधण-झक ।

वेधणियाप—*(वि०)* १. बिना मालिकी का । २. बिना मालिक का ।

वेधणो—*(क्रि०)* १. छेद करना । **वींधणो** । २. दुख देना । पीड़ा पहुंचाना । ३. आघात करना । ४. कलह उत्पन्न करना ।

वे-धरम—*(न०)* धर्म रहित । **अधर्म** ।

वेधशाला—*(न०)* ग्रह, नक्षत्रों आदि की गति वगैरह के निरीक्षण करने की यंत्र-शाला ।

वेधाक—दे० बेधाक ।

वेधी—दे० वेधक ।

बे-नसीब—*(वि०)* भाग्यहीन । **करमहीण** ।

वेनाणी—*(न०)* लोहार । **वेदाणी** ।

वेनाप—*(वि०)* बिना नाप का । बेनाप । अतिशय ।

वे-नीत—*(न०)* अनीति । *(वि०)* बिना नीति का ।

वेपगो—*(वि०)* अविश्वासी । **नपगो** ।

वेपत—*(वि०)* अविश्वसनीय । बिना पत या पतियारे का । **अपतियो** ।

वेपता—*(वि०)* १. जिसका पता ठिकाना न हो । बेपता । २. आवारा ।

वेपथ—*(न०)* कुमार्ग । *(वि०)* भूला हुआ । भटका हुआ ।

वेपरवा—दे० बेपरवाह ।

वेपरवाही—दे० बेपरवाही ।

वेपाट—*(वि०)* असीम । बेहद । अपार । *(न०)* व्यापार । **वैपार** ।

वेपैठ—*(वि०)* १. बिना इज्जत का । २. **अविश्वासी** ।

वेफाम—*(अव्य०)* बिना विचार के । ध्यान दिये बिना । बेफहम । *(वि०)* गाफिल । बेपरवाह । बेसुध ।

वे-फायदा—दे० बेफायदा ।

वे-फिकर—*(वि०)* बेफिक्र । निश्चित ।

वे-फिकरी—*(ना०)* निश्चितता ।

वे-फैम—दे० बेफहम ।

वे-बुनियाद—*(वि०)* निर्मूल । आधार-रहित ।

वेभान—दे० बेभान ।

वेम—*(न०)* १. गाय, भैंस आदि पशुओं का जनन क्रम । **वेतर** । २. प्रत्येक बार का जनन (ढोर का बच्चा) । ३. पशु संतति । बछड़ा । ४. पशु प्रसव । ५. बच्चा । संतान । पुत्र (आक्रोश या व्यंग्य में) । ६. विचार ।

वेमणो—*(क्रि०)* १. विचार करना । गंभीरता से सोचना । गहराई से सोचना । २. हित-अहित सोचना ।

वेमन—दे० बेमन ।

वे-मनो—*(वि०)* १. उदास २. बेमन ।

वे-मरामत—*(वि०)* बेमरम्मत । टूटा-फूटा ।

वे-माप—*(वि०)* १. बेमाप । बिना माप का । २. अपार ।

वे-मार—दे० बीमार ।

वे-मारी—दे० बीमारी ।

वे-मालुम—*(वि०)* जिसका पता न हो । बेमालूम । बेपता ।

वे-मुख—दे० विमुख ।

वेमेदा—दे० वेमेदा ।

वेमेळ—दे० बेमेल ।

वे-मोसम—दे० बेमौसम ।

वे-मौत—दे० बेमौत ।

वेर—*(ना०)* १. विलंब । देर । २. समय । वेला । *(अव्य०)* फिर । फेर । पुनः ।

वेर-अवेर—*(अव्य०)* १. वक्त-बेवक्त । समय-कुसमय । २. शीघ्र-अशीघ्र । बेगो-मोड़ो ।

वेरक—*(अव्य०)* एक बार । 'एक वेर' का संक्षिप्त रूप ।

वेरणो—*(क्रि०)* १. वर्णन करना । कहना । २. सम्हालना । ३. एकत्र करना । ४. मन चुराना । ५. देर करना । ६. बिखेरना । ७. विचार करना ।

वे-रद—*(वि०)* १. बिना दाँतों का । २. मुकनो-हाथी ।

वे-रस—*दे०* विरस

वे-रहम—*दे०* बेरहम ।

वे-रहमी—*(ना०)* दया हीनता । बेरहमी । अवकृपा ।

वे-रंग—*(वि०)* १. रंग रहित । विरंगा । २. बिना टिकट या कम टिकट लगा हुआ । (डाक पत्र) । ३. फीके या ढीले मुंह का ।

वे-रंगो—*दे०* बेरंग ।

वेरागर—*(वि०)* १. विस्तृत । २. बहुत बड़ा । विशाल । *(ना०)* नमक बनाने के निमित्त वर्षा का पानी संग्रह करने के लिए बनाया हुआ खड्डा या खान । आगर ।

वे-राजी—*दे०* वैराजी ।

वेराण—*दे०* वीराण । *(वि०)* सं. २

वे-राबतो—*(ना०)* १. अनबन । वैमनस्य । २. शत्रुता । दुश्मनी । दुसमणी ।

वे-रास्ती—*(ना०)* १. मनोमालिन्य । वैमनस्य । २. शत्रुता । दुश्मनी । वैर ।

वेरी—*(ना०)* १. छोटा कुंआं । कुई । २. कुंआं ।

वे-रीत—*(वि०)* बिना रीति के । *(ना०)* कुरीति । रीति के विरुद्ध ।

वे-रुख—*(ना०)* उपेक्षा का भाव । बेरुख ।

वे-रुत—*(वि०)* बिना मौसम के ।

वे-रूप—*(वि०)* कुरूप । विदरूप । विरूप ।

वेरो—*(ना०)* १. कुआं । कूप । २. जानकारी । विज्ञता । पता । ब्योरा । ३. याद । स्मृति । ४. कर । महसूल । बराड़ । लगान ।

वे-रोक—*दे०* बेरोक ।

वे-रोक-टोक—*दे०* बे-रोकटोक ।

वेरोजगार—*(वि०)* १ बिना धंधा का । २. बेकार । बेरोजगार ।

वे-रोजगारी—*(ना०)* बेकारी । बेरोजगारी ।

वेल—*(ना०)* १. लता । वल्ली । वेलड़ी । २. अंगूठी । बींटी । ३. वंश । ४. स्त्री । सुगाई ।

वेळ—*(वि०ना०)* १. फूहड़ । २. विह्वल । ३. मूर्खा । *(ना०)* १. लहर । वेला । २. पागलपन । ३ अनेक आंटों वाली एक अंगूठी । ४. एक कंठाभूषण ।

वेलख—*दे०* बेलख ।

वे-लगाम—*दे०* बेलगाम ।

वेलड़ी—*(ना०)* १. लता । बेल । २. कमनीय स्त्री ।

वेलण—*(ना०)* रोटी बेलने का बेलन । बेलन ।

वेलणियो—*(वि०)* बेलने वाला । *(ना०)* छोटा बेलन । बेलण ।

वेलणी—*(ना०)* छोटा बेलन । बेलणी ।

वेलणो—*(क्रि०)* बेलना (रोटी, पापड़ आदि) । वटणो । वटणों ।

वेलदार—*(न०)* १. तालाब, खानों आदि में मिट्टी पत्थर आदि खोदने का काम करने वाली एक जाति। इस जाति का व्यक्ति। *(वि०)* बेल-बूटों वाला।

वेलदारी—*(ना०)* १. वेलदार की स्त्री। २. वेलदार का काम।

वेल-वधणो—*(मुहा०)* वंश वृद्धि होना।

वेलंगो—*(वि०)* १. लंबा, पतला और कुरूप (मनुष्य)। २ ढीला और सुस्त। (मनुष्य)।

वेला—*(न०ब०व०)* १. अनेक प्रकार के संकट। २. संकटों का एक साथ आ पड़ना। ३. संकट काल।

वेळा—*(ना०)* १. समय। काल। वक्त। २. खाली समय। फुरसत। अवकाश। ३. देर। विलंब। ४. कोई खास अवसर। प्रसंग। ५. आपत्तिकाल का प्रसंग। ६. सागर-तरंग। ७. सागर-तट।

वेळा करणो—*(मुहा०)* देर लगाना। **मौड़ो करणो।**

वेळा-कुवेळा—*(अव्य०)* १. समय-कुसमय। वक्त-बेवक्त। २. किसी भी समय। **वेर-अवेर।**

वे-लाग—*(वि०)* १. निष्पक्ष। बेलाग। २. व्यवहार में खरा। खरा। ३. बिना आधार का। आधार रहित। ४. बिलकुल अलग। ५. कर-मुक्त।

वेळा-पुळ—*(ना०)* १. शुभ समय। भाग्योदय-काल। २. विशेष समय। ३. जन्म समय (के ग्रहादि)। ४. समय। वक्त। वेला-पल। ५. मुहूर्त्त।

वेळा लागणो—*(मुहा०)* देर लगना।

वे-लाज—*(वि०)* निर्लज्ज बेशर्म। नलजो।

वे-लाभ—*(वि०)* बिना लाभ का।

वेळावळ—*(न०)* १. समुद्र। २. लहर। तरंग। ३. एक राग। विलावल।

—वेला-वोलणो—*(अव्य०)* कुछ पाना। संकट में पड़ना। संकट झेलना।

वेळासर—*(अव्य०)* यथा समय। ठीक समय पर। नियत समय पर।

वेळाहरण—*(न०)* समुद्र।

वेळाहळ—*(न०)* समुद्र।

वेलि-क्रिसन-रुकमणी-री—*(ना०)* बीकानेर के भक्त पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रचा गया डिंगल का एक उत्तम कोटि का अति प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ।

वेलियो-छंद—*(न०)* राजस्थानी काव्य-शास्त्र का एक छंद। एक डिंगल छंद। छोटा साणोर छंद।

वेली—*(ना०)* १. लता। बेलड़ी। बेल। २. एक काव्य प्रकार।

वेळू—*(ना०)* १. बालू। धूलि। रेत। रेता। २. वह रज जिसमें मिट्टी का अंश न हो। पांशु। वेकळू। पांह।

वेलो—*(न०)* १. बड़ी लता। २. बंश। ३. पापड़ बनाने के लिये लोइयों के लिये बनाया हुआ लंबा लाटा।

वेल्हा—दे० वेला।

वेवणी—दे० वेउंडी।

वेवणो—*(क्रि०)* विवेकपूर्ण विचार करना।

वेवला—*(न०ब०व०)* १. व्याकुलता। २. विह्वलता। ३. बीमारी की वह दशा जिसमें बीमार, हाथ को हिलाने की और अपने आप बातें करने की चेष्टाएँ करता है।

वेवला-वीणणो—*(मुहा०)* बीमारी की बेख्याली में हाथ से कोई चीज चुगने या उठाने जैसी क्रियाएँ करना।

वेवाई—*(न०)* १. पुत्र या पुत्री का ससुर। २. पुत्र या पुत्री के ससुराल के कुटुंबीजन। ३. वेवाई पक्ष का व्यक्ति समधी-संबंधी। समधी। **सगो मिनाखत**। **व्याही**।

वेवाही—दे० वेवाई।

वेवाण—*(ना०)* वेवाई की पत्नी। समधिन। **सगी**। **मिनाखतण**। **व्यवण**।

वेश—*(न०)* १. पोशाक। परिधान। वेष। २. वस्त्र पहिनने का ढंग। ३. जाति या संप्रदाय (साधु-संन्यासी) के रीति-रिवाज के अनुसार कपड़े पहिनने का ढंग। दे० वेस।

वेश-धारी—*(वि०)* १. छद्मवेश धारण करने वाला। **भेखधारी**। २. दंभी। ढोंगी।

वेश्या—*(ना०)* १ गणिका। पातर।

वेश्या-गमन—*(न०)* वेश्या के साथ संभोग।

वेष—दे० वेश या वेस।

वेष्टन—*(न०)* १. लपेटन। २. किसी वस्तु को लपेटने का कपड़ा। **वींटण**।

वेस—*(न०)* १. सम्पूर्ण स्त्री परिधान। स्त्री पोषाक। वेष। २. विवाह की एक परिपाटी जिसमें वर पक्ष की ओर से वधू के घर पड़ला ले जाने के समय वधू के लिये अन्य मांगलिक वस्तुओं के साथ भेंट की जाने वाली कीमती पोशाक। ३. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर वेदी-मंडप के चारों कोनों में स्थापित किये जाने वाले मंगल-कलश। ५. वयस। आयु। **उमर**। ६. सिले-सिलाये पहनने के सिर से पैर तक सभी कपड़े। ७. स्वांग। ८. भेष। भेस।

वे-सऊर—*(वि०)* १. अशिष्ट। बे-शऊर। **बेढंगा**। ३. गँवार। ४. अयोग्य। ५. निर्बुद्धि।

वेसण—*(न०)* १. चने का आटा। बेसन। २. मूंग, मोंठ आदि द्विदल नाज का आटा। **बेसण**।

वेसन्नर—*(न०)* १. वैश्वानर। अग्नि। **वासदे**। २. परमेश्वर।

वे-सबर—*(वि०)* बेसब्र। अधीर।

वे-समझ—*(वि०)* निर्बुद्धि। मूर्ख। अज्ञानी। नासमझ।

वे-समझी—*(ना०)* मूर्खता। अज्ञानता। नासमझी। **मूरखाई**।

वे-समझू—दे० बेसमझ।

वेसर—*(न०)* स्त्रियों के नाक का एक आभूषण। नकबेसर। बेसर।

वे-सरम—दे० बेशर्म।

वेसवार—*(न०)* साग-तरकारी में डाला जाने वाला हल्दी मिर्च, धनिया आदि मसाला। वेशवार। **बिसवार**।

वेसंदर—दे० वेसन्नर।

वे-साख—*(वि०)* १. शाखा रहित। २. प्रतिष्ठा रहित।

वे-साज—*(वि०)* साज सामान रहित।

वेसास—दे० विश्वास।

वेसासणो—*(क्रि०)* १. विश्वास करना। २. भरोसे रहना।

वे-सुध—*(वि०)* बेसुध। बेहोश। **अचेत**।

वे सुमार—*(वि०)* बेशुमार। असंख्य। **अणगणित**।

वे-सवाद—*(वि०)* १ बेस्वाद। स्वाद रहित। **असवादो**। २. अरुचिकर।

वेह—*(न०)* १. आयु। उम्र। २. वेश। वेशभूषा। ३. विधाता। ब्रह्मा। ४. मानव शरीर। ५. मंगल कलश। ६. विवाह मंडप में स्थापित किये जाने वाले मंगल कलश। ७. विवाह में स्त्रियों

द्वारा मंडित मातृका। ८. विवाह में स्त्रियों द्वारा की जाने वाली घट स्थापन विधि। ९. विवाह में वधू को पहिनाये जाने वाला वस्त्राभूषण।]

वे-हक—दे० बेहक।

वेहड़ली—दे० बेह सं. १।

वेहड़लो—दे० वेह सं. ९.

वे-हद—दे० बेहद।

वेह-माता—*(ना०)* विधाता। ब्रह्मा। *(वि०ना०)* १. मूर्ख। २. भोली।

वेह माँडणो—*(मुहा०)* १. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर घट-स्थापन करना। २. मातृका स्थापन करना।

वे-हवाल—दे० बेहाल।

वे-हाल—दे० बेहाल।

वे-हिसाब—दे० बेहिसाब।

वेहुंगो—दे० वेऊंगो।

वेहूदो—दे० बेहूदो।

वे-हेत—*(वि०)* प्रीति रहित। बिना प्रीति का।

वे-होस—दे० बेहोश।

वे-होसी—दे० बेहोशी।

वेंत—दे० वैंत।

वेंतणो—दे० वैंतणो।

वेंतरणो—दे० वैंतरणो।

वेंतरियोड़ो—दे० वैंतरियोड़ो।

वेंत-सूत—दे० बैंत-सूत।

वेंताणो—दे० वैंताणो।

वेंतियोड़ो—*(भू०कृ०)* व्योंता हुआ। नापा हुआ (कपड़ा)।

वेंतीजणो—*(क्रि०)* व्योंता जाना। नापा जाना (कपड़ा)।

वै—*(ना०)* १. वय। आयु। अवस्था। २. २.बीता हुआ जीवन। *(न०)* १. पति। स्वामी। २. राजा।

वैकल्पिक—*(वि०)* १. विकल्पवाला। २. विकल्प के रूप में प्रयुक्त। ३. विकल्प के रूप में संभवित। ४. अनिश्चित। ५. शंकास्पद।

वैकुंठ—*(न०)* १. विष्णुधाम। विष्णुलोक। २. स्वर्ग। स्वर्गलोक।

वैकुंठ-धाम—दे० वैकुंठवास।

वैकुंठ-नाथ—*(न०)* विष्णु।

वैकुंठ-पति—*(न०)* विष्णु।

वैकुंठ-वास—*(न०)* १. मृत्यु। मौत। २. वैकुण्ठ में निवास।

वैकुंठ-वासी—*(वि०)* १. स्वर्गवासी। २. मृत। रामशरण। *(न०)* श्री विष्णु।

वैकुंठी—*(ना०)* शव को बिठा कर श्मशान ले जाने की देवलनुमा अरथी। शव-विमान। वैकुंठ में जाने का विमान।

वैखरी—*(ना०)* १. वाणी की चौथी कोटि (परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी)। २. स्पष्ट उच्चरित वाणी। मुँह से उच्चरित शब्द। ४. बोलने की शक्ति। ५. सरस्वती। शारदा।

वैखानस—*(न०)* वानप्रस्थाश्रम में स्थित व्यक्ति। वानप्रस्थ। *(वि०)* वानप्रस्थ संबंधी।

वैजयंती—*(ना०)* १. घुटनों तक की लम्बी माला। २. पचरंगी मोतियों की लम्बी माला। ३. ध्वजा। पताका। ४. खेल-कूद में विजेता को प्राप्त होने वाली शील्ड।

वैजंती—दे० वैजयंती।

वैज्ञानिक—*(वि०)* १. विज्ञान सम्बन्धी। २. विज्ञान के अनुसार। *(न०)* विज्ञान-शास्त्री।

वैड़—*(ना०)* १. पहली बार ब्याई हुई गाय। वैडकी। २. वह बछिया जो गर्भ धारण करने योग्य हो गई हो।

वेड़की—दे० वेड़ ।

वेड़ो—*(वि०)* वैसा । उस प्रकार का । **ओड़ो । उड़ो ।**

वैण – *(न०)* १. वचन । **वयण । कथन । बोल ।** २. प्रतिज्ञा । **कौल ।**

वैण देणो—*(मुहा०)* प्रतिज्ञा करना । वचन देना । **कौल करणो ।**

वैणव—*(न०)* बाँस । **वाँह । वांहड़ो ।**

वैण-सगाई—*(ना०)* राजस्थानी काव्य का एक विशिष्ट अलंकार या आवर्तन । प्रत्येक तुक के प्रथम वर्ण का तुकान्त में किया जाने वाला प्रतिस्थापन । **वर्ण-संबंध । वयण-सगाई । वर्णमेळ ।**

वैणी—दे० वेणी ।

वैत—*(न०)* १. ऊंट । २. ऊंट, घोड़ा, बैलगाड़ी आदि सवारी का कोई वाहन । बहत । ३. भार । वहन । *(ना०)* बित्ता । बालिश्त ।

वैतनिक—*(वि०)* १. वह जो वेतन पर काम करता हो । २. वेतन सम्बन्धी । वेतन का ।

वैतरणी—*(ना०)* यमपुरी की एक नदी । मृतात्मा द्वारा पार की जाने वाली यम-लोक की एक काल्पनिक नदी ।

वैतरू—दे० वाहन ।

वैताल—दे० वैताळ ।

वैताळ—*(न०)* १. शिव का एक गण । वीर वैताल । २. एक भूतयोनि । ३. एक जाति का भूत । ४. भूतों का राजा । ५. स्तुतिपाठक । ६. द्वारपाल । *(वि०)* (वैताल के समान) क्रोधी व भयंकर ।

वैतालणी—*(ना०)* १. वताल की स्त्री । २. भूतनी । ३. डरावनी सूरत वाली स्त्री । ४. झगड़ालू तथा क्रोधी स्त्री । ५. भाटनी । *(वि०)* डरावनी ।

वैतूळ—*(न०)* वातचक्र । वायुतूल । **गैतूळ । भतूळियो ।** *(वि०)* बावला । पागल ।

वैद—दे० वैद्य ।

वैदक—*(न०)* चिकित्सा-शास्त्र । **वैद्यक ।**

वैदगी—*(ना०)* १. वैद्य का काम । चिकित्सा । २. वैद्यक ।

वैदराज—*(न०)* वैद्य (मानार्थ) । **वैद्य-राज ।**

वैदिक—*(वि०)* १. वेद सम्बन्धी । २. वेदों द्वारा प्रमाणित । ३. वेदोक्त । ४. वेदानुसारी । ५. वेदकालीन ।

वैदिक-धर्म—*(न०)* वेदोक्त धर्म ।

वैदिकयुग—*(न०)* १. वेदों का रचना काल । २. वेदों के प्रचलन का समय । वैदिक काल । ३. वेदों के अनुसार धर्म-कर्म, रीति-नीति, आचार-विचार इत्यादि के पालन करने का आर्यों का प्राचीन युग ।

वैदूर्य—*(न०)* लहसुनिया नामक एक रत्न ।

वैदेही—*(ना०)* विदेह (राजा जनक) की पुत्री । सीता । जानकी ।

वैद्य—*(न०)* आयुर्वेद चिकित्सक । **वैद ।**

वैद्यक—दे० वैदक ।

वैध—*(वि०)* १. कानून के अनुसार । २. विधि सम्मत । विहित । **कायदासर ।**

वैधव्य—*(न०)* विधवापन । **रंडापो ।**

वैनतेय—*(न०)* १. गरुड़ । २. अरुण ।

वैपार—दे० व्यापार ।

वैपारी—दे० व्यापारी ।

वैभव—*(न०)* १. ऐश्वर्य । २. धन-सम्पत्ति ३. विभव । ४. महिमा । ५. सामर्थ्य । ६. शान-शौकत ।

वैभव-शाली—*(वि०)* ऐश्वर्यवान । बहुत धन-सम्पत्ति वाला ।

वैमनस्य—*(न०)* १. दुश्मनी । वैर । शत्रुता । २. द्वेष । ३. खिन्नता ।

वैयाकरणी—*(न०)* व्याकरण शास्त्र का विशेषज्ञ । व्याकरण-शास्त्री ।

वैर—*(न०)* १. शत्रुता । दुश्मनी । २. विरोध ।

वैरण—*(ना०)* १. शत्रु-स्त्री । वैरिन । २. शत्रु की स्त्री । ३. एक गाली । ४. सौत । *(वि०)* दुख-दायिनी ।

वैरणो—*(क्रि०)* १. लकड़ी आदि किसी वस्तु को आरा से चीरना । २. वैर का बदला लेना । ३. जैन साधु को (भोजन पानी की) भिक्षा देना ।

वैर-भाव—*(न०)* शत्रुता । दुश्मनी ।

वैर-वाद—*(ना०)* १. उग्र शत्रुता । २. झगड़ा । लड़ाई ।

वैर-वाळू—*(वि०)* १. वैर का बदला लेने वाला । २. प्रत्याघाती ।

वैर-वाहरू—*(वि०)* १. वैर का बदला लेने वाला । २. वैरी का पीछा करने वाला ।

वैर-विरोध—*(न०)* १. शत्रुता और अनबन । २. शत्रुता या अनबन ।

वैर विहूडणो—*(वि०)* वैर का बदला लेने वाला । शत्रु को मार कर वैर का बदला लेने वाला ।

वैराइत—दे० वैरायत ।

वैराइयाँ—*(न०ब०व०)* (वैरी शब्द का बहुवचन रूप) शत्रु समूह । शत्रुगण । *(अव्य०)* १. शत्रुओं से २. शत्रुओं का ।

वैराई—दे० वहराई ।

वैराग—दे० वैराग्य ।

वैरागण—*(वि०)* वैराग्यवाली । *(ना०)* १. वैराग्यवाली स्त्री । २. वैरागी की स्त्री । ३. साध्वी । साधाणी ।

वैरागर—*(न०)* १. शत्रु । २. शत्रु समूह । ३. खान । खदान । आगर । ४. नमक की खान । ५. चौड़ा कुआँ । ६. एक प्रदेश । *(वि०)* १. विस्तृत । २. बहुत बड़ा (कुआं, तालाब, खान इत्यादि) ।

वैरागी—*(न०)* १. वैराग्यवाला (पुरुष) । २. साधुओं की एक जाति । ३. एक वैष्णव सम्प्रदाय । ३. साधु । *(वि०)* वैराग्य-वाला ।

वैराग्य—*(न०)* संसार पर की आसक्ति का अभाव । विरक्ति ।

वैराजी—*(वि०)* नाखुश । अप्रसन्न । नाराज ।

वैराजी-पणो—दे० वैराजीपो ।

वैराजीपो—*(न०)* नाराजी । अनबन । वैराजीपणो ।

वैराजो—दे० वैराळो ।

वैराट—दे० विराट ।

वैराड़ी—*(ना०)* शत्रुता ।

वैराड़ो—दे० वैरळो ।

वैराणो—*(क्रि०)* १. भिक्षा देना (जैन) । वहराणो । २. करोत से कटवाना । चिरवाना । चीरावणो ।

वैरान—*(वि०)* १. निर्जन । उजाड़ । २. शोभाहीन ।

वैरापो—दे० वैराळो ।

वैरायत—*(न०)* १. शत्रु समूह । शत्रुगण । २. शत्रुप्रदेश । ३. शत्रुभाव । शत्रुता ।

वैराळो—*(न०)* १. वैरभाव । २. शत्रुता । दुसमणावट । ३. शत्रु प्रदेश । ४. शत्रुओं का आक्रमण । वैराड़ो । वैराजो ।

वैरावणो—दे० वैराणो ।

वैरी—*(न०)* शत्रु । दुश्मन । बैरी । बैरो । दुसमण ।

वैरी-वाड़ो—*(न०)* १. शत्रुओं का मोहल्ला। २. शत्रुता। वैराड़ो। दुश्मनावट।

वैल—*(ना०)* १. नाटे बैलों का रथ। २. रथ के आकार की बैलगाड़ी। बहली।

वैवार—दे० व्यवहार।

वैशंपायन—*(न०)* वेद-व्यास के शिष्य एक ऋषि जिन्होंने जन्मेजय को महाभारत की कथा सुनाई थी।

वैशाख—*(न०)* चान्द्र वर्ष का विशाखा नक्षत्र वाला दूसरा मास। चैत्र और जेठ के बीच का महीना।

वैशाख-नंदन—*(न०)* गदहा। गधेड़ो।

वैशाखी—*(न०)* १. वैशाख महीने की पूर्णिमा। २. लंगड़े के सहारे का डंडा। २. डोली।

वैशेषिक-दर्शन—*(न०)* छः वैदिक दर्शनों में से कणाद ऋषि द्वारा प्रवर्तित एक दर्शन। परमाणुवाद दर्शन।

वैश्य—*(न०)* १. हिन्दुओं के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण। २. वणिक। बनिया। वाणियो। ३. एक हिन्दू जाति।

वैश्या—*(ना०)* वैश्य की स्त्री।

वैश्रवण—*(न०)* १. कुबेर। २. शिव।

वैश्वदेव—*(न०)* १. भोजन के पूर्व देवों को दिया जाने वाला बलि। २. विश्व देव के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

वैश्वानर—*(न०)* १. अग्नि। २. जठराग्नि। ३. परमेश्वर।

वैष्णव—*(न०)* १. एक साधु जाति। २. विष्णु की भक्ति करने वाला एक सम्प्रदाय। विष्णु उपासक सम्प्रदाय। ३. विष्णुभक्त।

वैष्णवास्त्र—*(न०)* विष्णु का अस्त्र।

वैस—*(ना०)* १. आयु। वयस। *(न०)* १. वैश्य। २. वैश्य जाति।

वैसन्नर—*(न०)* अग्नि। वैश्वानर। विसन्नर। वैसन्दर।

वैसाख—दे० वैशाख।

वैसाख-नंदण—दे० वैशाखनन्दन।

वैसाख-पूत—दे० वैशाखनंदन।

वैसाखी—*(ना०)* लंगड़े मनुष्य के चलते समय बगल में रखा जाने वाला डंडा। दे० वैशाखी।

वैसासणो—*(क्रि०)* १. विश्वास करना। दिलासा देना। सांत्वना देना। ३. विश्वास करना। ४. आश्वस्त होना।

वैहरणो—*(क्रि०)* १. चीरना। २. काटना। तोड़ना। दे० वैरणो। सं. १. ३.

वैहल—*(ना०)* रथ के आकार की बैलगाड़ी। बहल। वैल।

वैहलियो—*(न०)* बहली में जोता जाने वाला बैल।

वैंगण—*(न०)* बैंगन। वृन्ताक। विताक। रींगणो।

वैंगाळ—*(न०)* घोड़ा। अश्व। वेंडाक।

वैंचणो—*(क्रि०)* १. बांटना। २. हिस्से करना।

वैंचवाड़ो—*(न०)* बँटवारा।

वेंडाक—*(न०)* घोड़ा। अश्व। वैंगाळ।

वेंडापणो—*(न०)* १. पागलपन। २. बहादुरी। वीरता। ३. अड़ियलपन।

वेंडी—*(वि०ना०)* १. मूर्खा। २. पगली। झगड़ालू। वीरांगना।

वेंडाळ—*(वि०)* १. युद्धोन्मत्त। २. पागल। *(न०)* हाथी।

वेंडूक—*(न०)* घोड़ा। अश्व।

वेंडूर—दे० वेडूक।

वैंडो—*(वि०)* १. पागल। उन्मत्त। २. अड़ियल। बहादुर। ४. दुर्गम। ५. प्रतिकूल। ६. मूर्ख। ७. बेपरवाह।

वत—*(ना०)* १. अंगुलियाँ फैलाने पर कनिष्का और अंगूठे के सिरों तक बन जाने वाली लंबाई। २. बालिश्त। *(न०)* १. एक माप। वेंत। २. सवारी का ऊंट घोड़ा आदि। ३. पोशाक (परिधान) को यथा अंग सीने के लिए शरीर के अंगों का लिया जाने वाला नाप। ४. अंगों के अनुसार लिया गया कपड़े का नाप। ५. नाप। ६. युक्ति। तजवीज। ७. ढांचा। प्रतिरूप। ८. अवसर। मौका। *(अव्य०)* १. ही। २. निश्चय ही। ३. अवश्य। ४. पर। ५. के साथ। ६. मात्र। केवल। सिर्फ।

वेंतणो—*(क्रि०)* १. पोशाक को सीने के पूर्व उसको यथाअंग बनाने के लिये शरीर के अंगों को नापना। व्योंतना। २. किसी परिधान को सीने के पूर्व अंगों के अनुसार कपड़े का नाप करना। ३. जमीन को नापना। ४. नापना।

वेंतरणो—दे० वेंतणो। सं. १.२.४

वेंतरियोड़ो—(भू०कृ०) व्योंता हुआ। नापा हुआ।

वेंत-सूत—*(न०)* १. किसी वस्तु को तैयार करने के पूर्व उसके भागों का किया जाने वाला माप तोल। २. तैयार की हुई वस्तु के भागों का तोल माप के अनुसार सही सिक्के होना। ३. वेंतने का काम। नापने का काम।

वेंताणो—*(क्रि०)* १. कपड़ा सीने के लिये अंगों का माप लिवाना। २. नाप करवाना।

वो—*(सर्व०)* वह। उवो। हेवो। ओ।

वोज—*(न०)* १. ढंग। प्रकार। भाँति। २. प्रणाली। रीति। शैली। पद्धति। ढब। बळामण। ३. खाट बुनने का प्रकार, जैसे—बावड़ी-वोज, गुरड़-वोज। ४. रचना। ५. युक्ति। उपाय। ६. शोभा। ७. सामर्थ्य। हैसियत। ८. विनम्रता। ९. विवेक।

वोजतो—*(वि०)* १. शोभा देने वाला। शोभित। २. ग्रहण करने योग्य। ओजतो। ३. ढब वाला। ४. रीति अनुसार। वोजवाळो।

वोज-वाळो—दे० वोजतो।

वोजाळो—*(वि०)* १. ढंग वाला। वोज-वाला। २. विनम्र।

वोट—*(न०)* प्रतिनिधि चुनाव में किसी उम्मीदवार के पक्ष में दिया जाने वाला मत। चुनाव का मत।

वोटर—*(न०)* मतदाता।

वोटिंग—*(न०)* मतदान।

वोढ—दे० ओढ।

वोढो—*(वि०)* १. विकट। २. भयंकर। भीषण। ओढो। ३. वृद्ध। *(न०)* एक घास।

वोढो-रावण—*(न०)* १. विकट रावण। २. रावण के समान विकट वीर पुरुष। ३. वृद्ध रावण। ४. कुम्भकर्ण। *(वि०)* अत्यन्त जबरदस्त।

वोभर—दे० भोभर।

वोम—*(न०)* आकाश। व्योम। आभो।

वोमग—*(न०)* १. आकाश-मार्ग। २. व्योमचर। पक्षी। पंखी। ३. देवता। ४. बादल।

वोमगा—*(न०)* १. आकाशगामी। २. पक्षी। ३. देवता। बादल।

वोमंगी—*(वि०)* १. आकाशगामी । व्योम विहारी । २. बड़े शरीर वाला । व्योमांगी । ३ बड़े विस्तार वाला । ४. जबरदस्त । *(न०)* पक्षी ।

वोम-मिण—*(न०)* १. व्योममणि । सूरज । २. चंद्र । ३. नक्षत्र ।

वोये—*(अव्य०)* १. समर्थन सूचक अव्यय । हकारात्मक अव्यय । २. हुंकारा देने का एक उद्‌गार । हाँ *(न०)* स्वीकृति ।

वोरगत—दे० वोहरगत ।

वोरी—दे० वोहरी ।

वोरो—दे० वोहरो ।

वोळणो—*(क्रि०)* १. बिताना । व्यतीत करना । २. उपभोग करना । ३. निर्गम करना । ४. लौटना । ५. लौटाना ।

वोळाऊ—*(न०)* १. यात्रा के साथ चलने वाला यात्रा-रक्षक । २. मार्ग रक्षक । वळाऊ । ३. मार्ग दर्शक । भोमियो । *(वि०)* १. लौटने वाला । २. लौटाने वाला । ३. संदेश-वाहक । दूत ।

वोळामण—दे० वोळावण ।

वोळामणी—दे० वोळावणी ।

वोळावण—दे० वोळावणी दे० वळामण ।

वोळावणी—*(ना०)* १. प्रसिद्ध गणगोर त्यौहार का अन्तिम दिन, जिस दिन गौरी को ससुराल भेजे जाने का महोत्सव मनाया जाता है । २. गौरी उत्सव का उद्यापन । वोळावणी । ३. विदाई । ४. वापिस लौटाने का भाव या क्रिया ।

वोळावणो—*(क्रि०)* १. लौटाना । २. विदा करना । ३. बिदा होने वाले के अमुक स्थान तक साथ जाना । पहुंचाना । मेहमान को विदाई देना । ४. व्यतीत करना । बिताना ।

वोळावो—*(न०)* १. यात्रा में रक्षा के लिये साथ में लिया जाने वाला साहसी और वीर रक्षक (राजपूत, भील, मीना इत्यादि जो प्रायः वोळाने का काम किया करते थे) । २. दूत । दे० वोळाऊ ।

वोहरगत—*(ना०)* १. ब्याज पर रुपया देने का धंधा । २. कृषकों को उधार देने का धन्धा ।

वोहरी—*(ना०)* १. वोहरा की स्त्री । २. वोहरा जाति की स्त्री ।

वोहरो—*(न०)* १. ब्याज पर कर्ज देने का काम करने वाला व्यक्ति । २. ऋणदाता । ३. शियापंथी मुसलमान जाति । ४. इस जाति का व्यक्ति । बोहरा ।

व्यक्त—*(वि०)* १. जो प्रकट किया गया हो । २. स्पष्ट । साफ ।

व्यक्ति—*(न०)* १. समाज या समष्टि में से कोई एक । जाति या समूह में से कोई एक । व्यष्टि । जणो । २. मनुष्य । आदमी । ३. व्यक्त होने की क्रिया या भाव । व्यक्तता । स्पष्टता ।

व्यक्तिगत—*(वि०)* १. व्यक्ति से सम्बन्धित २. व्यक्ति विशेष का सम्बन्ध । ३. व्यक्ति का अपना । निजी । वैयक्तिक । निजी । अपणो ।

व्यक्तिवार—*(अव्य०)* व्यक्तिशः । प्रतिव्यक्ति । जणादीठ । जणीका-दीठ ।

व्यग्र—*(वि०)* १. व्याकुल । बेचैन । २. अस्थिर । ३. घबराया हुआ ।

व्यग्रता—*(ना०)* १. व्याकुलता । बेचैनी । २. अस्थिरता । ३. घबराहट ।

व्यजन—*(न०)* पंखा । वीजणो । पंखो ।

व्यतिक्रम—*(न०)* १. उल्लंघन। २. विपर्यास। ३. विघ्न। बाधा। ४. रुकावट। ५. क्रम को गड़बड़ा देने वाली बात। क्रम विपर्यय।

व्यतीत—*(वि०)* १. बीता हुआ। गुजरा हुआ। विगत। २. चला गया हुआ। ३. मरा हुआ।

व्यतीपात—*(न०)* १. एक निषिद्ध योग। ज्योतिष में अशुभ माना जाने वाला सत्रहवाँ योग। २. उत्पात। उपद्रव। ३. भीषण प्राकृतिक उत्पात।

व्यथा—*(ना०)* दुख। पीड़ा। विथा।

व्यथित—*(वि०)* १. दुखित। दुखी। २. पीड़ित। ३. व्याकुल।

व्यभिचार—*(न०)* १. दुश्चरित्रता। २. पराये पुरुष या स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध। स्त्री-पुरुष का अवैध संभोग-सम्बन्ध। जारकर्म। छिनाला। ३. कर्त्तव्य भ्रष्टता। ४. दुराचार।

व्यभिचारिणी—*(ना०)* परपुरुष से अवैध संबंध रखने वाली स्त्री।

व्यभिचारी—*(वि०)* परस्त्री से अवैध रति सम्बन्ध रखने वाला। *(न०)* १. व्यभिचारी मनुष्य।

व्यय—*(न०)* १. खर्च। २. दान। उत्सर्ग। ३. नाश। क्षय।

व्यर्थ—*(वि०)* १. अर्थ-रहित। २. निरर्थक। विरथा। ३. अनावश्यक। ४. निरुपयोगी। ५. निष्फल। अफळ।

व्यवधान—*(न०)* १. विघ्न। २. बीच की आड़। परदा। ३. बीच का अन्तर या अवकाश।

व्यवसाय—*(न०)* १. धंधा। पेशा। २. उद्योग। ३. आजीविका। रोजी। ४. व्यापार। रोजगार।

व्यवसायी—*(वि०)* १. व्यवसाय वाला। व्यवसाय करने वाला। २. व्यापारी। ३. उद्यमी।

व्यवस्था—*(ना०)* १. प्रबन्ध। बन्दोबस्त। २. काम करने का विधान। ३. किसी काम के करने का शास्त्रीय विधान या आज्ञा। ४. न्यायालय या आयोग की आज्ञा या निर्णय। ५. प्रमाण। ६. आदेश। ७. दृढ़ आधार।

व्यवहार—*(न०)* १. परस्पर लेन देन का सम्बन्ध। २. लोक-रीति। ३. आचरण। बरताव। ४. व्यवसाय। धंधा। काम-काज। व्यापार। ५. परिपाटी। ६. कार्यान्विती। उपयोग।

व्यवहार-कुशल—*(वि०)* व्यवहार के सम्बन्ध में होशियार। व्यवहार-दक्ष। व्यवहार को जानने समझने वाला।

व्यवहारिक—*(वि०)* १. जो व्यवहार के लिए ठीक हो। २. जो व्यवहार में आ सके। ३. काम में आने लायक।

व्यवहारियो—*(वि०)* १. व्यवहार करने वाला। २. व्यवहार वाला। ३. देन-लेन में साधारणतया ठीक।

व्यवहारी—*(वि०)* १. व्यवहार करने वाला। २. व्यवसायी। ३. व्यवहार संबंधी। ४. प्रचलित।

व्यष्टि—*(न०)* समष्टि का कोई एक पृथक एवं विशिष्ट अंश। समाज का एक अंग या सदस्य। समष्टि की सबसे छोटी अभिन्न इकाई।

व्यसन—*(न०)* १. किसी विषय की तीव्र आसक्ति। २. किसी विषय की न छूटने वाली आदत। ३. मादक पदार्थ लेने की आदत। तलब। लत। ४. बुरी आदत। ५. आफत। ६. कष्ट। विपत्ति।

व्यसनी—*(वि०)* व्यसन वाला ।

व्यस्त—*(वि०)* १. किसी बात या काम में पूरी तरह से लगा हुआ । मग्न । २. घबराया हुआ । व्याकुल । ३. ३. फेंका हुआ । ४. बिखरा हुआ । ५. व्याप्त ।

व्यंग—*(वि०)* १. खंडित । २. विकृत । ३. विकलांग । अपंग । *(न०)* १. दोष । ऐब । दे० व्यंग्य ।

व्यंग-वचन—*(न०)* १. हँसी उड़ाने वाली बात । २. ताना । कटाक्ष ।

व्यंग्य—*(न०)* १. वक्रोक्ति । कटाक्ष । ताना । २. मार्मिक बात । ३. उपालंभ । ४. आक्षेप । ५. मीठी-मजाक ।

व्यंजन—*(न०)* १. वह वर्ण जो स्वर की सहायता बिना नहीं बोला जा सके । व्यंजन अक्षर । (व्या.) २. साग, चटनी, तरकारी आदि । ३. पका हुआ भोजन । ४. अलग-अलग प्रकार के खाद्य-पदार्थ । ५. अंग । ६. अभिव्यक्ति । व्यंजना । ७. चिन्ह । ८. दिन । ९. मूंछ ।

व्यंजना—*(ना०)* १. साधारण अर्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करने वाली शब्द शक्ति । २. वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के सिवाय विशेष अर्थ प्रकट करने वाली शब्द शक्ति । (व्या.)

व्यंतर—*(न०)* १. एक प्रकार की भूत योनि । २. अंतर । भूत ।

व्याई—*(न०)* सगा । संबंधी । समधी । 'व्याणी' । व्याही । ब्याही । (भू.का.)

व्याऊ—*(ना०)* बिवाई । सरदी से हथेली या तलवे के फटने से पड़ने वाली दरार ।

व्याकरण—*(ना०)* भाषा के स्वरूप, गठन, रचना विश्लेषण, शब्द-प्रयोग, वाक्य-विन्यास इत्यादि का नियामक शास्त्र । २. एक वेदांग ।

व्याकुल—*(वि०)* १. घबराया हुआ । व्याकुल । बेचैन विकल । २. विचलित । कातर । भयभीत । ४. अधीर ।

व्याख्या—*(ना०)* १. किसी जटिल वाक्य के अर्थ का स्पष्टीकरण । २. विवेचन । ३. टीका । ४. वर्णन ।

व्याख्यान—*(न०)* १. भाषण । बखाण । २. वक्तृता ।

व्याघ्र—*(न०)* बाघ । शेर ।

व्याज—*(न०)* १. ऋण दिये हुये धन के बदले में मूलधन के अतिरिक्त मिलने वाला धन । उधार दी हुई रकम का सूद । ब्याज । २. बहाना । मिष । ३. छल । कपट । धोखा । ४. युक्ति । ५. कूटयुक्ति । ६. दोष । ७. एक अलंकार (काव्य) ।

व्याज-निंदा—*(ना०)* १. स्तुति की आड़ में की जाने वाली निंदा । २. एक शब्दालंकार ।

व्याज-स्तुति—*(ना०)* १. निंदात्मक शब्दों में की जाने वाली स्तुति । निंदा की आड़ में की जाने वाली प्रशंसा । २. एक शब्दालंकार । (काव्य)

व्याजू—*(वि०)* १. ब्याज पर दिया हुआ या लिया हुआ । २. ब्याज संबंधी ।

व्याजोक्ति—*(ना०)* १. छल-कपट की बात । २. एक अर्थालंकार । (काव्य)

व्याण—दे० बेवाण ।

व्याणो—(क्रि०) गाय, भैंस आदि का बच्चा जनना ।

व्याध—*(न०)* शिकारी । व्याधा । बहेलिया । *(ना०)* १. व्याधि । रोग । बीमारी । २. विपत्ति । ३. झंझट । झमेला ।

व्याधा—*(ना०)* १. रोग । बीमारी । व्याधि । २. विपत्ति । ३. चिंता । ४. झंझट ।

व्याधि—दे० व्याधा ।

व्याधी—दे० व्याधि ।

व्यापक—*(वि०)* १. चारों ओर फैला हुआ। २. विशाल। ३. फैलने वाला।

व्यापणो—*(क्रि०)* १. फैलना। २. किसी चीज के अन्दर व्याप्त होना। व्यापना। प्रसार होना। ३. प्रगट होना। ४. मन में स्फुरण होना। *(न०)* स्फुरण।

व्यापार—*(न०)* १. उद्योग। धंधा। २. चीज खरीद कर और नफा लेकर बेचने का काम। **वेपार**। ३. काम। कार्य। ४. प्रयोग। ५. आचरण।

व्यापारी—*(न०)* व्यापार करने वाला। व्यवसायी। **वेपारी**।

व्यापित—दे० व्याप्त।

व्याप्त—*(भू०कृ०)* १. फैला हुआ। २. अन्तर्गत।

व्यायण—*(ना०)* समधिन। **सगी**। **वेवाण**।

व्यायाम—*(न०)* १. कसरत। २. शारीरिक परिश्रम।

व्यायाम-शाला—*(ना०)* व्यायाम करने का स्थान। **अखाड़ा**।

व्यायोग—*(न०)* एक प्रकार का एकांकी नाटक।

व्यायोड़ी—*(भू०का०कृ०)* प्रसव की हुई। (गाय, भैंस आदि।

व्याळ—*(न०)* सूर्य। दे० व्योम।

व्याल—*(न०)* १. सर्प। **सांप**। **गोगोजी**। २. वाघ। **बाघ**।

व्याळू—*(न०)* सायंकाल या रात में किया जाने वाला भोजन।

व्याळू-टाणो—दे० व्याळू-वेळा।

व्याळू-वेळा—*(न०)* १. व्यालू करने का समय। २. सायंकाल।

व्याव—*(न०)* विवाह। व्याह। शादी। **बीवा**।

व्यावणू—*(न०)* १. गाय, भैंस आदि की प्रसवावस्था। २. जनने का समय। ३. गाय या भैंस। **बूझणूं**।

व्यावणो—*(क्रि०)* मादा पशु का बच्चा देना। मादा पशु का प्रसव होना। **ब्याणो**।

व्यावतार—*(अव्य०)* गाय भैंस आदि का जनने की तैयारी में होना।

व्यावर—*(ना०)* मादा पशुओं की प्रसवेन्द्री। योनि। *(वि०)* सगर्भा (मादा पशु)।

व्यावलो—*(न०)* १ विवाह। २. विवाह संबंधी राजस्थानी काव्य या काव्य-ग्रंथ। २. विवाह संबंधी लोक-काव्य।

व्यावहारिक—*(वि०)* व्यवहार संबंधी। व्यवहारू। **वहवारू**।

व्यास—*(न०)* १. पाराशर ऋषि के पुत्र श्रीकृष्ण द्वैपायन। वेदों के संग्रहकर्ता, वेदान्त दर्शन और पुराणों के रचयिता श्री वेदव्यास। २. कथावाचक। पुराणी। **व्यासजी**। ३. वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त या गोल क्षेत्र के बीच में होती हुई गई हो। ४. विस्तार। फैलाव। ५. ब्राह्मण जाति की शाखा या अल्ल। एक उप-गोत्र।

व्यासजी—*(न०)* १. महाभारत या भागवत की कथा करने वाला। २. व्यास ऋषि।

व्यासणी—*(ना०)* १. कथावाचक व्यास की पत्नी। २. व्यास गोत्र वाले व्यक्ति को ब्याही हुई स्त्री।

व्यास-पीठ—*(ना०)* कथा-वाचक के बैठने का ऊंचा स्थान या मंच।

व्यास-पूनम—*(ना०)* आषाढी पूर्णिमा। गुरू-पूर्णिमा। गुरू-पूनम।

व्यासंग—*(न०)* १. अभ्यास। मनोयोग। २. धार्मिक संपर्क। ३. अधिक आसक्ति।

ब्याह—*(न०)* विवाह । ब्याव । बीवा ।

ब्याहण—*(ना०)* समधिन । सगी । ब्याय़ण । बेवाण ।

ब्याहणो—*(क्रि०)* १. विवाह होना । २. विवाह करना ।

ब्याहलो—दे० ब्यावलो ।

ब्याही—*(न०)* समधी । बेवाई । सगो ।

ब्याहृति—*(ना०)* १. उक्ति । कथन । २. पवित्र शब्द । ३. ब्याहृति तीन हैं—ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः । प्राणायाम के समय सात ब्याहृतियाँ कही जाती हैं । (ब्याहृति के शब्द अति पवित्र और कल्याणकारी हैं ।)

ब्यां—दे० वां ।

ब्यांने—दे० वांने ।

ब्यांरी—दे० वांरी ।

ब्यांरे—दे० वांरे ।

ब्यांरो—दे० वांरो ।

ब्यांसू—दे० वांसू ।

व्युत्क्रम—*(ना०)* १. उलटा क्रम २. अव्यवस्था । ३. उल्लंघन । ४. मृत्यु ।

व्युत्पत्ति—*(ना०)* १. शब्द का वह मूल रूप जिससे वह बना हो । (व्या.) २. उद्गम उत्पत्ति का स्थान । ३. विद्वता । ४. प्रवीणता । ५. शास्त्रों का ज्ञान ।

व्युत्पत्ति-शास्त्र—*(न०)* व्युत्पत्ति बताने वाला शास्त्र । निरुक्त ।

व्युत्पन्न—*(वि०)* १. विद्वान । प्रवीण । २. साधित (शब्द) (व्या०) ।

व्यूह—*(न०)* १. युद्ध के समय की जाने वाली सेना की रक्षात्मक व आक्रामक स्थापना । २. सैन्य रचना । ३. मोर्चा । ४. सेना ।

व्योपार—दे० व्यापार ।

व्योपारी—दे० व्यापारी ।

व्योम—*(न०)* १. आकाश । २. अंतरिक्ष ३. मेघ । बादल । ४. जल । पानी ।

व्योम-गंगा—*(ना०)* आकाश-गंगा ।

व्योम-चर—*(वि०)* आकाश में उड़ने या विचरने वाला । *(न०)* १. देवता । २. पक्षी । ३. बादल ।

व्योरो—*(न०)* १. विवरण । व्योरा । विगत । २. वृत्तान्त ।

व्योसाय—दे० व्यवसाय ।

व्रईक—*(वि०)* १. वीर । २. बाँका । ३. स्वाभिमानी । ४. श्रेष्ठ । दे० ब्रीख ।

व्रक—दे० वृक ।

व्रकोदर—दे० वृकोदर ।

व्रक्ख—*(न०)* वृक्ष । पेड़ । झाड़ । रूंख ।

व्रख—*(न०)* १. वृक्ष । दरख्त । झाड़ । २. बारह राशियों में से दूसरी राशि । वृष । ३. सांड़ । गोधो । ४. वर्ष । साल ।

व्रखभ—*(न०)* १. बैल । २. साँड़ । वृषभ । ३. ऋषभ । ऋषभावतार । ४. प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव । आदीश्वर ।

व्रखभ-धुज—दे० वृषभध्वज ।

व्रख-भाण—दे० व्रखभाणु ।

व्रख-भाणु—*(न०)* श्री राधा के पिता वृषभानु ।

व्रख-भाणु-जा—*(ना०)* वृषभानुजा । श्री राधा ।

व्रख-भानु-जा—दे० व्रखभाणुजा ।

व्रखा—*(ना०)* वर्षा । मेह । बिरखा ।

व्रखाकंप—*(ना०)* अग्नि । वासवे ।

व्रखी—*(न०)* वर्षा करने वाला । इन्द्र ।

व्रच्छ—*(न०)* वृक्ष । पेड़ । दरख्त । दरखत । झाड़ । रूंख ।

व्रज—*(न०)* पूर्वी राजस्थान की सीमा से लगा हुआ उत्तर-प्रदेश का एक भाग ।

मथुरा-वृंदावन के आसपास का क्षेत्र जो श्रीकृष्ण की लीलाभूमि था।

व्रजणो—*(क्रि०)* १. जाना। चलना। २. दौड़ना। भागना।

व्रज-चंद—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रजड़—*(ना०)* तलवार। खड्ग।

व्रज-देह—श्रीकृष्ण।

व्रज-नंद *(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-नाथ—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-नायक—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-नारी—दे० व्रज-वनिता।

व्रज-पति—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-बाळ—*(न०)* श्रीकृष्ण। बालकृष्ण। २. व्रज के गोप बाल।

व्रज-भाखा—दे० व्रज-भाषा।

व्रज-भाषा—*(ना०)* व्रज-प्रदेश की भाषा। मथुरा, गोकुल, आगरा आदि व्रज-प्रदेश में बोली जाने वाली एक भाषा जिसमें सूरदास, विहारी आदि अनेक कवियों ने काव्य रचनाएँ की हैं।

व्रज-भूखण—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-भूषण—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-मंडळ—*(न०)* व्रज प्रदेश। व्रज। मथुरा गोकुल के आसपास का प्रदेश।

व्रज-मोहन—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-राज—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-वनिता—*(ना०)* १. व्रज की स्त्री। २. गोपी।

व्रज-वल्लभ—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रज-वासी—*(वि०)* १. व्रज में रहने वाला। *(न०)* श्री कृष्ण।

व्रज-बिहारी—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रजाग—*(ना०)* वज्राग्नि। विद्युत्पात। बजराग।

व्रजाग्नि—दे० व्रजाग।

व्रजांगना—*(ना०)* गोपी।

व्रजेश्वर—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रजेश—*(न०)* श्रीकृष्ण।

व्रजेश्वरी—*(ना०)* श्री राधा।

व्रण—*(न०)* १. घाव। २. फोड़ा। व्रण। ३. दोष। ४. छेद। दे० वर्ण।

व्रत—*(न०)* १. नियमानुसार किया जाने वाला धार्मिक कृत्य। २. पुण्य कार्य करने का नियम। ३. प्रतिज्ञा। ४. संकल्प। करने या नहीं करने का निश्चय। ५. धार्मिक उपवास।

व्रत-धारी—*(वि०)* १. व्रत रखने वाला। व्रती। २. प्रतिज्ञा पालक। ३. उपवास करने वाला। ४. ब्रह्मचारी।

व्रतवाड़ी—*(ना०)* १. यजमान-वृत्ति—बरत-पाडी। २. ब्राह्मण का पाठ-पूजा और भिक्षावृत्ति से गुजारा करने का काम। ३. ग्राम-पुरोहितों का बारी-बारी से की जाने वाली यजमान-वृत्ति का नियम। वरत-वारी। विरत-वारी। विरत। ४. वृत्ति। जीविका। रोजी। ५. विरत की क्रिया या काम।

व्रती—*(वि०)* १. व्रत रखने वाला। २. ब्रह्मचारी।

व्रतेसरी—*(न०)* विवाह-शादी का काम कराने वाला और नेग लेने वाला गाँव पुरोहित। २. भाट, चारण, साधु, ब्राह्मण आदि जिनका बंधी हुई निश्चित वृत्ति के नेग माँगने का हक होता है।

व्रथा—*(वि०)* व्यर्थ। वृथा। निरर्थक। फजूल। *(क्रि०वि०)* भूल से।

व्रद—दे० विरुद।

व्रदाळ—दे० विरुदाळ।

व्रद्ध—दे० वृद्ध।

ब्रन—दे० व्रण ।
ब्रम—*(ना०)* कवच । वर्म ।
ब्रवणो—दे० व्रवणो ।
ब्रह—*(ना०)* विरह । वियोग ।
ब्रह्म—दे० ब्रह्म ।
ब्रहमंड—दे० ब्रह्माण्ड ।
ब्रहमा—दे० ब्रह्मा ।
ब्रहमण—दे० ब्रह्मण ।
ब्रहमाणी—दे० ब्रह्माणी ।
ब्रहमाद—दे० ब्रह्माद ।
ब्रहास—दे० ब्रह्मास ।
ब्रह्म—दे० ब्रह्म ।
ब्रह्मपुरी—दे० ब्रह्मपुरी ।
ब्रह्मांण—दे० ब्रह्मांण ।
ब्रह्माद—दे० ब्रह्माद ।
ब्रंद—दे० वृंद ।
ब्रंदारक—*(न०)* देवता । वृंदारक ।
ब्रंदावन—दे० वृंदावन ।
ब्राचड़—*(ना०)* १. अपभ्रंश भाषा का एक प्रकार । २. सिन्धी भाषा की जननी एक प्राचीन अपभ्रंश भाषा ।
ब्रात्य—*(न०)* १. संस्कार हीन । २. वर्ण-संकर । ३. वैदिक कृत्य न करने वाला सवर्ण हिन्दू ।
ब्रिखभ—दे० वृषभ ।
ब्रिथा—दे० वृथा ।
ब्रिद—*(न०)* विरुद ।
ब्रिदबंध—*(वि०)* विरुदधारी ।
ब्रिध—*(वि०)* अधिक आयु वाला । वृद्ध । बूढ़ा । डोकरो ।
ब्रीख—दे० वीख ।
ब्रीडा—*(ना०)* लज्जा । लाज ।
व्हाण—*(ना०)* १. बैल-गाड़ी । २. वाहन । सवारी ।
व्हार—दे० बाहर ।
व्हाल—*(न०)* १. प्यार । स्नेह । २. चुंबन । बोसा ।
व्हाली—*(वि०)* प्रिया । वल्लभा ।
व्हालो—*(वि०)* प्रिय । वल्लभ । बालहो । *(म०)* चुंबन । दोस्त ।
व्हियो—*(भू०क्रि०)* 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक रूप । हुआ । हो गया ।
व्ही—*(भू०क्रि०)* 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक नारी रूप । हुई । हो गई ।
व्हे—*(व० क्रि०)* १. हो जाता है । २. होता है ।
व्हेगी—*(भ०क्रि०)* 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक नारी रूप । हुई । हो गई । व्ही ।
व्हेगो—*(भू०क्रि०)* 'व्हेणो' क्रिया का भूतकालिक रूप । हुआ । हो गया । व्हियो ।
व्हेग्यो—दे० व्हेगो ।
व्हैणो—*(क्रि०)* १. सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करने वाला अति प्रचलित क्रिया शब्द । २. होना । निर्माण किया जाना । बनना । ३. कार्य का संपन्न किया जाना । सरना । ४. भुगताना । ५. भुगतना । ६. बीतना । गुजरना । दे० 'होणो' या 'होवणो' ।
व्हेतां थकां—*(अव्य०)* होते हुए ।
व्हेतां थकांई—*(अव्य०)* १. होते हुए भी । २. होते हुए ही ।
व्हेतो-थको—*(अव्य०)* होता हुआ ।
व्हेलो—*(ल०क्रि०)* 'व्हेणो' क्रिया का भविष्य कालिक रूप । होगा । होसी । होवैला ।
व्हेसी—दे० व्हेलो ।
व्है—दे० हां ।
व्हैत—*(ना०)* सवारी का ऊंट या घोड़ा । वहत ।
व्हैला—*(क्रि०भ०)* होगा । हुवैला । होवैला । होसी ।
व्होत—*(ना०)* वस्तु । चीज ।

श

श—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का तीसवां व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है। (श, ष, स, ह) चार ऊष्माक्षरों का प्रथम अक्षर।

शऊर—*(ना०)* १. समझ। बुद्धि। २. भली प्रकार काम करने की योग्यता।

शक—*(न०)* १. संदेह। शंका। भ्रम। २. तातार जाति। एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। ३. तातार देश। ४. शक-संवत्। सम्राट् शालिवाहन द्वारा सन् ७८ में प्रवर्तित संवत्।

शकट—*(न०)* १. गाड़ा। छकड़ा। २. गाड़ी।

शकमंद—*(वि०)* शकवाला। संशयग्रस्त। वहमी। **सांसाळो**।

शकरकंद—*(न०)* एक मीठा कंद। **सकरकंदी**।

शकल—*(न०)* १. मुख का भाव। २. चेहरा। ३. स्वरूप। ४. बनावट। ५. ढंग।

शक-संवत्—*(न०)* शक जाति के राजा शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित सम्वत् जो ईसवी सन् के ७८ वर्ष और विक्रम सम्वत् से १३५ वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ था। शालिवाहन सम्वत्। शक-संवत्सर।

शकाब्द—दे० शक-संवत्।

शकार—*(न०)* 'श' अक्षर।

शकुन—*(न०)* १. भावी शुभाशुभ सूचक चिन्ह। सगुन। २. किसी कार्य के आरंभ में दिखाई देने वाले शुभ या अशुभ लक्षण। ३. शुभ मुहूर्त। **सुगन। सकन। सगण**।

शकुनि—*(न०)* १. दुर्योधन का मामा। २. दुष्ट मनुष्य। ३. भिक्षु।

शकुनी—*(न०)* शकुन जानने वाला। शकुनज्ञ। **सुगनी। सवणी**।

शकुंतला—*(ना०)* १. विश्वामित्र और मेनका की पुत्री तथा राजा दुष्यंत की पत्नी। २. महाकवि कालिदास का एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक।

शक्कर—*(ना०)* १. चीनी। २. खांड।

शक्ति—*(ना०)* १. बल। सामर्थ्य। २. क्षमता। ३. प्रभाव। ४. एक बाण। ५. दुर्गा। ६. लक्ष्मी। ७. गौरी। ८. प्रकृति। माया। ९. भग। १०. अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करने वाले शाक्त कहलाते हैं। (तंत्र) ११. अधिकार। १२. तलवार। १३. बड़ा और पराक्रमी राज्य। १४. त्रिशूल।

शक्र—*(न०)* इंद्र।

शख्स—*(न०)* मनुष्य। व्यक्ति। इंसान। **भिनख। जण। जणो**।

शची—*(ना०)* १. इंद्राणी। २. बुद्धि। ३. वक्तृत्व-शक्ति।

शची-पति—*(न०)* इंद्र।

शठ—*(वि०)* १. धूर्त। २. चालाक। ३. लुच्चा। ४. मूर्ख। ५. दुष्ट।

शठता—*(ना०)* १ धूर्तता। २. चालाकी। ३. मूर्खता। ४. दुष्टता। ५. लुच्चाई।

शत—*(वि०)* सौ। *(न०)* सौ की संख्या। १००

शतक—*(न०)* १. सौ वर्ष। सौ वर्ष का समय। शताब्दी। **सइको**। २. सौ का समूह। **सैकड़ों**। ३. सौ छंद, पद

इत्यादि का संग्रह। ४. सौ की संख्या वाली वस्तु या बात।

शत-पत्र—*(न०)* १. कमल। २. मोर।

शतपथ—*(न०)* यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ।

शत-पद—*(न०)* कनखजूरा। कानसळायो।

शत-प्रतिशत—*(अव्य०)* सैकड़े सौ टका।

शतरंज—*(ना०)* एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर बत्तीस गोटियों से खेला जाता है।

शतरंजी—*(ना०)* एक बिछावन। दरी। सेतरंजी।

शतरूपा—*(ना०)* ब्रह्मा की पत्नी। मनु की माता।

शत-शीर्षा—*(न०)* वासुकि नाग की पत्नी।

शताब्दी—*(ना०)* १. सौ वर्ष। सौ वर्ष का समय। सईको। २. सौ वर्ष का उत्सव। ३. सौ वर्ष पूर्ण हो जाने पर मनाया जाने वाला उत्सव। २. शतायु-समारोह।

शतायु—*(वि०)* सौ वर्ष की आयु वाला।

शतावधानी—*(वि)* एक ही साथ सौ बातों पर ध्यान रखने वाला या याद रखने वाला।

शतावर—*(ना०)* एक वनस्पति।

शतांश—*(न०)* सौवाँ भाग या अंश।

शती—*(ना०)* १. शताब्दी। सदी। सईको। २. सैकड़ा।

शत्रु—*(न०)* दुश्मन। बैरी। दुसमण।

शत्रुघ्न—*(न०)* राम के छोटे भाई, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। *(वि०)* शत्रुओं का नाश करने वाला।

शत्रुता—*(ना०)* दुश्मनी। बैर। दुसमणी। बैरळो।

शत्रु-संहरण—*(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला। *(अव्य०)* शत्रु का नाश करने के लिये। *(न०)* शत्रु का संहार।

शत्रुंजय—*(न०)* १. सौराष्ट्र में आया हुआ एक जैन तीर्थ। २. विमलाचल पर्वत। ३. परमेश्वर। *(वि०)* शत्रु को जीतने वाला।

शनि—*(न०)* १. सौर जगत के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह। थावर। २. शनिवार।

शनिवार—*(न०)* शुक्रवार के बाद का दिन। थावर-वार।

शपथ—*(ना०)* १. सौगंध। कसम। सौगन। २. प्रतिज्ञा। प्रण।

शफाखानो—*(न०)* चिकित्सालय। अस्पताल। दवाखानो। इसपताळ।

शबनम—*(ना०)* ओस। झाकळ।

शबरी—*(ना०)* १. श्रमणा नाम की शबर जाति की एक रामभक्त स्त्री। शबरी। २. भीलनी। भीलण। भीलणी।

शब्द—*(न०)* १. ध्वनि। आवाज। २. वचन। बोल। ३. आप्त-वचन। सबद। ४. एक या एक से अधिक अक्षरों का अर्थयुक्त समुच्चय (व्या०)। ५. सार्थक ध्वनि। ६. ब्रह्म। शब्द-ब्रह्म।

शब्द-कोश—*(न०)* वह ग्रंथ जिसमें अक्षर क्रम से किसी भाषा के सभी शब्दों के अर्थ दिये हुये हों। उत्पत्ति आदि पर्यायवाची शब्दों का संग्रह-ग्रन्थ।

शब्द-ग्रह—*(न०)* कान। श्रवणेन्द्रिय।

शब्द-भंडार—*(न०)* १. शब्दों का समूह। २. शब्द-संग्रह।

शब्द-साधन—*(न०)* व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की उत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन किया गया होता है।

शब्दानुशासन—*(न०)* व्याकरण।

शब्दार्थ—*(न०)* १. शब्द का अर्थ। २. शब्द और उसका अर्थ।

शब्दालंकार—*(न०)* शब्द रचना की चमत्कृति वाला अलंकार।

शमन—*(न०)* दोष, विकार, विचार, उपद्रव आदि का दमन। २. शांति।

शमशेर—*(ना०)* तलवार।

शमी—*(ना०)* एक वृक्ष। **खेजड़ी। जाँट।**

शमी-पूजा—*(ना०)* दशहरा के दिन की जाने वाली शमी पूजा।

शयन—*(न०)* १. निद्रित होना। सोना। २. शय्या। बिछौना।

शयन-आरती—*(ना०)* ठाकुरजी की शयन समय की आरती।

शय्या—*(ना०)* १. सेज। २. बिछौना। ३. पलंग। **ढोलियो।** ४. पलंग, बिछौना इत्यादि। **सेज।**

शर—*(न०)* १. बाण। **तीर।** २. पांच की संख्या।

शरण—*(ना०)* १. आश्रय। रक्षण। २. रक्षा का स्थान। ३. घर।

शरणागत—*(वि०)* शरण में आया हुआ। **सरणाई।**

शरद—*(ना०)* १. एक ऋतु जो आश्विन और कार्तिक मास में होती है। २. ठंडी। शीत।

शरद-पूनम—*(ना०)* शरत्पूर्णिमा। आश्विन पूर्णिमा।

शरद-पूर्णिमा—दे० शरद-पूनम।

शरबत—*(न०)* मीठा ठंडा पेय पदार्थ।

शरबती—*(वि०)* १. शरबत का। २. हलके रंग का। ३. कुछ लाली लिये हुये पीले रंग में रंगा हुआ। *(न०)* लाली युक्त पीला रंग।

शरम—*(ना०)* १. लाज। शर्म। २. प्रतिष्ठा। ३. संकोच। लिहाज।

शरमा शरमी—*(अव्य०)* १. एक दूसरे से शरमा करके। २. शरमावे के कारण। लाज के कारण। **सरमासरमी।**

शरमाणो—*(क्रि०)* लज्जित होना।

शरमावणो—दे० शरमाणो।

शराब—*(न०)* मद्य। मदिरा। **सुरा। दारू।**

शराबी—*(वि०)* शराब पीने वाला। **दारूड़ियो।**

शरारत—*(न०)* १. सताने की क्रिया। २. पाजीपन। ३. दुष्टता।

शरारती—दे० सरारती।

शरीक—*(वि०)* १. कार्य में साथ देने वाला। साथी। २. भागीदार। ३. सम्मिलित। मिला हुआ।

शरीफ—*(न०)* सज्जन। भला आदमी।

शरीर—*(न०)* १. देह। तन। काया। २. २. किसी वस्तु का पूरा ढाँचा। *(वि०)* १. उपद्रवी। २. दुष्ट-प्रकृति। चंचल।

शर्त—*(ना०)* १. दाव। २. बाजी। ३. कौल। **करार।** ४. उपबन्ध। ५. पाबंदी।

शर्मा—*(न०)* १. ब्राह्मण की उपाधि। २. ब्राह्मण।

शर्मिंदो—*(वि०)* १. लजीला। शर्मिंदा। २. खिसियाना। संकुचित। लज्जित।

शर्व—*(न०)* शिव। महादेव।

शर्वरी—*(ना०)* रात। रात्रि।

शर्वाणी—*(ना०)* पार्वती।

शलाका—*(ना०)* सलाई। **सळियो।**

शव—*(न०)* १ लास। लाश। २. मुर्दा। **मुड़दो।**

शश-धर—*(न०)* चंद्रमा।

शशाँक—*(न०)* चंद्रमा।

शशि—*(न०)* चंद्रमा।

शशि-धर—*(न०)* महादेव। शिव।

शस्त्र—*(न०)* १. हथियार। आयुध। २. **औजार।**

शस्त्र-धारी—*(न०)* योद्धा। *(वि०)* शस्त्र धारण करने वाला।

शहद—(ना०) मधु।

शहतीर—(न०) लकड़ी का लंबा लट्ठा। बल्ली। **मोभ**।

शहतूत—(न०) मझोले आकार का एक वृक्ष व उसकी मीठी मंजरी। **सेतूत**। **सेतूर**।

शहनशाह—(न०) बादशाह। सम्राट। **पातसाह**।

शहनाई—(ना०) मुँह से फूंककर बजाया जाने वाला एक बाजा। नफीरी। **सुरणाई**।

शहर—(न०) नगर।

शहर-पनाह—(ना०) शहर के चारों तरफ उसके रक्षण के लिये बनी हुई दीवाल। कोट। **परकोटो**।

शहादत—(ना०) १. साक्षी। **गवाही**। २. प्रमाण। सबूत। ३. गवाह। ४. शहीदपना।

शहीद—(न०) धर्म, देश, सिद्धांत अथवा किसी सत्काम के लिए अपनी बलि देने वाला व्यक्ति।

शंकर—(न०) १. शिव। महादेव। २. आदि शंकराचार्य। (वि०) कल्याणकारी। शुभ।

शंकर-शैल—(न०) कैलास पर्वत।

शंकरा—(ना०) एक राग।

शंकराचार्य—(न०) १. अद्वैतवाद के प्रवर्तक प्रसिद्ध आचार्य। आदि शंकराचार्य। २. बुद्ध के बाद वर्णाश्रम एवं वेदधर्म के पुनः संस्थापक आचार्य। ३ उनके द्वारा स्थापित मठों के परंपरागत प्रमुख।

शंकराभरण—(ना०) एक राग।

शंकराभूषण—(न०) १. सर्प। नाग। २. भस्म। **भभूती**। **भभूत**।

शंकरी—(ना०) पार्वती।

शंका—(ना०) १. संदेह। शक। २. कल्पित भय। ३. मलमूत्र की हाजत। सका। ४. डर। भय। **संका**।

शंख—(न०) १. एक समुद्री जंतु की कड़ी खोल। एक समुद्री घोंघा जिसको फूंकने से आवाज होती है। २. सौ पद्म की संख्या।

शंखधर—(न०) विष्णु भगवान।

शंखनाद—(न०) शंख की ध्वनि। **शंख-ध्वनि**।

शंखपाणि—(न०) विष्णु।

शंखासुर—(न०) एक दैत्य जो ब्रह्मा से वेद चुरा कर समुद्र में जा छिपा था।

शंखिनी—(ना०) कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

शंपा—(ना०) १. बिजली। २. कमर। कटि। **कड़**।

शंबर—(न०) १. युद्ध। २. मछली। ३. एक दैत्य का नाम। ४. मेघ। ५. पर्वत। ६. जल।

शंबरारि—(न०) कामदेव। मदन।

शंबल—(न०) १. संबल। पाथेय। **संभाळ**। **भातो**। २. तट। किनारा।

शंबुक—(न०) शंख। घोंघा।

शंभु—(न०) शिव। महादेव।

शंभु-मेळो—(न०) १. भिन्न-भिन्न जातियों का अव्यवस्थित समूह और उसका आचार-विचार रहित खान-पान। २. ऊंच-नीच वर्ग का एक साथ एक पंगत में खाना-पीना। संभूयमेल। ३. गृहस्थी-संन्यासियों (सामियों) का मंडारा। सामियों के मृतक का मंडारा। **संभूमेळो**।

शाकंभरी—(ना०) १. दुर्गा। २. सांभर (शाकंभरी) नगर की देवी। ३. लवणामोरां की अधिष्ठात्री देवी। **सांभरा देवी**।

शाक—(न०) १. वनस्पति। २. तरकारी।

शाका—दे० शाके।

शाकाहार—(न०) अन्नाहार।

शाकाहारी—(वि०) अन्नाहारी। निरामिष भोजी।

शाके—(अव्य०) शक संवत के अनुसार।

शाक्त—*(वि०)* १. शक्ति-पूजक। २. शक्ति संबंधी। ३. शाक्त मत का अनुयायी।

शाख—*(ना०)* १. डाली। टहनी। २. वंश की शाखा। ३. जाति। ४. गवाही।

शाखा—*(ना०)* १. टहनी। डाली। २. किसी संस्था का वह अंग जो उसके अधीन तथा नियमों के अनुसार काम करता हो। ब्रांच। ३. उपांग।

शाखा-नगर—*(न०)* उप-नगर।

शाण—*(ना०)* शस्त्रों की धार तेज करने का उपकरण। सान। साण।

शादी—*(ना०)* विवाह।

शान—*(ना०)* १. तड़क-भड़क। ठाट-बाट। २. भव्यता। ३. ऐश्वर्य। ४. प्रतिष्ठा। ५. गौरव। ६. ऐंठ। ७. शाण। सान।

शानदार—*(वि०)* १. तड़क-भड़क वाला। २. ठसक वाला। ३. वैभवपूर्ण। ४. भव्य।

शाप—*(न०)* १. दूसरे के लिये क्रोध में की हुई अनिष्ठ भावना। बददुआ। २. धिक्कार।

शाबास—*(न०)* धन्य। वाह! *(अव्य०)* धन्य हो। वाह-वाह, खूब, क्या कहने, बहुत अच्छा, इत्यादि प्रशंसा सूचक उद्गार।

शाबासी—*(ना०)* १. धन्यवाद। २. वाह-वाही। ३. काम की प्रशंसा।

शायद—*(अव्य०)* कदाचित्। संभव है। कदाच। कदास।

शायर—*(न०)* १. उर्दू का कवि। २. कवि।

शायरी—*(ना०)* १. उर्दू की कविता। २. कविता।

शारदा—*(ना०)* १. सरस्वती। २. दुर्गा। ३. एक प्राचीन भारतीय लिपि।

शारदा-पीठ—*(न०)* आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित पश्चिम भारत की गद्दी या मठ। द्वारका में स्थित शंकराचार्य की गद्दी।

शारदा-लिपि—*(ना०)* एक प्राचीन भारतीय लिपि।

शार्ङ्गधर—*(न०)* १. रणथंभोर (बाद में चित्तौड़) का प्रसिद्ध विद्वान जिनकी रची हुई 'शार्ङ्गधर-पद्धति' विख्यात है। २. इसी नाम के राजस्थान के एक दूसरे विद्वान जो 'शार्ङ्गधर-संहिता' के रचियता हैं। शारंगधर। ३. विष्णु। ४. श्रीकृष्ण।

शार्दूल—*(न०)* १. सिंह। २. एक छंद।

शाल—*(ना०)* ओढ़ने का एक कीमती ऊनी वस्त्र। ऊनी चादर। दुशाला। २. साग का वृक्ष। सालर।

शाल-भंजिका—*(ना०)* १. वेश्या। पातर। २. थंभे में बनी हुई पुतली।

शालि—*(न०)* एक प्रकार का चावल। साळ।

शालिग्राम—*(न०)* गंडकी नदी में से प्राप्त होने वाली गोल काले पत्थर की बटिया जो विष्णु के प्रतीक रूप में पूजी जाती है।

शालिवाहन—*(न०)* शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा जिसने शक सम्वत चलाया था।

शालिहोत्र—*(न०)* १. घोड़ा आदि पशु चिकित्सा विज्ञान। साळोतर। २. घोड़ा।

शालिहोत्री—*(न०)* घोड़ा आदि पशुओं का चिकित्सक। (वेटेरिनेरी डॉक्टर)

शाश्वत—*(वि०)* १. सदा चलता आया हुआ। २. सदा बना रहने वाला। ३. नित्य। निरंतर। सासतो। *(न०)* १. स्वर्ग। २. अंतरिक्ष।

शाश्वती—*(ना०)* पृथ्वी।

शासक—*(न०)* १. शासन करने वाला। २. राजा। ३. हाकिम। ४. दंड करने या देने वाला।

शासन—*(न०)* १. राज्य। हुकूमत। २. राज्य के कार्यों की व्यवस्था या संचालन। ३. दंड। ४. आज्ञा। ५. राजा या राज्य की ओर से दान की हुई भूमि। सासण।

शास्त्र—*(न०)* १. सर्वसाधारण के हितार्थ विधान बताने वाला धार्मिक ग्रंथ। धर्मग्रंथ। २. किसी विषय का क्रमबद्ध समस्त ज्ञान। ३. तात्विक ज्ञान।

शास्त्रार्थ—*(न०)* १. शास्त्रों के अर्थ, विवेचन तथा सिद्धान्तों पर होने वाला वाद-विवाद। २. शास्त्रों के किसी विषय पर होने वाली बहस।

शास्त्री—*(न०)* १. शास्त्रों का ज्ञाता। २. एक उपाधि।

शाह—*(न०)* १. बादशाह। २. साहूकार का उपनाम। ३. चोर (कटाक्ष में)। *(वि०)* प्रामाणिक।

शाहजादी—*(ना०)* बादशाह की पुत्री।

शाहजादो—*(न०)* बादशाह का पुत्र।

शाह-जोग—*(वि०)* १. प्रामाणिक समझा जाने योग्य। प्रामाणिक। २. ईमानदार। ३. प्रतिष्ठित। इज्जतदार। ४. विश्वस्त। भरोसादार। ५. भला। *(अव्य०)* हुंडी लेकर आने वाला हुंडी के रुपये लेने का वास्तविक अधिकारी है—ऐसी खातिरजमा। साहजोग।

शांत—*(न०)* काव्य के नौ रसों में से एक। *(वि०)* १. जिसमें चिंता, उद्वेग, दुख आदि न हो। शांतियुक्त। २. शोरगुल से रहित। ३. निश्चल। ४. स्वस्थ। ५. मौन। ६. सौम्य। ७. उत्साह रहित। ८. बुझा हुआ। ९ मृत।

शांत-रस—*(न०)* काव्य के नौ रसों में का एक रस।

शांति—*(ना०)* १. चित्त की स्वस्थता। २. वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव। ३. नीरवता। स्तब्धता। ४. गंभीरता। ५. निश्चलता। ६. क्लेश, युद्ध आदि का अभाव। ७. धीरज। ८. खामोश। ९. विश्राम। १० निवृत्ति।

शांति-पाठ—*(न०)* शांति के लिये किया जाने वाला वेद-मंत्रों का पाठ।

शिकायत—*(ना०)* १. फरियाद। २. उलाहना। ३ चुगली। ४. भूल। दोष। ५. बीमारी।

शिकार—*(ना०)* १. मृगया। आखेट। २. वह पशु जो शिकार में मारा जाय या मारा गया हो।

शिकारी—*(न०)* शिकार करने वाला।

शिक्षा—*(ना०)* १. विद्या पढ़ने तथा कोई कला सीखने की क्रिया। २. पढ़ाई। ३. ज्ञान। ४. वेद के छः अंगों में से वह अंग जिसमें वेदों के स्वरों आदि का विवेचन होता है। एक वेदांग। ५. उच्चारण शास्त्र। ६. उपदेश। ७. शासन। ८. पाठ। ९. दंड। १०. सजा।

शिखर—*(न०)* १. पर्वत का उभरा हुआ नुकीला भाग। पहाड़ की चोटी। २. मंदिर के गुंबद का ऊंचा उठा हुआ नुकीला भाग। ३. गुंबद का ऊंचा नुकीला सिरा।

शिखरण—*(न०)* दही का बनाया जाने वाला एक मधुर भोज्य पदार्थ। श्रीखंड।

शिखरबंद—*(वि०)* शिखर वाला। जिसके ऊपर शिखर बना हुआ हो।

शिखा—*(ना०)* १. चोटी। २. कलगी। ३. दीपक की लौ। ४. आग की लपट।

शिखिवाह—*(ना०)* स्वामी कार्तिक।

शिथिल—*(वि०)* १. ढीला। २. सुस्त। ३. थका हुआ। ४. धीमा।

शिर—*(ना०)* सिर। माथा।

शिरकत—*(ना०)* १. मिलकर काम करना। २. शरीक होना। ३. मिलावट। ४. साझेदारी। साझा। भागीदारी। साझा।

शिरोमणि—*(ना०)* १. सिर पर पहनने का रत्न। २. चूड़ामणि। *(वि०)* १. सबसे उत्तम। श्रेष्ठ। २. मुख्य।

शिला—*(ना०)* १. पत्थर की पट्टी। २. पत्थर। पाषाण। भाटो

शिलाजीत—*(ना०)* पहाड़ी चट्टान का एक रसजी पौष्टिक होता है। शैल-निर्यास।

शिलालेख—*(ना०)* वह प्रस्तर खंड, जिस पर प्रशस्ति लेख खुदा हुआ हो।

शिल्प—*(ना०)* १. कला। कारीगरी। २. कला पूर्ण वस्तु। ३. साहित्य-कृति।

शिल्पकार—*(ना०)* कलाकार। शिल्पी। कारीगर।

शिव—*(ना०)* १. महादेव। परमेश्वर। २. कल्याण। मंगल। ३. कल्याणकारी।

शिव-ढाणि—*(ना०)* स्मशान। मसाण।

शिव-निर्माल्य—*(ना०)* शिवजी को अर्पण किया हुआ पदार्थ, जो ग्रहण नहीं किया जाता।

शिवपुरी—*(ना०)* १. वाराणसी। काशी। २. मेवाड़ का एकलिंगजी तीर्थ। ३. कैलासपुरी।

शिवभँडारी—*(ना०)* कुबेर।

शिवराई—*(ना०)* शिवाजी के चलाये हुये सिक्के का नाम।

शिवरात—*(ना०)* शिवरात्रि। फाल्गुन कृ० १४ की रात। महाशिव-रात्रि। इस दिन विशेष प्रकार से व्रत, उपवास और शिव पूजा की जाती है।

शिवरात्री—दे० शिवरात।

शिवलिंग—*(ना०)* १. अखिल ब्रह्मांड का एक अंडाकार चिन्ह, जिसकी ब्रह्मांड रूप में पूजा होती है। शिवजी का लिंग या पिंडी जिसकी समस्त सृष्टि की उत्पादक शक्ति के रूप से पूजा होती है। ३. शिवजी का लिंग स्वरूपी प्रतीक।

शिव-लोक—*(ना०)* कैलास।

शिव-सखा—*(ना०)* कुबेर।

शिवा—*(ना०)* पार्वती।

शिवाजी—*(ना०)* भोंसले वंशीय सुविख्यात स्वाधीन महाराष्ट्र राज्य के प्रतिष्ठाता छत्रपति शिवाजी महाराज।

शिवालय—*(ना०)* शिवजी का मंदिर। सिवालो।

शिवालो—(ना०) शिवजी का मंदिर। शिवालय।

शिविका—*(ना०)* डोली। पालकी।

शिविर—*(ना०)* १. डेरा। २. सेना का डेरा। छावनी।

शिशिर—*(ना०)* माघ और फाल्गुन मास की ठंडी ऋतु। २. शीतकाल।

शिशु—*(ना०)* बालक।

शिशुपाल—*(ना०)* चेदि देश का राजा जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था।

शिष्ट—*(वि०)* १. सुशिक्षित। विद्वान। २. योग्य। लायक। ३. अच्छे स्वभाव, आचरण और व्यवहार वाला। ४. सभ्य। ५. धर्मशील। ६. शांत। ७. श्रेष्ठ। ८ आज्ञाकारी। ९. भद्र। *(ना०)* शिष्ट पुरुष।

शिष्टाचार—*(न०)* १. शिष्ट व्यवहार। २. औपचारिक भद्र व्यवहार। ३. आने वाले का आदर सम्मान। अतिथि-सत्कार।

शिष्य—*(न०)* १. विद्यार्थी। २. चेला। ३. वह जिसे किसी ने पढ़ाया हो।

शीघ्र—*(अव्य०)* १. जल्दी से। झटपट। २. जल्दी। त्वरा से।

शीघ्र-धाव—*(न०)* हरिन। मृग। **हिरणियो।**

शीत—*(न०)* ठंड। सरदी। *(वि०)* ठंडा।

शीतल—*(वि०)* १. ठंडा। २. शांत।

शीतलता—*(न०)* १. शीतल होने का गुण, धर्म, भाव या अवस्था। २. ठंडक। ३. जड़ता।

शीतला—*(न०)* १. चेचक रोग की देवी। **सीतळा।** २. चेचक की बीमारी।

शीतला-वाहन—*(न०)* गदहा। **गधो। खर। गधेड़ो।**

शीतला-सातम—*(न०)* १. चैत्र वदी सातम। २. उस दिन मनाया जाने वाला शीतला का त्यौहार और मेला। शीतला-सप्तमी।

शीताभ—*(न०)* चंद्रमा।

शीतांशु—*(न०)* चंद्रमा।

शीरा—*(न०)* १. हलुवा। **सीरो।** २. चाशनी।

शीर्ष—*(न०)* १. सबसे ऊपरी सिरा। शिखर। २. सिर। **माथो।**

शीर्षक—*(न०)* लेखों आदि के ऊपर लेख का परिचयात्मक नाम। प्रकरण, लेख इत्यादि के ऊपर शुरू में दिया जाने वाला नाम। **मथारो।** हैडिंग।

शील—*(न०)* १. उत्तम स्वभाव व आचरण। २. संकोच। ३. ब्रह्मचर्य। ४. स्त्री की पवित्रता। सतीत्व। ५. सात्विकता। ६. कुलीनता।

शील-भंग—*(न०)* ब्रह्मचर्य या सतीत्व का नष्ट होना।

शीलवान—*(वि०)* १. उत्तम शील वाला। २. सदाचारी। ३. ब्रह्मचारी।

शीलवंती—*(वि०)* १. उत्तम शील वाली। २. सदाचारिणी। ३. ब्रह्मचारिणी। ४. सती।

शीलव्रत—*(न०)* १. ब्रह्मचर्य पालन करने का व्रत। ब्रह्मचर्य। २. संयम।

शीश—*(न०)* माथा। सिर। **सीस। माथो।**

शीशफूल—*(न०)* स्त्रियों का एक सिरोभूषण। **बोर। रखड़ी।**

शीशी—*(न०)* औषधि आदि डालने का कांच का एक लंबोतरा पात्र।

शीशो—*(न०)* १. बड़ी शीशी। कांच। आईना। दर्पण। **काच।** २. एक धातु। सीसा।

शुक—*(न०)* १. तोता। **सूवटो। सुओ।** २. शुकदेव मुनि।

शुकदेव—*(न०)* भागवत कथाकार श्री वेदव्यास के पुत्र श्री शुकदेव मुनि।

शुक्तिज—*(न०)* मोती।

शुक्र—*(न०)* १. एक ग्रह। २. शुक्रवार। ३ वीर्य। ४. पौरुष। बल। ४. आभार। उपकार। ५. सद्भाग्य।

शुक्रवार—*(न०)* गुरुवार के बाद का दिन।

शुक्राचार्य—*(न०)* १. दैत्यों के गुरु का नाम। २. काना मनुष्य। **काणो मिनख।** (व्यंग्य में)

शुक्रिया—*(न०)* धन्यवाद। आभार।

शुक्ल—*(वि०)* १. सफेद । २. उज्वल । ३. सात्विक । *(न०)* १. एक ब्राह्मण कुल २. ब्राह्मणों की एक अल्ल है । ३. चांदी । ४. नवनीत । मक्खन । माखन । ५. सुदी (पक्ष) ।

शुक्ल-पक्ष—*(न०)* अमावस के बाद की प्रतिपदा से पूनम तक के पंद्रह दिन । सुदी पक्ष । अजवालियो-पख ।

शुचि—*(वि०)* १. पवित्र । २. स्वच्छ । ३. उज्वल । ४. निष्पाप । ५. सच्चा । *(न०)* १. अग्नि । २. ग्रीष्म ।

शुतुर—*(न०)* ऊंट ।

शुतुर-मुर्ग—*(न०)* एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन और टाँगे ऊंट के समान लम्बी होती हैं । उष्ट्र-पक्षी । उष्ट्र-ग्रीव ।

शुतुर-सवार—*(न०)* ऊंट-सवार । उष्ट्रारोही । ओठी । ओठीड़ो ।

शुद्ध—*(वि०)* १. स्वच्छ । २. पवित्र । ३. दोष रहित । ४. बना मिलावट का । खालिस । चोखो । ५. ठीक । सही ।

शुद्धता—दे० शुद्धि सं. १ और २.

शुद्धात्मा—*(न०)* १. पवित्र पुरुष । २. शिव ।

शुद्धाद्वैत—*(न०)* श्री वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित सम्प्रदाय पुष्टि-मार्ग ।

शुद्धापह्नुति—*(न०)* एक काव्यालंकार ।

शुद्धाशुद्ध—*(वि०)* शुद्ध और अशुद्ध ।

शुद्धि—*(ना०)* १. पवित्रता । शुद्धता । चोखाई । २. स्वच्छता । ३. प्रायश्चित करके पवित्र होने की क्रिया । ४. धर्मान्तर किये हुये को धार्मिक क्रिया करवा कर वापिस अपने धर्म में लेने या आने की विधि । ५. धर्म भ्रष्ट हो गया हो उसे विधि पूर्वक अपने असल धर्म में लाना ।

शुद्धि-पत्र—*(न०)* पुस्तक के अन्त में लगने वाला पुस्तक में रह गई अशुद्धियों का शुद्ध रूप दर्शाने वाला पत्र ।

शुद्धिकरण—*(न०)* अशुद्धि को शुद्ध करना । शुद्ध करने की क्रिया ।

शुद्धोदन—*(न०)* भगवान बुद्ध के पिता का नाम ।

शुभ—*(वि०)* १. मांगलिक । २. मंगलप्रद । कल्याणकारी । ३. अच्छा । भला । *(न०)* १. कल्याण । आनंद । २. शून्य । पूर्ण । बिंदी । मींडी । सुन । सुभ ।

शुभ-ओपमा-लायक—*(वि०)* 'शुभ उपमाओं के लायक' इस आशय का पत्र में लिखा जाने वाला एक शिष्टाचारिक पद । (पारंपरिक पत्र-लेखन-पद्धति ।)

शुभ-चरिता—*(वि०)* पतिव्रता ।

शुभमस्तु—*(अव्य०पद)* १. 'भला हो' ऐसा आशीर्वाद । २. प्रायः हस्तलिखित ग्रंथों के अंत में लिखा जाने वाला आशीर्वादात्मक मंगल-पद । कल्याणमस्तु ।

शुभस्थाने—*(अव्य०)* प्राचीन पत्र लेखन परिपाटी के अनुसार ग्राम नाम लिखने के बाद उसके विशेषण रूप में लिखा जाने वाला एक अव्यय पद । 'जो शुभ स्थान है', इस भाव को बताने वाला एक पारिभाषिक पद ।

शुभारंभ—*(न०)* शुभ काम का आरंभ ।

शुभाशिष—दे० शुभाशीर्वाद ।

शुभाशीर्वाद—*(न०)* 'भला हो' ऐसा आशीर्वाद ।

शुभ्र—*(वि०)* १. उज्ज्वल । २. श्वेत ।

शुमार—*(न०)* १. गिनती । २. हिसाब । ३. अनुमान । अन्दाज ।

शुरुआत—*(ना०)* आरम्भ । पहल ।

शुरू—*(न०)* १. प्रारम्भ । आरंभ । २. आदि ।

शुश्रूषा—*(ना०)* १. सेवा । टहल । २. रोगी की परिचर्या ।

शुंग—*(न०)* एक प्राचीन राजवंश जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र था ।

शूकर—*(न०)* सूअर ।

शूकरी—*(ना०)* सूअर की मादा ।

शूद्र—*(न०)* १. आर्यों के चार वर्णों का चौथा वर्ण । २. चौथे वर्ण का पुरुष । ३. दास ।

शूद्रा—दे० शूद्राणी ।

शूद्राणी—*(ना०)* १. शूद्र की पत्नी । २. शूद्र जाति की स्त्री । शूद्रा ।

शून्य *(न०)* १. बिन्दु । २. अभाव । ३. खाली जगह । ४. ब्रह्म । ५. ईश्वर । ६. आकाश । *(वि०)* १. खाली । कुछ नहीं । २. बिंदाकार । ३. असत् ।

शून्य-शिखर—*(न०)* १. निर्विकल्प दशा । २. समाधि अवस्था ।

शूर—*(वि०)* बहादुर । पराक्रमी । *(न०)* योद्धा ।

शूरवीर—*(वि०)* बहादुर । वीर । *(न०)* बड़ा योद्धा । सूरमो ।

शूर्पणखा—दे० सूरपणखा ।

शूल—*(न०)* १. एक शस्त्र । २. काँटा । ३. त्रिशूल । ४. वायु के प्रकोप से होने वाली वेदना । ५. पेट का दर्द । *(ना०)* बबूल का लंबा कांटा । सूळ ।

शृगाल—*(न०)* सियार । गीदड़ । सियाळियो ।

शृंगार—*(न०)* १. शरीर पर वस्त्राभूषणों को धारण करना । सणगार । २. वह जिससे किसी वस्तु की शोभा बढ़े । ३. सजावट । साज-सज्जा । ४. साहित्य के नौ रसों में से एक । (काव्य)

शृंगारी—*(वि०)* १. शौकीन । छैला । २. नखरों वाला । ३. कामी । ४. शृंगार संबंधी । ५. शृंगार वाली । *(ना०)* सुन्दर स्त्री ।

शृंगी—*(न०)* १. पर्वत । २. वृक्ष । ३. सींगवाला पशु । ४. सींग का बना बाजा । रणसींगो । ५. शिव । ६. एक ऋषि । ७. स्वर्ण । सोना । ८. सींगिया विष । (वि०) १. सींगवाला । २. शिखर वाला ।

शृंगी ऋषि—*(न०)* परीक्षित को सातवें दिन सर्प काटने से मृत्यु हो जाने का श्राप देने वाले ऋषि ।

शेख—*(न०)* १. मुसलमानों में एक जाति । २. शेख जाति का मनुष्य ।

शेखर—*(न०)* १. मुकुट । २. शिखर । सिरा । *(वि०)* श्रेष्ठ ।

शेखावाटी—*(ना०)* शेखावत, कछवाहों के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान का एक प्रदेश जो जयपुर के उत्तर-पश्चिम में आया हुआ है ।

शेखावत—*(न०)* १. कछवाहा मोकल के पुत्र शेखा के नाम से प्रसिद्ध कछवाहा राजपूत जाति का एक अवटंक या शाखा । २. शेखावत राजपूत ।

शेखावतजी—*(ना०)* शेखावत-राजपूत की पुत्री का उसकी ससुराल में सम्मान-सूचक संबोधन या नाम ।

शेखी—*(ना०)* १. डींग । २. अकड़ । ३. घमंड । ४. बढ़-बढ़ कर बातें करना ।

शेर—*(न०)* १. बाघ । सिंह । २. उर्दू-कविता ।

शेरवानी—*(ना०)* घुटनों तक लंबा बंद गले का कोट ।

शेष—*(वि०)* १. बचा हुआ । २. बाकी । *(न०)* १. दिग्गज । २. शेष-नाग । ३. शेष भाग । ४. भागाकार में बढ़ती संख्या । ४. अन्त । समाप्ति ।

शेष-नाग—*(न०)* पाताल में रहने वाला एक नाग । नागराज ।

शैतान—*(न०)* १. गलत राह पर ले जाने वाला कल्पित दुष्ट देव । २. ईश्वर

विरोधी देव । ३. दुष्ट देव । ४. दुष्ट देव-योनि । ५. भूत, प्रेत, जिन इत्यादि ६. दुराचारी दुष्ट व्यक्ति । ७. काम, क्रोध इत्यादि दुर्वृत्तियाँ । *(वि०)* १. उच्छृंखल । निरंकुश । २. शरारती ।

शैतानी—*(ना०)* १. पाजीपन । दुष्टता । २. शरारत । ३. दुष्ट आचरण । ४. तंग करना । सताना । *(वि)* १. शैतान का । २. शैतान से संबंधित ।

शैल—*(न०)* पर्वत ।

शैल-कन्या—*(ना०)* १. पार्वती २. दुर्गा । ३. गंगा ।

शैल-कुमारी—दे० शैल-कन्या ।

शैल-जा—दे० शैल-कन्या ।

शैल-सुता—दे० शैल-कन्या ।

शैली—*(ना०)* १. परिपाटी । प्रणाली । २. ढंग । तरीका । ३. कला, साहित्य, लेखन, भाषण, पहनावा इत्यादि की विशिष्ट रीति ।

शैव—*(न०)* १. शिव-भक्त । २. शिव-संप्रदाय । *(वि०)* शिव संबंधी ।

शोक—*(न०)* १. दुख । संताप । २. दिलगीरी । ३. किसी प्रिय अथवा आत्मीय के मरने का संताप । ४. मरणोपरान्त शोक व्यक्त करने का लोकाचार । मरणोत्तर शोक-प्रथा । सोग ।

शोण—*(न०)* १. रक्त । खून । लोही । २. लाल रंग । ३. लाली ।

शोणित—*(न०)* १. रक्त । लोही ।

शोध—*(ना०)* १. खोज । तपास । जाँच । २. शुद्ध करने वाला संस्कार । ३. दुरुस्ती । शुद्धि । ४. अनुसंधान ।

शोध-कर्ता—*(वि०)* १. शोध करने वाला । ढूंढने वाला । २. शुद्ध करने वाला ।

शोध-निबंध—*(न०)* १. विस्तृत गवेषणा-पूर्ण लेख । २. पी-एच.डी. की डिगरी के लिए यूनिवर्सिटी द्वारा स्वीकृत विषय पर शोधार्थी द्वारा लिखा जाने वाला शोध-पूर्ण महानिबंध ।

शोभा—*(ना०)* १. कीर्ति । २. प्रतिष्ठा । आबरू । ३. सुन्दरता । ४. कांति चमक । ५. सजावट ।

शोभायमान—*(वि०)* शोभा वाला । सुन्दर ।

शोर—*(न०)* १. कोलाहल । होहल्ला । धूम । २. जोर की आवाज ।

शोर-गुल—*(न०)* कोलाहल । हल्ला-गुल्ला ।

शोषण—*(न०)* १. अधीनस्थ या दुर्बल के परिश्रम, आय आदि से अनुचित लाभ उठाना । २. किसी को विवश करके उससे उठाया जाने वाला लाभ । ३. सोखना । ४. सुखाना ।

शौच—*(न०)* १. स्वच्छता । पवित्रता । २. मलोत्सर्ग । झाड़ ।

शौनक—*(न०)* नैमिषारण्य ऋषिकुल-तीर्थ के कुलपति और ऋग्वेद प्रतिशाख्य के रचयिता ऋषि ।

शौरसेनी—*(ना०)* शौरसेन (व्रज-मंडल) प्रदेश की प्राचीन अपभ्रंश भाषा । नागर अपभ्रंश । *(वि०)* शूरसेन सम्बन्धी ।

श्मशान—*(न०)* मरघट । समसान । मसाण । जीराण ।

श्याम—*(न०)* श्रीकृष्ण । *(वि०)* काला । श्याह । सांवला । सांवळो ।

श्याम-सुन्दर—*(न०)* श्रीकृष्ण ।

श्यामा—*(ना०)* १. श्रीराधा । २. कालिका । ३. सांवले रंग की गाय । ४. कस्तूरी । ५. रात । ६. यमुना । ७. तुलसी । ८. छाया । ९. सांवा अन्न । एक फलाहार ।

श्रद्धा—*(ना०)* १. आस्था। ईश्वर, धर्म, गुरू अथवा बड़ों के प्रति पूज्य भाव। सरधा। २. विश्वास। ३. आदर। दे० सरधा।

श्रद्धालु—*(वि०)* १. जिसके मन में श्रद्धा हो। सरधाळू। २. विश्वासी।

श्रद्धावान्—*(वि०)* १. श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु। सरधावान। ३. शक्तिशाली। ४. धर्मनिष्ठ। *(न०)* श्रद्धालु पुरुष।

श्रम—*(न०)* १. परिश्रम। मेहनत। २. थकावट। थाकेलो। ३. मजदूरी। मजूरी।

श्रम-जीवी—*(न०)* मजदूर। मजूर।

श्रमण—*(न०)* बौद्ध अथवा जैन साधु।

श्रव—*(न०)* कान। कर्ण।

श्रवण—*(न०)* १. कान। २. वेदाध्ययन। ३. बाईसवाँ नक्षत्र। ४. अन्धे माता-पिता को कावड़ में बिठा कर तीर्थ यात्रा कराने वाला अंधक मुनि का पुत्र। ५. टपकना। रिसना। ६. सुनने की क्रिया या भाव।

श्राद्ध—*(न०)* १. मृतक के पीछे किया जाने वाला तर्पण आदि धार्मिक कृत्य। सराध। २. पितृओं की तृप्ति के लिये श्रद्धापूर्वक कराई जाने वाली तर्पण क्रिया। ३. पितरों की मृत्यु तिथि के दिन आश्विन कृष्ण पक्ष में कराया जाने वाला तर्पण, भोजनादि।

श्रावक—*(न०)* १. बौद्ध। २. जैन गृहस्थ। जैनी। ३. नास्तिक। ४. श्रोता। ५. शिष्य। चेलो।

श्रावण—*(न०)* विक्रम संवत का पाँचवाँ महीना। आषाढ़ और भादों के बीच का महीना। सावण। सरावण।

श्रावणी—*(ना०)* श्रावण मास की पूर्णिमा। रक्षाबन्धन का दिन। राखड़ी-पूनम।

श्राविका—*(ना०)* १. श्रावक की स्त्री। २. जैन स्त्री। ३. शिष्या। चेली। ४. बौद्ध स्त्री।

श्री—*(ना०)* १. लक्ष्मी। २. सरस्वती। ३. सम्पत्ति। धन। ४. वृद्धि। ५. विभूति। ६. शोभा। ७. चंदन। ८. एक वैष्णव सम्प्रदाय। ९. वैष्णवों का तिलक। खड़ा तिलक। १०. ऊर्ध्वपुण्ड्र की तीन रेखाओं में की बीच की खड़ी रेखा। श्रीमुद्रा। ११. एक राग। १२. एक आदर सूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले लिखा या बोला जाता है। १३. लिखने के पूर्व शीर्ष में लिखा जाने वाला एक मंगल शब्द। १४. ऐश्वर्य। १५. स्त्री। नारी। *(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. शुभ। ३. सुन्दर। ४. मांगलिक।

श्री ऋषभदेव—*(न०)* १. विष्णु का एक अवतार। १. जैनियों के प्रथम तीर्थंकर। आदीश्वर।

श्रीकंठ—*(न०)* शिव। महादेव।

श्रीकंत—दे० श्रीकांत।

श्रीकार—*(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. सुन्दर। उत्तम। ३ लाभदायक। *(न०)* लक्ष्मी स्वरूप। १. 'श्री' शब्द। २. शुभ काम। मंगल कार्य।

श्रीकांत—*(न०)* विष्णु।

श्रीकृष्ण *(न०)* विष्णु का सोलह कला का एक पूर्णअवतार। वासुदेव।

श्रीकृष्णार्पण—*(अव्य०)* सब कुछ भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित।

श्रीकोलायतजी—*(न०)* बीकानेर के उत्तर-पश्चिम में ५० किलो मीटर दूर श्री कपिल मुनि के तपस्या स्थान का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान।

श्रीखंड—*(न०)* १. चंदन। २. शिखरण।

श्रीगणेश—*(न०)* १. आरम्भ । शुरूआत । शुभारम्भ । २. श्रीगणपति ।

श्रीगणेशाय नमः—*(अव्य०)* १. श्री गणेश को नमस्कार (लेख के प्रारम्भ में मंगलार्थ) । २. शुभारम्भ ।

श्रीजी—*(न०)* १. ईश्वर । परमात्मा । २. विष्णु । ३. राजा के लिये आदर सूचक शब्द या सम्बोधन । ४. जिसके नाम के पूर्व 'श्री' और अन्त में 'जी' लिखे जायें या सम्बोधन किये जायें, वह आदरणीय पुरुष ।

श्रीठाकुरजी प्रीत्यर्थे—*(अव्यं)* दानपत्र या शिलालेखों में प्रयुक्त भूमिदान सम्बन्धी एक पद । श्री ठाकुरजी (श्रीकृष्ण) की प्रसन्नता के निमित्त ।

श्रीजी शरण—(पद०) १. देहावसान । मृत्यु । स्वर्गवास । २. ईश्वर की शरण ।

श्रीजी शरण होणो—*(मुहा०)* देहावसान होना । मरना । मरणो ।

श्रीजी साहेब—दे० श्रीजी सं. ३

श्रीजी साहेबा—*(अव्य०)* रानी के लिए आदर सूचक शब्द या संबोधन ।

श्रीजी साहेबाँ—दे० श्रीजी सं. ३ ।

श्रीद—*(न०)* कुबेर ।

श्रीधर—*(न०)* १. विष्णु । २. श्रीकृष्ण ।

श्रीधराज—*(न०)* श्रीराजाधिराज ।

श्रीनाथजी—*(न०)* १. राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थस्थान नाथद्वारा के अधिष्ठाता भगवान श्रीनाथजी । २. एक वैष्णव यात्रा धाम । ३. विष्णु ।

श्रीपति—*(न०)* १. लक्ष्मीपति । विष्णु । २. धनवान ।

श्रीमँ—*(अव्य०)* नाम के पहिले मान वाचक पूर्वग (धन, धान्य, पशु, पुत्र और दीर्घायु—इन पांचों की शोभा और सम्पन्नता) ।

श्रीपूज—*(न०)* १. श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय के धर्माचार्य । २. उक्त उपाधि ।

श्रीफळ—*(न०)* १. नारियल । नारेल । नाळेर । २. आँवला ।

श्रीबंधु—*(न०)* चंद्रमा ।

श्रीभणंकानाथ—*(न०)* महादेव । रुद्र ।

श्रीभाष्य—*(न०)* ब्रह्मसूत्र पर श्रीरामानुजाचार्य का भाष्य ।

श्रीमती—*(ना०)* १. 'श्रीमान' का 'स्त्रीलिंग । २. सौभाग्यवती स्त्री के नाम के पहिले लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द । ३. पत्नी वाचक शब्द । ४. लक्ष्मी ।

श्रीमंडल—*(न०)* १. आभा । कान्ति । २. एक वाद्य । ३. भा-मंडल । प्रभा-मंडल । किरणियो ।

श्रीमंत—*(न०)* १. किसी फर्म के नाम के पहले लिखा जाने वाला शब्द (पत्रादि में) । मेसर्स । २. श्रीमान । *(वि०)* १. श्रीमान । २. धनवान । तवंगर ।

श्रीमाताजी—*(ना०)* १. दुर्गा । २. शक्ति । ३. महामाया । ४. लक्ष्मीजी । ५. सरस्वती । ६. गायत्री । ७. पार्वती । ८. जन्मदात्री ।

श्रीमान्—*(न०)* पुरुष नाम के पहले लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द । *(वि०)* धनवान ।

श्रीमाल—*(न०)* मारवाड़ के इतिहास प्रसिद्ध नगर भीनमाल का प्राचीन नाम । भिल्लमाल ।

श्रीमालण—*(ना०)* १. श्रीमाली जाति की स्त्री । २. श्रीमाली की पत्नी ।

श्रीमाल-पुराण—*(न०)* श्रीमाल नगर व यहां से निष्काशित इसके नाम पर बनी जातियों का इतिहास-ग्रंथ ।

श्रीमाली—*(न०)* श्रीमाली ब्राह्मण, बनिया या स्वर्णकार । *(वि०)* १. श्रीमाल नगर से संबंधित । २. श्रीमाल नगर का ।

श्रीमाली ब्राह्मण—*(न०)* १. श्रीमाल (भीनमाल) नगर से उत्पन्न या उद्गत एक ब्राह्मण जाति २. उक्त जाति का व्यक्ति ।

श्रीमाळी सोनी—*(न०)* १. इस नाम की एक ब्राह्मण जाति २. एक बनिया जाति । २. इन जातियों का व्यक्ति ।

श्रीमुख—*(न०)* १. वेद । २. सूर्य । ३. माता-पिता, गुरु, और राजा आदि गुरूजनों के बोलने, आज्ञा करने तथा उनसे बातचीत करने के समय उनके लिये 'आप', 'उन, या 'स्वमुख' शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त किया जाने वाला आदर सूचक शब्द । ४. भव्य और सुन्दर मुख । ५. पूज्य और पुण्यात्मा पुरुष का मुख ।

श्रीमुखसूं—*(अव्य०)* गुरूजनों से बोलने या कहने-करने के सम्बन्ध में उत्तर देते समय कहा जाने वाला 'तुमने', 'आपने' या 'उन्होंने' अर्थ वाला) एक आदर सूचक पद ।

श्रीयुत—*(वि०)* पुरुष नाम के पूर्व लिखा जाने वाला एक आदर सूचक विशेषण ।

श्रीरस्तु—*(अव्य०)* १. हस्तलिखित ग्रंथों के अन्त में लिखा जाने वाला एक मंगल पद । २. 'समृद्धि बढ़े' ऐसा आशीर्वादात्मक पद ।

श्रीरंग—*(न०)* विष्णु ।

श्रीरंगजी—*(न०)* तामिलनाडु में कावेरी नदी के मध्य द्वीप रूप में बना शेषशायी विष्णु भगवान का सबसे बड़े और भव्य मंदिर वाला बहुत प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान ।

श्रीराम—*(न०)* १. विष्णु का श्रीरामचंद्र के रूप में एक पूर्ण कला अवतार । २. दशरथनंदन राम ।

श्रीलंका—*(न०)* १. भारत के दक्षिण का एक द्वीप । लंका द्वीप ।

श्रीवत्स—*(न०)* १. विष्णु । २. विष्णु के वक्षस्थल का चिन्ह ।

श्रीवृक्ष—*(न०)* पीपल वृक्ष । अश्वत्थ ।

श्रीसरूप—*(न०)* श्री बालकृष्ण की मूर्ति । श्रीस्वरूप ।

श्रीसंघ—*(न०)* जैन ओसवालों के न्याति संगठन का नाम ।

श्रीसंप्रदाय—*(न०)* श्रीरामानुजाचार्य का वैष्णव सम्प्रदाय ।

श्रीसुत—*(न०)* कामदेव ।

श्रीहत्थ—*(अव्य०)* १. श्रीहस्त । २. आपके हाथों से । आपके द्वारा ।

श्रीहस्त—दे० श्रीहस्थ ।

श्रुत—*(वि०)* सुना हुआ । *(न०)* १. श्रुत ज्ञान । २. शास्त्र ज्ञान ।

श्रुत-लेखन—*(न०)* सुनकर लिखने में आया हुआ अनुलेखन । डिक्टेशन ।

श्रुत-साहित्य—*(न०)* १. अलिखित साहित्य । २. लोगों की जबान पर रहा हुआ काव्य, कथा, वार्ता, कहानी इत्यादि । ३. सुना हुआ साहित्य । श्रवण-साहित्य ।

श्रुति—*(न०)* १. सृष्टि के आरम्भ से चलता आ रहा पवित्र ज्ञान । वेद । २. कान । कर्ण । ३. चार की संख्या । ४. ध्वनि । ५. नाद का एक भेद ।

श्रुति-स्मृति—*(न०)* १. वेदादि धर्मशास्त्र। २. वेद और स्मृति शास्त्र।

श्रेणी—*(ना०)* १. दरजा। वर्ग। क्लास। २. पँक्ति। ३. क्रम। परम्परा।

श्रेय—*(न०)* १. मोक्ष। २. शुभ। कल्याण। ३. यश। ४. पुण्य।

श्रेष्ठ—*(वि०)* सर्वोत्तम। उत्कृष्ट।

श्रोण—*(न०)* रक्त। लोही।

श्रोणी—*(न०)* नितम्ब। डूंगा।

श्रोता—*(न०)* १. कथा, व्याख्यान सुनने वाला व्यक्ति। २. सुनने वाला।

श्रोत्र—*(न०)* कान। कर्ण।

श्लोक—*(न०)* १. संस्कृत का पद्य। २. संस्कृत का अनुष्टुप छंद। ३. यश। ४. स्तुति। श्लोक। ५. चार चरण का पद।

श्वपच—*(न०)* १. चांडाल। २. भंगी। महतर।

श्वान—*(न०)* कुत्ता। कूतरो।

श्वास—*(न०)* १. नाक के द्वारा वायु लेने छोड़ने की क्रिया। सांस। २. दमा रोग।

श्वेत—*(वि०)* सफेद। धौळो।

श्वेताम्बर—*(न०)* एक जैन सम्प्रदाय। २. श्वेत वस्त्र।

ष

ष—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का इकतीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। प्राचीन लिखावट में इसका 'ख' के स्थान में भी प्रयोग होता था। यजुर्वेद काल से (यजुर्वेद में) इसका उच्चारण 'ख' होने लग गया था। ३. प्राचीन राजस्थानी वर्णमाला का 'ख' वर्ण। उच्चारण भेद के कारण इसका प्रयोग दंत्य 'स' के रूप में भी कहीं-कहीं होता है।

षट—*(वि०)* छः (गिनती में) *(न०)* छः की संख्या। '६'। खट।

षट-कर्म—*(न०)* १. अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन दान और प्रतिग्रह—ये ब्राह्मण के छः कर्म। २. स्नान, संध्या, तर्पण पूजन, जप और होम—गृहस्थ ये के विहित कर्म। ३. जारण, मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तंभन और विध्वंसन—ये छः तंत्र-कर्म। ४. धौती, वस्ति, नेती, नौली, त्राटक और कपाल भाति—ये छः यौगिक क्रियाएँ। खटकरम। खटकम।

षट-कोण—*(न०)* छः कोणों वाली आकृति। खटकोण।

षट-चरण—*(न०)* भ्रमर। भौंरा। भमरो।

षट-दर्शन—*(न०)* सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त। वैदिक तत्व-ज्ञान के ये छः शास्त्र। षड्शास्त्र। भारतीय दर्शनशास्त्र।

षट-पद—*(ना०)* भौंरा। भमरो।

षट-पदी—*(ना०)* छप्पय छंद। खटपदी।

षट-शास्त्र—देo षट-दर्शन।

षड्-ऋतु—*(ना०)* वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर ये छः ऋतुएँ।

षड्ज—*(न०)* नाक, कंठ, उर, तालु, जीभ और दाँतों के सम्मिलित प्रयत्नों से

उच्चरित संगीत का पहला 'सा' स्वर। खरज।

षड्यन्त्र—*(न०)* १. किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की जाने वाली कार्रवाई। भीतरी चाल। २. कपटपूर्ण आयोजन। **कावतरो**।

षड्-रस—*(न०)* १. मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल, नामक जिव्हा के रस। २. स्वाद के छः प्रकार।

षड्राग—*(ना०)* १. 'भैरव' मलार, श्री, हिंडोल, मालव और दीपक-संगीत के ये छः राग। २. अनबन। झगड़ा-बखेड़ा। **अणबणाव, कजियो, कड़ाकूट, खटराग**।

षड्रिपु—*(न०)* मनुष्य के छः आंतर शत्रु—'काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर'। घातक मनोविकार।

षडंग—*(न०)* १. 'शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष, नामक छः वेदांग। २. दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़ नामक शरीर के छः अंग। **खडंग**।

षष्ठी—*(ना०)* १. पखवाड़े की छठी तिथि। २. बालक के जन्म से छठे दिन का उत्सव। छठी। ३. सम्बन्ध कारक का नाम। (व्या०)।

षोडश—*(वि०)* सोलह। *(न०)* सोलह की संख्या। '१६'

षोडश-कला—*(ना०)* अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्ण तथा पूर्णामृता नामक चन्द्रमा की सोलह कलाएँ।

षोडश-दान—*(न०)* भूमि, आसन, जल, वस्त्र, अन्न, दीपक, पान, छत्र, सुगन्धित द्रव्य, पुष्पमाला, फल, शास्त्र, खड़ाऊ, गौ, सोना और चाँदी इन सोलह वस्तुओं का एक साथ दिया जाने वाला दान।

षोडश-शृंगार—*(न०)* उबटन, स्नान, वस्त्र-धारण, केश-भूषा, अंजन, सिंदूर, महावर, भाल-तिलक, ठोडी पर तिल, मेंहदी, आभूषण-धारण, पुष्प-सज्जा, सुगन्धित द्रव्य-प्रयोग, होठ रंगना। मिस्सी लगाना, पान खाना इत्यादि सोलह शृंगार-प्रकार।

षोडश-संस्कार—*(न०)* हिन्दू सवर्णों के लिये विहित गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के—'गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास तथा अंत्येष्टि' नामक सोलह संस्कार।

षोडशी—*(ना०)* सोलह वर्ष की युवती।

षोडशोपचार—*(न०)* देव पूजा के सोलह उपचार—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदन।

स

स—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा का ३२ वाँ व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दंत्य है। नागरी लिपि में ऊष्माक्षरों में का तीसरा अक्षर। सकार।

स—एक पूर्वग (उपसर्ग)। शब्द के पहले लग कर उसकी विशेषता प्रकट करने वाला उपसर्ग। *(सर्व०)* वह। वो। हेवो। *(न०)* संगीत में षड़ज स्वर का सूचक अक्षर।

सइ—दे० सई।

सइकड़ो—*(न०)* १. सौ की संख्या। २. सौ वर्षों का समूह। ३. सौ वर्षों का समय।

सइको—*(न०)* १. सदी। शती। सौ वर्षों का समूह। २. सौ वर्षों का समय। शताब्दी। सइको।

सई—*(ना०)* १. अनाज मापने का एक माप-पात्र जो आठ माणो का होता है। २. सई परिमाण की कोई वस्तु। ३. वृद्धि। बरकत। ४. सरस्वती। ५. सरस्वती नदी। (न०) दरजी। *(वि०)* १. सब। २. सभी। ३. तब। ४. रात। सौ। *(अव्य०)* १. से। २. साथ।

सईकी—दे० सइको।

सईको—दे० सइको।

सउणा—*(न०)* १. कान। श्रवण। २. शकुन। सुकन।

सऊर—*(ना०)* १. बात या काम करने का ठीक ढंग या सलीका। शऊर। २. तारतम्य युक्त सूक्ष्म बुद्धि। ३. योग्यता। ४. विवेक। ५. सुशीलता।

सईस—*(न०)* घोड़ों की देखभाल करने वाला नौकर। साईस।

सओधो—*(न०)* योद्धा। जोधो। *(वि०)* कुलीन। ओधवाळो।

सक—*(न०)* १. शक। शंका। वहम। भरम। २. शक्ति। ३. शालिवाहन-संवत्सर। शक।

सकज—*(न०)* सुकार्य। *(अव्य०)* १. काम के लिये। सकाम। २. लिये। वास्ते। सारू। भगा।

सकट—*(न०)* १. छकड़ा। २. गाड़ा। गाड़ी। ३. संकट।

सकटी—*(ना०)* गाड़ी।

सकड़—*(वि०)* १. दृढ़। मजबूत। सेंठो। २. सम्पन्न। ३. सज्जित। ४. वीर। जोरावर। सीकड़।

सकड़दो—*(न०)* पात्र के अंदर वस्तु सहित किया जाने वाला तौल। *(वि०)* पात्र, करदा, बारदाना सहित (तोली हुई वस्तु)।

सकणो—*(क्रि०)* १. कोई काम करने में समर्थ होना। २. शक्तिमान होना। सकना। ३. हो सकना। संभव होना। संभवना। ४. पहुंचना। (प्रायः साधारण क्रिया की धातु के साथ सहायक रूप में ही इसका प्रयोग होता है।)

सकत—*(ना०)* १. शक्ति। बल। २. देवी। ३. पार्वती। सगत।

सकति—दे० सकती।

सकती—*(ना०)* १. शक्ति। बल। सरधा। २. शक्ति। देवी। दुर्गा। सगत।

३. खड्ग । ४. बरछी । ५. एक प्रकार का शस्त्र । शक्ति नामक शस्त्र ।

सकत्त—दे० सकत ।

सकन—*(न०)* शकुन ।

सकपक—*(ना०)* घबराहट ।

सकबंध —*(न०)* १. सेनापति । २. योद्धा । ३. आक्रामक । *(वि०)* १. वह जिस पर सील सिक्के लगे हुये हों । सील सिक्का बंध । अकबंध । २. वह जो खुला या फटा व टूटा न हो । अकबंध । ३. संशय वाला । शकवाला ।

सकबंधी —*(वि०)* १. पराक्रमी । वीर । २. संशयी । शकी । ३. आक्रामक । *(न०)* सेनापति ।

सकर—दे० शक्कर ।

सकरकंद—*(न०)* एक मीठा कंद । शकरकंद ।

सकरणो—*(क्रि०)* १. स्वीकृत होना । सकरना कबूला जाना । सिकरणो । २. हुंडी का सिकारा जाना ।

सकरपारा—दे० सकर पैड़ो ।

सकरपैड़ो—*(न०)* एक मिठाई । शक्करपारा ।

सकराई—दे० सिकराई ।

सकराणो—दे० सिकरावणो ।

सकराय—*(ना०)* एक लोक देवी । सकराय माता ।

सकरावणो—दे० सिकरावणो ।

सकराँत—दे० संक्रांति ।

सकर्मक—*(वि०)* १. कर्म संयुक्त (क्रिया पद) । (व्या.) २. क्रियाशील ।

सकर्मक-क्रिया—*(ना०)* कर्म के साथ प्रयुक्त क्रियापद (व्या.) ।

सकर्मी—*(वि०)* शुभ काम करने वाला (अकर्मी या कुकर्मी का उलटा) ।

सकल—दे० सकळ ।

सकळ—*(वि०)* १. सर्व । तमाम । सकल । समस्त । सैंग । सिगळा । २. कलावान ।

सकळ-जगपालक—*(न०)* परमेश्वर । परमात्मा ।

सकळंक—*(न०)* चंद्रमा । *(वि०)* कलंक वाला ।

सकलंबरा—*(ना०)* शारदा । सरस्वती ।

सकलात—*(ना०)* १. ओढ़ने का एक मखमली या ऊनी कपड़ा । बनात । २. रजाई । दुलाई

सकळीचंद—*(न०)* चंद्र ।

सकस—*(वि०)* १. श्रेष्ठ । २. जोरावर । वीर । बलवान । *(न०)* व्यक्ति । शख्स ।

सकाज—*(अव्य०)* १. निमित्त । कारण । २. कारणसर । ३. सकारण । सहेतुक ।

सकाथ—*(वि०)* सशक्त । जोरावर ।

सकाम—*(वि०)* १. फल की इच्छावाला । २. फल की इच्छा से काम करने वाला । ३. जिसके मन में कामना हो । ४. सफल । *(अव्य०)* काम से । काम सहित ।

सकाय—*(अव्य०)* काम के लिये । *(न०)* १. दृढ़ शरीर । २. दीर्घ-काय । *(सवर्त.क्रि०)* १. सकता है । २. हो सकता है । ३. किया जा सकता है ।

सकार—*(न०)* 'स' अक्षर ।

सकारज—*(अव्य०)* १. काम से । कारज सहित । सकाज । २. कारण । ३. कारणसर ।

सकारण—*(अव्य०)* १. कारण सर । २. कारण सहित । *(वि०)* १. कारण वाला । २. सगर्भा बुजोवी बेजोवी ।

सकारणो—*(क्रि०)* १. स्वीकार करना। २. अपने नाम की हुण्डी को स्वीकार करके उसके रुपये दे देना। हुंडी का भुगतान करना। हुंडी के रुपये भरना या चुकाना। सिकारना। सिकारणो।

सकूनत—*(ना०)* १. निवास स्थान। २. पता। ठिकाना।

सको—*(वि०)* १. सब। २. सभी। सभी-कोई। सगळा।

सकोई—*(वि०)* सभी। सब कोई। सैंग।

स-कोड—*(अव्य०)* १. उत्साह से। उत्साह-पूर्वक। सोत्साह। २. सहर्ष। ३. सप्रेम। ४. साभिलाष।

सकोनूं—*(सर्व०)* सबको।

स-कोप—*(अव्य०)* कोप करके। सरोस।

सकोरो—*(न०)* पानी पीने का मिटटी का एक जलपात्र। करबो।

सक्क—*(न०)* इन्द्र। शक्र।

सक्करपारो—दे० सकरपैड़ो।

सक्की—*(वि०)* शक करने वाला। वहमी।

सक्को—*(न०)* भिश्ती। पखाली।

सक्र—*(न०)* इन्द्र। शक्र।

सक्र-कोस—*(न०)* कुबेर।

सक्र-धरण—*(न०)* वज्र।

सक्रनंदण—*(न०)* शक्रनंदन। अर्जुन।

सक्र-प्रिया—*(ना०)* इन्द्राणी।

सक्र-वाह—*(न०)* इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

सक्राणी—*(ना०)* इन्द्राणी।

सखत—*(वि०)* १. सख्त। कठोर। २. दृढ़। मजबूत। ३. निर्दय। ४. कठिन। मुश्किल। आकरो।

सखत-भीड़—*(ना०)* १. असीम तंगी। खूब तंगी। २. मुसीबत। ३. पैसे की तंगी। नाणा-भीड़।

सखत-सजा—*(ना०)* सख्त मजदूरी के साथ कैद की सजा।

सखताई—*(ना०)* १. सख्ती। कड़ापन। २. कठोर व्यवहार। ३. जुल्म। ४. प्रतिबन्ध।

सखती—दे० सखताई।

सखम—*(न०)* १. आराम। २. सुख। सुखम। *(वि०)* १. क्षमा वाला। सक्षम। २. सहनशील।

सखरी—*(वि०)* १. अच्छी। ठीक। २. सुन्दर। ३. मूल्यवान। *(ना०)* १. आटा-दाल आदि खाद्य-पदार्थ। भोजन बनाने के लिए किसी को दी जाने वाली आटा-दाल आदि सामग्री। सीधो।

सखरो—*(वि०)* १. अच्छा। ठीक। २. सुन्दर। ३. मूल्यवान। ४. खूब। *(न०)* १. ब्राह्मण, साधु आदि को भोजन बनाने के लिये दी जाने वाली सूखी समग्री (आटा, घी, दाल, आदि)। सीधा। सीधो। २. किसी के हाथ का पकाया हुआ नहीं खाने वाले को उसके भोजन बनाने के लिये दिया जाने वाला आटा, दाल आदि का सूखा सामान।

सखा—*(न०)* मित्र। साथी।

सखाई—*(ना०)* मित्रता। दोस्ती।

सखायो—*(न०)* अंगरक्षक की तरह हर समय साथ रहने वाला दूल्हे का मित्र। सखा। सखैयो। सखो।

सखावत—*(ना०)* १. दानशीलता। २. उदारता। ३. दान।

सखा-समीर—*(न०)* अग्नि। वासवे। देवता।

सखी—*(ना०)* सहेली। सहचरी। साथण। *(वि०)* १. दानी। दाता। २. उदार।

सखी-भाव—*(न०)* अपने को इष्ट देवता की सखी या पत्नी मानने का भाव।

२. पत्नी या सखी रूप में की जाने वाली इष्ट-देव की भक्ति ।

सखी-सहेली—*(ना०)* १. सखी । सहेली । २. सखी समूह । साथण ।

सखी-सम्प्रदाय—*(न०)* पत्नी के वेष में रहने पर श्रीकृष्ण की पति के रूप में आराधना करने वाला सम्प्रदाय ।

सखुन—*(न०)* १. कथन । बोल । वैण । २. बातचीत । ३. कौल । वचन । ४. उक्ति । ५. कविता । काव्य ।

सखो—*(न०)* साथी । मित्र । सखायो ।

सखोड़—*(वि०)* १. सदोष । २. अशुद्ध । अपवित्र । *(न०)* लंगड़ापन ।

सखोध—*(वि०)* सक्रोध । रीसवाळो । रीसठियो ।

सख्त—दे० सख्त ।

सख्ती—दे० सख्ती ।

सग—*(ना०)* १. दीप-शिखा । सिग । २. दीपक की ज्योति । ३. दोहते समय की दूध धारा । ४. पतली धारा । ५. सगा । संबंधी ।

सगठ—*(न०)* संकट । कष्ट । तकलीफ । *(वि०)* १. गाँठ वाला । २. ग्रथित । ३. गठित । रचा हुआ ।

सगड़—*(न०)* शकट । गाडो । छकड़ा ।

सगड़ी—दे० सिगड़ी ।

सगण—*(न०)* छंद शास्त्र में एक गण जिसमें पहला दूसरा लघु और तीसरा गुरु (।।ऽ) होता है ।

सगणो—दे० सकणो ।

सगत—*(ना०)* १. शक्ति । देवी । २. पार्वती । ३. तलवार । खड्ग ।

सगतरो-पूत—*(न०)* १. चारण । २. शक्ति-पुत्र ।

सगती—*(ना०)* १. शक्ति । देवी । २. तलवार । तरवार ।

सगती-पुत्र—*(न०)* १. चारण । २. शक्ति पुत्र ।

सगन—दे० शकुन ।

सगपण—*(न०)* १. कन्या का वाग्दान । सगाई । २. लड़के के लिए कन्या का वाग्दान स्वीकार करना या माँगना । ३. विवाह-सम्बन्ध । ४. रक्त-संबंध । ५. संबंध । रिलेशन ।

सगरथ—*(वि०)* १. सम्पन्न । २. गुणवान । *(न०)* १. परिवार और मित्र-मण्डली । *(अव्य०)* समस्त परिवार सहित ।

सगराम—*(न०)* संग्राम । युद्ध । जुध ।

सगरी—दे० सिगरी ।

सगर्भा—*(वि०)* १. गर्भवती । भारीपगे । *(ना०)* १. गर्भवती स्त्री । २. सगी बहन । सोदरी । सहोदरा ।

सगर्व—*(वि०)* गर्वयुक्त । *(अव्य०)* गर्व से ।

सगळाई—*(वि०ब०व०)* समस्त ही । सभी ।

सगळी—*(वि०ना०)* सब । समस्त । सेंग ।

सगळो—*(वि०)* सकल । समस्त । सेंग ।

सगळोई—*(वि०)* सभी । सब ही ।

सगवड़—*(ना०)* १. सुविधा । अनुकूलता । २. व्यवस्था । जोगवाई । सवड़ ।

सगस—*(न०)* शरूस । शक्ति ।

सगाई—*(ना०)* १. लड़के या लड़की की मँगनी । वाग्दान । सगपण । २. रिश्ता । नाता । ३. विवाह-निश्चय । ४. लिहाज । ५. आन । ६. संकल्प ।

सगापणो—*(न०)* सगापन । रिश्तेदारी ।

सगारथ—*(न०)* विवाह-संबंध । सगापन । रिश्तेदारी । जिनसपणो ।

सगावळ—*(ना०)* १. सगा बनने की रस्म । सम्बन्धी बनने की विधि । २. सगों के आपसी रीति-रस्म । ३. सगापन ।

सगाविध—*(ना०)* १. सगापन । २. सगाई । ३. सगों के परस्पर के रीति रस्म । सगे-संबंधियों के परस्पर के रीति रस्म । सगे-संबंधियों के परस्पर के रीति-रिवाज । ४. सगा बनने की रस्म । **सगावळ** ।

सगा-सम्बन्धी—*(ना०ब०व०)* १. सगे और संबंधी-जन । २. समधी लोग ।

सगा-सोई—दे० सगा-संबंधी ।

सगी—*(ना०)* समधिन । **वेवाण** । *(वि०)* एक माँ से उत्पन्न । सोदरी ।

सगी-काकी—*(ना०)* बाप के सगे भाई की पत्नी । **ताई** । **काकी** । चाची ।

सगी-नानी—*(ना०)* माँ की माता ।

सगी-बहन—*(ना०)* एक ही माता से उत्पन्न बहन । सहोदरा ।

सगी-भाभी—*(ना०)* सगे भाई की पत्नी । भावज । **भोजाई** ।

सगी-भोजाई—दे० सगी भाभी ।

सगी-मामी—*(ना०)* माँ के भाई की पत्नी ।

सगी-सासू—*(ना०)* पति या पत्नी की माता । **सास** । **सासूजी** ।

सगीड़—*(ना०)* आघात । धक्का ।

सगुण—*(वि०)* १. गुणयुक्त । २. आकार आदि ३. गुणवान गुण वाला । *(ना०)* १. साकार ब्रह्म । २. परमात्मा का वह रूप जिसमें सत्व, रज और तम तीनों गुण हों । ईश्वर का अवतारी सशरीरी रूप ।

सगुण-उपासना—*(ना०)* परमात्मा के सगुण रूप की उपासना । सगुणोपासना ।

सगुण-ब्रह्म—*(ना०)* साकार ब्रह्म ।

सगुणी—*(वि०)* गुणों वाली । *(ना०)* गुणों वाली स्त्री । दे० सगुण । सं. १२१

सगुणोपासना—दे० सगुण उपासना ।

सगुरो—दे० सुगरो ।

सगो—*(ना०)* १. समधी । संबंधी । **गिनायत** । **वेवाही** । २. सगोत्री । **सगोत्र** । सगा । ३. सहोदर । भाई । ४. मित्र । स्नेही । *(वि०)* कुल में अति निकट का । रक्त-सम्बन्ध वाला ।

सगो-काको—*(ना०)* पिता का सगा भाई ।

स-गोढ-री—*(वि०)* १. हितू । बहुत चाहने वाली । हितैषी । २. निकट समधिन । बहुत निकट की । **सगोढी** ।

स-गोढ-रो—*(वि०)* १. हितचिंतक । बहुत चाहने वाला । २. निकट संबंधी । बहुत निकट का । **सगोढ़ो** । ३. विश्वसनीय । ४. प्यारा । ५ पड़ौसी ।

स-गोढी—दे० सगोढ-री ।

स-गोढो—दे० सगोढ-रो ।

सगोत—दे० सगोती ।

सगोती—*(वि०)* १. एक ही गोत्र का । सगोत्री । स्वगोत्री । *(ना०)* स्वजन । २. कुटुम्बीजन ।

सगोत्र—दे० सगोती ।

सगो-नानो—*(ना०)* माता का पिता ।

सगो-परसंगी—*(ना०)* १. सगा और प्रसंग वाला । २. सगा-स्नेही ।

सगो-भाई—*(ना०)* अपनी माँ से उत्पन्न लड़का । एक ही माता से उत्पन्न भाई । सहोदर ।

सगो-मामो—*(ना०)* माता का भाई ।

सगो-संबंधी—*(ना०)* सगा सम्बन्धी । समधी ।

सगो-सुसरो—*(ना०)* पति या पत्नी का पिता ।

सगो-सोई—दे० सगो संबंधी ।

सग्ग—*(ना०)* १. स्वर्ग । **सुरग** । २. सगा । सम्बन्धी । ३. दीप-शिखा । लौ । ४. पतली धारा । ५. दोहते समय थन में से निकलने वाली दूध की धारा ।

सघण—दे० सघन ।

सघण-वाह—*(न०)* इन्द्र ।

सघन—*(वि०)* १. घना । २. गाढ़ा । ठोस । **भिड़मो** । ३. अविरल । *(न०)* घन । मेघ । बादल ।

सघनता—*(ना०)* सघन होने का भाव ।

सच—*(वि०)* १. सत्य । यथार्थ । जैसा हो वैसा । **साच** । २. वास्तविक । ३. ठीक । *(न०)* सत्य बात या स्थिति । तथ्य । वास्तविकता ।

सचम—*(वि०)* १. जबरदस्त । २. बहुत भारी । **सच्चम** ।

सचमुच—*(अव्य०)* १. वास्तव में । वस्तुतः । २. निश्चय । **खरेखर** ।

सचराचर—*(न०)* १. संसार के सभी चर, अचर. स्थावर और जंगम पदार्थ तथा प्राणी । *(अव्य०)* चर, अचर समस्त में ।

सचळो—*(वि०)* १. चंचल । चपल । २. अस्थिर ।

सचवाणो—*(क्रि०)* सुरक्षित रखना या रखवाना । २. सम्हालना । **साचवणो** ।

सचवायो—*(वि०)* १. सच बोलने वाला । २. सच्चा । **खरो** । ३. सम्हाला हुआ । ४. सुरक्षित । ५. यत्न किया हुआ । **साचवियोड़ो** ।

सचाई—*(ना०)* सच्चाई । सत्यता । वास्तविकता ।

सचाळो—*(वि०)* १. युद्ध करने को उत्साहित । युद्ध करने को तत्पर । २. वीर । ३. चंचल । ४. अद्भुत ।

सचावट—*(ना०)* १. सच्चाई । सत्यता । २. दृढ़ता । **खरापणो** ।

सचिक्कण—*(वि०)* बहुत चिकना । **सुंवाळो** ।

सचित्र—*(वि०)* जो चित्रों से युक्त हो । जिसमें चित्र हों ।

सचियारो—*(वि०)* १. सत्य बोलने वाला । २. ईमानदार । सच्चा ।

सचिव—*(न०)* १. मंत्री । २. प्रधान । ३. संस्था का प्रमुख अधिकारी या कार्यकर्ता । ४. मित्र ।

सचिवालय—*(न०)* राज्य के सचिवों एवं प्रमुख अधिकारियों का कार्यालय ।

सचित—*(वि०)* १. चिन्ता वाला । २. चिंतित ।

सची—*(ना०)* इन्द्राणी । शचि ।

सचीकणो—*(वि०)* १. तेल से युक्त । तैली । **तेलियो** । **चीकटवाळो** । २. चिकना । **सुंवाळो** । सचिक्कण ।

सची-पति—*(न०)* इन्द्र । शचि-पति ।

सचीराट—*(न०)* इन्द्र । शचि-राट ।

सची-स्याम—*(न०)* इन्द्र । शचि-स्वामी ।

सचूंप—*(क्रि०वि०)* १. उत्साह से । २. शौक से । ३. सुघड़ता से ।

सचूंपो—*(वि०)* १. सुघड़ता से काम करने वाला । सुघड़ । २. उत्साह वाला । ३. शौकीन ।

सचेत—१. सावधान । सजग । **सजाग** । २. समझदार ।

सचोट—*(वि०)* १. अचूक । २. निष्फल नहीं जाये ऐसा । ३. खरा । पक्का । *(अव्य०)* चूके नहीं इस प्रकार ।

सच्च—दे० सच ।

सच्चम—दे० सचम ।

सच्चरित—*(वि०)* अच्छे चरित्र वाला । सदाचारी ।

सच्चरित्र—दे० सच्चरित ।

सच्चाई—*(ना०)* सत्यता । सचाबट ।

सच्चापण—*(न०)* सत्यता । सचाई ।

सच्चापणो—दे० सच्चापण ।

सच्चिदानंद—*(न०)* सत्, चित और आनन्दमय ब्रह्म । परब्रह्म । परमेश्वर ।

सच्चो—*(वि०)* १. सत्य । सांचो । २. असली । *(अव्य०)* 'सत्य कहता हूं' इस भाव का उद्‌गारित शब्द ।

सच्ची—दे० सांचो ।

सजग—*(वि०)* १. सावधान । सजाग । २. होशियार । जाग्रत । जागरूक ।

सजगो—दे० सजग ।

सजड़—*(वि०)* १. दृढ़ । मजबूत । २. सख्त चिपका हुआ । ३. जड़ सहित ।

सजड़ो—दे० सजड़ ।

सजण—दे० सजन ।

सजणो—*(क्रि०)* १. सजना । तैयार होना । सज्जित होना । २. अलकृत होना । ३. शोभित होना । ४. सजाना । सजावणो । ५. निभाना । वैसे ही बने रहना । ६. किसी वस्तु का आवश्यकतानुसार बनना या परिपूर्ण होना । यथावश्यक पूरा होना । बराबर बनना । बराबर होना । ७. गुजारा होना । ८. बराबर होते रहना । ९. खतम नहीं होना । १०. पर्याप्त होना । ११. निर्माण करना । १२. शृंगार करना । १३. ऊंट, घोड़े आदि पर काठी कसना ।

सजन—*(न०)* १. सज्जन । भला मनुष्य । २. प्रियतम । पति । साजन ।

सजन-गोठ—*(ना०)* १. मित्र, सबंधियों की स्नेह-गोष्ठी । २. प्रीति-भोज ।

सजनपद—*(न०)* प्राचीन 'सख्य' के किसी एक जनपद के निवासियों की पारस्परिक संज्ञा । स्व-जनपद ।

सजन-सनेही—*(वि०)* सज्जन-स्नेही *(न०)* १. समधी । २. प्रियतम । पति ।

सजनी—*(ना०)* १. सखी । साथण । २. प्रिया ।

सजम—*(ना०)* 'समझ' का विपर्यय रूप । दे० समझ ।

सजमणो—*(वि०)* 'समझणो' शब्द का विपर्यय रूपान्तर । दे० समझणो ।

सजळ—*(वि०)* १. जल वाला । २. हरा-भरा । ३. गीला । आर्द्र । ४. अश्रुपूर्ण । ५. जल पूर्ण । ६. जहां जल गहरा (ऊंडा) न हो वह (प्रदेश) ।

सजळाई—*(ना०)* १. जल की पुष्कलता । जल की पूर्णता ।

सजळो—दे० सजल ।

सजस—*(न०)* सुयश । *(वि०)* यश वाला ।

सजा—*(ना०)* १. दण्ड । जुर्माना । २. कारावास । कैद । ३. सरकार द्वारा भुगताया जाने वाला अपराध का दण्ड ।

सजाई—*(ना०)* १. सजावट । २. तैयारी । ३. ऊंट की पीठ पर कसा जाने वाला पलान, घासिया आदि । सवारी का सामान । ४. ऊंट को सजाने का सामान ।

सजाग—दे० सजग ।

सजाणो—*(क्रि०)* १. अलकृत करना । सजाना । सजावणो । २. वस्तुओं को यथाक्रम रखना । करीने से रखना । ३. निभाना । वैसे ही बनाये रखना । ४. खतम नहीं होने देना । बराबर बनाये रखना । यथावश्यक बनाये रखना या

पूरा करना। पर्याप्त हो जाय वैसी व्यवस्था करना। ५. गुजारा चलाना। ६. तैयार करना। ७. निर्माण करना। ८. सबको बराबर मिले इस प्रकार बाँटना।

सजात—*(वि०)* १. एक ही जाति का। सजाति। सजातीय। २. साथ में जन्मा हुआ। ३. कुलीन।

सजायाफ्ता—*(वि०)* जो सजा भुगत चुका हो।

सजायो—*(न०)* हजामत करने का छुरा। उस्तुरा। पाछणो।

सजाव—*(न०)* १. किसी वस्तु का यथावश्यक होना। किसी वस्तु का जरुरत मुताबिक सबको मिल जाना। २. सबमें बराबर होना। ३. निर्वाह। निबाह।

सजावट—*(ना०)* १. तैयारी। २. शोभा।

सजावणो—दे० सजाणो।

सजावार—*(वि०)* १. सजा पाने का पात्र। सजा करने योग्य। २. सजायाफ्ता।

सजियोड़ो—दे० सज्जित।

सजीव—*(वि०)* १. जिसमें जीव हो। जीवित। २. जिसमें जीवन हो। ३. ओजस्वी।

सजीव-चित्रण—*(न०)* ओजस्वी आलेखन।

सजीवण—*(वि०)* १. जीवन देने वाला। २. सजीवन।

सजीवण-बूंटी—*(ना०)* सजीवन करने वाली बूटी। सजीवन बूटी। संजीवनी।

सजीवण-मंत्र—*(न०)* १. पुनः जीवित करने वाला मंत्र। संजीवन मंत्र। २. प्राण फूंकने वाला मंत्र।

सजीवन—दे० सजीवण।

सजीव-वर्णन—*(न०)* प्राण फूंक देने वाला कथन। ओजस्वी वर्णन।

सजूसण—दे० सजोसण।

सजूसणियो—दे० सजोसणियो।

सजो—दे० सज्जो।

सजोड़े—*(अव्य०)* १. पति-पत्नी साथ में। सपत्नीक। २. जोड़े सहित। गठ-बंधन किये हुए।

सजोरी—*(क्रि०वि०)* जबरदस्ती से। जोर-जबरी से *(वि०)* १. जोर वाली। २. उद्दंड। ३. झगड़ालू।

सजोरो—*(वि०)* १. जबरदस्त। बलवान। २. ऊधमी। उद्दंड। ३. इतराया हुआ। घमण्डी। फेंगरियोड़ो। ४. जिस मोहरे के पीछे किसी अन्य मोहरे की शक्ति हो। (शतरंज)

सजोसण—*(वि०)* १. कवच सहित। २. कवचधारी *(न०)* कवच। बख्तर।

सजोसणियो—*(वि०)* १. कवचधारी। कवच से सज्जित। २. युद्ध के सभी साज और शस्त्रों आदि द्वारा सज्जित।

सज्ज—*(न०)* तत्पर। तैयार। सज्जित।

सज्जन—*(न०)* १. भला आदमी। २. अच्छे कुल और आचरण वाला व्यक्ति।

सज्जित—*(वि०)* सजा हुआ। सजियोड़ो।

सज्जो—*(वि०)* १. समस्त। सब। २. अत्रुटित। साजो। ३. स्वस्थ। साजो।

सज्झाय—*(न०)* १. 'स्वाध्याय' शब्द का प्राकृत भाषा रूप। २. जैन शास्त्रों का नियमित पाठ।

सज्या—*(ना०)* शय्या। सोने का पलंग बिस्तर आदि। शैया। सेज।

सज्या-सेस—*(न०)* १. विष्णु-भगवान। २. विष्णु भगवान की शेष-शय्या।

सझाड़ो—*(वि०)* घने वृक्षों वाला (पर्वत)। *(न०)* वृक्षों और झाड़ी वाला सघन वन।

सभूल—*(वि०)* १. भूल डाला हुआ (हाथी)। २. भूल सहित। ३. झुंड के साथ। ४. झुंड सहित।

सटकै—*(क्रि०वि०)* तुरन्त। झटपट।

सटणो—*(क्रि०)* १. बहुत पास आकर बैठना। २. चिपकना। **चिपकणो**। ३. पास आना। मिलना।

सटा—*(ना०)* जटा।

सटाक—*(अव्य०)* 'सट' ऐसी आवाज हो इस प्रकार। २. झट। त्वरा से। *(न०)* १. चाबुक। **कोरड़ो**। **साटको**। २. चाबुक की आवाज।

सटाको—*(न०)* १. चाबुक। **कोरड़ो**। **साटको**। २. चाबुक मारने का शब्द।

सटाणो—*(क्रि०)* १. दो वस्तुओं को मिलाना। २. पास ले जाना। सटाना।

सटावणो—दे० सटाणो।

सटीक—*(वि०)* टीका सहित (मूल ग्रन्थ)। व्याख्या या टीका समेत।

सटै—दे० साटै।

सटोड़ियो—*(वि०)* वह जो तेजी मंदी के विचार से किसी वस्तु का भविष्यकालीन (वायदे की) खरीद बिकरी करता हो। सट्टा खेलने वाला। सट्टाखोर। **सटोरियो**।

सटोरियो—दे० सटोड़ियो।

सटोरो—दे० सटोरियो।

सटोळणो—*(क्रि०)* मारना। पीटना।

सटोसट—*(अव्य०)* सटासट। झटपट। जल्दी-जल्दी।

सट्टाखोर—*(वि०)* सट्टा खेलने वाला। **सटोड़ियो**। **सटोरियो**।

सट्टी—*(ना०)* एक ही मेल की बहुत सी चीजों का बाजार।

सट्टेबाज—दे० सट्टाखोर।

सट्टो—*(न०)* १. केवल तेजी मंदी के आधार पर लाभ प्राप्ति के लिये किया जाने वाला वायदा-व्यापार। २. खरीद-बिकरी का वह व्यापार जो केवल तेजी मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ प्राप्ति के लिये किया जाता है। माल के भावों में भविष्यकालीन घटा-बढ़ी पर खेले जाने वाला जुआ। तेजी-मंदी का व्यापार।

सठ—*(वि०)* १. शठ। धूर्त। २. मूर्ख। ३. धोखेबाज। ठग। दे० साठ।

सठता—*(ना०)* १. शठता। धूर्तता। २. मूर्खता। ३. धोखेबाजी। ठगाई। ठगी।

सठताई—दे० सठता।

सठवा—*(वि०)* १. ऊंची जाति की (सोंठ) २. सोंठ। शुंठि। सूंठ।

सठवा-सूंठ—*(ना०)* एक प्रकार की बढ़िया सोंठ।

सठियाणो—*(क्रि०)* १. साठ वर्ष का होना। २. बुढ़ापे के कारण बुद्धि का काम नहीं देना। सठियाना।

सड़क—*(वि०)* १. स्तब्ध। दिङ्मूढ़। चकित। भौंचक्का। २. जड़। ३. स्थिर। *(ना०)* पक्का मार्ग। रोड।

सड़कावणो—*(क्रि०)* १. बेंत या कोड़े से मारना। फटकारना। २. मारना। पीटना।

सड़णो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु में ऐसा विकार पैदा होना कि वह गलने लगे और उसमें दुर्गंध आने लगे। सड़ना। २. हीनावस्था में पड़ा रहना। ३. दुर्गति होना। ४. लम्बी बीमारी भुगतना। ५. असाध्य व्याधि से ग्रस्त होना।

सडर—*(वि०)* डरा हुआ । भयपूर्ण । सभीत । **डरियोड़ो** ।

सड़ाक—*(अव्य०)* जल्दी । दे० सड़ाको ।

सड़ाको—*(न०)* १. बेंत या चाबुक मारने की आवाज । कोड़े की फटकार । २. चिलम या हुक्के का दम खींचना । ३. चाबुक । **कोरड़ो** ।

सड़ासड़—*(अव्य०)* १. 'सड़सड़' शब्द के साथ । २. शीघ्रता से । ३. **ऊपरा-ऊपरी** ४. **झटाझट** ।

सड़ांद—दे० सड़ांध ।

सड़ांध—*(ना०)* किसी वस्तु के सड़ जाने पर उसमें से निकलने वाली दुर्गन्ध **सड़ान** ।

सडुक—*(न०)* कुत्ता । गंडक ।

सड़ो—*(न०)* १. सड़ने की क्रिया या भाव । सड़ान । २. सड़ने की दुर्गन्ध । ३. भ्रष्टाचार । दुराचार । ४. रिश्वतखोरी । घूसखोरी । ५. आफत । आपत्ति । ६. ६. दीर्घकाल से चला आ रहा दो पक्षों का झगड़ा । ७. कुएं पर बैल आदि को बाँधने का घास का झोंपड़ा ।

सढाळो—*(वि०)* १. अनुकूल । २. हितकर । ३. सीधा । सरल । **पाधरो** । **सुढाळो** ।

सढ्ढो—*(न०)* ऊंट ।

सण—*(न०)* एक पौधा जिसमें रेशे से थैले, रस्सियाँ आदि बनाई जाती हैं । सन । जूट ।

सणक—*(ना०)* वेदना । **सणको** । *(वि०)* सीधा । अवक्र । दे० सनक ।

सणको—*(न०)* १. शूल चुभने के समान होने वाली वेदना ।

सणगार—दे० शृंगार ।

सणगारज—*(न०)* कामदेव ।

सणगारणो—*(क्रि०)* शृंगार करना ।

सणगारियोड़ो—*(वि०)* शृंगार किया हुआ । शृंगारित ।

सणियो—*(न०)* एक क्षुप । सिणिया नामक घास । **सिणियो** ।

सणेजो—*(न०)* स्नेहीजन । **सैण** ।

सत—*(न०)* १. सत्य । सच । २. स्वरूप-ज्ञान । ३. सत्यता । सच्चाई । ४. देवता का आवेश । वीरत्व । बल । ६. साहस । ७. वीर-मृत्यु । ८. प्रतिज्ञा । ९. शपथ । १०. ईमानदारी । ११. सतीत्व । १२. सती होने का जोश । सतीत्व का जोश । १३. सार वस्तु । १४ पातिव्रत-धर्म । १५. सार । सत्व । १६. तत्व । १७. सात की संख्या '७' । १८. सौ की संख्या । '१००' । *(वि०)* १. सौ । दश का दश गुना । २. सात । चार और तीन ।

सत-अंगो—*(न०)* रथ । सप्तांग । *(वि०)* खरा । सच्चा ।

सत आवणो—*(मुहा०)* १. सती होने का आवेश उत्पन्न होना । २. शौर्य उत्पन्न होना ।

सत करणो—*(मुहा०)* १. प्रतिज्ञा करना । २. मरना । ३. युद्ध में मरना । ४. स्त्री का पति के पीछे सती होना । सती का पति की चिता पर चढ़ना ।

सत-करमी—*(वि०)* सत्कर्म करने वाला । सत्कर्मा ।

सतकार—*(न०)* १. सम्मान । आदर । सत्कार । २. **आव-आदर** । **आव-भगत** । आतिथ्य ।

सत-कारज—*(न०)* सत्कार्य । सत्कर्म ।

सतकारणो—*(क्रि०)* सत्कार करना । **आदर करणो** ।

सतऋत—*(न०)* १. इन्द्र । शतक्रतु । २. सत्कर्म । सत्कार । ३. आदर । *(वि०)* १. भली-भाँति किया हुआ । २. सत्कृत । ३. आदृत । ४. सौ यज्ञ करने वाला ।

सतऋती—*(ना०)* सत्कृति । उत्तम रचना । *(न०)* १. सत्कर्मी । २. ऋषि । ३. **श्रेष्ठ कार्य** ।

सत-खणो—*(वि०)* सात खंडों वाला। *(न०)* सात खंडों वाला मकान।

सत-खंड—*(न०)* सात खंड (मकान, अलमारी इत्यादि के)।

सत-खंडी—*(वि०)* सात खंडों वाली। **सातखणी।**

सत-गुर—दे० सद्गुरु।

सत-गुरु—*(न०)* १. सद्गुरु। २. परमेश्वर।

सत चढणो—*(मुहा)* सतीत्व या शूरातन चढ़ना।

सत-जुग—*(न०)* सतयुग। सत्ययुग।

सतत—*(अव्य०)* १. निरंतर। लगातार। २. बराबर। ३. हमेशा। सदा।

सत-देणो—*(मुहा०)* वीरगति को प्राप्त होना। युद्ध में मरना।

सत-धर्म—*(न०)* १. सतीधर्म। २. सतीपना। ३. सद्धर्म।

सत-ध्रत—*(न०)* ब्रह्मा।

सतनारायण—दे० सत्यनारायण।

सत-पकवान—दे० सतपकवानी सं. १

सत-पकवानी—*(ना०)* १. सात प्रकार के पक्वान्न। २. सात पकवानों का भोजन। ३. सात राजस्थान-एकांकियों की पुस्तक का नाम।

सतपत—*(न०)* १. सत्य और प्रतिष्ठा। २. सत्य की प्रतिष्ठा। ३. सत्य प्रतिज्ञा।

सत-पत्र—*(न०)* कमल। शत-पत्र।

सत-परव—*(ना०)* १. वंशी। मुरली २. बाँस। सप्त-पर्व।

सत-परविका—*(ना०)* दूर्वा। दूब।

सतपुड़ो—*(न०)* १. हथेली में होने वाला एक व्रण। २. सतपुड़ा पहाड़।

सत-पुरख—दे० सतपुरस।

सत-पुरस—दे० सत्पुरुष।

सत-वीरणी—*(ना०)* सात भांति के पकवान। **सत-सीरणी।**

सत-भंग—*(न०)* १. स्त्री के सतीत्व का भंग। २. असत्य नहीं बोलने की प्रतिज्ञा का भंग। कर्त्तव्य-च्युति।

सत-मासियो—*(वि०)* सातवें मास में उत्पन्न होने वाला (शिशु)।

सतर—*(न०)* शत्रु। बैरी। *(ना०)* रेखा। **ओळी। लीठी।**

सतर-धड़—*(ना०)* शत्रु-सेना।

सतरदा—*(ना०)* बिजली।

सतरंगो—*(वि०)* सात रंगों वाला।

सतरंज—*(न०)* एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर बत्तीस गोटियों से खेला जाता है। शतरंज।

सतरंजी—*(ना०)* दरी। **सेतरंजी। जीरोई। फरासी।**

सतरूघण—दे० शत्रुघ्न।

सतरे—*(न०)* सतरह की संख्या। '१७'। *(वि०)* सात और दस।

सतरे-सो—*(न०)* एक हजार और सात सौ की संख्या। '१७००' *(वि०)* एक हजार और सात सौ।

सतरोतर-सो—*(न०)* पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ सतरह (११७) की संख्या।

सतर्क—*(वि०)* सावधान। सचेत।

सतलड़ी—*(ना०)* सात लड़ों वाला हार।

सतलड़ो—दे० सतलड़ी।

सतवती—*(वि०)* १. पतिव्रता। २. सती। ३. साध्वी। *(ना०)* सती स्त्री।

सतवाची—दे० सतवादी।

सतवादी—*(वि०)* १. सत्य बोलने वाला। सत्यवादी। २. दृढ़ प्रतिज्ञ। *(न०)* १. हरिश्चंद्र। २. युधिष्ठिर।

सतवारो—*(न०)* १. सत्पुरुषों का युग। २. सत्य युग। ३. सत्य की महिमा। ४. महत्व का काल। **हरचंद-वारो।**

सतवी—*(ना०)* सोंठ । सूंठ ।

सत-संग—*(ना०)* सत्संग । साधु पुरुषों की संगति । सत-संगत ।

सत-सई—*(ना०)* सात सौ छंदों का ग्रंथ । सप्त-शती ।

सत-सदी—*(ना०)* १. सात सौ वर्षों का समय । सात सदे । २. सातसौवाँ वर्ष । ३. सात सौ वर्ष पूरे हो जाने पर मनाया जाने वाला उत्सव ।

सत-संगत—दे० सत-संग ।

सत-संगी—*(वि०)* १. अच्छी संगति में रहने वाला । २. सत्संग करने वाला । *(न०)* साथी ।

सत-साल—*(वि०)* १. शत्रु का संहार करने वाला । २. शत्रु के लिए शल्य रूप । शत्रु-शल्य । शत्रुसाल । *(न०)* सात वर्ष का समय ।

सत-साहब—*(न०)* कबीर-पंथी सम्प्रदाय का एक विशिष्ट पद । जिसका अर्थ-'साहब (ईश्वर) सत्य है' होता है, जो साधुओं को नमस्कार करने के समय या मधुकरी के समय उनके द्वारा उच्चारण का काम किया जाता है । २. कबीर साहब ।

सतहर—*(न०)* शत्रु । बैरी । *(वि०)* १. झूठा । २. निबल ।

सत-हारणो—*(मुहा०)* १. वचन भंग होना । २. व्रत भंग करना या होना । ३. सत्य बात का खंडन होना या करना । ४. बुद्धि भ्रष्ट होना ।

सत-हीणो—*(वि०)* १. शक्तिहीन । कमजोर । २. असत्य । झूठा ।

सताइस—*(न०)* सत्ताइस की संख्या । '२७' । *(वि०)* बीस और सात ।

सताइस-सा—*(न०)* दो हजार सात सौ की संख्या । '२७००' । *(वि०)* दो हजार और सात सौ ।

सताइसा—*(न०)* सदी का सत्ताईसवाँ वर्ष ।

सताजोग—*(अव्य०)* १. दैव योग से । २. ईश्वर इच्छा से । ३. संयोगवश ।

सताणुओ—*(न०)* सदी का सत्तानवाँ वर्ष ।

सताणूँ—*(वि०)* निन्नवे और सात । *(न०)* सत्तानव की संख्या '९७'

सताणा—*(क्रि०)* १. परेशान करना । सताना । २. दुख देना । हैरान करना ।

सताब—*(क्रि०वि०)* शीघ्र । जल्दी । सिताब । झटपट ।

सताबी—*(क्रि०वि०)* १. शीघ्र । २. शीघ्रता से । जल्दी से ।

सतार—*(ना०)* तारों वाला एक वाद्य यन्त्र । सितार ।

सतारा—*(न०ब०व०)* सप्त ऋषियों के नाम के सात तारों का समूह जो ध्रुव तारे की परिक्रमा करते रहते हैं । सात तारे ।

सतारो—*(न०)* १. तारा । नक्षत्र । सितारा । २. भाग्य । प्रारब्ध । तकदीर । नसीब ।

सतालक—*(न०)* बलभद्र । बलराम ।

सतावणा—दे० सताणा ।

सतावन—*(वि०)* पचास और सात । *(न०)* सत्तावन की संख्या । ५७ ।

सतावना—*(न०)* संवत का सत्तावनवाँ वर्ष ।

सतावर—*(न०)* एक पौष्टिक वनौषधि । शतावरी । सतमूला ।

सतियासा—दे० सातयासो ।

सतिया—*(वि०)* १. सत्य मार्ग का आचरण करने वाला । सतवादी । २. ३. सत्यवक्ता । ३. सत्यवादी ४. दानी । ५. वीर ।

सती—*(ना०)* १. पतिव्रता स्त्री । २. सतवती । ३. मृत पति के शव के साथ जलने वाली पतिव्रता स्त्री । शिवजी की पहली पत्नी । दक्ष-कन्या । ४,

पार्वती । ५. गायत्री । ६. देवी । ७. सती माता । *(वि०)* १. दानी । २. उदार ।

सती-रो-नाळेर—*(वि०)* १. सती होने वाली स्त्री के हाथ में का नारियल । २. विपत्ति में पड़ने को विवश किया हुआ । ३. विपत्ति-ग्रस्त ।

सतूकार—*(न०)* महाभोज, महादान आदि सतकार्य । बड़ा काम । **यज्ञ-काम । किरियावर ।**

सते—*(ना०)* सती । *(ना०ब०व०)* सतियों का समूह । *(अव्य०)* अपने आप । **मते । योंही ।**

सते-भाव—*(न०)* १. सद्भाव । सतभाव । २. सचाई । ३. सीधापन । *(अव्य०)* १. सीधापन से । २. सच्चाई से । ३. सरल हृदय से । ४. सत्य भाव से ।

सते-में—*(अव्य०)* १. यों ही । २. अपने आप । **छते में ।**

सतो—*(न०)* १. सत्य मार्ग पर चलने वाला । सच्चा । २. पत्नी व्रत पुरुष । ३. पत्नी के मरने पर उसके शव के साथ जलने वाला पत्नी-भक्त पुरुष । ४. बलिदान । ५. न्यौछावर । **निछावर ।**

सतोगुण—*(न०)* सत्व गुण ।

सतोगुणी—*(वि०)* १. सत्वगुण वाला । सात्विक । २. सद्गुणी ।

सतोत्र—*(न०)* १. स्तोत्र । २. छंदोबद्ध देव-स्तुति । ३. देवस्तुति का संस्कृत भाषा का छंद ।

सतोम—*(न०)* यज्ञ । स्तोम ।

सतोल—*(वि०)* १. वजनी । भारी । **सतोल ।** २. अपेक्षाकृत वजनी । ३. तुल्य । समान ।

सत्कार—दे० सतकार ।

सत्त—*(न०)* १. सत्य । सच्च । २. सत्व । सत्व-भाग । ३. शत्रु । **बैरी ।** ४. सात की संख्या '७' । *(वि०)* सात ।

सत्त-आणंद-सचेत—दे० सच्चिदानन्द ।

सत्त-निरंजण—*(न०)* निरंजनी साधुओं का साम्प्रदायिक आध्यात्मिक-पद जो उन्हें प्रणाम करने के समय या उनकी मधुकरी के समय उनके द्वारा उच्चारण किया जाता है । २. सत्य निरंजन । ३. निरंजन ब्रह्म सत्य है ।

सत्ताइस—*(वि०)* बीस और सात । *(न०)* सत्ताइस की संख्या । '२७' ।

सत्ताइसो—*(न०)* सत्ताइसवाँ संवत्सर ।

सत्ताणुओ—*(न०)* सत्तानवाँ सम्वत् ।

सत्ताणू—*(वि०)* नब्बे और सात । *(न०)* सत्तानवे की संख्या, '९७' ।

सत्तावन—*(वि०)* पचास और सात । *(न०)* सत्तावन की संख्या । '५७' ।

सत्तू—*(न०)* १. शत्रु । २. भुने हुये गेहूं या चने का आटा । ३. भुने हुये गेहूं या चने के आटे का एक मिष्टान्न । **सातू ।**

सत्तूकार—दे० सतूकार ।

सत्थ—दे० सथ ।

सत्पुरुष—*(न०)* १. सद् आचरण या विचारों वाला साधु-पुरुष । सदाचारी पुरुष । २. सज्जन । ३. भक्त या ज्ञानी पुरुष ।

सत्य—*(वि०)* १. सत् से युक्त । २. वास्तविक । ३. यथार्थ । ठीक । ४. असल । अकृत्रिम । *(न०)* १. सर्वोच्च पारमार्थिक सत्ता । ब्रह्म । २. परमेश्वर । विष्णु । ३. तथ्य । सच्ची बात ।

सत्यनारायण—*(न०)* १. विष्णु भगवान का एक लोक पूज्य रूप । सत्यनारायण । २. सत्य रूपी नारायण । नारायण (सच्चिदानन्द) का सत्य रूप । ३. विष्णु । भगवान का एक नाम । ४. ईश्वर ।

सत्यपुर—*(न०)* ऐतिहासिक नगर सांचार (मारवाड़) का शिलालेखों एवं काव्यों में उल्लिखित संस्कृतनिष्ठ नाम ।

सत्यवादी—*(वि०)* १. सत्य बोलने वाला । **सतवादी** । २. दृढ़ प्रतिज्ञ ।

सत्यवान—*(न०)* साल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसे सावित्री ने वरण किया था और उसे यमपाश से मुक्त करवाया था । सावित्री का पति । *(वि०)* १. सत्य बोलने वाला । २. वचन का पालन करने वाला । ३. सच्चा । ईमानदार । सतो । साँचो ।

सत्यानाश—*(न०)* सर्वनाश । नाश ।

सत्र—*(न०)* १. शत्रु । दुश्मन । **बैरी** । २. यज्ञ । ३. यज्ञ के प्रारम्भ होने से समाप्त होने तक (१३ से १०० दिन का) समय । ४. एक परीक्षा-काल से दूसरी परीक्षा के बीच का विद्यालय के अध्ययन-क्रम का समय । दो परीक्षाओं के बीच का अभ्यास-काल । दो परीक्षाओं के बीच का अन्तर । टर्म । सेशन । ५. सदाव्रत । ६. घर ।

सत्रकोटी—*(न०)* वज्र ।

सत्र-घड़—*(ना०)* शत्रु सेना । दुश्मन की फौज ।

सत्रव—*(न०)* शत्रु । दुश्मन । **बैरी** । **सात्रव** ।

सत्रवट—दे० सात्रवट ।

सत्र-साल—*(वि०)* शत्रु के लिए शल्य रूप । **शत्रुसाल** ।

सत्रह—दे० सतरै ।

सत्राट—*(न०ब०व०)* १. शत्रुगण । शत्रु-समूह । २. शत्रुता । ३. शत्रु ।

सत्राटाँ-करणी-सरद—*(ना०)* तलवार ।

सत्रांजीत—*(न०)* १. भीम । २. शत्रुजयी ।

सत्री—*(ना०)* स्त्री । सुगाई । बैर ।

सत्रु—*(न०)* शत्रु । दुश्मन । वैरी । दुसमी ।

सत्रुघण—दे० शत्रुघ्न ।

सत्रूपा—दे० शतरूपा ।

सथ—*(न०)* १. साथ । २. संगति । *(अव्य०)* से । द्वारा ।

सथपाळ—*(वि०)* कारवाँ या पथिकों का रक्षक । सार्थपाल ।

सथान—*(न०)* १. स्थान । जगह । २. नगर । शहर ।

सथान-वासो—*(न०)* १. शुभ स्थान में निवास । २. निवास योग्य सुस्थान । **सुथानवासो** ।

सथापण—*(न०)* स्थापन ।

सथिर—*(वि०)* १. स्थिर । स्थायी । २. शांत । ३. दृढ़ । ४. निश्चित । *(ना०)* पृथ्वी ।

सथीरण—दे० सथिर ।

सथूळ—*(वि०)* स्थूल । मोटा । **जाड़ो** ।

सथ्थ—दे० सथ ।

सद—दे० सद् ।

सदई—दे० सदा ।

सदके—*(अव्य०)* न्योछावर । बलिजाना । बलिहार ।

सदकेजाणो—*(मुहा०)* न्योछावर होना । बलि जाना । उत्सर्ग होना ।

सदको—*(न०)* निछावर । सदका । **वारणो** । बलिहारी । उत्सर्ग ।

सदकोजी—*(अव्य०)* 'मेरे गुण, रूप, वैभव, ख्याति इत्यादि पर न्योछावर होने वाला वह व्यक्ति' इस बड़प्पन-भाव का अहम्-पद ।

सदगत—दे० सदगति ।

सदगतनाथ—*(न०)* विष्णु ।

सदगति—*(ना०)* १. शुभगति । २. मोक्ष प्राप्ति । ३. अच्छी दशा । सद्गति ।

सदगुण—*(न०)* अच्छा या अच्छे गुण ।

सदगुणी—*(वि०)* सद्गुणों वाला। अच्छे गुणों से युक्त (व्यक्ति)।

सद-घटा—*(ना०)* सभा।

सदणो—*(क्रि०)* १. अपनी प्रकृति के अनुकूल होना। भोजनादि का अनुकूल होना। ३. रूचि होना। ४. रूचिकर होना।

सदन—*(न०)* १. घर। भवन। २. संसद्।

सदबुद्ध—*(न०)* १. गणेशजी। गणपति। २. उत्तम बुद्धि।

सद-भागण—*(वि०)* भाग्यशालिनी। सुहागिन। सुहागण।

सद-भागी—*(वि०)* भाग्यशाली।

सदम—दे० सदन।

सदमो—*(न०)* १. मानसिक आघात। २. अफसोस। ३. दुख। रंज। ४. मनस्ताप। सदमा।

सदर—*(वि०)* १. ईमानदार। २. अच्छी स्थिति वाला। ३. मुख्य। प्रधान। *(न०)* १. केन्द्र स्थान। २. सभापति। अध्यक्ष।

सदर-आसामी—*(ना०)* १. ईमानदार व्यक्ति। २. वह व्यक्ति या कृषक जो अपना कर्ज चुकाने में समर्थ हो। ३. अच्छी स्थिति वाला व्यक्ति। संपन्न व्यक्ति।

सदर-बाजार—*(न०)* मुख्य या बड़ा बाजार।

सदर-मुकाम—*(न०)* मुख्य मुकाम।

सदरी—*(ना०)* छाती पर पहिनने की बंडी। एक छोटा पहनावा।

सदळ—*(वि०)* १. सेना सहित। दल सहित। २. पत्र (पत्ता) सहित। *(न०)* बड़ी सेना।

सदस्य—*(न०)* सभासद। मेम्बर।

सदा—*(अव्य०)* १. हररोज। हमेशा। नित्य। २. हर समय।

सदाई—*(अव्य०)* हररोज। हमेशा। नित्य।

सदाई-लगै—*(अव्य०)* १. परम्परा से। २. सदा ही। ३. सदा के लिये।

सदाकत—*(ना०)* सत्यता। सच्चाई।

सदा-कँवर—दे० लाड-कँवर।

सदा-कँवरि—*(ना०)* पुत्री। लाड-कँवरी

सदाग—*(वि०)* दाग वाला। कलंकित।

सदा-गति—*(न०)* पवन। हवा।

सदाचार—*(न०)* १. शुभ आचार। सदाचरण। २. शिष्ट व्यवहार।

सदाचारी—*(वि०)* १. अच्छे आचरण वाला। २. धर्मात्मा।

सदानंद—*(न०)* १. शाश्वत आनन्द। २. परमानंद। ३. परमेश्वर। ४. शिव। *(वि०)* सदा आनंद में रहने वाला।

सदाप—*(वि०)* सगर्व। साभिमान। सदर्प।

सदाफळ—*(न०)* नारियल। श्रीफल।

सदामद—*(अव्य०)* १. सदा से चलता आने वाला। परम्परागत। २. सदा। नित्य। हमेशा। सर्वदा। निरन्तर।

सदार—*(वि०)* पत्नी सहित। सपत्नीक। सजोड़े।

सदारत—*(ना०)* अध्यक्षता। सभापतित्व।

सदालग—*(अव्य०)* १. हमेशा तक। २. हमेशा के लिए। ३. सदा ही।

सदावरत—*(न०)* १. वह स्थान जहां गरीबों को नित्य खाने को दिया जाता हो। २. नित्य दान में दिया जाने वाला भोजन। सदावर्त। सदाव्रत। ३. सदा अन्न दान करने का व्रत।

सदाव्रत—*(न०)* १. नित्य दिया जाने वाला दान। सदावर्त। २. हमेशा भोजन अथवा अन्न बाँटने का व्रत। **सदावरत**। दे० सदावरत।

सदाशय—*(वि०)* शुभ आशय वाला।

सदाशिव—*(न०)* शिव। महादेव। *(वि०)* सदा मंगलमय।

सदा-सुहागण—*(ना०)* १. सदा सौभाग्यवती स्त्री। २. वेश्या। **पातर**।

सदाँ—दे० सदा।

सदिये—*(अव्य०)* १. दिन रहते। दिन अस्त होने के पहिले। २. जल्दी।

सदी—*(ना०)* १. शती। शताब्दी। २. सैकड़ा। सौ का समूह। ३. एक शाही मनसब। ४. क्रिकेट के सौ रन।

सदीव—*(अव्य०)* सदैव। हमेशा। **सदा**।

सदीहे—दे० सदिये।

सदेई—दे० सदा।

सदैं—*(क्रि०वि०)* सदा। सदैव।

सदोगत—*(ना०)* १. सद्गति। २. मोक्ष। ३. सत्योक्ति।

सदोमत—*(वि०)* सद्मति वाला। *(ना०)* सद्मति।

सदोरी—*(वि०)* १. दुखिता। २. उदास। ३. नाराज।

सदोरो—*(वि०)* १. नाराज। अप्रसन्न। २. क्रुद्ध। ३. दुखी। ४. सुस्त। आलसी।

सद्गति—दे० सदगति।

सद्गुण—दे० सदगुण।

सद्गुरू—*(न०)* अज्ञान को मिटाकर परमानन्द की प्राप्ति कराने वाला गुरु। ज्ञानमूर्ति। श्रेष्ठ गुरु।

सद्-ग्रन्थ—*(न०)* १. वेद, पुराण, उपनिषद, ब्राह्मण आदि धर्म ग्रन्थ। २. आर्ष-ग्रन्थ। ३. नीति ग्रन्थ।

सद्-भाव—*(न०)* १. मंगल कामना। २. अच्छा भाव। छल कपट से रहित भाव।

सद्-भावना—दे० सद्भाव।

सद्द—*(न०)* १. शब्द। लफ्ज। २. शब्द। आवाज। ३. पुकार। **हेलो**।

सधण—*(अव्य०)* पत्नी सहित। **सजोड़े**। *(ना०)* पत्नी। **घण**। **जोड़ायत**।

सधणो—*(क्रि०)* १. सिद्ध होना। बनना। सम्पन्न होना। २. काम चलना या चलाना। अभ्यस्त हो जाना। ४. प्रयोजन सिद्धि के लिए अनुकूल होना। ५. लक्ष्य ठीक होना। निशाना बराबर लगना। ६. पूरा होना। बराबर होना।

सधर—*(वि०)* १. दृढ़। मजबूत। २. कठिन। **कठण**।

सधर्मी—*(वि०)* १. मेरे अपने धर्म का। २. एक ही धर्म का। **साधर्मी**।

सधवा—*(ना०)* सौभाग्यवती स्त्री। सुहागिन स्त्री। **सुहागण**।

सधीर—*(ना०)* पृथ्वी। *(क्रि० वि०)* धीरज सहित। *(वि०)* धीरजवान।

सधुर—*(वि०)* पत्नी वाला। *(विधुर का उलटा)*।

सधुरंधर—*(न०)* बैल। **बळद**।

सधू—*(ना०)* पुत्री। कन्या। **बेटी**। **छोकरी**।

सधूकड़ी—*(वि०)* १. साधुओं की भाषा। २. संत-साहित्य की भाषा।

सन—*(न०)* १. वर्ष। संवत्। २. जूट का पौधा या रेशा। **सण**।

सनक—*(ना०)* १. मन की विक्षिप्त लहर। २. पागल जैसा आचरण। **झक्क**। ३. ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सनकारणो—*(क्रि०)* आँख का इशारा करना ।

सनकारी—दे० सनकारो ।

सनकारो—*(न०)* १. सैन । संकेत । २. हाथ आँख आदि का इशारा ।

सनकियो—दे० सनकी ।

सनकी—*(वि०)* सनक वाला झक्की ।

सनद्ध—*(वि०)* १. सन्नद्ध । उद्यत । तैयार । २. सज्ज । *(न०)* कवच ।

सनत-कुमार—*(न०)* ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम । सनत्कुमार ।

सनद—*(ना०)* १. परवाना । प्रमाण पत्र । शासकीय प्रमाणपत्र । सनद । २. विश्वास । भरोसा । ३. प्रमाण । सबूत ।

सनध—दे० सनद्ध ।

सनध-बंध—*(वि०)* सन्नाहबद्ध । कवच-धारी ।

सनम—*(न०)* प्यारा । प्रिय ।

सनमन—दे० संबंध ।

सनमंध—दे० संबंध ।

सनमान—*(न०)* १. आदर । मान । सम्मान । २. प्रतिष्ठा । ३. गौरव ।

सनमुख—दे० सम्मुख ।

सनस—*(ना०)* १ सन्देश । **सनेसो** । २. चिंता । ३. लज्जा । शर्म । ४. सनसनाहट । घबराहट ।

सनसणो—*(क्रि०)* १. चिंतित होना । २. घबराना । ३. लज्जित होना । ४. इशारा पाना । ५. सचेत होना । ६. संदेश देना । ७. उत्तेजित होना । ८. इशारा करना ।

सनसनाटी—*(ना०)* १ अनहोनी बात के कारण उद्भ्रान्त स्तब्धता । २. खलबली । सनसनी । ३. घबराहट ।

सनसनी—सनसनाटी ।

सनंद—दे० सनद ।

सनंदन—*(न०)* ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम ।

सनाढ्य—*(न०)* एक ब्राह्मण जाति ।

सनातन—*(वि०)* १. आदि काल से चला आने वाला । २. अति प्राचीन । ३. सदा बना रहने वाला । शाश्वत । ४. अनादि और अनंत । ५. क्रमागत । ६. परम्परालब्ध । *(न०)* १. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम । सनत्सुजात । २. प्राचीनकाल । ३. बहुत दिनों से चला आने वाला व्यवहार या परम्परा । ४. सम्बन्ध । रिश्ता । ५. ब्रह्मा । ६ विष्णु । ७. शिव ।

सनातन-धर्म—*(न०)* १. परम्परागत धर्म । २. प्राचीन काल से चला आने वाला हिन्दू धर्म ।

सनातन-धर्मी—*(वि०)* सनातन धर्म का अनुयायी ।

सनातन-पुरुष—*(न०)* विष्णु ।

सनातनी—*(वि०)* सनातन धर्म का अनुयायी ।

सनाथ—*(वि०)* जिसका कोई स्वामी, रक्षक या पति हो । जो अनाथ न हो । 'अनाथ' का उलटा ।

सनाथा—*(वि०)* १. सधवा । सुहागिन । **सुहागण** । २. पति सहित ।

सनान—*(ना०)* स्नान । **सिनान** ।

सनानी—*(वि०)* नित्य स्नान करने का नियम वाला । *(न०)* बिसनोई जाति का व्यक्ति । दे० बिसनोई ।

सनाप—*(वि०)* १. सीमित । २. नाप सहित । ३. नापा हुआ ।

सनाय—दे० सोनामखी ।

सनाह—*(न०)* १. कवच । सन्नाह । बख्तर । २. पति । नाथ । ३. सनाथ ।

सनि-पिता—*(न०)* सूर्य । शनि-पिता ।

सनियाई—*(वि०)* न्याय करने वाला । सुन्यायी । न्यायकर्ता ।

सनीचर—*(न०)* शनैश्चर । शनि । थावर ।

सनीचर-वार—दे० शनिवार ।

सनीचरियो—दे० थावरियो ।

सनीड़—*(क्रि०वि०)* निकट । पास । सन्निकट । कनै । नैड़ो ।

सनीपात—दे० सन्निपात ।

सनीम—*(न०)* १. मित्र ('गनीम' का विरुद्धार्थ शब्द) । २. क्षत्री । राजपूत । *(वि०)* सनियम । नियमित । *(अव्य०)* नियमपूर्वक ।

सनेचर—दे० सनीचर ।

सनेव—दे० स्नेह ।

सनेस—दे० संदेश ।

सनेसो—दे० संदेसो ।

सनेह—दे० स्नेह ।

सन्नाह—*(न०)* कवच । सनाह । बख्तर । बगतर ।

सन्निपात—*(न०)* १. वात, पित्त और कफ इन तीनों के एक साथ कुपित होने की स्थिति । २. रोग की भयानकता का उपद्रव । सनीपात । ३. एक साथ गिरना । ४. कई घटनाओं का एक साथ होना ।

सन्मान—दे० सनमान ।

सन्मार्ग—*(न०)* १. सद्गुणों से युक्त आचरण । २. जीवन यापन का सुन्दर और श्रेष्ठ मार्ग । नेक राह । सुपथ । ३. नीति का मार्ग ।

सन्यास—दे० संन्यास ।

सन्नत—*(न०)* सत्य । 'असत' का उलटा ।

सपखाळो—*(वि०)* १. जबरदस्त । २. अत्यधिक उग्र । ३. उतावला । ३. पाँखों वाला । ५. जिसके पक्ष में अधिक लोग हैं । बड़े पक्ष वाला । ६. प्रक्षालित । ७. स्नपित । *(न०)* एक डिंगल छंद ।

सपगां—*(क्रि०वि०)* होश में । सुधि में । *(वि०)* स्वावलम्बी । स्वाश्रयी ।

सपड़ाइजणो—दे० सपड़ावणो ।

सपड़ाणो—दे० सपड़ीजणो ।

सपड़ावणो—*(क्रि०)* १. फँसना । २. पकड़ा जाना । सपड़ीजाणो । ३. वश में होना ।

सपड़ीजणो—दे० सपड़ावणो ।

सपणी—*(ना०)* सर्पिणी । सरपणी । सापणी ।

सपत-सुर—*(न०)* संगीत के सप्त स्वर । स, रे, ग, म, प, ध और नी—ये सात स्वर ।

सपतास—*(न०ब०व०)* १. सूर्य के रथ के सात घोड़े । सप्ताश्व । २. घोड़ा ।

सपती—दे० सपतास । *(वि०)* १. पति वाली । २. पति सहित । ३. सधवा ।

सपनो—*(न०)* स्वप्न । सुपनो ।

सपन्न—*(वि०)* १. उत्पन्न । २. निर्मित ।

सपन्नो—*(क्रि०भू०)* उत्पन्न हुआ ।

सपरस—दे० स्पर्श ।

सपरसणो—*(क्रि०)* स्पर्श करना । छूना ।

सपरसन—*(न०)* वायु । पवन । वायरो ।

स-परिवार—*(अव्य०)* परिवार सहित । सकुटुम्ब । सिगरी ।

स-पलाण—*(वि०)* १. जीन-काठी सहित (ऊंट, घोड़ा आदि) । २. पलान कसा हुआ ।

स-पलाणो—*(वि०)* जिस पर पलान कसा हुआ हो (ऊंट, घोड़ा आदि) ।

सपळोटियो—*(न०)* १. साँप का बच्चा। २. छोटा साँप। **सपोळियो**।

सपंक—*(वि०)* कीचड़ सहित। **काद्याळो**।

सपाट—*(वि०)* बिना खड्डे या टेकरे वाला। एकसा (मैदान)। समतल।

सपाटा-बंध—*(अव्य०)* एकदम। तुरन्त। त्वरा से। झटाझट।

सपाटो—*(न०)* १. चलने, दौड़ने, उड़ने इत्यादि का वेग। सपाटा। २. दौड़। ३. सैर-सपाटा।

सपाड़ो—*(न०)* अहसान। उपकार। आभार। **पाड़**। *(वि०)* उपकार से दबा हुआ।

स-पाद—*(वि०)* १. सवा। २. सवाया। ३. चरण-सहित।

सपादलक्ष—*(न०)* राजस्थान के भूतपूर्व राज्य मारवाड़ का नागोर जिला। **स्वाळख**।

सपिंड—*(न०)* १ एक ही कुल की सात पीढ़ियों तक को पिंड देने का अधिकारी पात्र। २. वंशज।

सपिंडीकरण—*(न०)* मृतकों को पितरों में मिलाने का श्राद्धकर्म।

सपूत—*(न०)* सुपुत्र। अच्छा और योग्य पुत्र। *(वि०)* योग्य। लायक।

सपूतपणो—दे० सपूताई।

सपूतर—दे० सपूत।

सपूताई—*(ना०)* १. सपूत होने का भाव। २. सुपात्रता। योग्यता।

सपूती—*(ना०)* १. सपूत की माता। २. **लायकी**। योग्यता।

सपेत—दे० सफेद।

सपेती—दे० सफेदी।

सपेद—दे० सफेद।

सपेद-कूड़—*(न०)* बिलकुल झूठ। एकदम झूठ। **साव कूड़**।

सपेदी—दे० सफेदी।

सपेदो—दे० सफेदा।

सपोळियो—दे० सपळोटियो।

सप्त—*(वि०)* गिनती में सात। तीन और चार। सात। *(न०)* सात का अंक '७'।

सप्तक—*(न०)* १. संगीत में सात स्वरों का समूह। संगीत के सात स्वर—सा, रे, ग, म, प, ध, नि। २. सात वस्तुओं का समाहार। ३. सात का समूह। *(वि०)* १. सात। २. सातवाँ।

सप्त-तंतु—*(न०)* यज्ञ। जगन।

सप्त-द्वीप—*(न०)* जंबू, कुश, प्लक्ष, क्रौंच, शाल्मलि, शाक और पुष्कर नामक सात भूभाग (पुराण)।

सप्त-धातु—*(ना०)* १. शरीरस्थ रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र नामक संयोजक द्रव्य। २. सोना, चाँदी, तांबा आदि सात मुख्य खनिज पदार्थ।

सप्त-पदी—*(ना०)* १. पाणिग्रहण के समय वर-वधू की दी जाने वाली अग्नि की सात परिक्रमाएँ। २. पाणिग्रहण के समय अग्नि की साक्षी में वर-वधू द्वारा परस्पर सात वचनों का लेन-देन। ३. वेद के सात मंत्रों द्वारा परस्पर की जाने वाली प्रतिज्ञा। ४. प्रतिज्ञा के सात वेद-मंत्र। सप्तपदी। ५. आदान-प्रदान की क्रिया।

सप्त-पाताल—*(न०)* पृथ्वी के नीचे के अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल महातल और पाताल नामक सात लोक।

सप्तपुरी—*(ना०)* १. अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची,

अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका नामक सात पुण्य तीर्थ स्थान मोक्ष देने वाले कहे गये हैं। २. सात पुरियाँ।

सप्त-मातृका—*(ना०)* १. विवाहादि में आद्य-पूजनीया ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, इंद्राणी, कौमारी, वाराही और चामुंडा—ये सात पवित्र दैवी-शक्तियां। २. सात लोक-मातृकाएँ। मावड़ियांजी। मायाँजी।

सप्तमी—*(ना०)* चान्द्र मास में कृष्ण या शुक्ल पक्ष की सातवीं तिथि। **सातम**। **सातैं**।

सप्तर्षि—*(न०)* १. गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वशिष्ट, कश्यप और अत्रि। २. सात तारे जो ध्रुव की परिक्रमा करते दिखाई देते हैं।

सप्त-शती—*(ना०)* सात सौ पद्यों का संग्रह। सात सौ पद्यों वाला ग्रन्थ। **सतसई**।

सप्त-स्वर—*(न०)* संगीत के सात स्वर। दे० सप्तक।

सप्ता—*(ना०)* १. सात। २. सात दिन। ३. सात दिन का समय। सप्ताह। **हफतो**। ४. सात दिन में कही (सुनाई) जाने वाली श्रीमद्भागवत की कथा।

सप्ताश्व—*(न०)* १. सूर्य के रथ के सात घोड़े। **सपतास**।

सप्ताह—*(न०)* सात दिन का समय। सोमवार से रविवार तक का समय। हफ्ता। **हफतो**।

सफ—*(न०)* १. खुर। २. कतार। पँक्ति। ३. फर्श। ४. चटाई। ५ रेखा।

सफर—*(ना०)* यात्रा। मुसाफिरी। **गामतरो**। प्रवास।

सफर-खर्च—*(न०)* मार्ग-व्यय। **भत्तो**।

सफरी—*(ना०)* मछली। *(वि०)* १. सफर में साथ रखने लायक। २. सफर का।

सफरी-भंडार—*(न०)* समुद्र।

सफळ—*(वि०)* १. जिसमें फल लगे हों। फल वाला। २. जिसकी कामना या काम सिद्ध हुआ हो। कृतकार्य। ३. कामयाब। सफल। **पास**।

सफा—*(वि०)* स्वच्छ। साफ। स्पष्ट। *(अव्य०)* १. कतई। नितान्त। बिल्कुल। **साव**। २. समाप्त। खतम। ३. पूर्णतया। ४. सबका सब। *(न०)* पुस्तक का पृष्ठ या पन्ना।

सफाई—*(ना०)* १. स्वच्छता। पवित्रता। २. चतुराई। ३. अभियोग का जवाब या बचाव। ४. झगड़े टंटे का निबटारा। ५. ऋण का चुकारा। **बेबाक**।

सफाईदार—*(वि०)* १. सफाई वाला। २. साफ करने वाला। ३. साफ रहने वाला। ४. खूब स्पष्ट और स्वच्छ। **साफ**।

सफाई-सुथराई—*(ना०)* १. स्वच्छता और अच्छापन। २. पवित्रता।

सफाखानो—*(न०)* अस्पताल। दवाखाना। शिफाखाना। **इसपताळ**।

सफाचट—*(वि०)* १. साफ। खत्म। समाप्त। बिल्कुल खतम। २. जिस पर कुछ लगा न रह गया हो। ३. समतल।

सफाचट-करणो—*(मुहा०)* १. सब का सब खाजाना। २. हड़प करना। **हड़पणो**। ३. खतम करना। नाश करना। **खतम करणो**।

सफायो—*(न०)* १. पूरी तरह से नष्ट। सम्पूर्ण विनाश। सफाया। निर्मूलन। **खातमो**। २. कुछ भी शेष न रह जाना।

सफायो-करणो—*(मुहा०)* पूर्ण रूप से खत्म करना। **खातमो करणो**।

सफाळो—*(क्रि०वि०)* १. कूदता हुआ। उछलता हुआ। २. लाँघता हुआ।

सफील—*(ना०)* १. परकोटा । २. दीवाल। **भींत** ।

सफेद—*(वि०)* १. उजला । उज्ज्वल । २. धवल । श्वेत । शुभ्र । **धोळो** । ३. गौर ।

सफेद-झूठ—*दे०* सपेद कूड़ ।

सफेदी—*(ना०)* १ दीवाल पर की जाने वाली चूने के घोल की पुताई । **धोळाई** । २. धवलता । शुभ्रता । ३. श्वेत प्रदर । **धोळो** ।

सफेदी-आणो—*(मुहा०)* १. श्वेत प्रदर का रोग होना । **धोळो आवणो** । **धोळो पड़णो** । २. बालों का सफेद होना । २. बुढ़ापा आना ।

सफेदी-करणो—*(क्रि०)* चूने के घोल से पुताई करना । **पोतणो** । **धोळणो** ।

सफेदी-पड़णी—*(मुहा०)* *दे०* सफेदी आणो ।

सफेदो—*(न०)* जसद की भस्म और तेल मिला कर बनाया हुआ एक सफेद रंग । सफेंदा ।

सफो—*(न०)* पुस्तक का पन्ना या पृष्ठ । सफा । **पानो** ।

सब—*(वि०)* १. सर्व । सकल । समग्र । २. पूरा । सारा । **सगळो** ।

सबक—*(न०)* १. पाठ । २. शिक्षा । ३. सजा । ४. नसीहत । **सीख** ।

सबको—*(वि०)* मजबूत । दृढ़ । **सैंठो** । *(क्रि०वि०)* मजबूती से । दृढ़ता से ।

सबड़काणो—*(क्रि०)* १. सबड़के के साथ पीना । २. एक बार में पी जाना ।

सबड़को—*(न०)* १. किसी द्रव पदार्थ को होठों द्वारा मुंह में खींचकर पीने से होने वाला शब्द । २. तरल ग्रास ।

सबद—*(न०)* १. संतों के बनाए हुए हितोपदेश के पद । महात्माओं का रचा हुआ दूहा, साखी, पद आदि । आध्यात्मिक साहित्य । २. उपदेश । ३. संतवाणी । ४. शब्द । सार्थक अक्षर समूह । ५. आवाज । **साद** ।

सबद-ग्रह—*(न०)* कान । कर्ण शब्द । ग्रह ।

सबदी—*(ना०)* *दे०* सबद सं. १, २, ३, सबद रचना । सबद काव्य । संतों के पद, साखी इत्यादि । ५. सबद संग्रह । पद-साखी इत्यादि का संग्रह । ६. यश । कीर्ति । **जस** ।

सबब—*(अव्य०)* कारण । हेतु । वजह ।

सबर—*(न०)* संतोष । **धीरज** । सब्र ।

सबरस—*(न०)* नमक । लूण

सबरी—*(ना०)* १. मुनादी । ढिंढोरा । २. रामायण में उल्लिखित रामभक्त भीलनी । शबरी । *(वि०)* सब्र करने वाली । क्षमाशीला ।

सबळ—*(वि०)* १. बलवान । सशक्त । सबल । २. दृढ़ । मजबूत । ३. विद्वता, बुद्धि तथा ज्ञान का धनी । ४. ठोस ।

सबळ-दळां-गाहणो—*(न०)* योद्धा । *(वि०)* सबल सेनाओं का नाश करने वाला ।

सबळी—*(ना०)* वीरांगना । *(वि०)* १. शक्तिशाली । बलवान । **जबरी** । २. बहु पुत्र-पौत्रों वाली । ३. पतिव्रता । सती । ४. सधवा ।

सबळो—*(वि०)* १. जबरदस्त । **जबरो** । २. ताकतवर । शक्तिवान । ३. महत्वपूर्ण । बड़ा भारी । ४. अत्यावश्यक । ५. उच्च श्रेणी का । श्रेष्ठ । ६. बड़े कुटुम्ब वाला । ७. सम्पन्न ।

सबाध—*(वि०)* १. तमाम । समस्त । **बाधो** । **सँग** । २. बाँधा हुआ । ३. हुआ हुआ । *(न०)* १. अवरोध । रोक । २. नियंत्रण । बंधन ।

सबाब—*(ना०)* १. पुण्य । २. भलाई । सबाब नेकी का बदला ।

सबी—*(ना०)* १. तसबीर । **छबी** । छवि । सिबी । २. शोभा । कांति ।

सबूत—*(ना०)* प्रमाण । **पुरावो** ।

सबूर—*(ना०)* सब्र । धीरज । सहनशक्ति ।

सबूरी—*(ना०)* १. धैर्य । सब्र । २. संतोष । ३. सहन-शक्ति । ४. सलामती । क्षेम-कुशल । ५. इज्जत । प्रतिष्ठा । **मान** ।

सबै—*(अव्य०)* १. सब ही । २. सभी । २. सभी जगह । ३. सब में ।

सबोझळ—*(वि०)* १. पूरा भरा हुआ । २. झुका हुआ । ३. झुकता हुआ ।

सबोडणो—*(क्रि०)* १. प्रवाही पदार्थ को सबड़के के साथ खाना या पीना । २. अधिक खाना । **खबोड़णो** ।

सबोड़ो—दे० सबड़को ।

सब्ज—*(वि०)* हरा । *(ना०)* हरियाली ।

सब्जी—*(ना०)* साग-भाजी । हरी भाजी । २. पत्तों वाली तरकारी ।

सभय—*(वि०)* १. डरा हुआ । २. भय से । भयपूर्ण । सडर ।

सभर—*(वि०)* १. पूरा भरा हुआ । भरपूर । २. भारवाला । भारी । वजनी ।

सभा—*(ना०)* परिषद । गोष्ठी । समिति । **मेळावड़ो** । **छभा** ।

सभाग—दे० सौभाग्य ।

सभागण—*(वि०)* सौभाग्यशालिनी । सभागिन । २. सुहागिन ।

सभागियो—*(वि०)* सौभाग्यशाली ।

सभागी—दे० सभागियो ।

सभागो—दे० सभागियो ।

सभा-चतुर—*(वि०)* सभा में चतुराई या विवेकपूर्ण बात करने वाला ।

सभाध्यक्ष—दे० सभापति ।

सभापति—*(ना०)* सभा का अध्यक्ष । प्रमुख । सदर ।

सभा-बिगाड़—दे० सभा बिगाड़ू ।

सभा-बिगाड़ू—*(वि०)* १. जो सभा में विवेक से नहीं बोलना जानता हो । २. जिसके बोलने से सभा का अपमान या हानि होती हो ।

सभाव—*(ना०)* १. स्वभाव । आदत । **सुभाव** । **हेवा** । २. भाव या भावना सहित ।

सभासद—*(ना०)* सभा का सदस्य । मेम्बर ।

सभी—*(वि०)* समस्त । सबही । **सगळा** ।

सभीक—दे० सभीत ।

सभीत—*(क्रि०वि०)* डरते हुए । भय पूर्वक । *(वि०)* डरा हुआ ।

सभीतो—दे० सुभीतो । दे० सभीत ।

सभीय—दे० सभीत ।

सभीह—दे० सभीत ।

सभोग—दे० आभोग ।

सभोमो—*(वि०)* जानकार । बहुज्ञ । **भोमियो** ।

सभ्य—*(ना०)* १. सदस्य । **सभासद** । २. भद्र पुरुष । *(वि०)* १. ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति और उद्योग इत्यादि की दृष्टि से विकसित (व्यक्ति, समाज, राष्ट्र) । २. शिष्ट । भद्र । ३. विनीत । सुशील । ४. सुसंस्कृत ।

सभ्यता—*(ना०)* १. सभ्य होने का भाव, गुण या स्थिति । २. शिष्टता । दाक्षिण्य । ३. नागरिकता । ४. सज्जनता । ५. ज्ञान, संस्कृति और काल इत्यादि की दृष्टि से समाज, जाति और राष्ट्र की समुद्धावस्था ।

सम—*(वि०)* १. बराबर । सदृश । २. समतल । ३. हेर-फेर रहित । ४. जो दो से पूरी बँट जाय (वह संख्या) ।*(न०)* १. शपथ । सौंगध । **सोंस** । **सोगन** । २. ताल का आरम्भ स्थान (संगीत) ३. लय में गति की समाप्ति का स्थान (संगीत) ।

समइयो—*(न०)* अवसर । मौका । **समो** ।

समक—*(वि०)* १. समग्र । **सगळो** । **सारो** । २. बराबरी का । *(ना०)* बराबरी ।

समकक्ष—*(वि०)* बराबरी का । बराबरी वाला । समान कक्षा का । **एक सरीखो** ।

सम-कालीन—*(वि०)* एक ही समय में स्थित । समसामयिक ।

समकित—*(न०)* सच्ची तत्व जिज्ञासा (जैन) ।

सम-कोण—*(न०)* १. ९०° डिग्री का कोण (ज्यामिति) । २. जिसके सारे कोण बराबर हों ।

समक्ष—*(अव्य०)* १. प्रत्यक्ष । आंखों के सामने । २. उपस्थिति में । ३. **सामने** । **सामां** ।

समग—*(वि०)* समग्र । समस्त । **सगळो** । **सारो** । २. सत्य । **साच** ।

समग्र—*(वि०)* सब का सब । समस्त । पूरा । सारा । **सगळो** । **सारो** ।

समच—*(वि०)* सब । समस्त । समूचा ।

सम-चरण—*(न०)* दोहे का दूसरा और चौथा चरण ।

समचो—*(न०)* १. संदेश । २. समाचार । ३. संकेत । इशारा । ४. संवाद ।

सम-चोरस—*(वि०)* जिसके चारों पहलू एक नाप के हों । *(न०)* चारों कोण एक नाप के हों ऐसी आकृति । **समचतुष्कोण** ।

समछरी—*(ना०)* १. सम्वतसरी । वार्षिक मरण-तिथि । २. सांवत्सरिक-श्राद्ध । ३. जैनों का पर्यूषण पर्व । संवत्सरी । **छमछरी** । **समचरी** ।

समज—दे० समझ ।

समजण—दे० समझ ।

समजणो—दे० समझणो ।

समजदार—दे० समझदार ।

समजदारी—दे० समझदारी ।

समज-फेर—दे० समझ फेर ।

समज-शक्ति—*(ना०)* समझने की शक्ति ।

समजावट—दे० समजास ।

समजास—*(ना०)* समझाने का प्रयत्न ।

समजू—दे० समझू ।

समजोतरी—दे० समजोती ।

समजोती—*(ना०)* १. इशारा । संकेत । २. इशारा से समझाना ।

समजोता—दे० समझोते ।

समझ—*(ना०)* १. बुद्ध । अक्ल । २. पसंद । मन पसन्द ।

समझण—*(ना०)* १. समझ में आना । २. समझ । बुद्धि ।

समझणी—*(वि०ना०)* बुद्धिमती । समझदार (स्त्री) । समझ वाली ।

समझणो—*(क्रि०)* १. जानना । समझना । २. अनुमान लगाना । कल्पना करना । *(वि०)* समझदार । बुद्धिमान । **समझू** ।

समझदार—*(वि०)* १. बुद्धिमान । अक्लमंद । **समझू** ।

समझदारी—*(ना०)* बुद्धिमानी । अक्लमंदी ।

समझ-फेर—*(ना०)* समझने में फर्क । भूल ।

समझाणो—*(क्रि०)* १. समझाना। व्याख्या करना। २. स्पष्ट करना। ३. भली-भांति परिचित करवाना। ४ उपदेश देना। ५. सिखाना। ६. डाँटना।

समझाणो-बुझाणो—*(क्रि०)* किसी बात की अच्छाई-बुराई को अच्छी तरह से कहना या समझाना समझाना-बुझाना।

समझास—*(ना०)* समझाने का प्रयत्न।

समझू—*(वि०)* समझदार। बुद्धिमान। **समझणो। सैणो।**

समझू-सोचू—*(वि०)* समझने-सोचने वाला।

समझूती—दे० समझोतो।

समझोतो—*(न०)* १. व्यवहार, लेनदेन या मतभेद आदि का समाधान। २. विवाद, झगड़े, कलह आदि में सब पक्षों में आपस में मिल कर किया जाने वाला *निपटारा। समझौता।*

समड़—दे० समवड़।

समडोळो—*(न०)* विवाह की एक प्रथा।

समत—दे० संवत।

समतळ—*(वि०)* जिसका तल ऊँचा-नीचा न हो। सपाट। समतल। **समथळ।**

समता—*(ना०)* बराबरी। तुल्यता। तूलना।

सम-तुलन—*(वि०)* समतुला।

समतुला—*(ना०)* समतोलपन। सम-तुलन।

सम-तोल—*(न०)* बराबर वजन। *(वि०)* १. बराबर वजन का। २. वजन में भारी। वजनी। **सतोल।**

समत्थ—दे० समर्थ।

समत्व—दे० समता।

समथ—दे० समत्थ।

समथळ—दे० समतळ।

समद—दे० समंद।

समदकप—*(न०)* १. समुद्र-फेन। २. फेन। **झाग। समदफीण।**

समद-फीण—*(न०)* समुद्र फेन।

समद-मेखळा—*(ना०)* पृथ्वी। धरनी।

समदर—*(न०)* समुद्र। सागर। **समंद।**

समदर-कांठो—*(न०)* समुद्र का किनारा। सागर-तट।

समदर-फीण—*(न०)* समुद्र फेन।

समदर्शी—*(वि०)* १. सब की ओर समान दृष्टि से देखने वाला। २. किसी के प्रति भेदभाव नहीं रखने वाला।

समद-सुत—*(न०)* १. चंद्र। २. अमृत।

समदाँ-पार—*(अव्य०)* १. बहुत दूर। कई २. समुद्रों को लांघने के बाद। समुद्र *की उस ओर।*

सम-दृष्टि—*(ना०)* सबके साथ एक जैसा व्यवहार। समानदृष्टि।

समध—दे० समझ। दे० संबंध।

समधण—*(ना०)* समधिन। **सगी। वेवाण।**

समधा—*(ना०)* १. पोल। अन्धाधुन्धी। २. गोटाला। ३. कमजोरी। ४. निस्सारता। ५. मर्यादा उल्लंघन। ६. गुरुजनों की आज्ञा-मर्यादा का उल्लंघन। ७. गुरूजनों की विशिष्टता या बड़प्पन रोज मानना या साधारण समझना।

समधी—*(न०)* १. पुत्र या पुत्री का ससुर। **सगो। गिनायत। गनात। वेवाई।** २. संबंधी। रिश्तेदार *(क्रि०भू०)* समझ गई।

समधो—*(क्रि०भू०)* समझ में आ गया। समझ गया। दे० समधा।

समन—*(न०)* १. अदालत में हाजिर होने का नोटिस। कचहरी का बुलावा २. *(वि०)* शमनकारी। दे० शमन।

समन्वय—*(न०)* १. एक समान व्यवस्थित क्रम। २. एक इकाई बनकर समान रूप से मिलन। ३. परस्पर संबंध या मेल। ४. परस्पर विलय। ४. एक रूपता। ६. तात्पर्य।

समपण—*(न०)* १. दान। २. समर्पण। ३. पराजय।

समपणो—*(क्रि०)* १. दान देना। २. देना। समर्पण करना। ३. समर्पण होना। ४. हार मानना। पराजय स्वीकार करना।

समप्पण—दे० समपण।

समप्पणो—*(क्रि०)* दे० समपणो।

समप्पिय—*(क्रि०भू०)* १. समर्पण किया। *(क्रि०)* १. समर्पण करिये। २. समर्पण करता हूं। समर्पण करना।

समभाव—*(न०)* १. सब प्राणियों पर एक सी स्नेह-दृष्टि। २. सुख में इतराना नहीं और दुख में विचलित नहीं होना। ३. सम्मान-निरादर में एक भाव।

समय—*(न०)* १. काल। वक्त। वखत। वेळा। २. अवसर। मौका। ३. मौसम। ४. अवकाश। फुरसत। ५. संयोग। परिस्थिति।

समय-कुसमय—*(अव्य०)* १. उपयुक्त या अनुपयुक्त समय। वेळा कुवेळा। २. अच्छे या बुरे दिन।

समय-सर—*(अव्य०)* ठीक समय पर।

समय-सरूप—*(अव्य०)* समय के अनुरूप।

समय-सार—*(अव्य०)* यदा-कदा। कभी-कभी।

समय-सारिणी—*(ना०)* रेल या बस की सवारी गाड़ियों के पहुंचने, रवाने होने या ठहरने का समय बताने वाली जंत्री या पुस्तिका। टाइम-टेबल। समय-पत्रक।

समय-सारू—*(अव्य०)* समय मिलने पर।

समयानुकूल—*(वि०)* अवसर के अनुरूप।

समयानुसार—*(अव्य०)* जैसा समय हो वैसा। वेळा-प्रमाणे।

समर—*(न०) (न०)* १. स्मर। कामदेव। २. युद्ध। लड़ाई। वेढ। आहव।

समरण—*(न०)* १. स्मरण। २. सुमरिन।

समरणी—दे० सुमरणी।

समरणो—*(क्रि०)* १. स्मरण करना। २. सुमिरन करना।

समरत्थ—दे० समर्थ।

समरथ—*(वि०)* शक्तिमान। समर्थ। बलवान।

समरधुका—*(ना०)* पुत्री। बेटी। छोकरी।

समरधुज—*(न०)* स्मरध्वज। पुरुष की लिंगेन्द्री।

समरागार—*(न०)* स्मरागार। भग। योनि।

समराथ—दे० समरथ।

समरारि—*(न०)* स्मरारि। शिव। महादेव।

समरस—*(वि०)* सदा एक सा रहने वाला।

समरांगण—*(न०)* युद्ध भूमि। रणक्षेत्र।

समरूप—*(वि०)* १. समान रूप वाला। एक समान।

समर्थ—*(वि०)* १. बलवान। शक्तिशाली। बलियो। जोरावर। समरथ। समत्थ। २. प्रभावशाली।

समर्थक—*(वि०)* १. समर्थन करने वाला। अनुमोदन करने वाला। २. समान अर्थ वाला।

समर्थन—*(न०)* १. सहमति। अनुमोदन। ३. सहारा। टेको। ३. सहायता। मदद।

समर्थवान—दे० समर्थ ।

समर्पक—*(वि०)* समर्पण करने वाला । २. उचित । योग्य ।

समर्पण—*(न०)* १. श्रद्धापूर्वक अर्पण । २. हार कर शरण में जाना ।

समळ—*(वि०)* १. मैला । गंदा । अस्वच्छ । **मैलो** । २. श्यामल । कृष्णवर्ण । **सांवळो** ।

समळावणी—दे० सँभळावणी ।

समळी—*(ना०)* चील नामक हिंसक पक्षी । **सँवळी** । **चील** ।

समवड़—*(वि०)* १. समान । सदृश । बराबर । **बरोबर** । २. प्रतिस्पर्धी । ३. बराबरी करने वाला । **बरोबरियो** । बराबरी का । *(न०)* तुलना । समता । बराबरी ।

समवड़ियो—दे० समवड़ ।

समवड़ी—*(ना०)* बराबरी । *(वि०)* बराबरी करने वाली । दे० समवड़ ।

सम-वया—*(वि०)* समान उम्र की ।

सम-वयस्क—*(वि०)* समान उम्र का । समवयी । हम उम्र । **सोयो** ।

समवरती—*(न०)* यमराज ।

समवसरण—*(न०)* १. श्रीपूज, आचार्य या साधु की अगवानी के समय इकठ्ठा होने वाला समुदाय । २. उक्त उत्सव । (जैन) ।

समवाय—*(न०)* १. राशि । समूह । झुंड । २. संयोग । ३. सम्बन्ध । ४. सदा एकसा बना रहने वाला सम्बन्ध । ५. हिस्सेदारों की पूंजी से बनी हुई व्यापारिक संस्था । कंपनी ।

समवेग—*(न०)* श्रीकृष्ण के घोड़े का नाम ।

समवेत—*(वि०)* १. एकत्रित । २. मिलाया हुआ । ३. संयुक्त ।

समष्टि—*(ना०)* १. समुदाय । २. समग्रता । (व्यष्टि का उलटा) । ३. साधुओं का वह भंडार जिसमें स्थानिक साधु निमंत्रित किये जाते हों ।

समसत—*(वि०)* समस्त । समग्र । **सघळा** । सँग ।

समसतां—*(अव्य०)* सजातीय प्राणी अथवा वस्तुओं के अलग-अलग अनेक समूहों सहित । *(वि०)* समस्त । सभी । **सघळा** ।

समसमा—*(अव्य०)* १. आमने-सामने । २. बराबरी के ।

समसाण—*(न०)* श्मशान । मरघट । **मसाण** । **जीराण** ।

समसान—दे० समसाण ।

सम-सामयिक—*(वि०)* समकालीन ।

समसेर—*(ना०)* तलवार । **तरवार** । समशेर ।

समस्त—*(वि०)* समग्र । तमाम । **सब** । **सँग** ।

समस्या—*(ना०)* १. उलझन भरी बात । जिसका निर्णय सहज में न हो सके । २. कठिन प्रश्न । ३. विकट प्रसंग । ४. किसी छंद का अन्तिम चरण जो कवियों के आगे पूरा करने को रखा जाता है । छंद का वह अंश जिस पर से पूरा छन्द बनाना हो ।

समस्या-पूर्ति—*(ना०)* १. छंद की एक पंक्ति से पूरा छंद तैयार करना । २. किसी विचारणीय विषय की पूर्ति होना ।

समहर—*(न०)* युद्ध । समर । लड़ाई ।

समंढळ—*(न०)* सूर्य । सूरज ।

समंद—*(न०)* समुद्र । सागर । **समदर** ।

समंदर—*(न०)* समुद्र । समदर ।

समंदरी—*(वि०)* १. समुद्र का । २. समुद्र संबंधी । ३. समुद्र में उत्पन्न होने वाला ।

समंद-सुत—*(न०)* १. अमृत । २. चंद्र ।

समंध—*दे०* संबंध ।

समा—*(अव्य०)* १. ही । ज्योंही । **सवाँ** । *(वि०)* समान ।

समाई—*(ना०)* १. सहन । बरदाश्त । २. २. सहन-शीलता । २. समावेश । **समाव** । ३. जैनियों के णमोकार मंत्र जपने की क्रिया या विधि । ४. सब का साथ में बैठकर स्तवन, सुमिरण, धर्म-ध्यान आदि करने का भाव या क्रिया । सामायक । ५. सामर्थ्य । शक्ति । ६. बिसात ।

समागम—*(न०)* १. संयोग । २. मिलाप । ३. आगमन । ४. सभोग । मैथुन ।

समाचार—*(न०)* १. खबर । सूचना । २. **हालचाल** । वृत्तान्त । **समंचार** । ३. कुशलक्षेम के समाचार ।

समाचार-पत्र—*(न०)* अखबार । छापो ।

समाज—*(न०)* १. व्यवसाय, आचार-विचार, भोजन तथा वैवाहिक संबंध इत्यादि बातों एवं रीति-रिवाजों से बद्ध या गठित हो गया हुआ समूह । न्यात । २. एक प्रकार का काम करने वालों का वर्ग । ३. किसी विशिष्ट उद्देश्य से गठित की गई सभा या संस्था । ४. एक धर्म या आचरण वाला जन-समुदाय । ५. एक निष्ठा से बधा हुआ जन-समूह । ६. जात । ७. समूह । गिरोह । ८. एक धर्म को मानने वाला वर्ग ।

समाजवाद—*(न०)* वह सिद्धान्त जिसके अनुसार राज्य के समस्त उत्पादन साधनों पर समाज का अधिकार हो तथा उससे उत्पादित सम्पत्ति की जहाँ तक हो सके सबको बराबर मिलने की व्यवस्था हो । (सोशलिज्म) ।

समाज-वादी—*(वि०)* १. जो समाजवाद के सिद्धान्तों को मानता हो । (सोशलिस्ट) । २. समाजवाद का । ३. समाजवाद सम्बन्धी ।

समाज-शास्त्र—*(न०)* वह शास्त्र जिसमें मनुष्य समाज की उत्पत्ति, गठन, संस्कृति आदि के विकास का विवेचन किया हुआ हो । (सोशियोलॉजी) ।

समाज-सुधार—*(न०)* समाज की कुरीतियों, खामियों इत्यादि में किया जाने वाला सुधार ।

समाज-सेवक—*(न०)* समाज की भलाई के काम करने वाला (व्यक्ति) ।

समाज-सेवा—*(ना०)* समाज की उन्नति तथा भलाई के लिए किये जाने वाले काम ।

समाजी—*(न०)* आर्य-समाजी । *(वि०)* १. समाज संबंधी । २. समाज का ।

समाजोग—*(न०)* १. समायोग । संयोग । २. मौका । अवसर । ३. अचानक मिलन । ४. योग्य समय । अनुकूल समय ।

समाण—*(न०)* समावेश । *दे०* समान ।

समाणी—*(ना०)* १. एक औजार । बारीक वस्तु पकड़ने का छोटा चिमटा । चिमटी । **चिमटड़ी** । **चिमतड़ी** । *(वि०)* १. समवयस्का । २. समान । *(भू० क्रि०)* १. समा गई । २. प्रवेश कर गई । ३. मिल गई । ४. भर गई ।

समाणो—*(वि०)* १. समवयस्क । २. समान । *(न०)* बड़ी समाणी । चिमटी । *(क्रि०)* १. समा जाना । भर जाना । २. मर जाना । *(क्रि०भू०)* १. समा गया । २. मर गया । **मुँओ** ।

समाथ—दे० समर्थ ।

समादर—*(न०)* आदर । सम्मान ।

समादरणीय—*(वि०)* आदर-सत्कार के योग्य ।

समाद्दत—*(वि०)* जिसका खूब आदर हुआ हो । सम्मानित ।

समादेय—*(वि०)* १. आदर करने योग्य । २. स्वागत करने योग्य ।

समादेश—*(न०)* १. वह आज्ञा जो न्यायालय से होता हुआ काम रोकने के लिये दी जाती है । (इनजंक्शन) । २. साधिकार किसी को कोई काम करने की आज्ञा देना ।

समाद्रित—दे० समाद्दत ।

समाध—*(ना०)* १. समाधि । २. मृत्यु । मरण । *(वि०)* नीरोग्य । तंदुरस्ती, आराम ।

समाध-समंद—*(ना०)* प्रलयकाल की समुद्र समाधि ।

समाधान—*(न०)* १. मतभेद या विरोध दूर करना । २. किसी का संदेह दूर करने वाली बात या काम । ३. विरोध, संदेह, आपत्ति या भ्रान्ति का निवारण । **निवेड़ो** । ४. शंकाओं का निराकरण । ५. प्रणिधान । ६. बात या मत का समर्थन अथवा पुष्टि । ७. सान्त्वना । ८. संतोष ।

समाधि—*(ना०)* १. चित्त की एकाग्रता । २. ध्यान मग्नता । ३. ब्रह्म में चित्त को स्थिर करना । ४. योग साधन की एक चरम स्थिति । योग सिद्धि । ५. ईश्वर के ध्यान में मग्न होना । ध्यान । ध्यानमग्न । ६. प्रणिधान । ७. किसी साधु-महात्मा के शव (या अस्थियों) को गाड़ने या जलाने की जगह । ८. उक्त स्थान पर निर्मित वास्तु या देवली । ९. साधु-संन्यासी की मृत्यु ।

समाधिया—*(वि०)* १. स्वस्थ । तंदुरुस्त । २. विद्यमान । जीवित । ३. चिरायु । दीर्घायु । ४. सम्पन्न । *(भू० क्रि०)* मर गया । **मुँओ** । **पाछो हुओ** ।

समान—*(वि०)* १. तुल्य । सदृश । अनुरूप । बराबरी का । **समोवड़ियो** । बराबर । *(न०)* १. सामान । **समान** । २. मान सहित । ३. वाणिकी पाठशाला मे पढ़ाया जाने वाला एक पाठ ।

समानता—*(ना०)* १. अनुरूपता । २. बराबरी । तुल्यता ।

समानमा—*(न०)* सरीखा-लेन, देन या आदान-प्रदान । **सवाँनवाँ** ।

समानार्थ—*(न०)* पर्याय । *(वि०)* समान अर्थ वाला ।

समानोदरज—*(न०)* भाई । सगा भाई ।

समाप—*(न०)* १. दान । २. माप सहित । ३. मर्यादित । ४. माप सर ।

समापण—*(न०)* १. दान । समर्पण । २. समाप्त । समापन ।

समापणो—*(क्रि०)* १. देना । २. समर्पण करना । ३. समापन करना ।

समाप्त—*(वि०)* १. जो खतम या पूरा हो गया हो । २. नष्ट । मृत । **खतम** ।

समाप्ति—*(ना०)* १. अन्त । अवसान । २. किसी विवाद का अन्त ।

समार—*(न०)* १. लाभ । **सँवार** । २. व्यवस्था । ३. संशोधन । **दुरुस्ती** ।

सुधार । सँवार ४. सजावट । तैयारी । ५. क्षौर । हजामत ।

समार काम—*(न०)* दुरुस्ती का काम । दुरुस्ती । मरम्मत । मरामत ।

समारणो—*(क्रि०)* १. किसी काम को सुचारू रूप से सम्पन्न करना । २. छील-छाल करके साफ करना या काटना (साग-सब्जी आदि को) । बनारणो । ३. कंघी करना । कंघी करके सँवारना (बालों को) । ओस-ळणो । ४. साफ करना ।

समारंभ—*(न०)* १. खूब ठाट से किया हुआ आरंभ । २. समारोह । ३. धाम-धूम । ४. उत्सव । उच्छव ।

समारो—*(न०)* १. लाभ । फायदा । २. प्राप्ति । अर्थ प्राप्ति । कमाई । आमदनी । कमाणो । ३. वृद्धि । उबारा । शेष । बच रहना । ४. बचा कर रखने की वृत्ति । सँवारो ।

समारोह—*(न०)* १. भारी आयोजन । समारंभ । २. धामधूम ।

समाळो—दे० संभाळो ।

समालोचक—*(वि०)* १. समालोचना करने वाला । २. किसी रचना या ग्रंथ के गुण-दोष आदि की विवेचना करने वाला । समीक्षक । ३. अवलोकन करने वाला । ४. वस्तु के गुण-दोषों को ढूंढ कर विवेचन करने वाला ।

समालोचना—*(ना०)* १. साहित्य (रचना या ग्रंथ) के गुण दोषों की विवेचना । साहित्यिक कृति का विवेचन । आलोचना । २. गुण दोषों का विवेचनात्मक लेख । समीक्षा । ३. वस्तु के गुण-दोषों की विवेचना ।

समाव—*(न०)* १. समावेश । समाई । २. सहन । बरदाश्त ।

समावण—*(न०)* १. मृत्यु । २. समावेश ।

समावणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु का किसी पात्र के अन्दर भर जाना । समा जाना । २. बराबर भर जाना । ३. मृत्यु होना । मरना । मरणो ।

समावेश—*(न०)* एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अंतर्गत होना । अंतर्भूत ।

समास—*(न०)* १. समावेश । २. संक्षेप । ३. संग्रह । संचय । ४. समर्थन । ५. दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग से बना हुआ शब्द *(व्या०)* । ६. शब्दों या पदों का एक संयुक्त शब्द *(व्या०)* । *(वि०)* संक्षेप ।

समाहार—*(न०)* १. समूह । २. राशि । ३. संग्रह । ४. मिलाप ।

समिजा—*(ना०)* सभा ।

समिति—*(ना०)* १. सभा । संस्था । २. कुछ व्यक्तियों की कमेटी । छोटी सभा ।

समिधा—*(ना०)* १. यज्ञ में जलाने की लकड़ी । २. ईंधन ।

समियो—*(न०)* १. बीता हुआ समय । विगत समय । २. समय । काल ।

समी—*(वि०)* १. सीधी । सुलटी । २. समान । ३. ठीक । ऐन । ४. बिलकुल । *(ना०)* ५. शमी । खेजड़ी । जांट । जांटी ।

समीक—*(न०)* युद्ध । जुध । आहव ।

समीक्षा—*(ना०)* बारीकी से की जाने वाली जांच । समालोचन । परीक्षण ।

समीग्रभ—*(न०)* अग्नि । बासदे ।

समीचीन—*(वि०)* १. यथार्थ । २. उचित । योग्य । जोग । ३. सत्य । साच ।

समीप—*(वि०)* पास । निकट । कनै । गोदै । नेड़ो ।

समीपता—*(ना०)* निकटता । **नैड़ापणो** । **नैड़ापो** ।

समी बेफार—*(अव्य०)* ऐन दुपहर में ।

समीर—*(न०)* पवन । वायु । हवा । **वायरो** ।

समीरण—*(न०)* पवन । वायु । **वायरो** ।

समो सवार—*(न०)* ऐन सुबह ।

समीसांझ—*(ना०)* १. ऐन संध्या समय । ठीक संध्या समय । २. संध्या काल । **सांझवेळा** । ३. **कुवेळा** ।

समुचित—*(वि०)* हर तरह से उचित । उपयुक्त । ठीक ।

समुच्चय—*(वि०)* १. संग्रह । २. समूह । ३. साहित्य में एक अलंकार ।

समुच्चय बोधक—*(न०)* दो वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ने वाला शब्द या पद *(व्या०)* ।

समुदाय—*(न०)* झुंड । समूह । **भीड़** ।

समुद्र—*(न०)* सागर । **समंद** । **समदर** ।

समुद्रमंथन—*(न०)* दानवों और देवताओं द्वारा अमृत के लिये किया हुआ समुद्र मंथन ।

समुहणो—*(क्रि०)* युद्ध करने को सम्मुख आना या होना ।

समुहो—*(वि०)* सामने । सामने आया हुआ । **सामुंहा** । **साम्हा** ।

समुंदर—*दे०* समुद्र ।

समूचो—*(वि०)* सब । पूरा । समूचा । **समूधो**। **सघळो** ।

समूधो—*(वि०)* तमाम । सब । समस्त । सघला । *(क्रि०वि०)* बिलकुल । सबका सब । **सैमूंदो** ।

समूळ—*(वि०)* १. मूल सहित । २. सम्पूर्ण । सब । **समूळो** ।

समूळगो—*(वि०)* समस्त । तमाम । सब । *(क्रि०वि०)* पूरे पूरा । सबका सब ।

समूळो—*दे०* समूळ ।

समूह—*(न०)* समुदाय । झुंड । **भीड़** । **टोळो** ।

समृद्ध—*(वि०)* समृद्धि वाला । संपन्न । धनवान ।

समृद्धि—*(ना०)* १. सम्पत्ति । सम्पन्नता । २. वैभव । ऐश्वर्य । **अमीरी** ।

समेटणो—*(क्रि०)* १. कपड़ा, कागज आदि को तह देना । फैले हुए कागज, कपड़े आदि को परतों में मोड़ना । समेटना । २. बिखरी हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना । ३. संचित करना । ४. संकुचित करना । ५. व्यवस्थित करना । ६. सम्पूर्ण करना ।

समेत—*(अव्य०)* सहित । साथ । साथ में । के साथ ।

समेळो—*दे०* सामेळो ।

समै—*दे०* समय ।

समो—*(न०)* १. वर्ष । २. सुभिक्ष । सुकाल । ३. जमाना । ४. समय । ५. अवसर । *(वि०)* १. सीधा । सुलटा । २. व्यवस्थित । ३. दुरुस्त । ठीक । ४. एक सरखा । समान । ५. ठीक । ऐन ।

समोकरणो—*(मुहा०)* १. सुलटा करना । सीधा करना । दुरुस्त करना । ३. व्यवस्थित करना ।

समोद—*(न०)* प्रसन्नता सहित । सानंद ।

समोनमो—*(वि०)* एक सरीखा । बराबर । **सरभर** ।

समोभ्रम—*(न०)* १. पुत्र । २. पौत्र । ३. वंशज । *(वि०)* समान । बराबर । **सरीखो** ।

समोरण—*(न०)* गरम पानी को काम में आने लायक बनाने के लिये उसमें मिलाया जाने वाला ठंडा पानी। **अमोरण**।

समोरणो—*(क्रि०)* अधिक गरम पानी को स्नानादि के काम में लेने योग्य करने के लिये उसमें ठंडा पानी मिलाना। **अमोरणो**।

समोरो—*(न०)* किसी वस्तु में थोड़ी वही वस्तु मिला कर बढ़ाने का भाव। **उमेरो**। दे० समोरण।

समोवड़—*(वि०)* १. बराबर। समान। २. बराबरी वाला। **बरोबरियो**। **समवड़**। *(न०)* समानता। **बराबरी**।

समोवड़ियो—दे० समोवड़ी।

समोवड़ी—*(वि०)* बराबरी का। बराबरी वाला।

समोवणो—*(क्रि०)* स्नान के गर्म पानी में ठंडा पानी मिलाना। समोना। **समोरणो**।

समोसो—*(न०)* मैदे का एक तिकोना (सिंघोड़े के आकार का) नमकीन पकवान। एक प्रकार का पकोड़ा। समोसा।

सम्मत—*(वि०)* सहमत। राजी।

सम्मति—*(ना०)* १. राय। सलाह। २. अनुमति। सहमति।

सम्मान—दे० सनमान।

सम्मुख—*(अव्य०)* १. सामने। समक्ष। सामुँहा। २. साक्षात। प्रत्यक्ष।

सम्मेलन—*(न०)* १. अधिवेशन। २. सभा। मजलिस।

सम्रतीयंद—*(न०)* १. कवि। २. स्मृत्येन्द्र।

सम्रथ—*(वि०)* दे० समरथ।

सम्रथवान—दे० समर्थवान।

सम्राज्ञी—*(ना०)* सम्राट की पत्नी। महारानी।

सम्राट—*(न०)* वह बड़ा राजा जिसके आधीन अनेक राजा या राज्य हों। महाराजाधिराज। बादशाह। महाराजा।

सम्राथ—दे० समर्थ।

सयण—*(न०)* १. सज्जन। **सैण**। २. पति।

सयंभू—दे० स्वयंभू।

सयाण—दे० सयाणो।

सयाणो—*(वि०)* १. सयाना। चतुर। २. ज्ञानी।

सर—*(ना०)* १. माला। लड़ी। हार। २. अेक आभूषण। ३. ताल। सरोवर। ४. विजय। ५. आधीन। वश। ६. बाण। शर। ७. मस्तक। सिर। ८. शिखर। ९. समय। १०. जल। ११. सरकंडा। १२. स्वर। १३. स्वांग। १४. पाँच की संख्या। १५. दमन। १६. अंग्रेजी शासन काल में दी जाने वाली एक उपाधि। १७. ताश के खेल में दाँव जीतने वाला पत्ता। १८. जीता हुआ हाथ या बाजी। १९. ताश के अमुक पत्ते की प्रधानता। हुकम। २०. समानता। बराबरी। २१. दूध। *(वि०)* १. श्रेणीबद्ध। २. सरल। *(अव्य०)* १. प्रमाण में। **प्रमाणे**। २. ऊपर। ऊँचा। *(न०)* २२. खारे पानी का तालाब जिसके पानी से नमक बनता है। २३. सिरा। २४. अग्रभाग। २५. चरम सीमा। २६. चिता। २७. श्रेष्ठता।

सरक—*(ना०)* १. चित्त का उभार। मनोवेग। २. उमंग। लहर। तरंग। ३. हलका चित्तभ्रम। ४. चित्त की अस्थिरता। चित्त की लहर। ५. कुछ क्षणों के लिए चित्त में उत्पन्न होने वाली असंयम अवस्था।

सरकणो—*(क्रि०)* खिसकना। हटना। दे० सरकनो।

सरकनो—*(ना०)* १. सरकंडा। मूंज। २. सरकंडे का पौधा।

सर करणो—*(मुहा०)* १. जीतना। हराना। २. अधिकार करना। ३. हासिल करना।

सरकस—*(ना०)* हाथी, घोड़े, सिंह आदि जानवरों का खेल तथा खेल कराने वालों का साज-सामान तथा अखाड़ा। क्रीड़ाचक्र। सर्कस। २. उद्दंड। विद्रोही। सरकश।

सरकंडो—दे० सरकनो।

सरकाणो—*(क्रि०)* खिसकाना। हटाना। **सरकावणो**।

सरकार—*(ना०)* १. प्रजा का शासन करने वाली सत्ता। राज्य का शासन यंत्र। २. राज्य तंत्र। ३. स्वामी। मालिक।

सरकारी—*(वि०)* सरकार का। सरकार या राज्य संबंधी।

सरकावणो—दे० सरकाणो।

सरकीपासो—*(ना०)* सरका करके ढीली या तंग की जा सके ऐसी ग्रंथि। **पासागाँठ। गाळो**।

सरकीपाहो—दे० सरकीपासो।

सरखाई—दे० सरीखाई।

सरखाणो—दे० सरखावणो।

सरखामण—दे० सरखामणी।

सरखामणी—*(ना०)* तुलना। समानता। बराबरी।

सरखावणो—*(क्रि०)* १. तुलना करना। बराबरी करना। **मींढणो**। २. एक जैसा तैयार करना। **सरखाणो**।

सरखो—दे० सरीखो।

सरग—दे० सुरंग। दे० सर्ग।

सरगड़ो—दे० सरगरो।

सरगतरंगण—*(ना०)* गंगा।

सरग नदी—*(ना०)* गंगा। स्वर्ग नदी।

सरगम—*(ना०)* षड्ज से निषाद तक का स्वर समूह। स्वरग्राम। (संगी.)

सरगरण—दे० सरगरी।

सरग राजान—*(ना०)* इंद्र। स्वर्ग का राजा।

सरगरी—*(ना०)* १. सरगरा जाति की स्त्री। २. सरगरा की स्त्री। **होड़ागरी। गाँछी। गाँछण**।

सरगरो—*(ना०)* १. एक अस्पृश्य जाति। २. ढोल, थाली तथा बरधू आदि बजाने वाला व्यक्ति। ३. टोकरी, डलिया आदि बनाने वाला व्यक्ति। **गाँछो। गराछो**। ४. कासींदी (संदेशवाहक) आदि सेवा का काम करने वाला। **होड़ागर**।

सरगलोक—*(ना०)* स्वर्गलोक।

सरगलोकेगता—*(भू०का० कृ०)* स्वर्ग में चला गया। मर गया। स्वर्गवासी। (शिला०)

सरगलोकोपहुत—*(भू०का०कृ०)* स्वर्गलोक में पहुंच गया। मृत्यु हो गई। स्वर्गवासी। (शिला.)

सरगासेरी—*(ना०)* १. एक आभूषण। २. बहुत सँकरा मार्ग। ३. तीर्थ स्थानों के देवालयों में (प्रायः शिखर में) बनी

सँकरी खिड़की या गली जिसमें होकर पुण्यात्मा ही वही निकल सके ऐसी मान्यता होती है। योनि त्र। **जोणी जंतर**। ४. स्वर्ग में जाने का मार्ग। ५. स्वर्ग का द्वार।

सरगुण—दे० सगुण।

सरगे गतौ—दे० सरगलोकेगता। (शिला.)

सरगोपहत—दे० सरगलोकोपहुत। (शिला.)

सरघा—*(ना०)* शरघा। मधुमक्खी।

सरचणो—*(क्रि०)* १ बराबर बाँटना। **सरसणो**। २. उचित भाव लगाना। ३. मोलतोल उचित करना। ४. जितना है उतने में सबका निर्वाह कर लेना। **सजाणो**। ५. सुलझाना।

सरचावणो—*(क्रि०)* १. सुलझाना। २. बाँटना। बराबर बाँटना। **सरसाणो**।

सरज—*(न०)* १. एक प्रकार का वस्त्र। सर्ज। २. मक्खन। ३. राल। ४. ओढ़ने की एक बढ़िया ऊनी चादर।

सरजणहार—दे० सर्जनहार।

सरजणो—*(क्रि०)* सृजन करना। रचना। उत्पन्न करना। बनाना।

सरजनहार—दे० सरजणहार।

सरजळ—*(वि०)* १. पानी से भरा हुआ। जलपूर्ण। २. सजल।

सरजाणो—*(क्रि०)* रचना करवाना या करना। सृजन करना या कराना।

सरजायोड़ो—१. बनवाया हुआ। **बणवायोड़ो**। २. बनाया हुआ। **बणायोड़ो**।

सरजियोड़ो—दे० सर्जित।

सरजीत—दे० सरजीव।

सरजीव—*(वि०)* १. जीवित। २. जिसमें जीव हो। सजीव। ३. जिसमें पुनः जीव आ गया हो।

सरजीवण—*(न०)* संजीवन। पुनर्जीवन।

सरजीवत—दे० सरजीव।

सरजीवन—दे० सरजीवण।

सरजू—*(ना०)* सरयु नदी।

सरजोर—दे० सिरजोर।

सरजोरी—दे० सिरजोरी।

सरट—*(न०)* गिरगिट।

सरठ—*(ना०)* १. संकेत। इशारा। २. साजिश। षड्यंत्र। ३. लक्ष्य स्थान। लक्ष्य। ४. मशवरा। सलाह। ५. शर्त। होड़। ६. किसी गुप्त स्थान पर इकट्ठा होने का निश्चय। ७. ताकने की क्रिया या भाव।

सरड़को—*(न०)* १ चाबुक मारने का शब्द। २. चिलम की फूंक खींचने का शब्द।

सरड़ाटो—*(न०)* तेज गति से उड़ने से होने वाला शब्द। सर्राटा।

सरढी—*(ना०)* ऊँटनी। **सायड़**।

सरढो—*(न०)* ऊँट। **लढ्ढो**।

सरण—*(ना०)* १. शरण। आश्रय। २. सँकड़ा मार्ग। तंग रास्ता। ३. किसी देवालय में बनी वह तंग बारी जिसमें होकर भक्त निकलते हैं। **सरगासेरी**। ४. सरकने-खिसकने की क्रिया। ५. निभाव। ६. रक्त की कमी, अशक्ति तथा वातदूषित हो जाने के कारण पाँवों में होने वाली एक पीड़ा।

सरणाई—*(वि०)* १. शरण देने वाला। शरण में रखने वाला। २. शरण में आने वाला। ३. शरण में आया हुआ। शरणागत।

सरणाई-साधार—*(न०)* शरण में आये हुए की रक्षा करने वाला वीर पुरुष। शरणागतरक्षक।

सरणाटो—*(न०)* १. अतिवेग से जाने तथा उड़ने वाली वस्तु का शब्द।

सरड़ाटो। २. झपट्टा। ३. शून्य स्थान में सुनाई देने वाला शब्द। खालीपन का शब्द। शून्य शब्द। ४. शून्यता। खालीपन।

सरणाय—*(वि०)* शरणागत।

सरणायत—दे० सरणाय।

सरणि—*(ना०)* १. शरण। २. निसैनी। निसरणी। ३. पगथियो। ४. पगडंडी। डांडी।

सरणी—*(ना०)* पगडंडी। छोटा मार्ग। डांडी। २. प्रथा। ३. निसैनी। निसरणी।

सरणो—*(ना०)* १. शरण। आश्रय। २. पुराने समय का राज्य प्राप्त एक अधिकार, जिसके द्वारा शरण में आया हुआ व्यक्ति सुरक्षित समझा जाता था। (राजा लोग किसी अन्य राज्य के अपराधी को ऐसी शरण देने के स्वतः अधिकार सम्पन्न होते थे। वे अपने कृपापात्र जागीरदार को भी ऐसा अधिकार दे दिया करते थे)। ३. शरण में आये हुये को रखने के लिये किले या कोट जैसे सुरक्षित स्थानों में बना हुआ विशेष स्थान। *(क्रि०)* १. बनना। संपन्न होना। २. प्रयोजन सिद्ध होना। काम बनना। ३. पूर्ति होना। ४. बराबर होना। ५. सरकना। ६. अधोवायु निकलना। ७. बन आना। ८. निभाव होना।

सरणोदेवी—*(ना०)* बागड़िये चौहानों की कुलदेवी।

सरणो लेणो—*(मुहा०)* शरण में जाना। शरण लेना।

सरत—*(ना०)* १. नजर। दृष्टि। २. ध्यान। खयाल। ३. शर्त। होड़। ४. दांव। बाजी। ५. होश। चेतो। ६. सावधानी।

सरतचूक—*(ना०)* १. ध्यान से उतरना। ख्याल में नहीं रहना। बेख्याली। २. देखने में चूक होना। दृष्टिदोष। ३. ध्यान नहीं रहने से होने वाली भूल।

सरत-चूकणो—*(मुहा०)* १. भूल जाना। २ ध्यान में नहीं रहना। खयाल बाहर हो जाना। ३. देखने में चूक हो जाना।

सरतत—*(ना०)* १. यत्न। २. शीघ्रता। त्वरा।

सरतन—*(ना०)* १. धनमाल। २. सामर्थ्य। हैसियत। ३. साधन। ४ सम्पन्नता। ५. उपाय। प्रयत्न।

सरत-पूगणो—*(मुहा०)* १. नजर पहुँचना। नजर दौड़ाना। २. अक्ल काम करना।

सरतर—*(वि०)* १. स्वस्थ। तंदुरुस्त। २. दृढ़। मजबूत।

सरत-राखणो—*(मुहा०)* १. खयाल रखना। ध्यान रखना। २. ध्यान में रखना।

सरतरियो—*(वि०)* सरतन (सरतर) वाला। सम्पन्न। समर्थ।

सरतंत—दे० सरतन।

सरताज—दे० सिरताज।

सरद—*(ना०)* १. शरदऋतु। २. विजय। ३. पराजय। जेर। ४. लाश। *(वि०)* १. ठंडा। शीतल। सर्द। २. जेर। परास्त। ३. जीता हुआ। ४. वश में होने वाला। ५. दाँतों वाला।

सरद-करणो—*(मुहा०)* १. सर करना। जीतना। २. अधिकार करना। ३. मारना। नाश करना।

सरद-गरम—*(ना०)* १. सर्द और गरम। २. एक रोग।

सरदणो—*(क्रि०)* १. नाश करना। मारना। काटना। २. सर करना। जीतना। ३. अधिकार करना। **सर करणो।**

सरदर्द—*(न०)* १. सिर में दर्द। २. परेशानी। हैरानी।

सरद-पूनम—*(ना०)* शरदपूर्णिमा। आसोजी पूनों।

सरदार—*(न०)* १. नायक। मुखिया। अगुआ। २. उमराव। ३. जागीरदार। ४. सिखों की पदवी। ५. सिख जाति।

सरदारगी—दे० सरदारी।

सरदारणी—*(ना०)* १. सरदार की पत्नी। सरदारनी। २. सिख स्त्री। ३. सिख की पत्नी।

सरदारी—*(ना०)* सरदार का काम। भाव या स्थिति। **सरदारपणो।**

सरदी—*(ना०)* १. ठंडी। शीत। जाड़ा। सर्दी। २. जाड़े का मौसम। ३. जुकाम। ठंडी। श्लेष्म।

सरदीजणो—*(क्रि०)* १. नमी लगना। सरदियाना। २. सरदी लगना। ३. ठंडा होना।

सरदो—*(न०)* एक प्रकार का बढ़िया खरबूजा। सरदा।

सरधा—*(ना०)* १. बल। शक्ति। २. आर्थिक स्थिति। ३. रोग मिटने के बाद प्राप्त होने वाली शक्ति। ४. श्रद्धा। आस्था। ५. भक्ति। ६. ईश्वर, धर्म और गुरुजनों के प्रति आदरपूर्ण और पूज्य भाव। ७. विश्वास। ८. आदर। ९. साहस। हिम्मत। **आसंग।**

सरधाळू—*(वि०)* श्रद्धावान। श्रद्धालु।

सरनंद—*(न०)* कमल।

सरनाम—*(वि०)* १. प्रसिद्ध। मशहूर। २. सबसे ऊपर नाम वाला।

सरनामो—*(न०)* १. लेख का शीर्षक। २. चिट्ठी के ऊपर लिखा जाने वाला पाने वाले का नाम, पता आदि। प्रेषिती का नाम, उपाधि, पता तथा गाँव।

सरनाँव—दे० सिरेनाम या सरनाम।

सरनाँवो—दे० सरनामो।

सरप—*(न०)* सर्प। साँप। **सरप। फुणाळो।**

सरप-अरी—*(न०)* १. गरुड़। २. मोर।

सरप जगन—दे० सरप जाग।

सरपजाग—*(न०)* जनमेजय का नाग यज्ञ। सर्पयज्ञ।

सरप-जीभ—*(ना०)* कटारी। **कटार।**

सरपजीह—दे० सरपजीभ।

सरपट—*(अव्य०)* तेज चाल में। *(ना०)* घोड़े की एक तेज दौड़।

सरपटणो—*(क्रि०)* भागना। दौड़ जाना। **दौड़णो।**

सरपणी—*(ना०)* सर्पिणी। साँपिन। **सापणी। फुणाळी।**

सरपध्धर—दे० सरपाधर।

सरपफीण—*(न०)* १. अफीम। सर्पफेन। **अमल।** २. सर्प के मुँह का फेन।

सरपंच—*(न०)* १. बड़ा पंच। २. पंचायत का सभापति।

सरपाधर—*(न०)* १. नाश। संहार। *(वि०)* सीधा। सरल। **पाधरो।**

सरपाव—*(न०)* १. सिर से पैर तक की पूरी पोशाक जो राजदरबार से किसी को सम्मान के रूप में दी जाती है। सिरोपाव। **सरोपा।** २. सिरोपाव का सम्मान।

सरपेच—*(न०)* पगड़ी पर बाँधने का एक जड़ाऊ गहना।

सरफराज—*(वि०)* १. उच्च पदस्थ। २. प्रख्यात। ३. कृतार्थ। धन्य।

सरफराजी—*(ना०)* १. प्रसन्नता। २. कृपा। दे० सरफराज।

सरब—*(वि०)* सर्व। समस्त। कुल। सँग। सगळो। सब। २. सबही। समस्त।

सरब ओपमा—दे० सरब ओपमा लायक।

सरब ओपमा लायक—*(अव्य०)* सभी शुभ उपमाओं के योग्य। पत्र लेखन का एक पारिभाषिक पद।

सरब-ओपमा-विराजमान—*(अव्य०)* (प्राचीन पत्र लेखन परिपाटी का जिसके नाम पत्र लिखा जाता है उसके लिये, एक विशेषण)। २. सभी उपमाओं से प्रकाशमान। मान-सम्मान-पूर्वक सभी उपमाओं से विद्यमान। सभी उपमाओं से अलंकृत होकर बिराजे हुए हैं।

सरब-काल—*(न०)* हर समय। सदा।

सरब-जाण—*(वि०)* सब जानने वाला। सर्व वेत्ता। सर्वज्ञ।

सरब-जीत—*(वि०)* सबको जीतने वाला। सर्वजित।

सरब-जोग—*(वि०)* १. सभी प्रकार से योग्य। सर्वयोग्य। २. सभी के योग्य।

सरब-निवास—*(न०)* सभी प्राणियों में निवास करने वाला। सर्वव्यापक। ब्रह्म।

सरब-भखी—*(वि०)* सब कुछ भक्षण करने वाला। सर्वभक्षी। सरभख।

सरबर—दे० सरभर।

सरब-रस—*(न०)* १. नमक। लूण। सबरस। २. सभी रस।

सरबरी—*(ना०)* रात। शर्वरी।

सरबस—*(न०)* सर्वस्व। जो पास में हो वह सब कुछ। सारी संपत्ति। सगळो।

सरब-साखी—*(न०)* १. सर्वसाक्षी। २. ईश्वर।

सरबसहा—*(ना०)* पृथ्वी। सर्वंसहा।

सरब-सुहाग—*(न०)* अखंड सौभाग्य। सर्व सौभाग्य।

सरबंग—दे० सर्वांग।

सरबिलंद—*(वि०)* १. प्रतिष्ठित। सर-बुलंद। २. मान्यवर।

सरभ—*(न०)* १. हाथी का बच्चा। शरभ। २. ऊँट। ३. शेर। बाघ।

सरभख—*(वि०)* सर्वभक्षी। सरबभखी।

सर-भखड़ो—*(न०)* सर्वभक्षण करने वाला व्यक्ति।

सरभर—*(न०)* १. समान आय-व्यय। जमा और खर्च बराबर। २. बराबरी। *(वि०)* न कम या अधिक। बराबर। २. बिना नफा-नुकसान वाला। जिसके क्रय-विक्रय में न लाभ रहा हो और न नुकसान। समोतमो। *(न०)* एक खेल।

सरभर-खातो—*(न०)* १. वह खाता जिसमें जमा और खर्च की मदें बराबर हों। २. वह हिसाब जिसमें लेन-देन बराबर हो गया हो। खाता चुकता। लेन-देन चुकता। ३. दोनों पक्ष बराबर।

सरभरा—*(ना०)* १. खातिरदारी। आव-भगत। २ सेवा-चाकरी। ३. खाने-पीने का प्रबन्ध। सरबराह। ४. मार-पीट। ५. डाँट। फटकार।

सरभंगी—*(न०)* १. सब कुछ खाने वाला। जिसे किसी बात का परहेज न हो। २. एक अस्पृश्य जाति।

सरम—*(ना०)* १. शर्म । लज्जा । २. लिहाज । संकोच । ३. पश्चात्ताप । ४. प्रतिष्ठा । इज्जत ।

सरम करणी (करणो)—*(मुहा०)* घूंघट निकालना ।

सरम-काढणी (काढणो)—*(मुहा०)* घूंघट निकालना ।

सरम-राखणी—*(मुहा०)* १. मान-सम्मान का विचार करके आचरण करना । २. संकोच करना । ३. मर्यादा में रहना । ४. भय खाना । डरना ।

सरमाणो—दे० सरमावणो ।

सरमाळू—*(वि०)* १. शरमाने की प्रकृति वाला । लज्जाशील । शरम वाला । २. संकोचवाला ।

सरमावणो—*(क्रि०)* १. शरमिंदा होना । लज्जित होना । सरमाणो । सरमीजणो । २. संकोच करना । ३. खिसियाना ।

सरमा-सरमी—*(अव्य०)* १. लाज के मारे । लाज के कारण । शरम में आकर के । ३. एक दूसरे से लज्जित होकर के । ४. संकोच से । लिहाज से । ५. शर्म । लाज ।

सरमिंदो—*(वि०)* शरमिंदा । लज्जित ।

सरमी-जणो—दे० सरमावणो ।

सरमीली—*(वि०)* लाजवाली ।

सरमीलो—*(वि०)* १. शर्मिंदा । २. शर्मवाला ।

सरयू—*(ना०)* अयोध्या के पास की एक नदी । सरजू ।

सरल—*(वि०)* १. सीधा । सरल । जो टेढा या वक्र न हो । पाधरो । २. निष्कपट । ३. भोला । ४. साधु स्वभाव का । सैजो ।

सरलता—*(ना०)* १. सीधापन । अवक्रता । पाधराई । २. आसानी । सुगमता । सोराई । ३. सच्चाई । ४. निष्कपटता ।

सरव—दे० सरब ।

सरवग—*(वि०)* १. सर्व व्यापक । सर्वग । २. सब जगह । *(ना०)* १. शिव । २. आत्मा । ३. सर्वज्ञ ।

सरवड़—*(ना०)* १. वर्षा का झपाटा । २. भागते हुए बादल का बरसते जाना । एक बादल के पीछे दूसरे बादल का बरसते जाना । ३. जोर की वर्षा की आवाज । ४. दूर वर्षा होने की आवाज ।

सरवण—दे० श्रवण ।

सरवर—*(ना०)* १. तालाब । सरोवर । २. जलाशय ।

सरवरणो—*(क्रि०)* १. धीरे-धीरे चलना । २. गुप्त रूप से चल देना । खिसक जाना ।

सरवरी—*(ना०)* शर्वरी । रात । रात्रि ।

सरवसह—*(ना०)* धरती । पृथ्वी । सर्वसह । जमी ।

सरवंग—दे० सरबंग ।

सरवाणी—*(ना०)* पार्वती । शर्वाणी ।

सरवाळै—*(अव्य०)* १. समग्रतया । सब मिलाकर । ओसतन । सरेरास । २. अंत में । आखिरकार । छेवट । ३. फलतः । फलस्वरूप । ४. इसलिये । अतः । ५. सबसे ऊपर । शीर्ष । मथाळै । *(वि०)* कुल ।

सरवाळो—*(ना०)* १. सभी मदों से ली हुई (छोटी-मोटी) रकमों की कुल जोड़ । बड़ी जोड़ । २. नफा-नुकसान । ३.

नफा-नुकसान का हिसाब । ४. औसत । सिरेराशि । सरेरास ।

सरवाळो-काढणो—*(मुहा०)* १. नफा-नुकसान का हिसाब निकालना । २. औसत निकालना ।

सरवो—*(नं०)* १. यज्ञकुंड में आहुति देने का लकड़ी का कलछा । स्रुवा । सरुवो । २. घड़े में से पानी लेने का डंडी वाला पात्र । सरुवो । *(वि०)* तीक्ष्ण श्रवण-शक्ति वाला । बहुत धीमी आवाज को सुन लेने वाला । श्रव ।

सरस—*(वि०)* १. सुन्दर । २. अच्छा । उत्तम । ३. रस वाला । ४. भावपूर्ण ।

सरसइ—*(ना०)* १. सरस्वती । सरसती । २. सरस्वती नदी । ३. सरसता । सरसताई ।

सर-सज्या—दे० सरेष सज्जा ।

सरसणो—*(क्रि०)* १. सरस दिखना । २. शोभित होना । ३. शोभित करना । ४. शोभित होना । ५. सबमें समान बंटवारा करना । सजाणो । सरचणो । ६. राजी करना । प्रसन्न करना । ७. अच्छा लगना । ८. फलना-फूलना । ९. फैलना ।

सरसत—दे० सरसती ।

सरसता—*(ना०)* १. सरस होने की अवस्था, गुण या भाव । २. मधुरता । ३. रसिकता । ४. सुस्वाद । ५. कोष्ठता ।

सरसताई—दे० सरसता ।

सरसती—*(ना०)* सरस्वती । शारदा ।

सरसब्ज—*(वि०)* १. हरा-भरा । लहलहाता हुआ । २. समृद्ध । ३. आबाद ।

सरसरी—*(अव्य०)* ऊपर-ऊपर से । स्थूल रूप से । जल्दी में ।

सरसरी-तौर-सूं—*(अव्य०)* १. जल्दी-जल्दी में । मोटे रूप में । सरसरी तौर पर ।

सरसरी-नजर-सूं—*(अव्य०)* उचटती हुई या ऊपरी निगाह से । चलती निगाह से ।

सरसव—*(नं०)* सरसों ।

सरसवान—*(नं०)* समुद्र ।

सरसाई—*(ना०)* १. अधिकता । २. सुन्दरता । ३. श्रेष्ठता । ४. शोभा । ५. स्पर्धा । प्रतियोगिता । ६. समानता । बराबरी । सरसाई ।

सरसाणो—*(क्रि०)* १. शोभित करना । २. सरस बनाना । सरसाना । ३. सँवारना । सजाना । ४. बनाना । सरसावणो । ५. फैलाना ।

सर-सामान—*(नं०)* असबाब । सामग्री । सरोसामान ।

सरसावणो—दे० सरसाणो ।

सरसिज—*(नं०)* कमल ।

सरसियो—*(नं०)* सरसों का तेल । कड़वा तेल । *(वि०)* सरसों का ।

सरसियो तेल—दे० सरसियो ।

सरसी—*(वि०)* १. समान । बराबर । एक समान । २. सुंदर । ३. श्रेष्ठ । अधिक । *(क्रि०भू०)* सरेगा । बनेगा ।

सरसीरुह—*(नं०)* कमल ।

सरसुती—दे० सरस्वती । शारदा ।

सरसूं—*(नं०)* १. एक प्रसिद्ध पौधा, जिसके बीजों से तेल निकलता है । सरसों । सरसव । २. सरसों तिलहन ।

सर-सैमान—दे० सरसामान ।

सरसो—*(वि०)* १. दो या अनेक में से अच्छा । २. अच्छा । श्रेष्ठ । ३. एक समान । सरीखा । सरखो । ४. सुंदर ।

५. अधिक। ६. माप या तोल आदि में यथेष्ट से कुछ अधिक। टंकण।

सरस्वती—*(ना०)* १. विद्या तथा वाणी की अधिष्ठात्री देवी। ज्ञानशक्ति। शारदा। ब्राह्मी। भारती। वरदा। भवसोदरी। २. विद्या। ३. त्रिवेणी संगम की अदृश्य नदी। ४. गुजरात की एक नदी जो (सिद्धपुर-मातृगया-के पास होकर) कच्छ के रण में समाप्त होती है। कुमारिका नदी।

सरहद—*(ना०)* १. सीमा। हद। काँकड़। २. सीमा-प्रदेश।

सरहर—*(वि०)* समान। तुल्य। सरीखो। *(न०)* तालाब। सरोवर। सरवर।

सरंजाम—दे० सराजाम।

सराई—*(न०)* मिट्टी का ढक्कन। ढाकणा।

सराकत—दे० सरागत।

सरागत—*(अव्य०)* हिस्से में। भागीदारी में। सराकत।

सराजाम—*(न०)* १. सामग्री। सामान। सरंजाम। २. तैयारी। ३. व्यवस्था।

सराड़ै—*(अव्य०)* १. (एक) झपट्टे में। २. (एक) स्वास में। ३. एक बार में। अेके सराड़ै।

सराड़ो—*(न०)* १. झपट्टा। झपट। २. वेग। वेग से आगे बढ़ना।

सराण—दे० साण।

सराणियो—*(न०)* शस्त्रादि को धार लगाने वाला। सिकलीगर।

सराणो—दे० सरावणो। *(न०)* सिरहाना।

सराध—दे० श्राद्ध।

सराधणो—*(क्रि०)* श्राद्ध करना।

सराप—*(न०)* शाप। श्राप। बददुआ।

सरापणो—*(क्रि०)* शाप देना।

सरापियल—*(वि०)* १. शापित। जिसको शाप दिया गया है।

सराफ—*(न०)* १. सोना, चाँदी और जवाहरात इत्यादि का व्यापारी। २. सुनार।

सराफत—*(ना०)* भलमनसाहत। शरीफ होने का भाव।

सराफी—*(ना०)* सराफ का पेशा। *(वि०)* सराफ से सम्बद्ध।

सराफो—*(न०)* १. सराफ का काम। २. सराफों का बाजार। सराफा।

सराब—*(न०)* शराब। मद्य। दारू।

सराबोर—*(वि०)* बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर। गीला।

सरामण—दे० सावण।

सराय—*(ना०)* मुसाफिरों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। विश्रामालय।

सरारत—दे० शरारत।

सरारती—*(वि०)* १. ऊधमी। शरारती। २. बदमाश।

सरावग—दे० श्रावक सं० २।

सरावगी—*(न०)* १. श्रावक। जैन। २. जैन वणिक।

सरावण—दे० श्रावण।

सरावणो—*(क्रि०)* १. श्राद्ध करना। सराधणो। २. मृतक की भस्मी और फूल (अस्थि) गंगा, नर्मदा आदि (तीर्थों) में शास्त्रविधिपूर्वक प्रवेश करना। ४. मृतक का क्रिया कर्म करना। एकादशा करना। ५. प्रशंसा करना। सराहना।

सरासण—*(न०)* १. शरासन। धनुष। २. शरक्षम्बा।

सरासर—*(अव्य०)* १. बिलकुल। पूरा-पूरा। पूरी तरह से। २. प्रत्यक्ष।

सरासरी—*(ना०)* मोटा अनुमान। *(अव्य०)* मोटे तौर पर। अनुमानतः।

सराहणो—*(क्रि०)* बड़ाई करना। प्रशंसा करना। सराहना। **सरावणो**।

सरि—*(ना०)* १. झरना। निर्झर। २. समता। बराबरी। ३. लड़। लड़ी। हार। ४. नदी। *(वि०)* समान। बराबर।

सरिज—*(न०)* १. एक प्रकार का कपड़ा। सर्ज। २. कमल। ३. मछली। ४. सीप।

सरिग—*(न०)* स्वर्ग। **सुरग**। *(क्रि०भू०)* १. बना। निर्माण हुआ। हुआ। २. खिसक गया। ३. संपन्न या सिद्ध हो गया।

सरित—*(ना०)* सरिता। नदी।

सरितपति—*(न०)* समुद्र। **समदर**।

सरितवरा—*(ना०)* गंगा।

सरिता—*(ना०)* नदी।

सरिताँ-पति—*(न०)* समुद्र। सागर। **सायर**।

सरियो—*(न०)* लोहे की लंबी पतली छड़। **सळियो**। शलाका।

सरिश्तेदार—*(न०)* १. मुकदमों की मिसलें रखने वाला कर्मचारी। २. सरकारी विभाग का अधिकारी।

सरिस—*(वि०)* समान। सदृश। **जिसो**। **जैड़ो**।

सरीक—*(अव्य०)* साथ में। *(वि०)* मिला हुआ। सम्मिलित। शरीक।

सरीकत—*(ना०)* १. शराकत। साझा। हिस्सा। २. हिस्सेदारी। ३. पक्ष। ४. साथ। *(अव्य०)* १. पक्ष में। २. साथ में। ३. हिस्सेदारी में। भाग में।

सरीखाई—*(ना०)* १. समानता। **बराबरी**। २. एकरूपता।

सरीखापणो—*दे०* सरीखाई।

सरीखो—*(वि०)* १. बराबर। समान। सरीखा। **जिसो**। **जैड़ो**।

सरीगत—*दे०* सरीकत।

सरीर—*(न०)* १. शरीर। देह। काया। २. किसी वस्तु का पूरा ढाँचा।

सरीसो—*दे०* सरीखो।

सरुआत—*(ना०)* आरंभ। **शुरूआत**। शुरू।

सरुपाँत—*दे०* सरूपाँत।

सरुवो—*दे०* सरवो।

सरू—*(न०)* शुरू। आरंभ।

सरूठ—*(वि०)* क्रुद्ध। क्रोधित। **रीसाणो**। **रूठोड़ो**।

सरूप—*(न०)* १. श्रीनाथजी की मूर्त्ति। श्री बालकृष्ण की मूर्त्ति। श्री स्वरूप। २. वह जो देवत्व को प्राप्त हो गया हो। परमात्मा रूप। ३. वह जिसने देवता का रूप धारण किया हो। ४. पहुंचा हुआ पुरुष। महात्मा। ५. देव-मूर्त्ति। ६. मूर्त्ति, चित्र आदि। ७. व्यक्ति, पदार्थ आदि की आकृति। ८. बनावट। ९. शक्ल। सिकल। सरूप। चेहरा। १०. स्वभाव। ११. सुंदरता। १२. लक्षण। १३. तुलना। *(वि०)* १. सुंदर। २. समान। तुल्य। अनुसार। *(अव्य०)* १. रूप में। तुलना में। २. किसी की भाँति।

सरूपता—*(ना०)* समानता। एकरूपता।

सरूपवान—*(वि०)* स्वरूपवान। सुंदर।

सरूपश्री—(अव्य०) १. जो 'श्री' का स्वरूप है। धनधान्य से सम्पन्न है। स्वरूपश्री। २. जिस स्थान और व्यक्ति को पत्र लिखा जाता है उस स्थान और व्यक्ति के नाम लिखा जाने वाला विशेषण। जैसे—स्वरूपश्री जोधपुर शुभस्थाने·····। सरूपश्री महाराजाधिराज·····।

सरूपांत—(अव्य०) पहले-पहल। शुरूआत में ही। सरूपोत।

सरूपोत—दे० सरूपांत।

सरूंखो—दे० सभाड़ो।

सरे-आम—(अव्य०) खुले आम। सबके सामने। सर्व साधारण में।

सरे-इजलास—(अव्य०) भरी कचेरी में। भरे इजलास में।

सरे-बाजार—(अव्य०) १. सबके सामने। जनता के सामने। खुले आम। २. बाजार में। बाजार के बीच में।

सरे-रास—(न०) छोटी-बड़ी संख्याओं का योग करके निकाला जाने वाला मान। औसत। (अव्य०) अनुमान से। अंदाज सूं। अंदाज थी। अड़सटो।

सरेव-सज्जा—(ना०) आहत भीष्म पितामह की शर शय्या। बाणों की बनी शय्या।

सरेस—(न०) ऊँट, भैंस, गाय इत्यादि के चमड़े, हड्डी से बनाया जाने वाला एक लसदार पदार्थ।

सरैं—(ना०) १. शरह। २. रीति-रिवाज।

सरो—(अव्य०) से। के साथ। लेकर। (न०) १. एक वृक्ष। बनझाऊ। २. रिवाज। शरह। दे० सिरो।

सरोख—दे० सरोस।

सरोज—(न०) १. कमल। २. ब्रह्मा।

सरोतो—(न०) सुपारी काटने का एक उपकरण। सरोता। सूड़ी। शंकुला।

सरोद—(न०) एक तंतुवाद्य। सारंगी।

सरोदो—(न०) नाक में से निकलते स्वास पर से भविष्य कहने की विद्या। स्वरोदय।

सरोपा—दे० सरपाव।

सरोपाव—दे० सरपाव।

सरोष—दे० सरोस।

सरोस—दे० सकोप।

सरोवर—(न०) १. तालाब। तळाव। २. छोटी झील।

सर्ग—(न०) १. काव्य ग्रंथ का एक प्रकरण। २. जगत। संसार। ३. प्राणी। जीव। ४. उद्गम। मूल। ५. स्वभाव। प्रकृति।

सर्जक—(वि०) सर्जन करने वाला। रचने वाला। रचयिता। (न०) १. सृष्टि-कर्त्ता। २. ब्रह्मा। ३. ईश्वर।

सर्जन—(न०) १. सृष्टि। उत्पत्ति। पैदाइश। २. शल्य चिकित्सक।

सर्जनहार—दे० सर्जक।

सर्जित—(भू०कृ०) सर्जन किया हुआ। रचित। बणायोड़ो। रचियोड़ो। सरजियोड़ो।

सर्टिफिकेट—(न०) प्रमाणपत्र।

सर्दी—दे० सरदी।

सर्प—(न०) साँप। नाग। भुजंग। फूणिंद।

सर्प-फण—(ना०) सर्प का फूला-फैला हुआ भुजाकार सिर। नागफन। फण।

सर्प-यज्ञ—(न०) जनमेजय का नाग यज्ञ। सरप जगन।

सर्व—(वि०) १. सकल। समस्त। सब। सगळो। २. पूरा। आदि से अंत तक।

सर्वंग—*(वि०)* सर्वव्यापक । *(न०)* १. आत्मा । २. शिव ।

सर्वगुण-संपन्न—*(वि०)* सभी गुणों वाला ।

सर्वजीव—*(न०)* ब्रह्मा । विधाता ।

सर्वज्ञ—*(वि०)* सब कुछ जानने वाला । *(न०)* ईश्वर । शिव ।

सर्वतोभद्र—*(न०)* १. चारों ओर द्वार वाला मंदिर । २. प्रत्येक ओर से एक समान पढ़ने में आये ऐसी काव्य रचना । ३. एक व्यूह रचना । ४. नीम का वृक्ष । ५. बाँस । ६. स्वस्तिक । ७. योग की एक मुद्रा । *(वि०)* १. सभी प्रकार सुंदर । २. सब ओर से मंगल । ३. संपूर्ण मुंडन किया हुआ । ४. एक चौकोर पूजा चक्र ।

सर्वत्र—*(अव्य०)* १. सब दिशाओं में । २. सब जगह ।

सर्वथा—*(अव्य०)* १. सब प्रकार से । पूरी तरह से । २. प्रत्येक दृष्टि से । ३. बिलकुल । नितान्त । सरासर । ४. अत्यन्त ।

सर्वदा—(अव्य०) सदा । हमेशा ।

सर्वनाम—*(न०)* नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला प्रतिनिधि शब्द (व्या.) । हूँ, थूं, वो इत्यादि ।

सर्व-नामिक-विशेषण—*(न०)* सर्वनाम से बना हुआ विशेषण (व्या०) ।

सर्वनाश—*(न०)* १. सम्पूर्ण विनाश । २. पूरी बरबादी । ३. समूलोच्छेद ।

सर्वनियंता—*(न०)* सबको नियंत्रित करने वाला । २. ईश्वर ।

सर्वप्रिय—*(वि०)* सभी को प्रिय ।

सर्वभक्षी—*(वि०)* सब कुछ भक्षण करने वाला । *(न०)* अग्नि ।

सर्व-मंगला—*(वि०)* सब प्रकार का मंगल करने वाली । *(ना०)* १. दुर्गा । २. लक्ष्मी । ३. पार्वती ।

सर्वमान्य—*(वि०)* सबके द्वारा मान्य । जिसे सब मान देते हैं । २. सबके द्वारा स्वीकृत ।

सर्वरी—*(ना०)* शर्वरी । रात ।

सर्वविद्—*(वि०)* १. सब कुछ जानने वाला । २. सबको जानने वाला ।

सर्व-व्यापक—*(वि०)* सब जगह और सब पदार्थों में व्याप्त । *(न०)* ईश्वर ।

सर्व-व्यापी—दे० सर्वव्यापक ।

सर्व-शक्तिमान—*(वि०)* १. पूरी तरह से शक्तिशाली । २. सम्पूर्ण शक्तियों से युक्त । *(न०)* ईश्वर ।

सर्व-श्राद्ध अमावस्या—*(ना०)* १. आश्विन मास की अमावस्या । २. श्राद्धपक्ष का अंतिम दिन जिस दिन रहे सहे पितृगणों का श्राद्ध किया जाता है ।

सर्वश्री—*(वि०)* एक साथ एक से अधिक व्यक्तियों के नामों के लिये लिखा जाने वाला सम्मान सूचक विशेषण पद ।

सर्वश्रेष्ठ—*(वि०)* सबसे श्रेष्ठ ।

सर्वस—दे० सर्वस्व ।

सर्व-सम्मत—*(वि०)* जिसके पक्ष में सभी सदस्यों के मत हों ।

सर्व-सम्मति—*(ना०)* सबकी राय ।

सर्व-सह—*(ना०)* पृथ्वी । धरती ।

सर्वसाक्षी—*(वि०)* जो सबका साक्षी हो । साक्षीभूत । *(न०)* ईश्वर । परमात्मा ।

सर्व-साधारण—*(न०)* १. सामान्यजन । २. सभी प्रकार के लोग ।

सर्वसुलभ—*(वि०)* जो आसानी से मिल सकता हो । सबको सुलभ ।

सर्वस्व—*(न०)* १. सब कुछ। २. समस्त धन दौलत, वैभव, सत्ता इत्यादि।

सर्वात्मा—*(न०)* ईश्वर। परमेश्वर।

सर्वाधिक—*(वि०)* सबसे अधिक।

सर्वाधिकार—*(न०)* सब कुछ करने का अधिकार। सब इख्तियार।

सर्वानुमति—*(ना०)* सबकी अनुमति।

सर्वानुमते—*(क्रिवि०)* सबकी अनुमति से।

सर्वांग—*(न०)* १. समस्त अवयव। २. शरीर के सभी अंग। *(वि०)* संपूर्ण अंगों सहित।

सर्वांग-सुंदर—*(वि०)* जिसके सभी अंग सुंदर हों।

सर्वांगीण—*(वि०)* १. समस्त अंगों से संबंधित। २. समस्त।

सर्वांतर्यामी—*(वि०)* ईश्वर।

सर्विस—*(ना०)* १. नौकरी। २ सेवा।

सर्वेसर्वा—*(वि०)* १. सब अधिकारों से युक्त। २. सब कुछ कर सकने वाला।

सर्वोच्च—*(वि०)* १. सबसे ऊँचा। २. सबसे बड़ा।

सर्वोच्च न्यायालय—*(न०)* वरिष्ठ न्यायालय। सुप्रीम कोर्ट।

सर्वोत्तम—*(वि०)* सबसे उत्तम।

सर्वोदय—*(न०)* सभी का उदय। सबका हित। २. सर्वोदयवाद का सिद्धांत।

सर्वोपमा—*दे०* सरब ओपमा।

सर्वोपरि—*(वि०)* सबसे ऊपर। सर्वश्रेष्ठ।

सळ—*(न०)* सिलवट। सिकुड़न। शिकन। सळवट।

सल—*(न०)* १. ऊँट। २. शल्य। काँटा।

सळकणो—*(क्रि०)* सोते सोते या बैठे बैठे खिसकना। सरकना। सिरकणो।

सळकी—*(ना०)* मछली। माछळी।

सलखणो—*दे०* सुलखणो।

सळगणो—*दे०* सुळगणो।

सळगम—*(न०)* एक तरकारी कंद। शलगम। शलजम।

सलज—*दे०* सलज्ज।

सलजी—*(वि०)* लाजवाली। सलज्जा। 'नलजी' का उलटा।

सलजो—*(वि०)* लाजवाला। सलज। लजाळू। 'नलजो' का उलटा।

सलज्ज—*(वि०)* १. लज्जा सहित। २. लज्जावान। सलजो।

सळटणो—*(क्रि०)* १. निपटना। परस्पर समझ लेना। २. मुकाबिला करना। सुलझना। ३. उरझी हुई बात या विवाद को मिटा देना। सुलझाना। ४. काम को पूरा करना।

सळटाणो—*(क्रि०)* १. निपटाना। २. निर्णय कराना। ३. काम को पूरा करना। ४. विवाद को सुलझाना।

सळटावणो—*दे०* सळटाणो।

सलणो—*(क्रि०)* १. शल्य रूप होना। २. खटकना। दुख होना। सलना। ३. पीड़ा होना। ४. मन में खटकना। ५. सहन नहीं होना। ६. चुभना। ७. सुराख होना। ८. सुराख किया जाना (खाट के पाये में)।

सळपोटियो—*दे०* सपळोटियो।

सलबो—*(वि०)* १. निकट। पास। २. सुलभ। सहज। ३. विस्तृत। ४. सुखी। ५. स्वस्थ। ६. उदार। ७. सुलभता से प्राप्त होने वाला।

सलभ—*(न०)* १. पतंगा। शलभ। २. टिड्डी।

सलमो—*(न०)* १. सोने या चाँदी का तार, जिससे कपड़े में बेलबूटे बनाये जाते

हैं । बादळो । २. कपड़े पर किया हुआ सोने या चाँदी के तार का काम ।

सलमो-सितारो—*(न०)* १. सितारों वाला सलमे का काम । २. सोने चाँदी के सितारों और सलमे का कपड़े पर किया हुआ काम ।

सळवट—दे० सळ ।

सळवळ—*(ना०)* १. धीरे धीरे खिसकना । सळवळाट । २. बार बार होने वाला हलका दर्द । ३. शरीर पर कीड़ी-मकोड़ी चलती हो ऐसी प्रतीति । सळवळाट ।

सळवळणो—*(क्रि०)* १. थोड़ा-थोड़ा खिसकना, हटना या चलना । २. शरीर पर कीड़ी-मकोड़ी चलने जैसी खसखसाहट या प्रतीति का होना ।

सळवळाट—दे० सळवळ ।

सळवळाटो—दे० सळवळाट ।

सळवा—*(ना०)* १. एकांत की गुप्त बैठक जहाँ से किसी को कुछ सुनाई न दे या जहाँ पर किसी की आवाज न सुनाई दे । २. एकान्त की बैठक ।

सळवाणो—*(क्रि०)* १. लकड़ी के खाट के पायों में सुराख पड़वाना । २. सुराख करवाना । ३. दुखी होना ।

सलवार—*(न०)* एक प्रकार का ढीला पाजामा ।

सळसणो—*(क्रि०)* १. साँप का चलना । २. धीरे-धीरे खिसकना ।

सळसळणो—*(क्रि०)* १. धीरे-धीरे सरकना । २. बैठे-बैठे या सोते-सोते हिलना या खिसकना । ३. साँप का चलना ।

सळंग—*(वि०)* १. सम्पूर्ण । जो कहीं भी टूटा-फूटा न हो (प्रायः लंबाई में) । सलग । *(अव्य०)* १. अटके बिना । रुके बिना । लगातार । २. ठेठ तक । शुरू से आखिर तक । ३. एक छोर से दूसरे छोर तक (मार्ग अथवा लंबाई) । ४. क्रम से पंक्ति बद्ध । ५. पूरे नाप का ।

सलंभ—*(वि०)* सुलभ । सहज ।

सला—दे० सलाह ।

सळाक—*(ना०)* सलाई । सलाका ।

सळाको—*(न०)* १. बिजली की भाँति उठने वाली पीड़ा । रह रह कर उठने वाला दर्द । २. पीड़ा स्थान पर पतली शलाका से की जाने वाली दग्ध क्रिया ।

सलाजीत—दे० शिलाजीत ।

सलाट—*(न०)* १. भार । २. परिमाण । ३. सिलाकार । शिलावट । सिळावटो ।

सलाड़णो—*(क्रि०)* १. बरमे से लकड़ी में सुराख करना । सुराख करना । सलारणो । २. खाट के पायों में सुराख करना । ३. दो पशुओं को रस्सी से गरदन में एक साथ बाँधना । ४. एक को दूसरे के साथ बाँधना या जोड़ना । ५. एक की पूंछ में दूसरे ऊँट की मुँहरी बाँधना । लाँगरणो ।

सलाम—*(ना०)* नमस्कार का एक प्रकार । अभिवादन (मुसलमान) ।

सलामत—*(वि०)* १. सुरक्षित । २. दीर्घायु । ३. तंदुरुस्त । स्वस्थ । ४. जीवित । कायम । हयात ।

सलामती—*(ना०)* १. सुरक्षा । २. क्षेम कुशल । ३. शान्ति । ४. तंदुरुस्ती । मौजूदगी । हयाती ।

सलामी—*(ना०)* १. सलाम करने की क्रिया या भाव । सैनिकों, सिपाहियों इत्यादि के द्वारा राजकीय महत्वपूर्ण व्यक्ति का समारोहपूर्वक अभिवादन ।

३. सलामी में दिया जाने वाला उपहार। ४. अभिवादन या स्वागत इत्यादि के रूप में तोपों-बंदूकों का छोड़ा जाना।

सलारणो—*(क्रि०)* दे० सलाड़णो।

सळाव—*(ना०)* १. विद्युत शलाका। २. बिजली की चमक।

सलासूत—*(ना०)* १. परामर्श। सलाह। २. सलाह का दौर। परामर्श सूत्र। मश्वरा।

सलाह—*(ना०)* १. परामर्श। २. सम्मति। राय। अभिप्राय। ३. सीख। शिक्षा। सिखामण।

सलाहकार—*(वि०)* सलाह देने वाला। परामर्शदाता।

सलिता—*(ना०)* सरिता। नदी।

सळियो—*(वि०)* १. ['अळियो' का उलटा] सरल। सीधा। २. निष्कपट। ३. शांत प्रकृति का। ४. आसान। सहल। ५. साफ। खालिस। बिना मिलावट का। ६. लोह आदि धातु की लंबी शलाका। शलाका। सरियो। ७. कंकर, धूल रहित (अनाज)।

सलिल—*(न०)* पानी। जल।

सळी—*(ना०)* १. सलाई। २. सीक। ३. स्त्रियों के नाक में पहिनने की लौंग जैसी नाक की छोटी सिली। फुल्ली। तिण्को। सिळी।

सलीकेवाळो—*(वि०)* १. सामर्थ्य वाला। हैसियत वाला। २. शऊर वाला।

सलीको—*(न०)* १. ठीक से काम करने का ढंग। सुघड़पन। सलीका। २. शिष्टता। योग्यता। शऊर। ३. सामर्थ्य। हैसियत।

सळू—*(न०)* १. चमड़े की डोरी (प्रायः भैंस के चमड़े की)। २. सुराख या सुई में पिरोने के लिए डोरी या धागे इत्यादि का पतला और नोकदार बनाया हुआ सिरा।

सलूक—*(न०)* १. ढंग। तौर। २. तरीका। ३. मेल-मिलाप। ४. प्रेम। ५. अच्छा बरताव। सलूक।

सलूकात—*(न०ब०व०)* १. प्रेम। मेल-मिलाप। २. बर्ताव।

सळूजणो—*(क्रि०)* १. उलझन या जटिलता को दूर करना। २. किसी टंटे झगड़े का परस्पर समझना या निबट जाना।

सळूजाड़ो—दे० सुळजाड़ो।

सलूणी—*(ना०)* मिट्टी के पके हुये (लाल रंग के) नरिया (कैलू) का नमक मिश्रित चूर्ण जो सोने को शुद्ध करने के काम आता है। सोने को शुद्ध करने का एक मसाला। सलोनी। *(वि०)* १. सुंदर। २. स्वादिष्ट। ३. लवण सहित। सलोनी।

सलूणो—*(वि०)* १. सुंदर। सलोना। लावण्ययुक्त। २. नमकीन।

सलूंधो—*(वि०)* १. लुब्ध। २. संलग्न। ३. उलझन रहित।

सळे—*(न०)* १. काम बनने या बना देने की सामर्थ्य। २. ढंग। ३. ढंगसर।

सळे आवणो—*(मुहा०)* १. बन पाना। काम करने या आने के योग्य होना। २. निभना या पटना।

सलेट—*(ना०)* लिखने की पत्थर की एक पाटी। स्लेट। स्लेटपाटी।

सलेट-पैण—*(ना०)* स्लेट और पैन।

सलेमकोट—*(न०)* किले में बनी वह जगह जहाँ राजा, नवाब, जागीरदार आदि कैद करके रखे जाते हैं। सलीमखाना।

सळेवड़ो—*(न०)* निशास्ता से बनाया हुआ एक प्रकार का पापड़, जिसे घी या तेल में तल कर खाया जाता है।

सळो—दे० सुळो।

सलोको—दे० सिलाको।

सलोच—*(वि०)* १. लोचवाला। लचकवाला। २. कोमलता सहित सौंदर्य वाला।

सल्तनत—*(ना०)* १. राज्य। २. हुकूमत। ३. व्यवस्था।

सल्ल—*(न०)* १. शल्य। बरछी। २. काँटा।

सल्लो—*(वि०)* अधिक। ज्यादा। घणो।

सवड़—दे० सगवड़।

सवण—*(न०)* शकुन। सुकन।

सवणी—*(वि०)* १. शकुन शास्त्री। शकुनी। २. शकुन देखकर काम या यात्रा करने वाला। शाकुन। सुकनी।

सवर—*(न०)* १. स्वयंवर। २. वरसहित। दंपति। ३. स्वयंवर द्वारा ब्याही हुई कन्या। सवर्या। स्ववर्या। सवरी।

सवरी—*(वि०)* १. ब्याही हुई। सवर्या। २. स्वयंवरा।

सवरो—*(न०)* म्लेच्छ।

सवळत—*(ना०)* सुविधा। सहूलियत।

सवळी—*(ना०)* चील पक्षी। *(वि०)* १. 'अवळी' का उलटा। सीधी। २. आसान।

सवळो—*(वि०)* १. 'अवळो' का उलटा। सीधा। टेढ़ा नहीं। २. आसान। सरल। ३. अनुकूल। मनपसंद।

सवसाची—दे० सव्यसाची।

सवा—*(वि०)* १. एक और उसका चौथाई। २. एक से निन्यानवे की संख्या के साथ जुड़ने वाला एक का चौथाई। जैसे—'५।' (सवा पाँच); '६६।' (सवा छ्यासट); '७३।' (सवा तिहत्तर) इत्यादि। ३. पूरी संख्या (शतान्त) के साथ जुड़ा हुआ सौ का चौथाई (पच्चीस)। जैसे—१०० + २५ = १२५ (सवा सौ); ३०० + २५ = ३२५ (सवा तीन सौ); '५२५' (सवा पाँसौ) इत्यादि। ४. श्रेष्ठ। *(न०)* १. सवा की संख्या '१।' (एक और उसका चौथाई रूप खड़ी पाई)। २. आनों के आगे लगने वाली खड़ी पाई। आनों के आगे लगने वाला खड़ी पाई के रूप में एक पैसा, जैसे—'।–)।' सवा आना (एक आना और एक पैसा पुराने पाँच पैसे); '।।–)।' सवा पाँच आने (चार आने, एक आना और एक पैसा। पुराने इक्कीस पैसे; '।।।=)।' सवा ग्यारह आने (आठ आने, तीन आने और एक पैसा। पुराने ४५ पैसे) इत्यादि।

सवा-आनो—*(न०)* रुपये के सोलह आने (६४ पैसे) और एक आने के चार पैसे के हिसाब से पाँच पैसे। पाँच पैसों का नाम। एक आने का सवाया '–)।'।

सवाई—*(न०)* १. जयपुर के महाराजाओं की उपाधि। २. पुत्र। ३. पुत्री। ४. एक से सवा करने या होने की क्रिया या भाव। *(वि०)* १. सवा गुनी। २. श्रेष्ठ।

सवा-करोड़—*(वि०)* एक करोड़ और पच्चीस लाख। एक करोड़ और उसका चौथाई। *(न०)* एक करोड़ और पच्चीस लाख की संख्या। '१२५००००'

सवा-गुणो—दे० सवायो।

सवागो—*(न०)* सुहागिन स्त्री की पोशाक आदि सौभाग्य की सामग्री। सुवागो।

सवाणी—*(ना०)* चिमटी। चिमटड़ी।

सवाणो—दे० सिवाणो।

सवाद—दे० स्वाद।

सवादियो—*(वि०)* १. स्वादिष्ट पदार्थों को खाने की आदतवाला। स्वादी। सुवादी। २. रसिक।

सवाब—*(न०)* १. धर्मकृत्य। २. पुण्य।

सवाय—*(वि०)* १. सवा गुना अधिक (श्रेष्ठ या निकृष्ट)। २. श्रेष्ठ।

सवाया—*(न०)* १. सवा का पहाड़ा। सवैया।

सवायो—*(वि०)* १. सवा गुना। पूरे से एक चौथाई अधिक। २. श्रेष्ठ। ३. अधिक। ४. सुंदर।

सवार—*(ना०)* प्रातःकाल। सुबह। प्रभात। सवारणा। *(वि०)* १. सवारी करने वाला। २. घोड़ा, हाथी या किसी वाहन पर बैठा हुआ। असवार।

सवारणा—*(न०)* प्रातःकाल। सुबह। भोर। प्रधड़ो।

सवारथ—दे० स्वार्थ।

सवारथी—दे० स्वार्थी।

सवार-होणो—*(मुहा०)* १. सूर्योदय होना। प्रभात होना। २. सवारी करना। ३. नशा, क्रोध आदि का उत्पन्न होना।

सवारी—*(ना०)* १. वह गाड़ी, घोड़ा आदि जिस पर सवार हुआ जा सके। वाहन। २. वह व्यक्ति जो सवार हो। ३. शोभायात्रा। जुलूस।

सवा-रुपियो—*(न०)* १. रुपया और उसका चौथा हिस्सा। एक रुपया और एक चौअन्नी। २. रुपये के चौंसठ पैसों के हिसाब से ८० पैसों की संज्ञा। ३. सवा रुपये की संख्या। '१।)'

सवारू—*(अव्य०)* १. शीघ्रता से। उतावली। २. समयसर। सवेळा। ३. सवेरे।

सवारे—*(अव्य०)* १. आने वाले प्रातःकाल में। २. आने वाले प्रातःकाल को। कल सुबह को। ३. अगले थोड़े दिनों बाद। ४. समय पाकर। *(न०)* १. आने वाला प्रातःकाल। आने वाले कल का प्रातःकाल।

सवाल—*(न०)* १. प्रश्न। २. गणित का प्रश्न या समस्या। हिसाब। ३. कुछ माँगने या पाने की प्रार्थना। ४. पूछी हुई बात। ५. प्रस्तुत आकांक्षा।

सवाल-करणो—*(मुहा०)* १. प्रश्न करना। २. गणित के किसी प्रश्न या समस्या का हल निकालना। ३. हिसाब करना।

सवाळख—*(न०)* १. सपादलक्ष। २. मारवाड़ का नागोर जिला। सुआळख। स्वाळख।

सवा-लख—दे० सवा लाख।

सवाल-जवाब—*(न०)* १. प्रश्न और उत्तर। २. विवाद। बहस। ३. तकरार। हुज्जत।

सवा-लाख—*(वि०)* एक लाख और पच्चीस हजार। लाख और उसका चौथाई। *(न०)* एक लाख और पच्चीस हजार की संख्या। '१२५०००'

सवा-वीस—*(वि०)* १. सत्य खरा। २. योग्य। उचित। ३. बीस और एक का चौथाई। *(न०)* सवा बीस की संख्या। '२०।'

सवासण—दे० सवासणी।

सवासणी—*(ना०)* १. बहिन-बेटी जिनके यहाँ भोजन-पानी करने का निषेध माना गया है। **सवासण**। २. सौभाग्यशालिनी। ३. सुहागिनी। दे० सुहासणी।

सवासणो—*(न०)* १. सवासणी का पुत्र। २. बुआ या बहन का पति।

सवा-सेर—*(वि०)* १. अधिक अच्छा। २. अधिक। खूब। ३. तुलना में जबरदस्त या श्रेष्ठ। ४. एक सेर और उसका चौथाई।

सवा-सोळै आना—*(अव्य०)* १. जिसके सत्य होने में कोई संदेह नहीं। सर्वप्रकार सत्य। २. पक्की बात। ३. निश्चयपूर्वक। ४. पूर्णरूपेण। ५. निस्संदेह। *(न०ब०व०)* (सोलह आनों का) एक रुपया और एक पैसा।

सवा-सौ—*(वि०)* एक सौ और पच्चीस। एक सौ और उसका चौथाई। *(न०)* एक सौ पच्चीस की संख्या। '१२५'.

सवा-हजार—*(वि०)* एक हजार और दो सौ पचास। हजार और उसका चौथाई। बारह सौ पचास। *(न०)* सवा हजार की संख्या। '१२५०'.

सवाँ-नवाँ—दे० समानमा।

सविता—*(न०)* १. सूर्य। २. ईश्वर। ३. ब्रह्म। **सरजनहारो**।

सविता-सुत—*(न०)* शनैश्चर। सनीचर।

सविनय—*(वि०)* विनय युक्त। *(अव्य०)* विनयपूर्वक।

सवियाणो—दे० सिवियाणो।

सविस्तर—*(अव्य०)* विस्तारपूर्वक।

सवेई—दे० सवेयी।

सवेयी—*(वि०)* समवयस्क। हमउम्र। समवयी। २. बराबरी का।

सवेरी—*(ना०)* १. वह स्त्री जो उसके विवाह के पहिले किसी और को वाग्दत्ता थी। वह स्त्री जिसकी कन्यावस्था में सगाई किसी और से की गई थी किंतु आड़े आकर कोई और ही विवाह कर ले गया हो। २. वह विवाहिता स्त्री जिसको भगा कर किसी दूसरे ने अपनी पत्नी बनाकर रख लिया हो। ३. विवाहित पति को छोड़ कर दूसरे की पत्नी बनने वाली स्त्री। **सवरी**।

सवेरो—*(न०)* सवेरा। प्रभात। प्रातःकाल। **सवारणा**।

सवेळा—*(ना०)* १. प्रभात। सवेरा। २. मंगल समय। शुभवेला। *(अव्य०)* १. सवेरे। प्रभात में। २. प्रभात की ठंडी वेला में। ३. दोपहर होने के पहिले। ४. भोजन या ब्यालू के समय या इससे पहिले। ५. सूर्यास्त के पहले। साँझ होने के पहिले। दिन थकां। ६. समय पर। समय सर। **सवारूं**। ७. शीघ्र। जल्दी।

सवेळो—*(कि०वि०)* १. जल्दी। शीघ्र। २. समय पर।

सवैया—*(न०)* वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है। सवा का पहाड़ा। **सवाया**।

सवैयो—*(न०)* एक छंद। सवैया छंद।

सवो—*(न०)* पुत्र। बेटा।

सवों—*(अव्य०)* हिंदी के 'ही' अव्य का पर्यायवाची शब्द। ही, निश्चय, अवश्य। भी, केवल, प्रायः, लगभग, समान इत्यादि सूचक अर्थों वाला अव्यय। दे० समो (वि०)।

सव्य—*(वि०)* १. बायाँ। डावो। बायें कंधे पर रहने वाला (जनेऊ)।

सव्य-साची—*(न०)* १. (बायें हाथ से भी बाण चला सकने वाला) बायाँ तथा दाहिना दोनों हाथों से बाण चला सकने के कारण अर्जुन का एक नाम। २. बायें दाहिनें दोनों हाथों से काम करने वाला। खाबेड़ी। खाबलो।

सशक्त—*(वि०)* शक्तिवाला। सबल। सबळो। जोराबर।

सस—*(न०)* १. शशि। चंद्रमा। २. धान्य। शस्य। ३. खरगोश। सुसियो।

ससकणो—*(क्रि०)* १. हिलना। हिलना-डुलना। २. काँपना। ३. छूने या हिलाने का असर होना। सिसकना। ३. घबराना।

ससत—*(वि०)* १. निःसंदेह। २. शाश्वत। निरंतर। *(न०)* शस्त्र।

ससत्र—*(न०)* शस्त्र।

ससधर—*(न०)* १. चंद्रमा। २ महादेव। शशिधर।

ससनेह—*(न०)* सच्चा प्रेम। सुस्नेह।

ससनेही—*(वि०)* सच्चा प्रेमी। सुस्नेही।

ससफोट—*(न०)* युद्ध। जुध।

ससमत्थ—*(वि०)* सुसमर्थ। दे० ससमाथ।

ससमाथ—*(वि०)* समर्थ। सुसमर्थ। *(न०)* महादेव। शिव।

ससलो—*(न०)* खरगोश। शशक। ससियो। सुसियो। खरगो।

ससवो—*(न०)* १. साहस। २. हिम्मत। *(वि०)* १. साहसिक। पराक्रमी। दिलेर। २. सावधान। होशियार। सतर्क। ३. स्वस्थ। ४. कुशल। ससमो।

ससहर—*(न०)* १. चंद्रमा। शशधर। २. महादेव।

ससाद—*(वि०)* शब्द सहित। आवाज के साथ।

ससांक—*(न०)* चंद्रमा। शशांक।

ससि—*(न०)* शशि। चन्द्रमा।

ससिगोती—*(न०)* मोती।

ससिधर—*(न०)* १. चन्द्रमा। २. महादेव। शशिधर।

ससियो—दे० ससलो।

ससिवाम—*(ना०)* रात।

ससिहर—*(न०)* १. चंद्रमा। २. महादेव।

ससी—*(न०)* चंद्रमा। शशि।

ससी-सहोदर—*(न०)* शंख।

ससो—*(न०)* १. खरगोश। सुसियो। २. 'स' अक्षर। सकार।

ससोभणो—*(क्रि०)* १. विशेष प्रकार से शोभा पाना। २. अत्यन्त शोभित होना। सुशोभित होना। ३. पति के साथ वाम भाग में बैठे पत्नी का शोभा पाना।

ससोभन—*(न०)* बहुमूल्य सुंदर वस्त्राभूषण। सुशोभन।

सस्तर—दे० शस्त्र।

सस्ताई—*(ना०)* महँगी का अभाव। सस्तापन। सूंघापणो।

सस्तापणो—*(न०)* १. वह समय जब चीजें सस्ते दामों में मिलती हैं। २. महँगी का अभाव। सस्तापन। सस्ताई। सस्तीवाड़ो।

सस्तीवाड़ो—*(न०)* सभी वस्तुओं के सस्ता होने का भाव या अवस्था। सस्तापन।

सस्तो—*(वि०)* १. जो महँगा न हो। सस्ता। २. साधारण से कम मूल्य का।

सस्त्र—दे० शस्त्र।

सस्सो—*(न०)* १. 'स' अक्षर। सकार। ससो। २. खरगोश। शश। सुसियो।

सह—*(वि०)* १. सब । समस्त । २. सहनशील । ३. समर्थ । *(अव्य०)* १. साथ । सहित । समेत । २. से । ३. अवश्य । जरूर । अवस ।

सहकार—*(न०)* १. सहायक । २. सहयोग । ३. औरों के साथ काम करने का भाव । ४. कलमी आम । ५. आम ।

सह-कोई—*(वि०)* सभी । *(सर्व०)* सब लोग ।

सह-कोय—दे० सहकोई ।

सहक्तवास—*(न०)* मित्र । दोस्त । भायलो । साथी ।

सहगमण—दे० सहगमन ।

सहगमन—*(न०)* १. पति के शव के साथ पत्नी का जल मरना । सती होना । २. साथ में जाने की क्रिया या भाव । सहगवण । ३. संभोग । मैथुन ।

सहगवण—दे० सहगमन ।

सहचर—*(न०)* १. साथी । संगी । २. मित्र । सखा । ३. सेवक । नौकर ।

सहचरी—*(ना०)* १. पत्नी । २. सखी । सहेली । ३. सेविका ।

सहज—*(वि०)* १. आसान । सरल । २. स्वाभाविक ।

सहजभाव—*(न०)* सहजता । सरलता ।

सहज-साज—*(वि०)* १. थोड़ा-बहुत । २. थोड़ा सा ।

सहजै—*(अव्य०)* १. आसानी से । सहजता से । सरलता से । २. अनायास ।

सहटो—*(वि०)* १. पक्का । दृढ़ । मजबूत । सैंठो । २. मोटा । जाडो ।

सह-ठाम—*(न०)* सभी जगह । सर्वत्र ।

सह-ठाँव—दे० सहठाम ।

सहड—*(न०)* हाथी ।

सहण—*(ना०)* १. क्षमा । सहनशीलता । बरदाश्त । २. माफी । ३. पृथ्वी ।

सहणी—*(वि०)* सहन करने वाली । *(क्रि०)* सहन करना । खमणो ।

सहणो—*(क्रि०)* १. सहन करना । सहना । खमणो । २. तकलीफ उठाना । *(वि०)* सहन करने वाला । खमणारो ।

सहत—*(ना०)* शहद । मधु ।

सहतीर—दे० शहतीर ।

सहतूत—*(न०)* एक पेड़ जिसकी मंजरी मीठी होती है । शहतूत । सहतूर ।

सहदेव—*(न०)* १. पाँच पाण्डवों में सबसे छोटे का नाम । २. भविष्य जानने वाला ।

सहधर्मिणी—*(ना०)* सहधर्मचारिणी । पत्नी । घरणी ।

सहन—*(न०)* सहने की शक्ति । सहन करने की क्रिया या भाव । बरदाश्त । सहिष्णुता ।

सहनशील—*(ना०)* सहने की क्षमता या स्वभाववाला ।

सहनशीलता—*(ना०)* १. सहिष्णुता । २. सब्र । संतोष । ३. सहने की क्षमता ।

सहनाई—*(ना०)* एक फूंक वाद्य । शहनाई ।

सहनाण—*(न०)* १. निशान । चिन्ह । २. पहचान । परिचय । ओळखाण ।

सहनाणक—दे० सहनाण ।

सहनाणी—*(ना०)* १. चिन्ह । निशान । २. परिचय । ओळखाण । ३. स्मृति के लिये किसी की दी हुई वस्तु । निशानी । सहिदानी ।

सहपाठी—*(न०)* साथ में पढ़ने वाला विद्यार्थी ।

सहभोज—*(न०)* १. सबको साथ में लेकर किया जाने वाला भोज। २. भेदभाव को त्याग कर साथ में बैठ कर किया जाने वाला भोज।

सहम—*(न०)* १. संकोच। २. लज्जा। ३. डर। भय।

सहमणो—*(क्रि०)* लज्जित होना। सहमना। संकोच करना।

सहयोग—*(न०)* किसी क्रिया में योग देने, हाथ बँटाने या मिलकर काम करने की क्रिया या भाव। सहकार। २. सहायता। मदत।

सहयोगी—*(वि०)* साथ मिल कर काम करने वाला साथी। सहकारी।

सहर—*(न०)* शहर। नगर।

सहरकोट—*(न०)* शहरपनाह।

सहर-भदर—*(न०)* शहर निकाला। शहर बदर। नगर निकाळो। सहरबटो।

सहर-बाद—*(न०)* कारागार। कैद। शहर बंद।

सहर-सारणी—*(ना०)* शहर के समस्त लोगों को दी जाने वाली दावत। नगर-सारणी।

सहरिया—*(न०)* कोटा जिले की एक जन-जाति।

सहल—*(वि०)* १. सरल। २. आसान। *(ना०)* सैर। मनोरंजन के लिये भ्रमण करना। हवाखोरी।

सहलकी—*(वि० न०)* सरल। आसान। सहली।

सहलको—*(वि०)* सरल। आसान। सीधो।

सहलाण—दे० सहनाण।

सहलाणी—*(ना०)* १. कूटे हुए तिल और कड़कड़ खांड को मिलाकर बनाई हुई एक बुकनी। २. मृतक की याददाश्त में सगा-संबंधियों में बाँटी जाने वाली उक्त बुकनी। दे० सहनाणी।

सहली—दे० सहलकी।

सहलो—*(वि०)* सुगम। सहल। सहलको।

सहवार्ता—*(क्रि०वि०)* सभी प्रकार से।

सहवास—*(न०)* १. संबंध। २. साथ रहना। मैथुन। संभोग।

सहस—*(वि०)* सहस्र। हजार। *(न०)* हजार की संख्या। '१०००'.

सहसकर—*(न०)* १. सूर्य। २. सहस्रबाहु। ३. विष्णु।

सहस-किरण—*(न०)* सूर्य।

सहसगुणो—*(वि०)* हजार गुना। सहस्र-गुना।

सहस-चख—*(न०)* सहस्रचक्षु। इन्द्र।

सहस-दोयकरण—*(न०)* दो सहस्र कानों वाला। सहस्रशीर्षा। विष्णु।

सहस-दोय-चख—*(न०)* १. दो सहस्र नेत्रों वाला। सहस्रशीर्षा। विष्णु। २. शेष-नाग।

सहस-नाग—*(न०)* शेषनाग। सेसनाग।

सहस-नामी—*(न०)* विष्णु।

सहस-नेत्र—*(न०)* इंद्र।

सहस-नैण—*(न०)* इंद्र।

सहसबळी—*(वि०)* महान पराक्रमी। सहस गुना बल वाला।

सहसार—*(न०)* संसारी दुनिया।

सहस्र—*(वि०)* हजार। सहस। *(न०)* एक हजार की संख्या। '१०००'.

सहस्र-मुखी—*(ना०)* १. गंगा। *(न०)* २. शेषनाग। *(वि०)* सहस्र मुखों वाला या वाली।

सहस्र-कर—*(न०)* सूर्य। सूरज।

सहस्र-पात—*(न०)* कमल।

सहस्र-बाहु—*(वि०)* सहस्र हाथों वाला। *(न०)* १. बाणासुर। २. विष्णु।

सहस्र-लिंग—*(ना०)* सहस्र शिवलिंगों का एक प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर समूह जो अणहिलवाड़ा-पाटण (गुजरात) के पास सरस्वती नदी के तट पर कला-पूर्ण रमणीय तालाब पर खंडहर रूप में स्थित है। सहस्रलिंग तालाब और मंदिरों को सिद्धराज जयसिंह ने बनवाया था।

सहस्रार्जुन—दे० बाणासुर।

सहस्सरबाहुव—*(ना०)* सहस्रबाहु।

सहानुभूति *(ना०)* हमदर्दी। अनुकंपा।

सहाय—*(ना०)* १. मदद। सहायता। **मदत**। २. आश्रय। **आसरो**। *(वि०)* सहायक।

सहायक—*(वि०)* १. सहायता करने वाला। मददगार। **मदतगार**। २. सहकारी।

सहायता—*(ना०)* मदद। **मदद**।

सहारो—*(ना०)* १. सहारा। २. आश्रय। **आसरो**। ३. सहायता। मदद।

सहालग—दे० सहावो।

सहावो—*(ना०)* विवाह का शुभ दिन। सहालग। **साहो**। दे० साहो।

सहि—*(वि०)* सब। समस्त। सगळा। *(अव्य०)* साथ। सहित। से। अवश्य।

सहित—*(अव्य०)* १. साथ। २. समेत।

सहिलाळी—*(ना०)* पृथ्वी। भूमि।

सही—*(ना०)* १. हस्ताक्षर। **दसखत**। २. दस्तावेज की साक्षी रूप में किये गये हस्ताक्षर। ऋण-पत्र में साक्षी के हस्ताक्षर। ३. कबूलात के दस्तखत। स्वीकृति-हस्ताक्षर। ४. ऋणपत्र में ऋणी के हस्ताक्षर। ५. निश्चय। दृढ़ संकल्प। *(वि०)* १. शुद्ध। खरा। २. दुरुस्त। जिसमें कोई त्रुटि न हो। ३. वास्तविक। यथार्थ। ४ प्रामाणिक। *(क्रि०वि०)* अवश्य।

सही-सलामत—*(वि०)* १. बिना किसी बीमारी या हानि के। २. तंदुरुस्त। स्वस्थ। ३. निर्दोष।

सहु—*(वि०)* सब। समस्त। **सँग**।

सहुको—*(क्रि०वि०)* शाश्वत। निरंतर। *(वि०)* सभी कोई। सब के सब।

सहुजाण—दे० सोहजाण।

सहुवै—*(वि०)* सभी। सब। तमाम।

सहूर—दे० सऊर।

सहूलियत—*(ना०)* सुभीता। सुगमता।

सहृदय—*(वि०)* १. दूसरों के सुख-दुख को समझने वाला। भावुक। २. दयालु

सहेट—*(ना०)* १. सीगा। २. संकेत। ३. संकेत स्थान। ४. निश्चित किया हुआ किसी के मिलने का गुप्त स्थान। *(अव्य०)* सहित। समेत।

सहेत—दे० सहेतो।

सहेतो—*(वि०)* हेत से। प्रेम से। *(अव्य०)* सहित। साथ।

सहेलड़ी—दे० सहेली।

सहेली—*(ना०)* १. सखी। सहचरी। २. दासी।

सहेळो—*(ना०)* १. सम्मेलन। २. स्वागत-सम्मेलन-स्थान। ३. बारात के स्वागत का स्थान या चौक।

सहोद—दे० सहोदर।

सहोदर—*(ना०)* सगा भाई। **सहोवर**।

सहोदर-लखमण—*(ना०)* श्रीराम।

सहोदरा—*(ना०)* बहन।

सहोवर—दे० सहोदर।

सं—*(उप०)* अच्छी तरह से, संग, साथ या सुंदर अर्थ में। *(ना०)* संस्कृत या संवत् का संक्षिप्त नाम।

संक—दे० संका ।

संकट—*(न०)* १. कष्ट । दुख । २. आफत । विघ्न । सगट । संघट ।

संकट-मोचन—*(वि०)* संकट से छुड़ाने वाला (प्रभु) । ईश्वर ।

संकड़ाई—*(ना०)* १. तंगी । गरीबी । २. संकरापन । स्थान की तंगी । ३. भीड़ । ४. मुश्किली ।

सं'कड़ाटो—दे० संकड़ामण ।

सं'कड़ामण—*(ना०)* १. संकरापन । तंगी । २. आर्थिक तंगी । संकड़ाटो । गरीबी । ३. विपत्ति । ४. संकरा स्थान । **संकड़ावण** ।

सं'कड़ावण—दे० संकड़ामण ।

सं'कड़ीजणो—*(क्रि०)* १. सँकराना । भीड़ में फँस जाना । २. संकोच करना । ३. आर्थिक संकट में पड़ना । **साकड़ीजणो** ।

संकड़ेलो—दे० संकड़ाटो ।

सं'कणो—*(क्रि०)* १. भय खाना । डरना । २. लज्जित होना । शरमाना । **सरमावणो** ।

संकर—*(न०)* १. दो भिन्न प्रकार की वस्तुओं का मिलकर एक हो जाना । मिश्रण । भेळसेळ । २. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के माता पिता से हुई हो । वर्णसंकर । **दोगलो** । ३. दे० शंकर ।

संकरखण—*(न०)* १. संकर्षण । बलराम । २. शेषनाग ।

संकर-घरणी—*(ना०)* पार्वती ।

संकरणी—*(ना०)* हर्रे । हरीतकी ।

संकरांत—दे० संक्रांति ।

संकरी—*(ना०)* पार्वती ।

संकळ—दे० साँकळ ।

संकलन—*(न०)* १. एकत्रीकरण । संग्रह । संग्रहण । जमा । २. ढेर । राशि ।

संकळप—दे० संकल्प ।

संकळपणो—*(क्रि०)* १. दृढ़ निश्चय करना । २. मंत्र पढ़ कर दान देने का निश्चय करना । संकल्प करना ।

संकळी—दे० साँकली ।

संकल्प—*(न०)* १. मानसिक इच्छा, अभिलाषा या दृढ़ निश्चय । २. दान देने का निश्चय; तदर्थक मंत्रपाठ, जलग्रहण क्रिया इत्यादि ।

सं'का—*(ना०)* १. शौच जाने या पिशाब करने की हाजत । २. टट्टी या मूत्र का वेग । ३. भय । डर । बी । ४. शंका । संशय ।

संकाय—*(ना०)* विश्वविद्यालयों में विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन से संबंधित शाखा या विभाग । फैकल्टी ।

संकारणो—*(क्रि०)* १. संकेत करना । २. संकेत में समझाना । ३. भय दिखाना ।

संकाळू—*(वि०)* १. लाज-शरम वाला । २. संकोच वाला । संकोची । **सांकीलो** । ३. लिहाज वाला । **लिहाजू** ।

संकावाळो—*(वि०)* १. संदेह वाला । बहमी । २. शरम वाला । ३. हाजत वाला ।

संकीजणो—*(क्रि०)* १. शर्माना । लजाना । २. डरना । भय खाना । **डरणो** ।

संकीर्ण—*(वि०)* १. सँकरा । २. क्षुद्र । तुच्छ । नीच । ३. अनुदार मनोवृत्ति वाला ।

संकीर्तन—*(न०)* १. ईश्वर, देवी-देवता का जाप, भजन या कीर्तन । २. स्तुति । गुणगान ।

संकीलो—दे० संकाळू ।

संकुकरण—*(न०)* गदहा । खर । गधो ।

संकुचित—*(वि०)* १. जिसे संकोच हो । लाजवाला । २. सिकुड़ा हुआ । ३. सँकरा । ४. अनुदार ।

संकुल—*(न०)* युद्ध । लड़ाई । *(वि०)* १. पूरा । २. भरा हुआ । ३. छिपा हुआ । ४. भिड़ा हुआ । ५. समेटा हुआ । ६. घना ।

संकुलणो—*(क्रि०)* १. लड़ना । भिड़ना । २. समेटना । ३. छिपना । ४. पूरा करना । ५. मरना । ६. घना होना ।

संकेत—*(न०)* १. इशारा । २. चिन्ह । निशान । ३. शृंगार-चेष्टा । ४. संकट या भाव की स्थिति ।

संकेलणो—*(क्रि०)* १. काम को निपटाना । काम खतम करना । २. समेटना । संकेलना । ३. इकट्ठा करना ।

सं'को—*(न०)* १. भय । डर । २. शका । संशय । ३. सकोच । हिचक । आगा-पीछा । ४. लाज । शर्म । ५. मर्यादा ।

संकोच—*(न०)* १. लाज । २. थोड़ी लज्जा । लज्जाभाव । ३. भय । ४. लोक-लाज इत्यादि से उत्पन्न हिचक । ५. आगा-पीछा ।

संकोचणो—*(क्रि०)* १. संकोच करना । २. शर्म करना ।

संकोची—*(वि०)* संकोच या शर्म करने वाला ।

संकोचीगात—*(न०)* कछुआ ।

सक्रमण—दे० संक्रांति ।

संक्रांति—*(ना०)* १. सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि में जाना । २. उक्त सक्रमण का समय, दिन या पर्व । **संक्रमण काल** ।

संक्षिप्त—*(वि०)* १. संक्षेप में कहा या लिखा हुआ । टूंको । २. आकार-प्रकार इत्यादि में छोटा बनाया हुआ ।

संक्षेप—*(न०)* १. बात या लेख का संक्षिप्त । रूप । सार । **टूंकाण । संखेप** ।

संख—दे० शंख ।

संखणी—*(ना०)* १. कर्कशा स्त्री । २. कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भे ों म से एक । शंखिनी ।

संखधर—दे० शंखधर ।

सखनाद—दे० शखनाद ।

संख-सबदी—*(न०)* गदहा । **गधो** ।

सखात—*(न०)* युद्ध ।

संखारणो—*(क्रि०)* मृतक-संस्कार करना ।

संखियो—*(न०)* १. एक उपविष । सखिया । २. छोटा शंख ।

संखेप—*(न०)* सक्षेप । सार ।

संखोढाळ—*(न०)* १. मृतक के अशौच की एक शुद्धि क्रिया । २. निम्न जातियों का मृतक-कर्म ।

संख्या—*(ना०)* १. १, २, ३, इत्यादि अंक । अंकों में लिखी जाने वाली राशि या गिनी जाने वाली तादाद (गणित) । २. गणना । गिनती ।

संख्या-वाचक—*(वि०)* संख्या दर्शाने वाला, जिससे संख्या की जानकारी होती हो (व्या.) ।

संख्या-वाचक विशेषण—*(न०)* संज्ञा, सर्वनाम आदि की संख्या दर्शाने वाला विशेषण । (व्या०)

संग—*(अव्य०)* १. साथ । सहित । २. संगति । ३. मिलन । ४. सहवास । संभोग । ५. ससर्ग । संपर्क ।

संग-चढ़णो—*(मुहा०)* १. पार जाना। सफल होना। सिग चढ़णो। २. दीपक की लौ का एक सरीखी बनी रहना। सिग चढ़णो।

संगट—दे० संकट।

संगठन *(न०)* १. बिखरी हुई शक्ति को किसी कार्य के लिये तैयार करना। २. उक्त क्रिया से बना हुआ दल। संघटन।

संगठित—*(वि०)* १. जिसका संगठन हुआ हो। संगठन वाला। २. एकत्रित। ३. सुव्यवस्थित।

संगत—*(ना०)* १. साथ। २. सोहबत। ३. संबंध। ४. उदासीन साधुओं की जमात या रहने का मठ। ५. योग तथा अध्यात्म पद (बाणी-पद) गाने वालों की मंडली। ६. तुरी-किलंगी की लावनियां गाने वालों की मंडली। ७. बाजा बजाकर गाने वालों का साथ देना। ८. सगति। संपर्क। *(वि०)* १. अनुरूप। सिमेट्रिकल। २. उपयुक्त। ३. हर प्रकार मेल खाने वाला।

संगतार्थ—*(न०)* १. संगति के अनुसार बिठाया जाने वाला अर्थ। २. ठीक अर्थ। ३. (प्रसंग पर विचार किये बिना केवल) संगति से बिठाया जाने वाला अर्थ। *(वि०)* ठीक अर्थ वाला। (साहित्य)।

संगति—*(ना०)* १. संग। साथ। २. मेल। मिलाप। ३. प्रसंग। ४. आगे पीछे के शब्दों तथा वाक्यों से मेल खाने वाला पूर्वापर संबंध। ५. किसी ग्रंथ के शब्द या वाक्यों का प्रसंग या विषय के अनुकूल अर्थ को बिठाना। ६. अच्छी सोहबत। सुसंग।

संगती—*(वि०)* १. साथी। सोहबती। २. गवैये के साथ बाजा बजाने वाला। ३. साथ। सोहबत। संगत। ४. संबंध।

संगम—*(न०)* १. वह स्थान जहाँ दो नदियाँ मिलें। २. मेल। मिलाप। ३. सम्मेलन। ४. दो या दो से अधिक वस्तुओं के मिलने का भाव। ५. प्रयाग तीर्थ।

संगमरमर—*(न०)* एक प्रकार का बढ़िया सफेद पत्थर। आरसपाण। आवर्श। पाषाण। मकरराणो।

संगर—*(न०)* १. युद्ध। संग्राम। २. विपत्ति। संकट। आफत। ३. सहार। नाश।

संगरणी—*(ना०)* संग्रहणी नामक बीमारी।

संगरणो—*(क्रि०)* संग्रह करना। संघरणो।

संगराम—दे० संग्राम।

संगरे-खोर—दे० संग्रहखोर।

संगरे-खोरी—*(ना०)* संग्रह करने का काम या गुण। संग्रहखोरी।

संगरो—*(न०)* संग्रह। जमा।

संगळियो—*(न०)* १. साथी। २. एक छोटा जलपात्र। मंगळियो।

संगळी—*(न०)* साथी। मित्र। *(वि०)* १. साथ रहने वाला। २. छोटा गडुआ। चाडियो।

संगाती—दे० संगाथी।

संगाथ—*(न०)* साथ। संग। साहचर्य।

संगाथण—*(ना०)* पत्नी। स्त्री।

संगाथी—*(न०)* १. साथी। संगी। संगाती। २. मित्र। दोस्त। भायलो।

संगाथे—*(अव्य०)* १. साथ में। साथै। २. सामिल। इकट्ठा। भेळो।

संगार—*(न०)* पशु।

संगी—दे० संगाथी।

संगीत—*(न०)* १. निर्धारित स्वर, लय तथा नाद से युक्त मधुर तान। गायन विद्या। २. गायन, वादन तथा नृत्य का समाहार। ३. नृत्य तथा बाजों के साथ गाने की कला।

संगीत-कला—*(ना०)* गाने की कला। संगीत विद्या।

संगीतकार—*(न०)* संगीत गाने वाला या संगीत विद्या का जानकार। वह जो संगीत विद्या में निपुण हो।

संगीत-विद्या—*(ना०)* १. संगीत कला। २. संगीत शास्त्र।

संगीत-शास्त्र—*(न०)* संगीत संबंधी शास्त्र।

संगीती—*(वि०)* १. गानविद्या का पंडित। संगीतिक। २. गानेवाला। **गावणियो**।

संगीन—*(ना०)* बंदूक के सिरे पर लगाई जाने वाली नुकीली बरछी (बेयोनेट)। *(वि०)* १. पत्थर के समान कड़ा। २. मजबूत। दृढ़। ३. मोटी तहवाला। **जाडो**। ४. जबरदस्त। ५. पेचीदा। ६. गम्भीर।

संग्रह—*(न०)* १. संचय। जमा। ढेर। **संगरो**। २. इकट्ठा करने की क्रिया या भाव। ३. वह पुस्तक जिसमें अनेक विषय एकत्रित किये गये हों। बहुत सी बातों, रचनाओं इत्यादि का एकत्र ग्रंथ।

संग्रहकर्ता—*(न०)* संग्रह करने वाला।

संग्रहखोर—*(वि०)* १. संग्रह करने वाला। **संगरेखोर**। २. निकम्मी वस्तुओं का संग्रह करने की आदत वाला।

संग्रहणी—*(ना०)* दस्त लगने की एक बीमारी। **संगरणी**।

संग्रहालय—*(न०)* विविध प्रकार की प्राचीन और अद्भुत एवं कलापूर्ण वस्तुओं का संग्रह स्थान। जानने तथा देखने योग्य वस्तुएँ जहाँ इकट्ठी की हुई हो, वह स्थान और उनका प्रदर्शन। **अजायबघर**। म्यूजियम। **अजबघर**। अद्भुतालय।

संग्राम—*(न०)* १. युद्ध। **जुध**। लड़ाई। बादशाह अकबर की एक बंदूक का नाम।

संघ—*(न०)* १. मंडल। २. यात्रियों का समूह। ३. कार्य या ध्येय के लिये गठित संस्था या दल। ४. राज्यों या संस्थाओं का केन्द्रीय संगठन। ५. बौद्ध भिक्षुओं का समाज, मठ या विहार।

संघट—दे० संकट।

संघटन—दे० संगठन।

संघरणी—दे० संग्रहणी।

संघरणो—दे० संगरणो।

संघरो—दे० संगरो।

संघवी—*(न०)* १. यात्रा का संघ निकालने वाला। २. संघ का नेता। ३. अमुक जाति की एक शाखा। ४. उपशाखा। अल्ल।

संघाड़ियो—*(वि०)* संघाड़े पर हाथी दाँत, लकड़ी आदि के अनेक प्रकार के आकार उतारने वाला। **खीरखियो**।

संघाड़ो—*(न०)* खरादी की चरखी।

संघात—*(न०)* १. आघात। २. आकस्मिक आघात।

संघातक—*(वि०)* घात करने वाला। मारने वाला।

संघार—*(न०)* संहार । नाश ।

संघारणो—*(क्रि०)* संहार करना । मारना । नाश करना । संहारणो ।

संघाराम—*(न०)* १. बौद्ध मठ । २. आश्रम ।

संच—*(न०)* १. संचय । २. देखभाल । ३. रक्षा ।

संचगर—*(न०)* १. कृपण । कंजूस । २. संचय करने वाला ।

संचणो—*(क्रि०)* १. एकत्रित करना । संग्रह करना । संघरणो । २. रक्षा करना ।

संचर—*(न०)* १. देह । २. विकास ।

संचरणो—*(क्रि०)* १. जाना । विचरण करना । २. उत्पन्न होना । पैदा होना । संचरणो । ३. फैलाना ।

संचर-लूण—*(न०)* सोंचर नमक । काला नमक ।

संचाणो—*(न०)* जामनगर (सौराष्ट्र) के पास आये हुये भक्त ईसरदास की कर्म-भूमि का नाम । जहाँ चौरे में उनके पगलियों की पूजा होती है ।

संचार—*(न०)* १. गमन । २. प्रसार । फैलाव । ३. आने जाने के साधन । ४. मार्ग प्रदर्शन । ५. कष्ट ।

संचारक—*(वि०)* १. संचार करने वाला । २. चलाने वाला । *(न०)* १. दलपति । २. नायक ।

संचार-जीवी—*(वि०)* खानाबदोश ।

संचार-साधन—*(न०)* यातायात से संबंध रखने वाले साधन । गमनागमन, डाक-तार इत्यादि के साधन ।

संचारी—*(वि०)* संचार करने वाला । *(न०)* रस के परिपाक में सहायक भाव । साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं । ४. गीत के चार चरणों में से तीसरा ।

संचालक—*(न०)* १. कार्यालय का काम चलाने वाला । २. व्यवस्था करने वाला ।

संचित—*(वि०)* इकट्ठा किया हुआ । संग्रह किया हुआ । संघरियोड़ो ।

संचित-कर्म—*(न०)* पूर्व जन्म के शेष रहे हुए कर्म (जिनका फल भुगतना है) ।

संचो—*(न०)* १. संचय करने का काम या भाव । २. संचय । ३. साँचा । ठप्पा । ४. यंत्र ।

संछेप—दे० संक्षेप ।

संज—*(न०)* १. सामान । २. घोड़े, ऊंट आदि की जीन । सवारी के लिये कसा जाने वाला सामान । ३. सामर्थ्य । हैसियत । ४. संकेत । ५. लक्षण । चिन्ह । ६. सम्पन्नता ।

संजनी—*(ना०)* धनुष की डोरी । पनच । प्रत्यंचा । शिंजिनी ।

संजम—*(न०)* १. निग्रह । २. नियन्त्रण । ३. इंद्रिय निग्रह । संयम । ४. दमन । ५. अभाव । ६. बंद ।

संजमनीपत—*(न०)* यमराज ।

संजमी—*(वि०)* १. इंद्रिय निग्रह करने वाला । जितेंद्रिय । संयमी । *(न०)* १. यति । २. ऋषि ।

संजवारी—*(ना०)* १. झाड़ू । बुहारी । सारवणी । २. कचरा । दे० संजेरो ।

संजवारो—*(न०)* झाड़ू । बुहारा । दे० संजेरो ।

संजात—*(वि०)* १. उत्पन्न । २. साथ में उत्पन्न । ३. प्राप्त ।

संजाब—*(ना०)* कपड़े पर लगाई जाने वाली मगजी । संजाफ ।

संजीदगी—*(ना०)* १. गंभीरता। २. शिष्टता। ३. सहिष्णुता।

संजीदो—*(वि०)* १. गंभीर। २. शांत। ३. बुद्धिमान। संजीदा।

संजीवण—*(वि०)* १. जिलाने वाला। संजीवन। २. पुनर्जीवित करना।

संजीवण-बूंटी—*(ना०)* नया या पुनर्जीवन देने वाली औषधि। **संजीवणी**।

संजीवणी—*(ना०)* १. संजीवनी। **सजीवण बूंटी**। पुनर्जीवन देने वाली एक औषधि। २. पुनर्जीवन की विद्या।

संजीवणी-बूंटी—*दे०* संजीवण बूंटी।

संजीवन—*दे०* संजीवण।

संजीवनी—*दे०* संजीवणी।

संजुग *(ना०)* १. युद्ध। २. भिड़ंत।

संजुगत—*दे०* संयुक्त।

संजुत—*दे०* संयुक्त।

सं'जेरो—*(ना०)* १. भोजन कर लेने के बाद झाड़ू निकालना, चौका-पोता करना और बरतन आदि माँज कर रसोई में सफाई करने का काम। २. कचरा-फूस। **संजवारो**। ३. भोजन बनाने के बाद बिना साफ किया हुआ रसोई का सामान (बरतन इत्यादि)।

संजोग—*दे०* संयोग।

संजोगड़ो—*दे०* संजोगी सं० ५.

संजोगी—*(वि०)* १. संयोगी। संयोग करने वाला। २. संयुक्त। मिला हुआ। ३. विवाहित। ४. वह जिसे अपने संबंधी, मित्र, पत्नी इत्यादि कुटुंबी जनों से वियोग सहन नहीं करना पड़ा हो। ५. नीच जाति का व्यक्ति, जो साधु का भेष बना कर भिक्षा माँगता हो। नकली साधु। **संजोगड़ो**।

संजोड़णो—*(क्रि०)* १. साथ में लेना। २. साथ में लेकर चलना। ३. संयुक्त करना।

संजोणो—*दे०* संजोवणो।

संजोरो—*(वि०)* जबरदस्त। **सजोरो**। बलवान।

संजोवणो *(क्रि०)* १. सम्हालना। २. सम्हाल कर रखना। ३. सजाना। ४. सजा कर रखना। ५. स्थापित करना। रखना। ६. दीपक जलाना। ७. उत्पन्न करना। ८. देखना। तपास करना। ९. प्रकाश करना। १०. संयुक्त करना।

संज्ञा—*(ना०)* १. व्याकरण में वह शब्द जो किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु का बोधक होता है। नाम। अभिधान। ३. चेतना। होश। ४. बुद्धि। समझ। ५. ज्ञान। ६. सूर्य की पत्नी का नाम। ७. गायत्री। ४. संकेत।

संज्ञार्थक क्रिया—*(ना०)* वह क्रिया जो संज्ञा-अर्थ को सूचित करती है। वह क्रिया-शब्द जो संज्ञा का अर्थ बोधक होता है। *(व्या०)*। जैसे—रुदन। *(न०)* रोना। प्रक्षालन *(न०)* धोना।

संज्या—*(ना०)* संध्या। साँझ। शाम।

संझ—*(ना०)* संध्या। **साँझ**। *दे०* सांज।

संझावळ—*(न०)* राक्षस।

संठ—*(वि०)* सम्पन्न।

संठणो—*(क्रि०)* १. धन, धान्यादि से संपन्न होना। दरिद्रता का मिट जाना। धनवान होना। २. योग्य होना। ३. सबल होना।

सं'ठियोड़ो—*(वि०)* अच्छी स्थिति को प्राप्त। संस्थित। संपन्न। धन-धान्य वाला।

संड-मुसंड—*(वि०)* मोटा ताजा। हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट।

संडावो—दे० संडासो।

संडास—*(न०)* पायखाना। शौचकूप।

संडासी—*(ना०)* साँडसी। पकड़। सँडासी।

संडासो—*(न०)* सुनारों का लंबा चिमटा। सँडावो। चींपियो।

संडोरियो—*(न०)* चरस का एक उपकरण।

संढ—*(न०)* नपुंसक। हिजड़ा। नाजर। हींजड़ो।

संत—*(न०)* १. साधु। २. महात्मा। ३. साधु पुरुष। पवित्र पुरुष। ४. विरक्त पुरुष। ५. ईश्वर भक्त। *(वि०)* १. धर्मात्मा। २. पवित्र।

संतणो—*(क्रि०)* १. छिपना। लुकणो। २. संतप्त होना। दुखी होना।

संतत—*(अव्य०)* सदा। सर्वदा। निरंतर। सदाही। सदां।

संतति—*(ना०)* संतान। बाल-बच्चे। औलाद।

संतति-पथ—*(न०)* भग। योनि।

संतमस—*(न०)* अंधेरा। अंधारो।

संत-महिमा—*(न०)* १. संतों की महिमा। २. पं० मगनीराम साकरिया द्वारा रचित निरंजनी संप्रदाय के संतों की महिमा का एक ग्रंथ।

संतरण—*(न०)* १. तैरना। २. उबरना। ३. नाव। *(वि०)* तारने वाला। उबारने वाला। उद्धारक।

संतरी—*(न०)* पहरेदार। पोहरायत।

संतरो—*(न०)* संतरा। नारंगी।

संतवाणी—*(ना०)* संतों की वाणी। संतों का उपदेश।

संत-समागम—*(न०)* संतों के साथ सहवास या उनके उपदेश, कीर्तन इत्यादि का लाभ। २. सत्संगति। संतों की संगति।

संत-साहित्य—*(न०)* संतों द्वारा रचित साहित्य।

संताड़णो—*(क्रि०)* छिपाना।

संताणी—*(ना०)* नारी संत। साधाणी।

संताणो—*(क्रि०)* १. सताना। दुख देना। २. छिपाना। ३. छिपना। लुकणो।

संतान—*(ना०)* सतति। औलाद। बाल-बच्चे। १. अपत्य। २. प्रजा। ३. वंश। कुळ।

संताप—*(न०)* १. क्लेश। दुख। २. चित्तोताप। मानसिक कष्ट। ३. पछतावा। पश्चात्ताप। ४. दाह। जलन। ५. अंतर्पीड़ा। ६. उत्तेजन। जोश। ७. शत्रु।

संतापणो—*(क्रि०)* १. संताप देना। अत्यधिक कष्ट देना। २. जलाना। ३. मानसिक कष्ट पहुंचाना। ४. संताप होना।

संतावणो—*(क्रि०)* १. सताना। संताप देना। २. छिपाना। ३. छिपना।

संतीजणो—दे० संतणो।

संतुष्ट—*(वि०)* १. जिसे संतोष हो गया हो। संतोष प्राप्त। २. तृप्त।

संतोख—दे० संतोष।

संतोखणो—*(क्रि०)* १. संतोष करना। २. संतोष होना। ३. संतोष दिलाना। राजी करना। ४. उपहार देना। ५. दान देना। ६. बहन-बेटी को मनवांछित वस्त्रादि देकर राजी करना।

संतोखी—दे० संतोषी।

संतोष—*(न०)* १. तृप्ति। २. समाधान। ३. प्रसन्नता। ४. सुख। ५. जितना

हो उतने से संतुष्ट होना। ६. किसी बात की चिंता या शिकायत न करना। ७. सदा प्रसन्न रहना।

संतोषी—*(वि०)* संतोष रखने वाला। प्राप्त स्थिति में संतोष मानने वाला।

संतोषी देवी—*(ना०)* एक लोक देवी। जिसका व्रत तथा पूजा शुक्रवार को की जाती है और अमुक परिमाण में उस दिन चने ही खाये जाते हैं।

संतोस—दे० संतोष।

संथ—*(न०)* १. मत। राय। २. साथ। ३. सम्पन्न। ४. संग्रह। ५. रीति। ढंग। प्रकार। ३. बार। समय। दफा।

संथणो—*(क्रि०)* १. संग्रह करना। २. सम्हाल कर रखना।

संथा—*(ना०)* एक बार या एक दिन में पढ़ाया जा सकने वाला पाठ। सबक।

संथारो—*(न०)* मृत्यु निकट होने के समय माया, ममता, खान-पान इत्यादि का त्याग कर मृत्यु का आह्वान करना (जैन धर्म में) मरणव्रत।

संथियोड़ो—*(भू०क्रि०)* संग्रह किया हुआ। सम्पन्न।

संथो—*(न०)* १. पूंजी। २. धन। सम्पत्ति। ३. भंडार। कोठार। ४. परिग्रह। संग्रह। संचो।

संद—*(न०)* १. पानी के रिसने से उत्पन्न गीलापन। सील। सेज। २. छेद। दरार। ३. रज। धूलि।

संदण—दे० स्यंदन।

संदणारोही—दे० स्यंदनरूढ।

संदर्भ—*(न०)* १. निबंध। प्रबंध। २. प्रकरण। प्रसंग। ३. किसी वस्तु या बात का पूर्वापर संबंध। ४. पूर्वापर अर्थ का संबंध। ५. किसी बात का उसके आगे-पीछे की या आसपास की बातों की पार्श्वभूमि में अन्वय या अर्थ।

संदर्भ-ग्रंथ—*(न०)* १. वह ग्रंथ जिसमें अन्य पुस्तकों में आये हुए गूढ़ विषय या शब्दों का स्पष्टीकरण हो। २. विशिष्ट, विविध या विस्तृत जानकारियों से युक्त ग्रंथ या कोश।

संदल—*(न०)* चंदन। मलय।

संदली—*(वि०)* चंदनी रंग का। *(न०)* १. वह हाथी जिसके बाहर के दाँत न हों। मकुना हाथी। मकनो। २. एक प्रकार का कपड़ा।

संदिग्ध—*(वि०)* १. संदेहपूर्ण। संदेहास्पद। २. जिस पर संदेह हो। ३. जिसके बारे में अपराधी या दोषी होने का अनुमान हो। ४. अस्पष्ट या अनिश्चित अर्थ या व्याख्या वाला।

संदी—*(अव्य०)* 'की' विभक्ति का एक पर्याय। हंदी।

संदीपन(न०) १. कामदेव का एक बाण। २. उद्दीपन। ३. श्रीकृष्ण और सुदामा के गुरु। सांदीपनि।

संदूक—*(न०)* लकड़ी या धातु की पेटी। बक्स।

संदूकड़ी—*(ना०)* छोटा संदूक।

संदेड़ो—*(न०)* एक वृक्ष।

संदेश—*(न०)* १. खबर। समाचार। २. प्रेषित आदेश, आज्ञा, सूचना या बात। संदेहो। ३. विवाहादि उत्सव, समारोह इत्यादि पर किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का मंगलकामनात्मक आशीर्वचन।

संदेश-काव्य—*(न०)* वह काव्य जिसमें विरही अपने प्रियतम के पास कुरजां (क्रौंच) भौंरा, बादल, पवनादि के माध्यम से संदेश भेजता है।

संदेस—दे० संदेश।

संदेसो—दे० संदेश।

सं देह—*(न०)* शंका। संशय। शक। वहम। **संको**।

संदेहाळ—*(वि०)* वहमी।

संदेहो—दे० संदेश।

संदो—*(अव्य०)* नर जाति की 'का' विभक्ति का एक पर्याय। **हंदो**।

संदोह—*(न०)* समूह। झुंड।

संध—*(अव्य०)* निश्चय ही। *(न०)* संधि। **सांध। सांधो।**

संधणो—*(क्रि०)* १. जुड़ना। संयुक्त होना। संधना। **सांधीजणो**। २. बनना। तैयार होना। ३. जोड़ा जाना। **संधीजणो**।

सं धाणो—*(न०)* पौष्टिक पाक। *(क्रि०)* जोड़ लगवाना। जुड़वाना।

संधाणो-सांधणो—*(मुहा०)* अशक्त व्यक्ति के लिए पौष्टिक पाक बनवाना। शीत-काल में शक्ति बनाये रखने के लिये बलवर्धक औषधियों का संधाना बनाना।

संधावणो—*(क्रि०)* टूटे हुए को संधवाना। संधाना।

संधि—*(ना०)* १. दो टुकड़ों या मिलने का स्थान। जोड़। गाँठ। २. दो वस्तुओं के बीच की दरार या अवकाश। ३. दो राज्यों या दलों के बीच समझौता। सुलह। ४. दो वर्णों के पास-पास आने से और उनके मिलने से होने वाला परिवर्तन। जोड़ना या विकार (व्या.)। ५. दो युगों या विशिष्ट समयों के बीच का काल। ६. एक स्थिति के समाप्त होने पर दूसरी स्थिति या अवस्था के आरंभ का समय। ७. संयोग। मेल। ८. सुलह। करार।

संधि-काल—*(न०)* एक स्थिति या अवस्था की समाप्ति तथा दूसरी के प्रारंभ का समय। संक्रमण काल।

संधि-पत्र—*(न०)* राज्यों इत्यादि के बीच में संधि की शर्तों इत्यादि का लेख। **करारनामो**। **राजीनामो**।

संधि-विच्छेद—*(न०)* १. संधिगत शब्दों को अलग-अलग करना। २. संधि या समझौते का टूटना।

संधि-स्वर—दो स्वरों की संधि होने से बना हुआ स्वर वर्ण, जैसे—अै, ओ।

संध्या—*(ना०)* १. सायंकाल। **साँझ**। शाम। दिन के अन्त का समय। २. दिन और रात (रात और दिन) का संधिकाल। ३. दो युगों के बीच का समय। युगसंधि। ४. संध्याकाल में किया जाने वाला सूर्योपासन, गायत्री जप और प्राणायाम इत्यादि वैदिक कर्म। सवेरे, दुपहर और संध्या के समय की जाने वाली पूजा-अर्चना।

संध्या-करणी—*(मुहा०)* त्रिकाल संध्याओं में पाठपूजा, गायत्रीमंत्र आदि का जप करना।

संध्या-काळ—*(न०)* १. साँझ। शाम। २. संध्यादि नित्य कर्म करने का समय।

संध्या-टाळणी—*(मुहा०)* संध्या समय सभी काम बंद करके ध्यान-वंदन करना।

संध्या-फूलणी—*(मुहा०)* सूर्यास्त की संध्या के समय आकाश का लाल पीले आदि विविध रंगों से प्रफुल्लित होना ।

संध्या-माता—*(ना०)* सूर्यास्त के बाद लगभग आधे-पौन घंटे के समय तक का संध्याकाल का नाम ।

संध्या-वांदणो—*(मुहा०)* संध्यावंदन करना ।

संध्योपासना—*(ना०)* संध्याकाल में किया जाने वाला पूजा, उपासना आदि नित्य-कर्म ।

संनिधान—*(न०)* निकटता । समीपता । *(क्रि०वि०)* निकट । पास ।

संन्यास—*(न०)* १. संसार व्यवहार का त्याग । २. स्वेच्छापूर्वक त्याग । परित्याग ।

संन्यासाश्रम—*(न०)* हिन्दुओं के चार आश्रमों में से चौथा और अन्तिम आश्रम । घर-गृहस्थी के परित्याग से संबद्ध जीवन का एक आश्रम ।

संन्यासी—*(न०)* जिसने संन्यास लिया हो वह व्यक्ति । साधु ।

संप—*(न०)* १. मेल । एकता । २. मित्रता । ३. प्रेम । ४. बिजली । संपा ।

संपज—*(ना०)* १. प्राप्त । मिला हुआ । २. उत्पन्न ।

संपजणो—*(क्रि०)* १. प्राप्त होना । मिलना । २. देना । ३. उत्पन्न होना ।

संपट—*(न०)* १. मौका । २. नाश ।

संपटपाट—*(न०)* नाश । बरबाद ।

संपड़ावणो—*(क्रि०)* स्नान करवाना । न्हीलावणो । न्हवाणो ।

संपणो—*(क्रि०)* १. प्राप्त होना । मिलना । २. संप से रहना । मिलकर रहना । ३. बिजली का चमकना ।

संपत—*(ना०)* दे० संप । दे० संपत्ति ।

संपत्ति—*(ना०)* १, धन । दौलत । जायदाद । २. ऐश्वर्य । वैभव ।

संपत्ति-शास्त्र—*(न०)* संपत्ति की उत्पत्ति और उसके बँटवारे आदि के नियमों की चर्चा करने वाला शास्त्र । अर्थ-शास्त्र ।

संपदा—*(ना०)* १. संपत्ति । धन । २. ऐश्वर्य । वैभव ।

संपन्न—*(वि०)* १. पूरा किया हुआ । पूर्ण । सिद्ध । २. युक्त । सहित । ३. समृद्ध । धनी । ४. वैभवशाली । श्रीमान् ।

संपरदा—*(ना०)* १. धार्मिक पंथ । सम्प्रदाय । २. मित्रमंडली । ३. मंडली । गोष्ठी । ४. बाल बच्चे । बाल मंडली । ५. संगठन । ६. पक्ष । । तड़ । छड़ो ।

संपराय—*(न०)* युद्ध ।

संपर्क—*(न०)* १. संबंध । लगाव । वास्ता । २. संयोग । ३. स्पर्श ।

संपा—*(ना०)* बिजली । मेघ विद्युत । खिवण ।

संपाड़ो—*(न०)* स्नान । नहाना । सिनान । नहाण ।

संपाड़ो-करणो—*(क्रि०)* स्नान करना । न्हीलणो ।

संपादक—*(न०)* १. वह व्यक्ति जो दूसरे की रचना को शुद्ध कर प्रकाशन योग्य बनाता है । पत्र-पत्रिका, पुस्तक, लेखों इत्यादि को चुनने, ठीक करने तथा प्रकाशन योग्य बनाने वाला व्यक्ति । संपादन करने वाला । २. कार्य को व्यवस्थित, संपन्न, संयोजित, तैयार या प्रस्तुत करने वाला । ३. कार्य संपन्न करने वाला व्यक्ति ।

संपादकीय—*(वि०)* १. संपादक का। २. संपादक का लिखा हुआ। ३. संपादक से संबंधित। ४. संपादक संबंधी। *(न०)* समाचार पत्र का वह लेख जो किसी विशिष्ट विषय पर संपादक ने लिखा हो।

संपादन—*(न०)* १. किसी पुस्तक या समाचार-पत्र आदि को क्रम, पाठादि लगा कर प्रकाशित करने योग्य बनाने का काम। २. काम इत्यादि को अच्छी प्रकार से पूरा करने का काम। ३. प्राप्ति।

संपुट—(न०) १. दोना। २. अंजलि। ३. फूल का कोश। ४. औषध इत्यादि पकाने के लिये (औषध भरे हुये सकोरे का) गीली मिट्टी से लपेटा हुआ बंद मुँह का पात्र। ५. मूल मंत्र के पहिले व बाद की पवित्र शब्दावली। ६. इसको दुहराकर के पाठ या जप करने की तांत्रिक विधि। ७. बात करते बीच में बोला जाने वाला अनावश्यक शब्द। तकिया कलाम।

संपूज्य—*(वि०)* अत्यधिक आदरणीय।

संपूरण—दे० संपूर्ण।

संपूर्ण—*(वि०)* १. पूरी तरह से भरा हुआ या किया हुआ। २. पूरा। समूचा। ३. समाप्त। ४. सातों स्वर जिस राग में लगते हों, उसका विशेषण, जैसे—संपूर्ण राग।

संपेखणो—*(क्रि०)* १. देखना। जोवणो। २. जांच करना। जाँचणो।

संपोळियो—*(न०)* १. साँप का बच्चा। २. छोटा साँप। सळपोटियो।

संप्रति—*(अव्य०)* अभी। इसी समय। अबार। हमार।

संप्रदान—*(न०)* १. दान देने की क्रिया या भाव। २. मंत्रोपदेश। दीक्षा। ३. भेंट। नजर। ४. जिसके निमित्त क्रिया या कार्य हुआ हो, उस व्यक्ति या वस्तु शब्द का कारक। चौथा कारक (व्या०)।

संप्रदान-कारक—दे० संप्रदान सं० ४.

संप्रदाय—*(न०)* १. परंपरागत मत। २. विशिष्ट मत या सिद्धान्त। ३. धार्मिक मत। पंथ। ४. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। ५. रिवाज। परिपाटी।

संबद्ध—*(वि०)* १. बंधा या जुड़ा हुआ। २. संबंधयुक्त। ३. संयुक्त।

संबर—*(न०)* १. पानी। २. मछली। ३. हरिण। ४. युद्ध। ५. तालवृक्ष। ६. मेघ। ७. पर्वत। ८. एक राक्षस का नाम। *(वि०)* १. सुखी। २. भाग्यवान। ३. बहुत बढ़िया।

संबरारि—*(न०)* कामदेव। शंबरारि।

संबल—*(न०)* १. यात्रा में साथ ली हुई भोजन सामग्री। रास्ते में खाने का सामान। पाथेय। संबाल। २. आश्रय। सहारा। ३. जल। ४. एक वाद्य। दे० संबाळ।

संबंध—*(न०)* १. संयोग। २. संपर्क। ३. नाता। रिश्ता। ४. मैत्री। ५. सगाई। ६. विवाह। ७. परिचय।

संबंधकारक—*(न०)* एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबंध सूचित करने वाला कारक। 'षष्ठी विभक्ति' का कारक। संबंध वाचक (व्या०)।

संबंधी—*(वि०)* १. जिसका विवाहादि के कारण संबंध बँधा हो। २. संबंध रखने वाला। *(न०)* समधी। रिश्तेदार।

सगो । वेवाही । व्याही । *(अव्य०)* १. संबंध में । विषयक । २. सिलसिले में । प्रसंग ।

संबाळ—*(ना०)* १. पाथेय । संबल । भातो । २. दूसरे गाँव के सगे-संबंधियों के यहाँ भेजी जाने वाली मिठाई आदि भोज्य पदार्थों की भेंट ।

संबाहणो—*(क्रि०)* १. धारण करना । सम्हालना । २. धारण कराना ।

संबोध—*(न०)* पूरा ज्ञान । सम्यक् ज्ञान । पूरी जानकारी ।

संबोधणो—*(क्रि०)* १. संबोधन करना । २. उपदेश करना । ३. समझाना ।

संबोधन—*(न०)* १. जगाना । बोध कराना । २. पुकारना । ३. संबोधित करने या पुकारने के लिये प्रयुक्त शब्द ।

संबोधन-कारक—*(न०)* वाक्य में संबोधन शब्द कारक रूप (व्या०) ।

संभ—*(न०)* १. संभव । २. संभावना । ३. उत्पत्ति । ४. संयोग । ५. सृष्टि । ६. ध्वंस । नाश । ७. ईश्वर । शिव । ८. ब्रह्मा ।

संभणो—*(क्रि०)* १. संभव होना । २. तैयार होना । ३. सावधान होना । ४. रोग मुक्त होकर स्वस्थ होना । ५. भार उठाया जाना ।

संभर—दे० साँभर ।

संभरणो—*(क्रि०)* १. याद आना । २. याद होना । ३. सुमिरण करना या होना ।

संभर-पति—*(न०)* साँभर नगर या प्रदेश का चौहान राजा ।

संभरा-देवी—दे० साँभरा देवी ।

संभरा-माता—दे० साँभरा माता ।

संभरियो—*(न०)* चौहान राजा या क्षत्री । संभरी ।

संभरी—*(न०)* १. चौहान राजपूत । २. शाकंभरी देवी । साँभरी ।

संभरीक—*(न०)* चौहान क्षत्री । *(वि०)* साँभर क्षेत्र का रहने वाला ।

संभरीनाथ—*(न०)* १. साँभर का अधिपति । २. पृथ्वीराज चौहान ।

संभरीराव—*(न०)* १. चौहान राजा । २. शाकंभरीपति । साँभर का राजा । ३. साँभर का अधिपति पृथ्वीराज चौहान ।

संभरघो—दे० संभरियो ।

संभळणो—*(क्रि०)* १. गिरने, फिसलने, आक्रमण इत्यादि से सावधान रहना । सँभलना । सम्हलना । २. तैयार होना । सजना । सँवरना । ३. सुनना । साँभळणो । ४. सुनाई देना । सुणीजणो ।

संभळामणी—*(ना०)* १. प्रदेश आदि किसी अन्य स्थान से प्राप्त होने वाला किसी स्नेही-संबंधी की मृत्यु का पत्र या समाचार । २. सँभळावणी का शोक । समळावणी ।

संभावणी—दे० सँभळामणी ।

संभळावणो—*(क्रि०)* १. सँभलाना । सम्हलाना । २. सुनाना । ३. किसी संबंधी के मर जाने के समाचार कहना ।

संभळी—*(ना०)* १. गणिका । २. जादूगरनी । शांबरी ।

संभव—*(न०)* १. जन्म । उत्पत्ति । २. जिसके घटित होने की संभावना हो । ३. किये जाने या होने योग्य । मुमकिन । शक्य । होने योग्य । ४. उत्पन्न या घटित होने की स्थिति या भाव । ५. घटित होना । ६. अयुक्तता । ७. ध्वंस । नाश ।

संभवणो—*(क्रि०)* १. संभव होना। २. उत्पन्न होना। ३. उत्पन्न करना।

संभा—*(ना०)* १. सभा। छभा। २. अफीम गोष्ठी। रिहाण।

संभाणो—दे० संभावणो।

संभार—*(ना०)* १. ख्याल। विचार। २. याद।

संभारणो—*(क्रि०)* याद करना। स्मरण करना। *(न०)* स्मारिका।

संभाळ—*(ना०)* १. देखरेख। हिफाजत। २. पालन-पोषण। ३. व्यवस्था। ४. यत्न। ५. चेत। होश।

संभाळणो—*(क्रि०)* १. देखरेख करना। २. पालन-पोषण करना। ३. व्यवस्था करना।

संभाळियोड़ो—*(भू०कृ०)* संभाला हुआ।

संभाळीजणो—*(क्रि०)* सम्हाला जाना।

संभाळो—*(न०)* १. निगरानी। देखरेख। २. पुलिस की जांच या तफतीश। ३. तपास। तलाशी। झड़की।

संभाळो लेणो—*(मुहा०)* तलाशी लेना।

संभावणो—*(क्रि०)* १. धारण करना। सम्हालना। २. सुपुर्द करना। ३. संभव होना। ४. तैयार करना। ५. सम्हलाना।

संभावना—*(ना०)* १. शक्यता। हो सकना। २. कल्पना। अनुमान। ३. एक अलंकार (साहित्य)।

संभाषण—*(न०)* वार्तालाप। बातचीत।

संभियोड़ो—*(वि०)* तैयार। तत्पर।

संभु—दे० शंभु।

संभूमेळो—*(न०)* १. संन्यासियों का भोजन समारोह। २. सामियों के मृतक का भण्डारा। ३. अनेक जातियों का समूह। ४. अनेक जातियों का सहभोज। ५. भिन्न-भिन्न जातियों का अव्यवस्थित समूह और उसका आचार-विचार रहित खान-पान। ६. जुदी-जुदी जातियों का समूह। ७. सभी प्रकारों का मिलान। सेळभेळ।

संभोग—*(न०)* १. पूरा उपयोग। २. मैथुन।

संभ्रम—*(न०)* १. पुत्र। अंगोभ्रम। अंगज। डीकरो। २. भ्रांति। भ्रम। ३. भूल। ४. भय। डर। ५. चक्कर। ६. त्वरा। उतावळ। ७. उत्पात। ८. संदेह। शक। ९. आवेग। १०. घबराहट। बेचैनी। ११. मान। १२. गौरव। १३. उत्कंठा।

संभ्रांत—*(वि०)* १. प्रतिष्ठित। सम्मानित। २. क्षुब्ध। व्यग्र। ३. भ्रम में पड़ा हुआ।

संमत—*(वि०)* १. सम्मत। सहमत। २ स्वीकृत। माना हुआ। दे० संवत।

संमारजणी—*(ना०)* मार्जनी। झाड़ू। बुहारी। संजवारी।

संमुरवीन—*(अव्य०)* सामने। समक्ष। आगे।

संयम—*(न०)* १. मन और वृत्तियों पर रोक। २. इंद्रिय निग्रह। ३. क्षोभ, आवेगादि का निवारण। ४. हानिकारक वस्तुओं तथा बातों से परहेज। ५. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

संयमी—*(वि०)* १. वासनाओं तथा मन को काबू में रखने वाला। आत्मनिग्रही। संयम रखने वाला। योगी। २. पथ्य से रहने वाला। करी राखण वाळो।

संयुक्त—*(वि०)* १. जुड़ा या लगा हुआ। सटा हुआ। २. सहित। ३. साथ-साथ मिल कर काम करने वाले। जिसमें एक से अधिक भागीदार हों।

संयोग—*(न०)* १. दो या अधिक बातों का अचानक एक साथ होना, मिलना या आना। २. मिलन। मेल। ३. मिश्रण। ४. समागम। ५. संभोग। सहवास। ६. लगाव। ७. संबंध।

संयोजक—*(वि०)* १. जोड़ने या मिलाने वाला। संयोजन कराने वाला। *(न०)* १. सभा-समितियों के कार्यों को संयोजित करने वाला व्यक्ति। कन्वीनर। २. दो वाक्यों या दो शब्दों को जोड़ने वाला शब्द (व्या०)।

संयोजक-चिह्न—*(न०)* दो शब्दों को जोड़ने वाली, उनके बीच में दी जाने छोटी लकीर। योजिका। हाइफन। जैसे—मान-मर्यादा।

संरक्षक—*(वि०)* १. रक्षण करने वाला। शरण देने वाला। २. संस्था का प्रधान पोषक। *(न०)* अभिभावक।

संरक्षण—*(न०)* १. पालन-पोषण। २. देखरेख। हिफाजत। ३. रक्षा।

संरक्षित—*(वि०)* विशिष्ट रूप से रक्षित। सलामत।

संलग्न—*(वि०)* १. साथ जुड़ा हुआ। संबद्ध। २. नत्थी किया हुआ।

संलय—*(ना०)* नींद। ऊंघ।

संवच्छर—*(न०)* सम्वत्सर।

संबद्धिढय—*(वि०)* संवर्धित।

संवत—*(न०)* १. वह वर्ष गणना जो राजा विक्रमादित्य के समय से चली आ रही है। २. विक्रम संवत का कोई भी वर्ष। ३. संख्या के विचार से चलने वाली वर्षगणना का कोई वर्ष। ४. वर्ष, साल, सम्वत। **बरस**। ५. सौ वर्ष का समय। **सईको**।

संवत-ग्रादं—*(न०)* मार्गशीर्ष।

संवत्सर—*(न०)* वर्ष। **साल**। **बरस**।

संवत्सरी—*दे०* समछरी।

संवरण—*(न०)* १. चुनना। पसंद करना। २. ढकना। छिपाना। ३. वश में करना। ४. वरण करना।

संवरणो—*(क्रि०)* १. वस्त्र, अलंकार इत्यादि से युक्त होकर सुशोभित होना। सज्जित होना। **सजणो**। २. मरम्मत होना। संवारा जाना। ३. तैयार होना। ४. समेटना। ५. समेटा जाना। **समेटीजणो**।

संवरतन—*(न०)* १. प्रलय। परलो। २. प्रलय काल की सात मेघमालाओं में से एक। संवर्तक।

सँवराजणो—*दे०* सँवराणो।

सँवराणो—*(क्रि०)* १. मरम्मत कराना। दुरुस्त कराना। २. तैयार कराना। ३. निर्माण कराना। बनवाना।

सँवरावणो—*दे०* सँवराणो।

सँवरारि—*(न०)* कामदेव।

सँवळी—*(ना०)* चील पक्षी। *(वि०)* 'अवळी' का उलटा। अनुकूल।

सँवळो—*(वि०)* १. सीधा। अनुकूल। 'अवळो' का उलटा। २. साँवला। श्यामल।

सँवा—*(अव्य०)* ही। समां।

संवाद—*(न०)* १ बातचीत। वार्तालाप। २. संदेश। ३. वृत्तान्त। ४. खबर। समाचार।

सँवार—*(ना०)* १. हजामत। क्षौर। वपन। **खिजमत। स्वाँर।** २. **सजावट।** ३. शेष। ४. लाभ। **फायदो।** ५. बचत। ६. सुधार। ७. शृंगार।

संवारणो—*(क्रि०)* १. काट-छाँट कर ठीक करना। दुरुस्त करना। समारना। **समारणो।** २. शुद्ध करना। ३. तैयार की हुई वस्तु को अंतिम रूप देना। ४. सुन्दर, सुचारु बनाना। सजाना। अलंकृत करना।

संवारो—दे० समारो।

संविधान—*(न०)* १. वह विधान जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन तथा व्यवस्था होती है। २. व्यवस्था। आयोजन। ३. रचना। ४. रीति।

संवेदना—*(ना०)* १. किसी के कष्ट को देखकर मन में होने वाला दुख। २. सहानुभूति।

संवेष्टन—*(न०)* १. लपेटन। **वींटण।** २. घेरना। ३. बाँधना।

संवेसर—*(ना०)* नींद। **सलय ऊंघ।**

संवैधानिक—*(वि०)* संविधान संबंधी।

संव्रत—*(न०)* वरुण।

संशय—*(न०)* १. शक। संदेह। **सांसो।** २. शंकाकुल स्थिति। ३. आशंका।

संशोधक—*(न०)* १. संशोधन करने वाला। दुरुस्त करने वाला। २. अच्छी दशा में लाने वाला।

संशोधन—*(न०)* १. शुद्धिकरण। २. दोष-निवारण। भूल सुधारना। ३. प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाने-बढ़ाने संबंधी सुझाव।

संशोधित—*(वि०)* संशोधन किया हुआ।

संस—*(न०)* संशय। भ्रम। **सांसो।**

संसकार—दे० संस्कार।

संसकारणो—*(क्रि०)* १. दाल, शाक आदि में छोंक लगाना। **बघारणो।** २. संस्कार करना।

संसक्रित—दे० संस्कृत।

संसद—*(ना०)* १. प्रजातंत्र में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचित सर्वोच्च परिषद्। शासन संबंधी कार्यों में पुराने विधानों में संशोधन तथा नये विधान बनाने के लिये प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्यों की सभा। पार्लियामेंट। २. सभा।

संसय—दे० संशय।

संसरण—*(न०)* राजमार्ग।

संसर्ग—*(न०)* १. मिलाप। मिलन। २. साथ। संगति। ३. मेल-जोल। ४. लगाव। ५. परिचय। ६. सहवास। साहचर्य।

संसार—*(न०)* १. जगत। दुनिया। २. संसृति। जन्म-मरण। आवागमन। ३. मृत्यु लोक। इहलोक। ४. जीवन। घर-गृहस्थी। ५. जीवन का प्रपंच। मायाजाल।

संसार-चक्र—*(न०)* १. बार-बार जन्म लेने तथा मरने का चक्र। भवचक्र। **आवागमण।** २. सांसारिक प्रपंच। ३. सुख-दुख का चक्र।

संसार-दवन्न—*(न०)* संसार रूपी दावाग्नि।

संसार-बंधन—*(न०)* सांसारिक बंधन। दुनिया के बंधन।

संसार-सागर—*(न०)* संसार रूपी सागर। भव सागर। **भवार्णव (वन)।**

संसार-सुख—*(न०)* भौतिक सुख।

संसारी—*(वि०)* १. संसार में रहने वाला। २. गृहस्थ जीवन बिताने वाला।

गृहस्थी। ३. संसार संबंधी। लौकिक। ऐहिक। ४. भौतिक। ५. बार-बार जन्म ग्रहण करने वाला। ६. व्यवहार-कुशल।

संसृति—*(ना०)* १. सृष्टि। संसार। जगत। २. चराचर।

संसै—दे० संशय।

संसो—दे० संशय।

संस्करण—*(ना०)* १. पुस्तकों आदि की एक बार की छपाई तथा आवृत्ति। एडीशन। २. संशोधन या परिष्कार करने की अथवा नया रूप देने की क्रिया।

संस्कर्ता—*(ना०)* १. संस्कार कराने वाला। २. झड़ूला उतारने वाला। नाई। चूड़ाकर्म कराने वाला।

संस्कार—*(ना०)* १. श्रेष्ठ और धार्मिक शिक्षण द्वारा जाना जाने वाला और नित्य व्यवहार में लाया जाने वाला शुद्ध आचरण। २. द्विजातियों के शास्त्र-विहित कार्य। ३. जन्म से मृत्यु तक के धार्मिक, सामाजिक कर्मकांड, उपचारादि। ४. हिन्दुओं में धार्मिक दृष्टि से शुद्धि तथा उन्नत करने के लिये किये जाने वाले सोलह विशिष्ट कृत्य। ५. समाज एवं व्यक्ति पर जीवन-यापन की परिस्थिति, उत्पादन-विधा, शिक्षा-दीक्षा, इत्यादि का सामूहिक परिणाम और तज्जन्य वृत्ति इत्यादि। ६. शुद्धि। परिष्कृति।

संस्कारहीन—*(वि०)* जिसका संस्कार न हुआ हो।

संस्कारी—*(वि०)* १. अच्छे संस्कारों वाला। २. भाग्यशाली। पुण्यशाली।

संस्कृत—*(ना०)* १. भारतीय आर्यों की प्राचीन तथा प्रसिद्ध भाषा। २. भारत की एक प्राचीन आर्यभाषा। देवभाषा। *(वि०)* १. शुद्ध किया हुआ। परिष्कृत। परिमार्जित। २. जिसका संस्कार हो गया हो।

संस्कृति—*(ना०)* १. विशिष्ट प्रदेश के लोक जीवन पर भूगोल, जलवायु, उत्पादन-विधा, रहन-सहन, इतिहास, परंपरा, साहित्य, धर्म, दर्शन इत्यादि का एवं तज्जन्य संस्कारों का पुंजीभूत प्रभाव। किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उनका मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल, धर्म तथा सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं। कल्चर। २. सभ्यता, संस्कार, आचार-विचार इत्यादि।

संस्था—*(ना०)* विशिष्ट उद्देश्यों एवं नियमों से संचालित मंडल, समाज या दल। सभा। परिषद्।

संस्थान—*(ना०)* १. साहित्य आदि की उन्नति के लिए स्थापित सभा। बड़ी संस्था। २. देश। ३. छोटा राज्य, **रजवाड़ा**। ४. वह जागीर या प्रदेश, जो अन्य राज्य के बीच में आया हुआ हो। किसी राज्य के बीच में आया हुआ किसी अन्य राज्य का भाग। अन्य राज्यों में बिखरे हुए किसी एक राज्य के भूभाग। ५. छोटे-छोटे राज्यों तथा जागीरों का एक संस्थानीय शासन।

संस्मरण—*(ना०)* १. आप बीती या अनुभूत बातों का वर्णन या कथन। किसी व्यक्ति के संबंध की स्मरणीय घटनाएँ तथा उनका उल्लेख।

संहार—*(ना०)* १. नाश। ध्वंस। २. प्रलय। ३. अंत। समाप्ति। ४. मार डालना। ५. समेटना।

संहारणो—*(क्रि०)* १. मार डालना। वध करना। २. नाश करना। **संघारणो**।

संहिता—*(ना०)* १. वेदों का ब्राह्मण ग्रंथों से भिन्न परंपरा से पद, पाठ, इत्यादि के क्रम में सुनिश्चित स्तोत्रों, सूक्तों तथा यज्ञादि के मंत्रों वाला भाग। वेदों का देवों की स्तुति वाला मंत्र भाग। २. (अधिकारियों द्वारा किया गया) नियमों, विधियों आदि का संग्रह। ३. वह ग्रंथ जिसमें पाठादि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। पाठ या पदों का व्यवस्थित संग्रह। ४. व्याकरण में संधि। ५. मिलावट। ६. संकलन। ७. संयोग।

सा—*(सर्व०)* वह। *(न०)* १. पार्वती। २. लक्ष्मी। ३. संगीत के स्वर सप्तक का प्रथम स्वर। षड्ज का संकेताक्षर। *(अव्य०)* १. पद में प्रयुक्त होने वाला एक सम्मानार्थक शब्द। जैसे—आप्रूं हूं सा। जळ अरोगो सा। २. जैसा। समान। *(सर्व० ना०)* वह (स्त्री)। **था**। **हेथा**।

साइकल—*(ना०)* दो पहियों वाली एक सवारी गाड़ी।

साइज—*(न०)* १. आकार। २. माप।

साइत—*(ना०)* १. समय। २. क्षण। पल।

साइन—*(न०)* हस्ताक्षर। दस्तखत। स्वाक्षर।

साइर—दे० सायर।

साइवान—*(न०)* एक प्रकार का तंबू। सायबान।

साई—*(ना०)* १. पेशगी। बयाना। २. वह धन जो कोई काम करने के पहिले बात पक्की करने के लिये दिया जाता है।

साईस—दे० सईस।

साइसेंतो—*(क्रि०वि०)* १. भलीभाँति। २. संपूर्ण।

साउ—दे० साऊ।

साउज—दे० सावज।

साउजम—*(वि०)* १. सोद्यम। २. सोत्सुक।

साउळ—*(ना०)* एक वस्त्र। ओढ़नी। साड़ी। दे० सावळ।

साउळो—*(न०)* लाल रंग की ओढ़नी। साड़ी।

साउवाळी—*(ना०)* १. जागीरदार की पत्नी। **ठकराणी**। २, जिसके सासू-ससुर जीवित हों वह सधवा पुत्रवधू।

साऊ—*(वि०)* १. अच्छा। २. सुन्दर। ३. ठीक। सही। ४. स्वस्थ। ५. यथा-तथ्य। ६. प्रामाणिक।

साक—दे० साग।

साकण—दे० साकणी।

साकणी—*(ना०)* शाकिनी। डायन। एक प्रकार की भूतनी।

साकत—दे० साखत।

साकर—*(ना०)* १. चाशनी करके मटकी, कूजे आदि में जमाई हुई चीनी के पासे। मिस्री। मिसरी। नवात। २. शक्कर। चीनी।

साकरिया—*(न०)* १. साक्षर ब्राह्मण। २. ब्राह्मणों की उपाधि या उपगोत्र। ३. एक बंद।

साकळी—*(ना०)* आटे में गुड़ का पानी मिला कर बनाई हुई खाजा जैसी खस्ता पूरी। शाकल्य। सुंहाळी। सुंवाळी।

साकळै—*(अव्य०)* १. प्रभात समय में। सवेरे। *(न०)* १. प्रातः। प्रभात। २. आने वाला कल।

साकळो—*(न०)* प्रभात । सवेरा । सुबार ।

साकाऊ—*(वि०)* साका करने वाला । आक्रमणकारी । सांथत ।

साका-बंध—*(वि०)* १. यशस्वी । ख्याति वाला । २. विजयी । ३. प्रामाणिक । ४. विश्वसनीय । ५. आतंक वाला । ६. साकावाला ।

साकार—*(वि०)* १. रूप या आकार वाला । २. मूर्तिमान । *(न०)* ईश्वर का मूर्तिमान रूप । ईश्वर का मूर्त या अवतरित रूप ।

साकारोपासना—*(ना०)* १. ईश्वर को साकार मान कर या मूर्ति रूप में पूजना । २. भक्ति का एक प्रकार ।

साकिन—*(वि०)* रहने वाला । निवासी । वाशिंदा । रहवासी ।

साकी—*(न०)* १. शराब तथा हुक्का पिलाने वाला व्यक्ति । २. माशूक । प्रिय । *(ना०)* १. प्याले में शराब भर कर देने वाली स्त्री । २. माशूका ।

साकुर—*(न०)* १. घोड़ा । २. फरास (झाऊ) वृक्ष का डांडा ।

साकेत—*(न०)* १. अयोध्यानगरी । २. रामचंद्रजी का लोक । साकेतधाम । ३. हिंदी महाकवि मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य 'साकेत' । *(वि०)* साका करने वाला । आक्रमणकारी । साकाऊ ।

साको—*(न०)* १. देश-प्रदेशों को विजय करने के लिए किया जाने वाला आक्रमण । २. आक्रमण । ३. युद्ध । ४. विजयाकांक्षा । ५. युद्धाकांक्षा । ६. युद्ध-विजय का उत्सव । ७. विजय-ख्याति । ८. ख्याति । ९. कीर्ति । १०. साहस या कीर्ति का अनोखा काम । ११. आतंक । धाक । १२. शक सम्वत् । शाका । साका ।

साक्षर—*(वि०)* १. जो पढ़ना-लिखना जानता हो । २. शिक्षित । विद्वान । ३. लेखक । ४. साहित्यकार ।

साक्षात—*(अव्य०)* आँखों के सामने । प्रत्यक्ष । परतख । नजरोनजर । *(वि०)* मूर्तिमान । साकार । *(न०)* भेंट । मुलाकात ।

साक्षात्कार—*(न०)* १. प्रत्यक्ष दर्शन । २. ईश्वर से प्रत्यक्ष भेंट । परम तत्व अर्थात ईश्वर का साक्षात अनुभव । ३. भेंट । ४. अनुभूति । ५. ज्ञान ।

साक्षी—*(वि०)* १. वह जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो । चश्मदीद । २. दूर से देखने वाला । तटस्थ दर्शक । *(न०)* १. गवाह । २. आत्मद्रष्टा । *(ना०)* १. गवाही । २. शहादत ।

साक्षी-भूत—*दे०* साक्षी नं० २ और *(वि०)* सं० १.

साख—*(ना०)* १. खत (दस्तावेज) में साक्षी रूप में किये जाने वाले हस्ताक्षर । सही । २. व्यापार या लेन-देन इत्यादि में आर्थिक क्षमता संबंधी प्रतिष्ठा । ३. लेन-देन में विश्वास तथा खरापन । साहूकारी । ईमानदारी । ४. प्रतिष्ठा । ५. प्रभाव । रोब । धाक । ६. साक्षी । गवाही । ७. वह उपकुल जो किसी कुल के विशिष्ट पुरुष के नाम से प्रसिद्धि में आया हो । वंश का अंग । शाखा । पीढ़ी । ८. शाखा । डाल । डाळी । ९. फसल । खेती । १०. आँखों देखी घटनाओं के संबंध में रची गई कविता । साक्षी काव्य । ११. संबंध । सगापन । रिश्ता । सगाई । १२. द्वार के चौखट की खड़ी दो लकड़ियों में से एक । बारसोल-री-साख । १३. जाति । वर्ग ।

जात। १४. प्रामाणिकता। १५. सत्यता। सच्चाई। १६. मर्यादा।

साखत—*(ना०)* घोड़े की जीन और उसके अन्य उपकरण। *(वि०)* कुशल। प्रवीण। चतुर।

साखती—*(वि०)* १. घोड़े पर जीन कसने वाला। २. साखत संबंधी। साखत का। ३. घोड़े की जीन बनाने वाला। ४. कुशल। चतुर।

साखवाळो—*(वि०)* १. प्रतिष्ठित सम्मानित। २. विश्वासी। भरोसादार।

साख-सीर—*(न०)* १. किसी काम या बात में एक मत। परस्पर एक-विचार। मिली भगत। २. (निश्चित किया हुआ) समान भाग। ३. साक्षी के सम्मुख किसी काम में निश्चित किया हुआ हिस्सा।

साखा—*(ना०)* १. शाखा। डाळी। २. विभाग। ३. वंश की उपशाखा। **साख।**

साखाम्रग—*(न०)* बंदर। शाखामृग। बांदरो।

साखियात—दे० साख्यात।

साखियो—*(न०)* १. पर्व तथा मंगलोत्सव के समय आँगन में बनाया जाने वाला मंगल-सूचक चिन्ह या रचना। मांडणा। साथियो। २. स्वस्तिक आकृति।

साखी—*(ना०)* १. निर्गुणोपासक संतों का ज्ञानोपदेशात्मक दोहा साहित्य। २. साक्षी। गवाह। ३. गवाही। साक्षी। ४. वृक्ष।

साखीचर—*(न०)* बंदर।

साखीणो—*(वि०)* १. समवयस्क। सांइनो। *(न०)* साथी। मित्र। दोस्त। साथीड़ो। २. संबंधी।

साखीवर—*(न०)* बंदर।

साखो-वृख—*(न०)* वटवृक्ष। वड़। वड़लो।

साखेत—*(वि०)* १. वीर। २. श्रेष्ठ वंश का। कुलवान। ३. अपने नाम की कुल में शाखा स्थापित करने वाला। *(अव्य०)* साक्षात्।

साखोच्चार—*(न०)* १. विवाहादि में वर-वधू के पूर्वजों का किया जाने वाला क्रमशः विवरण। शाखोच्चार। २. उक्त अवसरों पर वर्णन की जाने वाली वंशावली की कीर्ति।

साख्यात—दे० साक्षात।

साग—*(न०)* १. विशिष्ट हरी पत्तियाँ जिनकी तरकारी बनती है। २. पकी हुई तरकारी या भाजी। शाक-भाजी। तरकारी। ३. सागवान का वृक्ष या लकड़ी। सागौन।

सागइ—दे० सागेई।

सागड़ी—*(न०)* १. गाड़ी को हाँकने-चलाने वाला व्यक्ति। २. कर्ज के बदले में ऋणदाता के यहाँ बंधक में रहा हुआ व्यक्ति। ओळियो। भोगळियो।

सागण—*(अव्य०)* १. वही। २. सत्य ही। ३. सचमुच ही। दरअसल ही। यथार्थतः। *(वि०)* सत्य। यथार्थ। ठीक। सागी।

साग-पात—*(न०)* १. पत्ते, भाजी, कंद-मूल इत्यादि। २. तरकारी। ३. रूखा-सूखा भोजन। ४. तुच्छ और निकम्मी वस्तु।

सागर—*(न०)* १. समुद्र। २. बड़ा तालाब या जलाशय। ३. दशपद्म की संख्या। ४. एक प्रकार के संन्यासी।

सागरनेमी—*(ना०)* पृथ्वी। जमी।

सागर-मेखळा—*(ना०)* पृथ्वी। भूमि।

सागवान—*(न०)* १. इमारती लकड़ी का एक वृक्ष। सागौन। २. उक्त वृक्ष की लकड़ी।

साग-सब्जी—दे० सागपात।

सागार—*(न०)* १. शाकाहार। २. उपवास के दिन किया जाने वाला शाकाहार। सँगार।

सागिरद—*(न०)* १. शिष्य। शागिद। २. नौकर।

सागी—*(वि०)* असल। अकृत्रिम। सागण। सागेई।

सागीड़ी—दे० सागेड़ो।

सागीड़ो—दे० सागेड़ो।

सागूदाना—दे० साबूदाणा।

सागे—*(अव्य०)* साथ में। *(वि०)* १. असल। अकृत्रिम। २. वही। ३. खूब।

सागेई—*(वि०)* १. असल। अकृत्रिम। २. वही। ३. खूब। अच्छी। सागण। *(अव्य०)* वास्तव में। सचमुच। बरअसल।

सागेड़ो—*(वि०)* १. खूब। अत्यधिक। २. बहुत बढ़िया। श्रेष्ठ।

सागै—*(वि०)* १. वही। २. असली। प्रकृत। यथार्थ। *(अव्य०)* १. साथ में। साथ-साथ। २. वास्तव में। सचमुच।

सागो—*(न०)* १. एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओं का एक साथ ही बनाना शुरू करना। २. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं की एक इकाई। ३. साथ। संग। ४. साथ के लोग। ५. राशि। ढेर।

साच—*(न०)* १. सत्य। सच्च। २. वास्तविक। यथार्थ। ठीक। ३. सच्चाई।

साचकलो—*(वि०)* १. अकृत्रिम। सच्चा। खरो। २. प्रामाणिक। सत्यभाषी। ३. यत्न। उपाय। जतन।

साचवणी—*(ना०)* १. सम्हाल। संभाल। साचव कर रखने का मेहनताना।

साचवणो—*(क्रि०)* १. किसी वस्तु को यत्न से सम्हाल कर रखना। २. यत्न करना। ३. रक्षा करना। ४. पकड़ना। थामना। ५. स्वास्थ्य की रक्षा करना। ६. पालन करना। ७. अनुसरना। ८. सचेत रहना।

साचवोजणो—*(क्रि०)* सम्हाला जाना।

साचाई—*(ना०)* सच्चाई। सचावट।

साचाणी—*(अव्य०)* १. वास्तव में। सचमुच। खरेखर।

साचाबोलो—*(वि०)* सत्य बोलने वाला। सत्यवक्ता। सचबोलो। साचो।

साच-माच—*(अव्य०)* १. सचमुच। वास्तव में। यथार्थ में। यों ही नहीं। २. जैसा है वैसा ही।

साचा-माचा—दे० साचमाच।

साची—*(वि०)* १. सच्ची। सत्य। २. शुद्धाचरण वाली। *(अव्य०)* किसी नई या आश्चर्यजनक बात की वास्तविकता की पुष्टि के लिए बात कहने वाले से किया जाने वाला प्रश्न-शब्द। साची ?

साचुकलो—दे० साचकलो।

साचेली—*(वि०)* १. सच्ची। असली। अकृत्रिम। २. जो भ्रम रूप न हो। खरेखर। *(क्रि०वि०)* सच्चे रूप से। दे० साच।

साचेलो—*(वि०न०)* अकृत्रिम। सच्चा। असली। *(क्रि०वि०)* सच्चे रूप से। *(अव्य०)* सच्चे रूप में।

साचो—*(वि०)* १. सच्चा। सत्य। खरा। २. बनावटी नहीं। अकृत्रिम। विशुद्ध। असल। ३. सच बोलने वाला। सत्य-भाषी। ४. शुद्ध आचरण वाला। ४. यथायोग्य। उचित।

साचोटपणो—*(न०)* १. प्रामाणिकता। सच्चाई। २. ईमानदारी। **सचावट सचोटपणो।**

साचोटो—*(वि०)* १. सच्चा। प्रामाणिक। *(न०)* सत्य। सही। सच। **साचो।**

साचोड़ो—दे० 'साचेलो' तथा 'साचोटो'।

साचोर—*(न०)* मारवाड़ का एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर। प्राचीन नाम सत्यपुर है।

साचोरी—*(ना०)* मारवाड़ का साचोर प्रदेश। *(वि०)* १. साचोर के प्रदेश से संबंधित। २. साचोर का (गाय-बैल)।

साचोरो—*(न०)* १. क्षत्रियों की एक शाखा। २. साचोरा जाति का ब्राह्मण। *(वि०)* १. साचोर नगर से संबंधित। २. साचोर नगर के नाम पर ब्राह्मण जाति का विशेषण या अल्ल।

साचोरो-ब्राह्मण—*(न०)* साचोर नगर (मारवाड़) से उद्गत ब्राह्मण जाति का व्यक्ति।

साज—(न०) १. जीन, लगाम आदि घोड़े पर रखने-कसने का सामान। २. ऊँट, घोड़े, बैल आदि की सवारी तथा उनको सिंगारने का सामान। सवारी का सामान। ३. कवच, शस्त्रादि युद्ध का सामान। ४. गाने-बजाने की सामग्री। ५. छोटी सारंगी। ६. सारंगी जैसा एक तंतुवाद्य। ७. वस्त्राभूषण आदि शृंगार का सामान। ८. औजार। ९. कमाया हुआ चमड़ा। १०. स्वास्थ्य। तंदुरुस्ती। ११. रोग-निवृत्ति। *(वि०)* बनाने या मरम्मत करने वाले के अर्थ का सूचक प्रत्यय, जैसे—घड़ीसाज, रंगसाज।

साजण—दे० साजन।

साजणो—*(क्रि०)* १. तैयार करना। सजाना। २. सँवारना। अलंकृत करना। ३. निर्माण करना। बनाना। ४. निश्चित समय पर काम का संपादन कर लेना। ५. किसी वस्तु को इस प्रकार बाँटना या उसका उपयोग करना कि वह सबको उनकी आवश्यकतानुसार अथवा समान परिमाण में प्राप्त हो जाय। ६. वश में करना। अधिकार में करना। ७. मारना। संहार करना। ८. नाश करना।

साजत—*(ना०)* १. तैयारी। २. साज-सज्जा।

साजन—*(न०)* १. पति। भर्ता। २. वैश्य समाज। ३. मित्र। दोस्त। *(वि०)* १. सज्जन। २. प्रेमी। ३. संबंधी। **सगो।**

साजनिया—*(न०ब०व०)* १. सगा-संबंधी। **गिनायत।** २. सज्जन लोग।

साजनियो—दे० साजन।

साजबाज—*(न०)* १. वाद्य-सामग्री। २. उपकरण। सामग्री। ३. ठाटबाट। ४. तैयारी।

साज-माँद—*(ना०)* तंदुरुस्ती और बीमारी। स्वास्थ्य और रोग। कोई स्वस्थ, कोई रोगी ऐसी अवस्था।

साजवण—दे० साँजवण।

साज-सामान—*(न०)* १. आवश्यक सामग्री। असबाब। २. उपकरण। ३. ठाट-बाट।

साजी—*(ना०)* एक क्षार। सज्जीक्षार। साजीखार। *(वि०ना०)* १. स्वस्थ। २. अखंड। नहीं टूटी हुई। अटूट। साबती।

साजीखार—दे० साजी।

साजीबंध—*(वि०)* १. कमर कस कर तैयार। सज्ज। सज्जित। *(ना०)* प्रयत्न। उपाय।

साजो—*(वि०)* १. स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग। २. जो टूटा फूटा न हो। अटूट। अखंड। अखंडित। ३. दुरुस्त। साबत। साबतो। ४. जो फटा न हो। दे० साभो।

साजोत-रूप—*(ना०)* ज्योतिस्वरूप। परब्रह्म। परमात्मा।

साजो-ताजो—*(वि०)* ताजा और नीरोग। प्रसन्न और स्वस्थ।

साजोति—*(ना०)* १. ज्योतिस्वरूप परमात्मा। २. स्वज्योति। स्वात्मन। आत्मा। ३. परब्रह्म। ४. मोक्ष। ५. परम ज्योति।

साजो-माँदो—*(वि०)* १. स्वस्थ और बीमार। २. कभी रोगी और कभी निरोगी।

साज्योड़ो—*(वि०)* सजा हुआ। सज्ज।

साझणो—दे० साजणो।

साझत—दे० साजत।

साझेदार—*(ना०)* हिस्सेदार। भागीदार। सीरधाळो। शिरकती।

साझेदारी—*(ना०)* हिस्सेदारी। साझा। शिरकत। साझो। सीर।

साझो—*(ना०)* १. भागीदारी। सीर। हिस्सेदारी। २. हिस्सा। भाग। साझा।

साट—*(ना०)* १. स्त्रियों के पाँव का एक गहना। २. सुअर की मोटी चमड़ी या उसका टुकड़ा। ३. चाबुक की मार का निशान।

साटक—*(ना०)* १. चाबुक। कोरड़ो। २. चाबुक की मार। ३. चाबुक मारने का शब्द।

साटको—*(ना०)* चाबुक। कोरड़ो।

साटण—*(ना०)* एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। साटन। सैटिन।

साटणी—*(ना०)* १. साटिया जाति की स्त्री। २. साटिया की पत्नी। *(वि०)* झगड़ाखोर (स्त्री)।

साटन—दे० साटण।

साटमारी—दे० साठमारी।

साटाँ—*(ना०ब०व०)* स्त्रियों के पाँवों का एक आभूषण।

साटिया—*(ना०)* एक निम्न वर्ग की जाति।

साटियो—*(ना०)* साटिया जाति का पुरुष।

साटी—*(ना०)* एक घास। साटोड़ी।

साटुक—*(ना०)* एक प्रकार का वस्त्र।

साटै—*(अव्य०)* १. बदले में। एवज में। २. लिये। वास्ते।

साटो—*(ना०)* १. एक घास। २. कन्या देकर कन्या लेना। कन्या के बदले अपना विवाह करना। आटे-साटे का विवाह। ३. अदला-बदली। विनिमय।

साटोड़ी—*(ना०)* एक घास। साटो।

साठ्या—दे० साटाँ।

साठ—*(वि०)* पचास और दस। *(ना०)* साठ की संख्या, '६०'.

साठमार—*(वि०)* १. हाथियों को लड़ाने वाला। साटमार। २. वीर। बहादुर (व्यंग्य में)।

साठमारी—*(ना०)* १. हाथियों की लड़ाई। २. साटमार द्वारा हाथियों को खिजा करके या चाबुकों से मार करके लड़वाने

का काम। ३. शिकार के पशुओं को खिजा कर, परस्पर लड़वाकर किया जाने वाला शिकार। ४. सूअर का शिकार। ५. परेशानी। हैरानी। ६. मारामारी। ठोकापींजो। लड़ालड़ी। ७. कलह। कंकास।

साठी—*(ना०)* १. साठ वर्ष का समय। २. साठ वर्ष की आयु। ३. साठ वर्ष का अंतर। *(वि०)* साठ का। साठ से संबंधित।

साठी-कूड़ो—दे० साठी कोहर।

साठीको—*(न०)* साठ पुरसा गहरा कुँआं। *(वि०)* साठ पुरुष (पुरसा) गहरा।

साठीको कुओ—दे० साठी कोहर।

साठीको कोहर—दे० साठी कोहर।

साठीको बेरो—दे० साठी कोहर।

साठी कोहर—*(न०)* साठ पुरसा गहरा कुँआं। साठीकूड़ो। साठीको।

साठी चावळ—*(न०)* चावल की एक जाति। एक प्रकार का चावल।

साठो—*(न०)* साठवाँ वर्ष (संवत् की गणना में)।

साढ़—*(ना०)* १. दुख। कष्ट। २. लंबी बीमारी। ३. सड़ांध। ४. इल्लत। झंझट।

साढ—*(न०)* आषाढ़ मास का छोटा नाम। आषाढ़।

साढ़लो—*(न०)* स्त्रियों के पहिनने की धोती। साड़ी।

साढा—*(वि०)* सार्ध। आधे के साथ। ऊपर आधा, जैसे साढा सात। दे० साढा।

साढ़ियो—*(न०)* जाटनियों और साँसनियों के पहनने का घाघरा (जैस०) साढ़ो।

साढ़ी—*(ना०)* जनानी धोती।

साडी—दे० साढा। साढी।

साडो आठ सौ—*(वि०)* आठसौ और पचास। *(न०)* साडी आठसौ की संख्या। '८५०'.

साडी चार सौ—*(वि०)* चारसौ और पचास। *(न०)* साडी चारसौ की संख्या। '४५०'.

साडी छ सौ—*(वि०)* छःसौ और पचास। *(न०)* साडी छःसौ की संख्या। '६५०'.

साडी तीन सौ—*(वि०)* तीनसौ और पचास। *(न०)* साडी तीनसौ की संख्या। '३५०'.

साडी नवसौ—*(वि०)* नौ सौ और पचास। *(न०)* साडी नवसौ की संख्या। '९५०'.

साडी पांचसौ—*(वि०)* पाँचसौ और पचास। *(न०)* साडी पाँचसौ की संख्या। '५५०'.

साड़ी सात सौ—*(वि०)* सात सौ और पचास। साडी सात सौ की संख्या। '७५०'.

साडी सौ—*(वि०)* एक सौ और पचास। डेढ़ सौ। *(न०)* साडी सौ की संख्या। '१५०'.

साड़ो—दे० साड़ियो।

साढ—*(न०)* असाढ़ का छोटा रूप। आषाढ़ मास।

साढ-साती—*(ना०)* १. शनि के साढ़े सात वर्ष की पनोती। २. शनिग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने या साढ़े सात दिन की अशुभ दशा। ३. बहुत बुरे दिन।

साढा—*(वि०)* १. एक और उसका आधा। डेढ़। २. तीन से निन्यानवे की संख्या के आगे लगने वाले एक के आधे का नाम, जैसे—२१।। या २१½ साढ़ा इक्कीस; ५०।। या ५०½ साढा पचास। इत्यादि। (सिर्फ एक की संख्या के साथ आधा लगने से उसकी संज्ञा 'डेढ' या 'डोढ' कहलाती है और दो के साथ लगने से 'अढी', 'अढाई' या 'ढाई' कहलाती है)। ३. पूरी संख्या(शतान्त)के साथ जुड़ा हुआ सौ का आधा (पचास), जैसे—३००+५० = ३५० साढा तीनसौ; ७५० साढा सातसौ इत्यादि।

साढी—दे० साढा।

साढू—*(न०)* १. पत्नी की बहिन का पति। साली का पति। पत्नी का बहनोई।

साढूती—*(ना०)* साढू या साले की लड़की। भानजी।

साढूतो—*(न०)* साढू का लड़का। भानजा।

साण—*(ना०)* शस्त्रों की धार तेज करने का कुरंड आदि से बना हुआ लुहार का एक चक्राकार उपकरण। शान। शाण। सराण।

साणी—दे० सानी। सं० ३.

साणो—*(न०)* अनाज की कोठी का छेद जिसके द्वारा अनाज बाहर निकाला जाता है।

सात—*(वि०)* चार और तीन। *(न०)* सात की संख्या, '७'.

सातताळी—*(ना०)* बच्चों का एक खेल।

सात-पाँच—*(अव्य०)* १. रोब, प्रभाव। २. चालाकी।

सात-पाँच करणो—*(मुहा०)* १. रोब जमाना। २. अभिमान की बातें करना। ३. अभिमान करना। ४. चालाकी या चालाकी की बातें करना।

सात-पाँच जमावणो—*(मुहा०)* दे० सात-पाँच करणो।

सातपुड़ो—*(न०)* १. पगतली या हथेली में होने वाला एक फोड़ा। २. सतपुड़ा का विख्यात पर्वत।

सातफेरा—*(न०)* पाणिग्रहण के बाद पति-पत्नी की सजोड़े की जाने वाली अग्नि की सात प्रदक्षिणाएँ। पाणिग्रहणोपरान्त साक्षीभूत अग्नि-देवता की वर-वधू द्वारा की जाने वाली सात परिक्रमाएँ।

सात-बीसी—*(वि०)* एकसौ चालीस।

सातम—*(ना०)* पक्ष की सातवीं तिथि। सप्तमी।

सातमो—*(वि०)* क्रम या गिनती में सातवें स्थान पर आने वाला। क्रम में छः के बाद पड़ने वाला।

सातवत—*(न०)* १. बलिभद्र। बलराम। २. यादव। ३. श्री कृष्ण का भक्त।

सातवारी—*(वि०)* सात वार की। *(अव्य०)* सात दिनों में।

सातवों—दे० सातमो।

सात समंदर पार—*(अव्य०)* बहुत अधिक दूर। विदेश में।

साता—*(ना०)* १. शांति। निरांत। २. सुख-शांति। ३. रोग-निवृत्ति। ४. स्वास्थ्य वृद्धि। ५. नैरोग्य-पृच्छा।

साती—*(ना०)* सात बिंदियों वाला ताश का पत्ता।

सातू—*(न०)* १. श्रावण शुक्ल पक्ष और भादों की कृष्ण पक्ष तीज पर सौभाग्यवती स्त्रियों के व्रत के पारण के लिये

सेके हुए अनाज के आटे से बनाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का मिष्ठान्न। सत्तू में घी, खाँड मिला कर बनाया जाने वाला लड्डू। २. सत्तू। शक्तु।

सातूं रिख—*(न०)* सप्तऋषि।

सातेइ कारणे—*(अव्य०)* सभी प्रकार। सातों ही कारणों से। सभी कारणों से।

सातें—*(ना०)* पक्ष का सातवाँ दिन। सातम। सप्तमी।

सातो—*(न०)* १. सात सुपारियों की ईकाई। २. विवाह के विभिन्न प्रसंगों या अवसरों पर समधी, समधिनों, नेगियों इत्यादि प्रत्येक को मांगलिक रूप में बाँटी जाने वाली सात-सात सुपारियाँ। ३. सात का अंक, '७'.

सात्यो—दे० साथियो।

सात्विक—*(वि०)* १. सत्व गुण वाला। सतोगुणी। २. शुद्धात्मा। निष्कपट। ३. सत्यनिष्ठ। ४. शांत। ५. प्रामाणिक। ६. सद्गुणी। ७. सत्ववाला।

सात्विकज्ञान—*(न०)* सभी प्राणियों को एक दृष्टि से देखने का ज्ञान।

सात्विकभाव—*(न०)* अंतःकरण में सत्त्व से उत्पन्न बाह्य आठ भाव या अंग-विकार। [स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर-भंग, कंप (वेपथु), वैवर्ण्य, अश्रुपात और प्रलय (मूर्च्छा)] (साहि०)।

सात्रव—*(न०)* १. शत्रु। बैरी। दुसमी। २. शत्रुगण।

सात्रवट—*(ना०)* शत्रुता। दुश्मनी। बैर। बैराड़ो। दुसमणावट।

साथ—*(न०)* १. संगति। संसर्ग। २. सहवास। ३. संग। हेलमेल। ४. संगी। ५. सेवक। नौकरी। ६. सेना। ७. मनुष्यदल। ८ जाति। ९. सम्प्रदाय। १०. मेलजोल। घनिष्ठता। *(अव्य०)* १. सहित। २. से। ३. विरुद्ध। ४. प्रति। ५. द्वारा। ६. पूर्वक।

साथण—*(ना०)* साथिन। सहचरी। सहेली।

साथण-क्रोध—*(ना०)* अग्नि।

साथण-समीर—*(ना०)* अग्नि।

साथणी—दे० साथण।

साथरवाड़ो—*(न०)* मृतक के पीछे शोक मनाने को साथरी बिछा करके घर वालों के बैठने की जगह। तापड़।

साथरियो—*(न०)* १ फटा-पुराना बिछौना। २. घास का बिछौना। ३. साथरवाड़े का बिछौना।

साथरी—दे० सादड़ी।

साथरो—*(न०)* १. घास का बिछौना। २. किसी के मरने के बाद शोक प्रदर्शित करने को बिछौने बिछा कर बैठे रहने की प्रथा। ३. वह बिछौना जो मृत के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने को आने वालों के लिये बिछाया हुआ रहता है। गापड़। ४. लाशों का ढेर। शव-समूह।

साथळ—*(ना०)* जाँघ। जंघा।

साथ-साथ—दे० साथो-साथ।

साथ ही—*(अव्य०)* १. सिवा। अतिरिक्त। २. और भी। ३. अपरंच।

साथियो—दे० साखियो।

साथी—*(न०)* मित्र। दोस्त। सखा। *(वि०)* १. साथ में काम करने वाला सहचर। २. साथ में रहने वाला। साथीड़ो।

साथीड़ो—*(न०)* साथी।

साथी-संगी—दे० साथी।

साथे—*(अव्य०)* १. साथ में। **संगाथे**। २. से। सामिल। **भेळो**।

साथो—*(न०)* १. साथ। संग। २. साथ में रहने या चलने का भाव।

साथो-साथ—*(अव्य०)* १. साथ में। २. साथ ही में। साथ का साथ। लगते हाथ। ३. एक ही साथ में।

साद—*(न०)* १. शब्द। ध्वनि। आवाज। २. पुकार। बाँग। ३. आर्त पुकार। ४. मरने वाले के पीछे चिल्लाकर किया जाने वाला रुदन। ५. गले का सुर।

सादगी—*(ना०)* १. सादापन। सरलता। **सादाई**। २. निश्छलता। निष्कपटता। ३. तड़क-भड़क, कृत्रिमता तथा आडंबर रहित।

सादचैंठणो—*(मुहा०)* सर्दी लगके गले का बैठ जाना। आवाज मे भोंडा तथा मंद हो जाना।

सादड़ी—*(ना०)* चटाई। साथरी।

सादणो—*(क्रि०)* १. साद देना। पुकारना। २. किसी को दिये कर्ज की किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा चुकाने की जिम्मेवारी लेना।

सादत—*(ना०)* शहादत। गवाई। साक्षी।

साद-देणो—*(मुहा०)* १. पुकारना। आवाज देना। २. मृतक को रोना।

साद-बैठणो—*(मुहा०)* गले की आवाज का मोटा, भारी या कमजोर होना।

सादर—*(अव्य०)* आदर के साथ। सम्मान-पूर्वक।

सादवणो—*(क्रि०)* १. आवाज देना। पुकारना। २. याद करना।

सादाई—दे० सादगी। **सादापणो**।

सादाणा—दे० सादाना।

सादाना—*(न०ब०व०)* बाजे। वाद्य-समूह। विवाहादि की खुशी में बजने वाला बाजा। खुशी के बाजे। शादियाना।

सादापणो—*(न०)* सादापन। सादगी। **सादाई**।

सादाळो—*(न०)* १. रथ। २. योद्धा के बैठने का रथ। युद्धरथ।

सादी—*(ना०)* शादी। विवाह। *(वि०)* १. सीधी। सरल। २. कोरी। ३. साधारण बनावट की। ४. अकृत्रिम। ५. तड़क-भड़क से रहित।

सादूळ—*(न०)* शार्दूल। सिंह।

सादूळो—दे० सादूळ।

सादृश्य—*(न०)* सदृश्यता। समानता। तुल्यता। बराबरी।

सादो—*(वि०)* १. सादा। सीधा। सरल। २. कोरा। बेदाग। ३. बिना उलझन या झंझट का। ४. साधारण बनावट का। ५. जिसका कोई रंग न हो। ६. अकृत्रिम। ७. बनाव-सिंगार या तड़क-भड़क से रहित। ८. समझने में सरल। ९. भोला। मूर्ख।

साद्यंत—*(वि०)* आदि से अंत तक। सम्पूर्ण। पूरा।

साध—*(न०)* १. साधु। २. सज्जन। ३. एक जाति। ४. तीव्र या प्रबल आकांक्षा। ५. बहुत समय से चली आने वाली इच्छा। ६. गर्भवती स्त्री की इच्छा। दोहद। ७. गर्भवती स्त्री के छठे या सातवें महीने में मनाया जाने वाला एक उत्सव। गोद भराना। **खोळ भराणो**।

साधक—*(वि०)* १. साधना करने वाला। २. सिद्धि प्राप्त करने वाला। ३. किसी

बात या काम को साधने वाला। ४. सहायक। *(न०)* १. तपस्वी। २. योगी। ३. तांत्रिक।

साधण—दे० सायण।
दे० साधाणी।
दे० साधन।

साधणो—*(क्रि०)* १. सिद्ध करना। साधना। २. पूरा करना। ३. अभ्यास करना। ४. निशान लगाना। ५. संतुलित या नियंत्रित करना। ६. वश में करना। ७. अपनी ओर मिलाना। ८. आग में शुद्ध या परिष्कृत करना। शोधना। ९. प्रमाणित करना। १०. नकली को असली जैसा कर दिखाना।

साधन—*(न०)* १. आवश्यक, उपयुक्त या सहायक उपकरण, सामग्री या बातें आदि। २. औजार, हथियार आदि। ३. उपाय। युक्ति। ४. कारण। हेतु। ५. माध्यम या अभिकरण। ६. क्रिया सिद्धि के लिए उपाय, संयम-नियम अथवा पथ्य-परहेज इत्यादि। ७. वे वस्तुएँ जिनसे क्रिया सरल या संभव बने। ८. सहायता। ९. सिद्धि। १०. प्रमाण।

साधन-संपन्न—*(वि०)* १. साधनवाला। २. संपत्तिवाला। समृद्ध।

साधन-सामग्री—*(ना०)* साधन की सामग्री। साधन और सामग्री।

साधनहीण—*(वि०)* १. बिना साधन का। साधनरहित। २. दीन। गरीब।

साधना—*(ना०)* १. कार्य को सिद्ध करने की क्रिया। २. कार्य की सिद्धि। ३. निरंतर, नियमपूर्वक अभ्यास। ४. नित्य अनुष्ठान। ४. मनोयोगपूर्वक सतत कठोर प्रयत्न। ६. आराधना। ७ उपासना। ८. तपश्चर्या।

साधपणो—*(न०)* १. साधु बनने या होने का भाव। २. साधु के गुण। साधुता। ३. साधु के वेष। साधुपना। ४. सरलता।

साधर्मी—दे० सधर्मी।

साधव—*(न०)* १. साधु। संत। २. महात्मा। ३. त्यागी। साध। ४. सज्जन। ५. साधु जाति।

साधस—*(न०)* डर। भय।

साध-संगत—दे० साधु-संगति।

साधाणी—*(ना०)* १. स्त्री-साधु। साध्वी। २. साधु की स्त्री। साधण। ३. साधु जाति की स्त्री। ४. गृहस्थ जाति साधु की स्त्री।

साधार—*(वि०)* १. आधार युक्त। २. आधार वाला। ३. जिसका कुछ आधार हो। आधारपूर्वक।

साधारण—*(वि०)* १. मामूली। सामान्य। २. नहीं कम, नहीं अधिक। मध्यम। ३. जो सबके लिए समान हो। ४. सरल। सहज। ५. आम, सार्वजनिक।

साधारण-क्रिया—*(ना०)* १. क्रिया शब्द का वह रूप जो धातु के आगे 'णो' प्रत्यय लगने से बनता है, यथा—कर + णो = करणो। जा + णो = जाणो इत्यादि (व्या०)। २. शब्दकोश में लिखी जाने वाली क्रिया का साधित रूप। (व्या०) ३. अनिश्चयात्मक अर्थ सूचित करने वाले शब्द का क्रिया रूप। (व्या०)

साधारण गुण-धर्म—दे० साधारण धर्म।

साधारणतः—*(अव्य०)* साधारण तौर से। आम तौर पर।

साधारणतया—दे० साधारणतः ।

साधारण धर्म—*(न०)* १. एक वर्ग के सभी पदार्थों में पाया जाने वाला गुण, धर्म, या सामान्य तत्व। २. साधारण अवस्था के कर्त्तव्य या कर्म। वह वाक्य।

साधारण वाक्य—*(न०)* एक कर्ता और एक क्रिया वाला वाक्य। जिसमें उप-वाक्य न हो (व्या०)।

साधारण सभा—*(ना०)* जिसमें संस्था के सभी सदस्य उपस्थित हों। आम सभा।

साधिकार—*(अव्य०)* १. अधिकारपूर्वक। २. आधिकारिक रूप से।

साधु—*(न०)* १. साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त पुरुष। संत। त्यागी। साध। २. धार्मिक जीवन बिताने वाला संत व्यक्ति। ३. सदाचारी पुरुष। ४. संन्यासी महात्मा। ५. भला आदमी। सत्पुरुष। *(वि०)* १. सज्जन। भला। २. स्तुत्य। प्रशंसनीय। ३. उचित। योग्य। ४. उत्तम। ५. धार्मिक। ६. ईश्वरभक्ति-परायण। ७. शुद्ध। शिष्ट (भाषा)। *(अव्य०)* धन्य। शाबास। वाह-वाह।

साधुता—*(ना०)* १. साधु होने की अवस्था, गुण, भाव या धर्म। २. साधुओं का आचरण। ३. भलाई। नेकी। ४. सीधापन। ५. सज्जनता।

साधु-संग—*(न०)* साधु-संगति। सत्संगति।

साधु-संगति—दे० साधु-संग।

साधु-संत—*(न०)* साधु अथवा संत (समूह-वाचक)।

साधु-साधु—*(अव्य०)* वाह-वाह। धन्य-धन्य।

साध्य—*(वि०)* १. जो सिद्ध हो सके। सरल। सुगम। २. सिद्ध करने योग्य। ३. साधना योग्य। ४. जिसका उपाय या प्रतिकार संभव हो। *(न०)* साधना-विषय। साधना-योग।

साध—*(ना०)* १. लालसा। कामना। २. मनोभाव। कोड। ३. गर्भवती स्त्री की इच्छा। दोहद। साध।

साध्वी—*(ना०)* १. साधु स्त्री। साधाणी। २. साधु स्वभाव वाली स्त्री। ३. जैन साधु स्त्री। ४. पतिपरायण स्त्री। *(वि०)* १. शुद्ध आचरण वाली। २. पतिपरायणा। पतिव्रता। ३. शील-वती।

सान—*(ना०)* १. प्रतिष्ठा। इज्जत। २. शान। छटा। ठाट-बाट। तड़क-भड़क। ३. बुद्धि। अक्ल। ४. विवेक। ५. संकेत। इशारा। ६. स्वमान। ७. एक वात रोग, जिसमें अंग सुन्न हो जाता है। ८. शाण। साण। ९. शीतला रोग। चेचक की बीमारी।

सान-रो-झोलो—*(न०)* १. वात रोग का आक्रमण। २. सन्निपात। ३. शीतला रोग। चेचक की बीमारी।

सानाकानी—*(ना०)* परस्पर इशाराबाजी।

सानी—*(ना०)* १. संकेत। इशारा। २. आँख का इशारा। ३. ढोरों के लिये भूसा मिली हुई खली, ग्वार इत्यादि का पकाया हुआ खाद्य। बाँटो। *(वि०)* १. बराबरी का। मुकाबिले का। जोड़-रो। २. समान। ३. द्वितीय। दूसरा।

सानु—*(न०)* १. पर्वत की चोटी। शिखर। २. पर्वत की समतल भूमि। शिखर पर का मैदान। ३. किनारा। छोर। सिरा। ४. वन। ५. मार्ग।

सानुकूल—*(वि०)* अनुकूल। पूरी तरह से अनुकूल।

सानुनासिक—*(वि०)* जिसके उच्चारण में नाक से ध्वनि निकलती है (अक्षर)।

सानुनासिक व्यंजन—*(नं०)* ङ, ञ, ण, न तथा म।

सानुनासिक-स्वर—*(नं०)* अं।

सानुप्रास—*(वि०)* अनुप्रास सहित।

सानुभव—*(वि०)* अनुभवयुक्त। अनुभव सहित।

सानुमान—*(नं०)* पर्वत। *(अव्य०)* अनुमान से।

सानुवाळ—*(नं०)* पर्वत।

सानुस्वार—*(वि०)* अनुस्वार वाला। अनुस्वार सहित।

सानू—दे० सानु।

सान्निध्य—*(नं०)* १. निकटता। समीपता। २. एक प्रकार की मुक्ति।

सान्वय—*(वि०)* १. अन्वयवाला। २. वंश वाला।

सांप—*(नं०)* १. सर्प। साँप। भुजंग। २. शाप।

सांप उतारणो—*(मुहा०)* साँप के जहर का असर (मंत्र-तंत्र से) दूर करना।

सांपणी—दे० सरपणी।

सापणो—*(क्रि०)* १. शाप देना। दुराशिष देना। २. भला-बुरा कहना।

सापित—*(वि०)* जिसको शाप दिया गया हो।

सा-पुरस—*(नं०)* सत्पुरुष। भला मनुष्य। साधु पुरुष।

सापेक्ष—*(वि)* १. किसी से अपेक्षा रखने वाला। अपेक्षावाला। २. किसी बात अथवा परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य अथवा तुलना में। ३. जो विचार, निर्णय या आज्ञा की उपेक्षा में रुका या पड़ा हुआ हो (पेंडिंग)।

सापो—*(नं०)* १. मरसिये की तर्ज में वृद्ध मृतक का गाया जाने वाला समधिनों द्वारा व्यंग्यात्मक विरुद। वृद्ध की मृत्यु पर स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला शोक-गीत। छेड़ो। पार। सियापो। पल्लो लेणो। २. मृतक को रोना।

सापोळियो—*(नं०)* १. साँप का बच्चा। २. छोटा साँप।

साफ—*(वि०)* १. स्वच्छ। निर्मल। सफा। २. शुद्ध। ३. स्पष्ट। विशद। ४. उज्ज्वल। ५. निष्कपट। निश्छल। ६. निष्कलंक। ७. सादा। कोरो। ८. समतल। ९. खाली। रिक्त। १०. जिसमें कोई झगड़ा टंटा न हो। ११. जो चुकता कर दिया गया हो (लेन-देन)। १२. कचरा रहित। *(अव्य०)* १. निश्चित रूप से। २. पूरी तरह। ३. बिलकुल। कतई।

साफ-दिल—*(वि०)* जिसके दिल में कपट न हो।

साफ-साफ—*(अव्य०)* स्पष्ट रूप से।

साफ-सुथरो—*(वि०)* १. स्वच्छ और सुन्दर। २. साफ किया हुआ।

साफ-सूफ—*(वि०)* १. बिना कचरे का। २. अच्छी तरह से साफ किया हुआ।

साफी—*(नां०)* १. चिलम की नली में लपेटा जाने वाला कपड़े का छोटा टुकड़ा। २. कंधे पर रखे जाना वाला रूमाल। ३. छानने का कपड़ा। गळणो। ४. मूल कीमत। ५. बिना नफे का भाव। *(वि०)* बिना कमीशन या दलाली का (भाव या कीमत)।

साफो—*(न०)* सिर पर लपेटा जाने वाला एक विशिष्ट व सुन्दर पहनावा। साफा। फेंटो। पोतियो।

साबण—दे० साबू।

साबत—*(वि०)* १. अखंड। अटूट। साबतो। २. समूचा। पूरा। ३. स्थिर। दृढ़। ४. दुरुस्त। ठीक। साबुत।

साबतो—दे० साबत।

साबरमती—*(ना०)* राजस्थान और गुजरात की एक नदी का नाम।

साबळ—*(न०)* भाला।

साबास—दे० सैंबास।

साबासी—दे० सैंबासी।

साबिक—*(वि०)* पुराना। प्राचीन।

साबिक-दस्तूर—*(न०)* चलती आई हुई रीति। परम्परानुसार। पुराने रिवाज के अनुसार।

साबित—*(वि०)* १. प्रमाणित। सिद्ध। २. समूचा। पूरा।

साबुन—*(न०)* तेल कास्टिक सोडा इत्यादि के योग से बना एक रासायनिक पदार्थ जिससे (पानी की सहायता से) शरीर और कपड़े का मैल दूर किया जाता है।

साबू—दे० साबुन।

साबूगर—*(न०)* १. साबुन बनाने तथा बेचने वाला। २. एक मुसलमान जाति।

साबूत—*(न०)* १. स्वस्थ। नीरोग। २. मौजूद। ३. प्रचलित। चालू। ४. बिना टूटा हुआ। अखंड। साबत। साजो। *(न०)* सबूत। प्रमाण।

साबूती—*(ना०)* १. सबूत। प्रमाण। २. मजबूती। दृढ़ता।

साबूदाणा—*(न०ब०व०)* सागू के वृक्ष के गूदे से तैयार किये हुए दाने जो शीघ्र पाचक होने से रोगी को खिलाये जाते हैं और व्रत में फलाहार के रूप में भी खाये जाते हैं। साबूदाना। सागूदाणा।

साबूनी—*(न०)* एक व्यंजन। एक मिष्टान्न।

साभार—*(वि०)* आभार सहित। उपकार के साथ।

साभाव—*(न०)* स्वभाव। आदत। सुभाव।

साभिप्राय—*(वि०)* १. अभिप्राय सहित। २. अभिप्राय वाला। जिसका कुछ अभिप्राय या मतलब हो।

साभिमान—*(वि०)* अभिमान सहित।

साम—*(ना०)* १. खेत में हल चलाने के ऊपर सावर चलाने के बाद दूसरी बार हल चलाने की क्रिया। दूसरी बार की जाने वाली जुताई। २. सावर चलाने के बाद हल के चलाने से बनी रेखाएँ। ३. सामवेद। ४. गाये जाने वाले वेद मंत्र। ५. राजनीति के चार उपायों में से एक। मीठी बातें बनाकर के अपनी ओर मिलाने का उपाय या नीति। (साम, दाम, दंड, भेद)। ६. स्वामी। ७. पति। ८. श्रीकृष्ण। श्याम। *(वि०)* श्याम। काला।

सामखोर—*(वि०)* १. स्वामीभक्त। २. स्वामीद्रोही।

सामगरी—दे० सामग्री।

सामग्री—*(ना०)* १. उपयोगी सामान। किसी काम में उपयोगी अथवा साधन तरीके का सामान। २. आवश्यक सामान। असबाब। ३. साधन। उपकरण।

सामटो—दे० सांवटो।

सामठो—दे० सांवटो ।

सामण—*(ना०)* १. स्वामिनी । मालकिन । २. सामी (स्वामी) जाति की स्त्री । ३. सामी की स्त्री ।

सामणी—*(ना०)* स्वामिनी ।

सामत—*(ना०)* १. विपत्ति । दुर्दशा । २. बदकिस्मती । दुर्भाग्य । शामत ।

साम-धरम—*(न०)* स्वामी-धर्म । स्वामी-भक्ति ।

सामधरमाई—*(ना०)* स्वामी-भक्ति ।

साम-धरमी—*(ना०)* १. स्वामी-भक्ति । २. स्वामी-भक्त ।

सामधर्म—*(ना०)* १ स्वामी के प्रति अपने सेवा-धर्म को सत्यता से पालन करने वाला । २. स्वामी-धर्म । स्वामी-भक्ति ।

सामने—*(अव्य०)* १. उपस्थिति में । २. मुकाबिले में । विरुद्ध । ३. प्रत्यक्ष । सामां । ४. आगे । समक्ष । सामां ।

सामनो—*(न०)* १. मुकाबला । २. विरोध । ३. प्रतियोगिता । होड़ ।

सामरात—*(न०ब०व०)* 'समर' का बहुवचन रूप ।

सामराथ—दे० सामर्थ्य ।

सामरिक—*(वि०)* समर या युद्ध संबंधी ।

सामर्थ—दे० सामर्थ्य ।

सामर्थ्य—*(ना०)* १. कुछ करने की शक्ति । २. योग्यता । क्षमता । ३. बल । पराक्रम । ४. तेज ।

सामयिक—*(वि०)* १. वर्तमान समय का । २. समय विषयक । ३. समय या परिस्थिति के अनुरूप ।

सामयिक-पत्र—*(न०)* नियत समय पर निकलने वाला पत्र ।

सामरथ—*(ना०)* १. शक्ति । सामर्थ्य । २. हैसियत ।

सामरात—*(न०)* युद्ध ।

सामरिक—*(वि०)* समर संबंधी ।

सामळ—*(वि०)* श्यामल । सांवला । सांवळो ।

सामळियो—*(न०)* श्रीकृष्ण । *(वि०)* काला । श्यामल ।

सामलो—*(वि०)* १. सामने का । सामने वाला । २ मुकाबले वाला । प्रतिस्पर्धी ।

सामळो—*(न०)* सांवला । श्रीकृष्ण । *(वि०)* १. श्यामल । थोड़ा काला । २. काला । काळो । सांवळो ।

सामवेद—*(न०)* गेय मंत्रों वाला तीसरा वेद ।

सामंग—*(वि०)* श्याम अंग वाला । श्यामांग । *(न०)* तलवार ।

सामंत—*(न०)* १. सौ सैनिकों से अकेला युद्ध करने वाला वीर सैनिक । २. सैनिक । ३. सरदार । जमींदार । ४. वीर योद्धा ।

सामंतवाद—*(न०)* सामंतों, जमींदारों द्वारा जमीन, संपत्ति इत्यादि के एकाधिकार एवं शोषण पर आधारित राज्य-व्यवस्था ।

सामंतशाही—*(ना०)* राजाशाही । एकतंत्र राज्य ।

सामंद—*(न०)* समुद्र ।

सामंद्र—*(न०)* समुद्र ।

सामाजिक—*(वि०)* १. समाज संबंधी । २. समाज का । ३. सारे समाज से संबंध रखने वाला ।

सामान—*(न०)* १. सामग्री । उपकरण । २. चीज वस्तु । ३. असबाब ।

सामानामा—*(अव्य०)* बराबर । सरीखा ।

सामान्य—*(वि०)* १. जिसमें कोई विशेषता न हो । साधारण । मामूली । २. किसी जाति या प्रकार की सब वस्तुओं में पाया जाने वाला एकसा गुण । ३. सार्वजनिक । आम । ४. जो अपनी साधारण अवस्था या स्थिति में हो । *(नं०)* १. समानता । बराबरी । २. एक जाति या वर्ग की वस्तुओं का समान या साधारण गुण धर्म ।

सामान्यतया—*(अव्य०)* सामान्यतः । साधारण तौर पर । मामूली तौर से ।

सामायक—*दे०* समाई, ३, ४.

सामिणी—*(ना०)* स्वामिनी । मालकिन ।

सामी—*दे०* स्वामी । *दे०* सामने ।

सामो-छाती—*(अव्य०)* १. सामने । सम्मुख । २. हिम्मत से । साहसपूर्वक ।

सामी-धरम—*दे०* सामधरम ।

सामीनाई—*(ना०)* बराबरी । तुल्यता ।

सामीनो—*(वि०)* १. समवयस्क । हम-उम्र । २. बराबर ।

सामीप्य—*(नं०)* १. समीपता । निकटता । नेड़ापणो । नेड़ापो । २. मुक्ति के चार प्रकारों में से एक । ३. ईश्वर के समीप होने की स्थिति ।

सामुदायिक—*(वि०)* समुदाय का । सामूहिक ।

सामुद्रिक—*(नं०)* १. वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य के शारीरिक चिन्हों, विशेषतः हथेली-रेखाओं को देखकर शुभाशुभ फल बताये जाते हैं । २. इस विद्या का जानकार । *(वि०)* समुद्र संबंधी ।

सामुहाँ—*(अव्य०)* १. सामने । सम्मुख । साम्हो । २. आगे ।

सामुहे—*दे०* सामुहाँ ।

सामुहो—*(नं०)* १. अग्रभाग । सामना । २. मुकाबला । ३ प्रतियोगिता ।

सामेळो—*(नं०)* १. कन्या पक्ष के स्त्री-पुरुषों की ओर से गाजे-बाजे और मंगल गीतों से बरात की अगवानी या स्वागत करने की एक विधि और प्रथा । अगवानी । २. अगवानी का मंगल-कलश जिसे दूल्हे की सासू सिर पर उठाकर दूल्हे का स्वागत करती है । ३. बाजे-गाजे के साथ जुलूस बनाकर आगंतुक के सामने जाकर स्वागत करना ।

सामो—*(नं०)* १. सामान । २. फलाहार का एक वन्य अनाज । सांवों ।

साम्यवाद—*(नं०)* मार्क्स द्वारा चलाया हुआ एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार ऐसे समाज की स्थापना, जिसमें शोषण की समाप्ति, उत्पादन साधनों पर सामाजिक स्वामित्व, सबको विकास की समान सुविधाएँ, सरकार की सम्मति पर सबका समान अधिकार एवं वर्ग-भेद न हो ।

साम्यवादी—*(वि०)* साम्यवाद सिद्धान्त को मानने वाला ।

साम्राज्य—*(नं०)* वह बड़ा राज्य जिसके आधीन बहुत से देश हों । सार्वभौम राज्य । महाराज्य ।

साम्हाँ—*(अव्य०)* सम्मुख । सामने । अक-बक ।

सायक—*(नं०)* बाण । तीर ।

सायण—*(नं०)* चारों वेदों और ब्राह्मण ग्रंथों आदि का बहु प्रसिद्ध भाष्यकार । सायण माधव ।

सायत—*दे०* सायद । *(नं०)* सुसमय ।

सायद—*(अव्य०)* १. कदाचित । शायद । २. संभव है । **कदाच । कदास ।**

सायदी—*(ना०)* साक्षी । गवाही । शहादत ।

सायधण—*(ना०)* पत्नी । विवाहिता स्त्री । **धण । साधण ।**

सायब—दे० साहब ।

सायबणी—दे० सायबाणी ।

सायबाणी—*(ना०)* १. पत्नी । २. लोकगीतों की एक नायिका । ३. उच्च कुल की स्त्री ।

सायबी—दे० साहबी ।

सायबो—दे० साहबो ।

सायर—*(न०)* १. सागर । समुद्र । २. सहेली । **सैयर** । ३. स्त्री । पत्नी । ४. माल की आवक-जावक पर कर वसूल करने वाला एक सरकारी विभाग । महकमा-सायर । ५. जाने-आने वाले माल पर लिया जाने वाला कर । ६. कवि । शायर । ७. बुद्धि । *(वि०)* १. बुद्धिमान । समझदार । २. सज्जन । ३. सरल । सीधा । ४. सरल स्वभाव का । भोला । ५. गंभीर ।

सायर-थाणो—*(न०)* आने-जाने वाले माल पर कर वसूल करने की सरकारी चौकी । सायरथाना ।

सायरी—दे० शायरी ।

सायल—*(न०)* १ न्यायालय में प्रार्थनापत्र देने वाला । २. प्रार्थना करने वाला । ३. प्रश्नकर्ता । ४. उम्मीदवार । ५. फकीर । ६. भिखारी । **मगतो ।**

सायलान—*(न०)* 'सायल' का बहुवचन ।

सायं—*(ना०)* संध्या । शाम । **सांझ ।**

सायंकाल—*(न०)* संध्याकाल । **सांझ ।**

सायं-प्रातः—*(अव्य०)* सुबह-शाम । **सवार-सांझ ।**

सायं-प्रार्थना—*(ना०)* संध्या समय की प्रार्थना । संध्यावंदन । **सांझवांदणी ।**

सायं-भोजन—*(न०)* ब्यालू । **ब्याळू ।**

सायं-संध्या—*(ना०)* सूर्यास्त के समय की जाने वाली संध्या ।

सायुज्य—*(न०)* १. पूर्ण मिलन । मिलकर एक हो जाना । २. मुक्ति का एक भेद ।

सायुज्य-मुक्ति—*(ना०)* ऐसी मुक्ति जिसमें अपने इष्टदेव के साथ तारतम्य का अनुभव हो । आत्मा का परमात्मा में अशेष विलय । मुक्ति के चार प्रकारों में से एक ।

सार—*(न०)* १. तत्त्व । २. मूलभाग । ३. सत्त । **कस । निचोड़** । ४. यथार्थ बात । ५. बात का सारांश । ६. तात्पर्य । निष्कर्ष । ७. निगाह । सम्हाल । देखभाल । सुधि । ८. मज्जा । ९. शक्ति । १०. तलवार । ११. लोह । १२. फौलाद । १३. हीरा । १४. खबर । १५. चौपड़ की गोटी । **सारी** । १६ फल । परिणाम । १७. मलाई । **थर** । १८. मक्खन । माखण । १९. चंदन । २०. सहाय । मदद । २१. लाभ । २२. घृत । २३. सुराख । *(वि०)* १. उत्तम । २. दृढ़ । *(ना०)* १. सुराख करने का औजार । सियार । २. प्रीति । ३. सुख । ४. याद । स्मृति । ५. होश ।

सारक—*(वि०)* रेचक । दस्तावर ।

सारखी—*(वि०)* समान । **सरीसो । सरीखी ।**

सारखो—*(वि०)* १. सदृश । समान । **सरीखो । सरीसो** । २. एक सरीखा । ३. बराबर ।

सारग्राही—*(वि०)* सार ग्रहण करने वाला।

सारज—*(न०)* एक प्रकार का वस्त्र। सरज।

सारझकोळा—*(न०)* युद्ध। लड़ाई।

सारड़ी—*(ना०)* सुराख करने का औजार। छोटा बरमा। स्यार।

सारण—*(ना०)* १. बैलों द्वारा कुएँ में से चरसा निकालते समय उनके चलने के लिये बनाया जाने वाला मार्ग। २. टीबा। धोरो। *(वि०)* १. काम बनाने वाला। २. निभाने वाला। *(न०)* ३. रास्ता। ४. नहर।

सारणा—*(न०ब०व०)* १. मसालेदार व्यंजन। तैंतीस प्रकार के पकवान। पक्वान्न, मिष्टान्नादि (बत्तीस भोजन नै तेतीस सारणा)।

सारणी—*(ना०)* १. तालिका। कोष्ठक। बहुत से खाने, कोठे या स्तम्भ युक्त कागज। टेबल। २. रेलगाड़ी के स्टेशनों पर ठहरने, छूटने इत्यादि का ब्योरा देने वाली पुस्तिका। समय-सारिणी। टाइम टेबल। ३. नाली। ४. नहर। नाळी।

सारणो—*(क्रि०)* १. बनाना। काम बनाना। २. सिद्ध करना। तैयार करना। ३. मरम्मत करना। दुरुस्त करना। ४. खेंचना। ५. पार लगाना। ६. याद करना। सम्हालना। ७. आँख में अंजन-काजल लगाना। ८. श्राद्ध करना। सराना।

सारत—*(न०)* १. देखरेख। सार-सम्हाल। २. होश-हवास। सुधबुध। ३. देखरेख की जिम्मेवारी। ४. स्मृति। याद। ४. वृद्ध या बीमार की सार-सम्हाल। ६. ध्यान। खबर। ७. संकेत। इशारा।

सारथक—*(वि०)* १. सार्थक। अर्थसहित। २. सफल।

सारथी—*(न०)* रथ हाँकने वाला। सागड़ी।

सारद—दे० सारदा।

सारद-माता—दे० सारदा।

सारदा—दे० शारदा।

सारदूल—दे० शार्दूल।

सारधू—*(ना०)* बेटी। पुत्री। दीकरी। डीकरी।

सार-भाग—*(न०)* १. वस्तु का मुख्य अंश। २. अच्छा भाग। सारांश।

सारभूत—*(भू०कृ०)* सार रूप में स्थित। *(वि०)* १. सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। २. सार-रूप।

सारमणी—*(ना०)* झाड़ू। बुहारी। सोहनी। सावरणी।

सारमणो—*(न०)* १. भंगी का झाड़ू। २. बड़ा झाड़ू। बुहारो। सावरणो।

सारमेक—*(न०)* स्वान। कुत्ता। कूतरो।

सारमेय—दे० सारमेक।

सार-रूप—*(न०)* संक्षिप्त आकार। *(वि०)* संक्षिप्त। *(अव्य०)* संक्षिप्त रूप में। *(न०)* तत्त्व वस्तु।

सार-रो-कोट—*(वि०)* लोहे के समान दृढ़ शरीर वाला। अत्यन्त दृढ़। *(न०)* १. लोहे का कोट या परकोटा। २. युद्ध। ३. युद्धस्थल।

सार-वार—*(ना०)* १. सेवा-चाकरी। २. देखरेख। सम्हाल। निगरानी। सार-संभाळ।

सारविद—*(न०)* शिव।

सारस—*(न०)* जलाशयों के पास रहने वाला लंबी टाँगों वाला एक पक्षी।

सारसड़ी—*(ना०)* मादा सारस। सारसी।

सारस-प्रिया—*(ना०)* सारसी। सारस की मादा।

सार-संग्रह—*(न०)* कथानक, बातों इत्यादि का संक्षिप्त संग्रह।

सार-संभाळ—*(ना०)* देखभाल। देखरेख। **सारवार**।

सारसी—*(ना०)* १. क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद। २. सारस की मादा।

सारस्वत—*(न०)* १. सरस्वती नदी के किनारे के एक प्रदेश का नाम। २. इस प्रदेश के निवासी। ३. इस प्रदेश में रहने वाले यहां वहाँ से अन्य प्रदेशों में फैले हुये ब्राह्मण। ४. एक ब्राह्मण उपजाति। ५. सरस्वती का उपासक। ६. साहित्यकार।

सारस्वत—*(वि०)* १. सरस्वती संबंधी। २. सारस्वत प्रदेश का। ३. सरस्वती या विद्या से संबंधित।

सारहीण—दे० सारहीन।

सारहीन—*(वि०)* १. तत्व रहित। २. सत रहित। ३. शक्ति रहित। निर्बल। ४. परिणाम रहित।

सारंग—*(न०)* १. विष्णु का धनुष। २. चंद्रमा। ३. एक प्रकार का मृग। ४. मृग। ५. बिजली। ६. मेघ। ७. एक रागिनी। ८. एक वाद्य। ९. शंख। १०. बाज। श्येन। ११. मोर। १२. सूर्य। १३. भौंरा। १४. हंस। १५. कमल। १६. कपूर। १७. घोड़ा। १८. हाथी। १९. सिंह। २०. सर्प। २१. पक्षी। २२. खंजन। २३. कोयल। २४. कबूतर। २५. चातक। २६. पानी। २७. बाण। २८. दीपक। २९. रात्रि। ३०. स्त्री। ३१. मेंढक। ३२. केश। बाल। ३३. स्वर्ण। ३४. भूमि। ३५. कामदेव। ३६. कुच। स्तन। ३७. कागज। पत्र। ३८. शोभा। छटा। ३९. कांति। ४०. आकाश। ४१. पर्वत। ४२. देवता। ४३. बंदर। ४४. तलवार। ४५. दर्पण। ४६. समुद्र। ४७. एक छंद। ४८. एक प्रसिद्ध कवि का नाम जिसने राजस्थानी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'क्रिसन रुकमणी री वेली' पर 'सुबोधमंजरी' नाम की टीका लिखी थी। यह कवि जालोर में हुआ था। परन्तु यह टीका उसने पालणपुर में वि० स० १६७८ में लिखी थी। सारंग राजस्थानी। (मारवाड़ी भाषा) का मर्मज्ञ कवि था। *(वि०)* १. रंगीन। २. चितकबरा। ३. सुन्दर।

सारंगधर—*(न०)* १. विष्णु। २. राम।

सारंगधरण—दे० सारंगधर।

सारंगपाणि—*(न०)* १. विष्णु। २. राम।

सारंगलोचना—*(वि०)* मृगनयनी। हरिणाक्षी।

सारंगियो—*(वि०)* सारंगी बजाने वाला।

सारंगी—*(ना०)* १. एक प्रसिद्ध तंतुवाद्य। २. हरिणी। मृगली। मिरगली। ३. सारंग धनुषधारी श्रीराम।

सारासार—*(न०)* १. सार और असार। २. अच्छा और बुरा।

सारांश—*(न०)* १. तात्पर्य। मतलब। निष्कर्ष। २. संक्षेप। सार। ३. भावार्थ। ४. परिणाम। नतीजा। ५. संक्षिप्त अंश या कथन।

सारि—*(ना०)* १. घी । घृत । २. गोटी । सारी । *(वि०)* १. शतरंज, चौपड़ खेलने वाला । २. जुआ खेलने वाला।

सारिका—*(ना०)* मैना पक्षी ।

सारिखो—*(वि०)* समान । सदृश ।

सारी—*(ना०)* १. चौपड़ खेलने की गोट । गोटी । पासा । २. मैना । सारिका । *(वि०ना०)* समस्त । सब ।

सारीखो—*(वि०)* १. एक समान । बराबर । २. समवयस्क ।

सारीस—*(वि०)* समान ।

सारीसो—*दे०* सरीखो ।

सारू—*(अव्य०)* १. वास्ते । लिये । २. करने के लिये । *(न०)* १. परिमाण । २. मैना । सारिका । *(वि०)* अच्छा । भला ।

सारूप्य—*(न०)* १. समानता । सरूपता । एकरूपता । समान रूप वाला हो जाना । २. वह मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है ।

सारै—*(अव्य०)* वश में । अधिकार में ।

सारो—*(न०)* अधिकार । वश । *(अव्य०)* १. सब । समस्त । २. ठीक ।

सार्थ—*(न०)* १. वणिकों का एक वर्ग । २. व्यापारिक माल । ३. समूह । झुंड । ४. काफिला । *(वि०)* १. अर्थ, उद्देश्य या प्रयोजन से युक्त । अर्थ सहित । २. उपयोगी । हितकर । *(अव्य०)* १. मतलब । स्वार्थ । २. धनमाल सहित ।

सार्थक—*(वि०)* १. अर्थ सहित । सार्थ । २. सफल । ३. उपकारी । गुणकारी ।

सार्थकता—*(ना०)* १. सार्थक होने की अवस्था, गुण या भाव । २. सफलता ।

सार्थपति—*(न०)* व्यापारी । वणिक ।

सार्थवाह—*दे०* सार्थपति ।

सार्वजनिक—*(वि०)* सब लोगों से संबंधित । सब लोगों का । आम ।

सार्वभौम—*(न०)* १. चक्रवर्ती राजा । संपूर्ण पृथ्वी का स्वामी । २. हाथी । *(वि०)* १. सब देशों से सम्बद्ध । अखिल भूमण्डल विषयक । २. सर्व संपन्न ।

साल—*(न०)* १. शाल । दुशाला । २. वर्ष । बरस । ३. खाट के पाये का चौकोर सुराख । ४. छेद । सुराख । ५. एक वृक्ष । ६. पीड़ा । दुख । ७. चुभन । कसक । ८. अड़चन । रुकावट । बाधा ।

साळ—*(ना०)* १. शाला । २. बरंडा । बरामदा । ३. एक प्रकार का धान । शालि । चावल । ४. वह स्थान जहाँ वस्त्र बुनने का औजार (करघा) लगा हो । वस्त्र बुनने का स्थान । ५. वस्त्र बुनने का औजार या करघा ।

साळगराम—*(न०)* गंडकी नदी में से प्राप्त काले पत्थर की गोल बटिया जिसे विष्णु के रूप में पूजते हैं । शालिग्राम ।

सालगिरह—*(ना०)* जन्म दिन । वर्षगाँठ । बरसगाँठ ।

सालड़ी—*दे०* सादड़ी ।

सालण—*(न०)* १. साग । सब्जी । २. रसेदार तरकारी । ३. मांस की तरकारी । सालन ।

सालणा—*(न०ब०व०)* सभी प्रकार के व्यंजन (बत्तीस भोजन नै तेंतीस सालणा) ।

सालणो—*(क्रि०)* १. सलना । दुख होना । २. कष्ट पाना । ३. कष्ट देना । ४.

खाट के पायों में ईस और ऊपलों को बिठाने के लिये चौकोर सुराख बनाना। ५. सुराख करना।

सालभर—*(अव्य०)* पूरा वर्ष। आखो वरस। वर्ष भर।

सालम—*(अव्य०)* चिरायु। *(वि०)* १. अखंड। २. पूरा। पूर्ण। सालिम। *(न०)* एक कंद।

सालम-मिसरी—*(ना०)* एक पौष्टिक कंद। सुधामूली। सालम मिस्री।

सालमिली—*(न०)* गरुड़। सेंमल का वृक्ष। शाल्मली।

सालर—*(न०)* एक वृक्ष तथा उसकी लकड़ी।

सालरस—*(न०)* सालवृक्ष से निकलने वाला रस। राल।

सालवार—*(अव्य०)* वर्ष अनुक्रम से। वरसवार।

सालवाहन—*(न०)* शालिवाहन राजा जिसने शक सम्वत् चलाया था।

साळवी—*(न०)* १. वस्त्र बुनने का काम करने वाला, बुनकर। शालिक। वणकर। २. एक जाति।

सालस—*(वि०)* १. भला। अच्छा। सालिस। २. विनयी। सैणो। ३. तीसरा। तृतीय। तीजो। *(न०)* पंच। मध्यस्थ।

सालसपणो—*(न०)* भलाई। भलपण। सालसाई।

सालसाई—दे० सालसपणो।

सालसो—*(न०)* खून साफ करने की एक औषधि। सालसा।

सालाणो—*(वि०)* सालाना। वार्षिक। सालियाणो।

सालाना—दे० सालाणो।

सालार—*(न०)* १. सेनापति। २. सरदार। नायक। ३. नेता। ४. मार्गदर्शक। ५. अगुआ।

सालार-जंग—*(न०)* सेनापति। सालारेजंग।

साळा-सूहेली—*(ना०)* साले की पत्नी। सरहज। साळासेली।

साळासेली—दे० साळासहेली।

साळाहेली—दे० साळासहेली।

साळिगराम—दे० साळगराम।

सालियाणें—*(अव्य०)* साल भर में। एक वर्ष में।

सालियाणो—दे० १. सालाणो। २. एक साल का वेतन। ३. एक साल के वेतन की रकम। ४. भारत सरकार द्वारा राजाओं को राज्यों के बदले में दिया जाने वाला प्रिवीपर्स।

सालियाना—दे० सालाणो।

साळी—*(ना०)* १. पत्नी की बहिन। २. एक गाली।

सालुर—*(न०)* मेंढक। दादुर। मोंडको। डेडरियो।

सालुरणो—*(क्रि०)* मेंढक का टर्र-टर्र बोलना।

सालुळणो—*(क्रि०)* १. फूंक से बजने वाले बाजे का शब्द होना। २. मेंढक का टर्र-टर्र करना। सालुरणो। ३. धीरे-धीरे चलना। ४. समूह का शिष्टबद्ध चलना। ५. समूह का एक साथ चलना। ६. चलना। ७. उलटना। ८. रेंगना।

साळू—*(न०)* १. स्त्रियों के ओढ़ने का लाल रंग का एक वस्त्र। २. किसी वस्तु की तीखी नोक। शल्य। ३. लाल रंग का

एक कपड़ा। ४. लंबी वस्तु का तीक्ष्ण छोर। ५. चमड़े की रस्सी।

सा़ळूड़ो—दे० साळू सं० १.

सालूर—*(न०)* मेंढक। डेडरो।

सालूरी—*(ना०)* मेंढकी। डेडरी। मींडकी।

सा़ळेवड़ो—दे० सळेवड़ो।

सालो—*(न०)* १. खलिहान। खळो। २. पराल में अनाज निकालने और ऋणदाता को अनाज देने की क्रिया।

सा़ळो—*(न०)* १. पत्नी का भाई। २. एक गाली।

सालोक्य—*(न०)* १. मोक्ष के चार प्रकारों में से एक। २. वह मुक्ति जिसमें प्राणी भगवान के लोक को प्राप्त होता है। भगवद् लोक में लीन कर देने वाली एक मुक्ति।

साळोतर—दे० शालिहोत्र।

साळोतरी—दे० शालिहोत्री।

साळोत्री—दे० शालिहोत्री।

सालोसाल—*(अव्य०)* प्रतिवर्ष। हर साल। वरसो वरस।

साल्ह—दे० साल्ह कुँवर।

साल्ह-कुँवर—*(न०)* प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ढोला-मारू-रा-दूहा' में वर्णित तथा वैवाहिक लोकगीतों में गाया जाने वाला सुन्दर, रसिक और सर्व विदित नायक 'ढोला' का वास्तविक नाम।

साव—*(न०)* १. स्वाद। जायका। सवाद। २. आनंद। मजा। ३. अपनी बात की दूसरे को होने वाली प्रतीति और आनंद। ५. बच्चा। बालक। ६. पुत्र। ७. शेर का बच्चा। *(अव्य०)* सर्वथा। बिलकुल। समूचो।

सावक—*(न०)* १. पशु या पक्षी का बच्चा। शावक। २. शेर का बच्चा। ३. बच्चा। ४. श्रावक। जैन धर्म का अनुयायी। जैनी।

सावकर्ण—*(न०)* १. काले कानों वाला सफेद घोड़ा। श्यामकर्ण। २. वह सफेद घोड़ा जिसके कान काले और उनकी नोकें (कनौती) परस्पर मिली रहती हैं। ३. वह सफेद घोड़ा जिसके कान और पूंछ काले होते हैं।

सावकाश—*(अव्य०)* १. फुरसत से। अवकाश मिलने पर। २. सुभीते से। *(न०)* अवकाश। छुट्टी।

सा़वकी—*(ना०)* सौत। माँईमां। *(वि०)* सौत की। अपर माता की (पुत्री)।

सा़वको—*(वि०)* सौत का। अपर माता का (पुत्र)।

सा़वचेत—*(वि०)* १. सावधान। सचेत। २. होशियार। सतर्क। हुँसियार।

सा़वचेती—*(ना०)* सावधानी। सतर्कता। हुंसियारी। होशियारी।

सावज—*(न०)* १. सिंह का बच्चा। २. सिंह।

सावजळ—*(न०)* भाला।

सावज-सूरो—*(वि०)* सिंह के समान शूर-वीर।

सावजोग—*(वि०)* १. दृढ़। मजबूत। सैंठो। २. जो टूटा-फूटा नहीं हो। अखंड। अटूट। साजो। ३. सुन्दर। फूटरो। दे० शाहजोग।

सावज्ज—दे० सावज।

सावझड़ो—*(न०)* एक डिंगल गीत छंद।

सावटू—*(न०)* १. जैसलमेर के पास निकलने वाला एक रंग-बिरंगा पत्थर। २. एक प्रकार का लाल रंग का मूल्यवान रेशमी कपड़ा। ३. विवाह के

समय वर पक्ष की ओर से वधू के लिये भेंट किये जाने वाले विशेष वस्त्र ।

सावटू वेस—दे० सावटू सं० ३.

सावण—*(न०)* १. श्रावण मास । सावन । २. शकुन । सवण । सुकन ।

सावणू-साख—*(न०)* बरसाती फसल । खरीफ ।

सावध—दे० सावधान ।

सावधान—*(वि०)* सावचेत । होशियार । जाग्रत । हुंसियार ।

सावधानता—दे० सावधानी ।

सावधानी—*(ना०)* सतर्कता । सावचेती । होशियारी । हुंसियारी ।

सावयव—*(न०)* मुक्ति के चार प्रकारों में की एक । सारूप्य मुक्ति । *(वि०)* अवयव सहित ।

सावर—*(न०)* १. हल चलाये हुए खेत को समतल करने का एक उपकरण । चावर । २. सावर चलाने की क्रिया । ३. एक औजार । ४. अपराध । ५. पाप । ६. लोध्र वृक्ष । *(ना०)* बरछी ।

सावरणी—*(ना०)* झाड़ू । सारमणी । बुहारी ।

सावरणो—दे० सारमणी ।

सावरत—*(वि०)* १. लाल । २. रक्तरंजित । ३. ढका हुआ । सावृत । ४. ढक्कन सहित । साव्रत । ५. पत्र-पुष्प युक्त । *(न०)* १. सूर्य । २. शिव । ३. जनेऊ । ४. माला । हार । ५. शंख । ६. दोनों ओर ।

सावळ—*(वि०)* [‘कावळ’ का उलटा] ठीक । अच्छा । *(अव्य०)* भलीभाँति । अच्छी प्रकार ।

सावळसर—*(वि०)* १. ढंग का । २. अच्छा । ३. अनुकूल । फबतो । *(अव्य०)* १. ढंग से । २. अच्छा सा । ३. ठीक सर । ४. भलीभाँति ।

सावळसूत—दे० सावळसर ।

सावळियार—दे० सावळियाळ ।

सावळियाळ—*(वि०)* [‘कावळियाळ’ का उलटा] १. अच्छे आचरण वाला । नेक । भला । २. विनम्र । ३. व्यवहार कुशल । ४. सरल स्वभाव का ।

साव-सराधी अमावस—*(ना०)* सर्व श्राद्ध अमावस्या । आश्विन मास की अमावस्या ।

साव-सामने—दे० साव सामां ।

साव-सामां—*(अव्य०)* बिलकुल सामने ।

साव-सामी—दे० साव सामां ।

सावंत—दे० सामंत ।

सावित्ति—दे० सावित्री ।

सावित्री—*(ना०)* १. गायत्री । २. सरस्वती । ३. सूर्य की किरण । ४. सूर्य की पुत्री । ५. ब्रह्मा की पत्नी । ६. यमुना नदी । ७. सती-साध्वी । ८. सधवा स्त्री । ९. सत्यवान की पत्नी, जो अपने सतीत्व के कारण प्रसिद्ध है । १०. गायत्री मंत्र । ११. आँवला । १२. गायत्री ।

सावित्री-व्रत—*(न०)* जेठ मास में पति की दीर्घायु के लिये स्त्रियों द्वारा किया किया जाने वाला एक व्रत । सौभाग्य की रक्षा के लिए स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला वट-सावित्री व्रत ।

सावेव—दे० सावयव ।

सावो—दे० साहो ।

सावो-सूभणो—*(मुहा०)* १. विवाह का शुभ दिन होना । २. पाणिग्रहण के दिन ज्योतिष के अनुसार वर-वधू के ग्रह, लगन आदि का अनुकूल होना ।

साव्रत—*(वि०)* पत्र-पुष्प युक्त। फूल पत्तों से युक्त।

साष्टांग—*(वि०)* आठों अंगों सहित।

साष्टांग प्रणाम—*(न०)* जमीन पर औंधे लेट कर, सिर, हाथ, छाती, पैर, आँख, जाँघ, मन और वाणी से किया जाने वाला प्रणिपात।

साष्टांग-योग—*(न०)* वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि आठों अंग हों।

सास—*(न०)* १. स्वास। साँस। दम। २. जीव। प्राण। ३. पति या पत्नी की माता। **सासु**।

सास उपड़णो—*(मुहा०)* मृत्यु के समय (पहले) स्वास का खूब जोर से चलना।

सास-उसास—दे० सासोसास।

सास-खाणो—*(मुहा०)* विश्राम करना। थकावट दूर करना। **थाक खाणो**।

सास-खावणो—दे० सास खाणो।

सास चढणो—*(मुहा०)* दम चढ़ना। दम की बीमारी होना।

सासण—दे० सासण। दे० शासन।

सासणो—*(क्रि०)* १. शासन करना। २. संधान करना। ३. सम्हालना। तैयार होना। सँभलना। ४. सम्हलाना। तैयार करना। ५. सम्हालना। गिरने नहीं देना। संभालना। ६. जिम्मेवारी लेना। भार ऊपर लेना।

सासतर—*(न०)* १. शास्त्र। २. विधि। रीति।

सासतर करणो—*(मुहा०)* विधि करना। रीति का पालन करना। रीति को जैसे-तैसे नाम मात्र से संपन्न करना।

सासतीक—*(क्रि०वि०)* १. निरंतर। २. लगातार। सदा।

सासतो—*(वि०)* १. शाश्वत। २. निरंतर।

सासत्र—दे० शास्त्र।

सासन—दे० शासन।

सासनभ—*(न०)* पवन। वायु।

सासरवाड़ो—*(न०)* ससुराल। **सासरो**।

सासरिया—*(न० ब० व०)* ससुराल का कुटुम्ब-परिवार। ससुराल वाले।

सासरियो—*(न०)* १. ससुराल। **सासरो**। २. सासरे वाला।

सासरो—*(न०)* ससुराल। **सासरो**।

सासा—*(ना०)* श्वास। साँस। **सास**।

सासु—*(ना०)* पति या पत्नी की माता। सास।

सासुजायी—*(ना०)* १. पत्नी। २. ननद। **नणद**।

सासुजायो—*(न०)* १. पति। साला। **साळो**। २. पत्नी का भाई।

सासू-री-जायी—दे० सासु जायी।

सासू-रो-जायो—दे० सासु जायो।

सासोसास—*(न०)* श्वासोच्छ्वास। श्वास लेना और छोड़ना।

सास्तर—दे० शास्त्र।

साह—*(वि०)* १. भला। २. साधु। सज्जन। ३. साखवाला। प्रतिष्ठित। ४. साहूकार। *(न०)* १. सज्जन पुरुष। २. बादशाह। ३. साहूकार। ४. धनी।

साहजादी—दे० शाहजादी।

साहजादो—दे० शाहजादो।

साहजोग—*(अव्य०)* १. हुंडी का एक पारिभाषिक शब्द। साहूकार जोग। २. हुंडी लेकर आने वाला वह साहूकार व्यक्ति जिसे हुंडी में अंकित रुपये चुकाये

जाते हैं। ३. जिसका नाम लिखा गया हो, उसी साहूकार (सही) व्यक्ति को मिले (हुंडी के रुपये)। नाम जोग। ४. वास्तविक व्यक्ति को। अधिकारी या वास्तविक व्यक्ति का पहचान करके। *(वि०)* १. प्रतिष्ठित। इज्जतदार। २. साहूकार। ३. ईमानदार। ४. प्रामाणिक।

साहण—*(न०)* १. हाथी। गज। २. घोड़ा। ३. रथ। साधन। *(वि०)* १. सहन करने वाला। २. गंभीर। ३. थामने वाला। ४. ग्रहण करने वाला।

साहण-समद—*(न०)* १. समुद्र पर पुल बाँधने वाला (श्रीराम)। २. समुद्र के समान गंभीर।

साहणी—*(न०)* १. अश्वपाल। २. घुड़सवार। ३. सवार के आगे घोड़े की लगाम पकड़कर चलने वाला व्यक्ति। ४. मध्यकालीन भारत में एक प्रकार के राजकर्मचारी। साहनी। ५. सेना।

साहणो—*(क्रि०)* १. उठाना। २. थामना। पकड़ना। झेलणो। ३. रोकना। ४. सहन करना।

साहब—*(न०)* १. परमात्मा। ईश्वर। २. मालिक। स्वामी। ३. पति। धणी। ४. मित्र। ५. अधिकारी। अफसर। ६. सम्मानसूचक एक संबोधन शब्द। ७. यूरोपियन व्यक्ति। गोरो। टोपी वाळो।

साहबजादी—*(ना०)* बड़े आदमी की लड़की।

साहबजादो—*(न०)* बड़े आदमी का लड़का। रईस का लड़का।

साहब-बहादुर—*(न०)* १. अंग्रेज अफसर। २. अंगरेज की तरह रहने वाला पदाधिकारी।

साहबी—*(ना०)* १. वैभव। प्रभुता। जाहोजलाली। सायबी। २. साहब होने का भाव। ३. बड़ाई। ४. अधिकार। ५. शासन। हुकूमत। *(वि०)* १. साहब का। २. साहब संबंधी।

साहबी-रो-धणी—*(न०)* १. राज्य का मालिक। २. वैभवशाली।

साहबो—*(न०)* स्वामी। पति। वर। सायबो।

साहवो—दे० सावो।

साहस—*(न०)* १. दुष्कर काम करने की वृत्ति। २. जोखिम के काम को निडरता से उठा लेने या कर लेने की मानसिक दृढ़ता। हिम्मत। ३. कोई बुरा काम। अविचारी काम। ४. धृष्टता।

साहस-वृत्ति—*(ना०)* साहस करने का स्वभाव। साहसी प्रकृति।

साहसियो—दे० साहसी।

साहसी—*(वि०)* साहसवाला। दिलेर। हिम्मती।

साहाँ-साल—*(न०)* १. बादशाहों को सलन वाला। २. बादशाहों का शत्रु।

साहिजादी—दे० शाहजादी।

साहिजादो—दे० शाहजादो।

साहित्य—*(न०)* १. सरस और ललित, कृतियां, लेख, ग्रन्थ इत्यादि। २. किसी वस्तु या विषय से संबंध रखने वाले सभी ग्रन्थों तथा लेखों इत्यादि का समूह। ३. प्राणी वर्ग तथा समाज के विचार, भावना, ज्ञान इत्यादि की किसी भी भाषा में लिपि बद्ध की हुई सामग्री।

वाङ्मय। ४. काव्य। ५. कार्य के लिये आवश्यक वस्तुएँ, उपकरण या सामग्री। ६. सहित या साथ होने का भाव।

साहित्यकार—*(न०)* वह जो साहित्य की रचना व सेवा करता हो।

साहित्य-शास्त्र—*(न०)* साहित्य के अंग, तत्व एवं शैली इत्यादि से संबंधित शास्त्र। साहित्य के विभिन्न अंगों की विवेचना का ग्रन्थ।

साहित्य-समालोचक—*(न०)* साहित्यिक कृति के गुण-दोषों का विवेचक।

साहित्य-समालोचना—*(ना०)* साहित्यिक कृति के गुण-दोषों का विवेचन।

साहित्यिक—*(वि०)* १. साहित्य संबंधी। २. साहित्य का ज्ञाता। ३. साहित्य रचयिता।

साहिब—दे० साहब।

साहिबी—दे० साहबी।

साहिल—*(न०)* १. समुद्र तट। २. नदी का किनारा।

साहुळी—*(ना०)* पुकार। अर्ज।

साहुलो—*(न०)* पूंछ तक लंबे सींगों वाला भैंसा।

साहू—*(न०)* १. सज्जन। २. बादशाह।

साहूकार—*(न०)* व्यापारी। *(वि०)* १. धनिक। संपत्तिवान। २. व्यवहार का सच्चा। ३. ईमानदार। ४. विश्वास-पात्र।

साहूकारजोग—दे० साहजोग।

साहूकारणी—*(ना०)* साहूकार की स्त्री। *(वि०)* १. ईमानवाली। २. विश्वास वाली।

साहूकारी—*(ना०)* १. साहूकार का काम। २. साहूकार होने का भाव। ३. ईमानदारी। प्रामाणिकता। **साहूकारपणो**।

साहेबी—दे० साहबी।

साहो—*(न०)* १. विवाह का मुहूर्त। २. विवाह का शुभ दिन। सहालग। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार निश्चित की हुई विवाह की तिथियाँ। ४. विवाहादि की दृष्टि से शुभ दिन। ५. वर, कन्या के जन्माक्षरों (कुंडली) का मिलान करके निश्चित किया हुआ विवाह का दिन। ६. पाणिग्रहण का समय। **साहबो**। **सहावो**। **सावो**।

साँइत—दे० सायत।

साँई—*(न०)* १. स्वामी। मालिक। २. पति। ३. ईश्वर। ४. मुसलमान फकीर। ५. फकीर।

साँईनी—*(वि०ना०)* समवयस्का। हमउम्र वाली।

साँईनो—*(वि०)* समवयस्क। हमउम्र।

साँईबाबो—*(न०)* मुसलमान फकीर। फकीर।

साँईयाँ—*(न०)* १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। साँई।

साँकड़—*(ना०)* १. सँकरापन। **संकड़ामण**। २. भीड़। ३. दिक्कत। परेशानी। ४. तकलीफ। कष्ट।

साँकड़-भीड़ो—*(न०)* १. अत्यन्त संकड़ाई। थोड़ी जगहों में बहुतों का इकट्ठा होना। २. तंगी। ३. आर्थिक तंगी। **संकड़ाटो**।

साँकड़ी—*(वि०ना०)* १. संकरी। तंग। कमचौड़ी। *(ना०)* संकट। परेशानी।

साँकड़ी करणो—*(मुहा०)* १. तंग करना। हैरान करना। २. विपत्ति में डालना। ३. तंग बनाना।

साँकड़ीजणो—दे० संकड़ीजणो।

सांकड़ी बीतणी—*(मुहा०)* १. परेशानी होना। २. संकट में पड़ना। ३. संकट से गुजरना। ४. बुरी दशा होना।

सांकड़ीवार—*(ना०)* कठिन समय। विपत्ति काल। संकट का समय।

सांकड़ी होणी—दे० सांकड़ी होवणी।

सांकड़ी होवणी—*(मुहा०)* १. परेशानी होना। हैरानी होना है। २. संकट में पड़ना।

सांकड़े—*(क्रि०वि०)* १. पास। निकट। नजदीक। *(अव्य०)* १. सँकराई में। तंगी में। २. विपत्ति में। भीड़ में। *(ना०)* १. डाँट-डपट। २. संकरापन।

सांकड़े आवणो—*(मुहा०)* १. विपत्ति में पड़ना। २. उलझन में पड़ना। ३. उलझना।

सांकड़े फँसणो—*(मुहा०)* संकट में पड़ना।

सांकड़ो—*(वि०)* १. सँकरा। तंग। कम-चौड़ा। २. थोड़ा। ३. निकट का। ४. संकुचित मन का।

सांकड़ो होणो—*(मुहा०)* १. लज्जित होना। शरमाना। २. तंग होना।

सांकड़ो होवणो—*(मुहा०)* दे० सांकड़ो होणो।

सांकणो—*(क्रि०)* डरना। भय खाना। संकित होना। संकीजणो।

सांकळ—*(ना०)* १. साँकल। जंजीर। २. एक आभूषण। ३. बंद किये हुए किवाड़ में लगाई जाने वाली साँकल। कोंढा। कड़नाळ। कड़नाळो। कूंठो। ४. जमीन मापने का अमुक लंबाई का लोहे की लंबी साँकल का माप।

सांकळणो—*(क्रि०)* १. साँकल से बाँधना। २. हाथों, पाँवों में हथकड़ी, बेड़ी डालना। ३. मिलाना। ४. पंक्ति रूप में संकलित करना। लांगरणो। ५. फँसाना।

सांकळियो—*(वि०)* साँकल में बंधा हुआ।

सांकळियोड़ो—*(वि०)* साँकल से बंधा हुआ।

सांकळी—*(ना०)* १. कान का एक गहना। २. सिर का एक गहना। ३. कंठी। लड़। माला। सर। ४. साँकल।

सांकळो—*(ना०)* १. हाथ का गहना। हथ सांकळो। २. पांव का एक गहना लंगर।

सांकायत—*(वि०)* १. संशय वाला। २. डरा हुआ। भयभीत। भयान्वित। ३. शंका या संकोचवाला। शरम वाला।

सांकाळू—*(वि०)* 'लाज-शरम वाला। संकोचवाला। संकोची। संकाळू। शरमाळू।

सांकाळो—दे० सांकावाळो।

सांकावाळो—*(वि०)* शरम-संकोच वाला। सांकाळू।

सांकेतिक—*(वि०)* १. जो संकेत के रूप में हो। २. संकेत संबंधी। ३. संकेत वाला। ४. पारिभाषिक।

सांकेतिक-भाषा—*(ना०)* गूढ़ संकेतों वाली भाषा। कोड लेंग्वेज।

सांको—दे० संको।

सांखणो—*(क्रि०)* १. सहन करना। खमणो। २. क्षमा करना।

सांखळो—*(ना०)* एक वृक्ष।

सांखलो करमसी रुणेचो—*(ना०)* 'किसन जी-री-बेलि' का रचयिता एक क्षत्रिय भक्त-कवि। दे० करमसी सांखलो।

सांख्य-दर्शन—*(ना०)* महर्षि कपिल प्रणीत एक दर्शन। छः दर्शनों में एक।

सांख्य-योग—*(न०)* १. वह योग जिसमें सांख्य दर्शन प्रधान हो। २. श्रीमद्-भगवद्गीता का दूसरा अध्याय।

सांग—*(न०)* १ किसी के अनुरूप धारण किया जाने वाला बनावटी रूप। स्वांग। २. परिहासपूर्ण खेल या तमाशा। ३. नकल। ४. आडम्बर। ५. एक कर। ६. पत्थर आदि भारी वस्तु को खिसकाने की लोहे की लम्बी मोटी छड़। ७. बरछी। ८. बरछी जैसा एक शस्त्र। ९. भाला। *(वि०)* १. अंगों सहित। सब अंगों से युक्त। २. संपूर्ण। पूरा। तमाम।

सांगड़ो—*(न०)* १. भाला। २. तारकणों का एक उपकरण।

सांगर—*(ना०)* शमी वृक्ष की फली। **सांगरी**।

सांगरी—*(ना०)* शमी (खेजड़ी) वृक्ष की लंबी फली। **सांगर**।

सांगवणा—*(न०ब०)* यात्रा में बाँई ओर में होने वाला शकुन। **सांगूणा**।

सांगियाँजी—*(ना०)* एक लोक देवी।

सांगूणा—दे० सांगवणा।

सांगो—*(न०)* १. साथ। २. सहवास। ३. संगति। ४. साहचर्य। ५. संपर्क। संसर्ग। ६. लोहे का मोटा छड़। **सांग**। ७. भाला। ८. एक औजार या उपकरण। ९. एक समान अनेक वस्तुओं को एक साथ बनाने का भाव या क्रिया। १०. संग्राम। युद्ध। ११. संग्रामसिंह का छोटा अथवा काव्य नाम। १२. झुंड। समुदाय। टोळो।

सांगोपांग—*(वि०)* अंग-उपांगों से युक्त। अंगोपांगों सहित। २. खूब अच्छा। ३. पूरा। *(क्रि०वि०)* १. अच्छी तरह से। २. पूरी तरह से।

सांघणो—*(वि०)* १. सघन। घना। निविड़। २. ठोस। **भिड़मो**।

सांघातिक—*(वि०)* प्राणघातक। हननकारी।

साँच—दे० साच।

साँचरणो—*(क्रि०)* १, उत्पन्न होना। संचरना। पैदा होना। २. आना या जाना। ३. प्रस्थान करना। विदा होना। ४. चलना। जाना। **संचरणो**।

साँचळा-मांचला—दे० साचमाच।

साँचली—*(वि०)* १. सच्ची। साचबोली। *(क्रि० वि०)* सचमुच। वस्तुतः।

साँचलो—*(वि०)* १. सच्चा। असल। २. सचबोला। सत्यवादी। *(क्रि०वि०)* सचमुच। वस्तुतः।

साँचै—*(अव्य०)* सत्य ही। **साचाणी**।

साँचो—*(वि०)* सच्चा। साचो। *(न०)* आटे की लोई। दे० संचो।

साँज—दे० साँझ।

साँजत—*(ना०)* १. साज-सज्जा। सजावट। २. तैयारी। ३. व्यवस्था। **साजत**।

साँजवण—*(ना०)* किसी एक व्यक्ति के बाल बच्चे आदि। संतति। २. कुटुम्ब-कबीला। **साजवण**।

साँजी—दे० साँझी।

साँझ—*(ना०)* संध्या। सूर्यास्त का समय। संध्याकाल।

साँझवण—दे० सांजवण।

साँझवेळा—*(ना०)* संध्या समय। सायंकाल।

साँझी—*(ना०)* १. संध्या। २. स्वाध्याय। ३. संध्या समय का प्रार्थना-गीत। ४. संध्या समय की प्रार्थना। ५. संध्या के समय गाये जाने वाले मांगलिक लोक-

गीत। ६. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर संध्या या रात्रि को स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले मांगलिक लोकगीत। संध्या को गाये जाने वाले विवाह-गीत। ७. ऐसे गीत गाये जाने की प्रथा। ८. वैष्णव मंदिरों में फूल-मंडली इत्यादि उत्सवों पर गाये जाने वाले भजन। हरजस। पद आदि। ९. वैष्णव मंदिरों के इस प्रकार के उत्सव। १०. प्रायः उत्सवों के समय मंदिरों में आंगन पर अनेक प्रकार के रंगीन चूर्णों से बनाये जाने वाले स्वस्तिक, बेल-बूँटे आदि मांगलिक चिन्हों की सजावट। ११. संध्या-समय गाये जाने वाले भजन, हरजस, पद आदि।

साँझीवार—*(ना०)* १. संध्या समय। २. सुअवसर। ३. समय-कुसमय।

साँ-गाँठ—*(ना०)* १. छिपी बात-चीत। २. छिपा संबंध। ३. दूषित संबंधी। ४. गुप्त और गूढ़ अभिसंधि। ५. मेल-जोल। मेल मिलाप।

सा़ँठो—*(ना०)* १. गन्ना। ईख। **सेलड़ी**। २. ज्वार के पौधे का मीठा डंठल। *(वि०)* दृढ़। मजबूत। **सैंठो**।

सा़ँड—*(ना०)* १. बिना बधिया किया हुआ बैल। सांड-वृषभ। **गोधो**। **सांडियो**। २. बिना जिम्मेवारी के इधर-उधर डोलने-फिरने वाला मस्त व्यक्ति। ३. ऊँटनी। साँढणी। सायँड़। *(वि०)* अण्डयुक्त। जो बधिया न किया गया हो।

सा़ंडड़ी—दे० साँडणी।

सा़ँडणी—दे० साँढणी।

सा़ँडसी—*(ना०)* एक औजार। पकड़। संडासी।

साँडसो—*(ना०)* १. बड़ी संडासी। चोंच-वाली। साँडसी। २. लंबा चिमटा। **साणसो**। **संडासो**। **संडाणो**।

सा़ँडियो—*(ना०)* १. ऊंट सवार। उष्ट्रारोही। २. छोटा ऊंट। ऊंट का बच्चा। ३. साँड। **गोधो**।

सा़ँडो—*(ना०)* छिपकली या गोह जाति का एक जंतु, जिसकी चरबी दवा के रूप में काम आती है।

साँडो-तेल—*(ना०)* सांडे की चरबी जिसकी मालिश से नपुंसकता का मिटना कहा जाता है।

सा़ँढ—*(ना०)* १. ऊंटनी। २. गाय का नर। सांड। **गोधो**। **सांडियो**।

सा़ँढड़ी—दे० साँढणी।

सा़ँढणी—*(ना०)* ऊंटनी। **साँढ**। **सायँड़**।

सा़ँढियो—दे० साँडियो। ऊँट।

साँत—दे० शांत।

साँतर—*(अव्य०)* १. ही। **परण**। २. हुये भी। होते हुए भी। **पांतर**।

साँतरी—*(वि०ना०)* १. चंगी। स्वस्थ। २. अच्छी। ३. अधिक। खूब। ४. दृढ़। मजबूत। **जबरी**। ५. सुन्दर। ६. तेज। तीक्ष्ण। पैनी। ७. रोग-निवृत्ति। स्वास्थ्य-लाभ। ८. झगड़ालू।

सा़ँतरो—*(वि०)* १. स्वस्थ। चंगा। २. दृढ़। मजबूत। ३. अच्छा। ४. खूब। ५. जबरदस्त। ६. तेज। ७. सुन्दर। ९. श्रेष्ठ। *(ना०)* रोग निवृत्ति। स्वास्थ्य लाभ। १०. झगड़ालू।

साँती—दे० शांति।

सांतो—*(न०)* चोर द्वारा दीवाल को तोड़कर या सुराख कर बनाया गया रास्ता। सेंध।

सांत्वना—*(ना०)* आश्वासन। ढाढ़स। कुशल-क्षेम पूछना।

साँथरी—*दे०* साथरी।

सांदीपन—*(न०)* श्रीकृष्ण और सुदामा के गुरु। सांदीपनि।

सांध—*(ना०)* १. संधि। जोड़। सांधो। २. मेल। संयोग। ३. बनावट।

सांधणो—*(क्रि०)* १. दो वस्तुओं को टाँका लगाकर जोड़ना। जोड़ना। साँधना। २. टूटे हुए या फटे हुये को जोड़ना। **सांधो देणो**। ३. संधान करना। निशाना लगाना। निशाने पर लगाना। ४. संधाना बनाना। पाक बनाना।

सांधो—*(न०)* १. वह भाग जहाँ दो वस्तुएँ जोड़ी गई हों। संधि। साँध। फटे-टूटे का टाँका लगाकर जोड़ा हुआ भाग। ३. किसी वस्तु की दरार या दरार को जोड़ाई। ४. दो वस्तुओं की जोड़ या सिलाई। ५. संयोग। अवसर। ६. प्राप्ति। ७. मिलन। मेळ।

सांधो देणो—*(मुहा०)* १. हानि में सहायता करना। २. बिगड़ी हुई बात या काम को सुधारना। ३. साँधा लगाना। जोड़ना। **जोड़णो**।

सांधो मारणो—*(मुहा०)* जोड़ लगाना। साँधना। जोड़ना। **जोड़णो**।

सांधो मिळणो—*(मुहा०)* १. सुअवसर प्राप्त होना। मौका मिलना। २. जोड़ बराबर लगना। बराबर जुड़ना।

साँप—*(न०)* सर्प। नाग। साप।

साँपड़—*(ना०)* १. किवाड़ में लगी रहने वाली खड़ी या आड़ी लकड़ी की पट्टी। २. प्राप्ति। ३. स्नान। ४. जन्म। ५. सहायता।

साँपड़णो—*(क्रि०)* १. स्नान करना। **संपाड़ो करणो**। २. प्राप्त होना। मिलना। ३. जनमना।

साँपणी—*(ना०)* सर्पिनी। नागिन। नागण।

साँपर—*(ना०)* १. सहायता। मदद। २. धाक। रोब। आतंक। ३. मृत्यु।

साँपरणो—*(क्रि०)* १. मदद करना। २. डराना। धमकाना। ३. मरना।

साँपरत—*दे०* साँपरते।

साँपरतक—*दे०* साँपरते।

साँपरतीक—*दे०* साँपरते।

साँपरते—*(अव्य०)* १. प्रत्यक्ष। सामने। २. अभी का। ३. वर्तमान समय में। सांप्रतिक। ४. अभी। संप्रति। इसी समय। अबार। हमार।

साँपो—*दे०* सापो।

सांप्रत—*(अव्य०)* १. अभी। तत्काल। इसी समय। अबार। हमार। २. साक्षात। प्रत्यक्ष। ३. निश्चय ही।

सांप्रदायिक—*(वि०)* १. संप्रदाय से संबंध रखने वाला। २. संप्रदाय संबंधी। ३. सम्प्रदाय का।

साँफळ—*(ना०)* १. मुठभेड़। झड़प। टक्कर। भिड़ंत। २. द्वन्द्व युद्ध। कुश्ती। ३. लड़ाई। ४. वेग से कूद कर आगे बढ़ना। ५. फलाँग। कुदान। छलांग। ६. घबराहट।

साँफळणो—*(क्रि०)* १. खूब वेग से दौड़ कर आगे बढ़ना। कूद कर आगे बढ़ना। २. झड़प करना। फलाँग मारना। ३. घबरा जाना। **हाँफळणो**। ४. उतावल करना। उतावला होना।

साँफळो—*(वि०)* १. मुठभेड़ करता हुआ। टक्कर लेता हुआ। २. वेग से कूद कर आगे बढ़ता हुआ। ३. कूदता हुआ। ४. घबराया हुआ। ५. उतावला।

साँब—*(ना०)* १. चोब, मूसल, डंडा, वल्ली आदि के किनारे पर लगी हुई लोहे की पट्टी या बंधन। २. खेत की (साबर चलाने के बाद) दूसरी बार की जाने वाली जुताई। साम।

सांब—*(न०)* १. शिव। महादेव। २. पार्वती सहित महादेव। शिवाम्ब। शिव-पार्वती।

सांबीलो—*(न०)* मूसल।

साँभणो—*(क्रि०)* १. सँभालना। सम्हालना। २ रखना। ३. रक्षा करना। ४. थामना। सहारा देना। ५. ठीक ढंग से रखना।

साँभर—*(न०)* १. अनेक शाखायुक्त सींगों वाला एक बड़ा हरिण। बारहसिंगा। २. राजस्थान का एक प्रसिद्ध नगर।

साँभर-झील—*(ना०)* साँभर के पास की नमक की झील।

साँभरणो—*(क्रि०)* १ याद आना। २. याद करना।

साँभरा देवी—*(ना०)* साँभर की प्रसिद्ध देवी। शाकंभरी देवी।

साँभरा माता—*दे०* साँभरा देवी।

साँभरियो—*(न०)* चौहान क्षत्री। *(वि०)* साँभर नगर का रहने वाला।

साँभरी—*(ना०)* शाकंभरी देवी। *(वि०)* १. शाकंभरी संबंधी। २. शाकंभरी का। ३. साँभर नगर संबंधी। ४. साँभर का।

साँभरो—*(न०)* १. चौहान क्षत्री। २. नमक निकालने की जगह। ३. नींव।

साँभळण—*(न०)* कान। कर्ण। श्रवणेन्द्रिय। *(अव्य०)* सुनने के लिये।

साँभळणो—*(क्रि०)* १. श्रवण करना। सुनना। २. ध्यान में लेना।

साँयड—*(ना०)* ऊंटनी। थूंभाळी। कमाळी।

साँयत—*(ना०)* १. शांति। धैर्य। २. तृप्ति। *(वि०)* १. शान्त। २. तृप्त।

साँवटणो—*(क्रि०)* १. समेटना। इकट्ठा करना। २. कपड़े, कागज इत्यादि की परत पर परत डालकर समेटना। ३. बिखरी हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना।

साँवटा-साँवटी—*(ना०)* साँवटने की क्रिया या भाव।

साँवटीजणो—*(क्रि०)* १. इकट्ठा होना। २. समेटा जाना। ३. संकोच में पड़ना। ४. सिकुड़ना।

साँवटो—*(वि०)* १. इकट्ठा। एक साथ। सम्मिलित। २. थोकबंध। ३. बहुत। *(अव्य०)* १. एक बार में। २. एक साथ में। ३. आवश्यकतानुसार सब का सब। ४. अधिक परिमाण या संख्या में। ५. एक साथ बहुत सा। *(न०)* इकट्ठा खरीदने या बेचने की वस्तु। २. इकट्ठा खरीदने या बेचने की क्रिया। ३. इकट्ठी वस्तु। ४. ढेर। राशि। थोक। *(क्रि०वि०)* १. एक बार में। २. अधिक मात्रा में। अतिशय।

साँवठो—*दे०* साँवटो।

साँवण—*(न०)* श्रावण मास।

साँवत—*(न०)* सामंत। शूरवीर।

साँवतदे—*(ना०)* सावित्री।

सांवरणो—*(क्रि०)* १. चक्की चलाना बंद करना। चक्की चलाने के काम को समाप्त करना। २. पीसा जा चुकना। चक्की चलाने के काम का समाप्त होना।

सांवरियो—*(न०)* श्रीकृष्ण। *(वि०)* श्यामल।

सांवरो—*(न०)* श्री कृष्ण। *(वि०)* श्यामल।

सांवळसा—*(न०)* नरसी भक्त की पुत्री नानीबाई के यहाँ माहेरा भरने को मुनीम का भेष धर कर आये हुए श्रीकृष्ण का नाम।

सांवळापणो—*(न०)* सांवला होने का भाव। सांवलापन।

सांवळियो—*(न०)* श्रीकृष्ण।

सांवळो—*(ना०)* १. चील पक्षी। संवळो। *(वि०)* काली। काले रंग की।

सांवळो—*(वि०)* १. कुछ हलके श्याम वर्ण का। २. काला। *(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. अफीम। ३. शिकारी।

सांवों—*(न०)* फलाहार के काम में आने वाला एक जंगली अन्न। एक हलकी जाति का अन्न। खड़ धान।

साँस—*(न०)* १. श्वास। दम। सास। २. दमे का रोग। ३. प्राण। ४. जीवनी-शक्ति।

साँसण—*(न०)* राज्य की ओर से ब्राह्मण, साधु, चारण, भाट आदि को दान दी हुई करमुक्त भूमि या गाँव।

साँसणो—*(क्रि०)* १. सहन करना। २. संशय करना। ३. कष्ट पहुँचाना। ४. श्वास लेना।

सांसत—*(ना०)* कमी। न्यूनता। क्षण।

सांसर—*(ना०)* १. रक्षा का भार। रक्षा की जिम्मेवारी। २. रक्षा व्यवस्था। रक्षा का प्रबंध। ३. जिम्मेवारी। भार। ४. जिम्मेवारी का परिणाम। ५. सहन। ६. धीरज। सब्र। ७. शक्ति। ८. गाय-भैंस आदि दुधारू पशु।

सांसरणो—*(क्रि०)* १. रक्षा की जिम्मेवारी लेना। २. जिम्मेवारी का परिणाम भुगतना। ३. सहना। ४. सब्र करना। ५. चलना।

सांसवणो—*(क्रि०)* १ सहन करना। २. प्रतीक्षा करना। ३. व्यर्थ गँवाना।

सांसा—*(न०ब०व०)* १ कठिनाई। तकलीफ। २. तंगी। ३. अभाव। कमी।

सांसा पड़णा—*(मुहा०)* १. ऐसी स्थिति पैदा होना जिससे मित्र, प्रेमी व आत्मीय इत्यादि का मिलना नहीं हो सकना। २. लंबे समय तक जुदाई भुगतने को विवश होना। ३. तकलीफ भुगतना। ४. आर्थिक तंगी होना।

सांसारिक—*(वि०)* संसार संबंधी। संसार का। लौकिक। ऐहिक।

सांसाळू—*(वि०)* संशयवाला।

सांसै—*(अव्य०)* १. विचार में। भ्रम में। २. संशय में। संकल्प-विकल्प में।

सांसो—*(न०)* १. संशय। २. संकल्प-विकल्प। ३. तंगी। ४. कठिनाई।

सांस्कारिक—*(वि०)* संस्कार संबंधी।

सांस्कृतिक—*(वि०)* १. संस्कृति संबंधी। २. संस्कृत भाषा संबंधी।

साँहण—दे० साहण।

सिकणो—*(क्रि०)* १. अग्नि पर सेका जाना। २. ताप प्राप्त करना। तपना। सिकना। ३. दुख देखना।

सिकता—*(ना०)* १. रेत। बालूरेत। सिकत। २. चीनी। शर्करा।

सिकताव—*(वि०)* १. सेक किया जा सके उतना गरम। २. छूआ जा सके या सहन किया जा सके उतना गरम। किसी वस्तु का ताप।

सिकत्तर—*(न०)* किसी संस्था या सभा का मंत्री। सेक्रेटरी।

सिकदार—*(न०)* १. राजकीय मोहर जिसके अधिकार में हो वह अधिकारी। सिक्का लगाने वाला अधिकारी। सिक्कादार। २. कोटवाल।

सिकरणो—*(क्रि०)* १. हुंडी का सिकारा जाना। २. स्वीकृत होना।

सिकराई—*(ना०)* १. हुंडी को स्वीकार करना। हुंडी का सिकारा जाना। २. उल्लिखित मुद्दत पर हुंडी के रुपये भर देना। हुंडी के रुपयों की अदायगी। ३. हुंडी को सिकारने की दलाली. भाव, बटाव या उजरत। बटाव। ४. दलाली के द्वारा हुंडी खरीदने-बेचने की दलाली।

सिकराणो—*(क्रि०)* हुंडी का सिकारा जाना। सिकारना।

सिकरामण—दे० सिकराई।

सिकरावणो—दे० सिकराणो।

सिकरो—*(न०)* एक शिकारी पक्षी। बाज पक्षी। सिखाणो।

सिकल—*(ना०)* शक्ल। शकल। चेहरा।

सिकलात—*(ना०)* १. रजाई। दुलाई। सकलात। २. एक मखमली कपड़ा।

सिकलीगर—*(न०)* १. तलवार, छुरी आदि शस्त्रों पर धार लगाने वाला व्यक्ति। २. लुहार। लोहार।

सिकंदर—*(न०)* यूनान का एक प्रख्यात बादशाह।

सिकार—दे० शिकार।

सिकारणो—दे० सकारणो।

सिकारी—दे० शिकारी।

सिको—*(न०)* भिश्ती। पखाली। सक्का।

सिकोतरी—*(ना०)* १. स्यारी। २. प्रेतनी।

सिकोरो—*(न०)* सकोरा।

सिक्को—*(न०)* १. सिक्का। २. मोहर का ठप्पा। २. भिश्ती। पानी भरने वाला पखाली। कहार। ३. मुसलमान पखाली। सिको।

सिक्को जमाणो—*(मुहा०)* १. रोब जमाना। २. प्रभाव दिखाना। ३. अधिकार करना।

सिख—*(ना०)* शिक्षा। *(न०)* १. शिष्य। २. शिख जाति या संप्रदाय। ३. सिख जाति का व्यक्ति।

सिखर—*(न०)* १. क्षितिज में दिखाई देने वाले बड़े बादल। दे० शिखर।

सिखरण—*(न०)* श्रीखंड।

सिखरी—*(न०)* १. पर्वत। २. वृक्ष। *(वि०)* शिखर वाला।

सिखरबंध—*(वि०)* जिस पर शिखर बना हुआ हो (मंदिर)। शिखर वाला।

सिखंड—*(न०)* मयूर। मोर।

सिखंडी—*(न०)* १. बृहस्पति। २. मोर। ३. द्रुपद का पुत्र। शिखंडी।

सिखा—*(ना०)* १. शिखा। चोटी। २. मोर, मुर्गे आदि के सिर पर का पंख-गुच्छ। कलगी।

सिखाऊ—*(वि०)* १. सीखता हुआ। २. सीखने वाला।

सिखाड़णो—दे० सिखावणो।

सिखाणो—दे० सिखावणो।

सिखाणो-भखाणो—*(क्रि०)* १. बहकाना। भुलावा देना। २. चकमा देना।

सिखामण—*(ना०)* १. नेक सलाह। २. शिक्षा। उपदेश। सीख।

सिखावणो—*(क्रि०)* १. सिखाना। २. उपदेश देना। ३. पढ़ाना। ४. गलत या बुरी सलाह देना। ४. बहकाना।

सिखावळी—*(न०)* १. मोर। २. मुर्गा।

सिखावान—*(ना०)* १. अग्नि। २. दीपक। ३. मोर। ४. मुर्गा। *(वि०)* शिखावाला। चोटी वाला।

सिखी—*(न०)* १. मोर। शिखी। २. मुर्गा। कूंकड़ो। दे० सिखावान।

सिग—*(ना०)* १. दीपक की लौ। २. ढेर।

सिग-चढ़णो—*(मुहा०)* १. सफल होना। २. किसी काम का सफलतापूर्वक हो जाना या पार पड़ जाना। ३. प्रकाशित होना। ४. प्रकाशमान होना।

सिगड़ी—*(ना०)* अंगीठी। बोरसी।

सिगनल—*(न०)* १. रेलगाड़ी को रोकने या जाने का संकेत देने वाला यंत्र। २. संकेत। इसारो।

सिगरत—*(वि०)* कुटुंब सहित। सिगरी।

सिगरत-प्रामणो—*(न०)* १. सकुटुंब निमंत्रित पाहुना। २. बहुत प्यारा पाहुना। ३. मुख्य पाहुना। ४. जमाई। ५. जमाई का एक लोकगीत।

सिगरथ—दे० सिगरत।

सिगरथ-पाँवणो—दे० सिगरत-प्रामणो।

सिगरी—*(वि०)* १. सब। संपूर्ण। २. सपरिवार। सिगरत। (भोजन निमंत्रण संबंधी। यथा—सिगरी नेतो = सपरिवार भोजन का निमंत्रण।

सिगरी नेतो—*(न०)* सपरिवार भोजन का निमंत्रण।

सिगरेट—*(ना०)* एक प्रकार की तमाखू की बीड़ी।

सिगळै—*(अव्य०)* सब ही। *(वि०)* सभी (जगह)।

सिगळो—*(वि०)* सब। तमाम।

सिचाणो—*(न०)* श्येन। बाज पक्षी। सिकरो।

सिजोवणो—*(क्रि०)* पकाना। सिझाना।

सिट—*(ना०)* १. इज्जत। आबरू। २. प्रशंसा। ख्याति। ३. शेखी। डींग। ४. होशियारी। पटुता। सिट्टी। ५. गर्व।

सिट निकळणो—*(मुहा०)* १. गर्व उतरना। २. होशियारी बताने की पोल खुल जाना। ३. शर्मिंदा होना। ४. दब जाना। ५. सकुचाना। ६. बेइज्जत होना।

सिट नहीं संधणो—*(मुहा०)* दे० सिट निकळणो।

सिट-पिट—*(ना०)* १. गुप्त मंत्रणा। कानाफूसी। २. किसी षड्यंत्र संबंधी गुप्त बातचीत। ३. विरुद्ध बातचीत।

सिटळियो—*(वि०)* १. वचन देकर बदल जाने वाला। प्रतिज्ञा करके पलट जाने वाला। २. कहकर नट जाने वाला। ३. अविश्वसनीय। विश्वास करने के अयोग्य।

सिटळो—दे० सिटळियो।

सिटियो—दे० सिट्टो।

सिटी—*(न०)* शहर। नगर।

सिट्टो—*(ना०)* सवा छः का पहाड़ा। सिटियो।

सिट्टो—*(न०)* १. ज्वार, मकई आदि की बाली। सिट्टा। सिटियो। भुट्टा। २. किसी लंबी वस्तु का किनारा या सिरा। चिट्टो।

सिड़—*(ना०)* १. पागल जैसा आचरण। सनक। सिरड़। ३. किंचित उन्माद। झक। ३. आफत। संकट।

सिड़सट—*(न०)* सड़सठ की संख्या। *(वि०)* साठ और सात की संख्या। '६७'.

सिड़सठो—*(न०)* सदी का सड़सठवाँ वर्ष।

सिड़ी—*(न०)* सनकी। झक्की। सिरड़ी।

सिणगार—*(न०)* १. शृंगार। २. आभूषण। ३. पोशाक। ४. शोभा। ५. किसी वस्तु की सजावट। ६. शोभा की वस्तु।

सिणगारणो—*(क्रि०)* १. सुशोभित करना। २. शृंगार करना।

सिणलागर—*(न०)* सिणली (भिरड़ कोट, मारवाड़ ?) का इतिहास प्रसिद्ध तालाब, जहाँ से माँडू के बादशाह महमद बेगड़ा के आदमी तीजणियों को भगा कर ले गये थे। मल्लिनाथजी के पुत्र जगमाल महमद बेगड़ा की लड़की गींदोली के साथ सभी तीजणियों को वापस ले आये थे, जिसके लिये यहाँ कई बार युद्ध हुए थे।

सिणियो—*(न०)* टेढ़ी-मेढ़ी, लंबी-पतली अनेक शाखाओं वाला पत्तों रहित एक क्षुप।

सित—*(वि०)* १. उज्ज्वल। २. सफेद। ३. निर्मल।

सितछद—*(न०)* हंस।

सित-पक्ष—*(न०)* किसी मास का शुक्ल पक्ष।

सितम—*(न०)* जुल्म। क्रूर आचरण। अत्याचार। अनर्थ।

सितमगर—*(वि०)* १. अन्यायी। २. अत्याचारी। ३. दुखदायी।

सितवारण—*(न०)* १. श्वेत हाथी। २. इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

सितसठ—*(वि०)* साठ और सात। *(न०)* सड़सठ की संख्या। '६७'.

सितसठो—दे० सिड़सटो।

सितंतर—*(वि०)* सत्तर और सात। सतत्तर। *(न०)* सतत्तर की संख्या। '७७'.

सितंतरो—*(न०)* सदी का सतत्तरवाँ वर्ष।

सितंबर—*(न०)* १. ईसवी सन का नौवाँ महीना। सेप्टेम्बर। २. श्वेत वस्त्र। श्वेताम्बर।

सिता—*(ना०)* मिसरी। नबात।

सितार—*(ना०)* एक प्रकार का तार वाद्य।

सितारियो—*(न०)* सितार बजाने वाला।

सितारे-हिंद—*(न०)* अंग्रेजों के शासन में भारतीयों को दी जाने वाली सन्मानार्थ एक उपाधि।

सितारो—*(न०)* १. नक्षत्र। तारा। ग्रह। २. भाग्य। नसीब।

सितासित—*(न०)* १. श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम। *(वि०)* श्वेत और श्याम। सफेद और काला। सित और असित।

सितियासियो—*(न०)* सतासिवाँ सम्वत्। सदी का सतासिवाँ वर्ष।

सितियासी—*(वि०)* अस्सी और सात। *(न०)* सितासी की संख्या। '८७'.

सितोदर—*(न०)* कुबेर।

सित्यासी—दे० सितियासी।

सिदज्ज—*(न०)* स्वेदज।

सिद्ध—*(न०)* १. सिद्धि प्राप्त संत या योगी। २. ऋषि। मुनि। ३. अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त किया हुआ

पुरुष । ४. एक देव योनि । *(वि०)* १. साधित । अनुष्ठित । २. उपलब्ध । प्राप्त । ३. सफल । ४. सार्थक । ५. तर्क, प्रमाण इत्यादि से सत्य साबित । ६. प्रमाणित सिद्धांत । ७. शोधित । ८. तपश्चर्या द्वारा ईश्वर तक पहुँचा हुआ । ९. पूर्ण । पूरा ।

सिद्ध आपगा—*(ना०)* गंगा नदी ।

सिद्ध करणो—*(मुहा०)* प्रमाणित करना । दे० सिध करणो ।

सिद्ध क्षेत्र—*(न०)* वह पवित्र स्थान जहाँ भक्ति, योग इत्यादि के करने से जल्दी सिद्धि मिले । २. सिद्ध-महात्मा का स्थान ।

सिद्ध जल—*(न०)* १. मंत्रित जल । २. औटाया हुआ पानी ।

सिद्ध जसनाथ—*(न०)* कतरियासर (बीकानेर) निवासी जसनाथी सम्प्रदाय का प्रवर्तक १६ वीं शती का एक सिद्ध संत ।

सिद्ध-पीठ—दे० सिद्ध क्षेत्र ।

सिद्ध योग—*(न०)* पूर्ण सफलता का योग (ज्योतिष) ।

सिद्ध योगी—*(न०)* १. सिद्ध महात्मा । २. शिव ।

सिद्धरस—*(न०)* पारा ।

सिद्धराज जयसिंह—*(न०)* पाटण (गुजरात) का प्रसिद्ध शासक जिसने सिद्धपुर में इतिहास प्रसिद्ध ११ मंजिल का रुद्रमहालय और पाटण में विशाल और अद्भुत सहस्रालिंग सरोवर बनाये थे ।

सिद्ध विनायक—*(न०)* गणेशजी की एक मूर्ति ।

सिद्धश्री—*(अव्य०)* प्राचीन पत्र लेखन परिपाटी के अनुसार स्थान (ग्राम) नाम के पूर्व लिखा जाने वाला एक विशेषण पद । २. सिद्धि और श्री से सम्पन्न ।

सिद्ध हस्त—*(वि०)* १. काम में कुशल । मंजा हुआ । हथोटी वाली । २. अभ्यस्त ।

सिद्धा—*(ना०)* १. सिद्ध स्त्री । २. सिद्ध की स्त्री । ३. देवांगना ।

सिद्धाई—*(ना०)* १. सिद्धियाँ दिखाने की कला । करामात । चमत्कार । २. तप और भक्ति द्वारा प्राप्त की हुई सिद्धियाँ । ३. सिद्धियाँ प्राप्त किये हुए पुरुषों की शक्ति । ४. योग साधना से प्राप्त दिव्य शक्ति । ५. सफलता । सिद्धपना ।

सिद्धार्थ—*(न०)* गौतम बुद्ध ।

सिद्धासन—*(न०)* योग का एक आसन ।

सिद्धांगना—*(ना०)* १. सिद्ध स्त्री । २. देवांगना ।

सिद्धाँत—*(न०)* १. तर्क-वितर्क पर पूरी तरह प्रमाणित बात । २. विचार और तर्क द्वारा निश्चित मत । पूरी तपास और विचारणा के बाद जो सच्चा प्रमाणित हो गया हो ऐसा निश्चित मत या निर्णय । ३. निश्चित मत जो प्रयोग और अनुभव के आधार पर बना हो । ४. ऋषियों के मान्य उपदेश । ५. उपपत्ति युक्त ग्रंथ ।

सिद्धाँतवादी—*(वि०)* १. सिद्धान्त को मानने वाला । २. सिद्धान्त का समर्थक ।

सिद्धाँती—*(वि०)* १. सिद्धान्त के तत्व को मानने वाला । २. सिद्धान्तवादी ।

सिद्धि—*(ना०)* १. सफलता । २. फल प्राप्ति । ३. योग द्वारा प्राप्त अणिमा-गरिमा आदि अलौकिक शक्ति ।

सिद्धो वर्ण—दे० सिध्धो ।

सिध—*(न०)* १. सिद्ध पुरुष । महात्मा । २. सफल, पूर्ण । दे० सिद्ध । *(क्रि०वि०)* कहाँ । [किसी के कहीं जाते समय अपशकुन तथा अशुभ समझा जाने वाला शब्द 'कठै' प्रश्न रूप में नहीं कहकर उसकी जगह प्रयोग किया जाने वाला यह मंगल रूप प्रश्न शब्द । जैसे—सिध पधारो सा ?] अन्यत्र इसका प्रयोग नहीं । कठै ।

सिध करणो- *(मुहा०)* १. प्रस्थान करना । रवाना होना । २. किसी मंत्र या देवता को साधना या वश में करना । साधना । ३. प्रमाणित करना । सिद्ध करना । ४. कार्य आरम्भ करना । नया काम हाथ में लेना । ५. कोई मांगलिक काम शुरू करना । ६. तैयार करना ।

सिध जाणो—*(मुहा०)* कहाँ जाना । किस स्थान के लिये प्रस्थान करना है । कठै जाओ ।

सिधणो—*(क्रि०)* जाना ।

सिधराज—*(न०)* १. सिद्ध । महात्मा । २. अणहलवाड़ा पाटण के अधिपति जयसिंह का विरुद । ३. सिद्धराज जयसिंह ।

सिध-साधक—*(न०)* १. अपने-अपने बुद्धि-बल और साधनों के उपयोग से मिल-करके काम करने वालों की जोड़ी । २. आपस में मिल करके पाखंड, ढोंग या छल-कपट करके काम बनाने वालों की जोड़ी ।

सिधाई—दे० सिद्धाई ।

सिधाणो—दे० सिधावणो ।

सिधारणो—*(क्रि०)* १. जाना । २. प्रस्थान करना । ३. मृत्यु होना ।

सिधावणो—*(क्रि०)* १. किसी कार्य को सिद्ध करने के लिये जाना । २. प्रस्थान करने का मंगलसूचक पर्याय, रवाना होना, प्रस्थान करना । सिधाणो ।

सिधासण—दे० सिद्धासन ।

सिधू—दे० सारघू ।

सिधेव—*(क्रि०भू०)* चले गये । गये । *(अव्य०)* १. जाना चाहिये । २. सिद्ध या सिद्धों से । ३. सिद्धों की ।

सिध्धाई—दे० सिद्धाई ।

सिध्धो—*(न०)* १. वाणिकी पाठशाला में पढ़ाया जाने वाला एक व्याकरण-पाठ । २. व्याकरण पाठ का अपभ्रंश रूप ।

सिध्धो वरणा—दे० सिध्धो ।

सिनकारणो—*(क्रि०)* इशारा करना ।

सिनकारी—*(ना०)* इशारा । संकेत ।

सिनकारो—*(न०)* इशारा । संकेत ।

सिनान—*(ना०)* स्नान ।

सिनान-पूजा—*(ना०)* प्रातःकालीन धार्मिक कृत्य । स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म ।

सिनान-संध्या—दे० सिनान पूजा ।

सिनान-सूंपाड़ा—*(न० ब० व०)* नहाना-धोना । स्नान ।

सिनानी—*(न०)* १. बिसनोई जाति । २. बिसनोई जाति का मनुष्य । दे० बिस-नोई ।

सिनावड़ी—*(ना०)* एक घास ।

सिनेमा—*(न०)* १. चलचित्र । २. जहाँ चलचित्र प्रदर्शित किये जाते हों, वह स्थल । चलचित्रगृह ।

सिपाई—*(न०)* १. सैनिक । २. पुलिस-विभाग का एक छोटा कर्मचारी । सिपाही ।

सिपाईगिरी—*(ना०)* १. सिपाही का कार्य । २. सिपाही की नौकरी ।

सिपहसालार—*(न०)* सेनापति ।

सिफत—*(ना०)* १. गुण । २. विशेषता ।

सिफारस—*(ना०)* १. किसी के बारे में (किसी के पास) किया जाने वाला हेतुपूर्वक अनुरोध ; भलामण । लागवग ।

सिबी—*(ना०)* १. छवि । तसवीर । छिब । २. शोभा ।

सिमटणो—*(क्रि०)* सिमटना । सिकुड़ना । २. इकट्ठा होना । भिळणो । मिळणो ।

सिमरथ—दे० समर्थ ।

सिमरिव—*(ना०)* मेघविद्युत । बिजली ।

सिमी—*(ना०)* फली । छीमी । शिंबी ।

सिमेंट—*(न०)* ईंट, पत्थर आदि की जोड़ाई, चिनाई व प्लास्तर में प्रयुक्त एक बारीक चूर्ण ।

सिया—*(ना०)* १. सीता । जानकी । २. एक मुसलमान संप्रदाय । शिया ।

सियाड़ो—*(न०)* चिल्लाहट ।

सियापति—*(न०)* श्रीराम । सियावर ।

सियापो—दे० सापो ।

सियार—*(न०)* १. गीदड़ । २. सुराख करने का एक औजार । सियारड़ी ।

सियारड़ी—दे० सियार सं० २.

सियारी—*(ना०)* पीदड़ी । शृगाली ।

सियाळ—*(न०)* सियार । गीदड़ । शृगाल ।

सियाळू—*(वि०)* १. शीतकाल संबंधी । २. शीत ऋतु का ठंडा पवन ।

सियाळू बाजणो—*(मुहा०)* उत्तर दिशा की ओर का शीत पवन चलना ।

सियाळू साख—*(ना०)* रबी की फसल ।

सियाळो—*(न०)* शीतकाल, जाड़े का मौसम ।

सियावर—दे० सियापति ।

सिर—*(न०)* १. मस्तिष्क । सर । उत्तमांग । माथो । २. मुंड । कपाल । खोपड़ी । ३. शिखर । चोटी । ४. सिरा । छेड़ो । *(वि०)* श्रेष्ठ । उत्तम । बढ़िया ।

सिरकणो—दे० सरकणो ।

सिरकत—*(ना०)* शिरकत । साझेदारी । सीर ।

सिरकार—दे० सरकार ।

सिरकारी—दे० सरकारी ।

सिरकारू—दे० सरकारी ।

सिरकावणो—*(क्रि०)* सरकाना । हटाना ।

सिरकी—*(ना०)* सरकंडे की बनी हुई टट्टी ।

सिरकी पासो—*(न०)* रस्सी में लगाई जाने वाली सिरकने वाली गाँठ ।

सिरकी पाहो—दे० सिरकी पासो ।

सिरखो—*(वि०)* समान । एक जैसा ।

सिरगाह—*(न०)* १. सिरचंपी । २. शिरस्त्राण । माथे का लोहे का टोप ।

सिर-गूंथी—*(ना०)* विवाह की एक प्रथा, जिसमें प्रथममिलन के दिन वधू का सिर गूंथने के लिए स्त्रियां गीत गाती हुई, वधू को जनिवासे ले जाती हैं ।

सिरजणहार—*(न०)* सृष्टि की रचना करने वाला । परमेश्वर । सिरजनहार । सृजनकर्त्ता ।

सिरजणहारो—दे० सिरजणहार ।

सिरजणो—*(क्रि०)* १. रचना । बनाना । सिरजना । सर्जना । सरजणो । २. उत्पन्न करना । ३. संचय करना ।

सिरजाणो—*(क्रि०)* सर्जाना । बनवाना । रचवाना । उत्पन्न करवाना ।

सिरजियोड़ो—*(वि०)* सिरजा हुआ । रचा हुआ । सिरजित ।

सिरजोर—*(वि०)* १. उद्दंड । उच्छृंखल । २. बलवान । जबरदस्त । ३. जुल्मी ।

सिरजोरी—*(ना०)* १. उद्दंडता । २. उच्छृंखलता । ३. जबरदस्ती । ४. जुल्म ।

सिरटियो—*(ना०)* अनाज की बाली । बाजरी जुआर आदि का सिट्टा । **पूंख** ।

सिरटो—दे० सिरटियो ।

सिरड़—दे० सिड़ ।

सिरड़ी—दे० सिड़ी ।

सिरताज—*(वि०)* १. शिरोमणि । २. सबसे अच्छा । *(ना०)* १. पति । स्वामी । २. सरदार । ३. शिरोमणि । ४. मुकुट ।

सिरत्राण—*(ना०)* सिर पर पहिनने का सैनिकों का लोहे का टोप ।

सिरनामो—*(ना०)* १. पुस्तक के मुख पृष्ठ पर लिखा नाम । पुस्तक का नाम । २. पत्र पर लिखा जाने वाला पता ठिकाना । **सरनामो । सरनांवो** । ३. निबंध या लेख का नाम । शीर्षक । ४. नाम सूची में सबसे पहले (सबसे ऊपर) लिखा जाने वाला नाम । **सिरे-नाम** ।

सिरपाव—*(ना०)* समस्त अंग के वस्त्र व आभूषण जो राज दरबार से किसी को सम्मान के रूप में दिये जाते हैं । सिरो-पाव । खिलअत ।

सिरपेच—*(ना०)* १. सिर का एक गहना । २. कलगी । ३. तुर्रा ।

सिरपोस—*(ना०)* १. शिरोभूषण । २. पगड़ी । साफा ।

सिरफ—*(अव्य०)* केवल । मात्र । सिर्फ । फगत । बस । इतना ही । *(वि०)* १. खालिस । २. अकेला ।

सिरमंड—*(ना०)* १. केश । २. मुकुट । ३. शिरोभूषण ।

सिर-मुंडाई—*(ना०)* १. सिर के बाल काटने की क्रिया या भाव । २. उक्त का पारिश्रमिक ।

सिर-मूंडणो—*(क्रि०)* १. माथे के बाल काटना । २. ठगना । धोखा देना । **माथो मूंडणो** ।

सिरमोड़—*(ना०)* शिरोमणि । **सिरताज** ।

सिरसो—*(वि०)* १. समान । बराबर । २. जैसा ।

सिरहर—*(ना०)* १. शिरोधर । ताज । मुकुट । २. शिखर । ३. शिरोमणि । *(वि०)* शिरोधार्य । मान्य । **सिरधर** ।

सिरहाणो—*(ना०)* खाट या पलंग का वह भाग, जिस ओर सोते समय सिर रहता है । सिरहाना । **सिराणो** ।

सिरस्तेदार—*(ना०)* १. विभागीय प्रधान अधिकारी । २. मुकदमों की मिसल रखने वाला मुख्य कर्मचारी । सरिश्ते-दार ।

सिरंग—*(ना०)* १. शृंग । शिखर । २. श्रीरंग ।

सिराणो—*(ना०)* सिरहाना ।

सिरामण—*(ना०)* कलेवा । झारो । **सिरा-वण** ।

सिरावड़ो—दे० सळेवड़ो ।

सिरावण—दे० सिरामण ।

सिरावणी—*(ना०)* १. कलेवा । २. मृतक को ग्यारह दिन तक दिया जाने वाला क्षीर-पिंड ।

सिरांथियो—दे० सिरहाणो ।

सिरी—*(ना०)* श्री । लक्ष्मी । *(सर्व०)* आप ।

सिरीरंग—दे० श्रीरंग ।

सिरीसो—*(वि०)* समान । बराबर ।

सिरू—*(ना०)* वृद्धि । बरकत ।

सिरे—*(वि०)* १. श्रेष्ठ । २. ऊँचा । ३. शीर्ष । सर्वोपरि । ४. प्रथम । पहला ।

सिरेकार—*(वि०)* १. अच्छा । भला । २. शुभ । मांगलिक । दे० श्रीकार ।

सिरे चढ़णो—*(मुहा०)* १. सिद्ध होना । २. घटित होना । ३. पार जाना । ४. संपूर्ण होना । ५. पेटे की रकमों का सिरे में टोटल लगना (बहीखाता) ।

सिरे दरबार—*(न०)* राजा या बादशाह का खास दरबार ।

सिरे-नाम—*(वि०)* १. प्रसिद्ध । मशहूर । २. मुख्य । प्रधान । अग्रणी । दे० सिरनामो ।

सिरे-नाँव—दे० सिरनामो ।

सिरे-मंदिर—*(न०)* जालोर के पास एक प्रसिद्ध और ऐतिहासिक स्थान जो नाथ संन्यासियों का निवास स्थान था ।

सिरो—*(न०)* १. धान की बाल । सिट्टो । २. किनारा । सिरा । छेड़ो । ३. किसी वस्तु के ऊपर का या किनारे का भाग । ४. ऊँचापन । बड़प्पन । ५. श्रेष्ठता । ६. सर्वोपरि नाम । ७. वह व्यक्ति, जिसका समाज में सर्वोपरि नामोल्लेख होता हो । ८. सिरा । मथारो । ९. भाला । सांग । *(वि०)* १. सर्वोपरि । २. सर्वोपरि नाम वाला ।

सिरोपा—दे० सिरोपाव ।

सिरोपाव—*(न०)* १. बादशाह या राजा की ओर से सम्मान में मिलने वाली सिर से पैर तक की पूरी पोशाक । २. सिरोपाव मिलने का सम्मान ।

सिरोमणि—*(वि०)* सर्वोच्च । शिरोमणि । *(न०)* सिर पर धारण किया जाने वाला रत्न ।

सिरोमणिराय—*(न०)* श्रीकृष्ण ।

सिरोही—*(न०)* १. राजस्थान का एक नगर । २. राजस्थान की एक भूतपूर्व रियासत । ३. सिरोही में बनी तलवार ।

सिल—दे० सिला ।

सिलक—*(ना०)* पोतेबाकी । बैलेंस । *(न०)* रेशम ।

सिळकणो—*(क्रि०)* (बादल में) बिजली चमकना ।

सिळगणो—*(क्रि०)* १. आग लगना । २. ज्वाला उठना । ३. अत्यधिक ताप लगना । ४. अत्यन्त क्रोध करना । ५. झगड़ा होना ।

सिळगाणो—दे० सिळगावणो ।

सिळगावणो—*(क्रि०)* १. आग लगाना । २. झगड़ा लगाना । ३. गुस्सा दिलाना ।

सिलसिलो—*(न०)* १. क्रम । परम्परा । सिलसिला । २. वंशानुक्रम । ३. पंक्ति । कतार । ४. तरतीब । सलीका ।

सिलह—*(न०)* १. कवच । २. शस्त्र । ३. कटारी ।

सिलह-खानो—*(न०)* शस्त्रागार । सिलेगार ।

सिलह-पोस—*(न०)* कवचधारी सैनिक ।

सिला—*(ना०)* १. शिला । प्रस्तर खंड । २. पत्थर की पट्टी । ३. मसाले पीसने की शिला ।

सिळाउ—*(ना०)* १. बिजली । २. बिजली की चमक ।

सिलाजीत—*(न०)* शिलाजीत ।

सिलाटण—*(ना०)* १. सिलावट जाति की स्त्री। २. सिलावट की पत्नी।

सिलाटणो—*(क्रि०)* पत्थर को घड़ना। शिला को टाँचना।

सिलाड़ी—*(ना०)* शिला। दे० सिला। सं० ३.

सिलालेख—*(न०)* पत्थर पर खुदा हुआ लेख। शिला-लेख।

सिला-लोढी—*(ना०)* भंग, मसाला आदि पीसने का सिलबट्टा। सिलौटा।

सिळाव—*(ना०)* १. प्रकाश. रेखा। २. विद्युत प्रकाश।

सिलावट—दे० सिलावटो। दे० सिलाई।

सिलावटो—*(न०)* पत्थर का काम करने वाला। शिलाकार। सिलावट।

सिळावणो—*(क्रि०)* शीतल करना।

सिळासणो—*(क्रि०)* ग्रहण करना।

सिलासार—*(न०)* १. लोहा। २. शिलाजीत।

सिली—दे० सिल्ली।

सिळी—*(ना०)* १. शलाका। २. नाक का एक आभूषण। फूली। लूंग। तणखो। ३. तिनका। तृण। तिणको। ४. फांस। फां। ठुळी।

सिळीमुख—*(न०)* १. भौंरा। २. बाण। *(वि०)* मूर्ख।

सिलूप—*(न०)* नारियल।

सिलेगार—दे० सिलहखानो।

सिलेट—*(ना०)* पाठशाला में बालकों के लिखने की एक पत्थर की पट्टी। स्लेट। पाटी।

सिलेट-पैण—*(ना०)* १. स्लेट पर लिखने की खड़िया मिट्टी की पैन। २. स्लेट और पैन।

सिलेदार—*(न०)* १. घुड़सवार सिपाही। २. शस्त्रसज्ज योद्धा।

सिलोक—*(न०)* १. श्लोक। २. यश। कीर्त्ति।

सिलोको—*(न०)* विवाह में बरात चढ़ने के पूर्व बंदोळी के जुलूस के रूप में दुल्हे और दुल्हिन का मंदिरों में जाना और वहां पर गाई जाने वाली देवी-देवताओं की प्रार्थना।

सिलोचय—*(न०)* पर्वत। सिलोच्च।

सिल्ली—*(ना०)* उस्तरे की धार तेज करने की पत्थर की संकड़ी छोटी पट्टी।

सिव—*(न०)* शिव। महादेव।

सिवड़ाई—दे० सिवाई।

सिवड़ावणो—दे० सिवावणो।

सिवढाण—*(न०)* १. मोक्ष। २. श्मशान। श्मशान भूमि। ३. सिद्ध पुरुष और फकीरों के रहने की जगह।

सिव-मारग—*(न०)* १. देश, धर्म और जाति के लिए किया गया बलिदान। शिवमार्ग। २. वीरगति। ३. मोक्ष। ४. मृत्यु।

सिवरात—*(ना०)* शिवरात्रि।

सिवा—*(ना०)* १. हर्रे। २. पार्वती। शिवा। *(अव्य०)* अतिरिक्त। सिवाय।

सिवाई—*(ना०)* १. सिलाई। सीने का काम। २. सीने की मजदूरी। सिलाई।

सिवाड़णो—दे० सिवावणो।

सिवाणची—*(ना०)* १. सिवाणा नगर (मारवाड़) के लूणी नदी तरफ के १४० गांवों का प्रदेश, जो 'सातवीसी सिवाणची' नाम से भी प्रसिद्ध है। सिवाणची पट्टी। २. इन गांवों की विभिन्न जातियों की इकाई या संगठन।

सिवाणची का सामाजिक संगठन। ३. सिवाणा नगर से संबंधित। सिवाणे का।

सिवाणो—*(न०)* १. मारवाड़ का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर। २. दे० सिवावणो।

सिवाय—*(अव्य०)* अतिरिक्त। बिना। रहित। सिवा।

सिवालो—*(न०)* शिवालय। शिव मंदिर।

सिवावणो—*(क्रि०)* सिलवाना। सिलाई करवाना।

सिवियाणो—दे० सिवाणो सं० १.

सिविर—*(न०)* १. तंबू। २. शिविर।

सिस—*(न०)* १. शशि। चंद्रमा। २. शिष्य। चेलो।

सिसकारणो—*(क्रि०)* शीत्कार करना।

सिसकारी—दे० सिसकारो।

सिसकारो—*(न०)* १. निःश्वास। सिसकार। २. मुँह से किया जाने वाला 'सिस' या सिटी जैसा शब्द। सिसकारी।

सिसगोती—*(न०)* मोती।

सिसपाळ—*(न०)* शिशुपाल। *(वि०)* शिशु का पालन करने वाला।

सिसप्रिया—*(ना०)* रात। शशिप्रिया।

सिसमत्थ—*(न०)* महादेव।

सिसहर—*(न०)* चंद्रमा। शशिहर।

सिसिर—*(ना०)* शिशिर ऋतु।

सिसुता—*(ना०)* १. शिशु अवस्था। शिशुता। *(वि०)* शिशु संबंधी। शिशुपना।

सिसुपाळ—*(न०)* चंदेरी का राजा, शिशुपाल।

सिसुपाळो—दे० सिसुपाळ।

सिसुमार—*(न०)* एक जल प्राणी। शिशुमार।

सिसोदियो—*(न०)* सीसोदा गांव से संबंधित मेवाड़ के गहलोत राजपूतों का एक नाम। सिसोदो।

सिसोदो—दे० सिसोदिया।

सिस्ट—*(ना०)* १. सृष्टि। संसार। २. सभ्य। शिष्ट।

सिस्टाचार—दे० शिष्टाचार।

सिस्टी—*(ना०)* संसार। सृष्टि।

सिहर—*(न०)* १. हाथी। २. शिखर। शृंग। ३. मेघ-शिखर।

सिहंड—*(न०)* मोर। शिखंडी।

सिंआर—*(ना०)* लकड़ी आदि में छेद करने का एक औजार। छोटा बरमा।

सिंआरड़ी—दे० सिंआर।

सिंगण—*(न०)* धनुष।

सिंगळ—दे० सिंगनल। *(वि०)* अकेला।

सिंगार—*(न०)* शृंगार। सिणगार।

सिंगाळ—*(वि०)* १. वीर। बहादुर। २. श्रेष्ठ। उत्तम।

सिंघ—*(न०)* सिंह। सीह।

सिंघण—*(ना०)* सिंहनी। वाघण। दे० सेडो सं. ४.

सिंघणी—*(ना०)* १. सिंह की मादा। सिंहनी। २. सिंहनी के समान शक्तिशाली स्त्री। वीरांगना।

सिंघल—*(न०)* सिंहल। लंका। श्रीलंका। लंका टापू।

सिंघल-दीप—दे० सिंघल।

सिंघळी—*(न०)* हाथी।

सिंघ-वाहणी—*(ना०)* १. देवी। सिंहवाहिनी। सिंहवाहिनी देवी। २. पार्वती। ३. दुर्गा।

सिंघाड़ो—*(न०)* चार या पांच (तेरापंथी) जैन साधु या साध्वियों का साथ में रह कर विहरण करने वाला समुदाय।

सिंघार—*(न०)* नाश । संहार ।
सिंघासण—दे० सिंहासन ।
सिंघारणो—*(क्रि०)* संहार करना । नाश करना ।
सिंघाळो—*(वि०)* वीर । बहादुर ।
सिंघोड़ो—*(न०)* पानी में होने वाली एक लता का फल । सिंघाड़ा ।
सिंच—*(न०)* १. जिसके द्वारा शरीर का सिंचन होता हो । सिर । २. मुँह । मुख ।
सिंज्या—*(ना०)* साँझ । संध्या ।
सिंझ्या—*(ना०)* साँझ । संध्या ।
सिंडीकेट—*(ना०)* यूनिवर्सिटी की कार्य-वाहक समिति ।
सिंतर—*(वि०)* साठ और दस । *(न०)* सत्तर की संख्या । '७०'.
सिंतरसौ—*(न०)* पहाड़े में बोली जाने वाली '१७०' की संख्या ।
सिंतरो—*(न०)* सदी का सत्तरवाँ वर्ष ।
सिंदन—*(न०)* स्यंदन रथ ।
सिंदूर—*(न०)* ईंगुर (पारा, शीशा और गंधक का मिश्रण) से बना एक मांगलिक चूर्ण ।
सिंदूरी—*(ना०)* अफवाह । २. कुख्याति । *(वि०)* १. सिंदूर रंग की । २. सिंदूर संबंधी ।
सिंध—*(न०)* सिंध प्रदेश । भारत का सिंधु प्रान्त जो अब पाकिस्तान में है ।
सिंधण—*(ना०)* १. सिंध प्रदेश की स्त्री । २. सिंधी की स्त्री । *(वि०)* १. सिंध देश की । २. सिंध देश से संबंधित ।
सिंधव—*(न०)* १. घोड़ा । सैंधव । २. सैंधव नमक ।
सिंधो—*(वि०)* १. सिंध प्रांत का रहने वाला । २. सिंध से संबंधित । सिंध का । *(ना०)* सिंधी भाषा ।
सिंधु—*(न०)* १. समुद्र । २. भारत की पश्चिम वाहिनी प्रसिद्ध महानदी । **मोठो महराण** ।
सिंधु-कुल्या—*(ना०)* नदी । सरिता ।
सिंधु-जात—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।
सिंधुभव—*(न०)* १. लक्ष्मी । २. चंद्रमा । ३. शंख । ४. सीप । शुक्ति ।
सिंधुर—*(न०)* हाथी ।
सिंधुव—*(न०)* सिंधु । समुद्र ।
सिंधु-सुता—*(ना०)* लक्ष्मी । सिंधुजा । कमला । **लिछमी** ।
सिंधु-सुवण—*(न०)* चंद्रमा । शशांक । एणांक । शशि ।
सिंधू—*(न०)* १. युद्ध का ढोल । २. युद्ध का ढोल बजाना । ३. एक राग जो युद्ध के समय गाई जाती है ।
सिंधू-राग—*(ना०)* युद्ध को प्रोत्साहित करने वाली रागिनी । **सिंधूड़ो** ।
सिंबा—*(ना०)* फली । छीमी ।
सिंबी—*(ना०)* फली । **सिंबा** ।
सिंयाळ—*(न०)* सियार । **स्यार** । गीदड़ ।
सिंयाळणी—दे० सियाळी । **स्यारी** ।
सिंयाळियो—दे० सियाळ ।
सिंयाळी—*(ना०)* सियार की मादा । सियारी । **स्यारी** ।
सिंवरणो—दे० सिमटणो ।
सिंवरणी—*(ना०)* जपमाला । **सुमिरणी** ।
सिंवरणो—*(क्रि०)* सुमिरण करना । **सुमरणो** ।
सिंह—दे० सिंध ।
सिंहणी—*(ना०)* सिंहनी । सिंह की मादा ।
सिंहल—*(ना०)* लंका ।

सिंहल दीप—दे० सिंहल ।

सिंह संवत—*(न०)* वि० सं० ११७० में सोरठ के प्रतापी राजा सिंह द्वारा प्रवर्तित संवत । (सिंह ने संवत को चैत्र वदी १ से चलाया था इसलिये सोरठ में भी उस समय पौर्णमासिक मास प्रवर्तमान हो गया था) ।

सिंहासन—*(न०)* १. देव, आचार्य, राजा आदि के बैठने का आसन । २. सिंह की आकृति वाला ऊँचा आसन ।

सी—*(न०)* १. सिंह । २. ठंड । शीत । ३. एक प्रत्यय जो पुरुष नाम के अन्त में 'सिंह' शब्द के संक्षिप्त या अपभ्रंश रूप में लगता है । जैसे—नैणसी, प्रतापसी । *(ना०)* ठंड के कारण सी सी की आवाज । *(वि०)* जैसी । समान । सदृश ।

सी. आई. डी.—*(ना०)* खुफिया पुलिस विभाग । 'क्रिमिनल इन्वैस्टिगेशन डिपार्टमेंट' का संक्षिप्त रूप ।

सीओ-ताव—*(न०)* ठंड लग कर के आने वाला ज्वर । शीतज्वर । मेलेरिया । ठाडोताव ।

सीक—*(ना०)* १. नीम, पीपल आदि वृक्षों की वह डंडी जिसमें पत्ते लगते हैं । २. तीली । ३. जंगल का एक फल । ४. फरेरी ।

सीकड़—*(वि०)* १. वीर । बहादुर । २. सम्पन्न । ३. प्रतिष्ठित । ४. दृढ़ । मजबूत । *(ना०)* सांकल । जंजीर । सिकड़ी ।

सीकर—*(न०)* १. बिंदु । २. जलकण । ३. राजस्थान का एक नगर ।

सीकी—*(ना०)* १. किसी आभूषण का सांकलनुमा भाग । २. सांकल ।

सीको—दे० छींको ।

सीकोतरी—दे० शिकोतरी ।

सीख—*(ना०)* १. आज्ञा । इजाजत । छुट्टी । २. उपदेश । शिक्षा । ३. प्रस्थान करने की आज्ञा । ४. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर दी जाने वाली भेंट । ५. विदाई के अवसर पर दी जाने वाली भेंट । ६. सजा । दंड ।

सीख करणो—*(क्रि०)* १. रवाना होने की आज्ञा माँगना । २. रवाना होना ।

सीखणो—*(क्रि०)* १. सीखना । २. पढ़ना ।

सीखतोड़ो—*(वि०)* १. सीखने वाला । २. सीखता हुआ ।

सीख देणो—*(मुहा०)* १. शिक्षा देना । उपदेश देना । २. समझाना । ३. जाने की आज्ञा देना । ४. विदाई के समय भेंट देना । ५. विवाहोपरांत बारात को विदा देना । ६. कमीण-कारू इत्यादि को नेग चुकाना । ७. बहीवंचा भाट को अपने पुरखाओं की वंशावली पढ़ने का नेग चुकाना ।

सीख-मत—*(ना०)* १. उपदेश । शिक्षा । २. दंड । ३. सजा ।

सीख-लेणी—*(मुहा०)* १. जाने की आज्ञा लेना । २. उपदेश लेना ।

सीख-लेणो—*(मुहा०)* १. उपदेश ग्रहण करना । २. जाने की इजाजत लेना ।

सीखाँ—*(ना०)* बरात को बिदाई देने की तैयारियाँ । वे रीति-रस्म जो कन्या को बरात के साथ विदा करने के समय सम्पन्न की जाती हैं । २. बरात को दी जाने वाली विदाई ।

सीखाँ-देणी—*(मुहा०)* बरात को दहेज आदि देकर रवाना करना ।

सीखां-लेणी *(मुहा०)* बारातियों का बारात को रवाना करने की कन्यापक्ष से सीख माँगना। सीख प्राप्त करना।

सीगो—*(न०)* १. तरीका। २. विभाग। सीगा।

सीचाणो—*(न०)* बाज पक्षी। श्येन।

सीजणो—*दे०* सीझणो।

सीझणो—*(क्रि०)* १. पकना। किसी खाद्य पदार्थ का अग्नि की आँच से पक जाना। २. संताप होना। ३. संताप करना। ४. सिद्ध होना।

सीट—*(ना०)* १. बैठक। २. बैठने की जगह।

सीटी—*(ना०)* १. ओठों या किसी साधन विशेष में फूँक मारने से उत्पन्न आवाज। सीसोटी। पीपी। २. उक्त उपकरण। व्हिसल।

सीठ—*(वि०)* शिष्ट। सभ्य। *(ना०)* सृष्टि।

सीठचार—*(न०)* १. शिष्टाचार। २. अशिष्टाचार।

सीठणा—*(न०ब०व०)* स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले अश्लील गायन। विवाहादि के गाली-गायन। सीठणा।

सीडी—*(ना०)* अरथी। रथी। जनाजा। डोली। रामडोली। सीडो।

सीढी—*(ना०)* १. अरथी। ठाठडी। २. मकानादि में ऊपर चढ़ने या नीचे उतरने के लिये बना पायरियों का क्रम। नीसरणी।

सीढी काढियो—*(अव्य०)* एक गाली (मरने की)।

सीढी काढ्यो—*दे०* सीढी काढियो।

सीणकी—*दे०* सीणी।

सीणको—*दे०* सीणो। *(वि०)*

सीणी—*(वि०)* १. सफेद और काले बालों वाली (गाय)। *(ना०)* २. काले रंग की गाय। सीणकी। सोणी।

सीणो—*(वि०)* १. काले रंग का (बैल या सांड)। २. काले और सफेद बालों वाला (बैल)। *(न०)* वह बैल जिसका रंग कालापन लिये सफेद हो। *(क्रि०)* सीना (कपड़ा, चमड़ा आदि)। सीवणो।

सीत—*(वि०)* शीत। ठंडा। *(न०)* १. ठंड। शीत। २. शीतलता। ३. सीता। जानकी।

सीत अंसु—*(न०)* चंद्रमा। शीतांशु।

सीत-गंध—*(न०)* चंदन।

सीतपत—*(न०)* सीतापति। श्रीरामचंद्र।

सीत-मीत—*(अव्य०)* बेकार। फालतू। *(वि०)* मुफ्त का।

सीत-रूंख—*(न०)* चंदन वृक्ष। मलयागिरी श्रीखंड।

सीतळ—*(वि०)* शीतल। ठंडा। *(ना०)* शीतला।

सीतळता—*(ना०)* शीतल होने का भाव या अवस्था। ठंडक।

सीतळ-पुहण—*(न०)* शीतला का वाहन गदहा। गधो।

सीतळ-रूंख—*(न०)* चंदन वृक्ष। मलय-तरु।

सीतळा—*(न०)* १. शीतला देवी। २. चेचक रोग। माता।

सीतळावाह—*(न०)* गदहा। खर। गधो।

सीतळा-वाहण—*(न०)* गदहा। खरो।

सीतळा-सातम—*(ना०)* होली के सात दिन बाद पड़ने वाला शीतला सप्तमी का त्योहार। शीतला सप्तमी।

सीतहर—*(न०)* १. सूर्य । २. रावण ।

सीतंसु—*(न०)* १. चंद्रमा । शीतांशु । २. कपूर ।

सीता—*(न०)* १. जानकी । जनक की पुत्री । २. हल की नोक ।

सीतापति—*(न०)* श्रीरामचंद्र ।

सीताफळ—*(न०)* १. एक फल । शरीफा । २. कुम्हड़ा ।

सीतारवण—*(न०)* सीतापति । सीतारमण ।

सीताराम—*(न०ब०व०)* १. सीता और राम । *(अव्य०)* भिक्षा माँगते समय साधु द्वारा उच्चारण किया जाने वाला शब्द ।

सीदड़ो—*(न०)* १. तेल भरने का ऊँट के चमड़े का बना हुआ पात्र । २. बुद्धू, ऊँट । रड़बो ।

सीदवो—*(न०)* गाड़ी को ऊँची उठाये रखने के लिये पहिये की जगह (जब पहिये को धुरी में से निकालते हैं) रखने का एक उपकरण । जैक ।

सीध—*(ना०)* १. सीधापना । सरलता । २. सीधापन । अवक्रता ।

सीधर—*(न०)* श्रीधर । लक्ष्मीनाथ । विष्णु ।

सीधो—*(वि०)* १. सरल । आसान । २. सीधा । अवक्र । ३. सीधा । भोला । *(न०)* १. भोजन बनाने के लिये दिया जाने वाला आटा दाल आदि सूखा सामान । २. ब्राह्मण या साधु को दान में दिया जाने वाला आटादाल आदि सूखा सामान । ३. भोजन की सूखी सामग्री । दे० सिध्धो ।

सीधो देणो—*(मुहा०)* १. साधु, ब्राह्मण आदि को भोजन बनाने के लिये आटा, दाल, घी इत्यादि देना । २. हानि पहुँचाना ।

सीधोरो—*(न०)* १. बारात के लौटने के समय रास्ते में नास्ते के लिये कन्या के माता-पिता की ओर से दी जाने वाली भोजन सामग्री (पूरियाँ और करबा आदि) ।

सीधो सणाक—*(अव्य०)* बिलकुल सीधा । **सांव सीधो** ।

सीधो-सादो—*(वि०)* १. सरल । सुगम । २. अति सुगम । बिलकुल सरल । ३. जिसमें तड़कभड़क न हो । ४. भोला-भोला ।

सीधो-सीध—*(वि०)* बिलकुल सीधा ।

सीन—*(न०)* १. दृश्य । नाटक का दृश्य । २. यवनिका ।

सीनो—*(न०)* छाती । सीना । वक्षस्थल ।

सीप—*(ना०)* शुक्ति ।

सीपसुत—*(न०)* मोती ।

सीबी—*(ना०)* छबि । तसबीर ।

सीबी-साँकळ—*(ना०)* एक आभूषण ।

सीम—*(ना०)* १. सीमा । **सींव** । २. जंगल । **वन** ।

सीमळो—*(न०)* १. एक बरतन । २. शमी-वृक्ष । **खेजड़ी** । **जाँट** । ३. सेमल वृक्ष ।

सीमंग—*(न०)* चंद्रमा ।

सीमंत—*(न०)* १. स्त्रियों के सिर की मांग । २. पहला गर्भ । **अधरणी** ।

सीमंतिनी—*(ना०)* १. स्त्री । २. सौभाग्यवती स्त्री । ३. वह स्त्री जिसका सीमंत संस्कार हुआ हो या होने वाला है ।

सीमंतोन्नयन—*(न०)* १. गर्भवती स्त्री का चौथे, छठे या आठवें मास का एक संस्कार । २. माँग भरने का संस्कार ।

सीमा—*(ना०)* १. हद । २. सरहद । ३. मर्यादा ।

सीमाड़ो—*(न०)* १. सीमा-चिन्ह । **सेढो** । २. सीमा । हद । ३. अन्त । आखिर । **छेह** ।

सीयळ—*(वि०)* १. शीतल । ठंडा । *(न०)* शीलव्रत । ब्रह्मचर्य ।

सीयळी—*(वि०)* १. शीलव्रत वाली । २. अशक्त । ३. सुस्त । ४. शीतल । ठंडी ।

सीयळो—*(वि०)* १. सुस्त । धीमा । २. ठंडा । शीतल । ३. कायर । ४. अशक्त । असमर्थ ।

सीया—दे० सीता ।

सीयो—*(न०)* सीसा ।

सीर—*(न०)* १. भाग । हिस्सा । **साझो** । २. भाग्य । ३. जमीन के अन्दर बहने वाली पानी की धारा । **सेजो** । ४. आमदनी का नित्य साधन । *(वि०)* मीठा ।

सीरख—*(न०)* १. मस्तिष्क । शीर्ष । **माथो** । २. सूर्य । **सूरज** । *(ना०)* १. शीतरक्षक । २. बिना मगजी की, रजाई से अधिक रूई भरी हुई छपे हुए मोटे वस्त्र की शीत ऋतु में ओढने की लंबी खोळ ।

सीरखो—*(न०)* शीत या शीत वायु से रक्षा का स्थान या साधन । **सी-रखो** । दे० सीरख । दे० सरीखो ।

सीरण—*(न०)* यम ।

सीरणी—*(ना०)* शीरनी । मिठाई । सीरनी ।

सीरप—दे० सीरपो ।

सीरपण—दे० सीरपो ।

सीरपणो—दे० सीरपो ।

सीरपाण—*(न०)* बलिभद्र ।

सीरपो—*(न०)* १. भाग । हिस्सा । **सीर** । **लेणियो** । २. सीर होने या सीरपने का भाव । ३. पूर्वजन्म का ऋणानुबंध ।

सीरवियो—दे० सीरवी ।

सीरवी—*(न०)* १. राजस्थान की एक कृषक जाति । २. भागीदार व्यक्ति । ३. मिट्टी की परीक्षा द्वारा यह बताने वाला व्यक्ति कि कुँआ खोदने की जगह पर खारा या मीठा पानी निकलेगा । ४. भूमि परीक्षा द्वारा जमीन के नीचे के पानी की परीक्षा करने वाला विशेषज्ञ ।

सीरसक—*(न०)* १. लोहे का टोप । २. शीर्षक ।

सीराणो—*(क्रि०)* भोजन करना । **जीमणो** ।

सीराबोड़ी—दे० सीरावड़ी ।

सीरावड़ी—*(ना०)* ज्वार के आटे को छाछ में औटाने से बनी राब को पतली परत के रूप में सालड़ी पर फैला और सुखा कर बनाया गया एक तीवण । इसे प्रायः शीत ऋतु में बनाया जाता है, इसलिये इसे सी-राबोड़ी भी कहते हैं ।

सीरावण—दे० सिरावण ।

सीरावणो—*(क्रि०)* भोजन करना । **जीमणो** । **सीराणो** ।

सीरी—*(वि०)* १. सहायक । २. भागीदार । हिस्सादार ।

सीरो—*(न०)* हलुवा । सीरा ।

सीरोळियो—*(न०)* भागीदार । हिस्सेदार । **सीरवाळो** ।

सीरोळी—*(अव्य०)* भागीदारी में । हिस्सेदारी में ।

सीरोळो—*(न०)* भागीदारी । *(अव्य०* १. भागीदारी में । २. भागीदारी का ।

सील—*(ना०)* १. गाय की कामेच्छा। २. मुहर, छाप या मुद्रा। ३. एक बड़ी मछली। ४. दीवाल आदि में लगने वाली पानी की नमी। सेज।

सीळ—*(ना०)* १. ठंडक। २. शीतला देवी। ३. ब्रह्मचर्य। शील। ४. ठंड। सर्दी।

सील-कौल—*(न०)* १. परस्पर की गई प्रतिज्ञा की लिखावट। २. दुतरफी प्रतिज्ञा। ३. प्रतिज्ञा। कौल।

सीलणो—*(क्रि०)* १. नुकसान या हरजाना भरना। २. कर्जा चुकाना। ३. किसी के कर्जे का उत्तरदायित्व लेना और चुकाना। *(न०)* ऋण।

सीलवाड—दे० रोहाड़।

सीळव्रत—*(न०)* ब्रह्मचर्यव्रत। शीलव्रत।

सीळसातम—दे० सीतळा सातम।

सीळाई—*(ना०)* १. ठंडक। ठंडापना। २. ठंड। सर्दी।

सीलाड़णो—दे० सीलावणो।

सीलाणो—दे० सीलावणो।

सीलावणो—*(क्रि०)* हानि का एवजाना प्राप्त करना। २. हरजाना वसूल करना।

सीळी—*(वि०)* १. ठंडी। शीतल। २. नमी वाली। जिसमें कुछ गीलापन रह गया है। दे० सीणी।

सीळूँडो—*(न०)* शीतला का त्यौहार और उस दिन खाया जाने वाला ठंडा और बासी भोजन। बासेड़ा।

सीळो—*(वि०)* १. ठंडा। २. सुस्त। आलसी। ३. निकम्मा। ४. जिसमें कुछ नमी रह गई हो। नमीवाला (कपड़ा)। दे० सीणो सं० १, २.

सीळो-पेट—*(न०)* १. पुत्रोत्पत्ति। पुत्र-जन्म। २. पुत्र उत्पन्न होने का आशीर्वाद। ३. अखंड सौभाग्य और पुत्रवान होने की आशिष।

सीव—*(न०)* पुत्र। हीव।

सीवणी—*(ना०)* सूई। सूची।

सीवणो—*(क्रि०)* सीना। सिलाई करना। टाँका मारना।

सीस—*(न०)* मस्तक। माथो। सीश।

सीसथंभ—*(ना०)* गरदन। गाबड़।

सीसफूल—*(न०)* १. स्त्रियों का एक सिरो-भूषण। २. रखड़ी। बोर।

सीसम—*(न०)* शीशम का वृक्ष और उसकी लकड़ी।

सीस-महल—*(न०)* शीशमहल।

सीसवद—दे० सीसोदिया।

सीसा-पैण—*(ना०)* पेंसिल। लीड पेंसिल।

सीसी—*(ना०)* काँच की छोटी बोतल। शीशी।

सीसो—*(न०)* १. रांगा। २. काँच की बड़ी बोतल। बोतल।

सीसोटी—*(ना०)* सीटी। पीपी।

सीसोद—दे० सीसोदिया।

सीसोदा—दे० सीसोदिया।

सीसोदिया—*(न०)* मेवाड़ के गहलोत वंश के क्षत्रियों का एक नाम। सीसोदा गाँव से संबंधित उक्त नाम।

सीह—*(न०)* सिंह।

सीहगोस—*(ना०)* एक पशु। स्याहगोश पशु।

सीहण—*(ना०)* सिंह की मादा। सिंहनी।

सीहणी—*(ना०)* सिंहनी। शेरनी।

सीह-लंकणी—दे० सीह लंकी।

सीहलंकी—*(वि०)* सिंह के समान पतली कमर वाली।

सीह-विक्रमो—*(न०)* १. एक जाति का श्रेष्ठ घोड़ा। २. घोड़ा। ३. एक छंद। *(वि०)* सिंह के समान शक्तिशाली।

सीहासण—*(न०)* सिंहासन।

सींक—दे० सीक।

सींकणो—*(क्रि०)* हवा का जोर देकर नाक से रेंट का बाहर निकालना। नाक साफ करना। रेंट निकालना। **सेडो काढणो**।

सींकी—*(ना०)* जड़ाऊ आभूषणों का लंबोतरा खाना जिसमें रत्न जड़ा जाता है।

सींको—*(न०)* छींका।

सींग—*(न०)* १. बीच में से फटे खुरों वाले पशुओं के सिर में उगने वाले दो कठोर, लंबे और नुकीले अवयव। विषाण। २. तुरही। ३. सींग का बना फूंक वाद्य। सींगी।

सींगड़मल—*(न०)* वीर पुरुष। *(वि०)* वीर। बहादुर।

सींगड़ियो—*(न०)* १. युद्ध में हरोल में रहने वाला वीर सैनिक। २. सींग। ३. तीक्ष्ण नोक वाला एक शस्त्र। *(वि०)* सींगवाला।

सींगड़ी—*(ना०)* १. शरीर में से खून खींच कर निकालने का नली जैसा एक छोटा सींग। २. हरिण के सींग का एक फूंकवाद्य। सींग। सींगी।

सींगड़ी देणी—*(क्रि०)* सींगड़ी द्वारा विकृत खून खींच कर निकालना।

सींगडी लगाणी—दे० सींगड़ी देणी।

सींगड़ी वाळो—*(न०)* १. सींगड़ी लगाने वाला। २. एक अस्पृश्य जाति का व्यक्ति।

सींगड़ो—दे० सींग सं० १.

सींगळी—*(ना०)* गाय (संकेत शब्द)। *(वि०)* सुन्दर सींगों वाली।

सींगाळ—*(न०)* बैल। बळद।

सींगाळी—*(ना०)* गाय। *(वि०)* सींगों वाली।

सींगाळो—*(न०)* १. सींगोंवाला पशु वर्ग—गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि। २. बैल। बळद। *(वि०)* १. उच्चाशय। २. वीर श्रेष्ठ। ३. सींगों वाला।

सींगी—*(ना०)* १. हरिण के सींग का फूंक से बजाने का एक वाद्य। २. योगियों के कंठ में धारण की जाने वाली माला में सींग का बना एक विशेष चिह्न।

सींगोटी—*(ना०)* १. सींगों की सुन्दरता। २. सींगों की सुन्दर आकृति। ३. दोनों सींग। ४. सींगों पर पहनाई जाने वाली चाँदी सोने की खोल।

सींगोड़ो—*(न०)* सिंघाड़ा।

सींघळी—*(न०)* सिंह।

सींघळो—*(न०)* १ वंशज। २. पुत्र। ३. सिंह। *(वि०)* वीर।

सींचणियो—*(न०)* १. कुँए से पानी निकालने के लिये डोल के बाँधी जाने वाली रस्सी। पानी खींचने का रस्सा। *(वि०)* सींचने वाला। कुँए में से पानी खींचने वाला।

सींचणो—*(क्रि०)* १. छिड़काव करना। २. खेत में पानी देना। ३. कुँए में से पानी निकालना।

सींचो—*(न०)* १. अस्पृश्य से छू जाने वाले पर शुद्ध होने के लिये सोने को छुआकर चुल्लू भर कर डाले जाने वाले पानी के छींटे। २. परहेज। अलगाव। ३. घृणा। उपेक्षा। ४. गुदा प्रक्षालन।

५. शुद्धि के लिये छाँटा जाने वाला पानी। ६. पानी के छींटे।

सींठ—*(न०)* गुप्तांग के बाल। उपस्थ कच। घुसो। झाँट। गुहा।

सींठणा—*(न०ब०व०)* १. विवाहादि में स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले अश्लील गीत। २. उपस्थ कच। सींठ।

सींठजी—*(न०)* १. एक गाली। २. सींठ जैसा हलका व्यक्ति (व्यंग्य में)।

सींठ तोड़णियो—*(वि०)* १. उपस्थ कच तोड़ने वाला। २. बहादुर (व्यंग्य में)। *(न०)* एक गाली। सींठतोड़ो।

सींठ तोड़ो—दे० सींठ तोड़णियो।

सींठाणो—दे० सींठावणो।

सींठावणो—*(क्रि०)* १. धोखा देना। भरोसा देकर फिर जाना। २. ठगना। ३. भुलावे में डालना। भुलाना। भ्रम में डालना। ४. लालच दिखाना।

सींठोळियो—*(वि०)* १. अयोग्य मित्र। निकम्मा मित्र। २. नालायक। हलके दर्जे का। नीच। *(न०)* एक गाली।

सींड—*(न०)* रेंट। सेंडो। सिंघण।

सींड-साँड—*(ना०)* रेंट और लार। सेंडो-लाळ।

सींदड़ो—दे० रड़बो।

सींदरो—*(न०)* चरस का एक उपकरण।

सींध—*(न०)* १. सीमा। हद। कांकड़। २. जंगल। अंगळ। सीम।

सींवाड़ो—*(न०)* सीमा। सीमाड़ो। हद। कांकड़।

सींह—दे० सीह।

सु—*(सर्व०)* १. वह। २. वह का विभक्ति लगने का पूर्व रूप। उस। ३. उसे। *(अव्य०)* १. अतः। इसलिये। २. सो। ३. सो अब। ४. लेकिन अब। ५. और। ६. फिर। *(वि०)* १. सुंदर। २. अच्छा। ३. उत्तम। *(उप०)* शब्दारंभ में सौंदर्य और भद्रता आदि के अर्थ में प्रयुक्त उपसर्ग।

सुअरड़ी—दे० सूरड़ी।

सुअवसर—*(न०)* अच्छा मौका। अच्छा अवसर।

सुआगण—*(वि०)* सुहागिन। सौभाग्यवती।

सुआड़—दे० सुआवड़।

सुआन—*(न०)* कुत्ता। स्वान। कूतरो।

सुआरथ—दे० सवारथ।

सुआरथी—सवारथी।

सुआ-रोग—*(न०)* प्रसूति के समय होने वाला स्त्री रोग। २. प्रसूति जन्य रोग।

सुआवड़—*(ना०)* १. प्रसव। बच्चे का जन्म। २. प्रसूति। सुआड़। ३. प्रसूता के लिये बनाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ। ४. जननाशौच। सूतक।

सुआवड़ करणो—*(मुहा०)* प्रसूता की सेवा करना।

सुआवड़ कराणो—*(मुहा०)* १. प्रसव संबंधी काम कराना। २. प्रसव के लिये पुत्री को पीहर बुलाना। ३. प्रसव करना।

सुआवड़ खाणो—*(मुहा०)* बच्चा जनना और पौष्टिक पाक खाना।

सुआवड़ साँधणो—*(मुहा०)* प्रसूता के लिये पौष्टिक पाक आदि बनाना।

सुआवड़ी—*(ना०)* प्रसव करने वाली स्त्री। प्रसूता। *(वि०)* प्रसव करने वाली। प्रसवा। अच्छा।

सुआसण—*(न०)* बैठने का सुन्दर आसन। *(ना०)* सुहासिनी। **सुआसणी**।

सुआसणी—दे० सुहासिणी। सुवासणी।

सुइयो—*(न०)* १. घड़ी का काँटा। २. टाट, थैला आदि सीने की मोटी लंबी सुई।

सुई—*(न०)* लोहे का एक पतला उपकरण जिसके एक सिरे में धागा पिरो कर कपड़ा सीया जाता है। सूचि।

सुओ—*(न०)* १. एक सब्जी और उसके बीज। २. प्रसव अशौच। सूतक। ३. बोरी, टाट आदि सीने का सुइया। **सुइयो**।

सुक—*(न०)* १. तोता। शुक। २. श्रीमद्-भागवत के कथाकार व्यासजी के पुत्र शुकदेव मुनि।

सुकच—*(न०)* सुन्दर केश। काले केश। भमराळा केश।

सुकचा—*(ना०)* सुन्दर केशों वाली स्त्री। सुकेशी। सुकेशा।

सुकची—दे० सुकचा।

सुकतिज—*(न०)* मोती। मुक्तिज।

सुकदेव—*(न०)* व्यास मुनि के पुत्र शुकदेव।

सुकन—*(न०)* सुगम। शकुन।

सुकन-चिड़ी—दे० रूपारेल।

सुकनावळी—*(ना०)* शकुन शास्त्र अथवा उसका ग्रन्थ।

सुकनी—*(वि०)* १. शकुनशास्त्र को जानने वाला। २. शकुन के आधार पर काम करने वाला। ३. शकुन देखने तथा उसका फल बताने वाला। *(न०)* एक पक्षी।

सुकप्रिय—*(न०)* १. दाड़िम। २. हरी मिर्च। शुकप्रिय।

सुकर—*(वि०)* सुगम। *(न०)* १. शुक्र। धन्य। २. शुक्रग्रह। ३. शुक्रवार।

सुकरत—दे० सुकरित।

सुकराणो—*(न०)* १. उपकार। शुक्राना। २. जमीन, मकान आदि का पट्टा बना कर देने की रियासतों के जमाने में ली जाने वाली एक सरकारी फीस। स्टाम्प, रजीस्ट्री, बेचान आदि की फी के अति-अतिरिक्त पट्टा बनवाने का एक कर विशेष।

सुकरात—*(न०)* यूनान देश का एक प्रसिद्ध दार्शनिक।

सुकरित—*(वि०)* सुकृत्य। सुकार्य। शुभ काम।

सुकर्म—*(न०)* १. अच्छा काम। २. उपकार।

सुकर्मी—*(वि०)* १. अच्छा काम करने वाला। सदाचारी। २. भाग्यशाली। सकर्मी। (अकर्मी या कुकर्मी का उलटा)। पुण्यशाली। ३. उपकारी।

सुकळ—*(वि०)* १. श्वेत। शुक्ल। २. उज्ज्वल। *(न०)* ब्राह्मणों की एक अल्ल।

सुकवि—*(न०)* १. उत्तम कवि। २. ख्याति प्राप्त कवि। ३. श्रेष्ठ कवि। ४. भक्त कवि। ५. आशु कवि।

सुकंठ—*(न०)* १. मधुर कंठ। २. सुग्रीव वानर। ३. कोयल। *(वि०)* मधुर कंठ वाला।

सुकंठी—*(न०)* सुग्रीव। *(ना०)* १. कोयल। २. स्त्री। *(वि०)* मधुर कंठ वाली।

सुकंत—*(न०)* १. प्रिय पति। २. सुन्दर पति। ३. ईश्वर।

सुकाई—दे० सुखाई।
सुकाज—दे० सुकाम।
सुकाठ—*(ना०)* चंदन।
सुकाणो—दे० सुकावणो।
सुकाम—*(ना०)* सुकृत्य।
सुकाळ—*(ना०)* १. अच्छा समय। २. सस्ती का समय। ३. अच्छी फसल का समय। सुभिक्ष। सुगाळ। ४. पुष्कलता।
सुकावणो—*(क्रि०)* सुखाना। पदार्थ का गीलापन दूर करना।
सुकीरत—*(ना०)* सुकीर्त्ति। सुयश।
सुकेशी—*(वि०)* लंबे सुन्दर केशों वाली।
सुकुमार—*(वि०)* १. नाजुक। कोमल। २. कोमल अंगों वाला बालक।
सुकुमारी—*(वि०)* कोमलांगी। *(ना०)* बच्ची।
सुकुलीण—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल वाला।
सुकुलीणी—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल वाली। खानदान वाली। सुकुलीना।
सुकुलीणो—*(वि०)* श्रेष्ठ कुल वाला। खानदान वाला।
सुकृत—*(न०)* १. सत्कर्म। पुण्य काम। २. धर्म। *(भू०कृ०)* अच्छी प्रकार किया हुआ। *(वि०)* सत्कर्म करने वाला।
सुकृती—*(वि०)* पुण्य कर्म वाला। *(न०)* अच्छा काम।
सुकृतीजन—दे० सुकृती पुरुष।
सुकृती-पुरुष—*(न०)* १. भाग्यशाली। २. पुण्यशाली।
सुकेशी—*(ना०)* लंबे, काले और सुन्दर बालों वाली स्त्री।
सुकोमल—*(वि०)* १. बहुत मुलायम। नरम। २. संवेदनशील।
सुकोमळी—*(ना०)* कोमल अंगों वाली स्त्री। कोमलांगिनी।
सुक्रम—दे० सुकर्म।
सुक्रसिख—दे० सुक्रसिस।
सुक्रसिस—*(न०)* १. दैत्य। शुक्राचार्य के शिष्य। २. महादानी बलि राजा।
सुक्राचारज—*(न०)* दैत्यगुरु। शुक्राचार्य।
सुक्रियथ—*(न०)* सुकृतार्थ।
सुख—*(न०)* १. तन और मन को अच्छा लगे, ऐसा अनुभव। २. किसी कामना की सिद्धि का आनंद। ३. आत्मानंद। ४. प्रीति। स्नेह। ५. सहवास। संभोग।
सुख करणो—*(मुहा०)* १. आराम करना। २. सोना।
सुख-कंद—*(वि०)* सुखों का मूल।
सुखकारी—*(वि०)* सुख देने वाला। आनंदकारी।
सुख-चैन—*(न०)* सुख और आराम। मौज-मजा।
सुखड़—*(न०)* चंदन। मलय।
सुखड़ी—*(ना०)* एक मिठाई।
सुखड़ो—*(न०)* सुख। 'दुखड़ो' का उलटा।
सुखदा—*(ना०)* १. हर्रे। २. गंगा। ३. पत्नी। ४. अप्सरा। *(वि०)* सुख देने वाली। *(न०)* एक छंद।
सुखदाई—*(वि०)* १. सुख देने वाला। सुखदायी। २. जिस वस्तु, बात या काम से सुख मिले।
सुखदाता—*(वि०)* सुख देने वाला। *(न०)* प्रियतम।
सुखदायक—दे० सुखदाता।
सुखदायी—दे० सुखदाता।

सुख-दुख—*(ना०)* १. आराम और कष्ट। सुख और दुख। २ समय का परिवर्तन। ३. सुख और दुख की स्थिति।

सुखधाम—*(ना०)* १. वह स्थान जहाँ सब प्रकार का सुख हो। स्वर्ग। २. सब सुखों का देने वाला। ईश्वर। परमेश्वर।

सुखपाल—*(ना०)* एक प्रकार की पालकी।

सुखप्रद—दे० सुखदाता।

सुखभर—*(वि०)* आनंददायक। *(अव्य०)* सुख में।

सुखभात—*(ना०)* १. विवाह का एक भोज। २. एक प्रकार का चावल।

सुखम—*(वि०)* १. सुन्दर। २. सुख। ३. आराम। *(वि०)* सूक्ष्म।

सुखमणा—*(ना०)* सुषुम्ना नाड़ी।

सुखमा—*(ना०)* १. अतिशय शोभा। २. नैसर्गिक सौंदर्य। सुषमा। ३. सुन्दरता।

सुखमासदन—*(ना०)* चंद्रमा। सुषमा सदन।

सुखयाम—*(ना०)* १. कुशल। २. सुख का समय। दे० सुखरात।

सुख-रात—*(ना०)* १. सुहाग रात। प्रथम मिलन रात्रि। २. दीपावली की रात।

सुखरास—*(ना०)* १. भाँति-भाँति के आराम के साधन। २. आनंद केलि। ३. सुखधाम। ४. सुखराशि।

सुखवास—*(ना०)* सभी प्रकार का सुख। आनंद। मौज-मजा। २. महल।

सुखवासी—*(वि०)* १. सुख प्राप्त। २. सुख में रहने वाला। सुखी। ३. मायिक झंझटों से अलिप्त। मुक्त।

सुख-सज्या—*(ना०)* १. मृतक के पीछे ब्राह्मण को दी जाने वाली शैया। २. शय्या। सुख शय्या।

सुख-संपत—*(ना०)* सुख और संपत्ति।

सुख-सागर—*(ना०)* सुख का सागर। ईश्वर। परमेश्वर।

सुख-साता—*(ना०)* १. सुख और शांति। २. रोग निवृत्ति। ३ आरोग्य। निरोग। ४. सुख और स्वास्थ्य। ५. स्वास्थ्य लाभ। ६. स्वास्थ्य-पृच्छा।

सुख-साँयत—*(ना०)* सुख और शांति।

सुख-सारण—*(वि०)* १. सुख को कायम रखने वाला। २. सुखकारी। आनंदकारी।

सुख-सीरी—*(वि०)* सुख का भागीदार। सुखमें काम आने वाला।

सुख-सेरी—*(ना०)* सुख का मार्ग। सुख।

सुख-सोरप—*(ना०)* १. आनंद-मंगल। २. सुख-चैन। ३. सुख-आराम। अतिसुख।

सुखाई—*(ना०)* सुकाने की क्रिया या भाव।

सुखाकार—*(ना०)* सुख ही सुख।

सुखाकारी—*(ना०)* आराम। स्वास्थ्य लाभ। सुख। *(वि०)* सुखकारी।

सुखासण—*(ना०)* १. आराम से बैठने की मुद्रा। पलथी। २. चौरासी योगासनों में का एक आसन। सुखासन। ३. पालकी।

सुखांत—*(वि०)* वह नाटक जिसका अन्त सुखमय हो।

सुखियारण—दे० सुखियारी।

सुखियारी—*(वि०)* १. सुखी। २. सुख देने वाली। ३. सुख से रहने वाली। ४. सुख की इच्छा करने वाली। सुख चाहने वाली।

सुखियारो—*(वि०)* १. सुखी। २. सुख देने वाला। ३. सुख चाहने वाला। ४. सुख

से रहने वाला। मौजी। ५. सभी प्रकार सुखी।

सुखियो—*(वि०)* सुखी। दुख रहित। आनंदी।

सुखी—*(वि०)* जिसको सब प्रकार का सुख हो। सुखवन्ता।

सुखेत—*(न०)* १. संस्कारी संतान उत्पन्न करने वाली कुलवान स्त्री। २. सुलक्षणों वाली स्त्री। सुलक्षणा। ३. उच्चकुल। ४. संस्कारी कुल। ५. अच्छी उपजाऊ भूमि का खेत।

सुखेव—*(अव्य०)* सुखपूर्वक। सुख से।

सुखोदक—*(न०)* गरम पानी। स्नान करने योग्य गरम पानी। निवायो पाणी।

सुख्यात—*(वि०)* जिसकी अच्छी ख्याति हो। सुप्रसिद्ध। *(ना०)* १. यश। कीर्त्ति। २. प्रसिद्धि।

सुख्याति—दे० सुख्यात।

सुगठ—*(वि०)* १. सुगठित। २. सुरूपवान। *(न०)* सुरूप। सुन्दराकृति।

सुगण—*(न०)* शकुन। सगुन।

सुगणी—*(ना०)* १. गुणवती स्त्री। सगुणी। २. भाग्यशालिनी। ३. भाग्यशाली। दे० सुगनी। ४. पत्नी। स्त्री।

सुगणो—*(वि०)* १. गुणी। गुणों वाला। २. बुद्धिमान।

सुगत—*(वि०)* अच्छी गति वाला। *(न०)* भगवान बुद्ध। *(ना०)* मृत्यु होने पर स्वर्ग अथवा मोक्ष की प्राप्ति। सुगति।

सुगन—*(न०)* शकुन।

सुगन-चिड़ी—*(ना०)* शुकन चिड़ी।

सुगनियो—*(वि०)* शकुन विशारद। सुकनियो।

सुगनी—दे० सुकनी।

सुगम—*(वि०)* आसान। सरल।

सुगरी—*(ना०)* १. बया पक्षी। सुगीवा। सुगृही। २. छोटा शिकंजा।

सुगरो—*(वि०)* 'नुगरो' का उलटा। १. गुरु वाला। २. जिसने धर्म गुरु से दीक्षा ली हो। ३. जिसने गुरुमंत्र लिया हो। ४. अहसान मानने वाला। *(न०)* लुहार का एक औजार। शिकंजा।

सुगह—*(वि०)* जो अच्छी तरह कूटा या मथा गया हो।

सुगंध—*(ना०)* १. महक। खुशबू। सौरभ। खुसबो। २. कीर्ति। यश।

सुगंधक—*(न०)* पुष्प। फूल।

सुगंध-धर—*(न०)* १. केशर। २. चंदन। ३. पुष्प।

सुगंधि—दे० सुगंध।

सुगंधी—दे० सुगंध।

सुगाणो—*(क्रि०)* घृणा करना। सूग करणो।

सुगामण—दे० सूगामण।

सुगामणी—दे० सूगामणी।

सुगामणो—दे० सूगामणो।

सुगाळ—*(न०)* सुभिक्ष। सुकाल। सुकाळ।

सुगाळी—*(ना०)* १. दुर्गंध। २. घृणा। सूग।

सुगायोड़ो—*(भू०कृ०)* १. जिसके प्रति सूग की गई हो। घृणित। २. उपेक्षित।

सुगाव—दे० सूग।

सुगावणो—*(क्रि०)* १. घृणा करना। नफरत करना। २. ठुकराना। ३. तिरस्कार करना।

सुगावो—*(न०)* १. घृणा। सूग। २. उपेक्षा।

सुगुणी—दे० सुगणी ।
सुगुणो—*(वि०)* अच्छे गुणों वाला । गुणी । *(नं०)* १. गुणीजन । २. सज्जन ।
सुगो—दे० सुग्गो ।
सुग्गो—*(नं०)* १. चोंचदार छोटी सेंडासी । सुग्गा । २. तोता । शुक । सूवटो ।
सुग्गया—*(भा०)* घृणा । नफरत । घिरणा । सूग ।
सुग्रीव—*(नं०)* वानरराज बाली का छोटा भाई । *(वि०)* सुन्दर ग्रीवा वाला ।
सुग्रीवसेन—*(नं०)* श्रीकृष्ण के एक घोड़े का नाम ।
सुघट—*(वि०)* १. सुन्दर । सुडौल । सुघड़ । २. सुघटित ।
सुघड़—*(वि०)* १. सुन्दर । २. अच्छा । ३. स्वच्छ । ४. चतुर । निपुण । ५. अच्छी तरह से गढ़ा या बना हुआ ।
सुघड़ाई—*(भा०)* १. सुघड़पन । सुन्दरता । २. चतुरता । निपुणता ।
सुघड़ी—*(भा०)* १. शुभ घड़ी । शुभ मुहूर्त । २. सुघड़ स्त्री ।
सुघरी—*(भा०)* बया नाम की एक चिड़िया । सुगरी । बया ।
सुचंग—*(वि०)* १. सुन्दर । रूपाळो । फूटरो । २. स्वस्थ । साजो । ३. अच्छा । चोखो । ४. मधुर ।
सुचाळी—*(भा०)* पृथ्वी ।
सुचि—*(वि०)* १. उज्ज्वल । २. सफेद । ३. पवित्र ।
सुचियारो—*(वि०)* १. पवित्र मन वाला । २. सच्चा । *(नं०)* शुचिजन ।
सुच्छ—*(वि०)* साफ । स्वच्छ ।
सुच्छम—दे० सूक्ष्म ।
सुच्छंद—*(नं०)* स्वच्छंद । अंकुश रहित ।
सुच्छम—दे० सूक्ष्म ।
सुज—*(सर्व०)* १. उस । २. वह । *(अव्य०)* पुनः । फिर ।
सुजड़—*(नं०)* तलवार ।
सुजड़ी—*(भा०)* कटारी ।
सुजण—दे० सुजन ।
सुजन—*(नं०)* १. सज्जन । २. स्वजन । ३. बांधव ।
सुजनी—*(भा०)* १. मोटी चादर । २. जाजम ।
सुजस—*(नं०)* १. सुयश । सुकीर्त्ति । २. अच्छी ख्याति । नामवरी ।
सुजसी—*(वि०)* १. यशस्वी । सुकीर्ति वाला । ख्याति वाला । २. प्रसिद्ध । जावो ।
सुजाण—*(वि०)* १. निपुण । २. चतुर । ३. पंडित । सुज्ञ । सुजान ।
सुजाणो—*(नं०)* बाज पक्षी की जाति का एक पक्षी ।
सुजात—*(वि०)* कुलीन । *(नं०)* अच्छी जाति । 'कुजात' का उलटा ।
सुजाव—*(नं०)* पुत्र । बेटो ।
सुजि—*(सर्व०)* निश्चित रूप से परोक्ष व्यक्ति या निर्दिष्ट वस्तु की ओर संकेत करने वाला सर्वनाम । वही । सुज । वो । *(वि०)* निश्चित । *(अव्य०)* १. फिर । पुनः । २. बाद में । पछे ।
सुजोग—*(नं०)* अच्छा संयोग । सुयोग ।
सुझको—*(नं०)* सूर्योदय के पहिले का वह समय, जब दिखाई देने लगता है । उषाकाल । आंझरको ।
सुझाणो—दे० सुझावणो ।
सुझापो—दे० सुझको । *(नं०)* दृष्टि ।
सुझाव—*(नं०)* १. किसी को कोई वस्तु सुझाना । २. प्रस्ताव में सुधार । सुधारो । ३. परामर्श । सलाह ।

सुझावणो—*(क्रि०)* १. निर्देश करना। २. दिखलाना। बताना। बतावणो। ३. ध्यान दिलाना। ४. सलाह देना। ५. सुझाना। ६. सूचित करना।

सुझावो—दे० सुझावो।

सुटेव—*(ना०)* अच्छी आदत। ('कुटेव' का उलटा)।

सुठ—दे० सुठि।

सुठरी—*(ना०)* सुन्दरी। सुन्दर स्त्री।

सुठि—*(वि०)* १. सुन्दर। २. बढ़िया। उत्कृष्ट। ३. अतिशय। घणो।

सुठो—*(क्रि०वि०)* १. सम्यक्। सब प्रकार से। २. सपूर्णतया। दे० सुट्ठो।

सुट्ठो—*(वि०)* सुष्ठु। सुन्दर। अच्छा। *(अव्य०)* अस्तु। खैर।

सुड़क—*(ना०)* १. जल आदि को पीते हुये ओठों द्वारा होने वाला शब्द। चुस्की। २. ओठों द्वारा खींच कर एक बार में जितना पिया जाय उतने पेय का परिमाण।

सुड़कणो—*(क्रि०)* किसी पतली खाद्य-पदार्थ को ओठों से सुड़-सुड़ की आवाज करते हुए खाना या पीना।

सुड़भक—*(क्रि०वि०)* शिष्टता से। अच्छे ढंग से। *(वि०)* शिष्ट। सभ्य।

सुडोळ—*(वि०)* १. सुगठित। सुडौल। २. सुन्दर शरीर वाला। सुरूपवान। कृपाळो।

सुढाळो—*(वि०)* १. सुन्दर। सरल। सीधो। ३. अनुकूल। ४. हितकर। ५. सरल स्वभाव का। ६. सरलता से बनने वाला। सोरो।

सुणणो—*(क्रि०)* १. सुनना। श्रवण करना। सांभळणो। २. किसी की प्रार्थना पर ध्यान देना।

सुणतर—*(न०)* सिरोही तथा मारवार से लगता उत्तर गुजरात का भाग।

सुणतरियो—*(वि०)* सुणतर का रहने वाला।

सुणबाळो—*(वि०)* सुनने वाला।

सुणवाई—*(ना०)* १. सुनने की क्रिया या भाव। २. मुकदमा आदि का विचार के लिये सुना जाना। पेसी। ३. पहुँच। सुणाई।

सुणाई—दे० सुणवाई।

सुणाणो—*(क्रि०)* १. सुनाना। २. भला बुरा कहना। ३. जताना।

सुणायोड़ो—*(भू०कृ०)* सुनाया हुआ।

सुणावणी—*(ना०)* १. मृत्यु-संदेश। २. ग्रामेतर मृत्यु संदेश। ३. मृत्यु समाचार के कारण किया जाने वाला सामूहिक शोक स्नान।

सुणावणो—दे० सुणाणो।

सुणियोड़ो—*(भू०कृ०)* सुना हुआ।

सुणीजणो—*(क्रि०)* सुना जाना। सुनाई देना।

सुणी-सुणाई—*(वि०)* १. सुनी हुई। सुनी-सुनाई। २. अविश्वसनीय।

सुत—*(न०)* पुत्र। बेटो। आत्मज।

सुतण—दे० सुतन।

सुतन—*(न०)* बेटा। पुत्र। सुतनु। डीकरो।

सुतपावाहण—*(न०)* गरुड़।

सुतर-फीणी—*(ना०)* मैदे से बनी महीन सूत के लच्छे वाली मिठाई। फेनी। फीणी।

सुतराऊ—*(वि०)* १. रूई से बना। २. सूत से संबंधित। सूत का।

सुतरखानो—*(न०)* १. सवारी के ऊँटों को रखने-बाँधने की जगह। २. ऊँट के ऊपर रहने वाली बंदूक।

सुतर-सवार—*(न०)* ऊँट सवार। उष्ट्रारोही। शुतुर सवार।

सुतळ—*(न०)* तीसरा पाताल लोक। सुतल।

सुतळी—*(ना०)* सन के रेशों से बनी हुई डोरी। सुतली। **सूतळी**।

सुत-वसुदेव—*(न०)* वसुदेव सुत श्रीकृष्ण।

सुतंतर—*(न०)* स्वतंत्र। आजाद।

सुतंत्र—दे० स्वतंत्र।

सुता—*(ना०)* पुत्री। बेटी।

सुथणो—*(न०)* सुथना। पाजामा। **सूथण**।

सुथराई—*(ना०)* १. अच्छापन। २. स्वच्छता।

सुथरी—*(वि०ना०)* १. अपेक्षाकृत अच्छी। २. सुन्दर। ३ स्वच्छ। **चोखी**।

सुथरो—*(वि०)* १. अपेक्षाकृत अच्छा। अच्छा। ३. सुन्दर। **चोखो**। ४. स्वच्छ। निर्मल। ५. तुलना में अच्छा।

सुथळ—*(न०)* सुन्दर स्थान। सुस्थल।

सुथान—*(न०)* १. श्रेष्ठ स्थान। २. स्थान। ३. सुन्दर स्थान। ४. दर्शनीय स्थान।

सुथानक—*(न०)* १. घर। २. सब प्रकार के आराम का स्थान। ३. सुन्दर स्थान।

सुथान वासो—दे० संथान वासो।

सुथाने—*(अव्य०)* जिस स्थान को भेजना है उस स्थान को। स्थान। शुभ स्थान को।

सुथार—*(न०)* बढ़ई। **वणाक**। **खाती**।

सुथारण—*(ना०)* १. सुथार जाति की स्त्री। २. सुथार की स्त्री। **वणाकणी**।

सुथारी—*(ना०)* १. सुथार जाति की स्त्री। **वणाकण**। २. सुथार की स्त्री। *(वि०)* सुथार का। सुथार से संबंधित।

सुथिर—*(ना०)* पृथ्वी। *(वि०)* १. दृढ़। २. सुस्थिर।

सुद—*(ना०)* शुक्ल पक्ष। **सुदि**। **सुदी**। *(वि०)* उक्त पक्ष की या उससे संबंधित (तिथि)।

सुदत—*(न०)* १. दान। २. सात्विक दान। ३. सुपात्र दान।

सुदतपण—*(न०)* दातृत्व।

सुदतपणो—दे० सुदतपण।

सुदता—*(वि०)* १. सुदानी। **सुदतार**। २. दानी।

सुदतार—*(वि०)* १. सुदानी। सुदातार। २. दानी।

सुदन—*(न०)* दान। *(वि०)* दानी।

सुद-पख—*(न०)* चंद्र मास का शुक्ल पक्ष। **अजवालियो पख**।

सुदरसण—*(वि०)* दिखने में शुभ या सुन्दर। सुदर्शन। *(न०)* १. भगवान विष्णु के चक्र का नाम। २. एक औषधि। ३. शिव। ४. मछली।

सुदर्शन—दे० सुदरसण।

सुदर्शन-चक्र—*(न०)* विष्णु का चक्राकार अस्त्र।

सुदंत—*(वि०)* सुन्दर दाँतों वाला। *(न०)* १. हाथी। २. सुन्दर दाँत।

सुदंती—*(वि०)* सुन्दर दाँतों वाली। *(न०)* हाथी। *(ना०)* हथिनी।

सुदान—*(न०)* सुपात्र को दिया जाने वाला दान।

सुदानी—दे० सुदतार।

सुदामा—*(न०)* श्रीकृष्ण के एक ब्राह्मण सहपाठी और मित्र ।

सुदामापुरी—*(ना०)* सौराष्ट्र का एक नगर। सुदामा की नगरी । पोरबंदर ।

सुदि—*दे०* सुदी ।

सुदी—*(ना०)* शुक्ल पक्ष । सुद । *(वि०)* शुक्ल पक्ष की या उससे संबद्ध (तिथि इत्यादि) ।

सुदीठ—*(ना०)* १. शुभ दृष्टि । सुदृष्टि । २. अच्छी तरह दिखाई देना । ३. कृपा दृष्टि ।

सुदूर—*(वि०)* बहुत दूर । घणो आघो ।

सुदृढ—*(वि०)* बहुत मजबूत । खूब दृढ़ ।

सुदृष्टि—*(ना०)* १. तेज नजर । २. उत्तम दृष्टि । ३. सिद्ध । *(वि०)* दूर दृष्टि ।

सुदेश—*(न०)* १. सुन्दर देश । २. अपना देश । स्वदेश । ३. उपयुक्त स्थान । *(वि०)* सुन्दर ।

सुदेसी—*(वि०)* स्वदेशी ।

सुद्ध—*(वि०)* १. स्वच्छ । चोखो । २. पवित्र । ३. बिना मिलावट का । शुद्ध । सुध ।

सुद्रस्ट—*(ना०)* दया । सुदृष्ट । मीठी नजर । कृपा दृष्टि ।

सुध—*(न०)* १. सुधि । खबर । पता । २. होश । भान । ३. स्मृति । याद । ४. सम्हाल । संभाळ । ५. विवेक । ढंग । *(वि०)* १. शुद्ध । २. सच्चा । ३. निस्वार्थी । ४. निष्पक्ष ।

सुधकर—*(ना०)* मिर्च ।

सुधण—*(ना०)* १. पत्नी । घण । २. पतिव्रता । सुकुली । सुकुलीणी ।

सुधता—*(न०)* शुद्धता । स्वच्छता ।

सुधताई—*दे०* सुधता ।

सुध-बुध—*(ना०)* १. ज्ञान कराने वाली मानसिक शक्ति । चेतना । होश । २. विवेक । तमीज । ३. समझ ।

सुधमणो—*(वि०)* १. विवेकी । २. निश्चित मति वाला । ३. सच्चा ।

सुधरणो—*(क्रि०)* १. शुद्ध होना । दोष रहित होना । २. अशुद्धि का शुद्धिकरण होना । ३. कार्य का सुव्यवस्थित रूप से संपादित होना ।

सुधरमा—*दे०* इंद्र सभा ।

सुधराई—*(ना०)* १. सुधारने का काम । २. सुधारने की मजदूरी । ३. म्युनिसीपेलेटी ।

सुधराणो—*दे०* सुधरावणो ।

सुधरावणो—*(क्रि०)* सुधरवाना । सुधराना ।

सुधवट्टी—*(ना०)* तलवार । तरवार ।

सुधहीणो—*(वि०)* सुधि रहित ।

सुधा—*(न०)* १. अमृत । २. मधु । ३. दूध । ४. जल । ५. आंवला । ६. पृथ्वी । ७. पुत्री । ८. घर । ९. वधू । १०. बिजली ।

सुधाकर—*(न०)* चंद्रमा ।

सुधाकंठ—*(ना०)* कोयल ।

सुधागेह—*(न०)* चन्द्रमा ।

सुधा-घट—*(न०)* चन्द्रमा ।

सुधाचरण—*(न०)* गरुड़ ।

सुधात—*(ना०)* सुधातु । सुवर्ण । सोना ।

सुधा-दृष्टि—*(ना०)* दया । सुधानजर ।

सुधाधर—*(न०)* चंद्रमा । सुधाधारण ।

सुधा-धरण—*(न०)* चंद्रमा । चाँद । शशि । मृगांक ।

सुधा-नजर—*(ना०)* दया । कृपा । सुधा-दृष्टि ।

सुधा-निधि—*(न०)* १. चंद्रमा। २. समुद्र।
सुधाभक्ष—*(न०)* देवता। सुर।
सुधा-भुक्—*(न०)* देवता।
सुधाभुज—*(न०)* देवता। सुधाभक्ष।
सुधा-भोजी—*(न०)* देवता।
सुधामय—*(वि०)* अमृत से भरा हुआ।
सुधा-मयूख—*(न०)* चंद्रमा।
सुधार—दे० सुधारो सं० १ और २.
सुधारक—*(वि०)* १. सुधार करने वाला। २. संशोधक।
सुधारणो—*(क्रि०)* सुधारना।
सुधारस—*(न०)* १. अमृत। २. दूध। ३. चूना। चूनो। ४. कौमुदी। ज्योत्स्ना चाँदनी।
सुधारो—*(न०)* १. बुराई, कुसंस्कार, गलतियाँ और कुरीतियों को दूर करने की क्रिया। २. संस्कार। ३. उक्त क्रिया का परिणाम। ४. किसी प्रस्ताव को सुधारने के लिए रखा गया अन्य प्रस्ताव एमेन्डमेंट।
सुधारो-वधारो—*(न०)* १. किसी प्रस्तावादि में घटाने-बढ़ाने की क्रिया। २. परिवर्तन-परिवर्धन। संशोधन-परिवर्धन।
सुधास्रव—*(न०)* चंद्रमा। अमृत बरसाने वाला।
सुधांशु—*(न०)* चंद्रमा।
सुधि—दे० सुध।
सुधियाँ—*(क्रि०वि०)* १. तुरंत। २. तुरंत ही। शीघ्र ही। जेमो।
सुधीमणो—दे० सुधमणो।
सुधीर—*(वि०)* धैर्यवान। धीरजवाळो।
सुधीरो—*(वि०)* १. धैर्यवान। २. सुधिवाला।
सुन—*(ना०)* शून्य। बिंदु। बींदी। सुख। *(न०)* १. खाली स्थान। २. आकाश। ३. अभाव। ४. कुत्ता। शुन। *(वि०)* खाली।
सुन आँक—*(न०)* आगे शून्य लगा हुआ अंक, यथा—१०, ५०, १००.
सुनखी—*(ना०)* चील पक्षी। संखळी।
सुनजर—*(ना०)* १. दया। २. सुदृष्टि। शुभ नजर।
सुनयना—*(वि०)* सुन्दर व बड़े नेत्रों वाली। सुनेणी।
सुनसान—*(वि०)* १. निर्जन। २. एकांत। ३. बीहड़।
सुनाम—*(न०)* १. कीर्ति। २. प्रसिद्धि। ख्याति।
सुनार—*(न०)* स्वर्णकार। *(ना०)* सुन्दर स्त्री।
सुनारण—दे० सुनारी १ और २.
सुनारी—*(ना०)* १. सुनार की स्त्री। २. सुनार जाति की स्त्री। सुनारण। ३. सुनारी का काम। स्वर्णकारी। ४. सुन्दर नारी। गुणवती स्त्री।
सुनावणी—दे० सुणावणी।
सुनासीर—*(न०)* इंद्र। सुनाशीर।
सुनेणी—दे० सुनयना।
सुनेपत—*(न०)* अच्छी उपज। अच्छी फसल।
सुन्न—*(वि०)* शून्य। *(न०)* १. शून्य स्थान। निर्जन स्थान। २. बिंदी। शून्य। बींदो।
सुन्नत—*(ना०)* मुसलमान धर्म की एक रसम। मुसलमानी।
सुन्न-सिखर—दे० शून्य शिखर।
सुन्याड़—दे० सून्याड़।

सुपच—*(वि०)* शीघ्र और भली प्रकार पचने वाला। *(न०)* श्वपच। चांडाल।

सुपणखा—*(ना०)* रावण की बहिन। शूर्पणखा। पौलस्ती।

सुपनक—*(वि०)* सोने वाला।

सुपनो—*(न०)* स्वप्न। सपना।

सुपथ—*(न०)* १. श्रेष्ठ मार्ग। नीति का मार्ग। २. सद्गुण से युक्त आचरण। ३. जीवन यापन करने का सुन्दर और श्रेष्ठ मार्ग।

सुपरडंट—*(न०)* निरीक्षण करने वाला ऊपरी अधिकारी। (पुलिस, छात्रावास, कार्यालय आदि में) सुपरिनटेनडेन्ट। सुपडंट।

सुपरण—*(न०)* गरुड़। सुधाचरण।

सुपरणेय—*(न०)* गरुड़।

सुपरत—*(वि०)* सौंपा हुआ। सुपुर्द। सुपरद।

सुपरद—दे० सुपरत।

सुपरवाइजर—*(न०)* निरीक्षक।

सुपर-वाण—*(न०)* देवता। सुपर्ण।

सुपर-वाह—*(न०)* १. सात्विक दान। २. सुपात्र दान। ३. नेग। ४. भेंट। ५. देखरेख। ६. दान।

सुपरस—*(न०)* पवन। सुस्पर्श। बायरो। हवा।

सुपरसन—*(न०)* १. पवन। सुस्पर्शन। २. सुप्रसन्न।

सुपरसाद—*(अव्य०)* बड़ी कृपा। सुप्रसाद। (राजाओं की ओर से चिट्ठी-पत्रियों में लिखा जाने वाला पत्र पाने वाले को अभिवादन-आशीर्वादात्मक पद, जैसे महाराजा जी श्री·····रा सुप्रसाद वांचजो।

सुपह—*(वि०)* १. वीर। २. दातार। दानी। *(न०)* १. स्वामी। मालिक। २. राजा। सुप्रभ। नृप।

सुपंख—*(न०)* १. एक डिंगल छंद। २. सुन्दर पंखों से युक्त।

सुपंथ—*(न०)* १. ऊंट। २. सरल मार्ग। ३. सदाचार।

सुपाकी—*(वि०)* स्वपाकी।

सुपातर—*(न०)* योग्य व्यक्ति। सुपात्र।

सुपान—*(न०)* मधुर पेय।

सुपायण—*(वि०)* प्राप्त कराने वाला या करने वाला। *(भू०कृ०)* प्राप्त किया हुआ। *(न०)* निमित्त। हेतु।

सुपारस—*(ना०)* सिफारिश।

सुपारी—दे० सोपारी।

सुपुत्र—*(न०)* योग्य और बुद्धिमान पुत्र। सपूत।

सुपुत्री—*(ना०)* योग्य और बुद्धिमान पुत्री। डाही बेटी। सपूती।

सुपेत—दे० सफेद।

सुपेती—*(ना०)* १. सफेदी। २. दीवाल आदि पर की जाने वाली चूने की पुताई। ३. सोमरोग। श्वेत प्रदर। धोळो।

सुपेतो—दे० सफेदो।

सुप्रत—दे० सुपरत।

सुप्रभ—*(न०)* राजा। *(वि०)* सुन्दर प्रभा या प्रकाशवाला।

सुप्रभात—*(वि०)* मंगल प्रभात।

सुप्रसन्न—*(वि०)* खूब प्रसन्न। राजी।

सुप्रिटेन्डेंट—दे० सुपरडंट।

सुप्रीमकोर्ट—*(ना०)* सर्वोपरि न्यायालय। सबसे ऊँची अदालत।

सुफल—*(न०)* उत्तम परिणाम। शुभ फल। *(वि०)* १. सफल। २. शुभफल वाला।

सुफारस—दे० सुपारस।

सुफेद—*(वि०)* श्वेत। सफेद। धवल। धोळो।

सुबह—*(न०)* प्रभात। सवेरा। तड़का। विहाण। २. दिन में १२ बजे के पहले का समय।

सुबंग—*(अव्य०)* १. सुव्यवस्था से। २. सुविधा से। *(न०)* यवन सेनापति।

सुबाह—*(अव्य०)* हाथ से। *(न०)* हस्त कौशल।

सुबीतो—*(न०)* सुगमता। आसानी। सुभीतो।

सुबीर—*(ना०)* राबड़ी।

सुबोध-मंजरी—*(ना०)* कवि सारंग द्वारा रची हुई 'क्रिसन रूकमणिरी वेली' की संस्कृत टीका का नाम। कवि सारंग सत्रहवीं सदी में जालोर में हुआ था।

सुब्रीड़ित—*(वि०)* १. लज्जायुक्त। २. लज्जावान। लजाळू।

सुबो—*(न०)* १. शक। संशय। २. आरोप।

सुभ—*(वि०)* शुभ। मांगलिक। *(ना०)* शून्य। बिन्दु। मींडी।

सुभख—दे० सुभिख।

सुभग—*(वि०)* १. सुन्दर। मनोहर। फूटरो। २. प्रिय। ३. ऐश्वर्यवान। समृद्ध। *(न०)* सौभाग्य।

सुभगा—*(ना०)* १. सौभाग्यवती। २. सधवा। ३. पति को प्यारी स्त्री। ४. सुन्दरी।

सुभट—*(वि०)* १. स्पष्ट। साफ। २. निर्बाध। पूरी तरह। ३. स्वच्छ। निर्मल। ४. वीर। बहादुर। सूरमा। सुहड़।

सुभड़—दे० सुभट सं० ४.

सुभद्रा—*(ना०)* १. श्रीकृष्ण की बहिन तथा अर्जुन की पत्नी का नाम। २. सुन्दर स्त्री।

सुभराज—*(न०)* मंगल जातियों की ओर से दाताओं को दिया जाने वाला एक प्रकार का आशीर्वाद। शुभराज। २. शुभ कामना।

सुभरी—*(वि०)* गर्भवती। (व्यंग्य में)

सुभवयण—*(न०)* १. शुभ वचन। २. कविता में सुन्दर शब्दों की योजना। २. स्तुति।

सुभवयणा—*(ना०)* १. मधुर शब्दों वाली भाषा या कविता। २. राजस्थानी भाषा। मरुवाणी।

सुभसथाने—दे० शुभ स्थाने।

सुभाउ—*(न०)* स्वभाव। आदत। सुभाव।

सभागण—*(वि०)* सौभाग्यशालिनी। सुहागिन।

सुभाव—*(न०)* १. स्वभाव। आदत। २. प्रीति। सुभाव।

सुभाय—*(न०)* स्वभाव। सुभाव।

सुभाषिणी—*(वि०)* प्रिय भाषिनी। मीठी भाषिनी।

सुभाषित—*(वि०)* सुन्दर ढंग से कही हुई उक्ति। सूक्ति।

सुभिख—*(न०)* सुभिक्ष। सुभख।

सुभियाण—*(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. उदार। ३. पराक्रमी। ४. श्रेष्ठ काम करने वाला। *(न०)* बादशाह। सम्राट।

सुभीतो—*(न०)* १. सुविधा। सहूलियत। २. सुख। आराम। ३. अनुकूल स्थिति। सुविधा जनक परिस्थिति।

सुभ्र—*(ना०)* चाँदी। *(वि०)* उज्ज्वल। शुभ्र।

सुम—*(न०)* १. पुष्प। २. आकाश। ३. चन्द्रमा। ४. घोड़े या चौपाये का खुर। खुर।

सुमत—*(ना०)* अच्छी मति। सुमति।

सुमत-कुमत—*(ना०)* सुमति और कुमति।

सुमता—*(ना०)* १. अच्छी मति। २. नेक कमाई का धन। ईमानदारी का पैसा। ३. सुमति देने वाली एक देवी। ४. लोकगीतों की एक नायिका। *(वि०)* सुमति देने वाली।

सुमति—*(ना०)* १. अच्छी मति। २. सद्-भाव। *(वि०)* अच्छी मति वाला।

सुमतियाण—*(वि०)* १. सुमति वाला। अच्छी समझ वाला। २. सुमति देने वाला।

सुमधुर—*(वि०)* बहुत मधुर या मीठा।

सुमन—*(न०)* १. पुष्प। २. यम। ३. गेहूँ। ४. हित चाहने वाला। मन। ५. सुहृदय। दयालु। दयालुता। दया।

सुमन चाप—*(न०)* कामदेव।

सुमनस—*(न०)* १. देवता। २. पंडित। ३. महात्मा। ४. फूल।

सुमनसधुज—*(न०)* कामदेव।

सुमनसायक—*(न०)* कामदेव।

सुमरणी—*(ना०)* माला। जपमाला। सुमिरनी। माळा।

सुमरणो—*(क्रि०)* १. सुमिरण करना। भजन करना। सिंवरणो। २. स्मरण करना। याद करना।

सुमंगळ—*(न०)* विशेष मंगल। मंगल।

सुमंत—*(न०)* महाराज दशरथ का मंत्री तथा सखा।

सुमाग—देo सुमारग।

सुमाणस—*(न०)* नेक आदमी। सज्जन पुरुष। 'कुमाणस' का उलटा।

सुमार—*(अव्य०)* १. प्रकार। ढंग। २. गिनती। शुमार।

सुमारग—*(न०)* सन्मार्ग। सद्पंथ। सुमार्ग। सुमाग।

सुमाळी—*(न०)* सूर्य।

सुमित्रा—*(न०)* राजा दशरथ की पत्नी और लक्ष्मण की माता।

सुमित्रासुत—*(न०)* लक्ष्मण।

सुमिरण—*(न०)* १. रटन। २. स्मरण।

सुमुखी—*(वि०)* सुन्दर मुखवाली। सुवदना।

सुमेर—देo सुमेरु।

सुमेरु—*(न०)* १. सुमेरु नामक पर्वत। २. पर्वत। ३. एक छंद। ४. जपमाला का बड़ा मनका। मेर। *(वि०)* १. उन्नत। २. ऊँचा।

सुमेळ—*(न०)* १. परस्पर का सुन्दर संबंध। २. मित्रता। ३. दो या दो से अधिक चीजों की बराबरी। ४. अलग-अलग होने पर भी एक मत।

सुमौज—*(ना०)* १. दान। २. सुपात्र दान। ३. उपहार। इनाम।

सुयण—देo सुजण।

सुयश—देo सुजस।

सुयंबर—देo स्वयंवर।

सुयंभू—*(न०)* ब्रह्मा। स्वयंभू।

सुयो—देo सुद्यो।

सुयोग—*(न०)* अच्छा अवसर। सुअवसर।

सुयोधन—*(न०)* दुर्योधन का एक शुभ नाम।

सुर—*(न०)* १. देवता। २. स्वर। ध्वनि। ३. मुनि। ४. पंडित।

सुर-आगीवाण—*(न०)* देवताओं में अग्रणी। श्रीगणेश।

सुर आलय—*(न०)* १. स्वर्ग। सरग। २. देवालय। मंदिर।

सुरईश—*(न०)* १. विष्णु। २. सुरेश। इन्द्र।

सुरईस—दे० सुरईश।

सुर-ओक—*(न०)* स्वर्ग। अमरावती।

सुरक्षा—*(ना०)* १. भली-भांति की हुई रक्षा या हिफाजत। २. आक्रमण के विरुद्ध किया गया उपाय।

सुरक्षित—*(भू०कृ०)* भली प्रकार रक्षा किया हुआ। २. हिफाजत से रखा हुआ। ३. अलग रखा हुआ। ४. आक्रमण के विरुद्ध व्यवस्था या प्रबंध किया हुआ।

सुरख—*(वि०)* १. लाल। सुर्ख। २. भली प्रकार रखा हुआ। सुरक्षित। *(न०)* लाल रंग।

सुरखाब—*(न०)* चकवा नामक पक्षी।

सुरखी—*(ना०)* १. लाली। २. खून। लोही। ३. क्रोध।

सुरग—*(न०)* स्वर्ग। देवलोक।

सुरगज—*(न०)* इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

सुरग जाणो—*(मुहा०)* मर जाना।

सुरग-नदी—*(ना०)* गंगा।

सुरगपत—*(न०)* इंद्र। स्वर्गपति।

सुरग पधारणो—दे० सुरग जाणो।

सुरगपुर—दे० सुरग।

सुरग पूगणो—दे० सुरग जाणो।

सुरगवास—*(न०)* मृत्यु। स्वर्गवास।

सुरगवास करणो—*(मुहा०)* मृत्यु होना।

सुरगवासी—*(वि०)* जो मर गया हो। स्वर्गवासी।

सुरगवासी होणो—*(मुहा०)* मृत्यु होना।

सुरग सिधारणो—*(मुहा०)* मृत्यु होना। मर जाना।

सुरगापत—*(न०)* स्वर्ग।

सुरगापुर—*(न०)* स्वर्ग। अमरपुरी।

सुरगाय—*(ना०)* १. देवताओं की गाय। कामधेनु। २. सुरागाय।

सुरगायक—*(न०)* स्वर्ग के गायक तथा वादक देवता। गंधर्व।

सुरगिर—*(न०)* सुमेरु पर्वत।

सुरगी—देवता।

सुरगुरु—*(न०)* देवताओं के गुरु। वृहस्पति।

सुरघाती—*(न०)* दैत्य। दानव।

सुरचाप—*(न०)* इन्द्रधनुष।

सुरजेठ—*(न०)* १. ब्रह्मा। २. इन्द्र।

सुरड़णो—*(क्रि०)* १. एक साँस में मात्रा से अधिक पी जाना। २. सब का सब पी जाना। ३. मारना-पीटना (बेंत से)। ४. एक साथ एक झटके से खींचकर साखा आदि के पत्ते तोड़ना।

सुरणाई—दे० शहनाई।

सुरणो—*(क्रि०)* अधोवायु का निकलना। पादणो। वा सरणो।

सुरत—*(न०)* कामक्रीड़ा। संभोग। सुरति।

सुरत-निरत—*(ना०)* १. अन्तर्नाद सुनना तथा उसमें डूब जाना। २. हठ योग में अन्तर्नाद की एक क्रिया। सुरति-निरति।

सुरतर—दे० सुरतरु।

सुरतरु—*(न०)* कल्पवृक्ष। कल्पतरु।

सुरता—*(ना०)* १. इच्छा। २. ध्यान। ३. याद। ४. सुधि। ५. समाधि।

सुरताण=—दे० सुलताण ।
सुरत्राण—*(न०)* १. विष्णु । २. इन्द्र ।
सुरतिया—*(ना०)* १. देव पत्नी । २. अप्सरा । अपछरा ।
सुर-ती—दे० सुरतिया ।
सुर-त्री—दे० सुरतिया ।
सुरथान—*(न०)* १. स्वर्ग । सुरस्थान । २. देवस्थान । मंदिर ।
सुरदेवी—*(ना०)* १. योगमाया । २. दुर्गा । ३. देवी ।
सुरदोखी—*(न०)* दैत्य । राक्षस । राक्षस ।
सुर-द्रंग—*(न०)* १. देवगिरि । २. स्वर्ग । सुरग ।
सुर-द्रंगड़ो—दे० सुरद्रंग ।
सुरद्रोही—*(न०)* दैत्य । राक्षस । राक्षस ।
सुरधारा—*(ना०)* गंगा । देव नदी । मंदाकिनी । सरगतरंगण ।
सुरधुनी—*(ना०)* १. गंगानदी । जाह्नवी । खापगा ।
सुर-नदी—*(ना०)* गंगा । जाह्नवी । देव नदी । रिखधुनि ।
सुर नायक—*(न०)* १. श्रीकृष्ण । २. इंद्र । ३. श्रीराम ।
सुरप—*(न०)* इन्द्र । सुरपति ।
सुरपणखा—दे० सूरपणखा ।
सुरपति—*(न०)* १. इन्द्र । सुरप । २. विष्णु ।
सुरपथ—*(न०)* आकाश । आसमान । गगन । आभो ।
सुरपथनाथ—*(न०)* इन्द्र ।
सुरपुर—*(न०)* देवलोक । स्वर्ग ।
सुरबाळा—*(ना०)* देवकन्या ।
सुरबाळो—*(ना०)* पृथ्वी ।
सुरभाखा—*(ना०)* संस्कृत भाषा । देवभाषा । सुरभाषा ।
सुरभिलेख—दे० सुरह लेख ।
सुरभी—*(ना०)* १ चंदन । सुखड़ । २. हर्रे । हरड़ । ३. नारियल । नाळेर । ४. बसंत । ५. गाय ।
सुरभीलो—*(वि०)* सुगंधित ।
सुर-मंडळ—*(न०)* एक वाद्य ।
सुरमारग—*(न०)* आकाश । सुरपथ । आभो ।
सुरमुख—*(न०)* अग्नि । आग । वासवी ।
सुरमो—*(न०)* आँख का एक अंजन । सुरमा । (एक खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखों में अंजन की तरह लगाया जाता है) ।
सुरमो आँजणो—दे० सुरमो सारणो ।
सुरमो सारणो—*(मुहा०)* १ आँख में अंजन (सुरमा) डालना । २. शृंगार करना । ३. धोखा देना ।
सुरयंद—*(न०)* इन्द्र ।
सुरराज—*(न०)* इन्द्र ।
सुरराणी—*(ना०)* १. ऋद्धि । २. सिद्धि । ३. सरस्वती । ४. दुर्गा ।
सुरराया—*(न०)* १. शक्ति । देवी । दुर्गा । सुराराय । २. सरस्वती ।
सुररिपु—*(न०)* देवताओं के शत्रु । राक्षस । दैत्य ।
सुररूंख—*(न०)* कल्पवृक्ष ।
सुरलियो—*(न०)* एक गहना ।
सुरळी—*(ना०)* एक घास ।
सुरलोक—*(न०)* स्वर्ग । देवलोक ।
सुरवास—*(न०)* १. स्वर्ग । २. मृत्यु । सरगवास ।

सुर वाह—*(न०)* १. अग्नि । २. पवन । स्वर वाह ।

सुर वेस्या—*(ना०)* अप्सरा ।

सुरसत—*(ना०)* सरस्वती । वरदा । शारदा ।

सुरसतजनक—*(न०)* ब्रह्मा ।

सुरसती—दे० सरस्वती ।

सुरसरी—*(ना०)* गंगा । भागीरथी ।

सुरसत्र—*(न०)* राक्षस । सुर-शत्रु ।

सुर-संपत्ति—*(न०)* कल्पवृक्ष ।

सुर-सामणी—*(ना०)* १. पार्वती । सुर स्वामिनी । २. सरस्वती ।

सुर-सिंगार—*(न०)* १. विष्णु । २. एक वाद्य ।

सुरसुरही—*(ना०)* कामधेनु । सुर-सुरभि ।

सुरसुराट—*(ना०)* १. सुर सुर करते रेंगना । २. शरीर में हलकी सुरसुरी मालूम होना । ३. सुरसुर की आहट । ४. कानाफूँसी । सुरसुराट ।

सुरसुराटो—दे० सुरसुराट ।

सुर-सोटो—*(न०)* एक वाद्य ।

सुर-स्वामी—*(न०)* १. विष्णु । २. इन्द्र ।

सुरह—*(ना०)* १. दान में दी हुई भूमि का सीमा पत्थर, जिस पर गाय (सुरभि) अंकित की हुई होती है जिससे कोई उसे अन्य हथियावे नहीं। (गो हत्या का पाप न लगे) । २. उक्त उल्लेख और चिन्ह का शिलालेख ।

सुरहरी—*(ना०)* गाय । सुरहल ।

सुरहल—*(ना०)* गाय । सुरहरी । सुरहली । दे० सुरहलिया ।

सुरहलिया—*(न०)* एक कर्णाभूषण ।

सुरहली—दे० सुरहल ।

सुरह-लेख—*(न०)* दान में दी हुई भूमि का वह सीमा-प्रस्तर, जिस पर गाय की मूर्त्ति के नीचे दान में दी हुई भूमि को छीन लेने वाले को गौहत्या का पाप लगने संबंधी लेख होता है । सुरभि-लेख ।

सुरही—*(ना०)* गाय । गौ । सुरभि ।

सुरंग—*(न०)* १. बढ़िया रंग । २. लाल रंग का एक घोड़ा । ३. जमीन या पर्वत के भीतर का मार्ग । ४. बारूद से पहाड़ तोड़ने की एक युक्ति । ५. खानों में पत्थर तोड़ने का एक बारूदी उपकरण । डाइनेमाइट । ६. युद्ध में शत्रुसेना को तहस-नहस करने के लिये जमीन और पानी में बिछाई जाने वाली बारूदी वस्तु । ७. उत्सव । *(वि०)* १. सुन्दर रंगवाला । २. आँखों को तृप्तिदायक ।

सुरंगी—*(वि०)* १. सुंदर । मनोहर । २. अच्छे रंग वाली । ३ लुभावनी ।

सुरंगो—*(वि०)* १. सुंदर रंगों वाला । २. रम्य । सुन्दर । ३. सुहावना । लुभावना ।

सुरा—*(ना०)* शराब । दारू ।

सुराख—*(न०)* छिद्र । छेद । तीणो । ठींडो ।

सुराग—*(न०)* षड्यंत्र आदि की जानकारी देने वाला तत्व । गुप्त बात, रहस्य या अपराधी का पता देने वाला सूत्र । *(ना०)* अच्छी रागिनी ।

सुराग-मिलणो—*(मुहा०)* रहस्य या षड्यंत्र का पता लगना ।

सुरा-गाय—*(ना०)* हिमालय क्षेत्र की गुच्छेदार पूँछ वाली एक गाय, जिसकी पूंछ के बालों के चँवर बनते हैं ।

सुराज—*(न०)* १. स्वराज्य । २. अच्छा राज्य ।

सुराट—*(न०)* इन्द्र ।

सुराण—*(न०)* १. देवता । २. देवगण । ३. अच्छा राजा ।

सुरापान—*(न०)* मदिरापान । मद्यपान ।

सुरार—दे० सुरारि ।

सुरारि—*(न०)* देवताओं का शत्रु । दैत्य । राक्षस ।

सुरालय—*(न०)* १. स्वर्ग । २. शराबघर । ३. देवालय ।

सुरासण—*(न०)* १. इंद्रासन । २. सुराशन । अमृत ।

सुरासुर—*(न०ब०व०)* सुर और असुर । देवदानव ।

सुराह—दे० सुमारग ।

सुराही—*(ना०)* जल रखने का लंबी गरदन वाला मिट्टी या धातु का पात्र । **भुड़को । चंबू । कुंजो ।**

सुराँगुर—दे० सुरगुर ।

सुराँ-मुख—*(ना०)* अग्नि ।

सुराँभुर—*(न०)* त्रिदेव । ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

सुराँराय—*(ना०)* शक्ति । दुर्गा । महामाया ।

सुराँसुर—*(न०)* १. इन्द्र । २. देव-दानव । सुर और असुर ।

सुरिजण—दे० सुरीयण ।

सुरिंद—*(न०)* इंद्र ।

सुरीयण—*(न०)* देवता लोग । देवसमूह ।

सुरीस—दे० सुरेश ।

सुरूंख—*(न०)* चंदनवृक्ष ।

सुरेख—*(वि०)* सुन्दर । मनोहर ।

सुरेव—*(अव्य०)* १. देवताओं ने । २. देवताओं को । *(न०)* देवगण ।

सुरेश—*(न०)* इन्द्र ।

सुरेसर—*(न०)* इन्द्र ।

सुरेंद्र—दे० सुरिंद ।

सुरैं—*(ना०)* १. दान में दी हुई भूमि पर या उसके सीमांकन पर रोपा जाने वाला तत्संबंधी शिलालेख जिस पर गाय और बछड़े का अंकन किया हुआ होता है । सुरभि पुत्तलिका शिलालेख । **सुरह लेख** । २. सीमा प्रस्तर । ३. गाय । दे० **सुरह** ।

सुरुपोत—*(अव्य०)* पहले-पहल । **शुरू-शुरू में** ।

सुर्खी—*(ना०)* १. ललाई । **रतापणो** । २. क्रोध, नशा आदि से आँख में आने वाली ललाई । **रतास** । ३. क्रोध । ४. विवाद में आने वाली तेजी या उग्रता । ५. वस्तु के भाव का बढ़ना । भाव में आने वाली तेजी । ६ महँगाई ।

सुलखण—*(न०)* सुलक्षण । अच्छा गुण ।

सुलखणी—*(वि०)* अच्छे लक्षणों वाली ।

सुलखणो—*(वि०)* अच्छे लक्षणों वाला ।

सुलखो—*(वि०)* १. प्रसन्न । २. अच्छे लक्षणों वाला । 'विलखो' का उलटा ।

सुळगणो—दे० सळगणो ।

सुलगन—*(न०)* शुभ मुहूर्त्त ।

सुळझणो—*(क्रि०)* १. सुलझना । २. निपटारा होना । ३. किसी वस्तु या बात की उलझन का मिटना ।

सुळझारो—*(न०)* निपटारा । फैसला । **तसफियो** ।

सुळझावणो—*(क्रि०)* १. सुलझा देना । २. (ऋण) चुका देना । ३. मारना । ४. निबटाना । ५. झगड़ा टंटा मिटाना । ६. बदला लेना ।

सुलटी—*(वि०)* उलटी नहीं । सीधी ।

सुलटो—*(वि०)* १. सीधा। सवो। 'उलटो' के विरुद्ध। २. अनुकूल।

सुळणो—*(क्रि०)* लकड़ी आदि किसी वस्तु में ऐसा विकार पैदा होना जिससे वह निःसत्व और निर्वीर्य होकर निर्बल एवं खोखली हो जाती हैं। सड़ना। जीर्ण होना। क्षीण होना। लकड़ी अनाज आदि में कीड़ा लगना।

सुलताण—*(न०)* बादशाह। मुसलमान बादशाह। सुरताण।

सुलफी—*(ना०)* १. तम्बाकू गांजा आदि पीने की चिलम। २. छोटी चिलम।

सुलफो—*(न०)* १. सुलफी (चिलम) में पीने का एक मादक द्रव्य। चरस। २. तमाकू। जरदो।

सुलभ—*(वि०)* आसानी से उपलब्ध। आसान।

सुलव—*(न०)* गंधक।

सुलह—*(ना०)* १. मेल मिलाप। २. संधि। सुलेह।

सुलहनामो—*(न०)* संधिपत्र।

सुलंक—*(ना०)* सुंदर कटि। पतली कमर। डींभू लंक।

सुलंकी—*(वि०)* सुंदर कटि वाली। पतली कमर वाली। *(ना०)* सुंदर कटि वाली स्त्री। डींभूलंकी। सीहलंकी।

सुळियोड़ो—*(वि०)* १. निःसत्व। क्षीण। २. जीर्ण। ३. विकारग्रस्त। ४. सड़ा हुआ। जिसमें 'सुळो' लग गया हो।

सुलेमान—*(न०)* १ एक पर्वत। २. यहूदियों का बादशाह।

सुलेमानी—*(वि०)* १. सुलेमान का। २. एक पाचक नमक।

सुळो—*(न०)* १. क्षीणता। २. जीर्णता। ३. रोग। ४. सड़ान। ५. वल्मीक दीमक। उदई। ६. बीमारी का घर कर जाना। लंबी बीमारी। ७. लकड़ी आदि का वह खोखलापन जो पानी, दीमक आदि लगने से बन जाता है। ८. सुळने की क्रिया या भाव।

सुलोचना—*(वि०)* सुंदर नेत्रों वाली। *(ना०)* सुंदर स्त्री। सुंदर नेत्रों वाली स्त्री।

सुलोयणी—दे० सुलोचना।

सुल्टो—दे० सुलटो।

सुव—*(न०)* पुत्र। बेटो।

सुवचन—*(न०)* १. शुभ या कल्याणकारी वचन। २. सुभाषित।

सुवदनी—*(वि०)* सुंदर मुखवाली। सुवदना। सुमुखी।

सुवप—*(न०)* १. शरीर। सुंदर शरीर। *(वि०)* सुन्दर।

सुवरण—दे० सुवर्ण।

सुवर्ण—*(न०)* १. सोना। स्वर्ण। कनक। २. संपत्ति। ३. धतूरा। ४. सोलह माशे का एक मान। ५. सुनहला रंग। ६. सुंदर रंग। ७. उच्चवर्ण। श्रेष्ठ वर्ण। ८. ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण। ९. द्विजवर्ण। *(वि०)* १. सुंदर रंग वाला। २. सुनहला।

सुवर्ण-माक्षिक—*(ना०)* एक धातु। दे० सोनामाखी।

सुवंग—*(अव्य०)* १. ढंग से। सुव्यवस्था से। २. सुविधा से। ३. भली प्रकार से। *(न०)* अच्छा ढंग।

सुवागण—*(ना०)* सुहागिन। सौभाग्यशालिनी।

सुवागो—*(न०)* स्त्री की सौभाग्यसूचक मंगल सामग्री।

सुवाट—*(न०)* सन्मार्ग । सुमारग ।
सुवाड़—दे० सुआवड़ ।
सुवाड़ी—दे० सुवावड़ी ।
सुवाण—*(ना०)* अच्छी वाणी । मीठी बोली । मिष्ट भाषण ।
सुवाणी—*(ना०)* १. सरस्वती । २. दे० सुवाण ।
सुवाद—दे० स्वाद ।
सुवारोग—दे० सुआ-रोग ।
सुवावाड़—*(ना०)* १. प्रसूति । सुआवड़ । २. प्रसव । ३. प्रसूता के लिये बनाया जाने वाला शुंठि पाकादि पौष्टिक पदार्थ ।
सुवावड़ी—*(ना०)* प्रसूता ।
सुवास—*(ना०)* १. सुगंधी । सुसबो । २. यश । कीर्त्ति । ३. सुंदर घर । ४. सुंदर वस्त्रादि से युक्त ।
सुवासण—दे० सुवासणी ।
सुवासणी—*(ना०)* १. सौभाग्यवती बहिन-बेटी । २. बहिन-बेटी । ३. सौभाग्यवती स्त्री । ४. कुमारी कन्या ।
सुवासणो—*(न०)* १. बहिन या बेटी का पुत्र । *(वि०)* सुवासित । २. अच्छी सुगंध वाला ।
सुवासियो—*(वि०)* सुवासित ।
सुवो—*(न०)* तोता ।
सुव्रख—*(न०)* १. पीपल वृक्ष । सुवृक्ष । २. चंदन वृक्ष ।
सुश्रेय—*(न०)* कुशल ।
सुसकल्यो—*(न०)* खरगोश ।
सुसणो—*(क्रि०)* १. सोखना । पानी या नमी का सूख जाना या कम हो जाना । २. चूसना ।
सुसनेही—*(वि०)* १. सच्चा । स्नेही । २. मित्र । दोस्त । ३. समधी । बेवाई ।
सुसबद—*(न०)* १. कीर्त्ति । यश । जस । २. मधुर शब्द । ३. उत्तम कविता । कविता ।
सुसमो—*(क्रि०वि०)* १. सावधान । होशियार । २. तैयार । *(वि०)* १. फुरती वाला । फुर्तीला । २. संपन्न । *(न०)* अच्छा समय ।
सुसर—*(न०)* १. पवन । २. सुस्वर । ३. ससुर । ससुरा ।
सुसरनंद—*(न०)* हनुमान ।
सुसरी—*(ना०)* पत्नी या पति की माता । सासु ।
सुसरो—*(न०)* ससुर । पति या पत्नी का पिता ।
सुसल्यो—*(न०)* खरगोश । सुसियो ।
सुसा—*(ना०)* बहिन ।
सुसाणी देवी—*(ना०)* ओसवालों की सुराणा और डूगड़ खांप वालों की एक देवी । (नागोर के सतीदास सुराणा की बेटी सुसाणी जिसकी सगाई एक डूगड़ के यहाँ की थी । कहा जाता है कि सुसाणी मोरखाणा गाँव में कँवारी ही जमीन में प्रवेश कर गई थी ।
सुसियो—*(न०)* खरगोश । सुसल्यो ।
सुसी—*(ना०)* १. सुसियो । (सुसो की मादा) । २. एक प्रकार का वस्त्र ।
सुसेय—दे० सुश्रेय ।
सुसो—*(न०)* खरगोश । सुसियो ।
सुस्त—*(वि०)* आलसी ।
सुस्तावणो—*(क्रि०)* १. ठहरना । २. विश्राम लेना । ३. धीरे चलना । ४. धीरज रखना । ५. प्रतीक्षा करना ।
सुस्ती—*(ना०)* आलस्य । आळस ।
सुहड़—*(न०)* सुभट । शूरवीर । सुभड़ ।

सुहड़ाभरण—*(वि०)* सुभट शिरोमणि ।

सुहाग—*(न०)* १. स्त्री के सधवा रहने की स्थिति या अवस्था । सौभाग्य ।

सुहागण—*(वि०)* १. सधवा, सौभाग्यशालिनी । २. अनेक पत्नियों में से वह पत्नी जिस पर पति की अधिक कृपा व प्रेम हो, समादृता । कृपापात्री । 'दुहागण' का उलटा ।

सुहागता—*(ना०)* १. सौभाग्य । २. सुहाग ।

सुहाणो—*(वि०)* सुहावना । *(क्रि०)* अच्छा लगना । सुहाना ।

सुहामणो—*(वि०)* १. सुहावना । अच्छा । २. सुन्दर । **सुहाणो** ।

सुहावउ—*(वि०)* १. सुहावना । २. सुंदर । **सुहावो** । २. सुशोभित ।

सुहावो—दे० सुहावउ ।

सुहावणो—*(क्रि०)* १. अच्छा लगना । मन लगना । २. शोभित होना । *(वि०)* १. सुहावना । सुंदर । २. अच्छा ।

सुहासणी—*(ना०)* १. बहिन व बेटी । २. बहिन व बेटी की सौभाग्य सूचक संज्ञा । सुभ । बहिन व बेटी की पुत्रियाँ-पौत्रियाँ । २. दे० सुवासणी । ३. मधुर हास्यवाली होने के कारण विवाह के समय कन्या को सुहासिनी नाम से अभिहित करके माता-पिता उसका दान करते हैं । अतः वह 'सुहासणी' कहलाती है । माता-पिता 'सुहासणी' के यहाँ भोजन नहीं करते । *(वि०)* मधुर मुसकान वाली । सुंदर हास्यवाली ।

सुहासणो—*(न०)* बहिन व बेटी के पुत्र-पौत्र ।

सुहिणो—*(न०)* स्वप्न ।

सुहो—दे० सूहो ।

सुहृद—(न०) मित्र । सखा । भायलो । साथी ।

सुँआर—दे० स्वाँर ।

सुंआळी—दे० सुआळो ।

सुंआळो—*(वि०)* १. सुकोमल । मुलायम । २. नरम । ३. सचिक्कन । जो खुरदरा न हो ।

सुंई—*(ना०)* १. अनुकूल । २. सुलटी । सम्मी । ३. एक समान ।

सुंओ—*(वि०)* १. सीधा । सुलटा । सम्मो । २. व्यवस्थित । ३. दुरुस्त । ४. एक समान । ५. अनुकूल ।

सुंडा—*(ना०)* शराब । मद्य । दारू ।

सुंडाडंड—*(न०)* १. हाथी । २. गणेश । ३. हाथी की सूंड ।

सुंडाळ—दे० सुंडाडंड ।

सुंड़ाळो—दे० सुंडाडंड ।

सुंदर—*(वि०)* १. रूपवान । २. खूबसूरत । ३. अच्छा । भला ।

सुंदरड़ी—*(ना०)* एक घास ।

सुंदरता—*(ना०)* १. सौंदर्य । खूबसूरती । २. रूप ।

सुंदरदास—*(न०)* द्यौसा (जयपुर) के निवासी दादूदयाल के शिष्य । यह बड़े विद्वान संत थे । 'सुन्दर विलास' के रचयिता प्रसिद्ध संत कवि ।

सुंदरी—*(वि०)* सुंदर स्त्री ।

सुंवारणो—दे० संवारणो ।

सुंवाळो—*(वि०)* १. चिकना । २. कोमल ।

सुंवो—दे० सुंओ ।

सुंहणो—*(वि०)* सस्ता । **सुंघो** । **सोंघो** ।

सुंहाळी—*(न०)* १. एक फल । २. एक पकवान । **खाजो** । ३. पूरी । ४. सुपारी । *(वि०)* १. सचिक्कन । २. मुलायम ।

सू—*(प्र०)* शब्दांत में लग कर उत्पन्न करने वाला अर्थसूचक प्रत्यय ।

सूअर—*(ना०)* १. वराह । सूकर । शूकर । सूर । २. एक गाली । *(वि०)* १. नीच । २. नालायक ।

सूअरड़ी—*(ना०)* सूअर की मादा । शूकरी । सूअरी ।

सूई—*(ना०)* १. सीने का एक पतला, नुकीला लोहे का उपकरण, जिसके एक सिरे के छेद में धागा पिरो कर कपड़ा आदि सिया जाता है । सूची । शूची । २. घड़ी का काँटा । ३. बहुत बारीक सूई जैसी पतली नली वाला उपकरण जिसको शरीर में चुभा कर भीतर दवा पहुँचाई जाती है । इंजेक्शन ।

सूई-डोरो—*(ना०)* १. सूई और तागा । २. मलखंभ की एक कसरत ।

सूईधार—*(ना०)* दरजी । शूचीधर ।

सूई-री-अणी—*(ना०)* १. सूई की नोक । २. अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु । ३. बहुत थोड़ी वस्तु ।

सूई लगावणो—*(मुहा०)* इंजेक्शन देना ।

सूक—*(ना०)* नमी का अभाव । सूखापन ।

सूकड़ी—*(ना०)* राजस्थान की एक नदी जो जालोर के पास लूनी में मिलती है ।

सूकणो—दे० सूखणो ।

सूकमाँज—*(ना०)* बरतनों को साफ करने का एक प्रकार, जिसमें मिट्टी या राख से साफ करने के बाद उनको पानी से धोया नहीं जाता ।

सूकर—*(ना०)* सूअर । शूकर । वराह ।

सूकर-क्षेत्र—*(ना०)* एक प्राचीन तीर्थ का नाम । शूकर क्षेत्र ।

सूकरी—*(ना०)* मादा सूकर । शूकरी । सूअरी । सूअरणी । सूअरड़ी ।

सूकल—*(ना०)* अच्छी चाल न चलने वाला घोड़ा । *(वि०)* सूखा हुआ ।

सूकलकड़ी—*(वि०)* १. लकड़ी की तरह सूखा हुआ । दुर्बल । अशक्त । २. दुबला-पतला । पतला ।

सूकी खाज—*(ना०)* खुजली जिसमें फुंसी नहीं उठती, केवल खुजली चलती है ।

सूकी खाँसी—*(ना०)* खाँसी जिसमें बलगम नहीं निकलता ।

सूकी तनखा—*(ना०)* तनख्वाह जिसके साथ भोजन, कपड़ा, महँगाई इत्यादि का भत्ता नहीं मिलता । केवल वेतन । मुकर्रर तनख्वाह ।

सूकी तरकारी—*(ना०)* तरकारी जिसमें रसा नहीं होता ।

सूकी दैणगी—*(ना०)* दैनिक पारिश्रमिक जिसके साथ भोजन या चिलम-बीड़ी नहीं दिया जाता । केवल मजदूरी के निश्चित पैसे ।

सूकी भाखरी—दे० सूकी मगरी ।

सूकी मगरी—*(ना०)* पहाड़ी जिस पर हरियाली न हो । सूकी डूंगरी ।

सूकी मजूरी—दे० सूकी दैणगी ।

सूकी-मिरच—*(ना०)* सूखी हुई लाल मिर्च जिसको पीस कर साग में डालते हैं ।

सूकी-रोटी—*(ना०)* १. बासी और सूखी रोटी । २. गरीबी खाना ।

सूकी-लकड़ी—दे० सूक लकड़ी ।

सूको—*(ना०)* तम्बाकू का सूखा पत्ता । जरदा । भूको । दे० सूखो । *(वि०)* १. सूखा हुआ । जल, रस, नमी आदि से रहित । *(ना०)* दुष्काल । काळ ।

सूको-काळ—*(न०)* वर्षा के अभाव में पड़ा हुआ दुष्काल । अकाळ । दुकाळ ।

सूको-खड़—*(न०)* सूखा हुआ घास ।

सूको-खणाक—*(वि०)* बिलकुल सूखा हुआ ।

सूको-घा—*दे०* सूको घास ।

सूको-घास—*दे०* सूको खड़ ।

सूको-चारो—*दे०* सूको खड़ ।

सूको-जवाब—*(न०)* साफ इनकार ।

सूको-टुकड़ो—*(न०)* १. निर्धन का भोजन । २. रोटी का सूखा और बासी टुकड़ा ।

सूकोड़ी—*(भू०कृ०)* १. सूखी हुई । २. निर्बल । पतली ।

सूको डूंगर—*(न०)* पानी और हरियाली रहित पहाड़ ।

सूकोड़ो—*(भू०कृ०)* १. सूखा हुआ । २. निर्बल । पतला ।

सूको-दुकाळ—*(न०)* अनावृष्टि जनित दुष्काल । सूखा दुकाल । सूको काळ ।

सूको-परबत—*दे०* सूको डूंगर ।

सूको पड़णो—*(मुहा०)* दुष्काल होना । काळ पड़णो ।

सूको-बासी—*(वि०)* सूखा और बासी (भोजन) ।

सूको भाखर—*दे०* सूको डूंगर ।

सूको मगरो—*दे०* सूको डूंगर ।

सूको-मेवो—*(न०)* बादाम, पिस्ता, किसमिस इत्यादि सूखे फल ।

सूको-सट—*दे०* सूको खणक ।

सूको-साग—*(न०)* उबाल कर सुखाई हुई सांगरी, ग्वारफली, कैर, हेलारिया इत्यादि ।

सूको-हेत—*(न०)* ऊपर-ऊपर का हेत । मुंह देखा स्नेह । खोटा प्यार ।

सूक्ति—*(ना०)* उत्तम या सुन्दर पद. वाक्यादि । सुभाषित ।

सूक्ष्म—*(वि०)* सूक्ष्म । बहुत छोटा, बारीक या महीन । *(न०)* १. अणु । परमाणु । २. एक काव्यालंकार । ३. परब्रह्म ।

सूख-चमड़—*(वि०)* १. सूखी चमड़ी वाला । जिसकी चमड़ी में खून न हो । दुबला-पतला । २. वृद्ध ।

सूखणो—*(क्रि०)* १. शुष्क होना । २. किसी वस्तु से गीलापन, आर्द्रता आदि का मिट जाना । ३. दुर्बल होना । ४. निस्तेज होना या निःसत्व होना । जलाभाव में पेड़ आदि का सूखना । सूकणो ।

सूखा टुकड़ा—*(न०ब०व०)* १. रोटी के सूखे टुकड़े । २. निर्धन का भोजन ।

सूखाणी—*(वि०)* सूखी हुई । *(भू०क्रि०)* सूख गई । सूकाणी ।

सूखी-खाज—*(ना०)* एक प्रकार की सूखी खुजली ।

सूखी-तनखा—*(ना०)* वह वेतन जिसके साथ भोजन, कपड़ा, महँगाई इत्यादि का भत्ता न हो । सिर्फ तनख्वाह ।

सूखी तरकारी—*(ना०)* बिना रसे की तरकारी ।

सूखो—*(वि०)* १. जिसमें जल तत्व न हो । सूखा हुआ । सूखा । २. निस्तेज । ३. हरेपन या जीवन शक्ति से रहित । ४. नीरस । ५. दुबला । कृशांग । *(न०)* १. शरीर सूखने का रोग । २. अनावृष्टि । ३. दुकाल । अकाल । काळ । ४. सूखी तम्बाकू । जरदा । सूको ।

सूखो जवाब—*(न०)* साफ इनकार ।

सूग—*(ना०)* १. घृणा। नफरत। घिरणा। २. अरुचि। ३. दुर्गंध। ४. उपेक्षा।

सूग-आणो—दे० सूग आवणो।

सूग आवणी—*(मुहा०)* घृणा होना।

सूगल—दे० सूगलो।

सूगलपणो—*(ना०)* १. गंदगी। मैलापन। घृणित्र काम।

सूगलवाड़ो—*(ना०)* १. गंदा स्थान। २. मैली सड़ी गली वस्तुएँ। ३. अपवित्रता। अस्वच्छता। अशुद्धता। ४. मल। ५. अव्यवस्था। ६. भ्रष्टाचार। ७. रिश्वतखोरी।

सूगलाई—दे० सूगलपणो।

सूगलियाड़ो—सूगलवाड़ो।

सूगली—*(वि०)* १. घृणित। २. गंदी। ३. कुलटा।

सूगलो—*(वि०)* १. घृणित। २. दूषित। ३. मैला। गंदा। खराब। ४. निंदनीय। गर्हित। ५. घृणा के योग्य।

सूगसाग—*(ना०)* १. सूग और सूग जैसी कोई वस्तु। २. घृणा, उपेक्षा, दुर्गंध आदि।

सूगामण—*(ना०)* १. उपेक्षा। नफरत। २. घृणा। सूग। ३. दुर्गंध।

सूगामणी—दे० सूगामण।

सूगामणो—*(क्रि०)* १. नफरत करना। घृणा करना। २. उपेक्षा करना। ३. दुर्गंध पैदा करना। बदबू आना। *(वि०)* १. घृणा युक्त। २. उपेक्षित। ३. नफरत वाला।

सूगावणो—*(क्रि०)* १. ठुकराना। २. तिरस्कार करना। ३. अवज्ञा करना। ४. घृणा करना।

सूगीजणो—*(क्रि०)* १. घृणापात्र होना। २. दुर्गंधयुक्त होना। बासना।

सूचन—*(न०)* १. जताने या बनाने की क्रिया। २. संकेत से बताना। ३. ध्यान दिलवाना। सूचना।

सूचना—*(ना०)* १. खबर। २. चेतावनी। ३. जानकारी। ६. पूर्व जानकारी। ५. विज्ञप्ति। इश्तहार। ४. खबर।

सूची—*(ना०)* १. वस्तुओं की नामावली। फहरिस्त। टीप। लिस्ट। २. चीजों या नामों इत्यादि का क्रमबद्ध विवरण। अनुक्रमणिका।

सूची-पत्र—*(न०)* वह पुस्तिका जिसमें कई वस्तुओं की नामावली, विवरण और मूल्य इत्यादि दिये हुए हों।

सूची-मुख—*(न०)* १. चूहा। मूषक। २. सुई का छेद।

सूज—दे० सोजो।

सूजणो—*(क्रि०)* विकार के कारण शरीर या उसके किसी अंग का फूल जाना। सूजन होना। सूजना।

सूजन—*(ना०)* अंग के सूजे या फूले जाने की (होने की) अवस्था, स्थिति या भाव। शोथ। सूज। सोजो।

सूजाक—*(न०)* मूत्रेन्द्रिय का एक रोग।

सूजाको—दे० सूझाको।

सूजियोड़ो—दे० सूज्योड़ो।

सूजी—*(ना०)* गेहूं का दरदरा आटा। मोटा आटा। रवो। हलवा बनाने के लिये बनाया हुआ गेहूं का रवा।

सूज्योड़ो—*(भू०कृ०)* सूजा हुआ। सूजन वाला।

सूझ—*(ना०)* १. बुद्धि। २. उपज। ३. सूझने का भाव या क्रिया। ४. कल्पना। ५. दृष्टि।

सूझणो—*(क्रि०)* १. समय या मुहूर्त्त का अनुकूल होना। २. ग्रहों का अनुकूल होना। ३. सूझना। दिखाई देना। ध्यान में आना।

सूझ-बूझ—*(न०)* १. देखने या समझने की शक्ति। २. अक्ल। ३. समझ।

सूझवाळो—*(वि०)* १. बुद्धिमान। २. अक्लमंद। ३. कल्पनाशील।

सूझाको—*(न०)* १. प्रभात। उषाकाल। **सुझाको। जांझरको।** २. दृष्टि। नजर। **दीठ।**

सूझाणो—*(क्रि०)* १. बताना। २. सुझाव देना। ३. सूचित करना। ध्यान में लाना।

सूझापो—*(न०)* दीखने का भाव। दृष्टि।

सूझियोड़ो—*(भू० कृ०)* देखा हुआ। **जोयोड़ो।**

सूझ्योड़ो—*दे०* सूझियोड़ो।

सूट—*(न०)* १. पेंट और कोट। (एक ही कपड़े के)। २. ओढ़ना, ब्लाउज और लहंगा इत्यादि पहनने के सभी कपड़े। पोशाक। **बेस।**

सूटकेस—*(न०)* कपड़े रखने की चमड़े की पेटी।

सूड़—*(न०)* खेत बोने के पहिले खेत में उगे झाड़-झंखाड़ को काट कर जमीन को साफ करने की क्रिया।

सूड़णो—*(क्रि०)* १. खूब मार मारना। बेंत से मारना। २. खेत में सूड़ करना। ३. क्षुप, घास आदि को जड़ से उखाड़ना।

सूड़ी—*(ना०)* सरोता। सुपारी काटने का उपकरण।

सूड़ो—*(न०)* १. तोता। २. मोटा सरोता।

सूण—*(न०)* १. शकुन। २. शयन। ३. शून्य। **सुन।**

सूणघर—*(न०)* शयनगृह।

सूणहर—*(न०)* शयनगृह। शयनागार। **सोवणघर।**

सूणो—*(क्रि०)* सोना। लेटना। **सूवणो।**

सूत—*(न०)* १. रूई को बुन कर बनाया हुआ धागा। सूत्र। २. सारथी। ३. यज्ञोपवीत। ४. यश गाने वाले चारण-भाटादि। ५. क्षत्रिय पुरुष और ब्राह्मण स्त्री से उत्पन्न संतान। ६. आभूषण। गहना। ७. एक मुनि का नाम जिन्होंने नैमिषारण्य में अठासी हजार ऋषियों को महाभारत की कथा सुनाई थी।

सूतक—*(न०)* १. जन्म अशौच। २. मरण अशौच। ३. सूर्य-चंद्र ग्रहण अशौच।

सूतक-घर—*(न०)* सूतिकागृह।

सूतड़लो—*(न०)* आभूषण। गहना। (ऊनवाचक) **गेहणो। सूत।**

सूतपाळ—*(न०)* महादानी कर्ण। सूतजी द्वारा पालित सूर्य पुत्र कर्ण।

सूत-पुत्र—*(न०)* कर्ण। *दे०* **सूतपाळ।**

सूतबंध—*(वि०)* व्यवस्थित।

सूत-मुनि—*दे०* सूत सं० ७.

सूतर—*(न०)* धागा। सूत्र। **सूत।**

सूतराऊ—*(वि०)* १. सूत का बना हुआ। सूती। २. सूत संबंधी।

सूतरियो—*(न०)* १. सूत का व्यापार करने वाला। २. दर्जी। ३. बुनकर।

सूतळी—*(ना०)* सुतली।

सूती—*(वि०)* १. सूत से बना हुआ। २. सूत का। **सूतराऊ।** *(भू०कृ०)* सोई हुई।

सूती-गंगा—*(अव्य०)* १. कोई हलचल नहीं। शांत वातावरण। २. शांति। ३. हल्ब मामूल।

सूतो—*(भू०कृ०)* सोया हुआ। *(क्रि०भू०)* सो गया।

सूतोड़ी—*(भू०कृ०)* सोई हुई।

सूतोड़ो—*(भू०कृ०)* सोया हुआ।

सूत्यो—दे० सूतो।

सूत्र—*(न०)* १. सूत। धागा। २. किसी सिद्धान्त का संक्षिप्त में किया गया कथन, वाक्य आदि।

सूत्रधर—*(न०)* १. नाट्यशाला का संचालक। २. नाटक के कथासूत्र की ओर संकेत करने वाला प्रारंभिक पात्र। ३. दरजी। ४. बढ़ई। ५. कठपुतली नचाने वाला।

सूत्रधार—*(न०)* १. सुथार। रथकार। २. राजगीर। ३. नाटक का प्रधान नट। ४. कठपुतलियाँ नचाने वाला।

सूत्राड़—दे० सूथराड़।

सूथण—*(न०)* पाजामा।

सूथराड़—*(न०)* १. सुथारों के मोहल्ले का वह चौक जहाँ बैठकर सुथार लोग अपना काम करते हैं। २. सुथारों का मोहल्ला। **खातरोड़**।

सूद—*(न०)* १. ब्याज। २. लाभ। ३. रसोइया। ४. व्यंजन।

सूदक-घर—*(न०)* रसोईघर। **रसोड़ो**।

सूदखोर—*(वि०)* १. अधिक ब्याज लेने वाला। २. ब्याज से जीविका चलाने वाला। ब्याज का धंधा करने वाला। ३. ब्याज खाऊ।

सूदखोरी—*(ना०)* सूदखोर का धंधा।

सूद-दर-सूद—*(न०)* ब्याज पर ब्याज। चक्रवृद्धि ब्याज।

सूदो—*(अव्य०)* १. शांत। २. शांति से। *(वि०)* १. सरल। सीधा। **सूधो**। २. शांत।

सूद्र—*(न०)* शूद्र। *(वि०)* नीच।

सूद्रक—*(न०)* शूद्र।

सूध—*(ना०)* मार्गदर्शन। दे० सीध।

सूधावाणो—*(वि०)* सीधा। सुलटा।

सूधी—*(वि०)* १. वक्रता रहित। सीधी। २. सरल स्वभाववाली। पाधरी। ३. भोली। *(अव्य०)* १. सहित। समेत। २. तक। लग। **ताँई**।

सूधो—*(वि०)* १. सीधा। सरल। अवक्र। **पाधरो**। २. निष्कपट। सीधा-सादा। भोला-भाला। ३. शांत प्रकृति का। ४. आसान। सरल। ५. अनुकूल। ६. ६. दाहिना। *(अव्य०)* सहित। समेत। साथ।

सूधो-सणांक—दे० सीधो सणाक।

सून—*(ना०)* १. शून्य स्थान। २. बिंदी। **मींडो**। ३. पुत्र। **बेटो**। *(न०)* पुष्प। *(वि०)* निर्जन। उजाड़। सुनसान। सूना। **सूनो**।

सूनवाड़—*(ना०)* निर्जन स्थान। जनशून्य। **सून्याड़**।

सूनवेड़—दे० सूनवाड़।

सूनियाड़—दे० सूनवाड़।

सूनु—*(न०)* पुत्र। सुत। **बेटो**।

सूनेड़—*(वि०)* सुनसान। निर्जन। **सूनवाड़**।

सूनो—*(वि०)* १. निर्जन। २. उजड़। ३. रिक्त। खाली। ४. प्रिय या आवश्यक वस्तु के अभाव में होने वाली खटक।

सून्याड़—*(न०)* जनशून्य। निर्जन स्थान। एकान्त स्थान। सूनवाड़।

सून्याळ—दे० सून्याड़।

सून्यो—दे० सूनो।

सूप—*(न०)* १. दाल या तरकारी का पानी। रस। झोळ। २. मांस, फल आदि का रस। ३. छाज। सूपड़ो।

सूपकार—*(न०)* १. रसोइया। २. छाज बनाने वाला। सूपड़ियो।

सूपड़ी—*(ना०)* छोटा छाज। छाजळी।

सूपड़ो—*(न०)* छाज। सूप। शूर्प। छाजळो।

सूफ—*(न०)* १. एक फल। २. ऊन। ३. काली स्याही में डाला जाने वाला चिथड़ा।

सूफी—*(न०)* १. सूफी सम्प्रदाय का अनुयायी। सूफी मत संबंधी।

सूबायत—दे० सोबायत।

सूबेदार—*(न०)* १. प्रांत का प्रधान शासक। २. सेना में एक पद। ३. भारतीय पदाति सेना में एक जूनियर कमीशंड ऑफिसर का पद। ४. इस पद पर रहने वाला अधिकारी।

सूबेदारी—*(ना०)* सूबेदार का पद या काम।

सूबो—*(न०)* १. सूबा। प्रान्त। २. सूबे का अधिकारी।

सूभर—*(ना०)* १. गर्भवती घोड़ी। २. गर्भवती मादा पशु। *(वि०)* सुन्दर।

सूम—*(वि०)* कृपण। कंजूस। मूंजी।

सूमड़ो—*(वि०)* १. कपटी। छली। २. अपने मनोभावों को प्रगट नहीं अन्दर ही करने वाला। घुन्नो।

सूमणा—*(ना०)* १. सूम की स्त्री। २. कंजूस स्त्री।

सूयो—*(न०)* सूइया। वारदाना आदि सीने का सूआ।

सूर—*(न०)* १. सूर्य। २. पंडित। ३. सूअर। ४. श्रीकृष्ण का भक्त सूरदास। *(वि०)* शूर वीर।

सूरकांत—*(ना०)* सूर्यकान्त मणि। सूरज-असम।

सूरकुळ—*(न०)* सूर्यवंश।

सूरक्रष्ट—*(न०)* कवि।

सूरज—*(न०)* सूर्य। रवि। सूरजी।

सूरज-असम—*(ना०)* सूर्यकांतमणि।

सूरज-उगाळी—*(ना०)* सूर्योदय। प्रातःकाल। भोर।

सूरज-कूंडाळो—*(न०)* १. सूर्य मंडल। सूर्य बिंब। २. गेंद का एक खेल।

सूरज-ग्रहण—*(न०)* पृथ्वी और सूर्य के मध्य चंद्रमा के आजाने तथा उसकी छाया से पड़ने वाला एक ग्रहण। सूर्य का ग्रहण।

सूरज-चाँद—*(न०)* १. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। २. सूरज और चाँद। ३. पुत्र और पुत्र वधू।

सूरज-जा—*(ना०)* यमुना। जमना।

सूरज-नाड़ो—*(ना०)* पिंगला नाड़ी।

सूरजपसाव—*(न०)* जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के घोड़े का नाम।

सूरज-पुत्र—*(न०)* १. शनि। २. यम। ३. कर्ण। ४. सुग्रीव।

सूरज-पुत्री—*(ना०)* यमुना। जमनाजी।

सूरज पुराण—*(न०)* एक ग्रंथ का नाम।

सूरज-पूजा—*(ना०)* सूर्यनारायण की पूजा।

सूरज-प्रकाश—*(न०)* सूर्य की रोशनी।

सूरजमुखी—*(न०)* १. पीले रंग का एक फूल जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक निरंतर सूर्य की ओर मुख किये रहता है। २. एक पौधा, जिस पर सूर्यमुखी के फूल लगते हैं।

सूरजमल मीसण—*(न०)* वंश भास्कर, वीरसतसई के रचयिता बूंदी (राजस्थान) के प्रसिद्ध चारण कवि ।

सूरज-री-साख—*(अव्य०)* सूर्य के होते-होते । दिन थके । *(न०)* दिन ।

सूरजवंस—दे० सूर्यवंश ।

सूरजवंसी—दे० सूर्यवंशी ।

सूरजवार—*(न०)* रविवार । **अदीतवार** ।

सूरज-सुत—*(न०)* १. सुग्रीव । २. कर्ण । ३. शनि । ४. यम ।

सूरजसुता—*(ना०)* यमुना नदी । **जमना** ।

सूरजा—*(ना०)* यमुना । **जमना** । सूर्यजा ।

सूरजी—दे० सूरज ।

सूरजी-रो-साँड—*(न०)* सूर्य चिन्ह से दग्ध किया हुआ साँड । **गोधो** ।

सूर झटका करण—*(ना०)* तलवार ।

सूरड़ी—*(ना०)* १. सुअर की मादा । शूकरी । **सुअरड़ी** । २. एक गाली ।

सूरड़ो—दे० सूअर ।

सूरण—*(न०)* जमीकंद । सूरन ।

सूरत—*(न०)* १. शक्ल । २. आकृति । ३. युक्ति । उपाय । ४. होश । **चेत** । **चेतो** । ५. छबि । सौंदर्य । ६. याद । स्मरण । ७. गुजरात का ऐतिहासिक नगर ।

सूरतशाही—*(न०)* बीकानेर के राजा सूरतसिंह द्वारा प्रवर्तित रुपया ।

सूरती—*(ना०)* १. खाने की तमाकू । सुरती । खैनी । *(वि०)* १. सूरत संबंधी । २. सूरत का रहने वाला ।

सूरदास—*(न०)* १. ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवि जो प्रज्ञाचक्षुथे । २. अंधा । **आंधो** ।

सूरपण—*(न०)* वीरत्व । शौर्य । **सूरपणो** ।

सूरपणखा—*(ना०)* बड़े नखों वाली रावण की बहिन । शूर्पनखा ।

सूरपणो—*(न०)* शूरत्व । शूरता । शूर वीरता । शौर्य ।

सूरपति—*(न०)* १. राजा । २. बलवानों का बलवान । शूरपति । महायोद्धा ।

सूर-प्रथमाण—*(वि०)* शूरवीरों में प्रथम । शूरवीरों में प्रथम गिनती में आने वाला । शूराग्रणी ।

सूर-मंडळभिद—*(न०)* योद्धा ।

सूरमी—*(वि०)* शौर्यशाली । शूरवीर । वीरांगना ।

सूरमो—*(न०)* १. सौ सामंतों से अकेला युद्ध करने वाला महाशक्तिशाली सैनिक । २. शूरवीर । योद्धा ।

सूरवीर—*(वि०)* सूरमा । बड़ा वीर । शूरवीर । योद्धा ।

सूर-सागर—*(न०)* श्रीकृष्णभक्त कवि । सूरदास के पदों का प्रसिद्ध संग्रह-ग्रंथ ।

सूरात—*(ना०)* शूरता । शूरवीरता ।

सूरातण—*(न०)* शौर्य । **सूरात** । शूरवीरता ।

सूरातन—दे० सूरातण ।

सूरापण—*(न०)* शौर्य । शूरवीरता ।

सूरापणो—दे० सूरापण ।

सूरापो—*(न०)* १. शूरत्व । शूरवीरता । बहादुरी । २. पराक्रम ।

सूरियो—*(न०)* उत्तर दिशा का पवन ।

सूरो—*(न०)* शूरवीर । बहादुर ।

सूरो-खार—*(न०)* १. सुहागा । २. शोरा क्षार ।

सूरो-पूरो—*(वि०)* १. वीर और उदार । २. पूर्ण शूरवीर । ३. दानी । **दातार** ।

सूर्य—*(न०)* पृथ्वी को प्रकाश, ताप इत्यादि देने वाला एक ग्रह या गोला । रवि । भानु । आदित्य । **सूरज** ।

सूर्य-कन्या—*(ना०)* १. यमुना। जमुना। २. बिजली।

सूर्यकांत—*(ना०)* एक मणि।

सूर्य-कांति—*(ना०)* सूर्य का तेज।

सूर्य ग्रहण—*(न०)* सूर्य का ग्रहण।

सूर्यजा—*(ना०)* १. यमुना। २. बिजली।

सूर्य-नमस्कार—*(न०)* सूर्याभिमुख एक कसरत।

सूर्य-नाड़ी—*(ना०)* पिंगला नाड़ी।

सूर्यनारायण—*(न०)* सूर्य देव।

सूर्य-पुत्र—*(न०)* १. शनि। २. यम। ३. कर्ण। ४. सुग्रीव।

सूर्य पुत्री—*(ना०)* यमुना।

सूर्य-पूजा—*(ना०)* सूर्यनारायण की पूजा।

सूर्य-मंडल—*(न०)* १. सूर्य की परिधि। २. सूर्य बिंब।

सूर्य-मंदिर—*(न०)* सूर्य का मंदिर।

सूर्य-मुखी—दे० सूरजमुखी।

सूर्य लोक—*(न०)* सूर्य का लोक।

सूर्य वंश—*(न०)* एक प्रधान क्षत्रिय वंश।

सूर्य वंशी—*(वि०)* १. सूर्यवंश में उत्पन्न। २ सूर्य वंश का। ३. सूर्य वंश से संबंधित।

सूर्य वार—*(न०)* रविवार। सूरजवार।

सूर्य-संक्रांति—*(ना०)* सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि में संक्रमण या प्रवेश। संक्रांति।

सूर्य-सारथि—*(न०)* अरुण।

सूर्य सुत—दे० सूर्य पुत्र।

सूर्य-सुता—दे० सूर्य पुत्री।

सूर्य-सूक्त—*(न०)* सूर्य की स्तुति का एक वैदिक सूक्त।

सूर्या—*(ना०)* सूर्य की पत्नी। छाया।

सूर्याणी—सूर्या।

सूर्यास्त—*(न०)* १. सूर्य का अस्त होना। २. संध्याकाल। साँझ।

सूर्योदय—*(न०)* १. सूर्य का उदय होना। २. प्रातःकाल। प्रभात।

सूर्योपस्थान—*(न०)* सूर्य की उपासना।

सूर्योपासना—*(ना०)* सूर्य की उपासना या पूजा।

सूल—*(न०)* १. त्रिशूल। पाशुपतास्त्र। २. भाला। ३. दुःख। ४. दर्द। पीड़ा। शूल। ५. व्यवस्था। ६. दशा। ७. सलीका। शऊर। योग्यता। *(अव्य०)* १. प्रकार। भाँति। २. ढंग। प्रणाली। शैली। ३. भली प्रकार। अच्छे ढंग से। व्यवस्था से।

सूळ—*(न०)* १. बबूल का लंबा काँटा। २. काँटा। ३. त्रिशूल। ४. रह-रह कर पेट या छाती में उठने वाला दर्द। पीड़ा।

सूलधारी—*(न०)* महादेव।

सूलपाणि—*(न०)* महादेव। शूलपाणि। सूलधारी।

सूळहथ—*(न०)* महादेव। शंकर।

सूळहथी—*(ना०)* १. दुर्गा। २. पार्वती।

सूळिक—*(न०)* खरगोश।

सूळी—*(न०)* लोहे की नुकीली छड़ या खंभे से प्राणदंड देने का एक प्रकार। लोहे का नुकीला छड़ या खंभा जिसको मनुष्य के पेट या हृदय में घुसेड़ कर मृत्युदंड दिया जाता था। सूली।

सूळो—*(न०)* १. मांस से बना एक व्यंजन। २. लोहे सींक पर सेका जाने वाला एक व्यंजन।

सूलो—*(वि०)* सरल । सीधा । पाधरो । *(अव्य०)* भली प्रकार । अच्छे ढंग से । व्यवस्था से ।

सूवटियो—*(न०)* १. तोता । २. एक लोक गीत । ३. एक खिलौना ।

सूवटो—दे० सुवटियो ।

सूवणो—*(क्रि०)* शयन करना । नींद लेना । सोना । सूणो ।

सूवर—*(न०)* सूअर । शूकर ।

सूवरी—*(ना०)* सूअर की मादा ।

सूवो—*(न०)* तोता । सुग्गा ।

सूसी—*(ना०)* एक प्रकार का कपड़ा । लूसी ।

सूहव—*(ना०)* १. सधवा नारी । सौभाग्यवती । सुभगा । २. एक रागिनी ।

सूहो—*(न०)* १. एक रागिनी । २. एक लोकगीत । ३. तोता ।

सूं—*(प्रत्य०) (अव्य०)* १. तृतीय विभक्ति। करण या अपादान कारक का चिन्ह । 'से' । 'द्वारा' । २. क्यों । ३. 'क्यों कर' । ४. 'आरंभ करके' । ५. 'पूर्वक' । ६. 'की अपेक्षा' अर्थों के संबंध में प्रयुक्त । *(न०)* शपथ । सौगंध । आण । सौगन । *(सर्व०)* क्या । कांसू । कांई ।

सूंक—*(ना०)* १. रिश्वत । २. झगड़े लगा कर मिटाने की दलाली ।

सूंकप्रियो—*(वि०)* रिश्वतखोर । रिश्वत लेने वाला ।

सूंखड़ी—*(ना०)* १. विघोटी करके ऊपर लिया जाने वाला कर । २. कर की रकम के ऊपर लिया जाने वाला कर । सरचार्ज । ३. दस्तूरी । ४. दलाली । आढ़त । ५. रिश्वत । घूंस । सूंक । ६. मिठाई । सुखड़ी ।

सूंगणी—*(ना०)* तिल की फली ।

सूंगो—*(न०)* एक हिंदू जाति अथवा उक्त जाति का व्यक्ति । *(वि०)* सस्ता ।

सूंघणी—*(ना०)* सुंघनी । नसवार । हुलास । सूंघने की तमाकू । तपकीर । छींकणी । नाहका ।

सूंघणो—*(क्रि०)* नाक से गंध का अनुभव करना । सूंघना ।

सूंघवाड़ी—*(ना०)* सस्तापन ।

सूंघो—*(वि०)* सस्ता ।

सूंटी—*(ना०)* नाभि । टुंडी ।

सूंटो—*(न०)* बाहर निकली हुई या उपसी हुई नाभि ।

सूंठ—*(ना०)* सोंठ । शुंठि । सूखा हुआ अदरक ।

सूंठियो—*(न०)* सोंठ का हलवा । सूंठ रो सीरो ।

सूंड—*(ना०)* हाथी का नाक वाला लंबा अवयव । शुंड ।

सूंडहळ—*(न०)* १. हाथी । २. सूंड ।

सूंडलो—*(न०)* टोकरी । ओडी ।

सूंडाडंड—*(न०)* १. हाथी । २. गणेश । ३. सूंड ।

सूंडाळ—*(न०)* १. श्री गणेश । २. हाथी । *(वि०)* सूंड वाला ।

सूंडाळो—*(न०)* १. गणेश । गजानन । २. हाथी । *(वि०)* सूंडवाला ।

सूंडाहळ—*(न०)* १. श्रीगणेश । गजानन । २ हाथी ।

सूंडियो—*(न०)* सूंडवाला चमड़े का चरस । कोस । कोह । मोट ।

सूंडी—*(ना०)* नाभि । सूंटी ।

सूंतणो—*(क्रि०)* १. खींचना । २. खींच कर निचोड़ना । ३. प्रहार पर प्रहार

करना। ४. खूब मार-पीट करना। ५. जबरदस्ती किसी को अपनी ओर खींच कर मारना। ६. पतंग उड़ाने के लिये धागे पर काच की लुगदी लगाकर माँजा तैयार करना। ७. धागों में बल देकर बुनी हुई रस्सी के बल को जमाने के लिये गीले कपड़े से रगड़ना। ८. साँकल या कोड़े से मार मारना।

सूंतमी—*(वि०)* १. मोड़ी हुई। २. खींची हुई। ३. नोकदाली।

सूंतमो—*(वि०)* १. मोड़ा हुआ। २. खींचा हुआ। ३. नोकवाला।

सूंथण—दे० सूथण।

सूंथळ—दे० सूथण।

सूंधी—*(अव्य०)* १. सहित। साथ। २. तक। लग। लौं। ताईं।

सूंधो—*(अव्य०)* १. सहित। साथ। *(न०)* १. सुगंध। २. अंतर। ३. तक। लग।

सूंपणो—*(क्रि०)* १. सौंपना। सम्हलाना। २. देना।

सूंपियोड़ो—*(भू०कृ०)* सौंपा हुआ। सुपुर्द किया हुआ।

सूंपीजणो—*(क्रि०)* १. सौंपा जाना। २. दिया जाना। विरीजणो।

सूंफ—*(ना०)* सौंफ। बिरियाळी।

सूंब—दे० सूम।

सूंस—*(ना०)* १. सौगंध। २. प्रतिज्ञा। *(वि०)* १. नाराज। बेराजी। चूंच। २. क्रुद्ध।

सूंसाड़—दे० सूंसाड़ो।

सूंसाड़ करणो—*(मुहा०)* पवन का सूंसूं करते हुए वेग से चलना।

सूंसाड़ो—*(न०)* १. पवन के वेग का शब्द। २. बहुत धीरे बोलने की आवाज।

सूंसूं—*(अव्य०)* पवन के जोर से चलने की आवाज। पवन के वेग का शब्द। सूंसाड़ो।

सूंह—*(ना०)* सौं। सौंह। शपथ। सम।

सूंहरो—*(क्रि०वि०)* १. आरपार। २. ऊपर की तह से नीचे की तह को भेद कर। *(न०)* बड़ा छेद।

सूंह-सपथ—*(ना०)* सौगंध करार।

सृष्टा—*(न०)* जगत का रचने वाला। ईश्वर।

सृष्टि—*(ना०)* विश्व। जगत।

से—*(सर्व०)* १. उस। २. वह। ३. वे। *(क्रि० वि०)* जैसे। जिस प्रकार। *(वि०बहु०)* जैसे, समान।

सेक—*(न०)* सेंकने की क्रिया या भाव। ताप। गरमी। दे० सिकाव।

सेकणो—*(क्रि०)* १. आग पर रख कर किसी वस्तु को तपाना। सेकना। २. गरम वस्तु से शरीर को तपाना। सेक करना। ३. दुख देना।

सेकंड—*(न०)* एक मिनट का साठवाँ भाग। *(वि०)* द्वितीय।

सेकाई—*(ना०)* सेकने की क्रिया या भाव।

सेकाणो—*(क्रि०)* १. भड़भूंजे से चने आदि सिकवाना। २. सेक करवाना।

सेकावणो—दे० सेकाणो।

सेक्रेटरी—*(न०)* १. सचिव। २. मंत्री।

सेख—दे० शेख।

सेखसाई—*(न०)* शेषशायी विष्णु भगवान।

सेखाई—*(ना०)* १. गर्व। घमंड। शेखी। २. आत्म प्रशंसा। ३ ढींग। ४. ऊपरी दिखावा।

सेखावाटी—दे० शेखावाटी।

सेखावत—*(न०)* कछवाहा राजपूतों की एक शाखा। शेखावत।

सेखावतजी—दे० शेखावतजी ।

सेखी—दे० सेखाई ।

सेखी वघारणो—*(मुहा०)* अभिमान की बातें करना ।

सेखी हाँकणो—*(मुहा०)* अभिमान भरी बातें करना ।

सेगव—*(ना०)* सेवग का उलटा ।

सेगवण—*(ना०)* सेवगण का उलटा ।

सेज—दे० सेझ ।

सेजवाळ—*(ना०)* १. एक प्रकार की पालकी । २. एक प्रकार की परदावाली बहली । ३. शय्या सजाने या बिछाने वाला । ४. शयनागार का रक्षक । ५. शयनागार या शय्या को सजाने वाला ।

सेजो—*(ना०)* १. स्रोत । २. निरंतर बहकर जाने वाली पानी की धारा । **सीर** । ३. जमीन के भीतर से आने वाली पानी की धारा । **सीर** । ४. आमदनी का साधन ।

सेझ—*(ना०)* शय्या । पलंग बिछौना आदि । **सज्या । सेज** ।

सेझवाल—दे० सेजवाळ ।

सेठ—*(ना०)* १. कलार । शराब बनाने-बेचने वाला । **कलाल** । २. प्रतिष्ठित व्यापारी । ३. धनी मनुष्य । ४. बड़ा साहूकार ।

सेठपणो—दे० सेठाई ।

सेठ-साहुकार—*(ना०)* १. सेठ और साहुकार । २. प्रामाणिक व्यापारी ।

सेठाई—*(ना०)* १. जिसमें सेठ के गुण हों । सेठपना । **सेठपणो** । २. दान-शीलता । उदारता । ३. रुआब । सान शौकत ।

सेठाणी—*(ना०)* सेठ की स्त्री ।

सेड़—*(ना०)* १. दोहते समय स्तन में से निकलने वाली दूध की धारा । स्तन में से निकलती हुई दूध की धारा । २. धाराप्रवाह ।

सेड़कढ—*(वि०)* थन में से निकला हुआ ताजा (दूध) । धारोष्ण ।

सेड़ळ—*(ना०)* शीतला देवी । **सेढळ** ।

सेड़ावू दूध—*(न०)* धारोष्ण दूध । **सेड़-कढियो-दूध** ।

सेडो—*(न०)* १. सिंधण । रेंट । शिंघाण । नाक का मल । श्लेष्मा । **सींड** । २. सीमा । ३. सीमा-चिन्ह । ४. अन्त । **छेह** ।

सेढळ—*(ना०)* शीतला देवी । **सेड़ळ** ।

सेढो—*(न०)* १. खेत की सीमा । २. गाँव की गोचरभूमि और गाँव से संबंधित खेत आदि भूमि की सीमा । ३. सीमा का पत्थर और कोई निशान । सीमा-चिन्ह । ४. सीमा । हद । ५. अन्त । आखिर । **छेह** ।

सेत—*(वि०)* सफेद । श्वेत । *(न०)* १. सेतु । २. पुल ।

सेतकिरण—*(न०)* चंद्रमा । श्वेतकिरण ।

सेतखानो—*(न०)* शौचालय । पाखाना । सेहतखाना ।

सेत-तरंग—*(ना०)* गंगा ।

सेतद्युति—*(न०)* चंद्रमा । श्वेतद्युति ।

सेतवाह—*(न०)* अर्जुन ।

सेतरी—*(ना०)* १. चड़स खींचने की दो रस्सियों में से सूंड में बँधी रहने वाली रस्सी । २. रस्सी ।

सेतवाह—*(न०)* चंद्रमा ।

सेतंवळ—*(न०)* पानी । जल ।

सेतान—दे० सैतान ।

सेती—*(प्रत्य०)* करण तथा अपादान कारक का चिन्ह । से । द्वारा । सूं । हूंत । था । थी ।

सेतु—*(न०)* पुल । बाँध ।

सेतुबंध—*(न०)* १. सेतु-निर्माण । पुल बनाना । २. दक्षिण समुद्र में रामेश्वर के पास लंका की ओर बना पथरीला मार्ग या पुल ।

सेतुबंध-रामेश्वर—*(न०)* भारत के दक्षिण तट पर सेतुबंध के पास श्रीराम द्वारा स्थापित एक ज्योतिर्लिंग (शिव-तीर्थ) ।

सेत्रूंजो—*(न०)* सौराष्ट्र में एक प्रसिद्ध जैन-तीर्थ । शत्रुंजय ।

सेन—*(ना०)* सेना । *(न०)* १. इशारा । २. बंगालियों का एक अल्ल ।

सेनथंभ—*(न०)* १. सेनापति । २. बहुत बड़ा वीर । ३. अडिग वीर । ४. साहस और पराक्रम का प्रतीक ।

सेनप—*(न०)* सेनापति । **सेनपत** ।

सेनपत—*(न०)* सेनापति । **सेनप** ।

सेना—*(ना०)* फौज । सैन्य । थाट ।

सेनाणी—*(ना०)* १. निशानी । **सेलाणी** ।

सेनानायक—*(न०)* सेनापति ।

सेनानी-रथ—*(न०)* मोर ।

सेनापति—*(न०)* सेना का अफसर । सेना-ध्यक्ष । सिपहसालार ।

सेनावेध—*(न०)* शूरवीर ।

सेनेट—*(ना०)* १. विश्वविद्यालय की प्रबंध-कारिणी समिति । २. अमेरिका की संसद । ३. किसी राज्य की संसद ।

सेफ्टी रेजर—*(न०)* विलायती उस्त्रो ।

सेमीनार—*(न०)* निश्चित विषय पर परि-संवाद ।

सेर—*(न०)* १. एक तोल । मन का चालीसवाँ भाग । २. शेर । सिंह ।

सेरा डाकणो—*(मुहा०)* कुमार्ग चलना ।

सेरियो—*(न०)* १. झाड़ियों और वृक्षों से सीमित हुआ खेतों के बीच का (संकड़ा) मार्ग । २. एक सेर का तौल ।

सेरी—*(ना०)* १. संकड़ी गली । २. गली ।

सेरू—*(न०)* खाट का उपल । ऊपळो ।

सेरो—*(न०)* १. हुंडी की रकम हुंडी लिखने वाले के लेने पेटे की रकम के अन्तर्गत है, ऐसा हुंडी की पिछली ओर हुंडी लिखने वाले की ओर से की जाने वाली हस्ताक्षर सहित नोंध । (Endorsement) २. रास्ता । मार्ग । ३. ऊपरवाड़े का मार्ग । ४. ऊपरवाड़े मार्ग का स्रोत । ५. उधार दी हुई रकम या वस्तु की बही में की हुई नोंध । ६. किसी बाड़े या खेत की बाड़ को (प्रवेश करने के लिये) हटाकर बनाया गया (अनघड़-कारपूर्ण) मार्ग । **पगवट** ।

सेरो मारणो—*(मुहा०)* हुंडी की पिछली ओर हुंडी लिखने वाले की ओर से किसी विशेष बात का संकेत करना । हवाला देना । नोंध करना ।

सेल—*(न०)* १. छेद । सुराख । **वेझ** । २. भाला । **भालोड़** ।

सेलको—*(न०)* सुराख । रंध्र । छेद । **ठींडो** । **वेझ** ।

सेलडी—*(ना०)* गन्ना । ईख । **सेरड़ी** ।

सेळभेळ—*(वि०)* मिला हुआ । मिश्रित । मिलावटी । *(न०)* दो या दो से अधिक प्रकार के वस्तु-समूहों का बना हुआ मिश्रण ।

सेलार—*(वि०)* भालाधारी ।

सेली—*(ना०)* १. बड़ी माला । हार । २. गले में पहिनने की काले धागे की अंटी । ३. भस्मी । राख । ४. चूंचदार

या खिड़किया पाघके ऊपर बाँधी जाने वाली सलमे-सतारे के तारों की पट्टी ।

सेली—*(ना०)* सेले की मादा ।

सेलीवाळो—*(वि०)* जिसने सेली पहिन रखी हो । *(न०)* एक लोकगीत ।

सेलूको—दे० सेलको ।

सेलो—*(न०)* १. साफा । फेंटो । २. दुपट्टा । *(वि०)* आसान । सुगम । सोरो ।

सेळो—*(न०)* काँटों वाला एक जानवार । *(वि०)* १. कपटी । छली । २. गुंडा ।

सेळी—*(ना०)* 'सेळो' की मादा । *(वि०)* कपटी ।

सेलोत—*(वि०)* भाला धारण करने वाला । जिसके पास भाला हो । *(न०)* चौहानों की एक शाखा ।

सेव—*(ना०)* १. एक फल । २. सेवँई । ३. नमकीन सेव ।

सेवक—*(न०)* सेवा करने वाला । नौकर ।

सेवकाई—*(ना०)* १. सेवा । २. सेवावृत्ति ।

सेवकी—दे० सेवकाई ।

सेवग—*(न०)* १. मंदिरों में सेवा पूजा करने वाली एक ब्राह्मण जाति । शाकद्वीपीय ब्राह्मण । भोजक । २. भक्त । ३. नौकर ।

सेवगण—*(ना०)* १. सेवग की पत्नी । २. भक्तिन । ३. नौकरानी । सेविका ।

सेवगर—*(न०)* १. चाकर । २. सेवक । *(वि०)* सेवा करने वाला । सेवाभावी ।

सेवगाँ-साधार—*(न०)* १. भगवान । २. श्रीकृष्ण ।

सेवट—*(अव्य०)* अंत में । आखिर । छेवट ।

सेवड़ो—*(न०)* १. जैन जती । जैन साधु । २. संन्यासी । साधु ।

सेवण—*(न०)* एक घास ।

सेवणो—*(क्रि०)* १. सेवा करना । २. पालन-पोषण करना । ३. बहुत संग करना । ४. काम में लाना । व्यवहार में लेना । ५. पक्षियों का अंडे सेना । ६. खुशामद करना ।

सेवती—*(न०)* सफेद गुलाब ।

सेवन—*(न०)* १. किसी वस्तु का नियमित रूप से किया जाने वाला उपयोग । २. उपभोग । ३. एक घास । सेवण ।

सेवन करणो—*(मुहा०)* १. उपयोग करना । उपभोग करना । २. काम में लाना । काम में लेना ।

सेवरो—*(न०)* सेहरा । दूल्हे का मुकुट । मौड़ । सेहरा । २. विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला एक मांगलिक गीत । ३. पुष्प माला ।

सेवळणी—*(ना०)* नदी । सरिता ।

सेवळी—*(ना०)* सेही नामक एक जंतु जिसकी पीठ पर लंबे-लंबे काँटे होते हैं । साही । शल्यकी । सेळी ।

सेवा—*(ना०)* १. चाकरी । नौकरी । २. मंदिर में की जाने वाली मूर्त्ति की पूजा-अर्चा । ३. टहल । परिचर्या । ४. निःस्वार्थ-भाव से जन कार्य करने की वृत्ति ।

सेवा करणो—*(क्रि०)* १. सार्वजनिक उपकारक काम करना । २. परिचर्या करना । ३. सेवा-पूजा करना ।

सेवा-काल—*(न०)* नौकरी की अवधि ।

सेवा-चाकरी—*(न०)* सेवा । बंदगी ।

सेवा-टहल—*(ना०)* १. सेवा । खिदमत । परिचर्या । २. सेवा-सुश्रूषा ।

सेवादार—*(न०)* गुरुद्वारा में पूजा के लिये नियत सिक्ख ।

सेवादारी—*(ना०)* सेवादार का काम ।

सेवा-दासी—*(ना०)* साधुओं द्वारा सेवा के लिये रखी हुई दासी ।

सेवा-धर्म—*(न०)* निःस्वार्थ भाव से प्राणी-मात्र की सेवा करने का कार्य ।

सेवा-निष्ठ—*(वि०)* १. सेवा में निष्ठा वाला । २. सेवाभावी ।

सेवा-निष्ठा—*(ना०)* १. सेवा में निष्ठा । २. सेवाभाव ।

सेवा-पूजा—*(ना०)* १. सेवा और पूजा । २. देव-मूर्त्ति का स्नान, पूजा, आरती इत्यादि ।

सेवा-बंदगी—*(ना०)* सेवा, आराधना, हाजरी इत्यादि ।

सेवा-भाव—*(न०)* १. निःस्वार्थ सेवा का भाव । २. सेवा करने की भावना ।

सेवा-भावी—*(वि०)* निःस्वार्थ सेवा भाव वाला ।

सेवा-मार्ग—*(न०)* सेवा का मार्ग । सेवा ।

सेवार्थी—*(वि०)* निःस्वार्थ सेवा करने के उद्देश्य वाला ।

सेवाश्रम—*(न०)* सेवानिष्ठ सदस्यों का आश्रम या दफ्तर ।

सेवा-सदन—दे० सेवाश्रम ।

सेविका—*(ना०)* २. स्त्री-सेवक । २. सेवा करने वाली । सेवगण ।

सेवी—*(वि०)* १. सेवा करने वाला । २. पूजा करने वाला । ३. सेवन करने वाला । उपभोगी ।

सेवो—*(न०)* १. पानी का सोता । २. जहाँ जमीन में पानी ऊँचा हो । ३. कपड़े का टाँका । सिलाई । सीवन ।

सेस—*(न०)* १. शेष नाग । २. शेष । बाकी ।

सेसनाग—*(न०)* शेषनाग ।

सेसू—*(न०)* भेदिया । गुप्तचर । जासूस ।

सेहठो—*(वि०)* दृढ़ । मजबूत ।

सेहर—*(न०)* १. मेघ शिखर । २. शिखर । शृंग ।

सेहरो—दे० सेवरो ।

सेही—दे० सेवळी ।

सेहुर—*(न०)* शिखर । सिखर । सेहर । टूंक ।

सैंग—*(वि०)* सब । समस्त । सभी ।

सैंगची—दे० सेंगठी । *(ना०)*

सैंगठी—*(ना०)* बाजरी की खिचड़ी । *(अव्य०)* सभी जगह ।

सैंगू—*(वि०)* वह जिस पर भरोसा किया जाय । भरोसा वाला ।

सैंगू साथ—*(अव्य०)* ग्रामान्तर (मुसाफिरी) करने वाले विश्वसपात्र मनुष्य के साथ । *(न०)* विश्वासपात्र मनुष्य का साथ (यात्रा में) ।

सैंट—*(न०)* इत्र । अंतर ।

सैंठी—*(वि०)* १. मजबूत । २. पक्की । चालाक । ३. कठोर । कड़ी । ४. पुष्ट । माती ।

सैंठो—*(वि०न०)* १. दृढ़ । मजबूत । २. बली । बलवान । ३. पक्का । चालाक । ४. ठोस । ५. कठोर । कड़ा । ६. हृष्ट-पुष्ट । माती ।

सैंताळीस—*(वि०)* चालीस और सात । *(ना०)* चालीस और सात की संख्या । '४७' ।

सैंतीस—*(वि०)* तीस और सात । *(ना०)* तीस और सात की संख्या । '३७' ।

सेंसर—*(न०)* डाक, तार, सिनेमा अश्लीलता आदि पर प्रतिबंध ।

सँ—*(वि०)* सब । समस्त । सह ।

सैंकड़ा—*(न०)* सौ का समूह ।

सैंकड़े—*(अव्य०)* प्रति सौ के हिसाब से । प्रतिशत ।

सैंकड़े सो टका—*(अव्य०)* शतप्रतिशत ।

सैंचन्नण—*(न०)* १. सर्वत्र प्रकाश । २. खूब प्रकाश ।

सैंची—*(ना०)* मकान का भाग ।

सैंजगाडी—*(ना०)* १. जनाना गाड़ी । २. सोने की गाड़ी । शय्यागाड़ी ।

सैंजवाळ—*(ना०)* १. परदे वाली गाड़ी । २. एक प्रकार की पालखी । दे० सेंजवाळ ।

सैंजोरो—दे० सजोरो ।

सैंण—*(न०)* १. सज्जन । मित्र । २. संबंधी । १. हितु । ४. शिष्ट पुरुष । ५. 'पणिहारो' लोकगीत का नायक ।

सैंणप—*(ना०)* १. होशियारी । २. चातुरी । ३. चालाकी । ४. सज्जनता । ५. सरलता ।

सैंणियो—*(वि०)* १. नायक । २. सज्जन ।

सैंणी—*(वि०)* १. भली । २. सरल । सीधी । ३. विवेक वाली । डाही । *(ना०)* एक लोक देवी ।

सैंणो—*(वि०)* १. भला । सज्जन । २. बुद्धिमान । ३. धीर । गंभीर । ४. विवेकी । ५. काबिल । योग्य । ६. सरल । सीधा । ७. भोला । भोळो ।

सैंतान—दे० शैतान ।

सैंतानी—दे० शैतानी ।

सैंतीर—*(न०)* शहतीर । लकड़ी का लंबा लट्ठा ।

सैंदाना—*(न०ब०व०)* वाद्य समूह । बाजे । विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र ।

सैंन—*(वि०)* सभी । *(न०)* इशारा ।

सैंनाण—*(न०)* १. चिन्ह । निशान । २. पहचान । ओळखाण ।

सैंनाणी—*(ना०)* निशानी । स्मृति-चिह्न ।

सैंबास—*(न०)* शाबास । धन्यवाद । वाह-वाह । बहुत अच्छा । दे० शाबास ।

सैंबासी—*(ना०)* शाबासी । वाह-वाही । दे० शाबासी ।

सैंमुख—*(क्रि०वि०)* सामने । सन्मुख ।

सैंमूदो—*(अव्य०)* १. कुछ भी छोड़े बिना । पूरा का पूरा । २. सर्वथा । बिलकुल । ३. निपट । समूचो ।

सैंयर—*(ना०)* सखी । सहेली । साथण । सहिचर ।

सैंर—*(ना०)* १. भ्रमण । हवाखोरी । विहार । २. मनोरंजन ।

सैंर-सपाटो—*(न०)* मन बहलाव के लिए घूमने फिरने को जाना ।

सैंल—(न०) १. भ्रमण । सैंर । २. मौज । ३. सफर का आनंद । ४. पर्वत । शैल । *(वि०)* आसान । सरल ।

सैंलको—*(वि०)* आसान । सरल । सैंल ।

सैंलाजा—*(ना०)* पार्वती । शैलजा ।

सैंलाणी—(ना०) १. तिल और शक्कर (गड़गड़ खांड) को कूट कर बनाया हुआ एक व्यंजन । २. निशानी । ३. स्मृति चिन्ह । ४. मृत सधवा के पीछे प्रथम मकरसंक्राति के दिन सगे संबंधियों में बाँटी जाने वाली सैंलाणी (खांडसारी और तिल) । ५. गाय के लिये बनाया जाने वाली एक पौष्टिक खुराक । बांटो ।

सैंलानी—*(वि०)* १. सैंर करने वाला । २. मस्त घूमने-फिरने वाला ।

सैव—*(न०)* शैव ।

सैसू—*(न०)* १. गुप्तचर । भेदिया । भेदू ।

सैहीं—*(वि०)* १. समस्त । सबही । सभी । २. पूरी । भरपूर ।

सोंग—*(वि०)* सभी । समस्त । सब ।

सोंग-वोंग—*(क्रि०वि०)* आवाक । भौचक्का । हक्का-बक्का ।

सोंगोठ—*(न०)* संगठन । दल ।

सोंजणो—*(न०)* एक वृक्ष ।

सोंठी—*(वि०)* १. दृढ़ । मजबूत । २. मोटी ।

सोंठो—*(वि०न०)* १. दृढ़ । मजबूत । २. मोटा ।

सोंत-बोंत – दे० सोंत-मोंत ।

सोंत-मोंत—*(ना०)* घबराहट ।

सोंती—*(न०)* सैंतीस की संख्या । *(वि०)* तीस और सात । '३७'.

सोंतीस—दे० सोंती ।

सोंतीसो—*(न०)* सदी का सैंतीसवाँ वर्ष ।

सोंताळी—*(न०)* सैंतालीस की संख्या । *(वि०)* चालीस और सात । '४७'

सोंताळीस—दे० सोंताळी ।

सोंताळीसो—*(न०)* सदी का सैंतालीसवाँ वर्ष ।

सोंथळ – *(न०)* हलवा बनाते समय प्रचुर घी में सिका हुआ आटा ।

सोंद्रूप-नाळेर—*(न०)* १. बिना तोड़ा-फोड़ा चोटी वाला नारियल । २. नारियल के मूल्य या प्रतीक को काम में लेने के स्थान पर नारियल ही से काम लिया जाना । ३. भेंट या पूजा में नारियल के रूप में रुपया-पैसे के स्थान में काम में लिया जाने वाला नारियल ।

सोंध—*(ना०)* पहिचान । परिचय । ओळखाण ।

सों-धणी—*(न०)* असली मालिक । जो खास मालिक हो वही । स्वामी ।

सोंध-पिछाण—*(ना०)* १. जान-पहिचान । २. पहिचान । ओळखाण ।

सोंधव—*(न०)* १. घोड़ा । २. सैंधव नमक । सोंधो-लूण । *(वि०)* १. सिंध का निवासी । सिंधी । २. सिंध देश का ।

सोंधो—*(वि०)* परिचय वाला । पहिचान वाला । *(न०)* नमक ।

सोंपट्टी—*(क्रि०वि०)* पुर-तेजी से । सपाटा-बंद ।

सों बिचै—*(अव्य०)* १. बीचो बीच । ठीक बीच में । २. सबके बीच में ।

सोंवज—*(न०)* बिना सिंचाई के मात्र वर्षा की नमी होने वाली गेहूं, जौ, चने आदि फसल ।

सोंवज-खेत—*(न०)* वह खेत जिसमें सोंवज गेहूं, जौ, चने आदि की फसल होती है । ऐसी फसल के लिये नमी वाली भूमि । ओर-ऊमरो ।

सोंसार—*(न०)* संसार । दुनिया ।

सो—*(सर्व०)* वह । *(अव्य०)* १. अतः । इसलिये । २. जैसा ।

सोइज—*(वि०)* वही । सोहिज ।

सोई—*(ना०)* १. खबर । पता । तलाश । २. गुप्त तलाश ।

सोईज—*(सर्व०)* वही । सोइज ।

सोक—*(ना०)* १. सोक । सौत । सपत्नी । २. जोर की हवा से होने वाला शब्द । ३. निकट में जोर की बरसती हुई वर्षा की आवाज । ४. बाण आदि शस्त्र चलाने की ध्वनि । *(न०)* शोक । अफसोस ।

सोकड—*(ना०)* १. वर्षा या पवन की आवाज । २. सोक । सौत । सपत्नी

(ऊन शब्द) । ३. भय से भाग जाने की क्रिया। डर कर दौड़ जाने का भाव।

सोकलो—*(न०)* १. शस्त्र का अग्र व तीक्ष्ण भाग। २. एक शस्त्र।

सोख—*(न०)* शोषण। *(वि०)* १. शोषण करने वाला। २. सोखने वाला।

सोखण—*(ना०)* १. काम का एक बाण। २. शोषण।

सोखणो—*(क्रि०)* १. जल या नमी को चूसना। २. शोषण करना।

सोखता—*(ना०)* एक प्रेतनी जो धन-धान्य और स्वास्थ्य का शोषण करने वाली मानी जाती है। एक कल्पित प्रेतनी जिसके लग जाने से शरीर का शोषण होता रहता है। शोषयिता प्रेतनी।

सोखी—*(वि०)* १. हित करने वाला। हितु। २. सुखेच्छु। ३. ('दोखी' का विरुद्ध शब्द) दूसरे के सुख में सुखी तथा दुख में दुखी होने वाला। *(न०)* मित्र।

सोखो—*(वि०)* १. सुखदायक। २. सहज। आसान।

सोग—*(न०)* १. मरे हुए का शोक पालन। २. शोक। दुख।

सोगटणो—*(न०)* १. सुगंधित लेप। उबटन। पीठी। २. वर-वधू के पीठी करने के समय गाया जाने वाला एक लोक गीत। पीठी-गीत।

सोगन—*(न०)* शपथ। सौगंध। सौंस। सम।

सोगन खाणी—*(मुहा०)* शपथ लेना।

सोगन दिराणी—दे० सौगन देरावणी।

सोगन देरावणी—*(मुहा०)* शपथ दिलवाना।

सोगन-सपथ—*(ना०)* १. सौगंध-शपथ। २. कौल-इकरार।

सोगर—दे० सोमरो।

सोगरो—*(न०)* बाजरी की मोटी रोटी।

सोगायत—*(वि०)* सोगवाला।

सोगाळो—*(न०)* १. मृत्यु शोक पालन करने का समय। २. मृत्यु शोक पालन करने की सामाजिक अवधि। ३. शोकाकुल।

सोगी—*(ना०)* सुहागा। *(वि०)* सोगवाला।

सोच—*(न०)* १. विचार। २. विचार-विमर्श। ३. चिंता। फिक्र। फिकर। ४. दुख। रंज। ५. विषाद। शोक। ६. पश्चात्ताप। पछतावो।

सोचकरणो—(मुहा०) १. चिंता करना। २. पछताना।

सोच करणो—(मुहा०) दुख या हानि की बात सुनाना। २. कोई ऐसी बात कहना जिससे किसी को चिंता हो।

सोचकेस—*(न०)* अग्नि। आग। वाहवे।

सोचणो—*(क्रि०)* १. विचार करना। २. किसी बात को गहराई से मन-ही-मन तोलना। ३. विचार करते-करते किसी कल्पना या निर्णय तक पहुँचना।

सोचणो-विचारणो—*(क्रि०)* १. गहराई से सोचना। २. विचार-विमर्श करना।

सोच-फिकर—*(न०)* १. चिंता। २. दुख। रंज। ३. पछतावा।

सोच-विचार—*(न०)* १. गहराई से सोचना। २. विचार-विमर्श। ३. सोचने समझने का भाव। ४. विचार-मंथन। ऊहापोह। मथामथ। ५. खेद। अफसोस।

सोचाड़णो—दे० सोचाणो ।

सोचाणो—*(क्रि०)* १. सोचने में प्रवृत्त करना । सोचाना । २. सुझाना । दिखाना । ३. समझाना । ४. बताना ।

सोचावणो—दे० सोचाणो ।

सोचा-सोची—*(ना०)* १. सोचते रहने की क्रिया या भाव । २. बार-बार सोचना ।

सोचीजणो—*(क्रि०)* सोचा जाना ।

सोचू—*(वि०)* सोचने वाला । विचार करने वाला ।

सोचू-समझू—*(वि०)* १. समझदारी से सोचने वाला । २. समझदार ।

सोज—*(ना०)* १. सूजन । सोजो । २. तलाश । ३. विचार मंथन । मथामण । ४. निष्कर्ष । ५. खबर । पता । ६. व्यवस्था । ७. प्रबंध । ८. तैयारी । ९. निर्माण । १०. सामर्थ्य । हैसियत । ११. सामान । सामग्री । *(सर्व०)* वही ।

सोजत—*(न०)* मारवाड़ का एक ऐतिहासिक नगर ।

सोजतियो—*(वि०)* १. सोजत संबंधी । २. सोजत का निवासी । ३. सोजत का । *(न०)* सोजत की प्रसिद्ध अजवाइन ।

सोजतियो अजमो—*(न०)* सोजत की प्रसिद्ध ऊँची किस्म की अजवाइन । २. प्रसूता संबंधी एक लोकगीत ।

सोजाको—दे० सोभाको ।

सोजी—दे० सोज *(ना०)* ।

सोजो—*(न०)* सूजन । शोथ । सोजी ।

सोझ—*(ना०)* १. शोध । खोज । जाँच । अनुसंधान । २. शुद्धि ।

सोझणो—*(क्रि०)* १. संशोधन करना । २. तलाश करना । ३. मिलावट वाले सोना-चाँदी को ताप द्वारा शुद्ध करना ।

सोझाको—दे० सूझाको ।

सोझी—दे० सोजी ।

सोट—दे० सोटो ।

सोटी—*(ना०)* छड़ी ।

सोटो—*(न०)* मोटा डंडा । सोंटा ।

सोड़—*(ना०)* १. सोते हुए के लिये ओढ़ने का वस्त्र । रजाई या सौरख । २. अंचल । खोळो ।

सोड़-सोड़िया—*(न०ब०व०)* गद्दे, रजाई, तकिये आदि ओढ़ने-बिछाने की सामग्री ।

सोडाबाटर—*(न०)* सोडा से बनाया जाने वाला पीने का एक पाचक पेय ।

सोडो—*(न०)* १. खाने की अमुक वस्तुओं में मिलाया जाने वाला क्षार जो सब्जी को रासायनिक प्रक्रिया द्वारा शुद्ध करके बनाया जाता है । एक पाचक क्षार । २. कपड़े धोने का सोडा ।

सोढ़ण—*(ना०)* १. सोढा जाति की राजपूत स्त्री । सोळी । २. पुरोहित ब्राह्मणों की सोढा जाति की स्त्री ।

सोढ़ाण—*(न०)* १. सोढा राजपूतों का प्रदेश । उमरकोट, थरपारकर प्रदेश । घाट प्रदेश ।

सोढी—*(ना०)* सोढा जाति की स्त्री ।

सोढो—*(न०)* १. सोढा जाति का क्षत्रिय । २. पुरोहित ब्राह्मणों की एक अल्ल या विभाग ।

सोण—*(न०)* १. शकुन । २. रक्त । खून । सोही ।

सोणक—*(न०)* लाल रंग ।

सोणघर—दे० सोवणघर ।
सोण-चिड़ी—दे० सोन चिड़ी ।
सोणत—*(न०)* रक्त । लोही । शोणित ।
सोणलो—*(न०)* स्वप्न । सुपनो ।
सोणित—*(न०)* रक्त । लोही । सोणत । शोणित ।
सोणी—*(न०)* शकुनी । सवणी । *(ना०)* नींद । ऊंघ । *(न०)* शयनागार । सोणघर ।
सोत—*(न०)* १. स्रोत । सोता । झरना । २. धारा ।
सोतो—दे० सोत ।
सोथ—*(ना०)* सोजन । शोथ । सोजो । सूजन ।
सोदरा—*(ना०)* १. बहिन । सहोदरा । २. श्रीकृष्ण की बहिन, सुभद्रा । अर्जुन की पत्नी । *(वि०)* एक ही माता के उदर से उत्पन्न । सगी ।
सोदरी—*(ना०)* सगी बहन । भाण । भैण ।
सोध—*(ना०)* १. खोज । तलाश । २. संशोधन । *(न०)* महल ।
सोधणो—*(ना०)* झाड़ू ।
सोधणो—दे० सोझणो ।
सोनगिर—*(न०)* १. स्वर्णगिरि । २. जालोर का पर्वत । ३. जालोर के पर्वत पर बना हुआ दुर्ग ।
सोन चंपो—*(न०)* १. पीला चंपा । २. पीले चंपे का पुष्प ।
सोन-चिड़कली—*(ना०)* १. शकुन चिड़िया । २. सोनचिड़ी । स्वर्ण रंग की चिड़िया ।
सोन-चिड़ी—दे० सोन चिड़कली ।
सोनल—*(वि०)* १. स्वर्ण निर्मित । सोने का । सोनेरी । २. वह कन्या जिसके केश सोने जैसे हों । ३. वह कन्या या स्त्री जिसका वर्ण सोने जैसा हो । स्वर्णिम । स्वर्णांगी ।
सोनवाणी—*(न०)* सोना बुझाया हुआ या सोने से स्पर्श किया हुआ पानी ।
सोनवाणी-सींचो—*(न०)* अस्पृश्य से छू जाने पर शुद्ध होने के लिये लिया जाने वाला सोनवाणी का सींचा ।
सोनहरी—*(वि०)* स्वर्ण निर्मित । स्वर्ण-मंडित । सुनहरी । *(न०)* सोनचिड़िया ।
सोना-गेरू—*(न०)* एक प्रकार की अधिक लाल तथा मुलायम मिट्टी । गेरू ।
सोना नवेस—*(वि०)* १. राजा या राज्य की ओर से जिसे पैर में सोना पहनने की इज्जत मिली हो । २. पाँव में सोना (पहनने) बख्शने की ताजीम । ३. पाँव में सुवर्ण धारण करना तथा धारण करने की प्रतिष्ठा । ४. वह जो पाँव में सोना पहनता है ।
सोनानामी—*(न०)* रुक्मिणी का भाई । रुक्मकुमार ।
सोनापाणी—दे० सोनवाणी ।
सोनामखी—*(ना०)* १. एक प्रकार की रेचक वनस्पति । सनाय । २. सोना-मुखी के पत्ते । दे० सोनामाखी ।
सोना-माखी—*(ना०)* १. एक रेचक वनस्पति । सोनामखी । २. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा । ३. एक धातु । स्वर्ण माक्षिक । आपीत । सोनामुखी ।
सोना-मुखी—दे० सोना माखी ।
सोना-मोहर—*(ना०)* सोने का सिक्का । सोनेमो ।
सोनार—*(न०)* सोने का काम करने वाला पुरुष । स्वर्णकार । सोनी । सुनार ।

सोना-रा-नलिया करणा—*(मुहा०)* १. खूब धनवान बनना। २. खूब कमाना।

सोना-री-गारथी नीपणो—*(मुहा०)* अत्यंत सुशोभित बनाना। खूब सुंदर सजाना।

सोना-री-थाळी में लोह-री-मेख—*(मुहा०)* सभी सुलक्षण किन्तु एक कुलक्षण। सभी अच्छाइयों में एक बुराई।

सोना-री-पळ—*(ना०)* बार-बार नहीं मिले ऐसा सुंदर मौका। स्वर्ण अवसर। अमूल्य अवसर।

सोना-री-लंका लुंटाणी—*(मुहा०)* अमूल्य वस्तुओं को योंही लुटा देना।

सोना-रै-पाळणै झूलणो—*(मुहा०)* खूब ऐश्वर्य में पालन-पोषण होना।

सोना-रो-मेह वरसणो—*(मुहा०)* खूब आमदनी होना। खूब कमाना।

सोना-रो-सूरज ऊगणो—*(मुहा०)* १. पुत्र जन्म तथा पुत्र विवाह जैसे बधाई के मांगलिक प्रसंगों का प्राप्त होना। २. खूब संपत्ति, पुत्र, पौत्र इत्यादि सुखों की प्राप्ति होना। ३. वैभवशाली एवं पुण्यशाली होना।

सोना-वरणी—*(वि०)* स्वर्ण के समान वर्ण वाली। सोनाहरणी।

सोनासळी—*(ना०)* स्त्रियों के नाक में पहनने की सिली। सिळी।

सोनाहरणी—दे० सोनावरणी।

सोनिक—*(न०)* कसाई।

सोनी—*(न०)* सुनार। स्वर्णकार।

सोनी-महाजन—*(न०)* सोने-चांदी के आभूषण बनाने तथा बेचने वाला। २. सोनी का एक विरुद।

सोनी महाराज—*(न०)* सोनी का एक विरुद।

सोनी-राजा—*(न०)* स्वर्णकार का विरुद।

सोनेरी—*(वि०)* १. स्वर्ण निर्मित। २. सुनहला। ३. सोने का झोल चढ़ा हुआ। ४. सोने के जैसा पीले रंग का।

सोनेली—*(ना०)* १. सोनजूही। पीले फूलों की एक वनस्पति।

सोनैयो—*(न०)* सोने का सिक्का। स्वर्ण-मुद्रा।

सोनो—*(न०)* स्वर्ण। सोना। कनक।

सोपान—*(न०)* सीढ़ी। निसरणी।

सोपारी—*(न०)* सुपारी। पुंगीफल।

सोपी—दे० सोफी।

सोपो—*(न०)* रात का शांत वातावरण।

सोफी—*(वि०)* १. जिसको अफीम का व्यसन नहीं हो। २. निर्व्यसनी।

सोबत—*(ना०)* १. संगति। सहवास। साथ। सोहबत। २. संभोग। *(न०)* १. काफिला। २. घोड़ों का काफिला।

सोबती—*(न०)* साथी। मित्र। हम-सोहबत।

सोबदो—*(न०)* १. बाजीगरी का खेल। २. जादू का खेल। करिश्मा।

सोबायत—*(न०)* सूबेका अधिकारी।

सोबो—*(न०)* १. शक। संशय। २. आरोप।

सोभ—*(ना०)* १. पिता आदि पितृपक्ष वालों का कुछ रुपये देकर प्रथम वार पुत्री के ससुराल में भोजन करने की रीति। २. उक्त रीति का समारोह। ३. सोभ का जीमन। ४. शोभा। ५. शोभा (कीर्त्ति) प्राप्त करने के लिये किया जाने वाला काम। ६. प्रशंसा। ७. सोम। ८. शोभा का संक्षिप्त।

सोभरणो—*(क्रि०)* शोभा देना । शोभा पाना । **सोहणो** ।

सोभन—*(न०)* १. वस्त्र । २. अलंकार । ३. वस्त्रालंकार ।

सोभवान—*(वि०)* १. शोभावाला । २. सौभाग्य वाला ।

सोभा—*(ना०)* १. सुंदरता । शोभा । २. कांति । ३. सजावट । ४. वर्ण । रंग । प्रतिष्ठा । ६. यश ।

सोभागवती—*(वि०)* १. सौभाग्यशालिनी । २. सधवा ।

सोभायमान—*(वि०)* शोभावाला । सुंदर । सजा हुआ ।

सोभित—*(वि०)* सुन्दर ।

सोम—*(वि०)* सौम्य । *(न०)* १. चंद्रमा । २. सोमवार । ३. अमृत । ४. एक प्राचीन लता, जिसके रस का देवता और ऋषिगण पान करते थे ।

सोमधात—*(न०)* १. सूर्य । सूरज । २. *अमृत । अमी । सुधा ।*

सोमनाथ—*(न०)* १ द्वादश ज्योतिर्लिंगों से एक । २, शिव । ३. सौराष्ट्र में इतिहास प्रसिद्ध भगवान शिव का मंदिर । ४. इस नाम का तीर्थ स्थान । **सोमैयो** ।

सोमपान—*(न०)* सोम रस का पान ।

सोमप्रिया—*(ना०)* रात ।

सोमल—*(न०)* एक प्रकार का विष ।

सोमवती अमावस—*(ना०)* सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या और पर्व ।

सोमवंश—*(न०)* १. चंद्रवंश । २. एक क्षात्रवंश ।

सोमवंशी—*(न०)* यादव क्षत्री । चंद्रवंशी क्षत्री ।*(वि०)* चंद्र वंश का ।

सोमवार—*(न०)* चंद्र दिवस । रविवार के बाद का दिन । चंद्रवार ।

सोमवारी अमावस—*(ना०)* दे० सोमवती अमावस ।

सोमाल—*(वि०)* सुकुमार ।

सोमेश्वर—*(न०)* शिव । महादेव ।

सोमैयो—दे० सोमनाथ ।

सोय—*(ना०)* १. पता । खबर । २. शोध । खोज । ३. सुराग । गुप्त रूप से लगाया हुआ पता । टोह । *(सर्व०)* १. सो । २. वह । ३. वही ।

सोयासिणि—*(वि०)* १. सुवासिनी । २. सुहासिनी । सौभाग्यशालिनी ।

सोयतो—*(न०)* मांस से बना एक व्यंजन । सोहिता । **सोइतो** ।

सोयम—*(वि०)* तीसरा ।

सोर—*(न०)* बारूद ।

सोरठ—*(न०)* १. सौराष्ट्र देश । २. आधी रात के समय गाई जाने वाली एक राग । सोरठ राग । ३. इस नाम की एक प्रेमिका ।

सोरठियो—*(न०)* १. एक प्रकार का घोड़ा । २. सोरठा छंद । *(वि०)* १. सौराष्ट्र प्रदेश से संबंधित । २. सोरठ का ।

सोरठियो-दूहो—*(न०)* सोरठा ।

सोरठो—*(न०)* अड़तालीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद । सोरठा ।

सोरणो-बुहारणो—*(क्रि०)* झाड़ना-बुहारना ।

सोरणो-बोरणो—*(क्रि०)* झाड़ना-बुहारना ।

सोरणो-सारणो—*(क्रि०)* झाड़ना-बुहारना ।

सोरप—*(न०)* १. सुख । २. आराम । ३. प्रसन्नता । ४. सुखावस्था । दे० सोहराई । ५. 'दोरप' का विरुद्ध ।

सोरपण—दे० सोरप ।

सोर-भखी—*(ना०)* १. सोप । २. बंदूक ।

सोरम—*(ना०)* १. सुगंध । २. सुखावस्था । सोरप । सोराई ।

सोरंभ—*(ना०)* सुगंध । सुवास ।

सोरंभचर—*(न०)* भौंरा । भ्रमर । भमरो ।

सोरंभ-मूळ—*(ना०)* चंदन ।

सोराई—*(ना०)* १. तंदुरुस्ती । स्वस्थता । २. चैन । आराम । सुख । सोरप । ३. आसानी । सुगमता । 'दोराई' का उलटा ।

सोरै-सास—*(अव्य०)* १. झटपट । २. आसानी से । बिना तकलीफ उठाये ।

सोरो—*(वि०)* १. सुगम । आसान । २. तंदुरुस्त । नीरोग । स्वस्थ । *(न०)* १. चैन । आराम । सुख । २. कलमीशोरा । शोरा । *(वि०)* १. सुखी । २. प्रसन्न । राजी-खुशी ।

सोरो-दोरो—*(क्रि०वि०)* १. बहुत कठिनता से । २. जैसे-तैसे । ज्यों-त्यों करके । ३. सुख-दुख से ।

सोरो-सांतरो—*(वि०)* सुखी और निरोग ।

सोरो-सुखी—*(वि०)* खूब सुखी ।

सोळ—*(वि०)* सोलह ।

सोळ-कळा—*(न०)* संपूर्ण रूप से प्रकाशमान एवं ऐश्वर्यवान पुरुष का एक विशेषण । दे० षोडश कला ।

सोहल-कला—*(ना०)* चन्द्रमा की सोलह कलाएँ । दे० षोडश कला ।

सोळ-पगो—*(न०)* केंकड़ा ।

सोळ-भाँत—*(न०)* पूजा के षोडश प्रकार । षोडशोपचार ।

सोळमो-सोनो—*(वि०)* १. शुद्ध । २. असली । ३. श्रेष्ठ । उत्तम । *(न०)* पूर्व मध्यकाल में सोने का मूल्य चाँदी से सोलह गुना अधिक होने से 'सोळमो-सोनो' कहलाया, जो आज सोना अथवा किसी वस्तु की उत्तमता के प्रतीक रूप में लोकोक्ति का रूप बन गया । 'रजतं षोडशगुणं भवेत स्वर्णस्य मूल्यकम्' । शुक्रनीति । ४/२/९२.

सोळंकणी—*(न०)* १. सोळंकी राजपूत की स्त्री । २. सोळंकी जाति की स्त्री ।

सोळंकी—*(न०)* राजपूतों की एक जाति ।

सोळंतरसो—*(न०)* पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ सोलह (११६) की संख्या ।

सोळाना—*(न०)* १. सोलह आना । २. शतप्रतिशत । पूर्ण रूप से ।

सोलाळी—*(ना०)* पृथ्वी । भूमि । जमी ।

सोळै—*(वि०)* दस और छः । *(न०)* सोलह की संख्या । '१६'

सोळो—*(न०)* १. सदी का सोलहवाँ वर्ष । २. उन्माद । ३. उत्साह । ४. शोला ।

सोलो—दे० सोहलो ।

सोवणघर—*(न०)* शयनगृह । सूणहर ।

सोवणहार—दे० सोवणहारो ।

सोवणहारो—*(वि०)* सोने वाला । सोवणियो ।

सोवणी—*(ना०)* झाड़ू । बुहारी । *(वि०)* सुहावनी ।

सोवणो—*(क्रि०)* १. नाज को छाज में डालकर साफ करना । २. सोना । शयन करना । *(वि०)* शोभाप्रद । सोहना । सुंदर । सुहावना ।

सोवतड़ी—*(भू०कृ०)* सोती हुई। सोई हुई। सूतोड़ी।

सोवतां—*(अव्य०)* सोते समय। सूवतां।

सोवतां-जागतां—*(अव्य०)* सोते हुए और जागते हुये। सोते-जागते। सूतां-जागतां।

सोवन—*(न०)* १. सोन चमेली का फूल। २. स्वर्ण। सोभा। सोनो।

सोवनगिर—*(ना०)* १. जालोर का पर्वत। सुवर्णगिरि। २. जालोर का किला। ३. जालोर नगर।

सोवन-चूड़—*(ना०)* स्त्रियों के हाथ में पहनने की सोने की चूड़ी।

सोवनतन—*(न०)* १. गरुड़। २. सुवर्ण के समान गौर वर्ण। गौरवर्ण शरीर।

सोवन-थाळ—*(न०)* सोने की थाळी। सुवर्ण थाल।

सोवन-पाणी—*(न०)* स्वर्ण स्पृष्ट जल। सोनवाणी।

सोवन पाणी-रो सींचो—दे० सोन वाणी-सींचो।

सोवो—*(न०)* सोभा।

सोवरण—*(न०)* सोना। स्वर्ण। सुवर्ण।

सोवरणकार—*(न०)* सुवर्णकार। सोनी।

सोसणारी—*(वि०)* शोषण करने वाली।

सोसणियो—*(वि०)* शोषण करने वाला। शोषक। चूसणियो।

सोसणो—*(क्रि०)* सोखना। शोषण करना। चूसणो।

सोसनी—*(वि०)* लालीयुक्त नीले रंग का। बैंगनी।

सोसनी-रंग—*(न०)* लाली लिये हुए नीला रंग। बैंगनी रंग।

सोसन्यो—दे० सीसनी।

सोसित—*(वि०)* शोषित।

सोह—*(वि०)* १. सब। समस्त। सगळो। सेंग। २. शोभा। छवि। कान्ति।

सोह क्यु—*(अव्य०)* सब कुछ।

सोहजाण—*(वि०)* सब जानने वाला। *(न०)* सर्वज्ञ। सहुजाण।

सोहड़—दे० सुहड़।

सोहणो—*(वि०)* सुहावना। *(क्रि०)* १. शोभित होना। २. अनाज को सूप द्वारा झटक कर साफ करना। सोवणो।

सोहन हलवो—*(न०)* एक प्रकार की मिठाई।

सोहबत—*(ना०)* १. कारवां। कतार। २. संगति। सोवत। ३. संभोग। मैथुन।

सोहमस्मि = वह मैं हूं। मैं ब्रह्म हूं।

सोहम—दे० सोह।

सोहर—दे० सोहळो।

सोहरत—*(ना०)* १. प्रशंसा। तारीफ। २. ख्याति।

सोहराई—*(ना०)* १. आराम। सुख। २. स्वास्थ्य लाभ। ३. स्वास्थ्य। ४. सम्पन्नता। सोराई। 'दोराई' का उलटा।

सोहरो—दे० सो'रो।

सोहलाळी—*(ना०)* पृथ्वी। सोलाळी। भूमि। धरती।

सोहलो—*(न०)* १. बधाई का गीत। मंगल गीत। पुत्र जन्मोत्सव का गीत। सोहर। २. सुखी।

सोह—*(अव्य०)* 'वह मैं हूं।' 'ब्रह्म मैं हूं' अर्थ वाला एक महावाक्य। सोहम्।

सोहा—*(ना०)* शोभा।

सोहाग—दे० सुहाग ।
सोहागण—दे० सुहागण ।
सोहामणो—दे० सुहामणो ।
सोहावणो—दे० सुहावणो ।
सोहासण—दे० सुहासणी ।
सोहासणी—दे० सुहासणी ।
सोहासणो—दे० सुहासणो ।
सोहारद—*(न०)* १. मित्र । २ मित्रता । सौहार्द । दोस्ती ।
सोहिज—*(सर्व०)* वही । सोइज । सोही ।
सोहितो—*(न०)* मांस से बना एक खाद्य पदार्थ । सोवतो ।
सोहिलो—*(वि०)* सुगम । सुसाध्य । सेलो ।
सोही—*(सर्व०)* वही । *(वि०)* सब ही । सभी ।
सों—दे० सूं । सं० १, २. *(ना०)* शपथ । सौगंध ।
सोंस—*(ना०)* शपथ । सौगंध । सोगन ।
सोंहगो—दे० सूंघो ।
सौ—*(न०)* १. एक सौ । २. सौ की संख्या । *(वि०)* समस्त ।
सौ-अधियाळ—*(वि०)* सौ का आधा । पचास ।
सौ क्युं ही—*(अव्य०)* १. सब कुछ भी । २. सब कुछ ।
सौख—*(न०)* १. व्यसन । चस्का । २. मौज । शौक ।
सौखीन—*(वि०)* वह, जिसे किसी बात का शौक हो, शौकीन । छैला ।
सौगंद—*(ना०)* १. शपथ । कसम । २. प्रतिज्ञा । पण ।
सौगंध—*(ना०)* १. सुगंध । खुशबू । २. सौगंध ।
सौगात—*(ना०)* १. भेंट । उपहार । तोहफा । २. पाथेय । संबल । संभाळ ।
सौड़—*(न०)* रिजाई ।
सौण—दे० सवण ।
सौणहर—*(न०)* १. शयनघर । २. स्वप्न-घर ।
सौणी—दे० सवणी ।
सौदागर—*(न०)* १. व्यापारी । बेपारी । वणिक । २. कसाई । ३. चमड़ा या शराब बेचने वाला । खटीक ।
सौदागरी—*(ना०)* १. सौदागर का काम । व्यापार । २. प्रपंच । ३. खटपट । ४. खोटी पंचायती ।
सौदामणी—*(ना०)* बिजली । सौदामिनी । (बादलों की) ।
सौदो—*(न०)* १. व्यापार । बेपार । २. सट्टो ।
सौदो-सूत—*(न०)* १. बाजार से खरीदने की वस्तुएं । माल-सामान । खरीदी का सामान । २. खरीदी ।
सौभाग्य—*(न०)* १. अच्छा भाग्य । २. सुहाग । सधवापन । ३. ऐश्वर्य । वैभव । ४. मंगल । कल्याण । ५. सुख । आनंद । ६. अनुराग । ७. सुन्दरता । ८. सफलता । ९. सिंदूर ।
सौभाग्य-चिह्न—*(न०)* सौभाग्यवती स्त्री के बिंदिया, सिंदूर, नथ, मंगलसूत्र, रखड़ी इत्यादि सौभाग्य चिह्न ।
सौभाग्य तृतीया—*(ना०)* भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो बड़ी पवित्र मानी जाती है । बड़ी तीज । सुहाग तीज ।
सौभाग्यवती—*(ना०)* १. अच्छे भाग्य वाली । २. सुहागन ।
सौभाग्यवान—*(वि०)* अच्छे भाग्य वाला । भाग्यवान । खुशनसीब ।

सौभाग्यशालिनी—दे० सौभाग्यवती ।
सौभाग्यशाली—दे० सौभाग्यवान ।
सौमित्र—*(न०)* महाराज दशरथ की पत्नी (द्वितीय रानी) सुमित्रा के पुत्र—लक्ष्मण और शत्रुघ्न ।
सौम्य—*(वि०)* १. सोम संबंधी । २. शीतल । ठंडा । ३. शान्त । ४. कोमल । ५. नम्र । ६. कोमल प्रकृति वाला । ७. प्रसन्न । खुश । *(न०)* बुध ।
सौर—*(वि०)* १. सूर्य का । २. सूर्य संबंधी । *(न०)* १. शनि । पावर । २. यम । जमराज ।
सौरभ—*(ना०)* सुगंध । सुवास । खुशबू ।
सौरभेय—*(न०)* बैल ।
सौराष्ट्र—*(न०)* गुजरात का एक प्रदेश । काठियावाड़ । सोरठ ।
सौ-वर—*(अव्य०)* सौ बार ।
सौं—*(ना०)* शपथ । सौगंध ।
सौंदर्य—*(न०)* सुन्दरता । खूबसूरती ।
सौंळी—दे० सँवळी ।
सौंळो—दे० सँवळो ।
स्कूटर—*(न०)* पेट्रोल से चलने वाला एक द्विचक्री वाहन ।
स्कूल—*(न०)* विद्यालय । पाठशाला ।
स्कूल-मास्टर—*(न०)* पाठशाला का शिक्षक ।
स्क्रू—*(न०)* पेच ।
स्टाफ—*(न०)* किसी कार्यालय आदि के अधिकारियों का समूह ।
स्टांप—*(न०)* मोहर । ठप्पा । सरकारी ठप्पा लगा कागज ।
स्टीमर—*(न०)* भाप, तेल आदि ऊर्जा से चलने वाला जहाज ।
स्टील—*(न०)* १. लोहा । २. कभी काट न लगे ऐसा लोहा ।
स्टूडेंट—*(न०)* विद्यार्थी ।
स्टेज—*(न०)* रंगमंच ।
स्टेट—*(ना०)* राज्य । प्रांत । प्रदेश ।
स्टेशन—*(न०)* १. स्थान । २. रेलगाड़ी, बस आदि के ठहरने का स्थान ।
स्टेशन मास्टर—*(न०)* स्टेशन का सर्वोपरि अधिकारी ।
स्टेशनरी—*(ना०)* कार्यालय के कर्मचारियों के लिए आवश्यक कागज, पेंसिल, कलम, रबर आदि ।
स्टैंड—*(न०)* वह स्थान जहाँ बस-मोटरें मुसाफिरों को लेने-छोड़ने के लिए ठहरती हैं ।
स्टॉक—*(न०)* किसी दुकान, कार्यालयादि में स्थित सामग्री या धन आदि ।
स्तर—*(न०)* १. ऊपर का थर । २. परत । तह । ३. तल । ४. सतह ।
स्तवन—*(न०)* स्तुति करना ।
स्तुति—*(ना०)* प्रार्थना ।
स्तोत्र—*(न०)* देवतादि की स्तुति के संस्कृत भाषा के छंद ।
स्त्री—*(ना०)* १. नारी । लुगाई । बैर । २. पत्नी । जोरू । जोड़ायत । ३. किसी जीव-जंतु की मादा ।
स्त्री-कुसुम—*(न०)* १. रज । २. रजःस्राव ।
स्त्री-केशर—*(ना०)* पुष्प का नारी बीज वाला रेशा या केशर । पुंकेशर की मादा ।
स्त्री-गमन—*(न०)* स्त्री से मैथुन । संभोग ।
स्त्री-ग्रह—*(न०)* चंद्र, बुध और शुक्र ग्रह (ज्योतिष) ।
स्त्री-चरित्र—*(न०)* स्त्रियों के कर्म, आचार, व्यवहार इत्यादि । १. पाखंड । ढोंग । २. धूर्तता ।

स्त्रीजित—*(वि०)* जोरू का गुलाम। स्त्रैण। लुगाबड़ियो। बैरियो। २. स्त्री के वश में नहीं होने वाला।

स्त्रीत्व—*(न०)* १. स्त्री होने का गुण, भाव, अवस्था इत्यादि। २. स्त्रियों का स्वभाव।

स्त्री-धन—*(न०)* १. स्त्री का वह धन जिस पर उसके पति का भी अधिकार न हो। २. पीहर से मिला हुआ माल-सामान और धन इत्यादि।

स्त्री-धर्म—*(न०)* १. रजोदर्शन। २. मैथुन। ३. स्त्री से संबंधित आचरण, नियम, कर्त्तव्य इत्यादि।

स्त्री-धर्म में आणो—*(मुह०)* १. प्रथम रजोदर्शन होना। २. मासिक रजो-दर्शन होना।

स्त्री-पुरुष—दे० स्त्री-कुसुम।

स्त्री-प्रसग—*(न०)* मैथुन। संभोग।

स्त्री-रत—*(वि०)* जो स्त्री में बहुत अनुराग रखता हो।

स्त्री-रत्न—*(न०)* १. स्त्री रूपी रत्न। २. स्त्रियों में श्रेष्ठ। ३. पतिव्रता। ४. सुशील, कुलीन स्त्री।

स्त्री-रंजन—*(न०)* पान।

स्त्री-लंपट—*(वि०)* १. कामी। २. व्यभि-चारी। लंपट।

स्त्रीलिंग—*(न०)* १. राजस्थानी व्याकरण के दो लिंगों में से एक जो स्त्री जाति के रूप का वाचक होता है। नारी जाति (व्याकरण)। २. योनि। भग। ३. स्त्री का चिन्ह।

स्त्री-समागम—*(न०)* संभोग। मैथुन।

स्त्री-संग—*(न०)* मैथुन। संभोग।

स्त्री-संभोग—*(न०)* मैथुन। स्त्री संग।

स्त्री-सुख—*(न०)* १. संभोग। मैथुन। २. स्त्री की विद्यमानता होने का योग (ज्योतिष)। ३. स्त्री से प्राप्त होने वाला सुख, आनंद, भोग इत्यादि।

स्त्री-स्वभाव—*(न०)* १. जिसका स्वभाव स्त्रियों के जैसा हो। २. स्त्रियों की प्रकृति।

स्त्री-स्वातंत्र्य—*(न०)* स्त्रियों की स्वतं-त्रता।

स्त्री-हठ—*(ना०)* १. स्त्री की हठ। २. बहुत भारी हट। जबरदस्त जिद।

स्त्री-हत्या—*(ना०)* १. स्त्री की हत्या। २. स्त्री हत्या का पाप।

स्त्रैण—*(वि०)* १. स्त्री के वश में रहने वाला। स्त्री का गुलाम। २. स्वभाव, आचरण इत्यादि में स्त्री जैसा। ३. स्त्री संबंधी।

स्थान—*(न०)* १. जगह। स्थल। भूमि। २. घर। आवास। ३. पद। ओहदा। ४. प्रदेश।

स्थानकवासी—*(न०)* एक जैन संप्रदाय। बाइस टोळा।

स्थान-निमड़—*(वि०)* मूर्ख।

स्थान-भ्रष्ट—*(भू०कृ०)* स्थान या पद से हटाया हुआ। २. अपने स्थान से भ्रष्ट। ३. पदभ्रष्ट।

स्थानापन्न—*(वि०)* १. स्थान या पद पर अस्थाई रूप से काम करने वाला। २. प्रतिष्ठित।

स्थानांतर—*(न०)* (नौकरी करने वाले को) एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलना। बदली।

स्थाने—दे० सुथाने।

स्थिति—*(ना०)* १. अवस्था। दशा। २. संयोग। मौका। ३. किसी व्यक्ति या

संस्था की मर्यादा, मान आदि की सूचक दशा। ४. एक ही स्थान पर एक रूप में बने रहना।

स्नान—*(न०)* नहान। सिनान।

स्नेह—*(न०)* १. प्यार। दुलार। अनुराग। २ घी, तेल आदि चिकनाहट या चिकनाहट वाले पदार्थ।

स्पर्श—*(न०)* १. त्वचा का वह गुण जिससे छूने दबने आदि का अनुभव होता है। २. स्पर्शेन्द्रिय से होने वाला ज्ञान। ३. ३. दो वस्तुओं का आपस में छूना या भिड़ना।

स्पेन—*(न०)* यूरोप का एक देश।

स्मर—*(न०)* कामदेव।

स्मरध्वज—*(न०)* स्मरध्वज। पुरुष की लिंगेन्द्री।

स्मरागार—*(न०)* भग। योनि।

स्मरारि—*(न०)* महादेव। शिव।

स्यंदन—*(न०)* १. रथ। २. घोड़ा। ३. चित्र। ४. जल। पानी। ५. गमन।

स्यंदना-रूढ—*(वि०)* वह जो रथ में सवार हो। संदणारोही।

स्यंध—*(न०)* सिंधु। समुद्र।

स्याणी—*(वि०न०)* १. सयानी। समझदार। अनुभवी (स्त्री)। सैणी। २. बड़ी उमर की।

स्याणो—*(वि०)* १. समझदार। सयाना। सेणो। २ भला। विनम्र। *(न०)* जादू-टोना करने वाला। झाड़ा झपटा देने वाला। टोना-टोटका करने वाला।

स्यात—*(अव्य०)* १. ही। २. शायद। कदाचित। कदाच।

स्यान—*(ना०)* १. तड़क-भड़क। ठाट-बाट। २. शान। ३. होश।

स्यापो—दे० सापो।

स्याबास—दे० सैंबास।

स्याम—*(वि०)* १. काला। २ नीला। *(न०)* १. श्याम रंग। २. श्रीकृष्ण। ३ अंधेरा। ४. कृष्ण पक्ष। वदपख।

स्यामखोर—*(वि०)* स्वामिभक्त।

स्याम-धरम—*(न०)* स्वामीधर्म। स्वामी-भक्ति। स्यामध्रम।

स्यामध्रम—दे० स्यामधरम।

स्यामा—*(ना०)* १. रात। २. रुक्मिणी। ३. राधा। ४. श्यामा स्त्री।

स्यारी—*(ना०)* १. रहँट या बैलगाड़ी का एक उपकरण। २. छेद करने का एक औजार। छोटी स्यार। ३. एक प्रेतनी। ४. शृगाली। स्याळी। ५. बारी। पारी।

स्याळ—*(न०)* शृगाल। सियार। गीदड़। सियाळ। गादड़ो।

स्याळियो—दे० स्याळ्यो।

स्याळी—*(ना०)* शृगाली। सियारी। गीदड़ी।

स्याळो—*(न०)* शीत ऋतु। सरदी। सियाळो।

स्याळ्यो—*(न०)* गीदड़। सियाळियो।

स्याही—*(न०)* रोशनाई।

स्याही-चूस—*(न०)* स्याही चूसने वाला कागद। ब्लाटिंग पेपर।

स्याही-सोख—दे० स्याहीचूस।

स्रग—*(न०)* स्वर्ग।

स्रगलोक—*(न०)* स्वर्गलोक।

स्रगवास—*(न०)* मृत्यु। स्वर्गवास। सुरगवास।

स्रगविहार—*(न०)* मृत्यु। स्वर्गविहार। सुरग सिधारणो।

सगविहारी—*(न०)* देवता ।
सगसुखदा—*(न०)* कल्पवृक्ष ।
सगाळ—*(न०)* गीदड़ । शृगाल ।
सणिका—*(ना०)* लार । लाळ ।
सप—*(न०)* सर्प । साप ।
सपाटी—*(ना०)* चोंच । चूंच ।
सब—*(वि०)* सब । समस्त । सकल । सँग । सरब ।
सबभखी—*(वि०)* १. सर्वभक्षी । १. अग्नि ।
सबभोगी—*(न०)* अग्नि ।
सब्ब-निवास—*(न०)* सर्व भूतों में निवास करने वाला । सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा ।
सब्बवियाप—*(न०)* सर्वव्यापक । परमात्मा ।
सम—*(न०)* १. शर्म । २. श्रम । परिश्रम ।
सव—दे० श्रव । *(न०)* १. प्रवाह । २. झरना । *(वि०)* सर्व । सब ।
सवण—*(न०)* १. कान । २. पसीना । ३. झरना । दे० श्रवण ।
सवदायक—*(न०)* कल्पवृक्ष ।
सवंती—*(ना०)* नदी ।
सवै—*(वि०)* सर्व । सब । *(अव्य०)* सब ओर । सर्व ।
सींग—*(न०)* १. सींग । शृंग । २ पर्वत की चोटी ।
साझणो—*(क्रि०)* १. धारण करना । २. सज्ज होना । ३. कार्य सिद्ध करना । ४. मारना । नाश करना । साझणो ।
साध—दे० श्राद्ध ।
साप—*(न०)* शाप ।
साव—*(न०)* १. बहाव । २. गर्भपात । ३. रक्तस्राव ।
सावक—*(न०)* १. जैन मूर्ति-पूजक गृहस्थ । श्रावक । सावग ।
सावकणी—*(ना०)* श्रावक की पत्नी ।
सावग—दे० सावक ।
सिया—*(न०)* १. लक्ष्मी । २. स्त्री ।
सुत—*(न०)* कान । श्रुत ।
सुति—*(न०)* १. श्रुति । वेद । २. कान ।
सोण—*(न०)* रुधिर । रक्त । श्रोण । लोहो ।
सोणि—*(न०)* नितंब ।
सोणित—*(न०)* रक्त । श्रोणित ।
सोणी—*(ना०)* धरती ।
सोतपत—*(न०)* समुद्र ।
सोयण—*(न०)* रक्त । खून । सोण ।
सोवन—*(न०)* स्वर्ण । सोना ।
स्वतंत्र—*(वि०)* स्वाधीन ।
स्वतंत्रता—*(ना०)* स्वाधीनता ।
स्वदत्तां—*(अव्य०)* १. अपनी ओर से दान में दिया हुआ । २. ताम्रपत्र, राजआज्ञापत्र, दानपत्र और भूमि के पट्टों इत्यादि में उक्तार्थक के साथ में (पहले) लिखा जाने वाला एक पारिभाषिक शब्द । (स्वदत्तां-परदत्तां) ।
स्वपाकी—*(वि०)* अपने हाथ से ही भोजन बनाकर खाने वाला ।
स्वप्न—*(न०)* नींद में भासित होने वाला दृश्य । नींद में दिखाई देने वाली घटनाएँ । सपना । सपनो ।
स्वभाव—*(न०)* १. प्रकृति । २. आदत । ३. मुख्य गुण ।
स्वमेव—*(अव्य०)* १. स्वयमेव । स्वयं ही । २. आप ही आप ।
स्वयंभू—*(न०)* १. ब्रह्मा । विधाता । २. शिव । ३. वेद । *(वि०)* जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो ।

स्वयंवर—*(न०)* १. प्राचीन कालीन एक प्रथा जिसमें कन्या अपने पति का चुनाव स्वयं करती थी। कन्या द्वारा स्वयं अपने पति को चुनना। २. वह स्थान जहाँ कन्या वर को चुने। ३. स्वयंवर चुनने की पद्धति या रिवाज।

स्वयंवरा—*(ना०)* पति का चुनाव अपने आप करने वाली कन्या।

स्वयंसिद्ध—*(वि०)* १. जो बिना किसी प्रमाण या तर्क के अपने आप ही ठीक हो। आपोआप सिद्ध। २. सर्वमान्य।

स्वयंसेवक—*(न०)* अपनी इच्छा या प्रेरणा से सेवा करने वाला। वालंटियर।

स्वयंसेविका—*(ना०)* स्त्री-स्वयंसेवक।

स्वर—*(न०)* ध्वनि। आवाज। १. नाक से निकलने वाला श्वास। २. संगीत के स्वर। सरगम। ३. वाद्य के विभिन्न स्वर। बोल। ४ सात की संख्या। ५. श्वास। ६. उच्छ्वास। ७. वह वर्ण जिसका पूरा उच्चारण अन्य वर्ण की सहायता के बिना हो सके। स्वतंत्र रूप से पूर्णरूपेण उच्चरित अ, आ आदि वर्ण *(व्या०)*। ८. उक्त ध्वनियाँ *(व्या०)*। ९. सुर। तान। लय। १०. प्राणियों के गले की आवाज।

स्वर-ग्राम—*(न०)* संगीत में 'सा' से 'नी' तक के सात स्वरों का समूह।

स्वर मात्रा—*(ना०)* उच्चारण की मात्रा।

स्वर विज्ञान—*(न०)* वह विद्या जिसमें स्वर संबंधी सभी बातों का विवेचन हो। स्वर विद्या।

स्वरस—*(न०)* पत्तों को कूट-पीसकर निकाला हुआ रस।

स्वरसंधि—*(ना०)* स्वर वर्णों में स्वर के अन्त और स्वर के पहले पदों में होने वाली संधि। स्वरों की संधि।

स्वरागम—*(न०)* दो वर्णों के बीच में नए स्वर का आना। *(व्या०)*।

स्वराघात—*(न०)* उच्चारण में स्वर विशेष पर लगने वाला जोर।

स्वराज—*(न०)* कोई देश किसी के अधीन न होकर स्वतन्त्र हो। देश में देश के लोगों का राज्य। अपना राज्य।

स्वराज्य—दे० स्वराज।

स्वराट—*(न०)* १. इन्द्र। २. ब्रह्म। ईश्वर।

स्वरूप—*(न०)* १. व्यक्ति, पदार्थ आदि की आकृति। २. मूर्त्ति, चित्रादि। ३. वह जिसने देवता का रूप धारण किया हो।

स्वरूपश्री—दे० सरूपश्री।

स्वरोदय—*(न०)* स्वर या श्वास से सब प्रकार के अशुभ या शुभ फल जानने की विद्या। सरोदो।

स्वरोदय विज्ञान—*(न०)* स्वरोदय जानने का विज्ञान।

स्वर्ग—*(न०)* देवलोक। अमर लोक। अमरावती।

स्वर्गपति—*(न०)* १. इन्द्र। २. धर्मराज।

स्वर्ण जयंती—*(ना०)* संस्था या व्यक्ति की पचासवीं वर्षगाँठ।

स्वर्ण-पदक—*(न०)* सोने का पदक। सोने-रो-तुकमो।

स्वसन—*(न०)* पवन। वायु। वायरो।

स्वस्ति—*(अव्य०)* 'कल्याण हो' (आशीर्वाद)। *(ना०)* कल्याण। मंगल।

स्वस्तिक—*(न०)* एक मंगल सूचक चिन्ह। **साखियो। साथियो।**

स्वस्ति-वचन—*(न०)* आशीर्वचन।

स्वस्तिवाचन—*(न०)* कार्यारंभ का मंगल पाठ।

स्वस्ति श्री—*(वि०)* १. कल्याण और श्रीयुक्त। २. पत्र लेखन में जिसको पत्र लिखा जाय उसके स्थान (तथा व्यक्ति) का विशेषण पद।

स्वस्थ—*(न०)* १. नीरोग। २. जिसमें कोई दोष न हो। **निरोगो।**

स्वागण—*दे०* सुहागण।

स्वागत—*(न०)* १. अभिवादन। २. अभ्यर्थना। ३. आगत व्यक्ति का सम्मान। **अगवानी। आवभगत।**

स्वागत करणो—*(मुह०)* कोई बात, सुझाव आदि का सहर्ष स्वीकार करना। *(क्रि०)* आगमन पर सत्कार करना।

स्वागत-कारिणी—*(ना०)* आगत-स्वागत के लिए गठित समिति।

स्वागत-मंत्री—*(न०)* स्वागत-समिति का मंत्री।

स्वागत-सत्कार—*(न०)* आगंतुक का आदर-सम्मान।

स्वागताध्यक्ष—*(न०)* स्वागत-समिति का अध्यक्ष।

स्वाड़—*दे०* सुआवड़।

स्वाद—*(न०)* १. पदार्थ के खट्टे, मीठे, कड़ुए आदि का जीभ को होने वाला अनुभव। जायका। २. किसी बात में मिलने वाला आनंद। मजा।

स्वादिष्ट—*(वि०)* १. अच्छे स्वाद वाला। २. रुचिकर। ३. सरस। ४. मधुर।

स्वादी—*(ना०)* दाख। द्राक्षा। **दाख।** *(वि०)* स्वाद लोलुप। **सवादियो।**

स्वादेन्द्रिय—*(ना०)* जीभ।

स्वाधिकार—*(न०)* १. अपना अधिकार। एक। २. अपनी सत्ता।

स्वाधीन—*(वि०)* १. स्वतंत्र। २. आत्मनिर्भर।

स्वाध्याय—*(वि०)* १. सतत अध्ययन करने की क्रिया या भाव। २. वेद या धर्मशास्त्रों का नियमित पाठ। ३. प्रणव-मंत्र का जप।

स्वान—*(न०)* कुत्ता। **कूतरो।**

स्वानुभव—*(न०)* अपना अनुभव।

स्वाप—*(ना०)* नींद। ऊंघ।

स्वाभाविक—*(वि०)* १. प्राकृतिक। नैसर्गिक। २. अकृत्रिम। ३. सहज। ४. स्वभावसिद्ध। ५. अपने आप होने वाला। सामान्यतया। ६. स्वभाव से संबंधित।

स्वाभिमान—*(न०)* १. अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान। २. आत्मगौरव।

स्वाभिमानी—*(वि०)* स्वाभिमान रखने वाला।

स्वामी—*(न०)* १. धनी। मालिक। **धेणी।** २. राजा। ३. पति। शौहर। **धणी।** ४. ईश्वर। ५. साधु। संन्यासी।

स्वामी-धर्म—*(न०)* १. पातिव्रत धर्म। २. स्वामिभक्ति। **सामधरम।**

स्वामीनारायण—*(न०)* महात्मा रामानंद के शिष्य तथा स्वामीनारायण सम्प्रदाय के प्रवर्तक भक्त सहजानंद स्वामी।

स्वार्थ—*(न०)* १. अपना मतलब। गरज। प्रयोजन। ३. अपना लाभ। ४.

वाच्यार्थ। मूल या नियत अर्थ। ५. स्वयं के लाभ की बात।

स्वाळख—*(न०)* मारवाड़ में नागोर नगर के आसपास का प्रदेश। भारत में उत्पन्न होने वाले बैलों की नस्ल का एक प्रसिद्ध देश। सपादलक्ष (मारवाड़ का)।

स्वाळखियो बळद—*(न०)* स्वाळख प्रदेश या नसल का प्रसिद्ध बैल। नागोरी बैल।

स्वास—*(न०)* दे० श्वास।

स्वाहा—*(ना०)* अग्नि पत्नी। *(न०)* १. होम में आहुति-मंत्र के अन्त में उच्चरित एक शब्द। २. हवि-प्रदान का मंत्र शब्द। ३. एक अग्नि मंत्र।

स्वाहाग्रसण—*(न०)* देवता।

स्वाहापति—*(न०)* अग्नि।

स्वांग—*(न०)* १. मनोरंजन, नाटक आदि में किसी के अनुरूप धारण किया जाने वाला वेष। २. परिहासपूर्ण खेल-तमाशा। ३. नकल।

स्वांतःसुखाय—*(अव्य०)* अपने सुख के लिये। अपनी शांति के लिये। आत्म-सुख। आत्मानंद।

स्वाँर—*(ना०)* हजामत। खिजमत।

स्वीकार—*(न०)* ग्रहण या अंगीकार करने की क्रिया। अपनाना। मंजूरी।

स्वीजरलैंड—*(न०)* यूरोप का एक देश।

स्हावो—*(न०)* विवाह का दिन। विवाहादि की दृष्टि से शुभ दिन। सहालग। सावो। साहो। दे० साहो।

स्होवणी—*(वि०)* सुहावनी।

ह

ह—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का अंतिम कण्ठ्य ऊष्म व्यंजन वर्ण।

हउओ—*(अव्य०)* १. बस। बस करो। रुको। बस इतना ही। हउँ। २. हाँ।

हउँ—दे० १. हाँ। २. दे० हउओ।

हक—*(न०)* १. स्वत्व। अधिकार। दावा। २. फर्ज। कर्त्तव्य। ३. नेग। दस्तूरी। लाग। ४. मुआवजा। ५. पक्ष। ६. धर्म। ७. परमेश्वर। ८. सत्य। ९. न्याय। *(वि०)* १. उचित। ठीक। सही। समुचित। २. यथा-न्याय। ३. प्राप्य।

हक छोड़णो—*(मु०हा०)* स्वत्व छोड़ना। अधिकार त्यागना।

हक ढूकणो—*(मु०हा०)* १. अधिकार लगना। २. अधिकार मिलना।

हकणो—*(क्रि०)* १. हाँका जाना। २. रवाना होना। ३. रेल या बैलगाड़ी का चलना।

हकतलफी—*(ना०)* किसी के हक को मारने का गुनाह या अन्याय।

हकताला—*(न०)* खुदाताला। ईश्वर।

हक त्यागणो—दे० हक छोड़णो।

हकदार—*(वि०)* १. हक रखने वाला। स्वत्व या अधिकार रखने वाला। २. जिसका हक हो।

हकदारण—*(वि०)* जिसका हक लगता हो वह (स्त्री)।

हकदारी—*(ना०)* १. हकदारपना। हकपणो। २. अधिकार। दावा। दावो।

हकदावो—*(न०)* १. हक का दस्तावेज। २. हक प्राप्त करने के लिये संबंधित अदालत में की जाने वाली दरख्वास्त।

हक धरणो—*(न०)* हक लगाना।

हकनाक—*(अव्य०)* १. बिना कारण या हक के। हकनाहक। २. व्यर्थ। ३. जबरदस्ती।

हकनामो—*(न०)* हक का दस्तावेज। हकपत्र।

हक नाहक—दे० हकनाक।

हकफरामोश—*(वि०)* १. हक छीनने वाला। २. नमक हराम। कृतघ्न।

हक-बेहक—*(अव्य०)* अधिकार और अनधिकार।

हकमार—*(न०)* किसी का हक छीनना। *(वि०)* हक छीनने वाला।

हक मारणो—*(मुहा०)* स्वत्व हनन करना। अधिकार छीनना।

हक मारी—*(ना०)* हक छीनने का काम।

हक-मिटणो—*(मुहा०)* १. अधिकार न रहना। २. अधिकार छूटणो। अधिकार छूटना।

हक में—*(अव्य०)* १. पक्ष में। २. लाभ में।

हक मौरूसी—*(न०)* पैतृक अधिकार।

हकल—*(अव्य०)* १. चाहिये जिससे थोड़ा अधिक। २. तोल में बराबर से कुछ अधिक। *(वि०)* अधिक। ज्यादा। वत्तो।

हक लगणो—*(मुहा०)* किसी वस्तु पर अधिकार होना या बनाना। हक लागणो।

हक लागणो—*(मुहा०)* दे० हक लगणो।

हकवार—*(अव्य०)* हक के अनुसार।

हकसफो—*(न०)* मकान, भूमि आदि खरीदने का वह हक जो पड़ोसी कुटुम्बीजन या लेनदार को प्राप्त होता है। हकशुफा।

हक-सरूपी—*(अव्य०)* १. ईश्वर को साक्षी मान कर। २. ईमानदारी से।

हकसाई—*(वि०)* हक की। हक सरूपी। *(ना०)* एक कर। वस्तूरी।

हक हालणो—*(मुहा०)* १. सन्मार्ग पर चलना। २. सत्याचरण करना। सद्व्यवहार का पालन करना। नीति नहीं छोड़ना। ४. हक लगना।

हकाणो—*(क्रि०)* १. चलाना। २. हँकाना।

हकायत—*(अव्य०)* १. हक से। २. ईमानदारी से। धर्म से। हक सरूपी। *(वि०)* सच्चा। *(क्रि०वि०)* निश्चय।

हकार—*(न०)* 'ह' अक्षर। *(अव्य०)* १. स्वीकृति। २. हाँ।

हकारणो—*(क्रि०)* १. बुलाना। २. चलाना। हाँकना। हाँकणो। ३. हाँ करना। स्वीकारना।

हकारात्मक—१. स्वीकृति सूचक। २. निश्चयात्मक।

हकाळणो—*(क्रि०)* १. ललकारना। धिक्कारणो। २. चलाना। ३. धिक्कारना।

४. बुलाना। ५. भगा देना। निकालना।

हकाळी—*(ना०)* १. हाँकने की क्रिया। २. भगा देने की क्रिया।

हकावणो—*(क्रि०)* १. गाड़ी आदि को चलाना। २. चलने को प्रेरित करना।

हकी—*(अव्य०)* १. हक से। २. अधिकार से। *(वि०)* हक की।

हकीकत—*(ना०)* १. सच्चा वृत्तान्त। २. वास्तविक बात। असलियत। ३. हालत। ४. हाल। दशा। ५. राजस्थानी साहित्य का एक गद्य प्रकार। हकीगत। ६. स्थान विशेष की स्थिति का वर्णन। ७. ख्यात। इतिहास। जैसे—मारवाड़-री-हकीकत।

हकीकी—*(वि०)* १. वास्तविक। असली। २. सच्चा। यथार्थ। ३. सगा। संबंधी। ४. ईश्वरीय।

हकीको—*(वि०)* १. विश्वस्त। विश्वास के योग्य। ठावो। २. वास्तविक।

हकीगत—दे० हकीकत।

हकी-नकी—*(अव्य०)* १. हाँ या ना। २. निश्चयपूर्वक। ३. निश्चयात्मक उत्तर।

हकीम—*(ना०)* १. यूनानी चिकित्सक। २. डाक्टर। ३. वैद्य। ४. मुसलमान वैद्य।

हकीमात—*(ना०)* १. यूनानी चिकित्सा पद्धति। २. हकीम का काम। हकीमी। *(वि०)* हकीम या हकीमात संबंधी।

हकीमी—दे० हकीमात।

हकीर—*(वि०)* १. तुच्छ। क्षुद्र। ओछो। नीच। २. अल्प। थोड़ो।

हकूमत—*(ना०)* १. हुकूमत। शासन। अधिकार। सत्ता। २. हाकिम का कार्यालय। कचहरी। कचेड़ी। हुकमत।

हक्क—*(ना०)* हक। अधिकार।

हक्को-बक्को—*(वि०)* घबराया हुआ। हाकबाक।

हग—*(ना०)* १. मक्खी मच्छर की विष्टा। हगार। २. विष्टा। गू।

हगणो—दे० हँगणो।

हगजारमर—*(ना०ब० व०)* [हींग, जीरा, मिर्च] मात्राओं बिना का लेखन।

हगाणो—*(क्रि०)* १. शिशु के हगने के लिए दोनों पाँवों के आधार पर (टट्टी फिरने को) बिठाना। २. हगने को प्रवृत्त करना। ३. डराना।

हगाम—*(ना०)* १. भीड़भाड़। २. बड़ी सभा। ३. उत्सव। हगामो।

हगामी—*(वि०)* १. उत्साह वर्धक। २. उत्सव वाला। उत्सवमय।

हगामो—दे० हगाम।

हगार—दे० हंगार।

हगावणो—दे० हंगावणो।

हचको—दे० हिचको।

हचमच—*(ना०)* १. धक्का। धक्काधूमो। २. शोरगुल। ३. भय। ४. घबराहट।

हचमचणो—*(क्रि०)* १. हिल उठना। डिग जाना। डिगमगाना। डगमगणो। २. घबराना। ३. भय उत्पन्न होना।

हचमचाट—*(ना०)* १. घबराहट। २. भय। डर। भो।

हचमचावणो—*(क्रि०)* १. हिलाना। डिगाना। डगमगावणो। २. घबराहट पैदा करना। ३. भय उत्पन्न करवाना।

हचमचावणो—दे० हचमचणो।

हचीड़ो—*(ना०)* धक्का। जोर की टक्कर। झचोड़ो।

हज—(अव्य०) १. अजी । २. अरे । ओ ! (ना०) मुसलमानों की मक्के-मदीने की यात्रा ।

हजम—(न०) १. पचने की क्रिया या भाव । पाचन । २. हथियाना । (अनुचित रूप से) । (वि०) पचा हुआ ।

हजम करणो—(मुहा०) १. किसी की वस्तु लेकर वापस नहीं देना । २. दूसरे की वस्तु को दबा लेना । ३. खाये हुये को पचाना ।

हजमत—दे० हजामत ।

हजम-होणो—(मुहा०) पचना ।

हजरत—(न०) १. सम्मानार्थ प्रयुक्त संबोधन । २. महात्मा । ३. बादशाह । (वि०) १. बदमाश । २. चालाक ।

हजाम—(न०) नाई । नापित । खवास ।

हजामत—(ना०) १. सिर और दाढ़ी के बाल मुंडवाना । २. क्षौर । खिजमत । सँधार । स्वांर । ३. पिटाई । ४. निरर्थक परिश्रम ।

हजामत करणो—(मुहा०) १. ठगना । २. सिर दाढ़ी के बाल काटना । ३. दाढ़ी बनाना । ४. मारना । पिटाई करना । मारणो । ५. निरर्थक परिश्रम करना ।

हजाम-पट्टी—(ना०) १. हजाम का काम । हजामत । २. हलका काम । ३. निकम्मापन ।

हजार—(वि०) सहस्र । दस सौ । (न०) हजार की संख्या । '१०००' ।

हजार हाथां-रो-धणी—(पद०) परमेश्वर । ईश्वर ।

हजार हाथां वाळो—(पद०) परमेश्वर । ईश्वर ।

हजारी—(न०) १. एक पुष्प । गेंदा । २. एक शाही मनसब । ३. लोकगीतों का एक नायक ।

हजारी-ऊमर—(अव्य०) १. आशीर्वादात्मक शब्द । २. हजार वर्ष की उम्र ।

हजारी गुल-रो-फूल—(पद०) लोकगीतों का एक नायक ।

हजारी ढोलो—(न०) १. विवाह का एक लोकगीत । २. इस लोकगीत का नायक ।

हजाँ—(न०) १. हज करने वाला । हाजी । २. मुसलमान ।

हजी—दे० हजै ।

हजूर—(न०) १. राजसभा । दरबार । २. राजा । ३. बड़ों के लिए संबोधन शब्द । (सर्व०) आप ।

हजूरण—(ना०) १. दासी । हजूरणी । २. सेविका ।

हजूरणी—दे० हजूरण ।

हजूरियो—(न०) १. सेवक । २. दास । ३. हजाम के कंधे पर रहने वाला अंगोछा या रूमाल ।

हजूरी—(न०) १. सेवक । २. दास । (वि०) हजूर का । हजूर से संबंधित ।

हजै—(क्रि०वि०) अभी तक । अजै । हजी । अजैतांई ।

हट—(ना०) १. हटने की क्रिया या भाव (तुच्छता) । २. दुराग्रह । जिद् । ३. दुकान । हाट ।

हटक—(ना०) १. वर्जन । रोक । अटक । २. डर । भय । ३. जिद् । हठ । ४. प्रतिज्ञा । पण । ५. मन की दृढ़ता । ६. संयम ।

हटकणो—*(क्रि०)* १. रुकना। **अटकणो**। २. मन का वश में करना।

हटकाणो—*(क्रि०)* १. रोकना। २. मना करना। **अटकाणो**।

हटकारणो—*(क्रि०)* १. संयम रखना। मन को वश में रखना। २. हटाना। ३. उपेक्षा करना। ४. रोकना। **अटकावणो**। ५. रुकना। **अटकाणो**।

हटकीलो—*(वि०)* १. हठी। जिद्दी। २. मन को वश में रखने वाला।

हटको—*(न०)* १. भय। डर। २. डाँट।

हटड़ी—*(ना०)* पीसे हुये नमक, मिर्च, हलदी आदि को रखने के लिये खानों वाली पेटी। **चमक**। चार छः खानों वाली एक पेटी, जिसमें शाक-सब्जी बनाने के लिए मशाले भरे रहते हैं।

हटणो—*(क्रि०)* १. हटना। खिसकना। २. विमुख होना। ३. प्रतिज्ञा से विचलित होना।

हट-ताणा—*(ना०)* हठ को खींचे रखना। हठ को दृढ़ता से पकड़े रहना। हठ को नहीं छोड़ना।

हटताळ—दे० हड़ताळ।

हटनाळ—दे० हड़ताळ।

हटवाड़ो—*(न०)* १. बाजार। २. नियत दिवस पर लगने वाला अस्थाई बाजार। ३. मेले में लगने वाला बाजार।

हटवाणियो—*(न०)* बनिया। दूकानदार।

हटवाणो—दे० हटाणो।

हटाड़णो—दे० हटावणो।

हटाणो—*(क्रि०)* १. दूर करना। २. अवरोध दूर करना। ३. पीछे हटाना। ४. पद या काम से अलग करना। ५. विरक्त करना। ६. निरस्त करना।

हटावणो—दे० हटाणो।

हटि—*(ना०)* १. हाट। दुकान। २. बाजार।

हटि-हटि—दे० हाट-हाट।

हट्टी—*(ना०)* १. दृढ़ता। मजबूती। २. सौष्ठव। ३. शरीर की सुन्दरता और दृढ़ता। ४. शरीर की बनावट। *(वि०)* दृढ़। मजबूत (स्त्री)।

हट्टो—*(वि०)* दृढ़। मजबूत।

हट्टो-कट्टो—*(वि०)* १. दृढ़। मजबूत। २. स्वस्थ। तंदुरस्त। ३. जवान। युवा। ४. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। **सँठो**।

हठ—*(ना०)* १. जिद्द। आग्रह। **अड़**। २. दृढ़ प्रतिज्ञा। ३. दुराग्रह। ४. जबरदस्ती।

हठ करणो—*(मुहा०)* जिद्द करना। **हठ झालणो**।

हठ झालणो—*(मुहा०)* हठ पकड़ना। जिद्द करना। **हठ करणो**।

हठ-झेलणो—दे० हठ झालणो।

हठता—*(ना०)* आग्रह। जिद्द। हठ।

हठधर्मी—*(ना०)* १. हठ को न छोड़ने का दुराग्रह। २. झूठी हठ। *(वि०)* दुराग्रही। जिद्दी।

हठयोग—*(न०)* आसन, प्राणायाम द्वारा किया जाने वाला योग का एक प्रकार।

हठाग्रो—*(वि०)* हठाग्रही। हठी।

हठात्—*(अव्य०)* १. बलात्। **बळजबरी**। २. जबरदस्ती से। ३. विवश होकर।

हठायत—*(वि०)* १. हटाने वाला। २. हटने वाला। ३. हठात।

हठाळ—*(वि०)* १. हठ वाला। हठी। **हठाळो**। २. वीर। ३. युद्ध में पीछे पाँव नहीं रखने वाला। **रणहठ्ठो**।

हठाळी—*(वि०मा०)* हठवाली। हठीली। जिद्दी। *(वि०न०)* हठवाला। हठीला। जिद्दी।

हठाळो—दे० हठाळ।

हठी—*(वि०)* १. दुराग्रही। २. जिद्दी।

हठीली—*(वि०मा०)* जिद्दी। हठवाली।

हठीलो—*(वि०)* १. जिद्दी। हठीला। हरीलो। २. दुराग्रही। ३. दृढ़प्रतिज्ञ।

हठेत—दे० हठायत।

हठोती—दे० हथोटी।

हड—*(न०)* हड्डी। अस्थि। हाडको। हाडकी।

हड़क—दे० हिड़क।

हड़कणी—*(वि०)* १. पागल (स्त्री)। २. उत्पाती। उपद्रवी (स्त्री)। ३. कलह-कारिणी। झगड़ालू। ४. जिसको पागल कुत्ते ने काट खाया हो। ५. जिसको हड़किया रोग हो गया हो।

हड़कणो—*(वि०)* १. पागल। २. उत्पाती। ३. कलहकारी। ४. जिसको पागल कुत्ते ने काट खाया हो। ५. जिसको हड़किया रोग हो गया हो। *(क्रि०)* १. हिड़किया होना। २. कलह करना।

हड़कवा—दे० हिड़कवा।

हड़कायलो—दे० हड़कायो।

हड़कायो—*(वि०)* १. पागल। २. पागल कुत्ते के काटने से हुआ पागल। हिड़-कायो। ३. उत्पाती। उपद्रवी।

हड़कार—दे० डकार।

हड़किया—दे० हड़कायो।

हडकी—दे० हाडकी।

हड़कीजणो—*(क्रि०)* १. पागल कुत्ते के काटने से पागल होना। २. पागल होना।

हड़केड़ो—दे० हड़कायो सं० १, २.

हड़को—*(न०)* भय। डर।

हडको—दे० हाडको।

हड़को-धड़को—*(न०)* १. भय। डर। संको। २. लाज। शर्म। सरम।

हड़गड़ियाँ खाणो—*(मुहा०)* बार-बार आना। बार-बार आना-जाना।

हड़गड़ियो—*(वि०)* १. भागदौड़ करने वाला। २. बार-बार आने वाला।

हड़गड़ी—*(ना०)* १. दौड़ादौड़। भागा-दौड़। २. ऊधम।

हड़जोड़ो—दे० हाडवैद।

हड़ताळ—*(ना०)* १. अन्याय-अत्याचार आदि के विरोध में दुकानों आदि में ताले लगा कर काम काज बंद कर देना। हटताळ। २. पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो दवा के काम आता है। ३. संखिया और गंधक के योग से बना एक पदार्थ। हरताल।

हडताळ पाड़णो—*(मुहा०)* बाजार या कारखानों आदि के बंद होने की स्थिति। हड़ताल रखना।

हड़दड़ो—*(न०)* गेंद का एक खेल।

हड़दो—*(न०)* १. किसी भोज आदि में कई प्रकार की सामग्री तैयार करने और अधिक व्यक्तियों को निमंत्रण देने से होने वाली परेशानी। २. एक साथ अधिक कार्यभार से होने वाली उद्वि-ग्नता या हैरानी। ३. झंझट। ४. काम का बोझ।

हड़धूत—*(वि०)* १. मैला-कुचैला। धूल से भरा। २. उपद्रवी। ३. अपमानित।

हड़प—*(न०)* १. लूट-खसोट। २. लेकर वापस नहीं देना।

हड़पणो—*(क्रि०)* १. अनुचित रूप से ले लेना। हड़पना। दबा लेना। हजम कर लेना। २. खोस लेना। ३. लेकर वापस नहीं देना। **हजम करणो।**

हड़पखोर—*(वि०)* १. माँगी हुई वस्तु या उधार लेकर वापस नहीं देने वाला। हड़पने वाला। २. लुच्चा।

हड़पी—*(ना०)* जवाहरात आदि कीमती वस्तुओं को तोलने की काँटी रखने की पेटी।

हड़बड़—*(ना०)* १. भागदौड़। २. घबराहट। ३. खलबली।

हड़बड़ाट—*(ना०)* घबराहट। **हड़बड़।**

हड़बड़ाणो—*(क्रि०)* १. घबराना। २. भौंचक्का होना।

हड़बड़ी—*(ना०)* १. व्यग्रता। २. उतावल। ३. भागादौड़। भगदड़। ४. रौला। उपद्रव। ५. घबराहट।

हड़बू—*(न०)* एक लोक देवता। *(वि०)* मूर्ख।

हड़मत—*दे०* **हड़मान।**

हड़मान—*दे०* हनुमान।

हड़वाय—*(ना०)* दक्षिण दिशा की वायु। **लंकाऊ पवन।**

हड़ावणो—*(क्रि०)* १. धमकाना। डाँटना। २. धक्का देना। ३. खिसकाना।

हड़ीलो—*दे०* **हड़ेलो।**

हड़ींदो—*(न०)* बच्चों का एक खेल।

हड़ मान—*दे०* हनुमान।

हड़लणो—*(क्रि०)* धक्का मारना। धक्का मार कर दूर करना।

हड़ेलो—*(न०)* १. धक्का। टक्कर। २. कोहनी या हाथ से टक्कर देने की क्रिया या भाव। **हड़ीलो।**

हड्ड—*(न०)* हड्डी। हाड। अस्थि।

हड्डी—*दे०* हाडकी।

हण—*(ना०)* हत्या। हनन।

हणणो—*(क्रि०)* १. मारना। हत्या करना। हनन करना। २. खोसना।

हणमंत—*दे०* हनुमान।

हणवंत—*दे०* हनुमान।

हणाव—*(न०)* हानि। नुकसान।

हणां—*दे०* हणै।

हणुमान—*दे०* हनुमान।

हणू—*(न०)* हनुमान।

हणूफाळ—*(न०)* एक राजस्थानी छंद।

हणूमान—*(न०)* हनुमान।

हणै—*(अव्य०)* १. अब। **हैणां।** २. अभी। **हैणां। हमै। अबार।**

हणैतांई—*(क्रि०वि०)* १. अभी तक। २. अब तक। **अबार तांई।**

हत—*(ना०)* हत्या। कत्ल। *(भू०कृ०)* १. मारा या वध किया हुआ। २. रहित। *(न०)* एक उपसर्ग, यथा **हतप्रभ।**

हतक—*(ना०)* १. बदनामी। बेइज्जती। २. तोहीन। अपमान।

हतकणो—*(क्रि०)* अप्रतिष्ठित करना। **हतक करणो। माजनो पाड़णो।**

हतकंडो—*(न०)* १. चालाकी। २. धूर्तता। ३. षड़यंत्र। **हथकंडो।**

हतणो—*(क्रि०)* हत्या करना। मारना।

हतप्रभ—*(वि०)* निस्तेज। कांतिहीन।

हत-बुद्धि—*(वि०)* १. जिसकी बुद्धि मारी गई हो। २. मूर्ख।

हतभागी—*(वि०)* हतभाग्य। भाग्यहीन। **निरभागी। अभागियो।**

हतवेळो—*दे०* **हथवेळो।**

हताश—*(वि०)* जिसकी आशा नष्ट हो गई हो। निराश। **हतास**।

हतास—दे० हताश।

हती—*(भू०क्रि०)* 'है' क्रिया के भूतकाल का स्त्रीलिंग रूप; थी।

हतो—*(भू०क्रि०)* 'है' क्रिया का भूतकालिक पुल्लिंग रूप; था।

हतोत्साह—*(वि०)* जिसका उत्साह नष्ट होगया हो।

हतो राम—*(अव्य०)* १. मृत्यु। २. मर गया।

हत्तो—*(न०)* डंडा। दस्ता। मूठ। **हत्थो। हथ्थो**।

हत्थ—*(न०)* हाथ।

हत्थळ—*(न०)* १. हिंसक पशु का पंजा। २. हथेली।

हत्था—*(अव्य०)* हाथों से।

हत्थो—दे० हत्तो।

हत्या—*(ना०)* १. वध। खून। कत्ल। २. हत्या का दोष।

हत्या करणी—*(मुहा०)* वध करना। कत्ल करना। खून करना।

हत्यारी—*(वि०)* हत्या करने वाली। हत्यारिणी। **हत्यारण**।

हत्यारो—*(वि०)* हत्या करने वाला। हत्यारा।

हत्या लागणी—*(मुहा०)* हत्या का पाप लगना।

हथ—*(न०)* हाथ। हाथ का संक्षिप्त रूप।

हथकड़ी—*(ना०)* अपराधी के हाथों को सामिल बाँधने के लिए दोनों कलाइयों में पहिनाई जाने वाली एक लोहे की साँकल।

हथ-करोत—*(ना०)* लकड़ियाँ चीरने की आरी। **करवत। करवती**।

हथकंडो—दे० हतकंडो।

हथणापुर—*(न०)* हस्तिनापुर। दिल्ली।

हथणी—*(ना०)* १. हाथी की मादा। हस्तिनी। २. दीवाल में बना हुआ एक ऐसा साधन, जिस पर कपड़े, वस्तुएँ आदि रखी जाती हैं या टाँगी जाती हैं। ३. घर की साळ के द्वार पर दीवाल के छोरों में बैठने या वस्तुएँ रखने की बनी जगह।

हथनाळ—*(ना०)* १. बंदूक। २. हाथी पर रख कर छोड़ी जाने वाली तोप।

हथपान—दे० हथफूल।

हथफूल—*(न०)* हथेली के पृष्ठ पर पहिना जाने वाला स्त्रियों का एक आभूषण। **हथपान। हथसाँकळो**।

हथमार—*(वि०)* १. लुटेरा। खोसने वाला। हाथ मारने वाला। २. चोर।

हथमारी—*(न०)* हथमार का काम। लूट। खसोट।

हथमूळ—*(न०)* काँख। **खाख**।

हथळेवो—*(न०)* पाणिग्रहण। हस्तमिलाप। विवाह में वर द्वारा कन्या का हाथ पकड़ने की रसम।

हथळ्यो—दे० हथळेवो।

हथवा—दे० हथवार। दे० हथवाह।

हथवाण—दे० हथवार।

हथवार—*(वि०)* एक ही व्यक्ति के हाथ से दुहने की आदत वाली (गाय, भैंस)। **हथवाळी। हथवाह**।

हथवारू—दे० हथवार।

हथवाळ—दे० हथवार।

हथवाह—*(न०)* १. प्रहार। २. प्रहार की दूरी। ३. खड्ग चलाने का हस्तकौशल।

४. दूर से प्रहार करने का अभ्यास तथा शक्ति। ५ मारामारी। थापामुक्की। हाथापाई। दे० हथवार।

हथवाही—*(ना०)* १. सहायता। २. वशवर्ती। ३. प्रहार। ४. मारामारी। ५. तलवार। दे० हथवाह।

हथवेळो—*(न०)* विवाह की एक मंगल विधि। हस्तमिलाप। पाणिग्रहण। 'हथळेवो' का विपर्यय।

हथ-सांकळो—दे० हथाँकळो।

हथहारू—दे० हथवारू।

हथा—*(भू०क्रि०)* 'हथो' का बहुवचन रूप।

हथाई—*(ना०)* १. गपसप मारने का काम। गप्पें मारने का काम। २. वह स्थान जहाँ हथाई की जाती है।

हथाळी—दे० हथेळी।

हथाळो—*(वि०)* १. दृढ़ हाथों वाला। जिसके हाथों में अपार शक्ति हो। २. शस्त्र चलाने में प्रवीण। ३. वीर। बहादुर। ४. आजानबाहु।

हथाँकळो—दे० हथपान।

हथियार—*(न०)* १. शस्त्र। आयुध। २. औजार। ३. साधन।

हथियार चलावणो—*(मुहा०)* १. प्रहार करना। २. हथियार से मारना।

हथियार-बंध—*(वि०)* शस्त्रसज्ज। सशस्त्र।

हथियार-बंधी—*(ना०)* हथियार रखने की पाबंदी या रोक। हथियारबंदी।

हथी—*(भू०क्रि०)* 'है' वर्तमान क्रिया का स्त्रीलिंग भूतकालिक रूप। थी। हती।

हथीक—दे० हथीको।

हथीकी—*(अव्य०)* हाथोहाथ।

हथीको—*(अव्य०)* १. हाथोहाथ (देना)। २. स्वयं को। *(वि०)* विश्वासपात्र। विश्वसनीय। ठावो।

हथेरण—*(न०)* १. गिरवे रखी जाने वाली वस्तु। २. जामिन।

हथेळी—*(ना०)* कलाई के आगे का (अँगुलियाँ रहित) चौड़ा भाग। करतल। हथाळी।

हथो—*(भू०क्रि०)* १. 'है' क्रिया का एक वचन भूतकालिक रूप, था। हतो। २. जैसा पहिले था।

हथोटी—*(ना०)* १. हाथ का काम। हस्तकला। २. हस्तकला की विविधता या विशेषता। ३. काम करने का अपना ढंग। ४. हाथ के काम का ज्ञान या जानकारी। ५. महावरा। टेव।

हथोड़ी—*(ना०)* छोटा हथोड़ा।

हथोड़ो—*(न०)* लोहे का एक औजार। हथोड़ा।

हथ्थ—दे० हत्थ।

हथ्थळ—दे० हत्थळ।

हद—*(ना०)* १. सीमा। २. अंत। ३. कमाल। ४. पराकाष्ठा। ५. किनारा। ६. आश्चर्य।

हद करणो—*(मुहा०)* १. कमाल करना। २. आश्चर्य हो ऐसा करना। ३. अच्छा या बुरा कोई काम उसकी परम सीमा तक का होना। ४. नहीं किया जा सके या नहीं करना चाहिये, उसको करना।

हद छोड़णो—(मुहा०) मर्यादा का उल्लंघन करना। २. सीमा पार करना।

हद तोड़णो—*(मुहा०)* पारंपरिक रीतिरिवाजों को तोड़ना या उनके विरुद्ध कार्य करना। २. मर्यादा छोड़ना।

हदनीरोहर—*(न०)* १. महासागर। २. सागरतट।

हद-पार—*(अव्य०)* १. नगर या राज्य की सीमा के बाहर। २. देश निकाला। ३. ज्यादा। असीम। अपरंपार।

हद-फूटरी—*(ना०)* १. सुन्दरता की सीमा (नारी जाति या नारी जाति की वस्तु के लिये)। २. अत्यन्त सुंदरी। *(वि०)* अत्यन्त सुंदर।

हद-फूटरो—*(न०)* हद फूटरी का नर रूप।

हद-बारै—*(अव्य०)* १. सीमा के बाहर। सीमोल्लंघन। २. शक्ति के बाहर। दे० हदबाहर।

हद बाहर—*(अव्य०)* १. मर्यादा से आगे। सीमा के बाहर। शक्ति उपरान्त। २. हैसियत से आगे बढ़कर। हैसियत छोड़कर।

हद-वाट—दे० दहवाट।

हदीस—*(न०)* मुसलमानों का स्मृति ग्रंथ।

हन—*(अव्य०)* १. नहीं। २. नहीं तो। ३. नह का वर्ण विपर्यय।

हनन—*(न०)* वध करना। हत्या।

हनुमान—*(न०)* अंजनी के गर्भ से उत्पन्न पवन के पुत्र, राम के प्रसिद्ध भक्त और वीर वानर। सात चिरजीवित भक्तों में से एक। शीघ्र प्रसन्न होकर मनवांछित फल देने वाले। नैवेद्य के साथ तेल और सिंदूर पूजा में इन्हें चढ़ाये जाते हैं।

हनोज—*(क्रि०वि०)* १. अभी। इसी समय। २. अभी तक। *(अव्य०)* कदाचित। संभव है। शायद। खवाह।

हफतो—*(न०)* सप्ताह।

हफ्तेवार—*(वि०)* हर सप्ताह में एक बार किया जाने वाला। साप्ताहिक।

हब—*(अव्य०)* एकाएक। *(ना०)* अग्नि की ताप।

हब करतो—*(अव्य०)* १. एकाएक। हब देतांणी। २. अचानक।

हबड़क—*(ना०)* १. उलटी होने की आवाज। २. उलटी से पेट में लगने वाला धक्का।

हबथड़—*(ना०)* हलचल। हल्ला-गुल्ला। शोरगुल। हड़बड़।

हब देतांणी—दे० हब करतो।

हबशी—*(न०)* १. अफ्रीका निवासी। २. बहुत काला मजबूत व्यक्ति।

हबहब—*(अव्य०)* एक अनुकरण शब्द।

हबास—*(न०)* एक पुष्प।

हबीड़—*(ना०)* १. मार। २. धक्का। ३. हानि। नुकसान। ४. किसी भारी वस्तु का ऊपर से गिरने का शब्द। ५. दीवाल आदि किसी वस्तु को तोड़ने का शब्द। हबीड़ो।

हबीड़णो—*(क्रि०)* १. मारना। २. टक्कर देना। ३. नुकसान पहुँचाना।

हबीड़ो—दे० हबीड़।

हबोड़णो—दे० सबोड़णो।

हबोळणो—*(क्रि०)* १. धक्का मारना। २. गड़बड़ पैदा करना। ३. उलझन में डालना।

हबोळो—*(न०)* १. पानी का धक्का। २. बड़ी लहर। ३. मन में उठने वाली तरंग। ४. उलझन। ५. गड़बड़।

हब्र—*(न०)* १. मेघ। बादल। अभ्र। बादळो। २. आकाश। आभो।

हम—*(सर्व०)* 'मैं' का बहुवचन। हमाँ। अमाँ। *(उप०)* समान, साथ, साथ वाला या बराबर वाला के अर्थ में प्रयुक्त। यथा—हम सेफर।

हमकणो—*(क्रि०)* भय खाना। डरना।

हमक-धमक—*(ना०)* धूमधाम।

हमकलैं—दे० हमकैं।

हमकाळै—दे० हमकैं।

हमकी—दे० हमकैं।

हमकैं—*(अव्य०)* १. इस बार। अबकैं। हमकी। हमकलैं। २. अगली बार। ३. जब कभी। ४. भविष्य में। ५. अब और।

हमगीर—*(वि०)* सहायक। *(न०)* साथी। मित्र।

हमगीरी—*(ना०)* १. अपनापना। अपनत्व। २. सहायता।

हमचड़ी—*(न०)* एक लोक नृत्य। घूमरड़ी।

हमजोळी—*(वि०)* १. साथ-साथ रहने, खेलने या काम करने वाला। साथी। २. समवयस्क।

हमणाँ—*(क्रि०वि०)* १. इसी समय। अभी। हमार। २. शीघ्र।

हमदर्द—*(वि०)* सहानुभूति बतलाने वाला।

हमदर्दी—*(ना०)* सहानुभूति।

हमरकैं—*(अव्य०)* १. इस बार। अबकैं। हमकैं। २. अगली बार। आने वाले समय पर।

हमल—*(ना०)* १. सेना। *(न०)* २. गर्भ। ३. धक्का। टक्कर।

हमलावर—*(वि०)* हमला करने वाला। आक्रमणकारी।

हमलो—*(न०)* चढ़ाई। आक्रमण। हमला।

हमस—*(ना०)* १. भीड़ की अधिकता। २. भीड़ का शोरगुल। ३. समूह। ४. आक्रमण। ५. घोड़ों की भीड़भाड़ और हिनहिनाहट आदि। सेना। हलम।

हमाम—*(न०)* १. गरम पानी से स्नान करने का बद कमरा। हम्माम। २. स्नानागार।

हमामदस्तो—*(न०)* लोहे या पीतल का खलबट्टा। इमामदस्ता।

हमार—*(क्रि०वि०)* १. इस समय। अभी। अबार। २. तुरंत। शीघ्र। वेगो।

हमारू—दे० हमार।

हमाल—*(न०)* १. बाजार में मजदूरी करने वाला मजदूर। बाजार का मजदूर। २. बोझा ढोने वाला मजदूर। हमाली।

हमाली—*(ना०)* १. हमाल का काम। मजदूरी। २. हमाली का पारिश्रमिक मजूरी। *(न०)* मजदूर। हमाल।

हमाली काम—*(न०)* १. हमाल का काम। २. मजदूरी। परिश्रम। ३. सख्त परिश्रम।

हमाव—*(न०)* एक बड़ा पक्षी।

हमाहमी—*(ना०)* १. आपस की जिद। २ अहमन्यता।

हमाँ—*(सर्व०)* १. 'मैं' का बहुवचन। २. 'हम' का बहुवचन रूप। प्रायः बड़ों द्वारा इसका प्रयोग एक वचन में भी किया जाता है। ३. हम लोग। हम।

हमाँ-गाळै—*(अव्य०)* १. हमारे पास में। २. हमारे पास।

हमाँ-टाळ—दे० हमाँ टाळ।

हमाँ-टाळू—*(अव्य०)* हमारे सिवाय। हमारे बिना। हमाँ बगर।

हमाँ-तीरे—*(अव्य०)* १. हमारे पास । २. हमारे यहाँ ।

हमाँनै—*(सर्व०)* हमको ।

हमाँ-पूरतो—*(अव्य०)* १. हमारी जरूरत का । हमारे चाहिये जितना । २. हम तक ।

हमाँरै—*(सर्व०)* हमारे ।

हमाँ-वळू—*(अव्य०)* हमारे पक्ष में ।

हमीणी—*(सर्व०)* हमारी । **अणीरी । म्हांरी ।**

हमीणो—*(सर्व०)* हमारा । **अमींणी । म्हांरो ।**

हमीर—*(न०)* रणथंभोर का एक प्रसिद्ध प्रणवीर राजा । *(ना०)* एक राग । *(वि०)* वीर । बहादुर ।

हमीर नाम माळा—*(ना०)* हमीरदान रतनू द्वारा रचा हुआ राजस्थानी का पर्यायवाची शब्दकोश ।

हमीरल – *(न०)* हमीर का काव्यनाम ।

हमीर हठ—दे० हम्मीर हठ ।

हमे—*(सर्व०ब०व०)* हम लोग । **हमाँ ।**

हमेल—*(न०)* एक आभूषण । दे० हमेळ ।

हमेळ—*(ना०)* १. जुए के खंधोल के पास के सुराख में लगी हुई लकड़ी की कील या खूंटी । २. एक कंठाभूषण । ३. कलदार रुपयों के नाके लगवाकर बनवाया हुआ गले का हार ।

हमेश—*(अव्य०)* १. नित्य । सदा । सर्वदा । २. लगातार । निरंतर । **हमेसां ।**

हमेसां—*(अव्य०)* १. नित्य । रोज । २. लगातार । निरंतर । हमेशा ।

हमैं—*(अव्य०)* १. अभी । इसी समय । **हमार ।** २. अब । इस समय । **अबार ।**

हम्मीर हठ—*(ना०)* १. रणथंभोर के पराक्रमी हम्मीर की प्रतिज्ञा जो लोकोक्तियों के रूप में प्रसिद्ध है । २. कवि चंद्रशेखर का हम्मीर और अलाउद्दीन के युद्ध वर्णन का एक ग्रन्थ ।

हम्मीरायण—*(न०)* मांडो व्यास कृत हम्मीर और अलाउद्दीन के युद्ध वर्णन का एक ग्रंथ । इसी नाम का दूसरा ग्रंथ खेम कवि का भी है ।

हय—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

हयग्रीव—*(न०)* १. विष्णु का एक अवतार । २. एक दैत्य । ३. एक राजर्षि । ४. अथर्वण वेद का एक उपनिषद् ।

हयग्रीवा—*(ना०)* दुर्गा ।

हय-दळ—*(न०)* अश्वसेना । **घुड़सेना । हैवळ ।**

हयनाळ—*(ना०)* १. घोड़े की पीठ पर कसी जाने वाली एक बंदूक । २. घोड़े के खुर में लगाई जाने वाली नाल ।

हयराज—*(न०)* १. श्रेष्ठ घोड़ा । **हयांराज ।** २. उच्चैश्रवा ।

हयवै—*(न०)* १. अश्वपति । २. राजा । **हैवै ।**

हया—*(ना०)* शर्म । लज्जा । **लाज ।**

हयाण—*(न०ब०व०)* १. घोड़े । अश्वसमूह । *(न०)* घोड़ा ।

हयात—*(ना०)* जीवन । जिंदगी । *(वि०)* जीवित । मौजूद ।

हयाती—*(ना०)* १. विद्यमानता । २. अस्तित्व । ३. जीवितावस्था ।

हया-दया—*(ना०)* १. लाज और शर्म । २. लज्जा और दया ।

हयाणण—दे० हयाण ।

हयानन—*(न०)* १. विष्णु भगवान का हयानन अवतार। हयग्रीवावतार। २. हयग्रीव नाम का दैत्य।

हयांराज—*(न०)* १. श्रेष्ठ घोड़ा। हयराज। २. उच्चैश्रवा।

हयी—*(ना०)* घोड़ी। अश्वी।

हर—*(ना०)* १. हठ। जिद। २. इच्छा। उत्कंठा। ३. अकड़ाई। ४. प्रीति। ५. आकर्षण। खिचाव। *(न०)* १. पौत्र। पोतो। २. घोडा। ३. महादेव। शंकर। *(वि०)* हरेक। प्रत्येक।

हरउत—*(न०)* गणेश। गजानन।

हरअेक—दे० हरेक।

हरकत—*(ना०)* १. चेष्टा। २. हिलनाडुलना। ३. हानि। नुकसान। ४. अड़चन। आपत्ति। बाधा। बांधो। ५. तकलीफ। कष्ट। ६. शरारत। ७. चालाकी। चालबाजी। ८. बेईमानी।

हरकती—*(वि०)* १. हरकत करने वाला। २. शरारती

हर-कदै-ही—*(अव्य०)* जब कभी भी। किसी भी दिन।

हरकरणो—*(मुहा०)* १. इच्छा करना। उत्कंठित होना। २. हठ करना। ३. याद आना।

हर-करॉ-ही—दे० हर-करै-ही।

हर-करै-ही—*(अव्य०)* हर किसी समय। (दिन हो या रात)।

हरकोई—*(वि०)* चाहे जो। कोई एक। हरेक। प्रत्येक व्यक्ति।

हरख—*(न०)* १. हर्ष। खुशी। प्रसन्नता। २. उत्सव। उच्छव।

हरख ओछाह—*(न०)* १. उत्सव। २. हर्ष और उत्सव। हर्षोत्सव।

हरख-कोड—*(न०)* १. हर्ष और उत्साह। हर्षोत्साह। २. खुशियाँ। ३. उत्सव।

हरख गहलो—दे० हरख गेलो।

हरखगेलो—*(वि०)* अतिशय हर्ष से पागल बना हुआ। हर्षोन्मादित।

हरखणो—*(क्रि०)* हर्षित होना। प्रसन्न होना।

हरखमाण—*(वि०)* हर्षित। खुशी।

हरख वधामणा—*(न० ब० व०)* स्वागतोत्सव।

हरखवंत—*(न०)* हर्षित। खुशी। हरखमाण। हरखवान।

हरखवान—दे० हरखवंत।

हरखाणो—*(क्रि०)* १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरखायत—*(न०)* प्रसन्न। खुश। हरखायतो।

हरखायतो—दे० हरखायत।

हरखायमान—*(न०)* प्रसन्न। खुश। हरखमाण।

हरखाळू—*(वि०)* प्रसन्नचित्त।

हरखाव—*(न०)* हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। हरख।

हरखावणो—दे० हरखाणो।

हर खास व आम—*(पद०)* प्रत्येक मुख्य तथा सर्वसाधारण। (व्यक्ति)।

हरखित—दे० हर्षित।

हरखीजणो—*(क्रि०)* हर्षित होना। राजी होणो। हरखाणो।

हरखीलो—*(वि०)* १. हर्षवंत। २. उत्साही। ३. हर्ष उमग वाला। ४. विवाहोत्सक। कोडीलो। ५ रंगीला।

हरखे-हरखे—(पद) प्रसन्न होकर। राजीराजी।

हरगत—दे० हरकत ।

हरगिज—*(अव्य०)* १. कभी । कदापि । किसी हालत में । २. बिलकुल ।

हरगिरि—*(न०)* कैलाश पर्वत ।

हरगौरी—*(न०)* १. शिव और पार्वती की संयुक्त मूर्ति तथा चित्र । २. शिव-पार्वती ।

हर-घड़ी—*(अव्य०)* प्रत्येक घड़ी । घड़ी-घड़ी में । बार-बार ।

हर चनण—दे० हरि चंदन ।

हरचंद-बारो—*(न०)* १. सत्यवादी हरिश्चंद्र का समय । २. सत्याचरण ।

हरज—*(न०)* १. नुकसान । हानि । हर्ज । २. अड़चन । बाधा । ३. कमी । **हरजो** ।

हरजत—दे० हरकत ।

हर-जराँ-ही —दे० हर-जरैं-ही ।

हर-जरैं-ही—*(अव्य०)* चाहे जब । हर जिस समय । जब कभी ।

हरजस—*(न०)* १. हरि का यश । २. हरि के यश का पद, भजन या गायन ।

हरजाणो—दे० हरजानो ।

हरजानो—*(न०)* १. नुकसान । हानि । २. क्षतिपूर्ति । ३. दंड । जुर्माना ।

हरजी—*(न०)* १. श्रीकृष्ण । २. महादेव । ३. परमेश्वर । ४. रामदेवजी का एक भक्त (हरजी भाटी) ।

हरजी-रो-ब्यावलो—*(न०)* महादेव-पार्वती के विवाह का एक ग्रंथ ।

हरजो—दे० हरज ।

हरझेलू—दे० हरझेलो ।

हरझेलो—*(वि०)* हठ पकड़ने वाला । **हठीलो** ।

हरड़ियो—*(न०)* गले का एक आभूषण ।

हरड़ी—*(ना०)* छोटी हर्रे । **हीमज** ।

हरड़े—*(ना०)* हर्रे । हरीतकी । **हीमज** ।

हरण—*(न०)* दे० १. हिरण । २. दूरीकरण । दूर करना । ३. हरण करने की क्रिया । ले भागने का काम ।

हरणकी—*(ना०)* हरिणी । हिरण की मादा । मृगी । **मिरगली** ।

हरणफाळ—*(न०)* १. एक डिंगळ छंद । **हणुफाळ** । २. हरिण की छलाँग ।

हरणाख—*(न०)* हिरण्याक्ष दैत्य ।

हरणाखी *(ना०)* हरिणाक्षी । मृगनयनी । **मिरगानैणी** । **डाबरनैणी** ।

हरणार—*(वि०)* हरण करने वाला । भगा कर ले जाने वाला ।

हरणारी—*(वि०)* हरण करने वाली ।

हरणाह—*(न०ब०व०)* हरिण-समूह ।

हरणियो—*(न०)* हिरन । *(वि०)* १. हरण करने वाला । २. लूटपाट करने वाला ।

हरणी—*(ना०)* हिरणी । *(न०)* मृग नक्षत्र ।

हरणो—*(क्रि०)* हरण करना । खोसना । २. ले भागना । हरण करना । *(वि०)* हरण करने वाला ।

हरणो-फिरणो—*(क्रि०)* चलना-फिरना ।

हर तरह—*(अव्य०)* सभी प्रकार ।

हरताळ—*(ना०)* पीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ । गोदंत ।

हरतो-फरतो—दे० हिरतो-फिरतो ।

हरथान—*(न०)* १. कैलाश । २. महादेव मंदिर । शिवालय । **सिवालो** ।

हरद—*(ना०)* हलदी । हळदर ।

हरदम—*(अव्य०)* हर समय । प्रत्येक समय ।

हरदोखी—*(न०)* कामदेव ।

हरद्वार—*(न०)* गंगा के तट पर स्थित हिन्दुओं का पवित्र तीर्थस्थान ।

हरधाम—*(न०)* शिवलोक । कैलाश । कैलाशपुरी । कैलाश पर्वत ।

हरनंद—*(न०)* गणेश । विनायक ।

हरनाट—*(न०)* शिव नृत्य ।

हर-निवास—*(न०)* कैलाश । हरधाम ।

हर-प्रिय—*(न०)* १. बिल्व पत्र । २. शिव-भक्त । ३. धतूरा ।

हरप्रिया—*(ना०)* १. पार्वती । २. दुर्गा । ३. भंग । भाँग ।

हरफ—*(न०)* १. शब्द । २. अक्षर । हर्फ । ३. वचन । बोल ।

हरफन—*(न०)* हर एक कार्य ।

हरफन-मौला—*(वि०)* १. हर एक फन जानने वाला । २. उस्ताद ।

हरफर—*(ना०)* बार बार आना जाना ।

हरबात—*(अव्य०)* १. सभी तरह से । २. प्रत्येक बात में ।

हर बार—*(अव्य०)* १. प्रत्येक समय । प्रत्येक अवसर पर । हर मौके । २. जब कभी ।

हरभजन—*(न०)* १. हरि या ईश्वर का भजन । २. पूजा या भक्ति ।

हर भोग—*(न०)* १. विजया । भंग । २. निर्माल्य । ३. शिवजी का प्रसाद ।

हरम—*(न०)* १. महल । हर्म्य । २. रनिवास । *(ना०)* १. दासी । २. रखैल स्त्री ।

हरमसरा—*(न०)* जनानखाना । रनिवास ।

हरमाळ—दे० हरहार ।

हरयेक—दे० हरेक ।

हर-रोज—दे० हरहमेसां । हरहमेश ।

हर-लोक—*(न०)* शिवलोक । कैलाश ।

हर-वखत—*(अव्य०)* प्रत्येक समय ।

हरवल—*(क्रि०वि०)* १. मिल-जुल करके । एक दूसरे को सहारा देकर के । सहयोग से । २. आगे होकर के । ३. साथ-साथ । ४. मेल-मिलाप । *(ना०)* सेना का अगला भाग । हरावळ । हरोळ । २. मददगार । सहायक । *(अव्य०)* आगे । पहले । प्रथम ।

हर-वाम—*(ना०)* १. गंगानदी । २. पार्वती ।

हर वाहण—*(न०)* १. वृषभ । नंदी । नांदियो । पोठियो । २. बैल । बळद ।

हरस—*(न०)* १. अर्ष । मसो । २. हर्ष । खुशी । हरख । दे० हर्ष ।

हरस-जीण—*(न०)* हरस भाई और जीण दोनों लोक-देवता की भाँति पूजे जाते हैं । ये चूरू (राजस्थान) जिले के धाँधू गाँव के चौहान राजपूत थे । इनके स्थान हर्षगिरि के निकट बने हुए हैं ।

हरसणो—*(क्रि०)* हर्षित होना । प्रसन्न होना । हरखणो ।

हरसाणो—*(क्रि०)* १. हर्षित करना । प्रसन्न करना । २. हर्षित होना । हरखाणो ।

हरसाल—*(न०)* प्रत्येक वर्ष । प्रति वर्ष ।

हरसाळू—*(वि०)* हर्षवंत । हरखाळू ।

हर-सिद्ध—*(ना०)* १. एक देवी । २. एक, तीर्थ स्थान । ३. सौराष्ट्र का एक पर्वत जिस पर हरसिद्ध माता का मंदिर है ।

हरसिरा—*(ना०)* गंगा नदी । भागीरथी । हरसेखरा ।

हरसुत—*(न०)* १. गणेश । हरउत । २. २. स्वामी कार्तिकेय ।

हरसुवन—*(न०)* गणेश । गजानन ।

हरसेखरा—दे० हरसिरा ।

हरहमेस—*(अव्य०)* नित्यप्रति । प्रतिदिन । सदैव ।

हर हर महादेव—(पद०) १. उत्साहवर्धक एक मंगल उद्गार । २. रणहाक । युद्धोद्गार ।

हरहार—*(न०)* १. शिवजी के गले का हार । २. साँप । सर्प ।

हरा—*(ना०)* पार्वती । उमा ।

हराज—*(न०)* नीलाम ।

हराजो—दे० हरजो ।

हराणो—*(क्रि०)* १. हराना । परास्त करना । अळाणो । २. थकाना । ३. शत्रु को विफल मनोरथ करना । ४. कामयाब नहीं होने देना ।

हराम—*(वि०)* १. वर्जित । २. दूषित । *(न०)* १. अधर्म । पाप । २. व्यभिचार । ३. इस्लाम के मतानुसार वर्जित ।

हरामखाऊ—दे० हरामखोर ।

हरामखोर—*(वि०)* १. हराम का खाने वाला । मुफ्त खाने वाला । २. पैसे लेकर भी काम नहीं करने वाला । हराम की कमाई खाने वाला । हरामखाऊ । ३. कामचोर । ४. नमकहराम । ५. कृतघ्न । ६. चोर । ७. रिश्वतखोरी, चोरी, जुआ आदि कामों से पैसा कमाने वाला ।

हरामखोरी—*(ना०)* १. हरामखोर बने रहने की क्रिया या भाव । २. कृतघ्नता । ३. नमकहरामी ।

हरामजादगी—दे० दोगलापना ।

हरामजादी—*(ना०)* १. दोगली स्त्री । २. व्यभिचारिणी स्त्री । ३. दुष्टा । ४. वर्णसंकर । ५. पापिनी ।

हरामजादो—*(वि०)* १. हराम से उत्पन्न । २. व्यभिचार से उत्पन्न । ३. वर्णसंकर । ४. बड़ा पापी । ५. दुष्ट ।

हरामणी-रो—*(वि०)* १. हराम से उत्पन्न । २. हरामी । *(न०)* एक गाली ।

हरामी—*(वि०)* १. दुष्ट । पाजी । २. व्यभिचार से उत्पन्न । दोगला । हरामजादो ।

हरारत—*(ना०)* १. ज्वर । ताप । बुखार । ताव । २. हलका बुखार । जुर । ३. गरमी ।

हरावणो—दे० हराणो ।

हरावळ—*(ना०)* १. व्यूह रचना का अग्रवर्ती भाग । २. सेना का आगे रहने वाला भाग । हरवळ । हरोळ ।

हरावो—*(न०)* अति वर्षा, अति ठंड या और किन्हीं कारणों से फसल में होने वाली हानि । किसी क्षति के कारण अनुमान से कृषि की उपज में कमी होने का भाव । २. हानि । नुकसान । घाटो । खोट । हराहो ।

हराहो—दे० हरावो ।

हरि—*(न०)* १. श्री कृष्ण । २. भगवान । ३. कपि । बांदरो । ४. सिंह । ५. घोड़ा । केकाण । ५. अरविंद । कमल । ७. अलि । आलयद । भमरो । ८. हाथी । ९. हरिण । १०. वन । ११. आकाश । १२. सोना । १३. चंद्रमा । १४. अग्नि । १५. पानी । १६. दूध । १७. पवन । १८. नाग । १९. राजा । २०. पर्वत । २१. मेंढक । डेडरियो । २२. मोर । २३. तोता । सुवटो । २४. विष्णु । २५. एक ऋषि ।

हरि ॐ—*(पद०)* १. हरि का एक नाम। २. वेद मंत्रोच्चारण के पूर्व बोला जाने वाला पद।

हरि ॐ तत्सत—*(पद०)* हरि ओऽम् ही तात्विक रूप से सत्य है।

हरिकथा—*(ना०)* भगवान के अवतारों के चरित्रों का वर्णन।

हरि-कीर्तन—*(न०)* १. भगवान के अवतारों के गुणों का गान। २. भगवद् भजन, स्तुति आदि।

हरिकेतन—*(न०)* १. अर्जुन। २. कपिध्वज।

हरिकेश—*(न०)* शिव।

हरिगुण—*(न०)* १. हरिमहिमा। २. हरि के नाम की महिमा। ३. हरि चरित्र। ४. हरि के भजन (पद) तथा काव्य। ५. हरि के उपकार।

हरिचंद—दे० हरिश्चंद्र।

हरिचंदन—*(न०)* १. पीला चंदन। २. केसर। ३. चांदनी।

हरिजन—*(न०)* १. भगवान का भक्त। २. अस्पृश्य। अंत्यज।

हरिण—*(न०)* मृग। हिरण।

हरिणाखी—*(ना०)* मृगनयनी। मिरगानैणी।

हरिणी—*(ना०)* हरिन की मादा। मृगी।

हरित—*(वि०)* १. हरा। लीलो। २. *हरियाली युक्त।* ३. हराभरा।

हरिद्वार—दे० हरद्वार।

हरिद्वारो—*(न०)* १. देवमंदिर। मंदिर। २. हरिद्वार।

हरिधाम—*(न०)* १. वैकुंठ। २. स्वर्ग। हरिनिवास।

हरि नाम बत्तीसी—*(ना०)* हरिभक्त पं० मगनीराम साकरिया की एक रचना। (जिसमें हरि के बत्तीस नामों तथा गुणों का बत्तीस दोहों में वर्णन किया है।)

हरि-निवास—दे० हरिधाम।

हरि-पदी—*(ना०)* गंगा। हरसिरा।

हरि-प्रिया—*(ना०)* १. लक्ष्मी। रमा। २. तुलसी। ३. पृथ्वी। ४. लाल चंदन।

हरि-भक्त—*(न०)* १. हरि का भक्त। २. संत।

हरि-भक्ति—*(ना०)* हरि की भक्ति।

हरि-मंथक—*(न०)* एक द्विदल धान्य। चना। चणो।

हरियल—*(वि०)* हरा। लीलो।

हरिया—*(न०ब०व०)* एक द्विदल धान्य। मूंग।

हारियान—*(न०)* गरुड़।

हरियाळी—*(वि०)* १. प्रफुल्लित। आनंदित। २. प्रसन्नवदन। ३. हरीभरी। ४. हरित। *(ना०)* १. पेड़-पौधों और घास का विस्तार। २. युवती। ३. दूब वाली जमीन। ४. आनंद और प्रसन्नता का वातावरण।

हरियाळी अमावस—*(ना०)* श्रावण कृष्णा अमावस्या।

हरियाळी-तीज—(ना०) १. भादों सुदी तीज। २. भादों सुदी तीज का त्यौहार या व्रत। हरितालिका तीज।

हरियाळी-वनड़ी—*(ना०)* १. अतिप्रसन्न दुलहिन। २. बिवाह का एक लोकगीत। हरियाळी वनी।

हरियाळी वनी—दे० हरियाळी वनड़ी।

हरियाळो—*(वि०)* १. हरा। लीलो। २. प्रफुल्ल। प्रफुल्लित। आनंदित। प्रसन्न। ३. उत्साहवाला। ४. बना-ठना। सजा हुआ। ५. प्रफुल्लवदन। प्रसन्नमुख। ५. हराभरा।

हरियाळो वनड़ो—*(न०)* १. खूब प्रफुल्लित दूल्हा। अतिप्रसन्न वर राजा। २. विवाह का एक लोकगीत। हरियाळो वनो।

हरियाळो वनो—दे० हरियाळो वनड़ो।

हरियो—*(वि०)* १. हरे रंग का। सब्ज। २. नीला। लीलो। *(न०)* १. घास। चारो। २. हरियाली।

हरियो-भरियो—*(वि०)* १. हरियाली से आच्छादित। हराभरा। २. सुखी, समृद्ध और प्रफुल्लित। ३. समृद्ध, सुखी और बड़े कुटुंब वाला।

हरिरस—*(न०)* १. भक्त कवि ईसरदास बारहठ के रचे हुए अनेक भक्ति रस के डिंगळ ग्रन्थों में का अति प्रसिद्ध भक्ति ग्रन्थ। २. हरि की भक्ति। ३. हरि भक्ति का आनंद।

हरि-लीला—*(ना०)* १. हरि की लीला। २. ईश्वर के अवतारों का मानवोचित आचरण आदि।

हरि-लोक—*(न०)* वैकुंठ। हरिधाम।

हरि वल्लभा—*(ना०)* १. लक्ष्मी। रमा। हरिधाम। २. तुलसी। ३ पृथ्वी।

हरि वाम *(ना०)* लक्ष्मी। रमा।

हरि-वासर—*(न०)* १. एकादशी। २. एकादशी का दिन।

हरि-वाह—*(न०)* गरुड़। हरिवाहण।

हरि-वाहण—दे० हरिवाह।

हरिश्चंद्र—*(न०)* सूर्यवंशीय एक प्रसिद्ध सत्यवादी राजा।

हरिहर—*(न०)* १. विष्णु और शिव। २. विष्णु और शिव की संयुक्त मूर्त्ति तथा चित्र। ३. एक नमस्कार पद।

हरि-हंस—*(न०)* १. सूर्य। हरिहंसळ। २. बालसूर्य।

हरि-हंसळ—*(न०)* सूर्य। हरिहंस। सूरज।

हरी—*(ना०)* १. ताजी घास। घास। २. हरियाली। *(न०)* १. यमराज। २. श्री हरि। *(वि०)* हरे रंग की।

हरीकेन—*(न०)* लालटेन। फाणस।

हरीत—*(न०)* १. हरितवर्ण। २. हारीत ऋषि।

हरीतकी—*(ना०)* हर्रे। अभया। अमृता। हरड़े।

हरी-पुरुषजी-री-वाणी—*(ना०)* निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री हरि-पुरुषजी द्वारा रचित भजन और वाणी संग्रह का ग्रंथ।

हरीफ—*(न०)* १. प्रतिस्पर्धी। २. स्पर्धक। ३. विरोधी। दुश्मन।

हरी-बुरी—*(ना०)* १. स्तुति और निंदा। २. चर्चा।

हरि-भरी—*(ना०)* १. समृद्ध। ऐश्वर्यशाली। २. बड़ा कुटुम्ब। ३. पक्षपात रहित। *(अव्य०)* १. हाँ-ना। २. 'हाँ' में न 'ना' में।

हरीलो—दे० हठीलो।

हरूबरू—दे० हरूभरू। दे० भरूबरू।

हरूभरू—दे० भरूबरू।

हरे—*(अव्य०)* हरि का संबोधन रूप।

हरेक—*(वि०)* प्रत्येक। हर एक।

हरे कृष्ण—*(पद०)* १. हरि का एक नाम। २. हे कृष्ण।

हरे राम—*(पद०)* १. हे राम। २. हरि का एक नाम।

हरेल—*(ना०)* एक पक्षी ।

हरो—*(न०)* १. पौत्र । पोता । पोतरो । २. वंशज । वंशधर । ३. औलाद । संतान । ४. घास । चारा । खड़ । ५. हरियाली । ६. हरा रंग । *(वि०)* १. हरे रंग का । सब्ज । नीला । लीलो । २. प्रसन्न । प्रफुल्ल ।

हरो-भरो—दे० हरियो भरियो ।

हरोळ—*(न०)* १. सेना का अगला भाग । हरावळ । २. पंक्ति ।

हरोली—*(अव्य०)* १. आगे होकर । २. हरावल में । हरावळ । हरोळ ।

हरघो—दे० हरो ।

हरघो-भरघो—दे० हरियो भरियो ।

हर्यो-भर्यो—दे० हरियो भरियो ।

हर्ज—दे० हरज ।

हर्ता—*(वि०)* १. हरण, दूर या नष्ट करने वाला । २. एक प्रत्यय ।

हर्ष—*(न०)* १. प्रसन्न । खुशी । हरख । २. एक चक्रवर्ती राजा । हर्षवर्धन । ३. हर्षगिरि । ४. हर्षगिरि के पास की प्राचीन खंडर नगरी । हरस ।

हर्षगिरि—*(न०)* शेखावाटी का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक पर्वत ।

हर्षदेव—*(न०)* शेखावाटी के हर्षगिरि पर्वत के भगवान शंकर का नाम तथा उनका पुरातन शिवालय ।

हर्षनाथ—दे० हर्षदेव ।

हर्षाश्रु—*(न०)* हर्ष के आँसू ।

हर्षित—*(वि०)* १. प्रसन्न । २. रोमांचित ।

हल—*(अव्य०)* शीघ्रता से । *(न०)* १. निराकरण । समाधान । २. चलना ।

हळ—*(न०)* जमीन खड़ने का एक प्रसिद्ध उपकरण । हल ।

हलक—*(न०)* १. एक पुष्प । २. आनंद । मजा । ३. शोभा । ४. कंठ । गळो । ५. पल । क्षण । पळ ।

हळकट—*(वि०)* १. नीच । हलका । हळको । २. रद्दी । निम्न कोटि का ।

हलकणो—*(क्रि०)* हिलना । हिलकणो । *(वि०)* हिलने वाला ।

हळकाई—*(ना०)* १. बदनामी । २. अप्रतिष्ठा । ३. तोल में हलकापन । ४. नीचता । ओछापणो ।

हलकाणो—*(क्रि०)* हिलाना । हिलकाणो । हलकावणो ।

हळकापण—*(न०)* नीचता । हलकापन । हळकाई । *(वि०)* १. कम वजन का । २. लघुता । ३. गुण में कम । मिलावट वाला ।

हळकापणो—दे० हळकापण ।

हलकार—*(न०)* १. समूह का प्रस्थान । २. समूह के प्रस्थान या गति का कोलाहल । ३. प्रस्थान । *(ना०)* ४. प्रोत्साहन । ५. हाँक । ६. आवाज । पुकार । ७. सेना । फौज । ८. आक्रमण ।

हलकारणो—*(क्रि०)* १. प्रोत्साहन देना । २. हाँक लगाना । ३. आवाज देना । ४. चलाना । हाँकना । ५. आगे बढ़ाना । ६. आक्रमण करना ।

हलकारो—*(न०)* १. दूत । हरकारा । २. राज्य का एक चपरासी । तलबियो ।

हलकावणो—दे० हलकाणो ।

हलकावळ—*(न०)* १. पुष्प । २. पुष्प-माला । ३. अलकावलि ।

हळकास—दे० हळकापणो ।

हळकी—*(वि०)* १. वजन में कम । कम भारी । २. कीमत में कम । कम कीमत

की। ३. नीच (स्त्री)। ४. उच्छृंखल। ५. जो गरिष्ट न हो। *(ना०)* १. बदनामी। २. निंदा। अप्रतिष्ठा। ३. तुच्छ। ओछी। ४. अघटित। ५. अशुभ। ६. कम परिश्रम का।

हळकी लागणी—*(मुहा०)* बदनामी होना।

हळको—*(वि०)* १. कम भार वाला। २. मान, मूल्य या शक्ति इत्यादि में अपेक्षाकृत सामान्य से कम या घट कर। ३. खाली। ४. नीच। तुच्छ। ओछो (स्वभाव)। ५. घटिया (माल)। ६. सुगम (काम)। ७. जल्दी पकने वाला (भोजन)। ८. अशुभ। ९. थोड़ा। अल्प। १०. जो गरिष्ठ न हो। ११. फीके रंग का। १२. जो गुण और स्वाद में उतरता हो। *(नं०)* एक शस्त्र। भळको।

हलको—*(नं०)* १. स्वल्प धक्का। हिलको। २. थोड़ा हिलना या हिलाना। ३. शासन इत्यादि की दृष्टि से निर्धारित भूभाग या सीमित प्रदेश। हलका। इलाका। अलाको। ४. प्रभाव क्षेत्र। ५. घोड़े का जड़ाऊ साज। ६. अमुक परिमाण में सजे हुए हाथियों या घोड़ों का समूह।

हळको फूल—*(वि०)* फूल के समान हलका। वजन में बहुत कम।

हळको-भारी—*(नं०)* १. हलका और भारी। २. निम्न श्रेणी का और बढ़िया। उतरता हुआ और ऊँचे दर्जे का।

हळ-खड़ियो—*(नं०)* १. पारिश्रमिक लेकर के किसी के खेत को खड़ने वाला। २. कृषक। किसान। करसणो।

हलचल—*(ना०)* १. घबराहट। २. हिलना-डोलना। ३. भय।

हलचलो—*(नं०)* १. हलचल। २. भय। ३. भय का वातावरण। ४. घबराहट।

हलण-चलण—*(नं०)* १. अधिकार। शासन। सारो। २. हिलना और चलना। ३. हिलने चलने की क्रिया। ४. आज्ञा का पालन। ५. देख-रेख। ६. सेना की हीलचाल। ७. गुप्तचरी का कार्य।

हलणी-चलणी—दे० हाली-चाली।

हळणो—*(क्रि०)* १. मन लगना। २. अभ्यस्त होना। हिळणो।

हलणो—*(क्रि०)* १. चलना। हालणो। २. हिलना। हिलणो।

हळद—*(ना०)* हलदी। हळदर।

हळदर—*(ना०)* हल्दी। हरिद्रा।

हळदी—*(ना०)* हल्दी। हळदर।

हळदी-घाटी—*(ना०)* मेवाड़ का वह इतिहास-प्रसिद्ध पहाड़ी स्थान जहाँ महाराणा प्रताप और अकबर की सेना में घोर संग्राम हुआ था। हल्दीघाटी।

हलदेश्वर—*(नं०)* सिवाना (मारवाड़) के 'छप्पन रा पहाड़' का एक दुर्गम पर्वत-शिखर जहाँ जोधपुर के राव मालदेव और उनके बाद राठौड़ वीर दुर्गादास के संरक्षण में जोधपुर के बालक महाराजा अजीतसिंह विखै में (संकटकाल में) रहे थे। जहाँ अनाज के कोठार, परकोटा और 'गुढे री नाळ' में घुड़शालाओं आदि के खंडहर स्थित हैं। २. उक्त पहाड़ में स्थित हल्देश्वर महादेव और उनका मंदिर। ३. मारवाड़ के छप्पन के पहाड़ों का एक अन्य नाम।

हलदेश्वर महादेव—*(नं०)* हलदेश्वर पहाड़ के महादेव तथा उनका ऐतिहासिक

मंदिर। (मारवाड़ के छप्पन के पहाड़ों के एक शिखर स्थित)।

हलदेसर—दे० हलदेश्वर।

हळघर—*(न०)* १. हल को शस्त्र के रूप में धारण करने वाले श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम। बलिभद्र। २. बैल। बळद। ३. कृषक।

हलपती—*(अव्य०)* प्रति हल के हिसाब से। *(न०)* १. हलवाला। कृषक। २. हलघर। बलराम।

हलफ—*(न०)* शपथ। सौंगध।

हलफनामो—*(न०)* शपथपत्र। एफेडेविट।

हळफळ—*(ना०)* १. घबराट। २. संभ्रम। ३. हड़बड़ी।

हळफळणो—*(क्रि०)* १. घबराना। हड़बड़ाना। २. भ्रमित होना।

हळफळाट—*(ना०)* १. घबराहट। २. हड़बड़ी। ३. जी ऊबना। ४. चौंकना। ५. त्वरा।

हळफळीजणो—*(क्रि०)* घबराना। हळफळणो।

हलफिया—*(अव्य०)* १. ईश्वर को साक्षी रख कर। २. सौगंध खाकर। शपथ से। *(वि०)* हलफपूर्वक कहा हुआ या किया हुआ। हलफी।

हलफिया बयान—*(न०)* सौगंधपूर्वक दिया गया बयान।

हळबळ—*(ना०)* १. शोरगुल। हा-हू। २. भागदौड़। हड़बड़ी। भगदड़। ३. घामधूम। ४. किसी काम की जरूरत से ज्यादा हलचल। हळबळाट।

हळबळणो—*(क्रि०)* घबराना। खलबली मचना।

हळबळाट—दे० हळबळ।

हळबळो—*(न०)* शोरगुल। कोलाहल। हा हू।

हळभळ—*(ना०)* १. खलबली। २. तैयार होने में संलग्न। ३. घबराहट। हळफळाट। ४. झूठी प्रशंसा। चापलूसी। खुशामद।

हलमि—*(न०)* इन्द्र।

हलर-फलर—*(क्रि० वि०)* जल्दी-जल्दी। *(न०)* जल्दी-जल्दी हिलना-डुलना या नाचने की क्रिया या भाव।

हळवट—*(न०)* १. कृषि। खेती। २. कृषि कार्य। ३. हल चलाने का काम।

हळवद—*(न०)* १. सौराष्ट्र का एक ऐतिहासिक नगर। २. सौराष्ट्र का एक जिला।

हळवहण—*(न०)* १. बैल। २. खेत। खेतर।

हळवा—*(ना०)* १. उतनी भूमि जो एक बैल जोड़ी से खेड़ी जाय। २. उतनी वर्षा का होना, जिससे हल चलाकर बोवाई की जा सके। ३. हल जोतने व चलाने का काम। हळवाह।

हलवाई—*(न०)* मिठाई बनाने तथा बेचने वाला। कंदोई। कनोई।

हळवाणी—*(ना०)* १. हल में लोहे का नीचे का वह प्रमुख भाग, जिससे खेत जोता जाता है। फाल। २. एक औजार। खड्डे आदि खोदने की लोहे की मोटी छड़।

हलवायण—*(ना०)* हलवाई की स्त्री। कंदोयण। कनोयण।

हळवाळो—*(न०)* १. हल रखने या चलाने वाला। हल चला कर खेत बोने वाला।

खेती करने वाला। कृषक। २. बलराम।

हळवास—*(ना०)* १. किसी बात, काम या चीज का कम या हलका होना। हलकापन। २. स्वास्थ्य लाभ। शान्ति। ३. धैर्य। धीरज।

हळवाह—दे० हळवा।

हळवाहण—*(न०)* १. बैल। २. खेत। हळवहण।

हळवां—*(क्रि०वि०)* धीरे। हौले। हबळे।

हळवी—*(वि०)* १. हलकी। फोरी। २. छोटी। हबळी।

हळवें—*(क्रि०वि०)* १. धीमे। २. आहिस्ता। 'हवळें' का विपर्यय।

हलवो—*(न०)* एक मिष्टान्न। हलवा। सीरो।

हळवो—*(वि०)* १. हलका। फोरो। २. जो वजन में कम हो। ३. अप्रतिष्ठित। हळको।

हळसार—*(न०)* एक अछूत जाति।

हलंत—*(वि०)* १. जिस अक्षर के अन्त में हल (्) चिन्ह लगा हो। २. ऐसा निशान लगा कर अक्षर को स्वररहित करने की क्रिया या भाव।

हलाक—*(वि०)* वध किया हुआ। हत। *(न०)* नाश।

हलाकणो—*(क्रि०)* वध करना। मारना।

हलाकी—दे० हलाकू।

हलाकू—*(वि०)* हलाक करने वाला।

हलाड़णो—दे० हलावणो।

हलाण—*(न०)* प्रस्थान।

हलाणो—*(न०)* १. दूसरी बार ससुराल भेजने के समय कन्या को दिये जाने वाले आभूषण वस्त्रादि। मुळाणो। ओभणो। २. प्रस्थान। रवानगी। ३. दहेज। *(क्रि०)* १. चलाना। २. हिलाना।

हळाबोळ—*(वि०)* अति तेज। अतिशय (ताप बीमारी आदि)।

हलायुध—*(न०)* १. बलिभद्र। बलराम। २. हल नामक शस्त्र।

हलाल—*(न०)* १. जो इस्लाम के अनुसार हो। २. उचित। जायज। २. वह पशु, जिसका मांस इस्लाम के अनुसार खाने की आज्ञा है।

हलालखोर—*(वि०)* १. हलाल की कमाई खाने वाला। व्यवहार का सच्चा। ईमानदार। २. भंगी। महतर। ३. विश्वासपात्र। ४. कसाई।

हलालखोर-खासो—*(न०)* १. नवाब-बादशाहों का एक अंतरंग सेवक। २. विश्वासपात्र सेवक। ईमानदार नौकर।

हलालखोरी—*(ना०)* १. हलालखोर की स्त्री। २. हलालखोर का काम। ३. वफादारी। ४. ईमानदारी।

हलावणो—*(क्रि०)* १. चलाना। २. हिलाना। झकझोरना। ३. हलचल मचाना। ४. निभाना। ५. जारी रखना।

हळाहळ—*(न०)* भयंकर विष। *(वि०)* १. भयंकर। २. बिलकुल। सर्वथा। ३. अतिशय। ४. अति तीव्र।

हलिप्रिय—*(न०)* कदंब वृक्ष।

हळिप्रिया—*(ना०)* शराब। मदिरा। दारू।

हळियो—*(न०)* १. छोटा हल। २. सोने चाँदी पर नक्काशी करने का औजार।

हळी—*(नo)* १. बलिभद्र । २. कृषक । किसान । खेतीखड़ ।

हलीजणो—*(क्रि०)* १. चला जा सकना । चलने की शक्ति होना । चलने में समर्थ होना ।

हळीमूसळी—*(नo)* हल और मूसल नामक शस्त्र धारण करने वाले श्री बलराम ।

हलोल—*(ना०)* लहर । तरंग ।

हलोलो—*(नo)* १. जरिया । स्रोत । २. आजीविका का साधन । ३. व्यवहार । कारोबार । धंधा ।

हळू करमो—*(वि०)* १. निर्मल कर्मों वाला । २. निष्पाप । ३. उदार । ४. सरल प्रकृति । ५. मौजी । आनंदी । ६. निष्पक्ष । ७. परिश्रमी । ८. उपकारी ।

हलूर—*(ना०)* सतत होती रहने वाली सावन-भादों की वर्षा । झड़झड़ी ।

हळोतियो—*(नo)* १. उतनी वर्षा का हो जाना, जिससे खेत में हल चलाकर बोवाई की जा सके । बुवाई लायक वर्षा । २. छोटा हल ।

हलोर—*(नo)* एक अछूत जाति ।

हल्दीघाटी—दे० हळदीघाटी ।

हल्ल—*(नo)* १. हलचल । २. चलने की तैयारी । ३. गमन । प्रस्थान ।

हल्लो—*(नo)* १. शोरगुल । हल्ला । २. धावा । हमला ।

हव—(अव्य०) अब । हिव । अबै । *(नo)* हव्य ।

हवकव—दे० हव्यकव्य ।

हवद—*(नo)* हौज ।

हवन—*(नo)* मंत्र पढ़ कर अग्नि में आहुति देना, होम ।

हवन करतां हाथ बळणो—*(मुहा०)* १. भला करने पर भी बुराई मिलना । २. उपकार का बदला अपकार ।

हवन-कुंड—*(नo)* यज्ञकुंड ।

हवन भस्म—*(ना०)* हवन की भस्म । यज्ञभस्म ।

हवळै—*(क्रि०वि०)* धीमे । आहिस्ता । होले । होळै । हळवै ।

हवळो—*(वि०)* १. हलका । २. कम भारी । भारी नहीं । ३. धीमा । ४. सुस्त ।

हववाहण—*(नo)* अग्नि ।

हवस—*(ना०)* हविश । कामना । वासना ।

हवा—*(ना०)* १. वायु । पवन । २. साँस । ३. वातावरण । ४. कीर्त्ति । यश । ५. महत्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास । साख । प्रतिष्ठा । ६. आडम्बर । ७. प्राण । ८. भूत । प्रेत । बायरो ।

हवाई—*(नo)* १. प्राचीनकाल का एक आग्नेयास्त्र । २. बंदूक । ३. तोप । ४. पटाखा । *(वि०)* १. हवा में रहने वाला । २. हवा द्वारा चलने वाला । ३. हवा में उड़ने वाला । ४. बहुत ऊँचा बना हुआ । ५. हवा से संबंधित । ६. कल्पित । झूठा । ७. निर्मूल । निराधार ।

हवाई किलो—*(नo)* १. अव्यावहारिक । २. असंभव मनसूबा ।

हवाई जहाज—*(नo)* हवा में उड़ने वाला यान । वायुयान । उड़नखटोला ।

हवाई-बाण—*(नo)* प्राचीन समय का एक आग्नेयास्त्र ।

हवा एक—दे० हवा भर ।

हवा एक भर—दे० हवा भर ।

हवा खाणो—*(मुहा०)* १. वायु सेवन करना। २. निश्चिंत होकर घूमना। ३. भुगतना। भोगना। ४. अभाव की स्थिति होना।

हवाखोरी—*(ना०)* १. खुली वायु में घूमना। वायु सेवन। २. स्वास्थ्य लाभ।

हवा-गाँठ—*दे०* हवा गोट।

हवा-गोट—*(न०)* १. वात चक्र। भूतेळो। भतूळियो। २. आँधी।

हवा-घर—*(न०)* वह ऊँचा घर जिसमें हवा के आने जाने के लिये अनेक छोटे-मोटे द्वार बने हुए हों।

हवा-घालणी—*(मुहा०)* पंखा झलना। **हवा नाखणो**।

हवाड़ो—दे० अवाड़ो। उवाड़ा।

हवादार—*(वि०)* १. हवावाला। २. हवा से संबंधित।

हवा-नाखणो—*दे०* हवा घालणी।

हवा निकळणो—*(मुहा०)* १. पोल खुल जाना। २. रहस्य खुल जाना। ३. बेइज्जत होना।

हवानी—*(ना०)* १. मस्ती। २. नशा। ३. नशे की तरंग। ४. सुधबुध रहित। होशहवास बगैर।

हवा-पाणी—*(न०)* किसी प्रदेश की सर्दी, गरमी, बरसात आदि की कुल स्थिति। जलवायु। आबहवा।

हवा-फूटणो—*(मुहा०)* १. निंदा होना। अपकीर्ति होना। २. बेइज्जत होना। ३. बात फैलनी। ४. पोल खुलना।

हवा-फेर—*(न०)* १. स्वास्थ्य के लिये स्थान बदलना। २. (तोल, माप आदि में) अति सूक्ष्म फर्क।

हवाभर—*(अव्य०)* १. अति सूक्ष्म। २. वातावरण। ३. हलचल। ४. बहुत ही न्यूनातिन्यून रूप में।

हवा भरणो—*(मुहा०)* १. उकसाना। २. बहकाना। ३. किसी पात्र में हवा भरना (फुटबाल आदि में)।

हवामहल—*(न०)* १. जयपुर का एक प्रसिद्ध भवन। २. हवादार ऊँचा महल। **हवाघर**। ३. ऊँची कल्पना।

हवा-मान—*(न०)* तापमान। वातावरण।

हवाल—*(न०)* १. अवस्था। हालत। दशा। २. अहवाल। वृतान्त। ३. अवदशा। ४. परिणाम। हाल। नतीजा।

हवाल करणो—*(मुहा०)* सताना। दुख देना।

हवालदार—*(न०)* १. पुलिस, सेना आदि का एक छोटा अफसर। २. राजाशाही जमाने का मालगुजारी वसूल करने वाला कर्मचारी।

हवालदारी—*(ना०)* हवालदार का काम या पद।

हवा लागणो—*(मुहा०)* १. संगति का प्रभाव होना। २. भूतप्रेतादि का प्रभाव या आवेश होना।

हवालात—*(ना०)* १. मुकदमे के दरम्यान व पकड़े जाने पर अभियुक्त को कैद में रखने की जगह। २. कच्ची कैद। ३. कैद।

हवालै—*(अव्य०)* १. सुपुर्द। २. देखरेख में। ३. सारसँभाल में। अधिकार में।

हवालै करणो—*(मुहा०)* १. सुपुर्द करना। २. कब्जे करना। ३. कब्जे में देना। ४. कब्जा देना।

हवाले जाणो—*(मुहा०)* १. हवाले में शिकायत करने जाना। २. लेनदेन का हिसाब हो जाने पर रकम का अमुक व्यक्ति के खाते में जमा-उधार करना। ३. किसी रकम का अपने विभाग के खाते में लिया जाना।

हवालो—*(न०)* १. लेन-देन की कोई ऐसी रकम जिसका जमा-खर्च किसी कारण-वश लेन-देन करने से पहिले करने का नियम हो अथवा करना पड़ता हो तो उसके संबंध में जमा या खर्च के साथ बताया जाने वाला कारण। परस्पर के खाते में जमा-उधार करना। स्थानांतरित प्रविष्टि। २. राजाशाही समय का कर और मालगुजारी आदि वसूल करने वाला दफ्तर या थाना। ३. अधिकार। अख्तियार। ४. सुपुर्दगी। हवाला। ५. दृष्टान्त। मिसाल। ६. प्रमाण का उल्लेख। ७. जिम्मेवारी। ८. विवरण।

हवालो देणो—*(मुहा०)* १. पत्र, लेख आदि में किसी उदाहरण को उद्धृत करना।

हवालो पड़णो—*(मुहा०)* उद्धरण लिया जाना या किसी बात का उल्लेख होना।

हवालो भरणो—*(मुहा०)* १. उद्धरण लेकर लेख या पत्र की पूर्ति करना। २. किसी आवश्यक बात या लेख का पत्र में उल्लेख करना।

हवालो लेणो—*(मुहा०)* उद्धृत करना। *दे०* हवालो देणो।

हवास—*(न०)* १. होश। चेतना। २. संवेदना।

हवासील—*(न०)* एक पक्षी।

हवि—*(न०)* १. घृत। २. यज्ञकुंड में आहुति देने की सामग्री। ३. आहुति। बलि।

हविष्य—*(ना०)* होमने की सामग्री।

हवेजी—*(ना०)* १. छिलके रहित चने की दाल। २. चनों की दाल का तीवना।

हवेली—*(ना०)* १. बड़ा, पक्का और सुन्दर मकान। हेली। २. पुष्टिमार्गीय मंदिर। बैठक। ३. अंतःपुर। जनानखाना।

हवै—*(अव्य०)* १. समर्थनादि का सूचक शब्द। हाँ। होवै। २. स्वीकृति।

हवैसा—*दे०* हाँ सा।

हव्य—*(न०)* यज्ञ में होमने की सामग्री।

हव्य-कव्य—*(न०)* देवता तथा पितरों को दी जाने वाली बलि।

हसण—*(न०)* १. हँसी। २. मजाक।

हसणो—*(क्रि०)* १. खुले मुँह से हर्षध्वनि निकालना। हँसना। २. उपहास करना। हँसी उड़ाना। निंदा करना। ३. मजाक करना। दिल्लगी करना।

हसत—*(न०)* १ हाथी। हाथ। ३. एक नक्षत्र। हस्त। ४. हाथी की सूंड। ५. समूह।

हसब—*दे०* हिसाब।

हसम—*(ना०)* सेना। फौज।

हसमुखो—*(वि०)* १. हँसमुख। प्रसन्न। २. विनोदशील। ३. सदा प्रसन्न रहने वाला। आनंदी।

हसर—*(ना०)* १. कयामत। प्रलय। हश्र। २. हैसियत। ३. परिणाम। *दे०* असर।

हसरत—*(ना०)* १. अभिलाषा। इच्छा। २. दुख। अफसोस।

हसली—दे० हँसली ।

हसाई—*(ना०)* १. हँसी । ठट्ठा । मजाक । २. अपकीर्ति । बदनामी । ३. हँसने की क्रिया । हँसना । हँसी ।

हसाड़णो—दे० हसावणो ।

हसाणो—दे० हसावणो ।

हसामणो—*(वि०)* १. प्रसन्न । प्रफुल्ल । मुदित । २. हँसमुख । हसमुखो ।

हसाळू—*(वि०)* १. हँसाने वाला । २. हँसमुख । ३. आनंदी । हसमुखो ।

हसावणो—*(क्रि०)* हसाना ।

हकाहस—*(अव्य०)* १. हँसी ऊपर हँसी । २. बहुत जनों का एक साथ जोर-जोर से हँसना । ३. ठट्ठा मस्करी ।

हसी—*(ना०)* १. हँसना । हँसी । २. हाँसी । मजाक । हँसी । ३. उपहास । ४. निंदा । बदनामी ।

हसी उड़ावणो—*(मुहा०)* १. दिल्लगी करना । २. बदनाम करना । ३. अपमानित करना ।

हसी-खुशी—*(ना०)* १. कुशलतापूर्वक । २. प्रसन्नता से ।

हसीन—*(वि०)* १. सुंदर । कृपाळो । फूटरो । २. दृढ़ । स्थिर ।

हसीस—*(ना०)* एक मादक पदार्थ ।

हसेब—*(न०)* हिसाब ।

हसो—*(न०)* हँसी ।

हस्त—*(न०)* १. हाथ । २. तेरहवां नक्षत्र ।

हस्तक—*(अव्य०)* १. अधिकार में । हक में । २. ताबे । ताबे में । कब्जे में । ३. के द्वारा । के जरिये ।

हस्त उद्योग—*(न०)* हाथ से किया जाने वाला उद्योग (यंत्र से नहीं) । हाथ का बना हुआ ।

हस्तकला—*(ना०)* हाथ की कला । दस्तकारी ।

हस्त-कौशल—*(न०)* हाथ के काम की दक्षता ।

हस्तक्षेप—*(न०)* दखलंदाजी । दस्तंदाजी । दखल ।

हस्तगत—*(भू०कृ०)* १. प्राप्त । २. अधिकार में हुआ । ३. अधिकार में आया हुआ ।

हस्तप्रत—*(ना०)* हाथ से लिखा हुआ ग्रंथ । हाथप्रत । मेनुस्क्रिप्ट । हस्तलिखित प्रति ।

हस्तमिलाप—दे० हथळेवो ।

हस्तरेखा—*(ना०)* हथेली की रेखा ।

हस्त-रेखा-शास्त्र—*(न०)* हथेली की रेखाओं के माध्यम से मनुष्य के भविष्य को बतलाने वाली विद्या । सामुद्रिक ।

हस्त-लिखित—*(भू० कृ०)* १. हाथ से लिखा हुआ । (लेख, पांडुलिपि आदि) २. हाथ की लिखावट या लिपि ।

हस्ताक्षर—*(न०)* दस्तखत । सही । दसखत ।

हस्तामलक—*(न०)* १. वह वस्तु या बात जिसके सामने आते ही सारे अंग स्पष्ट हो जाते हैं । २. हथेली पर रखा हुआ आंवला ।

हस्तांतरण—*(न०)* सत्ता या संपत्ति का एक से दूसरे के पास जाना ।

हस्ति—*(न०)* हाथी । गज ।

हस्तिनी—*(ना०)* १. मादा हाथी । हथिनी । २. एक नायिका ।

हस्तिनापुर—*(न०)* दिल्ली का प्राचीन नाम ।

हस्तिमार—*(न०)* १. कहरकोह नामक शाही हाथी को मार देने वाले रतलाम के राजा रतनसिंह का विशेषण। कहरकोह हंता। २. सिंह।

हस्ती—*(ना०)* १. हैसियत। २. हाथी। ३. अस्तित्व।

हस्तीदंत—*(न०)* हाथी दाँत।

हस्ते—*(अव्य०)* के द्वारा। के जरिये। मारफत।

हस्ते खुद—*(अव्य०)* १. खुद ने लिया अथवा किया है। (प्रायः हिसाब और लेनदेन में इस अर्थ को सूचित करने वाला पद) खुद के द्वारा। उल्लिखित व्यक्ति के द्वारा। २. यह तात्पर्य कि जिस व्यक्ति के नाम वस्तु या रकम उधार चढ़ाई गई है, खुद उसी को हाथोहाथ दी गई है।

हस्तेवार—*(अव्य०)* जिसके हाथ में (वस्तु या रकम) दी गई है उसके नाम के साथ (उधार या लेखे मंडी हुई है)। जिसको दी गई है, बही में उसके नाम के साथ दर्ज है।

हस्ब—*(अव्य०)* के अनुसार। बामुजिब।

हस्ब कानून—*(न०)* कानून के अनुसार।

हस्ब जाबता—*(अव्य०)* कानून के अनुसार। यथानियम।

हस्ब जेल—*(अव्य०)* नीचे लिखे अनुसार।

हस्ब तहरीर—*(अव्य०)* सरकारी तहरीर के अनुसार।

हस्ब मामूल—*(अव्य०)* साधारण तौर से। साधारणतः।

हस्ब रिवाज—*(अव्य०)* रिवाज के अनुसार।

हस्ब हुकम—*(अव्य०)* आज्ञानुसार। हुक्म के मुताबिक।

हाँ आँ—*(न०)* हाँ।

हाँकणो—*(क्रि०)* १. चलना। २. चलाना।

हाँकरावणो—*दे०* हाँकराणो।

हंकार—*(न०)* अहंकार। अभिमान। घमंड। ऐंकार।

हंकारणो—*(क्रि०)* १. चलाना। २. हाँकना। ३. स्वीकार करना या कराना। ३. अहंकार करना।

हंकारी—*(वि०)* अहंकारी। अभिमानी।

हंग—*(ना०)* विष्टा। टट्टी। गू।

हंगण—*(ना०)* १. हगने का काम। २. विष्टा। टट्टी। ३ गुदा। *(वि०)* १. बारम्बार हंगने वाला। हंगणियो। २. कायर।

हंगणियो—*(वि०)* १. बार-बार हगने वाला। हगोड़ा। हग्गू। हंगण। २. कायर। कापुरुष।

हंगणो—*(क्रि०)* टट्टी फिरना। शौच जाना। हँगना।

हंगमूत—*(न०)* १. टट्टी और पिशाब। गू-मूत। २. हगना और मूतना।

हंगरी—*(न०)* यूरोप खंड का एक देश।

हंगाणो—*दे०* हंगावणो।

हंगाम—*(न०)* १. उत्सव। २. तैयारी। सजावट। ३. सेना। ४. समूह। ५. अवसर। ६. समय।

हंगामी—*(वि०)* १. आक्रमण करने वाला। *(न०)* १. कामचलाऊ। २. थोड़े समय का। अस्थायी।

हंगामो—*(न०)* १. युद्ध। २. आक्रमण। ३. हुल्लड़। ४. उपद्रव। फसाद। ५. भीड़भाड़। ६. धूमधाम। ७. उत्सव। ८. तैयारी।

हंगार—*(न०)* १. पक्षियों या मक्खियों की विष्टा। २. विष्टा। गू।

हंगावणो—*(क्रि०)* १ बच्चे को हँगाने के लिए बिठाना। २. हैरान करना।

हंचाकळो—दे० हथसाँकळो।

हंज—*(न०)* हंस। मराल। हंजो।

हंजर-पंजर—*(वि०)* पतला-दुबला। (शरीर)।

हंजामारू—*(न०)* १ विवाह के लोकगीतों का एक नायक। २. प्रियतम। पति। ३. दुलहा। बींद।

हंजारी—*(न०)* १. गेंदे का पुष्प। गेंदा। २. दुलहा। बींद।

हंजारीगुल—*(न०)* १. हजारे का पुष्प। २. दुलहा।

हंजारी (गुल) रो फूल—*(न०)* १. दूल्हे का एक विशेषण। २. हजारे का पुष्प।

हंजारी ढोलो—*(न०)* वैवाहिक लोक गीतों का एक नायक। हंस के समान सुन्दर और गुण वाला दुलहा। हजारी फूल के समान सुंदर दुलहा

हंजी—*(ना०)* हंसिनी। हंसणी।

हंजीर—*(ना०)* १. हाथी की सांकल। २. नशा ३. हानि। नुकसान। ४. बिगाड़। बरबादी।

हंजीरो—दे० हंजीर।

हंजो—*(न०)* १. हंस। २. पति। प्रियतम। ३. विवाह के लोकगीतों और काव्य का एक नायक। *(वि०)* सुन्दर।

हंटर—*(न०)* १. चाबुक। कोड़ा। कोहड़ो। २. एक आतिशबाजी।

हंड—*(न०)* लटकाया जाने वाला केरोसीन से जलने वाला एक प्रकार का कंदील।

हंडरवेट—*(न०)* एक अंग्रेजी तोल जो एक मन और १४ सेर का होता है।

हंडियो—*(न०)* अफीम रखने की एक छोटी जेबी डिबिया।

हंडो—*(न०)* दे० हाँडो।

हंत—*(न०)* १. दुख सूचक शब्द या उद्गार। २. खेद। उद्वेग। ३. मृत्यु। मौत। *(क्रि०)* 'होना' क्रिया का एक रूप। 'होणो' या 'होवणो' का भू० का० विध्यर्थ। होत। होतो। होवतो।

हंता—*(क्रि०भू०)* 'होना' या 'है' क्रिया का भूतकालिक बहुवचन रूप। थे। *(वि०)* वध करने वाला। हत्यारा।

हंती—*(क्रि०भू०)* 'है' क्रिया के भूतकाल का नारी जाति रूप। थी। *(वि०)* वध करने वाली। हत्यारी।

हंतो—*(क्रि०भू०)* 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था। हतो। हो। छो। थो। *(वि०)* वध करने वाला। हत्यारा। हंता।

हंद—*(प्रत्य०)* 'का, की, के' अर्थसूचक विभक्ति। २. 'हंदो' या 'हंदी' विभक्ति का एक (छोटा) रूप।

हंदियाँ—*(प्रत्य०)* काव्य में (नारी जाति) प्रयुक्त दोनों वचनों में 'हंदी' विभक्ति का एक अन्य बहुवचन रूप। यथा—'लहरां सायर हंदियाँ'। की। हंदी। संदियाँ। तणी।

हंदियो—*(प्रत्य०)* 'हंदो' विभक्ति का एक अन्य रूप। का। संदियो। केरो। तणो। रो।

हंदी—*(प्रत्य०)* संबंधकारक विभक्ति 'हंदो'। 'की' अर्थक का स्त्रीलिंग। शब्द। री। ची। केरी।

हंदै—*(प्रत्य०)* 'के' विभक्ति।

हंदो—*(प्रत्य०)* संबंधकारक की 'का' अर्थसूचक विभक्ति। संदो।

हंफणो—दे० हाँफणो ।

हंफारी—*(ना०)* १. हाँफना । २. श्वास रोग ।

हंफारो—दे० हंफारी ।

हंभा—*(ना०)* १. गाय का रंभाना । रंभाने का शब्द । २. गाय । गौ ।

हंभारव—*(न०)* गाय के रंभाने की आवाज । हंभा ।

हंस—*(न०)* १. ब्रह्मा । सूर्य । ३. चाँदी । ४. मराल । ५. एक प्रकार का घोड़ा । ६. जीव । प्राण । **हंसो** । ७. विष्णु । ८. शिव । ९. मैंसा । १०. कामदेव । ईर्ष्या । १२. तपस्वी । १३ विवेकशील । १४. एक छंद ।

हंसक—*(न०)* १. नूपुर । २. घुंघरू । ३, बिछिया । बीछूड़ी । ४. हंस । **घूघरो** ।

हंसगत नीसाणी—*(ना०)* नीसाणी छंद का एक भेद । रूपमाळा छंद ।

हंसगति—*(ना०)* १. हंस जैसी मंथर चाल । २. ब्रह्म पद की प्राप्ति । ३. एक छंद ।

हंसगामणी—*(वि०)* हंस जैसी मंथर-गति से चलने वाली । हंसगामिनी ।

हंसण—*(ना०)* हंसी । हंसिनी ।

हंसणी—*(ना०)* हंस की मादा । हंसिनी । **हंसी** । **हंजी** ।

हंस-पद—*(न०)* लिखे हुये में और कुछ की हुई वृद्धि को दर्शाने वाला ' ' ऐसा चिन्ह । काकपद । २. ब्रह्मपद । ३. हंस का पैर ।

हंस-पाद—*(न०)* १. हींगुल । ईंगुर । **हींगळू** । २. हंस पद ।

हंसभख—*(न०)* मोती । मुक्ताफल ।

सहँ-मुख—*(वि०)* १. प्रसन्नमुख । २. विनोदी ।

हँस-मुखी—*(वि०)* १. प्रसन्नवदना । २. विनोदिनी ।

हँस-मुखो—दे० हंसमुख ।

हँसराज—*(न०)* १. हंसों का राजा । बड़ा हंस । २. एक वनस्पति ।

हसली—*(ना०)* १. हंस की मादा । **हंसी** । २. गले का एक आभूषण । **हाँसळी** । ३. गले के नीचे की दो धन्वाकार हड्डियाँ । **हाँसली** ।

हँसळी—दे० हंसली सं.२ , ३.

हंसलो—*(न०)* १. प्राण । **हंसो** । २. हंस । **हंज** । ३. आत्मा । **हंसो** ।

हंसवाहण—*(न०)* १. ब्रह्मा । २. सरस्वती ।

हंसवाहणी—*(ना०)* सरस्वती । शारदा । **वागेसरी** । **सरसती** ।

हँसाई—*(ना०)* १. बदनामी । निंदा । २. हंसी-ठट्ठा । ३. अपमान । अनादर ।

हंसाउलि—*(ना०)* सिद्धपुर के कवि असाइत द्वारा लिखित काव्य ग्रंथ ।

हँसाइणो—दे० हँसाणो ।

हँसाणो—*(क्रि०)* १. हंसने को मजबूर करना । हँसी आये ऐसी बात करना । २. खुश करना । राजी करना ।

हंसारूढा—*(न०)* सरस्वती ।

हँसाळ—*(न०)* १. एक प्रकार का घोड़ा । २ घोड़े की एक जाति । ३. घोड़ा । ४. हंस-पँक्ति । *(वि०)* मजाकी । **मजाकियो** । जोकर ।

हँसाळू—*(वि०)* १. हँसाने वाला । हँसोड़ । २. हँसमुख । प्रसन्नमुख ।

हँसावणो—दे० हँसाणो ।

हंसावळी—*(ना०)* हंसों की पंक्ति ।

हंसासणी—*(ना०)* सरस्वती ।

हँसियो—*(न०)* घास आदि की कटाई में काम आने वाला एक औजार । हँसिया । दातरड़ो । बातलो ।

हंसी—*(ना०)* १. हंस की मादा । हंसिनी । २. हँसी । मजाक ।

हँसी करणो—*(मुहा०)* १. मजाक करना । मश्करी करना । २. मनोरंजन करना ।

हँसी मजाक—*(न०)* मजाक । मश्करी ।

हँसुओ—*(न०)* १. एक शस्त्र । २. हँसिया । दातरड़ो । बातलो ।

हंसो—*(न०)* १. प्राण । २. आत्मा । हंसलो । ३. प्राणवायु । ४. साँस । ५. हंस ।

हंसो उड़णो—*(मुहा०)* प्राण निकल जाना । मर जाना ।

हँसोड़—*(वि०)* हँसी मजाक करने वाला । मजाकी । मजाकियो ।

हा—*(अव्य०)* १. दुख, शोक, भय का सूचक शब्द । अरे, अहा । २. आश्चर्य या खुशी का सूचक शब्द । अरे । हाय, हा इत्यादि । *(क्रि०भू०)* भूतकालिक क्रिया 'हो' का बहुवचन रूप । थे । था । जैसे—'वे आया हा' । ४. स्वीकृति सूचक शब्द । हाँ ।

हाइ—*(न०)* १. भाव । २. दशा । हालत ।

हाइफन—*(न०)* यौगिक शब्दों के बीच में लगने वाला संबंध सूचक चिन्ह । '-' ऐसा चिन्ह ।

हाइ-कमिश्नर—*(न०)* कॉमनवेल्थ (राष्ट्र समूह) में प्रतिनिधि के तौर पर रक्खा जाने वाला राष्ट्र का सर्वोच्च अधिकारी ।

हाईकोर्ट—*(न०)* किसी राज्य या प्रान्त की फौजदारी या दीवानी की सबसे बड़ी अदालत । उच्च न्यायालय ।

हाई-स्कूल—*(ना०)* मेट्रिक तक पढ़ाये जाने की पाठशाला । माध्यमिक शिक्षण की स्कूल ।

हाउ—*(न०)* बालक को डर उपजाने वाला एक काल्पनिक डरावना जीव । हौआ । हौवा ।

हाउ जंपो—दे० हाहुजंपो ।

हाउलो—दे० हावलो ।

हाउ-हाउ—*(अव्य०)* १. कुत्ते के भौंकने का शब्द । २. अधिक और व्यर्थ बोलने की क्रिया या भाव ।

हाउ-हाउ करणो—*(मुहा०)* १. बक-बक करना । २. भौंकना ।

हा ओ—*(अव्य०)* पति-पत्नी का परस्पर का संबोधन । अजी । हेजी ।

हाक—*(ना०)* १. आतंक । धाक । रोब । २. शोर । कोलाहल । ३. भय । ४. जोर की आवाज । चिल्लाहट । ५. डाँट । धमकी ।

हाक करणो—*(क्रि०)* १. डाँटना । २. पुकारना ।

हाकड़ो—*(न०)* समुद्र का नाम जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि यह कभी मारवाड़ के पश्चिमी भाग में अवस्थित था ।

हाकणवाळो—दे० हाकणाळो ।

हाकणहाळो—दे० हाकणाळो ।

हाकणारो—दे० हाकणाळो ।

हाकणाळो—*(क्रि०)* १. हाँकने वाला । चलाने वाला । २. रास्ते पर लाने वाला । ३. वश में करने वाला । हाकणारो ।

हाकणियो—दे० हाकणाळो ।

हाकणो—दे० हाँकणो ।

हाक-बाक—*(वि०)* १. किंकर्त्तव्यविमूढ़ । व्याकुल । भौंचक्का । २. हैरान-परेशान । हक्का-बक्का ।

हाक-बाक होणो—*(मुहा०)* घबराना । हक्का-बक्का होना ।

हाकम—*(न०)* १. शासक । २. बड़ा अधिकारी । ३. परगने की हुकूमत का शासक । मैजिस्ट्रेट । हाकिम ।

हाकमाई—दे० हाकमी ।

हाक मारणो—*(मुहा०)* १. पुकारना । आवाज देना । २. मृतक के पीछे संबंधियों का उसका नाम लेकर रोना ।

हाकमी—*(ना०)* १. हाकिम का पद । २. हाकिम संबंधी । हाकमाई ।

हाकमी उतरणो—*(मुहा०)* १. हाकिम के पद से निरस्त होना । हाकिमी टूट जाना ।

हाकमी मिलणो—*(मुहा०)* हाकिम की नौकरी या पद मिलना ।

हाकरणो—दे० हाँ करणो । स्वीकार करना ।

हाकल—*(न०)* १. धौंस । २. पुकार । ३. डराने के लिये जोर से बोलना । जोर की आवाज । ४. डर । ५. वीर-हाक । ललकार । ६. डाँट-डपट ।

हाकलणो—*(क्रि०)* १. हाक मार कर बुलाना । पुकारना । २. हाक मार कर भगाना । ३. हाक मार कर बैल आदि को हाँकना । हाँकना । चलाना । ४. ऊधम करते हुये बच्चों को डाँटना । धमकाना । डराना । ५. ललकारना ।

हाका करणो—*(मुहा०)* शोर मचाना । कूकणो ।

हाकाणो—*(न०)* दुष्काल के कारण गाय भैंस आदि पशुओं को अन्यत्र सुकाल प्रदेश में (हाँक कर) ले जाना ।

हाका-हूक—*(न०)* भारी शोरगुल । कूका-कूक । होहल्ला ।

हाका-हूको—*(न०)* शोरगुल । कोलाहल । होहल्ला ।

हाकिम—दे० हाकम ।

हाकिमपणो—दे० हाकमी ।

हाकी-बाकी—*(वि०)* घबराई हुई । हड़बड़ाई हुई । उद्विग्न ।

हाको—*(न०)* १. शोर । हल्ला । २. पुकार । बुलावा । ३. धमकी । ४. भय । ५. शिकार के लिये जानवर को घेरने के लिये मनुष्यों द्वारा मचाया जाने वाला शोर । ६. शिकार के लिये आवाज करने वाले लोगों का समूह ।

हाको करणो—*(मुहा०)* १. डाँटना । धमकाना । २. पुकारना । आवाज करना । ३. बुलाना । आवाज देना ।

हाकोट—*(न०)* १. भय । धमकी । २. पुकार । ३. जोर की आवाज । ४. ललकार । ५ शाबासी ।

हाकोटणो—*(क्रि०)* १. हाँकना । चलाना । २. डराना । धमकाना । ३. पुकारना । ४. शाबासी देना । धन्यवाद देना । ५. ललकारना । ६. लड़ना-भिड़ना ।

हाकोटा—*(वि०)* १. गूंजते हुए । २. प्रसन्न । कुशल । ३. आनंद । मौज ।

हाकोटाँ में—*(अव्य)* प्रसन्न हो! राजी-खुशी हो! मजा में हो! इत्यादि आगन्तुक को पूछा जाने वाला कुशलतासूचक प्रश्न । खूब मजे में?

हाकोटो—दे० हाकोट ।

हाको पड़णो—(मुहा०) शोर होना।
हाको फूटणो—दे० हलो फूटणो ।
हाको-बाको—*(वि०)* घबराया हुआ। हड़बड़ाया हुआ। उद्विग्न ।
हाको-हाक—*(ना०)* १. आवाज पर आवाज। २. शोरमशोर। २. पुकार पर पुकार। ३. होहल्ला। शोर।
हाजती—*(वि०)* १. जरूरत वाला । २. हवालात में बंद। ३. अभिलाषी।
हाजत—*(न०)* १. शौच आदि का वेग । २. मलमूत्र करने की इच्छा । ३. जरूरत । आवश्यकता । ४. इच्छा । अभिलाषा ५. हवालात । काची जेल ।
हाजमो—*(न०)* पाचन शक्ति । हाजमा।
हाजर—*(न०)* १. उपस्थित । मौजूद । हाजिर। २. प्रस्तुत।
हाजर करणो—*(मुहा०)* उपस्थित करना। पेश करना।
हाजरजबाबी—*(वि०)* समयानुसार योग्य जवाब शीघ्र दे सके ऐसा। *(ना०)* तुरत उत्तर देने की क्रिया या स्थिति ।
हाजर-नाजर—*(वि०)* १. सब कुछ देखने वाला। २. जब जगह उपस्थित रहने वाला। *(न०)* ईश्वर।
हाजरात—*(ना०)* एक प्रक्रिया जिसमें किसी व्यक्ति की आत्मा को बुला कर उससे छुपी-अनजानी बातें पूछी जाती हैं।
हाजरा-हुजूर—*(वि०)* १. प्रत्यक्ष। साक्षात्। २. सामने।
हाजरिआळो—दे० हाजरियो।
हाजरियो—*(न०)* १. सेवक। २. दास। *(वि०)* हर समय हाजिर रहने वाला।
हाजरी—*(ना०)* १. उपस्थिति। मौजूदगी। २. हाजिर होने की क्रिया या भाव। ३. भोजन। यथा—छोटी हाजरी। बड़ी हाजरी। हाजिरी।
हाजरी गिणावणी—*(मुहा०)* १. उपस्थित होना। २. उपस्थिति गिनवाना।
हाजरी चाढणी—*(मुहा०)* हाजिरी रजिस्टर में हाजिरी लिखना।
हाजरी देणी—*(मुहा०)* १. उपस्थित रहना। २. सेवा में उपस्थित रहना।
हाजरी नूंधणी—*(मुहा०)* हाजिरी लिखना। हाजिरी दर्ज करना।
हाजरी नूंधाणी—*(मुहा०)* हाजिरी दर्ज करवाना।
हाजरी पूरणी—दे० हाजरी नूंधणी।
हाजरी बजावणी—*(मुहा०)* १. सेवा करना। २. सेवा में उपस्थित होना। ३. खुशामद करना।
हाजरी भरणी—दे० हाजरी नूंधणी तथा हाजरी बजावणी।
हाजरी मंडावणी—दे० हाजरी नूंधाणी।
हाजरी मांडणी—दे० हाजरी नूंधणी।
हाजरी लेणी—दे० हाजरी नूंधणी।
हाजरी साजणी—*(मुहा०)* १. सेवामें उपस्थित रहना। २. खुशामद करना।
हाजियाणी—*(ना०)* १. हज करके आई हुई मुसलमान स्त्री। २. हाजी की पत्नी।
हाजी—*(न०)* १. हज करके आया हुआ मुसलमान। २. मक्के मदीने का यात्री। दे० हांजी।
हाट—*(ना०)* १. दुकान। २. बाजार।
हाटक—*(न०)* सोना।
हाटकपुर—*(न०)* १. लंका। २. स्वर्ण नगरी।
हाटकी—*(न०)* एक डिंगल छंद।

हाटकेसर—*(न०)* महादेव । हाटकेश्वर ।

हाटड़ी—*(ना०)* हाट । दुकान । दे० हटड़ी ।

हाट डोढी करणी—*(मु०हा०)* १. संध्या या व्याळू के समय घर को जाने के लिये दूकान बंद करना । २. दुकान बंद करना ।

हाट मांडणी—*(मु०हा०)* माल-सामान का क्रय-विक्रय करने के लिये दुकान लगाना ।

हाट-हाट—*(अव्य०)* प्रत्येक हाट । एक-एक दुकान । प्रतिहाट ।

हाटाँ—*(ना०ब०व०)* १. बाजार । २. दुकानें ।

हाटो-हाट—*(अव्य०)* हाट प्रति हाट । प्रत्येक हाट । हाट-हाट ।

हाड—*(न०)* १. हड्डी । अस्थि । २. अस्थि संबंध । ३. रक्त संबंध । एक वंश । एक ही वंश में उत्पन्न । ४. भाई । ५. भाई, पुत्र पौत्र इत्यादि कुटुम्बीजन ।

हाडक—*(न०)* १. हड्डी । अस्थि । (रोष या व्यंग में) २. हड्डियाँ ।

हाडकी—*(ना०)* १. छोटी और पतली हड्डी २. हड्डी ।

हाडको—*(न०)* १. बड़ी व मोटी हड्डी । २. हड्डी ।

हाडजाळ—*(ना०)* अग्नि । हाडबाळ ।

हाडजुर—दे० हाडज्वर ।

हाडजोड़ो—दे० हाडवैद ।

हाडज्वर—*(न०)* १. जीर्ण ज्वर । २. मंद ज्वर । ३. अस्थि ज्वर ।

हाडदुसमणी—दे० हाडवैर ।

हाड-पिंजर—*(न०)* अस्थि पिंजर ।

हाड-बाळ—*(ना०)* अग्नि । आग ।

हाड भांगणा—*(मुहा०)* १. कठिन परिश्रम करना । २. सख्त मार मारना ।

हाड-मजूरी—*(ना०)* कठिन परिश्रम । सख्त मजूरी ।

हाड-महनत—दे० हाडमजूरी ।

हाडभारी—*(ना०)* १. कठिनता । मुश्किली । २. अर्थाभाव । ३. हैरानी । हैरानगति । ४. तिरस्कार ।

हाड-मांस—*(न०)* हड्डी और माँस ।

हाडल—*(न०ब०व०)* हड्डियाँ । हाडक ।

हाड वढी—दे० पिंड वढी ।

हाडवैद—*(न०)* टूटी हुई हड्डी को जोड़ने वाला वैद्य । हड्डी जोड़ने-बिठाने वाला विशेषज्ञ । हडजोड़ो ।

हाड वैर—*(न०)* १. कुटुम्बीजनों में शत्रुता । २. पुश्तैनी शत्रुता । ३. गहरी दुश्मनी । ४. नैसर्गिक शत्रुता । यथा—बिल्ली-चूहा । ५. हत्या की शत्रुता । हाड-दुसमणी ।

हाड-वैरी—*(न०)* १. पक्का दुश्मन । २. कुटुम्बी शत्रु ।

हाड-हाड—*(अव्य०)* १. शरीर की प्रत्येक हड्डी । २. शरीर की हड्डी का प्रत्येक भाग । ३. एक-एक हड्डी ।

हाडियो—*(न०)* बड़ा कौआ । हाडो ।

हाडी—*(वि०)* १. हाड़ा (राजपूत) कुल की । २. मजबूत हड्डियों की ।—*(ना०)* १. हाडा कुल । २. बड़े कौवे की मादा । ३. एक अछूत जाति । ४. हाडा राजपूत ।

हाडै-गोडै—*(अव्य०)* हड्डियों और घुटनों में (दृढ) ।

हाडै-गोडै सैंठो—*(वि०)* १. हड्डियों और घुटनों से मजबूत । २. बहुत मजबूत । अति दृढ । ३. शरीर की मजबूत गठन का ।

हाडो—*(न०)* १. एक राजपूत जाति। २. कौआ। कागलो। ३. बड़ी जाति का कौआ।

हाडोटी—दे० हाडोती।

हाडोती—*(ना०)* १. हाडा राजपूतों के अधिकार का देश (कोटा-बूंदी आदि)। हाडावाटी। २. इस देश की बोली। राजस्थानी की एक बोली। (वि०) १. हाडोती प्रदेश का। २. हाडोती संबंधी।

हाड़ोतो—*(वि०)* हाडोती का रहने वाला। हाडोती प्रदेश का।

हाडोहाड—*(अव्य०)* १. ठेठ हड्डियों तक। २. हड्डी-हड्डी में। ३. खूब गहराई तक। ४. अंग-प्रत्यंग में। ५. पूर्णतया। ६. हृदय में ७. असंदिग्ध रुप से।

हाण—*(ना०)* १. काम करने की शक्ति। चलने-फिरने की शक्ति। हानि। नुकसान घाटो।

हाणक—*(न०)* शत्रु। *(वि०)* १. हानि पहुँचाने वाला। २. हानिकारक।

हाणाप—दे० हाणी।

हाणी—*(ना०)* हानि। नुकसान। घाटो। हाणप।

हातलो—*(न०)* बैलगाड़ी का एक उपकरण।

हातो—दे० हाथी।

हाथ—*(न०)* १. हस्त। कर। २. कोहनी से मध्यमा अँगुली के सिरे तक की लंबाई का माप। ३. कंधे से पंजे तक का भाग। ४. ताश के खेल में जीता हुआ दाँव। ५. दीवाल पर चित्रित या मंडित हाथ। ६. मदद। ७. प्रेरणा। ८. सम्मिलित। ९. सहायक। १०. अधिकार। वश। ११. कृपा। रहम। १२. कब्जा। *(अव्य०)* द्वारा। से।

हाथ अजमावणो—*(मुहा०)* १. मारपीट करना। २. काम का अभ्यास करना। २. काम सीखना। ४. काम में प्रवृत्त होना।

हाथ अटकणो—*(मुहा०)* १. पैसा बीत जाना। २. आमदनी नहीं होना। ३. काम नहीं मिलना।

हाथ अड़कणो—*(मुहा०)* स्पर्श होना। हाथ लगाना।

हाथ अड़कावणो—*(मुहा०)* स्पर्श करना। छूना।

हाथ अहळो जाणो—*(मुहा०)* वार खाली जाना।

हाथ आगै करणो—*(मुहा०)* १. किसी से किसी वस्तु की याचना करना। २. भीख माँगना। ३. सहायता करना। ४. सहायता माँगना।

हाथ आडो करणो—*(मुहा०)* मना करना।

हाथ आणो—दे० हाथ आवणो।

हाथ आयो मोको खोणो—*(मुहा०)* उपलब्ध अवसर का लाभ नहीं उठाना।

हाथ-आरी—दे० हाथ करवत।

हाथ आवणो—*(मुहा०)* १. मिलना। प्राप्त होना। २. पकड़ा जाना। ३. लाभ होना।

हाथ उगामणो—*(मुहा०)* मारने के लिये हाथ उठाना।

हाथ उठाऊ—*(वि०)* १. अप्रामाणिक। २. बेईमान। ३. चोर। ४. मार-पीट करने की आदत वाला।

हाथ उठाणो—*(मुहा०)* १. प्रहार करने के लिए हाथ को ऊँचा उठाना। २.

२. प्रहार करना । ३. अधिकार छोड़ना । ४. सहायता नहीं करना ।

हाथ उठावणो—दे० हाथ उठाणो ।

हाथ उतरणो—*(मु०हा०)* हाथ की जोड़ की किसी हड्डी का अपने स्थान से खिसक जाना ।

हाथ उतारणो—*(मु०हा०)* १. हाथ की हड्डी को तोड़ना । २. हाडवैद्य द्वारा हाथ की हड्डी के ठीक नहीं जुड़ने से वापस तोड़ना ।

हाथ उधार—*(ना०)* बिना लिखापढ़ी करवाये और बिना एवजाना लिये थोड़े समय के लिये दिया हुआ कर्ज ।

हाथ उपाड़णो—दे० हाथ उठाणो ।

हाथ उबाँगणो—*(मु०हा०)* थप्पड़ या लाठी मारना ।

हाथ ऊपर करणो—*(मु०हा०)* १. दान देना । २. सहायता देना । ३. प्रतिस्पर्द्धा में जीतना । ४. यश प्राप्त करना ।

हाथ ऊपर राखणो—*(मु०हा०)* १. अपनी बात ऊपर रखना । २. सहायता करना । ३. जिद को कायम रखना ।

हाथ ऊपर लेणो—*(मु०हा०)* काम शुरू करना । प्रारंभ करना ।

हाथ ऊपर हाथ धर नै बैठणो—*(मु०हा०)* १. निकम्मा बैठा रहना । २. निष्क्रिय होना ।

हाथ ऊँचो करणो—*(मु०हा०)* १. दान देना । २. सहायता देना । ३. प्रतिस्पर्धा में जीतना ।

हाथ ऊँचो रहणो—*(मु०हा०)* १. विवाद में जीत रहना । बात रहना । २. किसी के फंदे में न फँस कर दोषमुक्त रहना ।

हाथ ऊँचो होणो—*(मु०हा०)* दानशील वृत्ति का होना ।

हाथ कट जाणा—*(मु०हा०)* अपने लिखे से बँध जाना ।

हाथकड़ी—दे० हथकड़ी ।

हाथ-कताई—*(ना०)* हाथ से सूत कातने का काम ।

हाथ कतियो—*(वि०)* (चरखे से) हाथ से काता हुआ (सूत) ।

हाथ करणो—*(मु०हा०)* १. कब्जे करना । २. ताश के खेल में दाँव जीतना । ३. वश में करना ।

हाथ करवत—*(ना०)* हाथ से चलाई जाने वाली छोटी करवत । हाथआरी ।

हाथ कराणो—*(मु०हा०)* १. वश में करना । २. प्राप्त करना ।

हाथ करोत—दे० हाथ करवत ।

हाथ कलम करणो—*(मु०हा०)* पहुंचे में से हाथ काट देना ।

हाथ काटनै देणा—*(मु०हा०)* १. लिख कर देना । लिख कर बँध जाना ।

हाथ काटनै लेणा—*(मु०हा०)* लिखवा कर लेना ।

हाथ काठो करणो—*(मु०हा०)* कंजूसी करना ।

हाथ काठो (घणो)—*(वि०)* अति कंजूस ।

हाथ काढणो—*(मु०हा०)* १. अपना काम बना लेना । २. किसी को उधार दिये हुए पैसे हर प्रयत्न से प्राप्त करने में सफल होना ।

हाथ कापै नै देणा—*(मु०हा०)* खत, दस्तावेज आदि पर दस्तखत करके बँध जाना ।

हाथ-काम—*(ना०)* १. विवाह काम का प्रारंभ । २. विवाह काम के प्रारंभ का (प्रथम) दिन । ३. हाथ की कारीगरी

या कला। ४. हाथ की कारीगरी का काम। ५. शोक, अशौच आदि की निवृत्ति करके मांगलिक कार्य हाथ में लेना।

हाथ काम-रो-तेड़ो—*(मुहा०)* १. विवाह आदि मांगलिक कार्य को शुरू करने के समय संबंधियों को दिया जाने वाला निमंत्रण। २. सर्वसाधारण स्वजाति वालों को उक्त काम की सूचना।

हाथ काम लेणो—*(मुहा०)* १. विवाह का काम शुरू करना। २. काम शुरू करना।

हाथ कारीगरी—*(ना०)* हाथ की कारीगरी। हस्तकला।

हाथ काळा करणा—*(मुहा०)* १. कलंकित काम में सम्मिलित होना। २. कलंकित हो ऐसा काम करना। ३. रिश्वत लेना।

हाथ कुळणो—*(मुहा०)* १. हाथ में पीड़ा होना। २. मारपीट करना।

हाथ कोनी देणो—*(मुहा०)* रजस्वला होना।

हाथ कोनी लगाणो—*दे०* हाथ कोनी देणो।

हाथ खरची—*(ना०)* १. छोटी मोटी चीजों तथा आवश्यकता के लिये परचून खर्चने की रकम। २. फुटकर खर्चने की क्रिया।

हाथखर्च—*(न०)* फुटकर खर्च।

हाथ खरड़णो—*(मुहा०)* १. अनुचित काम करना। २. मल आदि से हाथ भरना।

हाथ खंखेरणो—*(मुहा०)* १. जोखिमदारी से दूर होना। २. काम से निबटना। ३. आशा छोड़ना।

हाथ खाणो—*दे०* हाथ खावणो।

हाथ खाली जाणो—*(मुहा०)* १. दाँव चूक जाना। २. वार चूक जाना। ३. असफल होना।

हाथ खाली होणो—*(मुहा०)* १. पास में रुपया पैसा नहीं होना या नहीं रहना। २. करने लायक कोई काम पास में नहीं होना।

हाथ खावणो—*(मुहा०)* खूब क्रोध करना।

हाथ खाँचणो—*(मुहा०)* १. खर्च पर अंकुश रखना। २. मदद देना बंद करना। ३. किसी को देने में कंजूसी करना।

हाथ खींचणो—*(मुहा०)* १. किसी काम से अलग हो जाना। २. कृपा भाव नहीं रखना। ३. खर्च में कमी करना। ४. (देने में) कंजूसी करना।

हाथ खुजलाणो—*(मुहा०)* १. किसी को मारने का जी करना। २. आर्थिक लाभ होने के लक्षण दिखाई देना।

हाथ खुलणो—*(मुहा०)* खर्च करने या दान देने में अधिक उदार होना।

हाथ खोलणो—*(मुहा०)* उदार होना।

हाथ गरणो—*(न०)* १. स्त्री का किसी पुरुष को पति करना या पुरुष का किसी स्त्री को पत्नी बनाना। (बिना विवाह के)। *(न०)* पुनर्विवाह। **नातो**। *(क्रि०)* पुनर्विवाह करना। **नातो करणो**।

हाथ गरम करणा—*(मुहा०)* १. रिश्वत देना। २. सर्दियों में अग्नि से हाथ गरम करना। ३. रिश्वत लेना।

हाथ गरेणो—*(न०)* किसी स्त्री से पुनर्विवाह करना। *(न०)* पुनर्विवाह। **नातरो**। **नातो**।

हाथ गरेणो करणो—*(मुहा०)* पुनर्विवाह करना। **नातरो करणो**।

हाथ गाडो—*(न०)* हाथ से चलाया जाने वाला गाडा या ठेला।

हाथ घड़ी—*(ना०)* कलाई में बाँधी जाने वाली घड़ी।

हाथ घालणो—*(मुहा०)* १. बीच में पड़ना। २. सामिल होना। ३. किसी काम को प्रारंभ करना।

हाथ घिसणा—*(मुहा०)* १. पछताना। २. कड़ी महनत करना। ३. संताप करना। मनस्ताप होना। **बळापो करणो**।

हाथ घिसाई—*(ना०)* १. परिश्रम। २. मेहनत। ३. पारिश्रमिक। मेहनताना। काम की उजरत। हाथ घिसामणी।

हाथ घिसामणी—*दे०* हाथ घिसाई।

हाथ घुसेड़णो—*(मुहा०)* हस्तक्षेप करना। दखल करना।

हाथ चडावणो—*(मुहा०)* टूटे हुये हाथ की हड्डी को जोड़ना या बिठाना।

हाथ चढणो—*(मुहा०)* १. कब्जे में आना। २. अकस्मात मिल जाना (शत्रु का)। ३. हाथ की टूटी हुई हड्डी का जुड़ना।

हाथ चलणो—*(मुहा०)* १. मारना। २. मारना शुरू करना। ३. काम चले इतना रुपया मिलना।

हाथ चलाणो—*(मुहा०)* १. काम करना। २. झपाटे बंध काम करना। ३. मारने के लिये हाथ उठाना। ४. झपाटाबंध खाना शुरू करना।

हाथ चाटणो—*(मुहा०)* १. इधर-उधर भटकना। **फांका मारणो**। २. पश्चात्ताप करना। ३. खाते समय शाक इत्यादि से भरे हुए हाथ को चाटना।

हाथ चाढणो—*(मुहा०)* हाथ की टूटी हुई हड्डी को जोड़ना।

हाथ चालणो—*(मुहा०)* १. खर्च योग्य आमदनी हो जाना। २. स्वस्थ रहना। ३. ऐसा स्वास्थ्य बना रहना जिससे दूसरों की सहायता के बिना अपना काम अपने आप करना।

हाथ चालाकी—*(ना०)* हाथ की चालाकी (जादूगर या मदारी के खेल में)।

हाथ चाळो—*(न०)* मारपीट।

हाथ चाळो करणो—*(मुहा०)* हाथापाई करना।

हाथ चुराणो—*(मुहा०)* १. काम से जी चुराना। २. ठीक ढंग से काम नहीं करना। काम से मन चुराना।

हाथ चोखा कोनी—*(मुहा०)* रजस्वला होना।

हाथ चोखा नी होणा—*(मुहा०)* स्त्री का रजस्वळा होना।

हाथ चोपड़णा—*(मुहा०)* १. रिश्वत देना। २. राजी करना।

हाथ छूटो होणो—*(मुहा०)* १. उदार होना। २. खर्चीला होना। ३. मारने की आदत होना।

हाथ छोड़णा—*दे०* हाथ नांखणा।

हाथ छोड़णो—*(मुहा०)* १. किसी के पकड़े हुये हाथ को छोड़ना। २. आश्रित व्यक्ति को और आश्रय नहीं देना। ३. प्रोत्साहन नहीं देना। ४. धोखा देना।

हाथ जमणो—*(मुहा०)* किसी काम में निपुण होना। अभ्यस्त होना।

हाथ जमावणो—*(मुहा०)* १. सुन्दर अक्षर लिखने के लिये किसी सुलेख पर पतला

कागज लगा कर लिखना । २. बोळ की पट्टी लिखना । ३. थप्पड़ मारना ।

हाथजळ—दे० हाथपाणी ।

हाथ जळ लेणो—*(मुहा०)* प्रतिज्ञा करना ।

हाथ जोड़णा—*(मुहा०)* १. करबद्ध होकर नमस्कार कहना । २. प्रार्थना करना । विनती करना । ३. हैरान होना । ४. माफी माँगना । ५. वास्ता नहीं रखना ।

हाथ जोड़णो—*(मुहा०)* १. नमस्कार करना । २. प्रार्थना करना । ४. विनती करना । ३. माफी माँगना । ४. टूटे हुये हाथ को जोड़ना । ५. मतलब नहीं रखना ।

हाथ जोवणो—*(मुहा०)* १. हस्त रेखायें देख कर भविष्य कहना । २. सामर्थ्य का परिचय देना । ३. हस्तकौशल दिखाना (शस्त्रादि चलाना) ।

हाथ झटकणो—*(मुहा०)* १. निराशोत्पादक उत्तर देना । २. किसी बीमार का इलाज नहीं लगने से निराश होकर डाक्टर की ओर से इलाज बंद कर देना ।

हाथ झाटकणा—दे० हाथ झटकणो ।

हाथ झाड़णा—*(मुहा०)* १. मदद देना बंद कर देना । २. पीटना । मारना ।

हाथ झालणो—*(मुहा०)* १. मदद करना । २. पत्नी बनाना । शादी करना । ३. हाथ पकड़वा । ४. रोकना ।

हाथ झेलणो—दे० हाथ झालणो ।

हाथ टाळणो—*(मुहा०)* १. बचाव करना । २. सहायता देना बंद करना ।

हाथ टेकणो—*(मुहा०)* १. हार जाना । २. हिम्मत हार जाना । पश्तहिम्मत होना ।

हाथ टूंटिया वळणो—*(मुहा०)* कंजूसी करना ।

हाथ ठरणा—*(मुहा०)* १. मरणासन्न होना । २. हाथों का ठंडा होना ।

हाथ-ठेलो—दे० हाथ गाडो ।

हाथ डालणो—*(मुहा०)* १. किसी काम में दखल देना । २. काम को आरंभ करना । ३. सहायता करना ।

हाथ डोरणो बाँधणो—*(मुहा०)* १. विवाह का हाथ कंगन बांधना । २. विवाह करना ।

हाथ डोरो बाँधणो—*(मुहा०)* किसी से बहिन या भाई का धर्म संबंध स्थापित करना ।

हाथ ढाबणो—*(मुहा०)* १. सहायता बंद करना । २. सहायता करना ।

हाथ ढीलो करणो—*(मुहा०)* १. उदार होना । २. खर्च करना ।

हाथ ढीलो घणो—*(मुहा०)* १. खूब उदार । २. खर्चीला ।

हाथण—*(ना०)* हथिनी । **हथणी** । हाथी की मादा ।

हाथणी—*(ना०)* १. कपड़े वगैरह टाँगने की खूंटी । दे० वील । २. हथिनी ।

हाथ तपावणा—दे० हाथ तपाणा ।

हाथ-तळे—दे० हाथ नीचे ।

हाथ तंग—*(ना०)* रुपये-पैसों का अभाव ।

हाथ तंग होणो—*(मुहा०)* रुपयों-पैसों की दृष्टि से अभाव में होना ।

हाथ तापणा—*(मुहा०)* १. ठंड दूर करने के लिये अग्नि से हाथ तापना । २. स्वयं झगड़ा लगवा कर दूर खड़े तमाशा देखना ।

हाथताळी—*(अव्य०)* हाथ ताली दे इतनी देर में । अतिशीघ्र ।

हाथताळी देणी -*(मुहा०)* १. सफाई से छूट जाना या भाग जाना। २. छल करके भाग जाना।

हाथ थी जाणो—*(मुहा०)* १. कब्जे में से निकल जाना। २. बिगड़ जाना। भ्रष्ट होना।

हाथ दबणो—*(मुहा०)* १. असुविधाजनक स्थिति में फँस जाना। २. चरित्र अथवा किसी अन्य कमजोरी के कारण।

हाथ दबाय नै खरच करणो—*(मुहा०)* मितव्ययिता से खर्च करना।

हाथ दाबणो—*(मुहा०)* १. पकड़ रखना। २. रिश्वत देना। ३. (गुप्त) इशारा करना। ४. मना करना। ५. हाथ की चंपी करना।

हाथ दिखाणो—*(मुहा०)* १. ताकत का परिचय देना। २. भविष्य जानने के लिये हाथ की रेखायें किसी को दिखाना। ३. होशियारी बताना। ४. बहादुरी बताना।

हाथ दिराणो—दे० हाथ दिरावणो।

हाथ दिरावणो— *(मुहा०)* १. सहारा देना। २. सहायता देना।

हाथ देखणो—दे० हाथ जोवणो।

हाथ देणो—*(मुहा०)* १. सहारा देना। २. सहायता करना। ३. प्रतिज्ञा करना।

हाथ देणो कोनी—दे० हाथ लगावणो कोनी।

हाथ देणो, माथै—*(मुहा०)* १. अफसोस करना। २. सहारा देना। ३. आश्वासन देना।

हाथ देरावणो—*(मुहा०)* मदद करना।

हाथ धरणो—*(मुहा०)* १. काम हाथ में लेना। शुरू करना। २. जिम्मेवारी लेना।

हाथ धूजणो—*(मुहा०)* १. देने की कंजूसी करना। हाथ काँपना।

हाथ धो नांखणा—*(मुहा०)* १. आशा छोड़ देना। २. दिवाला निकालना या दिवालिया होना। ३. जिम्मेवारी से दूर होना।

हाथ धोणा—दे० हाथ धोवणा।

हाथ धोय नै बैठणो—*(मुहा०)* १. किसी वस्तु को गँवा बैठना। २. किसी बात की आशा छोड़ बैठना।

हाथ धोय नै लारै पड़णो—*(मुहा०)* १. किसी बात के पीछे पूरी लगन से लग जाना। २. किसी का अनिष्ट करने के लिये पूरी शक्ति से पीछे पड़ना।

हाथ धोवणा—*(मुहा०)* १. निराश होना। २. भोजन करके आचमन करना।

हाथ नीं अड़ावणो—*(मुहा०)* १. ऋतुमती होना। २. नहीं छूना।

हाथ नहीं धरवा देणो—*(मुहा०)* १. बात में या बहस में टिकने नहीं देना। २. किसी बात को जानते हुए भी अज्ञानता प्रकट करना। ३. उत्तरदायित्व नहीं लेना। ४. जानकारी को स्वीकार नहीं करना।

हाथ नांखणा—*(मुहा०)* १. निराश होना। २. बीमारी में इलाज न लग सकने के कारण डाक्टर की ओर से इलाज करना छोड़ देना।

हाथ नीचे—*(अव्य०)* १. अधीनता में। मातहती में। २. आश्रय में। ३. देखरेख में।

हाथ नीं हालणो—*(मुहा०)* १. आर्थिक संकट होना। रुपये-पैसों की तंगी

होना। २. रुपये-पैसे की तंगी के कारण किसी काम का समय सर नहीं होना।

हाथ नै हाथ नीं सूझणो—*(मुहा०)* बहुत अधिक अंधेरा होना।

हाथ पकड़णो—*(मुहा०)* १. सहारा देना। मदद करना।

हाथ पग—*(न०ब०व०)* १. मुख्य आधार। २. हाथ और पग। हाथ-पैर।

हाथ-पग चलाणा—दे० हाथ पग हलावणो।

हाथ पग चालणा—*(मुहा०)* शक्तिमान होना।

हाथ पग जोड़णा—*(मुहा०)* बहुत अनुनय विनय करना।

हाथ पग टूटणा—*(मुहा०)* १. बुखार के पूर्व शरीर में दर्द होना। २. आधार रहित होना।

हाथ पग ठंडा होणो—*(मुहा०)* १. मरने की स्थिति में होना। २. बहुत चिंता करने योग्य समाचार मिलना।

हाथ पग दावणो—*(मुहा०)* १. खुशामद करना। २. हाथ-पैरों की चंपी करना।

हाथ पग नांखणा—*(मुहा०)* १. रोगी का कष्ट से हाथ पाँव पछाड़ना। २. कोशिश के बावजूद सफल न होना। ३. निराश हो जाना।

हाथ पग नांख देणा—*(मुहा०)* १. मरणासन्न हो जाना। २. मर जाना। ३. इलाज नहीं लगने से इलाजी का निराश होना।

हाथ पग पछाड़ना—*(मुहा०)* १. खूब प्रयत्न करना। २. खूब क्रोध करना।

हाथ पग पटकणा—*(मुहा०)* १. व्यर्थ का परिश्रम करना। २. बहुत क्रोध करना। ३. उछलकूद करना। ४. क्रोध में बड़बड़ाना। ५. जोर करना।

हाथ पग पाछा पड़णा—*(मुहा०)* १. निराश होना।

हाथ पग फूलणा—दे० हाथ पग फूलीजणो।

हाथ पग फूलीजणो—*(मुहा०)* १. घबराहट के कारण निस्तब्ध हो जाना। २. अत्यन्त घबराना।

हाथ पग फैलावणा—*(मुहा०)* १. अपने काम धंधे का अनेक स्थानों में खोलना, जमाना या विस्तृत करना।

हाथ पग भागणा—*(मुहा०)* १. अशक्त हो जाना। २. होशहवास उड़ जाना। ३. हिम्मत नहीं रहना। ४. पैसा बीत जाना। निर्धन होना।

हाथ पग मारणा—*(मुहा०)* १. कठिन परिश्रम करना। २. किसी के विरोध में खूब उछलना कूदना। विरोध में प्रचार करना। ३. क्रुद्ध होना।

हाथ पग समेट नै बैठ जाणो—*(मुहा०)* १. काम धंधा नहीं करना। २. आलसी होकर बैठ जाना।

हाथ पग सूजणा—*(मुहा०)* १. घबराना। २. हाथों पाँवों पर सूजन आना।

हाथ पग हलावणो—*(मुहा०)* १. कोई भी काम धंधा करना। २. निकम्मा नहीं बैठे रहना। ३. परिश्रम करना।

हाथ पग हालणा—*(मुहा०)* १. उपाय सूझना। २. परिश्रम करने की शक्ति होना। ३. आजीविका चलाने की शक्ति होना। ४. स्वस्थ रहना। ५. अपना काम अपने आप कर लेना।

हाथ पग हिलावणो—दे० हाथ पग हलावणो।

हाथ पटकणो—*(मुहा०)* गर्व करना।

हाथ पड़णो—*(महा०)* १. किसी वस्तु का मिलना। २. जो हाथ में आये।

हाथ पसारणो—*(मुहा०)* १. भीख मांगना। २. असमर्थता प्रगट करना। ३. मरना। मृत्यु होना।

हाथ पसारियां जाणो—*(मुहा०)* मरना। मृत्यु होना।

हाथ पंखो—*(न०)* हाथ से चलाकर हवा ढाला जाने वाला पंखा। **बींजणो।**

हाथ पाछो ठेलणो—*(मुहा०)* १. मना करना। रोकना। २. स्वीकार नहीं करना।

हाथ पाछो पड़णो—*(मुहा०)* काम करने में मन नहीं लगना।

हाथ पाणी—*(अव्य०)* १. प्रतिज्ञा। २. सौगंध। **हाथ जळ।** शपथ।

हाथ पाणी देणो—*(मुहा०)* १. प्रतिज्ञा करवाना। २. सौगंध दिलवाना।

हाथ पाणी लेणो—*(मुहा०)* १. निश्चय करना। २. प्रतिज्ञा करना। ३. किसी बात या काम को नहीं करने के लिये हाथ में पानी लेकर सौगंध खाना। शपथ लेना।

हाथ पाणी लेराणो—दे० हाथ पाणी देणो।

हाथ पाधरा रहवणो—*(मुहा०)* १. चुपचाप बैठे रहना। २. चंचलता व करना। छेड़खानी नहीं करना।

हाथ पाधरा राखणो—दे० हाथ पाधरा रहवणो।

हाथपान—*(न०)* हथेली के ऊपरी भाग पर पहिनने का स्त्रियों का एक आभूषण। **हथफूल। हथांकळो।**

हाथ पिसाई करणी—*(मुहा०)* कठिन परिश्रम करना।

हाथ पीळा—*(न०)* कन्या के विवाह का नाम। **पीला हाथ।**

हाथ पीळा करणा—*(मुहा०)* कन्या का विवाह करना। **पीळा हाथ करणा।**

हाथ पोलो करणो—*(मुहा०)* उदारता से खर्च करना या दान देना।

हाथ प्रत—*(ना०)* ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति। हस्तप्रति।

हाथ फिरणो—*(मुहा०)* १. उपाय सूझना। २. खर्च करने को पैसा मिलना।

हाथ फिराणो—दे० हाथ फिरावणो।

हाथ फिरावणो—*(मुहा०)* १. आशीर्वाद लेना। २. झाड़ा फूंका करवाना। सिर पर हाथ फिरा कर आशीर्वाद लेना।

हाथ फेरणो—*(मुहा०)* १. सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देना। **माथै हाथ फेरणो।** २. चोरी करना। ३. चापलूसी से धन हड़प करना।

हाथ फैलाणो—*(मुहा०)* १. सहायता की याचना करना। २. भीख मांगना। ३. व्यापार उद्योगों का एक से अधिक स्थानों में विस्तार करना।

हाथ फैलावणो—दे० हाथ फैलाणो।

हाथ फैंकणो—*(मुहा०)* १. कोशिश करना। २. चौपड़ ताश आदि में पासा या दांव फेंकना।

हाथ बणाणो—*(मुहा०)* ताश के खेल में अपना हाथ बनाना।

हाथ बतावणो—दे० हाथ दिखाणो।

हाथ बळणो—*(मुहा०)* १. असफल होना। २. परिश्रम व्यर्थ होना। ३. हाथ का जलना।

हाथ बँटाणो—*(मुहा०)* किसी के काम या जिम्मेवारी में भाग लेना।

हाथ बँध जाणो—*(मुहा०)* १. करते हुए को रुकना पड़े ऐसी स्थिति उत्पन्न होना। २. लिख कर देना। ३. लिखे हुए पर हस्ताक्षर करना।

हाथ-बाथ—दे० हाथवाय।

हाथ-बारै—*(अव्य०)* अधिकार में नहीं। वश में नहीं। हाथ में नहीं।

हाथ-बारै करणो—*(मुहा०)* १. अपना अंकुश छोड़ना। २. देखरेख नहीं रखना।

हाथ-बारै होणो—*(मुहा०)* बेकाबू होना।

हाथ बाळणो—*(मुहा०)* १. खुद भोजन बनाना। २. अपना काम दूसरों से नहीं करवाना। ३. दस्तखत करके बंद जाना। ४. व्यर्थ का परिश्रम करना।

हाथ बाळो—*(न०)* व्यर्थ का परिश्रम। हाथ घिसाई। हाथ सिकाई।

हाथ बाँधणा—*(मुहा०)* १. करना बँध हो जाय, ऐसा करना। २. लिखवा कर लेना। ३. हस्ताक्षर करवा देना।

हाथ बिकणो—*(मुहा०)* १. पूरी तरह से वश में हो जाना। २. पूरी तरह से अनुयायी, भक्त या अनुरागी बनना।

हाथ-बुणाई—दे० हाथ-बुणावट।

हाथ बुणावट—*(ना०)* हाथ से की गई कपड़े की बुनाई।

हाथ बैठणो—*(मुहा०)* १. किसी काम पर हाथ जम जाना। २. अनुभव होना। अनुभव से सीखना। अनुभव से प्राप्त करना। ३. कुशलता प्राप्त होना। ४. दे० हाथ जमणो।

हाथ भरणा—*(मुहा०)* १. बुरा काम करना। २. रिश्वत लेना। ३. कपड़े को हाथ से मापना। ४. कलंकित होना।

हाथ भरणा, काळख थी (काळख थी हाथ भरणा)—*(मुहा०)* १. गर्हित काम करना। २. कलंकित होना।

हाथ भरणा काळख सूं (काळख सूं हाथ भरणा)—दे० हाथ भरणा, कालख थी।

हाथ भरी जणो—*(मुहा०)* १. मल आदि से हाथ भर जाना। २. पापकर्म में फँसा होना।

हाथ भाटा हेटै आणो—*(मुहा०)* १. किसी के दबाव में आना। २. विवश होना।

हाथ भाळणो—दे० हाव जोवणो।

हाथ भीड़ से होणो—*(मुहा०)* रुपये-पैसे की तंगी होना।

हाथ मसळणो—*(मुहा०)* १. असफलता के बाद पछताना। २. पश्चात्ताप करना।

हाथ मँजणो—दे० हाथ जमणो।

हाथ माथै हाथ धरनै बैठो रहणो—*(मुहा०)* बिल्कुल कुछ न करते हुए बैठा रहना। निरउद्यम होना।

हाथ माथो कूटणो—*(मुहा०)* १. रोना। २. बकवाद करना। ३. विरुद्ध प्रचार करना। निंदा करना।

हाथ मार—*(न०)* चोर। तस्कर।

हाथ मारणो—*(मुहा०)* १. चोरी करना। २. बेईमानी से प्राप्त करना। ३. दीवाल पर सफेदी का हाथ फेरना। ४. किवाड़ आदि पर रंग रोगन चुपड़ना।

५. पेट भर कर खाना। ६. जीत जाना। ७. चालाकी से या फुर्ती से प्राप्त करना। ८. किसी की मौजूदगी में आँख बचा कर वस्तु उड़ा लेना। ९. बचने के लिये संपूर्ण प्रयत्न करना।

हाथ मारी—*(ना०)* तस्करी। चोरी।

हाथ माँजणो—*(मुहा०)* १. पश्चात्ताप करना। २. शौच जाकर हाथों को मिट्टी-पानी से धोना या साफ करना।

हाथ माँडणो—*(मुहा०)* १. भिक्षा माँगना। २. विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर हथेली में कुंकुम लगा कर छापा मारना। ३. हाथ में महावर या मेंहदी लगाना। ४. किसी वस्तु को ग्रहण करने के लिए हाथ पसारना। ५. हाथ का चित्र बनाना। कागज, कपड़े आदि पर हाथ चित्रित करना।

हाथ मिलाणो—*(मुहा०)* १. मित्रता करना। २. प्रेम प्रगट करना। ३. रिश्वत देना। ४. किसी से मिलते समय परस्पर हाथ में हाथ देकर नमस्कार (की आधुनिक विधि का संपादन) करना।

हाथ मिलावणो—दे० हाथ मिलाणो।

हाथ मुकावणा—*(ना०)* पाणिग्रहण। हथलेवो।

हाथ मूंडो धोवणो—*(मुहा०)* स्वस्थ होना।

हाथ मेळावो—*(ना०)* हस्तमिलाप। हाथ मुकावणा।

हाथ मेहनत—*(ना०)* १. हाथ की मेहनत। २. निज का परिश्रम।

हाथ में—*(अव्य०)* अधिकार में। ताबे में।

हाथ में आणो—*(मुहा०)* १ (बच्चे की) मृत्यु होना। २. प्राप्त होना।

हाथ में आयोड़ो हीरो गमायो—*(पद)* अवसर चूक जाना।

हाथ में करणो—*(मुहा०)* १. अधिकार या कब्जे में करना। २. वश में करना।

हाथ में खाज आणी—*(मुहा०)* पैसा मिलने की कल्पना या संभावना होना।

हाथ में खाज हालणी—*(मुहा०)* १. धनप्राप्ति (के योग) की संभावना होना। २. अपने हाथ से सब कुछ खो देना।

हाथ में गंगाजळ देणो—*(मुहा०)* १. सौगंध खिलाना। २. प्रतिज्ञा करवाना।

हाथ में गंगा जळ लेणो—*(मुहा०)* १. सौगंध खाना। २. प्रतिज्ञा करना।

हाथ में चूड़ी पहरणी—*(मुहा०)* १. नामर्द होना। २ कायर होना। बेहिम्मत होना।

हाथ में जळ लेणो *(मुहा०)* १. संकल्प करना। २. प्रतिज्ञा करना।

हाथ में जळ लेराणो *(मुहा०)* १. प्रतिज्ञा करवाना। २. संकल्प कराना।

हाथ में जस—*(मुहा०)* १. काम में सफलता। २. ऐसा भाग्य या भोग की प्राप्ति जो हरेक काम में हमेशा सफलता देता है।

हाथ में जस होणो—*(मुहा०)* १. काम में सफलता मिलना। २. हरेक काम में हमेशा सफलता मिलना।

हाथ में जस होवणो—दे० हाथ में जस होणो।

हाथ में ठीकरो लेणो—*(मुहा०)* भीख माँगना।

हाथ में तिल ऊगणा—*(मुहा०)* चमत्कार होना।

हाथ में नीं होणो—*(मुहा०)* १. अधिकार में नहीं होना। २. वश के बाहर की बात होना।

हाथ में पड़णो—*(मुहा०)* १. वश में होना २. कब्जे में आना।

हाथ में पोतड़ी लेनै नाठणो—*(मुहा०)* घबराकर या डर कर भाग जाना।

हाथ में रहणो—*(मुहा०)* १. वश में रहना। २. कब्जे में रहना।

हाथ में वांइटा आवणा—*(मुहा०)* १. देते समय दुख होना। २. दिया नहीं जाना। ३. हाथ में वातरोग से दर्द होना।

हाथ में हाथ देणो—*(मुहा०)* १. पाणि-ग्रहण करना। २. कन्यादान करना। ३. प्रतिज्ञा करना। वचन देना।

हाथ में हीरो आणो—*(मुहा०)* १ बड़ा लाभ होना। २. श्रेष्ठ या मनोवांछित वस्तु का प्राप्त होना।

हाथ में हूनर होणो—*(मुहा०)* किसी कला या उद्योग का ज्ञान होना।

हाथ में है—*(पद)* अधिकार में है।

हाथ में होणो—*(मुहा०)* १. अधिकार में होना। अधिकार की बात होना। २. कब्जे में होना।

हाथ मोकळो करणो—*(मुहा०)* १. दान देना। २. पिटाई करना। ३. उदारता दिखाना।

हाथ रखाणो—*(मुहा०)* दे० हाथ रखावणो।

हाथ रखावणो—*(मुहा०)* १. सहायता देना। २. सहारा देना।

हाथ रगड़णो—*(मुहा०)* पछताना।

हाथ रंगणो—*(मुहा०)* १. कलंक लगे जैसा काम करना। गर्हित काम करना। खून से हाथ रंगना। २. किसी के सुपुर्द किये हुये काम में अपना मतलब बनाना।

हाथ रा किया हीये वळगै—*(मुहा०)* किये हुये कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

हाथ रा कोई बे बोर ही नीं ले—*(मुहा०)* १. गंदा। २. बदसूरत। ३. गरीब। दीन। ४. घृणा करते हैं।

हाथ राखणो—*(मुहा०)* १. सहारा देना। २. मदद करना।

हाथ री—*(अव्य०)* अपने वश की। अपने अधिकार की।

हाथ री आंगळियां ही सीरीसी कोनी—*(मुहा०)* सबका एक समान न होना। सब के गुण, स्वभाव, रंग इत्यादि एक समान नहीं होते।

हाथ री खाज भांगणी—*(मुहा०)* १. पीटने की इच्छा पूरी करना। २. बिना कारण मारना।

हाथ री बात—*(मुहा०)* १. अधिकार की बात। २. शक्ति की बात।

हाथ री सफाई देखावणो—*(मुहा०)* १. चमत्कार दिखाना। २. कारीगरी दिखाना।

हाथ रुकणो—*(मुहा०)* १. खर्चे से तंग आजाना। २. खर्च करने को पैसा नहीं मिल सकना। ३. अड़चन पैदा होना। रुकावट होना।

हाथ रै नीचे—*(अव्य०)* १. मातहत। २. अधिकार में। मातहती में।

हाथ रै नीचे आवणो—(मुहा०) १. किसी के काम में आना। २. दूसरे के लिए हानि या कष्ट उठाना। ३. अधीन बनना।

हाथ रो—(वि०) १. हाथ का बनाया हुआ। खुद का बनाया हुआ।

हाथ रो उत्तर देणो—(मुहा०) १. भीख माँगने वाले को मना न कर कुछ देना। २. भिक्षा देना। ३. दान देना।

हाथरो कस काढणो—(मुहा०) खूब मार मारना।

हाथ रो काचो—(पद०) चोर। तस्कर।

हाथ रो कियोड़ो—(मुहा०) खुद का किया हुआ।

हाथ रो कुरब—(पद०) सम्मान के पन्द्रह प्रकारों में से एक प्रकार जो राजा द्वारा किसी सामंत, जागीरदार आदि को राजा की सेवा में जाने पर दिया जाया करता था। हाथ रा कुरब के दो भेद होते थे। किसी से एक हाथ मिलाने और किसी से दोनों हाथ मिलाकर सम्मान देने की परंपरा निश्चित कर दी जाती थी। एक हाथ मिलाने का सम्मान इकेवड़ी ताजीम और दोनों हाथ मिलाने सम्मान का दोवड़ी ताजीम कहा जाता था।

हाथ रो खरो—(पद०) १. ईमानदार। प्रामाणिक।

हाथ रो छुट्टो—(मुहा०) १. हाथ में आवे उतना ही खर्च कर देने वाला। उड़ाऊ। २. मारने की आदत वाला। ३. उदार।

हाथ रो ठंडो—(मुहा०) काम करने में धीमा या आलसी।

हाथ रो ठाडो—दे० हाथ रो ठंडो।

हाथ रो ढीलो—(मुहा०) अधिक खर्च करने वाला।

हाथ रो धीमो—(मुहा०) दे० हाथ रो ठंडो।

हाथ रो पोलो (मुहा०) १. उदार। २. खर्चीला।

हाथ रो फोरो होणो—(मुहा०) १. कंजूस होना। २. लेकर वापस नहीं देना।

हाथ रो माठो—(मुहा०) १. आलसी। २. कंजूस। कृपण।

हाथ रो मैल—(मुहा०) १. जिसको देने में हिचक न हो। २. तुच्छ वस्तु। ३. परिश्रम करके कमाया हुआ पैसा। ४. पैसा कमाने का साहस।

हाथ रो मैलो—(मुहा०) १. अप्रामाणिक। २. कृपण। कंजूस।

हाथ रो मोकळो—(मुहा०) उदार।

हाथ रो साचो—(मुहा०) १. ईमानदार। २. निपुण। कुशल।

हाथ रो साचो होणो—(मुहा०) १. प्रामाणिक होना। २. अपने अधिकार में आई हुई या कहीं से मिली हुई वस्तु को सम्हाल कर मालिक को वापस करना। ३. चोरी नहीं करना।

हाथळ—(ना०) १. हाथ के पंजे के समान एक शस्त्र। २. हथेली। हत्थल। ३. सिंह आदि हिंसक पशुओं के अगले पाँव का पँजा।

हाथ लगाणो—(मुहा०) १. हाथ से स्पर्श करना। छूना। २. सहारा देना। ३. ऋतुमती का शुद्ध होना।

हाथ लगावणो कोनी—(मुहा०) रजस्वला स्त्री का घर के कामकाज को अशौच के कारण नहीं किया जा सकना।

हाथळचेरी—(ना०) दासी।

हाथ लंबावणो—*(मुहा०)* १. भीख माँगना। २. मदद माँगना। ३. मदद करना।

हाथ लागणो—*(मुहा०)* १. हाथ से स्पर्श होना। २. मिलना। प्राप्त होना। ३. जोड़ लगाते समय दहाई की संख्या जो आगे जोड़ी जाती है।

हाथ लागो—*(नं०)* जोड़ लगाते समय दहाई की संख्या जो आगे जोड़ी जाती है।

हाथ लांबो करणो—दे० हाथ लंबावणो।

हाथळियो हळ—दे० हाथळियो हळियो।

हाथळियो-हळियो—*(नं०)* वह छोटा हल जिसको मनुष्य खींचकर खेत खड़ता है।

हाथळो—*(नं०)* १. हाथ का कवच। २. चक्की का हत्था। हाथो।

हाथ वटाणो—*(मुहा०)* १. लिख कर देने से बँध जाना।

हाथ-वणाट—दे० हाथ बुणाई।

हाथ-वणावट—दे० हाथ-वणाट।

हाथ वाळणो—*(मुहा०)* १. काम करना। २. पूरी तरह और ढंग से परोसना। परोसने में कोताई न करना। ३. काम का अभ्यस्त होना।

हाथवसु—*(वि०)* १. हाथ की रखी हुई। खुद की रखी हुई। २. निकट। पास। ३. हाथ डालते ही मिल जाने वाली। ४. अधिकार की। हाथवेंत।

हाथ वसु कोनी—*(मुहा०)* १. सहज ही में किसी वस्तु का न मिल सकना। २. अधिकार में नहीं होना।

हाथ वहणो—*(मुहा०)* १. थप्पड़, लाठी आदि मारने को हाथ उठाना। २. काम में हाथों को फुरती से चलाना। *(नं०)* हाथ से चलाई जाने वाली करवत।

हाथवाई करणो—*(मुहा०)* १. मारामारी करना। २. अभ्यास करना।

हाथ वाढणो—*(मुहा०)* १. लिख कर लेना। लिख करके बंधन में डालना। फँसा देना।

हाथ वाढनै देणा—*(मुहा०)* हाथ से लिख कर देना तथा बँध जाना।

हाथ वाढनै लेणा—*(मुहा०)* १. किसी से लिखवा कर लेना। २. लिखावट द्वारा बाँध लेना। ३. लिखावट पर हस्ताक्षर कराना।

हाथवाय—दे० हथवाह।

हाथ वाळणो—*(मुहा०)* १. उदार होना। २. हाथ से देना। देने के लिए हाथ झुकाना। ३. ठीक तरह से परोसना। परोसने में न्यूनता न दिखाना।

हाथवाही—*(ना०)* १. मारामारी। हाथापाई। २. हथोटी।

हाथवेंत—*(अव्य०)* १. अधिकार में। वश में। २. पास। निकट। हाथवसु।

हाथ समेटणो—*(मुहा०)* १. कंजूसी करना। २. खर्च कम करना। ३. काम नहीं करना। ४. काम करना बंद कर देना।

हाथ समेट नै बैठणो—*(मुहा०)* १. काम नहीं करना। २. काम करना बंद कर देना।

हाथ सरकणो—*(मुहा०)* रुपये-पैसे की सुविधा होना।

हाथ संकड़ाई में आणो—*(मुहा०)* पैसे की तंगी होना।

हाथ संकड़ीजणो—*(मुहा०)* १. आमदनी

नहीं होना। २. पास में पैसा नहीं होना।

हाथ साफ करणो—*(मुहा०)* चालाकी से उड़ा लेना या हथिया लेना।

हाथ साफ कर देणो—*(मुहा०)* सफाया कर देना।

हाथ सांकड़ै में होणो—*(मुहा०)* पैसे की तंगी होना।

हाथ सांकळो—दे० हथपान।

हाथ सांधणो—*(मुहा०)* हाथ की टूटी हुई हड्डी को जोड़ना।

हाथ सिकाई—*(ना०)* १. व्यर्थ का परिश्रम। २ हाथ सेकने का काम।

हाथ-सिलाई—*(ना०)* हाथ से (मशीन की नहीं) की जाने वाली सिलाई।

हाथ-सिवाई—दे० हाथ-सिलाई।

हाथ सूजणो—*(मुहा०)* १. किसी को मारने के लिए हाथों का मजबूत होना (व्यंग्य में) २. किसी बीमारी के कारण हाथों का सूजना।

हाथ सूं—*(अव्य०)* द्वारा। मारफत। हाथ से।

हाथ सूं काम निकाळणो—*(मुहा०)* १. निरुद्यम होना। पास में काम नहीं होना। २. बरखास्त होना।

हाथ सूं जाणो—दे० हाथ सूं निकळ जाणो।

हाथ सूं निकळ जाणो—*(मुहा०)* किसी वस्तु, बात, काम या व्यक्ति का नियंत्रण के बाहर चले जाना।

हाथ सूं निकळणो—दे० हाथ सूं जाणो।

हाथ सूं पालणो—*(मुहा०)* १. मना करना। २. मना करने का इशारा करना।

हाथ सूं राख उड़ावणो—*(मुहा०)* अपनी प्रतिष्ठा स्वयं खोना।

हाथ सूं राख नांखणो—दे० हाथ सूं राख उड़ावणो।

हाथ सूं वरजणो—दे० हाथ सूं पालणो।

हाथ सूं हाथ नहीं वढै—*(मुहा०)* अपने अपराध का फैसला अपने आप से नहीं होता।

हाथ सूं हाथ नहीं सूझणो—*(मुहा०)* बहुत अधिक अँधेरा होना।

हाथ सोरो चालणो—*(मुहा०)* खर्च मुताबिक आमदनी होना।

हाथ सोरो फिरणो—दे० हाथ सोरो चालणो।

हाथ सोरो हालणो—दे० हाथ सोरो चालणो।

हाथ हजारां—*(ना०)* १. हजार हाथों वाला। परमेश्वर। २. सहस्रबाहु।

हाथ-हळ—दे० हाथळियो-हळियो या हाथ-हळियो।

हाथ हळको होणो—*(मुहा०)* १. हाथ से काम करते समय कोई बिगाड़ या चोट न लगे, ऐसी सहजता से काम करना। २. विधवा होना।

हाथ हलावता आवणो—*(मुहा०)* १. खाली हाथ वापस आना। २. काम सिद्ध किये बिना वापस लौट आना। ३. खाली हाथ आना।

हाथ-हळियो—*(ना०)* बैलों के स्थान पर स्त्री या पुरुष द्वारा चलाया जाने वाला छोटा हल। हाथळियो-हळियो। हाथ-ळियो।

हाथ-हाथ भर—*(अव्य०)* १. नाप में एक-एक हाथ। २. एक-एक हाथ के नाप से। ३. एक-एक हाथ के (लंबे टुकड़े)।

हाथ हालणो—*(मुहा०)* पीटना । मारना ।
हाथहेटो—*दे०* हाथ नीचे ।
हाथ हेटैं पड़णो—*(मुहा०)* १. कोई उपाय न होना । २. निराशा मिलनी । ३. हिम्मत हारना । हिम्मतहार होना ।
हाथ हेठैं—*दे०* हाथ हेटैं ।
हाथ होणो—*(मुहा०)* १. अधिकार में होना । २. षड़यंत्र में शामिल होना ।
हाथा-जोड़ी—*(ना०)* १. खुशामद । २. विनय । ३. मनाने का प्रयत्न ।
हाथा-पाई—*(ना०)* १. हाथों से ठोका-पीटी करना । हाथों से ठोका-पीटी की लड़ाई । २. परस्पर मारपीट होना । ३. भिड़न्त ।
हाथाळ—*(वि०)* १. वीर । बहादुर । हाथांळो । २. दृढ़ हाथों वाला । *(न०)* सिंह ।
हाथाळी—*(ना०)* १. हथेली । २. वीर स्त्री । बाहुड़ी । ३. सिंहिनी ।
हाथाळो—*(वि०)* १. वीर । बहादुर । हाथाळ । २. दृढ़ हाथों वाला । *(न०)* सिंहिनी ।
हाथावाई—*(ना०)* मारा-मारी । मार-पीट । हाथा-पाई ।
हाथाँकळो—*दे०* हाथपान ।
हाथाँ-पगाँ—*दे०* हाथे-पगे ।
हाथाँ-पगाँ पड़णो—*दे०* हाथे-पगे पड़णो ।
हाथाँ-पगाँ लागणो—*दे०* हाथे-पगे लागणो ।
हाथाँ-पगाँ सैंठो—*(वि०)* जिसके हाथ-पाँव मजबूत हैं । अत्यन्त दृढ़ । जोरावर ।
हाथाँ-पगाँ होणो—*दे०* हाथे-पगे होणो ।
हाथाँ बळणो—*दे०* हाथे बळणो ।
हाथाँ भरणो—*(मुहा०)* किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई को हाथ से (कोहनी से हथेली के बीच की अँगुली तक) नाप करना । हाथ से नाप कर परिमाण निकालना ।
हाथाँ मरणो—*दे०* हाथे मरणो ।
हाथाँ में अधर राखणो—*(मुहा०)* खूब लाड़ से रखना ।
हाथ में आवणो—*(मुहा०)* बच्चे का (बीमारी से) मरणासन्न होना ।
हाथाँ री मेंहदी उतरणी—*(मुहा०)* काम करना । (काम नहीं करने की स्थिति में व्यंग्य में कहना) ।
हाथी—*(न०)* १. हस्ती । गज । २. शतरंज की एक गोट । ३. महतर । भंगी (जोधपुर में) ।
हाथीखानो—*(न०)* गजशाला । फीलखाना । फीलखाणो ।
हाथी दाँत—*(न०ब०व०)* हाथी के मुँह के दोनों ओर निकले हुये दो लंबे दाँत । २. हाथी का (बाहर निकला रहने वाला) दाँत ।
हाथी-दाँत-रो-चूड़ो—*(न०)* हाथी-दाँत को चीर कर बनाया हुआ स्त्रियों के हाथों में पहनने की चूड़ियों का सैट ।
हाथीपगो—*(न०)* १. घुटने के नीचे पाँव के मोटा हो जाने की बीमारी । फीलपाँव । हाथीपाँव । २. एक प्रकार का बढ़िया कत्था । *(वि०)* वह जिसको फीलपाँव की बीमारी हो ।
हाथीभाटो—*(न०)* अजमेर का एक प्रसिद्ध स्थान, जिसके संबंध में कहा जाता है कि मारवाड़ के निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री हरिपुरुषजी ने एक शराब पिये हुये हाथी को शाप देकर पत्थर बना दिया था ।

हाथीवान—*(न०)* पीलवान ।

हाथे—*(अव्य०)* १. हाथ से । २. हाथ में । २. अपने आप । ४. खुद ने । ५. हाथ पर ।

हाथे आणो—दे० हाथे आवणो ।

हाथे आवणो—*(मुहा०)* १. खोई हुई वस्तु का मिल जाना । २. छिपे हुये अथवा छिपाये हुये का मिल जाना । ३. हाथ में ले सकना । ४. मिलना । प्राप्त होना । ४. पकड़ा जाना ।

हाथे करणो—*(मुहा०)* किसी से नहीं करवा कर अपने आप करना । स्वयं करना ।

हाथे करनै—*(मुहा०)* स्वेच्छा से । इरादा-पूर्वक ।

हाथे करम फोड़णो—*(मुहा०)* अपने आप आपत्ति को बुलाना ।

हाथे चढणो—*(मुहा०)* १. काम हाथ लगना । २. काम करना आ जाना । ३. काम में मन लगना । ४. बहुत ढूँढने के बाद मिलना । ५. भेंट हो जाना । ६. पकड़ में आना ।

हाथे डूबणो—*(मुहा०)* अपने आप ऐसा काम करना, जिससे हानि उठानी पड़े ।

हाथे दुख में पड़णो—*(मुहा०)* अपने आप ऐसा काम करना, जिससे दुख उठाना पड़े ।

हाथे-पगे—*(अव्य०)* १. हाथों और पाँवों से (स्वस्थ) । २. सब प्रकार से (दृढ़)।

हाथे-पगे पड़णो—*(मुहा०)* खुशामद करना ।

हाथे-पगे लागणो—दे० हाथेपगे पड़णो ।

हाथे-पगे होणो—*(मुहा०)* १. चलने-फिरने लायक होना । २. स्थिति सुधरना । ३. स्थिति बिगड़ना । ४. असहाय होना ।

हाथे बळणो—*(मुहा०)* १. परिश्रम का फल नहीं मिलना । २. व्यर्थ का परिश्रम करना । ३. अपने हाथों से जलना ।

हाथे भरणो *(मुहा०)* किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई को हाथ से (कोहनी से हथेली की बीच की अंगुली तक) नाप कर परिमाण निकालना ।

हाथे भरणो—दे० हाथे डूबणो ।

हाथे लागणो—*(मुहा०)* १. मिलना प्राप्त होना । २. हाथ लागणो ।

हाथो—*(न०)* १. बलिदान या सती होने के समय जुझार या सती के द्वारा दीवार पर कुंकुम से हाथ का लगाया हुआ छापा । २. चक्की, मशीन आदि को चलाने के लिए पकड़ने का डंडा । हत्था । जैसे—हाथोड़ा रो हाथो । ३. षड़यन्त्र का कारण । ४. शस्त्र, औजार आदि का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है । मूठ । हत्था । ५. पक्ष । ६. अहाता । घेरा । बाड़ो ।

हाथोटी—*(ना०)* १. हाथ से बनाई जाने वाली वस्तु । २. हाथ से बनाई हुई वस्तु की शिल्पकला । ३. हाथ की कारीगरी । ४. किसी वस्तु को हाथ से बनाने का अपना ढंग ।

हाथोड़ी—*(न०)* छोटा हथोड़ा । हथोड़ी।

हाथोड़ो—दे० हथोड़ो ।

हाथो बणणो—*(मुहा०)* षड़यंत्र का कारण बनना ।

हाथोहाथ—*(अव्य०)* १. सब मिल कर । २. साथ का साथ । एक साथ में । ३. अपने ही हाथ से दूसरे के हाथ में (किसी वस्तु को देना) । ४. खुद को ।

५. जिसको देने का हो उसी के हाथ में या उसी को। खुद ब खुद। ६. एक दूसरे की मदद से। परस्पर की सहायता से। ७. प्रत्यक्ष। रूबरू। ८. तुरंत। तत्काल।

हाथो हाथ करणो—*(मुहा०)* १. सबके साथ खुद भी काम में जुट जाना। २. सबके साथ काम में लग जाना।

हाथो हाथ दिखावणो—*(मुहा०)* तत्काल बदला लेना।

हाथो हाथ देणो—*(मुहा०)* अपने हाथ से सही व्यक्ति को वस्तु सौंपना।

हाथो हाथ लावणो—*(मुहा०)* १. खुद ले आना। २. किसी को दी हुई वस्तु स्वयं वापस लाना।

हाथोहाथाँ—दे० हाथोहाथ।

हान—*(ना०)* हानि। नुकसान। घाटो। दे० हानो।

हानरणो—*(क्रि०)* स्वीकार करना। हांकरणो।

हा-ना—*(अव्य०)* १. स्वीकृति या अस्वीकृति। २. आनाकानी।

हानी—*(ना०)* नुकसान। हानि।

हानै—*(अव्य०)* १. सर्वथा निकट। पास में रखी हुई (कोई वस्तु)। २. उपलब्ध। ३. जरूरत पड़ने पर ढूँढना नहीं पड़े ऐसी जगह या स्थिति में।

हानो—*(न०)* ऊँट के पलान की अगली बैठक का उठा हुआ भाग जिसमें पानी का बादला आदि टँगा रहता है।

हापुस—*(न०)* १. आम की एक जाति। २. बढ़िया जाति का आम्र फल।

हापू—*(ना०)* १. बच्चों को डराने का एक काल्पनिक जानवर। २. अक-डोडिये का हवा में उड़ता रेशा।

हाफिज—*(न०)* रक्षक। *(वि०)* जिसको समस्त कुरान कंठस्थ हो।

हाफी—*(अव्य०)* 'आप ही' का अपभ्रंश रूप। अपने आप। स्वतः।

हाबो—*(न०)* १. चिल्लाहट। २. शोर। हाहू। हाहो।

हाम—*(ना०)* १. हिम्मत। २. इच्छा। ३ साहस। ४. बाहुपाश।

हामकामलोचणी—*(ना०)* साहसी व कामपूर्ण नेत्रों वाली।

हामठाम—*(न०)* १. वैभव। ऐश्वर्य। २. भू-सम्पत्ति।

हाम ठाम नै दाम—*(न०)* १. वैभव। २. भू-सम्पत्ति। *(वि०)* स्वास्थ्य और हिम्मत वाला।

हाम भीड़णो—*(मुहा०)* १. साहस करना। २. कठिन से कठिन काम को कर गुजरना। ३. कठिन से कठिन काम करने के लिए तत्पर रहना। ४. बहुत भारी साहस का काम करना।

हामळ—*(ना०)* १. स्वीकृति। २. 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। ३. प्रेम। ४. मिलनसारी।

हामळणो—*(क्रि०)* १. मिलना। २. मिलजुल कर रहना या काम करना। ३. खुश होना। ४. खुश करना। ५. मंजूर करना।

हामळ भरणो—*(मुहा०)* स्वीकार करना। हाँ कहना।

हामळी—*(वि०)* १. घर वालों से प्रेमपूर्वक बर्ताव रखने वाली। २. मधुरभाषिणी।

हामळो—*(वि०)* १. मेल-मिलाप रखने वाला। मिलनशील। २. प्रेम। ३. खुशमिजाज। ४. मधुरभाषी।

हामी—*(ना०)* १. स्वीकृति। २. सहायता। मदद। *(वि०)* १. साहसी। हिम्मत वाला। हीमती। २. सहायता करने वाला। मददगार। ३. हाम भरने वाला।

हामी भरणो—*(मुहा०)* स्वीकार करना।

हामू—*(वि०)* १. हिम्मत वाला। २. युद्धार्थी। ३. इच्छा रखने वाला। *(ना०)* महाराणा हमीर का काव्य नाम।

हाय—*(ना०)* १. दुख, पीड़ा, शोक आदि का सूचक शब्द। २. दुराशीष।

हाय जंपो—*(ना०)* १. हाय हाय। २. बीमारी में हाय-हाय उद्‌गार। ३. पश्चात्ताप। ४. उतावली। दौड़ादौड़। ५. लोभवृत्ति।

हायण—*(ना०)* वर्ष। साल। बरस।

हायतोबा—*(अव्य०)* १. व्यर्थ का शोरगुल। २. व्यग्रता।

हाय तोबा करणो—*(मुहा०)* १. व्यर्थ का शोरगुल मचाना। २. दुःख या दर्द से व्यग्र होना।

हाय-थू—*(ना०)* घृणासूचक शब्द।

हायन—दे० हायण।

हाय बो—*(ना०)* १. शोर। कूको। २. लोभवृत्ति। ३. दौड़ा-दौड़। ४. अशांति।

हाय लागणी—*(मुहा०)* शाप लगना। दुराशीष लगना।

हाय हाय—*(अव्य०)* १. शोक, दुख आदि प्रकट करने का शब्द। २. अशांति।

हाय हाय करणो—*(मुहा०)* कुछ प्राप्त करने की तीव्र लालसा के कारण भाग-दौड़ करना या व्यग्र होना। २. दुखावेश में तड़फना।

हायो—दे० हाथलो।

हार—*(ना०)* १. पंक्ति। श्रेणी। कतार। ओळ। २. पराजय। ३. थकावट। शिथिलता। ४. गले में पहनने की फूलों की माला। ५. गले का एक आभूषण। ६. हानि। क्षति। ७. कर्तासूचक एक प्रत्यय। यथा—तारण-हार।

हार खाणी-खाणो—*(मुहा०)* १. हारना। हार जाना। २. हार स्वीकार करना। ३. हैरान होना।

हार जाणो—*(मुहा०)* हारना। पराजित होना।

हार-जीत—*(ना०)* जय-पराजय।

हारड़ो—दे० हारलो।

हारण—*(वि०)* १. जो थकावट के कारण धीमा पड़ गया हो। धीमो। २. शिथिल। ढीलो। ३. कमजोर दिल का। ४. हिम्मतपस्त। ५. बीमारी की पीड़ सहन करने में असमर्थ। ६. अधीर। ७. कमजोर मन का। ८. अशक्त।

हारणारो—दे० हारणियो।

हारणियो—*(वि०)* १. हारने वाला। पराजित। २. थकने वाला। ३. अशक्त। ४. असफल। ५. बाजी नहीं जीतने वाला।

हारणो—*(क्रि०)* १. हारना। पराजित होना। २. थक जाना। ३. खोना। गँवाना। ४. प्रयत्न में असफल होना।

५. बिताना। खतम करना। ६. भय खाना। हिम्मत छोड़ देना। ७. बाजी गँवाना। ८. अपनी चीज को मजबूरन गँवा देना।

हारद—*(न०)* स्नेह

हारबंद—*(न०)* पंक्तिबद्ध।

हारमोनियम—*(न०)* संदूक के आकार का एक वाद्ययंत्र।

हार-मोर—*(क्रि०वि०)* गायब।

हार-मोर होणो—गायब होना।

हारल—*(वि०)* १. हारा हुआ। पराजित। २. अशक्त। कमजोर।

हार-लीला—*(ना०)* श्री राधा के हार चुराये जाने का एक सुन्दर आख्यान।

हारवणो—*(क्रि०)* १. हारना। पराजित होना। २. हराना। पराजित होना।

हारहूर—*(न०)* शराब। मद्य। दारू।

हारहूरा—*(ना०)* द्राक्षा। दाख।

हारियोड़ो—*(भू०कृ०)* हारा हुआ। दे० हारल।

हारिल—*(न०)* एक पक्षी जिसके पैरों में सदैव तृण या छोटी लकड़ी होती है।

हारी—*(वि०)* हारने वाला या वाली। *(प्रत्य०)* वाला या वाली अर्थ का सूचक प्रत्यय। दे० आहरी।

हारीत—*(न०)* १. कबूतर। २. चोर। डाकू। ३. एक ऋषि।

हा रे—*(अव्य०)* तुच्छता, छोटापन या समानता सूचक एक संबोधन। अरे। हरे।

हारो—*(वि०)* हारने वाला। *(प्रत्य०)* 'वाला' अर्थ का सूचक प्रत्यय।

हारोड़ी—*(ना०)* पंक्ति। श्रोळ। (ऊनता सूचक)।

हारोहार—*(अव्य०)* १. पंक्तिबद्ध। कतार-बंद। हारबंद। २. अनेक पंक्तियों में। कतारों की कतारें। ३. अनेक समूहों में। *(वि०)* १. अनेक समूह। २. अनेक पंक्तियाँ।

हार्द—*(न०)* १. हृदय। २. रहस्य। मर्म। ३. भावार्थ।

हार्दिक—*(वि०)* १. हृदय से निकला हुआ। २. हृदय संबंधी। ३. निष्कपट।

हाल—*(न०)* १. दशा। स्थिति। २. बुरी या शोचनीय दशा। ३. समाचार। वृत्तान्त। ४. विवरण। ५. ढंग। ६. भक्ति का आवेश। *(क्रि०वि०)* १. अभी। अजै। २. अब तक। अबार-ताँई।

हॉल—*(न०)* सभा आदि के लिये बहुत बड़ा कमरा।

हाल करणा—*(मुहा०)* १. दुख पहुँचाना। २. दुर्दशा करना।

हालधड़ी—*(अव्य०)* १. अभी तक। इस वक्त तक। २. अभी। अजै ताँई। हणै ताँई।

हालचाल—*(न०)* १. चालचलन। २. हकीकत। वृत्तान्त। ३. समाचार। खबर। ४. दशा। ५. रीति-रिवाज।

हालणो—*(क्रि०)* १. चलना। २. रवाना होना। ३. हिलना। ४. मरना। ५. बने रहना। टिकना।

हालणो-चालणो—*(क्रि०)* चलना-फिरना। हालणो-फिरणो।

हालणो-फिरणो—दे० हालणो-चालणो।

हालत—*(ना०)* १. दशा। अवस्था। २. परिस्थिति। ३. वृत्तान्त।

हालतक—दे० हालताँई।

हालताणी—दे० हालतांई ।

हाल-ताल—दे० हालचाल ।

हालतांई—*(क्रि०वि०)* अभी तक । हाल-ताणी । अजै तांई । हणै तोड़ी ।

हालतो—*(भू०कृ०)* १. चलता हुआ । २. हिलता हुआ ।

हाल-तो—*(अव्य०)* १. अभी तक तो । २. अभी तो । ३. अभी ही ।

हालतो-चालतो—दे० हालतो-फिरतो ।

हालतोड़ी—*(ना०)* चलती-फिरती । दे० हालतांई ।

हालतोड़ो—*(भू०कृ०)* १. चलता हुआ । *(न०)* चलता-फिरता ।

हालतो-फिरतो—*(भू०कृ०)* चलता-फिरता । चलता-फिरता हुआ ।

हाळदी—*(न०)* जिसकी जीविका हल पर है । कृषक । खेड़त । काश्तकार ।

हाळदी-बाळदी—*(न०)* १. जिसकी आजीविका हल और बैलों पर निर्भर है वह कृषक । २. नौकर । *(वि०)* बेचार ।

हालरड़ो—*(न०)* १. गले का आभूषण । हार । हालरो । २. बच्चे को पलने में झुलाते समय गाया जाने वाला लोकगीत । लोरी । ४. पलना । पालणो ।

हालरियो—*(न०)* १. पलने में झूलने वाला शिशु । २. बच्चे को पालने में झुलाते समय गाया जाने वाला गीत । लोरी । ३. स्त्रियों के गले का एक गहना । हालरड़ो । ४. पलना । पालना । थोड़ियो । पालणो । ५. 'हालरियो' नामक लोकगीत ।

हालरो—*(न०)* १. स्त्रियों के गले का एक हार । हालरियो । २. पलने में झूलने वाला बच्चा । शिशु । ३. लोरी । ४. समूह । टोळो ।

हालसूधी—दे० हालतांई ।

हालं हकीकत—*(न०)* १. वृत्तान्त । विवरण । २. संदेश । ३. वातावरण ।

हालहवाल—*(न०)* १. समाचार । खबर । २. वृत्तान्त । विवरण । ३. प्रक्रिया । चाल-ढाल । ४. दशा । स्थिति । ५. अवदशा । ६. बरबादी ।

हाला—*(ना०)* १. शराब । मद्य । २. एक राजपूत जाति ।

हालाडोई—*(ना०)* १. अधिकार । चलन । २. रसोई का सामान जुटाने, बनाने आदि की देखरेख अथवा अधिकार । ३. सेवा-शुश्रूषा । टहल । ४. खुशामद ।

हाला-डोली—*(ना०)* फिरना । चलना । दे० हालाडोई ।

हालात—*(ना०)* १. परिस्थिति । २. समाचार । ३. 'हाल' का बहुवचन ।

हालार—*(न०)* सौराष्ट्र में जामनगर के आसपास का जनपद ।

हालारी—*(वि०)* १. हालार संबंधी । २. हालार का ।

हालारी संवत—*(न०)* सौराष्ट्र के हालार विभाग का विक्रम संवत् जो आषाढ मास से प्रारंभ होता है ।

हालाँ-झालाँ रा कुंडळिया—*(न०ब०व०)* बारहठ ईसरदास रचित एक ऐतिहासिक एवं वीररसपूर्ण काव्य-कृति ।

हाली—*(ना०)* १. चाल चलने की क्रिया । २. चाल-चलन ।

हाळी—*(न०)* १. हल चलाने वाला व्यक्ति । २. कृषक । ३. कृषक के यहाँ खेतीबाड़ी

के काम की नौकरी करने वाला व्यक्ति। (प्रत्यय) 'वाली' प्रत्यय का पर्याय।

हाली-चाली—*(ना०)* १. चाल-चलन। २. व्यवहार। बरताव।

हाळी-बाळदी—*(न०)* १. कृषक। २. कृषक के लिये तुच्छार्थक शब्द। ३. गँवार। मूर्ख। ४. अपढ़। ५. हल और बैल द्वारा खेती करने का धंधा हलका समझा जाने का परिचायक शब्द। *(अव्य०)* तुच्छ। ना-कुछ।

हाळी लोग—*(न०)* कृषक।

हाळो—*(प्रत्य०)* १. वाला। वाळो। २. का।

हाव—*(न०)* १. नायिका की मोहक शृंगारिक चेष्टाएँ। २. पास बुलाने की क्रिया या भाव। ३. नखरा। ४. प्रेम। ५. हृदय। ६. कुम्हार का निहाव। नेवो। ७. वेष। ८. शृंगार।

हाव-भाव—*(न०)* १. पुरुषों को आकर्षित करने वाली स्त्रियों की मोहक चेष्टाएँ। २. नाज-नखरा। ३. रहन-सहन। ४. मनोदशा। ५. व्यवहार। वर्तन।

हावलो—*(न०)* 'ह' अक्षर। हकार।

हावी—*(वि०)* १. दबा कर रखने वाली। २. रोब। प्रभाव। ३. छाया हुआ।

हावी होणो—*(मुहा०)* दूसरो पर वर्चस्व जमाना।

हावै—*(क्रि०वि०)* १. तैयार। २. पास। निकट।

हावो—*दे०* हावलो।

हास—*(न०)* १. हँसी। २. मजाक। ठट्ठा। ३. हँसाई। बदनामी। ४. उपहास। ५. गले का एक आभूषण। हाँस।

हासल—*(न०)* १. जमीन का लगान। हासिल। २. जोड़ में हाथ का बचा हुआ अंक। हाथ लागो। ३. पैदावार। उपज। ४. लाभ। *(वि०)* मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। ६. कर। टैक्स।

हासल करणो—*(मुहा०)* प्राप्त करना।

हासल होणो—*(मुहा०)* मिलना।

हासली—*(वि०)* जमीन या खेत का हासल भरने वाला। *(न०)* कृषक।

हासली लोग—*(न०)* कृषक।

हास-विलास—*(न०)* राग-रंग।

हासियो—*(न०)* १. गोट। मगजी। २. किनारा। ३. लिखते समय कागज के बाँई ओर छोड़ी जाने वाली खाली जगह। उपान्त। हासिया।

हासी—*दे०* हँसी।

हासो—*(न०)* १. हँसी। दिल्लगी। हास। २. बदनामी।

हॉस्टल—*(न०)* छात्रावास। छात्रालय।

हॉस्पिटल—*(न०)* अस्पताल। दवाखाना। रुग्णालय।

हास्य—*(न०)* १. नौ रसों में के एक रस (साहित्य)। २. हँसी। ३. उपहास। ४. दिल्लगी। मजाक।

हास्यजनक—*(वि०)* हास्य उत्पन्न करने वाला।

हास्य रसाळ—*दे०* हास्य रसिक।

हास्यरसिक—*(वि०)* १. हास्य रसवाला। २. मजाकी। हास्य-रसाळ। ३. हास्य प्रेमी।

हा-हंत—*(न०)* १. प्राणान्त। मृत्यु। २. मृत्यु की दुखपूर्ण खबर। मृत्यु की सूचक। ३. मृत्यु शोक।

हा-हा—*(अव्य०)* १. हँसने का शब्द। २. जोर से हँसने की क्रिया।

हाहाकार—*(न०)* घबराहट के समय बहुत से लोगों के मुँह से निकलने वाली चिल्लाहट। कुहराम। २. शोकोद्गार।

हाहा-हीही—*(ना०)* १. ठट्ठा-मस्करी। २. हास्यविनोद। ३. शोरगुल।

हाहुजंपो—*दे०* हाय जंपो।

हा-हू—*(अव्य०)* १. शोरगुल। कोलाहल। २. हँसी-मजाक।

हा-हू करणो— *(मुहा०)* १. शोरगुल मचाना। २. हँसी-मजाक करना। ३. ऊधम करना।

हा-हो—*दे०* हा-हू।

हाँ—*(न०)* स्वीकृति। हूंकारो। *(क्रि०)* प्रथम पुरुष वर्तमान क्रिया 'हूँ' का बहुवचन रूप। हैं। **छां**। *(अव्य०)* १. समर्थन। स्वीकृति आदि का सूचक शब्द। स्वीकृति सूचक सकारात्मक अव्यय। २. हूंकारा देने का उद्गार।

हाँऊँ— (अव्य०) १. हूंकारा देने का उद्गार। २. स्वीकृति सूचक सकारात्मक अव्यय। *(न०)* हूंकारा। स्वीकृति। हूंकारो।

हाँक—*दे०* हाक।

हाँकणी—*(ना०)* गाड़ी, ऊँट आदि किसी वाहन को चलाने की रीति।

हाँकणो—*(क्रि०)* १. किसी को चलने के लिये प्रेरित करना। हाँकना। चलाना। २. ऊँट, बैलगाड़ी आदि को चलाना। ३. गप्प मारना।

हाँकरणो—*(क्रि०)* १. हाँ कहना। २. स्वीकार करना। **स्वीकारणो**।

हाँकलणो—*(क्रि०)* १. धमकाना। २. डराना। ३. हाँकना। चलाना। **हांकणो**।

हाँकलणो—*(क्रि०)* संकेत करना। **सानी करणी**।

हाँकारो—*(न०)* स्वीकृति। समर्थनादि सूचक पद। हाँ। *(अव्य०)* १. वार्ता कहने वाले के वाक्य विराम पर उसके उत्साह-वर्द्धन के लिये श्रोताओं द्वारा कहे जाने वाले 'भले राज भले', 'खूब कही सा', 'जीवो घणा' इत्यादि कहे जाने वाले स्वीकृतिसूचक पद या शब्द। २ हाँ। ३. समर्थन। ४. स्वीकार।

हाँकारो देणो—*(मुहा०)* १. स्वीकृति प्रदान करना। २. वार्ता के बीच में श्रोताओं द्वारा उत्साहवर्धक 'हाँ' शब्द।

हाँकारो भरणो—*(मुहा०)* स्वीकृत करना। मंजूर करना।

हांगो—*(न०)* १. हाथ-पाँवों की शक्ति। २. उपांग शक्ति। ३. साथ। संगत।

हांच—*(न०)* ओढनी का पल्ला। अंचल।

हांचळ—*(न०)* १. स्तन। बोबो। २. स्तन प्रदेश। ३. गाय-भैंस आदि का स्तन। थन। थण।

हांचळियो—*(वि०)* स्तन पान करने वाला (बच्चा)।

हाँजा—*(न०)* १. हिम्मत। शक्ति। २. शरीर के संधि-स्थल।

हाँजी—(अव्य०) १. आदर सूचक प्रत्युत्तर। २. आदरसूचक प्रत्युत्तर का शब्द। जी हाँ। ३. स्वीकृति या समर्थन का शब्द।

हाँजी-हाँजी—*(अव्य०)* खुशामद। चापलूसी।

हाँजी-हाँजी करणो—*(मुहा०)* चापलूसी करना। खुशामद करना।

हाँडणो—दे० हाँडो।

हाँडा-डोई—*(ना०)* १. रसोई का काम। २. अधिकार। अखत्यार। ३. अनधिकार चेष्टा।

हाँडा-डोई करणो—*(मुहा०)* १. अधिकार चलाना। २. स्त्रियों में बैठना और बातें करना। ३. स्त्रियों के साथ रसोड़े का काम करना। ४. स्त्रियों के कार्यों को करने की अधिक रुचि होना। ५. अनधिकार चेष्टा करना।

हाँडाळो—*(वि०)* बहुत खाने वाला।

हाँडी—*(ना०)* १. शाक आदि बनाने का मिट्टी या धातु का पात्र। हँडिया। २. छत में लटकाया जाने वाला काँच का वह पात्र, जिसमें दीपक जलाया जाता है।

हाँडी चाटू—*(वि०)* १. बहुत अधिक खाने वाला। पेटू। भुक्खड़। भूखियो। २. निकम्मा।

हाँडी रो हमीर—*(ना०)* १. हर समय रसोई में बैठा रह कर खाने में ही जी रखने वाला। (खाऊ)। दे० हाँडी चाटू।

हाँडो—*(ना०)* १. बड़ी हँडिया। २. बड़ा जल पात्र। ३. बड़ा पेट। *(वि०)* बहुत खाने वाला। खाऊ।

हाँती—*(ना०)* विवाहादि पर संबंधियों और पड़ोसियों को बाँटी जाने वाली मिष्ठान्न की भेंट। हाँथी।

हाँ तो—*(अव्य०)* १. यदि ऐसा है। २. ठीक है।

हाँथर—*(ना०)* मरे हुए के पीछे अमावस्या को दिया जाने वाला दान या कराया जाने वाला भोजन।

हाँथी—दे० हाँती।

हाँफ—*(ना०)* १. हाँफने की क्रिया या भाव। अभूसण। २ दम। साँस। ३. दम रोग।

हाँफ चढणो—*(मुहा०)* श्वास उठना। दम फूलना।

हाँफणो—दे० हंफारी।

हाँफणो—*(क्रि०)* परिश्रम व दौड़ने के कारण जोर-जोर से साँस लेना।

हाँफळणी—*(ना०)* १. साँस उठना। २. दम उठना। ३. घबराहट।

हाँफळणो—*(क्रि०)* १. स्वास चढ़ना। २. घबराना। ३. दम उठना।

हाँफळीजणो—दे० हाँफळणो।

हाँफळो—*(वि०)* घबराया हुआ।

हाँफळो-फाँफळो—*(वि०)* घबराया हुआ। हाँफळो-साँफळो।

हाँफळो-साँफळो—दे० हाँफळो-फाँफळो।

हाँफीजणो—दे० हाँफळणो।

हाँ भरणो—*(मुहा०)* १ स्वीकार करना। २. स्वीकृति देना।

हाँ भेळी हाँ—*(अव्य०)* खुशामद। हाँ में हाँ।

हाँ में हाँ—दे० हाँ भेळी हाँ।

हाँ में हाँ मिलावणी—*(मुहा०)* खुशामद करना।

हाँस—*(ना०)* १. स्त्रियों के गले में पहिनने का एक गहना। २. हाँसुली। हाँसळी। ३. एक प्रकार का हार।

हाँसड़ी—दे० हाँसली।

हाँसली—*(ना०)* १. एक कंठाभूषण। हाँसळी। २. गले के नीचे की और दोनों पसलियों के ऊपर की दोनों हड्डियाँ।

हाँसळी—दे० हाँसली ।

हाँ सा—*(अव्य०)* १. स्वीकृति सूचक शब्द। २. 'हा साहब' का संक्षिप्त रूप ।

हाँसी—*(ना०)* १. ठट्ठा । २. मजाक । हाँसो ।

हाँसो—दे० हाँसी ।

हाँहड़ी—दे० हाँसळी ।

हाँहळी—दे० हाँसली ।

हि—*(अव्य०)* १. एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय या स्वीकृति आदि सूचित करने या किसी बात पर जोर देने के लिए होता है । हिज । २. एक प्राचीन विभक्ति ।

हिअ—*(ना०)* १. हृदय । दिल । २. छाती । हिओ ।

हिआव—*(ना०)* साहस । हिम्मत ।

हिओ—दे० हिअ ।

हिक—*(वि०)* एक ।

हिकडंकी—*(ना०)* इकहत्था अधिकार । तानाशाही । एक छत्र शासन । सरमुखत्यारी ।

हिकडंकी बजावणो—(मुहा०) १. अधिकार या वर्चस्व जमाना । २. एक छत्र शासन करना ।

हिकड़ो—*(ना०)* एक का अंक । '१'

हिकमत—*(ना०)* १. युक्ति । चाल । २. हकीम का काम । हकीमी । ३. कला । विद्या । ४. कला-कौशल । ५. उपाय ।

हिकमतबाज—*(वि०)* १. चालबाज । २. कलाबाज । ३. कुशल ।

हिकमती—*(वि०)* १. चालाक । २. चतुर । ३. कार्यकुशल । ४. हिकमत संबंधी ।

हिकराण—*(ना०)* १. कोलाहल । शोर । *(अव्य०)* एक बार । अेक वार ।

हिकहत्थू—*(अव्य०)* अकेले ही । हिकहथ्थू । एक हत्थो ।

हिकहत्थू—दे० हिकहत्थू ।

हिकायत—*(ना०)* कहानी । वार्ता । बात ।

हिकारत—*(ना०)* १. नफरत । उपेक्षा । २. घृणा । ३. अपमान ।

हिच—*(ना०)* भिड़ंत । हुचक ।

हिचक—*(ना०)* १. घृणा । सूग । २. उपेक्षा । ३. मन को लगने वाला धक्का । मनाघात । ४. शंका । ५. डर । भय । ६. पीछे हटने की क्रिया या भाव । ७. दया । ८. नुकसान । हानि । ९. भिड़न्त । टक्कर । १०. हिचकने की क्रिया या भाव । किसी काम को करने के पूर्व मन में उठने वाली रुकावट ।

हिचकणो—*(क्रि०)* १. संकोच करना । २. पीछे हटना । ३ भिड़ना । जूझना । टकराना । ४. डरना । ५. घृणा करना । ६. दया करना ।

हिचकाणो—दे० हिचकणो ।

हिचकारी—*(ना०)* १. संकोच । २. घृणा । सूग । *दे० हिचक ।*

हिचकारो—*(वि०)* १ अधम । २. कायर । स्त्रैण । बायलो । *(ना०)* १. घृणा । सूग । २. संकोच । हिचक ।

हिचकिच—*(ना०)* किसी कार्य को करने के पूर्व आशंका, असमर्थता आदि के कारण कुछ रुकना ।

हिचकिचाट—*(ना०)* हिचकिचाहट ।

हिचकी—*(ना०)* १ ठोड़ी । चिबुक । हनु । २. हिक्का रोग । ३. हिक्का । हचकी ।

हिचको—*(ना०)* १. धक्का । टक्कर । २. भिड़न्त । ३. संकोच । ४. भय । ५. घृणा । हिचक ।

हिचणो—*(क्रि०)* १. भिड़ना। टक्कर लेना। २. युद्ध करना। ३. कोई काम करने से पहिले मन में रुकावट पैदा होना। हिचकना।

हिज—*(अव्य०)* १. जोर देने के लिए अथवा दृढ़ता या निश्चय इत्यादि को सूचित करने के लिए प्रयुक्त अव्यय। २. केवल। ३. लगभग। प्रायः। ४. अवश्य।

हिजड़ो—दे० हींजड़ो।

हिजमत—*(ना०)* हजामत।

हिजरत—*(न०)* एक स्थान को छोड़ या भाग कर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या भाव।

हिजरती—*(वि०)* हिजरत करने वाला।

हिजरी सन—*(न०)* मुसलमानी संवत्। (यह सन्, १५ जुलाई ६२२ ई० से चला है, जब महम्मद पैगम्बर मक्का छोड़कर मदीना गये थे।)

हिज हाइनेस—*(न०)* अंग्रेजों द्वारा राजाओं को दी जाने वाली उपाधि।

हिज होलीनेस—*(न०)* अंग्रेजों द्वारा धर्म गुरुओं को दी जाने वाली उपाधि।

हिज्जे—*(न०)* किसी शब्द में आये हुये अक्षरों के सौकर्य की दृष्टि से अलग-अलग टुकड़े। शब्द के अक्षरों का क्रम। वर्तनी। जोड़णी। स्पेलिंग।

हिटलर—*(न०)* संयुक्त जर्मनी का एक-छत्र शासक। द्वितीय विश्वयुद्ध का जनक।

हिटलरसाही—*(ना०)* हिटलर जैसी सर-मुखत्यारी। सामंतवाद। एक छत्र-शासन। तानाशाही। डिक्टेटरशिप।

हिड़क—*(ना०)* पागलपन।

हिड़कणी—*(वि०)* पागल। *(ना०)* कलह-कारिणी।

हिड़कणो—*(क्रि०)* कुत्ते के काटने से पागल होना। *(वि०)* झगड़ालू।

हिड़कवा—*(न०)* १. कुत्ते और सियार आदि के काटने से होने वाला एक चेपी रोग। हड़क। २. पागलपन।

हिड़कायो—दे० हिड़कियो सं० १.

हिड़कियो—*(वि०)* १. वह जिसको हिड़क का रोग हो गया हो। २. झगड़ालू। कजियाखोर।

हिड़मच—*(ना०)* एक प्रकार की लाल मिट्टी। रासी। हिड़मिच।

हिड़मिच—*(ना०)* दीवाल आदि रँगने की लाल मिट्टी। हिरमजी।

हिड़ंब—*(न०)* १. भैंसा। २. महाभारत-कालीन एक राक्षस।

हिड़ंबा—*(ना०)* हिड़ंब राक्षस की पत्नी। भीम की पत्नी। *(वि०)* काली कुरूप (स्त्री)।

हिड़ंबी—*(ना०)* भैंस।

हिड़ोकै—*(अव्य०)* इस बार। अब की बार। हमकै। अबकै।

हित—*(न०)* १. स्नेह। २. कल्याण। मंगल। ३. लाभ। *(अव्य०)* के लिये। लिये। हेतु।

हितकर—*(वि०)* उपयोगी। लाभकारी। हितकारी।

हित करणो—*(मुहा०)* १. भला करना। २. उपकार करना।

हितकारक—*(वि०)* भलाई करने वाला। उपकारी।

हितकारणी—*(वि०)* भलाई करने वाली। हितकारिणी। उपकारिणी।

हितकारी—*(वि०)* हितकारक । उपकारी । *(न०)* मित्र । दोस्त ।

हित-चाहू—*(वि०)* शुभेच्छु ।

हितचिंतक—*(वि०)* हितैषी । भला चाहने वाला । **हितवाळो** ।

हितवाद—*(न०)* १. हितकारी वाद । २. स्वार्थ । मतलब ।

हितवाळो—दे० हितचिंतक ।

हित-विरोधी—दे० हितशत्रु ।

हितारथ—*(न०)* १. प्रेम । स्नेह । *(अव्यय)* १. हित के लिये । हितार्थ । २. के लिये । लिये ।

हितार्थ—दे० हितारथ ।

हितु—*(वि०)* १. स्नेही । २. हितैषी । हितू ।

हितू—दे० हितु ।

हितेच्छु—*(वि०)* हितचिंतक । हितू ।

हितैषी—*(वि०)* हितचिंतक । हितू ।

हितोपदेश—*(न०)* १ व्यवहार और नीति की कथाओं का एक विश्व-विख्यात संस्कृत ग्रंथ । २. हितकर उपदेश ।

हिदायत—*(ना०)* १. आदेश । हुक्म । २. निर्देश । ३. सीख । **सिखामण** ।

हिदायत करणी—*(मुहा०)* १. आदेश देना । २. सूचना । ३. सीख देना ।

हिदायतनामो—*(न०)* हिदायतों का कागज या पत्र ।

हिनहिनाणो—*(क्रि०)* घोड़े का हिन-हिनाना । **हींजरणो** । **हींसणो** ।

हिफाजत—*(ना०)* १. सावधानी । होशि-यारी । २. देखभाल । सतर्कता । ३. सुरक्षा । संभाळ ।

हिब—*(क्रि०वि०)* १. इस समय । अब । अबार । २. इसके बाद ।

हिबणो—*(क्रि०)* आग में डालना । होमना । **होमणो** । दे० हिचणो ।

हिब्रू—*(ना०)* १. यहूदियों की मूल भाषा । एक प्राचीन भाषा । २. इजरायल की राष्ट्रभाषा ।

हिम—*(ना०)* १. ठंड । २ पाला । तुषार । ३. कर्पूर । ४. मोती । ५. चंद्रमा । ६. ओस । झाकळ । ओह ।

हिमइ—*(क्रि०वि०)* १. अब । इसी समय । अबार । २. अब भी ।

हिमकण—*(न०)* बर्फ का छोटा टुकड़ा ।

हिमकर—*(न०)* १. चंद्रमा । २. कपूर ।

हिमगिर—हिमालय पर्वत । **हिमाळो** ।

हिमगिरि—दे० हिमगिर ।

हिमज—*(ना०)* हर्रे ।

हिमजा—*(ना०)* पार्वती । उमा ।

हिम-प्रकाश—*(ना०)* चाँदनी । चंद्रिका ।

हिमवारज—*(न०)* सूर्य ।

हिमहित—*(न०)* चंद्रमा । हिमकर ।

हिमांस—*(न०)* चंद्रमा । हिमांशु । हिम-हित ।

हिमाकत—*(ना०)* मूर्खता । नासमझी ।

हिमाचळ—*(न०)* १. हिमालय पर्वत । २. भारत का एक राज्य ।

हिमायत—*(न०)* १. पक्षपात । तरफदारी । २. मदद । ३. किसी पक्ष का समर्थन ।

हिमायत करणी—*(मुहा०)* पक्ष लेना । तरफदारी करणी ।

हिमायती—*(वि०)* हिमायत वाला ।

हिमारू—*(क्रि०वि०)* अभी । इसी वक्त ।

हिमाळो—*(न०)* १. हिमालय । २. तीव्र ठंड । ३. जाड़ा । शीतकाल ।

हिमै—दे० हिवै ।

हिम्मत—*(ना०)* १. साहस । **हीमत** । २. हौसला । ३. कुव्वत ।

हिम्मत करणी-करणो—*(मुहा०)* साहस करना ।

हिम्मत राखणी-णो—*(मुहा०)* १. साहस रखना । २. धीरज रखना ।

हिम्मतवाळ—*(वि०)* १. हिम्मती । साहसी । २. बुलंद हौसला ।

हिम्मतहार—*(वि०)* १. कायर । २. हौसला-टूट । ३. निर्बल ।

हिम्मत हारणी-णो—*(मुहा०)* १ हौसला टूट जाना । २. धीरज खोना ।

हिय—*(न०)* १ हृदय । २. छाती । हिम्र । ३. पुत्र । हीय । बेटो ।

हिया-फूट—*(वि०)* १. अविचारी । २. हृदय शून्य । हृदयहीन । निष्ठुर ।

हिया-फूटो—*दे०* हियाफूट ।

हियाव—*(न०)* १. बालक के प्रति रखा जाने वाला प्रेम । २. प्रेम । स्नेह । ३. हृदय का भाव ।

हियो—*(न०)* १. हृदय । २. छाती । ३. हिम्मत । साहस ।

हियो फूटणो—*(मुहा०)* १. अविचारी होना । २. निष्ठुर होना ।

हिरण—*(न०)* १. हरिण । मृग । २. सोना । स्वर्ण । हिरण्य ।

हिरण उपवन—*(न०)* ब्रह्मा ।

हिरणकी—*(ना०)* हरिनी । मृगी ।

हिरणको—*(न०)* मृग । हरिण ।

हिरणाक्ष—*(न०)* हिरण्याक्ष ।

हिरणागरभ—*(न०)* १ ब्रह्मा । हिरण्यगर्भ । २. विष्णु ।

हिरणचरो—*(न०)* एक घास ।

हिरणनैणा—*(ना०)* पृथ्वी ।

हिरणरेता—*(न०)* १. हिरण्यरेता । सूर्य । २. अग्नि । ३ शिव ।

हिरणहट—*(न०)* शेखावाटी (राजस्थान) का प्रदेश या तीर्थ । (?)

हिरणाकुस—*(न०)* भक्त प्रह्लाद के पिता, एक दैत्य । हिरण्यकशिपु ।

हिरणाख—*(न०)* हिरण्याक्ष दैत्य ।

हिरणाखी—*(वि०)* हरिणाक्षी । मृगाक्षी । मिरगानैणी ।

हिरणियो—*(न०)* १. हरिण । २. छोटा हरिण ।

हिरणी—*(ना०)* मृगी । हरिनी ।

हिरणो—*(न०)* एक क्षुप ।

हिरणो-फिरणो—*(क्रि०)* चलना-फिरना ।

हिरण्य—*(न०)* १. सोना । स्वर्ण । २. ज्योति । प्रकाश ।

हिरण्यकशिपु—*दे०* हिरणाकुस ।

हिरण्याक्ष *(न०)* हिरण्यकशिपु का भाई ।

हिरण्याँ—*(ना०)* मृगशिर नक्षत्र समूह ।

हिरदो—*दे०* हृदय ।

हिरदो चीरीजणो—*(मुहा०)* अत्यन्त दुखी होना ।

हिरदो फाटणो—*(मुहा०)* हृदय फटना । अति कष्ट होना ।

हिरदो भरीजणो—*(मुहा०)* आवेग या क्षोभ से युक्त होना ।

हिरस—*(न०)* १ लोभ । २. वासना ।

हिरासत—*(ना०)* १. किसी व्यक्ति पर रखा जाने वाला पहरा । २ कैद । हवालात ।

हिरासत में राखणो—*(मुहा०)* कैद में रखना ।

हिलको—*(न०)* धक्का । टक्कर । अहळ । हिलका ।

हिलको लागणो—*(मुहा०)* धक्का लगना ।

हिलकोर—*(ना०)* लहर । हिलोर ।

हिलकोरणो—*(क्रि०)* लहरें उठना । हिलोर उत्पन्न करना या होना ।

हिलणो—*(क्रि०)* हिलना ।

हिळणो—*(क्रि०)* १. परिचित होना । २. अभ्यस्त होना । आदी होना । ३. हेल-मेल होना ।

हिळणो-जुळणो—दे० हिळणो-मिळणो ।

हिलणो-डुलणो—*(क्रि०)* हिलना-डुलना । इधर-उधर होना ।

हिळणो-मिळणो—*(क्रि०)* १. मेलजोल रखना । हेल मेल रखना । २. प्रेम-संबंध बनाये रखने के लिये आने-जाने या मिलने-जुलने का व्यवहार रखना ।

हिळ-मिळनै—*(अव्य०)* हिलमिल करके । प्रेम से ।

हिलमो—*(वि०)* हिलता रहने वाला ।

हिळवळणो—*(क्रि०)* हड़बड़ाते हुए इधर-उधर फैलना ।

हिलाणो—*(क्रि०)* हिलाना ।

हिलारिया—दे० हेलारिया ।

हिलारो—*(न०)* किसी वस्तु को कहीं से लाने के लिये किसी वाहन पर लाद कर उसकी पूर्ति होने तक लाने की क्रिया । हेलारो । गेड़ो ।

हिलावणो—*(क्रि०)* चलायमान करना । हिलाना । हिलाणो ।

हिळावणो—*(क्रि०)* १. आदत डलवाना । २. आदत डलवाने का प्रयत्न करना ।

हिळियोड़ो—*(भू० कृ०)* जिसकी आदत पड़ गई हो ।

हिळियो-मिळियो—*(भू० कृ०)* हिला-मिला ।

हिलोड़—दे० हिलोळ ।

हिलोड़ो—*(न०)* लहर । हिलोळो ।

हिलोर—*(ना०)* १. पानी की लहर । तरंग । हिलोळ । २. झूले का पेंग ।

हिलोरणो—*(क्रि०)* १. झुलाना । पेंग देना । २. लोरी गाती हुए पेंग देना ।

हिलोळ—*(ना०)* १. लहर । २. आनंद की तरंग ।

हिलोळणो—*(क्रि०)* १. आंदोलित करना । २. हिलाना । ३. विलोड़ना । ४. धक्का देना । ५. झुलाना । झुलावणो । ६. आनंदित करना । ७ जल को तरंगित करना । लहरावणो ।

हिलोळो—*(न०)* १. पानी का धक्का । २. पानी की लंबी व तेज लहर । ३. तरंग । लहर । ४ मौज । आनंद । ५. झूले की पेंग । ६. उदारता । ७. भीड़ का धक्का । ८. उमंग ।

हिलोहळ—*(न०)* समुद्र ।

हिव—दे० हुव ।

हिवइ—दे० हिमइ ।

हिवड़ो—*(न०)* हृदय । हीयो । हिरदो । दे० अवड़ो या इतरो ।

हिवा—*(सर्व०ना०)* वह (नारी जाति) ।

हिवारूं—*(अव्य०)* १. अभी । हमार । अबार । २. अभी का अभी ।

हिवै—*(अव्य०)* अब । अबार । *(सर्व०बहु०)* वे । वे लोग ।

हिवो—*(सर्व०)* वह ।

हिसाब—*(न०)* १. आय-व्यय, लेन-देन आदि का लिखा हुआ वर्णन । २. गिन कर लेखा तैयार करने का काम या विद्या । ३. गणित । ४. दर । भाव । ५. व्यवस्था । ६. मर्यादा । नियम । ७. गणित का प्रश्न । ८. दशा ।

हिसाब करणो—*(मुहा०)* १. रुपये-पैसे आदि का हिसाब तय करना। २. प्रश्न को हल करना। ३. नौकरी से अलग करना।

हिसाब-किताब—*(न०)* १. आय-व्यय का ब्यौरा। २. गणित की पुस्तक। ३. व्यवहार। ४. व्यवस्था। ५. गणित। लेखा।

हिसाब चुकावणो—*(मुहा०)* १. लेन-देन साफ करना। २. बदला लेना। ३. कर्ज अदा करना।

हिसाब तपासणो—*(मुहा०)* जमा-खर्च के हिसाब की जाँच करना। आय-व्यय की जाँच करना।

हिसाब-नवीस—*(न०)* मुनीम।

हिसाब बैठणो—*(मुहा०)* १, हिसाब का मिलना। २. ठीक व्यवस्था होना। ३. कार्य सिद्धि के लिये तरकीब भिड़ाना।

हिसाब मिळणो—*(मुहा०)* १. रोकड़ बही और पोते की रोकड का बराबर मिलना। २. जमा-उधार का बराबर होना।

हिसाबी—*(वि०)* १. हिसाब संबंधी। *(वि०)* २. हिसाब का जानकार। ३. हिसाब रखने वाला। ३. गणितज्ञ। ५. व्यवहार कुशल। *(अव्य०)* हिसाब के संबंध में।

हिस्टीरिया—*(न०)* १. मूर्च्छा लाने वाला एक वायु रोग। उन्माद रोग।

हिस्सेदार—*(न०)* भागीदार। साझेदार।

हिस्सेदारी—*(ना०)* भागीदारी। साझीदारी।

हिस्सो—*(न०)* १. भाग। हिस्सा। २. खंड। अंश।

हिंग—दे० हींग।

हिंगळाज—*(ना०)* १. एक प्रसिद्ध देवीपीठ जो बलुचिस्तान (पाकिस्तान) में है। २. एक देवी। हींगोळ।

हिंगळाट—*(न०)* १. वह पलंग जिसके पाये और चौखट प्रवाल के बने हों। हिंगलू-ढोलियो। बढ़िया-पलंग। २. पति-पत्नी के सोने का पलंग। रमण-शैया। ३. लोकगीतों की अन्यतम शैया।

हिंगळू—दे० हींगळू।

हिंगळू-ढोलियो—दे० हिंगळाट। एक लोकगीत।

हिंगळोट—दे० हिंगळू ढोलियो।

हिंगाष्टक—*(न०)* आठ वस्तुओं से बनी एक औषधि। हिंगाष्टक। एक पाचक चूर्ण।

हिंगोळपुराण—*(न०)* भक्त कवि ईसरदास कृत देवियाण का अपर नाम।

हिंजर—*(वि०)* १. निर्बल। २. दुबला-पतला।

हिंजर-पिंजर—*(वि०)* १. अत्यन्त दुर्बल। २. जिसके शरीर में रक्त, मांस, चर्बी की कमी हो। *(न०)* हाड-पिंजर। अस्थि-पिंजर।

हिंडोल—*(न०)* झूला। हिंडोला। *(ना०)* एक राग।

हिंडोळणो—*(न०)* हींडोला। झूला। *(क्रि०)* झुलाना। पेंग देना। हींडा देणा।

हिंडोळा—*(न०)* १. उत्सव विशेष। *(न०ब०व०)* २. बहुत सारे झूले। ३. वैष्णव मंदिरों में सावन-भादों में मनाया जाने वाला हिंडोला-उत्सव। डोलोत्सव।

हिंडोळो—*(न०)* १. झूला। २. पालना। *(वि०)* १. मूर्ख। २. पागल।
हिंडोलो—दे० हिंडोल।
हिंडोळो-खाट—*(न०)* खाट का झूला।
हिंडोवलो—दे० हिंडोलो।
हिंद—*(न०)* हिन्दुस्तान। भारत।
हिंदगी—*(ना०)* हिंदी (भाषा)।
हिंद महासागर—*(न०)* भारत के दक्षिण का महासागर।
हिंदवाण—*(न०)* १. हिन्दुस्तान। भारत। २. हिन्दू लोग। हिन्दू। ३. तरबूज। मतीरो। काळींगो।
हिंदवाणी—*(ना०)* १. हिन्दुत्व। २. हिन्दू राज्य। ३. हिन्दू शक्ति। ४. हिंदी भाषा। ५. राजस्थानी भाषा। *(न०)* तरबूज। मतीरो। *(वि०)* १. हिन्दू का। २. हिन्दुस्थान का। भारतीय।
हिंदवा सूरज—दे० हिंदवाँ सूरज।
हिंदवाँ छात—*(न०)* १. हिन्दुओं का छत्र। २. हिन्दू छत्रपति। ३. हिन्दू सम्राट। ४. हिन्दुस्थान का सम्राट।
हिंदवाँनाथ—*(न०)* हिन्दूपति। हिन्दू सम्राट। हिंदू राजा। हिंदवं।
हिंदवाँ-भाण—दे० हिंदवाँ-सूरज।
हिंदवाँ राव—*(न०)* दे० हिंदवाँ छात।
हिंदवाँ सूरज—*(न०)* हिन्दुओं में सूर्य रूप। २. सर्वश्रेष्ठ हिन्दू राजा। ३. मेवाड़ के महाराणा की उपाधि।
हिंदवी—*(ना०)* हिंदी का पुराना नाम। हिंदी भाषा।
हिंदवं—*(न०)* १. हिन्दुपति। २. भारतवर्ष का राजा। ३. हिन्दुस्थान। ४. हिंदू सम्राट।
हिंदवो—*(न०)* १. भारतवर्ष। २. हिन्दू। *(वि०)* १. हिंदु का। २. हिन्दुस्थान का।
हिंदवो-छात—दे० हिंदुवाँ छात।
हिंदसो—*(न०)* अंक। आंक। संख्या। हिंदसा।
हिंदो—*(ना०)* १. भारत की राज्य-भाषा। २. भारत की राष्ट्र-भाषा। नागरी भाषा। *(न०)* भारतवासी। *(वि०)* हिंद से संबंधित। हिन्दुस्थान का।
हिंदु—*(न०)* १. वेद-पुराणावलंबी एक भारतीय धर्म के अनुयायी। हिंदू धर्म का अनुयायी। २. हिंदुस्तान का निवासी।
हिंदुआण—*(न०)* १. हिंदू जाति। २. हिंदू राज्य। ३. हिन्दुस्थान।
हिंदुओ राव—दे० हिंदवाँ राव।
हिंदुओ सूरज—दे० हिंदुवाँ सूरज।
हिंदुकार—*(न०)* १. हिंदू समाज। २. हिन्दुस्तान निवासी। ३. हिंदूपन।
हिंदुत्व—*(न०)* १. हिंदु होने के गुण धर्म या भाव। २. हिंदुओं के आचार-विचार, मान्यता और संस्कार इत्यादि।
हिंदुपणो—*(न०)* हिन्दुत्व। हिन्दू होने का स्वाभिमान। हिंदूपन।
हिंदुस्तान—*(न०)* १. हिन्दुओं का देश। २. भारतवर्ष।
हिन्दुस्तानी—*(ना०)* १. हिन्दुस्थान का निवासी। भारतीय। २. भारतीय संस्कृति में पला-पोषा। ३. हिन्दुस्थान की भाषा। साधारण बोल चाल की भाषा।
हिंदुस्थान—दे० हिंदुस्तान।
हिंदुस्थानी—दे० हिंदुस्तानी।
हिंदू—दे० हिंदु।

हिंदूथान—दे० हिंदुस्तान ।

हिंदू धर्म—*(न०)* १. वेद पुराण आदि शास्त्रों की मान्यता का धर्म । २. सनातन धर्म ।

हिंदूपत—*(न०)* १. हिंदुओं का पति । २. हिन्दुस्तान का मालिक ।

हिंदूपत पातसा—*(न०)* १. हिंदूपति, हिन्दुस्थान का बादशाह । २. उदयपुर के महाराणा की उपाधि या विरुद ।

हिंवार—*(क्रि०वि०)* अभी । इसी समय । हणै । अबार । हमार ।

हिंवारू—दे० हिंवार ।

हिंवाळो—दे० हिमाळो ।

हिंसक—*(वि०)* हिंसा करने वाला ।

हिंसा—*(ना०)* जीव-हत्या ।

हिंसा कर्म—*(न०)* वध करने का काम । जीव-हिंसा का कार्य ।

ही—*(न०)* १. पुत्र । २. हृदय । *(क्रि०)* भूतकालिक क्रिया पुल्लिग एक वचन 'हो' तथा बहुवचन 'हा' का स्त्रीलिंग रूप । जैसे—लुग ई आयी ही । लुग यां आयी ही ।

हीक—*(ना०)* १. अप्रिय, बुरी तथा सड़ी गंध । २. दर्द । पीड़ा । ३. उत्साह । ४. अरुचि । करांटी । ५. अरुचिकर स्वाद । ६. इरंडी के तेल की गंध तथा स्वाद । ७. मिचलाहट उत्पन्न करने वाली गंध । ८. मिचलाहट । मिचली ।

हीच—*(ना०)* भिड़ंत । टक्कर ।

हीचण—*(न०)* युद्ध ।

हीचणो—*(क्रि०)* १. युद्ध करना । २. झूलना ।

हीज—दे० हिज ।

हीटर—*(न०)* बिजली से गर्म करने का एक साधन ।

हीटा—*(अव्य०)* रहित ।

हीड़ा—*(ना०)* १. सेवा । चाकरी । २. आदर सत्कार । आवभगत । ३. मजदूरी ।

हीड़ा काढणो—*(मुहा०)* १. सेवा करना । २. संदेश ले जाना । ३. स्वागत करना ।

हीड़ागर—*(न०)* १. 'सरगरा' नाम की एक निम्न जाति । सरगरो । २. सरगरा जाति का मनुष्य । ३. सेवा करने वाला । सेवक । चाकर । ४. नौकर । ५. कासिद । पत्रवाहक । ६. मजदूर । ७. बाँस की टोकरियाँ आदि बनाने वाली जाति या उस जाति का व्यक्ति । गांछो ।

हीड़ागरण—*(ना०)* १. हीड़ागर की पत्नी । २. हीड़ागर जाति की स्त्री ।

हीड़ागरणो—दे० हीड़ागरण ।

हीड़ागरी—*(ना०)* १. चाकरी । सेवा । २. हीड़ागर की पत्नी या हीड़ागर जाति की स्त्री । सरगरी । हीड़ागरण । ३. दासी । सेविका ।

हीड़ो—*(न०)* १. सहायता । मदद । २. चाकरी । ३. बेगार । बेठ । ४. कामधंधा । ५. ग्रामान्तर संदेश पहुँचाने या सामान ले जाने का काम । ६. पैदल यात्रियों की लूटखसोट से रक्षा करने के लिए साथ में रहने वाले रक्षक की मजदूरी ।

हीण—*(न०)* सत्य । सारभाग । *(वि०)* १. हीन । नीच । ओछो । २. रहित । शून्य । ३. तुच्छ । हळको । ४. पथ-

भ्रष्ट । ५. एक प्रत्यय—जैसे करम-हीण ।

हीण-अंत—*(वि०)* अंतहीन । अनन्त ।

हीण-करम—*(न०)* नीच कर्म ।

हीण करमी—*(वि०)* १. नीच कर्म करने वाला । कुकर्मी । २. निर्भागी । अभागियो ।

हीणकरमो—*(वि०)* १. नीच कर्मी । कुकर्मी । २. निर्भागी । अभागियो ।

हीणकुळ—*(न०)* १. नीच कुल । २. बुरा कुल । *(वि०)* बुरे या नीच कुल का ।

हीणकीत—*(वि०)* १. कीर्तिहीन । २. जिसकी कीर्ति नष्ट हो गई हो ।

हीण ग्रंथि—*(ना०)* अपने को दूसरों से हीन समझने की धारणा । हीण-भावना । लघुग्रंथि ।

हीण चक्ष—*(वि०)* चक्षुहीन । अंधा ।

हीणजात—*(ना०)* १. नीच जाति । २. जाति-पाँति रहित । जातिहीन ।

हीणजोर—*(वि०)* अशक्त । कमजोर ।

हीणता—*(ना०)* १. हीण होने की अवस्था, भाव या आचरण । २. कमी । अभाव । ३. ओछापन ।

हीणप—*(ना०)* १. हीनता । ओछापन । ओछापणो । २. मानसिक दुर्बलता । कमजोरी । ३. कमी । न्यूनता । ऊणप ।

हीणपणो—*(न०)* १. हीनपना । ओछाई । २. नीचता । दे० हीणप ।

हीणपत—*(न०)* लांछन । *(वि०)* प्रतिष्ठाहीन ।

हीणबळ—*(वि०)* बलहीन । अशक्त ।

हीणमाग—*(न०)* कुमार्ग ।

हीणमाण—*(वि०)* मान रहित । *(अव्य०)* अपमानित होकर ।

हीणवर—*(वि०)* कन्या के मुकाबिले में निम्न कोटि का वर (पति) कबोड़ो ।

हीणवरण—*(वि०)* १. नीच वर्ण का । हीनवर्ण । *(न०)* शूद्र वर्ण ।

हीणो—*(वि०)* १. नीच स्वभाव का । २. हीन वृत्ति वाला । हीन । ३. अशक्त । ४. कुटिल । ५. डरपोक । ६. तुच्छ । ओछो । ७. रहित । बिना । विण ।

हीणोदाव—*(न०)* १. मन की कमजोरी । २. मन की कमजोर स्थिति । ३. मन का पीछे हटना । ३. धीरज छोड़ कर काम बंद करना । ४. हिचकिचाहट । ५. विचार-मंथन ।

हीन—*(वि०)* १. रहित । विहीन । हीण । विण ।

हीनता—*(ना०)* हीन होने का भाव । हीणता ।

हीनो—*(न०)* एक प्रकार का अत्तर । हीना ।

हीबणो—*(क्रि०)* १. जबरदस्ती कहना । २. आग में लकड़ी देना । ३. खूब मारना ।

हीम—*(न०)* हिम । बरफ ।

हीमज—*(ना०)* छोटी हर्रे ।

हीम जमणो—*(मुहा०)* अति ठंड के कारण पानी का जम जाना ।

हीमत—दे० हिम्मत ।

हीमतवान—दे० हिम्मतवान ।

हीमतहार—दे० हिम्मतहार ।

हीमती—दे० हिम्मतवान ।

हीमाणी—दे० हेमाणी ।

हीमाळो—*(न०)* १. हिमालय । २. बहुत कड़ी ठंड ।

हीय—*(न०)* १. पुत्र । २. हृदय ।

हीया टूट—*(वि०)* निराश ।

हीया-फूट—*(वि०)* १. मूर्ख । **अबूझ** । २. हृदयहीन ।

हीया-फूटी—*(वि०)* मूर्खा । बेसमझ । **अबूझ** ।

हीया-फूटो—*(वि०)* मूर्ख । **अबूझ** । बेसमझ । **हीयाफूट** ।

हीया फूटोड़ी—दे० हीया फूटी ।

हीया फूटोड़ो—दे० हीया फूटो ।

हीया-रो-हार—*(न०)* अत्यन्त प्रिय वस्तु या व्यक्ति । *(वि०)* अत्यन्त प्रिय ।

हीयाळी—*(ना०)* १. हृदय का प्रेम । अंतर का स्नेह । २. हृदय से लगाने का भाव । ३. लोक साहित्य की उपदेशात्मक और हृदय को प्रफुल्लित करने वाली प्रश्नोत्तरी, अंत्याक्षरी आदि । ४. पहेली । **आडी** । ५. गूढार्थ । ६. उपदेशात्मक पहेली । ७. गूढ़ वाक्य । ८. धीरज । ढाढ़स ।

हीया-वराळ—*(ना०)* १. दिल की बात । २. हृदय की भाप । ३. क्रोध । रीस । ४. क्रोध से अंट-संट बोलना । ५. नहीं कहने योग्य कह देना ।

हीया हीण—दे० हृदयहीन ।

हीयो—*(न०)* १. हृदय । हिय । २. मन । ३. साहस । हिम्मत । **हियाव** । ४. बुद्धि । ५. वक्षस्थल । **छाती** ।

हीयो जळावण—*(वि०)* हृदय को जलाने वाला ।

हीयो फूटणो—*(मुहा०)* १. अक्ल मारी जाना । २. बुद्धि नष्ट होना ।

हीयो सीळावण—*(वि०)* हृदय को शीतल बनाने वाला । शांति देने वाला ।

हीर—*(न०)* १. किसी वस्तु का सार भाग । २. सार । तत्व । तंत । ३. शक्ति । बल । ४. वीर्य । ५. हीरा । ६. मन । ७. आत्मा । ८. रेशम । ९. कांति । तेज । १०. एक मात्रिक छंद ।

हीरक—*(न०)* एक मूल्यवान रत्न । हीरा । **हीरो** ।

हीरक जयंती—*(ना०)* १. संस्थान व व्यक्ति की साठवीं वर्षगाँठ । २. उक्त समारोह ।

हीरकणी—*(ना०)* १. हीरे का छोटा टुकड़ा । २. हीरे का कन ।

हीरकणी खाणो—*(मुहा०)* आत्महत्या करना । **आपघात करणो** ।

हीर चीर—*(न०)* १. रेशमी वस्त्र । २. कीमती वस्त्र ।

हीर पटोळो—*(न०)* एक प्रकार का बढ़िया रेशमी वस्त्र । रेशमी मिसरू ।

हीर पट्ट—दे० हीर पटोळो ।

हीर-राँजा—*(न०)* एक प्रसिद्ध प्रेमी-प्रेमिका जिन पर अनेक ख्याल रचे हुए हैं तथा राजस्थान में खेले जाते हैं ।

हीरकशी—*(ना०)* गंधक के योग से बनाया हुआ लोहे का विकार । दवा तथा स्याही बनाने के काम में आने वाला एक पदार्थ । **कसीस** । **कासीस** ।

हीराकंठी—*(ना०)* एक कंठाभूषण ।

हीरागळ—*(वि०)* रेशमी ।

हीरागाँठ—*(ना०)* १. रेशम में लगी गाँठ । २. मुश्किल से खुलने वाली गाँठ । ३. बहुत मजबूत गाँठ ।

हीरानामी—*(ना०)* एक आभूषण ।

हीराबोळ—*(न०)* एक प्रकार का गोंद ।

हीरामण—*(न०)* एक जाति का तोता। हीरामन।

हीरामणी—*(ना०)* हीरा रत्न। हीरक मणि। हीरा।

हीरावेध—*(वि०)* चालाक। होशियार।

हीरावेधी—*(ना०)* चालाकी। होशियारी। चतुरता।

हीरांजड़—*(वि०)* हीरों से जड़ा हुआ। हीरा-जड़ित।

हीरांजड़ी—*(वि०)* हीरों से जड़ी हुई। हीरा-जड़ित।

हीरांतोल—*(वि०)* बहुमूल्य।

हीरो—*(न०)* एक प्रसिद्ध रत्न। हीरा।

हील—*(ना०)* पोष, माघ में चलने वाला अति ठंडा पवन। २. ठंडी हवा की लहर। ३. दीवाल आदि में लगने वाली पानी की नमी। सील। सेंव। भेज। ४. मावठा। (पोष, माघ की वृष्टि) के समय चलने वाली ठंडी हवा। ५. सुनहरा रंग।

हीलवाजणी—*(मुहा०)* सर्दियों की ऋतु में तेज ठंडा पवन चलना।

हीलो—*(न०)* १. छोटे बच्चे का पालना। झूला। २. पालने में झुलाया जाने वाला बच्चा। ३. बच्चे को पलने में पेंग देते समय माता द्वारा गाया जाने वाला गीत। लोरी। हालरियो। ४. उपाय। मार्ग। युक्ति। ५. सहायता।

हीलोअळ—दे० हीलोहळ।

हीलोर—*(न०)* १. लोरी। २. पेंग। ३. लहर। तरंग। ४. भीड़ का धक्का।

हीलोळणो—*(क्रि०)* १. हिलाना। हिलोरना। २. मंथन करना।

हीलोळो—*(न०)* १. पानी का धक्का। २. लहर। तरंग।

हीलोवळ—दे० हीलोहळ।

हीलोहळ—*(न०)* १. समुद्र। **हीलोअळ**। २. लहरों का शब्द।

हीव—*(न०)* १. पुत्र। **हीय**। २. हृदय। **हीय**।

हीस—*(ना०)* १. उत्पात। २. ऊधम।

हीस खाणो—*(मुहा०)* ऊधम करना।

ही ही—हँसने की आवाज।

हींग—*(ना०)* हिंग।

हींगण—*(न०)* एक वृक्ष।

हींगणो—हंगणो।

हींगळाज—दे० हिंगळाज।

हींगळू—*(न०)* ईंगुर।

हींगळू-ढोलियो—दे० हिंगळू-ढोलियो।

हींगातेली—*(ना०)* १. खाने-पीने की छोटी-मोटी चीजों का बेचना। २. छोटा धंधा। गुजरान चले जैसा धंधा।

हींगोळ—*(ना०)* हिंगुलाज देवी।

हींगोळ पुराण—*(न०)* भक्त ईसरदास कृत देवियाण ग्रंथ का एक अन्य नाम।

हींच—*(न०)* पेंग। **हींचो**। **हींडो**।

हींचण—*(न०)* झूला। **हींडो**।

हींचणो—*(क्रि०)* झूलना। पेंग लेना। **हींडणो**। **हींसणो**।

हींचो—दे० हींच।

हींचोळणो—*(न०)* झूला। पलना। हिंडोला। *(क्रि०)* झूले में झुलाना।

हींचोळो—*(न०)* झूला।

हींजड़ो—*(न०)* नपुंसक।

हींजरणो—*(क्रि०)* १. हींसना। हिन-हिनाना। २. विलाप करना। रोना।

हींड—*(ना०)* मामाजी आदि किसी लोक देवता का अंधेरी रात में घोड़े पर

सवारी किये हुये और हाथ में दीपक लिये हुये भागते हुये का काल्पनिक दृश्य ।

हींडण—*(न०)* झूला ।

हींडणो—*(क्रि०)* १. झूलना । **हींडा खाणा** । २. चलना । जाना ।

हींडळणो—*(क्रि०)* हाथी का झूमना ।

हींडा खाणा—*(मुहा०)* झूलना ।

हींडो—*(न०)* झूला । **हींसो** ।

हींडो चढावणो—*(मुहा०)* खूब जोर से झूले खाना । वृक्ष की शाखा से बंधे हुये झूले को जोर से पेंग देकर ऊपर चढ़ाना ।

हींडोळणो—*(क्रि०)* झुलाना । पेंग देना । *(न०)* झूला । **हींडोळो** ।

हींडोळो—*(न०)* १. झूला । **हींडो** । २. हिंडोला । झूलना । ३. बेसमझ और पागल (बनिया) । *(वि०)* १. पागल । २. मूर्ख । ३. व्यर्थ इधर-उधर भटकने वाला । ४. अयोग्य । ५. निकम्मा । ६. अविश्वासी । ७. मूर्ख ।

हींडोलो—*दे०* हींडोळो ।

हींडोळो खाट—*(न०)* १. पलना । झूला । २. हींडे की भाँति का खाट । ३. बड़ा झूला । ४. एक विशेष प्रकार का हिंडोला ।

हींस—*(ना०)* १. घोड़े की हिनहिनाहट । २. शरारत । ऊधम । ३. बार-बार व्यर्थ आना जाना ।

हींसणो—*(क्रि०)* १. घोड़े का हिनहिनाना । २. झूलना । पेंग लेना । **हींडणो** । २. शोर करना । ऊधम करना ।

हींसारव—*(न०)* हिनहिनाहट । **हेंसारव** । **हींसणो** ।

हींसी—*(न०)* घोड़ा । अश्व ।

हींसो—*(न०)* झूला । **हींडो** ।

हींसोळणो—*दे०* हींडोळणो ।

हुआ-हुआ—*(अव्य०)* सद्यजात शिशु के रोने का शब्द ।

हुओ—*(अव्य०)* १. बस । २. पर्याप्त । *(भू०क्रि०)* 'होणो' या 'होवणो' क्रिया का एक वचन भूतकालिक रूप । हुआ । हो गया ।

हुक—*(न०)* १. टेढी कील । २. अंकोड़ा । **अंकोड़ो** ।

हुकम—*(न०)* १. आज्ञा । हुक्म । २. सरकारी आदेश । ३. ताश के खेल में सब के पत्तों को सर करने वाला (जीतने वाला) पत्ता, सर का पत्ता । ४. ताश के खेल में सर्वोपरि जाहिर किया हुआ रंग और उसका पत्ता । ५. ताश खेल में काले रंग और उसका पत्ता । ६. बड़ों से बातचीत करते समय उनसे सहमति जतलाने का शब्द ।

हुकम अदूली*(ना०)* १. हुक्म नहीं मानना । २. हुक्म का विरोध करना ।

हुकम उठावणो—*(मुहा०)* आज्ञा पालन करना ।

हुकम काढणो—*(मुहा०)* १. फरमान निकालना । २. आदेश निकालना या हुक्म जारी करना । ३. ताश के खेल में रंग जाहिर करना ।

हुकम चलणो—*(मुहा०)* १. आज्ञा का पालन या माना जाना । २. अधिकार जमना ।

हुकम चलावणो—*(मुहा०)* १. आज्ञा देना । २. आज्ञा करना ।

हुकमनामो—*(न०)* १. एक राज्य कर । २. आज्ञापत्र ।

हुकम पालणो—*(मु.हा०)* आज्ञा पालन करना । हुकम मानणो ।

हुकम बरदार—*(ना०)* सेवक ।

हुकम बरदारी—*(ना०)* १. सेवकाई । २. आज्ञा पालन ।

हुकम मानणो—दे० हुकम पालणो ।

हुकम राखणो—*(मु.हा०)* अनुरोध या आग्रह मान्य रखना ।

हुकम हासल—*(ना०)* आज्ञा ।

हुकमी—*(वि०)* १. हुक्म उठाने वाला । आज्ञाकारी । २ आज्ञावश ।

हुकमी-चाकर—*(ना०)* आज्ञाकारी सेवक ।

हुकूमत लाग—*(ना०)* जागीरदार से लिया जाने वाला एक राज्य कर ।

हुचक—*(ना०)* भिड़ंत । हिच ।

हुचकारणो—*(क्रि०)* १. भिड़ना । २. युद्ध करना । लड़ना ।

हुचको—*(ना०)* पतंग की डोरी लपेटने का एक उपकरण । गिड़गिड़ी ।

हुचरणो—*(क्रि०)* १. युद्ध में भिड़ना । लड़ना । २. आक्रमण करना ।

हुजत—दे० हुज्जत ।

हुजदार—*(ना०)* १. (राजा का) सलाहकार । २. वजीर । ३. हर समय सेवा में रहने वाला ।

हुज्जत—*(ना०)* १. व्यर्थ का विवाद । तकरार । २. हठ । जिद ।

हुज्जतबाज—*(वि०)* १. तकरार करने वाला । विवादी । २. हठी । जिद्दी ।

हुज्जती—*(वि०)* हुज्जत करने वाला ।

हुड—*(ना०)* मेढ़ा । मेष । घेटो । *(ना०)* भेड़ । गाडर । हुड़ ।

हुड़—*(ना०)* भेड़ । गाडर ।

हुड़कली—*(ना०)* पंडुक । फाख्ता ।

हुड़कारणो—*(क्रि०)* १. अपमानित करना । २. दुत्कारना । ३. तुच्छाकारना ।

हुड़तपो—*(ना०)* सूर्यातप (धूप) या अग्नि के निकट की छाया में लगने वाली गरमी । निकटस्थ के सूर्यताप अथवा अग्नि की उमस । सूर्य ताप या अग्नि ज्वाला के कारण होने वाला निकटस्थ तप्त वातावरण ।

हुड़दंग—*(ना०)* १ होली के दूसरे दिन (धूळेटी) एक दूसरे पर मस्ती से रंग, अबीर डालने की क्रिया । २. उपद्रवयुक्त उछल-कूद । ३. नागा साधुओं की एक जमात । *(वि०)* १. अशिष्ट । २. डरावना । ३. बदमाश ।

हुड़दंगो—*(ना०)* १. शोरगुल । ऊधम । उत्पात । २. एक नागा साधु ।

हुड़दो—दे० हड़दो ।

हुडंबी—*(ना०)* गणेश । गजानन । हुडूंबी ।

हुडूंबी—दे० हुडंबी ।

हुड़ाव—*(ना०)* १. सूर्य की प्रखरता से तपी हुई भूमि की गरमी । २. तपी हुई भूमि के बाद वर्षा होने के कारण उसमें से निकलने वाली गरमी । हुड़तापो ।

हुड़ियो—*(ना०)* मेष । घेटो । भेड़ा ।

हुड़ी—*(ना०)* १. शीघ्रता । २. तेज दौड़ ।

हुडी—*(ना०)* भेड़ ।

हुड़ी करणो—*(क्रि०)* १. दौड़ना । भाग जाना । *(मुहा०)* जल्दी करना ।

हुड़ीजणो—*(क्रि०)* भेड़ को कामेच्छा होना ।

हुड़ो—*(ना०)* १. रोक । रुकावट । अवरोध । २. उलझन । बाधा । ३. रोकने या बाधा डालने की कोई वस्तु । ४. किंवाड़

आदि को रोक रखने के लिये उसके सामने टेढी करके (छूती हुई) खड़ी की जाने वाली लकड़ी। ५. साँस लेने में होने वाली रुकावट।

हुणार—दे० होणहार।

हुणियार—(न०) १. होनहार। होनी। भावी। २. भाग्य। (वि०) भाग्यशाली।

हुणो—(क्रि०) होना। दे० होणो। होवणो।

हुत—(भू०कृ०) १. बलि दी गई। मारा गया। (न०) हवन में होमी जाने वाली या आहुति के रूप में दी जाने वाली वस्तु।

हुतब—(न०) १. होनहार। भवितव्यता। होनी। होतव्य। भावी।

हुतभुक—(ना०) अग्नि। हुतवह।

हुतवह—(ना०) अग्नि। वासदे।

हुतात्मा—(न०) अपने आपको होम देने वाला। बलिदान होने वाला। शहीद।

हुतास—(ना०) अग्नि। हुताशन।

हुतासण—(न०) हुताशन। अग्नि। हुतास।

हुतासणी—(ना०) होली। हुताशिनी। होळी।

हुतासन—(न०) अग्नि। हुताशन।

हुती—(वि०ना०) १. उचित। २. होने योग्य। (भू०क्रि०) पुंलिंग भूतकालिक क्रिया 'हुतो' (था) का स्त्रीलिंग रूप।

हुतै—(अव्य०) जो हो रहा है। (वि०) उचित।

हुतो—(वि०) १. करने लायक। उचित। २. हो सकने योग्य। (भू०क्रि०) था। हतो। हंतो।

हुतोज—(अव्य०) १. था ही। २. जो निश्चय ही था। ३. अवश्य था। था।

हुदहुद—(न०) एक पक्षी।

हुनर—(न०) १. कला। कारीगरी। २. किसी कार्य को करने का कौशल। ३. हाथ की निपुणता। चतुराई। ४. गुण। खूबी।

हुनरमंद—(वि०) १. कलाकुशल। २. निपुण। ३. कारीगरी। ४. करामती।

हुनरी—(वि०) हुनर जानने वाला। कारीगर। २. करामती।

हुबणो—(क्रि०) १. भिड़ना। लड़ना। २. मारामारी करना। कटाकटी करना। ३. मारामारी या कटाकटी होना। ४. एकदम अत्यधिक अस्त्र-शस्त्रों का चलना। ५. आग में पड़ कर जलना। ६. अग्नि का अधिक प्रज्वलित होना।

हुबास—(न०) घोड़ा। अश्व।

हुबाह—दे० हुबास।

हुमलो—दे० हमलो।

हुमायु—(न०) एक मुगल बादशाह जो बाबर का पुत्र और अकबर का पिता था।

हुमायो—(भू०कृ०) १. उत्साहित होकर। २. उत्साहित। उमंगित। ऊमायो।

हुमाव—(न०) एक कल्पित पक्षी, जिसकी छाया पड़ने पर व्यक्ति राजा हो जाता है। हमाव।

हुमावो—दे० ऊमावो।

हुयर—(क्रि०वि०) होकर। होयनै। हुयनै।

हुयो—दे० हुओ।

हुरकणी—(ना०) १. स्त्री। नारी। २. प्रेतनी। भूतनी। ३. डायन। डाकण। ३. क्रूर स्त्री। चूड़ैल। ४. वेश्या। पातर।

हुरड़ाई—*(ना०)* १. जिद। हठ। २. खोटी हिम्मत। दुस्साहस।

हुरम—*(न०)* १. बेगम। २. दासी। सेविका। हरम।

हुरम खानो—*(न०)* अन्तःपुर। हरम।

हुरळ—*(न०)* १. एक शस्त्र। २. घाव। ३. शरम।

हुराट—*(ना०ब०व०)* हूरें। अप्सराएँ।

हुराण—*(ना०ब०व०)* 'हूर' का बहुवचन। हूरां।

हुरियो—दे० हुरें।

हुरें—*(न०)* १. धिक्कार। २. तिरस्कार।

हुल—*(न०)* १. एक शस्त्र। २. एक क्षत्रिय जाति।

हुलराणो—दे० हुलरावणो।

हुलरावणो—*(क्रि०)* १. लोरी गाते हुये बच्चे को पालने में झुलाना। २. पालने में झुलाते हुए लोरी गाना। ३. शिशु को रमाना। ४. शिशु को हाथ में लेकर झुलाना। ५. प्यार करना। ६. बच्चे को खिलाना। रमाना। रमावणो।

हुलस—*(न०)* १. इच्छा। कामना। २. उल्लास। ३. प्रसन्नता। खुशी। ४. उत्साह। उमंग। उछाव।

हुलसणो—*(क्रि०)* १. प्रसन्न होना। राजी होणो। २. आनंद से फूलना। उमावणो। ३. प्रसन्नता से तैयारी करना। ४. उत्साह से तैयार होना। ५. उमंग से आना। ६. इच्छा करना।

हुलसाणो—*(क्रि०)* प्रसन्न करना। राजी करणो।

हुलस-म्रित—*(ना०)* मृत्यु का सुख। मृत्यु का उल्लास।

हुळाक—दे० हुड़ाक।

हुलास—*(न०)* १. उल्लास। २. उत्साह। *(ना०)* ३. सुंघनी। तपकीर। नासका। ४. प्रसन्नता। खुशी।

हुलासणो—*(क्रि०)* १. उल्लसित होना। २. विनोद करना। ३. प्रसन्न होना। राजी होना।

हुळियार—*(वि०)* १. होली खेलने वाला। २. हुड़दंगी।

हुलियो—*(न०)* १. आकृति। रूप। सूरत। २. किसी के रूप रंग का विवरण जिससे वह पहिचाना जाता हो।

हुल्लड़—*(न०)* १. दंगा। २. कोलाहल। ३. उत्पात। बखेड़ो।

हुवणो—दे० होवणो।

हुवंत—*(क्रि०)* १. होता है। २. होता रहता है। ३. होता होगा।

हुवा-हुवा—*(न०)* गीदड़ की बोली।

हुवै-तो—दे० होवै-तो।

हुवैला—दे० होवैला।

हुवैली—*(भ०क्रि०)* होगी। हुसी। होवसी।

हुवो—दे० हुओ।

हुसन—*(न०)* रूप। सौंदर्य। हुस्न।

हुसनाक—*(वि०)* हुस्नवाला। सुन्दर।

हुसियारक—*(न०)* छड़ीदार। चोबदार।

हुसी—*(भ०क्रि०)* १. होगा। हुवैला। २. होगी। हुवैली। होवैली।

हुसेन—*(न०)* मुहम्मद का दामाद, जो कर्बला के मैदान में मारा गया था। मुहर्रम इसी के शोक में मनाया जाता है।

हुसै—*(भ०क्रि०)* होगा।

हुस्टंड—*(वि०)* १. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। २. निडर। निर्भय। ३. लुच्चा। बदमाश।

हुस्न—दे० हुसन ।

हुंकार—*(न०)* १. सिंहनाद । गर्जन । २. ललकारने का शब्द । हुंकृति । ३. ललकार । ४. गर्वोक्ति ।

हुंकारणो—*(क्रि०)* १. ललकारना । बकारणो । २. गर्जना ।

हुंगरड़ाई—*(ना०)* जिद । हठ । हूमरड़ाई ।

हुंगरड़ो—*(वि०)* जिद्दी । हठी ।

हुंडामण—*(ना०)* १. हुंडी से रुपये भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी । हुंडावण । २. हुंडी का भाव या बटाव । ३. हुंडी के बटाव की दर । ४. हुंडी द्वारा आयात-निर्यात से होने वाला लाभ । हुंडियामण । फॉरेन एक्सचेंज ।

हुंडावण—दे० हुंडामण ।

हुंडियामण—दे० हुंडामण ।

हुंडी—*(ना०)* १. वह पत्र विशेष जो ग्रामान्तर या परदेश में रुपयों की साहूकारी लेन-देन पर स्थानिक भुगतान करने के लिए लिखा जाता है । देश-विदेश में रकम की लेन-देन करने के लिये स्थानिक लेन-देन की एक साहूकारी चिट्ठी । २. अमुक निश्चित रकम चलैनी सिक्के (नाणे) में देने का एक लिखित (व्यापारिक) फरमान ।

हुंडीवाळ—*(न०)* १. हुंडी लिखने वाला तथा सिकारने वाला धनी । २. हुंडी लिखने-सिकारने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति ।

हुंडी पटणो—*(मुहा०)* हुंडी के रुपये मिलना । हुंडी सिकरणो ।

हुंडी लिखणो—*(मुहा०)* जिसमें रुपये मांगते हों, उसके नाम हुंडी लिखना ।

हुंडी वही—*(ना०)* आई-गई हुंडियों के नोंधने की बही ।

हुंडी सिकरणो—*(मुहा०)* हुंडी पटणो ।

हुंडी सिकारणो—*(मुहा०)* हुंडी के रुपये भरना ।

हुंती—*(भू०क्रि०)* १. होती । हो जाती । २. थी । ३. था । ४. 'होना' क्रिया का भूतकालिक स्त्रीलिंग रूप । थी । हती । ५. उचित । ठीक । हुती ।

हुंतो—*(क्रि०)* 'होना' या 'है' का भूतकालिक रूप । था । हतो । हथो । २. होता । हो जाता । ३. था । हुतो । *(वि०)* उचित । हुतो ।

हुंदा—दे० हंदा ।

हुंदी—दे० हंदी ।

हुंदो—दे० हंदो ।

हुंसियार—*(वि०)* १. समझदार । २. बुद्धिमान । होशियार । ३. वय से अधिक बुद्धिमान । ४. चालाक ।

हुंसियारी—*(ना०)* १. होशियारी । समझदारी । चतुराई । २. चालाकी । बदमाशी ।

हूओ—*(क्रि०)* व्हेणो, हुणो, हुंतो क्रियाओं का भूतकालिक पुंलिंग एकवचन रूप ।

हूक—*(ना०)* १. आश्चर्यजनक घटना । २. आकस्मिक दुर्घटना । ३. शोक । दुख । ४. अचानक घबराहट । ५. बंदर की आवाज । ६. बंदर (बालभाषा में) । ७. दर्द ।

हूक उठणो—*(मुहा०)* १. शूल उठना । २. तीव्र वेदना के कारण तड़पना ।

हूक फूटणो—*(मुहा०)* किसी महान, पूज्य, प्रतिष्ठित, निकटस्थ संबंधी, प्यारे या

युवा की एवं अकाल मृत्यु के कारण भारी शोक तथा हाहाकार छा जाना ।

हूकळ—*(ना०)* १. युद्ध का कोलाहल । २. घायलों की चिल्लाहट । ३. हल्ला । शोरगुल्ला । हूकवळ । ४. युद्ध । ५. युद्धघोष । ललकार । ६. हुंकार ।

हूकळ-कळळ—दे० हूकळ ।

हूकळणो—*(क्रि०)* १. हिनहिनाना । २. जोर से बोलना । ३. अंडबंड बोलना । ४. शोर मचाना । ५. व्याकुल होना । दुखी होना ।

हूकवळ—दे० हूकळ ।

हूकाहूक—*(न०)* शोरगुल । तोफान ।

हूचक—दे० हुचक ।

हूचकणो—*(क्रि०)* १. लड़ना । २. युद्ध में भिड़ना । ३. उठाना । ४. उचकना ।

हूट—दे० हूंट ।

हूण—*(न०)* १. एक प्राचीन मंगोल जाति । २. एक प्राचीन बर्बर कबीला । ३. बर्बर कबीले का व्यक्ति ।

हूणी—दे० होणी । होणारत ।

हूणो—दे० हुवणो ।

हूता—*(भू०क्रि०ब०व०)* 'हूतो' क्रिया का बहुवचन । थे ।

हूती—*(वि०)* १. होने योग्य । २. करने योग्य । ३. उचित । ४. होती हुई । *(क्रि०भू०)* 'है' क्रिया का भूतकाल । थी ।

हूतो—*(वि०)* १. करने योग्य । २ होने योग्य । ३. उचित । *(क्रि०भू०)* 'है' क्रिया का भूतकाल । था ।

हूनर—दे० हुनर ।

हूनरी—दे० हुन्नरी ।

हूबहू—*(वि०)* ज्यों का त्यों । बिलकुल एक जैसा । अनुरूप । तादृश ।

हूमरड़ाई—दे० हुंमरड़ाई ।

हूर—*(ना०)* १. कुरान में वर्णित अप्सरा जो नेक इन्सानों को जन्नत में मिलती है । २. बेगम । ३. सुन्दर स्त्री ।

हूराण—*(न०ब०व०)* 'हूर' शब्द का बहुवचन । हूर समूह ।

हूल—*(ना०)* १. तीव्र पीड़ा । २. एक प्रकार की तेज शराब । ३. हुलक्षत्री ।

हूलरियो—दे० हूलरो ।

हूलरो—दे० हूलरियो ।

हूलसणो—दे० हुलसणो ।

हूस—*(ना०)* १. शोक । २. उत्साह ।

हूसी—*(क्रि०भू०)* 'होणो' (हूणो) क्रिया का भविष्यत्काल रूप । होगा । होवेला । होसी ।

हूं—*(सर्व०)* हों । अहम् । मैं । *(न०)* स्वीकृति । हूंकारा । हूंकारो । *(प्रत्य०)* १. में । २. से । *(क्रि०)* 'होणो', 'होवणो' (हिंदी) 'होना' क्रिया का उत्तम पुरुषी एक वचनी वर्तमान कालिक रूप । छूं ।

हूं इज—*(अव्य०)* मैं ही ।

हूंकणो—*(क्रि०)* गीदड़ का हूंकी-हूंकी शब्द करना । गीदड़ का बोलना ।

हूंकळ- दे० हूकळ ।

हूंकळ-कळळ—दे० हूकळ-कळळ ।

हूंकारो—*(न०)* १. हाँ । स्वीकृति । हाँकारो । २. समर्थन सूचक शब्द । ३. स्वीकृति सूचक कहा जाने वाला 'हूँ' शब्द ।

हूंकी-हूंकी—*(ना०)* गीदड़ की बोली ।

हूंच—*(न०)* एक काँटों वाली घास और उसका बीज । भुरट । मुंट । हूंछ ।

हूंछ—दे० हूंच ।

हूंट—दे० हूंटो ।

हूंटो—*(न०)* १. साढे तीन का अंक । '३।'. २. साढे तीन का पहाड़ा । *(वि०)* साढ़े तीन । हूंठा ।

हूंठ—दे० हूंटो ।

हूंठा—साढ़े तीन का पहाड़ा ।

हूंणी—*(ना०)* होनहार ।

हूंत—*(अव्य०)* १. करण तथा अपादान कारक की विभक्ति । से । २. ओर से । तरफ से । के जरिये । *(वि०)* होने जैसी । करने जैसी । उचित ।

हूंतगारो—*(वि०)* १. सुंदर । २. योग्य । ३. विवेकी ।

हूंतां—*(न०)* अपेक्षा । तुलना । *(अव्य०)* बनिस्बत । अपेक्षाकृत । तुलना में । *(प्रत्यय०)* करण और अपादान कारक की विभक्ति । से । हूंत ।

हूंती—*(वि०)* १. करने जैसी । २. उचित । योग्य । ३. होने योग्य । हूती । दे० हुंती ।

हूं-तूं—*(अव्य०)* १. मैं और तूं की भावना । २. भेदभाव । ३. मैं और तूं । मेरा और तेरा । मैं-तूं ।

हूंतो—दे० हुंतो ।

हूंफ—*(ना०)* १. उत्साह । २. पीठबळ । ३. सहायता । ४. आश्रय । ५. आश्वासन । ६. प्रोत्साहन ।

हूंफ मिलणी—*(मुहा०)* १. सहायता मिलना । २. पीठबल मिलना । ३. आश्वासन मिलना । आश्वासन ।

हूंफाळी—*(ना०)* १. मदद । सहायता । २. आश्वासन ।

हूंस—*(न०)* १. कामना । इच्छा । चाह । २. उमंग । हौंस । ३. उत्साह । कोड । ४. उम्मीद । ५. शौक । रुचि । लालसा ।

हूंसणो—*(क्रि०)* १. उत्साहित होना । २. उमंगना ।

हूंसीलो—*(वि०)* उत्साही । कोडीलो ।

हृदय—*(न०)* १. दिल । हिरदा । २. मन । ३. छाती । ४. विवेक । ५. मर्म । रहस्य । ६. तत्व । ७. सारांश । ८. बहुत प्रिय व्यक्ति या वस्तु ।

हृदय उमड़णो—*(मुहा०)* प्यार, शोक या करुणा की भावना से मन भर जाना ।

हृदयग्राही—*(वि०)* मन को वश में करले ऐसा ।

हृदयनाथ—*(न०)* पति । स्वामी । खाविंद । धरधणी ।

हृदय फाटणो—*(मुहा०)* अत्यन्त दुख होना ।

हृदय भरीजणो—*(मुहा०)* १. गद्गद होना । २. शोकयुक्त होना । ३. क्षोभयुक्त होना ।

हृदय री गाँठ—*(ना०)* १. दुर्भावना । बैर । शत्रुता । २. कपट । छल ।

हृदय लगाणो—दे० हृदय लगावणो ।

हृदय लगावणो—*(मुहा०)* १. आत्मीय या प्रिय बनाना । २. गले से लगाना । ३. छाती से लगाना । आलिंगन करना ।

हृदय विदारक—*(वि०)* मन को घायल करने वाला । आघात जनक । हृदय चीरने वाली (बात या काम) ।

हृदयहीन—*(वि०)* १. हृदयविहीन । २. कठोर । ३. क्रूर । हीयाहीण ।

हृदयेश्वरी—*(ना०)* १. पत्नी । २. प्रिय पत्नी ।

हृषीकेश—*(न०)* १. इंद्रियों का स्वामी। २. विष्णु। ३. श्रीकृष्ण। ४. गंगा के किनारे का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान। ऋषिकेश। ५. आबू पर्वत पर एक तीर्थ स्थान। रिखीकेस।

हृष्ट—*(वि०)* प्रसन्न। राजी।

हृष्ट-पुष्ट—*(वि०)* मोटा-ताजा। तगड़ा।

हे—*(अव्यय)* एक संबोधन। अरे। ओजी। अ।

हे ओ—*(अव्यय)* अजी। होजी। ओजी। (आदरार्थ)।

हेक—दे० अेक।

हेकज—*(वि०)* एक ही।

हेकट—*(वि०)* १. इकट्ठा। एकत्रित। २. अभिन्न।

हेकठाँ—*(अव्यय)* १. एक जगह पर। २. एक साथ। एकठ।

हेकड़—*(न०)* हठ। जिद।

हेकड़ली—दे० हेकलड़ी।

हेकड़लो—दे० हेकलड़ो।

हेकड़ी—*(ना०)* जिद। हठ।

हेकड़ीबाज—*(वि०)* जिद्दी। हठी।

हेकण—*(वि०)* १. एक। अेकण। २. एक ही। २. एक किसी।

हेकण मल्ल—*(न०)* अनेकों से इकल्ला युद्ध करने वाला वीर पुरुष।

हेक-पुरखी—*(वि०)* एक ही पुरुष से संबंध रखने वाली। एक ही पुरुष से संतोष करने वाली। *(ना०)* १. एक ही पुरुष की स्त्री। दूसरे पुरुष से अनुचित संबंध को कभी ख्याल में ही नहीं लाने वाली स्त्री। २. सती स्त्री।

हेकमन—*(क्रि०वि०)* एक मन लगा कर।

हेकमना—*(वि०)* १. संगठित। २. एक मत वाले।

हेकर *(क्रि०वि०)* एक बार। एकारूं।

हेकर नैं—*(अव्यय)* १. एक बार तो। २. एक बार और। ३. एक बार।

हेकरसां—*(क्रि०वि०)* एक बार। हेकर।

हेकर-सूं—दे० हेकर नैं।

हेकल—*(वि०)* अकेला। अेकलो।

हेकलड़ी—*(वि०)* अकेली। अेकली। हेकली।

हेकलड़ो—*(वि०)* अकेला। अेकलो। हेकल।

हेकल-दोकल—*(अव्यय)* इकल्ला-दुकल्ला।

हेकलपणो—*(न०)* अकेलापन। हेकलपीणो।

हेकलपीणो—दे० हेकलपणो।

हेकलमल—*(न०)* अनेकों से इकल्ला लड़ने वाला शूरवीर।

हेकलवाई—दे० अेकलवाई।

हेकलवीर—दे० अेकलवीर।

हेकलियो—*(वि०)* इकल्ला। अकेला। अेकलो।

हेकली—दे० अेकली।

हेकलो—दे० अेकलो।

हेकसार—*(अव्य०)* एक समान। इकसार।

हेक हट्टो—*(वि०)* जहाँ पर एक ही दुकान वाला हो।

हेकहथ्थो—*(वि०)* १. एक ही व्यक्ति में केन्द्रित। २. एक हाथ वाला।

हेका—*(अव्यय)* एक ओर। अेक कानी। *(न०)* पुकार। पुकार पर पुकार।

हेकाकार—दे० अेकाकार।

हेकागर—*(क्रि०वि०)* १. एक बार। हेकर। एक समय। २. एकाग्र। एक से आगे। **हेकागळ।**

हेकागळ—दे० हेकागर।

हेकार—दे० हेकर।

हेकारूं—*(अव्य०)* एक बार। हेकरसां।

हेकांहेक—*(क्रि०वि०)* एकाएक। *(वि०)* एक एक को। अेक अेक ने। प्रत्येक को।

हेकी—दे० अेकी।

हेकी-बेकी—*(न०)* बच्चों का एक खेल।

हेकैं—*(वि०)* एक ही।

हेको—*(न०)* १. आवाज। पुकार। २. संगठन। **अेको।** ३. एक की संख्या। *(वि०)* एक। *(अव्य०)* एक ही।

हेकोज—*(वि०)* १. एक ही। २. एक वही।

हेज—*(न०)* १. माता का बालक के प्रति प्रेम। वात्सल्य। २. प्रेम। हेत।

हेजणो—*(क्रि०)* १. प्यार देना। २. प्यार देकर किसी बात या काम में प्रवर्त करना। ३. प्रेम में अपने पास रहने की आदत डालना (बच्चे के लिये)।

हेजळो—*(वि०)* हेजवाला। हेजाळ।

हेजाळ—दे० हेजाळू।

हेजाळू—*(वि०)* प्रेमी। अनुरागी। हेताळू। **हेजळो।**

हेजी—*(अव्य०)* आदर सूचक एक संबोधन। पति, पिता, गुरु आदि जिनका नाम लेकर पुकारा नहीं जाता, उनके लिये अेक संबोधन (प्रायः पति के लिये। **अजी। हाओ।**

हेजो—*(न०)* प्रेम। हेत। **हेज।**

हेटवाण—*(वि०)* नीचे दर्जे का।

हेटवाणियो—*(वि०)* १. किसी अधिकारी के नीचे काम करने वाला। मातहत। अधीनस्थ कर्मचारी। २. निम्न स्तर का। ३. आज्ञानुवर्ती। *(न०)* १. गुलाम। २. नौकर।

हेटी—दे० हेठी।

हेटैं—*(क्रि०वि०)* नीचे।

हेटैं बैठणो—*(मुहा०)* १. बैठना। २. नट जाना। ३. बरबाद होना।

हेटो—*(क्रि०वि०)* नीचे।

हेटो पड़णो—*(मुहा०)* १. गिरना। पड़ना। २. अवनत होना।

हेठलो—*(वि०)* नीचे का। नीचे वाला। अधीनस्थ।

हेठवाणियो—दे० हेटवाणियो।

हेठवाणी—दे० हेठवाणियो।

हेठांण—*(न०)* नीचे का भाग। निचाई। *(वि०)* १. हलका। २. नीचे।

हेठी—*(ना०)* १. अपकीर्ति। बदनामी। २. ओछापन। ३. अप्रतिष्ठा। *(क्रि०वि०)* नीचे। *(वि०)* १. नीची। २. ओछी। तुच्छ।

हेठी नांखणी—*(मुहा०)* १. सब्र करना। २. बात को आगे नहीं बढ़ाना।

हेठी लागणी—*(मुहा०)* बदनामी होना।

हेठैं—*(वि०)* जो गुण, पद आदि में नीचा हो। अधीन। *(क्रि०वि०)* नीचे।

हेठैं हाथ मांडणो—*(मुहा०)* १. याचना करना। २. भीख माँगना। ३. जी हजूरी करना।

हेठैं रो—दे० हेठलो।

हेठैवाळो—*(वि०)* नीचे वाला। नीचे का।

हेठं बैठणो—*(क्रि०)* १. नीचे बैठना। २. द्रव पदार्थ में मिले हुए किसी पदार्थ का तले में जमना। ३. निराश होना। ४. हतोत्साह होना।

हेठो—*(वि०)* १. नीचा। २. कम दर्जे का। ३. ओछा। *(क्रि०वि०)* नीचे।

हेठो बैठणो—*(क्रि०)* १. नीचे बैठना। २ बैठना।

हेड—*(न०)* १. अध्यक्ष। २. अफसर। *(वि०)* १. ऊपरी। २. बड़ा।

हेड़—*(ना०)* १. अकाल आदि के कारण किसी दूसरे प्रांत से आया हुआ तथा किसी मेले आदि में बिकने को आया हुआ पशु समूह। २. किसी एक जाति के पशुओं का झुंड। ३. भेड़ों का झुंड। ४. झुंड। समूह। संघ। ५. आक्रमण। साको। ६. अनुशासन। ७. प्रतिबंध।

हेड क्लर्क—*(न०)* किसी कार्यालय के कार्यकर्त्ताओं (अहलमंदों) का ऊपरी अहलमंद। बड़ा मुंशी या अहलकार।

हेड क्वार्टर—*(न०)* मुख्यालय।

हेड़णो—*(क्रि०)* १. आगे बढ़ाना। धक्का मारना। २. प्रोत्साहित करना। ३. ले जाना। ४. खींचना। ५. समूह में मिलाना। ६. हाँकना। चलाना।

हेडमास्टर—*(न०)* प्रधानाध्यापक।

हेडमास्टरणी—*(ना०)* प्रधानाध्यापिका।

हेडमिस्ट्रेस—दे० हेडमास्टरणी।

हेडमुंशी—दे० हेड क्लर्क।

हेड़वणहार—*(वि०)* १. बड़े समूह (सेना) का संचालन करने वाला। २. आगे बढ़ाने वाला। आगे बढ़ने में प्रोत्साहित करने वाला। २. धक्का मारने वाला। ४. खींचने वाला। ५. हाँकने वाला।

हेड़वणो—*(क्रि०)* १. ललकारना। २. हाँकना। ३. प्रतिबंध में रखना। ४. अनुशासन में रखना। ५. किसी समूह को घेर कर ले जाना।

हेड़ाऊ—*(न०)* १. वीर पुरुष। २. बहुत बड़े समूह का संचालन करने वाला। नेता। ३. बहुत बड़े समूह का अधिपति। ४. गाय, भैंस, ऊँट, भेड़ आदि पशुओं के बहुत बड़े समूह का स्वामी। ५. ब्राह्मणों और राजपूतों का एक उपगोत्र। ६. आक्रमणकारी। ६. संघपति। ८. संचालक।

हेडी—*(ना०)* सेही।

हेड़ो—*(न०)* पीछा। दे० हेरो।

हेणां—*(अव्य०)* अब। अभी।

हेत—*(न०)* १. स्नेह। प्रीति। २. मित्रता। *(अव्य०)* लिये। वास्ते। कारण।

हेत-इकळास—*(न०)* प्रेम और एकता। स्नेह और संगठन।

हेत-प्रीत—*(ना०)* १. हेत और प्रीति। स्नेह। २. मित्रता और स्नेह। ३. कृपा।

हेत-मोहबत—*(ना०)* १. हेत और मुहब्बत। २. मित्रता। ३. स्नेह। प्यार।

हेतरस—*(न०)* हेत रूपी रस। प्रेम रस। प्रीति। आनंद।

हेत राखणो—*(मुहा०)* १. प्रीति रखना। २. मेल रखना। ३. कृपा रखना।

हेतल—*(न०)* हेत। प्रेम।

हेतव—*(न०)* १. चारण। २. कवि।

हेतवाळो—*(न०)* मित्र। दोस्त। हेत रखने वाला। स्नेही।

हेतविहूणो—*(वि०)* स्नेह रहित ।

हेतारथी—*(वि०)* प्रेमी । हितार्थी । *(न०)* मित्र । दोस्त ।

हेताळ—दे० हेताळ ।

हेताळवो—दे० हेताळू ।

हेताळू—*(वि०)* हेत-प्रीति रखने वाला । स्नेही । हितैषी ।

हेतियाळ—दे० हेताळ ।

हेतु—*(अव्य०)* १. कारण । के लिये । वास्ते । २. आशय । ३. उद्देश्य । लक्ष्य ।

हेतुवाद—*(न०)* १. तर्कविद्या । २. नास्तिकता ।

हेतुविद्या—*(ना०)* तर्कशास्त्र । तर्कविद्या ।

हेत्वाभास—*(न०)* १. खराब हेतु । २. हेतु का आभास ।

हेम—*(न०)* १. ठंडा । शीत । २. सोना । ३. बर्फ ।

हेमकार—*(न०)* स्वर्णकार । सोनी ।

हेमखेम—*(वि०)* हेमक्षेम । कुशल । सही सलामत ।

हेमगिर—*(न०)* १. हिमालय पर्वत । २. स्वर्णगिरि । ३. जालोर का पर्वत । सोनगिरि ।

हेमगिरि—दे० हेमगिर ।

हेमचंद्राचार्य—*(न०)* सिद्धराज जयसिंह के समय के संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के प्रख्यात जैनाचार्य ।

हेमपुष्प—*(न०)* चंपा ।

हेमरत्न—*(न०)* 'गोरा-बादल-पदमणी चौपई' का रचयिता कवि ।

हेमवती—*(ना०)* १. गंगा । २. हर्रे ।

हेमंग—*(वि०)* सुवर्ण के सदृश सुंदर रंग वाला । हेमांग । *(न०)* सोना ।

हेमंत ऋतु ।

हेमंसू—*(ना०)* चाँदी । रजत ।

हेमा—*(ना०)* १. सुंदर स्त्री । २. पृथ्वी ।

हेमाचळ—*(न०)* हिमालय पर्वत ।

हेमाणी—*(ना०)* १. स्वर्ण राशि । २. सोने की खान ।

हेमाद्रि—*(न०)* हिमालय पर्वत । हिमाचल पर्वत ।

हेमाळो—*(न०)* १. हिमालय । २. सुमेरु । ३. बहुत अधिक ठंड । ४. बहुत अधिक ठंड के कारण बर्फ का बरसना या बर्फ जैसी ठंड पड़ना ।

हेय—*(ना०)* १. घृणा । उपेक्षा । २. तिरस्कार । *(वि०)* छोड़ने योग्य । त्याज्य ।

हेर—*(ना०)* १. घेरा । २. तलाश । खोज । ३. मदद । सहायता ।

हेरक—*(न०)* १. दूत । २. गुप्तदूत । *(वि०)* १. हेरा करने वाला । पीछा करने वाला । २. ढूंढने वाला । तलाश करने वाला ।

हेरणार—दे० हेरणियो ।

हेरणियो—*(वि०)* १. तलाश करने वाला । २. देखने वाला । ३. घेरने वाला ।

हेरणो—*(क्रि०)* १. तलाश करना । खोजना । २. देखना । ३. घेरना । ४. ताकना । ५. गवेषणा करना । ६. ललकारना ।

हेर-फेर—*(न०)* १. परिवर्तन । २. इधर-उधर । ३. तफावत । फर्क ।

हेरफेर करणो—*(मुहा०)* १. रद्दोबदल करना । परिवर्तन करना । २. इधर का उधर रखना ।

हेरंब—*(न०)* गणेश । गजानन

हेराफेरी—*(न०)* १. वस्तु तथा वस्तुओं को उलटने-पलटने की क्रिया। २. हिलना-फिरना। ३. बार बार आना जाना। ४. अनधिकार रूप से किसी के यहाँ वस्तुओं को रहन रखना। ५. अदला-बदला।

हेरा-फेरो—दे० हेराफेरी।

हे राम—*(पद०)* सुख-दुख के किसी भी समय में शांति-लाभ और परित्राण करने वाले राम का पुण्यश्लोक नाम।

हेरू—*(वि०)* खोज करने वाला। *(न०)* १. छिपी तौर से तलाश करने वाला, जासूस। गुप्तचर। २. दूत। हरकारा।

हेरो—*(न०)* १. खोज। तलाश। जाँच। २. गुप्त जाँच। ३. घेरा। अवरोध। ४. पीछा। ५. दूत। ६. खोज करने वालों का दल। ७. जासूस। गुप्तचर। ८. आक्रमण। ९. दौड़ा। *(वि०)* खोज करने वाला। खोजी।

हेरो करणो—*(मुहा०)* १. तलाश करना। २. पीछा करना। ३. आक्रमण करना।

हेरो लागणो—*(मुहा०)* शत्रु द्वारा पीछा किया जाना। पीछे लगना।

हेळ—*(ना०)* १. उमंग। २. उदारता। ३. उन्माद। ४. समुद्र। ५. समुद्र की लहर। ५. लहर की भाँति पेट में उत्पन्न होने वाली एक तीव्र पीड़ा। ६. कष्ट। पीड़ा। ७. तरंग। ८. दुर्गति। ९. आक्रमण।

हेल—*(ना०)* १. क्रीड़ा। २. दाम। ३. दान की लहर। ४. तरंग। ५. युद्ध। ६. स्नेह। ७. समुद्र। ८. बार। समय।

हेळणो—दे० हेळवणो।

हेलन—*(न०)* अपराध।

हेळवणो—*(क्रि०)* १. अभ्यस्त करना। आदी करना। २. अपना बनाना। ३. प्रेमपूर्वक घनिष्ठता बढ़ाना। ४. परिचय बढ़ाना। ५. प्रवर्त करना।

हेला—*(न०)* १. डाँट। डपट। झिड़की। २. तिरस्कार। ३. तरंग। लहर। ४. शृंगारिक प्रेमक्रीड़ा।

हेला करणो—*(मुहा०)* १. आवाज देना। बुलाना। २. डाँटना। डपटना। धमकाना।

हेला पाड़णो—*(मुहा०)* १. बुलाना। आवाज देना। २. मृतक का नाम लेकर रोना।

हेला मारणो—*(मुहा०)* १. बुलाना। पुकारना। २. एक गाली।

हेलारिया—*(न०)* १. बबूल की फलियाँ। पातड़ा। २. बबूल की फलियों का साग।

हेलारो—दे० हिलारो।

हेली—*(ना०)* १. हवेली। बड़ा मकान। रईसी ठाठ का मकान। २. सखी। सहेली। ३. मुग्धा-सुंदरी को संबोधन करके कहे गये गूढ़भाषा के अध्यात्म पद। ४. हेली नाम के वाणी-पद। वाणी।

हेलो—*(न०)* १. आवाज। पुकार। २. बुलावा। निमंत्रण। ३. पुकार। प्रार्थना।

हेलो करणो—*(मुहा०)* पुकारना। बुलाना।

हेलो पड़णो—*(मुहा०)* डूंडी पीटनी। जोर से बोल कर मुनादी सुनाना।

हेलो पाड़णो—(मुहा०) १. पुकारना। बुलाना। २. आवाज देकर अपने पास बुलाना। हेलो मारणो।

हेलो पाळणो—(मुहा०) मुनादी का पालन करना।

हेलो फिरणो—(मुहा०) डूंडी पिटवा कर सामूहिक निमंत्रण देना।

हेलो फूटणो—(मुहा०) रहस्य उद्घाटित होना।

हेलो मारणो—दे० हेलो पाड़णो।

हेलो होणो—दे० हेलो फिरणो।

हेवा—(ना०) स्वभाव। आदत। (सर्व०) वह (स्त्री)।

हेवा करणो—(मुहा०) आदत डालना। खराब आदत डालना।

हेवा पड़णो—(मुहा०) स्वभाव बनाना। आदत पड़ना।

हेवाल—दे० हवाल।

हेवे—(सर्व०ब०व०) १. वे। वे लोग। अेवे। २. स्त्री के द्वारा पति के लिये प्रयुक्त शब्द। हे वै।

हे वै—दे० हे वे।

हेवो—(सर्व०) १. वाक्य में पूर्वगामी संदर्भ में सूचित संज्ञा शब्द के लिये प्रयुक्त सर्वनाम। २. दूरस्थ या परोक्ष पदार्थ अथवा व्यक्ति का संकेत शब्द। वह। वो। अेवो।

हेसा—(ना०) हिनहिनाहट। हेषा।

हेसाणो—(क्रि०) हिनहिनाना।

हेसाब—दे० हिसाब।

हेसाबी—दे० हिसाबी।

हें—(अव्य०) विस्मय, शंका और असम्मति आदि का सूचक एक अव्यय। २. पुनः प्रश्न करने का उद्गार।

हेंकारो—दे० हूंकारो।

हेंडल—(ना०) हत्था। हाथो।

हेंसाब—दे० हिसाब।

हेंसाबी—दे० हिसाबी।

हेंसारव—(ना०) घोड़े की हिनहिनाहट का शब्द। हींसारव।

हेंसावाळ—(वि०) भागीदार। हिस्सेदार।

हेंसावाळी—(ना०) हिस्सेदारी। भागीदारी।

हेंसो—दे० हिस्सो।

है—(क्रि०) १. वर्तमानकाल की क्रिया को बताने वाला मुख्य शब्द जो कार्य की विविधता को बताने वाली क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। २. 'होणो' या 'होवणो' (हिंदी 'होना') क्रिया का वर्तमान कालिक अन्य पुरुष एक वचनी और बहुवचनी रूप। (ना०) हय। घोड़ा। अश्व। (अव्य०) हाय। हा।

हैकंप—(वि०) भयभीत। (ना०) १. कँपकँपी। कंपन। २. हृदय-कंपन। ३. भय। डर। भौ।

हैजंभ—(ना०) १. तलवार। २. सेना। (ना०) घोड़ा।

हैजमप—(ना०) सेनापति।

हैजमपत—(ना०) सेनापति। हैजमप।

हैजो—(ना०) दस्त और कै की घातक संक्रामक बीमारी। हैजा।

हैणां—(क्रि०वि०) १. अभी। इसी समय। २ तुरन्त। हमार। अबार।

हैरूं—दे० हैणां। दे० हणूं।

हैथंड—(ना०) अश्वसेना। हैथाट।

हैथाट—(ना०) अश्वसेना। हैथंड।

हैदर—*(न०)* दीवाल में लगने वाला एक लंबा पत्थर।

हैदराबाद—*(न०)* १. आंध्र प्रदेश की राजधानी का नगर। २. भूतपूर्व रियासत जो भारत के स्वतन्त्र होने पर उसमें विलीन हो गई। २. सिंधु नदी के तट पर सिंध प्रदेश का एक नगर जो अब पाकिस्तान में है।

हैदळ—*(न०)* अश्वसेना। घुड़सेना। हैथाट।

हैमर—*(न०)* १. घोड़ा। अश्व। हयवर। २. हाथी।

हैमवती—*(न०)* १. पार्वती। उमा। २. गंगा।

हैरत—*(म०)* आश्चर्य। चकित। अचंभो।

हैरव—*(न०)* घोड़े की हिनहिनाहट।

हैराण—*(वि०)* १. परेशान। हैरान। व्यग्र। २. चकित। हक्का-बक्का।

हैरान—*दे०* हैराण।

हैरान करणो—*(मुहा०)* १. दुख देना। २. परेशान करना। ३. थका देना।

हैरान गति—*(ना०)* १. हैरानी। परेशानी। २. कठिनाई। मुश्किली। ३. दुख। पीड़ा।

हैरान व्हेणो—*(मुहा०)* १. परेशान होना। २. दुख देखना। ३. थक जाना।

हैरान होणो—*दे०* हैरान व्हेणो।

हैरानी—*(ना०)* १. परेशानी। व्यग्रता। १. तकलीफ। पीड़ा।

हैराव—*(न०)* १. घोड़ा। अश्व। हैमर। २. श्रेष्ठ जाति का घोड़ा।

हैरूढ—*(वि०)* अश्वारूढ। घुड़सवार। घोड़ेसवार। *(न०)* घोड़ा सवार। घुड़सवार। घोड़ा असवार।

हैवर—*(न०)* घोड़ा। हय। होबास।

हैवान—*(न०)* पशु। *(वि०)* मूर्ख। गँवार।

हैवानियत—*(ना०)* १. मूर्खता। २. पशुत्व। ३. विवेक रहित क्रूर आचरण।

हैवानी—*(वि०)* हैवान जैसा। पशु सम।

हैवै—*(न०)* १. राजा। २. बादशाह। ३. अश्वपति।

हैवैघड़—*(ना०)* बादशाही सेना।

हैसियत—*(ना०)* १. सामर्थ्य। शक्ति। २. आर्थिक शक्ति। ३. बिसात। ४. इज्जत। प्रतिष्ठा।

हैसियतदार—*(वि०)* प्रतिष्ठावाला। सामर्थ्यवान।

हैहय—*(न०)* १. सहस्रबाहु। २. एक क्षत्री वंश।

हैहयराज—*(न०)* सहस्रबाहु। कार्त्तवीर्य। कार्तवीर्यार्जुन।

हैंकारो—*(न०)* स्वीकृति।

हो—*(क्रि०)* हिंदी की 'होना' क्रिया के भूतकालिक 'था' क्रिया का एकवचनी रूप। जैसे—'राम आयो हो।' था। *(अव्य०)* आश्वासनोद्गार। सांत्वना सूचक शब्द हाँ। २. काव्य में टेक में प्रयुक्त निरर्थक उद्गार।

होकबा—*(न०)* १. उत्साह। २. ठाठबाठ। ३. अत्यन्त प्रसन्नता। ४. आनंदोल्लास। मौज-मजा।

होकर—*दे०* होकार।

होकलियो—*(न०)* १. छोटा हुक्का। होकलो। २. हुक्का।

होकली—*(ना०)* छोटा हुक्का।

होकलो—*(न०)* हुक्का। (तुच्छार्थक)।

होकायंत्र—*(न०)* समुद्र में दिशा मालूम करने का यन्त्र ।

होकार—*(न०)* १. होकार शब्द । गर्जन । २. मन की उमंग । सुखदायक मनोवेग । ३. आनंद की लहर । प्रसन्नता का वेग । ४. उमंग । जोश । उत्साह । ५. अतिथि आगमन के समय पूजा जाने वाला कुशलता सूचक प्रश्नवाचक शब्द । उस समय इसका प्रयोग बहुवचन 'होकारां में ?' के रूप में होता है । ६. कोलाहल । ७. गुर्राटा ।

होकार करणो—*(मुहा०)* जोर से बोलना । गर्जन करना ।

होकारां में—*(अव्य०)* अतिथि के आगमन पर उससे पूछा जाने वाला उसकी कुशलता को सूचित करने वाला एक प्रश्न शब्द ।

होकी—*(न०)* १. एक खेल । २. इस खेल को खेलने के लिये काम में लाई जाने वाली स्टिक ।

होको—*(न०)* हुक्का ।

होको चिलम—*(न०)* हुक्का और चिलम ।

होको चिलम बंद करणो—*(मुहा०)* किसी व्यक्ति के साथ होका-चिलम नहीं पीने की सजा करना ।

होको झारणो—(मुहा०) हुक्के की चिलम में से राख बाहर डालना ।

होको ठारणो—(मुहा०) हुक्के की चिलम और पानी को ठंडा होने देना ।

होको-पाणी—*(न०)* १. हुक्का और पानी । २. हुक्का और उसमें भरा जाने वाला पानी ।

होको पाणी बंद करणो—*(मुहा०)* १. किसी के साथ हुक्का पानी बंद करना । २. जाति के किसी व्यक्ति के साथ सजा के रूप में हुक्का पीना बंद करना । जाति तिरस्कृत ।

होको पावणो—*(मुहा०)* अतिथि को हुक्का भर कर पिलाना ।

होको भरणो—*(मुहा०)* १. हुक्के में पानी और उसकी चिलम में आग तथा तमाखू भरना । २. चापलूसी करना ।

होजरी—दे० ओझरी ।

होट—दे० होठ ।

होट चाटणो—*(मुहा०)* पश्चात्ताप करना ।

होट रो फटकारो—*(न०)* १. थोड़ा उलाहना भी । किंचित उपालंभ भी । किसी भी प्रकार का उलाहना । २. बोलने का संकेत । आज्ञा देने का संकेत । मात्र होंठ हिलाने का संकेत ।

होटल—*(ना०)* १. नाश्ता-पानी की दूकान । २. मूल्य देकर खाने-पीने और ठहरने का स्थान ।

होट हलावणो—*(मुहा०)* बोलना ।

होठ—*(न०)* होंठ । ओष्ठ ।

होड—*(ना०)* १. शर्त । बाजी । २. हठ । जिद । ३. प्रतियोगिता । ४. स्पर्धा । ५. बराबरी ।

होड करणी—*(मुहा०)* १. प्रतिस्पर्धा करना । १. बराबरी करना ।

होडको—*(न०)* नाव । डूंडको ।

होड मारणी—*(मुहा०)* शर्त करना या लगाना । होड लगावणी ।

होड लगावणी—दे० होड मारणी ।

होड वदणो—दे० होड करणी ।

होडायती—*(वि०)* होड करने वाली । बराबरी करने वाली ।

होंडायतो—*(वि०)* १. हैसियत के उपरांत दूसरों की होड करने वाला। २. बराबरी करने वाला।

होंडा-होंड—*(ना०)* १. एक दूसरे को मात करने की क्रिया। प्रतियोगिता। २. शर्त। बाजी।

होंड-होंडी—*(ना०)* दूसरों की होड करके आगे बढ़ने का भाव।

होंडी—*(ना०)* नाच। डूंडको। होडको।

होणहार—*(वि०)* १. भविष्य में होने वाली घटना या बात। २. आशास्पद। ३. सुलक्षण वाला। *(ना०)* भवितव्यता। भावी।

होणार—दे० होणहार। होणहार का छोटा रूप।

होणारत—*(ना०)* १. घटना। बनाव। २. दुर्घटना। ३. होनहार। ४. भवितव्यता। भावी। होनारत।

होणारी—*(वि०)* होने वाली। भवितव्यता। *(ना०)* १. होने वाली घटना या बात। हुतव। २. भाग्य।

होणारो—*(वि०)* होने वाला। दे० होणारी। *(ना०)* सं० १ और २.

होणियो—दे० होणहार।

होणी—*(ना०)* १. अवश्य होकर रहने वाली बात। होनहार। २. प्रारब्ध। भाग्य।

होणो—दे० होवणा।

होत—दे० होवतो।

होतव—दे० हुतव।

होतल पदमणी—*(ना०)* सौराष्ट्र की एक नायिका।

होता—*(न०)* १. यज्ञ कराने वाला या करने वाला पुरोहित। २. यज्ञ में आहुति देने वाला।

होती—*(वि०)* १. उचित। २. होने योग्य। ३. करने योग्य। *(क्रि०भू०)* हुती। थी।

होतो—दे० होवतो। *(वि०)* उचित। जो होने योग्य है। हूतो।

होथल पदमणी—दे० होतल पदमणी।

होदी—*(ना०)* १. छोटा हौज। २. अंबाड़ी। होदा।

होदेदार—*(न०)* पदाधिकारी। अधिकारी। ओहदेदार।

होदेदारी—*(ना०)* १. अधिकार। २. पद। ओहदेदारी।

होदो—*(न०)* १. पद। ओहदा। २. अंबारी। ३. अधिकार।

होनहार—दे० होणहार।

होनारत—दे० होणारत।

होफर—*(ना०)* सिंहनाद। गर्जना।

होबड़—*(न०)* १. होंठ। २. मुंह।

होबड़ो—दे० होबड़।

होबर—*(ना०)* उलटी। कै।

होवाळो—*(न०)* १. हो हा। शोरगुल। २. अप्रतिष्ठा। फजीती।

होबास—*(न०)* घोड़ा। हैवर।

होम—*(न०)* यज्ञ। हवन।

होम आठम—दे० होमाठम।

होम करणो—*(क्रि०)* १. यज्ञ करना। २. आहुति देना।

होमकुंड—*(न०)* यज्ञकुंड। होम की अग्नि का आधान। हवन पात्र या कुंड।

होमणो—*(क्रि०)* १. आहुति देना। हवन करना। होमना। २. बलिदान देना। ३. बलिदान होना। ४. नष्ट करना।

५ युद्ध में प्रवर्त होना। युद्ध में घुसना। ६. अग्नि में लकड़ी देना। ७. झगड़ा लगना।

होमाग्नि—(ना०) हवन की अग्नि। होम की प्रज्वलित अग्नि।

होमाठम—दे० होमाष्टमी।

होमाणो—(क्रि०) १. आहुति दिलवाना। २. हवन करवाना। ३. बलिदान दिलवाना। ४. युद्ध में प्रवर्त कराना। ५. झगड़ा लगवाना। होमावणो।

होमावणो—दे० होमाणो।

होमाष्टमी—(ना०) चैत शुक्ल और आसोज शुक्ल अष्टमी के दिन नवरात्रि पर्व सूचक हवन किया जाता है। होमाठम। होम आठम।

होमियोड़ो—(भू०कृ०) १. होमा हुआ। २. बलिदान किया हुआ। ३. बलिदान हुआ हुआ।

होमियोपैथी—(ना०) एक पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति।

होमीजणो—(क्रि०) १ युद्ध में वीर गति प्राप्त करना। २. बरबाद होना। ३. भारी संकट में पड़ना। ४. किसी के लिए काम आ जाना।

होय—(क्रि०वि०) १. हो जाता है। २. होता है। (अव्य०) हाँ।

होयो—(क्रि०) 'होणो' क्रिया का भूतकाल। हुआ। हो गया। हुओ। हुयो।

होरा—(ना०) १. ढाई घड़ी का समय। एक घंटा। २. जन्म कुंडली। ३. जन्म कुंडली से भविष्य बतलाने की विद्या। ४. लग्नांश (ज्योतिष)।

होर्न—(सं०) मोटर का भोंपू।

हौळेका—(ना०) १. हरिण्यकशिपु की बहन। २. होळी का त्योहार। (वि०) १. झगड़ालू (स्त्री)। २. क्रोधी (स्त्री)। ३. कामांध (स्त्री)।

होलुड़—दे० होळी। दे० हुल्लड़।

होळा—(ना०व०व०) १. आग में भुने हुए हरे चने या गेहूँ। हो रहा। २. कोश-युक्त चना। हो रहा। फोफलिया।

होला—(ना०) फारता। कमेड़ी। हड़कली।

होळिका—दे० होळका।

होली—(क्रि०भू०) 'होणो' का एक भूतकालिक रूप। हो गई। (ना०) फारता। कमेड़ी।

होळी—(ना०) १. हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध वासंतिक व सांस्कृतिक त्योहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। होलिका। २. एक रागिनी। ३. होली के विशिष्ट गीत। (वि०) कमजोर।

होळी करणो—(मुहा०) १. जला देना। २. नाश करना।

होळी खेलणो—(मुहा०) होली के दिनों में परस्पर रंग आदि डालना।

होळी गाणी—(मुहा०) होली पर्व पर होली के गीत गाना।

होळी चौक—(ना०) वह स्थान जहाँ होली प्रज्वलित कर उत्सव मनाया जाता है।

होळी मंगळावणो—(मुहा०) १. होलिका दहन करना। २. होली पर्व के दिन एकत्रित लकड़ियों और कंडों के ढेर में आग लगाना (निश्चित मुहूर्त पर)।

होळी रमणो—दे० होळी खेलणो।

होळी रो-नाळेर—(पद०) १. किसी को संकट में डालना या आगे करना। २.

किसी को नेतृत्व देकर संकट में डालना। ३. होली में डाला जाने वाला नारियल।

होळी वाळी-गाळ—(पद०) किसी की निंदा सूचक उड़ती खबर।

होळी सिळगावणो—(मुहा०) कलह उत्पन्न करना। झगड़ा लगाना।

होलेर—(न०) एक अछूत जाति।

होळै—(क्रि०वि०) धीमे से। आहिस्ता। हवले।

होलैंड—(न०) यूरोप का एक देश।

होल्कर—(न०) ग्वालियर के राजा की पदवी।

होल्डर—(न०) कलम। लेखनी। निब वाली लेखनी।

होवणहार—(वि०) होने वाला। (न०) होनहार। भावी।

होवणो—(क्रि०) १. किसी क्रिया का किया जाना, चलना, जारी रहना या समाप्त होना। २. सृजन करना। पैदा करना। विद्यमान रहना। ४. घटना। ५. बीतना। गुजारना।

होवतां—(भू०कृ०) १. होने से। २. हो जाने पर। ३. बनने में।

होवती—दे० होती।

होवतो—(भू०क्रि०) 'होणो' या 'होवणो' का अनिश्चित भूतकालिक रूप। होता। (भू०कृ०) १. होता हुआ। २. होता रहने वाला।

होवै—(अव्य०) हाँ। हवै। (क्रि०) १. होता है। २. हो रहा।

होवै तो—(अव्य०) हो तो।

होवैला—(क्रि०भ०) होगा। होसी। हुवैला।

होश—(न०) १. चेतना। संज्ञा। भान। सुध। २. अक्ल। विवेक। ३. समझदारी। ४ हिम्मत।

होश आवणो—(मुहा०) बेहोशी का दूर होना।

होश उड़णो—(मुहा०) १. बेहद घबराना। २. सुधबुध खो बैठना।

होश ठिकाणे होणो—(मुहा०) मोह, भ्रम या घमण्ड दूर होना।

होश में आवणो—(मुहा०) १. बेहोशी का दूर होना। २. चेतना होना। ३. विवेक से व्यवहार करना।

होश संभाळणो—(मुहा०) समझने-बूझने की या जिम्मेवारी संभालने की स्थिति में होना।

होशहवास—(न०) चेतनावस्था। २. बुद्धि। ३. समझ।

होस—दे० होश।

होसनाक—(वि०) छैला।

होसियार—(वि०) १. समझदार। बुद्धिमान। २. दक्ष। कुशल। ३. धूर्त। चालाक। ४. वयस्क। हुसियार।

होसियारी—(ना०) १ धूर्तता। चालाकी। २. दक्षता। ३. बुद्धिमानी। समझदारी। हुसियारी।

होसी—(क्रि०भ०) 'होणो' क्रिया का भविष्य रूप। होगा। होगी। होवैला।

होस्टल—(न०) १. छात्रावास। २. अमुक व्यक्तियों के लिए ठहरने का स्थान।

हो हा—(ना०) १. कोलाहल। शोरगुल। २. निंदा। फजीती। ३. चर्चा। हो हो।

हो ही—दे० होसी ।

हो हो—दे० हो हा ।

हों—दे० हूं ।

हौज—*(न०)* पानी का कुण्ड । हौज । हौद ।

हौद—*(न०)* हौज ।

हौदो—*(न०)* १. हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला आसन । अंबारी । होदा । २. ओहदा । पद । ओहदो ।

हौसलो—*(न०)* १. साहस । हिम्मत । २. धृष्टता । ३. इच्छा । लालसा ।

हौसलो करणो—*(न०)* १. साहस करना । हिम्मत करना । २. इच्छा या लालसा करना ।

हौसलो वधारणो—*(न०)* साहस बढ़ाना । हिम्मत बढ़ाना ।

ह्रस्व—*(वि०)* १. छोटा । २. थोड़ा । ३. ऊन । ४. जिसे बोलने में अल्प प्रयत्न लगता हो । *(न०)* लघु स्वर । एक न्यून मात्रिक स्वर ।

ह्रीं—एक बीज मंत्र ।

—:❀:—

पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी,
जयपुर - 3020(